भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या
Class No. 891.4314
पुस्तक संख्या
Book No. Su 821na
रा० पु० / N. L. 38.

MGIPC—S4—59 LNL/64—1-11-65—100,000.

Rare Book

॥ सूरसागर ॥

॥ जिसमें ॥

परम भक्त सूरदास जीने श्रीकृष्ण चन्द्र महाराज की

॥ भक्ति के दृढ़ता के लिये ॥

हरि भक्तों के वास्ते श्रीकृष्ण चरित्र और लीला रूपी अमृत का

॥ समुद्र ॥

नाना छन्द और रागों में वर्णन किया है ॥

सब छोटे बड़े महाशय हरि भक्तों के अवलोकन के वास्ते

॥ अयोध्या पुरी के ॥

॥ महाराजा मानसिंह ॥

॥ क़ायम जङ्ग प्रतापी को ॥

अनुमति से ॥

मुंशी नवलकिशोर ने अपने यन्त्रालय में बहुत स्पष्ट शीसे के अक्षरों में

मंशी जमुना प्रसाद को संयुक्त करके

पण्डित कालीचरण से अत्यन्त शुद्ध करवाके छपवाया ॥

२१४४१
स्थान

॥ लखनऊ ॥

सन् १८६४ ईसवी ब सम्वत् १९२० विक्रमा दित्य

॥ सूरसागर॥ सारावली॥

॥ श्री गोपी जन वल्ल भाय नमः॥ ॥

श्री बल्लभ चरण कमलेभ्यो नमः॥॥श्री बिठलेशो जयति तराम्॥॥श्री गिरिधरो जयतितराम्॥॥श्री कृष्णाय नमः॥॥ *॥॥ अथ श्री सूर दास जी कृत सूर सागर सारावली तथा सवा लाख पदके सूचीपत्र श्री कृष्णा नंद व्यास देव राग सागर संग्रह कृत तथा राग कल्प द्रुम लिख्यते॥॥ बंदौ श्री हरि पद सुख दाई॥ जाकी कृपातें पंगु गिरि लंघै अंधरे कोसब कछु दरसाई॥ बहरो सुनें गूग पुन बोले रंक चलै शिर छत्र धराई॥ सूर दास प्रभु की शरणागत बारंबार नमोते पाई॥॥रागनी काफी ताल चलि ॥ खेलत यहि बिधि हरि हेारी हेा हेारी हेा बेद बिदित यह बात॥॥टेक॥ * ॥ * ॥

अबिगत आदि अनंत अनूपम अलख पुरुष अबिनाशी॥॥पूरण ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम नित निज लेाक बिलासी॥॥१॥ जहं वृंदा बन आदि अजर जहां कुंजलता बिस्तार। तहं बिहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार॥॥२॥ रतन जटित कालिंदी के तट अति पुनीत जह नीर॥॥सारस हंस चकोरमेार खग कूजत कोकिल कीर॥॥३॥ जहां गेाबर्द्धन परवत मनिमें सघन कंदरा सार॥॥ गेापिन मंडल मध्य बिराजत निशि दिन करत बिहार॥॥४॥॥ खेलत खेलत चितमें आई सृष्टि करन बिस्तार॥॥अपने आप करि प्रगट कियेा है हरी पुरुष अवतार॥॥५॥॥ माया कियेा छेाभ बहु बिधि करि काल पुरुष के अंग॥॥राजस तामस सात्विक त्रिगुन प्रकृति पुरुष को संग॥॥६॥ कोन्हें तत्व प्रगटतेही छिन सबै अष्ट अरु बीश॥॥तिनके नाम कहत कबिसूरजी निर्गण सब के ईश॥॥७॥॥ पृथिबी अप तेज बायु नभसंज्ञा शब्द परस अरुगंध॥॥ रस और रूप और मनबुधि चित्त अहंकार मति अंध॥॥८॥॥ पान अपान व्यान उदान और कहीयत प्रान समान॥॥तछक धनजय पुन देवदत्त और पैंाड्रक शंख द्युमान॥॥९॥॥ राज स तामस सात्विकतीनें जोव ब्रह्म सुख धाम॥॥अठाईस तत्व यह कहोयत सेा कवि सूरजी नाम॥॥१०॥॥ नाभी कमल नरायण की सेा बेद गरभ अवतार॥॥नाभी कमल में बहुत ही भटक्यो तऊन यथेापार॥॥११॥॥ तब आज्ञा भई यह हरिकीनभ करो परमतप

आप ॥तब ब्रह्मा तप कियो वर्ष सत दूर भये सब पाप ॥ १२ ॥ तब दरशन दीनों करुणा कर परम धाम निज लोक ॥ ताको दरशन देखि भयो अजसब बात निःसोक ॥१३॥ जहा आदि निज लोक महा निधिरमा सहस संजूत ॥ आंदोलन झूलत करुणा निधिरमा सुखदअति पूत ॥ १४ ॥ अस्तुति करि बिबिधि नाना करि परम पुरुष आनंद । जै जै जै श्रुति गीत गायकै पढत है नाना छंद ॥१५॥ आज्ञा करीनाथ चतुरानन करों सृष्टिबिस्तार ॥ होरीखेलत कीबिधिनी की रचना रचे अपार ॥१६॥ चौदहलोक करों नाना बिधि रचि बैकुंठ पाताल । नाना रचना रची बिधाता होरी खेल रसाल ॥ १७ ॥ दशहीं पुत्र भये ब्रह्मा के जिन रंच्यो संसार ॥ स्वायं भूमनु प्रगट तब कीन्हें अरु सत रूपानार ॥१८॥ भुवकी रक्षा करनजुकारन धरिबराह अवतार ॥ पाछें कपिल रूप हरि धार्यों कीनों सांख्य बिचार ॥१९॥ दोनों ज्ञान आप मातां को कीन्हों भवनिस्तार ॥ आठो लोक पाल तब कीये अपने अपने अधिकार ॥२०॥ ते अगिनिजममरुत वरुनऔर सूरज चंदयह नाम। मृत्यु कुबेर पक्षपति कहियत जहां शंकर को धाम ॥ २१ ॥ सत्यलोक जन लोक लोक तप और महर निजलोक ॥ जहराजत ध्रुवराज महानिधि निशिदिन रहत असोक ॥२२॥ जननी आज्ञापाय चले बनपाच बरष सुकुमार ॥ ताको आप कृपाहरि कीनीधरि आये अवतार ॥२३॥ पाछेपृथुको रूपहरिलीन्हों नानारस दुहिकाढै। तापर रचना रचीबिधाता बहुबिधि जतन बढाढै ॥ २४ ॥ रचि नौखंड दीप सातोमिलि कीनों हेारिसमाज । बन उपवन परवतबहु फूले सबै बसंत कोसाज ॥ २५ ॥ दानव देव लगे आपसमे की न्होंयुद्ध प्रकार ॥ बिबिध शस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार ॥ २६ ॥ दोनै मार असुर हरिनै तब देवन दीनोंराज ॥ एकनको फगुवा इंद्रासन एक पचास को साज ॥२७॥ बिद्याधर गंधर्ब अप्सरा गान करत सबठाढे ॥ चारन सिद्धपढत विरदावल लैफगुवा सुख बाढै ॥ २८ ॥ चन्द्रलोक दीनों शशिको तब फगुवा मैंहरिआप ॥ सबन छकेकों राजा दीन्हों शशिमंडल मैंछाप ॥ २९ ॥ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु ग्रह जानि रवि अरु शशि सब हेान को फगुवा दीनों चतुरसुजानि ॥ ३० ॥ अतल बितल अरु सुतल तलातल और महातल जान ॥ पाताल और रसातल मिल सातों भुवन प्रमान ॥ ३१ ॥ संकरषनको धामपर मरुचितहां राजत निजवीर ॥ शेषनाग ताकेतर कूरम बसत महा धनधीर ॥ ३२ ॥ ईलावर्त्त और किंपुरुषा कुरु और हरिवर्ष केतुमाल । हिरनमैं रमनक भद्रासन भरतखंड सुखपाल ॥ ३३ ॥ सातो दीप कहे शुकमुनिने सोई कहत अब सूर ॥ जंबुप्लक्षशाल्मि साय कह अरु कुश पुशकर भर पूर ॥ ३४ ॥ अपनें अपनें स्थानपर तब फगुवा दियो चुकाय ॥ जब जब हरि मायातै दानव प्रगट भये हं आप ॥ ३५ ॥ तब तब धरि अवतार कृष्ण ने कीनों असुर संघार ॥ सो चौबीस रूप निज कहियत बरनन करत बिचार ॥ ३६ ॥ प्रथमकिये स्वायंभु मनुनृप अजआज्ञा यह दीनो ॥ भूपर जाय राजतुमकरिहों सृष्टि बिस्तार यहकीनी ॥ ३७ ॥ स्वायंभू मनु अरु सतरूपा तुरत भूमि पर आये ॥ जलमें मगन भये भुवदेखै फिर अजपैं फिरआये ॥ ३८ ॥ अजसों आय कही सबहीं विधि भुवद्रव देखियत नाहीं ॥ तब अति ध्यान

कियो श्रीपति को केशव भये सहाई ॥ ३९ ॥ आई छीक नाकतें प्रगटे शूकर अति लघु रूप ॥ देखत गजसे होयगये हैं कीन्हों बृहत स्वरूप ॥ ४० ॥ जै जै करत सकल सुरनर मुनि जलमें कियो प्रवेश ॥ जायपताल बाट गहिलीनी धरनी रमा नरेश ॥ ४१ ॥ तै भुव कमल कुसुम की नाई चलै मनहु गजराज ॥ कछुडर नाहिन जियमैं डरपत अति आनंद समाज ॥ ४२ ॥ जोग साधु सनकादिक चारो गये हरिके निजलोका ॥ कीन्हें क्रोध मनेजब कीन्हें दियो आप अतिसोका ॥ ४३ ॥ जै अरु विजय असुर योनिन को भये तीनअवतार ॥ तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृहदिति को कोषि मझार ॥ ४४ ॥ प्रथम भयो हरनाक्ष महाबल जिन जीते लोकपाल ॥ नारदसीष गयो शूकर पैंदेखो रूपबिकराल ॥ ४५ ॥ सहसबरषलों जलमें जूझे कियोदनुज संहार ॥ पाछैआयभूमिको थापी कियो यज्ञबिस्तार ॥ ४६ ॥ स्वायंभू सत रूपा तनया कहियत तीन प्रसन ॥ आकुती देवहुती और पर सूती चतुर सुजान ॥ ४७ ॥ परसूती दई दक्ष प्रजापति तिन की सती सयान ॥ सोदीनी महादेव देवको अति आनन्द सुज्ञान ॥ ४८ ॥ तज्योंदेह अभिमान पायकै बहुर दक्ष गृह जाई ॥ पाति ब्रत धर्म जब जान्यों बहुरो रुद्रबिहाई ॥ ४९ ॥ आकुती दई रूचि प्रजापति भये यज्ञ अवतार ॥ इन्द्रासन बैठे सुख बिलसत दूर किये भुवभार ॥ ५० ॥ देवहुती कर्दमको दीनी तिन कीन्हों तप भारी ॥ बिंदु सरोवर आये माधव किये गरुड असवारी ॥ ५१ ॥ दियो बरदान सृष्टि करिबे को अस्तुति करी प्रमान ॥ मेरो अंस अवतार होयगो कहि भये अंतर ध्यान ॥ ५२ ॥ पाछैऋषि निज तपमन लायो कीनों प्रगट बिमान ॥ ता में बैठ सकल जग देख्यो कन्यानों सुखदान ॥ ५३ ॥ पाछैं कपिल रूप हरि प्रगटे दरशन करि मुनिराया ॥ कीनों त्याग गये बनको तब ब्रह्मपरम पद पाय ॥ ५४ ॥ पाछें बिबिधज्ञान जननी को दीनों कपिल दृढाय ॥ सांख्य जोग अरु ज्ञान भक्त दृढ बरनी बिबिध बनाय ॥ ५५ ॥ जलको रूप तुरतह्वै गए वह हरिकै रूप समाय ॥ चले मगन ह्वै ब्रह्म ध्यान कर गंगा सागर न्हाय ॥ ५६ ॥ अजहुंसो राजतनीरधि कै तट करत सांख्य बिस्तार ॥ सांख्यायन से बहुत महा मुनि सेवत चरन सुचार ॥ ५७ ॥ अचै पुच भये ब्रह्मा के तिन कीन्हो तप जाय ॥ आये तीन देवता केढिग ब्रह्मा शिव हरि राय ॥ ५८ ॥ तब उन मांग्यो सुत तुमहीं से तीनों प्रगटे आय ॥ अजअगि अंस रुद्र दुरवासा दत्ताचेय हरि राय ॥ ५९ ॥ अनसुया के गर्भ प्रगट ह्वै किये जोग आराधि ॥ यम अरु नेम प्रमान प्रत्या हार धारन ध्यान समाधि ॥ ६० ॥ आसन कसब सिद्ध जोग कर प्रगट कला जगदीस ॥ दीनों भोग सहस नृपको बहु करुना निधजगबीस ॥ ६१ ॥ कीनै गुरु चौबीस सीष लै यदुको दीनों ज्ञान ॥ पातं जल सै मुनि पद सेवत करत सदा अजध्यान ॥ ६२ ॥ जब सृष्टिन पर छपा कीनी ज्ञान कला बिस्तार ॥ सनकसनन्दन और सनातन चारेंा सनत कुमार ॥ ६३ ॥ उनकों कह्यो सृष्टि नाना बिध रचना करो बनाय ॥ उन नहि मान्यों तब चतुराननखीझैं क्रोध उपाय ॥ ६४ ॥ शंकर प्रगट भये भृकुटीतै करौं सृष्टि निर्मान । भूत प्रेत बैताल रचै बहु दौरे बिधि कों खान ॥ ६५ ॥ पूरन करों कह्यो चतुरानन सृष्टि महा दुखदेंन ॥ तब शंकर तपस्या कीनिक सै चितै कमल दलनैन ॥ ६६ ॥ मूरत चियाजु भई धरम कीर्तिन के हरि अव

तार ॥ नारायण भये प्रगट बपुतिन मेंट्यो भुवभार ॥ ६७ ॥ सहस कवच एक असुर संहा रेव बहुरि कियो तप भारी । सोच परेव सुरपति कों तब उन पठई अप्सरा नारी ॥ ६८ ॥ बहुत भांति उन कियो परम छल तपमें उन के काज । कछु नहीं चली ब्रह्म नारायन सुख समाधितिय साज ॥ ६९ ॥ एक उरबसी हृदय उपजाइ दई शक्र को ताय । ताको देख देख जीवत हैं अजहुं इन्द्र सुखपाय ॥ ७० ॥ स्वायंभू के दुतिय पुचऊत्तान पाद मतिधीर । तिनके ध्रुव बालक जो जाये और उत्तम गंभीर ॥ ७१ ॥ नृपके पास गये गोदीमें बैठनको सुकुमार । तब लघु मात कह्यो तब बैठे जब मेरे अवतार ॥ ७२ ॥ सुन कटु बचन गये मातापें तब उन ज्ञान दृढायो । हरिकी भक्तिकरो सुखनीकै जो चाहो सुखपायो ॥ ७३ ॥ पांच बरष के निकस चले तब मधुबन पहुंचे आय । बिच नारद मुनि तत्व बतायो जपैं मंच चित लाय ॥ ७४ ॥ कछु दिन पच भक्ष करि बीते कछु दिन लीनों पानी । कछु दिन पवन कियो अनु प्रासन रोक्यो स्वास यह जानी ॥ ७५ ॥ दारुन तप जब कियो राज सुत तब कांप्यो सुर लोक । चाहि चाहि हरिसों सब भाष्यो दूर करो सब शोक ॥ ७६ ॥ तब हरि कह्यो कोउ जिन डरपो अबहि तुरत मैं जैहों । बालक ध्रुव बनकरत गहन तप ताहि तुरत फल दैहों ॥ ७७ ॥ इतनी कहत गरुड पर चढि कै तुरतहि मधुबन आये । कंबु कपोल परस बालक कै बानी प्रगट कराये ॥ ७८ ॥ अस्तुति करी बहुत ध्रुव सब बिध सुनप्रसन्न भय आप । दिये राज भूमंडलकों सब बिध थिरकरि थाप ॥ ७९ ॥ हरि बैकुंठ सिधारे पुन ध्रुव आये अपने धाम । कीनों राज तीसघट बरषन कीन्हें भक्तन काम ॥ ८० ॥ यक्ष प्रबल बाढे भुव मंडल तिन मार्‌यो निज भ्रात । तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यात ॥ ८१ ॥ बहुत बरषलों राज कियो भुव फिर आये निज लोक । सब कै ऊपर सदा बिराजत ध्रुवसदा नीसोक ॥ ८२ ॥ सनकादिक पुछियो चतुरा नन ब्रह्म जीवकों बीच । प्रगट हंस बपु धर्‌यो जगत गुरु ज्यों पैं नीर सुमीच ॥ ८३ ॥ यह भुवमंडल कों रस काढ्यो भांति भांति निज हाथ । धरि पृथु रूप कियो जग आनंद अखिल लोक कै नाथ ॥ ८४ ॥ प्रिय ब्रतबंश धरेव हरि निज बपु ऋषभ देव यह नाम । कीन्हें काज सकल भक्तनको अंग अंग अभिराम ॥ ८५ ॥ कीनों गर्व महामघवा नें बरषा बरषो नाह । तब हरि आप मेघ ह्वै बरषे करी परम सुख छाह ॥ ८६ ॥ ज्ञान उपदेश कियो पुचनको ब्रह्मा बर्त्त मझार । पाछै करि स न्यास जगतमे बिचरे परम उदार ॥ ८७ ॥ आठो सिद्ध भई सन्मुख जब करीन अंगी कार जैजैजैश्रीऋषभ देव मुनि पर ब्रह्म अवतार ॥ ८८ ॥ ब्रह्म सभा में कियो यज्ञ जब करन बेद उच्चार । प्रगट भयें हय ग्रीव महा निध पर ब्रह्म अवतार ॥ ८९ ॥ चार बेद ले गयो शंखा सुर जलमे रह्यो छिपाय । धरि हय ग्रीव रूप हरि मारेव लीने बेद छुडाय ॥ ९० ॥ सत्य ब्रत राजा रघुवंसी प्रथम भये मनु वंस । कीनों तप बहु भांति परम रुच प्रगट भये हरि अंस ॥ ९१ ॥ धरि लघु रूप मीनकों मोहन आये उनके पानि । तब उन जलमें डारिदिये फिर तब बोले हरिबानि ॥ ९२ ॥ जलके बीच डारि जिनमो कोबड़े मछ डर लाग । यह कहि बहुत रूप हरि धारेव सत्यब्रत के भाग ॥ ९३ ॥ सतवेदिवस होयगी परलय आवेगी एक नाव । तामें बैठ सत द्विज अरुतुम करो भजन ममभाव ॥ ९४ ॥ इतनों कहि हरि

शब्द अति भारी ॥ प्रगट भये नर हरि बपु धरि हरि कटकट करि उचारी ॥ पकर लियो छिन मांझ असुर बल डारो नखन बिदारी । रुधिर पानकरि आंत माल धरि जैजै शब्द उचारी ॥ मारो दैत्य दुष्ट एक छिनमें जै नृसिंह बपुधारे । पुहुपन वृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ रमा निकट नहि आवत हरि के ऐसो बपु हरि धारो । अज सनकादि देव नारद मुनि जातन रूप निहारो ॥ अपनी अपनी स्तुति करकै सबहिन यहै सुनायो गन्धरव अरु विद्या धर चारन बिमल बिमल यश गायो ॥ तब प्रह्लाद आय हरि पदसो शीश नाय यह भाष्यो । जै जै जै जगदीस जगत गुरु मोर अधम प्रनराष्यो ॥ तुमहीं आदि अखंड अनूपम अशरन सरन मुरार । देवदेव पर ब्रह्म परिपूरन भक्त हेत अवतार ॥ जहं जहं भीर परत भक्तन को तहं तहं होत सहाय । स्तुति कर मन हरष बढायो लेहन जीभ कराय ॥ तब बोले नरसिंह कृपा कर सुनो भक्त मम बात ॥ मन्वंतरको राज दियो तोहि धरो शीश पर हात ॥ निर्गुन सगुन होय मैं देखो तोसो भक्तन पाऊं । जहं जहं भीर परत भक्तनको तहां प्रगट होआऊं ॥ सुन प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको कबहुंन त्यागूं । जैसैधेनु बछको चाटत तैसै में अनुरागूं ॥ जो मांगो सो देहु तुरतहीं नहि विलंब कछु लाग तब प्रह्लाद यही वर माग्यो चरन कमल अनुराग ॥ किर्पा करि दीन्हो करुना निधि अटल भक्त थिर राज । अन्तर ध्यान भये हरि तहंते सुफल भये सब काज ॥ नारद रूप जगत उद्धारन बिचरत लोकनमांय । करि उपदेश ज्ञानहरि भक्तहि अरु वैराग दृढाय ॥ स्वायं भू सत रूपा दोऊ कहियत हैं अवतार । जगको धर्म प्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार ॥ करुना कर जलनिधिते प्रगटे सुधा कलस लै हाथ । आयु बेद विस्तारन कारण सकल ब्रह्मंडके नाथ ॥ क्षची दुष्ट बढे जो भुव पर लियो कृष्ण अवतार । परसुराम ह्वै कै द्विज थापे दूर किये भुवभार ॥ रघु कुल बंश चतुर चूडामनि पुरुषोत्तम अवतार । दशरथके गृह जन्म लियो हरि रूप रास सुकुमार ॥ रावण कुम्भकरन असुराधिप बढे सकल जग मांह । सब हिन लोकपाल उनजीते कोऊ बांच्यो नांह ॥ सकल देव मिल जाय पुकारे चतुराननके पास । लै शिव संग चले चतुरानन क्षीर सिन्धु सुखबास ॥ अस्तुति करि बहु भांति जगाये तबजागे निज नाथ । आज्ञा दई जाय कपिकुलमें प्रगटो सब सुर साथ ॥ तब ब्रह्मा सबहिन सों भाष्यो सोई सब सुर कीन्हो । सातों द्वीप जाय कपिकुलकमें आय जन्मसुर लीन्हो ॥ अपने अंश आप हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निज रूप । नारायण भुवभार हरो है अति आनन्द स्वरूप ॥ वासुदेव यों कहत वेदमें हैं पूरन अवतार ॥ शेष सहस मुख रटत निरन्तर तऊ न पावत पार ॥ सहस वर्षलों ध्यान कियो शिव राम चरित सुखसार । अव गाहन करि कै सब देख्यो तऊ न पायो पार ॥ बिती समाधि सती तब पूछ्यो कहो परम गुरुईश । काको ध्यान करत उर अन्तर को पूरण जगदीश ॥ तब शिव कह्यो राम अरु गोबिन्द परम इष्ट एक मेरे । सहस बर्षलों ध्यान कर तहँ रामकृष्ण सुखकेरे ॥ तामें राम समाधि करी अब सहस बर्षलो बाम । अति आनन्द मगन मेरो मन अंग अंग पूरन काम ॥ दाया करि मोको यह कहिये अमर होहु जेहि भांति । मोहि नारद मुनि तत्व बतायो तातें जिय अकुलात ॥ तब महदेव कृपा करिकै यह चरित कियो विस्तार । सो ब्रह्मांड पुरान व्यास

मुनि कियो बदन उचार ॥ मुनि बालमीक किर्पा सातों ऋषि राम मंच फलपायो । उल टो नाम जपत अघ बीत्यो पुन उपदेश कर।यो॥ राम चरित बरननके कारण बाल मीक अवतार ।। तीनों लोक भये परि पूरण राम चरित सुखसार ॥ शत कोटी रामायण कीनो तऊ न लीनोँ पार । कह्यो बशिष्ठ मुनि रामचन्द्र सेा रामायण उचार ॥ काग भुशुंड गरुड सेा भाष्यो रामचरित अवतार ।। सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र जससार ॥ कछु संक्षेप सूर अब बरनत लघुमति दुरबल बाल ।। यह रसना पावन के कारन मेंटन भव जंजाल ।।। तीनों व्यूह संगलै प्रगटे पुरुषोत्तम श्रीराम ।। संकरषन प्रद्युम्न लक्ष्मिण भरत महासुख धाम ।। शत्रुघ्नहि अनुरुद्ध कहीयतु है चतुर व्यूह निजरूप रामचन्द्र प्रगटे जबगृहमें हरषे कोसल भूप ।। पुष्य नक्षत्र नेामी जु परमदिन लगन शुद्ध शुभ बार ।। प्रगट भये दशरथ गृह पूरन चतुर्व्यूह अवतार ॥ अति फूले दशरथ मनहीं मन कौसिल्या सुखपायेा ।। सौमित्रा केकइ मनआनंद यह सबहिन सुतजायेा ।। गुरु बशिष्ट नारद मुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी ।। रामचन्द्र विख्यात नामयह सुरमुनि की सुधि लीनी ॥ देतदान नृपराज द्विजन को सुरभी हेमअपार ।। सब सुन्दरि मिलिमंगल गावत कंचन कलश दुआर ।। आयेदेव और मुनिजन सब दे असीस सुखभारी ।। अपने अपने धाम चले सब परम मोद रुचिकारी ।। मनबांछित फल सबहिन पायेा भयेा सबन आनंद ।। बालरूप ह्वै के दशरथ सुत करत केल स्वछंद ॥ घुटुरन चलत कनक आंगन मै कोशल्या छबिदेखत । नीलनलिन तन पीत झगुलिया घनदामिन दुतिपेखत ।। कबहुंक माखन रोटी लेकै खेल करत पुन मांगत । मुखचुंबत जननी समुझावत आयकंठ पुनलागत कागभुसुंड दरशको आये पांच बर्षको देखे । स्तुतिकरी आपुबर पायेा जन्म सुफल करि लेखे ॥ किर्पा करि निजधाम पाठायेा अपनो रूप दिखाय । वाके आश्रम कोउबसत है माया लगतन ताय ।। प्रातकाल उठ जननि जगावत उठो मेरे बारे राम । उठिबैठे दंतु बनलै आई करी मुखारो स्याम ॥ चारो भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल आचमन आरती करकै फिर को हों असनान ॥ करतशृंगार चार भइयामिल शेाभाबरनि न जाई । चिच बिचिच सीस चौतनिया इंद्रधनुक छबिछाई ।। अलकावलि मुक्तावलि गूंथी डोर सुरंग बिराजै । मनहुं सुरसरी धार सरस्वती यमुना मध्य बिराजै ।। तिलक भालपर परममनोहर गेारोचन को दीनो । मानेा तीन लोककी शेाभा अधिक उदय सेा कीनो ।। खंजन नैंन बीच नाशापुट राजत यह अनुहार । खंजन जुग मनेालरत लराई कीर बुझावत रार ।। नाशाके बेसरमैं मेाती बरन बिराजत चार । मनेाजीव शनि शुक्ररक ह्वै बाढे रविके द्वार । कुंडल ललित कपेाल बिराजत झलकत आभा गंड । इन्दी बर पर मनेा देखियत रबि की किरन प्रचंड ॥ अरुण अधर दमकत दसनावलि चारुचिबुक मुसक्यान । अतिअनुराग सुधाकर सींचत दाडिम बीज समान । कंठसिरी बिच पदक बिराजत बहुमणि मुक्ताहार । दहिनावर्त्त देत ध्रुवतारे सकल नखत बहुवार ॥ रतन जडित कंकन बाजूबंद नगन मुद्रिका सेाहै । डार डार मनु मदन बिटपतरु बिकच देख मन मेाहै ।। कटि किंकिणि रुनझुनु सुनि तनकी हंसकरत किलकारी । नूपुर धुनि पग लालि पन्हैया उपमा

नृपदेखतहीं भये जो अन्तरध्यान। सातें दिवस भयो जब परलय तबकीन्हों नृपज्ञान॥ ९५॥ सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लिये द्विज साथ। बैठो नाव ध्यान हरिको करि दरशन दीनों नाथ॥ ९६॥ बासुकि नाग आय तहं ततक्षन बांधो दृढ कर नाव। पूछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्व बिधान बनाव॥ ९७॥ बहुत काल लौं बिचरे जलमें तब हरि भये सुशांति॥ बीत्यो प्रलय बिबिध नाना कर सृष्टि रची बहु भांति॥ ९८॥ यह हरि मछ रूप जब लीन्हों कियो चरित बिस्तार। जै जै जै श्री मीन महा बपु जै जै जगत अधार॥ ९९॥ सुर अरु असुर मथन कीनो निधि चौदह रतननिकार। परबत पीठ धरेव हरि नीके लिये कूर्म अवतार॥ हरिन कशिप अति प्रबल दनुज है कीन्हों तप परचंड। तब उन बरदीन्हों चतुरानन को हों अमर अखंड॥ जब तप गयो तबहिं मघवाने सबसंपति गहि लीन्हीं। गहे जब कच कामिनि राजा की तब नारद सिखदीन्हों॥ याके गर्भ बसतहै हरि जन सुन सुरपति यह बात। तब तज दई आपु लै आये निज आश्रम बिख्यात॥ नित प्रतिज्ञान कथा हंसनसों कहत रहत मुनि राज। सुनि प्रह्लाद प्रसन्न कोषि में अति आनन्द समाज॥ तापाछे तप कियो असुर बहु फिर देख्यो निज धाम। तब नारद मुनि दई कथा धू लै आयो है गाम॥ पाछें लोक पाल सब जीते सुर पति दियो उठाय। बरुन कुबेर अगिनि यम मारुत सुबस कियो क्षिणमाय॥ हाहाकार भयो सुर लोकन गये सबै अजपास। तब अज ध्यान कियो माधव को बानी भई अकास॥ सकल लोक यह देत असुर दुख तऊन करो संघार। जब मेरे जनको दुख देहै छिनहिं में डारौं मार॥ जब प्रह्लाद प्रगट याके गृह पांच बर्ष के भये हैं। आदर बहु कीन्हों राजाने पढन बिप्र गृह गये हैं। जब वह बिप्र पढावै कछु कछु सुनकै चित धरि राषै। जब वह जाय तबहिं सब हिन सें राम राम मुख भाषै। लरिका और पढत शाला में तिन हि करत उपदेस। हरिको भजन करो सब ही मिल और जगत सुख लेस। यहि बिधि कर उप देश सबनको किये भजन रसलीन। संडामर्क जो पूछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन। राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तन के हितकाज। सोई सार जगत में कहियत सुनो देव द्विजराज। एही बात जगत में नीकी सोई पढत हम आज। जबहीं बिप्र कह्यो जो असुर सो पुत्र पढत बिन काज। तबहि असुर प्रहलाद बुलाये लिये गोद भरि अंक। कहो पुत्र तुम कहा पढो हो पूछत कह्यो निसंक। श्रवन कीरतन स्मरन पादरत अरचन बंदन दास। सख्य और आत्मा नैबेदन प्रेम लछनाजास॥ सुनोपिता हो यही पढ्योहुं और बात नहि जानू। इनतें और मोहि जो कहियत सो कबहूं नहिं मानू॥ दीनों पटक भूप धर नीप कह्यो बिप्रसों खीझ। रे मूरख तू कहा पढायो कैसें देउ तोहि रीझ॥ जो यह मेरो बैरी कहियत ताको नाम पढायो। देहु गिराय याहि परवत तै क्षिनगत जीव करायो॥ ॥ खेलत॥ दीनों डार सैलते भूपर पुन जल भीतर डारो। डार अग्निमें शस्त्रन मारो नाना भांति प्रहारो॥ तऊ नघात भई अंगन की जहं तहं राम बचायो। तब नृप आप शस्त्र करगह कै बहुतहि त्रास दिखायो॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यों कहि गरजन कीनी। घट घट जल थल व्योमधरनि में व्यापक यह धुनि लीनी॥ तबलै खड्ग खंभमें मारो भयो

कौन बिचारी ॥ भूषन बसन आदि सब रच रच माता लाड लडावै ॥ रामचन्द्र की देख माधुरी दरपन देख दिखावै ॥ निज प्रति बिंब बिलोक मुक्त मैं हंसत राम सुखरास । तैसेई लछमन भरत शत्रुहन खेलत डोलतपास ॥ दशरथ राय न्हाय भोजनको बैठे अपनेधाम । लावो बेगि राम लछमन को सुनिआये सुखधाम ॥ बैठे संग बाबाके चारों भैया जेवन लागे ॥ दशरथ राय आपु जेवंतहै अति आनंद अनुरागे ॥ लघु लघु ग्रास राम मुखमेलत आपु पिता मुख मेलत । बालकेलि को बिसद परम सुख सुख समुद्र नृपझेलत ॥ दाल भात घृत कढी सलोनी अरु नाना पकवान । आरोगत नृप चारि सुच मिलिअति आनंद निधान ॥ अचवन कर पुन जल अचवायो जब नृप बीरा लीनो । राम लषन अरु भरत शत्रुहन सबनहिन अचवन कीनों ॥ बीरा खाय चले खेलनको मिलिकै चारो बीर । सखा संग सब मिले बराबर आये सरजूतीर ॥ तीर चलावत सिष्य सिखावत धर निसान देखरावत । कबहुंक साधु अश्वचढि आपुन नानाभांति नचावत ॥ कबहुंक चारभ्रात मिलि अगिया जात परम सुख पावत । हरिन आदि बहुजंतु किये बध निज सुरलोक पठावत ॥ यहि बिधि बन उपबन बहु क्रीडा करी राम सुखदाई । बालमीक मुनिकही कृपाकर कछुएक सुर जोगाई ॥ भई सांझ जननी टेरत है कहां गये चारो भाई । भूख लगी ह्वै है लालन को लावो बेग बुलाई ॥ इतने मांझ चार भइया मिल आये अपने धाम । मुखचुंबत आरती उतारत कौशल्या अभिराम ॥ सौमित्रा केकइ सुखपावत बहु बिध लाड लडावत । मधु मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेवावत ॥ चारों भ्रातन अमितजानिके जननी तब पोढाये चांपत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर सुरगाये ॥ आई नींद राम सुख पागे दिन को श्रम बिस रायो । जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठ लगायो ॥ बिश्वामित्र बडे मुनि कहियत यज्ञकरत निजधाम । मारिच खोर सुबाहु महासुर बिघन करत दिन याम ॥ परब्रह्म अवतार जान कै आये नृप के पास । दशरथ राय बहुत पूजा बिधि किये प्रसन्न हुलास ॥ भोजन कर जबहीं जु बिराजे तब भाष्यो मुनि राय । यज्ञ सुफल कीजै मेरो अब दीजै राम पठाय ॥ तबनृप कह्यौ रामहै बालक मोको आज्ञा कीजै । तबद्विज कह्यो राम परमेश्वर बचन मान यह लीजै ॥ गुरुबसिष्ट सब बिध समुझाये राम लषन संग दीन्हें । मारग में अहिल्या उद्धारो नावक निज पद छीनें ॥ बिश्वामित्र सिखाई बहुबिधि बिद्या धनुष प्रकार । मारग में ताडका जुआई धाई बदन पसार ॥ छिनमें राम तुरत सो मारी नेक न लागी बार । दीन्ही मुक्तिजानि निज महिमा आये ऋषिके द्वार ॥ कीन्हे बिघ्न यज्ञ परि पूरन असुर बिघ्न को आये । अग्निबान कर दहन कियो है एक समुद्र पठाये ॥ जनक बिदेह कियोजु स्वयंबर बहु नृप बिप्र बुलाये ॥ तोरन धनुष देख अंबक को काहू जतन नपाये ॥ बिश्वामित्र मुनि बेग बुलाये सकल सिष्य लै संग । राम लषन संग लिये आपने चले प्रेम रस रंग ॥ जहं तहं उझक झरोखा झांकत जनक नगर की नार । चितवनि कृपाराम अवलोकत दीनों सुखजु अपार ॥ कियो सनमान बिदेह नृपतिने उपबन बासो कीनों । देखन राम चले निज पुरको सुख सबहिन को दीनो ॥ सबपुर देखि धनुष पुन देख्यो देखे महल सुरंग । अद्भुत नगर बिदेह बिलोकत सुख पायो सब अंग ॥ कहतनारि

सब जनक नगर की विधि सेा गोद पसार । सीता जू को वरयह चहिये है जोरी सुकुमार ॥ अपने धाम फिर तब दोऊ आये जान भई कछु सांझ । कर डंडवत परसि पद ऋषि कै बैठे उप बन मांझ ॥ संध्या भई कृत्य नित कर कै कीनों ऋषि परनाम । पौढे जाय चरन सेवा द्विज करके अति विसराम । ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई । कर परनाम देव गुरु द्विजको जल सुखान कराई । आये भूप देश देशन के जुरी सभा अति भारी । तहां बुलाये सकल द्विजन को जनक सभा मंझारी । कौशिक मुनि तह छबिसों पधारे लिये शिष्य संगसात । चले नित्य आन्हिक सब कर द्विज उर आनंद नसमात । दोनों भ्रात संग मैंलीन्हें आये राज दुआर । जहं बैठे सब भूप ओपसो बाग्यो गरभ अपार । अपने अपने भुज बल तोलत तोरन धनुष पुरार । कछु नहि चलत खिसाने भये सब रहे बहुत पचिहार । सीता कहत सहेलिन सो पुनि यही कहत रघुनंद । तब उन कह्यो सकल सुख सागर सो ये परमानंद । बारबार जिय सोच करत है विधि सों बचन उचारी । मन क्रम बचन यहै बरदीजो मांगत गोद पसारी । एक बार सुर देवी पूजत भयो दरस सखि मोह । तादिन तें छिन कल नपरत है सत्य कहत हो तोह । सब न्रप पचे धनुष नहि टूट्यो तब बिदेह दुख पायो । क्रोध बचन करि सब सें बोले चची कोउन रचायो । यह सुनि लक्ष्मण भये क्रोध युत विषम बचन यों बोले सूरज बंश न्रपति भूतल पर जाके बल बिन तोले । कितक बात यह धनुष रुद्र को सकल विश्वकर लैहों । आज्ञा पाय देव रघु पति की छनक मांझ हठ गेहों । सबके मन को देख अंदेसो सीता आरत जानी । रामचंद्र तबहीं अकुलाने लीन्हों सारंग पानी । छिन में करले कैजु चढायो देखत है सब भूप । डारेव तोर अघात शब्द भयो जैसें काल को रूप । सब ही दिशा भई अति आतुर परराम सुनि पायो । परसु सम्हार सिष्य संगलै के छिनहीं में तहं आयो । जै जै कार भयो जगती पर जनकराज अति हरषे । सुरबिमान सब कौतुक भूले जै धुन सुमनन बरषे । जनकराज तब बिप्र पठाये बेग बरात बुलाई । दशरथ राज बाजि गजलै कै सबहीं सोज तुराई । खेलत । चली बरात बिपुल धनलै कै जुरे मनुज नहि पार । शोभा सिंधु कहत नहि आबें बरनन करत उचार । गुरु बशिष्ठ मुनि लगन दियो शुभ शुभ नक्षत्र शुभवार । आये जान न्रपति सनमाने कीन्ही अति मनुहार । ब्याह केल सुख बरनन कीन्हों मुनि बालमीक अपार । सो सुख सूर कह्योवह कीरत जगत करी बिस्तार । बेदशास्त्र मथ करी ब्याह बिध सोइ कीन्हीं न्रपराय । राम लछन अरु भरत शत्रु हन चारों दिये बिवाय । होम हवन द्विज पूजा गनपति सूरज शक्रमहेश । दीनों दान बहुत विप्रन को राजा मिथिल नरेश । खेलत यहि बिध । उत सब भयो परम आनंद को बहुत दायजो दीनों । भये बिदा दशरथ न्रप न्रप सौ गवन अवध पुर कीनों । भृगु पति आय जानि जब रघुपति मिले धाय शिरनाय । दशरथ राय बिनय बहु कीन्हीं जिय में अति डरपाय । खेलत यहि बिध हरि होरी हो ॥ * ॥ तब मुनि कह्यौ

धनुष कौं तोरेव रुद्र परम गुरु मेरे । रामचन्द्र पूरण पुरुषोत्तम नेक नयन जब हेरे । लीन्हों अंस खेंच भृगु पति कौं अपने रूप समायो । करो जाय तप शैल महेंद्र पै सुनि मुनि वर शिर नायो । अति आनंद अयोध्या आये कियो नगर शृंगार । कदली खंभ चौक मोतिन के बांधी बंदनवार । कियो प्रवेश राज भवनन में रामचंद्र सुखरास । अद्भुत भवन बिराजत रतनन सूरज कोटि प्रकास । द्वादश बरष बिराजे बालक फिर भूभार हरो । कैकेई के बचन प्रमाण किये नृपतबयह काज करो । बचन समुझ नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । रामचन्द्र पितु आज्ञा मानी जिय में बचन धरो । यह भूभार उतारन रघुपति बहुत कृपिन सुख देन । बनो बास को चले सिया संग सुख निधि राजिव नैन । मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त एक जान । तहँते गये जु चित्रकूट को जहां मुनिन की खान । बालमीक मुनि बसत निरंतर राम मंत्र उच्चार । ताको फल यह आज भयो मोहि दरसन दियो कुमार । पूजा कर पधराय भवन में रामचन्द्र परनाम । कियो बिबिध बिध पूजा कर के ऋषि चरनन शिर नाम । बहुत दिवस लो बसे जगत गुरु चित्रकूट निज धाम । किये सनाथ बहुत मुनि कुल को बहु विधि पूरे काम । भरत जान जिय में रघुपति को दुःसह परम बियोग । आये धाय संग सब लेके पुर बासी गृह लोग । बिन दशरथ सब चले तुरत हीं कौसल पुर के बासी । आये रामचन्द्र मुख देख्यो सब को मिटी उदासी । रामचन्द्र पुनि सब जन देखे पिता न देखन पाये । पूछी बात कह्यो तब काहू मन बहुबिध बिलखाये । बेदरीति करि रघु पति सब बिधि मरजादा अनुसार । बहुत भांति सब बिध समुझाये भरत करी मनुहार । गुरु बशिष्ठ मुनि कह्यो भरत सों राम ब्रह्म अवतार । बन में जाँय बहुत मुनि तारे दूर करै भुव भार । पुन निज बिश्व रूप जो अपनों सो हरि जाय देखायो । आज्ञा पाय चले निज पुर को प्रभु हि गीत समुझायो । कछु दिन बसे जु चित्रकूट में रामचंद्र सहभ्रात । तहां तें चले दंडका बनको सुख निधि सांवल गात मारग में बहु मुनि जन तारे अरु बिराध रिपु मारे । बंदन कर सरभंग महा मुनि अपने दोष निवारे । दरशन दियो सुतच्छण गौतम पंच बटी पग धारे । तहां दुष्ट सूर्पनखा नारी करि बिन नाक उधारे । यह सुनि असुर प्रबल दल आये छिन मे राम संघारे । कीन्हें काज सकल सुर मुनि के भुव के भार उतारे । मुनि अगस्त आश्रम जुग ये हरि बहु बिध पूजा कीन्हीं । दिव्य बसन दीने जब मुनि ने फिर यह आज्ञा दीन्हीं । दशकंधर को बेगसंहारो दूर करो भुवभार । लोपा मुद्रा दिव्य बस्त्र लैदीने जनक कुमार । सूर्पनखा जब जाय पुकारी नाक कान ले हात । रावन क्रोध कियो अति भारी अधर फरक अति गात । गयो मारीच आश्रम हि तबही वानै बहु समुझायो । तब मारीच कह्यो दशकंधर बिनती बहुत करायो । रामचंद्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि पास । प्रगट भये निश्चर मारन को सुनि वह भयो उदास । कर गहि खडग तोर बध करि हो सुन मारिच डर मान्यो । रामचन्द्र के हाथ मरूंगो परम पुरुष फल जान्यो । कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता बिनती कीन्हीं । राम

चन्द्र कर सायकलैके मारन की बिध कीन्ही । मारेव धनुष बानले ताको लछमन नाम पुकारेव । लछिमन नाम सुनत तहां आये औसर दुष्ट बिचारेव । धरि के कपट भेष भिच्छुक को दश कंधर तहां आयो । हरिलीन्हीं छिन में माया करि अपने रथ बैठायो । चल्यौ भाज गोमायु जंतुज्यौं लेके हरि को भाग । इतने रामचन्द्र तहां आये परम पुरुष बडभाग । जब माया सीता नहि देखी जिय में भये उदास । पूछन लगे राम द्रुम गनसो बहुत बढी दुखरास ॥ मारगमें जटायु खगदेख्यो बिकल भयो तन हीन ॥ बिनती करी राम मैं तासो बहुत लराई कीन । जब तन तज्यों गृध्ररघुपतितब बहुत करम बिधकीनी ॥ जान्यों सखा राय दशरथको अपनी निज गति दीनी । मारग में कमंध रिपु मारेव सुरपति काज सवारेव ॥ पंपा सर हरि तुरत पधारे जलको दोष निवारेव ॥ शिवरी परम भक्त रघुपति की बहुत दिनन की दासी । ताके फल आरोगे रघुपति पूरन भक्त प्रकासी ॥ दीन मुक्ति निज पुरकी ताको तब रघुपति चले आगे । सीता सीता बिलपत डोलत परम बिरह सोंपागे ॥ * ॥ खेलत यहि बिध हरि हेारी हेा ॥ * ॥ रविनंदन जब मिले रामको अरु भेटे हनुमान । अपनी बात कही उन हरिसेा बालि बडो बलवान ॥ सप्ततालबेधन हरि कीन्हों बाली छिनक में तारेा । दीनों राज राम रविनंदन सब बिध काम सवारेा ॥ सप्तदीप के कपि दल आये जुरो सेन अति भारी । सीता की सुध लैंन चले कपि ढूंढत बिपिन मझारी ॥ जल निध तीर गये सब कपि मिल सुनि संपात कि बानी ॥ लंक बसत सीता रिपु बनमें सब बानर यह जानी ॥ रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवन सुत धाय । राम प्रताप बिघन सब मेटे पैठे नगर सुखपाय । धरिलघु रूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मझार । राम भक्त निज जान बिभीषन भेटे हरि अंकवार ॥ तब वानै सब भेद बतायेा देखी कपि सब लंक । राम चरन धरि हृदय मुदित मन बिचरत फिरत निशंक ॥ जाय असेाक बाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह । करदंडवत बहुत बिनती कर राम मुद्रिका दीन्ह ॥ सबसंदेस कह्यौ कपि सिय प्रति सुनि हियमें धरिराख्यो । राम संदेस कह्यो तब सीता जेा बूझेा सेा भाख्यो । लागी भूख चले उपबन में नाना बिध फलखाये । बिटप उखार उजार बिपिन को सबहिन को दरसाये ॥ सुनि पुकार निशिचर बहु आये कूदि सबनि संघारे । इन्द्र जीत बल निध जब आयेा ब्रह्म अस्त्र उन डारे ॥ तासों बंधे दशानन देखन चले पवन सुत धीर । रावन बहुत ज्ञान समझायेा कथ कथ कथा गंभीर ॥ चले छुडाय छिनक में तबही जारदई सबलंक । कूदिचलै गज बनको जयकर ज्यों मृग राज निसंक ॥ आये तीर समुद्र मिले कपि मिलेआय जहंराम । सुनि सुनि कथा श्रवन सीता की पुलकित अति अभिराम ॥ करि कपि कटक चले लंका को छिनमें बांध्यौ सेत । उतर गये पहुंचै लंकापै विजय ध्वजा संकेत ॥ पठये बालि कुमार बिनय कर समुझाये बहुबार । चित नहि धरी काल बस जान्यों फिर आये सुकुमार ॥ असरनसर नउदार कल्पतरु रामचन्द्र रनधीर । रिपुभ्राता जान्यों जु बिभीषन निश्चर कुटिल सरीर राख्यो सरन लंकेश कियेा पुनि जब निश्चर सब मारे । मायाकरी बहुत नाना बिध सब

को राम निवारे ॥ कुंभकरन पुन इन्द्र जीतयह महा बली बलसार । छिनमें लिये सोध मुनि बरज्यों छची बली अपार ॥ कियो प्रसाद शांतना कर कै राज बिभीषन दीनों । पुनि मंदोरि अचल आयु दै अभयदान सब कीनों ॥ समाधान सुरगन को करकै अमृत मेघ बरषायो । कृपा दृष्टि अवलोकन करकै हत कपि कटक जिआयो । निश्चर किये मुक्त सब माधव तातें जिये न कोय ॥ निरभय कियो लंकेस बिभीषन राम लषन नृप दोय सीतामिली बहुत सुखपायो धरो रूप निजमायो । पुष्पक यान बैठके नीके चले भवन सुखछायो ॥ चले पवन सुत बिप्र रूपधरि भरतहि दैन बधाई । जानि दूत रघुपति को प्रभुदित भरत मिले तब धाई ॥ सुनत नगर सबहिन सुखमान्यों जह तहँन तें चले धाई । रामचन्द्र पुनि मिले भरत सों आनंद उरन समाई ॥ कियो प्रवेश अयोध्या में तब घर घर बजत बधाई । मंगल कलश धराये द्वारे बंदन वार बंधाई ॥ राज भवन में राम पधारे गुरुबशिष्ट दरसायो । शीस नवाय बहुत पूजाकर सूरज बंस बढायो ॥ समाधान सबहिन को कीन्हों जोदरसन को आयो । कौशल्या केकई सुमित्रा मिल मनमें सुख पायो ॥ बैठे राम राज सिंहासन जगमें फिरी दुहाई । निर्भय राज रामको कहियत सुरनर मुनि सुख पाई ॥ चार मूर्त्ति धरि दरसन आये चारबेद निजरूप अस्तुति करी बहुत नाना बिध रीझे कौशिल्ल भूप ॥ शिव बिरंच नारद सनकादिक सबदरशन को आये । राम राज बैठे जब जानै सबहिन मनसुख पाये ॥ लोकपाल अतही मन हरषे सब सुमनन बरषाये । पुष्पबिमान बैठ हरिआये लैकुबेर पहुंचाये ॥ अति आनंद भयो अवनी पर राम राज सुखदास । कृतयुग धर्म भये चेता में पूरनरमा प्रकास ॥ अश्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजै द्विजन अपार । हयगज हेम धेनु पाटंबर दीन्हेंदान उदार चरित अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीनों । जनक सुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीनों ॥ जोन बसंत बहुत द्रुम फूलै जनक सुता अनुरागे । प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो हेारी खेलन लागे ॥ कबहुंक निकट देख बरषाऋतु झूलत सुरंग हिंडोरे । रमकत झमकत जनक सुता संग हाव भाव चित चोरे ॥ कबहुंक कमल सरोवर उपवन जनकसुता संगलीने । नानाजल बिहारबिहरत हैं संतजनन सुखदीनें ॥ कबहुंक रतन महल चिचसारी सरद निशा उजियारी । बैठे जनक सुता संग बिलसत मधुर कोलि मनुहारी ॥ कबहुंक अगर धूप नाना विध लिय सुगंध सुखकारी । कबहुंक निरतत देव नटीलखि रीझत हैं सुखभारी ॥ राम बिहार कह्यो नाना बिध बालमीक मुनिगायो । बरनत चरित बिस्तार कोटिसतत उपार नहिपायो ॥ सुर समुद्र की बूंद भई यह कबि बरनन कहा करिहै । कहत चरित रघुनाथ सरस्वती बैारीमत अनु सरिहै ॥ अपने धाम पठाय दिये तब पुर बासी सब लोग । जै जै जै श्रीराम कल्प तरु प्रगट अयोध्या भोग ॥ दुष्टनृपति जब बैठे भुवपर धरि भृगु पतिको रूप । छिनमे भुवको भार उतारेब परसुराम द्विज भूप ॥ व्यास रूपधै बेदबिस्तारे कीन्हे प्रगट पुरान । नाना बाक्य धर्म थापन को तिमिर हरन भुव भारन ॥ बुद्ध रूप कलि धर्मप्रकाश्यो दया सबन को मूल । दूरकियो पाखंड बाद हरि भगतन को अनुकूल ॥ कलिके आदि अंत कृतयुगके है कलकी अवतार । नारिमलेछ

धर्म फिर थाप्यौ भयो जग जयजय कार । कर्म बाद थापनको प्रगटे पृश्नि गर्भ अवतार । सुधापान दीन्हों सुरगनको भयो जग यश विस्तार ॥ असुरन को व्यामोह कियो हरिधरो मोहनी रूप । अंमृत पान कराय सुरनको कीन्हे चरित अनूप ॥ तैसें ही भुव भार उतारन हरि हलधर अवतार । कालिंदी आकर्ष कियो हरि मारे दैत्य अपार ॥ गज ग्रहग्राह लरे जल भीतर तब हरि सुमिरन कीन्हो । छोड गरुड सुखधाम सांवरो भक्तन को सुख दीन्हों ॥ जब बहु असुर बढे पृथिवीपर कियो अनर्थ विस्तार । सत्यसेन प्रगटे विश्वंभर सत्य कियो है अपार ॥ निज वैकुंठ बसायरमापति कियो रमाको हेत । विनती सुनि कमला की केशव कीन्हों सुख संकेत ॥ ब्रह्मचर्यथापन के कारण धरो विभू अवतार । जहं तहं मुनिबर निज मरियादा थापी अघट अपार । अजित रूप ह्वै शैल धरो हरि जल निध मथवे काज । सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्त के काज ॥ जब बलि राजा गये देवपुर लीन्हों स्वर्ग छुड़ाय । अदि तीदुखित भई कश्यप सोंविनती करी सुनाय ॥ तब कश्यप मुनि कह्यो पयो व्रत विधि सों करो बनाय । ताकी कूख जन्म हरि लीन्हों श्रीबामन सुखदाय ॥ भादौं श्रवणद्वादशी शुभ दिन धरो विप्र हरि रूप । शिव विरंचि सनकादिक आये वन्दनको सुखभूप ॥ यज्ञउपवीत विधोक्तकियो विधि सब सुर भिक्षा दीनी । बामन रूप चले हरि द्विज वरबलिको मन सुध कीनी ॥ दंड कमंडल हाथ विराजत और ओढें मृगछाला । धरि बटुरूप चले बामनजू अंबुज नैन विशाला ॥ सूरज कोटि प्रकाश अंगमें कटिमेखला विराजै । करी वेद धुनि नृप द्वारेपैं मनहु महा घन गाजै ॥ सुनि धाये तबहीं बलिराजा आय चरण शिर नायौ । बिनती करी बहुत सुखमान्यौ आज भयौ मनभायौ ॥ चलिये विप्र यज्ञ शाला में जहां द्विजबरसब राजैं । आये ब्रह्मसभाम बामन सूरज तेज विराजैं ॥ तबनृपकह्यो कछू द्विज मांगो रतन भूमि मणि दान । हय गज हेम रतन पाटम्बर दैहौं प्रगट प्रमान ॥ तब बोले बामन यह बानी सुन प्रह्लाद कुल भूप । बहुत प्रति ग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप ॥ तीन पैंड वसुधा हम पावैं परन कुटी एक कारन । जब नृप भुवसंकल्प कियो है लागे देह पसारन ॥ एक पैंड में वसुधानापो एक पैंड सुरलोक । एक पैंडदीजै बलि राजा तब ह्वै हो विनशोक ॥ नांपो देह हमारी द्विजबर सो संकल्पितकीन्हों । सुन प्रसन्न बामन यों बोले तैमोकूं बसकीन्हो ॥ सदा द्वारतेरे ठाढो ह्वै दरशन दैहौं तोहि । माया काल कबहुं नहि व्यापै सुमिरन करतै मोहि ॥ सुतल लोकमें थिरकर थाप्यो जहं बिभूति अति भारी । गहिकै गदा द्वारपर ठाढे बामन ब्रह्म मुरारी ॥ स्वर्ग लोक दीन्हों सुरपति को पुनि थिर करकर थाप्यौ । निगमनेति कहि रटत निरंतर देवशचु सबकांप्यौ बामन रूप ब्रह्महरि प्रगटे जिनकों यश जगगावै । शेष सहस मुख रटत निरंतर सूर पार किमपावै ॥ पुन बलिराजहि स्वर्ग लोकमें थापैंगे हरिराय । सार्व भौम अवतार धरेंगे श्रीबामन सुखदाय ॥ पुनि बिभु रूप एक हरि लेंगे सकल जगत कल्यान । कपट खंड पाखंड असुर कों थापें भक्तनिदान ॥ विष्वक् सेन रूप हरि लेंगे कीन्हो शिवकोहेत। असुर मार सब तुरत बिदारे दीन्हें रुद्र निकेत ॥ धर्मसेत ह्वै धर्म बढायो भुविको धारन

कीनेां । शेष रूपहै धरा सीस फिर सब जगको सुखदीनों ॥ अंतरयामी पालन कारन निज सुधर्म धरि रूप । अन्नदान दै सब जग पोष्यो किये काज सुरभूप ॥ योग पंथ पातंजल भाष्यो सोउ छीन जब जान्यौ । योगेश्वर बपु धरि हरि प्रगटे योग समाध प्रमान्यौ ॥ क्रिया पंथ श्रुतिने जेा भाष्यो सेा सब असुर मिटायौ । ब्रहद् भान है कै हरि प्रगटे छिन में फिर प्रगटायौ ॥ यह अनेक अवतार कृष्णके को करि सकै बखान । सोई सूरदास ने बरने जेा कहै व्यास पुरान ॥ अंस कला अवतार श्याम के कविपै कहत न आव । जहं जहं भीर परत भक्तन को तहं तहं बपु धरिधावै ॥ माया कला ईश चतुरानन चतुर्भूं हधरि रूप । बायु बरुण अरु यमकुबेर शशि मृत्यु अग्नि सुर भूप ॥ रबि शशि भृगु मरीच सुर गुरु अरु चार बेद बपुजान । जगकों प्रगट करन परजापति प्रगटे कला निधान ॥ जेा जेा भूप भये भुव मंडल लेाक पाल निजज्ञान । निज महिमा हरि प्रगट करी है विधि के बचन प्रमान ॥ सुर अरु असुर रची हरि रचना सेा जग प्रगट सब कीन्ही । क्रीडा करी बहुत नाना विधि निगम बात दृढचीन्ही ॥ यहि विध हेारी खेलत खेलत बहुतभांति सुखपायेा । धरि अवतार जगत में नाना भक्तन चरित दिखायेा ॥ अंश कला अवतार बहुत बिधि राम कृष्ण अवतारी । सदा बिहार करत वृजमंडल नन्दसदन सुखकारी ॥ नित्य अखंड अनूप अनागति अवगत अनघ अनन्त । जाको आदि कोऊ नहि जानत कोऊ न पावत अन्त ॥ जब हरि लीला की सुधि कीन्ही प्रगट करन बिस्तार । श्री वृषभान रूप है प्रगटे पुनि वृजराज उदार ॥ विद्या ब्रह्मकही यशुमति सेांजाकी कूषउदार । सेा रहकला चंद ज्यों प्रगटे दीनोंतिमिर बिदार ॥ पुन बसुदेव देवकी कहियत पहिले हरि बर पायेा । पूरण भाग्य आय हरि प्रगटे यदुकुल ताप नसायेा ॥ आठे बुद्ध रोहनी आई शंख चक्र बपु धारेा । कुण्डल लसत किरीट महाधुनि बपु बसुदेव निहारेा ॥ अस्तुतिकरी बहुत नाना विध रूप चतुर भुज देख्यौ । पीताँबर अरु श्याम जलद बपु निरख सुफल दिन लेख्यौ ॥ तब हरि कह्यो जन्म तुम्हरे गृह तीन बार हम लीन्हों । पृश्नीगर्भ देव ब्राह्मण जेा कृष्णरूप रंगभीन्हों ॥ मागेा सकल मनेारथ अपने मन बांछित फल पायौ । शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयौ ॥ यह भुव भार उतारन कारन हल धर को संगलायौ । क्रीडा करेा लेाक पावन करकरौं भक्त मनभायौ ॥ प्राकृत रूप धरेा हरि छिनमें शिशु है रेावन लागे । तब बसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रसपागे ॥ तब देवकी दीन है भाष्यो नृपको नाहि पतीजै । अहेा वसुदेव जाव लै गेाकुल कह्यो हमारेा कीजै ॥ तब लै हरि पलना पेाढाये पीतांबर जु ओढायेा । तब बसुदेब शीस धरि पलना भयेा सबन मनभायेा ॥ गेाकुल चले प्रेम आतुर है खुलगये कपट कपाट । सेाये स्वान पहरुआ सेाये सबे मुक्तभई बांट ॥ तब बसुदेव लियेा कर पलना अपुने शीश चढायेा रैन अंधेरी कछु नहि सूझत अटकर अटकर आयेा ॥ शेष सहस फन ऊपर छाये घनकी बूंद बचावें । आगे सिंहहुंकारत आवत निरभै बाट जनावें ॥ यमुना अति जलपूर बहतहै चरण कमल परसायेा । मारग दीन्हों रामसिन्धु ज्यों नन्द भवन चलिआयेा ॥ पहुंचे आय महर मंदिर में नेक न संकाकीनीं । बालक धरि लैकै सुरदेवी सुरत गवनकी

कीनों॥ लै बसुदेव तुरत घर आये काहू जिय नहिजाने । जब वह रोवन लागी तब सब जागपरे अकुलाने ॥ बालक भयो कह्यो नृपसों जब दौरि कंस तब आयो । कर गह खडग कह्यो देवकि सों बालक कहं पहुंचायो ॥ तब देवकी अधीन कह्यो यह में नहिं बालक जायो । यह कन्या मोहि बक्स बीर तू कीजै मो मन भायो । कंस बंस को नास करत है कहा समुझ रिसआयो । मोको भई अनाहद बानी तातें डर नहि जानी । बन्या मांगलई तब राजा नेक शंक नहिं आनी । पटकत शिला गई आकासे कंस प्रतीत न मानी । भइ अकास बानी सुर देवी कंस यहां अब आई । तेरो शत्रु प्रगट कहुं ब्रज में काहु लख्यो नहि जाई । जैसे मीन करत जल क्रीडा जल में रहत समाई । त्यौं तुव काल प्रगट एक कतहूं लख न सकत तेहि कोई । अंतर ध्यान भई सुरदेवी कंस प्रतीत जो मानी । तब बसुदेव देवकी के गृह बंस गयो यह जानी । क्षम अपराध देवकी मेरो लिख्यो न मेट्यो जाई । मैं अपराध कियो सिशु मारे कर जोरे बिललाई । पुन गृह आय सेज पर सोयो नेकु नींदनहि आवें । देश देश के दूत बुलायो सबहिन मतो सुनावें । दीनहीन जो असुर चहत बलि करत सकल पुनि तैसो । बूझत नहि तन भार उतारेव जल को मोखन जैसो । भयो भोर यशुमति गृह आनंद मंगल चार बधाई । जागी महर पुत्र मुख देख्यो आनंद उर नसमाई । जैसे शशि प्रगटत प्राची दिशिसकलकला भरि पूर । यशुमति कूख आय हरि प्रगटे असुर तिमिर कर दूर । नंदराय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो । विप्र बुलाय बेद धुनि कीनी स्वस्ती बचन पढायो । जात कर्म कर पूजि पितर सुर पूजन विप्र करायो । द्वैलष धेनु दई तेहि औसर बहुतहि दान दिवायो । परवत सात तिलनको कीन्हों रतन्न आध मिलायो । मागध सूत और बंदी जन ठौर ठौर यश गायो । बाजे बजत बिचित्र भांति सों रह्यो घोष सबगाज । सुर सुमनन बरषा बत गावत व्योम विमान न साज । बांधत बंदन बार साथिये द्वारे ध्वजा सुहाई । कनक कलस प्रति पौर विराजत मंगल चार बधाई । सुरभी वृषभसिंगारे बहु बिधि हरदी तेल लगाई । सुबरन माल बिचित्र धातु रंग अंग अंग चित्र बनाई । आये गोप भेट लै लै के भूषन बसन सुहाये । नाना बिध उपहार दूध दधि आगे धरि शिर नाये । यशुमति के गृह पुत्र प्रगट भयो सुनी सकल ब्रजनारी । मंगल साज संवार हाथ लै घर घर मंगल कारी । अति आतुर ह्वै चलीं झुंड जुरि सिर सुमनन बरषावें । मानों रीझ मधुप धरनी को रस पराग दरसावें । पहुंचीं जाय महर मंदिर में करत कुलाहल भारी । दरसन करि यशुमति सुत को सब सैन लगीं बलिहारी । नाचत गोप परस पर सब मिल छिरकत हैं नवनीत । दूध और दधि और हरद जल सींचत हैं कर प्रीत । यशुमति कूख सराहि बलैया लेत लगीं ब्रजनार । ऐसो सुत तेरे गृह प्रगट्यो या ब्रजको शृंगार । यशुमति रानी देत बधाई भूषन रतन अपार । फूली फिरत रोहनी मइयानखशिखकर शृंगार । देत अशीश चलीं ब्रज सुंदरि जिय उपज्यो सुख भारी । ग्रह पूजन

सब कियो बेद बिधि नंदराय सुख कारी । देश देश ते ठाढी आये मन बांछित फल पायो । को कहि सकै दसोधी उनको भयो सबन मन भायो । तादिन ते सग रेया ब्रज में रमा रूप दरसायो । निज कुल इष्ट जान एक ठाढी गोवर्द्धन ते आयो । परम उदार महर ब्रज पतिजू ठाढी निकट बुलायो । बजत हुडुक मंजीरा नूपुर नाना भांति नचायो । झंगा पगा अरु पाग पीछोरा ठाढिन को पहिरायो । हरि दरयाई कंठ लगाई पर दरसात उठायो । बहुत दान दीन्हें उपनंद जूरत न कनक मनि हीर । धरानंद धन बहुतहि दीन्हों ज्यों बरषत घननीर । कुंडल कान कंठ माला दै भुवनंद अति सुख पायो । सीधो बहुत सुर सुरानंदै गाडा भरि पहुं चायो । कर्मा धर्मा नंद कहत है बहुतहि दान दिवायो । ब्रजरानी ठाढिन पहिराई मन बंछित फल पायो । चले भवन को दै असीस दोउ निरभय कीरत गवै । जिन याचै ब्रज पति उदार अति याचक फिर नकहावै । नना बिध के बिविध खिलोना रतनन अधिक अमोले । ताको लेन गये मथुरा को आनकंदुदु भि बोले । बेगजाव गोकुल तुम अबही सुनियत है उतपात । सुनि ब्रजराज तुरत घर आये जिय में अति अकुलात । प्रथम पूतना कंस पठाई अति सुंदर वपुधारेव । घसके गरल लगाय उरोजन कपट न कोउनिहारेव । लिये उठाय श्याम सुंदर कोथन गहि के मुखलीनो लीन्हें खेंच प्राण बिषपय जुत देह बिकल तब कीनो । छांड छांड कहि परी धरनि पर कर चरनन जुपसार । जो जन डेढ बिटप बेली सब चूर चूर कर डार । ताको जननी की गति दन्हीं परम कृपाल गोपाल । दीन्हों फूक काट तन वाको मिलके सकल गुआल । एतने नंदराय जू आये कौतुक सुनि यह भारी । बिस्मित भये देखने राख्यो बालक यह सुखकारी । बिप्र बुलाय बेद धुनि कीन्हीं रक्षा बहुत कराई । आरति बिबिध उतार महरजू मंगल करत बधाई । एकदिना हरि लई करोटी सुन हरषी नंदरानी । बिप्र बुलाय स्वस्ति बाचन करि गोहनी नैन सिरानी । नित मंगल नित होत कुलाहल नितनित बजत बधाई । भादौ देव छट्ठिको शुभ दिन प्रगट भये बल भाई । बर्ष देवस पहिले ब्रज मंडलशेष महा वपुलीन्हो । अपनो धाम जान प्रगट्यो भुव रूप प्रगट निज कीन्हों ॥ * ॥ खेलत यहि बिधि हेरी हो ॥ * ॥ कंस नृपति नेसकट बुलायो खेकर बीरा दीन्हों । आय नंद गृह द्वार नगर में रूप सकट को कीन्हों । मारी लात स्याम पलना ते परेव धरणि भहराय । जहंतहंते दौरे ब्रजवसी श्यामहि लिया उठाय । बच्छ पुछ लै दियो हाथ पर मंगल गीत गवायो । यशुमति रानी कूप सिरानी मोहन गोद खिलायो । एक दिन स्तन पान करावत यशुमति अति बड भागी । बदन पसार बिस्व दिखरायो छन एक मुरछा जागी । तृणावर्त्त बिपरीत महा खलसो नृपराय पठायो । चक्र बातछै सकल घोष मै रजधुंधर छै छायो । चल्यो उठाय गोपाल ब्योममें तब हरि कंठ गहायो । पटक्यो शिला खरिक कै आगे छिन तिर जीवकरायो । गर्ग राज मुनि राज महा ऋषि सो बसु देव पठायो । नाम करण ब्रज राज महर घर अति आनंदित आयो । नाम करन कीन्हों दोहुन को नारायण सम भाषै । तुमरे दुःख मिटावन कारन

पूरण को अभिलाषै । राम कृष्ण अवतार मनो हर भक्तन के हित काज । बहुत हि काज करेंगे तुमरे सुनहु महर व्रजराज । एक दिना पलनां हरि पोढे नंद महर के द्वार । नंद रानी गृह कारजलागी नांहिन लई संभार । कंस नृपति एक असुर पठायौ धरेव काग को रूप । सन मुख आय नैन दोऊ जोरे देख्यो स्यामको रूप । कंठ चांप बहु वार फिरायो पटक्यौ नृप के पास । एक याम में बचन कह्यौ यह प्रगट भयो तुवनास । यह कहि के तन त्याग कियो उन कंस नृप तिके आगे । भयो उदास सुहात न कछुए छिन सोवत छिन जागे ॥ एक दिना व्रजराज महरजू और यशोदारानी । घुटुअन चलत श्यामको देखत बोलत अंमृतबानी ॥ इततें नंद महर बोलत हैं उततेंजननि बुलावत । सुंदर स्याम खिलौना कीन्हों हंसि हंसि गोद बढ़ावत ॥ शशिकूं देख और हरिठांनी करि मनुहार मनावत । मधुमेवा पकवान मिठाई विविध खिलोना लावत ॥ कमल नैन को महर यशोदा जल प्रति बिंब दिखावत । फेरत हाथ चंद पकरनको नाहिन हेात लखावत ॥ बूढे बाबू दरसन आये लायचन्द्र मणि दीनी । ताकूं देख और सबछांडी भोजन की सुधकीनी ॥ औ श्रीदूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे । पीवत देख रोहनी जसुमति डारत हैं तृन तोरे ॥ कछुदिन भये संगदोऊ बालक बल मोहन दोऊ भाई । चोरी करत हरत दधिमांखन लीला कहिय नजाई ॥ सब व्रजनार उराहन आईं व्रजरानी के आगे । मैंनाहिन दधिखायौ याको सिसु ह्वै रोवन लागे ॥ एक दिना व्रज पतिकी पौरी खेलत हरि व्रजबाल । मांटी खाय वदन देखरायो चंचल नैन विशाल । सकल ब्रह्मांड उदर में देख्यो व्रजमंडल पाताल ॥ नंदमहर जसुदा रोहनि पुन धेनु सकल व्रजग्वाल ॥ हृदय ज्ञान उपज्यो तब जसुमति पूरन ब्रह्म बिसेषे । हरि उपजाई मायातब सब बहुर पुच करि लेषे ॥ एक दिना दधि मथन करत हीं महर घोष की रानी । हरिमांग्यो माखन नहि दीन्हो तब मनमें रिसठानी फोरे भांड दही आंगन में फेल परेव अतिभारी । दौरी पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ॥ जानी बिकल बहुत जननी को हरि पकराई दीन्ही । बहुत दाम लै बांधन लागी आंगुर ह्वै भई हीनी ॥ व्याकुल भई बंधत नहि मोहन दयाश्याम को आई ऊखल दांम बधे हरिजाने गोपी देखन धाई ॥ तोलौं बधे देवदामोदर जौलों यह कृत कीन्ही । देख दुखित ह्वै सुत कुबेर के कृपा दृष्टि कर दीन्ही ॥ नारद मुनिको आपपाय के श्याम दई गति ताहि । निकसे बीच अटक ऊखल में श्याम रहे अटकाय । चरन परसि ते पुलकि भए भुव परे वृक्ष भहराय । भयो शब्द आघात स्वर्ग लौं सुनि आये व्रजराय अस्तुति करि वे गये स्वर्ग को अभय हाथ करि दीन्हों । बंधन छोर नंद बालक को लै उछंग कर लीन्हो ॥ यशुमति जू सौंलरे महर जू तुम क्यों बांध्यो दाम । गर्ग कह्यो मोहै नारायण आये हैं बलश्याम ॥ यशुमति माय धाय उरलीन्हो राई लोन उतारो । लेतबलाय रोहनी नीकै सुंदर रूप निहारो ॥ कबहुंक कर कर ताल बजावत नानाभांति नचावत । कबहुंक दधि मांखन के कारन आछी और मचावत ॥ बड़े गोप उपनंद बुलाये नंदमहर के धाम । कीन्हे मंत्र गोप सबमिलकै जेहि विधि पूरण काम ॥ बहु

उतपात रहत हैं गोकुल नित प्रति कंस पठायो । अंत जाय कहुं बास करेंगे बालक देव बचायो ॥ अब वृंदावन जाय रहेंगे जह बीरुध तृनपानी । चले गोप अति ओप बिराजै बोलत होहो बानी ॥ यमुना उतर आंय वृंदाबन जहां सुखद द्रुमराजैं । गोबर्द्धन वृंदाबन यमुना सघन कुंज अति छाजैं ॥ बसेजाय आनंद उमगसो गइयांसुखद चरावै आयो दुष्ट बछासुर जान्यौं हरिचित बात धरावैं ॥ करि बिचार तिनमें हरि मारो सोबछरा बन आज । तापाछैं जोबकासुर अयोघात कियोब्रजराज ॥ बछ चराइतबेनु बजावत गोप सखन के संग । सोदेखन चतुरानन आये हरिलीला रसरंग ॥ छाकै खात खवावत ग्वालन सुंदर यमुना तीर । ग्वालमंडली मध्य बिराजत हरि हलधर दोउबीर ॥ गाय गोप अरु बच्छ सबै बिध छिनहीं में हरि लीनों । सबको रूप भये हरि आपुन नैकबिलंब न कीनों ॥ जबहीं गर्भ गयो चतुरानन अदभुत चरितहि देख । परोधाय हरि पायजोर कर नाथ कृपा करदेख । अस्तुति करी बेद बिध करिकै चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधो को हसत लसत किलकांति ॥ गयेधाम अपने बिध सुखसो हरि आज्ञा सुखपाय । बर्ष दिवस लौं सर्ब रूप हरि वृजबासिन सुखदाय ॥ धेनु चरावन चले स्याम घन ग्वाल मंडली जोर । हलधर संग छांकभरि कांवर करत कुलाहल सोर ॥ क्रीडा करत आप वृन्दाबन धेनु समूह नचावत । गोबर्द्धन पर बेनुबजावत फूलन भेष सवारत ॥ कालीनाग नाथ हरिलाये सुरभी ग्वाल जिवाये । कनक कमल के बोझ सीस धरि मथुरा कंस पठाये ॥ दावानल कोपान कियो मुख गोपन रक्षा कीनी । वर्षासुऋतु देख वृन्दाबन क्रीड़ा की सुधि लीनी ॥ बैंन बजाय बिलास कियोबनधैारी धेनुबुलावत । बरहा पीड दाम गुंजामणि अदभुत भेष बनावत ॥ प्रात काल असनान करन को यमुना गोपि सिधारीं ॥ लैकै चीर कदंब चढे हरि बिनवत हैं ब्रज नारीं । दै बरदान संग खेलन को सरद रैन जब आई । रचिकै रास सबन सुखदीन्हो रजनी अधिक कराई ॥ गोबर्द्धन धरि सब वृजराख्यो मघवा मान मिटायो । नारायण प्रगटे सबजाने जोइ गर्ग मुनि गायो ॥ धेनुक और प्रलंब संघारे संखचूड़ बध कीन्हो । करिकै चरण परस प्रभु बन में व्याल अभय पददीन्हो ॥ नानाबिध क्रीडा हरि कीन्ही वृज बासिन सुखपायो । सबहिन यह मांग्यो बिनती कर हरि बैकुंठ दिखायो ॥ अभयदान दीन्हो मघवा को नंदराय को राख्यो । बरुन लोक में गये कृपा करि बिबिध बचन उन भाष्यो ॥ यज्ञ करत ब्राह्मण मथुरा के ओदन स्याम मगायो । उन नहि दियो नारपैं पठये तब उन सुन सुख पायो ॥ षटरस थार सवार साजसों सबहीं हरिपैं आईं । कियो मनोरथ पूरन उनको निरभय करि जु पठाई ॥ व्योमासुर केशी सबमारे अरु अरिष्ट बध कीनों । क्रीडा बहुत करी गोकुल में भगतन को सुख दीनों ॥ नारद आय कह्यो नृपसों यह कोन नीदतूं सोवे । तेरो शत्रु प्रगट गोकुल में गुप्तन जानत कोवे ॥ यह सब देव प्रगट भय वृजमें जहं तहं ठौरहि ठौर । उग्रसेन बसुदेव देवकी यादो जे सब और नँद गोप वृषभान यशोदा सबहि गोप कुल जानों । करो उपाय बचो जो चाहो मेरे बचन प्रमानों ॥ यहसुनि कंस सबन को बन्धन दीनों हैतेहि काल । श्रीबसुदेव देवकी

निज पितु बंधन दियो बिशाल ॥ फिर नारद गोकुलहो अये हरि चरनन सिर नाये । अस्तुति करी बहुत नाना बिध मधुरे बैन बजाये ॥ हरि कछुइन उत्तर नहि दीनों फिर गये अपने धाम । बल मोहन सब सखा वृन्द लै क्रीड़त गोकुलग्राम ॥ बोल अक्रूर कंस यह भाष्यो सुनु सुफलक सुत बात । रामकृष्ण को लाओ मधुपुर बिलम करोजनि जात । तब रथ बैठ चले सुफलक सुत संध्या गोकुल आये । पैंडे में हरि चरण धूरि लै अपने अंग लगाये । मिले नंद बसुदेव रोहनी और यशोदारानी । पूजा करि पधराय सदन में भोजन की बिधि ठानी । भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत सुनाये । धनुष यज्ञ कीन्हों नृप जूने सबको बेग बुलाये । चले महर ब्रज राज सोंज लै कौतुक देखन आज । रामकृष्ण दोउ आगे लेकै सकल घोष सिरताज । मारग में कालिंदी के तट कीन्हों जल अश्नान । निज बैकुंठ दिखायो जल में दीन्हों पूरन ज्ञान । करि बंदन हरि के चरनन को पुन अक्रूर यह भाष्यो । तुम यदुकुल प्रगटे पुरुषोत्तम भक्तन को प्रन राष्यो । मथुरा आय रहे उपबन में नंदराज सब गोप । राम कृष्ण के चरन परसते अधिक मधुपुरी ओप । गये नगर देखन को मोहन बलदाऊ लै साथ । पुर कुल बधू भरोखन झांकत निरष निरष मुसक्यात । मारग में एक रजक संघारेव सबहि वसन हरि लीन्हें । बायक मिल्यो सबहि पहिराये सबहिन को सुख दीन्हें । आगे मिल्यो सुदामा माली फूल माल पहिराई । निरभय दान दियो हरि तिन को अविचल भक्ति दृढाई । कुब्जा घसि चंदन ले आई मारग देखन आई । हरि माग्यो उनले जुसमर्यो मन बांछित फल पाई । दियो वर दान भवन आवन को तहां तें चले बनाई । मथुरा नगर देख मन मोहन फूले हैं दोउ भाई । रीझत नार कहत मथुरा की आपुस में दैसैन । कोमल गात कौन को ढोठा सुंदर राजिवनैन । यह बालक सुकुमार सरसबपु असुर प्रबल अति भारी । कैसे कै वाको मारेंगे सोचत हैं पुर नारी । उपबन आय कियो हरि ब्यारू नन्दराय सुख दीन्हों । मधु मेवा पकवान मिठाई जो भाष्यो सो लीन्हों । पोढे जाय दोउ रज्या पर सोवत आई नींद । सुपने में मथुरा फिर देखी जागे बालगोबिंद । भयो प्रात नृप फेर बुलायो धनुष यज्ञको देखन । मल्ल युद्ध नाना बिध क्रीडा राज द्वार को पेषन । गये ब्रजराज द्वार भूपति के बहु उपहार दिवाये । तब नृप कह्यो सकल गोपन सों भली करी तुम आये । बैठारे सब मंच ओप सो कौतुक देखन लागे । रामकृष्ण संग ग्वाल मंडली नगर देख अनुरागे ॥ खेलत ॥ तोरेव धनुष टूक करि डारे दोउन आयुध कीन्हें । तासु मार करि चूर पहरुआ परम मोदरस भीन्हें । मद गजराज द्वार पर ठाढो हरि कह्यो नेक बचाय । उन नहि मान्यों सन मुख आयो पकरेव पूंछ फिराय । दियो पठाय श्याम निजपुर को मारत सहि गजराज । आगे चले सभा में पहुंचे जहं नृप सकल समाज । बडे बडे राजा सब बैठे अरु पुर बासी लोग । अपने अपने भाव सुदेखत मिट्यो सकल मन सोक । मल्लन सबन मल्ल से देखे नृपन सखे नृप राय । युवतिन सबै काम वपु देखे भेटन कोल लचाय । गोपन सखा भाव करि देखे दुष्ट नृपति कृत दंड । पुत्र भाव बसुदेव देवकी

देखे नित्य अखंड । बिदुष जनन बिराट प्रभु दीखे अति मन में सुख पायो । पूरण तत्व देख योगी जन हित सो ध्यान लगायो । यदुकुल के कुल दीपक प्रगटे सब यादव सुखदाई । कंस देखि निज काल आपनो बहुतहि क्रोध रिसाई । जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपके संग । वृंदावन में हम सुनियत हैं क्रीडत हो बहुरंग । अबतुम कंस नृपति कुदेखाओ मल्ल जुद्ध करि नीके । कह्यो चाहूर मुष्टि सब मिलि के जानत हो सब जीके । तब हरि भिरे मल्ल क्रीडा कर बहु बिध दाव देखाये । बरनन कियो प्रथम संक्षेपन अबहू बरनन पाये । मुष्टिक साथ लरे बल भाई धरेव वृहद्बपु दोउ । छीनहीं में हरि तुरत संघारे अति आनंद मन होउ । और मल्ल मारे शलतो शल बहुत गये सब भाज । मल्ल युद्ध हरि करि गोपन सो सब फूले ब्रजराज । तब नृप कंस बहुत बिललायो बारबार रिसयाई । बांधो नंदहरो गोपन धन कीन्हो कपट दुराई । फागुन बदि चौदश को शुभ दिन अरु रविबार सुहायो । नषत उत्तरा आप चिरेव काल कंसको आयो । यह कहि कूद गये हरि ऊपर जहं बैठे नृप राज । हरि को देखि खड्ग कर लीन्हे सनमुख आयो धाय । तब हरि केश पकरि अपने कर धरनी मांझ पछारो । ऊपर गिरे आपु तिहुं पुरको बोझ सीस पर डारो । कचगहि आपु बहुत वह खैंचो हरि यमुनाखों आये । करि बिश्राम सकल श्रमबीत्यो जब यमुना जलन्हाये । बंधन छोर पिता माता कै अस्तुति करि शिर नायो । तुम हमको पठये गोकुल में याते खाड खडायो । यसुमतिमात और ब्रजपतिजू बहु तहि आनंद दीनो । याते टहल करन नहि पायो कहत श्याम रंग भीनो । तब ब्रजराज महर पै आये बलि मोहन दोउ भाई । तुम्हरी कृपा कंस मैं मारो कहांलो करो बड़ाई । रोहनि यह बोली यसुमति सो हम तुमरे सुख पायो । ज्यों तुमरो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि खाड खडायो । हिलामिल चले सकल ब्रजबासी नंदगांव फिरि आयो : सुबस बसी मथुरा तादिनते उग्रसेन बैठायो । रामकृष्ण घर आये जाने पुर बासिन सुख पायो । मंगल चार भये घर घर में मोतिन चौक पुरायो । तब हरि मात पिता पै आये दोउ भाइन शिर नायो । बंधन छोर बिना बहु कीन्हें तुम हम बिन दुख पायो । फिर बसुदेव बसे अपने गृह परम रुचिर सुख धाम । रामकृष्ण को खाड खडावत जानत नहिं दिन याम । गर्ग बुलाय बेद बिधि कीन्हों शुभ उपवीत करायो । बिद्या पढन काज गुरु गृह दोउ पुरी अवन्ति पठायो । राज नीत मुनि बहुत पढाई गुरु सेवाकरवाये । सुरभी दुहत दोहनी मांगी बांह पसार देवाये । गुरु दक्षिणा देन जब लागे गुरु पतनी यह मांग्यो । बालक कह्यो सिंधु में हमरो सो नित प्रति चित्त लाग्यो । यह सुनि श्याम राम दोउ मिल गये जलधि के बीच । पंचाननजु शंखतहां लीन्हे मारि असुर अति नीच । यमपुर जाय शंख धुनि कीन्हों यम राजा चलि आयो । चरन धोय चरनोदक लीन्हों बालक दे शिर नायो । लै बालक गुरु आगे धरि कै राम कृष्ण सुखरासी । आज्ञा लै मधुपुरी सिधारे परब्रह्म अविनासी । क्रीडा करत बिबिध मथुरा में अक्रूर भवन सिधारे । अस्तुति करी बहुत नाना बिध

Rare Book
H/891.4314 Su 821 Sa
Acc no. 18897 dt 14-9-65 Rs. 25.00
National Library

निरभै कर सिर धारे । कुबिजा के घर आपु पधारे सबै मनोरथ कीनों । ऊधो भक्त संगले के अति आनंद भक्तन दीनो । उद्धव भक्त बुलाय संगले हरि एकांत यह भाष्यो । व्रज बासी लौठन सो मैं तो अंतर कछू नराष्यो ॥ सुर गुरु सिष्य बुद्धि में उत्तम यदुकुल कहत प्रमान ॥ रंचो भृत्यसखा मो सेवक याते कहत सुजान ॥ मोकूं लाड लडायो उन जो कहं लगि कोंा बडाई ॥ सुनि ऊधो तुम समझत नाहिन अब देखोगे जाई ॥ बेग जाव व्रज मों अज्ञाते व्रजबासिन सुख दैहों ॥ चरण रेनु सिर धरि गोपिनकी तुमहुं अभय पद लैहौं ॥ गोपिनसों बिनती करि कहियो नित प्रति मन सुधकरियो । बिरह बिथा बाढै जब तनमें तब तब मोहि चित धरियो ॥ पाती लिखी आपकर मोहन व्रज बासी सब लोग । मात यशोदा पिता नन्दजु बाढ्यो बिरह बियोग ॥ धोरी धूमर कारी काजर मेंन मजीठो गाय । ताको बहुत राखियो नीकै उन पोष्यो पैष्याय ॥ बनमें मिच हमारे एकहैं हमहीं सोहै रूप । कमल नैंन घनस्याम मनो हर सब गोधन को भूप ॥ ताको पूज बहुत सिरनइयो अरु कीजो परनाम । उनहमरो व्रज सबहि बचायो सब बिध पूरे काम ॥ आज्ञा लै ऊधो श्रीपति की चले बेग नंदगाम । पुष्कर माल उतार हृदय तेदीनी सुन्दर श्याम ॥ पीताम्बर अपनों पहिरायो श्रुति कुण्डल पहिराये । अपने रथ बैठाय प्रीतिसो उद्धव व्रज पधराये ॥ दिन मनि अस्तभये गये गोकुल नंदराय सों भेटे । बल मोहन दोउ देख मांधुरी परम बिरह दुख मेटे ॥ मिले नन्द बलिराम कृष्ण दोऊ है नीके यहभाष्यो । मारो कंस भली सबकीन्हीं यादवकुल सबराष्यो ॥ पूजा करि भोजन करवायो उद्धव संतसरायो । सोवत निशा नेकनहि पाये रामकृष्ण गुन गायो । यशुदा बिकल बात पूछत हैं नयनन नीर प्रवाह । तनमनमें अतिही दुखबाढ्यो अति आतुर जनुदाह ॥ बातें करत शेष निश आई उद्धव गये सनान । सुमिरण कर फिर व्रजमें आये गोपिन देखे आन ॥ उद्धव देख सकल गोपिन ने कीन्हों मन अनुमान । रथको देख बहुत भ्रम कीन्हों धो आये फिर कान ॥ तब एक सखी कह्यो सुनरीतू सुफल कसुत फिरिआयो । प्रान गयेलै पिंडदैनको देहलेन मनभायो ॥ इतने देख कृष्ण अनुचर मुख उद्धव यह सब जानी । उद्धव कियोप्रनाम सबनको बिनय कियो मृदुबानी ॥ भली करी तुमआये उद्धव लाये हरिकी पाती । जादिनतें हरि गोकुल छांड्यो हम पर बिरह बराती ॥ इतने मांझ मधुप एक देख्यो आय चरण लपटायो । ताको देख कहत उद्धव सो हरि गोकुल बिसरायो । रेरेमधुप कितब के बंधू चरन परसजिन करिहो । प्रिया अंककुंकुमकर राते ताही को अनुसरिहो ॥ अधरसुधारससकृत पानदै कान्ह भये अति भोगी । बिजय सखाकी सखी कहत है तासो रहत संयोगी ॥ तीनलोक नारीको कहि यतजो दुर्लभ बलबीर । कमलाङ्क नितपायपलोटत हमतो हैं आभीर ॥ पहिलेही इनहनो पूतना बांधे बलिको दान । सूपनखा तारिका संघारी श्याम सहज यहबान ॥ याकी कथा सुनी जिन श्रवनन वन बिहंग भये योगी । मांगत भीख फिरत घर घर ही सुजन कुटुम्ब बियोगी ॥ फिर हरि आय जसोदा के गृह रिंगन लीला करिहैं ॥ मांग्यो चन्द आर जब कीन्हो उन बातन चित धरिहैं ॥ बहुत दनुज संघार श्याम घन व्रज की रक्षा करिहैं ॥

यमला अर्जुन बिटप उपारे काली को विष हरिहैं ॥ बेनु बजाय रास बन कीन्हो अति आनंद दरसायो । लीला कथत सहस मुख तोऊ अजहूं पार नपायो ॥ महा प्रलय के मेघ पठाये सुरपति कीन्होकोप । छिनही मांझ गोवर्द्धन धारो राखि लिये सब गोप ॥ ऐसे बहुत चरित कान्ह के बरनि कहत नहि आवै । उद्धव तुम नयनन नहि देखो तातें भेद नपावै ॥ तब उद्धव कह्यो धन्य धन्य तुम धन्य धन्य ब्रजनार । तुमरे सुबस सदा हरि खेलो ब्रजमें करत बिहार ॥ तुमरी चरण कमल रजकारण तप कीनो चतुरानन । रमा शेष पुनकिनहुन पायो सो देखियत वृंदाबन ॥ गुल्मलतामें जन्म मांगि तब बिधि सो गोद्पसारी । उद्धव कहत सदा मोहिदीजे चरण रेनु ब्रजनारी ॥ एक रूप ह्वै रहेवृंदा बन गुल्मलता करबास । बज्रनाभ उपदेश कियो जिन पूरणकेल प्रकास ॥ एकरूपउद्धव फिर आयो हरि चरनन सिर नायो । कह्यो वृतान्त गोप बनितन को बिरहन जात कहायो ॥ मोहि खोजत षटमांस बीतगये तबहु न आयो अंत । छिननहिं दूर श्यामतुम उनसो मैं निश्चय यह कीनो । तुमरो रूपदेखि गोकुलमें बाढ्यो नेह नबीनो ॥ तबहरि कह्यो सुनो उद्धवजू ब्रजबसो तनमोर । तिनको सपन कबहुंनहि छाडो सत्य कहतहोतोर॥ वृंदाबन में धेनु चरावत गोप सखनके संग । बेनु बजावत मोद बढावत क्रीडा कोटिअनंग॥ अरु गोपिन सो अंगसंग करिनित प्रति करो बिनोद । दुष्ट कंस मारन यह आयो सदा यशोदा गोद ॥ कुंजकुंजमें क्रीडा करि करि गोपिनको सुखदेहौं । गोप सखन संगखेलत डोलो ब्रज तज अंत न जैहौं ॥ मारेव दुष्ट बहुत जो भूपर धर्म करो बिस्तार । बसुधा भार उतारण कारण यदुकुल लियो अवतार ॥ मिच एक बन बसत हमारो सो नयनन भरिदेखो । ताको पूजन नित प्रति करिहैं सो तुम सुबुध बिशेखो ॥ नाना रतन कंदरा कबहूं छिन नहिं मोहि भुलावे । क्रीडा करो नित्य कुंजनमें गोपिनको सुखभावें ॥ ताही छिन अक्रूर बुलाये बलि मोहन यह भाष्यो । तुम अब बेग जाव हस्तिनपुर कमल नयन जियदाष्यो ॥ तब अक्रूर बैठ हरिके रथ हस्तिनपुर जुसिधारे । कुन्ती मिली युधिष्ठिर अर्जुन भीम बिदुर उरधारे ॥ गांधारी दुर्योधन आदिक भीष्म करण सबभेटे । बहुतदिना के ताप सबनके सुफलक सुत सबमेटे । तब यह कह्यो नृपतिसो नीके बहुत भांति समुझायो । तब नृप कह्यो नहीं मेरो बस मोह प्रबल जियछायो ॥ तब अक्रूर बिचार कियो यह हरि इच्छा जियमानो । करि परनाम गये मधुपुर को जहाँ श्याम सुखदानी ॥ समाचार सबही कहिदीनों बलि मोहन हि सुनायो । सुन बसुदेव देवकी दोउ बहुतहि दुख जिय पायो ॥ अस्ती अरु प्राप्ती दोउपत्नी कंसरायकी कहियत । जरासिंधु पै जाय पुकारी महाक्रोध मन दहित ॥ तीन बीस अक्षोहणी लै दल जरासिंधु तह आयो । बल मोहन छिन मांझसंघारे करिविन चमू पठायो । सचहबार फेर फिर आयो हरि सब फौज संघारी । अबकै फेर दुष्ट बनिआयो हरि कछुबात बिचारी ॥ अंतरिक्षतै दैरथ उपजे आयुधतुरग समेत । ताप्रर बैठ कृष्ण संकरषन जीते हैं सबखेत ॥ नारद जाय जवनसो भाष्यो रामकृष्ण दोउ वीर । तोहि नगनत बसत हैं मथुरा बडे बली रनधीर ॥ यह सुनि जवन तुरत ही धायो जिय में अति अकुलाय । तीन कोटि भट जवन संगले मथुरा पहुंच्यो जाय ॥

सुनि बलि मोहन बैठ रहसिमे कीनो कछू बिचार । मागध मगध देशते आयो साजै फौज अपार ॥ बिश्वकर्माको आज्ञा दीनी रची द्वारिका आय । निशि को सोये सब मथुरा में जगे द्वारिका जाय । हलधर हल मूसल करलीने सभी म्लेच्छ संघारे । मारि फौज सबही मागध की जरासिंधु उच्चारे ॥ चले भाज दोउ भाइ उहांते जहँ सोवत मुचकुंद । बसन उढाय रहे छिप आपन पूरन परमा नंद ॥ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्यो भहराय । निकसी अग्नि नैन तें तासों भस्म भयो तेहिदाय ॥ इतने मांझ आपु हरि आये दरसन दीन्हो भूप । शंख चक्र गद पद्मचतुर्भुज सुंदर श्याम स्वरूप ॥ तब पूछ्यो तुम कौन रूप हो कौन देव अवतार । अबलों कहुं देखे नहिं मैनें पूरन अति सुकुमार ॥ तब हरि कह्यो जन्म मेरे बहु शेष न पावै पार । भुवकी रज नभके सब तारे तिनने हैं अवतार ॥ अब कहिये द्वापर युग सुनिन्नप बासु देव मम रूप । भूतल भार उतारन आयो यदकुल सुखद स्वरूप ॥ तब नृप अस्तुति बहु बिधि कीन्हो जन्म कर्म गुनगाय । तुमहीं ब्रह्म अखिल अबिनाशी भक्तन सदा सहाय ॥ नवगुन नवल रूप पुरुषोत्तम जै यदुकुल अवतार । जै जै जै बैकुंठ महा निधि कमल नैन सुखसार ॥ बेद पुरान रटत जस जाकों तऊन पावत पार । मैं मुचुकुंद नृपति कृत युगको सेवत भये युगचार ॥ अबमोको आज्ञा कछु दीजै जैसे चरनन पाऊं । सदाबसों निजलोक निरंतर जन्म कर्म गुनगाऊं ॥ छूटो जन्म बहुत अघ कीन्हों तातें मुक्ति न होय । बिप्रजन्म धरि मुक्ति होयगी करि तप साधन सोय ॥ आज्ञा लेके चल्यो नृपति वह उत्तर दिसा बिशाल । करितप बिप्र जन्म जबलीन्हो मिट्यो जन्म जंजाल ॥ तहांते चले श्याम अरु हलधर पर बरषन गिरि आये । परबत बहुत नमन करि पूजा यह बिनती करवाये ॥ नित प्रति मोसिर मघवा बरषत लागत सीत अपार । अगनित पाप महा दुख मेटो मांगत यही मुरार ॥ इतने मांझ मगध चलि आयो उन जानी यह बात । परबत मांझ गये दोऊ भाइया उनदेखे हग जात ॥ दीन्ही अग्नि लगाय चहूंधा उन जानी रिपुहान । रामकृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारिका जान ॥ भयो आनंद द्वारका में सब घर घर गीत गवाये । करि रिपुहान समर सब जीत्यों रामकृष्ण घर आये ॥ एक समय नारद मुनि आये नृपति भीष्म के गेह । पूजाकरी बहुत नानाबिध नृपति जनायो नेह ॥ लखि रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार । पूरन ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम श्रीबसुदेव कुमार ॥ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महराज । तब नृपकह्यो करों निश्चय यह सुफल होय ममकाज ॥ तब नारदमुनि गये द्वारिका कृष्णचन्द्र के पास बिनती करी रुक्मिणी की सब सुनि हरि भये हुलास॥ करो बेग कछु बिलंबन कीजै नारद कहि यह बात । श्रवन सुनत कमला पति को जिय तन पुलकित सबगात ॥ सुनि नारद मोहिं नींद न आवें करिहों बेगउपाय । यह कहिचले आप हरि रथचढि शोभा कही न जाय ॥ देश देश के नृपति जुरे सब भीष्म नृपति के धाम । रुक्म कह्यो शिशुपालहि देहौं नहीं कृष्ण सों काम ॥ एतने मांझ आपु हरि आये सुनी नृपति सब बात उपबन रहे जानजियमें यह मनमें अति अकुलात ॥ पूजन करन चली देवी को सखी वृंद

सब संग । पूजा करि बोली यह कमला लोक लाज छतभंग ॥ अटल शक्ति अविनास अधिक बल एक अनादि अनूप । आदि अव्यक्त अंबिका पूरन अखिल लोक तव रूप ॥ कृष्णचन्द्र के चरण कमल में सदा रहो अनुराग । येही पतिनित होहि मारे जो पूरण मम भाग ॥ तब उन कह्यो कृष्ण तुमरे पति ह्वैहै अचल सुहाग । चली महाबर पाय रुक्मिणी अति पूरन अनुराग ॥ तब हरि आय बैठ रथनीके आय मिले बडभाग । कर गहि बांह लई रथनीके अति आतुर चले भाग ॥ मानो नील मेघ के संगमें मिली दामिनी आय । चले तुरत हरिपुरी द्वारिका संख चक्र धरि धाय ॥ दुष्ट नृपति को मान मथन करि चले द्वारिका नाथ। जरा सिंधु सिसुपाल आदि नृप पांछे लागे साथ ॥ रथ पाछे मिल सोभित यहि विध सकल दुष्ट की खान । महा सिंह निज भागलेत ज्यों पाछें देखैं स्वान ॥ हलधर आय दुष्ट सबमारे असुर नृपति की भीर । भाजिचले शिशुपाल जरासिंधु अति व्यापित तनपीर ॥ आये नाथ द्वारिका नीकै रच्यो मांड वो छाय । व्याह केल बिध रचो सकल सुख सैंज गनी नहिंजाय ॥ ब्रह्मा रुद्र देव तहं आये सुकनारद सनकादि । दरसन करि मंगल सुखकै सबमेटी बिरह जो आदि ॥ चैवमास पून्यो को शुभदिन शुभ नछत्र शुभ बार । व्याहिलई हरि देव रुक्मिणी बाढ्यो सुख जो अपार ॥ एक सचाजित यादव कहिये सूरज देव उपास । दीन्हों मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्य प्रकास ॥ भार भार नित कनक देत हैं नृपति सुनी यह बात । तबउन मांगी इन नहिं दीनी बाढ्यो बैर अघात ॥ एकदिवस मृगया को निकस्यो कंठ महा मनि लाय । तब उन सिंह मार गहि लीन्हों ऋक्ष मिल्यौ एकताय ॥ जांबुवान महबली उजागर सिंह मारि मणि लीन्हों । परवत गुहापैठ अपने गृह जाय सुता को दीन्हों ॥ चरचा परी बहुत द्वारावति कृष्णचन्द्र कीबात । तब हरिगए सैल कंदर मै अति कोमल मृदुगात ॥ दिन अट्ठाइस युद्ध कियो जब ऋक्ष भयो बलभंग । तबपग परेव बहुत अस्तुति करि जानि राम पदसंग ॥ तबहरि कह्यो भक्तूं मेरो तोसों करि संग्राम । कीनें गुह्य तत्व सबतन कै पूरन कीन्हेंकाम ॥ जांववती अरपी कन्या हरिमणि राखी समुहाय । करि हरिध्यान गयो हरि पुरको जहां योगेश्वर जाय ॥ लैस्यमंत मनि जांववतीसह आये द्वारिकानाथ । अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अंगन समात ॥ आश्विन सुदिनौमी को शुभदिन हरिआये निजधाम । तौलौं घर घर प्रति दुर्गा को पूज न किय सबगाम ॥ सचाजित अपनी तनया को दीन्हों त्रिभुवन राय । सतभामा जु नामतेहि कहियत शोभा कहिय न जाय ॥ कीन्हों व्याह परम आनन्द सों सतभामा सुखरास । द्वारावती बिराजत नित प्रति आनंद करत विलास ॥ इन्द्र प्रस्थहरि गये कृपाकरि पांडव कुलको तार । तह कालिन्दी बनम व्याही अति सुन्दरि सुकुमार ॥ मिच वृंदा एक नृपति नंदनी ताकों माधव व्यायें । सात बैल नाथन के कारण आप अयोध्या आये ॥ सत्या व्याहि बहुत सुखकीन्हों मथ्यो नृपति कों मान। आये फेर द्वारिका मोहन मंगल केल निधान ॥ भद्रा व्याह आप जब आये द्वारावती अनंद । तैसेहीं लछमना विवाही पूरन परमानंद ॥ नरकासुर कों मारि श्याम घन सोरह सहस चिय लाये । एकहि लगन सबन

कर पकरेव एक मुहूर्त्त बिवाये । यह सुनि नारद अचरज पायेा ब्रह्म लेाक तें धाये ॥ कृष्ण चन्द्र के चरण परस करि बीना मधुर बजाये । तब हरि रीझ कह्यो नारद सों कहेा कहां तें आये ॥ तब उन कह्यो दरस कों आयेा बहुत रूप धरि व्याये । यह कौतुक देखन के कारन में आयेा जेा देखावेा ॥ रूप अनंत आदि अविनाशी दरसन प्रेम बढावेा ॥ तब हरि कह्यो जाव घर घर प्रति देखेागे सबठौर । मैंहीं हेां सब थल परि पूरन मेा बिन नाहिन और ॥ खेलत ॥ तब मुनि चले देख घर घर प्रति परम केलि सुखपायेा । नाना क्रीड़ा करत निरंतर घर घर रूप दिखायेा ॥ कहुं क्रीड़त कहुं दाम बनावत कहूं करत शृंगार । कहुं बालकन खिलावत माधेा खेलत परम उदार ॥ कहुं चेापर खेलत जुवतिन संग पांचसात उचार । कहुं मृगया कूं चले अश्व चढि श्री बसुदेव कुमार ॥ कहुं कर लेके शस्त्र सवारत कहुं कछु करत बिचार । कहुं कछु बात कहत सबहिनसेा कहुं धुन बेद उचार । कहुं मिल यज्ञ करत बिप्रन संग अति आनंद मुरारि ॥ नाना दान देत हय गज भुव ऐसे परम उदारि ॥ कहुं गेादान करत कहुं देखे कहुं कछु सुनत पुरान ॥ कहुं नित्तत सब देख बार बधु कहुं गंधरब गुनगान ॥ कहुं जप करत सनातन निज बपु ब्रह्म करत कहुं ध्यान ॥ कहुं उपदेश कहूं जैवेको कहूं दृढ़ावत ज्ञान ॥ कहुं भेाजन नानारुचि मागत षट रस के पकवान ॥ आरेागत ब्रज राज सांवरेा कहूं करत जल पान ॥ कहुं जागत दरसन दियेा मुनि को करि पूजा परनाम ॥ संध्या करत कहूं त्रिभुवन पति स्नान करत कोउ धाम कहुं पौढे कमलाकै संगमे परम रहस्यएकांत ॥ कहुं व्रत करत कहूं निगमन को ज्ञान कर्म को अंत ॥ कतहूं श्राद्ध करत पितरन को तर्पन करि बहु भांति । कहुं बिप्रन को देत दच्छिणा कहुं भेाजन की पांति ॥ कहुं सुगंध लगावत लै कै कहूं अस्त्र शृंगार ॥ कहुं गज रथ कहुं वाजि रथन सजि डेालत हैं गृह द्वार कहुं ऊधेा सेा ब्रज सुख क्रीड़ा परम प्रेम उच्चार ॥ कहुं पांडव की कथा चलावत चिन्ता करत अपार ॥ कहुं मिल बिप्र कहत सबहिन सेा बालक करन सगाई ॥ कहुं सुत ब्याह कहूं कन्या को देत दाय जेा राई ॥ कहुं गज राज बाज शृंगारे तापर चढे जु आप ॥ संग बलभद्र चमू सब संग लै चले असुर दल कांप ॥ कहूं हस्तिनापुर देखन को मनमे करत बिचार । कतहं अर्घ देत सूरज को कहूं पूजत त्रिपुरार ॥ कहुं एक दुर्गा देविजानिकै जेारि बिप्र निज धाम ॥ करत होम बहु भांति बेद धुनि सब बिधि पूरन काम ॥ प्रथम पुत्र को ब्याह जान कै पूजत कहूं गणेश ॥ कहुं ऋषिन के चरण धेाय कै शिर पर धरत नरेश ॥ कहुं ब्याह की केल परम सुख निरखत मुनि सचु पायेा ॥ शेष सहस मुख पारन पावें कछु एक सूरज गायेा ॥ फिर मुनि आय भवन कमला के चरण कमल शिर नायेा ॥ मैं सब ठौर फिरेव तुव देखन कतहं पारन पायेा ॥ जित तित देखेा तुम परि पूरन आदि अनंत अखंड ॥ लीला प्रगट देव पुरुषेात्तम व्यापक कोटि ब्रह्मण्ड ॥ शिवबिरंचि सनकादि महा मुनि शेष सुरेश दिनेश ॥ इन सबहिनमिल पार न पायेा द्वारा

बती नरेश ॥ तुमरे चरण कमल की महिमा जानत हैं चिपुरारि ॥ प्रगट गंग पावन चरनन तें ताहि रहत शिर धारि ॥ पुन गौतम घरनी जानत है नावक शिवरी जान ॥ उद्धव बिदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषम सुर ज्ञान ॥ हनूमान अरु भक्त विभीषण चरन कमल रज मांगी ॥ सोई कृपा करो करुणानिधि मांगत हौं अनुरागी ॥ यह कहि कै मुनि लोक सिधारे बीन बजाय रिझाय ॥ ब्रह्म लोक पहुंचे छिनही में हरि आज्ञा को पाय ॥ पहिलो पुत्र रुक्मिनी जायो प्रद्युमन नाम धरायो ॥ काम देव प्रगटे हरि के गृह पहिले रुद्र जरायो ॥ नारद जाय कह्यो संबरसो तब रिपु वपु धरि आयो ॥ बेग उपाय करो मारन को प्रगट द्वारिका जायो ॥ तब संवर भैभीत द्वारि का गयो तुरत तेहि काल ॥ हरि को चक्र देख रखवारी व्याकुल भयो वे हाल ॥ तब नारद मुनि आय चक्र सों बात करन ठहरायो ॥ इतने मांझ पुत्र लै भाज्यौ निधि में जाय दुरायो ॥ एक मीन ने भक्ष कियो तउ हरि रखवारी कीनी ॥ सोई मछ पकर मोधुक नै जाय असुर को दीनी ॥ तब उन कह्यो पाक शाला में अब हीं यह पहुंचाओ ॥ चीरेब उदर पुत्र तब निकस्यो उन जान्यो ममनाओ ॥ नारद कह्यो यही तब पति है याकूं बेग बढाय ॥ जोलों बडो होय तोलों यह असुरन मतिहि देखाय ॥ सेवा कीनी बडे भये जब समरथ विपुल उदार ॥ महाबलीबल राम कृष्ण सुत कीन्हो असुसंघार ॥ मारि असुर कौं आय द्वारिका कृष्ण चरन शिर नायो ॥ भीतर गये नये रुक्मिनि कों सबहिन कंठ लगायो ॥ बर अरु बधू आय जब जाने रुकमिन करत बधाई ॥ रति अरु काम प्रगटता दिनतें कवि मिख कीरत गाई ॥ यहि विध केलि करत द्वारा बति पूरन परमा नंद ॥ महिमा सिंधु कहां लगि बरने सूरजु कवि मति मंद ॥ पुन अनुरुद्ध भेद नारद के चित्त रेखा हरि लीन्हो ॥ चार वर्ष अरु चार मास लौं उषा कों सुख दीन्हो ॥ तब हरि जाय संग हलधर लै सब यादौं दल जोर ॥ सबै भुजा करि दूर असुर की चार हाथ दिये छोर ॥ आये रुद्र पक्ष करि ताकों युद्ध करन हरि साथ ॥ छिनमें जीत बधू सुत लेकै आय द्वारिका नाथ ॥ पुन एक दिवस सुधर्मा बैठे जादौ सभा अपार ॥ उग्रसेन वसुदेव सात्विकी अरु अक्रूर उदार ॥ इतनें मांझ दूत एक आयो सबहिन कहि समझाया ॥ बासुदेव नृप आज्ञा करके मोकौं बेगि पठायो ॥ बासुदेव यह कहत बेद में प्रगट ब्रह्म अवतार ॥ सोतो मैंहौं प्रगट भयो भुव यहि विध बढ्यौ अपार ॥ छिनमें जाय तुरत हरि मारे ब दीनी मुक्ति कृपाल फेर द्वारिका तुरत पधारे गरुड चढे गोपाल ॥ एक दुष्ट ने बहुत किये तप सो रीझे चिपुरार ॥ तब शिवने उन कृत्या दीन्ही बाध्यो क्रोध अपार ॥ कृत्या चली जहां द्वारा बति हरि जानी यह बात ॥ आज्ञा करी चक्र को माधो छिन कृत्या कर घात ॥ कासी जाय जराय छिनक में गये द्वारिका फेर ॥ अति आनंद परम सुख सों सब दिन बीतत रस टेर ॥ पुन कुरुक्षेत्र गये जादौं मिल किये तीर्थ अस्नान ॥ यज्ञ होम करि पितर देवता विप्रन को बहुदान ॥ सूरज ग्रहण नृपन बहुजान्यों आय जुरी सब भीर ॥ दरसन भयो सबन कों हरिको मिट्यो ताप तन पीर ॥ भीष्म द्रोण अरु करन युधिष्ठिर

भीमा जुन सहदेव । कुंती नकुल और गंधारी कृपी बिदुर सबदेव ॥ दुरयोधन सब भ्रात संगलै धृतराष्ट्रहि लै आयो । नारद गौतम बाल्मीक मुनि हरि दरसन हित धायो ॥ भारद्वाज मरीच अंगिरा अत्रे मुनी अनंत । पुलह पुलस्त अगस्त कश्यप पुन अरु सनकादिक संत ॥ हरिको दरसन करि सुख पायो पूजा बहु विध कीन्हीं । अति आनंद भये तन मन में सौंज बहुत बिध दीन्हीं ॥ ब्रजबासी सब संखा संगके जसुमति अरु ब्रजराज । दरसन पाय बहुत सुखपायो सुफल भयेसबकाज यसुमतिमात उछंगलगाये बल मोहन को आय । बाल भाव जिय में सुध आई अस्तन चले चुचाय ॥ गोपिन देख कान्ह की सोभा बहुतहि मन सुख पायो । सघननिकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायो । रुकमिनि कहत कमल लोचन सों राधा हमैं दे खायो । जाकी नित्य प्रसंसा तुम करि हम सबहिनकुं सुनायो । तब वृषभानु सुता पग धारी रानिन मंडल मांझ । मनो सरस इंदीवर फूलै तामधि फूली सांझ देख तेज वृषभानु सुता को सबै भईं छबि हीन ॥ अति आनंद मोद मन मान्यो हमहि कृतारथ कीन्ह ॥ तब हरि कह्यो मोहि राधा बिन पल छिन कछु न सोहाय ॥ सुनो रुकमिनी कथा घोषकी मोपै कहिय न जाय ॥ एक दिना बन में इनमो को अपनो सुधा पिवायो ॥ ताके बल गिरगोवर्द्धन ले अपने हाथ उठायो । अरु कालो धेनुकदा वानल प्रगट पूतना आई । इनकी कृपा सकल विघननको छिन में दिये नसाई ॥ भांति भांति करि मोहि लडायो सघन कुंज में जाय ॥ ताकी कथा कहो कह तुम से मोपै कहिय न जाय ॥ रास केलि करि क्रीडा कीन्हो होरी खेल खिलायो ॥ मटुकि छुडाय खियो दधि बरसत तउ कछु मननहि आयो ॥ रतन जटित परजंक द्वारिका पोढतहैं सुख धाम ॥ तोहूइन को ध्यान करतही बीतत हैं सब जाम ॥ इन बिनु मोहि कछू नहि भावे नंदराय की आन ॥ सुनो रुकमिनी लोचन में एवसीरहैं मम प्रान ॥ जागत सोवत अरु बन डोलत भोजन करत बिहार ॥ ध्यान करत नखसिख इनही को बसि द्वारिका मझार ॥ तब मिल रंग बहुत भांतन सो कीन्हें बिपुल बिहार ॥ ब्रज जन चले सकल गोकुल को दीन्हें दान अपार ॥ चले द्वारिका यदुकुल सब मिल भयो कुलाहल भार ॥ पहुंचे आय द्वारिका सनमुख घर घर मंगल चार ॥ कियो बिचार यज्ञको राजा राज सूय जिय जानि ॥ कृष्णचंद्र को बेग बुलाओ संग सकल पटरानि ॥ आये इंद्र प्रस्थ सब यदुकुल महा महोत्सव मान ॥ जुरे भूप बहु सकल देश के हरि दरसन जिय जान ॥ चारों भ्रात चारि दिस जीती भारत कही बखान ॥ ठौर ठौर के नृप सब आये ले उपहार प्रमान ॥ बड़ो यज्ञ राजसू रचायो जुरे बिप्र बहु भारी ॥ महा भाग्यराजा जुयुधिष्ठिर जहं माधो अधिकारी ॥ सबहिन कह्यो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी कीजै ॥ सब में बड़ो कौन भुव पति है जाहि अर्चना दीजै ॥ तब सहदेव कह्यो सबहिन सो सुनो नृपति मन लाय ॥ पूजा जोग प्रगट पुरुषोत्तम कृष्ण चंद्र यदुराय ॥ सबहिन कह्यो साधु यह बानी सुरमुनि मनुज सराई ॥ एक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई ॥ गोकुल नंद अहीर गोप गृह पय

पिय के यह जीयो ॥ दधिजु चुराय खाय वृंदाबन चरित बिषम बहु कीया ॥ मातु ल मारि बहुत अघ कीन्हें कहांलो करों बड़ाई ॥ वृंदाबन गोवर्द्धन कुंजन लूटी नारि पराई ॥ बन बन गाय चरावत डोलत कांध कमरि आ राजै ॥ लकुटी हाथ गरे गुंज माला अधर मुरलिका बाजे ॥ ऐसे ख्याल करे इन बहु बिधि कहतजु आवै लाज ॥ वेद विदित सुर काजबिगारेवहकाये ब्रजराज ॥ यज्ञ करत विप्रन मथुरा में याचे भोजन दीन्हीं । अरपन कियो नहीं देवनको पहिले इन मति कीन्हीं । मांखन चोर चोर गोपिन को दूधजु दधि ले खायो ॥ यमुना न्हात गोप कन्यन को लैपट कदम चढायो ॥ काली हरिकी आज्ञा को ले यमुना मांझ बसायो । ताहि निकास दियो छिनहीं में नेक संकोच न आयो । एक पुतना पै पान करावन प्रेम सहित चलि आई । ताहि लगाय हृदय लपटानो प्रान जो लियो चुराई । जन्म होत इन मात तातको तबहीं बंधन दीन्हों । जादो जात भाज जित तितको अनंत जाय सुख कीन्हों । वेनुबजाय रास इन कीन्हों मुगध गोप की नारी । पर नारी को दोष कछू चित इन नहि कीन्ह बिचारी । दूध दही के भाजन चाटे नेक हु लाज न आई । मांखन चोर फोर मथनी को पीवत छाछ पराई । छाक खाय जूठन ग्वालिन को कछु मन में नहि मान्यो । परदारा को संग जाय निस कुब्जा सेा सुख मान्यो । बहुत प्रीति करि गोपिन जाने बहु बिध लाड लड़ायो । ताको जतन कछू नहि मान्यों मथुरा में चलि आयो । जरासिंध इन बहुत बारही करिसंग्राम पलायो । हमरे डर कर दोऊ भाई नगर समुद्र बसायो । कालजमन के आगे भाज्यौ जाय गुफा गहि लीन्ही । लात मार मुचकुंद जगायो नकुदयानहि कीन्ही । बातें बहुत याहि को लंपट सभा मांझ नहि कहिये ॥ जिय में समुझ आपने सनमुख मुखते चुप करि रहिये । अतिसे क्रोध भये पांडव सुत और न्हपति हरि दास । राखे बरज सबनको माधो नेकन भये उदास । अति ही भई अवज्ञा जानी चक्र सुदरसन मान्यौ । करि निज भाव एक कुश तन में छिनक दुष्ट सिर भान्यौ । परम कृपाल दयाल देवकी नंदन पावन नाम । दीनो मुक्ति दया करि कै तब दियो लोक निज धाम । जैजै कार भयो वसुधा पर राज युधिष्ठिर हरषे ॥ अमृतस्नान कराय वेद विध कनक कुसुम शिरबरषे । दीन्ही सभा बनाय पांडुको मय माया गत अंत । ताको देख भ्रमें दुरयोधन महा मोह मतिमंत । जल में थलमति थल में जल मति भई न्हपति को जान । अंधपुत्र लखि हंसे पवन सुत सुन जिय में रिस मान । गयो भवन अकुलाय बहुत जिय क्रोध मंत अभिमानी । ताही दिनते पांडु पुत्रसो बैर बिषम गति ठानी । सभा रची चौपर क्रीडा करि कपट कियो अति भारी । जीत युधिष्ठिर भइ सब जानीतउमन में अधिकारी । जुवती धरी जान दुष्टनने जबद्रोपदी बुलाई । हरिको सुमिरन करत पंथ में दुस्सासन गहि लाई । अहो नाथ ब्रज नाथ नाथ निज जदुकुल के निज नाथ ॥ गोकुल नाथ नाथ सब जन के मोपति तुम्हरे हाथ ॥ ज्यों गजराज बचायो जल में नेक बिलंबन कीन्हीं । अपनों भक्त बचावन कारन बिष अमृत करि

दीन्ही ॥ सिवरी गीध औरपशु पक्षी सब की रक्षा कीन्ही । अबतो सहाय करो तुम मेरी हो पांवर मति हीनी । चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारिका मझार ॥ पासो डार परम आतुर सो कीन्हे अनत उचार ॥ चीर बढाय दियो बहु तेहि छिन ऐचत पार नपायो ॥ भीष्म द्रोण अरु करन युधिष्ठिर सब विस्मय मन लायो ॥ रह्यो दुष्ट पचिहार दुसासन कछू नकला चलाई ॥ बैठो आय सभा में पाछे बार बार पछिताई । फिर द्रोपदी भवन में आई श्री हरि लज्जा राखी ॥ बेद पुरान तंच भारत में कही बहुत बिध भाखी । पुन बनबास दियो पांडव सुत हरि द्वारिका में जानी ॥ अक्षय पात्र दिवायो रवि पै बड़े भक्त सुख दानी ॥ ॥ खेलत ॥ दुरबासा आपनको आये तिनको कछुन चलाई । अक्षयकियो कमल दलखोचन भक्तन भये सहाई ॥ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगही डोले । दुर्योधन सों कह्यो दूत ह्वै भक्त पक्षदृढ बोले ॥ पांच गांव पांडव को दीजै सुनो नृपति ममबात । और राज सब तुमही करिये निपट जगत विख्यात ॥ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान । इन्द्रप्रस्त बीचमें मे दीजै और राज तुवजान ॥ सुनके क्रोधभयो दुर्योधन सबपांडव को राज । तुमरो कुल सब नास होयगो कहि जो चले द्विज राज ॥ बहुत दुःख दीन्हों पांडव को अबलों मैं सहिली न्हो। लाख भवन बैठार दुष्टने भोजन में बिषदीन्हों ॥ बन बन फिरे अर्कतूलन ज्यों बास बिराटहि कीन्हों । अन्तहि गुप्त रहे तापुर में भेद काहु नहि दीन्हों ॥ जुरे नृपति अच्छोन अठारह भयो युद्ध अतिभारी । रथ हांकत गोविंद अर्जुन को दीन्हे शस्त्रसब डारी ॥ करी प्रतिज्ञा कह्यो भीष्म मुख पुन पुन देव मनाऊं । जो तुमरे कर सर न गहाऊ गंगा सुतन कहाऊं॥ चढे प्रबल दल दोऊ ओरके बिच अर्जुन रथठाढो । इतपारथ गंगेय बली उत जुरो युद्ध अति गाढो ॥ दसदिन लरे बली गंगा सुत श्याम प्रतिज्ञा जानी । सत्य बचन हरि कियो भक्त को नगम झूठ कर बानी ॥ धरि रथ चक्र श्याम निज करमें जबहीं भीष्मपर डारो । सीतल भई चक्र की ज्वाला जब सिर तिलक निहारो ॥ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुन निधान गंगेव । तब हरि कह्योबिपुल बल तुमरो जीत लिये सब देव ॥ तब उन कह्यो चरन अपने में राखो निश दिन ध्यान । मोरि प्रतज्ञा तुम राखो हैमेट बेदकी कान ॥ डार शस्त्र सर सज्या सोये हरि चरनन चित लायो । उत्तर दिश रवि जानदेह तज महा परम पद पायो ॥ नृपति युधिष्ठिर राज तिलक दे मारि दुष्ट की भीर । द्रोणकरन अरु शल्य मुक्त करि मेटी जगको पीर ॥ गोविंद आय द्वारिका निज गृह अति आनन्द बढायो । घर घर मंगल महा कुलाहल यदुकुल होत बधायो ॥ शाल्व नृपति तपकिय पंचानन तापै यह वरपायो । दियो बनाय नगर गोपुर में काहु न जात लिखायो ॥ आय द्वारिका सोर कियो उन हरि हस्तिनपुर जाने । प्रद्युमन लरे सप्त दस दो दिन रंचहार नहि माने ॥ हरि अपसगुन जान हस्तिनपुर बैठ तुरत रथ धाये । बहुत देश को पावन करि करि सांझ द्वारिका आये ॥ कीन्हो युद्ध आय शालव सो उन बहु माया कीन्हीं । जलमें थलथलमें जल देखो श्याम दूर करिदीन्ही ॥ मायादूर करी नंदनन्दन चक्र दियो सिरडार । छिनहीं मांझ दुष्ट संघारो भुवको भार उतार ॥ जैजैकार

करत देवांगन बरषत कुसुमअपार । कियो प्रवेश द्वारिका मोहन घरघर मंगलचार ॥ राज सूय करवाय श्यामघन जरासिंधु मरवायो । दन्तवक्र महिपाल महाबल बिदुरथ प्रान नसायो ॥ बालकमृतक देवकी मागे सोछिनमें हरिलाये । दीन्हो दरस भक्त नृपबलि को तनके ताप नसाये । बालक आयदेवकी जाने अस्तन पानकराये॥ हरिको शेष पान करकै वे हरिके पदपहुंचाये॥ एक दिना यदुनाथ संगसब विप्रमंडली लीन्हें । मिथिला चले जनक राजापे दरसकृपा करि दीन्हें ॥ तहां बसत श्रुत देव महामुनि सुन दर्शनको धायो । तब उन कह्यो चलोमेरे गृह हरि स्वीकार करायो ॥ नृपति कह्यो मेरे गृह चलिये करो कृतारथ मोय । ताहूकै हरि आपु पधारे प्रगट धरे बपुदोय ॥ देख चरित्र बिनोद लाल के बिसमित भै द्विजराय । अद्भुत केलि कृपा कर कीनो द्विजको ज्ञान दृढाय॥ बहुत दिवस लो कृपा करी हरि जनकराय सुखदीनो । बहुर पधारे पुरी द्वारिका यदुकुलमें सुखकीनो ॥ बहिन सुभद्रा व्याह विचारो हरि अर्जुन चित धारो । श्री बलदेव कह्यो दुर्योधन नीको दुलह बिचारो ॥ हरिको भेद पायके अर्जुन धरि दंडी को रूप । भिक्षा को निज भवनबुलायो श्री बलभद्र अनूप ॥ नयनन मिलत लई कर गहिकै फाल्गुन चलेपराय । सुनि बलदेव क्रोध अति बाढ्यो कृष्ण शांत कियो आय ॥ फेर बुलाय व्याह करिदीनो बिजय बहुत सुख पायो । फिर आये हस्तिनपुर पारथ मघवा प्रस्थ बसायो ॥ एक दिना एक विप्रभक्त मति हरि को सखा कहावे । अति दारिद्र दुखित जब जाने तब पतिनी समझावे ॥ जाहुनाथ तुम पुरी द्वारिका कृष्णचन्द्र के पास । जिनके दरस परस करुनातें दुखदरिद्र को नास तंडुल मांगजाचि के लाई सो दीनो उपहार । फाटे बसनबांध के द्विजबर अति दुरबल तन हार ॥ आये देव द्वारिका हरिपै जाय चरन सिरनायो । हरि भेटे भ्राता की नाईं पूजा बिबिध करायो ॥ अपनें मुनि आसन बैठारे हंसि हंसि बूझत बात । कहो विप्र हम गये वंतिका गुरु केसदन विख्यात ॥ बनमें बहु बरषा जब आई ताको सुधकरि लेहों । गुरु आये आपुन को बोलन मंच थकायो मेहों ॥ तादिनकी यह कथा तुमारी बिसरत नाहि न मोह । किधोकोन कारज को आये सो पूछत हों तोह ॥ कछु हमको उपहार पठायो भाभी तुमरे साथ । फाटेबसन सकुच अति लागत काढत नाहि न हाथ । हरि अपने कर छोर बसन को तंडुल लीन्हें हाथ ॥ मुट्ठी एक प्रथम जब लीन्हें खान लगे यदुनाथ द्वितिय मुष्टिका लेन लगे जब कमला गहिलियो हाथ ॥ दियो द्विजहि मघवा को वैभव बाढ्यो जस बिख्यात ॥ भोर भये उठि चले भवन को हरि कछु इनहि नदीनों । ताको हरष सोकु निज मनमें मुनिवर कछू न कीनों ॥ भली भई हरि दरस न पायो तनको ताप न सायो । दुरबल विप्र कुचील सुदामा ताको कंठ लगायो ॥ धन्य धन्य प्रभुकी प्रभुताई मोपैं बरनि न जाई । शेष सहस मुख पार न पावत निगम नेति कहि गाई ॥ ऐसे कहत गये अपने पुर सबहिं विलक्षण देख्यो । मणि मय महल फाटिक गोपुर लखि कनक भूमि अवरेख्यो ॥ पतिनी मिली परम सुख पायो कृष्णचन्द्र आराधे । मघवा को सुख भयो सुदामहिं तऊ कछुक नहिं बाधे ॥ नौ लख धेनु दई राजा नृग बहुतहिं दान देवायो । कृष्ण भक्ति बिन विप्र आपतें गिर गिट की गति पायो ॥ ताको चरण परसि कै माधो दुःखित आप

छुटायो । कृपा करीजदु नाथ महा निधि निज बैकुंठ पठायो ॥ बलदाऊ ब्रज मंडल आये ब्रज बासिन को भेटे । बहुत दिनन कै बिरह ताप दुख मिलत छिनक में मेटे ॥ सघन निकुंज शुभग वृन्दाबन कीन्हें बिबिध बिहार ॥ गोपिन संग रास रसखेले वाढ्यो श्रम सुकुमार । कालिंदी को निकट बुलायो जल क्रीड़ा के काज । लियो आकरष एक छिन में हरि अति समरथ जदुराज । खेलत । बिबिध भांति क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रज बासिन सुखदीनों । द्वादश वन अबिलोक मधुपुरी तीरथ को चित कीनों । शुभ कुरुक्षेत्र अयोध्या मिथिला प्राग चिवेनी न्हाये । पुनशतरुद्र और चंद्र भागा गंगा व्यास न्हवाये । निमिखारन आये बलजू जब सकल बिप्र सिर नायो । करी अवज्ञा कथा कहत द्विज अपने लोक पठायो ॥ तब द्विज कह्यो कथा कहि के यह हमको सुख उपजायो ॥ हम कापै अब कथा सुनेंगे बलदाऊ समझायो ॥ इनको पुत्र होय जो बालक ताको बेग बिठावो । धरेव हाथ सिर दीन्ही बिद्या नितप्रति कथा सुनावो । पुन द्विज बिनती करि यह भाष्यो असुर एक इह आवे । यज्ञ करत में जान परत वह आय रुधिर बरसावे ॥ यह सुनिके बलदेव गुसांई हल मूसल लियो हात । लियो पकर हल नभ मंडलते कर मूसल सोघात । जै जै कार भयो सुर लोकन देव दुंदुभी बाजे । अस्तुति करत बहुत पूजा द्विज अति आनंद समाजे । बिनती करी बहुत बिप्रन ने राम बिप्र तुम मारेव । तीरथ न्हाय शुद्ध तनको करि हरि द्विज बचन बिचारेव । बरष दिवस में अठसठ तीरथ न्हाय तुरत घर आये । आय प्रभास बिप्र बहु जनको बहुतहि दान देवाये । पुन मिथिला एक दिवस पधारे हरि बलदेव गोसाई । गदा युद्ध दुरयोधन सिख्यो नाना भेद बताई । पुनि द्वारिका पधारे निज पुर अति आनंद सुख बाढ्यो । प्रगट ब्रह्म नित बसत द्वारिका कलह भूमिको काढ्यो । दस दस पुत्र एक एक कन्या हरि सब के उपजाई । सुत के सुत नाती पतिनी की महिमा कहिय नजाई । बडे बली प्रद्युमन कहावत कृष्ण अंस अवतार । तिन सब जग जीत्यो तिहु लोकन बाढ्यो सुजश अपार । अश्वमेधकरवाय युधिठिर कुल को दोष मिटायो । करिदिग बिजै बिजै को जग में भक्त पच करवायो । नाना बिध कीन्ही हरि क्रीडा जदुकुल आप दिवायो । जो जेहि लोक छोड के आयो ताको तहं पहुंचायो । उधो को कहि ज्ञान आपनो निगमन तत्व बतायो । कहो कथा दत्तात्रेय मुनि की गुरु चौबीस करायो । कहि आचार भक्त बिध भाषी हंस धर्म प्रगटायो ॥ कही बिभूत सिद्ध साधनता आश्रमचार कहायो ॥ सांख्य तत्वगीता हरि कीन्ही गुनके भेद करायो । ऐलगीत पुन भिक्षु गीत कहि पूजा बिधि दरसायो । सदा बसत हरि पुरी द्वारिका बहु बिध भोग बिलासी । आदिअनंत अघट्ट अनूपम है अबिगत अबिनासी । एक दिना एक बिप्र द्वारिका बसत सुखद निज धाम । बेद रूप तप रूप महा मुनि कृष्ण बिप्र यह नाम । बालक दशजु भये वाके जब भूमा लिये संगाय । चित में यह अनुरक्त बिचारत हरि दरसन की चाय । दस सुत भये जान के ब्राह्मण करि पुकार हरि पास । तब हरि कह्यो देव की गति

यह करत काल जग नास । तब अर्जुन यह कह्यो मत्तह्वै न्हप नाहिन भुव भार । मैं अर्जुन गांडिव धनु जाको कालसो लरो छिन मार । जब सुत भयो कह्यो ब्राह्मण ने अर्जुन गये गृहताह । शरपंजर रोप्यो चहुंदिसते जहां पवन नहि जाह । तब सुत गयो देह को खेके दरसन भयो न ताह । अतिही क्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय । तब अर्जुन ढूढन को निकसे तीन लोक फिर आयो । कहूं न पायो सुत ब्राह्मण के तब मन में अकुलायो । कियो विचार प्रबेस अगिन को हरि आये समुझायो । लै निज संग चले पछिम को लोकालोक सुहायो । कनक भूमि अरु धाम देवके देखे-परम सुहाये । बहुत निबिडतम देख चक्र धरि धरेव हाथ समुझाये । महा काल पुर तुरत पधारे हरि भूमा के पास । तुल्य अगिन वर अगिन समानी भूमा तेज प्रकास । कृष्ण तेजको देख सकल सुरतन मन भ्ये चुलास । अतिही मंद तेज भूमा को हरि के तेज प्रकास । अति आनंद परस पर बाढ्यो जब उन बिनती कीनी । भली भई भुवभार उतारेव मेरी फिर सुधि लीनी । लै दश पुत्र द्वारिका आये दीन्हें बिप्र बुलाय । कीनो दुःख दूर अर्जुन को महिमा प्रगट देखाय । कीनी केलि बहुत बल मोहन भुवको भार उतारेव । प्रगट ब्रह्म राजत द्वारवती बेद पुरान बिचारेव । एक दिना रुकमिनि सो माधो करत बात सुखदाई । सुनु रुकमिनी राधिका बिन मोहि पल छिन कल्प बिहाई । कनक भूमि रचि खचित द्वारिकाकुंजन की छबि नाही । गोबर्द्धन परवत के ऊपर बोलत मोर सुहाहीं ॥ जमुना तीर भीर खग मृग की मोहि नित प्रति सुध ध्यावे । वृंदाबिपिन राधिका मंदिर नित प्रति खाडखडावे । रातिदिवस रस अवत सुधा में कामधेनु दरसाई । लूटलूट दधि खात सखन संग तेसो स्वाद न पाई ॥ षटरस भोजन नाना विध के करत महलके माहीं । छाके खात ग्वाल मंडल में वैसो तो सुख नाहीं । जन्म भूमि देखन के कारन मेरो मन ललचावे । धौरी धेनु बुलावन कारन मधुरे बेनु बजावे । रास बिलास बिबिध मैं कीन्हें संग राधिका लीन्हें । कीने केलि बिबिध गोपिन सो सबहिन को सुख दीन्हें । बल मोहन फिर ब्रजहि पधारे ऊधो को सगलीन्हें । दीनों बास चरण रज गोपिन गुल्मल तारसभी नें ॥ सदा बिलास करत गोकुल में धन धन यसुमति मात ॥ ज्यों दीपकते दीपक कीन्हों भये द्वारिका नाथ । नित प्रति मंगल रहत महर के नित प्रत बजत बधाई ॥ नित प्रतिमंगल कलस धरावत नित प्रति बेद पढाई । श्री वृषभानु राय के आंगन नित प्रति बजत बधाई । नित प्रति मिल मुनि राज मंडली मंगल घोष कराई । बाल केलि क्रीडत ब्रज आंगन यसुमति को सुख दीनों ॥ तरुन रूप धरि गोपिन के हित सबको चित हरि लीनों । चंद्रावली गोप की कन्या चंद्रभाग गृह जाई । भई किशोर श्यामने देखी अदभुत प्रीति बढाई । तब ललिता पूछ्यो नीके कर केहि विध श्याम मिलाई । अब न परत मोकूं कल छिनहू जिय में अति अकुलाई । तब उन कह्यो सीस गोरस ले बेचनके मिस आओ ॥ गोबर्द्धन पर गोविंद खेलत निरख परम सुख पाओ । करि सिंगार चली चन्द्रावलि नख सिख भूषन साजै ॥ ज्यों करिनी

गजराजविलोकत ढूंढत है अति गाजै । गोवरधन के सिखरचारुपरसखावृंद संगलीन्हें ॥ गोपिन देख टेर हरि कीन्हों दान लेन मन कीन्हें । राखो घेरि सकल युवतिन को सखा वृन्दसो भाष्यो । आपु जाय पकर्यो कोमल कर दधि अंमृत रस चाष्यो । देहो दधि को दान नागरीगहर न लायो चित्त । तुमरे काज नित्य हम ठाढे अरपे अपनों वित्त । वृंदाबन में धेनु चरावत मांगत गोरस दान ॥ नाना खेल सखन संग खेलत तुम पायो नृप यान ॥ अरी ग्वालि मह मंत्त बचन की बोलत बचन बिचार । अचलराज गोवर्द्धन मेरो वृंदाबन मंझार ॥ खेलत यहि ॥ जो तुम राजा आप कहावत वृन्दाबन की ठौर । लूट लूट दधि खात सबनको सब चोरनके मौर ॥ चोरी करत भक्तके चितकी अरु दधि अरु नवनीत । सखा वृन्द सब मीत हमारे बडी राज रजनीत ॥ जो तुम राजनीत सब जानत बहुत बनावत बात । जब तुम जन्म लियो मथुरामें आये आधी रात ॥ सुनरी ग्वालि गंवार बातकी बोलत बिना बिचार । कमल कोशमें बसत मधुप ज्यौं त्यौं भुव रहे मुरार ॥ दूध दही के नांत बनावत बातें बहुत गोपाल । गढिगढि छोलत कहारावरे लूटत हो ब्रजबाल ॥ जो प्रभु देह धरे नहि भुव परदीन अधमको तारे । बढे असुर पुहुमीपर खल अति तिन्हें तुरत को मारे ॥ योग युक्तकर ध्यान लगावत योग सिद्ध कर ज्ञान । नेति नेति करि निगम बतावत ताहि होत निरमान ॥ जोग सांख्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय बिनास । प्रेम भक्त मेरो यश गावे तेहि घटमेरो बास ॥ मुखऊपर कहा कहों लायके अन उत्तर की खोर । जब जसमति ने ऊखल बांधे हमहीं दीन्हें छोर ॥ बालक निपट अयान ग्वालनी कछु सुध जानि नजाय । लैकर चीर कदम पर बैठ्यो सबहिन हाहा खाय ॥ बहुतभये हो ढीठ सांवरे मुखपर गारी देत । तुमरे डर हम डरपत नाहिन कहा कंपावत बेत ॥ श्याम सखन सों कह्यो टेर दे घेरो सब अबजाय । बहुत ढीठ यह भई ग्वालनी मटुकी खेहु छिडाय ॥ जाय श्याम कंकन करलीनो गहि हारा बलि तोर । लूट लूट दधि खात सांवरे जहां सांकरी खोर ॥ इन्द्रा वृन्दा और राधिका चन्द्रावलि सुकुमार । बिमल बिमल दधि खात सबनको करत बहुत मनुहार ॥ गहि बहियां ले चले श्याम घन सघन कुंज के द्वार । पहिले सखी सवे रचिराखी कुसुमन सेज संवार ॥ नाना केल सखिन संगविहरत नागर नन्द कुमार । आलिंगन चुंवन परि रंभन भेटत भरि अंकवार ॥ श्रम जल बिन्दु इंदु आनन पर राजत अति सुकुमार । मानो बिबिध भाव मिल बिलसत मगन सिंधु रससार ॥ कुंज रंध्र अबिलोक सहचरी अपनोतन मनवारे । निरख निरख दंपतिने तन सुख तोर तोर तन डारे ॥ यह अबिलोक देव गन्धर्व मुनि बरषत कुसुम अपार । जै जै करत वार नीराजन बोलत जैजैकार ॥ गोवर्द्धन की सघन कंदरा कोनो रैन निवास । भोर भये निजधाम चले दोउ अति आनंद बिलास ॥ नन्द धाम हरि बहुरि पधारे पोढ रहेनिज सैन । जसुमत मात जगावत भोरहि जागे अम्बुज नैन ॥ कंरी मुखारी और कलेऊ कीनो जल असनान । करि शृंगार चलेदोउभइया खेलन को सुखदान ॥ कहुंखेलत मिल ग्वाल मंडली आंख मीचनी खेल । चढा चढी को खेल सखन में खेलतहैं रसरेल ॥

कहं आमरूडारबिटपकी खेलत सखन मंझार । कूद कूद धरनी सब धावत दाव देत किलकार ॥ भोजन समय जात जसुमति ने लीने दुहुन बुलाय । बैठ आय जसुमत कि गोद्में आनन्द उर नसमाय ॥ बहु विध के पकवान बनाये परसत जसुमत माय । आ रोगत बल मोहन दोऊ सुखदेखत ब्रजराय ॥ कबहूं कबर खात मिरचनकी लागी दसनट कोर । भाज चले तब गहे रोहनी लाई बहुत निहोर ॥ भोजन करि नाना बिध दोऊ लीनें मठा सलोनो । अचवन करि ब्रजराज पधारे बल मोहन सुख मानो ॥ बीरी खाय चले खेलनको बीच मिली ब्रजनार । ले चलि पकर बांह राधा पै सघन कुंज के द्वार ॥ राधा सों मिलि अति सुख उपज्यो उन पूछी एक बात । कहौ जु आज रैन कह सोये हम देखे तुम जात ॥ तब हरि कह्यो सुनो मृग नैनी गाय गई एकदोर । ताकौ ले न गयो गोवर्द्धन सोय रह्यो तेहि ठौर ॥ कंदमूल फलदीने गोधन सोनिशकोमैं खायो । भोरभये उठि तेरे आयो चरन कमल परसायो ॥ निज प्रति बिंब बिलोकि राधिका हरिनख मंडल मांह । द्वितिय रूप देखे अवलाको मान बढ्यो तनछांह ॥ चली रिसाय कुंज मृग नयनी जह अलि करत गुजार । बैठी जाय एकांत भवन में जहां मान गृहचार ॥ नन्दकुंवर विरहन राधा के विरह भये भरि पूर । बैठे जाय एकांत कुंज में सखा कियो सब दूर ॥ ललिता बोल कही मृदु बानी कृष्ण कमल दल नैन । बिन राधा मोहि कल न परत है कहत मधुर मृदु बैन ॥ बेग जाय परि पाय राधिका बिनती करो सुनाय । दरशन देउ सकल दुख मेटो तुम बिन रह्यो न जाय ॥ तुम बिन खान पान नहिं भावत गोचारन शृंगार । रैन नींद नहि परत निरंतर संभाषन व्यवहार ॥ करि दंडवत चली ललिता जो गई राधिका गेह । पायन पर पर बहुत बिनय कर सुफल करन को नेह ॥ बेग चलो वृषभानु नन्दनी बोलत नन्द कुमार । तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ॥ नवनिकुंजमें मिलो श्याम सूं भेटो भरि अंकवार । कुसुम सेजपर करो केल प्रिय गिरधर परम उदार ॥ तो बिन पियहि कछू नहि भावे तोसों पिय आधीन । तो बिन श्याम रहत है ऐसें जैसें जल बिन मीन ॥ कहा सुभाव परो सखि तेरो यह बिनवत हौं तोह । मान करत गिरवरधर पियसों मानत नाहि न मोह ॥ करि शृंगार सकल ब्रज सुंदरि नीलांवर तन साज । रैन अंधेरी कछू नदीखत नूपुर धुनि जिनबाज ॥ कुवलय दल कुसुमन सज्या रचि पंथ निहारत तोर । सुपन जाग अरु सैन सुमृततुव बचन सत्य हेमोर ॥ सित अरु पीत जूथिकाबेनो गूंथो बिबिध बनाय । रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ॥ तूं छबि सिंधु बिहर ब्रज नायक छुद्रनदी नहि भावै । जबतें नाम सुन्यौ श्रवनन तुव रैन नींद नहि आवै ॥ हरि राधा राधा रटत जपत मंच दुरदाम । बिरह विराग महा योगी ज्यौं बीतत हैं सब जाम ॥ कबहुक किश लै सेज सवारत तेरेही हितलाल । कबहुंक अपने हाथ सवारत गूथत कुसुमन माल ॥ तुवविन बट संकेत सदन बन देखत लगत उदास । बिरह अगिन चहुं दिशतें धावत फूले दिखत पलास ॥ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृत बान । बैठे रहे दुरसदन सघन बन धुनि नहि सुनियत कान ॥ कालिन्दी तट बिमल कदम तर करत बदन तुव ध्यान । सुहृदय सखा

त्यागि मन मोहन करत मधुर तुवगान ॥ गुंजत मधुप श्रवन न सुनत है तुवश्रुत की सुधि आवै । कंचन वरन जान तेरो वपु पीतांबर पहिरावै ॥ सुनत कोकिला शब्द मधुर धुन कमल नयन अकुलात । तेरे बोल करत सुधजियमें बिरह मगन ह्वै जात तुव नासा पुटगत मुक्ता फल अधर बिंब उनमान । गुंजा फल सबके सिर धारत प्रगटी मीन प्रमान ॥ सिंधुसुता सुत तासु रिपु गमनी सुन मेरी तूं बात । काम पिता बाहन भख कीतन क्यों न धरत निज गात अलि वाहन पति बाहन रिपुको तपत बढी तन भारी । शैल सुता सुत तासुत अंगना सोते तवै विसारी ॥ भृंग जूथ चतुरानन तैनया ब्रह्म न द सुर संग । जलसुत बाहन सोजन धारत विषम लगत विष अंग ॥ चतुरानन सुतता सुत वासुत उदित होन अब आयो । मन्मथ मात तात सुत अथयो सोतो वृथा गवायो ॥ पंकज उर पंकज जिन केरे तेरो अटल सुहाग । सुरपति बाहन तासुत शिर पर मांग भरो अनुराग ॥ कमल पुत्र तासुत कर राजत सो हरि निज कर लीन्हें । सप्त सुरन उप जाय बजावत रटन राधिका लीन्हें ॥ सुत प्रह्लाद तासुसुत तापित भ्राता वृथा गवायो । संग्या सुत वपु सहस बसन तन सोतन लगत छयो ॥ सारंग ऊपर सारंग राजित सारंग शब्द सुनावें । सारंग देख सुने मृग नैंनी सारंग सुख दरसावें ॥ सारंग रिपु की बदन ओट दे कह बैठी है मौन । ब्रह्म सुता सारंग के धोखे करत सकल व्रज मौन ॥ सारंग सुता देख सारंग को तेरो अटल सुहाग । सारंग पति तापति ताबाहन कीरत रट अनुराग ॥ दधि सुत बाहन सुभग नाशिका दधि सुत बाहन देखो । दधिसुत बाहन बचन सुनत तुव अंग अंग अब रेखो ॥ शसि को भ्रात कहत ताबाहन कुंद कुसुम ललचात । खंजन सहस देख तुव अंखिया तन मन में अकुलात ॥ मारुत सुरपति रिपु ता पतिनी तासुत वाहन बात । श्रवन सुनत अकुलात सांवरो कछुक कही नहिं जात ॥ चतुरानन सुत वासुत पतनी तासुत को जेा दास । तासुत बाहन पुत्र अंगधरि जल सुत करेां प्रकास ॥ श्रीबलदेव रास जेा कहिये तामैं भानु मिलाय । ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुनगाय सिंधु सुता तुव भाग्य बिलोकत मनमें रही लजाय ॥ कामपिता माता गुरुता वपु जुव तिकोट दरसाय ॥ सातेा रास मेल द्वादश में ऐसें बीतत जाम । दुतिय रासमें मिलत सप्तमी सों जानत निजधाम ॥ शैल सुता धरितारिपु बाधत अंग अंग पिय आज । कोट जतन कर सोंचत तोऊ मिटत नहीं व्रजराज ॥ वायस अजाशब्दमन्त्र मोहन रटत रहत दिन रैंन । तारापति केरिपु पर ठाढे देखत हैं हरि नैंन ॥ गंगा सुत रिपु रिपु सिख मेरी सुनत नहीं सखि काह । नारायण सुततासुततासुत सुत लगत विषम विष ताह जल सुत बाहन देख बदन तुव ब्रह्म सुता अकुलानी । मंगल मात तासु पति बाहन राजत सहस भुलानी ॥ दक्षप्रजापति की तनया पति तासुत नार गई । सिंधु सुता सुत बाहन की गति देखत बिखम भई ॥ अगिन तात तेहि तात अंगना त्यों उरमें तूंराषी । बंधु कुसुम द्रुम तारिपु को पति सारंग रिपु कर भाषी ॥ पतिपाताल लगन तन धारन सेा सुख भुजा बिचारी । प्रथम मथत जल निधि जेा प्रगट्यो सेालागत सबनारी ॥ बंधु कुमुद पति पिता सुता जेा तुव जस मधुरे गावै । ब्रह्मसुता सुत पद रज परसत सारं

सुता देखावै ॥ इन्द्र सुता पति भुजा लगन लखि जलसुत हृदय लगावें । इन्द्रसुता तन यापति को सुत ताके गुनै न पावें ॥ धरत कमल में कमल कमल कर मधुर बचन उच्चार । कमला वाहन गहत कमल सों कमलन करत बिचार ॥ कालिन्दी पति नैंन तासु सुत लागत हैं सब लोग । इन्द्र मात तेहि तात सेा सर धत प्रगट देखियत भोग ॥ अंबुज मात तात पति ता रिपु तापति काम बिगारे । तातें सुनतू भान नंदनी मेरो बचन बिचारे तीस भान है मास सकल ऋतु सिंधु सुता सन जान । भूषन अंग लसत गुंजाबलि और न कछू समान ॥ इति दृष्टि कूट सूचनका संपूर्ण ॥ * ॥ कबहुंक सेज रचत बेदीकर हृदय होम घृत नैंन । विप्रभोज बेालन तुव देखियत अंग कूस नहिं चैन ॥ अबतू बेग बिचार बचन मम सुन वृषभान कुमार । मिलहेा बेग कमल दल लेाचन सुन मेरी मनुहार ॥ गैार बरन ह्वैजात सांवरेा ध्यान करत तुव अंग । पुन ललिता हरि के ढिग आई बैठे सांवल रंग ॥ वेग चलेा तुम श्याम मनेाहर आपु काज महकाज । लेहु मनाय प्राण प्यारी को प्रगट्यो कुंज समाज ॥ ऋतु वसंत अब आइ देखियत फूले कुसुम सुरंग । मानेा मदन वसंत मिले दोउ खेलत हैं रस रंग ॥ बेगि चलेा अब प्रिया मनावन नेक बिलंब न लाओ मेरी कही बात नहिं मानत ताको ज्ञान दृढाओ ॥ परेा पांय अपराध छिमावत सुनत मिलेगी धाय । सुनत बचन दूतिका बदन तें श्याम चले अकुलाय ॥ जहं बैठी वृषभान नंदिनी तहं आये धरि मौन । परे पाय हरि चरन परस करि छिम अपराध सलेान ॥ सुनि हरि बचन बिलेाकत सेाभा मान गयेा सब छूट । मिले धाय अकुलाय श्याम घन प्रेम काम रस लूट ॥ रच्यो सिंगार श्याम अपनें कर नखसिख प्रिया बनायेा । सीसफूल बेनी नकबेसर तिलक भाल करवायेा ॥ जुगताटंक चिबुक दसनावलि कर कंकन उरमाल । नूपुर पद कटि छुद्र घंटिका सजश्रृंगार रसाल ॥ सकल सिंगार करत बरनन को कृपा जथा मतिमेार । हेात बिलंब मिलन के कारन तातें बरनत थेार ॥ चले धाय नवकुंज दोउमिल किसलय सेज बिराजे । परिरंभन सुखरास हास मृदु सुरत केल सुखसाजे नाना बंध बिबिध रसक्रीडा खेलत श्याम अपार । रस रस तत्व भेद नहिं जानत दंपति अंग सभार ॥ सुरत समुद्र मगन दंपति रस झेलत अति सुख झेल । निरबधि रमन अपरमित अच्युत मनुज माय बहुखेल ॥ नूपुर संचित किंकिनि की धुनि सुनत मधुर किलकार । मदन सिंधु मधुमत्त मधुपगन फूले करत गुंजार ॥ मधुप जूथ मिल सघन चन्द्रमा तडित लिये आकास । खंजन मीन बजावत गावत निरतत सुख सुबिलास ॥ जलद समूह खसत उडगन गन पै समुद्र के बीच । मकर कपेाल बेाल मृदु कोकिल अमृत सुधा रस सींच ॥ मेाहन बेल सिंगार बिटपसेा उरझी आनंद बेल । कंचन बेल तमालहि लपटी रसिक रंग भरि रेल ॥ जुगल कमल सेा मिलत कमल जुग जुगल कमलले संग । पांच कमल मध्य जुगल कमल लखिमनसा भई अपंग ॥ किरण कदंब मंजुका पूरन सौरभ उड़त अवेश । अगर धूप सौरभ नासा सुख बरषत परम सुदेश ॥ कुंद कुमुद बंधूक मिलत पुन मीन देख ललचात । तापर चंद देख संज्ञा सुत तनमें बहुत डरात ॥ बरनाभ खकरमें अबिलेाकत केस पास कृतबंद । अरध समुद्र सदल जेा सहस पुन उपजत है

सुख फंद ॥ मुदित मराल मिलत मधु कर सो खंजन मिलत कुरंग । कीर कीर रन धीर मिलतसमरत रस लहर तरंग ॥ सुरत समुद्र कहत दंपति कै निर बधि रमन अपार । भयो शेष मन मूढ कहन को राधा कृष्ण बिहार ॥ सोभा अमित अपार अखंडित आपआतमा राम । पूरन ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम सब बिध पूरन काम ॥ आदि सनातन एक अनूपम अबिगत अल्प अहार । ओंकार अदिवेद असुर हन निरगुण सगुन अपार । चतुरानन पंचानन अरु पुन षट आनन समजान । सहस आनन बहु आनन गावत पारन पाय बखान ॥ * ॥ खेलत यहि बिध० ॥ * ॥ सघन कुंज में अमित केल लख तन सुगंध की रेल । मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदा रस झेल । मलिन भये रसमान सरोवर मुनि जन मानसहंस । थकित बिलोक सारदा वरनन करवे बहुत प्रसंस । वृन्दावन निज धाम परम रुचि बरनन कियो बढाय । व्यास पुरान सघन कुंजन में जब सनकादिक आय ॥ धीर समीर बहत तेहि कानन बोलत मधुकर मोर । प्रीतम प्रिया बदन अबिलोकत उठिउठि मिलत चकोर । अमित एक उपमा अबिलोकत जिय में परत बिचार । नहि प्रवेस अज शिव गनेश पुन कितक बात संसार । सहस रूप बहु रूप रूप पुनि एक रूप पुनि दोय । कुमुद कली बिगसित अंबुज मिल मधुकर भागी सोय । नलिन पराग मेघ माधुरि सो मुकलित अंब कदंब । मुनि मन मधुपसदा रस लोभित सेवत अज शिवअंब । गुरु प्रसाद होत यह दरसन सरसठ बरष प्रवीन । शिव बिधात तप करेव बहुत दिन तऊ पार नहि लीन्ह । सुख पर्यंक अंक भुव देखियत कुसुम कुंद दुम छाये । मधुर मल्लिका कुसुमित कुंजन दंपत लगत सोहाये ॥ गोबरधन गिरि रतन सिंहासन दंपति रस सुखमान । निबिड कुंज जहं कोऊ न आवत रस बिलसत सुख खान । निसा भोर कबहूं नहि जानत प्रेम मत्त अनुराग । ललितादिक सींचत सुख नैनन जुर सहचरि बड भाग । यह निकुंज को बरनन करिवे बेद रहे पचिहार । नेतिनेति कर कह्यो सहस बिध तऊन पायो पार । दरसन दियो कृपा करि मोहन बेग दियो बरदान । आगम कल्प रमण तुवहूं है श्री मुख कही बखान । सो श्रुत रूप होय ब्रजमंडल कीनों रास बिहार । नवल कुंज में अंस बाहु धरि कीन्हीं केलि अपार । पुन ऋषि रूप रामवर पायो हरि से प्रीतम पाय । चरन प्रसाद राधिका देबी उनहरि कंठ लगाय । वृन्दावन गोबरधन कुंजन जमुना पुलिन सुदेस । नित प्रति करत बिहार मधुर रस श्यामा स्याम सुबेस । निरख निरख सुख दंपति को यह कविकुल सब पचि हारे । भूषन खसै सुरत बस दोऊ केशन आपु संवारे । ललिता ललित बजाय रिझावत मधुर बीन करलीन्हें । जानप्रभात रागपंचम षट माल कौसरसभीने । सुर हिंडोल मेघ मालब पुन सारंग सुर नट जान । सुर सांवत भूपालीईमन करत कान्ह रोगान । ऊंचअडाने के सुर सुनियत निपट नायकी लीन । करत बेहाग मधुर के दारो संकर सुर सुख दीने । सोरठ गौडमलार सोहनी भैरवललित बजायो । मधुर बिभास सुनत बेलावल दंपत अति सुख पायो । देव गिरीदेशाक देव पुनगौरी श्री

सुखरास । जैत सिरी अरु पूर्वी टोडी आसावरि सुख रास ॥ राम कली गुन कली केतुकी सुर सुघराई गाये । जै जैवंती जगत मोहनी सुर से बीन बजाये । सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिंधु बीर रसमान्यो । जान प्रभात प्रभाती गायो भोर भये दोऊ जान्यों । जागे प्रात निपट अलसाने भूषन सब उलटाने । करत सिंगार परस पर दोऊ अति आलस सिथलाने । जाहरंभ ह्वै सहचरि देखत जन्म सुफल करिलेखे । जान प्रभात उछंगन दंपति लेत प्रान रस पेखे । औट्यो दूध कपूर मिलायो लै ललिता तहं आई ॥ पहिले श्यामाको अचवायो पाछे पिवत कन्हाई । करि शृंगार सघन कुंजन में निसि दिन करत बिहार । नीराजन बहुविध बारत हैं ललिता दिक ब्रजनार । कबहुंक केल करत जमुना जल सुंदर सरद तडाग । कबहुंक मधुर मा धुरी झूलत आनंद अति अनुराग । प्रथम बसंत पंचमी शुभ दिन मंगल चार बधाये । पंचानन जारेव मन्मथ सो प्रगट भयो फिर आयो । जसुमति मांत बधाई बांटत फूली अंगन समाई । उबटिन्हवाय श्याम सुंदर को आभूषन पहिराई ॥ घर घर ते आईं ब्रज सुंदरि मंगल साज संवारे ॥ हेम कलस सिर पर धरि पूरण काम मंत्र उपचारे ॥ अबिर गुलाल अरगजा सो धोखीन्हों सौज बनाय । मन में किये मनोरथ बहु विध मिलवत सब मन भाय ॥ भीर जान सिंह घोर चिदन की जसुमत भवन दुराई ॥ ढूंढ सकल विय दोर मांत को पकर बाह ले आई । केसर चंदन और अरगजा सीस महर के नाये । जो जो विध उपजी जाके जिय सोइ सोइ भांति कराये । फगुआ दियो महर मन भायो जसुमति परम उदार ॥ पकर लिये घनश्याम मनो हर भेटे भरि अंकवार । पहिली जान बसंत पंचमी जशुमति बहत खिलाये ॥ केसर चोवा और अरगजा स्याम अंग लपटाये ॥ तापाछे गोपिनने छिरके कनक कलस भरि डारे । मानो सीस तमाल अछत घन सरस सुधानिधुरारे । चंदन चोवा मथत हाथ कर नील जलद तन अरप्यो ॥ मानो प्रगट करी अपने चित पियको प्रान समरप्यो ॥ किये मनोरथ नाना विधके मेवा बहु विध लाई । सो हरिने स्वीकार किये सब निरख परम सुख पाई ॥ सुबल सुबाहु तोक श्री दामा सकल सखा जुरि आये । रतन चौक में खेल मचायो सरस बसंत बधाये ॥ करत परसपर गोप ग्वाल मिल क्रीडा अति मन भाई । सुरंग अबीर गुलाल उडावत रह्यो गगन सब छाई । फगुवा देन कह्यो मन भायो सबै गोपिका फूलीं । कंठ लगाय चलीं प्रीतम को अपने गृह अन कूली । करत आरती विविध भांति सो जशुमति परम सुहाई । सखा वृन्द सब चले जमुन तट खेलन कुंवर कन्हाई । बैठे जाय सघन कुंजन में जमुना तीर गोपाल । सखी एक तहं आय निकटही बोली बचन रसाल । वृन्दा बन फूल्यो नंद नंदन सघन कुंज बहु भांत । हरि तपीत मुकुलित द्रुमपल्लव मुखरित मधु कर पांत ॥ ठौर ठौर झिल्लीधुनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार ॥ मानो मन्मथ मिल कुसुमा कर फूले करत बिहार । अपनों सब गुण तुम्हे देखावन स्वर बसंत मिल आयो । मधुर माधुरी मुकुलितपल्लव लागत परम सोहायो । गोवरधन के सिखर सुभग पर फूले

कुसुम पलास । सहज सुरत सुख देत संजोगिन बिरहन करत उदास । पुहुप पराग परस मधुकरगनमत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख जुवतिजन बिषया शक्र अपार । बीथिन बिपिन बिलोक बिबिध द्रुम मंडित कुसुमितकुंज ॥ मनहुं हेमंडपिका मुख चित कल्प लतारसपंज । बेग चलो वृंन्दावन नायक राधामारग जोवत । हिल मिल खेलो मन्मथ क्रीड़ा क्यों बसंत दिन खोवत ॥ सुनत बचन ललिता के मोहन तुरत चले उठिधाय । कियो बसंत खेल वृन्दाबन अद्भुत फागु मचाय ॥ लता लता बन बन कुंजन मे खेलत फिरत बसंत । मनहुं कमल मंडल में मधुकर बिहरत है रस मंत ॥ उत श्यामा इत सखा मंडली उत हरि इत ब्रजनार । मनो ताम रस पारस खेलत मिल मधुकर गुंजार ॥ खेल बसंत बहुत सुख मान्यों हरषे गोपी ग्वाल । बिहंस गये ब्रजराज भवन सब चंचल नैंन बिसाल ॥ हेारी डांडो दिवस जानके अति फूले ब्रज राज । बैठे सिंघ द्वार पें आपुन जुरिके गोप समाज ॥ बिप्र बुलाय बेद बिध करिके हेारी डांडो रोप । आनंदे सब गोप मंडली मनमथ कियो प्रकोप ॥ परिवा प्रथम दिवस हेारी को नंद राय गृह आई । सकल सोज गोपी कर लेके खेलन को मन भाई ॥ दुहजदु हूदिश ते हेारी मचि सुरंग गुलाल उडायेा । मनेा अनुराग दुहुन के अंतर सबहिन प्रगट करायेा ॥ तीज तरुनि मिल पकरे मोहन गहि कर अंजन दीनों । मत्त मधुप बैठे। अंबुज पर मुखरत हैसुर झीनों ॥ चंपक लता चौथदिन जान्यों मृग मद सेार लगायेा मनहु नील जलधर के ऊपर कृष्णागर लपटायेा ॥ पांचै प्रमुदा परम प्रीतसों केसर छिड़की घेार । मनहुं सुधा निधि बरषत घन पर अमृत धार चहुं ओर ॥ छट छरागनी गाय रिझावत अति नागर बल बीर । खेलत फागु संग गोपिन के गोप वृन्द की भीर ॥ सातें सजि सुगंध सब सुंदरि ले आई उप हार ॥ बलि मोहन को हसत खेलावत रीझ भरत अंकवार । आठे अति आतुर अबला प्रिय चुंवन दीनों गाल । नानाबिध शृंगार बनाये बेंदा दीन्हेा भाल ॥ नेामी नौसत साज राधिका चन्द्रावलि ब्रजनारि । हेा हेा करत पलास कुसुम रंग बरषत हैं जेा अपार ॥ दशमी दसेा दिसा भइ पूरित सुरंग अबेार गुलाल । मनु प्री तम मिलबे के कारन फूले नयन बिसाल ॥ एकादशेा एक सखि आई डारत्रेा सुभग अबीर । एक हाथ पीतांबर पकरत्रेा छिरकत कुंम कुंम नीर ॥ द्वादशि मची दुहूं दिस हेारी इत गेापी उत ग्वाल । इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नव लाल ॥ तेरस तरुनी सब मिलके यह कीनों कछुक उपाय । तेाक सुवल मधु मंगल बेाल्यो सबहिन मतेा सुनाय ॥ चौदस चहूं दिसा सेा मिलके गठजेारो गहि भेार । मन मोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गेार । देख कुहू कुसुमा कर फूल्यो मधुप करत गुंजार चंद्रावलि केसर लेआई छिरके नंदकुमार । शुक्ल पक्ष परिवा पुरुषेात्तम क्रीड़ा करत अपार ॥ हल धर संग सखा सब लीन्हे डोलत गृह गृह द्वार । दैज दाम कुसुमन की गूंथी अपने हाथ संवार ॥ दई पठाय भानु तनया को पहिरत घेाष कुमार । तीज तरुनि सब गावत आईं नंदराय दर बार । पकरे आय श्याम नट सुंदर भेटत भरि अंकवार ॥ चौथ चहूंदिस ते सब धाये सखा मंडली धाय । इततें आईं कुंवरि

राधिका हेारी अधिक मचाय ॥ पांचे पंच शब्द कर साजे सजि बादित्र अपार । रुंज मुरजढफताल बांसुरी झालर को झंकार ॥ बाजत बीर रवाव किंन्नरी अमृत कुंडली जंच सुर सुर मंडल जलतरंग मिल करत मोहनी मंच ॥ बिबिध पखावज आवज संचित बिच बिच मधुर उपंग । सुर सहनाई सरस सारंगी उपजत तान तरंग ॥ कंस ताल कटताल वजावत शृंग मधुर मुहचंग । मधुर खंजरी पटह प्रनव मिल सुखपावत रत भंग ॥ निपट नकेरी श्रवनन धुनि सुन धीरन रहे ब्रज बाल । मधुर नाद मुरली को सुन के भेटे श्याम तमाल ॥ छटको षटरस सरस बनायेा हरि भोजन करवायेा । नानाबिध पकवान बनायेा जै बल अति सुखपायेा ॥ सातें सखि मिलि बारी लाई आरोगे ब्रजराज । आठें दिशा सकल मिल ठाढी टूर करी सब लाज ॥ नौमी नवसत साजि राधिका हरिसों खेलत फाग । दशमी दशहु दिशा परि पूरन बाढ्यो अति अनुराग ॥ एकादशी राधिका मोहन दोउ मिल खेलन लाग । बैठे जाय सघन कुंजन में जहं सहचरि बड़भाग ॥ सघन कुंज मे डोल बनायेा झूलत हैं पिय प्यारी । ललितादिक बोरी जेा खवावत नाना भांत संवारी ॥ अति सुगन्ध घसलाय अरगजा छिरकत सांवल गात । हरि प्यारी प्यारी हरि छिरकत सेाभा बरनि न जात ॥ द्वादशि दिवस दुहूंदिस माच्यो फागु सकल ब्रज मांझ । आलिंगन सब देत श्याम को लखैं न धुंधर मांझ ॥ तेरस भामिन पियेा अधर रस अति आनंद अघाय । चहुं दिसते गहिके गठ जेारी कीन्हेा सखियन आय ॥ पून्यों सुख पायेा ब्रजबासी हेारी हरष लगाय । परम राग अनुराग प्रगट भयेा अति फूले ब्रजराय जसुमति माय लाल अपने को शुभ दिन डेाल झुलायेा । फगुवा दियेा सकल गेापिन को भयेा सबन मन भायेा ॥ यमुना जल क्रीडत ब्रजबासी संग लिये गेाबिन्द । सिंह द्वार आरती उतारत जसुमत आनंद कंद ॥ यहि बिध क्रीडत गेाकुल में हरि निज वृन्दाबन धाम । मधुबन और कुमुदबन सुन्दर बहुला बन अभि राम ॥ नंदग्राम संकेत खिदरबन और काम बन धाम । लेाहबन मांठ बेल बन सुन्दर भद्र वृहद बनगाम ॥ चैारासी ब्रज कोस निरंतर खेलत हैं बलि मेाहन । श्याम बेद रचिबेद यजुर में कह्यो चरित ब्रजमोहन व्यास पुराण प्रगट यह भाख्यो तंच ज्योतिसिन जान्यो । नारदसेा हरि कह्यो कृपा कर अमृत बचन परमान्यो ॥ सनकादिक सों कह्यो आपु हरि निज बैकुंठ मझार । व्यासदेव शुकदेव महामुनि नृपसों कियेा उचार ॥ नारायण चतुरानन सेाकहि नारद भेद बतायेा । तातें सुनके व्यास भागवत नृप शुकदेव जतायेा ॥ शेष कह्यो जेा सांख्यायन सेा सुनिके सनत् कुमार । कह्यो वृहस्पति पुन मैंचे सेा उद्धव कियेा बिचार ॥ ऐसे बिबिध प्रमान प्रगट बहु लीला करि ब्रजईस । सोई श्रीशुकदेव महा मुनि प्रगट कही राधीस ॥ वृंदाबन हरि यहि बिधि क्रीड़त सदा राधिका संग । भेारनिशा कबहु जानत हैं सदा रहत एक रंग ॥ सघन कुंज में खेलत गिरधर मथुरा की सुधि आई । राखे बरज राधिका रानो अवन सकेागे जाई ॥ राखेा कंठ लगाय लाल को पलक ओट नहि करिहेां । जुग कुच बीच भुजा दोउन मिल सदा प्रेम रंग भरिहेां ॥ सदा एक रस एक अखंडित आदि अनादि अनूप । कोटि कल्प बीतत नहिं जानत बिहरत जुगल सरूप ॥ शंकरपन

के बदन अनलतें उपजी अगिन अपार । सकल ब्रह्मांड तुरत जा सों मनो होरी दई पजार ॥ सकल तत्व ब्रह्मांड देव पुन माया सब बिध काल । प्रकृति पुरुष श्री पति नारायण सबहैं अंस गोपाल ॥ करम जोग पुन ज्ञान उपासन सबहीं भ्रम भर मायो । श्रीबल्लभ गुरु तत्व सुनायो लीला भेद बतायो ॥ तादिन तें हरिलीला गाई एक लक्ष पदबंद । ताको सार सूरसारावलि गावत अति आनंद ॥ * ॥ अथ श्री नाथ जीके बरदान ॥ * ॥ तब बोले जगदीश जगत् गुरु सुनो सूर ममगाथ । तूकृत मम यश जोगावें गो सदा रहैं ममसाथ ॥ * ॥ खेलत यहि बिधि हरि होरी हो होरी हो बेद बिदित यह बात ॥ * ॥ धरि जियनेम सूरसारावलि उत्तर दक्षिण काल । मन बांछित फल सबही पावें मिटे जन्म जंजाल ॥ सीखै सुनै पढै मन राखै लिखै परम चित लाय । ताके संग रहत हौं निशि दिन आनंद जन्म बिहाय ॥ सरससंमत सरलीला गावें युगल चरण चितलावें । गरभ बास बंदीखाने में सूर बहुरि नहि आवें ॥ * इतिटेक * ॥ ॥ * इतिश्री सूरदास जी कृत संमत सरलीला तथा सूरसारावली तथा सवालाख पदके शूची पत्र समाप्त ॥ * * * * * * * * * * * * * * * ॥ * रागसारंग * ॥ हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणार बिंद उरमें धरो ॥ हरिकी कथा होइ जब जहां । गंगादृ चलि आवे तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वती आवे । गोदावरी बिलबंन लावे ॥ सर्ब तीर्थको बास तहां । सूर हरि कथा होवे जहां ॥ १ ॥ ॥ रागसारंग ॥ यह बिध राजा करो बिचार । राज साज सबही को डार ॥ जीरन पट कोपिन तनधारी । चलो सुर सरी सोस उघारी ॥ पुत्र कलत्र देख सब रोवे । राजा तिनकी ओर न जोवे ॥ राजा चलत चले सब लोग । दुखित भये सब प्रीति बियोग ॥ राजा गंगा के ढिंग आये । किये स्नान मृत्तिका लाये ॥ करि संकल्प अन्न जल त्यागो । केवल हरि पदसो अनुरागो ॥ अत्रि बशिष्ठादिक तहं आये । नारद आदि तहां मुनिधाये ॥ कुस आशन दे तेहि बैठाये । यों कहि पुनि तिनको सिरनाये ॥ धन्य भाग तुव दरशन पाये । मम उद्धार करन तुम आये ॥ तुम देखत हरि सुमरन होई । और प्रसंग चले नहिं कोई ॥ आज्ञा होय करो अब सोई । जातें मेरी सद्गत होई ॥ कोई कहे ज्ञान बिस्तारो । कोई कहत यहां निस्तारो ॥ कोऊ कहे मंत्र जप करना । कोऊ कहे बहुत बिध बरना ॥ राजा कह्यो सप्त दिन माहीं । होतु अंत मोहि सूझत नाहीं ॥ यह अंतर शुकमुनि तहं आये । ठाढ भये सब मुनि समुदाये ॥ करि प्रणाम नृप आसन दीनो । पुनि सनमान ऋषिन सब कीनो ॥ शुक को रूप कह्यो नहि जाई । शुकको रह्यो कृष्ण रस छाई ॥ शुककी महिमा शुक ही जाने । सूरदास कहि कहा बखानें * ॥ २ ॥ * अथ भगवत नाम महिमा ॥ * ॥ राग भैरव ॥ * ॥ कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलि में । ताके पद पंकज की रेनुकी बलिमें ॥ सोई सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवंता । जाको निशि बासर रहे कृष्णनाम चिंता ॥ जोग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं । बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुख को सार कृष्ण कबहूं न बिसरिये । कृष्ण नाम लेले भवसागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी । उधरे

जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ भृंगीरे भजु चरन कमल पद जहां न निशिको त्रास । जब विधु भांन समान एक रस सुर बारिज सुख रास ॥ जहां कंजलग भक्ति हेाति नेा लछन रस एक निगम संग । शुक नारद सारद भंवर भृंग अनंग ॥ शिव बिरंच खंजनमन रंजन छिन छिन प्रगट प्रवेश । सुनु मधुकरी भ्रम त्याग मदन राजीव केश ॥ चरण सरोवर ब्रह्म शिव हंस शनकसनंदन व्यास । सुर प्रभु सुगंधमें प्रफुलित तहां चल करिये बास ॥ ४ ॥ अथ सप्त ऋषि उत्पत्ति ॥ राग बिलावल । ब्रह्मासुमिरन करि हरि नाम । प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम ॥ भृगु मरीच अंगिरा बशिष्ठ । अत्रि पूलह भयेा पुलस्त ॥ दक्ष प्रजापति आदिक भये । तिनते अनेक और हूंकये तिनतें प्रगटी सृष्टि अपार । सूर कहा लगि कहे पसार ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ शुकसेा नृपति परीछत सुन्यो । तिन पुनि भली भांति कर गुन्यो ॥ सुतसेबकनतब सुनियें कह्यो । बिदुर मयची सेा पुनि लह्यो ॥ सुनि भागवत सबन सुखपायेा । सूरदास सेा बरन सुनायेा ॥ * ॥ अथ व्यास सम्बाद ॥ राग बिलावल ॥ * ॥ सूत व्यास सेा हरि गुण सुने । बहुरेातन तजि मनमें गुने ॥ सेा पुनि नैमिषार में आयेा । तहां ऋषिन को दरशन पायेा ॥ शिष्यन कह्यो भागवत सुनाई । भली भांति हरिके गुनगाई ॥ प्रथम कह्यो तिन व्यास अवतार । सुनेा सूर सेा अब चितधार ॥ ६ ॥ अथ व्यास अवतार बरनन ॥ राग बिलावल ॥ सत युग लाख बरष की आई । चेता दश सहस करिगाई ॥ द्वापर दस एक ही भाई । कलियुग सत सेवत रहिगाई ॥ सेाक ऋषिन सुननेको भाई । कलि मरजाद कही नहि जाई ॥ तातें हरि करि व्यास अवतार । करी संहिता बेद बिचार ॥ बहुरि पुरान अठारह किये । एतहु शान्ति न आई हिये ॥ तब नारद तिनके ढिग आये। चारि श्लोक कहे समुझाये ॥ यह ब्रह्मा सेां कहे भगवान । ब्रह्मा मेासेां कहे बखान ॥ सेाई में अब तुमसेा भाखी । कही भागवत इनमें राखी ॥ श्रीभागवत सुने जेा कोई । ताको हरि फद प्रापत हेाई ॥ ऊच नीच व्यौरा नहि कोइ । हरिको भजे सेा हरिको हेाइ ॥ जैसें लेाहा पारस हेाइ । व्यास भई मेरी गति सेाइ ॥ दासी सुतमें नारद भये । दोष दास के सब मिटि गये ॥ व्यास देवतब करि हरि ध्याना । कियेा भागवत को जेा बखाना सुने भागवत जेा चितलाई । सूरसेा हरि भजि भवतरि जाई ॥ ७ ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरि ररेा । हरि चरणा रबिन्द उर धरेा ॥ हरि बियेाग पाण्डव तजि राज । गये हिमालय सबहीं त्याज ॥ कहेा जु कथा सुनहु चितधार। सूर कहे भागवत अनुसार ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ करम गति टारेहु नाहिटरें । कहां वे राहु कहां वे रबि शशिआन संयेाग परे ॥ गुरु बशिष्ठ पंडित अति ज्ञानी रचि पचि लगन धरे । पिता मरन अरु हरन सिया को बनमें बिपति परे ॥ भारत में भरई को अंडा घंटा टूटपरे । हरिःचंद्र से दानी राजा नीच को पानि भरे ॥ तीनलोक भावीके बसमें सुरनर देह धरे । सूरदास होनी सेा होइ काहे कु शेाच करे ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ करुणा निधि तेरी गति लखिन परे धर्म अधर्म निषेधि अबिद्यहि कर्ण अकर्ण करे ॥ जय अरु बिजय अकर्म कियेा कह ब्रह्म सराप दिवायेा । असुर जेानि दीनी ताऊ पर धर्म अछेद करायेा ॥

पिता वचन खंडे सेा पापी सेाई प्रह्लादहि कीनो । निकसे खंभ बीचतें नरहरि ताहि अभै पद दीनो । दान धर्म बहु कीन भानु सुत सो तुम बिमुख कहायो । बेद बिरुद्ध सकल पाखंड सुत सो तुमरे मन भायो । जज्ञ करत जुबिरोचन को सुत बेद बचन बिधि कर्म ॥ द्विज कुल पतित अजामिल बिधई गनिका हाथ बिकायो ॥ सुत हित नाम लियो नारायण सो बैकंठ पठायो । पतिव्रता जालंधर जुवती सो पतिव्रत ते टारी ॥ दुष्ट पुंश्चली अधम सुबेश्या सुआ पढावत तारी ॥ मुक्ति हेतु जोगी श्रम करई असुर बिरोधी पावै । अबिगत गतिकरुनामय तेरी सूर कहा कहि गावै ॥ १० ॥ राग धना श्री॥ अबगति गति जानी न परै ॥ मन बच अगम अगाध अगोचर केहि बिधि बुध संचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष सेा मातो केहर भूख मरै ॥ तजि उद्यम अकास कर बैठो अजगर उदर भरै ॥ कबहुंक तृण बूडत पांनी में कबहुंक सिला तरै ॥ बागर से सागर करि राखे चहुं दिशि नीर भरै । पांहन बीच कमल बिगसांहीं जल में अगिन जरै ॥ राजा रंक रंक तेराजाले शिर छत्र धरै । सूर पतित तरि जाइ छिनक में जो प्रभु टेक धरै ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ निगम कल्पतरुपक्वफल शुक मुखतेजु दयो । श्री शुकदेव कृपा करिके अति परिछित श्रवणपयो ॥ ज्ञान दीप हिरदे प्रगट्यो मनो कामना काज लयो ॥ जग में प्रकाश करि हरि कथा उरको तिमिर सबही गयो ॥ सूर श्याम सु नहो रसिकनमनिबारंबार रस पीबोनयो ॥ १२ ॥ रागनी सोरठ ॥ सुवां चलि बादन को रस लीजैं । जावन कृष्ण नाम अंमृत रस श्रवण पात्र भरि पीजैं ॥ को तेरा पुत्र पिता तूं काको मिथ्या भ्रम जग केरो । काल मंजार ले जइहै तोको तूकहे मेरो मेरो । हरि नाना रस मुक्त छेत्र चलि तोको देखराऊं । सूरदास साधन की संगति बडे भाग जो पाऊं ॥ * ॥ अथ श्री भगवान को सेवा फल कीर्तन ॥ * ॥ रागनी बिलावल ॥ भजो गोपाल भूल जिनि जाउ । मानुष जन्मको यही है लाउ । गुरु सेवा करि भक्ति कमाई । कृपा भई तब मन में आई । यही देह सों सुमरो देवा । देह धारि करिये यह सेवा । सुनो संत सेवाकी रीति । करै कृपा मन राखै प्रीति । उठके प्रात गुरुन शिर नावै । प्रात समै श्री कृष्णहि ध्यावै । जोई फल मागे सोइ पावै । हरि चरनन में जो चित लावै । जिन ठाकुर को दरशन कियो । जीवन जन्म सुफल करि लियो । जो ठाकुर की आरति करे । तीनलोक वाके पायन परै । जो ठाकुर को करे प्रनाम । बिष्णुलोक तिनको निजधाम । जो कोई हरि को सुमरे नाम । ताके सकल पुरन हैं काम । जो ठाकुर को ध्यान लगावै । ध्रुवप्रह्लाद की पदवी पावै ॥ जिन हरि को चरणा मृत लियो ॥ बिष्णु धाम अपनो घर कियो । जो हरि आगे बाद्य बजावै । तीनलोक रजधानी पावै । जो जन हरि को ध्यान करावै । गरभ बास मे कबहुं न आवै । जो हरि को नित करे सिंगार । ताको पूरन है स्वीकार । जो दरपन ठाकुरहिं देखावै । चंद सूर्य्य ताको शिर नावै ॥ जो ठाकुरहि सुतुलसि चढावै । ताकी महिमा कहत न आवै ॥ जो कीर्त्तन ठाकुरहिं सुनावै ॥ ताको

ठाकुर निकट बुलावै ॥ हरि मंदिर में दीपक करै ॥ अंध कूप में कबहं नपरै । जो ठाकुर की सेज बिछावै। निज पद पाय दाससो कहावै । पलना जो ठाकुरहि झुलावै। बैकुंठ सुख अपने घर ल्यावै । जो ठाकुरहिं झुलावै डोल । नित लीला में करे कलोल । उत्सब करि मन आरति करे । ता आधीन रहे श्री हरे ॥ जो ठाकुर को भोग धरावै ॥ सदा परम नित आनंद पावै ॥ जो पद दीन्ह जशोदामात । ता सुखकी कछु कहो नजात ॥ ग्वालन सहत गोपाल जिवावै ॥ सो ठाकुर को सखा कहावै ॥ जो ठाकुर को स्वाद करावै ॥ सो ताको फल तबहीं पावे ॥ गोवर्द्धन की लीला गावै ॥ चरन कमल को तबहीं पावै ॥ श्री जमुना जल करै जो पान ॥ सो ठाकुर के रहे निधान ॥ जहांसमाज वैष्णवो होवै ॥ ताकी संगति नित प्रति जोवै ॥ श्री भागवत सुने आनंद करि ॥ ताके हृदै बसे नितही हरि ॥ जो ठाकुर को देह सम रपै । उत्तम श्रेष्ट जान के अरपे ॥ जिन हरि की गागरि भरि आनी ॥ तिन बैकुंठ अपनी स्थिति ठानी ॥ जो ठाकुर को मंदिर लेपे ॥ माया ताको कबहु न लेपे ॥ जो ठाकुर को सीधो वीने ॥ जितने तीरथ तितने कीने ॥ जो ठाकुर की माला पोवै । सोई परम भक्त नित होवै ॥ जो ठाकुरर को चंदन लावै ॥ त्रिबिधतापसंताप मिटावै ॥ जो ठाकुर के पाचन धोवे ॥ सदारुर्बदा निर्मल होवै ॥ जो हरि कीर्त नसुखसोकरै । मुक्ति चारहूं पावन परें ॥ सेवा में जो आलस करै ॥ कूकर ह्वके फिर फिरि मरै ॥ मनसा जो सेवा आचरे ॥ तबहीं सेवा पूरी परे ॥ सेवाको आश्रय करि रहै ॥ दुख सुख वचन सबनको सहै ॥ जो सेवा में आलस लावै ॥ सो जड जनम प्रेत को पावै ॥ बेद पुरानन में यों भाष्यो ॥ सेवा रस व्रज बियनी चाख्यो ॥ सेवा की यह अद्भुत रीती ॥ श्री बेठलेस सो राखे प्रीती ॥ श्री अचार्य प्रभु प्रगट बनाई ॥ कृपा भई तब मन में आई ॥ सेवा को फल कह्यो नजाई ॥ सुख सुमरे श्री बल्लभराई ॥ सेवा को फल सेवा पावै ॥ सूरदास प्रभु हृदै समावै ॥ * ॥ इति सूरदास विरचितसेवापद ॥ * * * * * * * * * * * *

॥ राग बिहाग ॥ भरोसो दृढ इन चरनन केरो ॥ श्री बल्लभनख चंद्र छटाबिनसब जग मांझ अंधेरो ॥ साधन और नहींयाकलि में जासे होय निवेरो ॥ सूर कहा कहे द्विबिधि आंधरो बिना मोल को चेरो ॥

इति श्री राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुम सूर सागरस्य सूरसारावली समाप्तम् ॥

॥ रागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तन ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीगोपीजनबल्लभाय नमः ॥ ॥ अथ श्रीकृष्णानंद व्यासदेव रागसागरोद्भव राग कल्पद्रुम नित्यकीर्त्तन प्रारंभ ॥ रागभैरव ॥ मंगल माधो नाम उचार ॥ मंगल बदन कमल कर मंगल मंगल जनहि सदा संभार ॥ देखत मंगल पूजत मंगल गावत मंगल चारित उदार ॥ मंगल श्रवण कथा रस मंगल मंगल तन वसुदेव कुमार ॥ गोकुल मंगल मधुबन मंगल मंगल रुचि वृंदावन चंद ॥ मंगल करन गोवर्द्धन धारी मंगल भेष यशोदानंद ॥ मंगल धेनु रेनु भुव मंगल मंगल मधुर बजावत बेनु ॥ मंगल गोप बधू परि रंभन मंगल कालिंदी पय फेनु ॥ मंगल चरण कमल मणि मंगल मंगल कीरति जगत निवास ॥ अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि मंगल मति परमानंद दास ॥ १ ॥ राग भैरव ॥ मंगल रूप यशोदा नंद ॥ मंगल मुकुट कान मधि कुंडल मंगल तिलक विराजतचंद ॥ मंगल भूषन सब अंग सोहत मंगल मूरत आनंदकंद ॥ मंगल लकुट कांख मे चांपे मंगल मुरलि बजावत मंद ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दरसन होत मिट्यो दुख दंद ॥ मंगल व्रज पति नाम सबन कों मंगल जस गावत श्रुति छंद ॥ २ ॥ राग भैरव ॥ उठो हो गोपाल लाल दूहो धेारी गैया ॥ सद्य दूध मथि पीवहु भैया ॥ भोर भयो बनतमचर बोले ॥ घर घर घोष द्वार सब खोले ॥ तुमरे सखा बुलावन आए ॥ कृष्ण कृष्ण कहि मंगल गाए ॥ गोपी रई मथनियां धोवे ॥ अपनों अपनों दह्यो बिलोवे ॥ भूषन वसन पलटि पहि राऊं ॥ चंदन तिलक ललाट बनाऊ ॥ चार भुजा गोवर्द्धन धारी ॥ मुख छवि पर वलि गइ महतारी ॥ ३ ॥ राग भैरव ॥ जागौ हो मेरे जगर उजारे ॥ कोटिक मन्मथ वारों मुसकनि पर कमल नयन अंखियन के तारे । संग ग्वाल बछ सब ले के जमुना के तीर बन जाउ सबारे ॥ परमानंद कहति नंदरानी दूर जिन जाहु मेरे व्रज रखवारे ॥ राग भैरव ॥ आछो नीको लो नो मुख भोरही दिखाइये ॥ निशि केउनीदेनैंन तोतरात मीठेबैंन भावत होजी के मेरे सुखही बढाइये ॥ सकल सुख करन विविधतापहरन उरकोंबिमिर बाढ्यो तुरतनसाइये ॥ द्वारे ठाढे ग्वाल बाल करऊ कलेवु खाल मिश्री रोटी छोटी मोटी मांखन सों खाइये ॥ तनिक सो मेरो कन्हैया वारि फेरि डारी मैया बेनी तो गुहूं बानय गहरू न लाइये ॥ परमा नंदजन जननि मुदित मन फूली फूली फूली उर अंगन समाइये पू ॥ राग भैरों । उठो नंद कुमार भयो भिनु सारज गावत नंदरानी ॥ झारीकेजल बदन पखारत सुत कहि सारंग पानी ॥ मांखन रोटी अरु मधु मेवा भावे सेा लीजे हो आनी ॥ सूर श्याम मुख निरखि जसोदा मन ही मनजुसिहानी ॥ ४ ॥ राग भैरों ।

उठे नंद लाल सुनत जननी मुख बानी ॥ आलस भरे नैन उठे सोभा की खानी ॥ गोपी जनथकितहियें चित वति सब ठाढी ॥ नैन कि च कोर चंदन बदन प्रीति बाढी ॥ माता जल झारी दियें कमल मुख पखारेव ॥ नीरही को परस करत आलस बिसारेव ॥ सखा द्वार ठाढे सब टेरत हैं तुमकूं ॥ रमुना तट चलो श्याम चारन गोधनकूं ॥ सखा सहित जेंवहु बलि भोजन कछु कीनों ॥ सूर श्याम हलधर संग सखा बाल लीनों ॥ ७ ॥ राग भैरव ॥ जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई। उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमर गयो प्रगटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनंदकंद गरन चंद मंद मंद प्रगट्यो आकाश भानु कमलनि मुख दाई ॥ सिंगी सब पुरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुन्दर वर राई ॥ मुखतें पट दूर कियो जसुदा कों दरस दियो अरु दधि सब मांगि लियो बिबिधि रस मिठाई ॥ जेंवत दोउ राम श्याम सकल मंगल गुण निधान झार में कछु जूठ रही सो मान दास पाई ॥ ८ ॥ राग भैरव ॥ प्रात नाथ प्रात भयो जागो बलि जाऊं ॥ सोना केरगोफन सुबेर में गुथाऊं ॥ उगत सुरजजोति भई कुलहिरीब नाउं ॥ पाय बांधों घुंघरू अरु चालि वो सिखाऊं ॥ सूर दास मदन मोहन गुण तिहारे गाऊं ॥ हरषि निरखि छबिके उपर बलि बलि बलिजाऊं ॥ ९ ॥ राग भैरों ॥ खेलिये आंगन मैं छगन मगन कीजियें कलेवा ॥ छीकेतें सारी दधि ऊपरतें काढि धरी पहिर लेउ झगुली फेटा बांधिलेहु मेवा ॥ ग्वालन के संग खेलन जाहु खेलन के मिस भूषन ल्याउ कोन परी प्यारे ललन निसदिना की टेवा ॥ सूर दास मदन मोहन घरहीं खेलो प्यारे ललन भंवरा चक डोरदे हों हंस चकोर परेवा ॥ १० ॥ ॥ राग भैरव ॥ मदन मोहन पीव कीं जे कलेऊ ॥ दूध में रोटी सानी मांखन मिश्री आनी जोई जोई भावे सोई सोई लेऊ ॥ खांड खीर और घृत मिठाई मेवा आप खाहु और ग्वालन कों देऊ । व्रज पति पीय फेर खेलन को जाउ बन सुबल श्रीदामा कोंसंग करि लेऊ ॥ ११ ॥ राग भैरव ॥ भोरनिकुंज भवन तें भामिनि ॥ आवति है लटकति गज गामिन ॥ अलक सुगंध सगवगी छूटी ॥ निसि के उनींदे नैन बीर बहूटी । पलटित बसन रसन मणि भूषन ॥ सोभा अंग अंग जित दूषन ॥ गुण निधान वृषभानु दुलारी ॥ दास गोपाल लाल जू की प्यारी ॥ १२ ॥ राग भैरव ॥ रैन जागी पिय संग रंग भीनी ॥ प्रफुलित मुख कंजनैन खंजरीटमीन मैन बिथुरि रहे चूरन कच बदन ओप कीनी ॥ आतुर आलस जंभात पुलकित अति पान खात मद माते तन सुधि नरही सिथल भई बेनी ॥ मांगतें टरि मुक्ता हल अलक संग अरुझि रही उर गन सतफतिमानों कंचुकितजि दीनी ॥ बिकसत ज्यों चंपकली भोर भए भवन चली लट पटात प्रेम घटा गज गति गति लीन्हीं ॥ आरति को करत नाश गिरधर सुठि सुख की रासि सूरदास स्वामिनि गुन गरेन जात चीन्हीं ॥ १३ ॥ राग भैरों ॥ नागरी नव लाल संग रंग भरी राजे ॥ श्याम अंस बाहु दियें कुंवरि पुलकि पुलकि हिये मंद मंद हसनि पिया कोटि मदन लाजे ॥ तरुतमाल श्याम लाल लपटी

अंग अंग बेलि निरखि सखी छबि सों केलि नूपुर कल बाजे ॥ दामोदर हित सुवेत सोभित सखि सुख सुरस नवनिकुंज भंवर गुंज कोकिल कलगाजे ॥ १४ ॥ अथ खंडिता ॥ * ॥ राग भैरों ॥ नव कंज नैन रति रंग रंगे ॥ प्रिया प्रेम बली रस रास रस मसे आलस बस माधुरी अंग अंगे ॥ रूप जोबन चपलता गुणन आगरे मधुप खंजन मीन मान भंगे ॥ कहें कृष्णदास कामिनि उरसिमध्य गति गिरधरन सुखदू प्रति बिंब संगे ॥ १५ ॥ रागभैरों ॥ प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी ॥ उरसि मरग जीमुमाल डगमगी सुदेस चाल चरण खंदि मदन जीति करत हेमनी ॥ प्रिया प्रेम अंग राग सगबगी सुरंग पाग गलित बरुह चूड अमज बारि कणसनी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरधर कंठ सुरत पच लिख्यो करज लेखनी सुनि पुन राधिका गुनी ॥ १६ ॥ रागभैरों ॥ आजु नीके बने नंद नंदा ॥ बदन इंदु को ज्योति निरखि नभ चंद्रमा क्षार अंबुधि परत सघन चंदा ॥ श्रम स्वेद कणगात लाल गिरवरधरन सुखदेत मलयजसुपवन मंदा ॥ कृष्णदास नाथ डगमगत पग चलत मानों कुंवर गूंथ्यो प्रेम फंदा ॥ १७ ॥ रागभैरों ॥ ललित बदन गलित कुसुम बलित केस अति सुदेस नयन नलिन रगमगे शशि सरद सर्वरी ॥ मरगजी उरमाल सिथिल कहुं कहुं चंदन की रेख रसभरे लपटात गात मधुप अर्वरी ॥ सोभित उर उर ज लखि मनो परसतनहिं परत पछिम नख छबि परबारि डारों चंद खर्बरी ॥ बासुदेव लाल कल्यान गिरिधरको सुजस गावत श्री बिट्ठल पद कमल रज प्रताप गर्बरी ॥ १८ ॥ रागभैरों ॥ भोर अंग अंग शोभा श्याम के भली ॥ मानहु बिग सित बिचित्रनील कमल की कली ॥ प्रिया उरसि लग्न राग सरस छुरित छबि पराग पवन परसि मंदले सुगंध कोचली ॥ करि प्रवेश घ्राण द्वार हरति जुवति चित्तसार मरम बेधि समर बान काम ते बली ॥ पलटि बसन सुखनिधान मत्त मधुप करत गान सुरत समें सुजस सुनो श्रवन दे अली ॥ गोपाल दास मदन मोहन कुंज भवन बलित रंग मुदित अवनि भावनो समानि कोलो ॥ १९ ॥ रागभैरों ॥ सोभित सुभग लटपटी पाग भीने रसिक प्रिया अनुराग ॥ कुंकुम तिलक अलक सेंदुर छबि अरुन नयन घूमत निसि जाग ॥ कछु जंभात उरमाल मरगजी पीक कपोल अधरमसिदाग ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरधर नीके लागत आलस बस सब अंग विभाग ॥ २० ॥ रागभैरों ॥ भोर तमचुर बोले दीनों जू दरसना ॥ आतुर ह्वै उठि धाए डगत चरण आए आलस मेंनैनबैन अट पटी रसना संध्या जू कहिसिधारे बचन जीय में संभारे सकुचि के मंद मंद प्रकटित दसना ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरधरन सिधारो तहां जहां रति रंग रस लपटाए बसना ॥ २१ ॥ रागभैरों घूमत मत्त गजज्यों चलत डगमगे ॥ बतियां कहत सैन मुखन आवत बैन आलस उनीदे नैन सोभित रग मगे ॥ नागर नंदकिसोर नीकी छबि आए भोर अंग अंग रति रंग चिन्ह जगमगे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नहीं लागे पलक चारि जाम जीति काम रहे जूठ डगमगे ॥ २२ ॥ रागभैरों ॥ आजु छबि देत नयना आलस भरे रगमगे ॥ रैंन पलकन परी सुर तरन जैकरी भोर आरलाल धरत पग डगमगे ॥ तन और गति भांति कहत कही न जाति कांति अद्भुत सकल अंग अंग जग मगे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर न भली करी

पलटि आए बसन सोंधे मिले सगमगे ॥ २३ ॥ रागभैरों ॥ भोर डग मगत पग जीति मन्मथ चले ॥ सकल रजनी जगे नयन नहिं पल लगे अरुण आलस चलत नयन लागत भले ॥ करिब न गर नटत चिन्ह प्रकटित करत बसन आभूषन सुरतरन दल मले ॥ चतुर्भुज दास प्रभुगिरिधर छबि बढी अधर काजर कुंदुम अंग अंगरले ॥ २४ ॥ रागभैरों ॥ डग मगात आए नट नागर ॥ कछु जंभात अलसात भोर भए अरुण नयन घूमत निसि जागर ॥ रसिक गोपाल सुरतरन को जस सकल चिन्ह लाये उर कागर ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कुंजगढ रति पति जीत्यो रस सुख सागर ॥ २५ ॥ रागभैरों ॥ भोर भए आए हो ललन नीकी भंतियां ॥ जावक के उर चिन्ह नील पट प्यारी दीनें नयन आलस भीने जागे सब रतियां ॥ छुटी ग्रीवा बनदामन खचित अभिराम कैसें केदुरत श्याम डग मगी गतियां ॥ केसोदास प्रभु नंद सुवन काहे लजात भखे जू सावरे गात जानी सब घतियां ॥ २६ ॥ रागभैरों ॥ आइये जू भले आए कत सकुचत हो ॥ सुरत संग्राम कीनें सोति नको मुखदीनें याही रस भीने होपें मोको तो रुचत हो ॥ तुमदेखे रिसगई उपजी है प्रीति नई भई सोतो भई अवकाहे धों सोचत हो ॥ नारायण मोहि जानों बहे बेरी करि मानो कहा जीयए तो अभिलाष जू सोचत हो ॥ २७ ॥ रागभैरों ॥ अरुण नैन राजत प्रभु भोरे ॥ अति सुख सुरत किये ललना संग जात समद मन्मथ सर जोरे ॥ राति उनीदे अलसात मराल गति गोलक चपल रहत कछु थोरे ॥ मनहुं कमल के कोसते प्रीतम ढुंढन रहत छपि रिपु दल दोरे ॥ सजल कोप प्रतमें जु सोभियत संगम छबि तारे पर ढोरे ॥ मनु भारत भंवर मीन शिशु जात तरल चितवत चितचोरे ॥ बरनि न जाइ कहांलों बरनों प्रेम जलद वे लावल ओरे ॥ सूरदाससो कोन चिया जिनि हरि के सकल अंग बल तोरे ॥ २८ ॥ रागभैरों ॥ नाहि दुरत नयना रतनारे ॥ जानु बंधूकसुमन बिसाल पर सुंदर श्याम सिली मुखतारे ॥ रही जुअलक कुटिल कुंडल पर मोतन चितवत चितै बिसारे ॥ सिथिल भोंह धनु गहे मदन गुण रहे कोकनद बानबि खारे ॥ मुंदेही आवत हैं येलोचन पलक आतुर उघरतन उघारें ॥ सूरदास प्रभु सोई धों कहो ऐसी को बनिता जासों रति रन हारे ॥ २९ ॥ रागभैरो ॥ आवत लाल गोबर्द्धन धारी ॥ अलस नयन सरस रस रंगित प्रिया प्रेम नूतन अनुहारी ॥ विलुलित माल मरगजी उर पर सुरत समर की लगी पराग ॥ चुंबन श्याम अधर रस गावत सुरति भाव सुख भैरव राग ॥ पलटि परे पटनील सखी के रसमें झीलत मदन तडाग ॥ वृंदावन बीथिनि अवलोकत वृष्णदास लोचन बड भाग ॥ ३० ॥ * ॥ अथ समुदाय पद ॥ * ॥ रागभैरों ॥ भोर भावतो श्रीगिरिधर देखों ॥ सुभग कपोल लोल लोचन छबि निरखि के नयन सुफल करि लेखों ॥ नख सिख रूपअनूप विराजत अंग अंग मन्मथकोटि विसेखों चतुर्भुज प्रभु रस रासरसिक को बडे भाग वल इकटक पेखों ॥ ३१ ॥ रागभैरों ॥ श्याम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे ॥ कबहूं मुख मंद हास मेरे सखि सुखकी रास कबहुं बैन कबहुं नैन सैन हीं जनावे ॥ मेरी दधिमथन बार उनकी उठनि सवार रई नेत माट समेत सकलहो बिसरावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर अंग अंग कोटि मदन मूरति चलत

बन को तन रु मन को चितेही चुरावे ॥ ३२ ॥ रागभैरव ॥ जै ये वह देस जहां नंद नंदन भेटिये ॥ निरखिये मुख कमल कांति बिरह ताप मेटिये ॥ सुन्दर मुख रूप सुधा लोचन पुट पीजिये ॥ लंपट लव निमिष रहित अंचय अंचय जीजिये ॥ नख सिख मृदु अंग अंग कोमल कर परसिये । अरु अनन्य भावसो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥ रास हास भुव विलास लीला सुख पाइये । भक्तनके जूथ सहित रस निधि अवगाहिये ॥ इह अभिलाष अंतर गत प्राननाथ पूरिये । सागर करुणा उदार विविध ताप चूरिये ॥ छिनु छिनु पल कोटि कलप बीतत अति भारी । परमा नन्द कल्पत रुदीनन दुख हारी ॥ ३३ ॥ राग भैरव ॥ भोर भये नीको मुख हंसत दिखाइये । राति के दरसके बिछुरे दोऊ पलक मेरे वारि फेरि डारों नेकु नयननि सिराइये । कोमल उन्नत बाहुपर अमित भाव मेरी तेरी छाती छबि अधिक बढाइये । छीत स्वामी गिरिधर सकल गुण निधान कहा कहूं मुख करि प्राणहोतें पाइये ॥ ॥ ३४ ॥ राग भैरव ॥ बिलुलित कर पल्लव मृदुबेंन । हरषित हुंकृत आवत धेंन । कोटि मदन द्युति श्याम शरीर । विपति कलप तरु यमुना तीर ॥ दक्षिन चरण चरण पर धरे । वांम अंशभ्रू कुण्डल चले ॥ बरुहचंद बनधातु प्रवाल । मणि मुक्ता गुंजा फलमाल देखन चलहु खेमनन्द लाल । ललित त्रिभंगी मदन गोपाल ॥ ३५ ॥ राग भैरव ॥ तोहि ध्यान लाग्यो सजनीरी बारक दृष्टि परे मोहन । देखियत चिच लिखीसी ठाढो सदन सिंधु जलबूंदसनी । रूप निधान कमल लोचन तोहि मिले आजु की रजनी ॥ कृष्ण दास प्रभु गोवर्द्धन धर रसिक जुवति दुखहरनी ॥ ३६ ॥ राग भैरव ॥ आंखिन में दुरायय्यारो काहू देखन न दीजिये । हिये लगाइ सुख पाइ सब गुण निधि पूरन जोई जोई मन इच्छा होइ सोई सोई कीजिये ॥ मधुर मधुर वचन कहत श्रवणनि सुखदीजिये निरमल प्रभु नन्द नदन निरखि निरखि जीजिये ॥ ३७ ॥ राग भैरव ॥ ऐसेंही धरो रीदधि बिना मथन किये देहुजसुमति नेकु अपनी रई । अपनहुं ढूंढि हारी तैसी निशि अंधिआरी पाउंन भवन मॉझ कहां धोगई ॥ कछुन जिय सुहाई याहीतें आतुर आई लोनी के लालच जीय चटपटी भई । दिना चारि करों काजबाढो नन्दजूको राज जोलों बहुरि हों ल्याऊं नई : चतुर्भुज दास रानी मेरी अति चोप जानो है प्रसन्न भणि महिया आनि दई । भोरही देउं असीस बार जिनिखि सो सीस तिहारे गिरिधर की हों बलिबलि गई ॥ ॥ ३८ ॥ राग भैरव ॥ श्रीनाथ जी को ध्यान मेरे निश दिना रीमाई । माधुरी मूरति सोहनी सूरति चित लियो चतुराई ॥ लाल पाग लटकि भाल चिबुक बेसर कंठ माल करनफूल मंद हास लोचन सुखदाई । मोर पंख सीस धरें मोतिन के हार गरे बाजू बंद पहुंचिन कर मुद्रिका सुहाई ॥ छुद्र घंटिका जेहरि नूपुर बिछिआ सुदेस अंग अंग देखत उरआनंद नसमाई । मुरली अधर धरें श्याम ठाढे ब्रज जुवति मोह सप्त सुरन तांन गान गोवर्द्धन राई । निरखि रूप अति अनूप छाके सुर नर बिमान वल्लभ पद किं करै दासी दर बलि जाई ॥ ३९ ॥ राग भैरव ॥ श्रीकृष्ण जी को ध्यान मेरे निशदिनारी माई । मनके महल प्रीति कुंजतामें यदुराई ॥ ध्रुव ॥ सांवरे बरन कोमल चरण नख देखें चकचोधी होत पाय

नेपुर पैजनी सेा बिधिने बनाई । दाहिने पद पद्मतातें टेढे धरत आलीरी ऐसे चरण दुख के हरन है सदा सुखदाई ॥ लाल इजार ताके बीच कंचन के तार लगे काछनी पचरंग तापर किंकनी छबिछाई । बनमाल मुक्तमाल कंठबनी कौस्तुभ मणि पीताम्बर चटक तामें दामिनि दुति पाई ॥ बाजूबंद अंगुरि मुदरि नगन को अति चमत्कार अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई । कमल नयन बिमल कांन्ति कुंडल प्रति बिंब होत आनन्द सेा मुख मानेा रह्योरी मुसकाई ॥ घुंघर बारी अलक झलक कीयें चन्दन खेार और मोर मुकट सीस धरें बनी सुन्दरताई । कहें भगवान हितराम राय प्रभुको निहारि श्री गेापाल श्रीगेापाल रसना रटलाई ॥ ४० ॥ राग भैरव ॥ सुमिरो नर नागर वर सुन्दर गेापाल लाल । सब हीं दुख मिटि जेहें चिन्तत लेाचन विसाल ॥ ध्रुव ॥ अलक न की झलकन खखि पलक निगति भूलि जातभ्रू विलास मंदहास रदनहास छदन अति रसाल । निंदत रवि कुंडल छबि गंड मुकर झलमलात पिच्छ गुच्छ लत बतंस इंदु बिमल बिंदु भाल ॥ अंग अंग जित अनंग माधुरी तरंग रंग बिमद मदगयंद हेात देखत लटकीली चाल । रतन रसन पीत बसन चारु हार बर शृंगार तुलसी रचित कुसुम खचित पीन उरनबीन माल ॥ ब्रज नरेस बंसदीप वृन्दाबन बर महीप श्री वृषभान मान्य पाच सहज दीन जन दयाल । रसिक रूप रूप रासि गुण निधान जान राय गदा धर प्रभु जुवती जन मुनि मानसमन मराल ॥ ४१ ॥ राग भैरव ॥ दीनेा दरस सुपने में आइ । छिनु एक सुख उपज्यो मेरे मन गये कहूं हरि बिरह बढाइ ॥ हाहा पाइ परतिहों तेरे क्योंहूं करि लावे न बुलाइ । अब न परत मेापें न रह्यो छिनु बिनु भेटे जीय अति अकुलाइ ॥ यह दुख काहि कहों सखि तेा बिनु मेरे तूही एक सहाइ । कहा विलंबु करति जेवे को तेासें कहति सखि सेाहें खाइ ॥ बहमूरति गडिरही हिये में निकसति नहीं न और उपाइ । उठिये है सुनि बिनती मेरी जसुमति सुतरसिकन कों राइ ॥ ४२ ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी ॥ हरिके बिमुखन को मुख जिनि दिखावे । जिनि दिखावे नाथ जिनि दिखावे ॥ जिनकी संगति किये हेात दुरम तिहिये हरिके गुण रूप जस तुरत बिसरावे । जिनके परसत सदां सरस मन बिषय रस मगन ह्वै जात अति पाप उपजावे ॥ करत कछुना डरेवैर में चित धरे सत संग परि हरे जुवति चितु लावे । साधु निंदा करे झूठ भाषे सदा प्रीति राखे बिषयी बचन मनभावे ॥ अनेक साधन करि जारि राख्यो भाव छिनक में जल अग्नि ज्यों बुझावे । तेई जन बिमुख जे करे और बात कृष्ण न सुहात संसार धावे ॥ साधु संगति रहे बचन हरि गुण कहे सत न निबहै रसिक सेाई सुख पावे ॥ ४३ ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी ॥ नाथ हाहा मेाहि दरश दीजे । दोष जिनि मन धरेा सहज करुणा करेा बिगर साधन मेाहि दास करि लीजे ॥ दुखित छिनु हेात जिय बदन देखे बिना रैन दिन तपत चितकैसें जीजे । कासेा कहिये हिये राखिये केान बिधि रहतु नहीं क्योंहूं करि देह छीजे ॥ लेत न उसास उरकैसें हो समाइ नहीं सेाचु दृगभरि न पीजे । बदन लावति अमृत रसिक प्रीतम सुखदपान बिनु सकल तन कैसें भीजे ॥ ४४ ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी ॥ नेकु बेालो नाथ अमृत रसबेंन । और न सुहाइ परी करतिहेां हाइ नित चित न लागत कहूं नेकु नही चेंन ॥ दीन जन

मन मनोरथ के पूरन करन और तिहुंलोक में देखियत हेन । जेमिलत आ इ ते खत सरब सुभाव करि कहो कैसे ह रिमनु रहे ऐन । आप बन रावरो है तिहारे हाथ नाथ कहों और समरथ है कोदेन । रसिक पिया जिनि करो कठिन मनदीन पर परसिके तजत यह लखनतोघटेन ॥ ४५ ॥ राग भैरव ॥ एलखना जागो भयो भोर । दूध दही पकवान मिठाई लीजिये मा खन चोर । बिकसे कमल बिमल बानी सो बोलन लगे पंछी चहुंओर । रसिक प्रीतम सो कहति नदनंदसुति आवो बैठो गोद हांहा नंदकिशोर ॥ ४६ ॥ राग भैरव ॥ वृन्दाबन नवनि कुंज ठाढे उठि भोर । बांह जोरि बदन मोरि हंसत मुरत रतिको करि चितैवत पुनि कछु लजाइ नेननिकी कोर । करत कबहुं बेणुनाद अधरनिपाई सुधा स्वाद पंछीगण प्रमुदित मन बोलत चहुंओर । रसिक प्रीतम छबि निहारि प्रकट्यो घनजिय बिचारि बारबार उमगि तहां नाचत हैं मोर ॥ ४७ ॥ राग भैरव ॥ श्री बल्लभ सुजस संततगित उठगाऊं । मन क्रम बचन छिन एक न बिस-राऊं ॥ ध्रुव ॥ पुरुषोत्तम अवतार सुकृत फल फलित जगत बंदन श्री बिठलेशदुल राऊं । परसिपद कमल रज निर खिसौंदर्य निधि प्रेम पुलकित कलुषकोटिकन साऊ ॥ श्री गिरिधरन देवपति मान मर्दन करन घोष रक्षक सुखदसुजस सुनाऊं । श्री गोबिंद ग्वाल संग गाय ले चलत बन निरखि नैननि सिराऊं । श्री बाल कृष्ण सदा सहज बालक दसा कमल लोचन सुंदरपित रुचि बढाऊं । भक्ति मारग सुदृढ करन गुण रासि ब्रज मंगल श्री गोकुल नाथही लड़ाऊं । श्री रघुनाथ धर्म धुरधार सोभा सिंधु रूप लहरिन दुख दूरि बहाऊं । पतित उद्धरन महा राज श्री जदुनाथ बिशदअंबुज हाथ सिरसि पर साऊं । श्री घनश्याम अभि राम रूप बाधा स्वाती आसालालिरसनाचाचिकरटाऊं । चतुर्भुजदास परेव द्वार प्रणिपत करे सकल कुलको चरणामृत भोर उठि पाऊं ॥ ४८ ॥ राग भैरव ॥ भजि श्री विट्ठल चरण सरोजं । नखमणिदीधिति दमित मनोजं । इछसियदिसततं सुखसारं । त्यज सिन किमिति विषय धृतभारं । यदि बांछसि हरि भक्ति सुरत्नं । कुरुचपलं शरणा गतयत्नं । प्राप्यसुदुर्लभनरवरदेहं । परिहर सकल निगम संदेहं । मानय हृदय मथो दित बचनं । तदथा सिनोचेदतिशय पचनं । वत्सपदं भावय भवजलधिं । अंत समै भवा धिन बबर्धिं । नाथ तबाहमितीरण रावं । पूरयसन्ततमिममयि भावं । तवगुणगण कथिता मृतगाथे । प्रार्थ्यमिदंदिशतवरघुनाथे ॥ ४९ ॥ राग भैरव ॥ श्री विठलेश विठलेश रसना जपमेरी । ग्रंथनि कोपची सारयाही में होत पारबार बारबार कहत तोसों तुवहितूमेरी । अनत हु न भलो तोर बेग कछो करहि मोर भजिले सिरमोर नाथहिं सकल सुखदकेरी । जगत जनक सहाय प्रेमपुंज सुजसगाय दूरकरो असद बात बिषया अरु झेरी ॥ ५० ॥ राग भैरव ॥ प्रकटित सकल सृष्टि आधार । श्री मद्वल्लभ राज कुमार । ध्येयसदापदअंबुजसार । अगणित गुण महिमाजु अपार । धर्मादिक द्वारे प्रतिहार । पुष्टि भक्ति को अंगीकार । श्री

बिट्ठल गिरिधर अवतार । नंददासकीनों बलिहार ॥ ५१ ॥ राग भैरव । जय जय श्री बल्लभ प्रभु श्री बिठलेश नन्थे । निजजन पर करत कृपा धरत हाथ माथे ॥ ॥ ध्रुव ॥ दोष सबै दूरि करत भक्त भाव हिये धरत काज सबे सरत सदा गावत गुण गाथे । काहे को देह दमत साधन करि मूरख जड विद्यमान आनद तजि गहत क्यों अपाथे । रसिक चरण शरण सदा रहत हैं बड़भागी जन अपनो करि गोकुल पति भरत ताहि बाथे ॥ ५२ ॥ राग भैरव ॥ श्री बिट्ठलनाथ जू के चरण शरणं । श्री बल्लभ नंदनं । कलिकलुष खंडनं परम पुरुषं चैत पहरनं ॥ सकल दखदारणं भवसिंधु तारणं जनहित लीला देह धरणं । कान्हरदास प्रभु सबसुखसागरं भूतखे दृढ भक्ति भाव करणं ॥ ५३ ॥ राग भैरव ॥ जै जै जै श्री बल्लभ नंद । कोटि कला वृन्दावन चंद । निगम बिचारें न लहे पार । सो ठाकुर अक्का के द्वार ॥ लीला करि गिरधारयों हाथ । छीति स्वामि श्री बिट्ठलनाथ ॥ ५४ ॥ राग भैरव ॥ नैन भर देखों गिरधर को कमलमुख । मंगलआरती करो प्रात ही बारत निरखत होत परम सुख । लोचन विसाल छवि संचि हृदे मेधरो कृपा अवलोकन चारभृकुठिन रुख ॥ चतुर्भुज दास प्रभुआनन्द निधि रूप निरखि करो दूरि सब रैनिको बिरह दुख ॥ ५५ ॥ राग भैरव ॥ मंगल आरती गोपाल की ॥ नित उठि मंगल होत निरखि मुखचितवन नैन बिसाल की ॥ मंगल रूप श्यामसुन्दर को मंगल छवि भृकुटि भालकी ॥ चतुर्भुज दास सदा मंगल निधिवानिक गिरधर लालकी ॥ ५६ ॥ राग भैरव ॥ मदन गोपाल हमारे राम ॥ धनुष बान धरि विमलबेनु कर पीत बसन अरु तन घनश्याम ॥ अपनो भुज जिनि जल निधि बांध्यो रावनचाए कोटिक काम । दस सिरहति सब असुर संघारे गोवर्द्धन धारयो कर बाम ॥ तब रघुबर अब जदुबर नागर लीला नित्य बिमल बहु नाम ॥ परमानंद प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिलि गावत गुण ग्राम ॥ ५७ ॥ ॥ * ॥ अथ रासके कीर्त्तन ॥ * ॥ राग भैरव ॥ राग रंगनि मिलवत नई ॥ नाचति ब्रजललनातनू थेई ॥ मुखरित कटि तट मणि मेखला ॥ अभिनवजति चंचल करतला । नूपुर संचित मोहित छना । खेति उरगगति प्रभुदित मना ॥ कृष्णदास प्रभु देअंकवारी ॥ रिझए लाल गोवर्द्धन धारी ॥ ५८ ॥ राग भैरव ॥ नीको मन लाग्यो गिरिधरगावै । ततथेई ततथेई भैरव राग मिलि मुरलिका बजावे । नांचत नृप वृषभानु नंदिनी औधर गति रंग उपजावे । नूपुर क्वणित मुखर मणिकंकण सखी जूथ मुखरासि बढावे ॥ सुरत देत मधुमत्त मधुप कुल एक ताली सबके मनभावै । सुरति सिंधु प्यारी पिय पदरज कृष्णदास न्योछावर पावे ॥ ५९ ॥ राग भैरव ॥ प्यारी ग्रीवा भुज मेलि नृत्यत पीप सुजान । मुदित परस्पर लेत गति में गति गुण रासि राधे गिरिधरन गुण निधान ॥ सरस मुरली धुनि सो मिले सप्त सुर गावत भैरव राग अवघर तांन बंधान । चतुर्भुज प्रभु श्याम श्यामा की नटन देखि रीझे खग मृगवन थकित व्योमवि मान ॥ ६० ॥ राग भैरव ॥ निर्त्तत गुपाल संग राधिका बनी । बाहु दंड भुजन मेलि मंडल मधि करत केलि सरसगान श्याम करें संग भामिनी ॥ मोर मुकट कुंडल छवि काछनी बनी बिचिचझलकत उर हार बिमल थकित चांदनी । परम मुदित सुरनर मुनि बरषत सब

कुसुम निवारति तन मन प्राण कृष्ण दास स्वामिनी ॥ ९१ ॥ राग भैरव ॥ नाचत वृष भान सुता हंस सुता पुलिन मध्य हंस हंसिनी मयूर मंडली बनी । गावत गोपाल लाल मिलवत झपताल चाल लज्जित अति मत्त मदन कामिनी अनी ॥ पदिक लाल कंठ माल तरल तिलक झलक भाल श्रवण फूल वरदुकूल नासिका मनी । नील कंचुकी सुदेश चंपकली गलित केस मुखरित मणि दाम बांम कटि सुकाछनी ॥ मरकत मणि वलयराव मुखरित नूपुर सुभाव जावक जुत चरण नखन चन्द्रिका घनी । मंदहास भौंहपास रास लास भुव विलास अलग लागलेत सुघर राधिका गुनी ॥ काम अंधकितव बंधरीझ रहे चरण गहे साधु साधु कहत फिरत राधिका धनी । भेटत गहिबाहु मूल उरज परस भई फूल व्यास बचन सानुकूल रसिक जीवनी ॥ ९२ ॥ राग भैरव ॥ मोर नके मंडल में नाचत पिय प्यारी । सिखवत सब तान मान सीखति लखि दुरनि मुरनि हां हां हां हेाके आप देतहैं करतारी ॥ मधुरे सुर राग लेत रागिनी सेा मिले तान रीझत लपटात देाऊ भरि भरि अंकवारी । श्री बिट्ठल संग खेलति बेालति तता थेई थेई विहरत गिरिधारी लाल सुन्दरि नवनारी ॥ ९३ ॥ अथ श्री जमुना जी के पद ॥ रागभैरव ॥ जै जै श्रीसूरजा कलिन्द नंदनी । गुल्मलता तरु सुवास कुंज कुसुम मोदमत्त गुंजत अलि शुभ ग पुलिन वायुमंदनी ॥ हरि समान धर्मसील कान्ति मजुल जलद नील कटिनितंब भेद त नित गति उतंगनी । सिक्ता जनु मुक्ता फल कंकण जुत भुज तरंग कमलनि उपहार लेत पिया चरण बंदनी ॥ श्रीगोपेंद्र गोपी संग श्रम जलकण सिक्तरंग अति तरंगनी सुरसिक रस सुफंदनी । छीत स्वामी गिरिवर धर नंद नंदन आनन्दकंद जमुने जन दुरित हरन दुख निकंदनी ॥ ९४ ॥ राग भैरव ॥ अति मंजुल जल प्रवाह मनोरमा सुखा वगाह नवनव द्युतिराजत अति तरनि नंदनी । श्याम वरन झलक रूप लाल लहरि वर अनूप सेवत संत तमनेाज वायुमंदनी ॥ कुमुदकंज वनबिकास मंडित दिस दिस सुवास कूजित कलहंस को क मधुर छंदनी । प्रफुलित अरबिंद पुंज कोकिल शुकसार गुंज सेवित अलिभंग पुंज बि बिधबंदनी ॥ नारद शुक सनक व्यास धावत मुनि करत आस चाहत हैं पुलिन बास सकल दुख निकंदनी । नाम लेत कटत पाप ऋषि किन्नर मुनि कलाप करत जाप परमानंद आनंद कंदनी ॥ ९५ ॥ राग भैरव ॥ श्रीजमुना देवीको न भलाई । नामरूप गुण ले हरि जू को न्यारी अपनी चाल चलाई ॥ उनवस देश कियेा आता को तुमहिं परसि कोउ उतहि न जाई । जेतन तजत तोर तुमरे ते तात किरनि में गैल लगाई ॥ मुक्ति वधूको करि दूतत्वं अधमनिको ले आनि मिलाई । आपुन श्याम आन उज्जल करि तात तपत आपुसीतल ताई ॥ जल कोछल करि अनल अघन को यह सुनिके कोउ क्यों पतिआई । निश दिन पक्ष पात पतितन कोतदपिगदा धर प्रभु मनभाई ॥ ९६ ॥ राग भैरव ॥ जमुना जमुना नाम भजेा । हरि ब्रतकरेा अराधन इन को और कुपंथ तजेा ॥ देहें सकल पदारथ तुमको औरको नाहि भजेा । ब्रजपति की अतिही प्यारी हैं तातें सकल शृंगार सजेा ॥ समुदाय ॥ राग भैरव ॥ अरझियेा नीलां वर पीताम्बर महियां । कुंडल सेाहर लट बेसर सेां पीत पटहारहु में बनमाल बहियां में बहियां ॥ हंस गति अति छबि अंग अंग

रहीफवि उपमा बिलोकि वेको पटतर नहियां । काम के कलोल छूटे सेजहू के सुख लूटे सूरप्रभु बिलसे कदम छूकी छहियां ॥ ६८ ॥ राग भैरव ॥ आये लाल डगमगत प्रात भाल महावर पीक कपोलनि अधरन मसि नयननि अरसात ॥ मोती माल लसे उर बिनु गुण सिथलित पाग सिथिल सब गात । बोलत बोल अटपटे मोहन तापर सोंह करत न लजात ॥ ओढे नील बसन तुम आये द्वैज चंद हृदि माझ लखात । सांचे बोल निबाहे ब्रज पति माया कर आये घरभात ॥ ६९ ॥ राग भैरव ॥ अरुण उदय आये मेरे नंदलाल सिथलित अंग उनीदे नयननि धरनी धरत डगमगी चाल ॥ अधरनि अंजन पीक कपोल नि लटपटि पाग जावकलिय भाल । तापरसोंह करत हो ब्रजपति उरसि बिराजत बिनगुण माल ॥ ७० ॥ राग भैरव ॥ प्रात समय आवत गिरिधारी । कुंज महल तें चले भोर उठि संग राजति वृषभान दुलारी ॥ घूमत नयन उनीदे निशि के निरखि सहचरी गइ बलिहारी । पीक कपोलनि लगे दुहुनि के ब्रजपति सिथिल गात अति भारी ॥ ७१ ॥ ॥ राग भैरव ॥ घूमत रतनारे नयन सकल निसा जागे । लटपटी सुदेस पाग अलकन की झलक बीच पीक छाप जुग कपोल अधरनि मसि लागे ॥ बिन गुण माल बनी बीच नखनि रेखठनी पलटि परे बसन पीठ कंकण सेा दागे । चाक बन्यो चंदन बन माल लग्यो चंदन सेा डगमगात चरण धरत प्रिया प्रेम पागे ॥ बचन रचन कियेा सांझ बेग आये भोर मांझ बलि बलि या बदन कमल शेाभित अनुरागे । जाय बसेा वगुही धाम बिल से जहां सकल जाम गेाबिंद प्रभु बलिहारी करजोरें मागे ॥ ७२ ॥ राग भैरव ॥ आये भोर उनीदे श्याम । सकल निसाजागे प्यारी संगहारे हो रतिरण संग्राम ॥ सिथलित पाग भाल पर जावक हिये बिराजत बिन गुण माल । कुंमकुम तिलक अलक परसेदुर शुभग पीक सेाहत दोउ गाल ॥ कंकन पीठ गड्यो उरनख छत जनु घन माझ द्वैजको चंद । छीत स्वामि गिरिधरन भले तुम मोहि खिझावत हो नंदनंद ॥ ७३ ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी सुमिरि मन गेापाल लाल सुन्दर अति रूप जाल मिटि है जंजाल सकल निरखत संग गेाप बाल । मोर मुकट शीश धरे बन माल सुभग गरे सबको मन हरे देखि कुंडल को झलक गाल आभूषन अंग सेाहे मोतिन के हार पेाहै कंटसरी मोहे हगगेापी निरखत निहाल । छीत स्वामी गेाईवन धारी कुंवर नंद सुवन गाइन के पाछे पाछे धरतहें लटकीली चाल ॥ ७४ । राग भैरव ॥ चर्चरी ॥ प्रात भया जागेा बलिमोहन सुखदाई । जननी कहे बारबार उठेा प्रान के अधार मेरे दुख हार श्याम सुन्दर कन्हाई ॥ दूध दही माखन घृत मिश्री मेवा बदाम पकवान भांति भांति बिबिध रस मलाई । छीत स्वामी गेाबर्द्धन धारी लाल भेाजन करि ग्वालन के संग बन गेाचारन जाई ॥ ७५ ॥ राग भैरव ॥ भई भेट अचानक आइ । हेा अपने गृह तें चली जमुना वे उतते चले चारन गाइ ॥ निरखत रूप ठगेारी लागी उतको डगर भर चल्यो नजाइ । छीत स्वामी गिरिधरन कृपा करि मेातन चितये मुरि मुसकाइ ॥ ७६ ॥ राग भैरव ॥ जागिये ब्रजराज कुंवर कमल फूले । कुमुद वृन्द सकुचि भये भृंगलता भूले ॥ तमचुर खग रेार सुनहु बेालत बनराई । रांभति गौधीर देन बछरा हित धाई ॥ विधु मलीन रवि प्रकास

गावत व्रजनारी ॥ सूरश्याम प्रात उठे अंबुज करधारी ॥ ७७ ॥ रागभैरव ॥ कमल नयन हरि करो कलेवा ॥ माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भांति भांति की मेवा । खारि क दाख चिरौंजी किस मिस उज्जलगरी बदांम ॥ सफरी सेव छोहार सिंघारे जे खरबूजा नांम ॥ अरुमेवा बहुभांति भांति के षटरस के मिष्टान ॥ सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ ७८ ॥ रागभैरव ॥ उठहु नंद कुमार भयो भिनुसार जगावत नंदरानी झारीके जल बदन पखारौ सुत कहि कहि सारंग पानी ॥ माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावे सो लीजे आंनी ॥ सूरश्याम मुख निरखि जसोदा मनही मनहि सिहांनी ॥ ७९ रागभैरव ॥ भोर भए निरखत हरिको मुख प्रमुदित जसुमति हरषित नंद ॥ दिन कर किरनि कमल जनु बिकसित उर प्रति अति उपजत आनंद ॥ बदन उघारि जगावत जननी जागहु मेरे आनंद कंद ॥ मानहु मथि सुर सिंधु फेन फटि दयौ दिखाई पूरन चंद ॥ जाकोईशशेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति श्रुति छंद ॥ सोई गोपाल सु गोकुल भीतर सूरसो प्रकटे परमा नंद ॥ ८० ॥ रागभैरव ॥ तहीं जाहु जहां रैनि हुते काहेको दुराउ करत नंद नंदन मिटे न अंक उर चिन्ह जुते ॥ बिन गुन हार मनोहर उर पर परम चतुर हियलाइ सुते ॥ बिथुरी अलक अटपटे भूषन छुटे काम कुच बीचउते दशन दागनखरेख छबीली भामिनि भवन भाव भुगुते ॥ सूरश्याम देखिअति शोभा लोचन ललित उनीद हुते ॥ ८१ ॥ रागभैरव ॥ तहींजाहु जहां निसाबसे ॥ जानति हो पिय चतुर शिरोमणि नागर जागर रागरसे ॥ घूमत हो मानो पिय उर गनीनब बिलास श्रम सेजउ से ॥ श्याम उरस्थल पर नख सोभित गगन दुइज जन इंदुलसे ॥ काजल अधर प्रकट देखियत हैं नागबेलि रंग निपट खसे ॥ खटपटि पाग महाबरके रंग मानिनि पगपर सोस घसे ॥ बिगलित केशमरगजी माला पीठि बलयके चिन्हवसे ॥ सूर दास प्रभु प्रिया बचन सुनि नागर नगधर नेकंहसे ॥ ८२ ॥ रागभैरव ॥ क्यों सुदुरतहो प्रकटभये ॥ कहत हैं नयन निशके जागे मानो सरसिज अरुणनये ॥ जावक भालनागर सलोचन मसिरेखा अधरनिजोठये ॥ बलया पीठ नितंब चरण मणि बिनु गुण कंठ हार बनये ॥ भुजताटंक ग्रीव सोइ चंदन चिन्ह कपोल दसन ग्रसये ॥ आलिंगन चंदनकुच चर्चित मानो दैशशि उर उदये ॥ चरण सिथिल अरुचल उगमगी घूमत घायल समर सये ॥ सूरसखी कैसे मन माने सुन्दर श्याम कुटिल मगये ॥ ८३ ॥ रागभैरव ॥ लालन आयेरी रैनि गवाई ॥ निसिभई छीन बोले तम चुर खग ग्वालिन तबहि हंसी मुसकाई । अरुन किरिनि मुख पंकज बिकसित मधुप लियो सुन्दर रसजाई ॥ चंद मलीन भयो दिन मणि ते कुमुद गये सबही कुंभिलाई ॥ चारि जाम जागत बीते मोहिं तुम्ह बिनु मोको कछु न सोहाई ॥ सूरश्याम या दरस परस बिनु सब निश गई मेरी नींद हेराई ॥ ८४ रागभैरव ॥ रति संग्राम बीर रस माते ॥ हो हरि सूर शिरोमणि अजहूं नहिन संभार सकल अंग नाते ॥ औरे बरन भये ए लोचन अपने अपने सहज बिनाते ॥ मानहु भीर परी औधन की ताते भये क्रोध अति राते ॥ परि मल लुब्ध जहां अलि बैठत उडि उडि उडि नहि सकत तहांते ॥ जनु मनमथ सर बागे फाकी फोक हेात सब बाहरि घाते ॥

बैठि जात अलसात उनीदे क्रम क्रम क्रम करि उठत तहां ते ॥ मन मुरछा कटाक्ष नाट सलेकाढत नाहि चुभ्यो हियराते ॥ डगमगात घूमत जो घायल शोभा अति भई सुभट कलाते ॥ सूरदास स्वामी रण जीते अब सकुचत धेां हैातुम काते ॥ ८५ रागभैरव ॥ जानत हेा जैसे गुणनि भरे हैा ॥ काहेको दुराव करत मनमोहन सोई पै कहेा तुम जहां ढुरे हैा ॥ निशि जागत निजभवन न भावत आलस वंत सब अंक धरे हैा ॥ चंदन तिलक मिट्यो कहवंदन काम कुटिल कुच उर उधरेहैा ॥ तुम अति कुसल किसोर नंद सुत कहेा कौन के चित्त हरेहैा ॥ औचिकही जिय जानि सूर प्रभु सोह करन को हेात खरे हैा ॥ ८६ ॥ रागभैरव ॥ हाहा हेा पिय बात कहैा ॥ आप कछू जिय तरक गहत हैा तेातुम सेां हेा मैान गहैा । कहा चूक हमको पिय लागे रूसिरहेहैा काहे जू ॥ तबहीं तें बेंसे हैा ठाढे मेातनको नहि चाहेजू । अब हमरेा अपराध छमेागे कृपा करेा मुख बेालेा जू । सूरश्याम अब तजेा निठुरई गुढी हृदय की खेालेाजू ॥ ८७ ॥ रागभैरव ॥ जाहु तहां कहा सेाचत हैा ॥ जासंग रैंनि बिहातन जानी भेार भये तेहि मेाचत हैा और्निको छिनु जुग बीतत है तुम निहचीते नागर हैा । घूमत नयन जम्हात बारही रतिसंग्राम उजागर हैा । मै अब कहति तुम्हारे हितकी ताही के गृह सेायरहैा । सूर श्याम बैसी चियको है वह रस बाही बिनु न लहैा ॥ ८८ ॥ रागभैरव ॥ हमहीं पर पिय रूसेहैा ॥ बेालत नहीं मूक क्यों ह्वैरहे अति रंग हीन कछूसे हैा । तव निरखत औरहि हितचित बिनु किधेां कहूंतुमलूसे हैा । तव हसिवदन मिलत आजुहि कछु और भये निठु रूसेहैा उग मगात पग उतहि परत है चित चंचल उतहू से हैा । सूरदास प्रभु सांचि भाषिगये चिय अंग अबला मूसे हैा ॥ ८९ ॥ रागभैरव ॥ जागिये गेापाल लाल आनंद निधि नंदबाल जसुमति कहै बार बार भेार भयेा प्यारे । नयन कमल से विसाल प्रीति बापिका मराल बदन ललित चंदतनै ऊपर कोटि वारिडारे । उमत अरुण बिगत सर्बरीस संकि किरनि हीन दीन दीप मलिन छीन दुति समूह तारे । मनहु ज्ञान घन प्रकास बीते सब भव बिलास आस चास तिमिरतेाष तरनि तेज जारे । बेालत खग मुखर निकर मधुकर ह्वैवे प्रतीत सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे । मनेा वेद बंदी मुनिमूत वृन्द मागध गन बिरद बदत जै जै जै जैत कैट भारे । बिग सित कमला बली चल प्रफंद चंच रीट गूंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे । मनेा बिराग पाय सकल सेाक कूप गृह बिहाय प्रेम मत्त फिरत भृत्य गुनत गुण तिहारे । सुनत बचन प्रियरसाल जागे अति सै दयाल भागे जंजाल बिपुल दुख कदंब टारे । त्यागे भ्रम कंद दंद निरखि के मुखार-बिंद सूरदास अति अनंद मेटे मद भारे ॥ ९० ॥ रागभैरव ॥ जागिये गेापाल लाल प्रकट भयेा हंसमाल मिटै गयेा अंधकार उठेा जननि मुख देखाई । मुकुलित भै कमल जाल कुमुद वृन्दवन बिहाल मेटहु जंजाल त्रिविध ताप तननसाई । ठाढे सब सखा द्वार कहत नंद के कुमार टेरत हैं बार बार आइये कन्हाई । गैयनि भई बडी बार भरिभरि पयथन निभार बछ रागन कर पुकार तुम बिनु जदुराई ॥ तातें यह अटक भरी दोहन काज सेा हंकरी उठि आवहु क्यों नहरी बेालत बलभाई । मुखते पटभाट कि

डारि चंदवदन दैउघारि जसुमति बलिहारि वारि लोचन सुखदाई ॥ धेन दुहन चले धाय रोहिणी को लई बुलाय दोहनी मोहि दै मगाय तबही लैआई । बछरा दियो थन लगाय दुहत बैठिके कन्हाय हंसत नंदराय तहां माता दोउ आई । दोहनी कछूं दूध धार सिखवत नंद बारबार बहछुबिनहिबारपार नंद घर बधाई । तब हलधर कह्यो सुनाय धेनु बन चलो लिवाय मेवा लीन्हें मगाय बिबिध रस मिठाई । जेंवत बलराम श्याम संतन के सुखद धाम धेनु काज नहि बिश्राम जसुदा जलखाई ॥ श्याम राम मुख पखारि ग्वाल बाल लये हंकारि जमुना तट मन बिचारि गाइन हंक राई । शृंगबेणुनाद करत मुरली सुर मधुर धरत ब्रजांगन मन हरत ग्वाल गावत सुघराई । वृन्दाबन तुरत जाय धेनु चरति तृण अघाय श्याम हरष पाय निरखि सूरजबलिजाई ॥ ९१ ॥ राग भैरव ॥ जननि जगावति उठो कन्हाई । प्रकट्यो तरनि किरनिगनछाई । आवहु चंदवदन दिखराई ॥ बारबार जननी बलि जाई । सखा द्वार सब तुमहि बुलावत ॥ तुम कारन हम धाए आवत । सूर श्याम उठि दरसन दीन्हो ॥ माता देखि मुदित मन कीन्हो ॥ ९२ ॥ राग भैरव ॥ भोर भए भोगी रस बिलसि भये ठाढे । जागे जामिनी जगाय भामिनी अंग संग समाय स्वास सिथल डरनिडरत देत आलिंगनगाढे ॥ घूमत रसमत्तमगन सूधेडू डग परत पगन छिनछिनु चितु चौप चोजनि मोज मनोजनि बाढै ॥ अति रस में रसिक राय शोभा बरनी न जाय दरु बिहारनिदासिलडाय प्रम रंगरंगि काढे ॥ ९३ ॥ राग भैरव ॥ चर्चरी । प्रातही किशोर जोरि कुंज खेलनी । अंग अंग गुणत रंग गौर श्याम रूप रासि मदन केलि सुरत सिंधु कूल झेलनी । तरनि नंदनो सुतीरगावत पिय शृंगकीरचिगुण मरुत गंधरीर श्रमजअंबुझेलनी । बर बिहार रानी सुन पुरा दिवा जानी बिउल बिपुल बारनेक भुजा कंठमेलनी ॥ ९४ ॥ राग भैरव ॥ श्यामा संग श्याम नचत रास संग गुणनि बचत शशि अखंड मंडल हसि शरद जामिनी ॥ तरनि तरुन कूल मृदुल अछसितरज पुनीत बिबिध पवन ताप बदन काम कामिनी । चरण चलित बाहु बलित ललितगान कलित तान मान सुख निधान तिरपलेति भामिनी । बर सुगंधरंग ताल मणि मृदंग बिंगचाल लाल सुघर औघर गजराज गामिनी । रिझै पतिहिं गति दिखाय लेत कुंवर कंठलाय श्याम घटा माझ मनहु दुरति दामिनी । नैन सै नभ्रूविलास मंदहास सुख निवास सुनि धुनि मुनि बोलत जैव्यास स्वामिनो ॥ ९५ ॥ राग भैरव ॥ जै गोविंद माधो मुकुंद हरि । कृपा सिंधु कल्यान कंसअरि । कृपनिपाल केशव कमलापति । कृष्ण कमल लोचन अगतिनगति ॥ रामचंद राजीवनयनबर । शरण साधु श्री पति सारंगधर । बनमाली बामन बिट्ठल बल ॥ बासुदेवबासी ब्रजभूतल । खरदूषण त्रिसिरा सिर खंडन ॥ चरण चिन्ह दंडक भुवमंडन । बकीबनवकबदनविदारन । बरुण बिषाद नंदनि स्तारन । ऋषिमखचान ताड कातारक । बनबसितातबचनप्रति पालक ॥ गोकुल पति गिरिधर गुण सागर ॥ गोपी रवन रासरति नागर । रघु पति प्रबल पिनाक वि

भंजन । जग हित जनक सुता मनरंजन । काली दमन केसिकर पातन । अघअरिष्ट धेनुकअनुघातन । करुणा मय कपि कुल हित कारी ॥ बालि विरोध कपट मृगहारी गुप्त गोप कन्या व्रत पूरन ॥ द्विजनारी दरसन दुख चूरन ॥ रावण कुंभकरण सिर छेदन ॥ तरुवर सातएक सर भेदन ॥ शंखचूड चाणूर संघारन ॥ शक्र कहै मेरी रक्ष कारन ॥ उत्तर कृपा गीध कृतकारी ॥ दरसन दै सेबरी उद्धारी ॥ जेपद सदा शंभु हित कारी ॥ जेपद परसि सुरसरी गारी ॥ जेपद रमा हृदै नहि टारी ॥ जिनि पदते तिहुं भुवन तियारी ॥ जेपद वृन्दाबनहिं विहारी । जेपद पांडव गृह पगु धारी ॥ जिनि पद शकटा सुर संघारी ॥ जेपद अहिफन फन प्रतिधारी ॥ जेपद भक्तन के सुखकारी ॥ जिनि पद रज गौतम त्रियतारी । सूरदास सुर जाचत वेइ पद । करहु कृपा अपने जन पर सद ॥ ९६ ॥ राग भैरव ॥ रोहत घूंघर बारे बार अरुझिरहे मुकुताहल निरवारतबार । रतिमानी संग नंदनंद के छूटे बंद कंचु की टूटे हार । निसिके जागे दोऊ नैना उरझि रहे चलति जोबन मदभार । सूरश्याम संग यह सुख देखत रीझै बारंबार ॥ ९७ ॥ राग भैरव ॥ नैन श्याम सुख लूटत है । यही बात मोको नहि भावे हमते काहू छूटत है । महा अछै निधि पाइ अचानक आपुहि सबे चुरावत है । अपने है ताते वह कहियत श्याम इनहि भरु-हावत है । छिनुछिनु प्रति सुख सागर लूटत बरजे भोंहें तानत है । सूर दास ओ देतकछू एक कहौ कहा अनुमानत है ॥ ९८ ॥ राग भैरव ॥ श्री कृष्ण नाम रसना रट सोई धन्यकलि में । जाके पदपंकज की रेणुकीबलि में । सोई सुकृत सोई पुनीत सोई कुलवंता । जाके निश दिनारहे कृष्ण नाम चिंता । जोग जग्य तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं । बिना कृष्ण नाम कलि उधार और नाहीं । सब सुखन को सार कृष्ण कबहू न बिसरिये । कृष्ण नाम लै लै भव सागर को तरिये । श्री गोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी । उधरे जन सूर दास ताकी बलिहारी ॥ ९९ ॥ राग भैरव ॥ ताल एक तारा । कृष्ण नाम भावे मोहि कृष्ण नाम भावें । बलिहारी ता कीज्यों कृष्ण नाम गावे । बसुधा को सार कृष्ण मेरे मनके अधार । कृष्ण श्रवण मंगल रूप कृष्ण सब विचार । मंचनको मूल कृष्ण हरन सकल खल कृष्ण ब्रज समुद्र को बार । कृष्ण शिवको आधार मेरे रसना को भाग्य कृष्ण ध्यान धार । मनको सुहाग कृष्ण रसना तंचन को तंच कृष्ण सब मंचन सुधार । यह रामराय कहत कृष्ण ताहो जपत भगवान कृष्ण बारंबार । हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण राम राम राम । नारायण नारायण बासुदेव बासुदेव गिरिबरधर गिरिबरधर श्याम श्याम श्याम । दीनबंधु दीनबंधु वैकुंठ धाम ॥ होत प्रात बड पुनीत लेत हरि को नाम । दामोदर दामोदर चक्रपानि चक्रपानि नरहरि हरि नरहरि हरि मुररिपु मुरारी ॥ मधु सूदन मधु सूदन सावरे बनवारी ॥ जमुना के नीरे तीरे वृन्दाबन धाम । सूर श्याम रटत रहत राधाबर नाम । भोर उठ सुमरनकरो होय सबहीं काम ॥ बंसी बट जमुना तट सुंदर घनश्याम ॥ १०० ॥ राग भैरव ॥ बासुरी बजाई

आज रंग सों मुरारी ॥ शिव समाधि भूलि गई मुनि मन की तारी ॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी ॥ सुनतहीं आनंद भया लगी है करारी ॥ रंभा सब ताल चूकी भूली नृत्य कारी ॥ जमुना जल उलट बह्यो सुधना संम्हारी ॥ श्रीवृन्दाबन बंसी बज्यो तीन लोक प्यारी ॥ ग्वाल बाल मगन भये ब्रज की सब नारी ॥ सुन्दर श्याम मोहनी मूरति नट बर बपु धारी ॥ सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥ १०१ ॥ राग भैरव ॥ ताल तितारा दधि के मत वारे कांह खोलो प्यारे पलके ॥ शीश मुकुट लटा छुटी और छुटी अलके ॥ सुरनरमुनि द्वार ठाडे दरस कारन किलके ॥ नासिका के मोती सोहै बीच लाल लालके ॥ कटि पीतांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलके ॥ सूर दास मदन मोहन दरस देहो भलके ॥ १०२ ॥ राग भैरव ॥ राम कृष्ण कहिए निशि भोर ॥ वे अवध ईश धनुष धरे वे ब्रज जीवन मांखन चोर ॥ बिन के छत्र चंवर सिंघासन भरत शत्रुघन लछमण जोर ॥ उन के लकुट मुकुट पीतांबर गायन के संग नंद किशोर ॥ उन सागर में सिलातराई उन राख्यो गिर नख की कोर ॥ नंद दास प्रभु सब तज भजिये जैसें निरतत चंद चकोर ॥ १०३ ॥ राग भैरव ॥ देखोरी यह कैसा बालक रानि यशोमति जाया है ॥ सुंदर बरन कमल दल लोचन देखत चंद लजाया है ॥ पूरण ब्रह्म अलख अबिनाशी प्रगट नंद घर आया है ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै केशर तिलक लगाया है ॥ कानन कुंडल गल बिच माला कोटि भानु छबि छाया है । शंख चक्र गदा पद्म बिराजे चतुर्भुज रूप बनाया है ॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी जसुमति सुतकहलाया है ॥ मछ कछ बाराह औ बामनराम रूप दरसाया है । खंभ फारि प्रगटे नर हरि बपु जन प्रहलाद छुडाया है ॥ परसु राम बुध निःकलंक होय भुवका भार मिटाया है ॥ काली मर्दन कंश निकंदन गोपी नाथ कहाया है ॥ मधु सूदन माधो मुकुंद प्रभु भक्त बछल पद पाया है ॥ दामो दर गिर धर गोपाल हरि त्रिभुवन पति मन भाया है ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाया है ॥ सुर नर मुनि के ध्यान न आवत अद्भुत जाकी माया है ॥ सो पर ब्रह्म प्रगट होय ब्रज में लूट लूट दधि खाया है ॥ परमानंद कृष्ण मन मोहन चरन कमल चित लाया है ॥ १०४ ॥ राग भैरव ॥ ताल एकतारा ॥ मैं जोगी जस यारे बाबा मैं जोगी जस गाया ॥ तेरे सुत के दरसन कारन मैं काशी सें धाया ॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जा माया ॥ अलख निरंजन देखन कारन सकल लोक फिर आया ॥ धन तेरो भाग जशोदा रानी जिन ऐसा सुत जाया ॥ गुनन बडे छोटे मत भूलो अलख रूप धर आया ॥ जो भावे सो लीज्यो रावल करो आपनी दाया ॥ देहु अशीश मेरे बालक कों अविचल बाढे काया ॥ नामै लेहों पाट पटंबर नामे कंचन माया ॥ मुख देखू तेरे बालक को यह मेरे गुरु ने बखाया ॥ कर जोरे बिनवे नंद रानी सुन जोगिन के राया ॥ मुख देखन नहि देहो रावल बालक जात डराया ॥ काला पीला गोर रूप है बाघंबर ओढाया ॥ कहु डायन की दृष्टि लगे कहुं बालक जात दिठाया ॥ जाको दृष्टि सकल जग ऊपर

सोक्यों जात दिठाया ॥ तीन लोक का साहब मेरा तेरे भवन छिपाया ॥ कृष्ण लाल को ल्याई जसुदा कर अंचल मुख छाया ॥ कर पसार चरनन रज लीनी सींगी नाद बजाया ॥ अलख अलख कर पाय छुए है हंस बालक कि लकाया। पांच बेर पर कर्मा करके अति आनंद बढाया। हरि की लीला हरमन अटक्यो चित नहीं चलत चलाया ॥ अखिल ब्रह्मांड के नायक कहिये नंद घरहि प्रगटाया इन्द्र चंन्द्र सूरज सार द सनकादिक पारनपाया ॥ लाग अवनमंचदि जो सुनाया हंसि बालक मुसकाया॥ कौन देश के जोगी हो तुम कौन नाम धरवाया ॥ कहां वास यह कहत जशोदा सुन जोगि नके राया ॥ तुम हीं ब्रह्मा तुमहीं बिष्ण, तुमहीं ईश कहाया ॥ तुम विश्व भर तुम जग पालक तुमही करत सहाया ॥ सूर श्याम कहे सुनो जशोदा शंकर नाम बताया ॥ १०५ ॥ राग भैरव ॥ नंद द्वार एक जोगी आयो सींगीं नाद बजा यो। शीश जटा शशिवदन सोहायो अरुन नयन छबि छायो ॥ रोवत खीजत कृष्ण सांवरो रहत नहीं हुलरायो ॥ लियो उठाय गोद नंद रानी द्वारे जाय दिखायो ॥ अलख अलख कर लियो गोद में चरन चूम उर लायो ॥ श्रवण लाग कछु मंत्र सुना यो हसि बालक किन कायो ॥ चिर जीवो सुत महर तिहारो हों जोगी सुख पायो। सूर दास रम चल्यो रावलो शंकर नाम बतायो ॥ १०६ ॥ राग भैरव ॥ ताल तितारा ॥ राम चरन अभि राम काम प्रति तीरथ राज बिराजे ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतल वर प्रेम अछय वट छाजे ॥ श्याम बरन पद पीठ अरुण तलल सत विसदनख श्रेणी ॥ मनो रवि सुता सारदा सुर सरि मिलि चलि लजित चिवेणी ॥ अंकुश कुलिसकमल ध्वज रेखा भंवर तरंग विलासा ॥ मज्जन सुर सजन मुनि बरजन मुदित मनोहर बासा ॥ बिन बिराग तप जोग जोग व्रत बिन तन तीरथ त्यागे ॥ सो सब सुलभ दास तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनु रागे ॥ १०६ ॥ राग भैरव ॥ जदु वर मेरे दीन दयाल। शर णा गत कों करे निहाल केवट गीध रीछ कपि राक्षस कीट पतंग किए प्रति पाल ॥ मुनि मनसा पूरण करवे को गोपी नाथ भए नंद लाल ॥ तन मन धन तुमरो तुम कीजे प्रेम रंग छूटे जम जाल ॥ चल नारे प्रभु के दर बार ॥ काल बली ठाडो चोबदार ॥ इह हजूर मे याद तिहार ॥ चलने की कछु करो तैयार ॥ जिस मे हुरमत रहे तुमार ॥ ऐसी करनी करले यार ॥ जिस को खामद पकर बुलावे ॥ जतन करे कछु बन न हि आवे ॥ बिन मरजी कोइ रहन न पावे ॥ क्या गरीब क्या साह कहावे ॥ जब जम आवे कछुन बसावे ॥ छिन में बांध पकर ले जावें ॥ तब तो तू कहु कौन छुडा वे ॥ ढिग बैठा कलपे कल पावे ॥ मोजू दात की तैयारी कीजें ॥ दरसन तलब बेग चल लीजे ॥ जो खामद तोहि देख पसीजे ॥ कंठ लगाय रंग में भीजे ॥ करनी का कर कमर कटारा ॥ सील सिफर तप तेग तुमारा ॥ धरै तोप कर ध्यान पियारा ॥ ज्ञान घोड हूजे अस बारा ॥ जो तूं ऐसा होय चलेगा ॥ मालक मन में बहुत खिलेगा काम क्रोध मद लोभ मोहमदयह संसार सपन दहेगा ॥ निशि बासर हरि नाम उचार के रघनाज पले परम पद लहेगा ॥ सूर दास मुख जो तू चाहे गो

विन्द के गुण गावें । पतित उधार बिरद कहावे चरण शरण नित ध्यावें ॥ १०८ ॥ * ॥ * * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

। रागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तनान्तरगत ।

॥ रागभैरव समाप्तम् ॥

॥ अथ रामकली रागप्रारंभ ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ मोहन जागि हो बलिगई ॥ ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे बेर बनकी भई ॥ पीत पट करि दूर मुखतें छाडिदे अरसई ॥ अति अनंदित होत जसुमति देखि दुति नित नई ॥ जागे जंगम जीव पशु खग और व्रज सबई ॥ सूर के प्रभु दरस दीजे अरुन कीरन छई ॥ १ ॥ राग राम कली ॥ भोर भयो जागो हो ललना कहा तुम अजहूं रहे हो सोइ ॥ पिओ धार अपनी धौरी की जैसे देह बलहोइ वेनी गुहूं देउ दृग अंजन मसि विंदुका मुख धोइ ॥ हंसत बदन सुख सदन निहारों मान्हों नान्हीं दतियां दोइ ॥ टेरत ग्वाल बाल खेलन को गोरंभन हू हो इ ॥ व्रज जन सब ठाढी मुखदेखन अति आरत सब कोइ ॥ उठि बैठे लए गोद जसोदा सुंदर सुत तिहुं लोइ ॥ रसिक प्रीतम लगि गरें जननि से मांगत रोटी रोइ ॥ २ ॥ राग राम कली मैया तेरे लालको मुख दिखन हों आई ॥ काल्हि मुख देखि गई दधि वेचन जातहि गयो है बिकाई ॥ दिनते दूनों दाम लाभ भयो गाइनि बछिया जाई ॥ आई सबे यभाय साथकी गिरिधर देहु जगाई ॥ सुनि चिय बचन विहंसि उठि बैठे नागरि निकट बुलाई परमा नंद सयानी ग्वालिन चली संकेत बनाई ॥ ३ ॥ राग राम कली ॥ लालको दरसन भये सवेरो ॥ बहुत लाभ पाउंगी माई दह्यो बिकैहै मेरो ॥ गली जु सांकरि एक जो नीकी भेट भयो भट भेरो ॥ अंक दे चली सयानी ग्वालिन हरि कों बदन फिरि हेरो ॥ प्रातहि मंगल भयो सखीरी ह्वै है सब काज भलेरो ॥ परमा नँद प्रभु मुख निरखत मिट्यो भवसागर फेरो ॥ ४ ॥ राग [illegible] चलति अबरही भांति ॥ नवनिकुंज ते राधा भामिनि अरुण उदै घर जाती ॥ रतिकी केलि सुमिरि मृग नैनी बार बार मुख काती ॥ वदन जोति ते सुनिरी भामिनि मेटत उडपति कांती ॥ निसके चिन्ह प्रकट देखियत हैं काम केलि कुलकांती ॥ प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच भेट जुगई छाती ॥ नंद कुमार सुरत संग लीनें सरद बिमल की राती ॥ कृष्ण दास गिरिधर पियके संग अधर सुधारसमाती ॥ ५ ॥ राग राम कली ॥ हरि अनु भवति जुवति वड़ भागी ॥ राधा रसिक नंद नंदन के सुख निधि चरण कमल अनुरागी ॥ कोक कला संगीत निपुन सखि पिय संगम रति रस निसि जागी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर पियमुख देखत नैंन टक टकी

लागी ॥ ६ ॥ राग राम कली ॥ बेसइयो मेरी रैनि बिदा होन लागी ॥ घटि गई जोति मंद भये तारे फूल बासना पागी ॥ सोरह सिंगार बतीस आभूषण अपने प्रीतम संग जागी ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को कृष्ण हमारे अनुरागी ॥ ७ ॥ राग राम-कली ॥ हो बलि बलि जांउ कलेऊ कीजे ॥ खीर खांड घृत अति मीठो है अबको कोर बछ लीजे ॥ बेनी बढे सुनो मन मोहन मेरो कह्यो पतीजे ॥ औट्यो दूध सद्य धौरी को सात घूंट जोपीजे ॥ हों बारी या बदन कमल पर अंचल प्रेम जलभीजे ॥ बहुरि जाय खेलो जमुनातट गोबिंद संग करिलीजे ॥ ८ ॥ राग राम कली ॥ ग्वालिन पिछ वारे ह्वै बोल सुनायो ॥ कमल नयन हरि करत कलेऊ कौरन मुख लों आयो ॥ मैया एक गाय बन ब्याई बछरा वहीं बसायो ॥ बेनु न लई लकुट नहि लीनो अर बराव कोउ सखा न बुलायो ॥ चक्रित नयन चहूं दिस चितवत सत्यइ है किधों सपनो पायो ॥ फूले अंग न समात रसिक बर त्रिभुवन पुर रस छत्रनि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत सदन में बिबिध भांति कीनों मन भायो ॥ परमानंद सयानी ग्वालिन उलटि अंक गिरिधर पिय पायो ॥ ९ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ जयति आभीर नागरी प्रान नाथे ॥ जयति ब्रजराज भूषण असोमति ललित देत नवनीत मिश्री सुहाथे ॥ जयति प्रात परभात दधि खात श्रीदामा संग अखिल गोधन वृन्द चरें साथे ॥ ठौर रमणीक वृन्दा बिपिन शुभस्थल सुन्दरी केलि गुण गूढ गाथे ॥ जयति तरनिजा तट निकट रास मंडल रच्यो तत्त-ताथेई थेई तत्तताथे ॥ चतुर्भुज दास प्रभुगिरिधरन बहुरि अवश्री बिठल प्रकट ब्रज कियो सनाथे ॥ १० ॥ राग रामकली ॥ मांखन तनिक देरी माय ॥ तनिक कर पर तनिक रोटी मांगत चरण चलाय ॥ कनक भुव पर तनिक रेखो करन पकरेव धाय ॥ कंप्यो गिरि शेष संक्यो दधि हेत अकुलाय ॥ मेरे मनके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ॥ तनिक मुखपर तनिक बतियां बोलत हैं तुतराय ॥ जसुमति के प्राण जीवन धन लियो उर लपटाय ॥ नंद कुंवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलिजाय ॥ ११ ॥ राग राम कली चर्चरी ॥ लालहि जगाइ बलि गई माता ॥ निरखि मुख चंद छबि मुदित भई मनहि मन कहति आधे वचन भयो प्राता ॥ नयन अरसात अति बार बार जंभात कंठ सों लगि जात हरष गाता ॥ बदन पोंछियो जमुन जलसों धोइकें कह्यो मुसकाइ कछु खाहु ताता ॥ दूधओ ओ आंनि अधिक मिश्री सांनि लेहु मांखन पानि प्राण दाता ॥ सूरप्रभु किये भोजन बिबिध भांति सों [illegible] ॥ १२ ॥ राग राम कली चर्चरी ॥ आजु लाडिलो लालहि जगाय जागो ॥ सकल निसि कुंज बसि प्रिये बल बाहुकसि बिलसि अंग अंग अनुराग रागी ॥ रोम रोमनि अरुझि सकति नेकन सुरझि अति अधर मधुर रस प्रेम पागी ॥ बिहारनि दासि सकाम गौर श्याम सधाम चितै चितवति जामलतनि लागी ॥ १३ ॥ * ॥ अथ खंडिता ॥ * ॥ राग राम कली ॥ राधिका श्याम तन देखि मुसकानी ॥ हार बिन गुण लेख अधर अंजन रेख नैन तंबोर तुतरात बांनी ॥ पाग लट पटी बनी उरह छूटी तनी अंग की गति देखि जीय लजानी ॥ उपटि कंकन पीठ बक्र बिह बल दीटईठको ईठतालखी छानी ॥ पाणि पल्लव

अधार दसन सों गहि रहीं अरध बैन बोलि बचन हार मांनी ॥ सूर प्रभु अंक भरी प्राण पति नागरी नवल नागर उरह घालि सांनी ॥ १४ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ श्याम सुन्दर रैनि कहा जागे ॥ देखि बिन गुण माल अधर अंजन भाल जावक लग्यो गाल पीक पागे ॥ चाल डग मगी अति सिथिल अंग अंग सब तोतरे बोल उर नखनि दागे ॥ गह्यो कंकन पीठ निपट बिहवह दीठ सर्बरी लाल नहि पलक लागे ॥ कहिये सांचि बात काहे जीय सकुचात कौन चिय जाके अनुराग रागे ॥ दास कुंभन लाल गिरिधरन एते पर करत झूठी सोंह मेरे आगे ॥ १५ ॥ राग राम कली ॥ जैये तहां जहां रैन जागे ॥ बनी बिन गुण माल ओठ अंजन भाल सेंदुर लग्यो गंड पीक पागे ॥ आरक्त नयन अति सिथिल सब अंग गति डगमगत राति नहि पलक लागे । चपल चातुर ढीठ उपटि कंकन पीठ देखियत उरमांझ नखन दागे ॥ सकल ब्रज चियन में कोनसी नारि वह जाके तुमलाल अनुराग रागे । चतुर्भुज दास प्रभु गिरि धरण काहे को करत झूठी सोंह मेरे आगे ॥ १६ ॥ रागरामकली ॥ भले आये भोर गिरि वर धरन । अरुण नयन जंभात आलस धरत डगमगे चरन ॥ पाग लटपटी पलटि परे पट अटपटे आभरन । सिथिल अंग अंग सबहिं देखियत निसाके जागरन ॥ नव चिया संग प्रहर चारेा पलन न पाये परन । चतुर्भुज प्रभु जीति रति रन कियेा रति पति शरन ॥ ॥ १७ ॥ राग रामकली ॥ नीके आये गिरिवर धारी नागर । जियकी छपा हम तबहीं जानी भोर खोलाई आगर ॥ तुम्हरे चिंतत रैननैन अरुण भये सकल निसाके जागर । जिन तुमपें यह खेल रच्यो है ऐसी कोन उजागर ॥ तुम अपने रंगही रीझ चतुर नारि के बागर । बलि बलि जाउं मुखारविंद की मुरति कलेवर सागर ॥ गुण कहियत कहि पारन आवत मसि पर्वत क्षिति कागर । सूरदास प्रभु हमें लाज आवत है तुमहेा सदा उजागर ॥ १८ ॥ राग रामकली ॥ प्रात भये आये लाल छांडहु अटपटी । आजु की रैनि मोहि नखत्र गनत गई मारग जोवत आंखिन लागी चटपटी ॥ उर नख पदवर सुनु गिरिवर धर गलित बरुहा चूडपाग बनी लटपटी । कृष्ण दास प्रभु जानत रनि तदाम निसान मदन नृपति रन खोनी मानेा झटपटी ॥ १९ ॥ राग रामकली ॥ लाल रसमसे नयन आजु निशि जागे । अति बिसाल अरसात अरुण भये रति रन के रंग पागे ॥ सुन्दर श्याम शुभगता अटपटि अंग अंग नखक्षत दागे । मानहु कोपिनिदरि सन्मुख सर साथ भये अरिभागे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन अधिक छवि बदन भृकुटी लागे । मानहु मन्मथ चाप भेट धरि रह्यो जोरि कर आगे ॥ २० ॥ राग रामकली ॥ आजु हरि रैन उनीदे आये । अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये ॥ सिथिलित वसन मर गजी माला कंकन पीठ सुहाये । लटपटि पाग अटपटे भूषन बिन गुण हार बनाये ॥ सिथल गात अरु चाल डगमगी भृकुटी चंदन लाये । सूरदास प्रभु यहे अचम्भो तीन ति लक कहं पाये ॥ २१ ॥ राग रामकली ॥ आवत ललन पिया रंगभीने । सिथल अंग डगमगत चरण गति मोतिन हार उर चीने ॥ पारि जात मंदार माल लपटात मधुप मधु पीने । गोविन्द प्रभु पिय तहीं जाउ जहां अधर दसन क्षतकीने ॥ २२ ॥ राग रामकली ॥

लालन जागत रैन बिहानी । देखत पथ अंखियां अति हारी कहां लाल रति मानी ॥ कह्यो काल केहि लाल सखिन संग पूरब बिबिध कहानी । रंग अनंग सूरत चित आवत छतियां अधिक पिरानी ॥ भोर भये आये मेरे गृह देखत सखी हिरानी । रसिक प्रीतम दोउ अंखियां अंजन भई कहो कहां रैनि सिरानी ॥ २३ ॥ राग रामकली ॥ नयन उनीदे भये रंग राते । मनहु गुलाल कुसुम पर सजनी फिरत भृंग मदमाते ॥ प्रेमपराग पांखुरी पल्लव प्रफुलित मदन लताते । सदा सुबास बिलास बिलोकनि प्रकट प्रेम के नाते ॥ तैसिये मारुत मंद जम्हावरि मिलत मुदित छबि ताते । सीचे सूर श्याम मानि नि निज हितकरि केलि कलाते ॥ २४ ॥ राग रामकली ॥ अथ समुदाय पद ॥ किहि मिस जसुमति के जाउ । सकल सुख निधि मुख निरखि के नयन तृपा बुझाउ ॥ द्वारे आरज सभा जुरि रही निकसिवे नहि पाउ । बिनु गणपति बर्त्त छुटे हसे गोकुल गाउ ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित लेखे नाउ । सूरहि लगन कठिन मनकी कहौ काहि सुनाउ ॥ २५ ॥ राग रामकली ॥ सखी हरि दरस कों मोहि चाउ । सांवरे सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाउ ॥ श्याम सुन्दर कमल लोचन अंग अंग नित भाउ । सूर हरि के रूप राची लाज रहो के जाउ ॥ २६ ॥ राग रामकली ॥ नन्द सदन गुरुजन की भीर । तामें लालन बदन नीके देखन नपाउ । बिनुदेखें जीय अकुलाय जाय दुख पाय यदपि बड़ेई खन उठि उठि आउ ॥ ले चलि री मोहि यमुना के तीर जहां बलबीर सुंदर बदन देखि नयन सिराउ । नन्ददास प्यासे को पानी पिवाय ले जिवाय जिय की तू जाने तासो कहा हौं जनाउ ॥ २७ ॥ राग रामकली ॥ मनमृग वेधों मोहन नयन बान सो । गूढभाव की सैन अचानिक तकिताक्यों भृकुटी कमान सो ॥ प्रथम नाद बल घेरि निकटले मुरली सप्तक सुर बंधानसो । पाछे बंकचिते मधुरें हंसि घातकरी उलटी सुठा नसो ॥ चतुर्भुज दास पीर पातन को मिटतन औषध आनसो । ह्वै है सुख तबही उर अन्तर आलिंगन गिरिधर सुजान सो ॥ २८ ॥ राग रामकली ॥ अंगुरिया छाडिरे गति अरग थरग । नूपुर बाजत त्यों त्यों धरनी धरत पग ॥ ध्रुव ॥ कबहुंक जसोदा माहिं भुज पखारि हंसि डगमगाय के उलटिडग । जननी मुदित मन चितेचिते शिशु तन राखति कंठ लगाय सुंदर श्याम सुभग ॥ मृदु बानी तुतरात मांगि नव नीत खात भुजन भाव जैसें जनावत बाल खग । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर के बाल बिनोद नंद आनंद मुख देखें टाढे डग डग ॥ २९ ॥ राग रामकली ॥ उपमा धीरज तज्यो निरखि छबि । कोटि मदन अपुनो बलहारयो कुण्डल तेज छप्यो रबि ॥ खंजन मीन मृग जहें जेते दीन रहे क्योंहूं दबि । गिरिधर पटतर हमहि लजावत सकुचत नहीं खोटे कबि ॥ ईषद हास दसन द्युति निरखत बज्र सिखर सकुचाने । सूर श्याम लीला वपु काछियो पटतर मेटि बिराने ॥ ३० ॥ ॥ राग रामकली ॥ ठाढेरी खरिक माई कोनको किशोर । सांवरे बरन मन हरन बंसी धरन काम करन केसी गति जोर ॥ पवन परसि जात चपल होत देख पियरे पटको चट कीलो छोर । शुभग सांवरी छोटी घटाते निकसि आई वे छबीलो छटाको जैसो छबीलो ओर ॥ पूछतिपाहुनी ग्वारिहाहा हो मेरी आली कहा नाउकोहै चितवित को चोर

नन्द दास जाहि चाहिचकचोधी आय जाय भूल्योरी भवन गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ ॥ ३१ ॥ राग रामकली ॥ माई गिरिधरन के गुण गाऊं । मेरे तो व्रतयहै निश दिन औरन रुचि उपजाऊं ॥ खेलन आंगन आउ लाडिले नेकहुं दरशन पाऊं । कुम्भन दास हिलग के कारन लालच लागि रसाऊं ॥ ३२ ॥ राग रामकली ॥ करत हो सबे सयानी बात । जोलो देखे नाहि न सुंदरि कमल नयन मुसकात ॥ सब चतुराई बिसरि जात है खान पान की तात । बिनु देखे छिनु कलन परत है पल भरि कलप बिहात ॥ सुनिभामिनि के बचन मनोहर सखि मन अति सकुचात । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल संग सदा बसो दिन रात ॥ ३३ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी निपट छोटे कान्ह सुनि जननी कहुं बात । होत जब समुदाय करत तब सिशु भाय एकांत पाइ के नैन भरि मुस कात । देखि रस रीति की प्रीति बिपरीति गतिमति मानि छाडि संगल गोर हो निसि प्रात ॥ जात नहो बिसरि देखि बहुत जतन धरि समुझि कहुं चंद देखे कमल हू बिगसात । दुरत घूंघर जबे लाल जसुमति ढूढे उझकि धसि धरि पाउ धरि मुख किलकात ॥ मनहुं आषाढ घन बादरी सूरतजिहात आनंद सब फूल अति जल जात ॥ ३४ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी । ग्वालिन आप तन देखि मेरे लाल तन देखिये । भीत जो होय तो चित अब रेखिये ॥ ध्रुव ॥ मेरो तो सांवरो पांचही बरस को अजहं यह रोइपय पान मागे । तुमहोम सअति ढीठरी ग्वालिनी फिरति अठिलाति गापाल आगे । मेरे तो श्याम की तनिकसी अंगुरियाए बडे नखन के दाग तेरे । मष्टकरि सुने गोलोगअगवार को कहां पाई भुजा श्याम मेरे । ठगठगे नैन बैनन हसी ग्वालिनी मुख देखे सोभा अतिही बाढी । सुनि सखी सूर सरबस हरेव साबरे अन उतर महरि के द्वार ठाढी ॥ ३५ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी । मेरी मति राधिका चरणरज में रहो । यह निहचे करेव अपने मनमें धरेव भूलि के कोउ कछू और हू फल कहो । करम कोऊ करो ज्ञानहू अभ्य सो मुक्ति के जतन करि वृथा देहो दहो । रसिक वल्लभ चरण कमल जुग शरण परि आस धरि यह महा पुष्टि पथफललहो ॥ ३६ । राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ मानिनी मानिजि निमानिए तो करे आपु पायन परे नाथ तेरे । दरसु जाको करन जगत तरसे सदासो तो एक टक तेरो बदन हेरे । हो कहति सुमति उठि बेगि मिलि मीतसो मेरा हित बचन जिनि भूलि फेरे । रसिक प्रीतम संग बिहरि रस रंग सो क्यों न दुख अनंग को सबनिबेरे ॥ ३७ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके तरुणि मणि नित्य नौतन किसोरी कृष्ण तन लीन घन रूप की चातकी कृष्ण मुखहिमकिरण कीचकोरी । कृष्ण दृग भृंग बिश्राम हित पद्मिनी कृष्ण दृगमृगज बंधन सुडोरी । कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी कृष्ण गुण गान रस सिंधु बोरी । परम अद्भुतअलौकिक मेरी गति लखि मन सुसा बरे रंग अंग गोरी । और आश्चर्य कहूं मैन देख्यो सुन्यो चतुर चौसठि कला तदपि भोरी । बिमुख पर चित्तते चित्त जाको सदा करत निज नाहकी चित्त

चोरी । प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बने अमित महिमा इते बुद्धि थोरी ॥ ३८ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ चतुर चारु चंद्रावली मुख चकोरे । अस्तु में चरण रति ब्रज जुवति भूषणो कमल लोचन नंद नृप किसोरे । मानि मेरो कह्यो अति सील रस रीति क्यों करावति सखी बहु निहोरे । मिले किनिधाय अब कुवर चूडा रत्नर सिकवर भूपाल चित्त चोरे । नवरंग कुंज महंत वनामहित नाथ कुणित कलमुरलि काढाट मो । सुनि कृष्ण दास सुभ लग्न वह धन घरी लाल गिरि धरन सो हाथ जोरे ॥ ३९ ॥ राग राम कली ॥ देखो मेरे भाग को सुभ घरो । नवल रूप किसोर मूरति कंठले भुजधरी । जाके चरण सरोज गंगा शंभुले सिर धरी । जाके चरण सरोज पर सत सिखा सुनियततरी । जाके बदन सरोज निरखत आस सगरी नरी । सूर प्रभु के संग बिलसत सकल कारज सरी ॥ ४० ॥ राग राम कली ॥ आज हरि पकरन पाए चोरो । लेगयो चोर चोरि मन माखन जो मेरे धन होरी । बाधो कंचन खंभ कलेवर उभय भुजा टग डोरी । राखों कठिन कठोर कुचन विच सके न कोउ छोरो । अधर दसन खंडा रस गोरस छुवे न काहु कोरी । काम दंड दंडों पर घर को नाउ नलेय बहोरी । तब कुल कानिआनि तिरछी भई क्षमि अपराध किसोरी । शिव पर हाथ धराय सूर प्रभु सोच मोच सिर ढोरी ॥ ४१ ॥ राग राम कली ॥ गोपाले भाई बारे हीते टेव । जानों नहीं कौन पै सीखे चोरी के छल छेव । कबहुक दुरते माखन खाते सुनि रहती करिकानि । अब हम पै क्यों सही परति है मणि मानिक की हानि । बुद्धि विवेक वचन चातुरि सब सर्वसु लियो चुराय । सूरदास प्रभु के गुण औगुण कासो कहिये जाय ॥ ४२ ॥ राग राम कली ॥ माखन चोरी में पायो । जैयतु कहा जान कैसे पैयतु बहुत दिननही खायो । हो जु कहति ही होत कहा है नित उठि भाजन लगन छु छायो । बहुत बार कोर लगि देखो मेरी घात न आयो । बेनी की कर गही चामटी घंघट माझ छरव यो । मतरोवो तुम सो कोन कहत है खेउछंग हुलरायो । श्री मुखते उघरी दे दतियातबहंसिकंठ लगायो । परमा नंद प्रभु प्राण जीवन धन बिसद बिमल जस गायो ॥ ४३ ॥ राग राम कली ॥ धन यह राधिका के चरन । सुभग सीतल अतिसकोमल कमल कैसे बरन । नख चंद्र चारु अनूप राजत बिबिध सोभा धरन । कुणित नूपुर कुंज विहरत परम कौतुक करन । रसिक लाल मन मोद कारी बिहर सागर तरन । बिबस परमा नंद छिनु छिनु श्याम जीके शरन ॥ ४४ । राग राम कली ॥ बढि बढि बात लागो करन । श्याम सुंदर सदन मोहन आए तेरे घरन । उदित ऊपर चिकुर छूटे चिकुर ऊपर ढुरन । कामको दल साजि आई आडदे देखरन । बिरह को संग्राम जीत्यो बाधि अपनी परन । सूरके प्रभु तरन तारन राखि अपनी शरन ॥ ४५ ॥ राग राम कली ॥ बोलत काक कला निधान । सम बचन सुनि उठिचलहि सखि छाडि सुंदरि मान ॥ तव नाम सहित निकुंज महं पीय करत मुरली गान ॥ केलि कौतुक रसिकनी प्रिय सुनहि देकिनि कान ॥ शशरजनी खसत उडपति जनुकि भयो

बिहान । कृष्ण दास प्रभु गिरिधरन पर वारि होतन प्रान ॥ ४६ राग राम कली ॥ बहू जोत वहि मान धर आवे । सुंदर श्याम बहुरि सन्मुख ह्वै अंबुज बदन दिखावे ॥ तब लगु मान करहु कोउ कैसे जबलगु वहदंरसन नहि पावे ॥ दृष्टि परे मन मधुकर तिहिं छिनु सहज सरोजहि धावे ॥ त्रिभुवन मांझ हो उत्तम जुवती आरज पथहि दृढावे कुंभन दास प्रभु गोवर्द्धनधरकुल मर जादा ढावे ॥ ४७ ॥ राग रामकली ॥ बे लाल तेडी पैजनिया झतकेदी । माथे बे तेडे मुकट बिराजे रीझ ग्वालघटकेदी । भईगी चकोर चतुर चंद्रावलि गति मति रति अटकेदी । आस करन प्रभु मोहन नागर चरण कमल चितदेदी ॥ ४८ ॥ राग रामकली ॥ हमारो दान देरी गुजरेटी । नित उठि आजात चोरि दधि बेचन आज अचानक भेटी । अति सतरात कैसें छुटोंगी बडे गोप की बेटी ॥ कुंभन दास गिरि धरन लाल सों भुज ओढनी लपेटी ॥ ॥ ४९ ॥ राग राम कली ॥ अहो दधि मथति घोष की रानी ॥ दिव्य चीर पहरे दछिन को कटि किंकिनि रुनझुन बानी ॥ सुत के कर्म गावति आनंद भरि बाल चरित्र जानि जानी ॥ श्रम जल राजे बदन कमल पर मनहु सरद बरषानो ॥ पुत्र सनेह चुवात पयो धर प्रमुदित अति हरषानी ॥ गोबिंद प्रभु घुटरुन चलि आए प्रकरी रई मथानी ॥ ५० ॥ राग राम कली ॥ मोहि दधि मथन दे बलिगई ॥ जाउ बलि बलि बदन ऊपर छाडु मथनी रई । लाले दहुं नव नीत लौंदा आरि कित तुम ठई ॥ सुने हेति बिलोकि जसुमति प्रेम पुलकित भई ॥ लेउछंग लगाय उर सों प्राण जीवनजई ॥ बाल केलि गोपालकी ब्रज आस करन नित नई ॥५१॥ रागरामकली ॥ श्रीजमुनाजी तिहारो दरश मोहि भावै ॥ श्री गोकुल के निकट बसति है खहरन को छ बिआवैसुख करनी दुख हरनी जमुना जो जन प्रात नहावै ॥ मदन मोहन की खरी पियारी पटरानी जो कहावै ॥ वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरलि बजावै सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को वेद बिमल जश गावै ॥ ५२ ॥ राग राम कली ॥ नमोतरनितनया परम पुनीत जग पावनी कृष्ण मन भावनी रुचिर नामा ॥ अखिल सुख दायिनी सब सिद्ध हेतु श्री राधिका रवन रति करन श्यामा ॥ बिमल जश सुवन नव काननोमोद युत पुलिन अति रम्य प्रिय ब्रज किशोरी ॥ गोप गोपी नवल प्रेम रति वंदिता तट मुदित रहत जैसें चकोरी ॥ लहरि भाँवरि ललितवा लुका सुभग ब्रजबाल व्रत पूरना रास फलदा ॥ ललित गिरवर धरन प्रिय कलिंद नंदिनी निकट कृष्ण दास बिहरत प्रबलदा ॥ निरखि हरखि ब्रज जुवति घोष मुरारि ॥ थकित जितितित अमर मुनि गन नंद लाल निहारि ॥ बिनु बैन शिर केश लट च हुंदिसा छटकी झारि ॥ शीश पर जानो जटा धरि रूप किय त्रिपुरारि ॥ रुचिर रंजित ललाट केसर बिंदु सोभा कारि ॥ रोस मनहु तृतीय लोचन रहे रिपु जन जारि ॥ कुटिल हरि नख छिये हरि कें सुभगइहि अनु हारि ॥ ईश जनुरजनीश राख्यो भालतेंजु उतारि ॥ कंठसीपज नील मणि मय माल रची संहारि ॥ नील गिर बर गरल मानों लाय खइ मदनारि ॥ बदन रजतन श्याम मंडित शेभ यह अ

नु हारि ॥ मनहु अंग बिभूति राजत शंभु सोइ मधु हारि ॥ चिदसपति जसुमति के आगें असन कों करे आरि ॥ सूरदास बिरंचि जाको जपत जस मुख चारि ॥ ५३ ॥ ॥ राग राम कली ॥ बलि बलि चरित गोकुल राय । दवा नल को पान कीनो पियत दूध सिराय ॥ पूतना के प्राण शोखे रहे उर लपटाय । कहति जननी दूध डारत खीझि कछु अन खाय ॥ तृणा वर्त्त अकाश तें गहि शिखा पट ज्यो आय । डरत लालन झुलत पलना खरे देत झुलाय जमल अर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढ़ाय । झटक तात पलास पल्लव देहु देत दिखाय । कीर पिंजरा देत अंगुरी लेत श्याम भजाय ॥ बका सुर की चोंच फारी हुडि अचरज लाय ॥ बिना दीपक सदन में हरि नेकु धरत न पाय ॥ अघा सुर मुख पैठि निकसे बाल बछ जिवाय । हरे बालक बछ नव कृत हेत दो री माय ॥ फूटि पसु जवरहत बन में द्रुमनि ढूंढत जाय ॥ लिख्यो हार नाग कारी देखि श्याम डरोय । नित्त काली फनगनि ऊपर रुप ताल बजाय ॥ धरेव गिर बर दोइनी कर धरत वाहि पिराय ॥ सकट भंजन प्रहृत कुच डुग कठिन लागत पाय । घोष नारिन संग मोहन रच्यो रास बनाय ॥ कहति जननी ब्याह की तव लजत बदन दुराय ॥ इष भ भंजन हतन केशी हन्यों पुछ फिराय । भजत सखन समेत मोहन देखि व्याई गाय ॥ शेष महिमा कहिन आवे सहस रसना पाय ॥ एक रसना सूर का कहे अंग अगनित माय ॥ ५४ ॥ राग राम कली ॥ लटकत आवत कुंज भवनतें । ढरि ढरि परत राधिका ऊपर जागर तिथिल गवनतें ॥ चौकि परत कबहूं मारग बिच चले सुगंध पवनतें । भये उसास भरम राधा के सकुचत व्योस रवनतें । आलस मिस न्यारेन होत है नेकुन प्यारी तनतें । रसिक टगो जिन दसा श्याम की कबहूं मेरे मनतें ॥ ५५ ॥ राग राम कली ॥ चरण कमल की चेरी तेरी छाडहु खालन नंद के । कैसो है दान कहा किनि लीन्हो दियों न कबहुं बचन अरविंद के ॥ देखत सुखा सखी जन सगरी चरित चपल ब्रज चंद के । खालन सकुचत अंचरा खेंचत पार न पावत विविध अट पटे फंद के ॥ मटुकी खसत हसत सब ग्वालिनि निरखिति हरे छंद के । रसिक सदा मन बसो विविध गुण रस निधि आनंद कंद के ॥ ५६ ॥ राग राम कली ॥ हाहा लेउरी को कोर । बहुत बेर भई है भूखे देख मेरी ओर ॥ मेलिमि यो दूध औट्यो पिओ ह्वै है जोर ॥ अबहि खेलन टेरि है तेरे ग्वाल भयो अति भोर । जगे पंछी द्रुम द्रुमनि प्रति करन लागे सोर । खेलिबे को उठि भजोगे मानि मोर निहोर ॥ लेहुं लालन बलाय तेरी छोरि अंचल ओर । बदन चंद बिलोकि सीतल होत हृदयो मोर । बैठि जननी गोद जेंवन लगे गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहज लीला करत मांखन चोर ॥ ५७ ॥ राग राम कली ॥ मानहु बात लालन मोरी । करो भोजन रोस भूलो होंजु मैया तेरी ॥ दूध दधिनवनीत घृत पक पकसि राखी थार । कहा लोटत धरनि में मेरे लाल होति अवार ॥ गोद बैठो होजिवाऊं गाउं तेरे गीत । खेलिबे कों तोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥ कहो जाकों ताहि टेरों बैठें तेरे पास । करों दधि मंथान उदयो सूर कमल बिकास ॥ माइके सुनि बचन हंसि उर आइ लगे गुपा

ल । कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नैन बिसाल ॥ ५८ ॥ राग राम कली ॥ ॥ खेलत मदन सुन्दर अंग ॥ जुवति जन मन निरिख उपजत बिबिध भाव अनंग । प करि बछरा पूंछिरे चत अपनि दिस कर जोर । कवहुं बच्छले भजत हरि कों जुवति जन की ओर ॥ देखि परबस मए प्रीतम भयो मन आनंद । सैन आकुल भई ब्याकल गई लाज अमंद ॥ कोउ देखति गहित कोऊ हसित छाडति गेह । करति भाया अपन मन को प्रगट कर निज नेह ॥ अति अलोकि कवोन लीला कोंहुन जानी जाइ । मुग्ध ता सों महा सुख रस देत रसिक मिलाइ ॥ ५९ ॥ बस्त्र हरण समय के पद ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ताले ॥ ब्रजा नंद कंद ब्रजा नंद कंद घोष पति भाग्य सुविजातं । रसिक वर गोपि का प्रीत रसमाननंतव जयतुमम दृगि सुजातं ॥ ध्रुवं ॥ रुचिर दर हास गल दमल परि मल लुब्ध मधुप कुल मुख कमल सदन ॥ अमृत चयगर्व निर्वासनाधर सिंधु पाथज मनोजाग्नि शमनं । स्मित प्रकटित चारु दंत रुचि वदन विधु कौमुदी हत निखिल तापे ॥ विलसति लता हृद्य कनक कलस द्वये मारकत मणि रिव दुरापे ॥ सुभग सुमुखी कंठ निहित निज बाहुरति मत्त गजराज इवरुचिरं विरह बिरहानलंचारु पुष्कर चलन शीकरे रूप शमय रुचिरं ॥ अरुण तरलापांग शर निहत कुल वधू धृति तव विलोचन सरोजं ॥ मम बदन सुषमा सरसि विलसतु सतत मलस गति निर्जित मनोजं ॥ नंदगेहाल वालो दित स्त्री राग सेक संदृब्ध सुरहस्य ॥ ब्रजवर कुमारिका बाहु हाटक लता सतत माश्रयतु कृत लक्ष्य ॥ ब्रजस्त्री गुण रसिकता गुण गोपन तिश्चयरुचिरालाप लीलं ॥ तादृगीक्षण जनित कुसुम शर भाव भरयु वतिषु प्रकटतर निखिलं ॥ रुचिर कौमार चापल जय व्रीडया बल्लवी हृदय गृह गुप्तं ॥ प्रकटयन्निज स्वर शरचयै रसम शरमिह जयति हत भाव चित्तं ॥ घोषयोषीमंतिनी विद्यु दुद्य देणु केलि निनद गर्जित रूक्षमिह सततं ॥ वचन करुणा कूत दृष्टि वृष्टी रंग नव जलद मपि कुरु सुहसितं ॥ ६० ॥ राग राम कली ॥ हरि जस गावति चलि ब्रज सुन्दरि श्रीजमुना के तीर ॥ लोचन लोने बांह जोटिकरि श्रवणनि झलकत बीर ॥ बेनी सुथिर चारु कांधे पर कटितट अंबर लाल ॥ हाथनि फूलखियें डलिया भरि अरु मुक्ता मणि माल ॥ जल प्रवेश करि मज्जन कीनो प्रथम हेमंत केमास ॥ यह वरहोय नंदसुत प्यारे व्रत ठान्यों यहि आस ॥ तबही चीर हरे हरि नागर चढि कदम्ब की डारि ॥ परमानंद प्रभु बर देवे को उद्यम कियो मुरारि ॥ ६१ ॥ राग राम कली ॥ हो मोहन हों हारी तुम जीते ॥ नागर नट पट देहु हमारे कांपत हैतन सीते ॥ रसिक गोपाल लाल अब लनि पर एती कहा अनीते ॥ परमा नन्द प्रभु हम जानत तुम गाल बजावत रीते ॥ ६२ ॥ राग राम कली ॥ मोहन देहो बसन हमारे ॥ कहेंगी जाय ब्रज प्रति जूके आगे करत अनीत लखारे ॥ तुम ब्रजराजकिसोर नंद सुत सबहिन के प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पिय दासि तिहारी सुंदर बरसु कुमारे ॥ ६३ ॥ राग राम कली ॥ बनत नहीं जमुना जूको नहैबो ॥ चोली चीर कृष्ण ले भाजे कठिन भयो घर जैबो ॥ जो हरि हमसों ऐसी करि हो तो इह घाट नएबो ॥ श्री बिट्ठल गिरिधरन लालसों बिनीत

करि घर जैवो ॥ राग राम कली ॥ ग्वालिन मांगति बसन अपने ॥ सीत काल जल भीतर ठाढी आवत नाहि दयाने ॥ तुम ब्रजराज कुमार प्रबल अति कोन परी यह बाने ॥ हमसब दासि तिहारी ब्रज पति तुम बहु निपट सयाने ॥ ६४ ॥ राग राम-कली ॥ मोहन बसन हमारे दीजे ॥ वारने जाउ सुनों नद नंदन सीतलगत तन भीजे ॥ कौन सुभाव वृथा अन धौसर इन बातन कस जीजे ॥ सुनि दुख पावे महर जसोमति जादू कहें अबहीजे ॥ सब अबलाजल मांझ उघारी दारुण दुख कस सहिजे ॥ प्रभु बलराम हमदासि तिहारी जो भावे सो कीजे ॥ ६५ ॥ राग रामकली हमारो अंबर दे हो मुरारी ॥ लेकर चीर कदम पर बैठे हम जलमांझ उघारी ॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन हमहें दासि तिहारी ॥ जो कछु कहो सोई हम करिहें चरण कमल परवारो ॥ अंग अंग कंपत मनमोहन विनती सुनहु हमारो ॥ सूरदास प्रभु रसिक सिरोमणि तुम जीते हम हारी ॥ ६६ ॥ राग राम कली ॥ ग्वालिनि अपने चीर लेहु ॥ जलतें निकरि निकट ह्वै दोउ कर जोरि कें सीसन देहु॥ कतहो सीत सहत ब्रज सुंदरि होत असित छस गात सबे ॥ मेरे कहे आनि पहिरो पट इतनो भंग विधि हीन अबे ॥ हों अंतर जामी जानत सबन की कत दुरावत लाजकें ॥ करिहो पूरन काम कृपा करि सरद समै शशि रातकें ॥ संतत सूर सुभाव हमारो कत डरपति हो काम भय ॥ कैसोये भांति भजे कोऊ मोकुं ते सबे संसार जय ॥ ६७ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ जयति श्री वल्लभ सुवन उद्धरण त्रिभुवन फेरि नंद के भवन की केलि ठानी । इष्टगिरिवर धरण सदा सेवक चरण द्वार चारो बरण भरत पानी ॥ वेदपथ व्यास से हनुमान दास से ज्ञानको कपिल से कर्म जोगी । साधु लछिमन निपुन बहु ब्रजराज प्रकट सुख रासि मनो इंदु भोगी ॥ सिंधु सम गंभीर मिलन रंगनीर प्रीति को जलक्षीर ब्रज उपासी । ध्यान कोसनकसे भक्त कोस नंदसे याहीते बस कियो ब्रह्मरासी ॥ मनहु इंद्रको जीति कृष्णसों करी प्रीति निगम कोचली नीति अति बिवेकी । रहित अभिमान ते बडे सनमानकेशील अरु दान गोबिंद टेकी ॥ सदा निर्मल बुद्धि अष्ट सिद्धिनवनिद्धि द्वार सेवत जहां मुक्ति नासी ॥ राम राइ गिरिधरण जानि आयो शरण दीन के दुख हरन घोषवासी ॥ ६८ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ रुचिर तर वल्लभाधीश चरणं अस्तु मे सर्वदा सुंदरा कृति जगन्मोहनं हृदि हृता विहित करणं ॥ विहित माया बाद बादिदनुजादि जन संग जनितात्म जन कुमति हरणं । अखिल साधन रहित दोष शत कलुष मति विमति भर भरित निज दास शरणं ॥ अंजसाकाम कोपादि बहु नक्र युत वासनाभंग भव जलधि तरणं । वदत हरिदास इति निज बरण माच कृत गोकुलाधीश पद कमल बरणं ॥ ६९ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ जयति राधिका रमण बर चरण परि चरण रति वल्लभा धीश सुत विट्ठलेशे । दास जन लौकिका लौकि के सर्वथा कैव चिंतो दयति हृदय देशे ॥ स्थापयत मांनसं सतत कृतलालसंसहजसुख मारु चिर रूप वेशे । भाल गत तिलक मुद्रा दिशोभा सहित मस्तका बद्ध सित कृष्णकेशे सहजहासादि युत वदन पंकज सरस बचन रचना पराजित सुदेशे ॥ अखिल साधन

रहित दोष शत सहित मति दास हरि दास गति निजवलेशे ॥ ७० राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ मनो वल्लभा धीश पद कमल युगले सदा वसतु मम विविध रस भाव वलितं अन्य महिमा भास वासना वासितं माभवतु जातु निज भाव चलितं ॥ भजतु भजनीय मति श्रयति रुचिरं चिरं चरण युगलं सकल गुण मुलसितं । वदतु हरिदास इति माभव तुमुक्ति रपि भवतु मम देव सुत जन्म फलितं ॥ ७१ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ जयति भट्ट लक्ष्मण तनुज कृष्ण वदनानल श्रीमदिन्दुमुगारु गर्भ रत्ने । दैव इत जनस मुद्भूति कारण कृत निजा विर्भन विहित बहु विविधयत्ने ॥ मद्या लक्ष्मी पतौ गोपिका नाथ श्रीविट्ठला भिध सुभग तनुज तापे ॥ प्रथित माया वाद वर्त्ति वदन व्यंसि विहित निज दासजन पक्ष पाते पुष्टि पथ कथन रचिता नेक सुग्रंथ मथित भागवत पीयूष सारे । रासयुवती भाव सतत भावित हृदय सदय मानस जनित मोदभारे ॥ निज चरण कमल धरणी परि भ्रमण शक्तिमा चपावित विततं तीर्थ जाले । कृष्ण सेवन विहित शरण गत शिक्षण क्षपित संदेह दासैक पाले ॥ निज वचन पीयूष वर्षपोषित सतत साहित्य पुरुष जन भृत्य युक्ते । विविध वा चो युक्ति निगम वचनो दितै रपिचदुरित दुष्ट जन दुरुक्ते ॥ ईदृशेसतिशिरसि सर्वदा वल्लभे सकल कर्तरि दयालौ । कैवपरिदेवना भवति हरि दास के सकल साधन रहित जन कृपालौ ॥ ७२ ॥ राग रामकली ॥ श्रीमदल्लभ रूप सुरंगे । नख सिख प्रति भावन के भूषन वृन्दावन संपति अंग अंगे ॥ अरस परस गिरिधर जुकी नाई ऐन मैन व्रजराज उछंगे । पद्मनाभ देखे बनि आवे सुधि रही रासरसा भुवभंगे ॥ ७३ ॥ राग रामकली ॥ हेली नवनि कुंज लीला रस पूरित श्रीवल्लभ वन मोरे । अंग अंग विपुन छिपुन घन दामिनि द्युति फल फल प्रतिदोरे ॥ करत अवेस बिरह बिरहिनि श्रुति भूतल बहुत कठोरे । पद्म नाभ मथुरेश विचारत श्री लक्ष्मन भटसुत ओर ॥ ७४ ॥ राग रामकली ॥ सखिरी शोभारसमय भाव प्रकट करि श्री वल्लभ वरदेह । अंग अंग व्रजबधू बिरहनी व्यापी जुगल सनेह ॥ वृन्दारण्य इन्दु प्रकटित ह्वै हृदय निगूढ कंदरा देह । पद्मनाभ सुत हितकियो मारग नेह मुरलिका वेह ॥ ७५ ॥ राग रामकली ॥ श्री गोकुल नाथ निज वपु धरयो । भक्त हेत प्रकटे श्री वल्लभ जगतें तिमिरजु हरयो ॥ नन्द नन्दन भये तब गिरिगोप व्रज उद्धरयो । नाथ विट्ठल सुवन ह्वैके परम हित अनुसरयो ॥ अति अगाध अपार भव निधि तारि अपनो करयो । दास माधव त्रास देखे चरण शरणो परयो ॥ ७६ ॥ राग रामकली सुमिरो श्रीविठ्ठलेश कुमार । अति अगाध अपार भव निधि भयो चाहो पार ॥ सेवकि रहत करुणा सिंधु कोमल सदा चित्त उदार । गोकुलेश हृदय बसो मम माल पाल निहाल ॥ माख तिलकन तजी कतहूं परी यदपि पुकार । अन्त भक्तन दियो धीरज भये पद दातार ॥ चार युगमें बिसद कीरति भक्त हित अवतार । नव किशोर कल्यान के प्रभु गाऊं बारम्बार ॥ ७७ ॥ राग रामकली ॥ रुक्मिनि चलन सिखावति पायन । सुतकी गहें अंगुरिया डोलति शोभा कोटिक मायन । ठुमकि ठुमकि पग धरत धरिन पर ले उछंग डर लायन । वृंदाबन कोचंद श्रीवल्लभ ले बलाय हुलरायन ॥ ७८ ॥ श्रीहरिः ॥ अथ श्री यमुनाष्टी के कीर्त्तन ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ नमो देवि जमुने नमो देवि जमुने हर

कृष्ण मिलनां तरायं। निज नाथ मार्ग दायिनि कुमारी काम पूरके कुरुभक्तिरायं ॥ ध्रुव ॥ मधुप कुल कलित कमलावली व्यपदेश धारित श्रीकृष्ण युत भक्त हृदये । सततमतिश यित हरि भावना जात तस्ता रूप्यगदित निज हृदये ॥ निज कूल भवविबिध तरु कुसुम युत नीर शैभया विलस दलि वृंदे ॥ स्मारयसि गोपी वृंद पूजित सरसमीश वपुरा नंद कंदे ॥ उपरि चल दमल कमला रुण द्युति रुण परि मिश्रित जल भरेणा मुना ॥ व्रज युवति कुच कुंभ कुंकुमा रुणमुरःस्मारयसिमार पितुर धुना ॥ अधि रजनि हरि विहृति मीक्षितुं कुलतया भिध शुभगन यनान्युशति तनुषे । नयन युग मख मिति बहु तराणि चतानिर सिकता निधितया कुरुषे ॥ रजनि जागर जनित राग रंजित नयन पंकजै रहनि हरि मीक्षसे । मकरंद भरमिषेणा नंद पूरिता सतत मिहहर्षा श्रुमुंचसै ॥ तटगता नेकशुक सारिका मुनि गणस्तुत विविध गुण सिंधु सागरे । संगतासतत मिह भक्त जन नाप हृति राजसे रास रस सागरे ॥ रति भर श्रम जलोदित कमल परिमल व्रज युवति जल विहृति मोदे । ताटंक चलन् सुनिरस्त संगीत युत मद मुदित मधुप हृत विनोदे ॥ निज व्रज जना बनायात्त गोवर्द्धने राधिका हृदय गत हृद्य कर कमले । रति मतिशयित रस बिटुन स्या शुकुरुवेणु निनदाह्वान सरले ॥ ७९ ॥ श्लोक ॥ व्रजपरि दृढ वल्लभे कदात्वच्चरण सरो रुहमीक्षणास्पदंमे । तव तट गत बालुका कदाहं सकल निजाग गता मुदा करिष्ये ॥ वृंदाबने चारु हृहृदने मन्मनोरथं पूरय सूरसूते । दृग्गोचरः कृष्ण विहार एवस्थितिस्त्वदीये तटएवभूयात् ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ पिय संग भरि रंग करि कलोले । सबन को सुखदेन पिय को करत सेन चित न परत चेन जबहि बोले ॥ अति हिविख्यात सबबात इन हाथ नाम लेतहि कृपा करि अतोले । दरस करि परस करि ध्यान हिय में धरे सदा व्रजनाथ इन संग डोले ॥ अतिहि सुख करन दुख सबनको हरन यहलोनो है परन निजही जुकूले । ऐसी जमुना जानि तुमकरो गुण गान रसिक प्रीतम पाय नंगमूले ॥ ८७ ॥ राग रामकली ॥ नयन भरि देखि अब भानु तनया ॥ केलि पिय सों करे भवर तबही परे श्रम जलनि भरत आनंद मनया ॥ चल ति टेढी होइ लेति पिय कों मोहि इन बिना रहित नहि एक छिनया । रसिक प्रीतम रास करत जमुना पास माना निर्द्धन नकी हैजुध नया ॥ ८८ ॥राग रामकली ॥ श्याम सुख धाम जहां नाम इनके । निश दिना प्राण पति आय हियेमें बसे जोई गावे सुजस भाग तिनके ॥ यहि जगमें सार कहत बारंबार सबन के अधार धन निर्द्धन के । लेत यमुना नाम दत अभय पदधाग रसिक प्रीतम प्रिया बस जो जिनके ॥ ८९ ॥ राग रामकली ॥ कहत सुख सार निर्द्धार करके । इन बिना ऐसो कोन करिहै सखी हरत दुख दन्द सुख कंद बरषे ॥ ब्रह्म संबन्ध जब करत हैं जीवको तबहि इनकी बांम भुजा फरके । दोरि करि सोर करि जाय पिय सो कहैं अतिहि आतुर मनमें जु हरषे ॥ नाम निर्मोलन गले कोउ नासके भक्त राखत हिये हार करके । रसिक प्रीतम की होत जापर कृपा सोई जमुना जू को रूप परषे ॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥ यमुनासो नाहि कोउ और दाता । जे इन की शरण जातहैं दोरि के ताहि को तेहि छिनक रिसनाथा ॥ यहि गुणगान रसनाएक

सहस रसना क्यों न दई बिधाता । गोबिन्द बलि तन मन धन वारने सबनकी जीवन इन ही के हाथा ॥ ८४ ॥ राग रामकली ॥ श्याम संग श्याम ह्वै रहीरी जमुने । सुरत श्रम बिंदुतें सिन्धु सी बहिचली मानो आतुर आली रही न भवने ॥ कोटि काम डिवारो रूप नयन निहारो लाल गिरिधरन संग करत रमने । हरषि गोबिन्द प्रभु देखि इनकी ओर मानो नव दुल्हनो आई गवने ॥ ८५ ॥ राग रामकली ॥ जमुन यश जगत में जोई गायो । ताके आसक्त ह्वै रहत प्राण पति नयन में बेन में रस जो छायो ॥ बेद पुराण को बात यह अगम हैं प्रेम को भेद कोऊ न पायो । कहें गोबिन्द यमुना की जापर कृपा सोई बल्लभ कुल शरण आयो ॥ ८६ ॥ राग रामकली ॥ चरण पंकज रेणु यमुना देनी । कलियुग जीव उद्धारन कार काटत पाप अवधार पेनी ॥ प्राण पति प्राण यह आय भक्तन नेह सकल यह सुख की हेाज सेनी । गोबिन्द प्रभु बिना रहत नहि एक छिना अतिहि आतुर चंचल जो नेनी ॥ ८७ ॥ राग रामकली ॥ धाइ के जाइ बे जमुना तोरे ॥ तिनहीं की महिमा कहांलों बरनिये जाइ परसत प्रेम अंग नीरे । निस दिना केलि करत मनमोहन प्रिय के संग भक्तन कोहै जु भोरे ॥ छीत स्वामी गिरधरन श्री बिठलताबिना नेकु नहीं धरत धीरें ॥ ८८ ॥ राग रामकली ॥ जोई मुख जमुना यह नाम आवे ॥ ता ऊपर कृपा करत श्रीबल्लभ प्रभु सोई जमुनाजी को भेद पावे । तनमन धन अब लालगिरधरन को देकरि चरण जब चितहिं लावे ॥ छीत स्वामी गिरधरन श्री बिट्ठल नैननि प्रकट खोला दिखावे ॥ ८९ ॥ राग रामकली ॥ धन जमुने निधि दे न हारी ॥ करत गुणगान अज्ञान अघदूरि करि जाहि मिलवत पिय और प्यारी । जिन हिं संदेह करो बात जिय में धरो पुष्टिपथ अनुसरो सुख जो कारी ॥ प्रेम के पुंज में रास रस कुंज में एहि राखति अति रंगभारी । जमुन अरु प्राणपति और सब प्राणसुत चहूं जन जीव पर दया बिचारी ॥ छीत स्वामी गिरधरन श्रीबिट्ठल प्रीति के लिये यह संप्रदारी ॥ ९० ॥ राग रामकली ॥ गुण अपार एक मुख कहां लों कहिये ॥ तजो साधन भजो नाम जमुना जी को लालगिरधरन को तबहिं पइये । परम पुनीत प्रीति रीति की जानहीं दृढ करि चरण कमल जो गहिये । छीत स्वामी गिरिधरन श्री बिट्ठल एहि निधि छांड़ि अब कहां जो जइये ॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥ चित्तमें जमुना निस दिन जो राखो ॥ भक्त के बस कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो जमुनाजी को है जो साको । जाहि मुखतें जमुने नाम यह उच्चरे संग कीजे अब जाइ ताको ॥ चतुर्भुज दास अब कहत हैं सबन सों तातें जमुने जमुने जो भाषो ॥ ९२ ॥ राग रामकली ॥ प्राण पति विहरत जमुना के कूले ॥ लुब्ध मकरंद के बस भए भ्रमर जेरवि उदय देखि मानो कमल फूले । करत गुंजार मुरली लेके सांवरो व्रज बधू सुनत तन सुधि जो भूले ॥ चतुर्भुज दास जमुना प्रेम सिंधु में लालगिरिधरन अब हरषि झूले ॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥ बार बार जुमुने गुणगान कीजे ॥ एहि रसनातें जो नाम रस अमृत भाग्य जाके सोई जो लीजे । भानु तनया दया अतिहि करुणा मया इनको करे आसया सदाजोजे ॥ चतुर्भुजदास कहें सोई पिय पास रहें जोई जमुना के रस में भीजे ॥ ९४ ॥ राग रामकली ॥ हेत करि देत

जमुने बासकुंजे ॥ जहां निसि बासर रास में रसिक बरकहां लों बरनिये प्रेम पुंजे । थकित सरितानीर थकित व्रजबधू भीर कोउ बन धरत धीर मुरलि सुनि जे ॥ चतुर्भुजदास जमुने जो पंकज जानि मधुप की नाईं चितलाइ गुंजे ॥ ९५ ॥ राग रामकली ॥ भक्तपर करि कृपा जमुन ऐसी ॥ छांडि निज धाम विश्राम भूतल कियो प्रकट लीला दिखाई जो तैसी । परम परमारथ करत हैं पवनि कों रूप अद्भुत देत आप जैसी ॥ नंद दास जो जानि दृढ चरण गहे एक रसना कहा कहूं बिसेसी ॥ ९६ ॥ राग रामकली ॥ नेह कारन जमुने प्रथम आई । भक्त के चित्त की वृत्ति सब जानही ताहितें अतिहि आतुर जो धाई ॥ जैसी जाके मनहती मन इच्छया ताहि तैसी साधुजो पुजाई ॥ नंददास प्रभुनाथ ताहिपर रीझत जोई जमुनाजू के गुण जो गाई ॥ ९७ ॥ राग रामकली ॥ जमुने जमुने जमुने जो गावे ॥ शेष सहस्र मुख गावत निस दिना पार नहि पावत ताहि पावे ॥ सकल सुख देन हार तातें करो उच्चार कहते हैं बारबार भूलि जिनि जावे ॥ नंद दास को आस जमुने पूरन करी तातें कहूं घरी घरी चित्त लावे ॥ ९८ ॥ राग रामकली ॥ भाग्य सौभाग्य जमुने जो देई ॥ बात लौकिक तजे पुष्टि जमुने भजे लाल गिरिधरन को ताहि बर मिलेरी ॥ भगवती संग करि बात उनकी खेसदासान्निरहें केलि मेरो ॥ नंददास जो जाहि वल्लभकृपा करे ताके जमुने सदा वस जो हेरी ॥ ९९ ॥ राग रामकली ॥ नाम महिमा जो ऐसी जानें ॥ मर्यादादिक कहें लौकिक सुख लहें पुष्टि को पुष्टिपति निश्चय मानें ॥ स्वाति जल बूंद जब परतहैं जाहिमें ताहिमे होत तैसो जो बानो ॥ जमुने कृपाजान सिंधु जल महिमान सूरगुण पूर कहां लों बखानों ॥ १०० ॥ राग रामकली भक्तको सुगम जमुने अगम ओरे ॥ प्रातही न्हात अघ जात ताके सकल जमहु रहत ताहि हाथ जोरे ॥ अनुभवी बिना अनुभव कहा जानहीं जाको प्रिया नहीं चित्त चोरे ॥ प्रेम के सिंधु को मर्म जान्यों नहीं सूर कहि कहा भयो देह बोरे ॥ १०१ ॥ राम रामकली ॥ फल फलित होत फल रूप जाने ॥ देखहू नहीं सुनि ताहि कह आपनो ताकी यह बात कोऊ कैसे माने ॥ ताही के हाथ निरमोल नगदीजिये जोई नीके करि परिख जाने ॥ सूर कहि कूर ते दूर बसिये सदा जमुनको नाम खोजे जो छाने ॥ १०२ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ जमुनेपति दास के चिह्न न्यारे ॥ भगवती को भगवत संग मिलि रहे ताके बसत हियेप्राण प्यारे ॥ गूढ जमुने बात जोई अब जानहीं ताके मनमोहन नैन तारे ॥ सूर सुखसार निर्द्धारवे पावहीं जापर होय वल्लभ कृपारे ॥ १०३ ॥ राग रामकली ॥ जमुने रसखान को शीस नाऊं ॥ ऐसी महिमा जानि भक्तकी सुखदानि जोई मांगो सोई जोई पाऊं ॥ पतित पावन करन नाम लीने तरन दृढ करि गहे चरन कहूं न जाऊं ॥ कुंभनदास गिरिधरन मुख निरखतें रही चाहत नहीं पलक लाऊं ॥ १०४ ॥ राग रामकली जमुने अगनिन गुणगनैन जाहीं ॥ जमुना तट रैन इतनै होय बैन इनके सुख देनकी करूं बड़ाई ॥ भक्त मांगत जोई देत तेही छिन सोई ऐसी करे कौन प्रणनिबाही कुंभनदास गिरिधरन मुख निरखते कहो कैसे करि मनअघाई ॥ १०५ राग रामकली ॥ जमुना परतन मन प्राण वारों ॥ जाकी कीरति बिसद कोन अब कहिसके ताहि नैनन ते न नेकुटारो ॥ चरण कमल उनके जो चिंतत रहो निसदिन नाम मुखते

उच्चारो ॥ कुंभनदास कहें लालगिरिधरन मुख इनकी कृपा भई तो निहारो ॥ १०६ ॥ राग रामकली ॥ भक्त इच्छा पूरन जमुने जो करता ॥ बिनहि मांगे देत कहां लों कहूं जैसे काहू को कोऊ हेाय धरता ॥ जमुना पुलिन रास ब्रज बधूलिये पास मंदमंद हासमन जो हरता ॥ कुंभनदास जो प्रभु को मुख देखत एहि जिय लेखत जमुना जो भरता ॥ ॥ १०७ ॥ राग रामकली ॥ रास रस सागरे जमुन जानी ॥ प्रति छिनन उतन बहत धारा तने राखत अपने उर माझ ठानी ॥ भक्त को सहे भार देत प्राण अधार अतिहि बोलत मधुर मधुर बांनी । श्रीबिट्ठल गिरिधरन बर बस किये कोनपें जात महिमां बखांनी ॥ १०८ ॥ राग राम कली ॥ भक्त प्रतिपालि जंजाल टारे ॥ अपने रस रंगमें संग राखत सदा सर्बदा जोई जमुने उचारे । इनकी कृपा अब कहांलों बरनिये जैसे राखत जननि पुच बारे ॥ श्रीबिट्ठल गिरिधर संग बिहरते भक्त कों एक छिनना बिसारे ॥ १०९ ॥ राग राम कली ॥ कोनपें जात जमुने जोवरनी ॥ सबहि को मन मन मोहन हरता सेा पियको मनए जो हरनी । इन बिना एक छिन रहे न जीबन धन ब्रज चंद मन आनंद करनो ॥ श्रीबिट्ठल गिरिधरन सहित आय भक्त के हेत अवतार धरनी ॥११०॥ राग रामकली ॥ जमुना जो नाम ले सेा सभागी ॥ सोईरस रूपको सदा चिंतन करे नेक नहि कलपरे जाहिलागी । पुष्टि मारग परम अतिहि दुर्ल्लभ परम छांडि सगरे करम प्रेम पागी ॥ श्रीबिट्ठल गिरिधरन सी निधि अब भक्त को देतहैं बिनहि मांगी ॥ १११ ॥ राग रामकली ॥ जमुने तुमसी एक हेा जुतुमहीं ॥ करि कृपा दरस निसि बासर दीजिये तिहारे गुण गानको रहे उद्यमहीं । तुम जु पाएते सकल निधि पावहीं चरण कमल चित्त भ्रमर भ्रमहीं । कृष्णदासनि कहे कोन यह तप कियेा तिहारे ढिग रहत हैलता द्रुमहीं ॥ ११२ ॥ राग रामकली ॥ ऐसी कीजे कृपा लीजिये नाम ॥ जमुने जग बंदनी गुणन जात जोगिनी जिनके ऐसे धनी सुंदर श्याम ॥ देत संजोग रस ऐसे पियहै जेा बस सुनत सुजस तिहारो पूरे सब काम ॥ कृष्णदासनि कहे भक्त के कारने जमुन एक छिन नहीं करे बिश्राम ॥ ११३ ॥ राग रामकली ॥ जमुनाके नाम अघ दूर भाजे ॥ जिनके गुण सुनिके लाल गिरिधरन पिय आय सनमुख ताके बिराजे । तेहि छिन काज ताके जेा सगरे सरत जादू के मिलत ब्रज बधु समाजे ॥ कृष्णदासनि कहे ताहि अब कोनिडर जाके ऊपर जमुने सिगाजे ॥ ११४ ॥ राग रामकली ॥ जमुना के नाम तेई जो लेहें ॥ जिनकी लगन लागी नंदलाल सों सरबस दे के निकट रहैं । जिनहि सुगम जान बात मनमें बांनि बिना पहिचानि कैसे जो पेहैं ॥ कृष्णदासनिज मुना नाम नौका भक्त भव सिंधु ते यों जोतरेहें ॥ ११५ ॥ राग रामकली ॥ जमुने की आस अब करत हैं दास ॥ मन क्रम बचन करजोरिके मांगत निसदिन राखिये अपने ही पास । जहां अबरसिकबर रसिकनी राधिके दोउ जन संग मिलि करत है रास ॥ दास परमा नंद पाय अब ब्रज चंद देखि सिराने नयन मंद हास ॥११६॥ राग रामकली ॥ जमुने सुख कारनी प्राण पतिको ॥ पियजे भुक्त जिन्हे सुधि करि देत तिन्हें कहां लोक हिये अति हि इनके हितको ॥ पिय संग गान करैं अति रस उमंगि भरे देत तारी

करें लेत जित के । दास परमा नंद पाय अब ब्रज चंद रहि जानत अति प्रेम गतिके ॥ ११७ ॥ राग रामकली ॥ जमुनें के साथ अब फिरत हें नाथ ॥ भक्त के मनके मनोरथ पूरन सबे कहां लो कहिये अब इन की जो बात बिबिध शृंगार भूषण अंग अंग सजे बरनिन जात सोभा बनीगात । दास परमा नंद पाय अब ब्रजचंद राखे अपने शरण बहे जो जात ॥ ११८ ॥ राग रामकली ॥ जमुने पिय को बस तुम कीनें ॥ प्रेम के फंद ते घेरि राखे निकट ऐसे निर मोल नग मोल लीने ॥ तुम जो पठावत तहां अब धावत निस दिन तिहारे रस रंग भीने । दास परमानंद पाय अब ब्रज चंद परम उदार जमुने जो दीने ॥ ११९ ॥ राग राम कली ॥ जगमें यही सार भजि तूं बारं बार ॥ श्रीजमुना जीको नाम जप निश दिना जातें उतरे गो भवसागर पार । जाके भजन ते हरि हिय में वसो करें कृपा सर्बदा अपनी पितुमार ॥ कहत ब्रजपति तुम सबनसों समुझाय परो इनके चरण और नाहि आधार ॥ १२० ॥ राग रामकली ॥ एक रसना गुण अपार क्यों करि बरनों । साधन सबो तजो भजो इनके नाम जाके सुमिरन ते होय गो तरनो ॥ एक मनमें निरधार करिके करो सदा तट इनके निकट रहनों । कहत ब्रज पति तुम सबन सों समुझाय जपो हरिनाम और कछु न करनों ॥ १२१ ॥ राग रामकली ॥ पिय संग रंग भरि करि बिलासे ॥ सुरत रस सिंधु में अतिहिं हरषित भई कमल ज्यों फूलते रबि प्रकासे ॥ तनते मनते प्राण ते सर्बदा करति है हरि संग मृदुल हासे । कहत ब्रज पति तुम सबन सों समुझाय मिटै जम चास इनहीं उपासे ॥ १२२ ॥ राग रामकली ॥ जमुना सी नाहीं कोऊ दुख की हरनी ॥ जाके स्नान ते मिटत है सब पाप होतहो आनंद सुखकी करनी । महिमां अगाध अपार इनके गुण सकल जस वेद पुराण बरनी ॥ कहत ब्रज पति तुम सबन सों समुझाय छूटे जम डर जो आवे इनकी शरनी ॥ १२३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी जयति भानु तनया चरण युगल बंदे ॥ जयति ब्रजराज नंदन प्रिये सर्बदा देति आनंद ज्यों शरद चंदे । जयति सकल सुख कारनी कृष्णमनो हारनी श्रीगोकुल निकट बहत मंदे ॥ जाके तट निकट हरि रास मंडल रच्यो तहां नर्त्तत तता थेई थेईदे । जयति कलिंद गिरि नंदनी देति आनंदनी भक्त के हरें सब दुःख दंदे ॥ चित्त में ध्यान धरि मुदित ब्रजपति कहें जयति जमुने जयति नंद नंदे ॥ १२४ ॥ राग रामकली ॥ श्रीजमुने तुमसी और न कोई ॥ करो कृपा निज दीन जानिके ब्रज निज बासेा होई । राखो चरण शरण तरनितनया जनम आपदा खोई ॥ यह संसार अपने स्वारथ को सुत पति सगेा न कोई । प्रेम भजन में करत बिघनता संत संतापत सोई ॥ ताको संग मोहि सपन न दीजो मांगत नयनन रोई । गरल पांनसे डारत अमृत बिषया रस में मोई ॥ रसिक कहत दीन ह्वै जाचूं लहरि समुद्र समोई ॥ १२५ ॥ राग रामकली ॥ श्री जमुना जी दीन जानि मोहि दीजे । नंद को लाल सदा वर माँगू सब गोपिन की दासी कीजे तुमहेा परम उदार कृपा निधि संत जनन सुखकारी । तुम्हरे बस बरतत राधा बर तट खेलें गिरिधारी ॥ सब सखियन मिलि हरि संग खेलें अद्भुत रास बिलासी । तुम्हरे

पुलिन निकट कुंज द्रुम कमल पुहुप पर बासी ॥ श्रम जल सहित नाथ अति रस भरे जल क्रीडा सुखकारी । मनु तारा मधि चंद विराजत भरि भरि छिरकति व्रजनारी ॥ राँनी जू के पाइ लागि बिनती करि गृह को कारज सब कीजे । परमा नंद प्रभु सब सुखदाता इह रस नयन भरि पीजे ॥ १२६ ॥ राग रामकली ॥ श्रीजमुना जी तिहारो दरस मोहि भावे ॥ श्री गोकुल के निकट बहत हो लहरन की छवि आवे । सुख करनी दुख हरनी जमुना जो जन प्रात हि न्हावे ॥ मदन मोहन जू की खरी पियारी पटरानी जो कहावे ॥ वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरलि बजावे । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन कों वेद बिमल जस गावे १२७ राग राम कली ॥ जमुनाजो यह प्रसाद हों पाऊं ॥ तुम्हरे निकटे रहों निसि बासर राम कृष्ण गुण गाऊं । मंजन करो बिमल पावन जल चिंता कलुष बहाऊं ॥ तुम्हारी कृपा भानु की तनया हरि पद प्रीति बढाऊं । विनती करों यहें वर मांगूं अधम संग बिसराउं । परमानंद चार फल दाता मदन गोपलें भाउं १२८ राग रामकली जमुनाजी यह विनती चित धरिये । गिर धर लाल मुखारविंद रति जन म जनम मोहि करिये ॥ बिष सागर संसार बिषम अति बिमुख संगते डरिये । काम क्रोध अज्ञान तिमिर अति डर अंतरतें हरिये ॥ तुम्हरे निकट बसों निजजनसंग रूप देखमन ढरिये । गाऊं गुण गोपाल लाल के दुष्ट बाद तें डरिये । बिबिध दोष हरिहो कालिंदी नेक कृपा करि ढरिये ॥ गोबिंद सदायहे वर मांगूं तुम्हरे चरण अनु सरिये १२९ राग राम कली ॥ श्री जमुनाजो अधम उधारनी में जानी ॥ गोधन संग श्याम घन सुन्दर तीर बिभंगी दानी ॥ गंगा चरण परसतें पावन हर शिर बिकुर समानी । सात समुद्र भेदि जस भगिनी हरि नख सिखलपटानी ॥ आलिंगन चुंबन रस बिलस त प्रेम पुंज ठकुरानी । गोविंद प्रभु रबि तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी । ॥ १३० ॥ राग राम कली ॥ श्री जमुनाजी तिहारो दरश हों पाऊं । श्री गोवर्द्धन श्री वृन्दावन व्रजरज अंग लगाऊं ॥ दिन दश पांच रहूं श्री गोकुल ठकुरानी घाट नहाऊं । दासन ऊपर करो कृपा निज संतन के संग आऊं ॥ १३१ ॥ राग राम कली ॥ श्री जमुनाजी पतित पावन करेव । प्रथमही जब दरश दीनों सकल पाप जु हरेव ॥ भुज तरंगन परस कीनों पय पांनदे मुख भरेव ॥ नाम लेतहि गई दुरमति कृष्ण रस वस तरेव । गोप कन्या कियो मज्जन लाल गिर धर वरेव । सूर श्री गोपाल निरखत सकल कारज सरेव ॥ १३२ ॥ राग राम कली ॥ श्री जमुनाजी पतित पावन करन । प्रथमही जाको दरस पायो कोटि कलि मल हरन ॥ पैठतही भुज तरंग परसत मिटत जियकी जरन ॥ नाम उचरत शुद्ध बानी बुद्धि पोसत भरन । उपजे उग्र वैराग जाकूं खेंचि ल्यावे शरन । सूर हर की भक्त दाता विश्वतार न तरन ॥ १३३ ॥ राग राम कली ॥ जगत में श्री जमुनाजी परम कृपाल । बिनती कर त तुरत सुनि लीनी भए हैं मोपें दयाल । जो कोउ मज्जन करत निरंतर तातें डरत जम काल ॥ व्रज पति को अति प्रिय कालिंदी सुमिरत होत निहाल ॥ १३४ ॥ रास

के पद ॥ राग राम कली ॥ गाऊंगसिकनट भूपाल गुण अनंत न पार कमल नयन पिय जशोदा दुलारु । प्रकट पुरुष सारु पृथ्वी तखदूरे भारु जानत महिमा जाके उर हि उर गहारु ॥ राम कली एक तारु नाचै अमोघ बिहारु कालिंदी पुलिन सखी लोचन निहारु । उत्तम भूषन धारु तन लेपि घन सारु वृन्दाबन चंद चहूं दिशि उजियारु ॥ मोहन नंद कुमारु अंग अंग सुकुमारु गिरबर धर जश त्रिलोक बिस्तारु ॥ उभय करउदारु ब्रज भामिनि सिंगारु कृष्ण दास प्रभु हरिसर्बसु दातारु ॥ १३५ ॥ राग राम कली ॥ रास रस गोविंद करत बिहार । सूर सुता के पुलिन रम्य महं फूले कुंद मंदार ॥ अद्भुद शत दल बिकसित कोमल मुकलित कुमुद कल्हार । मलय पवन वहे शारद पूरण चंद मधुप झंकार ॥ सुघर राय संगीत कलानिधि मोहन नंद कुमार । ब्रज भामिन संग प्रमुदित नाचत तन चर्चित घन सार ॥ उभय स्वरूप सुभ गतासीबां कोककला सुख सार॥ कृष्णदास स्वामी गिर धर पिय पहरे रस मय हार । ॥ १३६ ॥ राग राम कली ॥ गोबिंद करत मोहन मगन । सप्त सुर गति भेद मिलवत बेणु सुरति बंधान ॥ तरनि जाकर लहर बिरचित पुलिन केलि बंधान । शरद रजनी बिमल उड पति मलय पवन सुटान ॥ राग वारिसमुद्र तांडवलास्य कला निधान ॥ ब्रज बधू संग मुदित नांचत लेत अब घर तान ॥ बसीकृत गण सिद्ध सुर गण थकित व्योम बिमान । कृष्ण दास बिलास रस गिरधरन सब गुण जान ॥ १३७ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ नृत्यत मोहन रसिक सखन सहित ग्रग्रतातत्तथैतथैतत्ता । मृदंग धिमु धमु धमुतालउपंग मिलि श्रुति देत मधुपमधुमत्ता ॥ टिपारो शिर पीत अति लाल काछनी बनी किंकनि झिनि झिनि गति लेत गावत सुर सप्ता । गोबिंद प्रभु गोप बालक जय जय प्रेम अनुरक्ता ॥ १३८ ॥ राग राम कली ॥ रह्यो मोहि श्री बल्लभ गृह भावे । सुन मैया तूं मोडर मांखन दूध दह्यो जो छिपावे ॥ तूं तो करुणा किपिन कहा कहूं नित उठि मोहि खिझावे । मेरे प्राण जीवन धन गोरस मोतें दूर दुरावै ॥ वे तो खीर खांड पकवांन ले बिबिध ले प्रातहि मोहि जगावें । तेल सुगंध लगाइ प्रीति सों ताते नीर नहावे ॥ भूषन बसन बिबिधि मन भाए पलटि पलटि पहिरावे । नैना आंजितिलक मृग मद करि दर्पण मोहि दिखावे ॥ षट रस बिंजन मोहि जोंबावे हित सों पान खवावे । भंवरा चकई बिविध खिलोंना लेकर मोहि खिलावे ॥ बिबिधि कुसुम अपनें कर गुहिलै ले माला उर लावे । सुखद पर्यंक संबारि मृदुल अति तापर मोहि सुवावे ॥ डोल झुलावे रथ बैठावें पालन हिं डोर झुलावे । ऋतु बसंत जानि जिय अपनें ले सुरंग छिरकावे ॥ जनमदिबश आवत जब मेरो आंगन चौक पुरावे । बाजे बहु बिधि द्वारें बाजे बंदनबार बंधावे ॥ मेरे गुण पुनि जन पें मोकों सप्त सुरनिजो सुनावे । हरदी दूब अछत दधि कुंकुम मंगल कलश भरावे ॥ धेनु दिवावें द्विजन कों मोपें सुभग अशीश पढावे ॥ केतिक बात कहों हों हितकी मोतें कहियन आवे ॥ मेरे प्रादुर्भावदिबस दिन आनंद उरन समावे । नव दिन नवभोग करि मोकों हित सों भोग लगावे ॥ घसि गुलाब के नीर सुचंदन ले कपूर सों

बसावे। शीतल बारि बयारिशीत अति मेवा देय खिलावे ॥ शीतल नीर सुगंध सुवा शित करि अधि बासन लावे। भरि भरि जलजनाय शीश पर मोतन ताप मिटावे ॥ मेरे लिये पबिचा राखो अति सुन्दरजो बनावे ॥ सबहिन भांति प्रीति ब्रज जनकी आपें करि जो शिखावे॥ दसमी बिजे जानि रघु बर की अंकुर शीश धरावे। बहु बिधि पाक संभारि मोहि हित मणि मय दीप दिवावे ॥ शरद पून रास दिन मेरो नट बर भेष बनावे। मोर मुकुट पीतांबर काछनी मुरली कर छिगछावे॥ सुरभी बरदा न्योंति कुहू की निस पुनि पुनि लाड लडावे। सुर पति मांन भंग प्रति पद तब गों गिर राज पुजावे॥ कातिक सुदी एकादशि के दिन कुंज महल जो बनावे। पाट सुरंग बसन पहिरावत प्रबुधिनि पर्ब मनावे। अति मति मंद करम जड कलियुग जन्महि वृथा गंवावे। रसिक कहे बल्लभ करुणा बिनु फल कबहूं नहि पावे ॥ १३९ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी। कुंबरि राधिका तुव सकल सौभाग्य सीवया बदन पर कोटि शत चंद्रवारों। खंजन कुरंग शत कोटिनैननि उपर बारने करत जीय में बिचारों। कदली शत कोटि जंघन उपर सिंहशत कोटि कटि पर न्यो छावर उतारों। मत्तगज कोटिशत चाल पर कुंभशत कोटि इन कुचन पर बारि डारों। कीरशत कोटि नासा उपर कुंदशत कोटि दसननि उपर कहि न पारों। पक्क कंदूर बंधूक शत कोटि अधरनि उपर बारि रुचि गर्ब टारों। नाग शत कोटि बेनी उपर कपोत शत कोटि ग्रीवा पर बारि दूरि सारों। कमल शत कोटि कर जुगल पर बारनै नाहिन कोउ लोक उपमाजु धारों। दास कुंभ नस्वामिनी सुनखसिख अंग अद्भुत सुठान कहा लगि संभारों। लाल गिरिबर धरन कहत मोहि तोहि लों सुख जो लों वह रूप छिन छिन निहारों ॥ १४० ॥ मंगल आरती ॥ राग रामकली ॥ मंगल मंगलं ब्रज भुबि मंगलं ॥ मंगल मिह श्री नंद यशोदा नाम सुकीर्त्त नमेंत द्रु चिरोत्संग सुलालित पालित रूपं ॥ ध्रुव ॥ श्री श्री कृष्ण इति श्रुति सारंनामस्मार्त्त जनाशय तापापह मिति मंगल रावं। ब्रज सुंदरी बयस्य सुरभी इंदमृगीगणनि रूपम भावा मंगल सिंधुचयाः। मंगलमौषत्स्मित युत मी क्षण भाषणमुन्नत नासा पुटगत मुक्ता फलचलनं। कोमल चलदं गुलिदल संगतवेणु निनाद बिमोहित इन्दाबन भुबि जाता। मंगल मखिलं गोपी शितुरति मंथरगति बिभ्रम मोहित रासस्थितगानं। त्वंजयसततं गोवर्द्धन धरपालय निजदासान् ॥ १४१ ॥ राग रामकली ॥ आरति कीजे श्याम सुंदरकी। नंदकुमार राधिका बरकी भक्ति करि दीप प्रेमकरि बाती। साधु संगति करि अनु दिन राती। आरति ब्रज जुवती मन भावे॥ श्याम लीला हित हरि बंश गावे ॥ १४२ ॥ राग रामकली ॥ आरति कीजे सुंदर बरकी। नंदकिसोर जसोदा नंदन नागर नवल ताप तम हरकी। नवविलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन करकी। बिहारी दास लोचन चकोर नित अंस प्रिया भुज धरकी ॥ १४३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ सुभग श्याम के संग राधिका बिराजे। नैन आलस भरी सकल निसि सुख करी कंठ हरि भुज धरी कामलाजे। मणिकर कंचन तनोपीक हगसो सनी अतिहिरस मेंसनी रूपलाजे।

छीत स्वामी गिरि धरन को मन बसी मनही मन हसी सुख दियो आजे ॥ १४४ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ हारि मानी नाथ अंबर दीजे नंदनंदन कुंवर रसिक बर मन हरन सुनहु गिरिबर धरन नीत कीजे । सकल ब्रज नागरी दासि तुह्मरी सदा तन माझ सीत अति होत भीजे । छीत स्वामी अमित गुण गणनि आगरे विनती करति सबे मानि लीजे ॥ १४५ ॥ राग रामकली ॥ राधिका श्याम सुंदर को प्यारी । नखसिख अंग अनूप बिराजत कोटि चंद द्युति वारी । एक छिन संग न छोडत मोहन निरखि निरख बलिहारी । छीत स्वामि गिरिधर बस जाके सो वृष भान दुलारी ॥ १४६ ॥ राग रामकली ॥ जगावति अपने सुतको रानी । उठो मेरे लाल मनोहर सुंदर कहि कहि मधुरी बानी । माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी । छगन मगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब सुख दानी । जननि बचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात तुत रानी । नंद दास कीनों बलिहारी उसुमति मन हरनषानी ॥ १४७ ॥ राग रामकली ॥ करत कलेऊ मोहन लाल । माखन मिश्री दूध मलाई मेवा परम रसाल । दधि ओदन पकवान मिठाई खात ख़बावत ग्वाल । छीत स्वामि बनगाइ चरावन चले खटकि पशु पाल ॥ १४८ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ नव कुंवर चक्र चूडान्तपति सांवरो राधि के तरुणि मनु पटरानी । शेष गृह आदि बैकुंठ पर्य्यंत खो लोकथानैत ब्रज राज धानी । मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहाँ मुक्ति चारो जहां भरत पानी । सूरससि पहरुवा पवन पर जन्य इंद्र चरण दासी भाट निगम बानी । धर्म कृतवाख शुक सूत नारद चारुबाल सन कादिवर चारि ज्ञानी । सत्व गुणपौरिया काल बंधुआ जहां ढाडिये काम सुकृत निसानी । नीलमर्कत धरे कुंज कुसमित महल मध्य कमनीय से जहांठानी । पल न बिछुरत दोउ जात नहीं तहां कोऊ व्यास महलनि लिये पीक दानी ॥ १४९ ॥ राग रामकली ॥ बनी वृषभान जान की बेटी । निबिडनि कुंज कुसुम पुंजनि पर श्याम बाम अंगलेटी । रति निसि जागी सोवत भोर किशोर कंबरि गुजरेटी । पिय के हिय म जिय ज्यों राजतनाहु बाहु बल भेटी । नैननि की सेननि कल मानो मनमथ अमिख अखेटी । लोभी लाल व्यास की स्वामिनि कंचन रासि समेटी ॥ १५० ॥ राग रामकली ॥ दधि मथति नंदन रेंद्र रानी करति सुत गुण गान । नील नीरद अंगदिव्यदुकूल बरपरि धान । नेति करपति हरष धरकति बलय कंकन पान । स्वेदकनगन बदन बिधु पर सुधा बिंदु समान । केश कुसुमनि करत मणि ताटंकझलकनि कान । पयो धर पय स्रवत चाचिक छण पतनि धरान । सहस आननकहि सकेनहि व्यास भाग बखान । जगत बंदत मात पिचनि गदा धरधरि ध्यान ॥ १५१ ॥ राग रामकली ॥ खंजरीट मोहे अलि कुल मोहे अंबुज दल मोहे नैननि । सौभगता मृगसावक मोहे मीन मोहे जल सेननि । मुकता मोहे मरकत मोहे विद्रुम मोहे रस ऐननि । प्रताप बल उडराज मोहे नटवर मोहे गति नैननि । आलस बलित ललित भुवपल्लवबल्लव पति सुत जुत चैननि । बलि कृष्ण दास आस परि पूरन गिरिधर मोहे सहमैननि ॥ १५२ ॥

राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ नमोतरनितनया परम पुनीत जग पावनी कृष्ण मन भावनी रुचिर नामा । अखिल सुखदायिनी सब सिद्धि हेतु श्री राधिका रवन रति करन श्यामा । विमल जल सुवननवकानना मोदयुत पुलिन अतिरम्य प्रिय व्रज किशोरा । गोप गोपी नवल प्रेम रति वंदिता तट मुदित रहत जैसें चकोरा । लहरि भांवरि ललित बालुका सुभग व्रज बाल वृतपूरनारास फलदा । ललित गिरिवर धरन प्रिय कलिंद नंदिनी निकट कृष्ण दास विहरत प्रबलदा ॥ १५३ ॥ राग रामकली ॥ राधाये ढंग हैंरी तेरे । बैसे हाल मथत दधि कोन्होहरि मनो लिखे चितेरे । तेरो मुख देखत सतिलाजे और कहो क्यों बाचे । नैना तेरे जल जजीत है खंजनते अति नाचे । चपलातें चमकति अति प्यारी कहा करेगी श्याम हि । सुनहु सूर ऐसे दिन खोवति काज नही तेरे धामहि ॥ १५४ ॥ राग राम कली ॥ दूध दोहनी लेरी मैया । दाऊ टेरत सुनि में आऊं तबलों करि बिधि धैया मुरली मुकुट पितांबर दे मोहि ले आई महतारी । मुकुट धरेव सिर कटि पीतांबर मुरली कर लिय धारी ॥ राधा राधा कहि मुरली में खरि कहि लई बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर सिरोमनि ऐसी बुद्धि उपाई ॥ १५५ ॥ राग रामकली ॥ कुंवरि कह्यो में जात महरि घर । प्रातहि आई खरिक दुहावन कहति दोहनी लैकर ॥ तब खरिकहि कोउ ग्वाल गये नहि तिहि कारन व्रजआई । जो देखों तो अजिरहि बैठे गैया दुहत कन्हाई ॥ तनक दोहनी तनक दुहत मोहि देखत अति रुचिलागी । तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागी ॥ १५६ ॥ राग रामकली ॥ हरिसों धेनु दुहावत प्यारी करति मनोरथ पूरन मनु वृषभांन महर की वारी । दूध धार मुखपर छबि लागत सो उपमां अति भारी ॥ मानो चंद कलंकहि धोवत जहं तहं बुंद सुधारी । हाव भाव रस मगन भये दोउ छवि निरखति ललितारी ॥ गोदोहन सुख करत सूर प्रभु तीनहु भुवन कहारो ॥ १५७ ॥ राग रामकली ॥ नंद नंदन एक बुद्धि उपाई । जे जे सखा प्रकृत के जाने ते सब लये बुलाई ॥ सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आये । जो कछु मंच हृदय में हरि के ग्वालनि प्रकट सुनाये ॥ व्रज जुवती नित प्रति दधि बेंचन बन बन मथुरा जाति । राधा चंद्रावलि ललितादिक बहु तरुनी एक भांति ॥ कालिंदी तट कालि प्रातही द्रुम चढि रहों लुकाई । गोरस ले जब ही सब आवै मारग रोकहु जाई ॥ भली बुद्धि यह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई ॥ सूरदास प्रभु प्रीति हृदय की सब मन गये जनाई ॥ १५८ ॥ राग रामकली ॥ प्रातहि उठी गोप कुमारि । परस्पर बोलत जहाँ तहां यह सुनी बनवार । प्रथम ही उठि सखा आये नंद के दरबार । आइये उठि के कन्हाई कह्यो वारंवार ॥ ग्वाल टेरन सुन जसोदा कुंवर दियो जगाय । रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाय ॥ मुकुट सिर कटिपीत अंबर मुरलि लीनी हाथ । सूर प्रभु कालिन्दि तट गये सखा लीने साथ ॥ १५९ ॥ राग रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आये । मैं जानत सब ग्वालि उठी जब तब तुम मोहि बोलाये ॥ अब आवति ह्वै हैं दधि लीन्हे

घर घर तें ब्रजनारि । हंसें सबै करतारी दै दै आनन्द कौतुक भारि ॥ प्रकृति प्रकृति के जे सब राखे संगी पांच हजार । और पठाय दिये सूरज प्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥ ॥ १६० ॥ राग रामकली ॥ कहा हमहि रिसकरत कन्हाई । यह रिस जाय करो मथुरा पर जहं है कंस कसाई ॥ हम अब कहां जाय गोहरावें बसति तुम्हारे गाउं । ऐसे हाल करत लोगनिके कोन रहे यहिठाउं ॥ अपनेही घरके तुम राजा सबको राजा कंस । सूर श्याम हम देखत बाढे अब सीखे एगंस ॥ १६१ ॥ राग रामकली ॥ प्यारी पीतांबर उर झटक्यो । हरि तोरी मोतिन की माला कछु गर कछु कर लटक्यो ॥ ढीक्यो करन श्याम तुम लागे जादू गही कटि फेट । आपु श्याम रिस करि अंकन भरि भई प्रेम की भेट ॥ जुवतिन घेरि लियो हरि को तब भरि भरि धरि अंकवारि । सखा परस्पर देखत ठाढे हंसत देत किलकारि ॥ हांक दियो करि नंद दोहाई आयगये सब ग्वाल । सूर श्याम को जानति नाही ढीठ भई हैं बाल ॥ १६२ ॥ राग रामकली ॥ हंसत सखनि सों कहत कन्हाई । मैया की बाबा की दाऊजू की सोंह दिवाई ॥ कहति काहे हंसि हेरो काहे भोंह सकोरत्यो । यह अचरज देखो तुम इन को कब हम बदन मरोरत्यो ॥ ऐसी बातनि सोंह दिवावति अधिक हंसो मोहे आवति । सूर श्याम कहि श्रीदामा सों तुम काहे न समुझा वति ॥ १६३ ॥ राग रामकली ॥ यह कहि उठे नन्द कुमार । कहा ठगींसी रही बाला परत्यो कोन बिचार ॥ दांन को कछु कियो लेखो रहीं जहं तहं सोचि । प्रकट करि हम को सुना वह मेटि जोरो दोचि ॥ बहुरि यहि मगजा हुआवहु राति सांझ सकार । सूर ऐसो कौन जो पुनि तुमहि रोकन हार ॥ ॥ १६४ ॥ राग रामकली ॥ राधा सों माखन हरि मांगत । औरनि के मटुकिन को खायो तुमरो कैसो लागत ॥ लैआई वृषभान सुता हंसि सदलबनी है मेरी । लैदीन्हो अपने कर हरि सुख खात अलप हंसिहेरी ॥ सबहिन ते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो सुनाई । सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रज ललना मनभाई ॥ १६५ ॥ राग रामकली ॥ धनि बड़भागिनी ब्रजनारि । खात खे दधि दूध माखन प्रकट जहां मुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु चिपुरारि । शुक सनक मुनि येउन जानत निगम गावत चारि ॥ देखि सुख ब्रजनारि हरि संग अमर रहे भुलाय । सूर प्रभु के चरित अगनित बरनि कापै जाय ॥ १६६ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ ग्वालिनी नन्द द्वारे नंद गेह बूझे । इतहीं ते जाति उत उतहि तें फिरति इत निकटहु जाति नहि नेक सूझे ॥ भई बेहाल ब्रजबाल नन्दलाल हित अर्पितन मन सबै तिनहिं दीनो । लोक लज्जा तजीलाज देखत लजी श्याम को भजी कछु डर न कीनो ॥ भूलि गयो दधि नाम कहति लै हो श्याम नहीं सुधि धाम कछू है कि नाहीं । सूर प्रभु को मिली भेटि भलि अन भली चून हरदी रंग देहि छाही ॥ १६७ ॥ राग रामकली ॥ तब एक सखी प्रीतम कहति । प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हो धीर काहे न गहति ॥ ब्रज घरनि उपहास जहां तहां समुझि मनकिन रहति । बात मेरी सुनति नाहि न कहति निन्दा सहित ॥ मातपितु गुरुजननि जान्यो भली खोई सहित ॥ । सूरप्रभु को ध्यान चितधरि अति हिकाहे बहति ॥

॥ १६८ ॥ राग राम कली ॥ एक गांउं को बास धीरज कैसे के धरौं । लोचन मधुप अटक नहि मानत यद्यपि जतन करौं ॥ वे यहि मग नित प्रति आवत हैं हौं दधि लै निकरौं ॥ पुलकित रोम रोम गद गद सुर आनंद उमगि भरौं । पल अंतर चलि जात कलप भर बिरहा अनल जरौं ॥ सूर सकुचि कुल कानि कहां लगि आरज पथहि डरौं ॥ ॥ २६६ ॥ राग रामकली ॥ मेरो मन हरि चितवनि अरुझानों । फेरत कमल द्वार ह्वै निकसे करत शृंगार भुलानों ॥ अरुण अधर दसननि द्युति राजत मोहन मुरि मुसकानो । उदधि तनय सुत पांति कमल के बंदन मुरके मानों ॥ यहि रस मगन रहति निसि बासर हरि तजि औरन जानौं । सूर दरस चित भंग होत क्यों जो जेहिं रूप समानों ॥ १७० ॥ राग रामकली ॥ हौं संग सांवरे के जैहौं । होनी हो यहोय सो अबही जस अप जस काहुन डरैहौं । कहा रिसाय करे कोउ मेरो कछु जो कहे प्रान तिहि दैहौं ॥ दैहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत हरि रति बीज बहुरि कब पैहौं ॥ का यह सूर अजिर अवनी तनुतजि अकास पिय भौन समैहौं । का यह ब्रज बासी क्रीडा जल भज नंद नंदन सब सुख लैहौं ॥ १७१ ॥ राग राम कली ॥ कब की मह्यो लिये शिर डोले । झूठेही इत उत फिर आवति यहां आंनि पै बोले ॥ मुहलों भरी मथनियां तेरी तोहि रटत भई सांझ । जानति हौं गोरस कोलेवो याही वाखरि मांझ ॥ इत तो आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिन मानै ॥ तेरे घर में तुही सयानी और बेंच नहि जानै । भ्रमतहि भ्रमत भरमि गई ग्वारिनि बिकल भई बेहाल ॥ सूरदास प्रभु अंतर जामी आइ मिले गोपाल ॥ १७२ ॥ राग राम कली ॥ भई मन माधो की अब सेर । मान धरे मुख चितवति ठाढी ज्याव न आवै फेरि ॥ तब अकुलाइ चली उठि बन कों बोले सुनतन टेरि ॥ बिरहा बिवस चहूंधा भरमति श्याम कहा कियौ भोरि । आवहु बेगि मिलहु नंद नंदन दीनन करो निवेरि ॥ सूर श्याम अंकम भरि लीनी दूरि कियो दूख ढेरि १७३ ॥ राग राम कली ॥ यह कहि मौन साध्यो ग्वारि । श्यामरस घटपूरि उछलत बहुत धरेव सम्हारि ॥ बैसेही ढंग बहुरि आई देह दशा बिसारि । खेहुरी कोउ नंद नंदन कहै पुकारि पुकारि ॥ सखी सों तब कहति तूरी को कहां की नारि । नंद के घर जांउ कित ह्वै जहां है वन वारि । देखि बाकों चकृत भइ सखि बिकल भ्रम गहि मारि ॥ सूर श्यामहि कहि सुनाऊं गये शिर कह डारि ॥ १७४ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ कहा कहत हेरी माता मोसों । ऐसे बहि गई को श्याम संग फिरै जो वृथा रिस करति कहा कहूं तोसों ॥ कही कोनै बात बोलि धों तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखौं ॥ तात रिस करत भ्राता कहै मारि हैं भीति बिन चित्र तुम करत रेखौ ॥ तुमहि रिस करति कछु कहा मोहि मारिहौ धन्य पितु माता भ्राता तुमही ॥ ऐसो लायक नंद महर को सुत भयो तिनहि मोहि कहति प्रभु सूर सुनही ॥ १७५ ॥ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ श्याम नग जानि हिरदै चुरायो । चतुर वर नागरी महामणि लखि लियो प्रिय सखी संग ता हिन जनायो ॥ कृपिन ज्यों धरत धन ऐसे दृढ कि यो वन जननि सुनि बात हंसि कंठ लायो । गांस दियो डारि कहि कुंवरि मेरो

वावरि सूर प्रभु नांम झूठे उड़ायो ॥ १७६ ॥ चर्चरी ॥ संग ब्रज नारि हरि रास कीन्हों। सबनिकी आस पूरन करी श्याम लै चियनि पिय हेत सुख मानि लीन्हों ॥ मेटि कुल कानि मरजाद बिधि वेदकी त्यागि यह नेह सुनि वेनु धाई। फबी जै जै करी मनहि सबजे धरी संक काहुन करी आप भाई ॥ ज्यों महामत्त गजजूथ करनी लियें कूल सब फोरि डर कहुंन मान्यों। सूर प्रभु नंद सुत निदरि निसि रस करयो नाग नर लोक सुर सबै जान्यों॥ १७७ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी रैनि रस रास सुख कहत बीती। भोर भये गये पावन जमुना केसलिल न्हात सुख करत अति बढी प्रीती ॥ एक एक मिलत हंसि एक हरि संग रसिक एक जल मध्य एक तीर ठाढी ॥ एक एक डरति एक अंग भरि लै चलति एक सुख धरति अति नेह बाढी। काहु नहि डरति जल थल क्रीडा करति हरति मन निदरि ज्यों कंत नारी ॥ सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनु साध भई मगन भारी ॥ १७८ ॥ राग राम कली ॥ श्यामा श्याम सुभग जमुना जल विभ्रम करत बिहारि। पीत कमल इंदीवर मानों भोरहि भये निहारि ॥ श्री राधा अंबुज कर भरि भरि छिर कति बार बार। कनक लता मकरंद झरत मानों हालत पवन संचार ॥ अतसी कुसुम कलेवर वृंदै प्रति बिंबित मनोहार। ज्योति प्रकास सुघन में खेलत खाति सुवन आकार ॥ धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल सिंगार ॥ बिद्युत जलद सूर मनो बिधु मिलि श्रवत सुधा की धार ॥ १७९ ॥ राग राम कली ॥ रीझे श्याम नागरि रूप। तैसिये लट बगरि उर पर श्रवत नीर अनूप ॥ श्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार ॥ मनो उगिलत राहु अमृत कनक गिरि पर धार। कंज परसत श्याम सुन्दर नागरी रस भाइ ॥ सूर प्रभु तन काम व्याकुल गये मन निज नाइ ॥१८०॥ राग राम कली ॥ श्यामा श्याम अंकमें भरी ॥ उरज उर पर साइ भुजसों भुजागाढे धरी। तुरत मन सुख मानि लीन्हें नारि तेहि रंग ढरी ॥ परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नव हरी। ऐसेही सुख दिओ मोहन सबै आनंद भरी ॥ करति रंग हिलोर जमुना प्रेम आनंद झरी। रास निसि श्रम दूरि कीन्हों धन्य धनि यह घरी ॥ सूर प्रभु तट निकसि आये नारि संग सब खरी ॥ १८१ ॥ राग राम कली ॥ कहा करौ नीके करि हरि को रूप रेख नहि पावति। संगहि संग फिरति निसि वासर नैन निमेषन लावति ॥ बंधो दृष्टि ज्यों गुडी डोरि बस पाछे लागी धावति। निकट भये मेरी ये छाया मो कों दुख उप जावति ॥ नख सिख निरख निहारयोई चाहति मन मूरति अतिभावति। जानों नहीं कहांतें निजु छबि अंग अंग में आवति ॥ अपनी देह आपुको बैरनि दुरत न दुरै दुरावति। सूर श्याम सों प्रीति निरंतर अंतर मोहि करावति ॥ १८२ ॥ राग राम कली ॥ मै मन बहुत भांति समुझायों। कहा करौ दरसन रस अटक्यो बहुरि नहीं घट आयो ॥ इन नैननि के मेह रूपरस उन में आंनि दुरायो। बरजतही बैकाज सुपत ज्योंपल ह्वै जोन सिधायो। लोक बेद कुल निदरि निडर ह्वै करत आपनों भायो ॥ मुख छबि निरखि चोंधिनिसि खग ज्यों हठि आपु नहि बंधायो। हरि को दोष कहा कहि दीजै यह अपने बल धायो ॥ अति बिप रीति भई सुनि सूरज सुमुरि सो मदन जगायो ॥ १८३ ॥ राग राम कली ॥ राधातैं हरि के रंग राची। तो तें और चतुर नहि कोऊ बात

कहूं मै सांवो ॥ तै उन को मन नही चुरायो ऐसो है तू कांची । हरि तेरो मन अवहि चुरायो प्रथम हि तू है नाची । तुम अरु श्याम एक है दोऊ बाको नाही बांची ॥ सूर श्याम तेरे बश राधा कहत लीक मैं खांची ॥ १८४ ॥ राग राम कली ॥ राधा हरि अनु राग भरी । गद गद मुख बांनी पर गासति देह दसा बिसरी ॥ कहति यहै मन हरि हरि लै गये येही परनि परी । लोक सकुच शंका नहि मानति श्यामहि रंग ढरी ॥ सखी सखी सों कहति बावरी एहि हम को निदरी । सूर दास प्रभु सों रति मानी भुरई हम सिगरी ॥ १८५ ॥ राग रामकली ॥ कुल लाज कहांलौं करिहों । तुम आगे में कहों न सांचि अब काहू नहि डरिहों । लोक कुटुंब जगत कहियत यहि लें सबहि निदरहों ॥ अब यह दुख सहि जातन मोपै बिमुख बचन सुनि मरिहों ॥ आपु सुखी तौ सबहीं कैहै उन के सुख कह सरिहों । सूर दास प्रभु चतुर सिरोमनि अब कैहैं कछु करिहों ॥ ॥ १८६ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ सुता सों कहति वृषभाँनु घरनी । कहां तू राधिका भोर तें फिरति है तेरी गति मोपें नहिं जाति बरनी ॥ तोरि मोतिसरी तब गुपत करि धरयो कहुं यहि मिस सकुचि रही मुख नवोलै ॥ मनों खंजन चपल चंद फंदा परे उडत नहि ताहितें कहुं नडोलै ॥ कहा तेरी प्रकृति परीहै खाडिली अबहिं ते कहा तू जात गोरी । सूर कहै जननि बोले नहीं आजु तू परसि धर हौं आइ खोरि गोरी ॥ ॥ १८७ ॥ राग रामकली ॥ राधा अतिहि चतुर प्रवीन । कृष्ण को सुख दै चली यह हंस गति कटि छीन ॥ हार के मिस यहां आये श्याम मणि के काज । भयो सब पूरन मनोरथ मिले श्रीव्रज राज ॥ गांठि अंचर छोरि के मोति सरी लीन्हो हाथ । सखी अावत देखि राधा खई ताको साथ ॥ जुवति बूझति कहां नागरि निशि गई एक जाम । सूर ब्योरो कहि सुनायो मैं गई तेहि काम ॥ १८८ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ जागिये प्राण पति रैन बीती । चन्दकी द्युति गई पहै पीरी भई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती मात पितु बंधु गुरजन अवहि जानि है लखैं जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी ॥ उठे मुसुकाय अकुलाय अतुराय के निकसि गये श्याम व्रजनारि जान्यो । सूर प्रभु नंद नन्दन दरस दै गयो निरखि एक टक रही पल भुलान्यो ॥ १८९ ॥ राग रामकली ॥ राधा सखी मिलि मन भाई ॥ जबतें इनसों नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥ और भई इतनों तुमको सखी यह जनसे निठुराई । काहू को मनही नहि आनति हमहुं सबनि बिसराई ॥ तुमहो कुशल कुशल हैं एऊ आप स्वारथी माई । सूर परस्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥ १९० ॥ ॥ राग रामकली ॥ यह सखी अबलो कहां दुराई । इतै दोस हम कबहुं न देखो अब जू कहां ते आई ॥ त्रिभुवन की शोभा सब गुण निधि है बिधि एक उपाई । विद्यमान वृषभान नंदिनी सहचरि सब दुख दाई ॥ अपने मन तकि तकि तनु तौखति बिधु जनु सुन्दरताई । दुसह रूप की रासि राधिका कहा कोन पुरपाई ॥ राचि रही रस सुरत सूर दोऊ निरखत नयन निकाई । चीन्हे हो चलि जाहु कुंज यह छांड़ि देहु चतुराई ॥ ॥ १९१ ॥ राग रामकली ॥ ऐसी कुंवरि कहां तुम पाई । राधा छूत ते नख सिख सुंदरि

अवलो कहां दुराई ॥ काकी नारि कोनकी बेटी कोन गांवते आई । देखी सुनी न व्रज वृंदाबन सुधि बुधि हरत पराई ॥ धन्य सुहाग भाग याको यह जुवतिन के मन भाई ॥ सूरदास प्रभु हरषि मिले हंसिलै उर कंठलगाई॥१९२॥ राग रामकली॥ चर्चरी ॥ नंद नंदन हंसे नागरी मुख चितै हरषि चन्द्रावली कंठ लाई । बाम भुज रवनि दक्षिन भुजा सखी पर चले बन धाम सुख कहि न जाई ॥ मनो बिधु दामिनी बीच नव घन सुभग देखि छबि काम रति सहित लाजे । किधो कंचन लता बीचहि तमाल तरु भामिनी बीच गिरि धर बिराजे ॥ गये गृह कुंज अलि गुंज सुमननि पुंज देखि आनन्द भरे सूर स्वामी । राधि का रवन जुवती रवन मन रवन निरखि छबि होत मन कामकामी ॥ १९३ ॥ राग रामकली ॥ मनतो हरिही हाथ बिकान्यो । निकस्यो मान गुमान सहित बहमे यह होत न जान्यो ॥ नयननि साटि करी मिलि नयननि उनही सो रुचि मान्यो । बहुत यतन करिहो पचि हारी फिरि इतको न फिरान्यो ॥ सहज सुभाय ठगौरी डारी शीश फिरत अरगानो । सूरदास प्रभु रस बस गोपिनि बिसरि गयो तनु ज्ञानो ॥ १९४ ॥ राग राम कली ॥ लोचन भये श्याम के चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेरि नहेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणनि ऐसे बस भये उनही । उनको बदन बिलोकत निशि दिन मेरो कह्यो न सुनही ॥ ललित त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसो तोरी । सूरदास यह मेरी कीन्ही आपुन हरि सो जोरी ॥ १९५ ॥ राग रामकली ॥ श्याम रंग रंगे नयन । धोये छुटत नहीं यह कैसे हु मिले पधिखि ह्वै मैन ॥ ए गीधे नहि टरत उंहांते मोसो लै नन दैन । सूरज प्रभु के संग संग डोलत नेकहुं करत न चैन ॥ १९६ ॥ राग रामकली ॥ लोचन भृंग कोस रस पागे । श्याम कमल पदसो अनुरागे ॥ सकुच कानि बन बेली त्यागी । चले उडाय सुरति रति पागी ॥ मुकुति पराग सहिइन चाख्यो । भव सुख फूल रसहि इन नाख्यो ॥ इनते लोभी और न कोई । जो पटतर दीजे कहि सोई । गये तबहिते फेरि न आये ॥ सूर श्याम बेगहि अटकाये ॥ १९७ ॥ राग रामकली ॥ नयन भये बस मोहन ते । ज्यों कुरंग बस होत नाद के टरत नहो ता गोहन ते ॥ ज्यों मधुकर बस कमल कोस के ज्यों बस चंदचकोर । तैसेई ए बस भये श्यामा के गुडिया बस ज्यों डोर ज्यों बस स्वाती बूंदन चातक ज्यों बस जलके मीन । सूरज प्रभु के बश्य भये ए छिनु छिनु प्रति जु नबीन ॥ १९८ ॥ राग रामकली॥ नयना मान अपमान सह्यो । अति अकुलाय मिलेरी बरजत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बानि परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो ज्यों मरकट मूठी नहि छाडत नलिनि सुबास गह्यो ॥ जैसें नीर प्रबाह समुद्रहिं मांझ बह्यो मुबह्यो । सूरदास इनि तैसिये कीन्ही फिरि मोतन न चह्यो ॥ १९९ ॥ राग रामकली ॥ सजनी मोतें नयन गये । अबलो आस रही आवन की हरिके अंग छये ॥ जबतें कमल बदन उन दरस्यो दिन दिन और भये । मिले जाय हरदी चूना ज्यों एकहि रंग रये ॥ मोको तजि भये आप स्वारथी वा रसमत्त भये । सूरश्यामके रूप समाने मानो बूंद तये ॥ ॥ २०० ॥ राग रामकली ॥ पिय निरखत प्यारी हंसि दीन्हों । रीझे श्याम अंग अंग निरखत प्यारी हंसि नागर उरलीन्हों ॥ आलिंगन दे अधर दसन खंडि कर गहि चिबुक

उठावत । नासा सोना साजे जोरत नयन नयन परसावत ॥ यहि अन्तर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारो । सूरश्याम मोको दिखरावन उर ल्याये धरि प्यारी ॥ ॥ २०१ ॥ राग रामकली ॥ श्याम नारि के बिरह भरे । कबहुंक बैठत कुंज द्रुमनि तर कबहुंक रहत खरे॥ कबहुंक तनकी सुरति बिसारत कबहुंक तन सुधि आवत । तब नागरि के गुणहि बिचारत तेई गुण गुनि गुनि गावत ॥ कहूं मुकुट कहूं मुरलि रही गिरि कहुं कटि पीत पिछोरी । सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई द्युति कागोरी ॥ २०२ ॥ राग राम कली ॥ ठाढे नंद द्वार गोपाल ॥ बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दे ततकाल ॥ हंसत गये हरि गेह ताके कौन जानत और ॥ मिली हरि कों लाइ उर भरि चांपि कठिन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्योंन आवत श्याम । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ हैं हम जाम ॥ २०३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ बाम संग श्याम चय जाम जागे । कोक बिद्या निपुन सकल गुण में सपुन सुरत संग्राम जुरि नहीं भागे ॥ अंग आलस भरे नैन निद्रा ढरै नैक सज्या परे निसा बीती । सूर प्रभु नंद सुत चले अकुलाइकें गये ताधांम रस काम जीती ॥ २०४ ॥ राग राम कली ॥ आजु बन्यो पिय रूप अगाध । पर उपकार श्याम तनु धार्यो पुर बत सब मन साध ॥ धर्म नीति यह कहां पढी जू हम हूं बात सुना वहु ॥ कहो कहां काको सुख दीन्हों काहेन प्रकट बतावहु ॥ धनि उपकार करत डोलत हो आजु बात यह जानी । सूर श्याम गिर धर गुन नागर अंग निरखि पहि चाँनी ॥ २०५ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ कहां हे श्याम कहां गवन कीन्हों । कहां तुम रहत कबहूं दरस देत नहि धोखें गये आइ हम मानि लीन्हों ॥ नैन आलस भरे चरण डग लरखरे कहा हो डरे से कहो मोसों ॥ रैनि कहुं बसे पिय कौनसों रसे हो उर करज कसे सो कहोगे सों ॥ भले जू भले नंद लाल वेऊ भली चरण जावक पाग जिनहि रंगी । सूर प्रभु देखि अंग अंग बनक कुसल मैं रही रोकि वह नारि चंगी ॥ २०६ ॥ राग रामकली ॥ अली वो वंदिदा हालन जाना । दरस पिया से नैन बिहारी मिलि मइबूं वा हुण बलि हारि लुभाना ॥ तो मैवा रिजामी वो आव पियारे मनदी आस पूजामी दरस देखामी । बलि हारियांदा प्रान निहारी अरजहमारी सुन छिन जामी ॥ तै नूकी परवाह नेह लगायन आय सांवल दरद बंदो दाहाल बिहारिन सुन इन की सलाह । बलि हारियां देदिल नुलगी तुझ दरसन दी चाह ॥ पलका दे पड़े पाय धरि धरि जीव जिवाव बिहारी । किसनू भाव पया निर मोही अरज हमारी ॥ इसननुसाडा दिल बिच बसियां औरन भावै प्यारी । बलिहारियांनु लगवो गया सांवल रंग कारी ॥ जियरा मोरा रे निशिदिन अकुलात बिहारी दरशन बिन । गुरजन लरवाहर कबहूं निकसन पाउं समुझि समुझि बलिहार रहों घर अरी देखे किनी ॥ नित दाना कर फेरा वो नंद दे ॥ बलिहारियां तेंनूकी सिखलाया लोन हंसै गुरु जन बहुतेरा वो नंददे । बैठे दंपित रति राजे कोटि बारो तन सुदेस अंगअंग भूषण बसन पहिरे बरन बरन ॥ तै सिये कुंज मृदु लस रस रस पुंज तहां करत भ्रमर गुंज जहां दोऊ मिलि करत बाते मधुर मधुर हसन मानों लागे फुल झरन ॥ नील पीत पट दुकूल

कालिंदी कूल मदन मधास कियो आस पास सखि समूह गावत कल मधुर सुरन । रंग राग जमि रह्यो जात नाहि कापै कह्यो रीझि रीझि छबिन हारि लेत बलिहारि राधा मोहन दोऊ मनके हरन ॥ कामकी रति पाय परत । जीति लोक लोक पति ब्रह्मादिक इन्द्रादि सुर नर सिद्ध गंधर्व नाग जीति अति मदवाढि रह्यो ताहु को मन हांसिन हरत ॥ ब्रज जुवती मिलि नांचत गावत रंग उपजावत केलि करत । बारि बिहारी बलिहारी तिहारो संग राधा प्यारी जीयते न टरत ॥ तिहारी लाल बाल औरे हाल समुझि न परत धों कहा । ज्यों ज्यों सुधि आवत मदन जगावत अति दुख पावत व्याकुल विरह महा ॥ गिनति बीती रैन तारे सुनि श्याम नयन हमारे पलन पाय दीन भये हहा । जापै जिंका वेा बलिहारि दरश देखावेा सुनी सेज लेत देखेा प्रान अहा ॥ क्यों वेा सुनदा श्याम प्यारा मेंडी अरज ॥ किकरा साडा बसन विहारी बलिहारियां मन लगानी अपनी गरज ॥ तेडी वेा आशा बंदिया में ॥ मेहर करो वेा मिलि बलिहारियां नू इस्कतु साडे फंदिया ॥ मुरली बजाई क्योंरे तु औचक द्वार खडा कान्हा मैन वानसी तांन रस भरी सोवत जगाई क्योंरे ॥ भोर भाँवते गुरजन मेतें लाज गंवाईरे क्योंरे मो सूधे हंसि बलिहारि अनोंखे प्रीति लगाई क्योंरे ॥ नंद दे निमानां यारवे सुनि बंसी वाले गल में डरी ॥ अरज हमारी सुनि बलिहारी की तकसिर पई में डरी ॥ पलुडानु छेडवे मेंडो पनियानुजा दिया ॥ आजिज हैाइ या ब्रजमोहन तेडे बलिहारियां दे पाय परेंदी सोंहे खादिया ॥ लोगवा जागे क्योंकर आवेा मितवा ॥ व्याकुल हैात मुरलि सुनिजिअरा आन कान जब लागै ॥ हियरा भरत्रो उमग अनुरागन लाज नहीं मोहि त्यागै ॥ कोई जतन मिलन कों जांउ बडे भाग मोहन रस पागे ॥ तेडेरे में वारि वारि जावा सुनि प्यारी जिवन हमारी ॥ कुंज भवन देवी सुरसेवी बलिहारियानु अनोजिवामो तोहि मिलवेा बिहारी ॥ आरति करत सकल सुर साधा । चिंतत चरन मिटे दुख बाधा ॥ मनकरि मारुत नन्दन गावेा ॥ सनमुख हैात चारि फल पावेा ॥ बालारक तन तेज बिराजे ॥ शेाभा सिंधु छच सिर छाजे । सीता को सुधि छिन में लायेा ॥ रावन को जिनि गरव नवायेा ॥ महाबाहुबल बिदित जगत पर ॥ राक्षस कुल कंपत जाके डर ॥ केसरि नंदन कपि कुल नायक ॥ मंगल करन संतन सुख दायक ॥ सीतारांम भक्ति रति ताकी ॥ लई बलिहारि चरण रज जाकी ॥ और सबे सुख तजिये मन ब्रज बसिये कृष्ण नाम कलि की रति गावन प्रेम पंथ में धसियें ॥ जेाग जज्ञ व्रत ध्यॉनन आवत काहे को काया कसिये ॥ धरम करम वह काये बैारे करम कीच कों फंसिये ॥ पुलिन पविच बलिहारि परस रज लै लै सिर धर धसिये ॥ हथा मेाह मेटेा किन रघुबर ॥ मैं मेरेां माया को चेरेा भयेा रहेा नाही जमको डर ॥ कपट कुचाल करेा करम बस सूझत नहि तव चरन कलप तर ॥ जानकि मन भावन सुख सीमा करुणा सिंधु अयेाध्या नागर ॥ जिन सुख पायेा दसरथ सुत गायेा गयेा पार भवसिंधु अगमतर ॥ इह दीन जानि जन अपनेां सुनेा बलिहारि कृपाल धनुष धर॥ आनि जिषांसी मेंडा जीया ॥ नंदन नंदन प्यारे लाल दिखेादी दारव तलामी ॥ जेा तू सानू छांडि पई तेा बिरहा दे हाथ विकामी । बूझे निहाल असाडानी सावल बलि

हारियां देघर आमी ॥ श्याम महोवत तेरों वो मन बीतानि मइर दे ॥ मुरली बजा वंदागा वंदानी मोहन इत बलि करि गयो फेरिबो ॥ बटोही जागुरे कहा सोवै ॥ सिर पर काल चढो सर साधे स्वास स्वास भरि क्यों दिन खोवे ॥ २०७ ॥ * * * * * *

॥ रागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तनान्तरगत ॥

॥ राग रामकली समाप्तम् ॥

॥ अथ राग बिभास प्रारंभ ॥

॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥

जागो जागो हो गोपाल ॥ नाहिन अति सोईये भयो प्रात परम सुचि काल । फिरि फिरि जात निरखि मुख छिनु छिनु सब गोपन के बाल ॥ बिनु बिकसित मनु कमल कोसते तै मधुकर की माल । जो तुम मोहि न पत्याउ सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल ॥ तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा नयन बिसाल ॥ १ ॥ राग बिभास ॥ जागिये व्रजराज कुंवर कमल कोस फूले । कुमुदिनि मुख सकुचि रही भृंगलता झूले ॥ तम चुर खग रोर सुनिये बोलत बन राई । रांभत गों मधुर नाद बछरा हित धाई ॥ बिधु मलीन रबि प्रकास गावत व्रजनारी । सूर श्री गोपाल उठे परम मंगलकारी ॥ २ ॥ ॥ राग बिभास ॥ प्रात भयो हरष राजीव लोचन । संग सखा ठाढे गो सोचन ॥ बिक सत कमल रटत अलि सेनो । उठो हो गोपाल गुह्यं तेरी बेनी ॥ खीर खांड़ घृत भोजन कीजे । सद्य दूध धोरी को पीजे ॥ सुत हित जानि जगावे नंदरानी । परमा नंद प्रभु सब सुख दानी ॥ ३ ॥ राग बिभास ॥ लालें नाहिन जगाइ सकति सुनु मुबात सजनी अपने जान अजहूं कान्ह मानत मुखरः नो ॥ जब जब हों निकट जाउं रहति लागि लोभा । तनको सुधि बिसरि गई देखत मुख शोभा ॥ बचनन को जिय बहुत करत सोचत मन ठाढी । नयनन नैंन बिचार परेव निरखत रुचि बाढी ॥ इहि बिधि बद नार बिंद जसुमति जिय भावे । सूरदास सुखकी रास कहत न बनि आवे ॥ ४ ॥ राग बिभास ॥ भयो पाछलो पहर । कान्ह कान्ह कहि टेरन लागे बाबा नंद महर ॥ ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरे रांभन लागी धेन । उठे बलभद्र बछरुवा ढीलन गोपन पूरे बेन ॥ गोप बधू दधि मथन लागी बिप्र पढन लगे वेद । परमा नंद दास को ठाकुर गोकुल के दुख छेद ॥ ५ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समय उठि सोवत सुत को वदन उघारेव नंद ॥ रहिन सके अतिसे अकुलाने नयन निसा के दंद ॥ शुभ्र सेज मधि ते मुख निकरेव गए ति

मिर मिटि मंद । मानहु पय निधि मथत फेन फटि दयो दिखाई चंद ॥ सुनत चकोर सूर उठि धाए सखि जन सखा मुकुंद । रहीन सुधि मगीर धीर मनु पिवत किरन मकरंद ॥ ६ ॥ राग बिभास ॥ भोर भयो जागो नंद नंद । संग सखा ठाढे जग बंद ॥ सुरभिन पय हित बछ पिवाए । पंछी जूथ दसों दिसि धाए ॥ मुनि सरतक्यों तमचुर सुर हारेव । सिथिल धनुष रति पति गहि डारेव ॥ निसिनि घटी रबि रथ रुचि राजी । चंद मलोन चकई रति साजी ॥ बुमदनि सकुची बारिज फूले । गुंजत फिरत अली गन टूले ॥ दरसन देहु मुदित नर नारी । सूर दास प्रभु देव मुरारी ॥ ७ ॥ राग बिभास ॥ भोर भयो जसोदा जी बोलत जागो मेरे गिरिधर लाल । रतन जटित सिंहासन बैठो देखन को आईं ब्रज बाल ॥ नियरे ह्वै सुपेती खेंचत बहुरेव ढांपत बदन रसाल । दूध दही अरु मांखन मेवा भामिनि भरि ल्याई हैं थाल ॥ तब हरि हरषि गोद उठि बैठ करत कलेउ तिलक दे भाल ॥ दे बीरा आरति बारत हैं गावति गीत रसाल ॥ ८ ॥ राग बिभास ॥ जागो कृष्ण जसोदा बोले इह औसर कोउ सोवे हो । गावति गुण गोपाल ग्वालिनी हरषित दह्यो बिलोवें हो ॥ गो दोहन धुनि पूरि रह्यो ब्रज गोपी दीप संजोवे हो । सुरभी हूंक बछरुआ जागे अनिमिष मारग जोवेहो ॥ बेनु मधुर धुनि मधुवर बाजत वेत गहे करसेली हो । अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय अकेली हो ॥ जागे कृष्ण जगत के जीवन अरुण नयन मुख सोहे हो । गोबिंद प्रभु जु दुहत हैं धौरी ब्रज गोप बधू मन मोहे हो ॥ ९ ॥ राग बिभास ॥ चिरैया चुह चुहानी सुनि चकई को बानी कहति जसोदा रानी जागो मेरे लाल । रबिको किरन जानी बुमुदनि सकुचानी कमलनि बिकसानी दधि मथे बाला । सुबल श्रीदामा तोक उज्वल बसन लीये द्वार ठाढे टेरत बाल गोपाला ॥ नंद लाल बलिहारी उठि बैठो गिरिधारी सब सुख देखो चाहे लोचन बिसाला ॥ १० ॥ राग बिभास ॥ उठि गोपाल भयो प्रात देखूं मुख तेरो । पाछे गृह काज करों नित्य नेम मेरे ॥ विहित निसा अरुण दिसा प्रकट भयो भांन । कमल मेके भ्रमर उडे जागिये भगवान ॥ बंदो जन द्वार ठाढे करत हैं कुवार । मधुर बेन गांन करत लीला अवतार ॥ परमा नंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप । वेद पुरान गावत हैं महिमा अनूप ॥ ११ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समै भयो सांवलिया हो जागो ॥ नंद जसोदा के मन आनंद गाय दुहन को भाजन मांगो ॥ रबिके उदय कमल प्रकासे । भ्रमर उठि चले तमचुर बासे ॥ गोप बधू दधि मथन लागी । हरि जूकी लीला रस पागी ॥ बिकसित कमल चलत अलि सेनो । उठो गोपाल गुहं तेरी बेनो ॥ परमा नंद दास मन भायो । चरण कमल रज देखन आयो ॥ १२ ॥ राग बिभास ॥ उठो मेरे लाल गोपाल लाडिले रजनी बीती बिमल भयो भोर । घर घर दधि मथति गोपिआंदिज करत बेद की सोर ॥ करो कलेउ दधि अरुओदन मिश्री बांटि परोसों ओर । आस करन प्रभु मोहन तुम पर वारों तन मन प्राण अकोर ॥ १३ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समय उठि चलहु नंद गृह बलराम कृष्ण मुख देखिये । आनंद में दिन जाइ सखी जन्म

सुफल करि लेखिये । प्रथम काल हरि आनंद कारी पाछे भजन काज कीजिये ॥ राम कृष्ण पुनि बनहि जाइंगे चरण कमल रस लीजिये । एक गोपिका व्रज में सयानी श्याम महातम सोइ जाने । परमा नंद प्रभु जद्यपि बालक नारायण करि सोइ माने ॥ १४ ॥ राग बिभास ॥ हों परभात समें उठि आई कमल नयन देखन तुहरो मुख ॥ गोरस बेचन चली मधुपुरी लाभ होइ मारग पाउं सुख ॥ करत कलेऊ श्याम मनोहर नेंकु चितै को जे हमतन रुख । तुम सपनें मोहि मिलि के बिछुरे कासों कहों यह रजनि जनित दुख ॥ प्रीति जु एक लाल गिरि धर सों इह मिस करि सब बात जनाई । परमा नंद दास वह नागरि नागर सों मनसा अरुझाई ॥ १५ ॥ राग बिभास ॥ मैं जान्यों जागे कन्हाई तातें जसुमति तेरे घर आई । मेरे पिछवारे वैसेई सुरनि सों किनहू मधुरी मुरली बजाई ॥ जनम सफल करि बिनती चित धरि अपने कान्ह किन देहो जगाई । ले उछंग मोहन को जसुमति आंगन ठाढी गोपी मुखदेखत हसत रसिक बलिजाई ॥ ॥ १६ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समें घर घर ते देखन को आई गोकुल नारी ॥ अपुनो कृष्ण जगाय जसोदा आनंद मंगल कारी ॥ सब गोकुलको प्राण जिवन धन या सुत पर बलिहारी । आस करन प्रभु मोहन नागर गिर गोवर्द्धन धारी ॥ १७ ॥ राग बिभास ॥ गोवर्द्धन गिरि सघन कन्दरा रैन निवास कियो पिय प्यारी । उठिचले भोर सुरति रसभीने नंद नंदन वृषभान दुलारी ॥ उत बिगलित कचमाल मरगजी अट पटे भुषण मरगजी सारी । इतहि अधर ससि पग रही घसि दुहुं दिसि छबि लागत अति भारी ॥ घूमत आवत रति रन जीते करनी संग गज वर गिरि धारी । चतुर्भुज दास निरखि दम्पत सुख तन मन धन कीनो बलिहारी ॥ १८ ॥ राग बिभास ॥ रजनी राज लियो निकुंज नगर को रानो । मदन मही पति जीति महारन श्रम जल सहित जंभानी ॥ परम सूर सौंदर्य भृकुटि धनु अनियारे नयन बान सन्धानी । दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर रस संपति बिलसो ज्यों मन मानी ॥ १९ ॥ राग बिभास ॥ राधे जू हारा वलि टूटो । उरज कमल दल माल मरगजी बाम कपोल अलक लट छूटी ॥ बर उर उरज कर अंकित बाहु जुगल वलया वलि फूटी । कंचुक चोरबिबिध रंग रंजित गिरिधर अधर माधुरी घूटी ॥ आलस बलित नयन अनियारे अरुण उनीदे रजनी खूटी । परमानन्द प्रभु सुरति समय रस मदन नृपति को सेना लूटी ॥ २० ॥ राग बिभास ॥ आजु श्यामा जू के नयन की बातें सुनिरी सखी मोपे बरनी न जाई । सुधा किरन बिच जुग शुभ खंजन किये पांन मनो सोवत अघाई ॥ मरकतविद्रुम कमल कोस में ले जावक की रेख बनाई । आलस तिरछे चाहत बिच बिच कछु बिकसित जब लेति जंभाई ॥ मनमथ जय करि हरि जीतन को दयो बान भ्रु अ धनुष चढाई । देखि लाल लोचन बिथकित भई पर म चतुरता सब बिसराई । सूर श्याम रस रीझि रहे तहं तुम हम सहचरि कोन बडाई ॥ ॥ २१ ॥ राग बिभास ॥ काहेको दुराव करति हारी देखिये फूल प्रकट हिये । तू बर मधुप पिय मुख कमल आई मकरंद पिये ॥ शिथिल अंग निशिके जागे बिथरी अलक स्वाद लिये । जोवन को मद मातो ग्वालिन डगत चरण धरनी दिये ॥ नूपुर अरसात रुणित

मानो रति केलि किये । कृष्णदास स्वामिनी गिरिधरण रसिक रसिये ॥ २२ ॥ राग बिभास ॥ अजु पियसो तू मिलो री मानो । श्रम जल कण भर बदन की शोभा निरखि नभसि उडुराज खिसानो ॥ त्रिभुवन जुवतिन को मुखसर्बसु जानति हौं तुव माझ समानो । कृष्णदास प्रभु रसिक मुकुट मणि सुबस कियो गोवर्द्धन रानो ॥ २३ ॥ राग बिभास ॥ आजु कछु देखियत हे रगमगी काहे न संहारति छूटई अलक । अधरनिरंग कंचुकी बंद टूटे नयन राते आई आधेई तिलक ॥ मरकतखंभ बाहु नंद नंदन मिलि रही री हेम सलक । रति रन रस जीत्यो काम छत्र पति ताही ते तेरे फूल किलक ॥ कृष्णदास स्वामी सेा प्यारी लीन्हो ते मुरति रति हिंडोले झूलक । मोहन लाल गोवर्द्धन धारी बदन कोटि चंद मलक ॥ २४ ॥ राग बिभास ॥ नवनि कुंज ते आवति बनी राधा चाल सुहावनी मनको हरनि । बिकसित बदन कमल की शोभा कहा कहेा देखत उदित तरनि ॥ तरुण जलद नव श्याम के संग सरस भरि भेटत भूतल जरनि । कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय सेा कीनेा तेरसिक रसीलो बरनि ॥ २५ ॥ राग बिभास ॥ मैंतेरी अधिक चतुराई जानो तेंने कंचुकी संहारी। आनन्द रसबस देह भूलिगई मिलत गोवर्द्धन धारी॥ कहा कहूं गुण रासि अंग अंग चलति मधुर गति भारी ॥ कृष्ण दास प्रभु रसिक लालकें तू अति प्राण पियारी ॥ २६ ॥ राग बिभास ॥ आई तू तिलक कूं मिटाये । रतिरन गोपाल संग नख सर लाये ॥ कपोलन पर पीक लागी नयन कषाए । हरिसों मिलि मदन जीत्यो दाय उपाय ॥ कृष्णदास प्रभुसों मिली निशान बजाये । ऐसी को निमिष तजे गिरिधर पाये ॥ २७ ॥ राग बिभास ॥ तें गोपाल हेत कसुंभी कंचुकी रंगाय लई भली भई सुफल करी आजु निशि सुहावनी । रोम रोम फूली चाय चपल नयन भृकुटी भाय अभरन चल अंग चाल डगमगी सुहावनी ॥ शुभग सारी झूमक तन श्याम पाट बुसुमनी बीतन सुख पचरंग छोट ओढनी सुहावनी । सोहत अलक बिथुरे बदन मोहन लावन सदन कृष्ण दास प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनी ॥ २८ ॥ राग बिभास ॥ कंचुकी के बंद तरकि तरकि टूटे देखत मदन मोहन घनस्यामहिं । काहे को दुराव करति हेरी नागरि उमगत उरज दुरत क्यों यामहिं ॥ कछु मुसकात दसन छबि सुन्दर हसत कपोल लोल भ्रू भामहिं । रवि शशि जुगल परे रति फंदन श्रवणनि पालक ताटंक के नामहिं ॥ बदन कमल पर अलक मधुप बर खंजन नयन खेत बिश्रामहिं । सुनि कृष्ण दास रसिक गिरिधर रंगरंगित मुमुखि लजावति कामहिं ॥ २९ ॥ राग बिभास ॥ झूमत अलक तेरे बदन कमल पर अधिक नीके लागत नयन आलसरी । कहा कहूं शोभा उरज जुगल नव ले चली रसिक बर मंगल कलसरी ॥ जानो मैं ते निधि पाई निकुंज मंडप महं जाके करत ही नयन ललसरी । कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रतीति बाढी नख पद पांति सोहे मोहन लखसरी ॥ ३० ॥ राग बिभास ॥ कहि न परे तेरे बदन की ओप । झलकनि नव मोतिन हि लजावति निरखत शशि शोभा भई लोप ॥ पक्षम न लागति चाहति पिय तन उचत भौंह घटा टोप । चपल कटाक्ष कुसुम सरतानति फुरत अधर कछु प्रेम प्रकोप ॥ प्रात समय आय श्याम मनोहर तुमही लडावत अपनी चोप । कृष्ण दास प्रभु गोवर्द्धन धर

अति नागर बर धरे बेष गोप ॥ ३१ ॥ राग बिभास ॥ प्रात आवत बनी वृषभान नन्दनी क्वणित नूपुर चरण लटक मंदालसी । सुरत सुखभाव अंग अंग भूषन बसन अलक फरकत कछू भांति मंदालसी ॥ अधर अद्भुत रेख प्रिया प्रीतम बेष सखी मंडल रसद नयन मंदालसी । कृष्णदासनि नाथ रसिक गिरिवर धरन मन हरयो चारु चल भौंह मंदालसी ॥ ॥ ३२ ॥ राग बिभास ॥ अरुण उदय नीके लागत मुनि सजनी हां हो तेरे नयन रसमसे मानहु शरदकमल संपुट महजुग अलि मधुलंपट बिवसबसे ॥ श्याम सेत आलस रस भावित भाव समूह कषाय कसमसे । मुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर पिय सुखद सहज अंजन सेा मसमसे ॥ ३३ ॥ राग बिभास ॥ ऐसी मानति हो अपने जिय महं पिय सेा मिलत हो करोगी लराई । देखत नंदन धीरज न धरयो मन लाल गिरिधर हेां जानि पाई ॥ कहा करो सरबसु चोरयो सखि रूप दिखाय ठगोरी लाई । कृष्णदास प्रभु रसिक सिरोमणि ले भुज बीच बातनि अरुझाई ॥ ३४ ॥ राग बिभास ॥ नयन मंदालसभरे हैं लसत बदन चंद्रमहि प्रकासित । गति मन हरति सकल जन ताके उरज जुगल करखिनु उप दासित ॥ रति तव कोककलापरिपूरन भौंह रुचिर चिच लेखबिकासित । मुनि कृष्ण दास बिबिधि जुवतिनि के ले जोबन गिरिधरन बिकासित ॥ ३५ ॥ राग बिभास ॥ सुर ताल से दुराव कित करत मानहु मिले गोबर्द्धन धारी । अधर सुरंगे पीक कपोलन नख पद उरज सोहत चरण गति भारी ॥ मरगजी ओढनी कंचुकी के बंद टूटे नीबी पट प्रीघन हेाइ सारी । कृष्ण दास प्रभु गिरिधर संग जागी ताते उनगति फूल अंग अंग सुख कारी ॥ ३६ ॥ राग बिभास ॥ चर्चरी ॥ लाल गिरिधर संग खाडिली भ मिनी ललित रस रति केलि चारु सोहे । नवतमालहि मानों नवल मालति वेलि नवरंग बिलास निधि आरो हे ॥ कछुक मुसकात चमकत दसन झलमलनि जनुक मुक्ता मणि हार पोहे । मुनि कृष्णदास अंग अंग वैभव सुमुखि सघन इंदा बिपिन सार सोहे ॥ ३७ ॥ राग बिभास ॥ जति ताल ॥ राधा रंग भरी नहि बोलति । मोहन मदन गोपाल लालसों अपनों जोबन तोलति ॥ चा हति मिलन प्राण प्यारे कोमेरोमन टक टोलति ॥ छाडहु बहुत चातुरी भामिनि कह हमसो झक झोलति ॥ प्रात होन लग्यो सुनि सजनी अबहीं तमचुर बोलति । कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय हित सारंग नयन सलोलति ॥ ३८ ॥ राग बिभास ॥ झप ताल ॥ श्याम सिंधु अंग चंद नादि गंध पूजित पट पीत मदन लजावत सौभग तरंगिमा । जुवती सरिता अनंग संमिश्रित सोभा सीमंत गुण गरिष्ट भाव भावसिंधु संगिमा ॥ बदन कमल अलक मधुप नयन खंजरीट बीच अद्भुत तिल कुसुम नाक भौंह गिमा । श्रवण श्रुति विमोहन चल कुंडल ताटंक गंड मंडित मुसकनि अधर रंग रंगिमा ॥ नख सिख भूषण अमोल मन हर मादक सुबोल वैजयंती भूषित श्रीउर उतंगिमा । कृष्णदास प्रभु गिरिधर सुरत नाथ राधा बर वेणु गान तान शब्दयुंगयुंगिमा ॥ ३९ ॥ राग बिभास ॥ तेरे भावसे गोपाल प्यारी बोलत बन । चलहि मिलहिन राधिका नवशत साजे सिंगार तन ॥ तब देही बिद्युत लता नंद सुवन सांवल घन । सोहहि किन कंठ लागि रति बिलास

उल्लसित मन । नवनिकुंज कूजत कल बेणु जुवति ताप हरन । कृष्णदास प्रभु नटवर मोहन गिरि राज धरन ॥ ४० ॥ राग बिभास ॥ जैसेतू कहति तैसेई बनें । मेरे जाने सखि लेहि सम्हारि भामिनि अपने धनें ॥ सुरत सुधा निधि श्याम मृदुल रस यामें कैसे के सने । कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धन धर गुण रसाल कोन गने ॥ ४१ ॥ राग बिभास ॥ गोपालें देखहि किन आईरी । आजुबने गोविंद नव कमल नयन तोकै हों लैन पठाईरी ॥ तरनि तनया पुलिन बिमलशरद निसि जुन्हाईरी । राकापतिकर रंजित द्रुम लता भूमि सुहाईरी ॥ गोवर्द्धन धरन लाल गानसों बुलाईरी । कृष्णदास प्रभु कोमिलनिजु वतिनि सुखदाईरी ॥ ४२ ॥ राग बिभास ॥ सुन्दर नंद नंदन जो हों पाऊं । अंग संग लागि मदन मनोहर या जोडे को देस निकारो दिवाऊं ॥ मृग मद अगरु कपूर कुंकुमा मिलें अरगजादेह बढाऊं ॥ बिबिध सुगंध सुमन बै सुनु सखि सघन निकुंज में सेज बिछाऊं ॥ राग रागिनी उरप सुलप सच तांन तरंग कै मधुरे गाऊं । कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धन धर रसिक शिरोमणि सुविधि रिझाऊं ॥ ४३ ॥ राग बिभास ॥ पट ताल ॥ जिहिं बंदपिउ बेगि मिले का हिंकिन सोइ बंद । विरह पीर हरनु रसिकसुन्दरि सुन्दरगोबिन्द तूं ब्रज सरको कुमुदिनो हरि वृंदावन चंद ॥ बचन किरनि बिगत अमृत पावहिं श्रुति पुट स्वछंद ॥ तूं करनी बर ललना नंद सुवन मद गयंद । कृष्णदास प्रभु गिरिधर रति सुख आनंद कंद ॥ ४४ ॥ राग बिभास ॥ जति ताल ॥ हरि मोहन की मोहन बानक मोहन रूप मनोहर मूरति मोहन मोहि अचानक ॥ मोहन बरह चंद सिर भूषण मोहन नयन सलोल । मोहन तिल भोंह मन मोहन मोहन चारु कपोल ॥ मोहन श्रवण मनोहर कुंडल मधु मृदु मोहन बोल । कृष्ण दास प्रभु गिरिधरन मनोहर नख सिख प्रेम कलोल ॥ ४५ ॥ राग बिभास ॥ इक ताल ॥ तरनित नयातट आबतहो प्रात समें कंदुक खेलत देख्यो आनंद को कंदवा । नूपुर पद कुणित पीतांबर कटि बांधे लाल उपरनासिर मोरनि के चंदवा ॥ पंकज नयन सलोल मधुर मोहन बोल गोकुल सुन्दरि संग बिनोद सुछंदवा । कृष्णदास प्रभु हरि गोवर्द्धन धारी लाल चारु चितवनि तोरे कंचुकी के बंदवा ॥ ४६ ॥ राग बिभास ॥ जति ताल ॥ जो भावति सो करति लाडिलो हारी रसिक गोपालहि भावति । गुणकी रासि तालजति प्रमुदित राग बिभासहि गावति ॥ तान बंधान सप्त सुर सांचे गति बहु भांति मिलावति । कृष्ण दास प्रभु गिरिधर नागर छैल छबीले सुबिधि रिझावति ॥ ४७ ॥ राग बिभास ॥ तेरे बदन की शोभा तोहिपें कहत बनें जो मुख जीभ होइ लख कोटिक । चिबुक सांवल बिंदु छैल चतुर बिधाता देखे जिन कोऊ दियो चखोडा टोटिक ॥ तिलक आधोललाट छूटी उरज सुघट लिखिल अंग अंग भासफोटिक । कृष्णदास प्रभु गिरिधरन रसिक संग सुरतहिड़ोले प्यारो लिये निसि भोटिक ॥ ४८ ॥ राग बिभास ॥ रंगीले नयना तेरे हो कब देखो गिरिधरन । शरद सुख सुंदर वर बिबिध ताप हरन ॥ श्याम स्वेत अनि यारे भाव बिबिध वरन । मीन कमल खंजन अलि मृग जुभए शरन ॥ श्रीराधा रस लंपट कुच सरोज चरन । गाइक कृष्णदास हेत मुरलि तांन हरन ॥ ४९ ॥ रागबिभास

इक ताल ॥ भोंह धनुष जुत नयन कुसुम सर जिहिकेलगत सोपरि परिताने । सह जहि सुभग छबीली सोई गोबर्द्धन धर जाकी माने ॥ हाव भाव नव सुरत तरंगनिसब बिधि कोक कला सोई जाने । कृष्णदास प्रभु जुवति जूथ पति करि लीनों तिहि अपनों जाने ॥ ५० ॥ राग बिभास ॥ जति ताल ॥ इह मन कैसे के रहत रहत राख्यो । जिहि मधुपतिहेाइ गिरिधर पियको बदन कमल रस चाख्यो ॥ जु कछुक में कीन्हीं परबस हेाइ साते ही सत साख्यो । बार बार बहु बिधि समुझायो उंचो नीचो भाख्यो ॥ केहुन मानति महा हठीली कही तुम्हारी आख्यो । कहें कृष्णदास कहां लों बरनो पांच चोर मिलि चाख्यो ॥ ५१ ॥ राग बिभास ॥ बलि बलि जाउं रसिक गिरि धर पिय नीके आए प्रात समचुर के बोले । इतो संकोच कोन को मानत अधिक लजाइ रहे बिनु बोले ॥ संध्या बदे बोल सांचे किये अनतसि मे जान्यो करि है यहां रहि जोले । कृष्ण दास प्रभु ऐसी कोन तोसों कहि सके चिजगमों चिभुवन तक तोले ॥ ५२ ॥ राग बिभास आजु लाल अतिराजे बैठे बनि कसि छाजे सुधिन कछु री गात प्यारी प्रेम मगना । लट पटी पाग अरु सिथल चिकुर चारु उपटत उरहार प्यारी कंठ लगना ॥ आलस अरुण रस भरेरी बिलोचन भरि भरि आवत प्रियसी अनुरगना । गोबिंद प्रभु प्रिय जान सिरो मणि सुरति रंग रस बिभो निशि जगना ॥ ५३ ॥ राग बिभास ॥ एक रसना कहा कहों सखी री ललनकी प्रीति अमोली । हंसनि खेलनि चितवनि जेा छबीली अमृत बचन मृदु बोली ॥ अति रस भरे मदन मोहन पिय अपने कर कमल खोलत बंद चोली गोबिंद प्रभु कीहों बहुत कहा कहूंरी जेजे बातें कहो मोसो अपनो हृदो खोली ॥ ५४ ॥ ॥ राग बिभास ॥ तू आज देखुरी मन मोहन ए बलवीर राजे । मदन मोहन पिय मणि मंदिरते बैठे बनि कसि आय छाजे ॥ लटपटि पाग मरगजी माला लटपटात मधुप मधुकाजे । गोबिंद प्रभु के जु सिथल अरुण दृग देखत बिथकित कोटि मदन लाजे ॥ ॥ ५५ ॥ राग बिभास ॥ रससमे नंद ललारे आये हो उठि भोरे । अरुन नयन बेन भूषण अटपटे देखियत अधरन रंगभोरे ॥ कैतब बाद कत करत गुसाई तहीं जाहु जाके हेां अति प्राण प्यारे । गोबिंद प्रभु भले जु भले जानि पाये जैसें तन श्याम तै सेई मन कारे ॥ ५६ ॥ राग बिभास ॥ मदन मोहन पिय भयो न भोर । प्राची दिश नहि अरुण देखियत अरु सुनियत नहि बन खगरोर ॥ गृहित कंठ परस्पर दम्पति बिश्लेषका तर अति जोर । गोबिंद प्रभु पिय रसिक शिरोमणि प्यारी के बचननि चित चोर ॥ ॥ ५७ ॥ राग बिभास ॥ लाल प्यारो अति बिच क्षन बस कियेरी सुहाग । बिबिध कुसु म सुवास सीतल बिचिच सज्या रची जाते मदन मोहन निशि जाग ॥ बैठे कुंज के द्वार तब पथ जोवत भरि भरि आवत नयन बिसाल तुव अनुराग । दूती के बचन सुनि प्रेम व्याकुल भई मिलि जाय गोबिंद प्रभु को ननेव्यो हृदय दाग ॥ ५८ ॥ राग बिभास ॥ पक्व खजूर जंबु बदरी फल लेहेा काछिनि टेरी द्वार । बालक जूथ संग बल मोहन चौके करत बिहार ॥ सुन्दर कर जननीके ना दियो धाये तबही नंद कुमार । हीरा रतन सेा पूरित भाजन ऐसे परम उदार ॥ उदर सेा लियेा लगाय खात चले मीठे परम

रसाल । झूटी गुठिली मारत गोबिंद हंसत हंसावत ग्वाल ॥ ५८ ॥ राग बिभास ॥ तेरे बारते जाऊं महरि जसोदा के लाल । छाडे उन भावत कैसे नीके लागत मधुरे सुर गावत मुरली बजावत परम रसाल ॥ बिभास राग जमायो मधुर मधुर गायो-प्रात शुभ काल । गोबिंद प्रभु पिय सुघर शिरोमणि अहो श्याम तमाल ॥ ६० ॥ राग बिभास ॥ जहांई नैना लगत तहांई तासो खगत अंग अंग माधुरी जु बरनी न जाई । सुंदर भाल भ्रुव कपोल नासिका देखतरहे जु लुभाई ॥ हंसत ललन मुख दसन जु न्हाई होति यह छवि कहा कहीं देखि धोरी आई । गोबिंद प्रभु केजु सुंन्दर बानिक पर बलि बलि बलि बलि जाई ॥ ६१ ॥ राग बिभास ॥ तेरो मुख मानो किसोरी शरद शशि । दसन ज्योति जु न्हाई बचन सीतल ताई अमृत हास सुहाई बोलत नैन ससि ॥ कस्तूरी तिलक भाल ऋतु कलंक छबी नक्षत्र माल मणि मंगलसि । गोबिंद प्रभु नंद सुवन चकोर वर पान करत वर पान मनमथ ताप नसि ॥ ६२ ॥ राग बिभास ॥ इंदु कुमुदनी समेटी अरुचकवनि चिय भेटी मुकलित अलिसरस कमल मुकलित भये नलिन । भयो प्रात मुक्ता गात सियरो अति सोनो लागे बोलत तमचुर दीप जोति भई मलिन ॥ कैसे जैहो रसिक राय नंद गोप दुहत गाय जागे व्रजबासी मोहि जात देखि हैं गलिन । गोबिंद प्रभु प्रेम मगन दम्पत अति कंठ लगन बढाय छपा फिरिके शशि पश्चिम सके चलिन ॥ ६३ ॥ राग बिभास नव निकुंज महल रस दोउरी राजत रंग भीने । कुसुमित सेज भोर उठि बैठे आलस रस अंसनि भुज दीने ॥ गौर श्याम तन नील पीत पट संभ्रम पलटि बसन तन लीने । पिय बिहारी प्रिय संग सुरत रंग शुभग सिंधु ललितादिक हग मीने ॥ ६४ ॥ राग बिभास ॥ बनी पिय राधा माधो केलि ॥ प्रात समय सखि नवनिकुंज में बढी परम रस बेलि ॥ पिय की मुरली अपने अधर धरि लीनी तानन बेलि ॥ मोहन रीझि बिबस ह्वै दीनी हीरा हार हमेलि ॥ निरखि कमल मुख कहत भले जू भले सकल कला प्रवेलि ॥ ऐसी कबहूं न मोपे बाजी कहें कंठ भुजा उर मेलि ॥ ललिता निरखत ठाढि ओट ह्वै रहि सुख सागर झेलि ॥ भाग सुहाग कहत नहि आवे बढ्यो मन आनंद रेलि ॥ ६५ ॥ राग बिभास ॥ अतिही कठिन कुच उच्च दोउ तुंग निसे गाढे उर लगाय के मेटी कामझक ॥ खेलत में सर टूटो उरपर पीक परी उपमां बरनन को भई मतिमूक ॥ अधरा मृत रस उपर तें चूंच वायो अंग अंग सुख पायो गयो दुखदूक । छीत स्वामि गिरिधारी राज लूट्यो मनमथ वृंदावन कुंजन में मैहूं मुनीकूक ॥ ६६ ॥ राग बिभास ॥ आजु किसोर कुंवर कान्ह देखिरी देखि आवत गावत भावत नयननि बयन पावत सकल अंग अंग । मुरली कुंचित शुभग वदन मदन मोचन लोल लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुंजित संग संग ॥ चरण नूपुर कटि सुमेखल रति रण रस भरे री श्याम कनक कपिस अंब रस मरकत मान भंग । छीत स्वामी गिरिधरन हरन तन के मन के संताप मेटिकै बिरह वेदन प्रीति सो जीति अनंग ॥ ६७ ॥ राग बिभास ॥ यमुना पुलिन शुभग वृंदावन नवल लाल गोवर्द्धन धारी । नवल कुंज नव कुसुमित दल नव नव द्रुमभान दुलारी ॥ नवल हास नव नव छवि क्रीडत नवल विलास करत सुखकारी । नवल बिट्ठल नाथ कृपा बल नंद दास निरखत

बलिहारी ॥ ६८ ॥ राग बिभास ॥ भोरही छवि सो प्रीवीन बीन बजावति ठाढी । ललित राग अनुराग ललित गति ललित गुण आढो ॥ लाडिली लालमहल में पोढे तिन्हें जगाय रिझाय वे को परम प्रीति गाढी । नंद दास दम्पति छवि निरखत अति उत्कंठा बाढी ॥ ६९ ॥ राग बिभास ॥ केलि किये हरि नायक के संग भोरहि मंजन उठि धाई । नीलकी चोलिमें देह दीपै यमुना जलमें जैसें चंदकी छाई ॥ ले डुबकी अलके बिथुरी जलतें छिटकी मुख ऊपर आई । दोऊ करबार सुधारि लिये निकस्यो शशि फोरि पहार की तांई ॥ ७० ॥ राग बिभास ॥ तें निशि लालसो रति मानि मे तबही जानि पग डगमग मगन परत सूधे । सिथल बसन कबरी केस राजत आनन सुदेस बोलत कछु लटपटात बानी । यह छबि सों मन भाई मिटी है चपलताई पीक लीक अधरन लपटानी ॥ मदन मोहन किसोर रिझाये श्यामा प्यारी धनि धनि धनि नवनि कुंजरानी ॥ ७१ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समें नव कुंज के द्वारें ललिता ललित बजाई बीना । पोढे सुनत श्याम श्री श्यामा दंपत चतुर नवीन नवीना ॥ अति अनुराग सुहाग लाडिली कोटि कला नप्रवीन प्रबीना । बिहारी दास बलि बलि जोरी परतन मन धन न्योछावरि कीना ॥ ७२ ॥ राग बिभास ॥ जागतही जागत गई निसि बीति हो देखि सखि सुख दन । अपनें अपनें सुख सहेत हरषत करषत सखी भये मन मैंन ॥ बिथुरी अलक पलक आलस ब लित नैंन बैंन । चारो पहर बिहरत यों सखी भोर भयो बिहारनि दासिके हंसि हरैं उर ऐंन ॥ ७३ ॥ राग बिभास ॥ लाडति लाडिली नव रंग अपनें लाल बिहारी कें संग ॥ अलसानें मैं जान प्राण प्रिया पति बिपरीति रतियों सुख दे अंग अंग ॥ बिगलितकच कुसुम सिथल पाग मरगजो मंग ॥ बिहारनि दासि की स्वामिनी श्यामहि देख सखी सुख प्रेम की परनि ढरनि रंग अनंग ॥ ७४ ॥ राग बिभास ॥ रसिकलाल के संग संग जागीरी सुख चैन सों रैनि सगरी । सोभित शीश कुसुम सिथल अलकें तामें कहूं कहूं री मांग मोती बगरी ॥ अरुण नैंन सलोल मोहन मधुरे बोल रची पैपीक कपोल प्रेम सुभगरी । सुवस किये बिहारी दास बलि बलि प्यारी सुरत निपुन नित सुहाग भाग अनुराग अगरी ॥ ७५ ॥ राग बिभास ॥ भोरहीं करसों कर जोरें अंग अंग मारें आलस लेत जंभाई । पिय के अंग निसंक सबै निसि हुलसि हुल सिखसी अनंद मै उनीदिये उठि आई ॥ अंगि राग अनुराग रची फबि छबि बरनी नहि जाई । अति सुखभरि भरि उमगि बिहारनिदासि सों कहति ऐसेहीं लाड लडाई ॥ ७६ ॥ राग बिभास ॥ धनि सुहाग अनुराग तेरो तूं सबै परि राधे जू रानी । नख सिख अंगअंग बानी प्रीतम प्रा ण समानी रसिक किसोर सुरति सुख दानी ॥ को जानें बरनन बपुरा कबि अद्भुत छबि नहि जात बखानी । बिहारी दासिपियसों रति मानी में जानि सयानी तोहिसब नि सि सुख सिरानी ॥ ७७ ॥ राग बिभास ॥ सुख पट ओटन करि प्यारी । काहे कों झूठें एही झुक झुकति रसिकनी कहत हैं रसिकनि हारी ॥ तूं जु इतौ हठ करति चतुर प्रिया रति के चिन्ह देखिए निहारी ॥ नवल किसोरें सिखत किसोरी मानु तजि बिहा रनि दासि बलिहारी ॥ ७८ ॥ राग बिभास ॥ करो कलेऊ बल राम कृष्ण तुम कह

ति जशोदा मया । पाछें बछ ग्वाल संगखे कें चलन चरावन गैया । पायस सिता धिर्त सुरभिन को हेत करि भोजन कीजे ॥ जग जीवन ब्रज राज लाडिले जननी कों सुख दीजे ॥ शीश मुकुट कटि काछि काछिनी पीत वसन तन धारो। खेलत कुट मुरली कर मोहन मन मथ दर्प निवारो ॥ मृग मद तिलक श्रवण कुंडल मणि कौस्तुभ कंठ बनावो। परमानंद दास को ठाकुर ब्रज जन मोद बढावो ॥ ७९ ॥ राग विभास ॥ प्रात समें उठि जसुमति जननी गिर धर सुतकों उबटि न्हवावति ॥ करि सिंगार बसन भूषण सजि फूलन रचि रचि पाग बनावति । छुटे बंद बागो अति सोभित बिच बिच चोवअ रग जावति । सुथन लाल फूंदना सोभित आजुको छबि कछु कहतन आवति ॥ बिबिधि कुसुम की माला उरधरि श्री कर मुरली वेत डगडावति। ले दर्पण देखे श्री मुख कों गोविंद प्रभु चरणन शिर नावति ॥ ८० ॥ राग विभास ॥ सुभग सिंगार निरख मोहन कों ले दर्पण कर पियहिं दिखावे। आपुन नेंकु निहारिये बलि जाउं आज की छबि कछु कहतन आवे ॥ भूषन रहे टांक ठांवहि फबि अंग अंग अति चितहिं चुरावे ॥ रोम रोम पुलकित तन सुन्दर फूलन रचि रचि पाग बनावे ॥ अंचल फेरि करत न्योछांवर तन मन अति अभि लाषव ढावे । चतुर्भुज प्रभु गिर धर कों रूप सुधा पिवत नैनपुट छिपत न पावे॥ ८१ ॥ रागविभास ॥ आजुको सिंगार सुभग सांवरे गोपाल को कहत नबनि आवे देखेही बनि आवे। भूषन सब भांति भांति अंग अंग अद्भुत कांति लट पटी सुदेस पग बित्त को चुरावे ॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तूरी अतिरसाल बित बनि लोचन बिसाल कोटि काम लजावे ॥ कंठ सरी वन माल फेंटा कटि छोरन कों निरख त्रिभुवन छिप को धीरज मनन आवे ॥ मेरे संग चलि निहारि कुंज महल बैठे हरि हितकी चित बात कहूं को तेरे जिय भावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरधर कोटि मदन मूरति बड भागिताहि गिनों जो जातही लपटावे ॥ ८२ ॥ रागविभास ॥ मईरो आजु और काहि और दिन प्रति और हि और देखिये रसिक गिरराज धरन। नित प्रति नव छबि बरनें सो कोन कवि नितही सिंगार बागे बरन बरन ॥ श्याम तन अंग अंग मोहन कोटि अनंग उपजी शोभा तरंग बिश्व के मन हरन । चतुर्भुज प्रभु गिर धर को रूप सुधा नैन पुट पांन कीजे मेरे हिये सदा शरन ॥ ८३ ॥ अथ खंडिता ॥ राग विभास ॥ मरगजी उर कुंद माल लोचन अलसात लाल गमगत चरण धरनि धरत रैन जागे । शीशतें खंसि मोर मुकुट भृकुटी के तट आयो निकट शैल चपल चंद्रिकासुबांधि पाट तागे ॥ अतसी कुसुम तन सुभांति कहूं कहूं कुंकुम को कांति मदन नृपति पीक छाप जुग कपोलनि लागे । छीत स्वामिगिरि बर धर सौरभर स सद्य मधुप संगम गुण गांन करत फिरत अगें आगे ८४ ॥ राग विभास ॥ कमल नैन श्याम सुन्दर निसके जागे हो आलस भरे। कर नख उर राजत मानो अर्द्ध शशि धरे ॥ लटपटी शिर पाग खिसत बदन तिलक टरे ॥ मरगजी उर कुसुम माल भूषन अंग अंक परे॥ मुरति रंग उमगि रहे रोम पुलकि होत खरे॥ परमानंद रसिक राय जाही के भागताही के टरे ॥ ८५ ॥ राग विभास ॥ सांवरे भले हो रति नागर । अबके दुरा

यें क्यों दुरत हो प्रीति जु भई उजागर ॥ अधर काजर नैंन रगमगे रची कपोल नि पीक। उर नख रेख प्रकट देखियतहै परी मदन की लीक ॥ पलटि धरे पटतिलक, ग यो मिटि जहं तहं कंकन गाढे ॥ परमानंद स्वामि मधु कर गति भली आपनी चाडे । ॥८३॥ राग बिभास ॥ आलस उनीदै नैंनन धूमत आवत मूदे अधिकनीके लागत अरुन वरन। जाने हो सुंदर श्याम रजनी के चारो जाम नेकहुत पाये मानो पलक परन। अधरन रंग रेख उरही चिच बिसेष सिथिल अंग डग मगत चरन ॥ चतुर्भुज प्रभु कहां बसन पलटि आये सांची एकहो गिर राज धरन ॥ ८७ ॥ राग बिभास ॥ साझ जु आवन कहि गए लाल भोर भये देखे । गनत नखच नैन अकुलाने चारि पहर मानों जुगते बिसेखे। कीन्हो भलीजु चिन्ह मिटाये अधरनि रंग अरु उर नख रेखे कुंभन दास प्रभु रसिक सिरोमनि गिरिधर तुम्हरे कैसे लेखे ॥ ८८ ॥ राग बिभास ॥ इतनी बार तुम कहा रहे ॥ सगरी रयनि पथ चाहत चाहत नैन दहे । कुंभन दास प्रभु भए ताही के बस जिनही गहे । गिरिधर पीय भले बोल निबाहे संध्याजु कहे ॥ ८९ ॥ राग बिभास ॥ निसि के उनीदे मोहन शयन रस मसे । काहे को लजात कहहु धो कहा लालन कहां बसे । डगत चलत आलस जंभात हो बदन रेख देखियत बसन खसे । कुंभन दास प्रभु गिरिधर तुम भुज बंधन करि उरझि लाए कसे ॥ ९० ॥ राग बिभास ॥ अरुण उनीदे आए हो रस मसे निसिके चिन्ह पिय कहा दुराए ॥ नख पद प्राण प्यारी के मोहन कांतिन छपत छिपाए ॥ कं कुमरंजित उर बन माला बिलुलित मुख मधुर जनाए । गिरिधर नवकेलि कलारस प्रमुदित कृष्ण दास अलि गाए ॥ ९१ ॥ राग बिभास ॥ चर्चरी ॥ आज सगरी निस कहां जागे लाल कहो जु सांची सुभग सांवरे माधो । घोष मथन शब्द प्राण पति गृह गृहरह्यो मोहन भोर प्रकट भयो आधो । कमल बिकसित भए चक्र बाकी हंसी सुमुखि पुलकित मुदित निज पति आराधो । बिश्वमोहन बदन निरखिनभ चंद्रमा सगण लज्जित भयो प्रेम गुण बाधो । ललित सुंदर राग चर्चरी ताल धरि मधुप गावत सुजसपिक निकर साधो । कहें कृष्ण दास गोबर्द्धन उद्धरण धीर पिय सुंदरी कृपणधन लाधो ॥ ९२ ॥ राग बिभास ॥ भली कीनी लाल गिरिधर भोर आए बोल सांचे । जुवतिबल्लाबिरुध कहियत मोहि सो सब सुबिध बांचे । ताही पैजु सिधारिये पिय जाही के तुम रंग राचे । पहले किहि सिख पठये मानहु मंची मते काचे । अध सूचत स्वास स्थिर नही निसि प्रिया रति बंध पाचे । सुनहि किन कृष्ण दास नागरि ज्यों नचाए त्यों ही नाचे ॥ ९३ ॥ राग बिभास ॥ अधिक नीके लागत रंग भरे लाल आधी आधी बतियां कहत मेरे प्यारे । खेलत प्राण प्यारी सो मोहन निसि जाग नैना रतनारे । मरग जो मृगमदतिलक माथे पर कछुक जम्हात अधर मसिकारे । श्रम जलकण कपोल मंडल कर सेंदुर रंग राते भीह अनियारे । आरत बसन पलटि पहिरे अंग नूपुरकुणित चरण सोहे भारे । सुनि कृष्ण दास रसिक गिरिधर पीय पाए हो नेक करहु न न्यारे ॥ ९४ ॥ राग बिभास ॥ आवत

बनेसुंदर नंदनंदन लटपटी पाग डगमगति चाल । अरुण कपोल अधर मसिकारे चपल नयन असरीधे लाल । रतिजय लेखुलिखति उरपद नखजीत्यो मदन गोपाल बतअलिमाल । तजिन सकत सौरभरस लंपट कुचकुं कुमरंजित बनमाल । पलटि परेपट कहहु कहांते सिथिल ग्रंथि कटिकिंकिणिजाल । छूटे बंद स्वेदकणिका तन काहे लजात बिरह रिपुसाल । कृष्ण दास प्रभु कितबदुरत हो मृगमद तिलक मरग जी माल । मोहन लाल गेबर्डन धारी प्रकट भयो पिय सुजसबिसाल ॥ ९५ ॥ राग बिभास ॥ अरुण उदय सुरत के लिरत लाल नीकी बनी नबनि कुंजते आवनी । बनमाल रस मत्तसंगअलि मंडली तासो मिले श्री मुखहि सरस गावनी । चरण नूपुरदीप्ति कटिछुद्रि छुद्रघंटिका मधुर मुखरित नीलपट पर सुहावनी । रगमगी ओढनी प्राण प्यारी की सुरत अभिराम तन देह बिसरावनी । कामजय पचरस उरसि कामिनि लिख्योनख अंक पांति रसिकनि हृदय भावनी । सिथिल अलका वली गलित बरहापीड अरुण लोचन मोहमन्मथनचावनी । श्रमस्वेदकण गातलाल गिरिधरण के निसि कथा सुमिरि मन रुचिर मुसकावनी । मदन रस रहसि गाइके कृष्ण दास कहा आप ने पीत पट दिये पहरावनी ॥ ९६ ॥ राग बिभास ॥ काहे को दुरावत अपनी केलिजाने हो हरि प्रीतम नागर । मोहि दिखा कछुबांचि सुनाबहु प्यारी करज अंक उर कागर । निसि की बाते सबे प्रकट भई कतलजात हो कौतुक सागर । कृष्ण दास प्रभु गिरिधर चंचल जुवति तापहर सुजस उजागर ॥ ९७ ॥ राग बिभास ॥ संध्याबदे बोल मन मोहन प्रात आइ कीने सब सांच । तनमन उहें अभासत प्रीतम काहे को लाल करत हो छपाच । यह तो बिथा सो जाने गिरिधर जाको लगी बिरह की आंच । सुनि कृष्ण दास जाउं बलिताकी जिनि लीने सरब सुदे खांच ॥ ९८ ॥ राग बिभास ॥ बने हो रस मसे आए प्रात । आलस भरे बदन की शोभा निरखि लजित जलजात । संध्या बदे बोल किये साचे काहे को लाल लजात । कृष्ण दास प्रभु गिरिधर बिनवत जुवति मृगीतकि घात ॥ ९९ ॥ राग बिभास ॥ बने हो रसमसे आए प्रात । प्यारी नखपद रत्नावलि रस रंजित नवरंग गात । नखरेखा मोहनि जुवतिन मन प्रभुदित पुलक जंम्हात । कृष्ण दास गिरिधर चित चंचल ज्यें तरवर के पात ॥ १०० ॥ राग बिभास ॥ बलिबलि जाउं रसिक गिरिधर पियनीके आए तमचुर बोले । येतो संकोच कोन कहो मानत अधिक लजाए रहे बिनु बोले । संध्या बदे बोल सांचे किये अनत बस मैं जान्यो करिहैं दूहा रहि जैले । कृष्ण दास प्रभु ऐसी कोन तोसों कहि सके त्रिजगभोह त्रिभुवन तक तोले ॥ १०१ ॥ राग बिभास ॥ कोनके भोराए भोर आए हो भवन मेरे ऊंची दृष्टि क्यों नकरो कोन तेलजाने हो । जाही के भवन भावे ताही के धारिये पाय काहे ऐसी चाउ परी कौन गहराने हो । भोरी भोरी बतियन भोरबन लागे मोहि श्री गिरिधर तुम अति ही सयाने हो । कृष्ण दास प्रभु छाडो अटपटी रहे हो लाल आज हो तुम्हे देखि नीके पहिचाने हो ॥ १०२ ॥ राग बिभास ॥ मदन मोहन पीय आए प्रात ।

चार जाम जागे प्यारी संग अरुण नैन आलस जंभात । बिन गुण मोती माल बिराजत अंजन अधर पीकलगी गात । व्रज पति पीय तुम्हे ऐसी न बूझिये हम सो फिरि तुम हंसि मुसकात ॥ १०३ ॥ राग बिभास ॥ मदन मोहन पीय जागे रैन । आलस बस जंम्हात सिथिल अंग अरुण तिहारे नैन । उपटे उर हार प्रकट देखियत प्यारी कंठ लागि दियो सुख चैन । व्रज पति पीय की चाल चलनि पर कोटिक वारो मैंन ॥ १०४ ॥ सुंदर लाल गोवर्द्धन धारी कहं तुम रैन बसे मेरे लाल । आलस नयन बयन चल बोलत छुटे बंद डगमगति चाल । सारंग अधर रुचिर वपु नखक्षत कुच प्रसंग उर बिलुलित माल । करि रथ हीन मीनपति जीत्यो चढी धनुष मानो मोह बिसाल । नही सत भाय कहति प्रीतम सो फिरत हो पात पात अरु डाल । दास मुरारि प्रीति औरनि सों देखति प्रकट तुम्हारे हाल ॥ १०५ ॥ राग बिभास ॥ आए हो उठि भोर रसमसे नंद लालारे । अरुण नयन बैन अट पटे भूषन देखियत अधरन रंग भारे ॥ कितब बिबाद करत हो गुसांई तहीं जाहु जाके अति प्राण प्यारे । गोबिंद प्रभु भले जुभ ले जानि पाए जैसे तन श्याम तैसे मन कारे ॥ १०६ ॥ राग बिभास ॥ निसिके उनीदे अति छबि लागत भरे प्यारी रंग । आलस बलित ललित लोचन जुग भरि भरि आवत कुंज केलि सुधिके प्रेम उमंग ॥ सुभग उरसि पर बिन गुण मोती माल कुंकुम रूषित उपटे हैं कुच उतंग गोबिंद प्रभु कत करहु दुराउ ए सब कहत तुम्हारे अंग अंग ॥ १०७ ॥ राग बिभास ॥ प्रिय बिनु जागत रैंनि गई । अवधि बदि गए न आए बडी बेर भई ॥ कछू कहत करत कछू कोन है सीख दई । सांचु नहीं एको अंग कहा रीति लई ॥ कैसे कीजे बिसासु भएहो बिधई । रसिक प्रीतमराबरी है छिनु छिनु गति नई ॥ १०८ ॥ राग बिभास ॥ ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढर किरही ढीले से ढहेसे ऐसे कोन पें ढहे हो । गाढे जु हीय के पीय ऐसी गाढी कोन चिय गाढे गाढे भुजन सों गाढे कर गहे हो ॥ लाल लोल लोइन उनीदे लागि लागि जात सांची कहो पोयहो तो लाल लहे हो । नंद दास प्रभु सांची क्यों न बोलो भयो प्रात कहो बात प्यारे तुमरात कहां रहे हो ॥ १०९ ॥ राग बिभास ॥ पाग खंसी सिर पेच लट पटी घूंमत नयन उनीदे उजागरि । पीक कपोल अधर मसि दागे कंकण पीठि गड्यो अति सुन्दरि ॥ जात उते इत पाउ चले क्यो बोलत होतुतरात लिये हरि । प्रात समें उठि कहं ते सूर प्रभु आवत हो अनुराग भरे हरि ॥ ११० ॥ राग बिभास ॥ चंद्रावलि धाम श्याम भोर भये आये । अति रिस करि रही बाम रैनि जागि चारि जाम देखै जो द्वार कान्ह ठाढे सुख दाये ॥ मंदिर ते रही निहारि मनहीं मन देति गारि ऐसे कपटी कठोर आये निसि बीते । रिस नहीं सकी सम्हारि बैठी चढि द्वार बारि ठाढे गिरिधारी निरखि छवि नखसिखहीते ॥ बिनु गुण बनी हृदय माल ताविच नखछत रसाल लोचन देाउ दरसि लाल जैसी रुचि बाढी आवक रंग लग्यो भाल चंदन भुज पर बिसाल पीक पलक अधर झलक बाम प्रीत गाढी क्यों आये कोन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषन सिंगारि निरवत हौ जाने ।

ताहीके जाहु श्याम जाके निसि बसे धाम मेरे घर कहा काम सूरदास गाने ॥ १११ ॥ ॥ रागबिभास ॥ मैं जानी पिय बात तुम्हारी । भोर भये मेरे गृह आये ऐसे भोरे भारी ह्यां आये मुख परसन मेरो हृदय टरत नहि प्यारी । कपट चतुरई दूर करो जू अपजस खेत उतारी ॥ कहा सांच मै खोवत करते झूठे कहा फबावत । सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवत ॥ ११२ ॥ राग बिभास ॥ रैनि जागे रति रस पागे अनु रागे नव चिय संग । मोसनमुख कत आये हो दहनि पिय रसमसे नयन अट पटात बैननि तहईं जाहु जाके रंग ॥ बिन गुन बनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलक भाल कीन्हें रस बस अंग । सूरदास प्रभु तुम रजनी बिहाइ आये प्रात भये आए मेरे जीति अनंग ॥ ११३ ॥ राग बिभास ॥ माई आजु लाल लटपटात आये अनुरागे सोभित भूषन अंग अंग आलस भरे रैनि उनीदे जागे ॥ लट पटी सिर पेच पाग छूटे बंद निवागे । सूरश्याम रसिक राय रस बस कीन्हें सुभाय जागे जहां सोई चिया बड भागे ॥ ११४ ॥ राग बिभास ॥ मंगल करन हरन मन आरति बारति मंगल आरति बाला ॥ रजनी रस पागे अनुरागे जागे प्रात गात अल सात सिथल वसन अरु मरगजी माला ॥ बैठे कुंज महल सिंहासन श्रीवृषभान कुंवरि नंद लाला । ब्रज जन मुदित ओट ह्वै निरखत निमिष न लागत नवनि कुंज लता द्रुम जाला ॥ ११५ ॥ राग बिभास ॥ रतन जटित कनकथाल मध्य सोहें दीप माल अगरादिक चंदन अति बहु सुगंध माई । घननननन घंटा घोर झननन झान रट कोरतननत ततथेई थेई थेई करतिहे एक दाई ॥ तननननन तांन मांन राग रंग सुर बंधांन गोपी जन गावें गीत मंगल बधाई । चतुर्भुज गिरिधरन लाल आरती बनी रसाल बारत तन मन प्राण जसोदा नंद राई ॥ ११६ ॥ राग बिभास ॥ मंगल आरती कीजे भोर । मंगल जनम करम गुण मंगल मंगल जसोदा मांखन चोर मंगल मुकुट बेनु बन माला मंगल रूप रवन मन मोर ॥ जन भगवांन जगत मय मंगल मंगल राधा जुगल किसोर ॥ ११७ ॥ राग बिभास ॥ श्रीगोपाल जूकी आरती करतु हें । घंटा ताल पखावज बाजे पंच मुखी बाती बरतु हें ॥ शिव विरंचि नारद इंद्रादिक सब मिलि गावत वीन बजतु हें । श्याम प्रभुको देखत सब तन मन धन बारि बारि डारतु हें ॥ ११८ ॥ * ॥ अथ समुदाय पद ॥ * ॥ राग बिभास ॥ श्याम सुंदर प्राण प्यारे छिन छिन जिनि होहु न्यारे । नेक की ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तलफत नयनन के तारे ॥ मृदु मुसकांनि बंक अवलोकनि डग मग चलनि सहज में सुढारे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर बांनिकपर कोटिकन मनमथ वारे ॥ ११९ ॥ ॥ राग बिभास ॥ बरनत तउन बने सुनि सजनी रग मगो बेष बन्यों गोपालको । रसना जो होहि लख कोटिक रूप गोवर्द्धन धारी लाल को ॥ स्याम धाँम कमनीय बरन सखि मानो तरुण घन तरुतमाल को । जुवती लता गात अरुझांनी पांन करत मधु मधुप माल को ॥ नख सिख मदन कोटि लावन छबि भूषन बसन नयन बिसालको । कृष्ण दास प्रभु सुरत सुधा निधि ताप हरन तिय बिरह ज्वालको ॥ १२० ॥ राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस्पर करत बिहार । उनि उनकी पहरी मोतिम

की माला उन उनको पहिरेव नौसर को हार ॥ लट पटि पेंच संवारति प्यारी अल कै संवारत नंद कुमार । सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरित भूषन करत सिंगार ॥ १२१ ॥ राग बिभास ॥ चिरई चुह चुहानी चंदकी जोति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रधान की । तारिका दुरानी तम घट्यो तमचुर बोले श्रवण भनक परी राग ललित के तांनकी ॥ भृंगमिले भार्या बिछुरि जोरी कोक मिले उतरी पनिचा अबकांस के कमानकी । अधबत आये गृह बहुरि उदत भानु उठौ प्राननाथ महा जानन मणि जानकी ॥ ब्रज घर घर इहै करत चवाउ लोग बार बार कहनि कर निडरनि धरनि धरनि पग आनकी । सूर दास प्रभु नंद सुवन सिधारो धांम सुनत उठेछबि कृपाल कृपाके निधान की ॥ १२२ ॥ राग बिभास ॥ काहे न सेइये गोकुल नायक । भक्तनि को ठाकुर भगवान सकल सुखनि कोंदायक ॥ ब्रह्मा महादेव इंद्रादिक जाके आज्ञा कारी ॥ सुर तरु कांमधेनु चिन्तामणि वरुण कुबेर भंडारी ॥ औरों नृपति कह्यो सब मानें सनमुख बिनती कीजे ॥ तुम प्रभु अंतरजामी व्यापक दुतिय साखिकों दीजे ॥ जनम करम अवतार रूप गुण नारदादि गुण गावे ॥ परमानंद दास की पतिअस अधम भले बिसरावे ॥ १२३ ॥ राग बिभास बलिहारी पट् कमल को जिन महग्रत लच्छण ॥ ध्वज बज्रांकुस जब रेखा ध्यान करत बिचच्छण ॥ ते चिंतत चैताप हरत सीतल सुख दायक ॥ नख मणि की चंद्रिका जोतिउज्वल ब्रज नायक ॥ वृन्दावन गो संग फिरत भूतल कृत पावन ॥ गंगादिक तो रथ प्रसाद भक्तन मन भावन ॥ भक्त धांम कमला निवास माया गुण बादक ॥ परमांनंद तें धन्य जन्म जे सगुण अराधक ॥ १२४ ॥ राग बिभास ॥ माई हौं अनंद गुण गाऊं ॥ गोकुल की चिंता मणि माधो जो मांगों सो पाऊं ॥ जब तें कमल नयन ब्रज आए सकल संपदा बाढी ॥ नंद राय के द्वारे देखो अष्ट महा सिधि ठाढी ॥ फूल्यो फल्यो सकल वृंदावन कामधेनु दुहिलिजे ॥ मांगे मेह इंद्र बरषावे कृष्ण कृपा सुख जीजे ॥ कहति जसोदा सखिन आगे हरि उत करष जनावे ॥ परमांनंद दास को ठाकुर मुरलि मनोहर भावे ॥ १२५ ॥ राग बिभास ॥ बिलगु जिन मानोंरी कोउ हरि को । भोरहिं आवत नांच नचावत खात दह्यो घर घर को ॥ प्यारो प्राण दीजे जो पइये नागर नंद महर को । कुंभन दास प्रभु गोवर्द्धन धर रसिक राधिका बर को ॥ १२६ ॥ राग बिभास ॥ सखी तेरे चपल नैन अरु बड़े बड़े तारे । हरि मुख निरखन मात पटनि में निस दिन रहत उघारे ॥ जो आगे ते पंथ रोकते न श्रवण तोन जानों कहां चले जाते अ पटारे । कुंभन दास प्रभु गिरिधरन रसिक कृपा रस सींचे अति सुख बाढे भारे ॥ ॥१२७॥ राग बिभास ॥ तेरे मुख कीनिकाई मोहें बरनी न जाई । अंग अंग छबि छाई नैननि लागे सुहाई ऐसी रचि पचि बिध बिध के बनाई ॥ भौंहन की कुटिलाई नैननि अरुणताई नासिका सुवन बनी अधर सुधाई ॥ धोंधो प्रभु के मन ऐसी भाई कहतन कछु बनि आई और सोंहें की सोंहे तेरी ये दुहाई ॥ १२८ ॥ राग बिभास ॥ कोउ मैया बेर बेंचन आई ॥ सुनतहि टेर नंद रावर में भीतर भवन बुलाई ॥ सूकत धांन परे आंगन

में कर अंजुली बनाई ॥ हुमक हुमक चखत अपने रंग गोपी जन बलि जाई ॥ लिये उठाय रिझाय करि गोपी मुख चूंबत न अघाई ॥ परमानंद स्वामि आनंदे बहुत बेर जब पाई। १२८ ॥ राग बिभास ॥ नंद किशोर पेरी करन बोहनी न पाऊं। गोरस के मिस रसही ढहारत मोहत मोहन मीठी तानन कैसें कैदधि छिपाऊं ॥ गोरस मेरो घरहि बिकेहै काहे कोवृन्दावन जाऊं ॥ आस करन प्रभु मोहन नागर जसुमत जाइ सुनाऊं ॥ १३० ॥ राग बिभास ॥ भोरहीं दान मांगत मोसों गिर धर ॥ प्रातहि उठिके चली जो नगरकों बेंचन दधि मटुकी धरि शिर पर ॥ जो तुम हमसों आरि करहुंगे तो हम सब मिलि उलटि जाहिं घर ॥ सांची कहोधों बात व्रज पति प्रभु तुम कोन टेव परी तिहारी मनहर ॥ १३१ राग बिभास ॥ छोंत कि लागि रहीरी माई ॥ जब गृह में तें दधि ले निकसे तब में बांह गहीरी माई ॥ हंसि दीनों मेरो मुख चितयो मीठी सी बात कहीरी माई ॥ ठग जु रहो चेटक सो लागो परि गई प्रीत सहीरी माई ॥ बैठो नेकु जाउ बलिहारी लाऊंऔर दही री माई । परमा नंद सयानी ग्वालिन सर्वसुदेनि बही री माई ॥ १३२ ॥ राग बिभास ॥ सुन्दर सांवरे मुरली अधर धरी । सुनि सिद्ध समाधि टरी ॥ ध्रुव ॥ सुनि थके व्योम विमान । सुर बधू चिच समान ॥ गृह नक्षच तजत न रोस । बाहन बंधे धुनि पास ॥ सुनि आनंद उमगि भरे । चल थके अचल टरे ॥ चल अचल गति बिपरीत सुनि बेणु कलपद गीत ॥ झरना झरे पाषान । कंदर्प मोहे गान ॥ सुनि खग मृग मौन धरी । फल चिणहु की सुधि बिसरी ॥ सुनि धेनु मृग थकि रहे । चिण दंतछूं नहिगहे बछरान पीवे छीर । पंछी मनो मुनि धीर ॥ द्रुम वेलि चपल भई । नव अंकुर प्रकटनई ॥ तहां बिटप चंचल पात । हरि निकट को अकुलात ॥ अंकुरित पुलकित गात । अनुराग नयन चुचात ॥ सुनि चंचल पवन थक्यो । सरिता जल चलि न सक्यो ॥ सुनि थक्यो मंद समीर । उलट्यो जु यमुना नीर ॥ सुनि धुनि चली व्रजनारि । सुत देह गेह बिसारि ॥ मन मोहन रूप धरो । तब काम को गर्ब हरो ॥ नवनील तन घनश्याम । नव पीत पट अभिराम ॥ नव मुकट नव बनदाम । लावण्य कोटिक काम ॥ मन मोह्यो मदन गोपाल । तन सांमल नयन बिसाल ॥ श्री मदन मोहन लाल । संग नागरी नव बाल ॥ नव कुंज यमुना कूल ॥ देखत सूरदासहिं फूल ॥ १३३ ॥ राग बिभास ॥ चलो री मुरली सुनियें कान्ह बजाई यमुना तीर । तजि लोक लाज कुलकी कानि गुरजन की भीर ॥ यमुना जल थकित भयो बछान पीवे छीर । सुर बिमान थकित भये थकित को किल कीर ॥ देहकी सुधि बिसरि गई बिसरो तन को चीर । मात तात बिसरि गये बिसरो बालकबीर ॥ मुरली धुनि मधुर बाजे कैसें के धरो धीर । सूर दास मदन मोहन जानत हो परपीर ॥ १३४ ॥ राग बिभास ॥ गोकुल गाउं रसीलो पिय को । मोहन देखि मिटत दुख जिय को ॥ मोर मुकट कुंडल बन माला । या छबि सों ठाढे नंदलाला ॥ कर मुरली पीताम्बर सोहे । देखत रति पति को मन मोहे ॥ चाल ॥ देखत रति पति को मन मोहे चकित सी डोलत फिरे । और कछु न सुहाय तन को बैठि उठत गिरत फिरे ॥ मोह मदन बान समान लागे पोर नेकु न आवहीं । और कछुक उपाय नाहीं

श्याम वेग बुलावहीं ॥ मैं तौ तजी लाज गुरजनकी। अब मोहि सुधि नपरै या तनकी॥ लोक कहे यह भई मति बोरी । सुत पति छांडि फिरत बनदोरी ॥ चाल ॥ छांडि सुधि न संभारतन कृष्ण छबि हृदय बसी । मदन मोहन देखि भावे बिहंसि कुंजन में धसी ॥ कुंज धाम किशोर ठाढे केसर खोरि बनायके । चन्द्रिका परवारि डारों बलि गई या भायकै ॥ भार परो यह घर घर बास । नित उठि कोन करे यह सास ॥ इन नयननि बांध्यो प्रण भारी । निरखत रहत सदां गिरिधारी ॥ चाल ॥ निरखिबो करे श्याम सुन्दर सहस कनक प्रकासरी । कालिंदी के तीर ठाढो श्रवण सुनिये बांसुरी ॥ मदन सूरति श्याम देखत मरी मनकी आसरी । सूर हरि को सु यश गावत सदां चरण निवासरी ॥ १३५ ॥ ॥ राग बिभास ॥ वृन्दावन बनि कुंज ठाढे उठिभोर । बाँह जोरि बदन मोर हंहत सुरत रतिकी करि कछु सकुचत पुनि लजात नैननि की कोर । करत कबहं वेणुनाद अधर प्याइ सुधा स्वाद पंछी गण प्रमुदित मन बोलत चहूं ओर । रसिक प्रीतम छबि निहारि उदयो जनुघन बिचारि बारबार उमगि नाचत हैं मोर ॥ १३६ ॥ राग बिभास ॥ आजु प्रभात लता मंदिर में सुख बरषत अति निरखि जुगल बर । गौर श्याम अभिराम रस भरे लटकि लटकि पग धरत अवनि पर । कुच कुंकुमरंजित माला बलि सुरत नाथ श्री श्याम धामधर । प्रिया प्रेमके अंक अलं कृत चिबित चतुर शिरोमणि रिजकर । दंपति अति अनुराग मुदित कलगान करत मन हरत परस्पर हित हरिबंस प्रसंस पराइन गाइन अलि सुर देत सुघरतर ॥ १३७ ॥ राग बिभास ॥ जोई जोई प्यारो करे सोइ सोइ मोहि भावे। भावे मोहि जोइ सोइ सोइ करे प्यारो। मोको तो भावती ठोर प्यारे के नैननि में प्यारो भयो चाहे मेरे नैननि को तारो । मेरे तन मन प्रान हूं ते प्रीतम पीय अपने कोटिक प्रान प्रीतम मोसो हारो । हित हरि बंस हंस हंसिनी श्यामल गौर कहो कौन करे जल तरंगनि न्यारो ॥ १३८ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं दोरस लंपट सुरति युद्ध जय जुत अति फूल । श्रमबारि जघन बिंदु बदन पर भूषन अंग अंग बिधिकूल । कछु रह्यो तिलक सिथल अलका बलि बदन कमल अलि भूल । हित हरि बंस मदन रंग गिरहे नैन बेन कटि सिथिल दुकूल ॥ १३९ ॥ राग बिभास ॥ आजु तो जुवती तेरो बदन आनंद भरेव पिय के संगम के सूचत सुख चैन । आलस बलित बोल सुरंग रंगे कपोल बिथकित अरुन उनीदे दोऊ नैन । रुचिर तिलक लेस कीरत कुसुम केससिर सीमंत भूषित मानो तेन । करुणा कर उदार राखत कछु न तार दसन बसन लागत जब देन । काहे को डरत भीरु पलटे पीतम चोर बस किये श्याम सखी शुतमेंन । गलित उरसि माल सिथल किंकिनी जालहित हरि बंस लता गृहमेंन ॥ १४० ॥ राग बिभास ॥ प्यारे बोली भामिनी आजु नीकी जामिनी । भेटि नवीन मेघसों दामिनी । मोहन रसिक राय री माई नागुन लाल करे ऐसी कोन कामिनी । हित हरि बंस श्रवण सुनत प्यारी राधिका रस सो मिलि गज गामिनी ॥ १४१ ॥ राग बिभास ॥ कोन चतुर जुवत प्रि जाहि मिलत लाल चोर ह्वै रैन । दुरत क्यों दुरे सुनि प्यारे रंग म

गहेलचैनमें नैन । उर नख चंद बिराने पट अट पटे से बैन । हित हरि बंस सुरति राधा पति प्रमथित मैन ॥ १४२ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समै उठि हरि नाम लीजे । गोबिंद नामलीआनंद सुख में दिन जाय । चक्र पाणि करुणा मयके सो बिघन बिनासन जसोदा माय । कलिमल हरन तरन भव सागर भक्त चिंता मणि काम धेनु । ऐसोमीरन नाम कृष्ण को बंदनीक पावन पद रेनु । शिव बिरंचि इंद्रादि देवता मुनि जन करत नाम को आस । भक्त बछलऐ सो नाम कलपद्रुम बर दायक परमा नंद दास ॥ १४३ ॥ राग बिभास ॥ छबीले लाल छबि तेरी मोहि नीकी लागत है हौतन मन जो बावरो रे । भोर भए आए मेरे अंगना हो पलकन सो पग झारो रे । सुख दीजे रस लीजे रैनको हो चितते नेक न टारोरे । कृष्ण जीवन लछि राम के प्रभु संग नबसत सिंगारो रे ॥ १४४ ॥ राग बिभास ॥ नैना मेरे घूंघट में नसमात । सुंदर बदन नंदनंदन को निरखि निरखि न अघात । अति रस लुबध महा मधु लंपट जानत नहिं एको बात । कहा कहों दरसन सुख माते ओट भये अकुलात । बार बार बरजत हो हारी तऊडेब नहि जात । सूर रसिक गिरिधर बिनु देखे अलप कलप सत जात ॥ १४५ ॥ राग बिभास ॥ अंखियन बहे टेवपरी । कहा करो बारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भंवरी । चितवतिरहत चकोर चंद लोनहि बिसरति मोहि एक घरी । जद्यपि हटकि हटकि हो राखति त्यों त्यों होति खरी । चुभि जुरही बारूप जलद में प्रेम पीयूष भरी । सूर दास गिरिधर तन परसत लूटत निसि सगरी ॥ १४६ ॥ राग बिभास ॥ राधे बसन श्याम तन चीन्हीं । सारंग बदन बिलास बिलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्हीं । सुधा पान करि के नीकी विधि रह्यों सेत ससि मुद्रा दीन्हीं । सूर सुबेस अही रति नागर भुजआ करवि बाम कर लीन्ही ॥ १४७ ॥ राग बिभास ॥ राधे तूं अति रंग भरी । मेरे जान मिलि मोहन सो अंचल पीक परी । छूटी लट टूटी नकबेसरि मोतिन की दुलरी । मैं जानों तैं फोज मदन की लूटि लई सगरी अरुण नैन मुख सरद ससिका सत कुसुम गलित कबरी । सूर दास प्रभु नगधर के संग सुरत समुद्र तरी ॥ १४८ ॥ राग बिभास ॥ श्याम श्यामा सो अति रति कीनी । श्रमजल बूंद बदन यों राजत मनों ससि पर मोतिन झर दीनी । मुक्ता माल टूटि यों लागति जनु सुरसरी अधो गति लीनी । सूर दास मन हरन रसिक बर राधा रंग सुरत रस भीनी ॥ १४९ ॥ राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत सिंगार । यह पहिरो बाको मोतिन माला उन पहरो वाको नवसर हार । पेच सवारे वृषभान नंदिनी अलक सवारत नंद कुमार । हंसि मुसकाय करत दोउ बातें बदन निहारत बारंबार । लटपटि पाग मरगजी माला कहि न जात सोभा सुख सार । श्री भटके प्रभु जुगल की दूती मेरे आंगन करत बिहार ॥ १५० ॥ राग बिभास ॥ सखीरी और सुनहु एक बात । आज गोपाल हमारे आए उठत प्रातही प्रात । काहु के नेन उनींदे मोहन अपने घरको जात । आगे द्वार नंदहु ते ठाढे तातें गए न सकात । लटपटि पाग अटपटे भूषन आलस जुत जंभात । मानो साह दंडले

छाडे दे दे चुहटी गात । ऐसी भांत कहा हुंते मोहन मैं बूझे मुसकात । तातें कछु उत्तर नहि आयो सूर श्याम सकुचात ॥ १५१ ॥ राग बिभास ॥ सुंदर घन श्याम लाल पंकज लोचन बिसाल आंगन ब्रज रानी जू के ठुमक ठुमक धावे। पहुंची करबनी चारो कंठ में बिचित हार लटकन लटके सुढार कहत न बनि आवे । रुनन झुनन धरे पाइ निरखि मुदित जसोदा माइ किंकिनी कटिनूंपुर धुनि श्रवण सुख बढावे । श्री बिठल बिहारी अंग कोटि बारि बारी ठाढी जुबती अपार मन में सचु पावे ॥ १५२ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं आवत आलस भरे जुगल किसोर देखे कुंजनकी खोरी । लटपटी पाग छुटे बंद पियके प्रिया की बेनी बिथुर छुटी कच डोरी । लखितादिक देखति जु नैन भरि अति अद्भुत सुंदर बर जोरी ॥ बिठल बिपुल पुहुप बरषत तब बिरह टूटत है अब हो हो होरी ॥ १५३ ॥ राग बिभास ॥ आज बनी लाडिली प्रीतम संग आवति । सोधै भीजी लट छूटी पिय के अंस भुजा पाछें सखी सुघर बिभासहि गावति ॥ श्रम जल बिंदु निशिके सुख सूचति मोहन बदन सों बदन मिलावति। बिट्ठल विपुल कल रसिक बिहारी लाल आनन्द समुद्र मथि मदन झिलावति ॥ १५४ ॥ ॥ राग बिभास ॥ आई भोर भये प्यारी छूटी लट बगरी । बहां जोरी लाल संग निशि किये कुंज रंग सुबस किये बिहारी कुंवरि अगरी ॥ निशि के चिन्ह फिके गौर श्याम तन छबि पद नख परवारों जेती तेरी नगरी । बिट्ठल बिपुल केलि मनहुं कंचन वेलि अरझी कुंजतमाल आवे कुंज डगरी ॥ १५५ ॥ राग बिभास ॥ प्यारी तेरी चालि चितवनि बांकी । बांके बसन अभरन बंक रेख उरअंकी ॥ बंक सुभाव मिलन बांकी प्रिया बंक को रही झांकी । बिट्ठल बिपुल बिहारी बांके मिले तातें तू फिरत निसांकी ॥ १५६ ॥ राग बिभास ॥ ज्योंही ज्योंही तुम राखत हौ त्योंही त्योंही रहियत है हो हरि । और अचरचे पाय धरो सुतौ कहौ कोन के पेढ भरि ॥ यद्यपि हो अन भायो कियो चाहों कैसे करि सकों जो तुम राखो पकरि । हरि दास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी पिंजराके जनावर लों तरफ राय रच्छों उडिवे को कितौकु करि ॥ १५७ ॥ राग बिभास ॥ काहू को बसना ही तुम्हारी कृपा तें सब होय बिहारी बिहारनि । और मिथ्या पर पंच काहेकों भाषिये सो तो है हारनि ॥ जाहि तुमसों हितु तासों तुमही तुमरा सब सुख कारनि । हरि दास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी प्राणनि के आधारनि ॥ १५८ ॥ राग बिभास ॥ कबहूं कबहूं मन इत उत जात यातें कोन है अधिक सुख । बहुत भांतिन ते घर आनि राख्यों नाहि तो पावतो दुख ॥ कोटि काम लावण्य बिहारी तामें मुहचहां सब सुख लियें रहत रुख । हरि दास स्वामी श्यामा कुंज बिहारी दिन देखत रहो बिचिच मुख ॥ १५९ ॥ राग बिभास ॥ आइये जू आइये जिनि दिवाइये मोमन रिस । सिथल अंग पग धरत डगमगे झूठेही करत माते को मिस ॥ अब जु आये हो मेरो जो समोध करत तर साये प्राण सगरो निस । गोबिंद प्रभु पिय जान शिरोमणि ओसन कैसें जात तिस ॥ ॥ १६० ॥ राग बिभास ॥ दोऊरी राजत है रंग भीने नवलनिकुंज महल रस । कुसुमित सेज भोर उठि बैठे रस आलस अंसनि भुज दीने ॥ गौर श्याम तन नील पीत पट

संभ्रम पलटि बसन तन लीने । पीय बिहारी पिया संग बिलसे अति सुरत रंग शुभग सिंधु लखिता दिक हग लीने ॥ १६१ ॥ राग बिभास ॥ चंचल ले चलोरी चित चोरि । मोहन को मन यों बस करलीनो ज्यों चकरी संग डोरि ॥ जोलों न देखत तुव मूरति तो लों पलक न लागत निमिषन ओर । नंद दास प्रभु प्रेम मगन भये नागर नन्दकिशोर ॥ ॥ १६२ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समय जागी अनुरागी सोवत उठिरी श्यामजू की संगिया ॥ बीर संवारति उठिरी दक्षिन करवास भुजा बकुटी भरि अंगिया ॥ भाल में सुहाग भारी कंचुकी को छबि न्यारी पहरें कसंभी सारी सोंधे रग बगिया । अग्र स्वामिनी लड़ाई बहुत कीनी बड़ाई फूली फूली फिरे सब रैंनि रंग रंगिया ॥ १६३ ॥ राग बिभास ॥ पिय ओच क मूंदेरी पाछे तें नयन हेा जु निभर्मी बैठी । अछन अछन पग धरत धरनि पर आवत जाने में न ॥ हों इतनेही चोंकि परो आली छतिया धीर धरेन । जगन्नाथ कबि राय के प्रभु रीझि हंसे तबहों हूं हंसी वह सुख कहत बनेन ॥ १६४ ॥ राग बिभास ॥ आव निकुंज तें पेाह पीरी । पिय जम्हात अरसात रसमसोलन खवावत बीरी ॥ सुरत सिथल अंग अंग परस्पर भुज भरि लोनी श्याम रसीरी । बिट्ठल बिपिन बिनोद बिहारी नहिं लखितादिक नीरी ॥ १६५ ॥ राग बिभास ॥ श्याम के भुजन बीच राखि है सुरत सीचि सेाई सुकुमारि जागी तमचुर शेारतें । हाहा कान्ह उदय भान अबहीं होयगी जान धुकर धुकर छाती गुरुजन डरतें ॥ मधुर बचन कह्यो प्यारे को भलेा मना यो चुंवन अकोर देति निरवारि गरतें । आंगन में ठाढे आय लखिता लेति बलाय सूर स्वामिनि राजे आनंद के भरतें ॥ १६६ ॥ राग बिभास ॥ तेरे नयन लोने री जिनि मोहे श्याम सलोने । अतिही दीरघ बिसाल बिलोल कारे भारे पिय रसरिझये कोने ॥ बदन ज्योति चंदहुं तें निर्मल कुच कठोर अति ठोन बोने । तान सेन प्रभुसों रति मानी कंचन कसोटी कसोने ॥ १६७ ॥ राग बिभास ॥ हों गई बछरा मिलावन श्याम ने बान मारी । धरनी मुरछि परो सुनि सजनी तनछू की सुद्धि बिसारी ॥ सखी एक जब जल मुख धेायेा क्रम क्रम अंचरा सम्हारी । सूरके प्रभु बरजो इन अंखियनि ते सबही तें न्यारी ॥ १६८ ॥ राग बिभास ॥ चले उठि कुंज भवन तें भोर । डगमगात लटकति लर छूटो पहरें पीत पटोर ॥ अरुन नयन आलस जुत घूमत बिधु मुख चंद चकोर । गिरि गिरि परत गलित कुसुमा बलि सिथल शीश चकडोर ॥ लपटित बसन रसन मनि भूषन कुण्डल सों लट छोर । परमा नन्द मिली गिरिधर सों रससागर झकझोर ॥ १६९ ॥ राग बिभास ॥ गूजरी शशि बदनी सुन्दरि जेावन वाली । सिर कनक मटुकिया गेारस बेचन चाली ॥ * ॥ छंद ॥ * ॥ चली दधि बेचन किशेारी कुंवरि हैं गज गामिनी । नख सिख रूप अनूप सुन्दरि दसन द्युति मनु दामिनी ॥ श्यामा प्यारी कुल उज्यारी बिमल की रति ऊजरो । जेावन वाली सरस सुन्दरि चंद बदनी गूजरी ॥ वृंदावन भीतर श्याम मनेाहर घेरी । हेा तुम्हें जान न देहों लेहों दान निवेरी ॥ छंद ॥ लैहों दान निवेरि अपनेा करों नंद दुहाइयां । जाति चेारी बेचि नित प्रति आजु पकरन पाइयां ॥ बेालि ग्वाल लुटाय दैहों दधि करो जेा भावेमना । घेरी मनेाहर श्याम सुन्दर ग्वालिनो

वृन्दावना ॥ छांडहु मेरो अंचरा हठ जिनि करहु गोपाला । सुन्दर मनमोहन प्यारे अवार हेात नंदलाला ॥ छन्द ॥ नंदलाल हित अवार प्रति छिन सघन बनमें अतिडरों । मेरे संग की सब बेचि बगदी कहाजतर घर करों ॥ कब कब तुम्हारो दान लागे बादिअगरो ठानहु । बलि जांउ मानेा कह्यो मेरो लाल अंचरा छांडहु ॥ अति चतुर ग्वालिनि अंतर नेह बढायेा । श्याम मनोहर जिय को प्यारो पायेा ॥ छंद ॥ पायेा मनोहर श्याम सुन्दर सुरत सुख मानेा रली । नवनेह अति रस रंग बाढ्यो दान दे उठि घर चली ॥ कहत श्री हरि दास नागर कामिनो गुण सागरो । जिनि रसिक श्री हरि राय मोहे अधिक चातुर नागरो ॥ १७० ॥ राग बिभास ॥ दधि मथति ग्वालि गति भेद सोठाढी जोबनि मदकि झुकति नाग लोक लों बैनि रुरकत कटि छवि बाढी । तन सुख सारि घन वेलिको लहंगा कंचुकी खमकि बनी उरोज गाढी ॥ सूरको प्रभु तहां फिरि फिरि देखत मानों सांचे भरि काढी ॥ १७१ ॥ राग बिभास ॥ अतिहि अरुन हरि नयन तिहारे । मानहुं रति सेा भए रगमगे करत केलि पिय पलक बिसारे ॥ मंद मंद डोलत शंकित ह्वै सेाभित मध्य महा रतनारे । मानहु उकसि कमल संपुट में उडिन सकत चंचल अलि बारे ॥ हिलि मिलि तन नगनरैनि जनावत रति रस चुगत भ्रमत अनि यारे मनहुं सकल जुग जीति करन को कांम वांन खरसार संवारे ॥ अट पटात अरसात जुगुल पुट कहुं घूंमत कहुं करत उघारे । मनहुं मत्त मरकत मनि अंगन खेलत खंजरीट चट कारे ॥ बार बार अवलेाकि कुरखियन कपट नेह मन हरत हमारे । सूरश्याम देखत सचु पावत दुख मेाचन लेाचन रतनारे ॥ १७२ ॥ राग बिभास ॥ उठे प्रात तेातरात कहत तेातरी तेातरी बात मांगत हे दधि माखन खाइहें जसेादा मात । बज तनूपुर सुहात नाचत चैलेाक नाथ देखत सब गेापी ग्वाल नयननि नाहिन अघात । नंद सुवन मुख दाई चिरंजीवारी कन्हाई जीवति मुख चाहि चाहि या निधि को माई । बाल केलि देंखि आई रेाम रेाम सचु पाई श्रीबल्लभ हरखि निरखि लेतहें बलाई ॥ १७३ ॥ राग बिभास ॥ कटि पीत पट मुख मुरली मुकुट सीस कांख लकुट नटवर को चटक । तिलक टाटक कान कुंडल कपेाल बनमाला की लटक तामें चटक मटक ॥ बपु घन घटा तामें मेाती हार बग ठठा सुंदर सुभग पग यावरी खटक । व्रज कीभटक दधि चेारि की सटक ऐसी सिंह मूरति पुनि मनकी अटक ॥ १७४ ॥ राग बिभास ॥ जेालों हरि आपुन पेान जानावै । तेालों सब सिद्दांत स्मृति जुत पढे सुनेते न आवे ॥ सुनि बिरंचि नारायण पें नारद सों कहि दीनों । नारद कही वेद व्यास सों आपुन खेाजन कीनों ॥ वेद व्यास औषध की नाई पढि मन ताप नसायेा । तिनपै सुनि शुकदेव परीक्षित राजा कोजु सुनायेा ॥ जद्यपि नृपति सुनी व्रजलीला दसम कह्यो शुक देवा । सर्वात्मा भावन उधर्ज्यों ताते करीन सेवा ॥ श्रीभागवत अमृत रस मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम । करि आवर्ण दूर व्रज जनके हाथ दिये पुरुषोत्तम ॥ सज्या अरु सिंगार भेाग रस श्रीवल्लभ प्रकटायेा । करीकृपा अपने जीवन पर जगजीवन स्वाद चखायेा ॥ १७५ ॥ राग बिभास ॥ गेाबिंद दधिन बिलेावन देहि । बार बार पाइ परति जसेादा कान्ह कलेऊ

लेहि ॥ बांधि कटि पट क्षुद्र घंटिका मुदित नंद की रानी । कंचन चीर हार उरमणि गण बलय धेाष मृदु बानी ॥ एक एकत हेाइ देव दैत्य सब कमठ मंदराचल जानी । देखत देव लक्षमी कांपीं गहत गेापाल मथांनी । कृष्ण चंद्र व्रजराज रमा पति भूतल भार उतारे । परमानंद दास को ठाकुर व्रज बसि जगत उधारे ॥ १७६ ॥ राग बिभास जान्यों जान्योंरी सयन तेरो प्राण श्वर सों ते कियेा मान भयेा है बिहान । पियको तेरोई ध्यान मेरी सिख सुनि कान जामें बसे प्राण तासों के सेाधें गुमान ॥ सुनिरी मुरली गान आछि नीकी मीठी तांन संकेत स्थलों रचो कुसुम बितांन । सूरदास प्रभु जान सिरेामनि मांनि मदन मेाहन तेरे सुखको निधांन ॥ १७७ ॥ राग बिभास ॥ पिय हृदय राखत ही निसिदिन आजु कहां तूं अति रहीरी । बिच बिच नाहीं नाहीं करति सब तियन में तुमसी कठिन कहीरी ॥ मेागसेव पर कीजे कृपा ऐसी मति तेरी किनहूं धेाई सहीरी ॥ रसिक प्रीतम सों मिलि पर भात अति रुचितेा सेानि बहीरी ॥ १७८ ॥ राग बिभास ॥ बारेा कन्हैयारी मेाहि भावे । अच्छी मीठि तांन गावे मुरली बजावे नेंननि मांझ रिझावे ॥ निरखि परखि देखि जियको भरम गयेा सांवरी मूरति मेरे सर्बस चुरावे अतिहीं अचगरेा मेंन को प्रभु प्यारेा सब गेापिन को नाइक कहावे ॥ १७९ ॥ राग बिभास ॥ आखिरी पीरी पह भई है निकसि ठाढि भई द्वार कुंज ऐंनके । नथ खेंच्यो बदन निरखत ही जीमों जान्यों चंद्र माताते धेाखे रैनके ॥ नैन कुरंग जानि जीयमें आयेा सत भाव आधेा बिंबदुति आधेा इतरयेा चेन के । सूरदास सखि श्याम मेाती माल तारागन और उपमा को देखि मदन मेाहन पीय संग सुख मेंन के ॥ १८० ॥ ॥ * ॥ अथश्रीजमुना जीके पद ॥ * ॥ राग बिभास ॥ तूं जमुना गेापालहि भावे जमुना जमुना नाम उच्चारे धर्म राज ताको न चलावे ॥ जेजमुना को जानि महातम जेजमुना जल पांन करे । जेजमुना अवगाहे निसिदिन चित्र गुप्त लेखेा न धरे ॥ पद्म पुराण कथा यह पावन धरनी मुख बाराह कही । तीर्थ महातम जानि जगत गुर इह प्रसाद परमा नंद लही ॥ १८१ ॥ राग बिभास ॥ देाउ कूल खंभ तरंग सिढो मानेा श्रीजमुना जगत वैकुंठ निसेनी । अति अनुकूल कल्लोलन के भर लिये जात हरि के चरण न सुख देनी ॥ जनम जनम के दुष्कृत दूर करनी काटत करमधरम धारमेनी । छीत स्वामि गिरिधरन पियारी सांवल गांत कमल नैनी ॥ १८२ ॥ राग बिभास ॥ निरख हीं मन अति आनंद भयेा प्रातहीं देखि प्रभाकर कन्या । जल परसत ही सकल अघ भाजे ज्यों हरि देखि हरिन की सैन्या ॥ और जीव को और नकी गति मेरी गतिहेा तुमहि अनन्या । व्रज पति को तुम अतिहि पियारी तुम संगम ते सुर सरि धन्या ॥ १८३ ॥ ॥ राग बिभास ॥ मेरे कुल कर्म कलि मुखनासन देखि प्रवाह प्रभाकर कन्या । वह देखेा पाप जात जित तित बहे ज्यों मृगराज देखि मृग सैन्या ॥ दै पय पान पुत्र लों पेाषत जननि कृतार्थ धन्य वहे धन्या । दियेा चाहि गदाधर जूपे चरण शरण अति प्रीति अनन्या ॥ १८४ ॥ * ॥ अथश्री गंगाजीके पद ॥ * ॥ राग बिभास ॥ आगे आगे रथ भगीरथ जू कों चल्यो जात पाछे पाछे आवति तरंग रंग भरिगंग । झल झलात

अति उज्जल जलकी जोति अवनिरवनि मानों सीस भरे मोती मंग ॥ जाइ परसे है भूप कबके भसम रूप ठोर ठोर जागि उठे ऐसे होत सलिल संग । नंददास मानो अग्नि के जंच छूटे ऐसे सुर पुर चले धरे देव अंग ॥ १८५ ॥ राग बिभास ॥ चर्चरी ॥ जै भगीरथ नंदनि मुनि चय चकोर चंदनि नर नाग बिधुध बंदनि जै जन्हु बालिका । बिष्णु पद सरोज जासि ईस सीस पर बिभासि त्रिपथ गाथ पुण्य पाथ पाप छालिका ॥ बिमल बिपुल बहसि बारि सीतल त्रै ताप हारि भंवर बर बिभंग तर तरंग मालिका । निज जन पूजो पहार सोभित शशि धवल धार भंजन भव भार भक्त कल्प थालिका ॥ निज तट बासि बिहंग जल चर थिर पशु पतंग कीट जटित ताप शशि रस रस पालिका । तुलसी तव तोर तीर सुमिरत रघुबंस बीर बिचरति मति मेहगेह महिष कालिका ॥ १८६ ॥ राग बिभास ॥ श्री गंगा जग तारन को आई ॥ भगीरथ तपस्या कीनी शिवले सीस चढाई । पापी दुष्ट अजामिल गणिका पतित परम गति पाई । परम पुनीत प्रीति ब्रह्मादिक बेद व्यास मिलि गाई । नाम लेत तब ध्यान धरत है तारत बार न लाई । बिप्र गदा धर भरद्वा जकुल केवल गंगा सहाई ॥ १८७ ॥ राग बिभास ॥ जोजन गंगा गंगा कहे । जनम जनम के कोटि दुकृत सब छिनही माझ दहे । स्नान करत ते मन बांछित फल ततछन तुरत लहे । ब्रजपति की प्यारी संगम ते बहु सुख देन चहे ॥ १८८ ॥ राग बिभास ॥ * ॥ श्री बल्लभ गुण गान ॥ * ॥ प्रात समैं श्री बल्लभ सुतको श्री बिठल प्रभुको उठतहीं रसना लीजिये नाम । आनंद कारी मंगल कारी असुभ हरन जन पूरन काम । यह लोक पर लोक के बंधूको कहि सकत तिहारे गुण ग्राम । नंद दास प्रभु रसिक सिरोमनि राज करो श्री गोकुल सुख धाम ॥ १८९ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समै श्री बल्लभ सुतको पुण्य पबित्र बिमल जस गाऊं । सुंदर सुभग बदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग हगन सिराऊं । मोहन मधुर बचन श्री मुख के श्रवणन सुनि सुनि हृदे बसाऊं । तन मन प्राण निबेदि बेद बिधि यह अपन पोहो सुफल कराऊं । रहो सदा चरणन के आगे महा प्रसाद को जूठ पाऊं । नंद दास यह मागत हो श्री बल्लभ कुलको दास कहाऊं ॥ १९० ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं श्री मुख देखन को सेवक जन ठाढे सब द्वार । जै जै जैश्री बल्लभ नंदन दरसन दीजे परम उदार । सुंदर श्याम सुभगता सीवा मेघ गंभीर मधुर गिरिधार । नैनन निरखत होत परम सुख श्रवण सुनाए बचन सुढार । श्रवण मंगल जग भवन मंगल रस पुरुषोतम लीला अवतार । जन भगवान आय बलिहारी अगणित लीला महिमा नहि पार ॥ १९१ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं उठिके जो सदा श्री बल्लभ नंदन के गुण गैये । फिरिकर जोरि रूप चिंतन करि उनहीं के चरणन सिर नैये । सब साधन के सारइहै पद बारबार समुझैये । कहे हरि दास मानि सिख मेरी श्री बिठल के दास कहैये ॥ १९२ ॥ राग बिभस ॥ प्रात समैं उठिके जो सदा श्री बल्लभ नंदनके गुण गाऊं । श्री गिरिधर गोबिंद जूको नाम ले श्री बाल कृष्ण को शीस नवाऊं । श्री गोकुल नाथ जूको प्रणाम करि रघु नाथ जू देखे नैन सिराऊं । श्री जदुनाथ जू संग

खेलत घनश्याम जू इनकी प्रीतिहे कहा सिराऊं । यह अवतार भक्त हित कारन जो गाऊं तो परम पद पाऊं । बिनती करि करि मागत व्रजपति निसदिन इनके दास कहाऊं ॥ १९३ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं सुमिरो श्री बल्लभ श्री बिठलेश परम हित कारी । भव दुख जात भजन सुख पावत कलिमल हरन प्रताप महारी । और छोडि शरण नहिं कबहूं बांह गहेको लाज बिचारी । आन आसरो छाडि भजो पद द्वारिकेश प्रभुको बलिहारी ॥ १९४ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं श्री बल्लभ सुतको परम पुनीत बिमल जस गाऊं । अंबुज बदन सुभग नैंना अति श्रवणनले हिरदे बैठाऊं । जब जन निकट रहत चरणन तर पुनिपुनि निरखि निरखि मुख पाऊं । बिष्णु दास प्रभु करो कृपा मोहि बल्लभ नंदन दास कहाऊं ॥ १९५ ॥ राग बिभास ॥ बिसद सुजस श्री वल्लभ सुतको प्रात उठत अनुदिन नव गाऊं । कलिमल हरण चित्त धरि राखूं उपजे पर सुख दुःख बहाऊं । भक्त भंवर औ भक्ति रस जाने माने मनसो तिनहूं को छाऊं । छीत स्वामि गिरिधर के सुमिरत अष्ट महा सिधिन निधि जो पाऊं ॥ १९६ ॥ राग बिभास ॥ श्री लछमन सुत कमल प्रफुल्लित प्रकटे श्री वल्लभ कुल को दिनेश । आनंदे तिहुं पुरके सब जन आनंदे शिव सनकसुरेश । श्री भागवत प्रसार करनको निज जन सबको अति सुख देन । जन चैलोक जाइ बलिहार सीतल भए मुख निरखत नैन ॥ १९७ ॥ राग बिभास ॥ गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लीला सुनिन सुबोधिन साधु संग पायो है । सेयो न सबाद करि धरि अध धरि हरि कबहुंन कृष्ण नाम रसना कहायो है । बल्लभ श्री बिट्ठलेश प्रभु की शरण आय दीन ह्वै के मूढ छिन शीसन नवायो है । रसिक कहाय अब लाज हू न आवे तोहि मनुष शरीर धरि कहा धोकमायो है ॥ १९८ ॥ राग बिभास ॥ गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मंडली न जाय के । धायो न धमकि द्वंदा बिपिन के कुंजन में रह्यो न शरण जाइ बिट्ठलेश राय के । नाथ जू न देखि छक्यो छिनहूं छबीली छबि सिंह पोरि परेव नाहि शीसहूं नवाइ के । कहे हरि दास तोहि लाजहूं न आवे जिय जनम गवायो न कमायो कछु आइ के ॥१९९ ॥ राग बिभास ॥ रूप रस माधुरी भरेव सलोनो पिय मुख देखें प्रभात बात कछू कछू रतिरी । अरसात गात औ जम्हात मिले जात दृग उर भुज ग्री बाहु बिरस उभरतिरी । कुंडल कपोल अधर अरुन रहे खसि अंग अंग रंग सोत रंग ताइ रतिरी । प्यारे लाल बल्लभ रसिक परतन मन रिझि रीझि अंखियां न्यो छाबरि करतिरी ॥ २०० ॥ राग बिभास ॥ भोरही श्री बल्लभ बल्लभ कहिये । आनंद परमानंद श्री कृष्ण मुख सुमिरे अष्ट सिधि पइये । और सुमिरो श्री बिठल बिठल श्री गिरिधर गोविंद द्विज बर भूप । श्रीबाल कृष्ण गोकुल पति रघुपति जदुपति नवघन श्याम स्वरूप । पढो सुसार श्री बल्लभ बचना मृत जपो अष्टाक्षर मंत्र करि नेम । अन्य श्रवण कीर्त्तन तजि निस दिन सुनो सुबोधनी धरि जिय प्रेम । और सेवा सदा नंद जसोमति सुत प्रेम भक्ति सहित जिय जानि । अन्या श्रयेसमर्पित लेनो असद अलाप असद संग हानि । नैननि निरखो श्री कालिंदी और निरखो सुखद

व्रज धाम । यह संपति श्रीवल्लभ ते पैये हरि जन नहिं काहू सो काम ॥२०१॥ राग बिभास प्रातहिं लीजे श्री वल्लभ नाम । श्री विठल श्री गिरिधर गोविंद श्री बाल कृष्ण सुख धाम। श्री गोकुल नाथ अनाथ के तारन श्री रघुनाथ परिपूरन काम । विष्णु दास समिरो सुंदर घन श्याम ॥ २०२ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समैं नंदनंदन श्यामा देखे मैं आवत कुंज गली । नव घन श्याम तरुण दामिनि मिलि राजत रूप अनूप अली । लटपटि पाग श्रोस कर मुरली खोवन घूमत भांति भली । निथलित चार मरगजी अंगिया काम कामिनि देखि छली । चार जाम निसि जागत बीती उर उमग्यो अनुराग बली ॥ कज्जल अधर नैन बीरी रंग मदन सपनि की चमूं दली ॥ सूर बदन पंकज रस पीके अलक मधुप की पांति चली ॥ प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखति तरनि उदै जैसे कमल कली ॥ २०३ ॥ राग बिभास ॥ उनींदो आंखें रंग भरी दुरत नहीं पट ओट ॥ मीन खंजन मृगहीन भएहें और कमलदल बारि डारों लखकोट । दुरत मुरत झपकत अनियारी चंचल करति हैं चोट ॥ चतुर बिहारि प्यारि की छबि निरखत बांधत सुख की पोट ॥ २०४ ॥राग बिभास ॥ पल झपकि झपकि आवत उनींदी सखियां भईं । अरब राइ उठे पट पलटि परे पहफाटन को नदई ॥ नेंक करो बिश्राम बाम बोलिए मेरेही धाम हों करों टहल जोतुम सों है चोपनई । सकुचो जिनि सांची मानिये चतुर बिहारी गिरिधारी बियजे नई रिझवार रिझई ॥ २०५ ॥ राग बिभास ॥ सपनेहूं न बिछुरिये हो हरिसों मन यों बाछे । श्याम सुंदर बहु नायक सुखदायक सबहिन को मोहि कबहूं न पूछेरी आछे ॥ नंद नंदन जु अनत रसकीनों काम जराव तरी सोति साल दूजे ताछें । तान सेन प्रभु के बिछु जरद भई मोहि रहो रन आबेरी जो कोऊ पाछे ॥ ॥ २०६॥ राग बिभास ॥ प्रात समें उठि आये हो मेरे नंद नंदन आलस भरे नीके ॥ पीक कपोल अधर मसि सोहत बिन गुन माल बिराजतहीके ॥ पाग लटपटी भाल महावर पगपरसेतुम काहू तीके । छीत स्वामि गिरिधरन भले तुम और बिराजत बंदनटीके ॥ २०७ ॥ राग बिभास ॥ भोर भये नव कुंज सदन ते आवत लाल गोबर्द्धन धारी । लटपटि पाग मरगजी माला सिथिल अंग डग मग गति न्यारी ॥ बिन गुन माल बिराजत उर पर नख छत देज चंद अनुहारी । छीत स्वामि जब चितए मोतन तबहीं निरखि गई बलिहारी ॥ २०८ ॥ राग बिभास ॥ भोर भये आये मेरेतुम आज कहां निसि बसे नंद सुत । कहा कहों अंग अंग की सोभा पीक कपोल नयन आलस जुत ॥ कहा निहोरत हौ मोकों अब जिनि परसो मोहि चले जाउ उत । जानी बात तिहारे मनकी छीत स्वामि गिरिधरन बड़े धुत ॥ २०९ ॥ राग बिभास ॥ लला जिनि मेरी बांह गहो । मारग में लोगु देखे दूरि ठाढे रहो ॥ मन में है कोन बात सोई क्यों न कहो । ढीठो कहा देत ऐसी नेकु लाज लहो ॥ कहेंगी जाइ राय जू सों बाट रोकत हो । कैसे हम आवें जाहिं पनिघट पथ हो ॥ तुमहिं तो कछु नहीं बिचारु खरकाई बसहो । रसिक प्रीतम छांडि देहु हंसत हैं सबहो ॥ २१० ॥ राग बिभास ॥ पैंजनी पकर मौन रही चूरी चुपकर सुनिये नवैन व्रजराज व्रजनारी के । सांझही ते सेए कि

धेारि समै समेाएक है कालदास को रजानै चरित्र बिहारीके ॥ करन के मनेारथ करन करन चारु चरन के संगी रंगी अति सुकुमारिके । जानिये न देहु हाहा रजू सह मुखरहैमुखरहै मूंद काहे नूपुर प्यारीके ॥ सेाध लेत ननदजेठानी देवरानी मिलि सेाइबे के मिस उसास लेत सास है । कालिदास केाऊ रूप रेख देख पावत नयेां हीं उन मानीं काम केलि को बिलासहै ॥ आली बनमाली केानखाली परे एक दिन देखे बिन किये जात कासेा उपहास है । दूती संगरसिक मुरारि को पहुंचि रहै नारि सुकुमार जेा बयार संग बासहै ॥ स्वामी की कहा है सबनखतन जाई जाके भीतर सुहाई भांत भांत के बहुत है । कालिदास लागे पुण्य पैानके जकेार तें आए चहूं ओरन ते छाय इत उत है ॥ जगत जलधि मध्य जंबु दीप रची बिधि सेा सम कासी ताके गुन अद भूत है । पंच केाशभर जाको केास भर भर सबजीवन को पुंज फेात पलमे मुकत है ॥ ॥ २११ ॥ राग बिभास ॥ चूमेा कर कमलए अमल अनूप रारे रूपके निधान नेक मेातन निहारिदै । कहैं कालिदास मेरे पास हंसि हेर हरिधरि माथे मुकुट लकुट गहि डारिदै कुंवर कन्हैया मुख चंदकी जुन्हैयानेक मेरी ओर लेाचन चकेारन बिचारिदै । मेरे कर मे हदी लगी है नंदलाल मेरी लट अटकी है नेक बेसर सुधारदै ॥ २१२ ॥ राग बिभास ॥ प्यारो तन भूम तामै रूप मार सागरहै जेावन गंभीर मुख सेाभा को धरति है । दीपत तरंग नयन बारिज से सेाभित है उरग सी बेनी जिय देखत डरत है ॥ कहै कालिदास गाल गाडन भवर मध्य लाल मन बाह तामै दैार पसरत है । बेसरि को मेाति मानेां कर है सिकंदरको बार बार देाल मने सेाकरतहै ॥ ११३ ॥ राग बिभास ॥ प्यारी चलेा किन लाल न पै एरी लालन को मन ताप सिरावन । तूं केारी है मैतो दूती हों लालकी आई है क्यों इततेाको बेालावन ॥ ठाढे कहां हरि है जमुनाटत छेाडेकबबेर भई बेर मेा आवन । नीके हैं श्याम कहें सह जाकबि पाई निकाई कहां मन भावन ॥ द्वादस नयन एका दस से कुच प्यारो कहां दसहै हमते । नवसेवने भूपग आठलसै न हिसात केाऊ षट हैा तुमते ॥ मनि पंचसेा मध्य कटी चित चारु जथा बिनु बारहथा बिनुते । थटिवै रचित न देाउमति छेाडि कहा रहिएकसी हैहठते ॥ २१४ ॥ राग बिभास ॥ केाइला भई केाइल बुरंग तन कारेा कियेा कुठ कुठ के हरि कलकलंब दहली । जर जर जंबूनद अधरंग बिद्रुम भैाहिया फाट दाडिम तुचा भुअंग बदली ॥ एरी चंद मुखिते कलंकी कियेा चंद अब बेालै ब्रजचंद वैकिसेार आय अदली । छार सीर डारै गज राजवै पुकार करै पुंडरीकबूडयेारी कपूर खायेा कदली ॥ नवलन बेाढाऊह औाढनेा न बेाढ जानै पीय पास पौढबे को सार कहा जानिहै । मेरे लायबे की लाज कीजै आज बल जांव आतुर नहूजै इह अबहीं अयानी है ॥ ऊह रस रीत कहा जानत है मेरे लाल रसहीमे रसही मेाबातें कहे मानिहै । मैनासो पढाई जब पहर अढाई परतीत मैं बढाई तब केहूं केहूं आनि है ॥ २१५ ॥ राग बिभास ॥ आजलौ अछूती छाती काहू के नरंग राती जेावन के मद माती मेाठे मन रेानेकी । खंजनसे नयन रारी चूनरी औचुरी राती देख देख सकुचाती बेाल नाहि मौनेको ॥ केतिक मनौ तोसों मानि यह चंदमुखि है तेाचित

चोर नंदलाल बडे भौने को । झूठ नाहि बोलत जदुनाथ को सोबार बार याको ठग लाई हों वियाही बिन गौनेको ॥ मेरीसी जौं करि मेरीसी आंखिन जौं तै बिलोकही जौ करि गाढो । आरेरी आय चितै क्यों न देख यहैचित चोर चितौत है ठाढ ॥ ब्रह्म भनै माई कांन्ह के भौव घरबाहर बैरीको बारिद बाढो । यहै मुख देख कहै दुख हाईरी लाज करो और घूंघट काढो ॥ २१६ ॥ राग बिभास ॥ तिय सांझ समै हरि आवन जानि सिंगार सवारि महा सुख दै । अति आतुर दोबार निहारअटा रवि चार मनों भव चित्त मुदै ॥ मणि बेदि प्रकास प्रभाकर नाथलखेवखवानहि होतुजुदै ॥ निसकू दिन कोसुख पाय भले चकई इमि चाहति चंदउदै ॥ २१७ ॥ राग बिभास ॥ बिरह अनल बरी खरी प्रेम मन छरी चट पटी परि बिन हरि अकुलाति है ॥ सुध बुध हरि कुल कान लोक लाज टरी नाथ बित धरो आस अति बिलखात है ॥ हरि घरि दीरघ उसास लै उदास नरी खगि ठग मुरि खेद कंप सवगात है ॥ नैन जल चलै एरी पावसकी झरी जैसे रेत भरी घरी चलि जात दिनरात है ॥ २१८ ॥ राग बिभास ॥ सुख नेंह नही सुध देह नहीं तजि गेह वही नरही अटकी ॥ टकि एकत कैकरि टेक बिबे कन नक लजे हटकी छटकी ॥ चकि कै तकिकै छकते छकिकै थकिनीथ चितै सुखमा नटकी ॥ फटकी मनतै झटकी तनतै भटकी अखियां उटकी अटकी ॥ सुंदर सरो वर मै वांके है कमल किधों फूलन रंगि स कैसे नए नए जात है ॥ दौरे मधु छके मीन देखत दुरत जल कैधों खेलै खंजन खरे सैन चुगात है ॥ कैधों मृगनाह सब शोभ नाद नाद रहे किधों अलि गुंज माल केतुकी सहात है ॥ नाथदून ग्वारि सो आछ काहीं देखि कांन्ह लाज सील जाति नैन खाज सो लजात है ॥ अथ बारह मासा लिखते ॥ चैत बर्णन ॥ सुफल फूल सोहैं हो बेल मो है लपट नेंद्रमन सोफ फलित जहां है ॥ भवर मत बोलें करै खग कलोलै सविसा थ डोलै रसिकरस महा है ॥ नही गरम सीतल पवन त्योंवि विध बल अचल साज सुख के सुखिसभ तहां है ॥ अछो नाथ मानों सुखद चैत जानों धनुष से मदन दृढ किर को कहां है ॥ बैसाख बर्णन ॥ विमल रूप सर है अचल प्रम थर है बहन नाल कर नैन परमा नर्लजै । कछू कंटला जैन चपच राजै चितै मीन लांव ज्ञानी रजीजै ॥ मुदित देखि साधों तरन प्रीति बाधों सहित नाथ साधो सुमकरंद पंजै तुमे तो पहुप केर है नेंम एकै मधुप कंज मेरे दृगन बास कीजै ॥ जेष्ट बर्णन ॥ तरन के दवन में अवनके तवण में निक सि कों भवन तें दिनें रैन जानो ॥ जहां सदन सीतल तजै तिथन पीयख छुठे जंच जख रस बरस मेघ मानों ॥ सघन कुंज बन बनतरं जागमन गनसखि साथ बन कै बनों के ला ठानों ॥ तजो द्रोह डरतें बसो साथकर नाथ सुख जेठ केहो कहांलो बखानों ॥ आषाढ बर्णन ॥ घटा श्याम सागर लहरि दौर बादर गरजफेन धुरवा अनल बिजसोहै ॥ सुमन भूम मनि है खसै देव धन है सो वोहित भरो छबि सुध दृष्टि मोहै ॥ करि मद गवन ऐन हि अकर दवन छाड कहि ये चखन डरन मारुत समो है ॥ सलिल जंतु खग नेंह गंभीर पग नाथ आसाढ मानों उदधि है लसोहै ॥ सावन बर्णन ॥ सुभीतै अचल कंदरा बारि कुंजै सदन फूल फल चारु हरियै वसुंधर ॥ बरस मेह बूंदै छूटै जंत जख त्यों पुहुप चुन्य

हरनी रसा रंग पुरंदर ॥ गरज खग भंदर नाद बाजै बधू इंदवा माख सैज्यों सुमन को धनु धर ॥ प्रिया लै तडित साथयै श्याम घन नाथ सावन बनो है मदन बाग सुन्दर ॥ भादों वर्णन ॥ लसै दंत बग पंत मारुत महावतन मैं है सोखर रगा चांप राजै ॥ रुधिर सो वलित अंकुसै दामिनो त्यों तजै सुंड जल मद झरै मेम छाजै ॥ गरजबोर धुर बाधु जाचित कंपै देखि गड़ हार खग मैन संग्राम काजै ॥ बनों नाथ सुख सैन सज देखिये मोसों भादो सघन हस्ति विराजै ॥ आश्विन वर्णन ॥ सुमन सेत जेतेधरा मध्यते ते छिछाय किधों भूमही राख सैसो ॥ सुधा दृष्ट करपूर कैसुर सरीफैल पर परो पच रूपा बिभैसो ॥ किधों नाथ लैकर खरी सारदा जोरि अस्तुत लिखो ऐन दिराधजे सो ॥ विमल चांद आश्विन विमल चांदनी है विमल रूप ऐसो विमल साज तैसो ॥ कार्त्तिक वर्णन ॥ गरम भौन जोवन सो अंगअंग सोवन सने हो सगुन जोति सुख दायका ॥ चाहि शिर पर बसै श्याम तम नासक अभिराम सायक मदन के अनल पायका ॥ बाट कटतें बुझै रात रस में जगै कीट शोचै भसम के करन खायका ॥ नाथ नेहन घटै छवि प्रकाश न मिटै दीप कार्तिक किधों जूथ नैनायका ॥ मार्गशीर्ष वर्णन ॥ पावन सरस जे अपावन सलिल न्हात पावन रै संग चहै चाक मोहै ॥ जसै को कबिरहो लम्बै नायका वंदनायक कुंदचित बिग सोल सोहै ॥ बढै रैनज्योंदिढै शीत त्यों त्यों सुसंजोग सुख में बिनागनका है ॥ बडी चाह कर कै बडी बार लो नाथ छिल मिल रहो नेम अगहन गहे है ॥ पूस वर्णन ॥ पौष मास तन व्याप त शीत ॥ मिल है कब सांवरे मीत ॥ बिन पीय को जाडन जाय ॥ ससक ससक सारप रैन बिहाय ॥ हरि बिनु मोहि नेंवन सुहावें ॥ बिरहा धूम अतही मंचावें ॥ माघ वर्णन ॥ छयो शीतकर शीतकर और देखो बलि भीतकर कोकुहिर जो छयो है ॥ छयो सूरयों सूरकों तेज करमंद डर कै करन शीघ्र नछपि गये है ॥ बसें घरनिमुंदन सबै मारके संक तू लो अतुलो कवच तन दयो है ॥ नहीं कंप छूवै अति शिशर माघ मास अहो साथही नाथ यह प्राण लयो है ॥ फागुन वर्णन ॥ बने बन सुमन अलिसघन घन चहूं जुथ बन बन तिया दामनीसी हसै ॥ छबिन दिसि उमड रंग बरस मेघ पिचकागर जगान खग आन उर में बसै तिय गुलाबन भरी इंदु बामा छई वेंब तै तोप बन पथि चखत्तसै ॥ नाथ ऐसीसमै कौन मग पग धरै मांस फागुन की ऐसा ज पावस लसै ॥ इति बारह मासा समाप्त ॥

॥ अथ स्फुट लिख्यते ॥ राग विभास ॥ आनन तडाकर पराजत गभीर नीर सरिस सेवारस मंकूल केस छायो है ॥ भृकुटी भंवर पांति मनों निस रात जात तें उगत रंग आड अधिक सोहायो है ॥ मीन सेन वीन नैन चारा ले करन फूल तावों झुक झुक आवे मिसल लखि पायो है ॥ लज्जित निचो झिन बीच फरकत ऐसे मानों मन मथ घेर जाल में बझायों है ॥ लागि मन मूठ और ऊठ सीलगी है उर और ह्वै गई सुधर हीन सरीर है ॥ है है गयो मोहि सो तो पूछत बहै है कोउ केत को कहै हैन सुहै कैसे लगीर है ॥ जाहिल गै प्रेत ताहि केतिक दुख देत याके लागे जिअतयाते अधिक अधी रहै ॥ एरी मेरी बीर मेरी छाती पर पीर तबहीं मिटैगी जौपै छातीपरपीर है ॥

॥ रागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तनान्तर्गत राग बिभास समाप्तम ॥

॥ अथ राग पंचम प्रारंभ ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

जागे हो रैन सब तुम नयना अरुन हमारे । तुम कियो यधुपांन घूमत हमारो मन काहे तें जू नन्द दुलारे ॥ नखछत पिय अंग पीर हमारे उर कारन कोन पियारे । नंद दास प्रभु न्याय श्याम घन वरसे अनत जाय हमपर झूम झुमारे ॥ १ ॥ राग पंचम ॥ आलस उनीदे नयन लाल तिहारे कहां तुम रैनि बिताये । पीक कपोल देखियत है पिय अधरनि अंजन लखाये ॥ जावक भाल उर बिन गुण माल हृदय नख चिन्ह दिखाये । नंद दास प्रभु बोल निवाहे भले भोर होत उठि धाये ॥ २ ॥ राग पंचम ॥ प्यारी तेरे आनन दृग आलस जुतराजत रसमसे । नव किशोर अंग संग रैन रंग रसे ॥ सिथल बसन दसन अधरन छत लसे । पीक छाप जुग कपोल पिय मुख लगि हंसे ॥ मैं जाने पहिचाने बचन प्रीतम गुण ग्रसे । पिय बिहारी लाल ललित उरजन बिचबसे ॥ ३ ॥ ॥ राग पंचम ॥ कहो तुम सांचो कहांतें जू आये भोर भये नंदलाल । पीक कपोलनि लागि रही है घूमत नयन बिसाल ॥ लटपटि पाग अटपटी बंदसि उरसि मरगजी माल । कृष्ण दास प्रभु रसवस करलीनो धन्य वहै व्रज बाल ॥ ४ ॥ राग पंचम ॥ कौन पुण्य करी नारि हूं अवतरी श्री हरि दीन भई मान मागे । जहनी अवि गती अमर जनन बलहे तेरे कमला बर कंठ लागे ॥ जगिन जागे करी जोग ध्याने धरी बहुतए आदरी देह कष्टे । तोहे तेहरी स्वपने न पेखिये प्रेम हष्टे ॥ प्रेम सिंहासन सहज सोहिये सदा भुवन बैकुंठ तनु मन्य भावे । तेहथी अधिधिक श्रेमंदिर माहेरु प्रेम प्रीतांबरो पलंग आवे ॥ भक्त बच्छलतनू बिरद पोते वहेएम कहे समथ बेदबाणी । नर सैयोनो स्वामी सुख तणो सागर को धों करुणा मुने दीन जाणी ॥ ५ ॥ राग पंचम ॥ आज

उजागरा अंग आलस भरयो माहेरे मंदिर केम आव्या । भुवन भूल्याबर भामिनी भोगि या साथे साहे लड़ीसेंन लाव्या ॥ पीत पटबी सारया नील अंबर धरया अधर अंजन तणी रेख लागी । धन्यतें पुण्य पूर्वतपकरी कामिनी तमारे साथे जे रैन जागी ॥ अलस अलता तणा रंग सलताथ या तिलक अर्द्धरच्युं शुभग भाले । श्रम जल केलि करी गीलूं सोहे घणू अथर तणोधक लोचन बिसाले ॥ कारज कहो कांई कारण मन तणु भखे पधारयो प्रात पेहला । मन बिनामलबूंते नरसैयों एमकहे बलीने पधार जो काल वे हला ॥ ६ ॥ राग पंचम ॥ पलंगाया थरे कुसुम माला बड़े बांधि सबेछ करलाज लोपी जोऊं माहरे मंदिर थिकोण मूका बसे शुरे करसे पेलीरोक कोपी । तम्यो बन माली ने अम्यो बन बेलडी नीर नही सींचो तो श्याने रोपी ॥ भ्रमर जाया तणा फूल मकरंद मां हृदय कमल माहां रह्योरे ओपी । प्रीत करो तम्यो प्रेमता पाच शुंतन मन प्राण सहू रहेरे सोंपी ॥ कहे नर सैयों ताहरी री सजे सऊतरे तेंम मुख सेन एमलेरे गोपी ॥ ७ ॥ ॥ राग पंचम ॥ ध्यान धरि ध्यान धरि नंदजी कुंवर नूजे थकी अखिल आनंद पाम्ये । अष्ट महा सिद्धते द्वार उभोर हे देहना दुक्कतते दूरबाम्ये ॥ मोरना पिच्छनो मुकट मस्त कधरयो मकरा कृत कुंडल श्रवण झलके । नील पट तिलक ते शुभग केसर तणू कंठ मुक्ता फलहार लसके ॥ पीतांबर तनीपल पट कटितटेचि भंगी उभला बेणु बाये । कदमना द्रुम तले राधिका रस भरयो हरि जी ने संगे अलापि गाये ॥ वृंदावन महा मुरलिका धुनि सुनि गोपिका केरडा वृंद आवे । नरसैयो नेमने आनंद अति घणो पुष्प मुक्ता फल लेई बधावे ॥ ८ ॥ राग पंचम ॥ रहत रजनी ज्यारे पाछली घटघरी साध पुरुषे त्यारि सूई नरे हेबुं । निद्रा ने पर हरी सुमिर वा श्री हरी एकतू एम केहेबुं ॥ जोगिया होय तेने जोग संभालवो भोगिया होय तेनें भोग तजवो । वेदिया होय तेने बेद उच्चारवो वैष्णव होय तेणों विष्णु जपवो ॥ सुकवी होय तेने सकल ग्रंथ साधवो दातारे दंत धावन करबुं । पति व्रता नारि ने कंतने पूछवुं बचन केहे तेसीस धरबुं ॥ आपना धर्म थी कथा कहूं प्रो छबीमन शुद्ध बुद्ध करी कपठ मेहली । भणें नर सैयों हरिनी कृपा थकी जोता आवी रुडो बात सेहली ॥ ९ ॥ राग पंचम ॥ आजुकी बानिक पर हो लाल हों बलि बलि गई । बिगलित कच सुमन पाग ढरकि रही बाम भाग अंग अंग अरसई ॥ अरुण नयन झपकि जात अरु जंभात बार बार कपोलनि छबि छई । धनि सुहाग भाग ताको गोबिंद मुरलि के प्रभु संग सब निश बितई ॥ १० ॥ राग पंचम ॥ मैया तेरो री मोहन अतिही सयानो देत अटपटी गारी । कुंज महलमें अंचरा फारो हंसि हंसि दे दे तारी ॥ गोरस ढोरे मनकी जोरे माटदही के फोरे । उठांउकी डोरी केसें बांधीचौ उदय भवन बंद तोरे ॥ अधर पांन परि रंभन चुंबन कहों कहा लजानी । शुक नारद सों लीला अगोचर सुरकित कबर बानी ॥ ११ ॥ राग पंचम ॥ तुमसों बोलिबे की नाही । घर घर गमन करत गिरिधर पिय चितनाही एक ठाहीं ॥ कहा कहूं सुंदर घन तुमसों जो होत मनमाहीं । कृष्णदास प्यारी के वचन सुनि हृदय माझ मुसकाहीं ॥ १२ ॥ ॥ राग पंचम ॥ नंदजी नुआंगनु परम सोहाणुं अति रलि आमणुं कृष्णकोधूं । व्यापि

वैकुंठ कैलाश ब्रह्म सदन इन्द्र लोक कथो अधिक को धूं ॥ सकल तीरथ जहां बिट्ठल वासे बसे इन्द्र अज ईश जहां देव सघला । भक्तिविना भूधरो बस्य नहि कोयने एकत एक पे अधिक डगला ॥ मात उभा हंसे नाथ सनमुख धसे एम बिलसे प्यारो प्रेम प्रीते । नर सैयानो स्वामी कृष्ण जी बाल लीला रमें एहजरीते ॥ १३ ॥ राग पंचम ॥ जिनि बोले पिय मोसो आज । जहां बसे निशि तहीं सिधारो मोतें कहा है काज ॥ सगरी रैन मोहि मगजोवत गई दही मदन की दाज । छीत स्वामि गिरिधर हग जोरत आवत नाहि न लाज ॥ १४ ॥ राग पंचम ॥ अजन नयन देखियत है आज । बसे जहां निशि तहीं सिधारो रसिकन के सिरताज ॥ मगजोवत मोहि रैन बिहानी तुम्हे नहीं कछु लाज । छीत स्वामि सेा कहति भामिनी यहां नही कछु काज ॥ १५ ॥ राग पंचम ॥ हरि जू की बालक लीला भावति । मांखन दूध दही की चोरी सोई यशोदा गावति ॥ शकट बिभंग पूतना शोषण तृणावर्त्त बधकीनेा । ऊखल बंधन जमल उधारन भक्तनि को सुख दीनों ॥ बछ चरावन मुरली बजावनि यमुना काछ बिहारी । परमानन्द दास को जीवन वृंदाबन संचारी ॥ १६ ॥ राग पंचम ॥ जागत जागत रैनि बिहानी । कहिगये सांझ आवने मेरे गृह बसे अनत रति मानी ॥ उर बिच नख छत प्रकट देखियत यह शोभा अति बानी ॥ भाल महावर अधरनि अंजन पीक कपोल निशानी ॥ निस मग जोवत बीती मोकों आये प्रात यह जांनी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन सिधारो तहां जो तुमरे मन मांनी ॥ ॥ १७ ॥ राग पंचम ॥ प्रिय सुत मुग्धा नोदेवद बिपिने किं किं बिहितं ॥ पल्लव चय मति बल्लभ मधुना कुच शिरसिनिहितं ॥ गैरिक चिच बिचित्रित बदनं कुच कृतं लक्षितं ॥ कच चय मतिशय मेंचक रूपं बर्हि पिच्छ कलितं ॥ पायित मति धर्म निवारण कृतये निर्मल नीरे ॥ उपबिष्ट बिटपिच्छाये सुत कुच गोप सहित मितो माया बद भुक्तं भवता वन सुहितेन । चारित मति मति कोमल तृण वति देशे गोकुल मथ कुच कटंक निचय मिथो खलु लग्न बरणं ॥ दर्शय पुच ॥ बिल सित मिति बद कवाखीलया भवता बाल कुले व्रू हि कुच मिलितै रथ धाबित मति बिपिने बिपुले ॥ स्थेय मितो बलभद्र युतेन सदाभव तांति भयेन ॥ रति विज्ञापित महरूमदीयं मानय बच्चु जिनयेन ॥ कृपय सदासु हृदा बर सूनो गृह दासे हरि दासे ॥ श्री बल्लभ बर चरण कमल सेवन बिचित्तपद बासे ॥ १८ ॥ राग पंचम ॥ कुच गतं निशि गोकुल नाटक ॥ अन्य हृदय हित पंचसु सायक ॥ नैवं करण महो समुचित मिह ब्रज युवतो जन बहु सुख दायक ॥ बदसि बिनय बचना लिनतानि बिभ्रति हृदय मति मानं ॥ चित्त मितरयबतोष लग्न मिति नैव मानये तव सन्मानं ॥ प्रकट मखिल मंगेषु दृश्य ते संप्रति चिन्ह चयं ॥ कृति बिरहित मथ कथं मानये नाथ बचन बिनयं ॥ दर्शयसिशिथिल मुष्णीषं रूप मथो बिकलं ॥ चित्त मिदं निज दुःख कृते भवता सुंदर सकलं ॥ कुंकुम मृग मद गंधरेणु युत बन माला हृदये ॥ कथ मेवं करणं घटने श्रयु मदभिमुखंसदये ॥ नक्षचाणि मया गणितानि निखिलनिशि रहसिनि कुंजे ॥ अह मपि सखीयताहताशभू बंशतिभिर पुंजे ॥ जागरणा

रुण नयन युगं कुरु निर्मल मिहनी रेण ॥ विहितं कथ मुनि युद्धं भवता बदयुवती बीरेण ॥ श्री बल्लभ पद कमल रेणु बल्लभ हरि दास वरापि विपाके ॥ १९ ॥ राग पंचम ॥ सायमिह जोजयति बाल कंमाता ॥ अति मुग्ध मृदुल दुग्धोदनं निज मुखे सपदि बिद धातु मम सकल सुख दाता ॥ ध्रुवं ॥ प्रति कमल मेत दपि बचन मभि याचतेदत्त वित्तेनखलु भोजनीयं पुरा खेलनीयं ॥ ततो बालकै रखिल गोकुल जनै रिति बदति डिंभकि मितित्वरा विपिन चरितंत्व याकिमिति बदमत्पुरं द्रच्यति प्रायशो गोप कुल पालकं ॥ बीजयति दक्षिण करेण कमला रुयंमार्जति वाम तो बदन मपि सालकं ॥ मुख विगलितं पयो बिंदु चय मङ्गतं प्रोंछति प्रवण तर दत्तदृष्ट्या ॥ भवति सुखितापरं निज सूनु दर्शने बदन लावण्य पीयूषदृष्ट्या ॥ लोक सिद्धा मथो कथ यति प्रियक थामति सित मुग्ध मुख दत्तनयना नैव सहते परं भोजन बिलंबनं भावि त स्वच्छ पर्यंक शयना ॥ बाल चरितानि ललितानि खलु गायति प्राण सदना निरद नादि दृष्ट्वा ॥ सीत्करोतीह रोमां चति प्रति पदं हसति रोदिति परंमनसि हृष्ट्वा ॥ अंक मुप वेश्य करयुगल मनु धावयति मुख नतंतां बूल मथ मुखे दत्वा ॥ उत संग मारोग मृदुल शयने मुदा शाय यति बन खिन्न मच मत्वा । निज बदन चर्बितं पीयूषगर्भितं भुक्त शेषित मथोनच्छ हरि दास के ॥ बल्लभा धीश पद कमल सेवन बिहित भाव भर संजा त भक्ति सुख याचके ॥ २० ॥ राग पंचम ॥ उषसिवद गोकुला धीश कृत आगतं ॥ इतर युवती जनित चिन्हशत वलित बर मृदुल देहे क्षणे सपदि मानसागतं ॥ किमु गृहं बि स्मृतं नाथ मनिसिस्थितं मङ्गहं दुःख जन स्मरण मागतं । याहि निज भवन मति भाषणं त्यज मया शृणु दयारहित ममनैवसुरुषागतं ॥ मान मुन्मूलयितु मुग्धतो भवसि वद कथ मनुस्मारयसि बिरह परिखागतं अधिक मधिकं सपदि समुद यति मनसे दोष गणनं निखिल नाथ कुप थागतं ॥ यच्च तव मानसं बिषय कृत खाल संग छतचैव यच्छ सुख मागतं ॥ तन्मनोरथ मखिलमाश्रय पूरय हरे बिरह हर दुःख भर महह बिरहा गतं ॥ परमहं वेद्मिननु बिस्मरामीश नहि बिस्मरत्यहह गोकुल नृप हृदागतं । त्वमपि हिस्मारयितु मागतो गोकुला धीश करवैकिमुत कल्प समु पागतं ॥ एत देवा स्ति बिज्ञापनं नाथ मम तिष्ट हृदये सतत मद्यतुयथागतं । याहि कुरुशयन मति जाग रा रुणतरे लोचने समय परिताप मलसा गतं ॥ इति बचन जात मति मानिनी बदन संजात माकर्ण्य तनुहृदय कमला गतं । पूरयतु गोपिका जन मनोरथ मखिलमभुता कार मति शयित शरणा गतं ॥ देहि बल्लभ चरण राजीवरेणु मपि विषयि जन संग दुर्म ति बिरोधा गतं । धर्म रहितं सहित मति दोष कारकै रहह हरि दास मथ चरण शरणा गतं ॥ २१ ॥ राग पंचम ॥ बंदे बल्लभ वर तनु जं ॥ भक्तिश्रस्त शरणी कृत साधन साधन रहित सकल मनुजं ॥ सुन्दर रूप बिबोधित भाव बशी कृत गोकुल नाथं । निरुपम भाव बिभाबित चतुरतमं मम बिट्ठल नाथं ॥ हरि संबंधवती समुदाय विविध संबंध सहायं अतुल बचन तोषित तरुणी जन जीवन पति मति मायं ॥ मनो बचो गोचर कृति बिज्ञा पित निज गन महिमानं । निज सेवक सेवित पद कमल युगाहित हृदयानं ॥ प्रकटी

कृत हत जीव सुखालयरसमय मंजुल रूपं । श्री भागवत बिहृति बोधन निज जनमति शोधन भूषं ॥ निज पीयूष बिजित बिधु मंडल मंडित मदन सरोजं । अखिल मनो मोहन निज सुखमा बिरहित मान मनोजं ॥ मृग मद संभ सहज तिलक शोभित सौभग निधिभालं । कुंचित चिकुर समा वृति बदन बिनिर्जित मधुकर मालं ॥ कृपयतिस मयि कदापि हृदा किंकर किंकर कर हरि दासे । भवतु पुरं गोपी पति चरण कमल भावं पद बासे ॥ राग पंचम ॥ भजे सखि गोकुलेशं । नंद भवन भूषणं नख भूषित हृदयेशं ॥ ॥ ध्रुवं ॥ मन्दहास फुल्लिनास रुचिर मुख सरोजं । बदन चन्द्र किरण कांति रहित मान मनोजं ॥ बदन कमल मधुप बदति राज दलक पुंजं । बर्ह मुकुट तट बिलासि बहु बिचित्र गुंजं ॥ युवती मुख कमल मधुप चंचल तर नयनं । अनु पम निज निहित भाव सतत कृत भृग नयनं ॥ भ्रूतट धृत माट बिहितबर्तुल मषि बिंदु । मुखजित पीयूष भरित चिह्न बिलस दिंदु ॥ २३ ॥ * * * * * * * * * * *

॥ रागकल्पद्रुम नित्यकीर्त्तनान्तर्गत ॥

॥ राग पंचम समाप्तम ॥

॥ अथ राग ललित प्रारंभ ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

जागहु जागहुहो गोपाल॥ नाहिन अति सोइयतु हैं प्रात परम सुचिकाल॥ फिरफिर जात निरखि मुख छिनछिन सब गोपन के बाल॥ बिन बिकसे मानो कमल कोसते ते मधुकर की माल॥ जो तुममोहि पत्याउन सूर प्रभुसुंदर श्याम तमाल॥ तो उठिये आपुन अवलोकिये तजिनिद्रा नैन बिसाल॥१॥ राग ललित॥ प्रात समैं आवत हरिराजत॥ इंद्र जटित कुंडलसखि श्रवननि ताकी किरनि सूर तन लाजत॥ सतईरांसि मेलिद्वादस मे ता भूषन अवलंकृत छाजत॥ जलजतात सुतकंठ नाम धरि ताकी पंक्ति मुकट सिर साजत॥ पृथ्वी दुहित तात ताके कर मुख समीप मधुर धुनि बाजत॥ सूरदास प्रभु सुनहु मूढ हौ भगत निबस अभगन ते भाजत॥ २॥ राग ललित॥ आज अति शोभित हैं तन श्याम॥ मानहु री जीते नंदनंदन मनसिज सो संग्राम॥ मुकुखित कंचन समात मुकट रुचिरोष अरुण दोउ नैन॥ श्रम सूचत गति भांति अलस सब बोलत बनत न बैन॥ नखछत श्रेणि प्रस्वेद गात ते चंदनगो कछु छूटि॥ मदन सुभट केसर सुदेस मानों लगे कवचपट फूटि॥ दसन अंकसहपीक प्रकट भए सनमुख सुभग प्रहार॥ सूर दास प्रभु परम सूर में जाने नंद कुमार॥ ३॥ राग ललित॥ आए सुरत रंग रस माते॥ मानहु छिन विश्राम निमित पिय अमित भए हैं ताते॥ डगमगात मग धरत परत पग उठत न बेगितहांते॥ ज्यों गज मत्त चरण संकल करगहि आनत ता ठांते॥ उरनख छत कंकन छत पाछे सोभित है रुहिराते॥ मदन सुभट के बान लागितनु निकसि गए उंहि घांते॥ साचे करत बोल अपने हैं टरत न मरजादा ते॥ सूर श्याम कहि गए आइ हैं पगुधरे तेहि नाते॥ ४॥ राग

ललित ॥ उनीदे कान्ह आए री मेरे नैन भरे रस माते ॥ डगमग पाय धरत धरनी पर बैन बोलत अरु झाते ॥ सब अंग सीतल श्रम जल भीने बारंबार झंपाते ॥ काजर रेखरही अधरन पर काहे को श्यामल जाते ॥ बिनगुण माल बिराजे उरपर नखछत नाहि छपाते ॥ सूर दास प्रभु साँची कहो तुम कोन बिया रंग राते ॥ ५ ॥ राग ललित ॥ आज श्यामा जूके नैन की बातें सुनिरी सखि मोपै बरनि न जाई ॥ सुधाकि रन बिच जुग सुभ खंजन किये पान मानो सोबत अघाई ॥ चुंवन राग रंगीले रसमसे कहा कहुं सुंदरि सुंदरताई ॥ मरकत बिद्रुम कमल कोसमें लेजाबक कीरेख बनाई ॥ आलस तिरछे चाहत बिचहीं बिच कछुक बिकसित जब लेत जंम्हाई ॥ मन मथ जै करि हरि जीतन को दयो बान भ्रुव धनुष चढाई ॥ देखि लाल लोचन बिथकित भए परम चतुरता सब बिसराई । सूर श्याम रस रीझि रहे तहं तुम हम सहचरि कोन बडाई ॥ ६ ॥ राग ललित ॥ भोरहु भए प्रकट श्यामा जू तउ रजनी मन आनति ॥ पिय अंग रुचि लोचन पथपूरित निसि अंधियारो मानति ॥ अलिगन श्रेणी रटत नीर जनि पर सुनि रसना रबठानति ॥ पूरब कृत करनी माधो सो आनंद सयन सु बानति ॥ सूर दास सहचरि सब प्रमुदित विरुध जतन करि भाँनति ॥ दिन पुनि प्रकट बिनोद रजनीके तरनि उद्योत न मानति ॥ ७ ॥ राग ललित ॥ कहांते आए हो इन साथ ॥ आलस भरे री जंम्हात जे अलि निपुन बसे तुमरे संग मधुप गंधखे और न भाषत गावत गुणनन माथ ॥ हो तुमते सूधे ह्वै बूझति तुमतो उलटे होत रहत हमपर हमजो कहा भरि लीने बात ॥ ब्रज पति रसिक रसिक तुम दोउ बे उर सिक जिन कीये चतुर भुज सुनि पिय गोकुल नाथ ॥ ८ ॥ राग ललित ॥ कहां ते आए हो उठि प्रात अंग अंग हो अरसात ॥ सब अंगही अरसात नैना अरुन रगमगे दोउ घूमत आवत सुधि न कछुतन चिन्ह बने सब गात ॥ खटपटी पाग मरगजी माला पीतांबर उरपर जु बिराजत मंदमंद मुसकात ॥ यह छबि निरखि निरखि के ब्रज जन हंसति परस्पर लेति बलैया फूले अंगन मात ॥ ९ ॥ राग ललित ॥ आए हो तुम प्रीतम प्रातही रैनहिं अनत बसे ॥ रजनी मुख अवधि बदी हमसो बोल तिहारे नसे ॥ अंजन अधर भाल जावकरंग प्यारी पग श्रीस घसे ॥ अटपटे भूषन मरगजी माला आधे तिर पाग लसे ॥ आलस बस डगमगत चरण गति जित तित जात खसे ॥ ब्रज पति पिय ललना को बचन सुनि नग धरनेकु हसे ॥ १० ॥ राग ललित ॥ आए हो तुम श्याम कहांते भोरहि भवन हमारे ॥ कहि गए हमसों बसे और के साचे बोल तिहारे ॥ सगरी रैनि मोहि मग जोवत गइ बिरह बिथा भई भारे ॥ ब्रज पति पिय तुमहो बहु नायक तउ मेरे नैनन के तारे ॥ ११ ॥ राग ललित ॥ आए हो मन भावन कहिं ते भोरहि नंद दुलारे ॥ तुम कियो रति सुख हमे दियो अति दुख सांचे हो बोल तिहारे ॥ तुम कियो मधु पान हमे तो तिहारो ध्यान ऐसे कैसे बने प्राण प्यारे । अबतो सिधारो तहां रैन बसे हो जहां गोबिंद प्रभु पिय हमारे ॥ १२ ॥ राग ललित ॥ रंग रसिक नंदनंदन रंग रसिक भामिनी

मृग नैनी कमल नयन नागर नागरी ॥ गिरिधर कलहंस हंसनी मानो गोप तरुणि देऊ सम तूल गुणन सागर सागरी ॥ करव केलि बन विहार निरखि जोट लजित नार गावत मिलि बदन चारु ललित रागरी ॥ खग मृग पशु सुनत नाद पिवत अधर सुधा स्वाद कृष्ण दास बदत बाद सुफल भागरी ॥ १३ ॥ राग ललित ॥ प्यारी तेरे नैन रंग मगे निस पीय संग जागे ॥ अरुन बरन शोभति आलस भरे अति रति रति रस पागे ॥ पलक पीक भींहे रमि रही आखी मानो कमल पराग ॥ कृष्ण दास गिरिधरन पीय संग हंति हंति हंसि मुख लागे ॥ १४ ॥ राग ललित ॥ नींद न परी रैनि सिगरी मुदिया मेरी जुगई ॥ याही ते झटपटात उठि आई घटपटी जीयमें बहुत भई ॥ तुम्हरो कान्ह पनघट खेलत है बूझहु महरि हंसि हेरू लई ॥ बिसरत नहीं नगीना चोखो जियते टरत न झलक नई ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर चलो मेरेघर देहों दूधदधि चाहो जितई ॥ मेरी बजीबनि मोहीको देहो तब चरणन की चेरी ह्वैहों जुग बितई ॥ १५ ॥ राग ललित ॥ कहि धोरी बनबेली कहूं तैं देखे नंदनंदन बूझो री मालती कहा तैं पायो तन चंदन ॥ कहिधों कुंद कदंब बकुल चंपक ताल त माल ॥ कहिधों कमल कहां कमला पति सुंदर नैन बिसाल ॥ कहिधोंरी कुमुदिनी कद ली कछु कहि कोविद करबीर ॥ कहो तुलसी तुम सब जानत हो कहां घनश्याम सरीर कहि धों मृगी मयाकरि हम पर कहिधों मधुप रसाल ॥ सूरदास प्रभुके संगी तुम सबही दीन दयाल ॥ १६ ॥ राग ललित ॥ नवल लाल वृषभान दुलारी आवत कुंज भवन ते भोर ॥ इन तन बनी मरगजी सारी पिय उरमाल रही बिनु डोर ॥ आलस बस अंस निभुज धरि धरि आवत अति छबि पावत ॥ मधुप माल सौरभ बस गुंजत सुजस तिहारे गावत ॥ बिर्ष भाल पुरगई खाडिलो नंद सदन गै श्याम ॥ छीत स्वामि गिरिधर न रंगीले बिलसे चारो जाम ॥ १७ ॥ राग ललित ॥ मेरे तुम आए भोर भए पिय रैनि कहां गंवाई ॥ कोन नारिके वस परे मोहन सांची कहो किन जानि परी चतुराई ॥ उरहिं हार बिनु डोर बिराजत सिथिल अंग सब नख छत देत दिखाई ॥ छीत स्वामि गिरिधर कहो मोसों रसिक सिरोमनि जावक पाग रंगाई ॥ १८ ॥ राग ललित ॥ राजत दोउ रति रंग भरे ॥ सहज प्रीति बिपरीति निसा सब आलस सेज परे ॥ अति रन बीर परस पर दोऊ नेकहु कोउन मुरे ॥ अंग अंग अपने अस्त्रनि सो रति संग्राम लरे ॥ मगन मुरझि रहे सेज खेत पर हूत उत कोउन डरे ॥ सूरश्याम श्यामा रति रन ते एक पग पल न टरे ॥ १९ ॥ राग ललित ॥ करि सिंगार दोऊ अरसाने ॥ प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पोढे दोऊ अरसाने ॥ रति रन जूझि जाम चियनीके सेजपरे उठि पुनि मुरझाने ॥ मानों शूर खेत समलरि के गिरे उठत फिरि गिरत लजाने ॥ २० ॥ ॥ राग ललित ॥ बोले तमचुर चारयो जांम को गइर मारेव पौन भयो सीतल तमि तगमिता तई । प्राची अरुणानी भांन किरन उजारी नभछपे उडगन चंद्रमा मलीनता लई ॥ मुकुले कमल बछ बंधन बिछोही ग्वाल चरचली गाइ दुजपति करको दई ॥ सूरदास राधिका सरस बांनी बोलि कहै जागो प्राण प्यारे जू सबारे की समै भई ॥ २१ ॥ राग

ललित ॥ छोटी छोटी गैाडियां अंगुरियां छोटी छबीलीनखज्योति मोती मानों कंज दल निपर । ललित आंगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झनुनु झनुनु बाजे पैजनो मृदु मुखर ॥ किंकिनी कलित कटि हाटकर तन जडी मद कर कमलनिपहुंचिया रुचिर बर । पियरी पिछोरी झीनी औरन उपमा भीनी बालक दांमिनि मानों ओढे ठाढो बारि धर ॥ उर विच नख कंठ कठुला झडूले बार बेनी लटकन मसि बुंदा मुनि मन हर। अंजनरंजित नयना चितवनि चित चोरै मुख सोभा पर बारों अमित असमसर ॥ चुटुकी बजावति नचावति नंदघरनि वाल केलि गावति मल्हावति प्रेम सों भर । किलकि किलकि हँसे दुहुं दूध दंतुलीलसैं सूरदास मनबसै तूतरे बचन बर ॥ २२ ॥ राग ललित ॥ आई तूं डगमगात ऐडाति जम्हाति रग मगी रंग भरिकै । चंद उदौ मुख देखति हौरी कर दर्पण प्रति बिंबनि हारि धोंपीक लीक नयन छबि परिकै ॥ बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर मनो सुधापीवत अलि माल आनंद हरिकै । सूर प्रभु रसिक राइ रस वस कीन्हें बनाइ सुख दीन्हों मन अघाइ नवला नव रीझे मन ढरिकै ॥ २३ ॥ राग ललित ॥ नवलनि कुंज नवल रस दोऊ राजतरंगहिभीने । कुसुमन सेज भोर उठि आवत आलस जुत अंसनि भुज दीन्हे ॥ अरुण नयन नखरेख विराजत श्रम जल बसन पलटि तनु लीन्हे । सूर प्रभु पिया प्यारी को मुख निरखत सखिन सहित ललिता हगकीन्हे ॥ २४ ॥ राग ललित ॥ दोउ वनते व्रज धाम गये ॥ रति संग्राम जोति पिय प्यारी भूषन सजत नये । वे व्रज गये आपु अपने गृह चितते कोऊन टारत । मनसा वाचा कर्मना ए दोऊ एको पलन बिसारत ॥ जैसे मीन नीर नहि त्यागत खंडित हठ पूरन । सूरश्याम श्यामा दोउ देखौ इत उत कोउन अधूरन ॥ २५ ॥ राग ललित ॥ रासरमि श्रमित भई व्रज बाल । निसि सुखदै जमुना जल लेगये भोर भयो तिहि काल ॥ मन कामना भये परि पूरन रही न एको साध । षोडस सहस नारिसंग मोहन कीन्हों सुख आगाध ॥ जमुना जल विहरत नंद नंदन संग मिले सुकुमारि । सूर धन्य धरनी वृन्दावन रवि तनया सुख कारि ॥ २६ ॥ राग ललित ॥ राधे छिरकत छैल छबीली । कुच कुंकुम कंचुकि बंद टूटे लटकि रही लटगीली । बंदन सिर ताटंक गंडपर रतन जटित मनि लीली ॥ गति गयंद मृग राज सुकटि पर सोभित किंकिनी ढीली । मच्यो खेल जमुना जल अंतर प्रेम मुदित रसझीली ॥ नंद सुवन भुज ग्रीव बिराजित भाग सोहाग भरीली ॥ बरषत सुमन देव गण हरषित दुंदुभि सरस बजीली । सूरश्याम श्यामा रस क्रीडत जमुना तरंग थकीली ॥ २७ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितै रही मुख पियको । अंजन अधर कपोल नि बंदन लाग्यो काहु त्रिय को । तुरत उठो दरपन कर लीन्हे देखौ बदन सुधारौ ॥ अपनौ मुख उठि प्रात देखिके तब तुम अनत सिधारौ ॥ काजर बंदन अधर कपोल निसकुचे देखि कन्हाई । सूरश्याम नागरि मुख जोवत बचन कह्यो नहिं जाई ॥ २८ ॥ राग ललित ॥ क्यों मोहन दर्पन नहिं देखो । क्योंधरनी पग नखनिकरोबत क्यों मोतन नहि पेखो ॥ क्यों ठाढे बैठत क्यों नाहीं कहा परी हम चूक ॥ पीतांवर गहि कह्यो बैठिये रहे कहाहै मूक ॥ उघरि गयो उरते उपरेनानख छत बिन गुन माल ।

सूर देखि लट पटी पाग पर जावक की छबि लाल ॥ २९ ॥ राग ललित ॥ भोरही श्यामा श्याम खरे । जलद नवीन मिली मनों दामिनी बरषि निसानि झरे ॥ सिथिल वसन तनु नील पीत दुति आलस जुत पहिरे । कछुक बूंद परति श्रम कनिका बादर बरन करे ॥ भूषन बिबिध भांति मिडबारी रति रस उमगि भरे । काजर अधर तमोर नयन रंग अंग अंग झील परे ॥ प्रेम प्रबाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे । सोभा अमित बिलोकि सूर प्रभु क्यों सुख जात तरे ॥ ३० ॥ राग ललित ॥ ऐसे हिऐसे रैन बिहानी । चंद मलीन चिरैया बोली सुनी काक की बानी ॥ बैल बधे अनतहि काहूके मनकी आस भुलानी । कपटी कुटिल कूर कहा जाने श्याम नाम जिय आनी ॥ कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्यास रंग है पांनी । श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सोंवानी ॥ ३१ ॥ राग ललित ॥ मै जानी जहां रति मांनी । तुम आये हो मेरे ललना जब चिरियां चुचुहानी ॥ मुखकी बात कहा कहौ ठांनी बात नहीं पहिचानी । इते पर अंखियां रसमसांनी अरु पगयिां लटपटानी ॥ भाल रंग बनानी जावक अधर अंजन प्रकटानी । बिन गुन बनी माला सब अंग अंग उलटी निसांनी ॥ सूरदास प्रभु गुण निधानी अंतर गत की जानी । धनि चिय तुमको जो सुख दानी संग जागत रैनि बिहानी ॥ ३२ ॥ राग ललित ॥ ऐसेहि सुख सब रैनि विहानी । भोर भये निज धांम चले दोऊ मन मन मारि सिहानी ॥ प्यारी गई वृषभान पुरातन श्याम जात नंदधाम । प्रमुदा महलद्वारही ठाढी उनि देखी वह बाम ॥ प्रात चले बनतें व्रज आये मन मन करति बिचार । सुनहु सूर सकुचत ठठुकत ता गृह गये नंद कुमार ॥ ३३ ॥ राग ललित ॥ बन तन तें आये अंति भोर । राति रहे कहुं गायन घेरत आये हौ ज्यों चोर ॥ अंग अंग उलटे आभूषन बनहूं में तुम पावत । बड़ भागी तुमतें नहि कोई कृपा करत जहां आवत ॥ औचक आय गये घर मेरे दुर्लभ दर्शन दीन्हो । सूर श्याम निशि हो कहूं जागे पावति अंग अंग चीन्हो ॥ ३४ ॥ राग ललित ॥ आजु अति रैनि उनीदे लाल । तुम पोढो मैं चरण पलोटों जिय जिनि जानो ख्याल ॥ सुमन सुगन्ध सेज है डासी देखति अंग बेहाल । मेरे कहे न्हाउ कछु भोजन करो न मदन गोपाल ॥ निशि श्रम भयो पीर मोहि आवति सुनति परस्पर बाल । सूर श्याम सुनि बचन कपट चिय भरि लीन्हो अंग माल ॥ ३५ ॥ रागललित ॥ राधा हरि के गर्भ भरी । सखियन को आगम जब जान्यो बैठी रही खरी ॥ उत व्रज नारि संग जुरिके वै हंसति करति परिहास । चलो न जाय देखिये री वा राधा कोउ जु हास ॥ कैसो बदन सिंगार कोन बिधि अंग दशा भई कैसी । सूर श्याम संग निशि रस किये निधरक ह्वै है वैसी ॥ ३६ ॥ राग ललित ॥ श्रीकृष्ण कृपाल कृपा निधि दीन बंधु दयाल । दामोदर बन बारी मोहन गोपी नाथ गोपाल ॥ राधा रमन बिहारी नटबर सुन्दर यशुमति बाल । मक्खन चोर गिरिधर मनहारो सुखकारी नंदलाल ॥ गो चारन गोबिंद गोप पति जिय भावन मंजुल ग्वाल । छीत स्वामी सोई अब प्रकटे कलिमें बल्लभ लाल ॥ ३७ ॥ राग ललित ॥ हरिसो तू बैठी दे कपोल कर । मान नाहि न नयननि

नीरु डारति उससति छतियां करत धर धर ॥ चरननि शीश नाय मनाय लई लेखे पह पहे निकुंज घर । तेारि गढ़ु मान गेाबिंद को प्रभु जानि रति पति को सुखद मन ॥ ॥ ३८ ॥ राग ललित ॥ पहरि केसरी सारी पिया पिय मुख करखत । देखत निज रूप नयननि भरि भरि अंग अंग परसत अरु परखत ॥ बेालत तुतरात लागत सुहावन सेाचे व्रज जन अमृतु बरखत । गेाबिंद प्रभु गति गयंद चलत भावत सबनि जिय हंसि हरखत ॥ ३९ ॥ राग ललित ॥ प्रातहि आये हेा नंदलाल । जावक भाल अधर मसि अंजन पीक लगाये गाल ॥ लटपटि पाग उनोदे नयननि उरसि मरगजी माल । छीत स्वामि गिरिधरन बनी छबि चलत मंद गति चाल ॥ ४० ॥ राग ललित ॥ मृदु कपोल लेाल युगल कुण्डल छत शेाभं । हीरक छत चिबुक भूषण विरचित विक्षेाभं ॥ कंठ शेाभि मुक्ता मणि भूषणेा द्योत ग्रीवं । भाव भरतया बशी छत युवती जनजीवं ॥ कटि तट गत पीत बसन शेाभित निज रूपं । पद नख सुखमा बिमान सुर नर मुनि भूपं ॥ विज्ञापन मेत देव मानय मम बचनं । श्री बल्लभ चरण कमल कृपया छत रसनं ॥ ४१ ॥ राग ललित ॥ प्रिय सखि बिरह बिपिन विचरणं बिरहि मनुज बरणं । गेाकुल पति पद भावता मति शयित शेाक रणं ॥ ध्रुवं ॥ बिबिध बिटपि युत लता वृंद संदर्शन जनिता नंदं । शिशिरित निखिल शरीर पवन बिचलित नव कुसुम मकरंदं ॥ मुदिर मुदित मान सघन नाद विलासिख श्रवणं । अद्भुत पक्षति युग दर्शन छत हृदय दुःखय विवणं ॥ फलित रसाल शाल शाखा गतपिक कूजित कसुखं । स्थल कमला हित शेाभेापमित युवति जन सरस मुखं ॥ हरित रसा लेाक चिंतित हरि रूप नाम युगलं । संवर्द्धित हृदया हित राग गान कृति रणितगलं ॥ गगन बिलस दति घन घन वृंद बिलेाकन कृत सुखदानं । कंपित शाखा गत मृदु पल्लव चलन विहित सम्मानं ॥ बिबिध स्थल विरचित लीला बिज्ञा पन बहुत रनिपुणं । प्रिय संनिधि सुख निचय बिचारण परमानस कृपणं ॥ इदृश दृश्या युतं हरि दासं दर्शयगहन बिहारं । हृदय निहित हरि बल्लभ वर पद नख विद्युति मणि हारं ॥ ४२ ॥ राग ललित ॥ मानि निधि मासहसे किमिति बियेागं कुरुहरिणा संभेागं । वारयतदधर पीयूषेण विषम चेतेा भवरेागं ॥ ध्रुवं ॥ निज हस्ताव चिताति मृदुल तर कुसुम रचित शय नैन । प्रति पदमबलेाकित पद बिकृत चपल चकित नयनेन ॥ भा बित शयन शयित भवतेासं दर्शन जनित सुखेन । कृपयिष्यति दयि तेतितेाषभ संतति हंसित मुखेन ॥ पु नरति ताल वृंतछत पवन बिशेष बशित हृदयेन । श्रम बिंदूनि कलय ता वदन कमल मनसास दयेन ॥ कुटलालक तति नयन समा गति रति जागर भी तेन । मार सरै रति परुषतरै रिह बिरह दशनि तेन ॥ मुख कमला हित गन्ध लेाभ गुण भर गणित यासेन । स्तन तट लुलित हीर शेाभा भरस ततस्मृत रासेन ॥ संवा हित सरसिज सुन्दर भावित पद कमल युगेन । सकरुण हृदय कमल संपादित भाव बदेक सुगेन ॥ श्री बल्लभ पद कमल बिमल मति हरि दासे सदयेन । मनसा सखि भावय निज भावं भाववतेा बियेन ॥ ४३ ॥ राग ललित ॥ हरि मनुसर सरसिज ननयने । कुरु शयनं हरिणा सह सुंदरि रचित कुसुम शयने ॥ ध्रुव ॥ बिरह भाव समुदित हृदि ताप

निवारित गोतगुणं । प्रत्यब टाठा गगि निरुपम सुखमापरि भावन निपुणं ॥ चिर मबलो कित पद कमला क्षति तरुपल्लब निचयं । चिंतित चरण चमत् कृति चिचित हृष्टि रचित बिलयं ॥ भाब बशाशय बिहित बिनोद बिशेष निधान बिचारं । भाबित रुचिराव यव बिलोकन बिहित नयन संचारं । भाबित भवतो परि रंभण क्षत संभ्रम जनित सुखं । मधुराधर पीयूष प्रान संपुटित सलोल मुखं ॥ भाबित माना पनयन कायुग धृत पद कमल बरं । नख विधु किरण कौमुदी मोद बिनोद बिशेष परं ॥ अनु संहित निज बिर ह दशा समुदित मानस संतापं । अन्वेषिततनु दाह बिनाशक शीतल कमल कलापं ॥ शिशिरो पाय बिधान बिहित निज जन्म सफल बिनिबासं । श्री बल्लभ बर चरण कमल परि मल लोभित हरि दासं ॥ ४४ ॥ राग ललित ॥ मानिनि तव पद पतिताहं । अंगी कुरु गोकुल पति संगयेनस पदि भबिता हरिताहं ॥ ध्रुवं ॥ नानय बिनय बचन मति दानं तव मेलन कारणे सुहिताहं । नैवमुचित मतिरोषवती भवती कृपया दासी बिहि ताहं ॥ अवलो कयतिपथंतव सुंदरि मान बारणे सखि निहिताहं । इतिजानीहि चरण परि चरण निरंतर करण दोष रहिताहं ॥ भवती रति संपादन कृतये निरुपधि गोकुल पति रचिताहं । यदिना यासिहठैव भवामि तदानिपुणैक मध्य लिखिताहं ॥ त्यज सि न मानमहो कथमपि तदितर युवतीभि रतोबजिताहं । यदिन भवति ममबिहित मिदं सखि किमु कथयामि मध्य बनि ताहं ॥ बदना मृत कर किरण चकोरं दर्शय सुखितं भूचुठिताहं । इतरसखीजन साहं क्षति बहु बचन रचन शोचन मृति दाहं ॥ जीवन मपि ममदुर्लभ मधुनाय दिनिजसंग भंग गमिताहं । कथमु दर्शयिष्यामि मुखं पुनरपि हरिणा बहुधा लपिताहं ॥ इति सह चरि बचनानि हृदाकर्ण्य अति बदति सखि सखि चलिताहं । श्रीबल्लभ बर चरण रणु हरिदास मदीय कृपा बलिताहं ॥ ४५ ॥ राग ललित ॥ बिरहे सुंदर वर्षा समये । बदजीवामिकथंममदोषै रति शश्वितै रिह सखि विपरिते सदये ॥ बर्षति जलदे बिरहा नल दे गोवर्द्धन शिखरे पर पुष्टे शत द्युष्टं कूजति बदति केकि मुखरे । लसति भूमि रति हरितापवन बिचलिते तृणनिचये ॥ इंद्र गोप कैतबनिजमूल बिलसदनु रागमये । बिबिध सिक्तासु अह निज रूप युतासु बिराजित नाथे निज मुख दर्शन जनिता नंद बिलास गीत गुणगाथे ॥ नबघन मध्य शोभिता सुमुखि हृश्य ते सि तव बक माला । मेघनाथ मनुगर्जति मुरली क्षरति रसं सुर साला ॥ उदयति बिद्या दतीव चंचला चालयती हृजनं ॥ असित मेघ गण बिरचित तमसा बहु भीषयतिबनं रंजित रुचिर कुसुंभ बसन परिधान बिराजित रूपे । गायति मेघ समागमरागनिरुपधि गोकुल भूपे ॥ इति बिज्ञा पित मतिशय करुणे बिरहित हरि दासेन ॥ श्रीबल्लभ पद कमल पराग धारिणि बिरचित बासेन ॥ ४६ ॥ राग ललित ॥ सततं बिचरति वृंदा बिपिने गोकुल पति रति गोपाल बालकैरा रूढे पिदिने ॥ निज बदनेन बदति नामानि गबा मति रति बचनेन । मनसिमोदते बिपुल रसागत सरस कुंज रचनेन ॥ निर्मल नीर धौत शिखरो परि रुचिर शिला मुप बिश्य । भुङ्क्ते भवन समागत मन्नं निज गोपेषुनि बिश्य ॥ प्रत्यंगुलिदच्च बिबिध कलानि दधाति रुचिर हस्ते । मध्य मोदनंतनुते हृष्टं जननी

क्षत श्रस्ते ॥ पिबति बिमल पानीयं यमुनायामंजलिबन्धन । प्रति बिंबं पश्यति सुचिरं निजलोचन संबंधेन ॥ मृदुबादयति बेणु मति मधुरं चलति धेनु संगे । हरति ताप मथ कानन देशे बिरचित तृण भंगे ॥ कनक चषक गत फेन समूहं पिबति गोप मथितं । शिशिरयतीहवाल कुल हृदयं बहु बिरह व्यथितं ॥ श्री बल्लभ पद कमल पराग राग रंजित हृदयं । हरिदासे सुखितं भावै रपि कुरु दुर्जन बिलयं ॥ ४७ ॥ राग ललित ॥ चरणं धेहि सरस हृदये । व्यथतेशिला तृण मूलैरति पद मिति चिंतैक मये ॥ नहि समुचित मिह धरणि बिचरणं सुंदर सति कमले । उद्भट भाव निरंतर निर्गत नयन नीर बिमले ॥ श्रीरपि कुरुते सपदिसहायं यद्यपि बन चलने । तदपि बाधते मामक हृदयं चरण बिरह कलने ॥ यद्यपि भूमि रथो रस सहिता त्यजति तथापि हरे । इह यदिगंतुं क्षण मुत्सहसेकरवैसपदिकरे ॥ ब्रज संबंधि गबा मनुगं किमु गोपी जन हृदेदे। पा मथे चेतसिचिंतयसे लौकिक मति मंदे ॥ किमिति बिभेषि ताप संसृष्टे धारयितुं चरणे फणि फणधृत पद पद्म किमद्भुत मेव तब करणं ॥ कर्हम जनित दुःख मर्हयसि पद जनिता नंदेन । भूमे रहह बियोगे बिहितं किमु मयि गोबिंदेन ॥ श्रीबल्लभ पद कमल सदा गति संगत गंध युतेन । योजय निज चरणं करुणा मय दास सदय हृदयेन ॥ ४८ राग ललित ॥ मिच मायाहि करवै पयोमंथनं मिह भोजनीयं त्वया । पच बिरचित रुचिर पाच निहितं हरे ननु विधेया ममो परिदया ॥ शीतलं मयेति ननु भाव सुंदर हरे शृणु बने यत्न विहितं मया । किमितिहबिलंबसे तिष्ट ममसंन्निधौ गोप सुत मंडली बिहित बिनया ॥ दर्शना नंद गोबिंद संप्रति यथा भवति दुःखालि रथ रचित बिलया । हृष्ट तरनील मणि मंजु मुख लग्न मधु दग्ध कण परम शोभैक निचया ॥ तिष्ट कथयामि पर मद्भुता मथ कथा मयि किमपि मधु बचन मुदित मथ चैकया । मामहह कानने करुणया योजय प्रणत पति गोकुलाधीश पदसेबया ॥ आयामिकिमपि कथयामित बकर्णयो रति शयित गुप्त मशखोकबिरचित भया । मंजु कुंजेरचय संकेत मद्भुतं शीघ्र मह मायामिचरण गति कृतरया । बिजयिष्यामि परमति रमण संभ्रमे दर्शनीयो हरे भक्त कृपया ॥ योजनीयोस्मि ननु सपदि भवता कदा कार्य करणे रसिक जन नाथ सहि तया । दर्शयिष्यति कदा मत् प्रभु स्वामिनी सहस बदनं पिहित बिपरीत मिच्छया ॥ मदभि नंदन मथो दत्त मन साकदा कण यिष्यति सुरत संग्राम कृतजया । देहि निज दास्य मिह बल्लभाधीश पद कमल सेबन बिहित भक्तिज फलाशया ॥ सतत सहितेपिहरि दासके करुण तम बिलस बिपिने सरस नित परति धया ॥ ४९ ॥ राग ललित ॥ जहाहिश्रुणु मायाहि बनं किमुचित मिति गमनं । चारणीय मिह गोपै रभितो ब्रज नृप धेनु घनं ॥ ध्रुवं ॥ करवै बिबिध बसन भूषाभिरलंकरणं तब देहे । रहसि बिराजित बिपुल बिताने बस मामक गेहे ॥ अति सुगंध मुद्वर्त्तन मति श्रय शुद्ध गंध तैलं । स्नान मथो कुरु नीरै रुष्णै रुरो कुरु चैलं ॥ कच्छ पटं परिधेहि तिलक मपि बितनु बिपुल भाले । तनु मुष्णीषंशिरसि बिधेयं ग्रथितालकमाले ॥ नूपुर युगमति चपलं पदयो रुत भुजयो रपिधेयं । कंकण चय मथ मध्य मंगदंगुच्छ सहित मपि देयं ॥ हृदय मध्य मणि मुक्ता जटितं पदकं नाथ बिधेयं ।

मुक्ताकनक मालिका युगलं जय जग दखिल भजेयं ॥ उप विश पर्यंके मृदुरम्ये कुरु सुंदर शयनं । तनु वैकर कृत मंग मर्दनं शिशिरी कुरु नयनं ॥ इति सरसं बचनं राधा यारति रस भाव युतं । शृणु वल्लभ बर चरण कमल तलगत हरिदास नुतं ॥ ५० ॥

॥ राग ललित ॥ हरिरिहदिव से वसति बने । गोचारण मपि कुरुते गोपै रभितो बिटपि घने ॥ ध्रुवं ॥ नैव रोचते किमपि सुमुखि ममहरि बिरहितसदने । विरह वन्हि रपि तनुतेदाहं हृदये नृप मदने ॥ द्रष्टु महो कामयते नयनं गोप तनय बदनं । अलि कुल सदृशालकतति सहितं मुग्ध दुग्धरदनं ॥ नासा सततं बिहित दुराशा देह कमल गंधं आटातुं तस्याननुतनुते सैव हृदय बंधं । रसना कुरुते सतत मनोरथ मधुर रसं पातुं ॥ वागपि रस मनु रागवती विदधाति मनो गातुं ॥ ५१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ राग कल्पद्रुम नित्य कीर्त्तनान्तर्गत ॥

॥ राग ललित समाप्तम् ॥

॥ अथ राग षट प्रारंभ ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

बने आज नन्दलाल सखि प्रेम मादक पियें संग ललना लियें यमुना तीरें । फूली केसर कमल मालती सघन बन मंद सुगन्ध सीतल समीरें ॥ नील मणि बरन तन कनक मंडित बसन परम सुन्दर चरण परसि माला । मधुर मृदु हास परकास दसनावली छबिभरें इतरात दृग बिसाला ॥ किये चंदन खोर बदनारबिंद मकरंद लुब्धे भ्रमर कुटिल अलकें । हलत कुंडल लटकि चलत जब श्याम घन मणिन कीकान्ति कल गंड झलकें ॥ एक चंपक कतनी कृष्ण रसमाती करे राग पंचम संग लागि सोहे । एक हरि मुख निरखि धरि रही ध्यान मन चित्र सम भई हरि हियो मोहे ॥ एक दामिन सी भुज मेलि ग्रीवां बात कहन मिस आय मुख मुखसों लायो । एक नव कुंजमें खेंचि रही कटि बंध आपनो लाल चित चोर पायो ॥ एक श्यामहि हेरि शुभग लोचन भरि बिहंसि बोली भले कान्ह कपटी । एक सोधें भरी छुटे बार नखरी चन्द्र मुखी बिन कंचुकी रीझि लपटी ॥ एक श्यामा कनक कुंज बदनी प्रेम मकरंद भरी हरि निरखि बिकसी । ताके रस लुभि रह्यो लपटि सांवरो भंवर प्राण प्यारी भुजन बीच जुलसी । रसिक मणि रंग भरे बिहरें वृंदा बिपिन संग सखि मंडली प्रेम पागी । कहें भगवान हित राम राय प्रभु सुमिरि सोई जाने जाहि लगन लागी ॥ १ ॥ रागषट ॥ आज नन्दलाल मुख चंद नयनन निरखि परम मंगल भयो भवन मेरे । कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र करि वारों तबहीं जबहिं नेक हेरे ॥ सकल सुख सदन हरषित बदन गोपवर प्रबल दल मदन जनो संग घेरे । कहो कोउ कैसेहूं नाहि सुधि बुधि रहे गदा धर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥ २ ॥ रागषट ॥ नवल ब्रज राज को लाल ठाढो सखि ललित संकेत बट निकट सोहे । देखिरी देखि अनिमेष या भेष को मुकुट की लटक त्रिभुवन मोहे ॥ स्वेद कण झलक कछु भुकीसी पलक मानो । प्रेम को लखक रसरास कीये । परम बडभाग वृषभान वृप नंदिनी राधिका अंस परबाहु दीये ॥ मणि जटित भूमि रही नव लता भूमि रस पुंज शुभ कुंज छबि कहि नजाई । नंद

नंदन चरण पर सहित जानि यह मुनिन के मननि मिलि पांति लाई ॥ परम अद्भुत रूप सकल गुण भूप यह मदन मोहन बिना कछु नभावे । धन्य हरि भक्त जिनकी कृपा तें सदा कृष्ण गुण गदा धर मिश्रगावे ॥ ३ ॥ रागषट ॥ पाछली रात परछांही पातन की मेरो लालजी रंग भीनो डोलत द्रुम द्रुम तरनि । बनहि देखत बने लागि अद्भुत मने जोतकी छोत सो निकसि रही सब धरनि ॥ कृष्ण के दरस को अंग के परस को भई री मग्न तब गई हों मंजन करन । नूपुर धुनि सुनत चकित ह्वै थकि रही परि गयो दृष्टि गोपाल सांवरे बरन ॥ जरकसी पाग पर मोर चन्द्रिका बनी कमल दल नयन भुव बंक छवि मन हरन । धाई सब गहन को रस वचन कहन को आवति छबिसों अति चरन सों धर धरन ॥ रोंम रोंम रमि रह्यो मेरो मन हरि लयो नाहि बिसरत बांकी झुकनि में भुज भरन । कहें भगवान हित राम राय प्रभ सों मिली लोक लज्जा गई भई हौं परबस परन ॥ ४ ॥ रागषट ॥ मुकुट माथें धरें खोर चन्दन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे । पीत पट कटिकसें कान कुंडल लसें निश दिना उर बसें प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनो लै कनक दोहनी खरिक नेरे । लाल लोचन बने ललित रसमें सने मैंन से अनगने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनो काछनो देत शोभा घनी देखि कौस्तुभ मणी मुर छकेरे । प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लगनकी मगन में बसेरे ॥ ५ ॥ रागषट ॥ कृष्ण कथा बिनु कृष्ण नाम बिनु कृष्ण भक्ति बिनु दिवस जात । तें प्राणी काहे कों जीवत नहि मुख बदत कृष्ण की बात ॥ श्रवण कथा न श्याम सुंदर की राम कृष्ण रसना नस्फुरात । मानुष जनम कहां पावेगो ध्यान धरे घनश्याम गात ॥ जो यह लोक परम सुख राखत अरु परलोक करत प्रतिपाल । परमा नंद दास को ठाकुर अति गभीर दीना नाथ दयाल ॥ ॥ ६ ॥ राग षट ॥ आज उठि भोर नव कुंज कानन सखी ठाढी भई राधिका रंगभीनी । विलसि मुख चन्द संग नव रंग पिय श्याम घन कामकी सेन सब जीति लीनी ॥ शुभग विकसित बदन नयन अति रस मते मोरि मुख हंसो कछु सकुच कीनी । श्री विट्ठल गिरिधरन संग नागरी जागि सबरेनि आनंद दीनी ॥ ७ ॥ राग षट ॥ हों चली री जाउं जहां मोहन मुरली मधुर मधुर धुनि बाजेरी । यमुना पुलिन शुभग वृन्दावन मदन गोपाल विराजेरी ॥ सजल नील घन वरन श्याम तन दुसन दामिनी छवि छाजेरी । मोर मुकुट की शोभा निरखत इन्द्र धनुष द्युति लाजेरी ॥ कुंडल कर न कंठ कौस्तुभ मणि आनन्द मुखहि प्रकासेरी । चरण धरन कहत न बनि आवे कौतुक कुंज विलासेरी ॥ घूंघरवारे अलकनि झलके चन्दन तिलक ललाटेरी । अमल कमल दल मंजुल नयना जोहतहेमम वाटेरी ॥ हरि ठाढे हैं कलप तरुवर तरें मोहि देखि हंसि देहेंरी । अति ललचाय लटक सों चलैं जब सुध बुध सब हरि लेहेंरी ॥ जाको मन मिलि रह्यो कृष्णसों ताको अकथ कहानीरी । कहें भगवान हित राम राय प्रभु सुमिरन माँझ समानीरी ॥ ८ ॥ राग षट ॥ हों मिलीरी तहां जहाँ खो रिसांकरी सुन्दर श्याम सलोनारी । इततें हों जात उततें वे आवत ओढे पीत उढोनारी ॥ हंसि मुसकाय लटकि जब बोले पूछत हैं बधुकोनारी । हों सकुची मोपें उत

रु नआयो इन ठगठगी ढटोनारी ॥ चित्र लिखी सी रहगई ताछिन मनो पाँड़ेदारो टोनारी । घूंघट चांपि चिबुक चितवनि में भूलि गई सखि सोनारी ॥ मात पिता सुत बन्धु खिजोरी मेरो मनमोह्यो मोहनारी । बंसीधर गिरिधर परवारो अब कछु और न होनारी ॥ ९ ॥ रागघट ॥ अरी मोर मुकट कुण्डल झलकन अलकन उर मन मेरो मनजू हरो । मुरली धुनि श्रवणन सुनि सजनी काम धाम सबको बिसरो ॥ बावरे लोग मारे भटकी घरको नहिं जानत पैंडपरो । भावे सो होय हरि संग न छाड़ों यह व्रत जिय निश्चय जु धरो ॥ काहें कों लोग लाज आवे सखी काहू सों का हूको काज सरो । चन्द सखी सोइ बड़ भागिनि बाल कृष्ण प्रभु बारो बरो ॥ १० ॥ ॥ राग घट ॥ अरी आज सखी बनतें बने आवत गावत श्याम सखा गनमें ॥ गति गुंजत अमित गयंदहु की लखि कौन रहे अपने मन में ॥ पगिया सिर लाल रही झुकि भाल सो पीत झगा झल के तन में । ए उपाये उपजी जीयमें मानों चपला लपटी श्याम घन में । घुंघरारी लटैलट के मुख ऊपर राजत है रज गोधन में । चित्र लिखीसी रही गई ता छिन वृन्दाबन प्रभु वृन्दाबन में ॥ ११ ॥ राग घट ॥ कान्हर कारो नंद दुलारो मो नैननिको तारो री । प्राण पियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री । दृग में राजत हिय में छाजत एक छिना नहि न्यारो री । मुरली टेर सुनावत निसि दिन रूप अनूपम वारो री । चरण कमल मकरंद लुब्ध है मन मधुकर गुंजारो री । रस रंगकेलि छबीले प्रभु संग हित सो सदा बिहारो री ॥ १२ ॥ राग घट ॥ आज व्रज भूमि नवरंग सो भावनो रास खेलत नवल संग प्यारी । माधुरी रूप रस केलि सोहावनो चंद्रिका मोर छबि देत न्यारी । हलत कुंडल चिलक पीत पट अति सरस कर कमल फूल लीने बिहारी । लगनि में मगन मोहन निरखि नेह सो रंग रस मूल राधे बिहारी । सखी निर्तत घनी बनिठनी हित सनी बजत मुरली मधुर सुर सुखारी । जुवती के जूथमें प्रेम पूरन पगे जुगल जग प्राण जीवन अधारी । गगन सुर गगन देखन छयो ए अली शिव बिरंचि सबन सुधि बुधि बिसारी । छबि छबीली छबीले छकी होइ जब जुवतिन आजु सर्बस्व हारी । १३ ॥ राग घट । निरखि त्रिभुवन धनी प्रेम पूरन सनी माधुरी रूप रस मेंचु भानी । छबि छकी सांवरी अबकितें जांउरी लगत मन मोहनी सुधि भुलानी । लाग सोचित लुभ्यो नेह हिय में खुभ्यो लाज कुल कानि जियते छुडानी । अंग सब रंग हरि के रंगी ह्वै अंगी कोउ कहो बावरी कोउ सयानी । देखि सुंदर बरन मन हरन सुख करन नागरी नवल हित बनिके ठानी । रसिक जीवन छबीले प्रभु प्राण धन चरण वे शरण सुख में समानी ॥ १४ ॥ राग घट ॥ जयति गोकुला नंद गोबिंद गोपालिका ताल कताल गति निर्तकारी । हेम मणि मंडली मध्य घन नील मणि मोहनी नंद मंदिर बिहारी । जयति बाल गोपाल सु विसाल लोचन जुगल गरे रुचिर व्याघनख मणि मुरारी । सुघट कटि किंकिणी नाद उन्माद पद नूपुरा रणित गति निर्त धारी । जयति ललाट पट घटित तिलक कस्तूरिका कुटिल अलकावली मुख विकासी ।

दछदछिन हस्त पूप पर पायस बाम कर नवनीत ब्रह्म रासी । जयति पूतना प्राण हत शकट उच्चाट करि असुरतृणावर्त धरि धरणि आने । नील गिरि श्री जगन्नाथ सिसु रूप कृत को नमति दास माधव बखाने ॥ १५ ॥ राग घट ॥ सरस रस रंग भीने नवल हरि रसिक बर प्रातही जात इत रात सोहे । परम प्रीति के ऐन हित हुलसि जागे रैन चैन चित निरखि दुति मन मोहे । मंद मृदुल हसनि छवि लसनि मुख माधुरी ललित कचकुटिल दृगबंक भोहें । मदन गोपाल अवलोकि धीरज धरे कहे री सजनी ऐसी बालको है । चकृत चितवत चित्त करत चंचल चखनि बिसरि गति बिबस बावरी हो है । सोभा को सदन सुख बदन की ज्योति लखि हेत है कोटि रबिससि लजो हैं । लपटि उदगार उर हार कंचन बसन प्रेम सिंगार तन मन खगो है केवल राम वृन्दावन जीवनि छकी सब सखी दृगनि सो रूप जो है ॥ १६ ॥ रागघट ॥ शरदरजनी रुचिर ससि मुखद चांदनी मुदित मोहन रसिक रास नाचे । लेत गति लटकि भ्रू मटकि मदन मादसो नवल बटवर ललित मुखप नाचे । रीझि भीजी कुंवरि लाल संग ताल क्रम उच्चरे मधुर सुर सरस साचे । उर पति खई हुं रमई नई नई गतिसो संगीत के रंग माचे । मन मोहित चंद थकित खग मृग बिवस बांसुरी धुनि सुनत मुनिन बाचे । केवल राम वृन्दा बन जीवन धन जुगल बर सदा बिलसत दृगनि दरस जाचे ॥ १७ ॥ रागघट ॥ चर्चरी ॥ राधिका रवन गिरिधरन गोपी नाथ मदन मोहन कृष्ण नटवर बिहारी । रास लीला रसिक व्रज जुबति प्रान पति सकल दुख हरन गोगणन चारी । सुख करन जग तरन नंदनंदन नवल गोप पति नारि बल्लभ मुरारी । छीत स्वामी हरि सकल जीव उद्धार हित प्रकट बल्लभ सदन दनुज हारी ॥ १८ ॥ राग घट ॥ आज दधि मथन करे भामिनी प्रेमथी हरष आनंद भरी गीत गाए । रई मांहें करी रज्जु बेहु कर धरी घमरनो शबद ते अति सुहाए । प्रेम पुलकिततनी कृष्ण रस मासनी किंकिनी नाते अति घोष थाए । उर जना भारथी कटितेत चका वरे सुंदरी शोभा ते कही न जाए । तेस में कान्ह जी आवीने ओचका पेठो घर माहे न बनत खाए । जुबति एजाणयू को धसी गयुं और डेमेली मंथान ते चाखी धाए । सुंदरी आवता जोई श्री कृष्ण जी तर्जने माखनते क्षणुप खाए । नर सैयां स्वामीथीगोपी बिनती करे मांजसो मांजसो चित चुराए ॥ १९ ॥ * * *

॥ राग कल्पद्रुम नित्य कीर्त्तनान्तर्गत ॥

॥ राग घट समाप्तम् ॥

॥ अथ राग देवगंधार प्रारंभ ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

आजु अति राजत दंपति भोर । सुरत रंगके रस में भीने नागर नंद किसोर । अंसन पर भुज दियो विलोकत इंदु वदन दिव ओर । करत पान रस मत्त परस्पर लोचन चिंवित चकोर । छूटी लटन लाल मन करष्यो येव.के चित चोर । परि रंभन चुंबन आलिंगन सुर मंदिर कलघोर । पग डगमगत चलत वन बिहरत नव निकुंज घन घोर । हित हरि वंस लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥ १ ॥ राग देव गंधार ॥ व्रजनव तरुणि कदंब मुकटमणि श्यामा आजु बनी । नख सिखलो अंग अंग माधुरी मोचे श्याम धनी । यों राजति कबरी गूंथति कच कनक कंज बदनी । चिकुर चंद्रकन बीच अर्द्धविधु मानो ग्रसतफनी । सौभग रेख सिर अवत पनारी पीय श्री मंतटनी । भ्रकुटी कामको खंड नैन सर कज्जल रेख अनी । तरल तिलक ताटंक गंडपर नासा जल जमनी । दरन कुंदसर साधर पल्लव प्रीतम मन सुमनी । चिबुक मध्य अति चारुह सहज सखि श्यामल बिंदु कनी । प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कसि बतनी । भुज मृणाल बल हरति बलय जुत पर ससरस अनी । श्याम शीसतर मनो झिड बारी रची रुचिर रवनी । नाभि गंभीर मीन मोहन मन खेलन को हृदनी । कृसकटि पृथुनितंब किंकिनि हत कदलि खंभ जघनी । पद अंबुज जावक युत भूषन प्रीतम उर अवनी । नव नव भाव विलोकि भामदम बिहरत है वरकरनी । हित हरि वंस प्रसंसित श्यामा कीरत बिसद घनी । गावत अवनि सुनत सुखाकर बिखदुरित दमनी ॥ २ ॥ राग देवगंधार ॥ देखत नवनि कुंज सुनि सजनी लागत है अति चारु । माधविका केतुकी लता ले रच्यो मदन आगारु । सरद मासु राका निसि सीतल मंद सुगंध समीर । परमल लुब्ध मधुव्रत विथकित तन बदत कोकिला कीर । बहुविधि रंग मृदुल किसलय दल निर्मित पिय सखि सेज । भाजन कनक विविधि मधु पूरित धरे धरनो परछेज । तापर कुसल किसोर किसोरी करत हास पर हास । प्रीतम पानिउरज बर परसत प्रिया दुरुवति बास । कामिनि कुटिल

भृकुटि अवलोकनि दिन प्रतिपद प्रति कुंज । आतुर अति अनुराग बिबस हरि धाइ धरत भुज मूल । नागर नीवी बंधन मे चत एंचति नील निचोल । बधू कपट हठि कोप कहति कल नेति नेति मधु बोल । परिरंभन बिपरीत रति गति सरस सुरति निजु केलि । इंद्र नील मणि मयतरु मानो लसत कनक की बेलि । रतिरन मिथुन ललाट पटल परश्रम जल सीकर संग । लज्जितादिक अंचल झकझोरति मन अनुराग अभंग । हित हरि बंस जथामति वर्णन कृष्ण रसा मृत सार । श्रवण सुनत प्रात करति राधा पद अंबुज सुकुमार ॥ ३ ॥ राग देव गंधार ॥ आजु बन क्रीडत श्यामा श्याम । सुभ बनी निसि सरद चांदिनी रुचिर कुंज अभिराम । खंडन अधर करत परिरंभन ऐंचत जघन दुकूल । उरज पात तिरछी चितबनि दंपति रस सम तूल । बे भुज पीनपयो धर परसत बांम दिसा पिय हार । बसननि पीक अलक आकर घत समर श्रमित सत मार । पल पल प्रबल चोपरस लंपट अति सुंदर सुकुमार । हित हरि बंस आगु चनु तूटत हो बजि बिसद बिहार ॥ ४ ॥ राग देव गंधार ॥ आजु बन राजत जुगल किशोर । नंदनंदन वृषभांन नंदिनी उठे उनींदे भोर । डगमगात पगुधरत सिथल गति परसत नखससि छोर । दसन बसन खंडित मुख मंडित भाल तिलक कछु थोर । दुरतन कच कर जनिके रोके नैन अरुण अलि चोर । हित हरि बंस सम्हारन तन मन सुरति समुद्र झकोर ॥ ५ ॥ राग देव गंधार ॥ बनकी कुंजनि कुंजनि डोलनि । निकसत निपट सांकरी बीथिनु परसत बाहि निचोलनि । प्रात काल रजनी सब जागे सूचत सुख दृग खोलनि । आलस बलित अरुन अति व्याकुल कछु उपजति गति गोलनि । निर्तन भृकुटी बदन अंबुज मृदु सरस हास मधु बोलनि । अति आसक्त लाल अति लंपट बस कीने बिनु मोलनि । बिलुलित सिथल श्याम छूटी लट राजत रुचिर कपोलनि । रति बिपरीत चुंबन परिरंभन चिबुक चाह टकटोलनि । कबहुंक अमित किसलय सेज्जा पर मुख अंचल झक झोलनि । दिन हरि बंस दास हिय सींचत बारिद केलि कलोलनि ॥ ६ ॥ राग देव गंधार ॥ प्रीतम दोउ बने मरगजे बागे । नवनि कुंज ते निकसि प्रातही पिय पाछे धन आगे । खंडित अधर पयो धर मंडित गंड बिराजत दागे । छूटी लट टूटी मणि माला अर्द्ध घुंघट छबि पागे । नख सिख बिसिख कुसुम की सेना छूटे हेरन बागे । व्यास स्वामिनी को सुख सर्ब सुचिस्यो श्याम सुभागे ॥ ७ ॥ राग देव गंधार ॥ कहांलों अलके देही ओट । चंचल चपल सुरंग छबीलो आनि बन्यो मग जोट । खंजन मीन कमल अति लाजत उपमाही जैकोट । सूर दास प्रभु कहं लग बरनी नाहिन रूपकी टोट ॥ ८ ॥ राग देव गंधार ॥ भली यह खेलिबे की बानि । मदन गोपाल लाल काहुकी नाहिन राखत कानि । देखि कसे मति करतब सुतके यह ले माट मथानि । फोरि ढोरि दधि डारि अजिर में कौन सहे दिन हानि । अपने हाथ खे देत बनवर को दूध भात घृत सानि । जो बरजों तो आंखि दिखावै परघर कूद निदानि । ठाढी हसतिनंद की रानी मूंदि कमल मुख पानि । परमानंद दास जानत है बे जि बूझि दे आनि ॥ ९ ॥ राग देव गंधार ॥ ठाढी

जशोदा कहे। यह सब ब्रजके लोग खालके गोहन लाग्यो रहे । जाके भवन जातन कबहुं सो जूठे आनि गहे । एक गांउ एक बास बसेबो कैसे जातनिबहे। तुम जिन खीजो मात जशोदा सब निको जीवनि यहै । परमा नंद आंखि जरो जाकी जूठेढी दृष्टि चहे ॥ १० ॥ राग देवगंधार ॥ सुनहु धों अपने सुतकी बात । देखि जसोमति कांनि न राखत ले माखन दधि खात । भाजन भानि डारि सब गोरस बांटत है करि पात । जो बरजों तो उलटि डरावत चपल नैन की घात । जो पावत सो लेत चपल हठि नेकहु नाहि डरात । हों सकुचति अंचर कर धरि के रही ढांपि मुख गात । गिरिधर लाल हाल एसे करि चले धाय मुसिकात । चतुर्भुज दास संग हों आयो बूझि सोइ दे सात ॥ ११ ॥ राग देव गंधार ॥ जो तुम सुनहु जसोदा गोरी । नंद नंदन मेरे मंदिर में आजु करत हैं चोरी ॥ हों भई आनि अचानक ठाढी कह्यो भवनमें कोरी । रहे छपाय सकुचि मीचक होइ मनहु भई मति भोरी ॥ मोहि भयो माखन पछितावो रीती देखि कमोरी । जब गहि बांह कुलाहल कीनों तब गहि चरण निहोरी॥ लागे लेन नयन जल भरि भरि मैं हरि कांनिन तोरी । सूरदास प्रभु देव निसा दिन ऐसी अलक सलोरी ॥ १२ ॥ राग देवगंधार ॥ हाहा और सुनेगो कोऊ । बहुरि ग्वालि मुखते जिनि काढे जोहम जाने दोऊ ॥ बालक कान्ह निपट भोरे न पायन चलन सिखायो । तासों कहति भवन अपने में चोरी माखन खायो ॥ घरहूं करत कलेऊ क्रम क्रम जोकोउ बहुत निहोरे । सोक्यों अनत सकुच को खरिका कंचुकि के बंदतोरे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन चंद को झूठेही लावति खोरे । छेडे काहु और गोप को इनहीं के अनुहोरे ॥ १३ ॥ राग देवगंधार ॥ नित उठि देन उराहनों आवे । यहजु ग्वाली जोबन मदमाती झूठेही दोष लगावे ॥ बहियों भाजन धरे पराये कहां मेरो मोहन पावे । खरिका अति सकुमारु गहे कर हलधर संग खिलावे कबहुंक कहति कंचुकी फारी कबहुंक और बतावे । कबहुंक रई मथांनी लेके आंगन सोर मचावे ॥ मन तेरो लाग्यो कमल नयन सों ऊतरु बहुत बनावे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुखयहि मिस छिनु छिनु देखो भावे ॥ १४ ॥ राग देवगंधार ॥ अरी मोरोइ तनक सो गोपाल कहा करि जाने दधिकी चोरी । काहे को आवति हाथ नचावति जोभन करही थोरी ॥ कब छीकेते मांखन खायो कब दधि मटुकी फोरी। अंगुरिन करि कबहूं नहिं चाखत घरही भरी कमोरी ॥ इतनी बात सुनी जब ग्वालिनि बिहसि चली मुख मोरी । परमा नंद नंदरानी के सुत सोजो कछु कहे सो थोरी ॥ १५ ॥ राग देवगंधार ॥ ढोटा रंचक माखन खायो । काहे को इरुई होति री ग्वालिनी सब ब्रज गाजि हलायो ॥ जाको जितनो तुम जानतहो तूनों मोपे लेहु । मेरोकान्ह रहे इकलो तब सबे असीस मिलिदेहु ॥ कमल नयन मेरी अंखियन तारो कुल दीपक ब्रजगेह । परमानंद कहति नंदरानी सुत प्रति अधिक सनेह ॥ १६ ॥ राग देवगंधार ॥ तुम नीके दुहिजानत गैया । चलिये कुंवर रसिक नंद नंदन लागों तिहारे पैयां ॥ तुमहिं आनि करि कनक दोहनी घरते पठई मैया । निकट

हि है यह खरिक हमारो नागर लेउं बलैया ॥ देखियत परम सुदेस लरकई चित चुरयो सुंदरैया । कुंभनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोबर्द्धनरैया ॥ १७ ॥ राग देव गंधार ॥ मोहन पूरे होसत भाइ । कहत लाल नीके दुहि देहों ग्वालि तिहारी गाइ ॥ आतुर ह्व दोहनी कनक की करते लीनी धाइ । देखो वेगि पाटकी नोई बछरा चोखे जाइ ॥ हसि हंसि दुहत अरु कहत रसिकी बातें बहुत बनाइ । चतुर्भुज प्रभु सहज हिं रतिजोरी गिरि गोबर्द्धन राइ ॥ १८ ॥ राग देव गंधार ॥ लाल तुम कैसे दुहत हो गाइ । कहुं बैठे कहुं दृष्टि दोहनी धार कहूं चलिजाइ ॥ यह दुहिबो हम कबहुं न देख्यो ग्वालि कहति समुझाइ । जोकछुहुतो तनकसो वामें सिरतो दियो लुढाइ ॥ मेरी सास खरी रिस हारी अब मोहि देखि रिसाइ । श्रीविट्ठल गिरिधरन लालपें सर बस चली हराइ ॥ १९ ॥ राग देवगंधार ॥ पिछोंडी बाहन दै हों दान । सूधे मन तुम लेहु गुसांई राखो हमारो मांन ॥ मारग रोकि रहे नंद नंदन सब गुण रूप निधान । बदन मोरि मुसिकाइ भामिनी नयन बांन संधान ॥ नंद रायके कुंवर लाडिले सबके जीवन प्रान । परमानंद स्वामि मोहन हो तुमतें कौन सुजान ॥ २० ॥ राग देवगंधार ॥ मोहन तुमकैसे होदानी । सूधे रहो गहे पति अपनो तिहारें जीकी मैंजानी ॥ हम गूजरी गंवारि अहीरी तुमहो सारंग पानी । मटुकी लई उतारि सीसते सुंदरि अधिक लजानी ॥ कर गहि चीर कहां खेंचत हो बोलत चतुर सयानी । सूरदास प्रभु मांखन के हित प्रेम प्रीति चित ठांनी ॥ २१ ॥ राग देवगंधार आजु दधि देखों तेरो चाखि । कहियों मोल किते बेंचेगी सत्य बचन मुखभाषि ॥ जो तूं कहे सोई हों देहों संग सखा सब साखि । जोन पत्याइ ग्वालि तूं हमको कंठ श्री ले राखि ॥ लेचले संग घरदाम देनको जनायो नेंकु कटाछि । कुंभनदास प्रभु गोबर्द्धन धर रस बस लियो ततालि ॥ २२ ॥ राग देवगंधार ॥ रंचक चाखन देरी दीजो । अदभुत स्वाद श्रवण सुनि मोपें नाहिन परत रह्यो ॥ ज्यों ज्यों कर अंबुज कुच झंपति त्यों त्यों मरमु लह्यो । नंद कुमार छबीलो ढोटा अंचरा धाइ गह्यो ॥ हरि हठ करत दास परमानंद यह मैं बहुत सह्यो । इन बातनि खायो चाहत हो सेतन जात बह्यो ॥ २३ ॥ रागदेवगंधार किसोरी अंग अंग भेंटी श्यामहि । कृष्ण तमाल तरल भुज साखा लटकि मिलीज्यों दामहि गिरिवरधरन सुरत रति नाइक रति जीत्यो संग्रामहि । सूर कहें उभै सुभट बिच क्यों जुवसे रिपु कामहि ॥ २४ ॥ राग देवगंधार ॥ किसोरी देखत नयन सिरात । बलि बलि जाउं मुखारबिंदकी चंद मंदह्वै जात ॥ श्याम कंचुकी तामें सोभित कंचन कलस नमात ॥ मानो मदन दोउ कुच ऊपर नील बस्त्र फहरात ॥ नकबेसरि औरु उरझि पीतांबर देखत मुनि मुरझात । या मुखदेखे सूरदास प्रभु उडे पुराने पात ॥ २५ ॥ राग देवगंधार ॥ सघन कुंज ते उठे भोरही श्यामा श्याम खरे । जलदनवीन चिया मिलि दामिनि बरषि निसा उघरे ॥ सिथिल रसन पट नील पीतांबर आरस डुत पहिरे । कछुक बूंद परति श्रम कनिका बादर बरन करे ॥ भूषन बिबिध छुटी मिंडवारी अति रस उमडि परे । प्रेमप्रबाह छुटो मानो सरिता टूटी माल गरे ॥ सोभा अमित बिलोकि

सूर सुख नाहिन जात तरे ॥ २६ ॥ राग देव गंधार ॥ देखि सखि चार चंद्र कठोर । चित वति रही नितंबिनि पिय संग सार सुता की ओर ॥ देबिधु नील श्याम घन जैसे बिधु की गति गोर । ताके मध्य चार शुक राजत देफल आठ चकोर ॥ ससि ससि संग प्रवाल कुंद अलितहां अरुझियो मन मोर । सूरदास प्रभु उभै रूप निधि बलि बलि जुगल किसोर ॥ २७ ॥ राग देवगंधार ॥ जसुमति आनंद कंद नचावति । पुलकि पुलकि हुलसाति देखि मुख अति सुख पुंजहि पावति ॥ बाल जुवा हुडाकिशोर मिलि चुटकी दै दै गावति । नूपुरसुर मिश्रित धुनि उपजत शिव बिरंचि बिसरावति । कुंचित ग्रंथित अलक मनोहर झपकि बदन पर आवति ॥ जन भगबान मनहुं घन बिधुमिलि मकर चांदनो लजावति ॥ २८ ॥ राग देवगंधार मागत दधि माखन उठि प्रातु । हों दधि मथन करन को बैठी तहां आये अरु रात ॥ कह्यो यशोदा री यों रोहिणी हंसि हंसि बैठे खात । प्रज पति पिय ओर मागत हैं कहि कहि तोतरि बात ॥ २९ ॥ राग देवगन्धार ॥ तुमपै कोन दुहावत गैया । गूढ भाव चूचित अन्तर गति अति सुकाम को नैया ॥ गूढ प्रीति तासों मिलि कीजै जो होय तिहारी दैया । ज्यों भावे त्यों मिलत सबनि सों यहै सिखाई मैया ॥ लै जु रहे कर कनक दोहनी बैठे हो अध पैया । परमा नंद स्वामी हठ मागो ज्यों घर खसम गुसैया ॥ ३० ॥ राग देवगन्धार ॥ बसे मेरे नयननि में नंदलाल । सांवरि सूरत माधुरी मूरति राजिव नयन बिसाल ॥ मोर मुकुट मकरा कृत कुण्डल चरुण तिलक दिये भाल । शंख चक्र गंद पद्म बिराजत कौस्तुभ मणि बन माल ॥ बाजू बंद जरइके भूषन नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल मदन मोहन पिय भक्तन के प्रतिपाल ॥ ३१ ॥ जुगल गोत बर्णन ॥ राग देवगंधार ॥ क्यों बिसरे वह गाय चरावनि । बाम कपोल बाम भुज पर करि दक्षिन भोंह उचावनि ॥ कोमल कर अंगुलि गहि मुरलि अधर मुधा बरषावनि । चढि बिमान जे सुनत देवतिय तिननु मोह उपजावनि ॥ हार हास उरथिर चपला उर अदभुतरूप मिलावनि । दंत धरें तिन रहति चित्र ज्यों गैयनु सुधि बिसरावनि ॥ मोर मुकुट श्रवणनि पल्लव कटि मल्ल स्वरूप बनावनि । चरण रेणु बंछत कंपत भुज सरि तन गमन थहावति ॥ आदि पुरुष जे अचल भूति हैं संग सखा गुण गावनि । बन बन फिरत कबहुं सुरली कर गिरि चढि गाय बुलावनि ॥ लताबिटपि मन मांह प्रकट ह्वै फलभर भूमि नवावनि । ततछन हरित होत प्रति अवयव मधु धारा उपटावनि ॥ सुंदर रूप देखि बन लाला मत्त मधुप सुर गावनि । आदर देत ससोवर सारस हंस निकट बैठावनि ॥ बल संग श्रवण पुहप सोभा गिरि सिखर नाद पुरवावनि । बिबिध भांति बन गमन बिचक्षण नूतन तान बतावनि ॥ सुनत नाद ब्रह्मादिक सुर गण अधिक चित्त मोहावनि । चलत ललित गति हरत ताप ब्रज भूमि सोकबिन सावनि ॥ ब्रज युबती मनमें न उदय करि थार ताठ हरावनि । दिब्य गन्ध तुलसो माला उर मणि धर गाय गवावनि ॥ बेणु नाद बंचित करि सब हरिनो भोंह छिड़ावनि । कुंद दाम शृंगार सकल अंग यमुना जल उछरावनि ॥ मुदित सकल गन्धर्व देव गण सेवा उचित करावनि । गिरिधर बछुरे ब्रज गैयन के आवत चरण छुवावनि ॥ बेणु बजावत ब्रज सुख देबे गायनि ले ब्रज आवनि ।

गावत गोप बिसद कीरति संग संग फिरत बर भावनि ॥ घूमत मद दृग देत मान कछु श्रुति कुंडल झलकावनि । बदरस दृग आनन सब सूचत बिधु च्यों अंग सिरावनि ॥ गुण गावत ह्वै प्रकट रूप सेा घेास बियेाग बुझावनि । चार जाम हरिके संग क्रीड़त लीला माह समावनि ॥ यह लीला चित बसेा लसेा नित गोपी जन सुख पावनि । दीजैदास रसिक को यस फल ब्रज जन पदराज धावनि ॥ ३२ ॥ राग देवगन्धार ॥ जबतें श्याम शरण में पायेा । तबतें भेट भई श्री बल्लभ निजपति नाम बतायेा ॥ और अविद्या छाड़ि मलिन मति सुत पतिसेां दृढ दृढायेा । कृष्ण दास सब युग जन खेाजत अब निश्चय मन आयेा ॥ ३३ ॥ राग देवगन्धार ॥ प्रकटे श्री बल्लभ राज कुमार । जै जै श्री गिरिधर श्री गेाबिंद बल्लभ जू उदार ॥ गेाकुल पति रघुपति श्री यदुपति सेाभित तन घन श्याम । करुणा पति श्री कल्याण राय जू रसिक जननि सुखधाम ॥ श्री मुरलीधर प्रभु बासिद श्री बल्लभ कुल सकल समान । बिष्णुदास गेापाल लीला बपु गावत बेद पुरान ॥ ॥ ३४ ॥ राग देवगन्धार ॥ श्री गेाकुल युग युग राज करेा । या सुख भजन प्रताप तें छिनहूत उत नटरेा ॥ पावन रूप दिखाय प्रण पति पति तन पाप हरेा । बिश्व बिदित दीन गति प्रेत निज व्रत नेउ धरेा ॥ श्री बल्लभ कुल कमलनि दीपक यश मकरंद भरेा । नन्द दास प्रभु षट गुण संपन श्री बिठलेश बरेा ॥ ३५ ॥ राग देवगंधार ॥ जे जन शरण गये ते तारे । दीन दयाल प्रकट पुरुषेात्तम बिट्ठल नाथ ललारे ॥ जितनी रबि छाया की कणिका तितने दोश हमारे । तुहरे चरण प्रताप तेजतें तेते तत छिनतारे ॥ माला कंठ तिलक माथे दे शंख चक्र बपुधरे । मानिक चंद प्रभु के गुण ऐसे महा पतित निस्तरे ॥ ३६ ॥ राग देवगंधार ॥ महा श्री बल्लभ के ह्वै गाजेा । चरण अम्बुज गहि मान ग्रंथ तजि स्वामी पदतें भाजेा ॥ गीता भागवत निगम से साखी तेा काहे को लाजेा । गीत गेाबिंद बिल्व मंगल सीवा को कहि सके अनदाजेा ॥ पुरुषेात्तम इनही तें पैये यह दृढ मति तुम साजेा । सगुण दास कहे युवति सभा में गिरिधर महल बिराजेा ॥ ३७ ॥ राग देवगन्धार ॥ अपुन पें अपनी सेवा करत । आपुन प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनेा रूप उर धरत ॥ आपुन धरम करम सब जानत मरजादा अनुसरत । छीत स्वामि गिरिधरन श्री बिट्ठल भक्त बछल बपु धरत ॥ ३८ राग देवगन्धार ॥ हम तेा श्री बिट्ठल नाथहि जाने । आनदेव सेवन कत करिये नहिं कछु उर में आने ॥ कोउ भजो सुर पति कोउ गणपति व्रत कोउ भजो बेद पुराने । कोउ रबि चंद मंद शिव शंकर कोउ भजो प्रकट प्रमाने ॥ कोउ भजो सनकादिक मुनि नरद कोउ भजो करम निदाने । कोउ भजो अंस कला अवतारे कोउ अक्षर क्षर थाने । कोउ भजो नेति नेति कहि निर्गुण कोउ भजो पद निरबाने ॥ कोउ भजो तंच मंच यंचन को फिरत सबे भहराने । कोउ भजो नव अरुसात पदारथ मुक्ति से सके दाने । करुणा निधि गिरिधर भजि दृढ करि हरि लीला रसपाने ॥ ३९ ॥ राग देवगन्धार ॥ श्री बल्लभ के नंदन फिरि आये । बेई रूप बई फिरि क्रीड़ा करत आपु मनभाये ॥ वे फिरि राज करत श्री गेाकुल बेई गीत प्रकटाये । बेई शृंगार भेाग छिनु छिनु के बेई लीला गाये ॥ जे यशुमति को आनंद दीनेा

सो फिरि व्रज में आये । श्री विट्ठल गिरिधर पद अम्बुज गोविंद उर में लाये ॥ ४० ॥ ॥ राग देवगन्धार ॥ प्रकट्यो प्राची दिस पूरन चंद । त्योंही प्रकटे श्री वल्लभ गृह सुर नर मुनि आनंद ॥ अद्भुत रूप अलोकिक महिमा जननि तात यों भाष्यो । छीत स्वामि गिरिधर श्री विट्ठल लोक बेद मति राख्यो ॥ ४१ ॥ राग देवगन्धार ॥ यह कलि परम सुभग जन धनि श्री विट्ठल नाथ उपासी । जो प्रकटे व्रजपति विट्ठलेश्वर तो सेवक व्रज वासी ॥ व्रज लीला भूल्यो चतुरानन बलटार्यो व्रतरासी । अबलों सठ अव गनत अभागे करत परस्पर हासी ॥ आत्या सहित आपु धये हैं हितू दियो नर प्रकासी । देखियत लोक स्वरूप अलोकिक ज्यों गंगा सरि तारी ॥ पर हरि सदन सदा हरि जस गावत भक्त मुक्त की दासी । वदत न कछुभीम भव बैभव भजतानंद उपासी ॥ ४२ ॥ राग देवगंधार ॥ जसोदा कहा कहों हों बात । तुम्हरे सुत की करतब मोपें कहत कही नहि जात ॥ भाजन फोरि ढोरि सब गोरस लै माखन दधि खात । जोबरजों तो आंखि दिखावे रंचहु नाहि सकात ॥ और अटपटी कहांलो बरनों छुवत पानि सोगात ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर के गुन हों कहति कहति रकुजात ॥ ॥ ४३ ॥ राग देवगंधार ॥ ग्वालिन तोहि कहत क्यों आयो । मेरो कान्ह निपट बालक क्यों चोरी माखन खायो ॥ बूझि विचारि देखि जिय अपने कहा कहों हों तोहि । कंचुकि वंदतोरे यह कैसें सो समुझि परति नहि मोहि ॥ चतुर्भुज दास लालगिरिधर सों झूठी कहति बनाय । मेरो श्याम सकुच को लरिका परघर कबहुं न जाय ॥ ४४ ॥ ॥ राग देवगंधार ॥ बालकही ते चोरी एहो जानत । माखन दूध धरेव उन छाड्यो बहोरि अचानक भाजन भांनत ॥ अबहीं लाल मेरो सर्वस मूस्यो अरु उलटे तुम कैसी बांनत । कुंभनदास प्रभु संग लागी डोलति गोवर्द्धन धर अजहुंन मांनत ॥ ४५ ॥ ॥ राग देवगंधार ॥ अठताल ॥ मानि मानिरी मोहन द्वार ठाढे । तेरीतो प्रकृति आने पियकी पीरो न जाने बातें तो बहुत उफाने त्यों त्यों ते हृदे आगरेकपाटदिये गाढे ॥ वर्षे रयनि कारी तासों बहि लगभागी ऐरोरी लालन पर तन मन धनवारि फेरि प्राण दीजे काढे । सुनत बचन प्यारी कंठ लागी गिरिधारी गोविंद प्रभुको हृदो प्रेम जलसों बुझायो अरु बिहानल दाढे ॥ ४६ ॥ राग देवगंधार ॥ कछुव कही न जाइ तेरी उनकी बिकटवात । आंन आंन प्रकृति के सेवनि आवे जो तूं डार डार तो वेहेंरी पात पात ॥ अब कहा कहति सोई जाइ कहो प्रीतमसों छांडि देहु इत उतकी पांच सात । अब रतेपर गोविंद प्रभु सुमुख मनावत तेरी बातनि बातनि भयो प्रात ॥ ४७ ॥ राग देवगंधार ॥ पटताल ॥ लालन मुरली नेक बजाइये । विनती करत प्यारी को सखी । जानतहों सकल कला गुण निपुन मोर ढोल्यो दीजत ताते धोप राज कुंअर हमहुं तान देसुनाइये ॥ जैसे खग मृग द्रुम पशु बेली सरिता मोहों तैसे हमारी सखिनकों मनु रिझाईये । गोविंद प्रभु सकल कला प्रवीन ताते हमारे श्रवणनि सुख उपजाइये ॥ ४८ ॥ राग देवगंधार ॥ लडैते देरेरो उर हार । जाइ कहोंगी नंदराय सों यह तेरो व्योहार ॥ मेरी दुलरी मेरो कंकन मेरो गजरा हार । तेरे घरको मोल सबेई

मेरो सहज सिंगार ॥ बहुत दिनन को झगरो ठान्यों उर मनि कंचन हार । झगरति झगरति गई कुंजमें व्यास कियो निरवार ॥ ४९ ॥ राग देवगंधार ॥ कुंज सदन ते मदन जीति उठे घन दामिनि से भोर । व्रज तरुनी वृषभान नंदनी नागर नंद किसोर ॥ राजत हैंबन माल ग्रीव उर बनी बलाका डोर । मनहु पाक सासन सरासनसी सीस चंद्रिका मोर ॥ परभृत बेन हंस हांसी मन चातिक नयन चकोर । मुरली अधर मधुर कलगरजत ललित राग मिलिघोर ॥ बरसे प्रेम नीर सरसे दरसे अनूपम जोर । देखे प्रभु ऐसे मनमोहन आवत व्रजकी खोर ॥ ५० ॥ राग देवगन्धार ॥ भले तुम आए मेरे प्रात । रजनी सुखकहूं अनत कियो पिय जागे सारी रात ॥ झपि झपि आवत नयन उनींदे कहा कहूं यह बात । ज्यों जल रुहतकि किरनि चंद्रकी अति सभीत मुंदि जात ॥ कहुं चंदन कहुं बंदन लाग्यो देखियत सुन्दर गात । गंगा सरस्वती मनो जमुना अंगहि मांझ लखात ॥ भली करी प्रण बोल निबाहे मेरे ग्रह पर भात । छीत स्वांमि गिरिधर सुनि बातें मदन मोरि सकुचात ॥ ५१ ॥ राग देवगन्धार ॥ सांचे भए आए परभात । नंद नंदन रजनी कहं जागे कहिये सांवल गात ॥ पीक कपोलनि लगे तुम्हारे जावक भाल लखात । उरहि बिराजत बिन गुण माला मोतन लखि सकुचात ॥ भली करी अब तहीं सिधारो जहां बिताई रात । छीत स्वामि गिरिधर काहे को झूठो सोंहें खात ॥ ५२ ॥ रागदेवगंधार ॥ मोहन करते दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरें । हाथ धेनु थन बदन चिया तन छीर छाछि छल छोरें ॥ आनन रही ललित पय छीटें छाजत छवि तृन तोरें । मानहु निकसि कलंक कला निधि दुग्ध सिंधु मधि खोरें ॥ दे घूंघट पट ओट नील हंसि कुंवर मुदित मुख मोरें । मनहु सरद ससिको मिलि दांमिनि घेरिन लियो घघोरें ॥ यह बिधि रहसत बिलसत दंपति हेतहिये नहि थोरें । सूर उमगि आनंद सुधा निधि मनो बिलावलि फोरें ॥ ५३ ॥ राग देवगँधार ॥ अबहीं देखे नवलकिशोर । घरही आवतहिं तनक भए हैं ऐसे तनके चोर ॥ कछुदिन करि दधि माखन चोरी अब चोरत मन मोर । बिबिस भई तन सुधिन संम्हारति कहति बात भई भोर ॥ यह बांनी कहतहीं लजानी समुझि भई जिय बोर । सूरश्याम मुख निरखि चली घर आनंद लोचन लोर ॥ ५४ ॥ राग देवगंधार ॥ युवती एक आवतदेखी श्याम । द्रुमकी ओट रहे ह्वै आपुन जमुना तट गई बाम ॥ जल हिलोरि गागरि भरि नागरि जबही सीस उठायो । घरको चली जाइता पाछे सिरती घट ढरकायो ॥ चतुर ग्वालि कर गह्यो श्याम को कनक लकुटिया पाई । औरनि सों करि रहे अचगरी मोसों लगतकन्हाई ॥ गागरि लै हसि देत ग्वालि कर रीतो घट नहि लैहौं । सूरश्योम ह्यां आनि देहु भरि तबहि लकुट कर दैहौं ॥ ५५ ॥ राग देवगंधार ॥ गोपिका अति आनंद भरी । माखन दधि हरि खात सखनि संगअति आनंद खरी ॥ कर लै लै मुख परस करावति उपमा बडी सुभाई । मानहु कंज मिलत ससिको लिये सुधा कौर कर आई ॥ जा कारन शिव ध्यान लगावत शेष सहसमुख गावत । सोई सूर प्रकट व्रजभीतर राधा मनहि चुरावत ॥ ५६ ॥ राग देवगंधार ॥ मन मन हंसति राधिका गोरी । ऐसे श्याम रहत व्रजभीतर बूझति है भई

भोरी ॥ तुम उनकों कहुं देखेहौ को सुनी कहति हौ बात । चतुराई नीके गहि राखो मुख मुरि कैं मुसिकात ॥ कबहुं तौ कहुं संग परि हौ तबहिं लीजै चीनि । सूर श्याम को पीताम्बर मेरि बेसरि लीजो छीनि ॥ ५८ ॥ राग देवगन्धार ॥ तुमकों कैसे श्याम लगे । न्हात रही जल में सब तरुनी तब तुम नैना कहां खगे ॥ अंग अंग अवलोक न कीन्हें कौन अंग पर रहे पगे । भूल्यो न्हान ज्ञान तन भूली नंद सुवन उततें नडगे ॥ जानति नहीं कहूं नहि देखे मिलि गई ऐसे मनहु सगे । सूर श्याम ऐसे तें देखे मैं जानति दुख दूरि भगे ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ हिंडोलना झूलें श्री राधा कृष्ण ॥

॥ राग मलार ॥ हिंडोलना माई झूलत गोकुल चन्द । संग राधा परम सुन्दरि दोउ करत आनन्द ॥ है खंभ कञ्चनके मनोहर रतन जटित सुरङ्ग । बनो चारि डांडी परम सुन्दर निरखि लजित अनङ्ग ॥ पटुली पिरोजा लाल लटकत झूमता बहुरङ्ग । मरवे सों मानिक चुनी लागी बिच बीच हीर तरङ्ग ॥ कल्पद्रुम तर छांह शीतल विविध मन्द समीर । बर लता लटकत भार कुसमन परसि जमुना नीर ॥ हंस मोर चकोर चातिक कोलिका अलि कीर । नैा नेह नवल किशोर राधे नवल गिरिधर बीर ॥ ललिता बिसाखा देहि झूमटा रीझ अंग न समाहि । अति लाड़िली सुकुमारि डरपति श्याम उर लपटाहि ॥ गौर श्यामहि अंग मिलि दोउभए एकहि भांति । नील पीत दुकूल दुति घन दामिनी दुरि जाति ॥ कुंज पुंज झुलाय झुलवत सहचरी चहुं ओर । मनों कुमिदिन कमल फूले निरखि जुगल किशोर ॥ ब्रज बधू तृन तोरि डारति देति प्रान अकोर । जन सूर कों ब्रजबास दीजै श्याम नवल किशोर ॥१॥ हिंडोलना रागदेव गन्धार ॥ हिंडोरे झूलत श्यामाश्याम । ब्रज जुवती मंडली चहूंघां निरखत बिथकत काम ॥ कोउ गावत कोउ हरष झुलावत सब पुरवत मन साध । कोउ संग मचत कहत कोउ मचहौ उपजो रूप अगाध ॥ कोउ डरत हाहा करि बिनवत प्यारी अङ्कम लाय । गाढे गहति पिया अपने भुज पुलकत अंग डराय ॥ अब जिन मचौ पाय लागत हों मोकों देहु उतारि । यह सुनि हंसत मचत अति गिरिधर डरत देखि अति नारि ॥ प्यारी कहति टेरि ललिता सों मेरी सों गहि राखि । सूर हंसत ललिता चंद्रावलि कहा कहत पिय भाखि ॥ २ ॥ राग मलार हिंडोलना ॥ जमुना पुलन रचो हिंडोर । घेाष ललना संग तरुनी तरुन नन्द किशोर ॥ एक संग लै मचत मोहन एक देति झुलाय । एक निरखत अंग माधुरि एक इक उठिगाय ॥ श्याम सुन्दर गोपिका गनघेरि रही बनाय ॥ मनेा जलद कुदामिनी गन चहत लिये लुकाय ॥ नारि संग बन बारि गावत कोकिला घन घोर । दलत झलत मुकट सिरपर मनों नर्त्तत मोर ॥ सुमन मुख दुहुं पास कुंडल

निरखि युवती भोर । चक्रवाक चकोर लोचन करि रहे हरि ओर ॥ थकित सुर ललना सहित नभ श्याम निरखि विहार । हरष सुमन अपार बरषत मुखहि जै जैकार ॥ कहत मन मन यहै बांछा भई तन द्रुमडार । देह धरि प्रभु सूर बिलसत ब्रह्म पूरन सार ॥ ३ ॥ हिंडोरना राग केदारो ॥ हिंडोरैं झूलन आई । पचरंग बरन पाट की डड़िया अतिही बानक सों बनाई ॥ झूलत युवती नंद ललन संग एक बैस इक दाई । सूर दास प्रभु मोहन नागर आपन झूल झुलाई ॥ ४ ॥ हिंडोरना राग केदारो ॥ डोलत नंद नंदन डोल । कनक खंभ जराय पटुली लगे रतन अमोल ॥ सुभग सरल सुदेस डंडी रची विधना गोल । मनहु सुरपति सुर सभातें पठै दयो हिंडोल ॥ जबहि झंपत तबहि कंपत रहसि लगत डरोल । चिदग्रपति सचि चढे बिमानन निरखि दैदै ओल ॥ थके मुख कहि कछु न आवै सकल मम मुख फोल । सखी सत नव साज कीनों वदत मधुरे बोल ॥ थको रति पति देखि यह छवि इन्द्र भयो भ्रम भोल । सूरयह सुख गोप गोपी पिवत अंजुत ओल ॥ ५ ॥ राग विलावल ॥ नित्त धाम वृन्दावन श्याम । नित्त रूप राधा ब्रज बाम ॥ नित्त रास जल नित्त बिहार । नित्त मान खंडित अभिसार ॥ ब्रह्म रूप एई करतार । करन हरन ए त्रिभुवन सार ॥ नित्त कुंज सुख नित्त हिंडोर । नित्त त्रिविधि समीर झकोर ॥ सदा बसन्त रहत जिहि पास । सदा हरष जहं नहीं उदास ॥ कोकिल कीर सदा यह रोर । सदा रूप मनमथ चित चोर ॥ त्रि विधि सुमन वन फूले डार । उनमत मधुकर भ्रमत अपार ॥ नव पल्लव बन शोभा एक । विहरत हरि संग सखी अनेक ॥ कुहू कुहू कोकिला सुनाई । सुनि सुनि नारि सबै हरषाई ॥ बार बार सुनि हरिहि सुनावत । ऋतु बसन्त आई समुझावत ॥ फागु चरित रस साध हमारे । खेलें सब मिलि संग तुहारे ॥ सुनि सुनि सूर श्याम मुसकाने । ऋतु बसन्त आई हरषाने ॥ ६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ अथ बसन्त लीला ॥

॥ राग बसन्त ॥ देखत बन ब्रजनाथ आजु अति उपजतहै अनुराग । मानो मदन बसंत मिलि दोउ खेलत फूले फाग ॥ झांझि झाझरन झर निशान डफ भंवर भेर गुंजार । मानहु मदन मंडलो रचि पुर बीथन बिपुन बिहार ॥ द्रुम गन मद्धि पलास मंजरी उड़त अगनि की नाई । अपनेअपने मेर मनोहर होरी हरषि लगाई ॥ केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी । मानहु लै लै नाम परस्पर देत दिवावत गारी ॥ कुंज कुंज प्रति कोकिल गुंजत अति रस बिसल बढी । मानो कुल वधु वन लज्जित भई गृहगृह गवति अटन चढी ॥ प्रफुलित लता जहांजहं देखियत तहां तहां अलि जात । मानहु बिटप बहुत अवलोकत परसत गनिका गात ॥ बहुबिधि सुमन अनेक रंग छवि उत्तम भांति

धरे । मनो रति नाथ हाथ से सबहुन खोंने रंग भरे ॥ और कहां लों कहों कृपा निधि इन्द्रा विपिन विराज । सूर दास प्रभु सब सुख क्रीड़त श्याम तुम्हारे राज ॥ ७ ॥ राग बसन्त ॥ आयो आयो पिय ऋतु बसन्त । दम्पति मन सुख बिरहिअन्त ॥ फागु खिला-वहु संग कन्त । हा हा करि तुन गहत दन्त ॥ तुरत गई हरि लये मनाई । हरष मिली उर कण्ठहि लाई ॥ दुख डारो तुरतही भुलाई । सो सुख दुहुंके उर न समाई ॥ ऋतु वसन्त आगम जानि । चियन राखो मान बानि ॥ सूर दास प्रभु मिले आन । रस रा-खोरति रंग ठान ॥ ८ ॥ राग बसन्त ॥ आयो जान्यों हरि ऋतु वसन्त । ललना सुख दीनों तुरन्त ॥ फूले बरन सुमन पलास । रति नायक सुख को विलास ॥ संग नारि चहुं आस पास । मुरली अंबुत करत भास ॥ श्यामा श्याम विलास एक । सुख दायक गोपी अनेक ॥ तजत नहीं काहू छिन एक । आलख निरञ्जन बिबिधि भेक ॥ फागु रङ्ग रस करत श्याम । युवती पूरन करत काम ॥ बासर है सुख देत जाम । सूर श्याम बहु कंत वाम ॥ ९ ॥ धमारि राग आसावरी ॥ डफ बाजन लागे हेली ॥ चलऊ चलऊ जैये तहंरी जहं खेलत श्याम सहेली ॥ जिह बन सुन्दर सांवरो नहि निष देखन दाए । ए गुरजन बैरी भये अब कोजै कौन उपाए ॥ आवहु बछरा मेलिये बन को देंहि बिडारि । वे देहैं उनको पठै हम देखें रूप निहारि ॥ योजत गागरि डारिये जमुना जल के काज । इह मिस बाहिर निकसिके जाइ मिलै ब्रज राज ॥ सब रंग रंग मग रहो नंदराय दरबार। गावत सकल ग्वालिनी नाचत सकल गुवार ॥ घरीघरी आनंद करि जीवन जान असार। खाय खेलि हंसि लीजिये फाग बड़ो त्योहार ॥ मुरली मुकुट विराजहीं कटि पट राजत पीत । सूरज प्रभु आनंद भरे गावत होरी गीत ॥१०॥ धमारि राग आसावरी ॥ बल्लभ राज कुमार छबीले हो ललना । धनिधनि नन्द जशोमति धनि धनि गोकुल गांउ । धन्य कुवर दीए खाडिले मोहन जाको नांउ ॥ सखा नाम ले बोलहीं सुबल तोष श्रीदाम ॥ जहं तहं तेंउठि चलेवन बोलत सुंदर श्याम ॥ गिरिवर धारी रस भरे मुरली मधुर बजा य । श्रवण सुनत गोपी सबै घर घर तें चलि धाय ॥ भेष बिचित्र बनाय के भूषन सबनि शृंगार । मन्दिर तें सजि सब चलीं बालक बन बन बार ॥ एक ओर युवती जुरीं एक ओर बलबीर । बांसन मार मची मनो रूपे सुभट रनधीर ॥ सकल बधू आईं सबै हो अपने अपने टोल । झूम सेती गावहीं नक बिच बिच मीठे बोल ॥ एक सखी तब सैन दै हो लीनै सुबल भुलाय । झाड़ा क्योंहू भांति कै नक मोहन पहराय ॥ बहुरि उलटि ब्रज सुन्दरी मनमोहन लीने घेरि । नैनन काजर दै चली हंसत बदन तन हेरि ॥ रुञ्ज मुरज डफ दुंदुभी बाजैं बहु बिधि साज ॥ बिच बिच भेरी झिम झिमी घोष शब्द बहु गाज ॥ यहि विधि होरी खेलही हो सकल घोष सुखदाय । गिरिवर धारी रूपपर सूरज जन बलि जाय ॥ ११ ॥ धमारि राग गौरी ॥ गोकुल सकल ग्वालिनी घर घर खेलत फागु । तिन में राधा लाड़िली जिन को अधिक सुहागु ॥ झुंडन मिलि गावत चलीं झूलत नन्द दुवार । आजु पर्व हंसि खेलिये मिलि संग नन्दकुमार ॥ मोहन दरश दिखावहु दुरो तो नंद को आन । रसिक राय सुन्दर बर राधा जीवन प्रान ॥ जमुमति

सुत चित चुभि रही वहतुम्हरी मुसकानि। अवतो अनत रुची उपजाई सहज परोयह बा नि ॥ दुरत श्याम धरि पाय राधा भरि अंकवारि । कनक कलस केसरि लै भरि धाई व्रज नारि ॥ भरङ्ग भरङ्ग सखि श्यामहीं पीत पिछोरी पाग । देहगेह सुधि बीसरी नट नन्दन अनुराग ॥ सूर गुपाल कृपा बिना यह रस लहै न कोय । श्री वृषभान किशोरी श्याम मगन मन होय ॥१२॥ धमारि राग कल्यान ॥ व्रज राज लडैते गाइये हो मोहन जाको नाउ । खेलत फागु सुहावनी रंग भीजि रहे सब गांउ ॥ ताल पखावज बाजहीं हो डफ सहनाई भेरि । श्रवण सुनत सब सुन्दरी झुंडन आईं घेरि ॥ इतहि गोप सब राजही हो उत सब गोकुल नारि । अति मीठी वे भावती देहि परस्पर गारि ॥ चोवा चन्दन छिरकहीं हो उड़त अबीर गुलाल। मुदित परस्पर खेलहीं हो हो लै बोलत ग्वाल ॥ सब गोपिनि मिलि हलधर पकरे छांडि पाय लगाय । दाऊ आजु भलेबने जू आये आंखि अंजाय ॥ बहुरि सकिट सब सुन्दरी मिलि पकरे गोकुल नाथ । नव कुंकुम मुख माडि कै रचि बेनी गूंथी माथ ॥ तब नंदरानी बीच कियो बहु मेवा दई मगाय । पट भूषण पहराय सबन कौं निरखि सूर बलि जाय ॥ १३ ॥ धमारि राग गौरी ॥ ऊंचौ गोकुल नगर जहां हरि खेलत होरी । चलि सखि देखन जांहि पिया अपने की जोरी ॥ बाजत ताल मृदङ्ग और किन्नर की जोरी । गावत दै दै गारि परस्पर भामिनि भोरी ॥ बुक्का सुरंग अबीर उडावत भरि भरि झोरी । इत गोपिनके झुंड उतहि हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोली की तोरी । राधा चली रिसाय ढीठ सौ खेले कोरी ॥ खेल त में कैसौ मान सुनौ वृषभान किशोरी । सूर सखी उरलाय हंसत भुज गहि झकझोरी ॥ १४ ॥ धमारि राग नट नारायण ॥ खेलत फागु कहत हो हो होरी । बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ रञ्ज मुरज बांसुरि धुनि थोरी ॥ श्रवन सुनाय गारि दै गावत ऊंचे तान लेत प्रिय गोरी । कुंकुम रंग भरै पिचकारी नौतन छिरकत नवल किशोरी ॥ यहि बिधि उमगि चलो रंग जहं तहं मनु अनुराग सरोवर फोरी । भरि करि आनि अबीर उडावत गोबिंद निकट जाय दुरि चोरी ॥ मनङ्ग प्रचंड पवन बस पंकज गगन धूरि सोभित चङ्ग ओरी । कनक कलस कुंकुम भरि लीन्हे कस्तूरी मिलि कें घस घोरी ॥ खेल पर स्पर कीच मची घर अधिक सुगन्ध भयो व्रज खोरी । ग्वाल बाल सब संग मुदित मनजाय जमुन जल न्हाय हिलोरी ॥ नए बसन आभूषन पहिरत और न देत पितंबर छोरी । द्वै जसमति मीत करती द्विज तिलक दूब दधि लोचन रोरी ॥ सूरश्याम बिप्रन बंदीजन देत रतन कंचन की बोरी ॥ १५ ॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सूरसागर रागकल्पद्रुम

बसन्त लीला सम्पूर्ण ॥

॥ अथ राग बिलावल प्रारंभ ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

जागो हो तुम नंद कुमार ॥ बलि बलि जाउ मुखारबिंद की गोसुतमेलो खरिक संभार ॥ आजु कहा सोवत चिभुवन पति औरबार तुम उठत सवार ॥ बारंबार जगावति माता कमल नयन भयो भवन उज्यार ॥ दधि मथि हौं माखन तुझे देहां संग सखा ठाढे सिंह दुआर ॥ उठि क्यों न मोहि तुम बदन दिखावहु सूर दास के प्राण अधार ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ नंद के लाल उठे जब सोय ॥ देखि मुखारबिंद की सोभा कहु काके मन धीरज होय ॥ मुनि मन हरत जुवति को बपुरी रति पति मान जात सब खोय ॥ ईषद हास दसन दुति दामिनि मानिक ओपि धरे मानो पोय ॥ नागर नंद सुबन सुनि सजनी मारग जात खेत मनगोय ॥ सूर श्याम मन हरन मनोहर गोकुल बसि मोहे सब लोय ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ सोवत ग्वालिनि कान्ह जगाए। भोर भए हम आए दरस को जीवन जन्म सुफल करि पाए ॥ उत्तम सेज अरु सेत बिछोना चहुंदिस रुचि रचि आपु बनाए ॥ सूर दास प्रभु तुम्हरे दरसको पूरन चंद प्रगट ह्वै आए ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ बाल गोपाल उठो मेरे तात ॥ बलि बलि जाउं मुखारबिंद की अमिय बचन बोलहु तुतरात ॥ उनिंदे नैंन बिसाल की सोभा कहत न आवत मोते बात ॥ द्वार खड़े ब्रज सखा पुकारत नैंन मीडिआए परभात ॥ दुहुकर माट गहे नंदनंदन छिटकि बुंद दधि परत अघात ॥ मानहु गजमुकता मरकत पर सोभित सुभग सांवरे गात ॥ लीला एक रची मनमोहन दधि ओदन मागत अरियात। लोटत सूर श्याम पुहमी पर चारि पदारथ जाके हाथ ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ कौन परी नंद लालहि बानि ॥ प्रात समैं जागन की बेरिआं ओढत हैं पीतांबर तानि ।

मात जसोदा कबकी ठाढी भोजन खाहु दूध घृत सानि । उठो मेरे लाल कलेऊ कीजै सुंदर बदन दिखा बहु आनि । सखा द्वार सब ठाढे मधु बन धेनु चरावो खानि । सूर श्याम अति ही अलसाने सोवत हैं अजहूं निसि जानि ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ नंद नंदन वृन्दाबन चंद । यह कहि जननि जगावति लालहि जागहु मेरे आनंद कंद । आलस भरे उठे मन मोहन चलत चाल ठुमकत अति मंद । पोंछि बदन अंचर सो जसुमति हृदे लगाइ उपज्यो आनंद । सब ब्रज जुवति आई देखनको दरसन हेत मिट्यो दुख दंद । वृजपति श्री गोपाल परिपूरन जाको जस गावत श्रुतिछंद ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ करत कलेऊ दोउ भैया । रोटी तोरि सानि माखन में मिश्री मेलि खवावति मैया । कांचो दूध लयो धौरीको तातो करि मथि प्यावति धैया । करि अचवन बीरा लै वृजपति पाछे चले चरावन गैया ॥ ७ ॥ राग बिलावल ॥ दोउ भैया मागत मैया पै दे मा माखन रोटी । सुनि के भावती बात सुतनकी झूठेहु धामके काम अगोटी । बल गह्यो बदन नासिका मोती कांन्ह कुवर गही दृढ करि चोटी । मानहु हंस मोर भख लीनों कबि उपमा जानहु जिनि छोटी । यह छबि निरखि नंद आनंदे प्रेम मगन भए लोटक पोटी । सूर दास जसुमति सुख बिलसति भाग बडे कर मनकी मोटी ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ कान्ह माई मागत हैं दधि रोटी । माखन सहित देहु मेरी माई सुपक सु कोमल मोटी । काहे को इतनी करत हो मोहन काहेको भूमें लोटी । जोई चाहो सो लेहु तुरतही छाडो यह मति खोटी । करि मनु हारि कलेऊ दीनो मुख चुपरेव अरु चोटी । गाय चरावन चले सूर प्रभु हाथ लकुटिआ छोटी ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ करहु कलेउ कान्हर प्यारे । माखन रोटी दयो हाथ पर वलि वलि जाउ हो खाहु ललारे । टेरत द्वार ग्वाल हैं ठाढे आये तबके हेत सवारे । खेलो जाइ वृजहि के भीतर दूरि कहूं जिनि जैहो बारे । टेरि उठे बलराम श्याम को आवहु जाहि धेनु बन चारे । सूर श्याम कर जोरि मात सो गाइ चरावन चले कहत हहा रे ॥ १० ॥ राग सूहो बिलावल ॥ भोर भयो मेरे खाडिले जागो कुंअर कन्हाई । सखा द्वार ठाढे सबै खेलो जदुराई । मोको मुख देख राइये चय तापन सावहु । तब मुख चंद चकोर नयन मधु पान करावहु । तब हरि मुख पट दूरि कै भक्तनि सुख कारी । हंसत उठे प्रभु सेजते सूर बलि हारी ॥ ११ ॥ राग बिलावल सूहो ॥ नंदमहर के भावते जागहु मेरे वारे । प्रात भयो उठि देखिये रवि किरन उजारे । ग्वालबाल सब टेरहिं गैयां बन चारन । लाल उठो मुख धोइये लागी बदन उघारन । मुखते पटन्यारो कियो माता कर अपने । देखि बदन चकृत भई सोतुक की सपने । कहा कहो वह रूप की को बानि बतावे । सूर श्याम के गुण अपार नंदसुवन कहावे ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ उठे नंद लाल सुनत जननी मुख बानी । आलस भरे नैन सकल शोभा की खानी । गोपी जन बिथकि ह्वै चितवति सब ठाढी । नैन करि चकोर चंद बदन प्रीति बाढी । माता जल झारी लै कमल मुख पखारेव । नीरनूर परस करत आलसहि बिसारेव । सखा द्वार ठाढे सब टेरत हैं बनको । जमुना तट चलहु कान्ह चारन गोधनको । सखा

सहित जेवहु भोजन कछु कीन्हों । सूर श्याम हलधर संग सखा बोलि लीन्हों ॥ १३ ॥ राग बिलावल ॥ जागिये गोपाल लाल ग्वाल द्वार ठाढे । रैनि अंधकार गयो चंद्रमा मलीन भयो तारे गण देखियत नही तरनि किरनि चाढे । मुकुलित भये कमल जाल कुंजकरत भृंगमाल प्रफुलित बनपुहपजाल कुमुदनी कुमिलानो । गंधर्ब गुण गान करत मान दान नेम धरत हरत सकलपापबहत विप्र बेद बानो । बोलत नंद बार बार मुख देखे तब कुमार गाइन भई बडी बार वृन्दाबन जैवे । जननी कहति उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूर दास प्रभु कृपाल तुमको कछु खैबे ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ जागहु लाल ग्वाल सब टेरत । कबहुं पिताम्बर डारि बदन पर कबहुं उघारि जननि तन हेरत । सोवत मैं जागत मनमोहन बात कहत सबकी अवहेरत । बारं बार जगावति माता लोचन खोलि पलक पुनि घेरत । पुनि कहि उठी जसोदा मैया उठहु कान्ह रबि किरनि उजेरत । सूर श्याम हंसि दितै मात मुख पटकर ले पुनि पुनि मुख फेरत ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ दोउ भैया जेवत मा आगे । पुनि पुनि लै दधि खात कान्हाई और जननि पै मांगे । अति मीठो दधि आज जमायो बलदाऊ तुम लेहु । देखो धौं दधि स्वाद आपु लै ता पाछै मोहि देहु । बलमोहन दोउ जेवत रुचि सो सुख लूटति नंद रानी । सूर श्याम अब कहत अघानो अंचवन मागत पानी ॥ १६ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ जननी जगावति उठो कन्हाई । प्रगट्यो तरनि किरनि गन छाई । आवहु चंद बदन दिखराई । बार बार जननी बलिजाई । सखा द्वार सब तुमहि बुलावत । तुम कारन हम धाए आवत । सूर श्याम उठि दरसन दीन्हों । माता देखि मुदित मन कीन्हों ॥ १७ ॥ * ॥ अथ खंडिता ॥ * राग बिलावल ॥ नहि न दुरत नैना रतनारे । जनु बंधूक सुमन बिसाल पर सुंदर श्याम सिखी मुख तारे । राजत अलक कुटिल कुंतल पर मोतन चितवत चितहि बिसारे । सिथिल भौंह धनु मदन गुण रहे कोकनद बान बिखारे । मूदेहीं आवत एलोचन पलक आतुर उघरत न उघारे । सूर दास प्रभु सोई पै कहतिये ऐसीको जासों रति रण हारे ॥ १८ राग बिलावल ॥ आजु निसि कहाहुते मेरे प्यारे । सो हैं तुह्मारी कहि न जात छबि छनीदे नैन रतनरे । मेचक अधर निमेष पीक रुचि प्रकट देखियत तुह्मारे । हृदे हार बिनु गुणहि अलंकृत मृगमद तिलक लिलारे । बोलके सांचे आए भोरभए रमित सेज हृद भान सुतारे । सूर दास चतुराई प्रकट भई आगेते कित होत न न्यारे ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ अति रसबस नैना रतनारे । छपत न छपे छपावत हो कत जनु मनमथ सिर बरत अंगारे । तब पाले हित जानि भली विधि जेहुते हरि संबर दधि डारे । जब भए प्रगट प्रबीन तरुण तन तरुणाई तामस जनु तारे । पुनि शिव पूरब बैरस मुझि करि मदन मुदित मादक बल भारे । अति रिस भौंह सरासन जुत करि आनक मल साधत सर न्यारे । समुझि परी सखि रति सुरूप तुम रति पति ज्यों निसि बिलसन हारे । सूर दास धनिधनि सुभामिनि जेहि अनुराग तिलक हरि सारे ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ रसना और हो रैनि गवाइ ॥ निसि भई छीन बोलत तमचुर

खग ग्वालन ढीली गाय । अरुण किरनि पंकज दल बिकसित मधुप लए रस जाय । चंद मखीन भांन के प्रगटत कुमुदिनि गई कुम्हिलाइ । गृहते निकसि आंगन भई ठाढी तुम बिन कछु न सुहाइ । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलनते मिलिके बिछुरि न जाइ ॥ २१ ॥ राग बिलावल ॥ आज अति शोभित हैं तन श्याम । मानहु री जीते नंद नंदन मनसि जसो संग्राम । मुकुलित कचन समात मुकुट रुचि रोस अरुण दोऊ नैन । थम सूचित गति भांति अलस बस बोलत बनत न बैन । नख छत श्रे णिप्रस्वेद गाततें चंदन गयो कछु छूटि । मदन सुभट केसर सुदेस मानो लगे कवच पट फूटि । दसन अंकसह प्रीति प्रकट भई सन्मुख सुभग प्रहार । सूर दास प्रभु परमेश्वरमैं जानै नंद कुमार ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ आज और छबि नंद किसोर । मिलि रिस रुचि लोचन भयो अंतरचितवत चित्ततिहारी ओर । प्रकटित पीठ बलय कर कंकन देखियत हार हिये बिन डोर । बसन नील उर राते अधरन अंजन नैन तमोर । नख सिखलो सिंगार अटपटो पाए मनों पलाने चोर । फूले फिरत दिखावत औरनि निडर भए दे हंसनि अंकोर । देखत बने कहत नहि आवे बयसंधि बरनत कबिन कठोर । अचरज क्यों न होय इन बातनि सूर ग्रहन देखे बिन भोर ॥ २३ ॥ राग बिलावल ॥ रति संग्राम बीर रस माते । अहो हरि सूर सिरोमनि अजहु नाहि नसंभारत जाते । औरें बरन भए एलोचन अपने सहज बिनाते । मानो भोर महा जोधन की भए क्रोध अति राते । परिमल लुब्ध जहां अलि बैठत उडिन सकत ताठांते । मानों मनमथ सर खूंचि रहे अंग पुरब बाहरि घाते । बैठि जात अलसात उनीदे क्रम क्रम उडत तहांते । मानहु कुटिल कटाच्छ नाठसर कढत नहीं हियराते । डगमगात घूमत घायल से सभा सुभटकुल काते । सूर दास प्रभु रति रन जीते अब सकात हो काते ॥ २४ ॥ राग बिलावल ॥ माधो नीकी बंदिसि आए । नैन उनीदे पाग लटपटी बिथुरे केश सुहाए । नख रेखाउर मंडित है जानो द्वितिया चंद उगाए । बिगलित बसन पग धरत डगमगत किहिं यह चाल चलाए । निसा आनके तुम बसे सावरे भोर इहां उठि धाए । रस बस अनत रहे सूरज प्रभु तऊ मेरे मन भाए ॥ २५ ॥ राग बिलावल ॥ अतिही अरुन पिय नैन तुम्हारे । मानहु रति रस भए रगमगे करत केलि पिय पलक बिसारे । मंदमंद डोलत संकित से सोभित मध्य मनोहर तारे । मानहु अरुण कमल संपुटते उडि न सकत चंचल अलि वारे । झिमि झिमात जागरनु जनावत अति रस बसत भ्रमत अनियारे । मानहु सकल जुवति जीतनको काम बानखर सान संवारे । बैठि जात अलसात उनीदे कहुं मूंदत कहु करत उघारे । मनहु मत्तमरकत मयंक तन खेलत खंजरीट चटकारे । बारबार अवलोकि परम रुचि कपट नेह मन हरत हमारे । सूर श्याम देखि सचुपावति दुख मोचन लोचन रतनारे ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ रूसे हो पिय रूसे हो । उत्तर को उत्तर नदेत देखेहित हीन कछू सेहो । वह चितवनि नहोइ नैननि की बचन नेहु उतहू सेहो । वहमुख कमल बिकास नहीं रति सायक सिसिर बिदूसे हो । कै कछु गई संपदा करते कै ठग ठगे कछू सेहो । मेरे जान सूर प्रभु सांचेहु मदन चोर

मिलि मूसे हो ॥ २७ ॥ राग बिलावल ॥ तुम रीझेकी उनहि रिझाये । हाहा पिय यह प्रकट सुनावहु कोटिक सांह दिवाये । जावक भाल चिन्ह मैं जान्यो हठ करि पाय लगाये । अंजन अधर उरहि नख रेखा लटपटि पाग सुहाये । बिन गुण माल मिली कहं तुमको कंकन पीठ दिखावहु । सूर श्याम हमतो यों जानति तुमहूं कहि न सुनावहु ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ आजु हरि रैनि उनीदे आये । अंजन अधर लिलाट महावर नैन तंबोख खवाये । बिन गुन माल बिराजत उरपर चंदन रेख लगाये । मगन देह सिर पाग लटपटी जावक रंग रंगाये । हृदै सुभग नख रेख बिराजत कंकन पीठि बनाये । सूर दास प्रभु है अचंभौ तीनि तिलक कहं पाये ॥ २९ ॥ राग बिलावल ॥ आज हरि आलस अंग भरे । कबहुंक बांह जोरि ऐंडावत बहुत जम्हात खरे । बैठोगे की पाव धारिये देखत नैन सिराने । सांझ आए एक दरसन दीन्हो की अब होत बिहाने । कबके ढार भये पिय ठाढे भोरे बडे कन्हाई सूर श्याम ह्यांसुरत रमीब हह्यां तुम भोर लगाई ॥ ३० ॥ राग बिलावल ॥ सांह करन को भोरही तुम मेरे आये । रैनि करत सुख अनत हिताके मन भाये । अंग अंग भूषन और से मागे कहुं पाये । देखि थकित यह रूप को लोचन अरुनाये । पाग लटपटी सोहई जावक रंग लाये । मान कियो वेहि मानिनी धनि पाई पराये । यह चतुराई कहा पडी उनहिं समुझाये । सूरदास प्रभु सांचिलै उपमा कबि गाये ॥ ३१ ॥ राग बिलावल ॥ धन्य आजु यह दरस दियो । धन्य धन्य जासों अनुरागे तन जामी नहिं और बियो ॥ हमतौ श्याम यह भली भावती भले भली मिलि भली करी । यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौ बिछुरत क्यों एकघरी ॥ जाहुतहीं सुखदीन्हो मोकोवै सुनिकै रिस पावेंगी । सूरश्याम अति चतुर कहावत बहुरयो मनन मिलावेंगी ॥ ३२ ॥ राग बिलावल ॥ क्यों आये उठि भोर इहां । काहे को इतनों सरमाने रैनि रहे फिरि जाहु तहां ॥ हमको कहा इतोगरुवाई उनहैं बड संभारौजू । उन आये ह्यां नाहीं जान्यों अजहूंले पग धारौजू ॥ हमहू बोलि उहांहीं लीजौ डर उनके हमहू कोलै । सूरश्याम तिनहीं सुख दीजे जोविलसे संग तुम कोलै ॥ ३३ ॥ राग बिलावल ॥ रसिक रसिकई जानिपरी । नयननि ते अबन्यारे हूजै तबहीते अति रिस न मरी ॥ तुम जोबन अरु सो नव जोबन एते पर सब गुणनि भरी ॥ लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि पिय अहरी । अंजन अधरकपोलनि बंदन पीक पलक छबिदेखि डरी ॥ सूरश्याम रति चिन्ह दिखावन मेरे आये भले हरी ॥ ३४ ॥ राग बिलावल ॥ बार बार मैं कहति हों पिय तहीं सिधारो । आये हौ मन हरनको हरिनाम तुम्हारो ॥ भली बनी छबि आजुकी क्यों लेत जम्हाई । रैनि आजु सोये नहीं रति काम जगाई ॥ बहुरति तुम रति नाथ हो हम कासें भावे । सूरश्याम तुम बहु गुनीजे तुमहि रिझावे ॥ ३५ ॥ राग बिलावल ॥ आइ गई ब्रजनारि तहां । सोंह करत पिय प्यारी आगे आनंद बिरह महां ॥ प्यारी हंसी देखि सखियनको अंतर रिस है भारी । नैन सैनदे अंग अंग निरखति पिय सोभा अधिकारी ॥ श्याम रहे मुख मूदि सकुचिकै जुवति परस्पर हेरै । सूर प्रभु अंग अंग अनूप छबि कहांपायो केहि

केरै ॥ ३६ ॥ राग बिलावल ॥ तब नागरि कहति सखियनि सों एते पर ए सोंह करै । दरसन प्रात देत हैं हमको निसि औरनि के चित्त हरै ॥ तुमहीं देखि लेहु अंगबानक एते पर क्यों सही परै । कृपाकरो अबतहीं सिधारौ मोआगेते अवजु टरै ॥ यह छबि देखि सनाथभई मै अबताही पर जाइटरैं । सूरश्याम रिस देखि चले उठि कहौ सखी अब ह्यां न फिरैं ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ पिय छवि निरखत नागरी अंग दसा भुलानी । अंतर गत आनंद भरी लज्जिता हरषानी ॥ सह चरिसों कहि सुमन लैहरि फेट भराये । अति अधीन पिय ह्वै गये बस परे पराये ॥ मारग सुमन बिछावही पग निरख निहारै । फूले फूले धर धरे बलिया चुनिडारै ॥ ऐसे बस पिय वांमके सुख सूरज जाने । जे जेहि भावनि हरिभजे तेहि तैसे माने ॥ ३८ ॥ राग बिलावल ॥ लाल उनीदे भये । राजत है रतनारे नयना मानहु नलिन नये । पोक कपोल लिलाट महावर बंदन बलित खये ॥ जनु तनु जामें सद्य अरुण दल काम के बीज बये । बिन गुन हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेस ठये । अंजन अधर सुधा मंच लिखो रति दिक्षा लेनगये ॥ सूर श्याम बिथुरे कच मुख पर नख नाराच हये । ताऊपर आनंद दुंदुजनु मांनहु समर जये ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ नयन उनीदे भये रंगराते । मानहु सुरंग सुमन पर सजनी फिरत मृग मद माते ॥ प्रेम पराग पांखुरी पल दल प्रफुल्लित मदन लताते । सुभग सुबास बिसाल बिलोकनि प्रकट प्रीति करि ताते ॥ तैसोई मारुत मंद जम्हांवरि मिलत मुदित छबियाते सींचे सूरश्याम माननकरि हित सो केलि कलाते ॥ ४० ॥ राग बिलावल ॥ काहेको पिय भोरहि मेरे गृह आये ॥ इतने गुण हमपें कहां जे रैनि रमाये ॥ ताहीपे पगुधारिये भयेचकृत मै जाने । बिन गुण गडिमाला रही नहि कहुं बिहराने ॥ आयेयहांसुख देन को ऐसो हितकारी । सूरश्याम तुमको है बैसी सीनारी ॥ ४१ ॥ राग बिलावल ॥ कृपाकरी उठि भोरही मेरे गृह आये । अब हम भई बड भागिनी मिसि चिंन्ह देखाये ॥ जावक भाल मिसों हियो नीक बस पाये । नयन देखि चकृत भई क्यों पांन खवाये ॥ अधरनि पर काजर बन्यों बहुरंग कढायो । बंदन बेंदुली भालक भल आप बनायो ॥ यह मोसों तुमही कहो उरझत अरुनाये । सूरश्याम जसरासिहौ धनि चिया हंसायो ॥ ४२ ॥ राग बिलावल ॥ हरषि श्याम चिय बांह गहीरी । चूक परो हमको यह बससेा आवनको कहि गये हरी ॥ रिसनि उठी झहराइ झटकि भुजलुबत कहा पिय सरम नहीं । भवन गई आतुर ह्वै नागरि जेा आई मुख सबैकही ॥ मेरे महल आजुते आवहु सेाइ नंद को कोटि कही । सूरदास जबलों जग जीऊं मिलो नहीं बर कामदही ॥ ४३ ॥ राग बिलावल ॥ बहुरि मिलहुगो काल्हिहीं बित समुझि सयांनी । मेरो कह्यो नक्यों करे क्योंहेाहि अयानी ॥ अनलहि औषध अनलहै सब जान रही हौ । काहेको हठ करतिहौ वेकाज बही हौ ॥ धरनी धर व्याकुल खरेरी गर्व गहेली । सूरकह्यो सुनि मानिलै मै कहति सहेली ॥ ४४ ॥ राग बिलावल ॥ नंदसुवन बहु नायकी अनतहिं रहे जाई । यह अभिलाख करति रही ताको बिसराई ॥ बासर ऐसोही गयो निसिजामतुलानी । नारि परी अति सेाचमें बिरहा अकुलानी ॥ आवन कहिगये सांझही अजहूं नहिं आये । कीधौं कतहूं रमि

रहे फंद परे पराये ॥ बैही है बहु नायकी लायक गुणभारी । सूरश्याम कुमुदा भवन सुधि करि पगुधारी ॥ ४५ ॥ राग बिलावल ॥ भली कीनी आएहो ललनां हमारै भोर भए भोरे । हमहिं दिखावन रातिके चिन्ह जानतिहौं उनकिये बहुत निहोरे ॥ काहेको होत उघारे प्रीतम लोक निहारि देखिहैं खोरे । रसिक प्रीतम तुमहाईं सिधारो जाके निसि वसि भए दृगनि लाल लाल डोरे ॥ ४६ ॥ राग बिलावल ॥ भली करी जू आए सवारे बहुरि प्रभात कोउदो होइगो प्रकट देखिये झंकनि मारे ॥ पहिरे पीत नील पट ओढे ऐसी को चतुर धन भावत । एते मान देह सुधिभूली तुमहीं आपुनको बिसरावत ॥ पाउ धारिये बहुत बेर भई कर गहि कनक तलय बेठारे । परमानंद प्रभु तुम से और को संध्या बचन वदे नहिं टारे ॥ ४७ ॥ राग बिलावल ॥ रसिक सिरोमणि नंदलाल । रंग भीनेहो ॥ लाड लडाई नवल बाल ॥ रंग भीनेहो ॥ जावक लागी सोहे सिथिल पाग । रंग ॥ प्रिया मनाये भूरिभाग ॥ रंग ॥ रूप छके लोचन घुमात ॥ रंग ॥ प्रेम उमंगि ऐंडात गात ॥ रंग ॥ उर सोहे मरगजी माल ॥ रंग ॥ मदन मत्त डग मगी चाल ॥ रंग । बाहु उगह्यो कर्णफूल ॥ रंग ॥ दियो है उसी सो सुख को मूल ॥ रंग ॥ अलक निकसि रही शोभा देत ॥ रंग ॥ काम केलि के बिजय केत ॥ रंग ॥ महकि रही तन अति सुवास ॥ रंग ॥ अलि गावत की रति सराह रास ॥ रंग ॥ जाही से मिले हमें चैन । ॥ रंग ॥ सहि न सकत यह गूढ सैन ॥ रंग ॥ राम राय प्रभु सुनतहंसे ॥ रंगभीने हो ॥ कोउ भाव बाम के हिये बसे ॥ रंगभीने हो ॥ ४८ ॥ राग बिलावल ॥ रति रस केलि विलास हास ॥ रंगभीने हो ॥ कोउ सुन्दरि नारि के लगे गात ॥ रंग भीने हो ॥ अरुण नयन अति रस मसे ॥ रंग भीनेहो ॥ मनो भोर भए जल जात ॥ लाल रंग भीने हो ॥ बोलत बोल प्रतीत के ॥ रंग ॥ सुंदर सांवल गात ॥ लाल ॥ प्रिया अधर रस पान मत्त ॥ रंग कहत कहूं बात ॥ लाल ॥ अति लोहित दृग रगमगे ॥ रंग ॥ मनो भोर जल जात ॥ लाल ॥ चाल सिथल भ्रुव भाल सिथिल ॥ रंग ॥ ससि मुख सिथिल जम्हात ॥ लाल केस सिथल खेस सिथल ॥ रंग ॥ वय क्रम सिथल सिरात ॥ लाल ॥ गोविंद प्रभु नंद सुत किशोर ॥ रंग भीने हो ॥ बहु नायक बिख्यात ॥ लाल ॥ रंग भीने हो ॥ ४९ ॥ राग बिलावल ॥ साँझके सांचे बोल तिहारे । रजनी अनत जागि नद नंदन आये हो निपट सवारे ॥ आतुर भये नील पट ओढ़े पीरे बसन बिसारे । कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर भले बचन प्रति पारे ॥ ५० ॥ राग बिलावल ॥ तुम्हारे पूजिये पियपाय । कैसी कैसी उपजत तुमपें कहत बनाय बनाय ॥ असन अधर क्यों श्याम भये क्यों परे पट पलटाय । रुचिर कपोल पीक कहं लागी उरजय पच लिखाय ॥ गिरिधर लाल जहां निशि जागे तहां देहु सुख जाय । कुम्भन दास प्रभु छाड़ो अटपटी अब तुम्हें को पतियाय ॥ ५१ ॥ राग बिलावल ॥ कहो धों आज कहां बस लाल भोर भये आये डग मगत पग । खरे सकारे क्यों उठे मोहन बोलत तम चुर खग ॥ काजर अधर लटपटि पाग उर बिलुलित कुसुम माल कुच परसग ॥ अरुन नयन आलस जम्हात पिय रैनि कियो जग । रतिके चिन्ह तन प्रकट देखियत काहेको दुराव करत श्याम शुभग ॥ कुम्भन

दास प्रभु रसिक गिरिधर परे चतुर नागरी फग ॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥ कहोधों कहां तुम रैनि गंवाइ लाल अरुण उदय आये । कौन संकोच श्याम घनसुंदर तम चुर बोलत उठि धाये ॥ आंखि देखि कहा साखि बूझिये रति के चिन्ह तन प्रकट लगाये । कुम्भन दास सुजान गिरिधर काहे को दुरत पिय जानि पाये ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ऐसी बात न लाल न क्यों मन माने । उतह बनाय बनाय तासो कहिये जो यह नजाने ॥ रति के चिन्ह प्रकट देखियत हैं कैसें दुरत दुराने । कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धरहो तुम खरे सयाने ॥ ५४ ॥ राग बिलावल ॥ आज अरुन अरुन डोरे लाल के दृगनि लागत हैं भले । बंदन परे पगन अलि मानो कंजदलनि पर चले ॥ लाल की पगिया में न समात कुटिल आलस झिले । नंद दास मधुप पुंज मानो सोबत तें कलमले ॥ ॥ ५५ ॥ राग बिलावल ॥ आवत लाल गोवर्द्धन धारी डग मगी चाल लटपटी पाग । आलस नैन सरस रंग रंजित प्रिया प्रेम नव नव अनुराग ॥ बिलुलित माल मरगजी उर पर सुरत समर को लगी पराग । चुंवन श्याम अधर कल गावत रति सुख भाव बिलावल राग ॥ पलटि परे पटनील सखी के रसगह झीलत मदन तडाग । वृंदाबन गीथिनि अवलोकत कृष्ण दास लोचन बड़ भाग ॥ ५६ ॥ राग बिलावल ॥ कहां अबहु रत पिय जान शिरोमणि रति के चिन्ह देखियत हैं न्यारे । अरुण नयन घूमत आलस महकछुक जम्हात अधर मसिकारे ॥ श्याम अंग नभ नख पद न्यारे चंदन छीट बने मानो तारे । अबर अनेक कहांलो बरनो यह नागर ताजु आये हो सवारे ॥ मोहन लाल गोवर्द्धन धारी कटितट नील बसन बने प्यारे । कृष्णदास कहहुधों प्रीतम चतुर पीत पट कहां बिसारे ॥ ५७ ॥ राग बिलावल ॥ मया कीनो बलबीर आये तमचुर के बोल । नागर नंदलाल कुंवर पहिरें नीलनिचोल ॥ मोहन रग मगे अलसात कमल नयन अति सलोल । अधरनि नख देख घनो अरुण श्याम कपोल ॥ मृगमद को तिलक रच्यो सिंदुर के झोल । ऊपर नख चिन्ह रतन क्यों दुरत अमोल ॥ कृष्ण दास प्रभु गिरिधर मागत मन ओल । अपनो पीतांबर दै लियो मदन मोल ॥ ५८ ॥ राग बिलावल ॥ मोहन कुंद दाम उर पर कुच कुंकुम रंजित बनो । गन्ध लुब्ध अलि पांतिन तजत केलि धनधनो ॥ मोहय अधर श्याम सुख जम्हानि संगम स्वाससनो । अबर चिन्ह अगनित पिय नगनो गणना गनो ॥ कृष्णदास प्रभु नवरंग युवतिनि चिंतामनो । गोवर्द्धन धारी रसिकनि चूडा मनो ॥ ५९ ॥ राग बिलावल ॥ लाल तेरे चपल नयन अनियारे । नंद कुमार सुरत रस भीने प्रेम रंग रतनारे ॥ कछु असरीझे चकित चहूं दिसि नव बर जोवन बारे । मानो शरद कमल पर खंजन मधुप अलक घुंघरारे ॥ ए जु मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे । गोवर्द्धन धर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥ ६० ॥ राग बिलावल ॥ सोई भली जिन तुम बिरमाये । पूजा करि भामिनी सब निशि तब पद उर नख कुसुम चढ़ाये ॥ अरुण दिशा अबही नहि देखो रटत मधुप कमलनि समुदाये । रूप निधान रसिक नंदनंदन कब तस कोन सबारे आये ॥ संध्या बदे बोल मनमोहन कीनो भली ओर अवराये । आलस नयन जम्हात अधर बर रति के चिन्ह नहि दुरत दुराये ॥ अपने पीत

पटदिये सखी को छीनि लये नील बसन पराये। कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर पिय युवतिन सदसि उदार कहाये ॥ ६१ ॥ राग बिलावल ॥ यतितास ॥ लालन तहांई जाहु जाके रस लंपट अति । आलस नयन देखियत रस भरे प्रगट करत प्यारी रति ॥ अधर दसन छत बसन पीक सह अरु कपोल श्रम बिंदु देखियति । नख लेखनि तन लिखी श्याम पट जय पताक रण जीत्यो रति पति ॥ कैतव बदत जो पिय हमसो जैसें तन श्याम तैसेई मनहो अति । गोबिंद प्रभु पिय पाग सवारहु मिरत कुसुम सिर मालति ॥ ६२ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ आजु खरेई सिथिल देखियत हो बहु रस भरे लाल । सब निशि जागे अति सिथिल अरुन दोऊ अम्बुज नयन बिसाल ॥ सिथिल भूषण कटि बसन सिथिल अति सिथिल मरगजो माल । लटपटि पाग सिथिल अलकावलि बिगलित कुसुम गुलाल ॥ सिथिलसिखण्ड शीश लटकि रहे आये भोर डग मगत चाल । सिथिल बेनु कछु कहत आन को आन गोबिंदप्रभु पिय हो बेहाल ॥ ६३ ॥ राग बिलावल ॥ एकताल ॥ जानि पाए हो ललना बलि बलि ब्रज नृपति कुवर । जाके बसन निसिजागि आए तहाई अनुसर । अपनो प्यारी के चरित के चिन्ह हमहि दिखावत आए देत लोन दाढ़े पर ॥ गोबिंद प्रभु सांवल तन तैसेई हो मन जनमतही बहु जुवती प्राण हर ॥ ६४ ॥ राग बिलाबल ॥ बलि बलि पाउ धारिये आजु कछु, मेरो लहनो ब्रज नृप सुत भोर आए हो रसभरे। भई बड़ीबार पाउ धारिये हमनि बाजो बास्यो अगरजा बासे बीरा खे आगे धरे ॥ कहि न सकति एकबात लालन जाके निसि बसे ताके बसन पलटि परे ॥ गोबिंद प्रभु पिय जान शिरोमणि के बल दोऊ के हरे ॥ ६५ ॥ * ॥ दधि मथन समय ॥ * ॥ राग बिलाबल ॥ प्रात समै दधि मथति जसोदा प्रमुदित कमल नयन गुण गावति । अतिहि मधुर गति कंठ सुघर अति नंद सुवन के चितहि बढावति ॥ नील बसन तन सलिल सजल मन दामिन बिच भुज दण्ड चलावति । चंदनदनि खट लटकि छबीलो मनहु अमृत रस राहु चुरावति ॥ गोरस मथति नाद एक उपजत किंकिणि धुनि सुनि श्रवण रमावति । सूर श्याम अंचरा गहि ठाढें काम कसोटी कसि दिखरावति ॥ ६६ ॥ राग बिलावल ॥ नंद जू के बारे कान्ह छांडि दे मथनिया ॥ बार वार कह माता जसुमति रनिया ॥ नेकु रहो माखन देहों मेरे प्राण धनिया ॥ आरि जिनि करो बलि गई हों न्यों छनिया ॥ सुरनर मुनि जाको ध्यावें मुनि जनिया ॥ सूरश्याम देखि सब भूलो गोप धनिया ॥ ६७ ॥ राग बिलावल ॥ मेक रहो मांखन यौ तुमको ॥ ठाढी मथति जननि दधि आतुर लखनो नंद सुवन को ॥ मैं बलि जाउं स्याम घन सुंदर भूख लगी तुमे भारी ॥ बात कहूंको बूझति स्यामहि फेर करत महतारी ॥ कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहि भरत हुंकारी ॥ सूर दास प्रभु के गुण तुरतहि बिसरि गई नंद नारी ॥ ६८ ॥ राग बिलावल ॥ बात नहीं सुतलाइ लियो ॥ तब लों मथि दधि जननी जशोदा माखन करि हरि हाथ दयो ॥ लै लै अधर परस करि जेंवत देखत फूल्यो मात हियो ॥ आपुहि खात प्रसंसत आपुहि माखन रोटी बहुत प्रियो ॥ जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुत हित बस नंद चियो ॥ यह सुख निरखत सूर प्रभु को धन्य धन्य पल सुफल जियो ॥ ६९ ॥ राग सूहो ॥ हेरी मैया

दोहनी दुहिहैं मैं गैया । माखन खाये बल भयो करि नंद दुहैया ॥ कजरी सेंदुरी धूमरी धौरी मेरी गैया । दुहिल्याऊं में तुरतही तू करिदे घैया ॥ ग्वालनि को सर दुहत हूं बूझहु बल भैया । सूर निरखि जननी हंसी तब लेति बलैया ॥ ७० ॥ राग बिलावल बाबा मोको दुहन सिखायो । तेरे मन परतीत न आवै दुहत दुहत अंगुरियनि भाव बतायो ॥ अंगुरिन भाव देखि जननी तब हंसिके श्यामहि कंठ लगायो । आठ बरष को कुंवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहांतें पायो ॥ माता लै दोहनी कर दीन्हों तब हरि हंसत दुहन को धायो । सूर श्याम को दुहत देखि तब जननी मन अति हरष बढ़ायो ॥ ७१ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ जननि मथति दधि दुहत कन्हाई । सखा परस्पर कहत श्याम सों हमहूं तें तुम करत चंडाई ॥ दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तब करिहौ मोसम सरि आई । जबलो एक दुहोगे तबलो चारि दुहों तो नंद दोहाई ॥ झूठेहि करत दोहाई प्रात उठि देखहिंगे तुमरी अधिकाई । सूर स्याम कह्यो कालि दुहैंगे हमहु तुमहु मिलि हेाड़ लगाई ॥ ७२ ॥ राग बिलावल ॥ उठी प्रातही राधिका दोहनी करलाई । महरि सुता सों तब कह्यो कहां चली अतुराई ॥ खरिक दुहावन जाति हौं तुम्हरी सेषकाई । तुम ठकुराइनि घर रहेा मोहि चेरी पाई ॥ रीती देखी दोहनी कतखीजत धाई । काल्हि गई अवसेर कैहा उठे रिसाई ॥ गाय गई सब ष्यायके प्रातहि नहि आई । ताकारन मैं जाति हों अति करत चंडाई ॥ यह कहि जननी सों चली ब्रजको समुहाई । सूर श्याम गृह द्वारही गौ करत दुहाई ॥ ७३ ॥ राग बिलावल ॥ सुता महर वृषभान को नंद सदनहि आई । गृह द्वारेही अजिर में गऊ दुहत कन्हाई ॥ श्याम चितै मुख राधिका मन हरष बढ़ाई । राधा मुख हरि देखि के तन सुरति भुलाई ॥ महरि देखि की रति सुता तेहि लियो बुलाई । दम्पति को मुख देखि के सूरज बलिजाई ॥ ७४ ॥ राग बिलावल ॥ आजु भोरही राधिका यशुमति गृह आई । महरि कह्यो हंसि दधि मथो वृषभान दुहाई ॥ सुनि आयसु ठाढी भई करमेत सुन्हाई । रीतो माट बिलोवही चित जहां कन्हाई ॥ उनकी गति हों कहा कहों जिन दृष्टि चुराई । लई यानोई वृषभसों गई या बिसराई ॥ यशुदा निरखे दूरिसें मनमें मुसिकाई । सूरदास दम्पति कथा मोपें बरनि न जाई ॥ ७५ ॥ राग बिलावल ॥ महरि कहतिरी खाड़िली केहि मथन सिखायो । कहुं मथनी कहुं माट है चितु कहां लगायो ॥ क्यों मेरे घर आयकै तै सब बिसरायो । मथन नहीं मोहि आवही तुम सोंह दिवायो ॥ तिहि कारण में आयकें तुव बोल रखायो । तब नन्द घरनी मथि दधि यहि भांति बतायो ॥ हंसि बोली तब राधिका कह्यौ अब मोहि आयो । सूर निरखि मुख श्याम को तहं ध्यान लगायो ॥ ७६ ॥ राग बिलावल ॥ दधि मथति ग्वालि गरबीलीरी । रुनक झुनक कर कंकण बाजे बाहु डुलावति ढीलीरी ॥ कृष्ण देव दधि माखन मागत नाहि न देति हठीलीरी । भरी गुमान बिलोवनि लागी अपुने रंग रंगीलीरी ॥ हसि बोल्यो नंदलाल लाडिलो कछु एक बात कहीलीरी । परमां नंद नंदन को सर्वसु दियो है छबीलीरी ॥ ७७ ॥ राग बिलावल ॥ दधि मथन करै नंद रानीहो । बारे कन्हैया आरि नहिं कीजे छाडि न देहु मथानीहो ॥ बारी

मेरे मोहन कर पिरायगे कोन चित में ठांनीहो । हरि मुसिकाइ जननि तन चितयो सुधि सागर की आनीहो ॥ जेगुण सुर श्रुति छंद निगाए नेति नेति मधु बानी हो । परमा नंद जशोदा रानी सुत सनेह लपटानीहो ॥ ७८ ॥ राग बिलावल ॥ प्रात समय उठि यशोमति दधि मंथन कीनें । प्रेम सहित नव नीत ले सुत के मुख दीनें ॥ औटि दूध घैया कियो हरि रुचि सों लीनो । मधु मेवा पकवांन ले हरि आगे कीनो ॥ इहिं बिध नित क्रोडा करें जननी सुख पावें । गोविंद प्रभु आनंद में आंगन में धावें ॥ ७९ ॥ राग बिलावल ॥ भूल्यो दधि को मथन करिवो । देखत रसिक नंद नंदन को डग मगे पग धरिवो ॥ रहि गई चिते चिच जेसे एक टक नैंन निमेंषन धरिवो । चतुर भुज प्रभु गिरि धरन जनायो नाही में मणि माणिक हरिवो ॥ ८० ॥ राग बिलावल ॥ देखो री माई कैसी हे ग्वालिन उलटी रई मथनीया बिलोवे । बिनु नेती कर चंचल पुनि पुनि नबनी ते टकटोवे ॥ निरखि स्वरूप चोहटि चित लाग्यो एक टक गिरिधर मुखजोवे । कुंभन दास चिते रही अकवक औरें भाजन धोवे ॥ ८१ ॥ राग बिलावल ॥ एरीआनंद में दधि मथति जसोदा कनक मथनिआं घूमे । निर्त्तत कान्ह ललित लोचन पग परत अटपटे भूमे ॥ चारुचौखडा मध्य कुटिल कच श्रम मुक्ता ताहूमें । मनो मकरंद बिंदुले मधुकर सुत हित प्यावत झूमें ॥ बोलत श्याम तोतरी बतियां हसि हसि दतियां दूमें । सूर-दास वारो छबि ऊपर जननि कमल मुखचूमें ॥ ८२ ॥ राग ललित ॥ आज सखीरी प्रात समें दधि मथन उठी अकुलाई । भरि भाजन मणि खंभ निकट धरि नेतलिवो कर जाई ॥ सुनत शब्द हरितासमीप हसि उठि आए हरुवाई । मोही बाल बिनोद मोदअति नयननि निरति दिखाई ॥ भूली तन प्रति बिंब बिलोकति रीझी सहज सुभाई । चितवनि चलनि हरेव चित चंचल थिते रही चितचाई ॥ माखन पिंड लयो दोउ कर तब ग्वाल रही मुसकाई । सूरदास प्रभु सर्वसको सुख सकै न हृदे समाई ॥ ८३ ॥ राग बिलावल । छबिसों डोलत भुज छबिसों डोलत कटिपर बेनी या बिलोवनि परवारोंरी कोटि नांच । दधिको घुमर अरु धुनित चाल अरुधुनित घंटिका धुनित जे नू पुर करत सांच ॥ गौर आरक्त अति शोभित सुख श्रमको वदन ऐसो मनहु कनक लागी आंच । धौधीके प्रभुको मन मोहति एई कर भेद इह नेत की खेंचखांच ॥ ८४ ॥ * ॥ अथ बाल लीला के पद ॥ ॥ राग बिलावल ॥ भावत हरिके बाल बिनोद । केसोराम निरखि सुख प्रहसित प्रमुदित रोहिनी मात जसोद ॥ आंगन पंक राग तन सोभित चल नूपुर धुनि सुनि मनमोद । परम सनेह बढावत मातनि रबकि रबकि बैठत उठि गोद ॥ अतिसय चपल सदा सुख दायक निसदिन रहत केलि रस ओद । परमानंद प्रभु अंबुज लोचन फिरि फिरि चितवत दृज जन कोद ॥ ८५ ॥ राग बिलावल ॥ बाल दसा गोपाल की सबकाहू भावे । जाके भवन में जातहें ले गोद खिलावे ॥ श्यामसुंदर मुखनिरखि के अविरल सचुपावे । लाल बाल कहि गोपिका हसि अलो मनावे ॥ चुटकी दे दे प्रेममगनकरताल बजावे । परमानंद प्रभु नाचही सिसुताहि जनावे ॥ ८६ ॥ राग बिलावल ॥ बाल बिनोद गोपाल के देखत मोहि भावे प्रेम पुलकि आनंद भरी जसुमति गुण गावे ॥ बलसमेत घन सांवरो आंगन में धावे ।

बदन चूमिकोरालियो सुत जानि खिलावे ॥ शिवविरंचि मुनि देवता जाको पार न पावे सोपरमानंद ग्वालिको हसिभलो मनावे ॥ ८७ ॥ राग बिलावल ॥ हरिको बिमल जस गावति गोपांगना । मणिमय आंगन नंदराय के बाल गोपाल तहां करेरिंगना ॥ गिरि गिरि उठत घुटुरुअनि टेंकत जानि पाणि मेरो छगन को मंगना । धूसर धूरि उठाइ गोदले मात जशोदा के प्रेमको भजना ॥ त्रिपद पुहमिना पीत बन आलस अयो अबजु कठिन भयो देहरी को लंघना । परमानंद प्रभु भक्त वछल हरि रुचिर हार वर कंठसोहै बंघना ॥ ८८ ॥ राग बिलावल ॥ मणिमैं आंगन नंदके खेलत दोऊ भैया । गौरश्याम जोरी बनी बल कुंवर कन्हैया ॥ नूपुर कंकन किंकिनी रुन झुन झुन बाजे । मोहिरही ब्रज सुंदरी मनसा सुतलाजे ॥ संग संग जसुमति रोहिणी हित कारन मैया । चुटकी दे दे नचावही सुत जानिनन्हैया ॥ नील पीत पट ओढनी देखत मोहिभावे । बाल लीला विनोद सों परमानंद गावे ॥ ८९ ॥ राग बिलावल ॥ यहतन वारिडारों कमल नयन पर सांवलिया मोहि भावेरे । चरण कमल की रेणु जशोदा ले.ले सिरसि चढावेरे ॥ ले उछंग मुख निरखन लागी राई लोन उतारेरे । कोन निरासी दृष्टिलगाई ले ले अंचर झारेरे ॥ तूं मेरो बालक तूं मेरो ठाकुर तोहि बिसंभर राखेरे । परमानंद स्वामि चिर जीवहु बार बार यों भाषेरे ॥ ९० ॥ राग बिलावल ॥ तनक कनककी दोहनी दे देरी मैया । तात दुहन सिखवन कह्यो मोहि धेारी गैया ॥ हरि बिधमासन बैठिके मृदु कर थन लीनों । धार अटपटी देखिके ब्रजपति हसि दीनों ॥ गृह गृह ते आई सब देखनब्रजनारी । सचकित तनमन हरि लियो हंसि घोष बिहारी ॥ द्विज बुलाइ दक्षिणा दई मंगल जस गावे । परमानंद प्रभु लाडिलो सुख सिंधु बढावे ॥ ९१ राग बिलावल ॥ बाबाजी मोहि दुहन सिखाऊ । गाइ एक मूधीसी मिलवहु होनीके दुहं के बलदाऊ ॥ ल नोई मेलो चरणनि में लाडिलो कुवर नेावत बछराऊ ॥ पानि पयोधर धरे धेनु के भाजन बेगि भरेव उबटाऊ । तब नंदरानी नयन सिरानी द्विज बुलाइ दछिना दिवाऊ। बारि फेरि पीतांबर हरिपर परमानंद दासन्हि पहिराऊ ॥ ९२ ॥ राग बिलावल ॥ बोलन लागे मैया मैया । बाबा कहत नंदराइ सें अरुहलधर सें भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुल में घर घर बजत बधैया । परमानंद दासको ठाकुर ब्रजजन केलि करैया ॥ ९३ ॥ राग बिलावल ॥ नंद जूके लालन की छवि आछी । चरण पैंजनियां घुम घुम बाजे चलत पूंछ गहिबाछी ॥ अधर अरुण दधिमुखसों लपट्यो अतिराजत तनछीटें छाछी । परमानंद प्रभु बालक लीला चितबनका फिरिपाछी ॥ ९४ ॥ राग बिलावल ॥ हरिलीला गावति गोपी जन आनंदही में निसिदिन जाइ । बाल चरित्र बिचित्र मनोहर कमल नयन ब्रजके सुखदाइ ॥ दोहन मंडनखंडन लेपनगृह मज्जन सुत पतिसेवा । चारि जाम अब कास नही छिन सुमिरन कृष्ण देव देवा ॥ भवन भवन प्रति दीप बिराजित कर कंकन नूपुर बाजे । परमानन्द घोष कुतूहल देखिभांति सुरपति लाजे ॥ ९५ ॥ राग बिलावल सेा गोबिंद तुम्हरेा ब्रजबालक । प्रकट भये घनश्याम चतुरभुज धरे दनुज कुलकालक ॥ कमलापति त्रिभुवनपति नायक भुवन चतुर्दस नायक सोई। उत्पति प्रलय कालको कर्त्ता ॥

जाके किये सबे कछु होई ॥ सुनहु नंद उपनंद कथा इहईश क्षीर समुद्र कोबासी । बसुधा भार उतारन आयो परब्रह्म बैकुंठ निबासी ॥ ब्रह्मामहादेव इंद्रादिक बिनती कै इहां लेआये । परमानंद दास को ठाकुर बहुत पुण्य तपकै तुमपाये ॥ ९६ ॥ राग बिलावल प्रातसमै गोपी नंदरानी । मिथित धनि उपजतहिं औसरदधि मंथन अरु मौंठ मथांनी ॥ तिच्छन लोल कपोल विराजत कंकन नूर कुनित एक रस । रजवाकर पखत भुज लागत छबिगावत मुदित श्याम सुंदरजस ॥ चंचल चपल कुच हारावलि बेनी चालखसित कुसुमांकर । मणिप्रकास नहिं दीप अपेक्षा सहजभाव राजत ग्वालिनघर । चढि विमान देवता गोकुल अमरा वती विसे परमानंद घोष कुतूहल जहा तहा अद्भुत छबि पेखी ॥ ९७ ॥ राग बिलावल । आछे आछे बोल गडे । कहा करौं उत्तर नहि निकसत श्याम मनो हर चतुर बडे । मेरे नेक आवरी भामिनि रहसि बुलावत रूख चढे । परमानंद स्वामी रति नागर प्रीति बेखबन कुंबर लडे ॥ ९८ ॥ राग बिलावल ॥ देखो माई हरि जूकी लोटनि ॥ यह छबि निरखि निरखि नंदरानी अंसुआ पूरि ढरि परत करोटनि । परसत आनन मनुरबि कुंडल अंबुज श्रवत सीप सुत जोटनि । चंचल अधर चरण कर चंचल मंचल अंचल गहत बकोटनि । लेति छिडाइ महरि कर सो कर दूरि भई देखति दुरि ओटनि । सूर निरखि मुसि काइ जसोदा मधुर मधुर बोलत मुख बोटनि ॥ ९९ ॥ राग बिलावल ॥ माधो तनिक सो बदन तनिक से चरण भुज तनिक कर पर तनिक माखन । तनिक सो कपोल तनिकसो भ्रकुटी तनिक हसनि हरि लेत हैं मन । तनिक से अधर तनिक सी दतिआं तनिक से बसन तनिक से अभरन । तनिकहिं तनिक सूर निरबारो तनिक कृपा कीजै तनिक सरन ॥ १०० ॥ राग बिलावल ॥ बाल बिनोद आंगन में की डोलनि । मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि । कठुला कंठ रुचिर के हरि बज्र माल लई नंद अमोलनि । बदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकनि मधुप गण टोलनि । लीन्यो करपरसत आननपर कछुक खात कछु लग्यो कपोलनि । कहैं जन सूर कहां लो बरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ १०१ ॥ राग बिलावल ॥ गोपाल दुरे हैं माखन खात । देखि सखी शोभा जु बढी है श्याम मनो हर गात । उठि अब लोकि ओट ठाढी ह्वै किहिं बिधि है लखि लेत । चकित नैन चहुं दिस चितवत और सखनि को देत । सुंदर कर आनन समीप हरि राजत एहि आकार । जनु जल रुह तजि वैरु विधु सो लिये मिलत उप हार । गिरि गिरि परत बदन ते उर पर इंदधि सुत के बिंदु । मानहु सुभग सुधा कन बरषत प्रिय जन आगम इंदु । बाल बिनोद बिलोकि सूर प्रभु थकित भई एज नारि । फुरतन बचन बरजि बेको मन रही बिचारि बिचारि ॥ १०२ ॥ राग बिलावल ॥ देख्यो मैं दधि सुत मैं दधि जात । एक अचंभो सुनि री सजनी रिपु मैं रिपु जू समात । तापर कीर कीर पर पंकज पंकज के ह्वै पात । सुंदर बदन बिलोकि श्याम को चिते नंद सुसिकात । ऐसी प्रीति बढी पशु पाले कहत कही नहि जात ॥ ऐसो ध्यान धरत जे हरि को ते नहि सर बलि जात ॥ १०३ ॥ राग बिलावल ॥ सोभित कर नवनीत लिये । घुट

रुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये । चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरो चन को तिलक दिये । लट लटकन मानोमत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिये । कठुला कंठ बज्र के हरि नख राजत रुचिर हिये । धन्य सूर एकी पल यह सुख का सत कलप जिये ॥ १०४ ॥ राग बिलावल ॥ बाल बिनोद खरे जिय भावत । मुख प्रति बिंबपकरि बे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत । कमल नयन माखन के कारन करि करि सैन बतावत । शब्द जोरि बोल्यो चाहत हरि प्रकट बचन नहि आवत । अनेक ब्रह्माण्ड खंडकी महिमा सिसुता माह दुरावत । सूर दास स्वामी सुख सागर जसुमति प्रीति बढावत ॥ १०५ ॥ राग बिलावल ॥ नंद धाम खेलत हरि डोलत । जसुमति करति रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत । टेरि उठी जसुमति मोहन कहि आवहु घुटु रुनि धाई । बैन सुनत माता पहि चानी चले घुटुरुवनि पाई । लै उठाय अंचल गहि पोंछति धूरि भरी सब देह । सूरज प्रभु जसुमति रज झारति कहां भरी यह खेह ॥ १०६ ॥ राग बिलावल ॥ धनि जसुमति बड भागिनी लिये कान्ह खेलावै । तनक तनक भुज पकरि के ठाढे होन सिखावै । लरखरात गिरि परत हैं चलि घुटु रुनि धावै । पुनि क्रम क्रम भुज टेकि के पग द्वैक चलावै । अपने पायन कबचलौं मो देखत धावै । सूरदास जसुमति हूहै बिधि सो जुमनावै ॥ १०७ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ चलन चहत पाइन गोपाल । लै लगाय अंगुरी नंद रानी मोहन मूरति श्याम तमाल । डग मगात गिरि परत पांणि पर भुज भ्राजत नंद लाल । जनु श्री धर श्री धरत अधो मुख धुकति धरनि मानहु नमि नाल । धूरि धौत तन नैननि अंजन चलत अटपटी चाल । चरण रुणित नूपुर धुनि मनोसर बिहरत हैबाल मराल । लट लटकनि मानो चारुचखोडा सुठि शोभा सिसु भाल । सूर दास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जगमें बहु काल ॥ १०८ ॥ राग बिलावल ॥ गहे अंगुरिया सुबनको नंद चलन सिखावत । अरबराय गिरि परत हैं कर टेकि उचावत । बार बार बकि श्याम सो कछु बोल बोलावत । दुहुधाद्दे दतियां भई अति छबि मुख पावत । कबहुं कबहुं कर छांडि नंद पकरें फिरि गावत । कबहुं धरनि पर बैठि जात मनमें कछु आवत । कबहुं गोद ले हरषि के जिय में बहु भावत । सूर श्याम मुख देखि महर मन मोद बढावत ॥ १०९ ॥ राग बिलावल ॥ बलि बलि जाउ मधुर सुर गावहु । अबकी बेर मेरे कुंवर कन्हैया नंदहि नाचि दिखावहु । तारी दैदै अपने करकी परम प्रीति उपजावहु । आनजंतु धुनि सुनि डरपत कतमो भुज कंठ लगावहु । जिन संका जिय करहु लाल मेरे काहे को भरमावहु । बाहु उठाय कालिहकी नाईं धोरी धेनु बुलावहु । नाचहु नेक जाउं बलि तेरी मेरी साध पुरावहु । रतन जटित किंकिनि पग नूपुर अपने रंग बजावहु । कनक खंभ प्रति बिंब आपनो नव नव नीत खवावहु । परम दयाल शूर के उरते हरि टारे नहि भावहु ॥ ११० ॥ राग बिलावल ॥ चलत श्याम पैराजत पैंजनि पगचाय मनोहर । डग मगात डोलत आंगन में निरखि बिनोद मगन मोहे सुर । अरु मन मुदित जसो

दा जननी पाछे फिरति गहें अंगुरी कर । मनहु धेनु तृण छाडि बच्छ हित प्रेम पुलकि चित द्रवत पयो धर । कुंडल लोल कपोल बिराजत कटकन खलित खटुरिया भूपर। सूर श्याम सुंदर अब लोकनि बिहरत बाल गोपाल नंद घर ॥ १११ ॥ राग बिलावल ॥ कलबलते हरि हारि परे । नव तरंग नवीन जलद पर मानहु द्वै ससि आनि अरे । तब गिरि कमठ सुरासुर सर्पहिं धरतन मन महं नेकु डरे । तिन भुज भूषन भार परत कर गोपिन के आधार धरे । बिंब बदन मानहु मथिकाढ्यो बिहसनि मनहु प्रकास करे । सूर श्याम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखते नटरे ॥ ॥ ११२ ॥ राग बिलावल ॥ सिख वति चलन जसोदा मया । अरबराय कर पांनि गहावति डग मगाय धरनी धरे पैया । कबहुंक सुंदर बदन बिलोकति उर आनंद भरि लेति बलैया ॥ कबहुंक कुलदेवता मनावति चिरजीवो मेरो लाल कन्हैया । कबहुंक बलको टेरि बुलावति यहि अंगना खेलहु दोउ भैया ॥ सूरदास स्वामी सुखसागर अति प्रताप वलकत नंदरैया ॥ ११३ ॥ राग बिलावल ॥ भावत हरिके बाल विनोद । श्याम राम मुख निरखि निरखि सुख प्रमुदित रोहिणी जननि जसोद ॥ आंगन पंक पर सतन मंडित चलत कुणित नूपुर मनमोद । परम सनेह बढावत नारिन निर्विकार बैठत चढिगोद ॥ आनंद कंद सकल सुखदायक निस दिन रहत केलि रसओद । सूरदासप्रभु अंबुज लोचन फिरि फिरि चितवत दुजजन कोद ॥ ११४ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ आंगन श्याम नचावहि जसुमति नंदरानी । तारी दै दै गावहि मधुरे सुरबांनी ॥ पायन नूपुर बाजहीं कटि किंकिनि कूजे । नान्हो नान्हो एडियन अरुनता फल बिंबन पूजे ॥ जसुमति गांन सुनें श्रवणनसो आपुहि गावे । तारी बाजत देखहि पुनितारी बजावे ॥ केहरि नख ऊपर रुरै सुठि सोभाकारी ॥ मनहुं श्याम घन मध्यमें नौससि उजियारी ॥ गभुवारे सिर केस हैं बनें घूंघर वारे । लटकन लटके भालपर विधु मधि गनतारे ॥ कठुला कंठ चिबुक तरे मुख दसन बिराजे । खंजन बिचसुक आनिके मानो प्रयो दुराजे ॥ जसुमति सुतहि नचावहि छबि देखति जियतें । सूरदास प्रभु श्यामके सुखटरतत्र छियतें ॥ ११५ ॥ राग बिलावल ॥ माधो तनक चरण अरु तनक तनक भुज तनक बदन बोले तनक से बोल । तनक कपोल तनक से करनि पर तनक आंखन लिये देखत तनक याके सकल भुवन ॥ तनक सुनेजो जससो प्रावत परम गति तनक कहत तासों नंदसुवन । तनक रीझपर देत सकल तन, तनक चितौनि चितके हरन । तनक हसनि मुसकानि तनक पुनि तुतरे बचन उचरन । तनकहि तनक तनक करि आवै सूरहि तनक लेजै तनक शरन ॥ ११६ ॥ राग बिलावल ॥ आज सखी मणि खंभ निकट जहां हैं गोरस की गोरी । निज प्रतिबिंब निरखि सिखवत सिसु प्रकट करी जिनि चोरी ॥ अहं बिभाग आजते हमतुम भली बनी यह जोरी । आखन लेहु कत बिडारत हो तुम बालक मति भोरी ॥ होसा न लेहु सबे चाहत हो यहै बातहै थोरी । मिश्री रुचिर और चाहतहो देउं कहा भरि भोरी ॥ सुनि प्रिय बचन धीरज न रह्यो तब रसिक हसो सुखभोरी । सूरदास प्रभु सकुचि चलेहरि सघन कुंजकी खोरी ॥ ११७ ॥ राग बिलावल ॥ बाल गोपाल बिराजत आज । इन्दु बदन दधि

बूंदपरे तन कर नवनीत मनोहर साज ॥ किधों प्रकट मकरंद कमलमें उदित इन्दु नभसहित समाज । कुंचित केस सुदेस नवल तन मिलि आए होकरन कोराज ॥ चुटकी दे जु नचावति सुन्दरि कटि किंकिनि नूपुर कलवाज । दास गोपाल मदन मोहन छवि चित वत सकल बिसारेकाज ॥ ११८ ॥ राग बिलावल ॥ बड़ भागिनि गोकुल की नारि । माखन रोटी दे जु नचावति जगदाता मुख लेत पसारि ॥ सोभित बदन कमल दल लोचन सोभित केस मधुप अनुहारि । सोभित मुकरा छात कुंडल छवि सोभित मृगमद तिलक लिलारि सोभित गात चरण पर भुज सोभित सोभित किंकिनि करत उचारि ॥ सोभित निर्त करत परमानंद गोप बधूबर भुजापसारि ॥ ११९ ॥ राग बिलावल ॥ खेलतघर आंगन गोबिंद निरखि निरखि जसुमति सुखपावति बदन मनोहर राका इन्द । कटि किंकिनी चंद्र मय मणिकी लट मुक्ता हल लाल । परम सुदेस कंठकेहरिनख बिच बिच बज्र प्रवाल ॥ कर पङ्कंची पाइन पन नूपुरातन राजत पट पीत । घुटुरुन चलत वछसंग बिहरत मुख मंडित नव नीत ॥ सूरबिचित्र चरित कान्हर के बानी कहत न आवे । बाल दसा अब लोकि सनक मुनि जोग ध्यान बिसरावें ॥ १२० ॥ राग बिलावल ॥ हों बलि बलि जाउ छबीले लालकी धूसर धूरि घुटुरु बनि डोलनि बोलनि बचन रसालकी ॥ छिटकि रही चहुंदिस जुलटुरियां लटकनि लटकन भालकी । मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमल दल मालकी ॥ कछु एक हाथ कछुक मुखमाखन चितवन नयन बिसालकी । सूरदास प्रभु प्रेम मगनह्वै टिग न तजत ब्रज बालकी ॥ १२१ ॥ राग बिलावल ॥ बार बार जसुमति सुत बोधति आउ चंदतोहि लाल बुलावे । मधुमेवा पकवान मिठाई आपुखात पुनि तोहि खवावे ॥ हाथहि पर तोहि लीने खेले नेकु नहीं धरनी बैठावे ॥ जल भाजन में करिके उठावे याही में तूतन धरि आवे ॥ जलपुट आनि धरनि पर राख्यो गहि आन्यो वह चंद दिखावे । सूरदास प्रभु हसि मुसकाने बार बार दोऊ कर नावे ॥ १२२ ॥ राग बिलावल ॥ ल्यां गोरी मैया चंदहि ल्योंगो । कहाकरों जल पुट भीतर को बाहिर लपकि गहोंगो ॥ यहतो कलमलात जल महिंआंकैसे करजु गहोंगो । वहतो निपट निकटही देखत बरजे हू न रहोंगो ॥ तेरे प्रेम उदित भयो माता बैाराये न बहोंगो । सूरश्याम कहकर गहि ल्याऊं ससि तन ताप दहोंगो ॥ १२३ ॥ राग बिलावल ॥ लैहों हरि चंदाले । कमल नयन बलि जाइ जसोदा नीचे नेकुचिते ॥ जाकारन तुम सुनि सुंदर सुत कीनी इती अने । सोइ सुधा कर देखि दमोदर या भाजन मेंहे । नभते निकट आनिराख्यो हे जल पुट जतन जुते । अब अपने कर काढि मनोहर जाहि भावे ताहिदे ॥ अग मग गन ते गहि आन्यों हे पंछी एकपठे । सूरदास प्रभु इतनी बातको कत मेरो लाल हठे ॥ १२४ राग बिलावल ॥ सोहत दधिकी छीट श्याम गात । जब जननी के करते लेदोऊ करें करि कछु डारत उर पर कछुक लेके हसिखात ॥ और मांगत मेंहेात बिलंब तब धरनी में लोटिजात । रसिक प्रीतम सोंकरति मिहोरें रानी जसुमति मात ॥ १२५ ॥ राग बिलावल ॥ महा महोत्सव गोकुल गांम । प्रेम मुदित गोपी जसुगावति ले ले श्याम सुंदर को नांम ॥ जहां तहां लीला अब गाइति खरिक खोरि दधि मंथन धांम । परम

कुतूहल निस अरुबासर आनंदही बीतत सब जांम ॥ नंद गोप सुत सब सुख दायक मोहन मूरति पूरन कांम । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आनंद निधि नखसिख रूप सुभग अभिरांम ॥ १२६ ॥ राग बिलावल ॥ हौं बारी नव नीत प्रिया । दिन उठि देन उराहनों आवति चोरी लावति घोष चिया ॥ तुमबलरांम संग मिलिके इहि आँगन खेलो दोउ भैया । निरखि निरखि नयननि सचपांउं प्राण जीवन तन सांवरिया ॥ जोई भावे सो लेहु मेरे प्यारे मधु मेवा दधि दुध घैया । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर काके घर तुमहु ते कछु बहुत थिया ॥ १२७ ॥ राग बिलावल ॥ कान्ह सो कहति यशोदा मैया । मेरे मोहन अनत न जैये घरही खेलो दोऊ भैया ॥ ए तरुनी जोवन मद माती झूठहि दोष लगावे दैया । तुम तो मेरे प्राण जीवन धन मथि के दूध पिवाउं घैया ॥ चतुर्भुज दास गिरिधरन कह्यो तबहीं बन जाउं चरावन गैया । सुनि जननी मन अति हरषानीं मुख चूंवति अरु लेति बलैया ॥ १२८ ॥ राग बिलावल ॥ घर घर डोलत माखन खात । ग्वाल बाल सब सखा संग लिये सूने भवन धसि जात ॥ जब ग्वालिन जल भरि घर आई तबे भजे मुसिकात । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल सो नाहि न कछू बसात ॥ ॥ १२९ ॥ राग बिलावल ॥ मोहन चलत बाजत पैजनी पग । शब्द सुनत चकित ह्वै चितवत त्यों त्यों ठुमकि ठुमकि धरत हैं डग ॥ मुदित यशोदा चितवति शिशु तन लै उछंग लावे कंठ शुभग । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल कों व्रज जन निरखति टाढ़ी टग टग ॥ १३० ॥ राग बिलावल ॥ मैया मोहि बडो करि लैरी । दूध दही घृत माखन मेवा जब मागो तब देरी ॥ कछू फैास राखहु जिनि मेरी जोई जोई मोहि रुचेरी । हेांहु सबल सब हिन महँ जैसें सदा रहो निर भेरी ॥ रंग भूमि मह कंस पछारों धीसि वहा उनेरी । सूर दास स्वामी को लीला राखों मथुरा जेरी ॥ १३१ ॥ रागबिलावल ॥ क्रीडत प्रात जुगल जदुबोर । माखन मांगत मात न मानति झुकत यशोदा तोर ॥ मध्य जनि सनमुख शंकरषन ऐंचत कान्हसिस्यो सिर चोर । मनहु सरसुनी संग उभय दुज कर मराल अरु नील कंठीर ॥ सुन्दर श्याम गहे कबरी कर मुकता माल गही बलबोर । तारन भछलयो आपापनु मानहु लेत निबेरे सीर ॥ सूर सु छबि इह बरनि न आवे उपमा कही परति नहि धीर । सनक सनंदन नित उठि ध्यावत अरु गावत जाकों मुनि कीर ॥ १३२ ॥ राग बिलावल ॥ बाल दसा गोपाल की सब काहू प्यारी । लैलै गोद खिलावही यशुमति महंतारी ॥ पीत झगुलि तन सोहहीं सिर कुलह बिराजे । छुद्र घंटिका कटि वनी पायन नूपुर बाजे ॥ मुरि मुरि नाचे मोर ज्यों सुर नर मुनि मोहे । कृष्ण दास दास प्रभु नंदके आंगन में सोहे ॥ १३३ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसे लरिका कतहुं न देखे बाट सुचालि गांउ की माई । मांखन चोरत भाजन फोरत उलटि गारि दे मुरि मुसिकाई ॥ तब हौं देन उराहनों आई कहा करौं जो नाकहि आई । सुनहुं यशोदा तुम ठकुरायनि तुम सों कहत मेरी बेराई ॥ पाछें ठाढे मोहन चित वत धीरो होते चाख्यो लाई । परमा नंद दास को ठाकुर पचयो चाहत चोरी लाई ॥ १३४ ॥ राग बिलावल ॥ तेरो लाल मेरो माखन खायो । द्योस दुपहरी देखि घर सूनों ढोरि ढंढोरि

अवहिं घर आयो ॥ खोलि कपाट पैठि मंदिर में सब दधि अपने सखनि खवायो । छींकें हुतें चढि ऊखल पर अन भावतो धरनी ढरकायो ॥ दिन दिन हानि कहांलों सहिये ए ढोटा जु भले ढंग लायो । परमा नंद प्रभु बहुत बचति हों पूत अनोखो तेंहीं जायो ॥ १३५ ॥ राग बिलावल ॥ बहुतें उपजत या ढोटा पै कैसो धों खेले आवत । हरि हरि हरि देखोरी माई जानी जु बात दुरावत ॥ विघमान दधि दूध चुरायो फिरि फिरि मोहि बिरावत । चतुर चोर विद्या सम्पूरण गढि गढि छोलि बनावत ॥ जो न पतियाहु सोंह ले मोसों सांची सपथ करावत । तेरे बक्ष जात जे दे श्रिवतापर हाथ दिबावति ॥ बदन मोरि मुसकाय चली है फिरि उरहन मिस आवत । परमा नंद दास को ठाकुर श्याम मनोहर भावत ॥ १३६ ॥ राग बिलवल ॥ भाजि गयो मेरो भाजन फोरि । कहा कहों सुनि मात यशोदा अरु खायो माखन सब चोरि ॥ लरिका शत पचास संग लीने रोके रहत गांउकी खोरि । मारग में कोऊ चलन न पावत लेत दोहनी हाथ मरोरि ॥ समुझि न परे या ढोटा की राति द्योस गोरस ढंढोर । आनंद फिरत फागुसी खेलत तारी देदे हंसत मुखमोरि ॥ को यह कुंवर कौन को ढोटा सब ब्रज बांध्यो प्रेमकी डोरि । परमा नंद दास को ठाकुर लेति बलैया अंचर छोरि ॥ १३७ ॥ * ॥ अथ समुदाय कीर्त्तन ॥ * ॥ राग बिलावल ॥ आउ गोपाल शृंगार बनाऊं । अति सुगन्ध को करों उबटनों उष्णोदक नहवाऊं ॥ अंग अंगोछि गुहूं तेरी बेनी फूलन रचि रुचि भाल बनाऊं । सुरंग लाल जरतारी चीरा रतन खचित सिर पेंच बनाऊं ॥ बागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण बिरचाऊं । पटुका सरस बैगनी रंग को हसली हेम हुमेल धराऊं ॥ गज मोतिन के हार मनोहर बन माला ले उर पहिराऊं । लै दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि उर नयन सिराऊं ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लेतुह्वे जिवाऊं । विष्णु दास कों यहै कृपा फल बाल चरित्र हों निश दिन गाऊं ॥ १३८ ॥ राग बिलावल पीताम्बर को चोलना पहिरावति मैया । कनक छाप तापर दियो झीनी एक तैया ॥ सूथन लाल चुनाव की जरकसी चीरा । हसुली हेम जराय की उर राजत हीरा ॥ ठाढी निरखे यशोमति फूली अंगनमाय । काजर लै बिंदुका दियो ब्रज जन मुसिकाय ॥ नंद बबा मुरली दई एक तांन बजावे । जोई सुनै ताको मन हरे परमा नन्द गावे ॥ ॥ १३९ ॥ राग बिलावल ॥ नयन देखिरी गिरिवर धर । सहचरि कहति द्वितिय सह चरि सो प्रेम मुदित प्यारी राधावर ॥ भूषन भूषित अंग मनोहर कनक कान्ति नागर वर । चितवत रहत विश्व युवतिन के सर्वसु देत उदार कमल कर ॥ उपमा काहि देउं को लायक वरनो कहा किशोर वैसवर । सुरत अंत लटकत ब्रज आवत कृष्ण दास बड़ भाग कल्प तर ॥ १४० ॥ राग बिवलावल ॥ राधे बसन श्याम तन चीन्ही । सारंग बदन बिलास बिलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्ही ॥ सुधा पान करि कें नीकी विधि रह्यो शेष मुद्रा फिरि दीन्ही । सूर सुवेस आहि रति नागर भुजआ करषि बाम कर लीन्ही ॥ ॥ १४१ ॥ राग बिलावल ॥ कमल मुख देखत तृप्ति न होय । यह कहा जाने बात दुहागिन रही निसा भर सोय ॥ ज्यों चकोर चाह तउ डर जें रही चंद मुख जोय । नेकु

अकोर देति नहि राधे चाहति पियहि निचोय ॥ हरि तेा अपुनों सर्बसु दीनों एक प्राण वपु देाय । भजन भेद न्यारेा परमा नंद जानत बिरला कोय ॥ १४२ ॥ राग बिलावल ॥ कमल मुख देखत कोंन अघाय । सुनिरी सखी लोचन अलि मेरे मुदित रहे अरुझाय ॥ मुक्ता माल लाल उर ऊपर जनु फूली बनजाय । गेावर्द्धन धर अंग अंग पर कृष्णदास बलिजाय ॥ १४३ ॥ राग बिलावल ॥ माई कोन गेापके ए दोउ नागर ढेाटा । इनकी बात कछु कहत न आवे गुणन बडे देखत के छेाटा ॥ अग्रज अनुज सहेादर दोऊ गौर श्याम ग्रन्थित सिर चेाटा । संतदास बलि उभय सुरतकी लीला ललित सबे बिधि मेाटा ॥ १४४ ॥ राग बिलावल ॥ तें मेरी लाज गंवाई हेा जसुमति के ढेाटा । देह बिदेही ह्वै गई मिलि घूंघट ओटा ॥ कमल नयन तुम्कुंवर हेा हलधरते छेाटा । छैल छबीले रूपमें भई लेाटक पेाटा ॥ श्रीगेापाल तुम चतुरहेा हम मतिकी बेाटा । परमानंद सेाजानहीं जाहि प्रेमकी चेाटा ॥ १४५ ॥ राग बिलावल सूहेा ॥ मदगजराज कीसी चाल । भुजबर दंड सुंडकी शेाभा हरि लीनी नंदलाल ॥ चूरन कच कुंचित अनेक अंकुससे लटकत भाल । चवर चार अवतंस मंजरी मदक न श्रम जल जाल ॥ गंध अंध आवत अलि घेरे गुंजत मंजु रसाल । मेार पछ फहरात बात बस जनेा झलकत हैं ढाल ॥ धातु बिचित्र बनी तन शेाभा गल गल दावन माल । हठि कुल धर्म ढाह ढाहतहैं रदन कटा छबिसाल ॥ घनन घनन घंटिका रुणित कटि उपजत शब्द सुताल । खनन खनन संकल से नूपुर बाजत लजत मराल ॥ जुवती हृदय सरस सरसिजमे जनु खेले बहुकाल । मानों अंग अंग लपटाने उनके मनसे वाल ॥ मुरली रव गुंजार सुनतही कंपित चितब्रजबाल । रसरुस नेा गदाधर येां भयेा वन बेली वेहाल ॥ १४६ ॥ राग सूहेा बिलावल ॥ आजु सिंगार निरखि श्यामाको नीको बन्यो श्याम मन भावत । यहछबि तनहि लिखायेा चाहत कर गहि के नख चंद दिखावत ॥ मुखजोरे प्रति बिंब बिराजत निरखि निरखि मनमें मुसिकावत । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर श्रीराधा अरस परस दोउरीझ रिझावत ॥ १४७ ॥ राग बिलावल ॥ प्रात समें नंद नंदन श्यामा आवत देखे कुंजगली । नव घन श्याम तरुनि दामिनि मिलि राजत रूप अनूप अली ॥ लटपटी पाग शीस कर मुरली लेाचन घूंमत भांति भली । सिथलित चीर मरगजी अंगिया कांम कामिनी देहछली ॥ चार जांम निसि जागत बीती उर उमग्यो अनुरागवली । कज्जल अधर नयन रंग बीरी मदन नृपति की सेनदली ॥ सूर बदन पंकज रस पीके अलक मधुपकी पांति चली । प्रफुलित प्रीति परस्पर देखियत तरनि उदेख्यों कमल कली ॥ १४८ ॥ राग बिलावल सूहेा ॥ देखिरी बाके चंचल तारे । कमल मीन कहं कहां एती छबि खंजन पुन जात उन हारे ॥ वेदेखि चारु कुटिल भुव ऊपर कुंचित अलक मनेा अलिबारे । बिडरत भजत मानहु छाडे, रथ जनु ससंक ससि लंगर डारे ॥ बेदे निमिषन मत मुरली पर कर मुख नयन एक भये चारे ॥ मानेा जलरुह सों बैर तजे बिधु करत नाद वाहन चुचुकारे । हरिको रूप सकल ब्रज मेाहन सब जुवती जन प्राण धनवारे ॥ सूरसखी निज रही चिते तन मन क्रम बचन चित अनत नटारे ॥ १४९ ॥ राग सूहेा बिलावल ॥ बनेहैं बिसाल कमल दल नयन ।

ताहूमें अति चारु बिलोकनि गूढ भाव सूचित सखि सैन । बदन सरोज निकट कुंचित मनहु मधुप आए रसलैन ॥ तिलक तरुण ससि कहत कछुक हंसि मोहन मधुर मनोहर बैन । मदन नृपति के देश महामद बुधिबल बसिन सकत हैं चैन ॥ सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरित चुनौती दैन ॥ १५० ॥ राग सूहो बिलावल ॥ मनोहर नयन की यह भांति । मानो दूरि करत बल अपने शरद कमल की कांति ॥ इंदीवर राजीव कुशेशय जीते सबगुण जाति । अति शोभा आनंद कंद दृग फूले दिन अरु राति ॥ खंजरीट मृग मीन बिराजत उपमाको अकुलाति । चितवनि चारु बिलोकनि चंचल एको चितन समाति ॥ अंतर करत निमेष लगि अंतर जुगहि समान बिहाति । सूर सखी अति रसिक राधिके निमष खरे अन खाति ॥ १५१ ॥ राग बिलावल ॥ आलस जुत देखियत जो भामिनी । राजतहैं रतनारे नयननि पिय संग जागत गई जामिनी ॥ बांह उठाय जोरि जंम्हानी ऐडानी कमनीय कामिनी । भुज छूटत छबिहों लागत मानो टूटि भई है टूक दामिनी ॥ कुच उतंग पर रची कंचु की शोभित चिबली उदरश्यामिनी । मानोमदन नृपति के तंबू हरिमन जीत्यो राधिका नामिनी ॥ बिथुरी अलक सिथिल कचडोरी नखछत छुरिक मराल गामिनी । द्विगुण सुरति करि श्रीगोपाल भजि प्रमुदित बिद्यादास स्वामिनी ॥ १५२ ॥ राग बिलावल ॥ जोरस रसिक कीर मुनि गायो । याही रस सराहत निसि वासर शेष सहस मुखपार न पायो ॥ गावत शुक नारद मुनि सारद कमल कोसरस तउ न चखायो । तरनि तनया तट निकट बंसीबट इंदावन बीथीन बहायो ॥ सोरस रसिक दास परमानंद लेराधा उरबीच दुरायो । जद्यपि रमा रहत चरणन तर निगमनि अगम अगाध बतायो ॥ १५३ ॥ राग बिलावल ॥ आनंद के निधि नंदकुमार । परब्रह्म नट भेष नराकृत जगमोहन लीला अवतार ॥ श्रवणनि आनंद लोचन आनंद मनमें आनंद आनंद मूरति । गोकुल आनंद गोपिन आनंद आनंद जसुदा आनंद मूरति ॥ सब दिन आनंद धेनु चरावत बेणु बजावत आनंद कंद । खेलत हसत कुतूहल आनंद राधापति इंदाबन चंद ॥ शुकमुनि आनंद भक्तन आनंद निजजन आनंद हास बिलास । चरण कमल मकरंद पानकरि अति आनंद परमानंद दास ॥ १५४ ॥ राग बिलावल ॥ सेवा श्रीगोपाल की मेरे मन भावे । मनसा बाचा करमना उर आनन आवे ॥ करि दंडवत सनेहसों सनमुख सिरनावे । लोचन भरि भरि भावसों हरिदरसन पावे ॥ प्रेम नेम निहचे करि हरिके गुणगावे । यह प्रताप फल परशुराम हरि भक्तहि ढावे ॥ १५५ ॥ राग बिलावल ॥ यहन होइ जैसे माखन चोरी । जात कितेक बल बांह छुड़ाये मूसेधन संपति सब मोरी ॥ तब तिन दिन नकुमार कान्ह तुम अपने जान हमहुं मति भोरी । अब भए कुसल किशोर कान्ह तुम हमभई सजग समान किशोरी ॥ नखसिखते चितचोरि सकल अंग चीन्हे परकत करत मरोरी । एकसुनि सूर हरयो मेरो सरबस अरु उलटी डोलों संगडोरी ॥ १५६ ॥ राग बिलावल ॥ अबमेरो खेलन जात बलैया । जबही मोहि देखिलरिकन संग तबहीं खिझावत हैं बलभैया ॥ मोसों कहत तात बसुदेवहै देवकी तेरी मैया । मोल लयो कछु देत

बसुदेवहि करि करि यतन बडैया ॥ अब बाबा करि कहत नंदसों अरु जसुमतिसों मैया । ऐसे कहि कहि मोहि खिझावत तब उठत मोहिं खिसैया । पाछे नंद सुनत हैं ठाढे तबहसि हसि उरलैया । सूरनंद बलरामहिं हटक्यो सुनि मन हरष कन्हैया ॥ १५७ ॥ राग बिलावल माखन खात पराए घरको । नित प्रति सहस मथानी मथिये मेघ शब्द दधि माट घमर को । कितक अहीर जीवत घर मेरे दधि मथि लेत माखनको मरको । नवलख धेनु दुहत जिनके नित बडो नाम है नंद महर को । ताके पूत कहावत हो तुम चोरी करत उघारत फरको । सूर श्याम तुम कितनो खैहो दधि माखन मेरे जहं तहं ढरको ॥ १५८ ॥ राग बिलावल ॥ नंद घरनि सुत भलो पढायो । ब्रज बीथनि पुर घरनि घरनि में बाट घाट सब सोर मचायो । लरकनि मारि भजत काहू के काहु को दधि दूध लुढायो । काहूके घर करत भंडाई में ज्यों त्यों करि पकरि जु पायो । अब तोयाहि जकरि करि बांधों इन सब तुम्हरो गांउ भाजायो । सूर श्याम भुज गहि नंद रानी बहुरि कान्ह अपने हित लायो ॥ १५९ ॥ राग बिलावल ॥ लालन बारी तेरेया मुख ऊपर । माई मेरी दीठि जिनि लागे कबहुं मसि बिंदु काधो भूपर । सरब सुमैं पहिलेही दीयो नान्ही नान्ही दतियां दूपर । अब कहा सूर करो न्योछावर अपने हो लालन लटूपर ॥ १६० ॥ राग बिलावल ॥ जब नंद लाल नैन भरि देखे । एक टक रही संभारन तनकी मोहन मूरति पेखे । श्याम बरन पीतांबर काछे अरु चंदन की खोर । कटि किंकिनि कलराव मनोहर सकल चियन के चितके चोर । कुंडल झलक परत गंडनि पर आइ अचानक निकसे भोर । श्री मुख कमल मंद मृदु मुसकनि लेत करषि मन नंद किसोर । मुक्ता माल राजत उर ऊपर वितए सखी जब इहि ओर । परमा नंद तिरखि अंग शोभा ब्रज बनिता डारति तृण तोर ॥ १६१ ॥ राग बिलावल ॥ बाधों आज तोहि को छोरे । बहुत खंगरयो कीनी मोसो भुज गहि अब ऊखल सो जोरे । जननी अति रिस जानि बंधा एचितै बदन लोचन जल ढोरे । ऊखल सो कटि सो गहि बांध्यो दाम बहुत सब तोरे । यह सुनि ब्रज जुवती सब धाईं कहति कान्ह अब काहेन चोरे । सूर श्याम को बहत सतायो चूक परी हमते यह भोरे ॥ १६२ ॥ राग बिलावल ॥ कहा करो हरि बहुत खिझाई । सहि नसकी रिस रिस में भरि गई दई बहुत ढीठ्यो जु कन्हाई । मेरे कहे नाहि यह मानत करत आपनी टेक । भोर उराहनो लै लै आवति ब्रज की बधू अनेक । फिरत जहां तहं धूम मचावत घर नहि रहत सचेत । सूर श्याम त्रिभुवन के करता तासो जसुमति कहत अचेत ॥ १६३ ॥ राग बिलावल ॥ जसोदा तेरो मुख हरि जोवै । कमल नैन हरि झलकनि रोवै बंधन छोरि री जननी जसोवै । जो तेरो सुत खरोई अचगरो अपनी कोख को जायो । कहा भयो जो घर को ढोटा चोरी माखन खायो । तुरत दोहनी दह्योको जमायो जा खन पूजन पायो । ता घर देव पितर काहेको जा घर कान्ह रह्यायो । जाको नाम लेत अघ भाजे कर्म फंद सब काटे । सोई हरि प्रेम डाबरी बाधे जननी साटि लिये डांटे । सूर दास प्रभु भक्त हेत ह्वै देह धरे तुम पाए । दुखित

जानि दोउ सुत कुबेर के तिन हित आपु बंधाए ॥ १६४ ॥ राग बिलावल ॥ जाहु चली अपने अपने घर । तुम सबहिन मिलि ढीठ करेव यह अब आई बंधन छोरन वर । मोको अपने बाबाकी सौं कान्हहि अब न पत्याउ । भवन जाहु अपने अपने सब लगति तिहारे पांउ । मोको जिनि बरजो री कोऊ देखो हरि के ख्याल । सूर श्याम सो कहति जसोदा बडे नंद के लाल ॥ १६५ ॥ राग बिलावल ॥ तबहि श्याम एक बुद्धि उपाई । जुबती गई घरनि सब अपने गृह कारज जननी अटकाई । आपुन गए जमल अरजुन तर परसत पात उठे भहराई । दिये गिराइ धरनि दोउ तरुवर तब कुबेर सुत प्रकटे आई । दै कर जोरि करत दोऊ अस्तुति चार भुजा तिन प्रकट दिखाई । सूर धन्य ब्रज जन्म लियो हरि घरनी की आपदा नसाई ॥ १६६ ॥ राग बिलावल ॥ धनि धनि धनि ऋषि आपहि पार । आदि अनादि निगमनहि जानत तेहरि प्रकट देह धरि आए । धन्य नंद धनि मात जसोदा धनि आगन जहं बैठि खिलाए । धन्य श्याम जहं दाम बंधाए धनि ऊखल धनि माखन खाए । दीन बंधु करुणा निधान प्रभु राखि लिये शरणागत आए । सूर श्याम के चरण सीस धरि अस्तुति करि निज धाम सिधाए ॥ १६७ ॥ राग बिलावल ॥ कौन मेरे आगन ह्वै जुगयो । जग मग जोति बदन की माई सपनो सोजु भयो । हो दधि मेखि भौन सुनि सजनी लेनु गई जु मथानी । कमल नैन की लाई चितयो वह मूरति में जानी । कर नहि चलत देह गति थाकी बहुत खेद मैं पायो । परमा नंद प्रभु चरण शरण गहि रहती कित गृह आयो ॥ १६८ ॥ राग बिलावल ॥ नंद के लाल हरेव मन मोर । हो अपने मोतिन लर पोहति कांकर डारि गए सखि भोर । बंक बिलोकनि चारु छबीली कुटिल कमान भौंह की कोर । कहु काको मन रहे अगण सुनि सरस मधुर मुरली को घोर । शशी बिचिब बदन के कारन तरसत हैं दृग बिहंग चकोर । सूर दास प्रभु के मिलिबे को कुच श्री फलहो करत अकोर ॥ १६९ ॥ राग बिलावल ॥ इनि नैननि सो मानी हारि । अनु दिनहीं उपरांत आन रुचि बाढी सब लोगनि सो रारि । तदपि निडर चलि जात चपल दोऊ घूघट सघन कपाट उघारि । निगम ज्ञान प्रति हार महा बल लाज लकुट कर रहत निवारि । श्री गोपाल कौतुक मन अर्यो तबते चतुरनि भई बिचारि । सूर दास लोभनि के लीने सिर पर सही जगत की गारि ॥ १७० ॥ राग बिलावल ॥ सखी हो जागो तो कोऊ ढिग नाही उठि लागी अकुलान । मैं जान्यो साचहि मिले माधो भूलि रही अनुमान । नीदहि मैं मुरझाइ मदन हो राखी प्रथम पंच संधान । तामें और तिमिर माई री चपल छुटे छबि बान । सूर सकति जैसे लछमन तनुवह व्रण को कछु अंगन आन । ल्याउं सजीवन मूरि मुकुंदहि ज्यों हिर हेतव प्राण ॥ १७१ ॥ राग बिलावल ॥ रहि री ग्वालि जोबन मदमाती । मेरे छगन मगन से खालहि कतले उछंग लगावति छाती । खीजत ते अबही राखे हैं नान्हो नान्ही उठति दूध की दांती । खेलन दे घर जाहि आपने डोलति कहाइतो इतराती । उठि चलो ग्वालि लाल लागे रोवन तब जसुमति खाई बहु

भांती । परमा नंद ओट दे अंचल फिरि आई नैननि मुसिकाती ॥ १७२ ॥ राग बिलावल ॥ गावति गोपी मृदु मधु बानी । जाके भवन बसत त्रिभुवन पति राजा नंद जसोदा रानी । गावत बेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी । गावत शिव काल गण गंधर्व गोकुल नाथ महातम जानी । गावत चतुरानन गज आनन गावत शेष सहस मुख रास । मन क्रम बचन प्रीत पद अम्बुज अवगावत परमा नंददास ॥ १७३ ॥ राग बिलावल ॥ अंग सब मिलि लागे दुख देंन । अपनी पिसुनता कहा कहौं सखि बधना कियो कुचैंन ॥ लोचन भंवर भये उडिबेकों बदन कमल मधु लेंन । कान नेमु व्रत लियो सुनन कों बिना बदन बिधु बैंन ॥ नासा खसत बचन नहि निकरत मन न धरत कछु सैंन । पग न चलत इक पैंड़ नीठि के तन पुर पसरयो मैंन ॥ अबल्या ऊं व्रजनाथ निकट तोहि तोलों इह सबे सहैंन । सूर निमिष सम होत युगहि युग क्यों बिरमाऊं रैंन ॥ १७४ ॥ राग बिलावल ॥ यह बलि कितकु जानि यदुराय । तुम जु चले हम अबलनि पैतें तरकि बहां छिटकाय ॥ कहियत है अति चतुर सकल बिधि जानत अवर उपाय । तौ जानो जो अब एको छिनु सको हृदय तें जाय ॥ सूर दास स्वामी श्री पति को भावत अन्तर भाय । सहि न सके रति बचन उलटि हंसि लीनो कंठ लगाय ॥ ॥ १७५ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामा तू अति श्यामहि भावे । बैठत उठत चलत गो चारत तेरोई नाम लै लै गावे ॥ पीते पीत सुमन भूषन सजि पीताम्बर उर लावे । चन्द्र बदनि सुनि मोर चन्द्रिका शीश सुमुकुट बनावे ॥ अति आशक्त दरस सङ्गम मिलि अंग अंग सचुपावे । बिछुरत तोहि कासि राधे कहि कुंज कुंज प्रति धावे ॥ तेरोई ध्यान धरें तन निरखत बासर बिरह नसावे । सूर श्याम रस रासि रसिक सखि कैसें अन्तर आवे ॥ १७६ ॥ राग बिलावल ॥ मानि मनावो मौन रही । सकुच समेत सखी उठि आतुर बनकी गैलगही ॥ बिधु मुख निरखि मूदि कर लोचन पुनि बिधु बदन चही । दरस परस तद रूप आजु निज भूमि नख लेखि कही ॥ पहुप सुरंग सारंग रिपु छोड़ि दिखावत चतुर लही । पानिस्परसत शीश परस्पर मुसकाने तबही ॥ तिन तोरयो दिन जात जिते गुन काढति रेख मही । सूर श्याम बहुरों मिलि बिलसहु जाति अवति अवही ॥ १७७ ॥ राग बिलावल ॥ न्याय दिन दूलह हो नंदलाल । रोझि बिकाय तहां बसे जहां नव दुलही व्रज बाल ॥ सिथल पाग गति डगमगे हो बसन मरगजे गात । शोभित हो तुम रस भरे मानो ब्याह भये जागे रात ॥ नयन ललोहे घूमरे हो चितवत चित हरि लेत । कहैं भगवान हितराम राय प्रभु हंसन बधाई देत ॥ १७८ ॥ राग अलहिया ॥ ग्वालिनी पूरन प्रगट्यो नेहु । दधि भाजन सिरपर धरें ताहि कहति गोपाल लेहु ॥ व्रज बीथिनि व्रज पुर गली हो जहां तहां हरि नाम । समुझाई समुझै नहीं ताहि सिख दे बिथ क्यों गाम ॥ लज्जा हरि तरंगिनी हो गुरजन गहिरी धार । दुहु कूल नि पर मित नहीं ताहि तुरत न खाई बार ॥ सरिता निकट तड़ाग के दीने कूल बिदारि । नाम मिल्यो सरिता भई अब कौन निवारे बारि ॥ दीपक तो मंदिर जरे हो बाहर लखे न कोय । चित परसत प्रजुलित भई अब गुप्त कहांतें होत ॥ पान किये ज्यों बारुणी हो

मुख बोलत न संभार । धरनि धरत पग डगमगे बाके बिथुरी अलक लिलार ॥ कौन सुनै कासों कहों हो कौने सुरति सकोच । कौने डरपथ अपथ को अवको उत्तम को पोच बिधु भाजन ओछौ रच्यो हरि शोभा सिंधु अपार । उलटि मगनता मैं भई अब कौन निकारन हार ॥ चित्त चुरायो नंदके हो मुरली मधुर बजाय । जिहि लज्जा युगला जिये सेा लज्जा गई हे लजाय ॥ प्रेम मगन भई ग्वालिनी हो सूर दास प्रभु संग । श्रवण नयन मुख नासिका हो ज्यों कंचुकी भुअंग ॥ १७९ ॥ राग बिलावल ॥ कहा करों वैकुंठहि जाय । जहां नहीं नंद जहां न यशोदा जहं नहि गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहं नहि जल यमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाय । परमा नंद प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रज तजि मेरी जाय बलाय ॥ १८० ॥ राग बिलावल ॥ अद्भुत एक अनूपम बाग । युगल कमल पर गजबर क्रीड़त तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरि पर सरब रसर पर गिरिवर गिरि पर फूले कंज पराग । रुचिर कपोत बसत ता ऊपर तापर एक अमी फल लाग ॥ फलपर पुहप पुहप पर पल्लव तहां रहत शुक पिक मृगराज । खंजन धनुष चन्द्रमा ऊपर तहां बसत एक मणि धरनाग ॥ यह रस बिरस होत नहिं कबहूं शोभा छिनहु करत नहि त्याग । सूर दास स्वामिनी रसिक बर तुव हित बाढ्यो सिंधु सुहाग ॥ ॥ १८१ ॥ राग बिलावल ॥ ललित कथा इक कहों खडेतेने सरु कुसुमहु छाडिदे आरि । सूरज बंस नृपति दसरथ के भए सुभट सुंदर सुत चारि ॥ तामें बडो रामचन्द्र राजा जनक सुता जाके बरनारि । पंच बटीकों चले राज तजि तात बचन माथे पर धारि ॥ श्री वैकुंठ नाथ धरनी धर बिहरत बनतापस अनुहारि । मारे कुटिल सबल राक्षस अति कानन बसत बिघन सब टारि ॥ कपट रूप रावण सीता को ले गयो लंक सिंधु के पारि । जानकि हरन सुनत सूरज प्रभु चौकि उठे लियो धनुष संम्हारि ॥ १८२ ॥ राग बिलावल ॥ सुनु सुत एक कथा कहुं प्यारी । कमल नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक शिरोमणि देतहुं कारी ॥ दशरथ नृपति हुते रघुबंशी तिनके प्रकट भये सुत चारी । तिनमें राम एक व्रत धारी जनक सुता ताके बरनारी ॥ तात बचन मानि राज तज्यौ है भ्राता सहित चले बन चारी । तिन उठि जाय कनक मृग मारयौ राजिब लोचन केलि बिहारी ॥ रावण हरण सीय को कीनेा सुनि नंद नंदन नोद निवारी । परमा नंद प्रभु चाप रटत कर लक्ष्मन देहु जननि भ्रमभारी ॥ १८३ ॥ * ॥अथ ब्याह खेल ॥ * ॥राग बिलावल ॥ अहो मेरो प्राण पियारी । भोरहि खेलन कहांधों सिधारी ॥ कुंकुंम भाल तिलक किन कीनेा । कन मृग मद को बिंदा दीनेा ॥ छन्द ॥ बेदा जु मृग मद दियेा माथे निरखि शशि संशय परयौ । एक शरद निशि कोकला पूरन मान मद दर्पे हरयौ ॥ हेरि मुख हंसि कहति जननी अलप बेनी किन गुही । सूरके प्रभु मोहि अचरज रची किन मन मथ मई ॥ नंद महर घरनी या सोहे । मेरो बदन जु फिरि फिरि जोहे ॥ खेलत बोलि निकट बैठारी । कछु मनमें आनंद कियेा भारी ॥ छन्द ॥ मनमें जेा आनंद कियेा भारी निरखि सुत विह्वल भई । बाबा जू को नाम बूझ्यौ तोहि हंसि गारी दई ॥ पाटीचेा पारि संवारि भूषन गेादमें मेवा भरी । सूरके प्रभु हर्षि मनमें बिधनासेा बिनती करी ॥ यह सुनि

बातकी रति मुसिकानी । में नंदरानी के जियकी जानी ॥ मेरी सुता है रूपकी रासी। वे तो कान्ह वनबासी उदासी ॥ छन्द ॥ कान्ह उदासी बनेबासी रंग ढंग यह कहावने । कनक मणि हिग रत्न अमोलिक काच कंचन क्योंसने ॥ ललिता बिसाखासों कह्यो झुकि लली तजि तुमकितरही। सूरके प्रभु तव न बाहिर जांनि मतिदीजो कही ॥ दिनदस पांच अटक जब कीनी । कुंवरि को कृष्ण दिखाई दीनी ॥ मुरझि परीतन मुधिन संम्हारे । कुंवरि कोड़सी भुजंगम कारे ॥ छंद ॥ कारे भुजंगम डसी प्यारी गारडू हारे सबे । एक नंद नंदन मंच बिनु आली यह बिष दाब्यो नहीं दबे ॥ मनुहारि करि मोहन बुलाए सकल बिष देखत नसे । सूरके प्रभु जोरी अबिचल जियो जुग जुग मनबसे ॥ बिहसि उठी तन बदन पखारयो । निरखि मोहन तन अंचरा संभारयो ॥ मुरि बैठी मन भयो हुलासा । कीरति गई अपने पति पासा ॥ छंद ॥ अपने जुपतिपें गई कीरति प्रीति रीति बढाइये । मंच कीनो ब्याह को सब सखी मंगल गाइये ॥ वृंदाबनमें रच्यो स्वयंबर पुहुप मंडपछाइयो । सूरके प्रभु श्याम दूलह राधिका बर पाइयो ॥ बिधि वत बिधि सबकीनी । मंडल भरिके भांवरि दीनी ॥ बिबिध भांति कुसुमनि बरषावै । तहं मांनिनि मिलि मंगल गावै ॥ छन्द ॥ गावैजु मानिनि मिलिके मंगल कहइ कंकन छोरहु । ऐसे नहीं गिरि उचकि लीनो ॥ लाल हसि मन मोरहु ॥ छोरयो न छूटे डोरना यह प्रीति रीति अन मन भई । सूरके प्रभु जुवति जन मिलि गारि मन भांवति दई ॥ १८४ ॥ राग बिलावल ॥ जिन व्रत धरिके देवी पूजी । तिनके मन अभिलाष न दूजी ॥ देवी नंदसुत होहु पतिमेरे । जापैं होय अनुग्रह तेरे ॥ छन्द ॥ करि अनुग्रह बर दियो जब वरष भरलों तप कियो । चै लोक सुंदर परम भूषण शील गुण नाहिन वियो ॥ उबटि खोरि सिंगारि सखियनि कुंज चोरी आनी । बरष भर जाको तप कियो सोघरी विधना बानी ॥ मुकुट रचिके मोर बनायो । सोमाथे धरि हरि बर आयो ॥ तनसांवर हैं पीत दुकूले । जाहि देखि घन दामिनि भूले ॥ छन्द ॥ दामिनी घन छबि कोटि बारों जब निहारों मुख छबी । कुंडल बिराजत गंड मंडित नहिन सोभा शशि रबी । या छबिको उपमां को नाहीं सकल हैं गुण जांही । मानो मोर निर्त्तत संग डोलत मुकट की परछांही ॥ गोपी न्योते आई । मुरली धुनि पढे जुबुलाई ॥ तहां सब मिलि मंगल गाए । बहु विधि फूलन मंडप छाए ॥ छन्द ॥ छाएजो फूलनि कुंज मंडप पुलिन में बंदीरची । बैठेश्री श्यामा श्याम बर चैलोक की शोभा सची ॥ इत कोकिला गण करें कुलाहल उत सकल हजनारी । आईं जुन्योते दुहुंहिसते देति आनंद गारी ॥ रासमंडल में सबभुज जोरी । हरिहैं सांवल राधा जू गोरी ॥ पाणि ग्रहण बिधि जब कीनो । मंडल भरि भांवरी दीनो ॥ छन्द ॥ दीनो जो भांवरि रास मंडल प्रीति गाठि हृदय परी । सरद निसि पून्यो बिमल शशि निकट वृन्दा शुभ घरी ॥ गाय गीत पुनीत सखियनि बेदरुचि मंगल धुनी । इत नंद सुत वृषभांन तनया रास में जोरीवनी ॥ मन मन सैन बराती । द्रुमफूले अनगन अन भांती बंदी जन हरिजस गावे । मघवा बहु बादित्र बजावे ॥ छन्द ॥ बाजे सु बाजे सकल नभ सुर पुष्प जलि बरषहीं । सुनि दिवट व्योमनि मांन दीपक जसे मधुकर हरषहीं ॥ सुनि

सूरदासहि भयो आनंद पूजी मनको आसा । श्रीनंद नंदन लाल दूलह दुलहिनी श्री राधा ॥ १८५ ॥ राग बिलावल ॥ श्रीललिता जूके आजु बधायो । श्रीवृंदावन ब्याह रचायो ॥ आली न्योति पठाई । बेमंगल निधि न्यौते ल्याई ॥ छन्द ॥ ल्याई जुन्यो तो साजि सखियनि मंडली अद्भुत रची । बांधि बंदन वार चहुं दिस ब्याह बिधि बेली रची ॥ संकेत देवी पूजि ललिता रहसि अति आनंद भरी । नवल राधे दुलहिनी को दूलह वर पायो हरी ॥ देवी बहु भांति पुजाई । बिधना दुह बिधि आनि मिलाई ॥ सोई राधे जिन हरि आराधे । प्रेम लग्न सोई हरि संग साधे ॥ छन्द ॥ साधि हरि संग लग्न ललिता रहसि मंगल गाइयो । बिबिध कुसुम बिचिचसों रचि महा मंडप छाइयो उबटि राधे दुलहिनी तन श्यामके उबटन कियो । शृंगार करि सिर गूंथि मौरी मुकुट मोहन के दिया ॥ करसों करजोरि बैठाये । भांवरि दै दै हसिके फिराये ॥ तब हसि ललिता दई है बधाई । बेतो फूली अंगन माई ॥ छन्द ॥ फूली अंगन माइ ललिता रंग भरि अंग अंग रही । या ब्याहकी रस रीति सखोरी जाति निह मोपै कही ॥ धनि धनि दिन यह राति धनि धनि धनि निज कुल सुभघरी । धनि धनि नंद कुमार दूलह दुलहिनी राधावरी ॥ दूलह बो होत सयानो । श्रीराधा जूके रूप लुभानो ॥ छिनएक बिलंबन कीजे । आंचरसों जोरनों कारहीजे ॥ छन्द ॥ कियो अंचराजोरनो मिलि सखी चारु गोने कियो । करि दिये कुंज प्रवेश दोउ धन्य ललिता को हियो ॥ नवल सखी अनेक छबि परवारने हों बलि गई । आजु अचल सुहाग को कछु जात नहिमों पें कही ॥ १८६ ॥ राग बिलावल ॥ दूज दूलह की सुघर गोरी । बिधना मानों सांचे ढोरी ॥ वाको ललित बदन मन मोहे । अवण कपोल चमकि चित पोहे । वाके लोचन चंचल तारे ॥ मनो वे नगदीप उज्यारे । वाके कानन की छवि ऐसी । कांम कतरनी चंचल जैसी ॥ वाके दंत बतीसी हीरा । जीभ ललित खाये मानों बीरा ॥ बाके अरुण अधर अति दीसे । फूल भरे जवहरे हरे हीसे ॥ छन्द ॥ फूल भरे सुदेसहीसत दृगनि अति सुख पाइये । मेरे नंद नंदन प्राण पतिकी सुघर घोरी गाइये ॥ वाके केस बार सुढार मनो मखतूल मोतिन सोही । मन रिझावन मनहु सावन मास मे फूलीजुही वाकी पीठिको जिनि डीठि लागो मिलि रही मोटी पुठी । झिलि मिले प्रति बिंबता पर मनो मैंन घटा उठी ॥ वाकी पूंछ चवर अति बाढी । मन मथ मानो सांचे धरि काढी ॥ वाके कंचन नाल बनाए । चरण शरण चंद्रा चलि आए ॥ वाके चारों खुर अति झलकें । दृग निरखत लागे नहि पलके ॥ वाकी छयल छबीली छाती । मखमल कोसी पसम सुहाती ॥ वाकी चाल बिचच्छन सोहे । देखत सबके मन मोहे वाको नखसिख रूप सोहायो । मखमली उर तांन बनायो ॥ छन्द ॥ मखमली उर तांन झलमले पररतन जटित लगामजी । जोन परम प्रवीन जगमगे मानो मूरति कांमजी ॥ अस वार नंद किशोर दूलह वित सबहिन के हरे । हरषि राई लोन वारें आरती जसुमति करे ॥ धन धन्य यह मुख श्याम घनप्रभु दृगनि अति सुख पाइये मेरे नंद नंदन प्राण पतिकी सुघर घोरी गाइये ॥ १८७ ॥ राग बिलावल ॥ बूझति जननि कहां हुती प्यारी

। कहां यह भाल तिलक रुचि दीनें किनकच गूंथि मांग सिर पारी ॥ नंद घरनि जसुमति कहियत हैं मोसो कह्यो हमारो आरी । तिल चांवरी मेलि गूंझा में फलिया फारि दई मोहि सारी । मेरो नाम बूझि बूझि बाबा को तेरो नाम बूझि दई हसि सुगारी । मेतन विते चिते ढोटा तन कछु सबिता तन ओल पसारी । बोलि लये दृष भांन भावती हसि हसि बाते बूझि दुलारी । सूर दास रस सिंधु बढ्यो अति दंपति मनमें इहै बिचारी ॥ १८८ ॥ * ॥ अथ कुबिजा मंगल ॥ * राग बिलावल ॥ सैरंध्री सोई उठी फरकत बाहु सुलोचन बांम । सुंदर सगुन भए आजु ऐहैं मेरे सुंदर श्याम ॥ छंद ॥ श्याम सुंदर आइ के रह साइ के गरे लाइ हैं । दे अलिंगन प्रेम सो मन सुख समूह बढाइ हैं । मनहि मन हुलसाति अतिही प्रेम पुंज बढाइ हैं । पूरण करि हैं मनोरथ सब अंग संग लगाइ हैं । भूषण बिबिधि रचे अंग अंग प्रति कहेन जाई । कंचुकि कसि जो लई श्याम अंग झलके अधिकाई ॥ छंद ॥ अधिकाइ झलके सुरंग चूनरि लाल रंग सुहावनी । पीत लहंगो बन्यो अतलस देखि मनकी भावनी । दोऊ जो लोचन आंजि सूछिम नैन सेन बनावनी । चूरी दुहूं कर पहरि हरी सुपरम फाब फबावनी । बेनी सुभग गुही सुगंध तेल लगाइ के नीके । सबहि बनाव कियो जाते हरन होय मन पीके ॥ छंद ॥ पीयके मन हरहि जैसे ऐसी मोतिन मांग भरी । टीकावली बहु परम सुंदर जटित नग जगमग करी । बेसरि रुचिर नासा बिराजे बनिकबनी अति कंठ सरी । हार हाटक जटित नग सब चलत मोती थर थरी । फूलन सेज रची परम मृदुल पय फेन समान । तकिआ रुचिर धरै गलमसुरी मानहु चंद भांन ॥ छंद ॥ चंद भांन सम गलमसुरी मानो देत सोभा अति घनी । चादर बिछाइ लगाइ सौरभ बहु सुगंधन सो सनी । इहि बिधि मनोहर साजि बैठी महा सुभट कंचन तनी । हुलसाति पुलकति मनहि मन में आइ है बिभुवन धनी । फूलहरा जो धरो अपने हाथ सुधारि संवारी । नखसिख रूप बनी मन मथ कोटि देउ बलिहारी ॥ छंद ॥ बलिहारि मनमथ कोटि छबि पर और उपमा जा ही । छिन भवन छिन बाहर बिलोकति साज सब बिधि साजही । मुसिकाति मन मन बिबस ह्वै के अद्भुत छबि छाजही । मंजुल मनोरथ करति मनमन आइ हैं पिय आजही । प्राण पति आइ गए निरखतहीं भई उठि ठाढी । हृदे लगाइ लई आनंद लहरि उमगि अति बाढी ॥ छंद ॥ बाढी जु आनंद लहरि बहु बिधि श्याम सुंदर बस परी । रति केलि भोग बिलास सब निति जो नियाके संग करी । जो गाइ है यह रसिक लीला परम रस आनंद भरी । कहि सूर वाके सब मनोरथ पूरि हैं मधुहा हरी ॥ १८९ ॥ * ॥ श्री जमुना जी के पद ॥ * ॥ राग बिलावल ॥ श्री जमुना करुणा मई बिनती सुनिलीजै । दरसनते पावन सदा सुमिरत अघछीजै । मंजन तुव जल पावनो मन सुध करि लीजै । गावत बेद पुराण में जसते सुख जीजै । भाव भक्ति वरदानही मोको वर दीजै । श्री विट्ठल गिरिधरन के गाउ गुण रस भीजै ॥ १९० ॥ राग बिलावल ॥ श्री जमुना गोपालहि भावै । जे जमुना के दरशन कीने कोटि जनम के पाप नसावै । जे जमुना अशनान करत हैं धर्म राज लेखा नगनावै । जे

जमुना जल पांन करत हैं बहुरो संकट और न आवै । पद्म पुराण कथा सब ऊपर धरनी सेा बराह जस गावै । ते तीरथ ए प्रगट जगतमें परमानंद प्रसादे पावै ॥ १९१ ॥ * ॥ श्री गंगा जी के पद ॥ * ॥ राग बिलावल ॥ परमेश्वरी देवी मुनि बंदे पावन देवी गंगे । बामन चरण कमल नख रंजित शीतल बारितरंगे । मज्जन पांन करत जे प्राणी बिबिध ताप दुख भंगे । तीरथ राज प्रयाग प्रकट भयो जब बनी जमुना वेणी संगे । भगीरथ राज सगर कुल तारन बालमीक जसु गायेा । तब प्रताप हरि भक्त प्रेम रस जन परमानंद पायेा ॥ १९२ ॥ आर्त्ती ॥ राग बिलावल ॥ बाती कपूर की जोति जग मगे आरती बिट्ठल नाथ बिराजे । घटा ताल पखावज आवज सप्त सुरनि सारद साज । या छबिकी उपमा कहा कहेा कोटि काम रिखत लाजै । श्री बल्लभ प्रेम प्रताप भरे नित आनंद मंगल गेकुल गाजै ॥ १९३ ॥ राग बिलावल ॥ श्री बल्लभ पुरुषोत्तम रूप । सुंदर नैन बिसाल कमल रंग मुख मृदु बोलत बचन अनूप । कोटि मदन बारेा अंग अंग पर भुज मृणाल अति सरस स्वरूप । देवी जी बड धारन प्रगटी दास शरण लछमन सुत भूप ॥ १९४ ॥ राग बिलावल ॥ रूप स्वरूप श्री बिट्ठल राय । बेद बिदित पूरण पुरुषोत्तम श्री बल्लभ गृह प्रकटे आय । खटपटी पाग महारस भीने अति सुंदर मन सहज सुभाय । छीत स्वामि गिरि धरन श्री बिट्ठल अगनित महिमा कही नजाय ॥ १९५ ॥ राग बिलावल ॥ श्री बल्लभ सुत परम कृपाल । तै सेई श्री गिरिधर श्री गोबिंद बाल कृष्ण जू नैन बिसाल । महा मोह दोष दुखी जन प्रकट भए घट दरसन ईस । जीव अनेक किये किर तारथ कोमल कर धरत परसीर । जाको दर्शन सुरनर को दुर्ल्लभ शरणा गत को सुलभ अपार । जन्म मरन भव बंधन छूटे जिन श्री मुख देख्यो एक बार । श्री बल्लभ रघुपति श्री जदुपति मोहन मूरति श्री घन श्याम । जन भगवान जाय बलिहारी यह सुनि जपों तिहारो नाम ॥ १९६ ॥ राग बिलावल ॥ धनि धनि माता तू तुलसी बडी । नारायण के माथे चढी । जे कोउ तुलसी की सेवा करे । कोटि पाप छिनमें परिहरे । जे कोउ तुलसीको फेरी देत । सहज जे जनम सुफल करि लेत । दान पुण्य में तुलसी होय । कोटिक फल पावै नर सोइ । जो घर तुलसी करत निवास । सो घर सदा कृष्ण को बास । कृष्ण दास कहे बारंबार । तुलसी की महिमा अपरंपार ॥ १९७ ॥ समुदाइ ॥ राग बिलावल ॥ जमुना जल घट भरि चली चंद्रावलि नारि । मारग में खेलत मिले घनश्याम मुरारि । नैननि सेा नैना जुरे मन रह्यो लुभाइ । मोहन मूरति जिय बसी पग धरेव नजाइ । तब की प्रीति प्रकट भई यह पहिली भेट । परमानंद ऐसे मिले जैसे गुर चेट ॥ १९८ ॥ राग बिलावल ॥ सुंदर ढोटा कौन के सुंदर मृदु बानी । भेद बतायेा ग्वालिनी जायेा नंदरानी । सुंदर भाल तिलक दिये सुंदर मुसकानी । सुंदर नैननि हरि लियेा कमलनि को पानी । सुंदरता तिहुं लोक कीया ब्रज में आनी । परमानंद जसोमति सब सुख लपटानी ॥ १९९ ॥ राग बिलावल ॥ कमल नैन कमला पती त्रिभुवन के नाथ । एक प्रेमते सब बने जो मन होय हाथ । सकल लोक की संपदा जो आगे धरिये । भक्ति बिना माने नही जो कोटिक करिये ।

दास कहावत कठिनहै जो लोचित राग। परमानंद प्रभु सांवरो पैयत बड भाग ॥ २०० ॥ ॥ राग बिलावल ॥ आवति भोर भये कुंजबन तें कहुं कहुं अलभे कुसुम केसमें । रति रस रंग भीनी सोहे सारी तनझीनी भूषण अटपटे अंग अंग छवि देखियत सुदेसमे ॥ ओपमे ओप भई बिरहज ताप गई सरद चंद नहि गनति लेसमे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर संग निस जागी जुवती सिरोमणि धोप देसमे ॥ २०१ ॥ राग बिलावल ॥ मांग मरगजी तिलकु आधो अधरनि रंगु आई सग सगाति । चपल नयन आलसहि जनावत भोंह भुजंगिनि लस लसाति ॥ मांनके सृंखल खूटे चोली के बंद टूटे बदन की जोति कछु अवरहि भांति । कुच नख रेख बनी किलकत कांम तनी मानह कनक घट मानिक कांति पलटि परे पट कहडु कहांते बोलत बोल कछु अट पटांति । केश कुसुम ससि पद नख पूजत चलल मधुर गति डगमगाति ॥ सुरत समर जीत्यो मदन नृपतिते ताहीते अधिक फूली अंगन माति । कृष्णदास स्वामी लालगोवर्द्धन धारी संग रति बिलास सुख भले बीती राति ॥ २०२ ॥ राग बिलावल ॥ आई रति रणजीते भामिनि बांधी काछ कटि तट पट फेटक । रिझयो सकल कला गुण नागर कछु तेरे नैननि मद्चेटक ॥ भले नक्षच भले गुणनि में सखि कमल नयन सोंते बदीसहेटक । ऐसी कही अबहीं आव तिहों आपुन चलो जहां बस हेटक ॥ डगमग चरण धरत धरणी तल गज मदचसत निरखि गति की लटक । चसत भुजंग निरखि सिर बेणी भूषण निरखि चसत मणि हाटक ॥ मोहनलाल गोवर्द्धन धारी कर बर कमल गहीव तुम्हारी लट । काम केलि सज्या पर नचाई कृष्णदास प्रभु सुरत रंगनट ॥ २०३ ॥ राग बिलावल ॥ याही गुणते सुनुहो प्यारी तूं मोहन गोपालहि भाई । सकल सिंगार साजि मृग नयनी अवसर भले बेगि चलिआई लहंगा लाल झुमुककी सारी पचरंग सिर ओढ़नी बनाई । नव रंग उरतन सुखकी चोली कुसुंभी बरन पियहेत रंगाई ॥ मृगमद पच लिखित कुच जुगबिच कुसुमनि माल अनूप बनाई । उर कर सिर सुकनक मणि लंकृत निरखत रति पति रह्यो लजाई ॥ कृष्णदास स्वामी सुख सागर तासो सखिन नसों अरु झाई । मोहन लाल गोवरद्धनधारी अपनी जानि हसि कंठ लगाई ॥ २०४ ॥ राग बिलावल ॥ चर्चरी ॥ तूं जु प्रीतम की भावती लाल भावतो तेरो । मनहीं मन मिलि रही मोहि देखत कियो रति रण झेरो ॥ हिलग हृदय महंकि जानि ये सुभग दूरते नेरो । कृष्णदासनि नाथ छैल गिरधर पायो रसिक सुख केरो ॥ २०५ ॥ राग बिलावल ॥ अति रगमगी देखियत हेप्यारी हसति बदति आलससों बोल । डगमगि चलति प्रकट दस हिमकर पद नख पूजत चंचल लोल ॥ गौर अंग महं अधिक बने सखि कदंब कुसुम रंग पीत निचोल । पलटि परे तेहूं नहि जाने रसमें मगन मानों मदन कलोल ॥ कृष्णदास स्वामी संग सजनी निसि झूली पिय सुरत हिडोल । मोहन लाल गोवर्द्धन धारी दे सर्वस तूलीनो मोल ॥ २०६ ॥ राग बिलावल ॥ कहांलों बरनों तेरे बदन की ज्योति झलक ऊपर वारो कोटि चंद । श्रवण पालताटंक सोहत मानो रबि ससि जुगल परे मन फंद ॥ उपमा कहत न बने कमलकी नाक शुक मोहित भौंह स्वछन्द । खंजन मीतन तजत अलक अलि अति सोभन लपट

मकरंद ॥ कृष्णदास प्रभु गोबर्द्धन धर अब मिले मैं देखे टूटे कंचुकि बंद । भिन्न सेत बिहरत तू करनी अति नागर हरि मत्त गयंद ॥ २०७ ॥ राग बिलावल ॥ शोभा बरनि न जाइरी माई जो मुख जीभ होइ लखकोरी । नंदराय की अगुरी लागे गिरिधर पियबल रामकी जोरी ॥ बडे भाग देखे नौतन भई जेतिक कहुं तेती तेतीथोरी । कृष्ण दास बलि बलि चरणन की तन मन फूलगावे नांचेहोरी ॥ २०८ ॥ राग बिलावल ॥ कंचन मणि मरकत रस ओपी । नंद सुवन के संगम सुख बर अधिक बिराजत गोपी ॥ करत बिधाता गिरिधर पिय हित सुरत धुजा सुखरोपी । बदन कांतिकै सुनिरी भामिनि सघन चंद श्रीखोपी ॥ प्राणनाथ के चित चोरन को भोंह भुजंगमकोपी । कृष्णदास स्वामी बस कीने प्रेम पुंजकोचोपी ॥ २०९ ॥ राग बिलावल ॥ कटितट सोहति हेमणि दांम । पीत काछ पर अधिक बिराजित न्याइ लजावत कांम ॥ को हैन मोहन कोचित मोहति चपल कुटिल भ्रू बांम । अनु छनु रटत बेणु कलकूजित सुनिराधे तब नांम ॥ तेरे नील पट ओढि रसिक बर खेत दिवस के जांम । कृष्णदास प्रभु गोबर्द्धन धर सुभग सीव अभिरांम ॥ २१० ॥ राग बिलावल ॥ छैल छबीलो लाल रंगी लो देखन किन कानन आई । रूप निधान रसिक गिरिधर पिय हों तोको लेन पठाई ॥ सघन निकुंज नवल चिचसारी बिबिध लता कुसुमनि छाई । पिक अलि संगकरत कोलाहल मलय पवन बहे सुखदाई ॥ रति पति मृग बाध्यो खेलन के कमल पचलै सेज बिछाई । कृष्णदास प्रभु सुरत सुधा निधि जुवति सभा यह कीरति गाई ॥ २११ ॥ राग बिलावल ॥ सांवरे गोबिंद संग रंग निसिजागी सोहे लोचन उनीदे मानो बंधुका के फूल । सुनहि सुन्दर सुजान गोबर्द्धन नाथ मिले सुरतके हिंडोलना ते लीनी प्रेम झूल ॥ मदन कला अति रसाल संगीत कला सुनि पुनि रूप रासि ऐसी कौनतेरे सम तूल । कृष्णदास स्वामिनी मनोज भेष राधिका बदन जोति निरखि नभसि सघन चंदभूल ॥ २१२ ॥ राग बिलावल ॥ एतेरे तन लागी प्यारे अंगकी ओप सोरंग सुनि सखि काहे को दुरावति अपने सयानन गनति अबरको जेसें तेसें हमारे तू नयन चुरावति ॥ बोलन हार तुही जुवतिनि महं मोसिन को बातनि बौरावति । घरके भेदन जानति नागरि मनकी प्रीति आंखिनि समुझावति । मोहन लाल गोबर्द्धनधारी सों रहसि मिलि कोकिल सुर गावति॥ कृष्णदास प्रभु नटवर नायक रसिक शिरोमणि सुबिध रिझावति ॥ २१३ ॥ राग बिलावल एमेरे मन भावत मदन गोपाल । छैल मनोहर हेमलता जुवतिनि श्याम तमाल ॥ एरी शंभु दग्ध मन्मथ को अनु छिनु अबहि करत प्रतिपाल । वृंदाबन भुवि सुरत सुधा निधि कूजित बेणु रसाल ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि अंबुज नयन बिसाल । नव भूषण कुच बिच धरि राखो गोबर्द्धन धर लाल ॥ २१४ ॥ राग बिलावल ॥ अरुणो दे आवति है रस मसी सुमुखि उरसि बर लचकतु हार । पीत काछनी कटितट बांधे तूहि भई मानो नंद कुमार ॥ मोर चंद्रिका मुकुट धरे सिर जुवति भावको बिगत बिचार । पियकी मुरली अपने अधर धरे कर कूजति लोचन अनुसार ॥ तन मय रसिक लाल गिरिधर सो देखति दहं दिसि सुरत बिहार ॥ कृष्णदास प्रभु अपने रूप रस वस कियो

सर्बस दान उदार ॥ २१५ ॥ राग बिलावल ॥ पिय के प्रीति को फूल जनावत री तेरे नव लोचन चल । अरुणोदय सरसी रुहकी श्री जीतन चाहत तरुण तेज बल ॥ मिटत नहीं अभ्यास अधर को सुरत सेज को जी सुकंठ कल ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर संगम भीजे उरज बिमल सुख श्रम जल ॥ २१६ ॥ राग बिलावल ॥ तेरे उरसोहत सुनि सुंदरि पिय संगम की श्रम जल बूंद ॥ कुचन उपर मंजरीबिराजत मनहु अमृत घट दीनी रति मूंद ॥ मुख जम्हात जीतति अम्बुज बन मोहति रसिक दसन कलिकुन्द ॥ कृष्णदास प्रभु गिरि धर रस भरि बस कियो मदन डगत पद खुन्द ॥ २१७ ॥ राग बिलावल ॥ हरि भजु भामिनी सुभग सयानी । शरद काल की घटा सदृश तूंकत गरजति अलसानी । हौ पठई नव रंग रायपति सीच अमृत मधुवानी ॥ बिरह अनल सशंकित प्रीतम रसिक राय सुख दानी ॥ दूत धर्म अति निपुन दूतिका सरल शुभावहि आनी । कृष्ण दास प्रभु गिरि धर पिय को रबकि कंठ लपटानी ॥ २१८ ॥ राग बिलावल ॥ तेरे चपल नयन युग खंजन तें नीके । ताप हरन अति बिदित बिस्व महं देखत शत दल लागत फीके ॥ श्याम स्वेत राते अनियारे गिरिधर कुंवर रिसद सुख जोके । सुनि कृष्ण दास सुरत कौतुक बस प्यारी दुलरावति अपने पीके ॥ २१९ ॥ राग बिलावल ॥ तेरे चरण किहों शरण । राखो राखो दयाल मूरति रसिक गिरिवर धरण ॥ काम क्रोधज दाव दाह्यो कु बिधि लाग्यो शरण । कृपा दृष्टि जिवाउन घनश्याम अम्बुज चरण ॥ निरखि नख मणि ज्योतिबे भव मुदित अन्त करण । कृष्ण दासनि तेरोई बल बिरह जल निधि तरण ॥ २२० ॥ राग बिलाबल ॥ अधर चंद्र तिलक श्रीराधे के कुंम को तामहं मृग मदरस बिंदु । मानहु श्याम मनु लागि रह्यो श्याम सुन्दर को चिबुक मोहन श्याम बिंदु ॥ सखिन ते दुराउ करत पोंछत विचकुच जुगमह श्रमजल बिंदु । कृष्णदास प्रभु गिरिधर जानी रीझि दियो चुंबन सोहत पीक बिंदु ॥ २२१ ॥ राग बिलावल ॥ देखिरी नयननि गिरिवरधर । सहचरि कहति द्वितिय सहचरि सों प्रेम मुदित प्यारी राधा बर ॥ भूषण भूषित अंग मनोहर बसन मनेहरकनक कांतिहर । चितवत हरत बिस्व युवतिनि के सर्वसु देत उदार कमल कर ॥ उपमा कहा कहोंको लायक बरनों कहा किशोर बेष बर । सुरत अन्त लटकत ब्रज आवत कृष्ण दास बड़ भाग कलप तर ॥ २२२ ॥ राग बिलावल ॥ राधा रंग भरी नहि बोलति मोहन मदन गोपाल लाल सों अपनो जोवन तौलति । चाहति मिलन प्राण प्यारे को मेरोई मन टकटोलति ॥ छाडहि बहुत चातुरी भामिनि कत हमसों झकझोलति । प्रात होन लाग्यो सुनि सजनी अबही तमचुरि बोलति । कृष्ण दास प्रभु गिरिवर धर हित सारंग नयन सलोलति ॥ २२३ ॥ राग बिलावल ॥ एकहि हाथ टेकें ठाढी दधि मथ नियां शीश लियें । झगरति झरबातें कहति ढोठ भई दूजो कर हरि मुख निपट निकट कियें ॥ चलति फिरि चलति जाति नाही चलि जानत सतर भौंह कियें । कृष्ण दास प्रभु तन झुकि परसति नयन और बैन और हियें ॥ २२४ ॥ राग बिलावल ॥ चली जाति उत गेह को मुरि मुरि हरि देखति इत । कबहुं के यहि मिस ठाढी ह्वै लावण्यहि सुधारति कबहुं ओढति आचरु बनाय बनाय ढिग जित तित ॥ झूठेई सोच सोचि सोचि

रहति पुनि डगरति फिरि डगरति पुनि डगरति अटपटाति कछू भूलीसी भ्रमति चित । कृष्ण दास प्रभु के रूप गुण मन अरुझ्यो तातें सुरझि न सकति सकति अकति हित ॥ २२५ ॥ राग बिलावल ॥ काहे बांधति नाहिने छूटे केस । शशि मुख पर घन धारा छूटी कछुक जु चली उरदेस ॥ अंग अंग यह शोभा कहा कहूं निशि जागि आई औरही । कुम्भन दास अति आपतें आप भई गोवर्द्धन धर मिले व्रज जुव नरेस ॥ २२६ राग बिलावल ॥ मोतिन माग बिथुरी शशि मुख पर मानो नक्षत्र आये करन पूजा । अंचल फर हरात उर पर काधी काम धुजा ॥ बिरह राहुतें छूटि सकल कला बिमल भई देखत सुखुजा । कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर अधर सुधा कियो पान कंठ मेलि उदार भुजा ॥ २२७ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ तूतेा आलस भरी देखियत हेरी रसो । रजनी चोरि तातें आखिन लागी अरु अकेली भामिनि कुंज बसी ॥ घर बिरोधतें रूसी काहू जानी नवन को दिन गतही नसी । कुम्भन दास गिरिधर के कंठ की यह जानति हेा तैंतों गिरी पाई मोतिन माल खसी ॥ २२८ ॥ राग बिलावल ॥ आज देखियत वदन डहडह्यो प्यारी रग मगे नयना तेरे रँग भरे । मानहु शरद कमल ऊपर उन्मद युगल खंजन खरे ॥ रसिक शिरेा मणि लाल सुशीतल कमल कर उर धरे । कुम्भन दास कहि काहे न फूले गिरिधर पिय सब दुख हरे ॥ २२९ ॥ राग बिलावल ॥ काहे ते आजु बिथुरी प्यारी क्यों न बांधहि अलक । भोंह कमान नयन रतनारे मानेा न लागी पलक ॥ रति रस सुखकी फूल जबा बति मद गयंद की चाल मलक । कुम्भन दास मिली गिरिधर कों मानेा कोटि चंद की झलक ॥ २३० ॥ राग बिलावल ॥ जानी मैं आजु मिली प्यारे सों ते अपनेा भाव तोही री कियेा । सकल रैनि रात रस रंग खेलत पलक न लागन दियेा ॥ कंठ लागि भुजा दे सिरहाने रसिक लाल को अधर सुधा रस पियेा । कुम्भन दास प्रभु गिरिवरधर को अंक भरि भेटि जु डायेा हियेा ॥ १३१ ॥ राग बिलावल ॥ रस मसे नयन तेरे निशि के उनीदे काहे को दुरति जु उलटी बात प्रातही जो धुनीदे ॥ वदन आलस में आलस की जम्हाय बेा अति अलसात बचन छोदे । कुम्भन दास प्रभु गिरिधर मिले तोहि सकल अंगसे बीदे ॥ ॥ २३२ ॥ राग बिलावल ॥ सखीरी जिनि वा सरोवर जाहि । अपने रसको तजि चकवा की बिछुरि चलति मुख चाहि ॥ सकुचत कमल अकाल पाइके अलि व्याकुल दुख दाहि । तेरे सहज आन यह गति यह अपराध कहि काहि ॥ यह अद्भुत सरिस रच्यो बिधाता सरस रूप अनुसाहि । कुम्भन दास प्रभु गिरिधर सागर देखत उमगे ताहि ॥ २३३ ॥ राग बिलावल ॥ नंद नंदन के अंकतें मुरली सुंदर चतुर हरति । नूपुर मुख मूंदिके अछन अछन पग धरनि धरति ॥ कनक बलय कंकनभुजानि जुग उछे पुकरति । कुम्भन दास गिरिधर के मुद्रित नयन देखति चकृत मंदहास रस जागन तें डरति ॥ २३४ ॥ राग बिलावल ॥ नागर नंद कुमार मुरली हरत न जानी । गिरिवर धरके अंकतें अचानक लई राधिका सयानी ॥ व्रज सुंदरि जतननि मुद्रित करि नूपुर कंकन घानी । कुंभन दास मुसकानी नंद गति अछनहि अछन प्रयानी ॥ २३५ ॥ राग बिलावल ॥ तेरे तन की उपमा को देखेा मैं बिचार के कोउ नाहिं न भामिनी । कहा बपुसेां कंचन कदली कहां

केहरि गज कपोत कुंभ पिक कहां चंद्रमा और कहां बपुरी दामिनी ॥ कहां कुरंग शुक बंधूक के को कमल या आगे श्री देखिये सबनि कामिनी । मोहन रसिक गिरिधरन कहत राधा परम भावति तू है कुम्भनदास स्वामिनी ॥ २३६ ॥ राग बिलावल ॥ तोसों जो रस में कछू हंसि के कह्यो सखीरी तू करति मान । इतने ही को काहे को रूसति गोवर्द्धन धारी प्यारो सुख निधान ॥ मेरो कह्यो करि छांड़ि अटपटी सुनिरी तजहि अपनो सयान । कुम्भन दास स्वामी सों प्यारी न करि निदान ॥ २३७ ॥ राग बिलावल ॥ जो तोसों बात कही पिय तेरे तो तू काहे को रिसानी ॥ प्राणनाथ सों बीच पारे सोई अयानी ॥ जा बिनु रह्यो न परे छिन तासों क्यों रूसिये सयानी ॥ कुंभन दास प्रभु गिरिधरन कहे सोई कीजिये ज्यों रहिये हृदय लपटानी ॥ २३८ ॥ राग बिलावल ॥ सुनि गोपाल एक हज सुन्दरि तुमहिं मिलन को बहुत करति । बार बार मोसों कहति रहति है वाके जीय बो हेात अरति ॥ तुमहिं जपति रहति निशि बासर और बात कछु जिय न धरति । श्याम स्वरूप चहुंटि चित लाग्यौ लोक लाज तें नाहिं डरति ॥ हेात न चैन वाहि एको छिनु अति आतुर चित बिरह भरति । कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर तुम कारन नव जोबन गरति ॥ २३९ ॥ राग बिलावल ॥ तेरे नयन चंचल बदन कमल पर मनो युग खंजन करत कलोल । कुंचित अलक मनोरस लंपट चलि आये मधुपनि के टोल ॥ कहा कहों अंग अंग की शोभा खुभी न परसत चारु कपोल । कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर देखत बाढे मनज अमोल ॥ २४० ॥ रागबिलावल ॥ न्हान को खोले कंचुकी के कसना । सनमुख ह्वै पिय झांकि झरोखनि तब अंगुरी दीनी बिच दसना ॥ लज्जित तन कंपित ह्वै धाई लीन्हें और बसना । कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर तबहि लाल लगे हैं हंसना ॥ २४१ ॥ राग बिलावल ॥ अंचल पोक कहूं कहुं लागी नयननि सखी करति सब कूटि । मोहन लाल गोवर्द्धन धारी सर्वसु भामिनि लियो है लूटि ॥ नैना रस मसे अधर और छवि चन्दन गयो गात पें सूक । कुम्भनदास प्रभु सों मिली भाँमिनी कहत न बनें सुख भई मति मूक ॥ २४२ ॥ राग बिलावल ॥ पिय संग जागी वृषभान दुलारी । अंग अंग आलस जम्हाति अति कुंज सदन तें भवन सिधारी ॥ मारग जात मिली सखी और तबहिं सकुचितन दसा बिसारी । छीत स्वामिनी सों कह भामिनी तोहि मिले निशि गिरिवरधारी ॥ २४३ ॥ राग बिलावल ॥ राधा निशि हरि के संग जागी । यमुना पुलिन सघन कुंजन में पिय अंग मिलि मिलि के अनुरागी ॥ कुटिल अलक बगरी जु बदन पर दोउ कपोल पीकनि सों पागी । छीत स्वामिनी उमगि उमगि कें गिरिधरलाल उरनि सों लागी ॥ २४४ ॥ राग बिलावल ॥ बालकृष्ण जागहु मेरे प्यारे । बैठो सेज कहति है जननी बारबार मुख कमल निहारें ॥ सुन्यो बचन माता को जबहीं तनिक तनिक दोउ नैन उघारे । लिये उठाय अंक भरि तबहीं उष्णोदक सों बदन पखारे ॥ मांखन मिश्री और मलाई औट्यौ दूध तुम लेउ दुलारे । विविध भांति पकवान मिठाई आनन मेल अपुन पोवरे ॥ मुख पखारि अंगुछो पहिराई सिर ऊपर चौतनि जब धारे । डोलत अजिर मुदित मनमोहन ब्रजजन ओट भईजु निहारे ॥ २४५ ॥

॥ राग बिलावल ॥ गोद लियें जननी मुदित मन बाल कृष्ण को करति सिंगार । झंगुली लालजरी पहिनाई सिर कुलही धारति एकसार ॥ हंसुली कंठ जटित नग मानिक अरु सोहत मोतिन के हार । बाजू बंद लाल भुज राजत जग मगात है परम सुढार ॥ पहुंची हाथनि परम बिराजत ताकी शोभा कौ नहि पार । मानो अहि सुत के फणि ऊपर मणि की ज्योति भई उजियार ॥ कटि करधनी बिचिच बनी छबि पग जेहरि नूपुर झनकार । घुटरुन धावत मनि आंगन में ब्रजपति देखि लजानो मार ॥ २४६ ॥ राग बिलावल ॥ बाल कृष्णकों जशुमति लिये गोद खिलावे । सुंदर मुख छबि निरखि के मनमें सुखपावे चुचुकारे चुंबन करे बहु लाड लडावे । कबहुंक अंगुरी लायके मंद चलन सिखावे ॥ घुटरुन चलत उताल सों मैया ढिग आवे । ले उछंग जननी तवस्तन पान करावे ॥ पीत झगुली पहिराय के सिर कुलही बनावे । कंठ कठुला हंसुली बनी कोधनी सुहावे ॥ ग्रह ग्रह ते सब गोपिका देखन को आवें । अजिर दौरि रिंगन करे ब्रज जन संग धावें ॥ २४७ ॥ राग बिलावल ॥ बात कहूं एक हितकी तोसों । आरि करे जिनि सुनि मन मोहन देव हुकारी कहि कहि मोसों ॥ सूरज बंश भयो नृप दशरथ तिनके पुत्र भये हैं चारि । राम भरथ लक्ष्मन शत्रुहन खेलत गृह आंगन के द्वारि ॥ बिश्वा मित्र मख रक्षण करि के अरु तारी गौतम को नारी । मिथिला जाय शिव धनुष तोरेा तब जनक सुता माला उर डारी ॥ करि बिवाह घरको जब आये भरथ गये मातुल के धाम । नृप मन सोचि कह्यो गुरु आगे बेगिहि राज देहु श्री राम ॥ केकई बचन पिता की आज्ञा चले दंडक तापस अनुहारि । लक्ष्मन सहित संग बरनारी डोलत बननि चाप कर धारि ॥ पंच बटी बिचरत चिय के संग रावण हरन कियेा तिहि काल । इतनेा सुनत सूरके स्वामी चौकि कह्यो दे धनुष उताल ॥ २४८ ॥ राग बिलावल ॥ सुन सुत एक कथा कहों प्यारी कमल नयन मन आनंद उपज्यो रसिक सिरोमणि देत हुंकारी ॥ नगर एक रमनीक अयेाध्या बड़े महल जहां अगम अटारी । बहुत गली पुर बीच बिराजत भांति भांति सब हाट बजारी ॥ तहां नृपति दशरथ रघुबंसी जाके नारि तीनि सुखकारी । कौशल्या केकई सुमित्रा तिनके जनम भये सुतचारी ॥ चारि पुत्र राजा के प्रकटे तिनमें एक राम व्रतधारी । जनक धनुष पन कियेा जानकी त्रिभुवन के सब नृपति हंकारी । राज पुत्र दोऊ ऋषि लै आये सुनत जनक पन तहं पग धारी ॥ धनुष तोरि मुख मोरि नृपन को जनक सुता तिन तब बरि नारी । पग अंगुठा जब पीर नृपति के तब केकई सुख मेलि निवारी ॥ बचन मांगि नृप सों यह लीनेा रघुपतिके अभिषेक सम्हारी । तात बचन सुनि तज्यो राज जिन भ्राता घरनि सहित बनचारी । उनके जात पिता तनु त्याग्यो अति व्याकुल करि जीवबिसारी ॥ चित्रकूट गए भरथ मिलन बन पग पांवरी दै करी छपारी । जुवती हेत कपट मृग मारयो राजिव लोचन गर्ब प्रहारी ॥ रावन हरन कियेा सीताको सुनि करुणा मय नीद निवारी । सूरश्याम तब रटत चापको लक्ष्मण देहु जननि भ्रमभारी ॥ २४९ ॥ राग बिलावल ॥ आजु निकुंज मंजुमें खेलत नवल किशोर नवलि किशोरी । अति अनुपम अनुराग परस्पर अति अभूत भूतल पर जोरी ॥ विद्रुम फटिक बिबिधि निरमित

घरनव कपूर परागन थोरी । कोमल किशलय सेन सुपेस लता पर श्यामल निवेसित गोरी ॥ मिथुन हास परि हास परायन पोक कपोल कमल पर जोरी । गौर श्याम भुजकलह मनोहर नींवी बंधन मोहन डोरी ॥ हरि उर मुकर विलोकि अपनपो विभ्रम विकल मान जुतभोरी । चिबुक सुचारु प्रलोई प्रबोधित पिय प्रति बिंब जनाइ निहोरी नेति नेति बचनामृत सुनि सुनि ललितादिक देखति दुरिचोरी । हित हरिबंस करत कर धूननि प्रणय कोप माला बलितोरी ॥ २५० ॥ राग बिलावल ॥ अतिहीं अरुण तेरे नयन नलिनरी । आलस जुत इतरात रगमगे भए निसि जागर मलिन मलिनरी सिथिल पलकमें उठत गोलक गति बिधियों मोहन मृग सकत चलनरी । हित हरिबंस हंस कलगामिनि संभ्रम देत भवरिन अलिनरी ॥ २५१ ॥ राग बिलावल ॥ बनी राधा मोहन की जोरी । इंद्रनील मणि श्याम मनोहर सात कुंभतन गोरी ॥ भाल बिसाल तिलक हरि कांमिनि चिकुर चंद्र बिचरोरी । गज नायक प्रभु चाल गयंदनि गति हय भान किसोरी ॥ नीलनि चोल जुवति मोहन पटपीत अरुन सिर खोरी । हित हरिबंस रसिक राधापति सुरति रंगमें बोरी ॥ २५२ ॥ राग बिलावल ॥ चर्चरी ॥ आजु नागरी किशोर भांवती बिचित्र जोर कहा कहुं अंग अंग परम माधुरी । करत केलि कंठ मेलि बाहु दंड गंड मंड परसि सरस रास मंडली जुरी ॥ श्याम सुन्दरी बिहार बांसुरी मृदंग तार मधुर घोष नूपुरादि किंकिनी चुरी । देखत हरिबंस आलि निर्त्तनी सुधंग चालि बारि फेरि देत प्रान देहसों दुरी ॥ २५३ ॥ राग बिलावल ॥ चर्चरी ॥ मंजुल कल कुंजदेस राधा हरि बिसद बेस राका नभ कुमुद बंधु सरद यामिनी । सांवल दुति कनक अंग बिहरत ललि एक संग नीरद मणिनील मध्य लसति दामिनी ॥ अरुन पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ जुत सीस अनिल मंद गामिनी । किशलय दल चित से नवेलित पिय चाटुबैन मान सहित गति पद अनुकूल कामिनी ॥ मोहन मनमथत मार परसत कुचनी बिहार बेपथुजुत नेति नेति भामिनी । नर बाहन प्रभु सुकेलि बहु बिधि भर भरति झेलि सुरति रस रूप नदी जगत पामिनी ॥ २५४ ॥ राग बिलावल ॥ चर्चरी ॥ चलहि राधिके सुजान तेरेहित सुखनिधान रास रच्यौ श्याम तट कलिंद नंदिनी । नृत्यति जुवती समूह राग रंग अति बिनूह बाजत रसमूल मुरलिका अनंदिनो ॥ वंसी वट निकट जहां पर रमण भूमि तहां सकल मुखद वहै मलय बायुम दिनी । जाती ईषद बिकास कानन अतिसे सुवासरा का निसि सरद मास बिमल चांदनी ॥ नर बाहन प्रभु निहारि लोचन भरि घोष नारि नख सिख सौंदर्य कांत दुखनि कंदिनों । किसलय भुजग्रीव मेलि भांमिनी सुख सिंधु झेलि नवनि कुंज श्यामकेलि जगत बंदिनी ॥ २५५ ॥ राग बिलावल ॥ निरखि सखि बिबि मुख नयन सिरात । रति बिपरीति मीत श्यामल पर शोभित गोरे गात ॥ लटसें लटपट से पट अरुझे उर मह नवउर जात । मुखमें अधर बाहुनि में मुदृढ बंधे बलिजात ॥ चंद्रबदन सानंद किशोर चकोर पियतन अघात । व्यास स्वामिनी पिय संग बिहरति मान सीस दैजात ॥ २५६ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम गूजरी कहां अति कोमल सरल किशोर । सुनि सुकु

मारी महा अति कठिन कुटिलनख सिख अंग तोर ॥ कहं कमोल मृदुल मंजुल अति कहां तुव नखरस कोर । कहां बिंबाधर जलधर सम कहा दसन ऋन्यारे ओर ॥ कहां कुवर कोसदय हृदय कहां तव कुचपीनकठोर । कहां निराग सनाहु कहां दृढ बाहन बंधनजोर ॥ कहां दीन आधीन कहां तुव बंक चितवनि चितचोर । व्यास स्वामिनी रसिक प्रीतम के नाते कह्यो सुथोर ॥ २५७ ॥ राग बिलावल ॥ ठाढे दोऊ कुंजमहल के द्वारे । राधा मोहन मोहि लागत है तू देखियो नेकु नयन भरि सोभित अंग सुढारे अति आतुर तोही तन चित वत इकटक पलक लगत नहि लोचन मोन लगे ज्योंगारे ॥ व्यास स्वांमिनी चितवत ही चुंबत ललित बिहसि उरसि पिय लई बिहरत राखो रंगधारे । ॥ २५८ ॥ राग बिलावल ॥ मोहन को देही उलटी रचोरी । नयन नीर सरबूडतते बिरह दहन तें झरत बचोरी ॥ भई श्यामते पीन धरनि दुहि तरुणि प्रताप तचोरी । हाराधेरव श्रवण सुनत तूं अजहुंन निठुर लचोरी ॥ चंदन चंद अवत बन पानु करि दुख को रासि रचोरी । तोबिन अनतन सरण मीत कह भीत सभा बिरचोरी ॥ इतनों सुनि उठि चली अली संग सुधंग नचोरी । व्यास स्वांमिनी रति रस बरषत सुखमै कोच रचोरी ॥ २५९ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसी कुंवरि कहां पिय पाई । राधाछूतें नख सिख सुन्दरि अबलों कहां दुराई ॥ काकी नारि कोनकी बेटी कोन गांउते आई । सुनीन देखी हज वृन्दाबन सुधि बुधि हरति पराई ॥ याको सुभग सुहाग भाग अति लाग जुवति मन भाई । याहीके रस बस ह्वै तुमहूंभान सुताबिसराई ॥ यह बिनोद सुनि देखन आई रबकि कंठ लपटाई । व्यास स्वामिनी बिहसि मिली तहां सरस सुधंग मचाई ॥ २६० ॥ राग बिलावल ॥ कहेन पत्यैहै कोऊ बात । श्याम काम बस गोरे ह्वै गये राधा कैसे गात ॥ जैसोई ध्यानु धर्यो तैसोई भए अधर गंड उर जात । नखसिख अंग अंग सोहियत देखत नैन सिरात ॥ वह गुण रूप नतोहूमें सखिफूल झरत मुसकात । गज मराल गत निरखत मोहे रति मन सिज संघात ॥ अपनी जोरिहि भेंट्यो चाहति लक्षितादिक बलिजात । तूही रसमें बिरसु कियो अबकोन काज पछितात ॥ कंठ बाहु धरि चली अली के सुनि अद्भुत अकुलात । व्यास स्वामिनी परसत मोदन धरनि गिरे लपटात ॥ २६१ ॥ राग बिलावल ॥ सैननि बिसरें बैननि भोर । बैन कहत कासों पिय हियतें बिहसत कतहिं किशोर ॥ दुख मेटत भेटत तुमको नहिं चुंबन देतन थोर । काहिदेत जोबन धन कर गहि लै कुच कोर अकोर ॥ काके पाइ गहत मेरे प्यारे कासों करत निहोर । कोनही विकल किये नव नागर तुम पनिहां तुम चोर ॥ निज बिहार आरो पिआन पर कोपि मान गढ तोर । व्यास स्वामिनी बिहसि मचाई सुरति समुद्र हिलोर ॥ २६२ ॥ राग बिलावल ॥ संदेसो कह्यो दूतिका आन । अन बोले सब अंग दिखाये नागरि लैहै जानि । बदन पसारि निमेषनि बिनु चितयो सिर ऊपर धरि पानि । कांस झुकाइ गाइ हंसि नाच्यो धरनि गिरो मुरझानि । पुलकित कंपित खेद भेदतन अमु बनि आप चुचांनि । मुदित श्रवण उसास कंठधरि फारति पटु दुख हानि । वन माला तोरत कर जोरत पाइ परत मुसकानि । सीतल जल भरि कमल उरहि

धरि कदलिखंभ लपटानि । बौरो बिपदा सुनि सुनि व्रत तजि छांडि जीय की बानि । व्यास दासिके समुझि बिनोदनि कुबरि जिबायो आनि ॥ २६३ ॥ राग बिलावल ॥ ए हरि मोसों नबिगारन को तो सोन संवारन को मोहि तोहि परी होड । कोन धों जीते कोन धों हारे परी बदि नछोड । तुम माया बाजी पसारी बिचित्र मोहि जन मोको भूल्यो कोड । कहि हरि दास हम जीते हारे तुम तऊ न तोड़ ॥ २६४ ॥ राग बिलावल ॥ प्रिया पिय के उठ बेकी छबि बरनी नजाई सबतें न्यारे । मानो घोस रेनि इक ठौरे ह्वै नभये न्यारे । बार लटपटे मानो भौंर यूथलरत परस्पर कमल दलनि पर खंजरीट शोभा न्यारे । हरि दास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी पर कोटि कोटि अनंग कोटि ब्रह्मांड बारि किये न्यारे २६५ ॥ राग बिलावल ॥ जगाइ री भई बेर बडी । अलबेली खेली प्रिय के संग अलक लडै कल लाड लडी । तरनि किरनि रंध्रनि ह्वै आई लगीनि बाई जानि सुकरपरतब होंही ह्वै रही अडी । बिहारी दास रति को बरने कवि जो छबि मो मन माझ गडी ॥ २६६ ॥ राग बिलावल ॥ चर्चरी ॥ जिनि जगावै जुगल नवल निजु नेह सुख । जागे जामिनि सैंन मैंननि निर बन प्राण जीबनि मेरे मन भवन दबन दुख । अमित अमित बिहार सुरत सुखद सुमा रये सुकुमार तन मनहिं दियै लिये रहे रुख । श्रीबर बिहारनि दासि लोल लोचन लासि निरखि सुख रासि हंसि मिलत सुंदर सुमुख ॥ २६७ ॥ राग बिलावल ॥ जागो जने हरयौ मन माने । झगरत जुरत किसोर किसोरी बड़भोर में बत बतात उन माने । ओढे उलटि बसन संभ्रम निसि पलटि लेति पहिचाने । बिहारी दासि दंपति को सुख निरखत सखी बारति तन मन प्राने ॥ २६८ ॥ राग बिलावल ॥ कुंज में नर सयैंन प्रिया पिय बने हैं बिचित्र बर बागे । चंदन बंदन बिबिधि मत रंजन अंजन की छबि मानो चित्र सो किये सुतन अंग अनंगनि दागे । अपने अपने रस आनंद बिबस भये आलस बिनु अनुरागे । बिहारनि दासि गायौ भायौ जो इनिके मन पुनि हंसि हंसि हंसि उर लागे ॥ २६९ ॥ राग बिलावल ॥ यों हंसि हंसि कहत हैं बात सुनति न बतनेहुं नपत्यात । कोमल करनि सो मुख मूंदि राखत श्रवणनि तन जात । बचन रचन बनत नाहि न पुलकत सब गात । बिहारनि दासिके नैंननि में सुख सेननि लट पटात ॥ २७० ॥ राग बिलावल ॥ आजु की छबि अंग अंग रही फबि ऐसो मति कौनकी कोबरने कबि । उपमा आहिन काहि बताऊ गाऊं इन्हैं सुनि जाहि सबै दबि ॥ हंसत खेलत मिलत सकल निसागत खटकि चलत पगु धरत फबि । बिहारन दासि संगम सुख सूचति देखि री देखि आनंद उदै रबि ॥ २७१ ॥ राग बिलावल ॥ मानती मन हरन मनोहर । बचन रचन रुचि राचि रहे जुरि कुंज कुटी तन मगन प्रेम भर । अंग अंग आलिंगन चुंबन हंसत रसात सहज सुंदर बर । बिहारी दासि दुल रावति गावति जुगल किशोर सुजस सर्वो परि ॥ २७२ ॥ राग बिलावल ॥ तूं मन मोहनी री मोहन मोहे री अंग अंग । अगमनी अलकें झलकें बर उरपर छूटी लट मुख हंसत लसत दसनावलि सहज भृकुटी भंग । मृग मधुप लों श्याम काम सब तजे

बन बेली धाम सौरभ सुर शब्द सुनत फिरत संग संग । बिहारनि दासि स्वामिनी सुख रासि रहसि फिर चितयौ हितयौ मानि आनि उर अंग रंग अनंग ॥ २७३ ॥ राग बिलावल ॥ मुदित मोहन अंग सोहनको मन मोहनी तें मोह्यो री मोहन । जदपि रहत हंसत खेलत अंग संग निसि दिन छिनु तजि सकत गोहन । अद्भुत रीति जीति प्रिय पैमन बचक्रम कियें कहति तुम सो सखी कर पद पर अरोहन । बिहारी दासि की स्वामिनी सुनि रही मौन चितै मुसिकाति पत्याति नसोहन ॥ २७४ ॥ राग बिलावल ॥ मोहन लाल रसाल सों मोहि अन बोलेहु बोल्यो भावे । जब कबहुं होर हों मौन ह्वै हंसि मन मोद बढावे । तान अतीत अनागत अंग संग मिलि मधुरे सुरगावे । बिहारी दासि स्वामिनी के रस रसिक रसही में रस उपजावे ॥ २७५ ॥ राग बिलावल ॥ बिहारनि लाडिली हौ लालहि सकल सुखनिधि की दानि । चितवत चित पोषति तोषति तन मन मन सारस सानि । दरस परस रस हास परस्पर बिचित्र तिहारो बानि । धन्य जनम मानत अनुरागी जब डर लागत आनि । बिहरत बन रति मानि निरंतर निदरि लोककी कानि । बिहारनि दासि लडावति छिन छिन हिल गहिये की जानि ॥ २७६ ॥ राग बिलावल ॥ मेरी स्वामिनी प्रसंन बदन सावरो सुखरासि । इनहि लडाउं अनु दिन छिन छिनु लहों साबासि । फूली फूली टहल करो मनके मनति हुलासि । अन्यन श्री हरि दासि बिपुल बल बिहारनि दासि ॥ २७७ ॥ राग बिलावल ॥ सांवरो नवरंगु । तैसीये तन घन दामिनी दुति कुंवरि किशोरी गोरी को संगु ॥ यहि रसि रसिक उपासित स्वातिहि चातक लेंजल जाचत लगत नंगु । बिहारनि दासि अनन्य भजन बिनु साधन आन करत न कछू ढंगु ॥ २७८ ॥ राग बिलावल ॥ प्रिया श्याम संग जागी है । शोभित कनक कपोल ओप पर दसन छाप छबि लागी है । अधरनि रंग छूटी अलकावलि सुरत रंग अनुरागी है । बिट्ठल बिपुल कुंज की क्रीडा काम केलि रस पागी है ॥ २७९ ॥ राग बिलावल ॥ रसिक रसीली भांति छबीली नैन रंगीली तूं पिय पैते आई । अलक कंचुकी छूटी चारु चारि चूरी फूलटी आलस मदन लूटी लेतिजं भाई । डगमग चरण धरति मानो पिय अंको भरति चित नहि टरति वहि छवि में लुभाई । श्री बिट्ठल बेष उर बनी नख देख रजनी के ज्यौं शेष जानि मैं पाई ॥ २८० ॥ राग बिलावल ॥ श्याम चलहु लडेती प्रिया कुंजनि करहु केलि । श्याम तमाल लाल नवकिशोरी बाल तुम जू जन बल तव कनक की बेलि । बिबिधि कुसुम घन रचित श्री वृन्दावन बोलत सुहाये पिक मधुप रहे हैं झेलि । बिट्ठल बिपुल रस बिहारी तिहारे बस जमुना के तीर सुख बिलास खेलि ॥ २८१ ॥ राग बिलावल ॥ आवत लाडिली लाल फूले । कुंज केलि नव रंग बिहारी सुरत हिंडोरे झूले ॥ निशि जागे अलसात रग मगे पटपलटे गति भूले । बिट्ठल बिपुल पुलक खलितादिक दिन देखत द्रुममूले ॥ २८२ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु रसिक वृन्दावन को यश । कुंज केलि भामिनी मनोहर परबस भये नाहिन अपने बस । यह बन नित्य नवीन युगल बर द्रुम दल नित्य श्रवत सलिता लस ॥ बि

टुल विपुल विनोद विहारी को गुण कियो चाहति रसना रस ॥ २८३ ॥ राग बिला वल ॥ सुन्दर श्याम सुन्दर बहु लीला सुन्दर बोलत वचन रसाल । सुन्दर चारु कपो ल अति सुन्दर उर जबनी सुन्दर बन माल ॥ सुन्दर चरण सुन्दर है नख मणि सुन्दर कुण्डल हेम जराल । सुन्दर मोहन नयन चपल किये सुंदर ग्रीवा बाहु बिसाल ॥ सुन्दर मुरली मधुर बजावत सुन्दर राधे हैं गोपाल । सूरदास द्युति अति राजत ब्रज को आवत सुन्दरबाल ॥ २८४ ॥ राग बिलावल ॥ तुम जागो मेरे लाडिले गोकुल सुखदाई । कहति जननि आनंद सो उठिये कुंवर कन्हाई ॥ तुमको माखन दूध दही मिश्री हौं ल्याई । उठि के भोजन कीजिये पकवान मिठाई ॥ सखा द्वार परभात सों सब टेर लगाई । बनको चलिये सांवरे दई तरनि दिखाई ॥ सुनत बचन अति मोद सों जागे यदुराई । भोजन करि बनको चले सूरज बलिजाई ॥ २८५ ॥ राग बिला वल ॥ आजु प्रातही तुतरात बात कहत बल कन्हैया । जैसें शुक पिक कपि बोलत हैं अरस परस सुनि सुनि सुख पावत भावत नंद यशोदा मैआ ॥ बचन रचन कहत समुझि समुझि परत नाहि कछू बीच नीच दाऊ जब कहत मेरीगैया । रीझि रीझि हरषि हरषि पुलकि पुलकि उर लावत चूंमति मुख बार बार लेति पुनि बलैया ॥ बहु विधि पकवान पानि खीर नीर भोजन घृत माखन मिश्री खवाय और प्यावत धैया । बलि बलि ब्रज बनिता जहां दामोदर हित चितवत हरत चरत भूषन पट नटवर दोऊ भैया ॥ २८६ ॥ राग बिलावल ॥ माई कौन गोप के ए दोऊ नागर ढोटा । इनकी बात कहौं सखी तोसों गुणनि बडे देखत के छोटा ॥ अग्रज अनुज स हो दरजोरी गौर श्याम ग्रन्थित सिर चोटा । सन्तदास बलि बलि मूरति पर लखा ललित सबहिं बिधि मोटा ॥ २८७ ॥ राग बिलावल ॥ नयननि की चंचलता कहा कीने भीने रंग कौन के हो श्याम हमसों कत दुरावत । और के वदन देखनको नेम लियो कि धौं पलकनि मधिराखी प्यारी ताके भार भरे नए आवत ॥ मधुप गन्ध लुब्ध से जे समीप निशि बसे संग लागे आवत रति कीरति गावत । सूर दास मदन मोहन तन की प्रीति प्रकट भई मुख नहि बनत बनावत ॥ २८८ ॥ राग बिलावल भोर भये मुख देखि लजाने । रसकी केलि बाल सुख सोहत अरु नयनन अरसाने ॥ काजर रेख बनी अधरनि पर खंडित कपोल पीक लपटाने । मधुप मनो कंजनि पर बैठे उडि न सकत मकरंद लुभाने ॥ देखति हार अलंकृत बिन गुण आये जीति रण धीर सयाने । सूर दास पिय पांव धारिये जानति हौं पर हाथ बिकाने ॥ २८९ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ झीने पटको घूंघटता मधि ढरारे भारे लोइन नीके लागेरी जिय अंजन । कछुक सकुच गुरजनकी तातें ओट दिये अवलोकति पिय तन चंचल मानहु जाल परे अकुलात खंजन ॥ छबीली की छबीली अंखियांरी जिनके कटाच्च तरंगनि में हरि को मन लाग्यो करन मंजन । अति चतुराई सों चतुर बिहारी के चित कों लागैरी निरखि निरखि अनुरंजन ॥ २९० ॥ राग बिलावल ॥ तुव मुख और चंद्रमा बिरंचि तुला करि तौल्यो ओछो आकाश गयो झुकि धरनी रह्यो निकाई को भारो

भयौरी पला । याही तें शशि घटत बढत है देखि देखि तेरो बदन निर्मला ॥ तो सम नाहि न पूजिये सब मिलि कलंकी नाम धरयो निशि भ्रमत फिरत न रहे अचला । तान सेन प्रभु सरस बस करलियो रूप आगरी रूप कला ॥ २९१ ॥ राग बिलावल अहो टेढी गागरि नागरि नारि शीश धरें जैसें टेढी पाग कों राखें रहतु चिकनियां । दुरि दुरि मुरि मुरि बतिया करति अगिली पछिलीन सों दोऊ कर तारी मारति एकनि सों नयन सेन बनियां ॥ लाही को लहंगा पचरंग चूनरि कंठछरा और ताबीच मनियां । तान सेनप्रभु रीझि थकित भये तुहीं सबनिमे धनि धनिया ।२९२। ॥ राग बिलावल ॥ चूनरी री प्यारी पचरंग पहिरें सु पनियाँ गगरिया भरें आवति हैं सु दोऊ हाथ चेंथी धरे । गोरे भुजन में गाढे बरा पुनि डंडनि में श्याम चुरी हथेरी नहन महंदी सों गहिरोई रंगकरे ॥ स्वासनि बेसरि मोती हालत मुख प्रस्वेद नैना भौंह चढ़ाये । कानन बीरैं गरें मोतिन लर कुच उतंग नितंब भारी कटि छीनी चलत लफि लफि परत उरबेनी पाट भीजेरी बहुत फुलेल परे ॥ जे हरि जोति सूरज सों हैं उपरी पाय महाबर नखनि जोति अरु गुदन गुदाये तान तरंग को प्रभु बिनती करत हैं सो हंसि बोलति हरे हरे ॥ २९३ ॥ राग बिलावल ॥ नील पट पहिरे कंचन गात प्रात अलसात नवल राधा बरबाल लाल संग लागी पागी रसकेलि निकसि ठाढी भई सघन कुंज के द्वार । भुजनि जोरि ऐंडाति जम्हाति मंद मुसिकाति सुमिरति बात लजाति सखी लखि मुख शशि बिथुरे बार ॥ अरुण नैन आलस जुत बेन अधर अंजन लगी पीक छाप युग मृदुल कपोलनि नख छत उरज उतंग सुभट कंचुकी कवच कसे छूट टूटे मणि गण मुक्ता हार । सिथल बसन कटि सिथल रसन डगमगी चाल उर माल मरगजी चरण महावर कहुं कहुं छूट्यो यह छबि निरखि निरखि व्रज जन बलिहार ॥ २९४ ॥ राग बिलावल चिभंग अंग रंग भरे बिराजित हरि छबिसों व्रज बनितानि के कर जोरें । तेही सांचति गतें लेत रेखा प्रमान मोहति प्राण चरण धरत थोरें थोरें ॥ कबहुं रिझावत श्यामहि श्याम देखत नैन श्री भोंह मोरे । नटबर भेष धरो रामदास को प्रभु मोहन नायक जाको नित निर्तत शिव बिरंच सुर नर मुनि भाइ भोरें ॥ २९५ ॥ राग बिलावल ॥ व्रजतें निकसि हरि बनकों चलत केती शोभा राजत गायनु लेत संभारि । अपनी अपनी धेनु पाछें मिल बन मिस देखन चली जे चातुर ही व्रजनारि ॥ सबनि पैं ते लेत बरन बरननिटैना करत सौंपत सब ग्वाल वृंदहि आपुनहीं मुरारि । राम दास प्रभु वे चले बालक संग भेषुधरें जैसे फांदत दादुर बोलत चातक निर्तत बही अनुहारि ॥ २९६ ॥ राग बिलावल ॥ हम पर यहही गईबी बाजन । ले डारे यशोदा के आगे जे तुम फोरे भाजन ॥ दुरी नात सब प्रकट करिदेत नेकहु आई लाजन । रामदास प्रभुदुरे भवनमध्य आंगन लागी गाजन ॥ २९७ ॥ राग बिलावल ॥ मोहन मोहोरी लालन कहि कहि थोरी थोरी बतियां । मांगत दान दियो सरबसु रिस रोसुगयो जियतें मैंन जान्यों हेठगी कोंन भतियां ॥ अट पटाय मुरझाइ रही देखत किशोर मोको भूली रीसपै गतियां । रामदास प्रभु कौ अंग अंगनार तातें भुजनि चापि लै लगाइ छतियां ॥ २९८ ॥ राग बिलावल ॥ चितवत क्यों

न री तेरो चितवतु लागतु कहा । एकनि पें झगरि दानु मांगत हरि तूं इतनेऊं को अति कठिन कहा ॥ ऊरध ग्रीवं करि दृग मूंधे करि मुख पट ओत करि निरखि नयन भरि करति हहा । इनऊं को कितनीये की जे प्यारी धों धी कौ प्रभु हेरी चतुर चहा ॥ २९९ ॥ राग बिलावल ॥ नैन तेरे अति रस माते करुण करुण डारे लगत सुहाते । कबहुं लजात कबहुं अनखात कबहुं पुनि पिय सनमुख चितवत इतराते ॥ कबहुंक एकटक देखि रहत कबहुंक आपु नहीं मुरि मुसि काते । रसिक प्रीतम संग निस दिन बिलसत नेकु नहीं सकाते ॥ ३०० ॥ राग बिलावल ॥ खेलत मैं को काको गुसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा बर बसही कत करत रुसैया ॥ जाति पांति हमते बड नाहीं ना हम बसत तुम्हारी छैंया । अति अधिकार जनावत याते जाते अधिक तुम्हारे गैया ॥ रूठि करै तासों को खेले रहे बैठि जहं तहं सब गोंइयां । सूर श्याम प्रभु खेल्योई चाहत दाव दियो करि नन्दुहैंया ॥ ३०१ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत श्याम पौरिके बाहेर हजलरिका संग सोहत जोरी । तैसेई आपु तैसेई सब बालक अति अज्ञान सबकी मति भोरी ॥ गावत हांक देत किल कारत दुरि देखति नन्दरानी । अति पुलकित गद गद मुदुवानी मन मन हरषि सिहानी ॥ माटी लै हरि मेलि दई मुख तबही जसोदा जानी । साटी लिये दौरि भुज पकरयो श्याम लंगरयो ठांनी ॥ लरकनि को तुम सबदिन झुठवत मोसों कहा कहोंगो । मैं माटी नहिं खाई मैया मुखदेखो निबहौगो ॥ बदन उघारि दिखाई चिभुवन वन घन नदी सुमेर । नभ ससि रवि मुख भीतर है सब सागर धरनी फेर ॥ यह देखत जननी मन ब्याकुल बालक मुखका आहि । नयन उघारि बदन हरि मूंदो माता मन अब गाहि ॥ झूठे लोग लगावत मोको माटी मोहि न सोहावै । सूरदास सब कहति जसोदा ब्रज लोगन यहै भावै ॥ ३०२ ॥ राग बिलावल ॥ कहत नंद जसुमति सुनिबात । अब अपने मन सोच करत कित जाके चिभुवन पति सोतात ॥ गर्ग सुनाइ कही जो बानी सोई सोई प्रकट होतही जात । इनते और नहीं कोऊ समरथ येई हैं सबही के नाथ ॥ माया रूप मोहनी लाई डारे भूले सबै ए गाथ । सूरश्याम खेलतते आये मांखन मांगत दे मा हाथ ॥ ३०३ ॥ राग बिलावल ॥ तबहिं जसोदा मांखन ल्याई । मैं मथिके अबहीं धरि राख्यो तुमहिं काज मेरे कुवर कन्हाई ॥ मांगि लेहु येही बिधि मोसों सेा आवे तुम खाहु । बाहेर कबहुं कछु जिनि खैहो डीठि लगेगी काहु ॥ तनक तनक कछु खाहु लला मेरे ज्यों बढि आवे देह । सूरश्याम अब होहु सयाने वैरिन के मुखखेह ॥ ३०४ ॥ राग बिलावल ॥ प्रथम करी हरि मांखन चोरी । ग्वालनि मन इच्छा पूरन करि आपु भजे हरि हजकी खोरी ॥ मन मन हहे बिचार करत प्रभु हज घर घर सब गांउ । गोकुल जन्म लियो सुखकारन सबके मांखन खाउं ॥ बालरूप जसुमति मोहि जाने गोपिन मिलि सुख भोग । सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों ये मेरे हज लोग ॥ ३०५ ॥ राग बिलावल सखा सहित गये मांखन चोरी । देख्यो श्याम गावाक्ष पंथहै गोपी एक मथति दधिभोर हेरि मांथनो धरी मांटतें मांखन हो उतरात । आपन गई कमोरी मांगन हरि पाईयों घात ॥ पैठे सखनि सहित घरसने मांखन दधि सब खाये । छकी छाडि मटुकिया दधिकी

हंसि सब बाहिर आये ॥ आयगई करलिये कमोरी घरते निकसे ग्वाल । मांखन कर दधि मुख लपटानों देखि रहीनन्दलाल ॥ कहं आये ब्रजबालक संग मांखन मुख लपटानों खेलतते उठि भज्यो सखा यह येहि घर आय छपानों ॥ भुज गहि लियो कान्ह एक बालक निकरे ब्रजकी खोरी । सूरदास ठगि रही ग्वालिनी मन हरि लियो अजोरी ॥ ३०६ ॥ राग बिलावल ॥ चलत भई ग्वालिनि बन हेरो । मांखन छांडि गई मथि वैसे हित ते कियो अबेरो ॥ देखै जाइ मटुकिया रीती भैराख्यो कछु हेरि । चलत भई ग्वालिनि मन अपने ढूढति घरफिर फेरि ॥ देखति पुनि पुनि घरके बासन मन हरि लियो गोपाल । सरदास रस भरी ग्वालिनी जान्यों हरिके ख्याल ॥ ३०७ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज घर घर प्रकटी यह बात । दधि मांखन चोरी करि लैहरि ग्वाल सखा संग खात ॥ ब्रजबनिता यह सुनि मन हरषित सदन हमारे आवे । मांखन खात अचानक पाए भुज भरि उरहि छुवावे ॥ मनही मन अभिलाष करत सब हृदय करत यह ध्यांन । सूरदास प्रभु को घर तेज देहौं मांखन खांन ॥ ३०८ ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालिनि घर गये जांनी सांझकी अंधेरी । मंदिर मे गये समाइ श्याम तब लखिन जाइ देह मेह रूप कहौ को कहे निवेरी ॥ दीपक ग्रह दान करयो भुजा चार प्रकट धरयो देखत भई चकृत ग्वालि इत उत को हेरी । श्याम हृदय अति बिसाल मांखन दधि बिंद जाल मन मोह्यो नन्द लाल बाल कही बेरी ॥ जुबती अति भई बिहाल भुज भरिदै अंकमाल सूरदास प्रभु कृपाल डार्यो तन फेरी । करसों कर लै लगाइ महरि पैं गई लिवाइ आनन्द उरमें न समाइ बात है अनेरी ॥ ३०९ ॥ राग बिलावल ॥ जसुमति धों देख आंनि आगे ह्वै लेपिछानि बहियां गहि ल्याई कुंवर आनको को तेरो । अबलों में करी कांनि सही दूध दही हांनि अजहूं जिय जांनि मांनि कान्ह है अनेरो ॥ दीपक हो धर्यो बारि देखत मुख भई चारि हारी हों धरति करति दिन दिन को झेरो । देखियत नहि भवन मांझ तैसोई तन तैसी सांझ छलसों काछ करत फिरत महरि को जठेरो ॥ गोरस तन छीट रही शोभा नहि जात कही मानों जल जमुन निबिड उडगन पथफेरो । उरहन नहिदेछ कहि कहे तूं इतनों रिसाइ नाहों इज बासु सासु ऐसोविधि हेरो ॥ जसोदा निरखे कुमार गोपी बरनें निहार भूली स्वसरूप मानों आंनकोऊ हेरो । मनमें बिहसत गोपाल भक्त पाल दुष्ट साल जानेको सूरदास चरित कान्ह केरो ॥ ३१० ॥ राग बिलावल ॥ महरि तुम मांनहु मेरी बात । ढूंढि ढंढोरि गोरस सब घरको हरयो तुम्हारे तात ॥ कैसे कहति लयो के ते ग्वाल कांध दै खात । घर नहि पियत दूध धौरी को कैसे तेरे खात ॥ असंभाव बोलन है आई ढीठ ग्वालिनी प्रात । ऐसो नहीं अचगरो मोरो कहा बनावति बात ॥ कहा मैं कहौं कहति सकुचति हों कहा देखाऊ गात । दैगुण बडे सूरके प्रभुके ह्यां खरिकाहू जात ॥ ३११ ॥ राग बिलावल ॥ गए श्याम तेहि ग्वालिनि के घर । देखी जाय मथति दधि ठाढी आपुलगे खेलन द्वारेपर ॥ फिरि चितई हरि दृष्टि परिगये बोलि लये हरि बे सूनेघर । लिये लगाय कठिन कुचके बिच गाढे चापि रही आपन कर ॥ उमगि अंग अंगिया उर दरकी सुधि बिसरी तनकी तेहि औसर । तब भये श्याम बरष

द्वादश के रीझि लई जुवती वा छबि पर ॥ मन हरि लियो तनक से ह्वै गये देखि रही सिसु रूप मनोहर । लैमांखन मुखधरति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागर वर ॥ ३१२ ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालिनि उरहन के मिस आई । नंद नंदन तन मन हरि लीन्हो बिनुदेखे छिनु रह्यौ न जाई ॥ सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहों केहि भांति बनाई । चोली फारि हार गहि तोरयो इनबातनि कहा होत बडाई ॥ माखन खाइ खवावत ग्वालनि जो उबरयो सो दियो लुटाई । सुनहु सूर चोरो सहि लीन्ही अब कैसे सहिजात ढिठाई ॥ ३१३ ॥ राग बिलावल ॥ कबहिं करन गयो मांखन चोरी । जानति हौं जुकटाक्ष तिहारी कमल नयन मेरो इतनक सोरी ॥ दै दै दगा बुलाय भवन में भुज भरि भेटति उरज कठोरी । उर नख चिन्ह देखावति डोलति श्याम चतुर भये तुम अति भोरी ॥ ओरहन के मिस आवति हौ नित चितै रहे जनु चन्द चकोरी । सूर सनेह ग्वालि मन अटक्यो अंतर प्रीति जात नहिं तोरी ॥ ३१४ ॥ राग बिलावल ॥ कहा कहों हरिके गुण तोसों । सुनहु महरि अबही मेरे घर जोरंग कीन्हे मोसों ॥ मैदधि मथति आपने मंदिर गये तहां येहि भांति । मोसों कह्यो बात सुनु मेरी मैं सुनिकै मुसकाति ॥ बांह पकरि चोली गहि फारी भरिलीन्ही अंकवारि । कहत न बने सकुच की बातें देखौ हृदय उघारि ॥ मांखन खाय निदरनीकी विधि यह तेरे सुखकी घात । सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचति कह्यो न जात ॥ ३१५ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसे हाल मेरे घरमें कीन्हे हैं। लै आई हों तुमहि पै पकरि के । फोरे सब बासन घरके दधि मांखन खायो जो उबरयो सो ढारयो रिस करिके ॥ लरिका छिरकि मही सों देखो उपज्यौ पूत सपूत महरिके । बड़ो माट घर धरो जुगनि को टूक टूक कियो सखनि पकरि के ॥ पारिस पाट चलत तब पाए हों ल्याई तुमहीपें पकरिके । सूरदास प्रभुको ऐसे राख्यो जसोदा जैसे रखिये गज मत्त को जकरिके ॥ ३१६ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम सब भाजन फोरि पराने । हांक देत पैठत हैं पैला नेक न मनहि डराने ॥ सीके छोरि मारि लरिकनि को मांखन दधि सबखाई ॥ भवन मच्यों दधि कांदो लरि करि रोवत पाये जाई । सुनि जसु मति सबही के लरिका तेरो सों कहुं नांहि । हाटनि बाटनि गलिन कहूं कोउ चखि नहिं सकत दुराहि ॥ ऋतु अनऋतु को खेल कन्हैया सबदिन खेलत फागु । रोकि रहत गहि गली सांकरी टेढो बांधत पागु ॥ बारेते सुत ये ढंग लाये मनहीं मनहि सिहाति । सुनहु सूर ग्वालिनि की बातें सकुचि महरि पछिताति ॥३१७॥ राग बिलावल ॥ दे मैया भवरा चक डोरी । जाय खेहु आरे पैराख्यो कान्ह मोल से राखी कोरी ॥ लैआये हंसि श्याम तुरतही देखि रहे रंग रंग बहुठोरी । मैया बिना और को ल्यावै बार बार हरि करत निहोरी ॥ बोलि लये सब सखा संगके खेलत कान्ह नंदकी पोरी । तैसेई हरि तैसेइ ब्रजबालक कर भवरा चकरिन की जोरी ॥ देखत जननी जसोदा यह सुख बिहसति बार बार मुख मोरी । सूरदास प्रभु हसि हसि खेलत ब्रज बनिता डारति तृनतोरी ॥ ३१८ ॥ राग बिलावल ॥ कान्ह उठे अति प्रातही तबबेलीलागी । प्रिया प्रेम के रस भरे रति अंतर खागी ॥ श्याम उठत अँबिलोकि के जननी तब जागी । सुन्दरबदन बिलोकि के

अंग अंग अनुरागी ॥ माता बूझति सुवनको बलि गई मेरे बारे । कहा आजु अचरजु कियो तुम उठे सवारे ॥ झारि जलद तव न दियो छबि परत निवारयो । उत्तम जल लै प्रेम सों सुत बदन पखारयौ ॥ करी मुखारी अतुरई नागरि रस छाके । सूरश्याम ऐसी दसा त्रिभुवन बस जाके ॥ ३१९ ॥ राग बिलावल ॥ उत वृषभांन सुता उठी यह भाव बिचारे । रैनि बिहानी कठिन सों मन मथ बल भारे ॥ ग्रीव मोति सरितोरि के अंचरा सों बाध्यो । इहै बहानों करि लियो हरि मनु अनुराध्यो ॥ जननी उठि अकु लाइके क्यों राधा जागी । कहां चली उठि भोरही सो बैन सभागी ॥ अब जननी सोउं नही रबि किरनि प्रकाशी । तुम्ह उठति काहे नहि जागे ब्रजबासी ॥ आप उठी आंगन गई फिरि घरही आई । कबधों मिलहे श्यामको पलरह्यो न जाई ॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनही तलबेली लागी । सूरश्याम के रस भरी राधा अनुरागी ॥ ३२० ॥ राग बिलावल ॥ सुनिरी माता कालिही मोती सरी गंवाई । सखिनि संग जमुना गई धों उनहि चुराई ॥ कीधों जलही में गई यह सुधि नहि मेरे । तबते मैं पछितातिहौं कहति नहीं डरतेरे ॥ पलक नहीं निसि कहुं लगी मोहि सम्हरी तेरी । यहि डरते मैं आजुहों अति उठी सबेरी ॥ महरि सुनत चकृत भई मुखआव न आवै । सूर राधिका गुण भरी कोऊ पार न पावै ॥ ३२१ ॥ राग बिलावल ॥ धन्य कान्ह धनि राधागोरी । धनि वह भाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल नवला नवजोरी ॥ धनि यह मिलनि धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचि जोरी ॥ धनि यह अरस परस्पर छवि लूटनि महा चतुर मुख भोरे भोरी । प्यारी अंग अंग अल बेली कति पिय अवलोकत लगत ठगोरी ॥ सूरदास प्रभु रीझि थकित भये नागरि पर डारत तृन तोरी ॥ ३२२ ॥ राग सूहो ॥ श्याम निरखि प्यारी अंग अंग । सकुचि रहति मुखतन नहि चितवति जेह वसत रहत अनंत अनंग । चपल नयन दीरघ अनि आरे हाव भाव नाना गति भंग वारो मीन कोटि अंबुज गन खंजन वारत कोटि कुरंग । लोचन नहि ठहरात श्यामके कबहुं अंग नयना मुख रंग । सूरदार प्रभुपिय प्यारी वस ज्यों वस डोर फिरत संग चंग ॥ ३२३ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहि महरि तेरो लाडिलो अति करत अचगरी । जमुना भरन जहं हमगई तहं रोकत डगरी । सिरते नीर ढराइदै फोरी सब गगरी ॥ गोडरी दई फरकारि कै हरि करत हेलंगरी । नित प्रति ऐसेहि ढंगकरै हमसों कहै धगरी ॥ अब बस बास नहीं बने यह तुम ब्रज नगरी ॥ आपु गयो चढ़ि कदम पर चितवत रहीं सगरी । सूरश्याम ऐसें सदा हमसों करें झगरी ॥ ३२४ ॥ राग बिलावल ॥ जो सुख श्याम प्रिया संग कीन्हो । सो युवती अपनोई करि लीन्हो ॥ दुविधा हृदय कछु नहि राख्यो । अति आनन्द बचन मुख भाख्यो ॥ यहै कहति तबकी अब नीके । सकुचि हंसी नागरि संग पीके ॥ नयन कोर प्रिय हृदय निहारयो । उनि पहिलेहि पीताम्बर धारयो ॥ सूर दास यह लीला गावै । हरि पद सरन अभय पद पावै ॥ ३२५ ॥ राग बिलावल ॥ नाना रंग उपजावत श्याम । कोउ रीझति कोउ खीजति बाम । काहु कों निधि बसत बनाई । काहू मुख कियो आवत जाई ॥ बहुनायक ह्वै बिलसत आप । जाकों शिव पावे नहि जाप ॥ ताकों ब्रजनारी पति जाने । कोउ आ

दर कोऊ अपमाने ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुं रैनि सब संग बिहात । सुनहु सूर ऐसे नंद तात ॥ ३२९ ॥ राग बिलावल ॥ अब युवतिन सों प्रकटे श्याम । अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिन के धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति बिचार । आजु गये औरहिं काहू के रिस पावति कहि बड़े लवार ॥ यह लीला हरि के मन भावति खण्डित बचन कहत सुख होत । सांझ बोल दै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ ३३० ॥ राग बिलावल ललिता को सुख दै गये श्याम । आजु बसेंगे रैनि तुम्हारे प्राण पियारी हो तम बाम ॥ यह कहिकें अनतहि पगु धारे बहु नायक के भेद अपार । सांझ समय आवन कहि आये सोंह बहुत करि नन्दकुमार ॥ वह बैठी मारग हरि जोवति एक एक पल बीतत एक जाम सूर श्याम आवनकी आसा सेज संवारति ब्याकुल काम ॥ ३३८ ॥ राग बिलावल ॥ ज्वाब नही पिय आवही क्यों कहा ठगाने । मैं तबही की बकति हौं कछु आजु भुलाने ॥ हां नाही नहि कहत हौ मेरी सों काहे । आये क्यों चक्रत भये मोकों रिस दाहे ॥ कहां रहे कासों बनी तहंई पगु धारौ । सूर श्याम गुण रावरे हृदय बिसारौ ॥ ३३९ ॥ राग बिलावल ॥ काहे कों कहि गये आजु हैं काहे झूठो सोंहें खाये । ऐसे मैं जाने नहि तुम कों जे गुन करि तुम प्रकट दिखाये ॥ भली करी दरशन यह दीन्हों जनम जनम के ताप नसाये । तब चितये हरि नेक चिया तन तुमकों हृदय मांझ बसाये ॥ सत्य कहत तोसों हों भूल्यो इतनेहि सब अपराध क्षमाये । सूर दास सुन्दरी सयानी हंसि हंसि लीन्हे हरि अंक मिलाये ॥ ३३० ॥ राग बिलावल ॥ नयन कोर हरि हेरि के प्यारी बस कीन्ही । भाव करो अंखियांन को ललिता लखि लीन्ही ॥ तुरत गयो रिस दूरि कै ह्वै हंसि कंठ लगायो । भली करी मन भावते ऐसेहु मैं पायो ॥ भवन गई गहि बांह लै निशि जागे जाने । अंग सिथिल निशि श्रम भयो सही मन माने ॥ अंग सुगन्ध मरदन कियो तुरतहि नहवाये । अपने कर अंग पोंछिकें मन साध पुराये ॥ चीर आभूषन अंग दै बैठे गिरिधारी । रुचि भोजन प्रिय कों दियो सूरज बलिहारी ॥ ३३१ ॥ राग बिलावल ॥ वह छबि अंग निहारत श्याम । कबहुंक चुंबन देत उरज धरि अति सकुचति तनु बाम ॥ सनमुख नयनन जोरत प्यारी नि लज भये पिय ऐसे । हाहा करति चरन कर टेकति कहा करत ढंगनैसे ॥ बहुरि धाम रस भरे परस्पर रति बिपरीति बड़ाई । सूर श्याम रति पति विह्वल करि नारि रही मुरझाई ॥ ३३२ ॥ राग बिलावल ॥ पिय प्यारी तनु श्रमति भई । सकुचि उठो नागरि पटलीन्हों श्याम लजाय गये ॥ साव धान रति अन्तर आरे पिय प्यारी तन हेरत । नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भृकुटी बंकत फेरत ॥ ऐसे गुण किनि तुमहि सिखाये तोर निकट कसि दीन्ही । सूर कहति पिय सों चिय बानी आजु तुमहि मैं चीन्ही ॥ ३३३ ॥ राग बिलावल ॥ सारंग सुत प्रति तनया के तट ठाढे नंद कुमार । बहुत तपत जो राशि में सविता ताकी सुता संग करत बिहार ॥ गुडा केश जननी पति वाहन ता सुतके अंग सजे शृंगार । चन्द्र चौहत्तर आठ हंस दै व्याल कमल बत्तीस विचार ॥ एक अचम्भो और बताऊं पांच चन्द दबे कमल मझार । सूर दास यह युगल रूप कोरे मन राखि सदा उर धार ॥ ३३४

॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी पांच कमल है शम्भु । एक कमल बज्र उर राजत निरखत नयन अचम्भु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हों कमल सु कौमल अंग । युगल कमल सुत कमल बिचारत प्रीतिन कबहूं भंग ॥ षट युग कमल मुख सनमुख चितवत बज्र बिधि रंग तरंग । तिनमें तीनि सोम बंशी बस तीनि सु कश्यप अंग ॥ जेई कपिल सनकादिक दुर्ल्लभ जिनही निकसी गंग । तेई कमल सूर नित चिंतत निपट निरन्तर संग ॥ ३३५ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखि चार चन्द एकठौर । निरखति बैठि नित बनि पिय संग सूर सुता की ओर ॥ है शशि श्याम नवल घन सुन्दर है कीन्हे बिधि गोर । तिनके मध्य चार शुकराजत है फल आठ चकोर ॥ शशि शशि संग प्रबाल क्रुंद अलि अरुझि रह्यो मनमोर सूर दास प्रभु अति रति नागर बलि बलि जुगल किशोर ॥ ३३६ ॥ राग बिलावल ॥ देखि री प्रकट द्वादश मीन । षट इंदु द्वादश तरनि शोभित बिमल उडगन तीन ॥ षट अष्ट अंबुज कीर षट मुख कोकिला सुर एक । दश दोय बिद्रुम दामिनी षट तीन ब्याल बिशेष ॥ चिबली षट थी फल बिराजत परस्परवर नारि । ब्रज कुंवरि गिरिधर कुंवर पर सूर जन बलिहारि ॥ ३३७ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखि तीस भान इकठौर । ता ऊपर चालीस बिराजत रुचि न रही कछु और ॥ धर तें गगन गगन तें धरती ता बिच रहे बिस्तार । गुण निर्गुण सागर की शोभा बिनु रबि भयो भिनसार ॥ कोटिक कोटित रंगें उपजत जोग जुगति चितलाउ । सूर दास प्रभु अकथ कथा कौ प्रगिट भेद बताउ ॥ ३३८ ॥ राग बिलावल ॥ राधे हरि रिपु क्यों न छपावति । मेरु सुता पति ताके पति सुत ताकों क्यों न मनावति ॥ हरि वाहन ता वाहन उपमा सोतै धरै दृढ़ावति । नव अरु सात बीस तोहि सोहत काहे गहरु लगावति ॥ सारंग बचन कह्यो करि हरि सों सारंग बचन न भावति । सूर दास प्रभु दरश बिना तुव लोचन नीर बहावति ॥ ३३९ ॥ राग बिलावल ॥ अहो दधि तन या सुत रिपु गति गमनी सुनि वृषभान दुलारी । दादुर रिपु रिपु पतिहि पठाई सो चित वेष बिचारी ॥ अलि वाहन रिपु वाहन रिपु की तपति भई अति भारी । शोचि सन्हारि प्रभू खेदित हैं हौं बलिजांउ तिहारी ॥ मारुत सुत पति रिपु पति पत्नी तासुत नारि बिसारी । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन को ज्यों हठ होति हमारी ॥३४०॥ राग बिलावल ॥ यहि तेरे वृन्दाबन बाग । सुनि राधिका कदम बिटप की साखा एक अमी फल लाग । श्याम अरुण कछु अधिक पीत छबि बरनि जाइ नहि अंग बिभाग । अति सुपक्क मुरली के परसत चुइ चुइ परत उमगि अनुराग । ब्रज बनिता बर बारि कनक मयरी के रहत सुधा सुर नाग । तुव प्रताप छुइ सकत न सुंदरि सुक मुनि मर्कट कोकिल काग । मैं मालिनि जतननि जल जुगयो सींचत सुहथ परे कर दाग । सूर सुश्रम उठि भेंटि परस्पर पिउ पियूष पाये बड भाग ॥ ३४१ ॥ राग बिलावल ॥ जल सुत प्रीतम सुतरिपु बंधव आयुध आनन बिलख भयोरी । मेरु सुता पति बसत जु माथै कोटि प्रकास रिसाइ गयोरी । मारुत सुत पतिअरि पुर बासीपति वाहन भोजन न सुहाई । हर सुत वाह न असन सनेही मानहु अनख देह दौलाई । उदधि सुता पतिताकर वाहन ता वाहन को मैं समझाव । सूर श्याम मिलि धर्म सुबन रिपु ता अव

तारहि सलिल बहावे ॥ ३४२ ॥ राग बिलावल ॥ हरि सुत पावक प्रकट भयो । मारुत सुत बंधव पितु प्रोहित ताप्रति पालहि छांडि गयो । प्रीतम पति ताको पुनि बाहनता बाहन धन सुत उनयो । मीन सुता सुत तात कहत हैं तापर कासत सकल छयो । ससि संग सरोज कलीकौ तातें मेरे मन माझ ठयो । शैल सुताको रूपन आवत ताहिन कौ त्रिय नेमु लयो । सारंग सुत वाके सुतको हितु ता सुत सेा सुख नाथ हयो । सूर दास रबि रथ रबिके बस अजहुं न मोहन दरसु दयो ॥ ३४३ ॥ राग बिलावल ॥ मिल बहु पथिक मिचहि आनि । जलज सुत के सुत की रुचितें भई रस की हानि । उदधि सुता सुत अबलि उरपर इंद्र आयुध जानि । गिरि सुता पति तिलक कर कहु हतत सायक तानि । पिनाकी सुत तासु बाहन भछको भछ बखानि । साखा मृग रिपु मलय जहुतत हुतासन जानि । धर्म सुतअरि के सुभाइ हित जौ सिर धरि पानि । सूर दास बिचिच बिरहिनि चूक मनमन मानि ॥ ३४४ ॥ राग बिलावल ॥ कहियो अति अबला दुख पावै । हिरन पटन पति प्रेत ज्योंहै बारबार समुझावै । सारंग रिपु ता पति रिपु वा रिपु ता रिपु तनहि निआवै । हरि बाहन बाहन पति धाइक ता सुत आनि बचावै । सुर रिपु गुर बाहन ता रिपु ता चढि मेघ दिखावै । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन को बिरहिनि तपति बुझावै ॥ ३४५ ॥ राग बिलावल ॥ कहालों मन राखिय बिरमाइ । इकटक शिव धर नेच न लागत श्याम सुत धरनि आइ । हरि बाहन इब तासु सहोदर रति पति उदित मुरछि महि जाइ । गिरिजा पति रिपु नख सिख ब्यापत तासु सुधा पिय कथा सुनाइ । रे बिरहिनि बिरहा आप बस कीनेा लैब कमल जिनु पाइनु खाइ । बेगे मिलेा सूरके स्वामी उदधि तनया पति मिलि हैं आइ ॥ ३४६ ॥ राग बिलावल ॥ गोरिपु तारिपु ता सुत आयुध प्रीतम तहां निहारे । सो बिरंचि संभव जातनते तहं रहे प्राण हमारे । मेा बरजतही गवन कियो हठि स्वाद लुब्ध रस आख । कुंती नंद तात मुख जोवति कल मलाइ अति प्याख । भोर भए पशु बंधन छूटे ज्यों बिरहिनि रति माने । यहि बिधि मिलहि सूरको स्वामी चतुर होइ सो जाने ॥ ३४७ ॥ राग बिलावल ॥ सोचति राधा लिखति नखनिमहि बचन कहत कंठ जल तास । छिति पर कमल कमल पर कदली कदली पंकज कियो प्रकास । तापर अलि सारंग सारंग पति सारंग रिपु कियो लेकुल बास । तहं अरि पंथ पिता जग उदित बारिज बिंबरंग भव आस । सारंग मुख ते परत अंबु ढरि मानेा शिब पूजति तपत बिनास । सूर दास प्रभु बिनु हरि हर रिपु दाहत अंग दिखावत आस ॥ ३४८ ॥ राग बिलावल ॥ हरि मैं हरि नख कहि जु गये । हरि दरसत मुदित उदित हरि हरि ब्रज हरि जलए । हरि रिपुता रिपुता रिपु को सुत हरि हरि बिन अधिक बए । हरि तनया सेाधित जल दृह महं हरि अभि मान गंवाए । अब हरि बदन क्रिपा कुबिजा हरि सूर दास मन भाए ॥ ३४९ ॥ राग बिलावल ॥ सखी री हरि बिनु दुख है भारी । सिंधक सुतहै भूषन निकट जैसे तैसी गति भई हमारी । सिखर बधू अरि काह निबारति पुहप धनुष के बिसेष । चतु अवा

उर हार चासते अछिन दुतिया बपुरेख । घट असु असन सम्मैं सुख आनन अमी गलित जैसे सेष। जल धर व्योम अवकत मुंचत नैन हेाड बद लेख । द्विजपति प्रभु मोहि आनि मिलावहु हरत आरति जानि । जैसे ह्यरिक बंध प्रकट भयो हरि आनंद रति मानि । षट आनन बाहन कानन में घन रजनी तहं बाढी । सूर दास मिलि रसिक शिरोमणि सुनि चाचिक पिक काढी ॥ ३५० ॥ राग विलावल ॥ श्री नव नागरि प्यारी । तूं श्री वृन्दा बनकी रानी । बिहारिनि लाडिली प्यारी । तेरी कीरति जगत बखानी ॥ छंद ॥ जगत में जगि मगि रह्यों जस बिन कृपा कैसे बूझिये। अभि मान अंध अनेक कर्मों ताहिते नहि सूझिये । करो कृपा परम उदार मोहि बारंबार सुनाइये । बलि जाउं श्री वृष भांन नंदनि सुजस तुम्हरो गाइये । श्री नव नागरी प्यारी । तेरो मोतिन मांग संवारी । श्री बिहारिन लाडिली । तैसीये पहिरन झूमक सारी ॥ छंद ॥ सारी सो भीजि फुलेल सोंधे प्रकट बेनी देखिये । धसि सीस सुमेरते मानों भंवर पांति बिसेखिये । खचित कटि पर लाल लहंगा नील कंचुकि कस तनी । प्रथम जोबन जोति तनकी जात नहि कबि पै भनी । श्री नव नागरि प्यारी । तूं चंद वदनी है मृगनैंनी । बिहारि न लाडिली प्यारी । तैसिये चंपक तन शुक पिक बेनी ॥ छंद ॥ बांनी सोपिक शुक नासिका प्यारी अधर बिंब बिलासिनी । कनक कुंडल अलक झलके कपोल में मृदु हासिनी । खचित मुख भर पान बीरी नासिका मुक्ता ढरे । चिबुक सांवल बिंदुकी छबि कोन चित्र सरबर करे । श्री नव नागरी प्यारी । तेरी बिंदी जग मग ताई । बिहारि न लाडिली प्यारी । यह छबि मोपे बरनि न जाई ॥ छंद ॥ बरनी न जाय यह छबि मोपै निरखि श्याम सरावही । दसन दामिनि अधर राते लाख अति सुख पावहीं । गौर भाल बिसाल लोचन बरूनी अति छबि राजहीं । मोह काम कमान मानो बान मन मथ साजहीं । श्री नव नागरी प्यारी । तेरे छोटी छोटी लरगज मोती । बिहारि न लाडिली प्यारी । तैसिये बीच जंगाली पोती ॥ छंद ॥ पोत पुंज जराय चौकी रही उर पर जग मगे । द्वै अंस पर मखतूल फोंदा दृष्टि जिनि औरकी लगे । द्वै कर कंकन जटित दोउ चारु चुरी बिरा जहीं । रतन जटित अमोल मुंदरी अंगुरियन छबी छाजही । श्री नव नागरी प्यारी । तेरे पाय नूपुर झनकार ॥ बिहारिन लाडिली प्यारी । तैसिये मधुरी चरण बिहार ॥ छंद ॥ मधुरी चरण बिहार यह गति राज हंसहि अरपिये । जघन सघन सरोज भारी देखि सिंहकटि उरपिये ॥ नितंबिनी किंकिनी प्यारी निकट ही नीवी बनी । झबा झल के देखि दोऊ रीझि रहे श्यामल धनी ॥ श्री नव नागरी प्यारी । तू पिय तन देखि मुरि मुसि कानी । बिहारिन लाडिली प्यारी ॥ उन बंसीहू गिर तन जानी ॥ छंद ॥ न जानी बंशी गिरत करतें पीत पट सखि भौं परयो । रहे जैसें चित्र कैसे पग न पुहमीतें टरयो ॥ झुकि जात कछु अनगात की सुधि अंग अंग सीतल भये । नृपति राज कुंमार ही सखि भुजा भरि भामिनि गहे ॥ श्री नव नागरी प्यारी । तेरे सु बस बसे जु कन्हाई । बिहारिन लाड़िलीलालन ॥ अंगो अंग रहे अरुझाई ॥ छंद ॥ अंग

अंग लाल लुभाय राखे रसिक सिर मुकुटमनी । गुण रूप शील सुहाग सुंदरि और सखि तृणवत गनी ॥ ब्रज राज नवल किशोर के कोऊ और चित नहि आवहीं । बलि जाउं श्री वृषभान नंदनि तब हेत बेणु बजावहीं ॥ श्री नव नागरी प्यारी । तोको श्याम मनोहर बोली ॥ बिहारिन लाडिली प्यारी । तू उठि चलु नवल किशोरी ॥ छंद ॥ उठि चलु नवल किशोरी राधे नवल लाल बुलावहीं । सुंदर श्याम सुजानही सखि बार बार कहावहीं ॥ छांडि मान सम्हारि प्यारी बारबार मनावहीं । बलि जाउं श्री वृषभान नंदनि तो हेत मोहि पठावहीं ॥ श्री नव नागरि प्यारी । यश तेरोही पिय मन भावे ॥ बिहारिन लाडिली प्यारी । तो यश आपुहिं श्री मुख गावे ॥ छन्द ॥ गाय तो जस आपु श्री मुख तुही तन मन रमि रही । धन्य तू धन प्राण जीवन सपत करि मोसों कही ॥ अब करो बिबिधि बिहार भांमिनि इतो गहरु न कीजिये । बलि विष्णुदास बिचिच जोरी लोचननि सुख दीजिये ॥ ३५१ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज की रीति अनोखी री माई । जो कोऊ नंद भवन मैं आवे ताको मन हरि लेत कन्हाई ॥ कंठ बघनह मुख माखन सोहे तनकी कहा कहों जु निकाई । घुटरुन चलत छांह पकरत किलकत हंसत खेलत अंगनाई ॥ मात यशोदा लेति बलैया मनमें मोद बढ्यो न समाई । प्रभु कल्यान गिरिधर की यह छवि पलक की ओट सह्यो नहि जाई ॥ ३५२ ॥ राग बिलावल ॥ हरि मूरत बिनु देखे कल न परे । जादिन ते मेरी दृष्टि परे मेरे नयनन तें उरतें न टरे ॥ श्याम सुंदर मन मोहन ललना प्राण जीवन धन क्यों बिसरे । रसिक गोपाल सनेह न छूटे देह सुरति सखि कौन करे ॥ ३५३ ॥ राग बिलावल ॥ भोजन भयो भांवते मोहन । तातोई जेय जाहु गे गोहन ॥ खीर खांड खीचरी संवारी । मधुर महेरी गोपनि प्यारी ॥ राय भोग लियो भात पसाय । मूंग ढरहरी हींगु लगाय ॥ सद माखन तुलसी दे छायो । घृत सुबास कचोरनि नायो ॥ पापर बरी अचार परम शुचि । अद्रक अरु निबुअनि ह्वै है रुचि ॥ सूरन करि तरि सरस तोरई । सेंम सागरी झमकि झोरई ॥ भरता भटा खटाई दीनी । भाजी भली भांति दस कीनी ॥ सागु चना मरुसा चौराई । सोवा अरु सरसों सरसाई ॥ बथुवा भली भांति रचि रांध्यौ । हींग लगाय लाय दधि सांध्यौ ॥ पोई पर वर साग फरी चुनि । टेंटी डेंडस छौंकि लये पुनि । कंदूरी और ककौरा कौरे । कचरी चारि चचेंडा सौरे ॥ बने बनाय करेला कीन्हे । लौंन लगाय तुरत तरि लीन्हे ॥ फूले फूल सहिजना छौंकि । मन रुचि होय नाज के औकि ॥ फूल करील कली पाकरि चम । फरी अगस्ति करी अमृत सम ॥ अरु यहि अंबिली दई खटाई । जेंवत कटु रस जात लटाई ॥ पेठा बहुत प्रकारनि कीन्हें । तिन तौ सबै स्वाद हरि लीन्हें ॥ खीरा राम तुरैया तामें । अरु बिन रुचि अंकुर जिय जामें ॥ सुंदर रूप रतालू राते । तरि है लीन्हों अवही ताते ॥ ककरी कचरा अरु कचनारयो । सरस निमोननि स्वाद संवारयो ॥ कयुक भांति केरा करि लीनो । दै करोव हरदी रंग भीनों ॥ बरी बरिस अरु बरा बहुत विधि । खारे खाटे मीठे पय निधि ॥ पानी नारायती पकौरी । डभकौरी मुगछी सुठि सौरी ॥ अमृतइ डरह रहै रसागर बेसन सालन अधिकौ नागर ॥ खाटी कढी बिचिच बनाई ।

बहुत बार जेंवत रुचि आई ॥ रोटी रुचिर कनिक बेसन करि । अजवाइन सेंधा मिलयो धरि ॥ अवहिं अंगार करि तुरत बनाई । जेभजि भजि ग्वालनि संग खाई ॥ मांडो मांडि दुनैरे चुपरो । बहु घृत पाइ आपुही उपरो ॥ पूरिसपूर कचौरी कौरी । सदलस उज्वल सुंदर सौरी ॥ लुचई लखित लापसी सोहै । स्वाद सुवास सहज मन मोहै ॥ मालपुवा माखन मथि कीन्हे । ग्राह ग्रसित रबि सामर लीन्हे ॥ लाचन लाडू लागत नीके । सेव सुहारी घेवर घीके ॥ गूंझा गूंदे गाल मलूरी । मेवा मिले कपूरन पूरी ॥ ग्रंथि सम सुन्दर सजल अंदर सो । ऊपर कनी अजनु जनु बरसो ॥ बकुत जलेब जलेबी बोरी । ना हि न घटत सुधा तें थोरी ॥ देखत हरषत होत है समी । मनज बुद बुदा उपजे अमी ॥ फेंनो घुरी मिली प्रय संगा। मिथी मिश्रित भई एकरंगा ॥ साज्यो दह्यो अधिक सुखदाई । ता ऊपर पुनि मधुर मलाई ॥ खोवा खोई अवटि ह्वैराख्यो । सुहै मधुर मीठो रसचाख्यो बासौं घी सिखरिन अति सौंधी । मिले मिरचि मेटत चकचौंधी ॥ छाछि छबीली धबी धुंगारी । झरहै उठत झारकी न्यारी ॥ इतनें यतन यशोदा कीन्हे । तब मोहन बालक संग लीन्हे ॥ बैठे आय हंसत देाऊ भैया । प्रेम मुदित परुसति है मैया ॥ थार कटोरा जडित रतन के । भरि सब सालन बिबिधि यतन के ॥ पहिले पनवारो परुसायो । तब आपुन कर कौर उठायो ॥ जेवत रुचि अधिकौ अधिकैया । भोजन बड़ विसरत नहि गैया ॥ सीतल जल कपूर रस रचयो । सो मोहन निज कर रुचि अंचयो ॥ महिर मुदित मन लाड लडावे । ते सुख कहां देवकी पावे ॥ धरि तष्टी गडुवा जल ल्याई । भरयो चुलू खरिका लै आई ॥ पोरे पांन पुराने बीरा । खात भई दुति दांतनि हीरा ॥ मृग मद कन कपूर कर लीन्हें । बांटिबांटि ग्वालनि कों दीन्हें ॥ चन्दन और अरगजा आन्यों । अपने कर बलकें अंगवान्यों ॥ ता पाछें आपुन कुं खायो । उबरयो बकुत सखनि पुनि पायो ॥ सूर दास देख्यो गिरिधारी । बोलि दई हंसि जूठनि थारी ॥ यह जेवनार सुनै जो गावै । सो निज भक्त अभय पद पावै ॥ ३५४ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी व्रज तें बन जात ॥ राहिनि जसुमति सुतकी छबि गौर श्याम हरि हल धर गात । नीलांबर पीतांबर ओढे सोभा कछू कही नहि जात ॥ जुगल जलद जुग तडित मनहु मिलि अरस परस जोडत हैं नांत । सीस मुकुट मकराकृत कुण्डल झलकत बिबि कपोल इहि भांति । मानहु जलद जुगल रबि तापर चन्द्र धनुष की कांति ॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचार न चले मन अनुमांनि । ग्वाल सखा बिच श्री नंद नंदन बोलत बचन मधुर मुसकांनि ॥ चिते रहीं व्रजकी जुवती सब आपुसही में करत बिचार । गोधन वृन्द लये सूरज प्रभु वृन्दावन गये करत बिहार ॥ ३५५ ॥ राग बिलावल ॥ * ॥ अघासुर को बध ॥ * ॥ नंद सुत लाडिले हेासव व्रज जीवन प्रांन । बार बार माता कहे हेा जागहु श्याम सुजान ॥ ध्रुव ॥ जसुमति लेति बलाइ भोर भयो उठो कन्हाई । संग लिये सब सखा हार ठाढे बल भाई ॥ सुंदर बदन देखाइये हरो नयन के ताप । नयन कमल मुख धोइये कछु करो कलेऊ आप ॥ मांखन रोटी लेहु सरस दधि रैनि जमायेा । षट रस के मिष्टान सोई जेवहु रुचि आयेा ॥ मेासों लीजै मांगके जेाइ जेाइ भावे तोहि । संग जेवहु बलरांम

तुम हो रुचि उपजा बहु मोहि ॥ तब हंसि चितये श्याम सेजते बदन उघारयो । मानहु पय निधि मथत फेन फटि चंद उजारयो ॥ सखा सुनत देखन चले मानहु नयन चकोर जुगल कमल जनु इंदु परहो बैठि रहे अति भोर ॥ तब उठि आये कान्ह मात जल बदन पखारयो । बोलि उठे बलराम श्या कत उठ्यौ सवारयो ॥ दाऊजू कहि हंसि मिले बांह गही बैठाइ । मांखन रोटी सद दह्यो हेजेवत रुचि उपजाइ ॥ जल अंचयो मुख धोइ उठे बल मोहन भाई । गाइ लई सब घेरि चले बन कुंवर कन्हाई ॥ टेर सुनत बल राम की आये बालक धाइ । लै आये सब जोरिके हांघरते बछरा गाइ ॥ सखनि कान्ह सों कही आजु बृन्दाबन जैये । जमुना तट तृण बहुतसुरभि गण तहां चरैये ॥ ग्वाल गाइ सब ले गये बृन्दाबन समुहाइ । अतिहि सघन बन देखि के हो हरषि उठे सबगाइ ॥ कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत । कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत ॥ अंतर जामी कहत जिय मे हमहि सिखावत टेरि । कान्ह कहत अबके गई हो पुनि धौं लीजो फेरि ॥ कोउ मुरली कोउ बेणु शब्द शृंगी कोउ पूरे । कृष्णकियो मनध्यांन असुर एक बक्यो अधूरे ॥ बाल बछरू बनि राखिहों येक बेर लै जांउ । कछुक जनऊं अपनपो हो अबलों रह्यो सुभाउ ॥ असुर कुलहि संघारि धरनि को भार उतारौं कपट रूप रचि रह्यो दनुज येहि तुरत पछारौं ॥ गिरि समान धरि अगम तन बैठ्यौ बदन पसारि । मुखभीतर बन धन नदी हो माया छल करि भारि ॥ पैठि गये मुख ग्वाल धेनु बछरा सब लीये । देखि माया बन भूलिरहे तृण द्रुम छकिकीये ॥ कहन लगे सब आपुमें सुरभी चरैं अघाय । मानहु पर्वत कन्दरा हो मुख सब गये समाय ॥ सब मुख गये समाय असुर तब चोंच संकोर्‌यो । अन्धकार इमि भयो मानों निसि बादर जोर्‌यो ॥ अतिहि उठे अकुलायके ग्वाल बच्छ सब गाइ । चाहि चाहि कहि कहि उठे हो परे कहां हम आइ ॥ धीर धीर कहि कान्ह असुर यह कन्दल नांही । अन जांनत सब परे अघा मुख भीतर मांहीं ॥ जियत्याग्यो यह सुनतहीं अब को सके उबारि । बातें दूनी देह धरी तब असुर न सक्यो संम्हारि ॥ शब्द कर्‌यो आघात अघासुर टेरि पुकार्‌यो । रह्यो अधरदोउ चापि बुद्धिबल सुरति पसार्‌यो ॥ ब्रह्मद्वार सिर फोरिके निकसे गोकुल राइ । बाहेर आवत निकसिके हो लें करि लियो सहाइ । बालक बछरा धेनु सबे अति मनहि सकाने । अन्धकार मिटि गयो देखि जहं तहं अतुरांने ॥ आने बाहिर निकसि के मन सब कियो हुलास । हम अज्ञान कत डरत हैं हो कान्ह सदा हम पास ॥ धन्य कान्ह धनि नन्द धन्य जसुमति महतारी । धन्य लयो अवतार कोखि धनि जिहि दइ तारी ॥ गिरि समान तनु अति अगम पन्नग की अनुहारि । हम देखत पल एक में हो मार्‌यो दनुज पछारि ॥ हरि हंसि बोले बैन संग जो तुम नहि होते । तुम सब कियो सहाय भयो तब कारज मोते ॥ हमहु तुमहु मिलि बैठिके बन भोगो करे जाइ । बंसी बट भोजन बहुत हो जसुमति दयो पठाइ ॥ ग्वाल परम सुख पाइ कोटि मुख करत प्रसंसा । कहा बहुत जो भये सपूत एकुई बंसा ॥ चढि विमान सुर देखहीं गगन रहे भरि छाइ । जै जै धुनि नभ करत हैं हो हरषि पुष्प बरसाइ ॥ ब्रह्मसुनी यह बात अमर घर घरनि कहानी

गोकुल लीन्हे जन्म कौन यह हमें नहि जानी ॥ देखौं इनको खोज लै सोच परयो मन मांहि । सूर श्याम ग्वालनि लिये चले बंसी बटकी छांहि ॥ ३५६ ॥ वत्स हरण ॥ ब्रह्म मोहन लीला ॥ राग बिलावल ॥ हरष भये नन्दलाल बैठ तरुछाह की ॥ ध्रुव ॥ बंसी बट अति सुख दयो औरद्रुम पास चल्हैं है । सखालये तह गये धेनु वन चरत कल्हैं है ॥ बैठिगये सुखपाइ के ग्वाल बाल लये साथ । कांवरि भोरी लये सखाहो आंनि नवायो माथ ॥ आनन्द दये मधु छाक तुरत वृंदावन आये । बिंजन सहस प्रकार जसोदा बनें पठाये ॥ श्याम कह्यो बन चलतहीं मातासों समुझाइ । उततें वे आये सबै हो देखतही सुखपाइ ॥ कान्ह देखि मधु छांक पुलकि अंग अंग बढायो । हरि हंसि बोलत बैन प्रेम जननी पहुं चायो ॥ नीके पहुंचे आय तुम भलो बन्यो संजोग । बार बार कहि सखनिसों हो आज करें सुख भोग ॥ बन भोजी विधि करत कमल के पातन गाये । तोरे पात पलास सरस दोना बहु लाये ॥ भांति भांति भोजन धरे दधि लवनी मिष्ठान्न । बनफर लये मगाय के हो लागे रुचिकरि खांन ॥ बन भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदासा । श्याम कुंवर प्रखेन महर सुत अरु श्रीदामा ॥ कान्ह सबनि मिलि खात है लै लै कौर छिडाय । औरनि देत बुलाइके हो उहकि आपु मुख नाय ॥ ब्रह्मा देखि विचारि सृष्टि कोउ नई चलाई । मोहि पठयो जेहि सोंपि ताहि कहकेहों जाई ॥ देखोधों यह कौन है बालबच्छ हरि लेउं । ब्रह्मलोक लै जाउंगो हो येहि विधि करि दुखदेउं ॥ अन्तरजामी नाथ तुरत विधि मनकी जांनी । बालक ह्वै दिये पठै धेनु वन कहां हिरांनी ॥ जहां तहां बन ढूंढिके फिरि आये हरि पास । सखा सबनि बैठारि के हो आपुन गये उदास ॥ हरिलै बालक बच्छ ब्रह्मलोकहि पहुंचायो । फिरि आवे जो कान्ह कहूं कोउ नहीं बतायो ॥ जान्योई मन में तबै विधि ले गयो हराय । प्रभु तबहो तेहि रूप को हो बालक बच्छ बनाय ॥ ताते कीन्हे और ब्रह्म हृदि नाख उपायो । अपनों करि तेहि जांनि कियो ताको मन भायो ॥ उच्चाटन मारन समर्थ सब हरि कीनो छांन । अब जाने बिधि यह करी हो नये रचे भगवान । उहे बुद्धि उहे प्रकृति उहे पौरुष तन सब के । वहे नाम वहे भेष धेनु बछरा मिलि रबके । श्याम कह्यो सब सखनि को ल्यावहु गोधन फेरि । संध्याको आगम भयो हो ब्रज तन हाको घेरि । सुनत ग्वाल धेनु चले ब्रज वृन्दा बनते । कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वालहि मनते । मध्य किये लै श्यामको सखा भये चहुं पास । ब्रज धेनु आगे दिये हो आवत करत बिलास । बाजत बेणु बिषानस बे अपने रंग गावत । मुरली धुनि गोरंभि चलत पग धूरि उडावत । मोर मुकुट सिर सेहाई मनहु चंदकन सीत । आसपास नाचत सखा हो बिच हरि गावत गीत । देखि हरषि ब्रज नारि श्याम पर तन मन वारति । एक टक रूप निहारि रही मेष्टति चित आरति । कहा कहैं छवि आजुकी मुख मंडित खुर धूरि । मानहु पूरन चंद्रमा हो कहूं रह्यो आपूरि । गोकुल पहुंचे जाय गाय बालक अपने घर गौसुत अरु नर नारि मिलि अति हैं करि आदर । प्रेम सहित वे मिलत हैं जे उपजाये आजु । जसुमति मिलि सुत सो कहति है रैनि करत किहि काज । मैं घर आवन कह्यो

सखा संग कोउ न आवे । देखत बन अति अगम डरो वे मोहि डर पावे । बारबार डर लाइके लेबलाइ पछिताय । काल्हिहु ते बेई सबे होख्यावहि गाइ बराय । यह सुनिके हरि हंसे कालि मेरी जाय बलैया । भूख लगी मोहि बहुत तुरत कहुं दै कछु मैया । माखन दीनों हाथके यह तबलों तुम खाहु । तातो जल है घामके हो तनक तेल सो न्हाहु । तब जसुमति गहि बांह बहीं हरि ले नहवाये । रोहिनि करि जेवनार श्याम बलराम बुलाये । जेवत अति सुख पावही परुसति माता हेतु । जेंइ उठे अचवन लियो हो दुहुं कर बीरा देत । श्याम उनीदे देखि मात रचि सेज बिछायो । तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो । अघ मर्दन विधि गर्व हरत करतन लागी बार । सूर दास प्रभु चरित को पावत कोउन पार ॥ ३५७ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज की लीला देखि गर्व बिधि को गयो ॥ ध्रुव ॥ त्रिभुवन नायक आनि भये गोकुल औतारी । खेलत ग्वालनि संग रंग आनंद मुरारी । घर घर ते छाके चली मान सरोवर तीर । नंद नंदन के संग चले हो बालक सखा अहीर । बिंजन सकल मंगाय सखनि के आगे राख्यो । खाटे मीठे स्वाद सबै रस लैलै चाख्यो । रुचि सो जेंवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात । भोजन को सब स्वाद लहो कहत परस्पर बात । देखत गण गंधर्ब सकल सुर पुरके वासी । आपुस में वे कहत हंसत येई अबिनासी । देखि सबै अचरज भये कह्यो ब्रह्म सो जाय । जाको अबिनासी कहे हो सो ग्वालनि संग खाय । यह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृन्दावन आयो । देखि सरोवर सलिल कमल तेहि मध्य सोहायो । परम सुभग यमुना बहै तहां है त्रिबिध समीर । पुहुपलता द्रुम देखि के हो थकित भयो मति धीर । अति रमणीय कदम छांह रुचि परम सोहाई । राजत मोहन मध्य अवलि बालक छबि पाई । प्रेम मगन ह्वै परस्पर भोजन करत गोपाल । लाबहु गोसुत हेरि के हो प्रभु पठये दै ग्वाल । बन उपबन सब ढूंढि सखा हेरि फिरि आये । बछरा भये अदृष्ट कोउ खोजत नहि पाये । सबे सखा बैठे रहो मैं देखों धों जाय । बछ हरन हरि जानि जिय हो आप गये बहराय । जब गोबिंद गये दूरि बालकनि हरेव बिधाता । लेहैं तुरत मगाइ आपु कैजै हो ताता । ब्रह्म लोक ब्रह्मा गयो लै बालक बछरा संग । प्रभुकी लीला गम नहीं बिधि कियो गर्ब अति अंग । तब चिंतामणि चितै चित्तइक बुद्धि बिचारी । बालक बछ बनाइ रचे ओही अनुहारी । करत कुलाहल सब गये ब्रज घर अपने धाय । अति आदर करि करि लिये हो अपनी अपनी माय । ब्रह्मा कियो बिचार जाइ निज गोकुल देखो । करि है सोक संताप जाइ पितु मातहि पेखो । आये तहं बिधिना चले घर घर देख्यो आय । संध्या समैं होत कौतूहल जहां तहां दुहि गाय । को यह गोकुल और किधों मैंही भ्रम भूल्यो । यहि अबिनासी हेहि ज्ञान मेरो भ्रम भूल्यो । अंतर जामी जानि धों हरे बछ लै आइ । जगत पितामह संभ्रम्यो हो गयो लोक फिरि धाइ । देख्यो जाय जगाय बाल गोसुत जहं राख्यो । बिधि मन चकृत भयो बहरि ब्रजको अभि लाख्यो । छिनु भूतल छिनु लोक में छिनु आवै छिनु जाय । ऐसेहि करत बरष दिन बीते थकित भये बिधि पाय । तब जान्यो हरि प्रकट ज्ञान चित में जब

आयो । धिग धिग मेरी बुद्धि कृष्ण सो बैर बढायो । लै गोसुत गोपाल सिसु शरण गयो ह्वै साध । चारिहु मुख अस्तुति करैं प्रभु छमा मोर अपराध । अन जानतही करी तुमहि सो मैं बरि आई । ये मेरे अपराध छमहु विभुवनके राई । ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति सम्हारि । शरण गये राखत सदा औगुण सकल बिसारि । ज्यों खद्योत उडि जाइ ताहि क्यों तिमिरनसावै । दीपक बहुत प्रकास तरनि सम क्यों कहि आवै । मैं ब्रह्मा इक लोक को ज्यों गूलरि फल जीव । प्रभु तुम्हरे इक रोम प्रति हो कोटि ब्रह्म अरु शीव । मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया । मिथ्या है यह देह कहा क्यों हरि बिसराया । तुम बिनु जानै जीव सब उतपति प्रलय समाहि । शरण मोहि प्रभु राखिये हो चरणन की छांहि । कीजे मोहि ब्रज रेनु देहु वृन्दाबन बासा । मागों इहै प्रसाद और नहि मोरे आसा । जोइ भावै सोइ करो लता सलिल द्रुम ग्रेह । ग्वाल बाल को भृत्य करोहो मनहि सत्य व्रत जेह । जो दरसन नर नाग अमर सुर पतिहु न पायो । खोजत जुग गये बीति अंत मोहू न देखायो । यह ब्रज पारस नित्य है मैं अब समुझी आय । वृन्दाबन रज ह्वै रहो मोहि ब्रह्म लोक न सोहाय । मागत बार बार शेष ग्वालनि को पाऊं । आजु जियो कछु जानि भछ करि उदर पुराऊं । अब मेरे निजु ध्यान यहे रहो जूठ नित खाय । और बिधाता कीजिये हो मैं नहि छाडों पाय । तब प्रभु बोले आप बचन मेरो अब मानों । और काहि बिधि करो तुमहिते कौन सयानो । तुम ज्ञाता कर्म धर्म के तुम ते सब संसार । मेरो माया अति अगम कोऊ न पावै पार । श्री मुख बानी कहत बिलंब अबनेकु न लावहु । ब्रज परिकर्मा करहु देहके पाप नसावहु । तुरत जाहु वहि लोकको बिधि कीनो मनुहार । ब्रह्मा करि अस्तुति चले हो हरि दीन्हो उर हार । धनि बछरा धनि बाल जिनहिते दरसन पायो । रोम रोम भयो धन्य कृष्ण माला पहिरायो । धनि जसुमति जिनि बसकिये अबिनाशी आवतारि । धनि गोपी जिनके सदन हो माखन खात मुरारि । मथुरा आदि अनादि देह धरि आपुन आये ॥ धनि देवै बसुदेव पुत्र मांगे तुम पाये । चारि बदन मै कहा कहों तुम्हरी महिमा गाय ॥ सहस ननन निस दिन रटै हो तऊ न गाई जाय । गाय चरावत ग्वाल संग करत जेहि ध्यान लगायो ते ब्रज बासिन संग रहत अति प्रेम बढायो । वृंदा बन ब्रज को महत कापै बरन्यों जाय । चतुरानन पद परसि कै हो गयो लोक सुख पाय ॥ हरि लीन्हो अब तार पार सारद नहि पावै । सत गुर कृपा प्रताप कछू ताते कहि आवे ॥ सूर दास कैसें कहे महा पतित अवतार । शेष सहस मुख जपत सदा हो सोउ न पावत पार ॥ ३५८ ॥ राग बिलावल ॥ माधोजू जौजन तें बिगरै । सुनि कृपाल करुणा मय कबहूं प्रभु नहि चित्त धरै ॥ ज्योंशिशु जननी जठर अंतर गत शत अप राध करै । तऊ तनय तनु तोषि पोषि चित बिगसित अंक भरै ॥ द्विज रसना दखि दुखित होत तब तौरिस काहि करे । छमि छत छोभ खीर मधु मिश्रित मुख समीप संचरै ॥ जदपि बिटप जर हतन हेत करि कर कुठार पकरै । तदपि सुभाव सुशील सुशीतल रिपु तन ताप हरै ॥ धर बिधंसि हल हतन छपी करि बैर बीज संचरै । सो सनमुख सुख सहित सतोगुण शशि बहु फरनि फरै ॥

कारन करन अनन्त अजित कहि केहि बिधि चरणपरै । यह कलिकाल चलत नहि मोपे सूर शरणहि धरे ॥ ३५९ ॥ अथ कालो दमन लीला बडो ॥ राग बिलावल ॥ नारद कहि समुझाई कंस नृप राजकों । तब पठयो ब्रज दूत पुहुप के काजकों ॥ ध्रुव ॥ तब पठयो ब्रज दूत सुनि नारद मुख बांनी । बार बार ऋषि राज कंस मुख अस्तुति भांनी ॥ धन्य धन्य मुनि राज तुम भलो मंच दियो मोहि । दूत चलायो तुरतही हो अबहि जाय ब्रज जोहि ॥ यह कहियै तूजाय कमल नृपकोटि मगायो । पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो बहु भांति जनायो ॥ काल्हि कमल नहि आवहीं तौ तुम को नहि चैन । सिर नवाइ कर जोरिके हो चल्यो दूत सुनि बैन । तुरत पठायो दत नंद घरही में पायो ॥ कमल पुहुप केभार कंस नृप बेगि मगायो । काल्हि न पहुंचे आइकें तब बसिहो ब्रज लोग ॥ गो कुल में जेसुख किये हो ते करिहैं हो सोग । जौन पठावहु पुहुप कहौगे तैसो मोकों । टारैंगे नृप ठोर बसन पैहों नहि ओकों ॥ यह जानहु गोपनि समेत पकरि मंगावहु कालि । पुहुप बेगि पठये बने हो जोरे बसो ब्रज पालि ॥ यह सुनि नंद डराय अतिहि मन मन अकुलाने । यह कारज क्यों होय काल अपनो करि जाने ॥ और महर सब बोलि कें लै कैसो करें उपाय । कालि प्रात ब्रज मारि है हो बांधि सबनि लै जाय ॥ बल मोहन को नाम धरयो कहि पकरि मंगावन । तातें अति भयो सोच लगत सुनि मोहि डरावन ॥ यह सुनि सिर नाये सबनि मुखहि न आवै बात । कहो कहा अब कीजिये हो कैसे मिटि है घात ॥ कै बालकनि भगाय जाहिं लै आन भूमि पर । बरु हम को लै जाय श्याम बलराम बचें घर ॥ महरि सबै ब्रजनारि सों कहि पूछति को उपाउ । जनमहितें कर बर टरी हो अब के नहीं बचाउ ॥ कोउ कहै दै दाम नृपति जितनो धन चाहै । कोउ कहै जै ये शरण सबै मिलि बुधि अवगाहै ॥ यही शोच सब परिरहे कहूं नहीं निरबार । ब्रज भीतर नंद भवन में हो घर घर यहै बिचार ॥ अन्तर्यामी जानि नंदसों बूझत बात । कहा करत हो शोच कहो कछु मोसों तात ॥ कहा कहों मरे लाडि ले कहत बडो संताप । मथुरा पति के जिय कछू हो तुमपर उपज्यो पाप ॥ कालीदह के पुहुप मागि पठये हम सों उनि । तबतें मो जिय शोच जबहि तें बात परी सुनि ॥ जो नहि पठवहु कालिही तौ गोकुल देउ लगाय । मो समेत दोऊ बंधु तुम हो कालिहि लेय बंधाय ॥ यह कहि पठयो कंस तबहि तें शोच परयो मोहि । प्रथम पूतना आय बहुत दुख दै जु गई तोहि ॥ तृणावर्त के घात तें बहुत बच्यो दुख पाय । सकटा केशीते बच्यौ हो अब को करे सहाय । अघा उदर तें बच्यौ बहुत दुख सह्यो कन्हाई । बका रह्यौ मुखवाइ तहां भयो धर्म सहाई ॥ इतने कर बर ह्वै टरे दैवनि किये सहाय । तब ते अब गाढी परी हो मोकों कछु न सुहाय ॥ बाबा तुम हो कहत कौनधों तोहि उबारे ॥ सोइ ब्रज भीतर प्रकट कंस गहि केस पछारे ॥ यह जबही हरि सों सुनो नंदमनहि पति आय । मगन गिरत जो संग रह्यौ हो सो करि लेय सहाय । नंदहि यह समुझाय कान्ह उठि खेलन धाये । जहं ब्रजबालकहुते तुरत तहं आपुन आये ॥ गोप सुतनि सों यह कह्यौ खेलें गेंद मगाय । श्री दामा यह सुनतही हो घरते लायो जाय । सखा परस्पर मार

करे कोउ कानिन माने । कौन बडो को छोट भेद भेदा नहि आने ॥ खेलत जमुना तट गये आपुहि लाये टारि । श्रीदामा के हाथ तें लै गेंद दई दह डारि ॥ श्रीदामागहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा । कहा भयो जो नंद बडे तिनके तुम ढोटा ॥ खेलत में कहा छोट बड़ो हमहुं महर के पूत । गेंद दियो ही पै बने हो छांडि देहु मति धूत ॥ तुमसों धूत्यो कहा करो धूत्यो नहि देख्यो । प्रथम पूतना नारि काग सकटा सुर पेख्यो ॥ तृणा वर्त्त पटक्यो शिला अघावका संघारि । तुम तादिन संगही रहे अब धूत कहत न सम्हारि चेढे कहा बतात कंस को कमल देहु अब । कालिहि पठये मांगिएहुप अब ले देहो जब ॥ बहुत अचगरी जिनि करो अजहूं तजौ झवारि । पकरि कंस लै जाय गो हो कालिहि परे खभारि । कमल पठाऊं कोटि कंस को दोष निवारों । तुम देखत फनि जाउं कंस जीवत धरि मारों ॥ फेंट लियो तब झटकि कें चढे कदम पर जाय । सखा हंसत ठाढें सबेहो मोहन गये पराय ॥ श्रीदामा चले रोइ जाय केहों नंद आगे । गेंद लेहु तुम आय मोहि डरपावन लागे ॥ यह कहि कूद परे सलिल कोने नटवर साज । कोमल तनु धरिके गये हो जहं सोवत अहिराज ॥ यहि अंतर नंद घरनि कह्यो हरि भूखे ह्वै हैं । खेलत ते अब आय भूख कहि मोहि सुने हैं ॥ अति आतुर भीतर चली जे बन कारन आप । छीक सुनत कुसगुन कह्यो हो कहा भयो यह पाप ॥ अजिर चली पछितात छीक को दोष निवारण ॥ मंजारी गई काटि तबहि निकसतही वारन ॥ जननी जिय व्याकुल भइ कान्ह अबेर लगाय । कुसगुन आजु बहुत भये वो कुसल रहे दोउ भाय श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई । आतुर आये नंद घरहि बूझत दोउ भाई ॥ नंद घरनिसों यों कहत मोकों लगत उदास ॥ यह अंतर हरि तहं गये हो जहं काली को बास ॥ देख्यो पन्नगजाय अतिहि निर्भय ह्वै सोवत ॥ बैठी तहं अहि नारि डरी बालक के जोवत । भागु भागु सुत कौन को अति कोमल तेरो गात । एक फूक कोनही तूं हो विष ज्वाला अति तात ॥ तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देहि जगाई । आयो देखन याहि कंस मोहि दियो पठाई ॥ कंस कोटि जरि जाहिगे विषकी एक फुकार । कह्योप करि फिरि जाहितूं हो अति बालक सुकुमार ॥ यहि अन्तर संग सखा जाहि ब्रजनन्द सुनायो । हम संग खेलत श्याम जाइ दह मांझ धंसायो ॥ बूडि गयो उचक्यो नहीं ता बातहि बडि बेर । कूदि परयो चढि कदंमते हो खबरि न करी सबेर ॥ चाहि चाहि करि नन्द सुनत दौरे जमुना तट । जसुमति सुनि यह बात चली रोवति तोरति लट ॥ ब्रजबासी नर नारि सब गिरत परत चले धाइ । बूझौ कान्ह सबनि सुनो हो अति व्याकुल मुरझाइ ॥ जहं तहं परी पुकार कान्ह बिन भये उदासी । कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल ब्रजबासी ॥ नन्द जसोदा अति बिकल परत जमुन में धाय । और गोप उप नन्द मिलि हो बांह पकरि लै आय ॥ धेनु फिरति बिललाति बच्छयन कोउ न लगावै । नन्द जसोदा कहत कान्ह बिन कौन चरावै ॥ यह सुनि ब्रजबासी सबे परे धरनि अकुलाय । हाय हाय करि कहत सबे हो कान्ह रह्यो कहं जाय ॥ नन्द पुकारत रोइ बुढाई मोहि छडायो । कछु दिन मोह लगाइ जाइ जलभितर भंडायो ॥ यह कहिके धरनी

गिरत जनु तरु काटि गिराइ । नन्द घरनि तब देखिके हो कान्हहि टेरि बुलाइ ॥ निठुर भये सुत मात तातकी छोह न आवति । यह कहिके अकुलाइ जलहि भीतरको धावति परति जाइ जमुना सलिल गहि आनति व्रजनारि । नेक रहौ सब मरहिगी होको है जीवन हारि ॥ श्याम गयो जल बूडि हत्या धृगजीवन जगको ॥ सिर फोरति गिरि जाति अभूषण तोरति अंगको । मुरछि परी तन सुधि गई प्राण रह्यो कहुंजाय । हल धर आए धाइके हो जननी गई मुरझाय ॥ नांक मूदि जल सींचि जननि जननी करि टेरयो । बार वार झझकोरि नेंक हलधर तन हेरयो ॥ कहत उठी बलरामसो बनहि तज्यौ लघु भ्रात । कान्ह तुमहि बिन रहत नहि हो तुमसों क्यों रहिजात ॥ अब तुमहूं जिनि जाहु सखा इक हेहु पठाई । कान्हहि ल्यावै जाहि आजु अबसेरि कराई ॥ छांक पठ ऊं जोरिकै मन मन सोक समाज । प्रात कछू खायो नहीं हो भूखेहूं गई सांझ ॥ कबहुं कहति बन गये कबहुं कहि घरहि बतावति । कहं खेलतहौ लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥ जागिपरी दुख मोहते रोवत देखे लोग । तब जान्यों हरि दह गिरयो हो उपज्यो बहुरि बियोग ॥ धृग धृग नंदहि कह्यो और कितने दिन जीहै । मरत नहीं मोहि मारि बहुरि व्रज बसि हौ कीहै ॥ ऐसे दुखमें सरम सुखमन करि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरनी गिरि परे हो नंद भये बिनु प्रान ॥ हरिको अग्रज बंधु तुरतही पिता जगा-यो । माताको परमोधि दुहुनि धीरज धरवायो ॥ मोहि दुहाई नंदकी अबही आवत श्याम । नांथि नागलै आइहै हो तब कहियो बलराम ॥ हलधर कह्यौ सुनाइ नंद जसुमति व्रजबासी । हत्या मरत केहि काज मरै क्यों वह अविनासी ॥ आदि पुरुष मैं कहतहौं गये कमलके काज । गिरिधर को तुम डरत हौ हो वह देवनि सिरताज ॥ वह अविनासी आहि करो धीरज अपनो मन । कालीछेदे नाक लिये आवत निर्त्तत फन ॥ कंसहि कमल पठायहै कालिहि पठवै दीप । एक घरी धीरज धरौ हो बैठो सब तरुनीप ॥ सुनिहो अहिको वांम श्याम अहि क्यों न जगावै । बालक बालक करति कहा पति कों न उठावै ॥ कहां वांस कहां उरग यह अबहिं दिखाऊं तोहि । दैजगाइ मैं कहतसों हो तू नहि जानति मोहि ॥ मैंजानतिहों बाल फूंक एक में जरि जैहै । छोटे मुख बडिबात कहत अबहीं मरिजैहै ॥ छोह लगति तोहि देखि मोहि काको बालक आहि । खगपतिसों सरबर करी हो तूं बपुरोको आहि ॥ बपुरो मोसों कहति तोहि बपुरी करिडारों । एक लातसों चापि खसम तेरेको मारों ॥ सोवत काहुन मारि ये चलि आई यह बात । खगपति को मैंही कियो हो कहति कहातूं बात ॥ तुमहि बिधाता भये और कर्त्ता कोऊ नाहीं । अहि मारोगे आपु तनक से तनकसि बांहीं ॥ कहा करों कहत न बने अति कोमल सुकुमार । देती अबहि जगाइके हो जरि बरि ह्वै होछार ॥ तूं धों देहि जगाइ तोहि दूषन कछु नाहीं । परी कहा तोहि नारि पाप अपने जरि जाहीं ॥ हमको बालक कहतिहै आपु बड़े की नारि । वादत है विनु काजहीं हो हत्या बढावति रारि ॥ तुहीं नखेहि जगाइ बहुत जोकरत ढिठाई । पुनि मरिहे पछिताहि मात पित तेरे भाई ॥ अजहूं फिरि कारजाहि तूं मरिलैहे सुखकोन । पांच

बरष के सातको हो आगे तोको होन ॥ झिरकि नारि देगारि आपु अहि जाय जगायो । पगसों चापी पूंछ सबै औ सांन भुलायो ॥ चरण मसकि धर नींदखी उरग गयो अकुलाय । काली मनमें तब कही हो यह आयो खगराय ॥ देखो नयन उघारि तहां बालक इक ठाढो । बिषधर झठकी पूंछि पटकि सहसौ फन काढ्यो ॥ बार बार फनघात करि बिष ज्वाला की झारि । सहसौ फनि फनि फूकरे हो नेक न तनहि लगारि ॥ तब काली मन कहत पूंछिचांपी यहि पगसों । अतिहि उठ्यौ अकुलाय डरत्रों बाहन हरि खगसों ॥ यह बालक धों कोनको कीनो युद्ध अगाय । दाव घाव बहुतें कियो हो मुरत नहीं जदुराय ॥ पुनि देखै हरि ओर पूंछि चापी यहि मेरी । मन मन करत बिचार लेउं याको मैं बेरी । दाव परयो अहि जानि के लिखो अंग लपटाय । चरण लपेटे सिखालों हो यहि अति करी ढिठाय ॥ कहति उरग की नारि गर्ब अतिही करि आयो । आय पहुंच्यौ है काल वस्य पग इतहि चलायो ॥ अहि नारिनसों यह कही मोहि सम सरिकोउ नाहि । इक फूंक बिष ज्वालकै होजल डुंगरि जरि जांहि ॥ गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतही तनु बिस्तारयो । हाय हाय करि उरग वारही बार पुकारयौ ॥ शरण शरण अब मरत हौं मैं नहि जान्यों तोहि । चट चटात अंग फूटही हौं राखु राखु प्रभु मोहि ॥ अबण शरण धुनि सुनत लियो प्रभु तन सकु चाई । छमहु मोहि अपराध न जाने करी ढिठाई ॥ ब्रजमैं कृष्ण अवतार है मैं जांनी प्रभु आज । बहुत किये फन घात मैंहो बदन दुरावत लाज ॥ रह्यौ आनि इहिठौर यरुड की बासगोसाई बहुत कृपा मोहि करी दरस दीनो जगसांई ॥ नांक फोरि फनपर चढे छपाकरी दिवराय । फण फण प्रति प्रति चरण धरे हो निर्त्तत हरष बढाय ॥ धन्य कृष्ण धनि उरग जांनि जन कृपा करी हरि । धन्य धन्य दिन आजु दरससों पाप गये जरि ॥ धन्य कंस धनि कमल ये धन्य कृष्ण अवतार । बडी कृपा उरगहि करी हो फन प्रति चरन बिहार ॥ शेष करत जिय गर्ब अंडको भार सीस धरि । पूरन ब्रह्म अनंत नामको सकै पार करि ॥ फन फन प्रति अति भार भर अमित अंड मैगात । उरग नारि कर जोरिके हो कहति कृष्णसों बात ॥ देखत ब्रज नर नारि नंद जसुदा समेत सब । संकरषन सों कहत सुनों सुत कान्ह नहीं अब ॥ यहि अंतर जल कमल बिच उठ्यो कछू अकुलाय । गोवतते बरजे सबै हो मोहन अग्रज भाय ॥ आवत है वह श्याम पुहुप काली सिरखोने । मात पिता ब्रजदुखित जानि हरि दरसन दीने ॥ निर्त्तत काली फननि पर दिव दुंदुभी बजाय । नटवर वपु काछे रहै हो सब देखे वह भाय ॥ आवत देखे श्याम हरष कीने ब्रजबासी । सोक सिंधु गयो उतरि सिंधु आनंद प्रकासी ॥ जल बूडत नौका मिले ज्यों तन होत अनंद । त्यों ब्रज जन झुलसे सबै हो आवतहै नंद नंद । सुतदेखत पितु मात रोम गद पुलकित भये । उर उपज्यौ आनंद प्रेम जल लोचन दुहु अये ॥ दिव दुंदुभी बजावहि फन प्रति निर्त्तत श्याम । ब्रजबासी सब कहतहैं हो धन्य धन्य बल राम ॥ उरग नारि कर जोरि करति अस्तुति मुखठाढी । गोपी जन अवलोकि रूप वह अति रति गाढी ॥ सुर अंबर ललना सहित जै धुनि मुख मुख गाय । बड़ी कृपा

यह उरगको हो ऐसी काहु न पाय ॥ कृपाकरी प्रल्हाद खंभते प्रकट भये तव । कृपा करी गजराज गरुड तजि धाइ गये जव ॥ द्रपद सुताको करि कृपा वसन समुद्र बढाय नंद यशोदहि जो कृपाहो सोई कृपा अहि पाय ॥ तव कालीकर जोरि कह्यौ प्रभु गरुड चास मोहि । अब करिहैं दंडवत नयन भरि जब देखैतोहि ॥ चरण चिन्ह दरसन करत गहिरे हैं तेरे पाय । उरग दीप को करि विदा हो कह्यौ करहु सुखजाय ॥ प्रभु यातें सुख कहां जेचरन फन फन प्रति धरसे । रमा हृदय जोबसत सुरसरी सिर बहे हरसे ॥ जनम जनम पावन भयो फन पद चिन्ह धराय । पाय परयौ उरगिनि सहित होचल्यो दीप समुहाय ॥ कालीपठयो दीप सुरनि सुरलोक पठाये । आपुन आये निकसि कमल सब तटहि धराये ॥ जलते आये निकस तब मिले सखा सब धाय मात पिता दोउ धाइके हो लीने कंठ लगाय ॥ फेरि जन्म भयो कान्ह हृदय लोचन भरि आये । जहां तहां ब्रज गोप नारि आतुर ह्वै धाये ॥ अंकम भरि भरि मिलत है मनो निधन धन पाय । मिली धाय रोहनि जननि चूंबति लेति बलाय ॥ सखा दौरि के मिले गये हरि हम पर रिस करि । धनि माता धनि पिता धन्य सोदिन जेहि अवतरि ॥ तुम ब्रज जीवन प्रांणहो यह सुनि हंसे गोपाल । कूदि परे चढि कदमते हो तुम देखत येख्याल ॥ काली ल्याये नाथि कमल ताही पर ल्याये । जैसी कहिगये श्याम प्रकट सो हमहि दिखाये ॥ कंस मरयौ निश्चय भई हमजानी ब्रज राज । सिंहिनि को छौनां भलो हो कहा बडो गजराज ॥ हरि हलधर तब मिले हंसे मनही मन दोऊ । बंधु मिलत सब कहत भेद नहि जाने कोऊ ॥ मात पिता ब्रजलोगसों हरषि कह्यौ नंदलाल । आजु रहो बसि सब इहां हो मेटहु दुख जंजाल ॥ सुनि सबहिन सुख कियो आजु रहिये जमुनातट । सीतल सलिल सुगंध पवन सुख तरुवंसी बट ॥ नंद घरते मिष्टांन बहुत षटरस लिये मगाइ । महर गोप उपनंद जेहो सब को दिये बंटाइ ॥ दुखकीन्हो सब दूरि तुरत सुख दियो कन्हाई । हरष भये सबलोग कंस को डर बिसराई ॥ कमल काजहू जमारतो कितनो खेद गनाय । व्रपगज को अब डर कहा हो प्रकट्यौ सिंह कन्हाय नंद कह्यो करि गर्व कंसको कमल पठावहु । और कमल झलध रहु कमल कोटि दै आवहु । यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोटि । कोटि एक जलही धरेहो यह विनती एक छोटि । अपने समजे गोप कमल तेहि साथ चलाये । मन सबके आनंद कान्ह जलते बचि आये ॥ खेलत खात अन्हातही बासर गयो विहाय । सूरश्याम ब्रज लोग को हो जहां तहां सुखदाय । ॥३६१॥ अथचीर हरण लीला ॥ राग बिलावल ॥ नंद नंदन बर गिरिवर धारी । देखत रीझी गोप कुमारी ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछे । आवत देखे गायन पाछे ॥ कोटि इंदु छबि बदन बिराजै । निरखि अंग प्रति मन मथ लाजै ॥ रवि शत छवि कुंडल नहिं तूलै । दसन दमक दुतिदांमिनि भूलै ॥ नयन कमल मृग सावक मोहै । सुकनासा पट तरको कोहै ॥ अधर बिंब फल पट तर नाहीं । विद्रुम अरु बंधूक लजांही ॥ देखत रीझि रही व्रजनारी । देह गेह की सुरत बिसारी ॥ यह मन में अनुमान कियो तब जप तप संयम नियम करै जब ॥ बार बार सवितहि मनावति । नंद नंदन पति देहु

सुनावति ॥ नेम धर्म तप साधन कीजै । शिवसों मांगि कृष्णपति लीजै ॥ बरष दिवस को नेम लियो सब । रुद्रहि सेवहु मन बच क्रम अब ॥ दृढ विश्वास व्रतहि को कीन्हो । गौरी पति पूजा मन दीन्हो ॥ षट दस सहस जुरी सुकुमारी । व्रत साधति नीके तनु गारी ॥ प्रात उठै जमुना जल खोरे । सोत भीत कहु अंगन मोरै ॥ पतिके हेत नेम व्रत साधै । शंकरसों यह कहि अवराधै ॥ कमल पच तू मोल चढावैं । नयन मूंदि यह ध्यान लगावैं ॥ हमको पति दीजै गिरिधारी । बड़े देव तुमहो त्रिपुरारी ॥ और कछू नहि तुमसों मांगे । कृष्णहेतु यह कहि पालागे ॥ ऐसेहि करत बहुत दिन बीते । प्रभु अंतर जामी मनचीते ॥ एक दिवस आपुन आये तहां । सब तरुणी अस्नान करति जहां ॥ वसन धरे जलतीर उतारी । आपुन जल पैठीं सुकुमारी ॥ कृष्ण हेतु अस्नान करै जहां । सबके पाछे आपुन हैं तहां ॥ भीजत पीठि प्रेम अति बाढी । चकृत भई युवती फिरि ठाढी ॥ देखे नंद नंदन गिरिधारी । व्रत फल प्रकट भये बनवारी ॥ सकुचि अंग जल बैठि लुकावै । बार बार हरि अंग मलावै ॥ लाजनही आवति है तुम को । देखत बसन बिना सब हमको ॥ हंसत चले तब नंद कुमार । लोगनि सुनवति करति पुकार ॥ हार चोर लैचले पराई । हांकि दियो कहि नंद दुहाई ॥ डारि बसन भूषन तब भागे । श्याम करन अब ढीठौ लागे ॥ भागे कहां बचोगे मोहन । पाछे आइ गईं तुब गोहन ॥ तनकी सुधि स हार कछु नाहीं । बसन अभूषण पहिरत जाहीं चीर फट्यो कंचुकि बंद छूटे । खेतन बनत हारलर टूटे ॥ प्रेम सहित मुख खीझत जाही । झूठहिं बार बार पछिताही ॥ गई सबै चिय नंद महरघर । जसुमति पास गई सब दर दर ॥ देखहु महरि श्यामके येगुन । जैसे हाल करे सबके उन ॥ चोली छोरहार दिखराये आपुन भाजि इतहि कों आये ॥ जमुना तट कोउ जान न पावैं ॥ संग सखा लये पाछे धावैं ॥ सुत को बरजहु हो नंद रानी ॥ गिरिधर करत भली नहिं बानी ॥ लाज लगत एक बात सुनावति । अंचल छोरि हियो दिखरावति ॥ यह देखत हंसि उठी जसोदा ॥ कछु रिस कछु मनमें करि मोदा ॥ आय गये तेहि समै कन्हाई ॥ बांह गही से तुरत दिखाई ॥ तनक तनक कर तनक अंगुरिया ॥ तुम जोबन भर नवल बहुरिया ॥ जाहु घरहि तुमकों मैं चीन्ही । तुमरी जाति जानि मैं लीन्ही ॥ तुम चाहति सों यहां नये हैं ॥ और बहुत ब्रज भीतर लैहैं । बार बार कहि कहा सुनावति । इन बातनि कछु लाज न आवति ॥ देखोरी ये भाव कन्हाई ॥ कहां गई तबकी तरुणाई ॥ महरि तुमहि कछु दोष न नाहा ॥ हमको देखि देखि मुसकाहीं ॥ इनके गुण कैसे कोउ जाने ॥ और करत और धरि ठाने ॥ देन उरहनो तुमको आई । नीकी पहिरावनि हम पाई ॥ चली सबे युवती घर घर को । मन में ध्यान करत हैं हरि को ॥ बरष दिवस तप पूरन कीनो । नन्द सुवन को तन मन दीनो ॥ प्रात होत जमुना फिर आई । प्रथम रहै चढि कदम कन्हाई ॥ तीर आइ युवती भई ठाढी । उर अंतर हरिकी रति बाढी ॥ कह्यो चलै जमुना जल खोरे । अंग अंग आभूषन सब छोरे ॥ चोली छोरै हार उतारें । करसों सिथिल केस निरवारें ॥ इत उत चितवति लोग निहारे । कहों सबनि अब चीर उतारे ॥ वसन आभूषन धरे

उतारी । जल भीतर सब गईं कुमारी ॥ माघ सीत को भीत न मानेा । षट ऋतु के गुण समकरि जानेा ॥ बार बार बूडें जल मांहीं । नेकहु जल को डरपति नाहीं ॥ प्रातहु तें एक जाम न हांहीं ॥ नेम धर्महो में दिन जांहीं ॥ इतनेा कष्ट करैं सुकुमारी ॥ पति के हेतु गेावर्द्धनधारी ॥ अति तप करत देखि गेापाल । मन में कह्यो धन्य ब्रज बाल ॥ हरि अंतर जामी सब जानें । छिन छिन को यह सेवा मानें ॥ व्रत फल इनहि प्रकट दिखराऊं । वसन हरेां लै कदम चढाऊं ॥ तन साधे तप कियेा तुमारी ॥ भजी मेाहि कामातुर नारी । सेा रह सहस गेाप सुकुमारी ॥ सब के वसन हरे बनवारी ॥ हरत वसन कछु बार न लागी । जल भीतर युवती सब नांगी ॥ भूषन वसन सबे हरि लाये । कदम डार जहां तहां लटकाये ॥ ऐसेा नेाप इक्ष बिस्तारा । चीत हारधेां कित कह जारा ॥ सबै समाने तरु प्रति डारा । यह लीला रचि नंदकुमारा ॥ हारचोर मानहु तरु फूल्यो । निरखि श्याम आपुन अनु कूल्यो ॥ नेम सहित युवती सब नाही ॥ मन मन सविता बिनै सुनाही ॥ मूंदे नैन ध्यान उर धारे । नंद नंदन पति होहिं हमारे ॥ रवि करि विनय शिवहि मन दीन्हों । हृदय मांझ अवलेाकन कीन्हों ॥ त्रिपुर दहन त्रिपुरारि त्रिलेाचन । गौरी पति पशुपति अघ मेाचन ॥ गरल असन अहि भूषन धारी । जटा धरन गंगा सिर धारी ॥ करति बिनय यह मांगत तुमसें । करहु कृपा हंसि कें आपु नसें । हम पावें सुत जसुमति को पति । इहै देहु करि कृपा देवरति ॥ नित्य नेम करि चली कुमारी । एक जाम तनकोंहिम जारी । ब्रज ललना कह्यो नीर जड़ाई । अति आतुर ह्वै तट कों धाई ॥ जलतें निकसि तरुनि सब आई । चीर आभूषन तहां न पाई सकुच गई जल भीतर धाई । देखि हंसे तरु चढे कन्हाई ॥ बारबार युवती पछिताही । सब के बसन आभूषन नांहीं ॥ ऐसेा कोन सबै खे भाग्यो । खेतहु ताहि विलंबु नलाग्यो ॥ माघ तुषार युवति अकुलाहीं ॥ ह्यां कहुं नंद सुवन तैा नाहीं ॥ हम जानति यह बात बनाई । अंबर हरि लै गये कन्हाई ॥ हैां कहुं श्याम विनय सुनि लीजे ॥ अंबर देहु कृपा करि जीजै ॥ थर थर अंग कंपति सुकुमारी । देखि स्यामनहि सकें संहारी ॥ यह अंतर प्रभु बचन सुनायेा । व्रत को फल दरशन सब पायेा ॥ कहा कहति मेा सें ब्रज बाल ॥ माघ सीत कत होति बिहाल ॥ अंबर जहां बताऊं तुमको । तेा तुम कहा देहुगी हम कों ॥ तन मन अर्पन तुमहीं कीनेा । जेा कछु हुतेासें तुमही दीनें ॥ और कहा जू लैहेां हमसें । हम मांगति है अंबर तुमसेा ॥ यह सुनि हंसे दयाल मुरारी । मेरेा कह्यो करेा सुकुमारी ॥ जलतें निकसि सबे तट आवहु । तबहिं भले तुम अंबर पावहु ॥ भुजा पसारि दीन ह्वै भाषहु । दोउ कर जोरि जोरि तुम राखहु ॥ सुनहु श्याम एक बात हमारी । नगिनि कहूं देखिये न नारी ॥ यह मति आप कहांधों पाई । आजुसुनी यह बात नवाई ॥ ऐसी साध मनहि में राखहु । यह बानी मुखतें जिनि भाखहु ॥ हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई । बिना वसन क्यों देहि दिखाई ॥ पुरुष जाति तुम तह का जानों । हा हा यह मुखतें जिनि आनों ॥ तौ तुम पैठी रहेा जलहि सब । वसन आभूषन नाहि चहति अब ॥ तबहि देउं जब बाहिर आवहु । बिनु बाहिर आये नहि

पावहु ॥ कतहो सीत सहति सुकुमारी । सकुच देहु जलही में डारी ॥ करौ कदम व्रत फरनि तुमारी । अब कह लज्जा करति हमारी ॥ लेहु न आनि आपने व्रतकों । मैं जानत या व्रत के व्रतकों ॥ नीके व्रत कीनों तनुगारी । व्रत ल्यायो धरि गिरिवर धारी ॥ तुम मन कामन पूरन करि हों । रास रंग रचि रति सुख भरि हों ॥ यह सुनि कै मन हरष बढायो । व्रज को पूरण हम फल पायो ॥ छांडहु तुम यह टेक कन्हाई । नीर मांझ हम गई जडाई ॥ भूषण सब आपु नही लेहो । चीर कृपा करि हम कों देहो ॥ हा हा लागैं पांय तुम्हारे । पापु होत है जाडन मारे ॥ आजहुतें हम दासि तुम्हारी । कैसें अंग दिखावें नारी ॥ अंग दिखा यहि अंबर पैहो । नातरु वैसेहि द्योस गंवैहो ॥ मेरे कहे निकसि सब आवहु । थोरेहि हमकों भलो मनावहु ॥ मुहा वरी तरुनी मुसुकानी । यह आपुन थोरी करि जानी ॥ जो जो कहौ सो तुम कों सोहै । आजु तुम्हारे पटुतर को है ॥ हमरी पति सब तुम्हरे हाथा । तुमहिं कहा ऐसो व्रजनाथा ॥ तप तनु गारि कियो जेहि कारन । सो फल लग्यो नीप तरु डारन ॥ आवहु निकसि लेहु पट भूषन । यह लागै हम कों सब दूषन ॥ अब अन्तर कत राखति हमसों । बारं बार कहत हौं तुमसों ॥ गोपिनि मिलि यह बात बिचारी । अबतो टेक परे बनवारी ॥ चलहु न जाय चीर अब लीजै । लाज छांडि उनकों सुख दीजै ॥ जलतें निकसि तीर सब आईं । बार बार हरि हरषि बुलाईं ॥ बैठि गई तरुनी सकुचानी । देहु श्याम हम अतिहि लजानी ॥ छांडि देहु यह बात सयानो । वैसेहि करो कही जो बानो ॥ कर कुच अंग ढांकि भई ठाढी । बदन नवाय लाज अति बाढी ॥ देहु श्याम अंबर अब डारी । हा हा दासी सबै तिहारी ॥ ऐसे नहीं बसन तुम पावहु । बांह उठाय अंग दिखरावहु ॥ कह्यो मानि युवतिन कर जोरे । पुनि पुनि युवती करति निहोरे ॥ धन्य धन्य कहि श्रीगोपाल । निश्चय व्रत कीने व्रज बाल ॥ आवहु निकट लेहु सब अंबर । चोली हार तुरंग पटंबर ॥ निकट गई सुनि कें यह बानी । तरुणी नगन अंग अकुलानी ॥ भूषन बसन सबनि कों दीने । चिय के कहत कृपा हरि कीने ॥ चीर आभूषण पहिरें नारी । कह्यो तबहि ऐसें गिरिधारी ॥ तब हंसि बोले कृष्ण मुरारी । मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ॥ तुमहि हेतु यह बपु व्रज धरयो । तुम कारन बैकुंठ बिसरयो ॥ अब व्रत करि तुम नहि तन गारौ । मैं तुमतें कहूं होत न न्यारौ ॥ मोहि कारन तुम अति तपु साध्यौ । तन मन करि मोकों अब राध्यौ ॥ जाउ सदन अब सब बृजबाल । अंग परसि मेटे जंजाल ॥ युवतिन बिदा दई गिरिधारी । गई घरनि सब घोष कुमारी ॥ वस्त्रहरन लीला प्रभु की ह्यो । व्रज तरुनिन व्रत को फल दी हो ॥ यह लीला श्रवणनि सुनि भावै । औरनि सिखवै आपुन गावै ॥ सूर श्याम जनके सुखदाई । दृढ़ताई में प्रकट कन्हाई ॥ ३६० ॥ राग बिलावल ॥ बसन हरे सब कदम चढायो । सोरहसहस गोप कन्यनि के अंग अभूषन सहित चुरायो ॥ अति बिस्तार नीप तरु तामैं लै लै जहां तहां लटकायो । मनि अभरन डार डार प्रति देखत छबि मनही अटकायो ॥ लीला बर पाटंबर सारी सेत पीत चुनरी अरुनायो । सूर श्याम युवतिन व्रत पूरन को फल कदम डारि फल लायो ॥ ३६१ ॥ राग सूहो ॥

आपु कदम चढि देखत श्याम । बसन आभूषन सब हरि लीनें बिना बसन जल भीतर बाम ॥ मूंदति नयन ध्यान धरि हरिको अन्तर्यामी लीन्ही जानि । बार बार सबितासों मांगति हम पावें पति सारंग पांनि ॥ जलतें निकसि आय तट देख्यो भूषन चीर तहां कछु नाहि । इत उत हेरि चकृत भई सुंदरि सकुचि गई फिरि जलही माहि ॥ नाभि प्रयंत नीर में ठाढी थर थर अंग कंपत सुकुमारि । को लै गयो बसन आभूषन सूर श्याम उर प्रीति बिचारि ॥ ३६२ ॥ राग बिलावल ॥ खीजत जात माखन खात । अरुण लोचन भौंह टेढी बार बार जम्हात ॥ कबहुं रुनु झुनु चलत घुटरुन धूर धूसर गात । कबहुं झुकि कें अलक खैंचत नयन जल भरियात ॥ कबहुं तोतर बोल बोलत कबहुं बोलत तात । सूर हरि को निरखि शोभा निमिष तजत तन मात ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ माखन तनिक दैरी माय । खेलत घुटरुन फिरत आंगन धावत चरण चलाय ॥ सुन्दर दंतिया अति बिराजत बोलत हैं तुतराय । मोर मुकुट को शोभा निरखत सूर बलि बलि जाय ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ आज सुफल सखि जनम हमारो । नयन भरि देख्योरी नन्द दुलारो ॥ बाम कपोल बाम भुज दीने । अधर मधर मुरली कर लीने ॥ नयन कुरंग रूप रस मेख्यो । आजु हरि हम अपनों करि लेख्यो ॥ नाद बेद संगीत सुनावै । चलत भुवन सिर सिखर डुलावै ॥ जनम जनम को पूजी मेरी आसा । जगन्नाथ मुख देख्यो माधों दासा ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ बलि गई बाल रूप मुरारि । पांय पैंजनी बजाति रुनु झुनु नचावति नंदनारि कबहूं हरि कों लिये अंगुरिया चलन सिखावति ग्वारि । कबहूं हृदय लगाय हित करि लेति अंचल डारि ॥ कबहुं हरि कों चिते चूमति कबहुं सिखवति गारि । कबहुं ले करि पाछें दुरावति यहां नहीं बनवारि ॥ कबहुं अंग भूषन बनावति राई लोन उतारि । सूर सुर मुनि सबै मोहे निरखि यह अनुहारि ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ नन्दराय के जू द्वारें भोरहि उठि पहाऊ । निर बधि आनंद मूरति निरखि नयन सिराऊ ॥ उज्जल तन धोरी धोंदो राती अंबर सोहै । अरुन घनतें निकसि पूरन चन्द की कबि कोहै ॥ ब्रह्म घनी भूत पूत कर अंगुरिया लायो । मंद मंद चलन सिखवति लोचन फल पायो ॥ रिद्धि सिद्धि निद्धि सहित रमा टहल करति फिरे । अर्थ धर्म काम मोक्ष भीख भिखारिन परे ॥ नंदजू कहत कहा मांगत तवहीं टेरि सुनाउं । नंद दास नंदलाल को नेकुउ तीर न पाउं ॥ ५ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत श्याम ग्वालन संग । सुबल हल धर अरु श्री दामा करत नाना रंग ॥ हाथ तारी देत भाजत सबै करि करि होड़ । बरजे जु हलधर श्याम तबही चोट लागै गोड़ ॥ तब कह्यो मैं दौरि जानत बहुत बल मो गात । मेरी जोरी है श्रीदामा हाथ मारे जात ॥ बोलि तबै उठे श्री दामा जाहु तारी मारि । आगें हरि पाछें श्रीदामा धरयो श्याम हंकारि ॥ जानि कें मैं रह्यो ठाढो कुवत कहां तुव मोहि । सूर श्याम खीझे सखनि सों मने हों कोनों तोहि ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ मैयो मैं नहिं माखन खायो । ख्याल परे ए सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो ॥ देखि तुही छींके पर भाजन ऊंचे धर लटकायो । हों जु कहत नान्हे कर मेरे सो कैसें करि पायो ॥ मुख दधि पोंछि बुद्धि एक कीनी दोना पाछें दुरायो । डारि साटी मुसिकाति यशोदा श्यामहिं कंठ लगायो ॥ बाल बिनोद

भाव करि मोह्यो माता मनहि रिझायो । सूर दास यह यशुमति को सुख देवनि दुर्ल्लभ गायो ॥ ७ ॥ राग बिलावल ॥ देखो माई या बालक की बात । बन उपबन सरिता सब मोहे देखत सांवल गात ॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठि करि माखन खात । पीतांबर वह सिरतें ओढ़त अंचरदे मुसिकात ॥ तेरी सौंह कहा कहूं उरहन देत लजात । जब हरि आवत तेरे आगें सकुचनि कह्यो न जात ॥ कोंन कोंन गुण कहों श्याम के नेक न काहू डरात । सूर श्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा ए बात ॥ ८ ॥ राग बिलावल नेक मेरे बारे कान्ह छांडिदे मथनियां । देखि देखि सुख लेति नंद जू की रनियां ॥ कंठ बघूली सोहै नाक नथुनियां । नयनन तें नीर मानो मोतिन के मणियां ॥ नेकु रहो देउ माखन मेरे प्राण धनियां । आरि जिनि करो मेरे छगन मगनियां ॥ सुर नर मुनि काहू के ध्यान न आवनियां । सूर सुत देखि रानी भूली धाम धनियां ॥ ९ ॥ * * * * *

॥ राग कल्पद्रुम नित्य कीर्त्तनान्तर्गत ॥

॥ राग बिलावल समाप्तम् ॥

॥ अथ सूरसागर राग सागर संग्रहकृत ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

॥ राग सागरोद्भवतथा बधाई राग कल्पद्रम प्रारम्भ ॥

॥ अथ मंगला चरण ॥

॥ श्री गोपीजनवल्लभायनमः ॥

॥ राग कल्याण ताल तिताला ॥ पद पंकज बंदु चिभुवन स्वामी । सब घट व्यापक जगत उधारन सुर नर मुनि जाको पार न पामी ॥ मूक करे बाचाल पंगु गिरि लंघे अंधरे कोसब कछु दरसामी । सूर दास प्रभु त्रास पुजावो देहो सुमति हरि सखडा गामी ॥ रागिनी धनाश्री ताल धीमा तितारा ॥ चरण कमल बंदु हरि राई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधरे को सब कछु दर साई ॥ बहिरो सुने गूंग पुनि बोलै रंक चलैसिरछत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणा मय बारं बार नमो पद जाई ॥ श्रीभागवत वर्णन ॥ श्री हरि भक्ति महात्म ॥ ॥ राग सारंग ॥ ताल धमाल ॥ कहो शुक श्री भागवत बिचार । हरि की भक्ति युग युग बरतें आन धरम दिन चार ॥ चिंता तजो परीक्षित राजा सुनि शुक शीष हमारि ॥ कमल नयन की लीला गावत कटे अनेक विकारि ॥ खट्वांग दिलीप मझरत में तरि गये तुमरे हैं दिन सात सुसार । दृढ़ विश्वास करो उर अन्तर हरि को नाम अधार ॥ सतयुग सत चेता तप कीये द्वापर पूजा सार । सूर भजन कलि केवल कीजै लज्या कान निवार ॥ ॥ अथ दशम कथा प्रारम्भ ॥ कथा प्रसंग वर्णन ॥ रागिनी आसावरी ताल धमाल ॥ बाल बिनोद भावती लीला अति पुनीत मुनि भाषीहो । सावधान है सुनो परीक्षित सकल देव मुनि साखीहो ॥ कालिन्दी के कूल बसत है मधुपुरि नगर रसालाहो । कालनेम उग्रसेन बंश कुल उपजे कंस भुपालाहो ॥ आदि ब्रह्म जननी सुर देवी नाम देवकी बालाहो । दई

बिवाह कंस बसुदेवहि अघ भंजन उर शालाहो ॥ हय गज रतन हेम पाटंबर आनंद मंगल चाराहो । समुदित भई अनाहद बानी कंस कान झनकारा हो ॥ याके गर्भ अवतरे जो सुत करिहै प्रान प्रहाराहो । रथतें उतरि केस गहि राजा कियो खड्ग पटतारा हो ॥ तब बसुदेव दीन ह्वै भाषे पुरुष न चिय वध करईहो । मोकों भई अनाहद बानी तातें शोच न टरईहो ॥ आगे वृक्ष फले जो विष फल वृक्ष बिनिकि निसरई हो । याहि मारि तोहि और बिवाहूं अब शोच को मरईहो ॥ बालक काज धर्म जिनि छांडौ रायन ऐसी कीजैहो याके गर्भ औतरें जे सुत सावधान ह्वै लीजैहो ॥ बाचा बन्ध कंस करि छांडे तब बसुदेव प्रतीजेहो । मानहुं रटगी चरत गह बनमें नयन नीर उर भीजेहो ॥ पहिलौ पुत्र देवकी जायो लै बसुदेव दिखायो हो । बालक देखि कंस हंसि दीन्हों सब अपराध क्षमायो हो ॥ कंस कहा लरिकाई कीनी कहि नारद समुझायो हो । जाको भरम करत हो राजा सति पहलेही आयोहो ॥ यह सुनि कंस पुत्र फिरि मांग्यौ यहि विधि सबन संघारयो हो । तब देवकी भई तनु व्याकुल कहंलौं प्राण प्रहार्यो हो ॥ कंस वंसको नास करतु है कहंलौं जीव उबारौ हो । यह दुख कबहीं मिटि हौ श्रीपति अरु हों काहि सम्हारौ हो ॥ धेनु रूप धरि पुहमि पुकारी शिव विरंचि के द्वाराहो । सब मिलि गये जहां पुरुषोत्तम सेवत अगम अपाराहो ॥ क्षीर समुद्र मध्य तें यों कहि दीरघ बचन उचारा हो । उधरौ धरनि असुर कुल मारौं धरि नर तनु अवतारा हो ॥ छूछो मूसक पवन प्रानि ज्यों तैसोई जनम बिकारो हो । पाखंड धरम करत है पांवर नाहि न चलत तुमारी हो ॥ मारग छांडि अमारग सों रतिबुध बिपरीत बिचारी हो । अमृत छांडि बिषय बिष अचवत देत अधम प्रति गारीहो ॥ सुर नर नाग तथा पशु पंछी सबको आयुस दीनोंहो । गोकुल जनम लेउ संग मेरे जो चाहत सुख कीनोंहो ॥ जिहि माया विरंचि शिव मोहे सोई ब्रह्म कर चीन्हों हो । देवी गर्भ आकर्षि रोहणी आपु बास हरि लीन्हों हो ॥ हरि के गर्भ बास जननी को बदन उजारौ लाग्यौ हो । मानहु शरद चन्द्रमा प्रगट्यौ शोच तिमिर तन भाग्यौ हो ॥ तिहिछन कंस आनि भयो ठाढो देखि महातम जाग्यौ हो । अबकी बेर मेरो अरि आयो आपु अपनपो त्यागो हो ॥ दिन दश गये देवकी अपनों बदन निहारन लागी हो । कंस काल जिय जानि गर्भ में अति आनन्द सभागी हो ॥ सुर नर देव बन्दना आये सोवत ते उठि जागी हो । अविनाशी को आगम जान्यों सकल देव अनुरागी हो ॥ कछु दिन गये गर्भको आगम उर देवकी जनायो हो । कासों कहों सखि कोऊ नाहीं चाहत गर्भ दुरायो हो ॥ बुध रोहणी अष्टमी संगम बसुदेव निकट बुलाये हो । सकल लोक नायक सुखदायक अजन जन्म धरि आये हो ॥ माथे मुकुट सुभग पीताम्बर उर सोहत भृगु रेखाहो । शंख चक्र भुज चारि विराजत अति प्रताप शिशु भेषा हो ॥ जननी निरखि भई तन व्याकुल यह न चरित कहुं देख्यो हो । बैठो सकुच निकट प्रति बोले दुहुंन पुत्र मुख पेख्यो हो ॥ सुनों देव एक आन जनम को तोसों कथा चलाऊं हो । तुम सांग्यौ मैं दयो नाथ ह्वै तुमसों बालक पाऊं हो ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक योगजापहुं न आऊं हो । भक्ति बछल मेरोहै बानों बिरदहि कहा लजाऊं हो ॥ यह कहि माया मोह अरुझाये शिशु ह्वै रोवन लागे हो ।

अहो बसुदेव जाउ लै गोकुल तुमहौ परम सभागे हो ॥ घन दामिनि धरनी मिलि गरजे महा कठिन दुख भारे हो । लै बसुदेव धसे दहि सामहि तोनि लोक उजियारे हो ॥ आगे जानु जमुना जल बूड़ौ पाछें सिंह दहाड़े हो । जानु अंध कटि ग्रीव नासिका बसुदेव मनहि विचारे हो ॥ चरन प्रसारि परसि कालिन्दी तरवा नीर ते आगे हो । शेष सहस फन ऊपर छायो गोकुल को अतिभागे हो ॥ पहुंचे जाय महरि मंदिर में मनहि न शंका कीनो हो । देखि पर्यंक योगमाया बसुदेव गोद करि लीनो हो ॥ तुरतहि वेग मधुपुरी पहुंचे सकल प्रकट पुर कीनो हो । देवो गरभ जाइ है कन्या रायन बात प्रतीनो हो ॥ यह सुनि कंस खड्ग लैधायोतब देवो आधीनो हो । यह कन्या मोहि बकसि बन्धु तू दासी जानि कर दीनी हो ॥ क्रूर कंस सम्बंध विनाशन समझे बिनरिस कीनीहो । नहि जानिये होय कुल कोनों अविगत गति किन चीन्ही हो ॥ पकरत कन्या गई अकासहि दोउ भुज चरन लगाई हो । गगन गई बोली सुर देवी कंस मृत्यु नियराई हो ॥ जैसें मीन जाल में क्रीडत गनेन आपु लखाईहो । तैसोई कंस काल दूक्यो है ब्रजमें जादौ राईहो ॥ जैसे व्याल बेग को ढूके बेगइ चारों ताकेहो । जैसे सिंह आपु मख निरखे परे कूप में डाकेहो तैसेई कंस परम अभिनायक भूल्यो राज सभा केहो ॥ गतिकी गति मति तेरी जाके हाथ मृत्यु है ताकेहो । यह सुनि कंस देवको आगे रहे चरन सिरनायेहो ॥ बड़ अपराध करे सिसुमारे लिख्योन मे यौ जायेहो । काके शत्रु जन्म लीनों है बूझहु सतो बुझाई हो चारि प्रहर सुखसेजपर निशनेकहुं नींद नहिं आईहो । देश देश के दूत बुलायो कासों है कुलकैसोहो ॥ अब गति अजर अजीत अमरना करता को बल जैसोहो । दिन हीं दिन सो पुरुष होतहै बढत असुर बल वैसोहो ॥ बूझत नहि तृण मार बुझायो पलिका मांखन जैसोहो । जागी महरि पुत्रमुखदेख्यो आनन्द तूर बजाईहो ॥ कंचन कलश होम द्विज पूजा चन्दन भवन लिपाई हो । बरन बरन रंग ग्वाल बने मिलि गोपिन मंगल गायोहो ॥ बड़ विधि व्योम कुसुम सुर बरषत फूलन मंडप छायोहो ॥ आनन्द भरिसरि करत कुतूहल प्रेम मगन नर नारीहो । अभय नृभय निशान बजाव त देत महरिको गारी हो ॥ नांचत महरि मुदित मन कीने ग्वाल बजावत तारीहो । सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारीहो ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ आनन्दे आनन्द बढ्यो अति । देव नि दिवि दुंदुभी बजाई सुनि मधुपुरी प्रगटे जादौ पति ॥ विद्याधर किन्नरी कंठधर उप जावत अनुराग अमित गति ॥ गावत गगन धरनि धुनि सुनियत गरजत घनतेहि काल जतन जति । बरषत सुमन सुदेस सरस सुर जय जय करत मानत रति ॥ शिव विरंचि इन्द्रादि सनक मुनि फूले सखन समात मुदित मति ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ अहो पति कछु उपाव सो कीजै । जेहि उपाव दुष्ट बालक अपनों राखि कंससों लीजै ॥ मनसा बाचा करमना नरपति कह्यो न पतीजै । बुद्धि बल छलकरि जतन जुगति यह काढि अनतही दीजै ॥ नाहिन इतनों भागस यह रस नित लोचन पुट पीजै । बालक गए कहा तुम करिहों तब बहुते दुखभीजै ॥ कंस दुष्ट नहि बूझे दुख सुख दूत कोउ जु पतीजै । तातें कहति पुकार अबहिंते पाछे कहा ज्यों कीजै ॥ सुनहु जो पिय ऐसे सुत को मुख निरखि निरखि

सुख लीजै । सूरदास प्रभु मोहन मूरति कैसे जानै दीजै ॥ ३ ॥ राग बिहागरो ॥ सुनु देवकी को हितू हमारे । असुर कंस अपबंस विनाशन सिर पर बैठे रखवारे ॥ ऐसोको समरथ त्रिभवन सैं जो यह बालक नेक उबारे । खड्ग धरे आयो सो देखन अपने कर छिन मांह पछारे ॥ यह सुनतहि अकुलाय गिरी धरनी नयन नीर भरि भरि दोऊ ढारे । दुखित देखि वसुदेव देवकी प्रगट भये धरिकै भुज चारे ॥ बोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मोते उबरै तब मोहि मारे । अति दुखमें सुख मानहि सूरको प्रभु नन्द भवन सिधारे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ देवकी मन मन चकित भई । देखउ आय पुत्र मुख काहेन ऐसी कहूं देखी न दई ॥ सिरपर मुकुट पीत उपरना कहु पद उर भुज चारि करे । पूरब कथा सुनाइ कही हरि तुम मांग्यो एहि भेषधरे ॥ छोरे निगड सोवाये पहरू द्वारे के पाट उघारयो । तुरतमोहि गोकुलहि जाऊ लै यह कहतहिं शिशु भेषधरयो ॥ तबहीं रोइ उठे वसुदेव सुनि हरषवंत नन्द भवन गए । बालक धरि लै सुर देवी को आय सूर मधु पुरी भए ॥ ५ ॥ राग केदारो ॥ भादौं की राति अंधियारी । द्वार कपाट कोटि भटको के दुऊंदिसि कन्त कंस भय भारी ॥ गरजत मेघ महा डरलागत कीच बडी जमुना जल कारी । तबतें इहै सोच जिव मेरे क्यों दुरिहै शशि बदन उज्यारी ॥ कंस पिय बोल बचन करि राखी बरु देत है न ता दिन जिय मारी । कहि जाकौ ऐसो सुत बिछुरे सो कैसे जीवै महतारी ॥ कठिन बिलाप देवकीसों कहि दीन दयाल सीत भै हारो । छुटिगए निगड तबहि गए गोकुल सूर सुमति है विपति नेवारी ॥ ६ ॥ सोरठ ॥ हरि मुख देखिहो बसुदेव । कोटि काम सरूप बालक कोउन पायो भेव ॥ झरे तारा परे पहरू नीद आई गेह । दामिनी चहुं ओर चमके सघन बरषे मेह ॥ चारि भुजको चारि आयुध निरखिके न पत्याउ । अजहुं मन परतीत नाहीं नन्द घर लेजाउ ॥ सिंह आगे शेष पाछे नदी है भरपूरि । नासिका लोनोर आयो पाछ पैलो दूरि ॥ गोदते हुंकार कीनो जमुन जान्यो भेव । पुलकि के हरि चरण परसी तरि गए बसुदेव ॥ महरि ढिग मन जानि राखे अमर अति आनन्द । सूरदास हुलास हृदहित प्रगटे आनन्द कन्द ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ गौरी गणेश सुर विनउं हो देवी सारद तोहि । गाउं हरि जूको सोहरो मन आनन्द आवै मोहि ॥ बधावोहरि जू को मन रहिवो रानी जाये हैं मोहन पूत । आनन्दे सुर नर मुनि भये नन्द सपूत ॥ आठ मासो चंदन घिवो हो नवमे घिवो कपूर । दशए मास मोहन भये मेरे अंग नारी वाजे आछेतूर ॥ हरषी पार परोसनी नए हरष नगर के लोग । हरषों सखिय सहेलरी सब आनंद भयो शुभ जोग ॥ बाजन बाजैं गह गहे मिलि बाजैं मंदिर भेरि । मालिनी बांधै तोरनो मेरे अंगना बीरोपै आछे फेरि ॥ अनगढ़ सोनो ढोलना गढि ल्यायो चतुर सुनार । बीच बीच हीरालगे नंद लाल गरे को हार ॥ जसुमति भाग सुहागिनी जिनि जायो हरिसो पूत । करउ ललन को आरतीरी अनु दधि कादौं सूत ॥ नावनि बोलउ नवरंगी लै आव महा बर बेग । लाखटका अरु भूमक सारी देउं दाइ को नेग ॥ अगर चंदन को पालनो गढि इंगुर ढार सुढार । लै आयो गढि ढोवनो विश्व कर्मा सो सुति हार ॥ धन्य सुदिन धन्य सुबरि धनि धन्य सु जोतिक जाग । धन्य धन्य

मथुरापुरी हो धनि धनि महरि के भाग ॥ धनि धनि माता देवकी धन्य धन्य वसुदेव सुजाम । धनि धनि भादौं अष्टमी धनि जन्म लियो जब कान्ह ॥ काढ़ड़ कोरे कापरा हो काटो घीको मौनि । जाति भांति पहि राइके सब समदि छत्तिसौ पौनि ॥ काजर रोरी आनौरी मिलि करड़ छटी को चार । ऐपन कीसी पूतली सब सखियनि कियो है सिंगार ॥ क्रीट मुकुट सोभा बनी सुभ अंग अंग बनी बन माल । सूरदास प्रभु गोकुल जनमें मोहन मदन गोपाल ॥ ८ ॥ राग असावरी ॥ द्विज भयो महरि के पूत तब यहबात सुनी । सुनि आनन्दे सब लोक गोकुल गुनित गुनी । अति पूरब पूरे पुण्य रूप कुल अटल थुनी । ग्रह लग्न नच्छत्र बल सोधि कीन्हीवेद धुनी ॥ धुनि सुनि धाईं ब्रजनारि सहज सिंगार किए । तनु पहिरि नूतन चीर कज्जल नयन दिए ॥ कसि कंचुकी तिलक लिलार सोभित हार हिए । कर कंकन कंचन थार मंगल साजिए ॥ शुभ श्रवननि तरल तरि बनावेनी सिथिल गुहीं । सुर बरषत सुमन सुदेश मानौ मेघ फुहीं । उर अंचल उडतन जानहिं सारी सुरंग सुही । मुख मंडित रोरी रंग सें दुर मांग छुही । ते अपने अपने मेर निकसी भांति भली । मानो खाल सनिनकी पांती पिंजरा चूरि चली । गुण गावतहि मंगल गीत मिलि दश पांच अली । मानो भोर भए रवि देखि फूली कमल कली । पिय से पहिलेहि पहुंचीं जाइ अति आनंद भरी । खई भीतर भवन बुलाय सबै शिशु पाय परी । एक बदन उघारि निहारे देहि असीस खरी । चिरंजीवो जसोदा नंदन पूरन काम करी । धनि धन्य महरिकी कोखि भाग सुहाग भरी । जिन जायो ऐसो पूत सब सुख फलनि फरी । थिर थाप्यो परि बार मनकी झूलहरी । सुनि ग्वाल नि गाय बछोरि बालक बोलि लए । गुहि गुंजा घसि धातु अंगनि चित्र ठए । सिर दधि माखन माट गावती गीत नए । कर झांझ मृदंग बजावत वा नंद भवन गए । मिलि नाचत करत कलोल छिरकत हरद दही । मानो बरषत भादों मास नदी घृत दूध बही । जहां जहां चित जाइ कौतुक तहीं तहीं । सब आनन्द मगन गोपाल काहू बदत नहीं । एक धाईं नन्द पै जाहिं पुनि पुनि पाय परैं । एक आप आपहीं माझ हंसि हंसि अंक भरैं । एक अम्बर सकल उतारि देत नहिसंक करै । एक दधि अछत अरु दूब सब निके शीश धरै । तबन्हाइ नन्द ठाढे भये अरु कुस हाथ लिए । धंसि चंदन चारु मंगाइ विप्रनि तिलक किए । नादी मुख पित्र पुजाय अंतर सोच हरे । गुरु जन द्विज पहिराय सबनि के पाय परे । गइआं गनी न जाहिं तनुनि स बछ बढी । ते चरहिं जमुन के कछ दूने दूध चढी । खुर तांबे रूपे पीठ सोने सींग मढी । ते दीन्ही द्विजनि अनेक हरषि आशीस पढी । तब अपने मित्र सुबंधु हंसि हंसि बोलि लए । मथि मृग मद मलय कपूर सबनि के तिलक दए । उर माला पहिराय बसन बिचित्र ठए । दान मान परिधान पूरण काम किए । बर मागध बंदी सूत आंगन भवन भरे । ते बोलहि जैसे नाम कोऊ न बिसरि परे । जिनि जो जाच्यो जाय रस नंदराय खरे । मानो बरषत मास अषाढ दादुर मोर रटे । तब अंबर और मंगाय सारी सुरंग घनी । तेदीन्ही बधुनि बुलाइ जैसी जाहि बनी । अति आनन्द ।

ते बहुरि निजु गृह गोप धनी । निकसी देत असीस रुचि अपनी अपनी । घर घर भेरि मृदंग पटह निशान बजे । तब बांध्यो बंदनवार ध्वजा पर कलस सजे । ता दिन ते वै लोग सुख संपति न तजे । कहि सूर सबनि की यह गति जे हरि चरन भजे ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ गोकुल प्रगट भए हरि आय । असुर उधारन असुर संघारन अंतर जामी त्रिभुवन राय । माथे पर धरि बसुदेव ल्याए नंद महर घर गए पहुंचाय । जागी महरि पुत्र मुख देखत पुलक अंग उर में न समाय । गद्गद कंठ बोलि नहिं आवै हरष वंति ह्वै नंद बुलाय । आवहु कंत देव परसन भये पुत्र भयो मुख देख्यो धाय । दौरि नंद गै सुत मुख देख्यो सो शोभा मोपै बरनि न जाय सूर दास पहिलेहि यह माग्यो दूध पिवा बन जसोमति माय ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ नन्द राय के नव निधि आई । माथे मुकुट श्रवन मनि कुंडल पीत बसन भुज चारु सुहाई । बाजत ताल मृदंग यंच गति चरचि अरगजा अंग चढाई । अछत दूब लिए सिर बंदत घर घर बंदनवार बंधाई । छिरकत हरद दही हिय हरषत गिरत अंक भरि लेत उठाई । सूर दास सब मिलत परसपर दान देत नहि नंद अघाई ॥ ११ ॥ राग गूजरी ॥ आजु बन कोऊ बेजिनि जाई । सौ गैआ बछरा समेत सब आवहु चित्र बनाई । ढोटा हैरे भयो महर के कहत सुनाय सुनाई । अपने अपने मन को चिंत्यो नैननि देखैं आई । एक फिरत दधि दूब बंद बत एक चलत उठि धाई । एक परसपर कहत बधाई आनँद उरन समाई । तन किशोर अरु बालक चढे चौगुने बाई । सूर दास प्रभु गोकुल जनमे गनत न रानो राई ॥ १२ ॥ राग रामकली ॥ हों एक नई बात सुनि आई । महरि जसोदा ढोटा जायो घर घर होत बधाई । द्वारे भीर गोप गोपिनि की महिमा बरनि न जाई । अति आनन्द होत गोकुल में रतन भूमि निधि छाई । नांचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई । सूर दास स्वामी सुख सागर सुंदर श्याम कन्हाई ॥ १३ ॥ राग राम कली ॥ हौं सखि नई चाह एक पाय उपज्यो पूत कन्हाई । बाजत ब्रज निसान यंच बिधिरंजमुरज सहनाई । महरि महर ब्रज हाट लुटावत आनन्द उर न समाई । चलहु सखी हमहूं मिलि जैए बेगि करौ अतुराई । कोउ भूषन पहिरै कोउ पहिरत कोउ ऐसैहि उठि धाईं । कंचन थार दूब दधि रोचन गावत चलीं बधाई । भांति भांति बनि चलीं जुबति गण यह उपमा मोपे नहिं आई । अमर बिमान चढे सुर देखत जैधुनि शब्द सोहाई । सूर दास प्रभु भगत हेत हित दुष्टनि के दुख दाई ॥ १४ ॥ राग गूजरी ॥ सखी री काहे को गहरु लगावति । सूधौं कहो इतनो सुख सुनिकै क्यों नाहि न उठि धावति । आजु हि सुख बिधाता कीनी मन जुहुती अति भावति । सुतको जनम जसोदा के गृह तालगि तुमहिं बुलावति । कनक थार भरि लै दधि रोचन बेगि चलौ मिलि गावति । सांचहु सुदिन नन्द नायक को होनाहिन बौरावति । आनन्द उर अंचल न सम्हारति सोस सुमन बरषावति । सूर दास शोभा तेहि औसर जहां तहां ते आवति ॥ १५ ॥ राग कान्हरो ॥ गोपी गावहि मंगल चार बधावो ब्रज राज के ।

अब भयो अमर सब काज बधावो ब्रज राज के । रानी जायो है मोहन पूत बधावो ब्रज राज के । बहुत नारि सुहाग सुन्दरि ओर घोष कुमारि । सजन प्रीतम नाउ ले ले देहिं परसपर गारि । आनंद अतिसय भयो घर घर निर्त्त ठांवहि ठांव । नन्द द्वारे भेट लैबे उमड्यो है गोकुल गांव । साथिए श्यामा देहि द्वारे सात सीक बनाय । नव किशोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति जसोदा जू के पाय । चौक चंदन लीपि के आरती धरी संजोय । कहति घोष कुमारि ऐसो आनंद जो नित होय । करि करि अलंकृत गोपिका पहिरे अभूषन चीर । गाय बछ संवारि ल्याए ग्वालनि की भई भीर । मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल । हरद अछत दूब दधि दै तिलक करहिं ब्रज बाल । एक हेरी देहिं गावहिं एक भेटहिं धाय । एक एक न गनत काहुहि एक खेलावत गाय । एक वृद्ध किशोर बालक एक योबन जोग । कृष्ण जनम सुप्रेम सागर क्रीडत सब ब्रज लोग । प्रभु मुकुंदके हेत नौतनहिं घोष विलास । देखि ब्रजकी संपदा को फूलेहैं सूरदास ॥ १६ ॥ रागगौरी ॥ आजु बधावो नंदराजके हो गोपीगावहिंमंग लचार । आईजु मंगल कलस लैकै ताऊपर फलडार ॥ अछत रोचन दूबलै बलि बहु बिधि फल भरे बार । घर घरनिते गावत चलीं ब्रजबधू झुंड अपार ॥ चलो सब मिलि महरके घर देखन नन्द कुमार । देखि मोहन आस पूरी सबै देत असीस । नन्दमहरि के लाडिले हो जिवहु कोटि बरीस ॥ महरि दान जु बहुत दीनों अरु दिवो नन्दराय । ऐसो सुख देख्यो सदा जन सूरदास कहै गाय ॥ १७ ॥ राग गौरी ॥ धनि धनि नन्द जसोमति धनि जग पावनरे । धनि हरि लिये अवतार सुधनि दिन आवनरे ॥ दशए मास भौ पूत जु मुनिन सोहावनरे । शंख चक्र सारंग चतुर्भुज भावनरे ॥ बनि बनि ब्रज सुन्दरि चलि गाइ बधावनरे । कनक थार रोचन दधि तिलक बन्दावनरे ॥ नन्द घर यह चलि गइ ये महरि जहं पावनरे । पाइन परी सब बधुवा महरि बैठावनरे ॥ जसुमति तुव धनि कोखि जहां रहे बावनरे ॥ भलेहिं सुरन भौ पूत अमर अमरावनरे । जुग जुग जीवहु कान्ह सबनि मन भावनरे ॥ गोकुल हाट बजार करत जुलुटावनरे । घर घर बाजु निसान नगर जुरुवावनरे ॥ अमर नगर उछाह अपसरा नचावनरे । ब्रह्म लीन्ह अवतार दुष्ट के दावनरे । दान सबै यों देत बरष जनु सावनरे ॥ मागध सूत भाट धन लेत जरावनरे । चोवा चंदन अबीर गलिन छिरकावनरे ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक गगन भरावनरे । कश्यप ऋषि सुरतात सुलगन गनावनरे ॥ तीनि भुवन आनन्द कंसहि डरावनरे । सूरदास प्रभु जनमें भक्तहु लसावनरे ॥ १८ ॥ राग काफी ॥ आजुहो निसान बाजै नन्द महरिकै । आनन्द मगन नर गोकुल सहरकै ॥ आनन्द भरि जसोदा उमगी अंग न समात आनंदित भईं गोपी गावति चहरकै ॥ दूध दधि रोचना कनक थारलै लै चलि मनो इंदु बधू जुरि पांतिन वहरकै । आनन्दित भए ग्वाल करत विनोद ख्याल भुज भरि भरि धरि अंकम दै बरकै ॥ आनन्द मगन धेनु थनखवै पै फेन उमग्यो जमुना जल उछलि लहरकै अंकुरित तरुपात उकटि रहे जे गात बन बेलि प्रफुल्लित कलिन कहरकै ॥ आनंदित विप्र सूत मागध जाचक गन उमगे अशीस देत तरह तरहकै । आनन्द मगन सब अमर गगन

छाए पुष्प बिमान चढे पहर पहरकै । सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भये सन्तनि हरष दुष्ट जनम न धरकै ॥ १९ ॥ राग आसावरी ॥ धन्य जसोदा भाग तिहारो जिनि ऐसो सुत जायोहो । जाके दरस परस सुख तन मन कुलको तिमिर नसायोहो ॥ बिप्र सुजन बन्दी औ चारन सबै नंद गृहआयेहो । करि तन सुभग हरदि दधि छिरके हरषि अशीस बधायोहो ॥ गरगनि रूप कह्यो सब लच्छन अबिगत हैं अबिनासीहो । सूरदास प्रभु लगन सुनि सुनि आनंदित ब्रजवासीहो ॥ २० ॥ राग आसावरी ॥ आजु बधावो श्री ब्रज राज के जायोहै मोहन पूत । कृष्णपक्ष भादौं निसि आठैं नक्षत्र रोहिणी शुभ जत ॥ बहुत नारि सोहाग सुन्दरि और घोष कुमारि । सजन प्रीतम नाम लै लै देत परसपर गारि ॥ आनंद अतिसै भयो घर घर निर्त्तत ठांवहि ठांव । नंद दुआरे भेट लै लै उमड्यो है गोकुल गांव ॥ द्वार साथिया देहि श्यामा सातसीक बनाय । नव किशोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति जशोदा पाय ॥ चारु चंदन लीपके जो आरति धरयो संजोय । कहत घोष कुमार आनंद मंगल जोनत होय ॥ मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल । हरद अच्छत दूध दधि लै तिलक करत ब्रजबाल ॥ एक हेरी देहि गावहि एक भेटहि धाय । एक एक नगिन तन काहू एक खेलावत गाय ॥ एक वृद्ध किशोर बालक एक जोबन योग । कृष्ण जनमसु प्रेमसागर क्रीडतहैं ब्रजलोग ॥ प्रभु मुकुंद को होत नौतन करत भोग बिलास । देख ब्रजकी संपदा जन फूलेहैं सूरदास ॥ २१ ॥ राग काफी ॥ पालनो अति परम सुन्दर गढि ल्याउरे बढैया । सीतल चंदन कटाउ धरिखरादि रंगलाव बिबिधि चौंकरी बनाव पचरंग रेसम लगाव हीरा मोती लाल मढैया ॥ बिश्व कर्मा सुति धार रच्यो है काम सोनार मनि गनलागे अपार नंदमहर सत काज बढैया । आनि धरयो नन्दद्वार अतिहीं सुन्दर सुढार ब्रजवधू देखें बार बार शोभा नहीं वार पार धनि धनि धन्य है गढैया ॥ पालनों आन्यों अति मन मान्यों नीको सुदिन धरैया ॥ सखियनि मंग लगवाय रंग महलमैं पौढ्यो है बारो कन्हैया । सूरदास प्रभु की सैया जसुमति नन्द-रानी जोई मांगत सोइ लेत बधैया ॥ २२ ॥ राग आसावरी ॥ कनक रतन मणि पालनों गढ्यो काम सुतिहार । बिबिधि खिलोना भांतिके गज मुक्ता चहुं धार ॥ जननी एव टिन्हवादके अति क्रमसों लएगोद । पौढाए पट पालने सिसु निरखि जननि मन मोद ॥ देखो नंदलाला । मात सुकृत फल नंदलाला ॥ अति कोमल दिन सातके अधर चरन कर लाल । सूर श्याम छवि अरुणता निरखि हरष ब्रजबाल ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ जसोदा हरि पालनों झुलावें । हल रावें दुलराइ मल्हावें जोइ सोइ कछु गावें ॥ मेरे लालकों आव निदरिया काहेन आनि सुवावे । तूकाहेन वेगिरी आवै तोको कान्ह बुलावै ॥ कबहुं पलक हरि मूंदि लेतहैं कबहुं अधर फरकावै । सोवत जानि मौन ह्वै कै रही करि करि सैन बतावै ॥ यहि अन्तर अकुलाय उठे हरि जसुमति मधुरे गावै । जो सुख सूर सुर मुनि दुर्ल्लभ सो नित जसुमति पावे ॥ २४ ॥ राग जैतश्री ॥ कन्हैया हालरो होंवारी । तेरे बदन इंदु पर अति छबि अलसनि भारी ॥ कमल नयन को कपट किए नाइ एहि ब्रज आवैगो । पालागों बिधिताहि बकीज्यों तूंतेहि तुरत बिगो ॥ सुनि

देवता बड़े जग पावन तूपतिया कुल को । पै पूजिहों बेगि यह बालक करिदे मोहि बडो को ॥ यह सुख सूरदास के नयननि दिन दिन दूनोहो । दुतिया के शशिलौंहि बढै शिसु देखै जननी गूनोहो ॥ २५ ॥ राग जैतश्री ॥ मै घरको ढाढी बाहिको मोसरि करै न आन । सोई लेहों जोई मन भाई नंद महरकी आन ॥ धन्य नंद धनि धन्य जसोदा धनि धनि जायो पूत । धन्य तुम ब्रजबासी धनि धनि आनंद करत अकूत ॥ घर घर होत आनंद बधाई जहं तहं मागध सूत । मणि माणिक पाटंबर अंबर लेत न बनत बहूत ॥ है ग सहन भंडार दिए सब फेरि भरे सैभांति । तबहीं देत तबहि फिरि देखत सम्पति घरन असाति ॥ ते मोहि मिले जात घर अपने मै बूझो तबजाति ॥ हंसि हंसि दौरि मिले अंकम भरि हमतुम एकै ज्ञाति ॥ सम्पति देउ लेउ नहि एकौं अन्न वस्त्र केहि काज । जो मैं तुमसों मांगन आयो सोइ लेहौं नन्दराज ॥ अपने सुतको बदन देखावउ बड़े महर सिर ताज । तुम साहिब मैं ढाढी तेरो प्रभु मेरे ब्रजराज ॥ चंद्र बदन दरसन संपति दै सौ लै मै घर जाउं । जो संपति सन कादिक दुर्लभ सो सब तुम्हरे ठाउं । जाकौ नेति नेति श्रुति गावत तेई कमल पद ध्याउं । हों तेरो जनम जनमको ढाढो सूरज दास कहाउं ॥ २६ ॥ राग जैत श्री ॥ नंदजु मेरे मन आनंद भयो हो गोबर्द्धन तें आयो । तुम्हरे पुत्र भयो हो सुनिके अति आतुर ह्वै धायो । बंदी जन अरु भिक्षुक सुनि सुनि जहां तहांते आए । एक पहिलेही आसा लागी बहुत दिननि के छाए । ते पहिरें कंचन मनि भूषन नाना वसन अनूप । मोहि मिले मारग मैं मानो जात कहूं के भूप । तुमतो परम उदार नंदजी जिन जो माग्यो सो दीन्हों । ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सरिसा टोकीन्हों । कोटि देहु तो परत्यो रहै गो बिनु देखे नहि जैहों । नंदराय सुनि बिनती मेरी तबहीं बिदा भले ह्वै हों । दीजै बेगि कृपा करि मोकौं जो हौं आयो मांगन । जसुमति सुत आपने पायन चलि खेलत आवै आंगन । मदन मोहन मैया कहि टेरै वह सुनि कै घर जाउं । हों तौ तुमरे घरको ढाढी सूर दास मोहि नाउं ॥ २७ ॥ राग बिलावल ॥ महर भवन ऋषि राज गयो । चरण धोय चरणोदक लीन्हों अरघासन करि हेत दयो । धन्य आजु बड़ भाग हमारे ऋषि आए अति कृपा करी । हम कहा धन्य धन्य नंद जसुदा धनि यह ब्रज जहं प्रगट हरी । आदि अनादि रूप रेखा नहिं इनते नहिं प्रभु और बिवो । देवकी उर अवतार लेन कह्यो दूध पिवन तुम मांगि लिवो । बालक करि इनको जिनि जानों कंस बिध्वंस एई करि हैं । सूर देह धरि सुरनि उधारन पुहुमी भार एई हरि हैं ॥ २८ ॥ अथ पूतना को बध ॥ आसावरी ॥ प्रथम कंस पूतना पठाई । नंद घरनि सुत लिए जहं बैठी चलीचली निज धामहि आई । अति मोहनी रूप धरि लीन्हों देखत सबहीं के मन भाई । जसुमति देखि रही वाको सुख काकी बधू कौन धौं आई । नंद सुबन तबहीं पहिचानी असुर घरनि असुरनि की जाई । आपुन वज्र समान भए हरि माता दुखित भई भर पाई ॥ अहो महरि पालागन मेरी मैं तुमरो सुत देखन आई ॥ यह कहि गोद लियो अपनें तब

त्रिभुवनपतिमन मनमुसकाई। मुख चूम्यौंगहि कंठ लगायो विषलपट्योअस्तन मुखनाई। पैसंग प्राण अचैहरि लीन्हों जोजन एक गिरी मुरु झाई॥ चाहि चाहि करि व्रज गन धाए अति बालक क्यों बचै कन्हाई। अति आनंद सहित सुत पाये हृदय मांझ रहो लपटाई॥ करबर बड़ी टरी मेरे की घर घर करत आनंद बधाई॥ सूर श्याम पूतना पछारी यह सुनि जिय डरप्यो नृप राई॥ २८॥ राग बिलावल॥ उबरयौ श्याम महर बड़ भागी॥ बहुत दूरिते परयौ आइ घर देखो मैं कहुं चोट न लागी॥ राग जाउं बलि जाउं कन्हैया यह कहि कंठ लगाई॥ तुमहौ हौ व्रजको जीवन धन देखत नैन सिराई॥ भली नही तेरि प्रकृति जसोदा छांडि अकेले जाति॥ गृहको काम इनहुते प्यारो नेकहुं नहीं डराति॥ भली भई अबके हरि बांचे अजहूं सुरति सम्हारि॥ सूर दास झुकि कह्यो ग्वालनी मन मन महरि बिचारि॥ ३०॥ राग बिहागरो॥ देखहु यह बिपरीति भई॥ अद्भुत रूप नारि एक आई कपट हेत क्यों सहैं दई। कान्हहि लेन सुमति को राते रुचि करि कंठ लगाई॥ तब वहिं देह धरी जो जन लौं श्याम रहे लपटाई॥ बड़े भाग हैं नंद महर के बड़ भागिनि नंद रानी॥ सूर श्याम उर ऊपर उबरे यह सब घर घर जानी॥ ३१॥ राग बिहागरो॥ नेक गोपालहि मोकों देरी॥ देखो कमल बदन नीके करि ता पाछें तूं कनिआं लेरी। अति कोमल कर चरन सरोजसु अधर दशन नासा सोहैरी। लटकन सीस कंठ मनि भ्राजित मन मथ कोटि बार नेगैरी॥ द्योसहुं निसा समान बिलोकत यह छबि कबहुं न पाई मेरी। निगमनि अगम सुना तन बालक बड़े भाग पाए हैं तेरी। जिनको रूप जगतके लोचन चंद्र कोटि रबि आलय हैं री॥ सूर दास बलि जाय जसोदा गोकुल नाथ पूतना बैरी॥ ३२॥ राग बिहागरो॥ रूप मोहनी धरि व्रज आई॥ अद्भुत साजि सिंगार मनोहर असुर कंस दै पान पठाई। कुच बिष लाई पीस कपट करि बाल घातिनी परम सोहाई। बैठी हुती जसोदा मंदिर हुलरावति सुत श्याम कन्हाई। प्रगट भई तह आनि पूतना प्रेरित काल अवधि निअराई॥ आवत पीठ बैठनो दीन्हो कुशल पूछि अति निकट बोलाई। पौढे हरि अति सुभग पालने नंद रानी कछु काज सिधाई। बालक लयो उछंग दुष्ट मति हरषित अस्तन पान कराई। बदन निहारि प्रान हरि लीन्हो परदै तनो जोजन ह्वाई॥ सूरज प्रभु गति ताको दीन्हों मातु मानि सुख धाम पठाई॥ ३३॥ राग बिहागरो॥ राजाको काज आज करि आउ। बेग संघारो सकल घोष सिसु जो मुख आय सुपाउ। मोहन मुरली बसीठी पठयो मति सनमुख ह्वै धायो। अंग सुभग साजे दै मधु मूरति नैननि मांह समायो। घसि चंदन कंकोल डरोजनि लै रुचि सोपै प्यायो। सूर सोच मन करे अबही तो पुतना नाम कहायो॥ ३४॥ अथ कागासुर आयो कपट धरेव॥ ३५॥ राग सारंग॥ काग रूप एक दनुज धरेव। नृप आयसु लै करि माथें दै हरष बंत उर गर्व भरेव। कितिक बात प्रभु तुम आयसु ते यह जानौ मोजात गरेव। इतनी कहि गोकुल उडि आयो आइ नन्द ग्रह छाजर रेव। पलना पर पौढे हरि देखे तुरत आनि नैननि नहीं

अरेव॥ कंठ चापि बहु बार फिरायो गहि फटक्यो न्रप पास परेव॥ ॥तुरत कंस पूछन तेहि लाग्यो क्यों आयो नाहिं काज सरेव॥॥ बीतें जाम बोलि तब आयो सुनहु कंस तेरो आइ सरेव॥ धरे अवतार महा बलकोऊ एकहि कर मेरो गर्ब हरेव॥॥सूर दास प्रभु कंस निकंदन भक्त हेत अवतार धरेव॥॥३६॥ [illegible] ॥ मथुरा पति जिय अतिहिं डरानो॥॥ सभा मांझ असुरनि के आगे बार बार सिर धुनि पछितानो॥॥व्रज भीतर उपज्यो रिपु मेरो मैं जानी यह बात॥॥दिनहीं दिन वह बढत जातु है मोको करि है पात॥॥दनुज सुता पूतना पठाई छिनुक मांझ संघारी॥॥चोंच मरोरि कागासुर दीन्हे मेरे ढिग फटकारी॥॥अबहीं तें यह हाल करतु है दिन दिन होत प्रकास॥॥सेना पतिन सुनाय बात यह न्रप मन भये उदास॥॥ऐसो कौन मारि है ताको मोहि कहै सो आई॥ वाको मारि आपुन पै राखै सूर ब्रजहि सो जाई॥॥३७॥ राग सूहो॥॥न्रपति बात यह सबनि सुनायो॥॥मुहां वही सेना पति कीन्ही सकटासुर सुनि गर्ब बढायो॥॥दोउ कर जोरि भयो तब ठाढो प्रभु आयुस मैं पाऊं॥ यहां ते जाय तुरत ही मारौं कहौ तो जीवत ल्याऊं॥॥ यह सुनि न्रपति हरष मन कीन्हों तुरतहि बीरा दीन्हों॥ बार बार सूर कहे ताकों आपु प्रशंसा कीन्हों॥॥३८॥ राग गूंजमलार॥ पल में चल्यौ न्रप आनि कीन्हों॥॥गयो सिर नाय कै गर्ब हि बढाय कै सकट कौ रूप धरि असुर लीन्हों॥॥सुनत घहरान व्रज लोग चकृत भये कहा आघात धुनि करत आवै॥॥देखि आकाश चहुं पास दसहूं दिशा डरे नर नारि तनु सुधि भुलावै॥॥आपु गयो जहां तहां प्रभु परे पालने कर गहें चरन अंगुठा चचोरें॥ किलकि किलकत हंसत बाल शोभा लसत जानि तेहि कसत रिपु आयो भोरें॥॥ नेक फटक्यो लात भयो अति आघात गिरयो भहरात सकटा संहारयो॥॥सूर प्रभु नंदलाल दनुज मारयो खाल मेटि जंजाल व्रज जन उवारयो॥॥३९॥ यहां तें सकटासुर मारो॥ ॥ राग बिलावल॥॥ कर पग गहि अंगुठा मुख मेलत॥॥प्रभु पौढ़े पालने अकेले हरषि हरषि अपने रंग खेलत॥॥शिव शोचत बिधि बुद्धि बिचारत बट बाढ्यो सायर जल झेलत॥॥ बिडरि चले युग प्रलय जानि करि दिग पति दिग दंतौन सकेलत॥॥मुनि मन भीत भये भुव कंपित शेष सकुचि सहसौ फन पेलत॥॥सेा सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह सकट पग ठेलत॥॥४०॥ राग बिलावल॥॥ चरन गहें अंगुठा मुख मेलत॥॥नंद घरनि गावति हुलरावनि पलना पर किलकत हरि खेलत॥॥जो चरनार बिंद श्री भूषन उरतें नेक न टारति॥॥देखो धौं का रस चरननि में मुख मेलत करि आरति॥॥ जो चरनार बिंद के रसकों सुर नर मुनि करत बिषाद॥॥यह रस है मोहूकों दुर्लभ तातें लेत सवाद॥ उछलित सिंधु धराधर कांप्यो कमठ पीठि अकुलाये॥॥शेष सहस फन डोलत लाग्यो हरि पीवत जब पाये॥॥बढ्यो वृक्ष बटसुर अकुलाने मगन भयो उत्पात॥॥महा प्रलय के मेघ उठे करि जहां तहां आघात॥॥करुणा करी छांडि पग दीन्हों जानि सुरनि मन हरंसा॥॥हूंहां गूंगी रटत सूर प्रभु सुर मुनि धरत प्रशंसा॥॥४१॥ राग बिहागरो॥ यशोदा मदन गोपाल सोबावै॥॥देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंपित ईश बिरंचि भ्रमावै॥

असित अरुन सित आलस लोचन उभय पलक परि आवै । जनु रवि शशि गत होत महा निशि दुग्ध सिंधु छवि पावै ॥ सांस उदर उससत योजन जग खेत भंडार समावै । नाभि सरोज प्रगटि पदुमासन उतरि ताल पछितावै ॥ कर सिर तर करि श्याम मनोहर अलक अधिक सो भावै । सूर दास मानहु पन्नगपति प्रभु ऊपर फण छावै ॥ ४२ ॥ राग सोरठ ॥ नान्हरिया गोपाल बेगि बडे सो काहे न होहु । यहि मुख मधुर बचन हंसि कबहूं जननि कहैगे मोहु ॥ यह लालसा बहुत मेरे जिय जो जगदीस करै । मो देखत कान्ह यही आगन पद द्वै धरनि धरै ॥ खेलहिं हलधर संग रंग रुचि नैन निरखि सुखपाउं खन खन आरि करैं मन मोहन हंसि हंसि कंठ लगाउं ॥ जाके शिव बिरंचि सनकादिक मुनि जन ध्यान न पावैं । सूरदास तिनकों जशुमति सुत हित अभिलाष बढ़ावै ॥ ४३ ॥ ॥ यहांतें तृणावर्त व्रजकों गयो ॥ राग सोरठ ॥ जशुमति मन अभिलाष करै । कब मेरो लाल घुटुरु बनिरैंगे कब धरनी पग द्वैक धरै ॥ कब द्वै दांत दूध के देखौं कब तुतरे मुख बचन झरै । कब नंदहि बाबा करि बोलै कब जननी कहि मोहि ररै ॥ कब मेरो अंचरा गहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरै । कबधौं तनक तनक कछु खैहै अपने करलै मुखहिं भरै ॥ कब हंसि बात कहैंगे मोसों बा छवि तें दुख दूरि हरै । श्याम अंके ले आंगन छांडै आप गई कछु काज घरै ॥ यहि अंतर अंधबाहि उठ्यो एक गरजत गगन सहित घहरै । सूर दास व्रज लोग सुनत धुनि जो जहं तहं सब अतिहि हरै ॥ ४४ ॥ ॥ राग सूहो ॥ अति विपरीत तृनावर्त आयो । बात चक्र मिसव्रज ऊपर परि नंद पौरि के भीतर धायो ॥ पौढे श्याम नन्द के आंगन खेत उठ्यो आकाश चढायो । अंधा धुंध भयो सब गोकुल जो जहं रह्यो सुतहटं छपायो ॥ जशुमति धाय आय जो देखै श्याम श्याम कहि टेर लगायो । धावहुं नन्द गुहारि करो किनि तेरो सुत अंधवाहि उडायो ॥ यहि अन्तर अकाश तै आवत पर्वत सम कहि सबनि बतायो । मारों असुर सिला सों पटक्यो आप चढ़े ता ऊपर भायो ॥ दौरे नंद यशोदा दौरी तुरतहि लै हित कंठ लगायो सूर दास यह कहति यशोदा ना जानों विधनहि का भायो ॥ ४५ ॥ राग बिलावल ॥ उबरयौ श्याम महरि बड़भागी । बहुत दूरितें परयौ आय घर देखों मैं कहुं चोट न लागी रोगजाउ बलिजाउ कन्हैया यह कहि कंठ लगाई । तुमहीं हों व्रजको जीवन धन देखत नयन सिराई ॥ भली नहीं तेरी प्रकृति जशोदा छांडि अकेले जाति । गृहकों काम इन हुं तें प्यारो नेकहुं नहीं डराति ॥ भली भई कैसें हरि बांचे अजहूं सुरति सम्हार । सूर दास खीझि कहत ग्वालिनी मनमें महरि बिचार ॥ ४६ ॥ अथबाल लीला प्रसंग ॥ राग धनाश्री ॥ हरि किलकत जशुमति के कनियां । निरखि निरखि मुख कहति लालसों मो निधनी के धनियां ॥ अति कोमल तनु चितै श्याम को बार बार पछितात । कैसे बच्यौ जाउं बलि तेरी तृणावर्त के घात ॥ ना जानो धौं कौन पुण्य तें को करि खेत सहाई । वैसो काम पूतना कीन्हो यहि ऐसी करि आई ॥ माता दुखित जानि हरि बिहसे नन्ही नन्ही दंतुलि दिखाई । सूर दास प्रभु माता चितते दुख डारयो बिसराई ॥ ॥ ४७ ॥ राग धनाश्री ॥ सुतमुख देखि जशोदा फूली । हरषति निरखति दूधकी दं-

तुली प्रेम मगन तनकी सुधि भूली ॥ बाहिरतें तब नंद बुलाये देखौ धौं सुखदाई । तनक तनकसी दूध दंतुलिया देखहु नयन सुफल करौ आई ॥ आनन्द सहित महर तब आये मुख चितवत दोउ नयन अघाई । सूर श्याम किलकत द्विज देखो मनो कमल पर बीजु जमाई ॥ ४८ ॥ अथ अन्नप्रासन लीला ॥ राग बिलावल ॥ कान्ह कुंवर की करे पास नी कछु दिन घटि षट मास भये । नन्द महर यह सुनि पुलकित जिय हरि अन्नप्रासन योग भये । बिप्र बुलाय नांव लै बुझियो रासि सोध एक सुदिन धरो । आछो दिन सुनि महरि यशोदा सखिन बोलि शुभ गान करो ॥ युवति महरिकों गारी गावति और महरि को नाउ लिये । ब्रज घर घर आनंद बढ्यो अति प्रेम पुलक न समात हिये ॥ जाको नेति नेति श्रुति गावति ध्यावत शिव मुनि ध्यान धरैं । सूरदास तिनको ब्रज बनिता अंक झोरति अरु अंक भरैं ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥ आजु कान्ह करि हैं अन्न प्रासन । मनि कंचन के थार भराये भांति भांति के बासन ॥ नंद घरनि ब्रज बधू बुलाई जे सब अपनी पांति । कोउ जेवनार करति गउ घृत पक्व कटुरस के बहु भांति ॥ बहुत प्रकार किये सब बिंजन अनेक बरन मिष्टान । अति उज्ज्वल कोमल सुठि सुन्दर महरि देखि मन मान ॥ जसुमति नंदहि बोलि कह्यो तब महर बुलावहु जाति । आप गए नंद महर घर लै आए सब भाति ॥ आदर कै बैठारि सबनिकों भीतर गए नंद राय । जसुमति उबटि न्हवाय कान्ह को पट भूषन पहिराय ॥ तनु भंगुली सिर खाल चौतनी कर चूरा दुहुपाय । बार बार मुख निरखि जसोदा पुनि पुनि लेत बलाय ॥ घरी जानि सुत मुख जुठरावन नंद बैठे लै गोद । महरि बोलि बैठारि मंडली आनंद करत बिनोद ॥ कनक थार करि खीर धरी लै तापर घृत मधु लाई । नंद लै लै हरि मुख जुठरावत नारि उठी सब गाई ॥ षटरस के परकार जहां लगि लै लै अधर छुवावत । बिस्वंभर जगदीस जगतगुरु परसत मुख करुवावत ॥ तनक तनक जल अधर पोंछिके जसुमति पै पहुंचाए । हरष बंत जुवती सब लै लै मुख चूमति उर लाए ॥ महर गोप सब हिलि मिलि बैठे पनवारे परसाए । भोजन करत अधिक रुचि उपजी जेा जेहि जेहि मन भाए ॥ यहि विधि सुख बिलसत ब्रजबासी धनि गोकुल नर नारि । नंद सुवन के या छबि ऊपर सूर दास बलि हारि ॥ ५० ॥ राग सारंग ॥ हरिको मुख मोहि माय अनु दिन अति भावै । चितवत ब्रज जुवतिन के सब कृत बिस रावै ॥ बार बार लै उछंग रहति लोभ लागे । निरखति निंदत निमेष करत बोट आगे सोभित सुकपोल अधर अलप अलप दसना । किलकत विहसत सुदेश मोहन मृदु रसना ॥ नासा लोचन बिशाल संगतन सुखकारी । सूर दास धन्य भागजोवति ब्रजनारी ॥ ५१ ॥ राग धनाश्री ॥ लाल तेरे मुख ऊपर वारी । बलकै सेा मेरे नयननि लागे रोगन खाइ तुम्हारी ॥ सुंदरता को पार न पावति रूप देखि महतारी । उर अंतर आनंद बढावत हंसत देत किलकारी ॥ अलप दशन तुतरात बोल बिच तहांन जाति बिचारी । सूर सिंधु की तूंद भई मिलि मनसा मगन हमारी ॥ ५२ ॥ राग धनाश्री ॥ लालन मैया छबि ऊपरवारी । बल गोपाल लगै इत नयननि रोग बलाय तुम्हारी ॥

कुटिल अलक मोहन मुख बिहसनि भृकुटी बिकट लिलारी । मनहुं कमल अलि सावक पंगति उडत मधुप छवि भारी ॥ लोचन ललित कपोलनि काजर छवि उपजति अधिकारी । सुख सह सुख औरो रुचिबाढत हंसत देत किलकारी ॥ अलप दसन कल बल करि बोलनि बुधि नहि परति बिचारी । निकसति जोति अधरन के विच मानो बिधुमै बिज्जु उजारी ॥ सुंदरता को पारन पावति रूप देखि महतारी । सूरसिंधु की तूंद भई मिलि मति गति दृष्टि हमारी ॥ ५३ ॥ राग जैतश्री ॥ खाना हों वारी तैरेया मुख पर । माई मेरे हृदे बिच बिलगै ताते मसि बिंदाधौं भूपर ॥ दमकतहैं दूध दलुलिया बिहसत मनो सीपजघर कियो बारिज पर । लघु लघु लट सिर घूंघुर वारे लटकन लटकि रह्यो लिलार पर ॥ यह उपमा कापै कहि आवै कछुक कहैं। सकुचत हैं। जिय पर । नव तन चंद्ररेख मधिराजत सुर गुरु शुक्रउदोत परस पर ॥ मैया छबि पर तनमन बारे तनक घुटुरु बहु हेात है भूपर । सूर कहा मैं करौं न्योछावरि अपने लाल ललित खर खर पर ॥ ५४ ॥ राग आसावरी ॥ जबते मै खेलत देख्यो आगन जसुदा को पूतरी । तबते गृहसौं नाता टूटो जैसो काचो सूतरी ॥ अति बिसाल बारिज लोचन परसोभित काजर रेखरी । राखेहै मकरंद पालि मनो अलि कोकिल के बेखरी ॥ राजत है दूध की दतियां जगमग जगमग हेातिरी । मनहु मनोहर बिधु मंडलमैं सोप रतन की ज्योंतिरी ॥ श्रवुन सुनत उत कंठा जबकछु बोलतहै तुतरायरी । सूरश्याम सुंदर मुख निरखत आनंद उरन समायरी ॥ ५५ ॥ राग आसावरी ॥ अद्भुत एक चितैधौं सजनी नन्दमहर के आंगनरी । सोमैं निरखि अपुनपो खोयो गई मथानी मांगनरी ॥ बालदसा मुख कमल बिलोकत कछु जननी सोबोलैरी । प्रगटत हंसत दंतिय मनो सीपज मनि दूरै कल बोलैरी ॥ सुंदर भाल तिलक गेारोचन मिलि मसि बुंद का लाग्योरी । मनौ मकरंद अचै रुचिकै अलि सावक सोइन जाग्योरी ॥ कुण्डल लोल कपोलनि झलकत मनो दर्यन म झांईरी । रही बिलोकि बिचारि चारु छवि परमित कतहुंनपाईरी ॥ मंजुल तारेनकी चपलाई चित चतुरानन करखेरी । मनो सरासन समर धरे करभोंह चढो सरबरषेरी ॥ जलधि थकित जनु काग कपोत ज्यों कूलन कहूं आयोरी । नाजानो केहिं अंग मगन मन मन चाहि रहो नहिं पायोरी ॥ कहं लगि कहों बनाय बरनि जितनी छवि निरख लहारीरी । सूर श्याम के एक राम पर देउं प्राण बलि हारीरी ॥ ५६ ॥ राग धनाश्री ॥ जसोदा चिरुजिवो गोपाल । बेगि बढै बल सहित बिरध लट महरि मनोहरबाल ॥ उपजिपरे शिशु कर्म पुन्यफल समुद सीपज्यों लाल । सब गोकुलके प्राणजिवन धन बैरिन के उर साल ॥ सूर कितो सुख पावत लोचन निरषत घुटुरुन चाल । झारत रज लागहि मेरे उर भागहिं रोग दोष जंजाल ॥ ५७ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत नंद आंगन गोबिन्द । निरखि निरखि जसुमति सुखपावति बदन मनोहर चंद ॥ कटि किंकिनी चंद्रमनिकी लट मुक्ता बलि भलि भाल । परम सुदेस कंठ केहरिनख बिच बिच बजुप्रवाल ॥ कर पहुंचिया पाय पैसुरा तनु रंजित रजसीत । घुटुरुन चलत अजिर महं बिहरत मुख मंडित नवनीत सूर बिचित्र कान्ह की बानिक बानी कहत न आवे । बाल दशा अब लोकि सनक मुनि

जोग बिरति बिसरावे ॥ ५८ ॥ राग आसावरी ॥ घुटुरुन चलत श्याम मनि आंगन मात पिता दोउ देखतरी । कबहुंक किल किलात मुखहेरत कबहुं जननि मुख पेखतरी ॥ लटकन लटकत ललित भाल पर काजर बिंदु भ्रुव ऊपररी । यह सोभा नयननि देखै जेवहि उपमा तिहुं भूपर री ॥ कबहुंक दौरि घुटुरुवनि लटकत गिरत उठत फिरि धावतरी । इतते नंद बोलाय लेतहैं उतते जननि बुलावतिरी ॥ दंपति हाउ करत आपुस में श्याम खेलोंना कीन्होरी । सूर दास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीन्होरी ॥ ५९ ॥ राग बिलावल ॥ अथ बरस गांठि कन्हैया की ॥ आजु भोर तमचुर की कांई रोल । गोकुलमें आनंद होत है मंगल धुनि घहरानें ढोल ॥ फूले फिरत नंद अति सुख भयो हरषि मगावत फूल तबोल । तनक वदन दोउ तनक कर तनक चरन पोछति पट झोल ॥ कान्ह गले सोहत कंठ माला अंग भूषन अरु अंगुरिन्ह रोल । सिर चौंतरी डिठौना दिय आंखि आंजि पहिराइनि चोल ॥ श्याम करत माता सों झगरो अट पटात कलबल करि बोल । दोउ कपोल गहि के मुख चूंवत बरष द्योस कहि करति कलोल । सूर श्याम ब्रज जन मन मोहन आनन्द उठत हिलोल ॥ ६० ॥ बिलावल ॥ बरष गांठि सब सखिन बुलावो सुख करि मंगल गान करावो । चंदन आंगन सबहिं लिपावो मोतियनि तुम चौक पुरावो उमग अंगनि आनन्द तूर बजावो ॥ मेरे कहें तुम बिप्र बुलावो शुभ घरि एक आनि धरावो बागे बीरेवनि बनि बनावो आभूषन पहिरावो ॥ अछत दूब बंधावो ललनकी बरष गांठि जुरावो हे मोहि नैननि लाहो दिखावो । पचरंग सारि मगावो भूषन पहिरावो नचे सब ठमंग अंग बटावो ॥ नंदरानो सब ग्वालि बुलावति यहैं रीति कहि कहि सुनावति । वेगि करो किनि बिलंब काहे लगावो जसुमति तब नंद बुलावति ॥ लाल लिये कनियां दिखावति लगन की घरी तुरत आवति मै तो न्हबाइ बनावो । सूर श्याम मुख छबि निहारति तन मन युवती जन वारति अति सुख भयो बरष गांठि जुरावो ॥ ६१ ॥ राग आसावरी ॥ उमंगनि उमंग है ब्रज नारि कान्ह को बरष गाँठि बरष बरनि । गावत मंगल गान नीके सुर नीकी तान आनंद हरषनि ॥ कंठन मनि जटित थार दधि रोचन फूल डार देखत चली नन्द कुमार मिलिबे की तरसनि । सूर दास प्रभु की बरषगांठि जोरत वह छबि पर चित तोरति अरस परसनि ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ गोमित कर नव नीत लियें । घुटुरुनु चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन दोउ गोरोचन को तिलक दिये । लट लटकन मनमत्त मधुप गन मादक मधुहि पियें ॥ कठुला कंठ बज्रकेहरि नखराजति रुचिर हिये । धन्य सूर एकौपल यहि सुख का सत कलप जिये ॥ ६३ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ बाल बिनोद खरे जिय भावत । मुखप्रति बिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत ॥ शब्द चोर बोल्यो चाहत प्रगट बचन नहि आवत । अनेक ब्रह्म खंड की महिमा शिशुता मांझ दुरावत । सूरदास स्वामि सुख सागर जसुमति प्रीति बढावत ॥ ६४ ॥ राग बिलावल ॥ आंगन खेलत घुटुरुनि धाये । नील जलद तनु श्याम राम मुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाये ॥ बंधुक सुमन अरुन पद पंकज अंकुश प्रमुख

चिन्ह बसि आये । नूपुर कल रव मनोसुत हंसलि रवेनी उदै बाहयसाये ॥ कटि किंकिनी बरहार ग्रीव दर रुचिर बाहु भूषन पहिराये । शुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवन कपोल मांहि सुठि भाये ॥ भ्रुव सुन्दर करुना रस पूरन लोचन मनहुं युगल जलजायें भालबिसाल ललित लटकन मनि वाल दशा के चिकुर सुहाये ॥ मानहुं गुरुसनिकुज आंगे करि ससिहि मिलन तुमते गन आये । उपमा एक अद्भुत भइ तब जब जननी पट पीत उढ़ाये । नील जलद ऊपर यों निरखत तजि सुभाव मनु तडित छपाये ॥ अंग अंग प्रति मारति करमिलि छवि समूह लै लै मनु छाये । सूर दास सो क्यों करि बरनै जो छवि निगम नेति करि गाये ॥ ६५ ॥ राग कान्हरो ॥ सादर सहित बिलोकि श्याम मुख नंद अनंद रूप लिये कनियां । सुंदर श्याम सरोज नील तनु अंग अंग सुभग सकल सुख दनियां ॥ अरुन तरनि नख ज्योति जग मगति रुनुझुनु करति पाय पैंजनियां । कनक रतन मनि जडित रचित कटि किंकिनि कुनित पीट पट झनियां ॥ पहुंची करनि पदिक उर हरि नख कंठुला कंठ जुमनियां । कुटिल भृकुटि सुख की निधि आनत कल कपोलकी छवि न उपनियां ॥ रुचिर चिबुक द्विज अधर नासिका अति सुंदर राजत सो बनियां । भाल तिलक मसि बिन्द बिराजत शोभित शीश लाल चौतनियां ॥ मन मोहन तोतरी बोलनि सुनि मनहरत सहंसि मुसकनियां । बाल सुभाव बिलोकि बिलोचन चोरत चितहि चारु चितवनियां ॥ निरखति व्रज युवती सब ठाढी नंद सुवन छवि चन्द बन्दनियां । सूर दास अब निरखि मगन भये प्रेम बिबस कछु सुधि न अपनियां ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ कहां लगि बरनौ सुन्दरताई । खेलत कुंवर कनक आंगन में नैन निरखि छवि पाई ॥ कुलहि लसत शिर श्याम सुभग अति बहु विधि रंगबनाई ॥ मानहु नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई । अति सुदेस मृदु हरत चिकुर मन मोहन मुख बगराई ॥ मानहुं मंजुल प्रगट कंज पर अलिअवली फिरि आई ॥ नीलखेत पर पीत लाल मनि लटकन भाल बराई । सुनि गुरु असुर देवगुर मिलि मानौ भौम सहित समुदाई ॥ दूध दन्त दुति कहि न जाति अति अद्भुत एक उपमाई । किलकत हंसत दुरत प्रगटत मनो घन में बिज्जु छटाई ॥ खण्डित बचन देत पूरन सुख अलप जलप जलपाई । घुटुरुन चलत रेनु तन मण्डित सूर दासबलि जाई ॥ ६७ ॥ राग नट नारायण ॥ हरि जू की बाल छवि कोटि मनोज शोभा हरनि । भुज भुजंग सरोज नैननि बदन बिधु जित लरनि ॥ रहे बिबरनि सलिल नभ उपमा अपन दुति उरनि ॥ मंजु मेचक मृदुल तनु अनु हरति भूषन भरनि । मनहुं शुभग शृंगार शिशु तरु फरयो अद्भुत फरनि ॥ चलत पद प्रति बिम्ब मनि आंगन घुटुरुवनि करनि । जलज संपुट शुभग छवि भरि लेत उरुजनु धरनि ॥ पुन्य फल अनु भवति सुतहि बिलोकि के नन्द घरनि । सूर प्रभुकी असी उर कि सकनि ललित लर खरनि ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुनवनि आवत । मनि मय कनक नन्दके आंगन मुख प्रतिबिम्ब पकरि बेहि धावत ॥ कबहूं निरखि आप छांहीं को कर सों पकरन चाहत । किलकि हंसत राजति है दंतुली पुनिपुनि तेहि अवगाहत ॥ कनक भूमिपर कर पग छाया यह उपमा एक राजत । कर कर प्रति पद प्रति मनि

बसुधा कमल बैठकी साजत ॥ बाल दशा शुभ निरखि जशोदा पुनि पुनि नन्द बुलावत । अंचरा तर लै ढांकि सूर के प्रभु को दूध पियावत ॥ ६६ ॥ राग बिलावल ॥ नन्द धाम खेलत हरि डोलत । जशुमति करति रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत ॥ टेरति उठि यशुमति मोहन कहि आवहु घुटुरुनि धाय । बैन सुनत माता पहिचानी चले घुटुरुवनि पाय ॥ लिए उठाय अंचल गहि पौंछ्यौ धूरि भरी सबदेह । सूरज प्रभु जशुमति रज झारति कहां भरी यह खेह ॥ ७० ॥ राग सूहो ॥ धनि जशुमति बड़ भागिनी लिये कान्ह खिलावै । तनक तनक भुज पकरि के ठाढे होन सिखावै ॥ लर खरात गिरि परत हैं चलि घुटुरुनि धावै । पुनि क्रम क्रम भुज टेकिकें पग द्वैक चलावै ॥ अपने पायन कबहिं चलों मो देखत धावै । सूर दास जशुमति यहै विधि सों जु मनावै ॥ ७१ ॥ राग कान्हरो ॥ हरि को विमल जस गावति गोपांगना । मनि मय आंगन नन्द राय के बाल गोपाल तहां करैं रंगना । गिरि गिरि परत घुटुरु बनि टेकत खेलत हैं दोउ छंगन मंगना । धूसर धुरि धौत तन मंडित मात जसुदा लेति उछंगना । बसुधा चिपट करत नहि आलस तिनहिं कठिन देहरी उलंघना । सूर दास प्रभु ब्रज वधु निरखति रुचिर हार हिय सोहतु बघना ॥ ७२ ॥ अथ श्री कृष्ण पद चलन लीला ॥ राग सूहो ॥ चलन चहत पायन गोपाल । लये लगाय अंगुरी नंद रानी मोहन मूरति श्यामल माल । डगमगात गिरि परत पानि पर भुज भ्राजित नंद लाल । जनु श्री धर श्री धरत अधो मुख धुकत धरति मानहुं नमिताल । धूरि धौत तनु नैननि अंजन चलत अटपटी चाल । चरन रुनित नूपुर धुनि मानो सर बिहरत इ बाल मराल । लट लटकन सिर चारु चौ खड़ा सुठि सोभा सिसु भाल । सूर दास ऐसो सुख निरखत जो जी जै जगमें बहु काल ७३ ॥ सूहो बिलावल ॥ मनिमय आंगन नंद के खेलत दोउ भैया । गौर सेत श्याम जोरी बनी बलकुंवर कन्हैया । लटकत ललित लटुरिया मसि बिंदु गोरो चन । हरि नख उर अति राज हंस तनि दुख मोचन । संगसंग जसुमति रोहिनी हित कारिनि मैया । चुटुकी देहिं नचावहिं सुत जानि न न्हैया । नील पीत पट ओढनी देखत जिय भावै । बाल बिनोद आनंद सो सूरज जन गावै ॥ ॥ ७४ ॥ राग धनाश्री ॥ आंगन खेलें नंदके नन्दा । जदु कुल कुमुद मुकुट सुखद चारु चंदा ॥ संग संग बल मोहन सो हैं । सिसु भूषन भवको मन मोहैं । तनु दुति मोर चंद जिमिझल कै । उमगि उमगि अंग अंग छवि छलकै । कटि किंकिनि पग पैंजनि बाजैं । पंकज पानि पहुंचिया राजैं । कंठुला कंठ बघ नहांनी के । नैन सरोज मैन सरसीके । लटकन ललित ललाट लटूरी । दमकति द्वै दंतुलिया नूरी । मुनि मन हरत मंजमसि बिंदा । ललित बदन बलि बाल गोबिंदा । कुलही चिच बिचिच झंगूली । निरखि जसोदा रोहिनि फूली । गहि मनि खंभ डिंभ डग डोलै । कलबल बचन तोतरे बोलै । निरखत झुकि झांकत प्रति बिम्बहि । देत परम सुख पितु अरु अंबहि । ब्रज जन निरखत हिय हुलसाने । सूर श्याम महिमा को जाने ॥ ७५ ॥ राग बिलावल ॥ कलबल ते हरि हारि परे । बहुतन रंगन बान जलद पर मानहु द्वै

शशि आनि अरे । तब गिरि कमठ सुरा सुर सर्पहि धरतन मन महं नेक डरे । तिन भुज भूषन भार परत कर गोपिन के आधार धरे । बिम्बि बदन मानहुं मथि काढ्यो बिहसनि मनहु प्रकास करे । सूर श्याम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखते न टरे ॥ ७६ ॥ राग बिलावल ॥ जब मोहन कर गही मथानी । परसत कर दधि माट खेत चित उदधि सैल बासुकि भय मानी । कबहुंक अहुठ परग नहि बसुधा कबहू दे हरि उलंघिन जानी । कबहुंक सुर मुनि ध्यान न पावत कबहुं खेलावति नंदकि रानी । कबहुंक अखिल उदर नहि तिरपित कबहुंक दधि माखन रुचि मानी । सूर दास प्रभु कीयह लीला परतन महिमा शेष बखानी ॥ ७७ ॥ राग बिलावल ॥ सिखवति चलन जसोदा मैया । अरबराइ कर पानि गहावति डगमगाय धरनी धरै पैया । कबहुंक सुंदर बदन बिलोकति उर आनंद भरि लेति बलैया । कबहुंक कुल देवता मनावति चिरजीवै मेरो लाल कन्हैया । कबहुंक बलकों टेरि बुलावति यहि आगन खेलहु दोउ भैया । सूर दास स्वामी सुख सागर अति प्रताप बालक नंदरैया ॥ ७८ ॥ राग नटनारायण ॥ बलिगई बाल रूप मुरारि । पाय पैंजनि रटति रुनु झुनु नचावत नंद नारि । कबहुं हरि को लाय अंगुरी चलन सिखवति ग्वारि । कबहुं हृदय लगाय हित करि लेति अंचल डारि । कबहुं हरि को चितै चुंबति कबहुं गावति गारि । कबहुं ले पाछे दुरावति यहां नहि बन बारि । कबहुं अंग भूषन बनावति राई लोन उतारि । सुरनर मुनि सब मोहे निरखि यह अनुहारि ॥ ७९ ॥ राग बिलावल ॥ भावत हरि बाल बिनोद । श्याम राम मुख निरखि प्रमुदित रोहिनि जननि जसोद । आनंद पंक परसतनु मंडित चलत कुनित नूपुर मन मोद । परम सनेह बढावत मन मन निर्व्विकार बैठत चढि गोद । आनंद कंद सकल सुख दायक निशि दिन रहत केलि रस बोद । सूर दास प्रभु अंबुज लोचन फिरि फिरि चितवत व्रज जन कोद ॥ ८० ॥ राग बिलावल ॥ बाल बिनोद अंगनिकी डोलनि । मनिमय भूमि सुभग नंद आलय बलि बलि जाउं तोतरी बोलनि । रुचिर कंठ कंठुला के हरि नख व्रज माल बहु लाल अमोलनि । बदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकन मधुकर गति लोलनि । कर नव नीत परस आनन सो कछुक खात कछु लग्यो कपोलनि । कहि जन सूर कहां लगि बरनो धन्य नंद व्रज बनि जग तोलनि ॥ ८१ ॥ राग बिलावल ॥ गहें अंगुरिया सुबन की नन्द चलन सिखावत । अरु बराय गिरि परत हैं कर टेकि उठावत । बार बार बकि श्याम सो कछु बोलि बुलावत । दुहुंया दै दंतुली भई अति मुख छबि पावत । कबहुं कान्ह कर छांडि नंद संग ह्वै करि गावत । कबहुं उलटि चले धाम को घुटुरुनि करि धावत । सूर श्याम मुख देखि महरि मन हरष बढावत ॥ ८२ ॥ राग धनाश्री ॥ कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी । जो मन मैं अभिलाष करतिही सो देखति नंद घरनी । रुनुकु झुनुकु नूपुर धुनि बाजत यह अति है मन हरनी । बैठि जात पुनि उठत तुरतहीं सो छबि जाय न बरनी । व्रज जुवती सब देखि थकित भई सुंदरता की सरनी । चिरजीवो जसुदा को नंदन सूर

दास को तरनी ॥ ८३ ॥ राग गौरी ॥ भीतर तें बाहिर लौं आवत । घर आंगन अति चलत सुगम मग देहरि में अटकावत । गिरि गिरि परत जात नहिं उलंघी अति अप हीतन कावत । अहुठ परग बसुधा सब कीन्ही धाम अवधि बिरमावत । मनही मन बलबीर कहत हैं ऐसे रंग बतावत । सूरदास प्रभु आपनि महिमा भगत नके मन भावत ॥ ८४ ॥ राग धनश्री ॥ चलत देखि जशुमति सुख पावै । ठुमुकु ठुमुकु धरि धरनी रेंगत जननी देखि दिखावै । देहरि लौं चलि जात बहुरि फिरि फिरि इतहीं को आवै । गिरि गिरि परत बनत नहि ताकत सुर मुनि सोच करावै । कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर हरत बिलंब न लावै । ताकों लिये नंदकी नारी नाना रूप खेलावै । तब जसुमति कर टेकि श्याम को क्रम क्रम करि उतरावै । सूर दास प्रभु देखि देखि सुर मुनि मन बुधिहि बंधावै ॥ ८५ ॥ राग भैरों ॥ सो बल कहा भयो भगवान । जेहि बल मीन रूप जल थाह्यो लियें निगम हति असुर परान । जेहि बल कमठ पीठ पर गिरिधरि सजल सिंधु मथि कियो बिधान ॥ जेहि बल रूप बराह दसन पर धरी धरा करि पुष्पसमान । जेहि बल हिरनकश्यप उर फारे भए भक्त को कृपा निधान ॥ जेहि बल बलि बन्धन करि पठए बसुधा चैपद करी प्रवान । जेहि बल रावन के सिर तोरे कियो बिभीषन नृपति समान ॥ जेहि बल जामबन्त मद मरद्यो जेहि बल भूप बिपति मुनि कान । सूर श्याम अबधाम अवधि पर चढि न सकत प्रभु खरे अजान ॥ ८६ ॥ राग आसावरी ॥ देखो अद्भुत अबि गति की गति केतेक रूपधरे हरिहेा । जलथल पंच चतुर चय उरमें सो अब कोन परेहेंहेा ॥ जाके नाल भये ब्रह्मादिक सकल बिश्व बसुसाधेहेा । जिनके खेाज बिरंचि बिकलहूँ नही अन्त कहूं साध्योहेा ॥ तिनको नार छिनेा ब्रज जुबती बांटि तगा सेां बांध्यो हेा । जिन श्रवननि जनकी बिपदा सुनि गरुड़ासन तजि धायेाहेा ॥ तिन श्रवननि हरि सुनत यशेादा हलरावै गुन गायेाहेा । बिश्वभरन पेाषन सब समरथ मांखन काज अरेहैं हेा ॥ रूप बिराट रेाम प्रति कोटि सेा पलना माझ परे हैं हेा । जिनि भुज बर गहि रावन मार्यो हिरण्यकश्यप उदर बिदारे हेा ॥ सेा भुज पकरि पकरि ब्रज जुवती ठाढे हेाहु पियारे हेा । जामुखको ब्रह्मादिक लेाचन शंभु समाधि लगाए हेा सेा मुख चूम्बति महरि जशेादा दृध लार लपटाए हेा । सुर नरमुनि जाको ध्यान न पावत शेष सहस मुखगाए हेा । सेाई सूर देह धरि आए गेाकुल गेाप कहाए हेा ॥ ८७ ॥ राग आसावरी ॥ अनन्द प्रेम उमगि जशेादा लालरी खेलावैं । शिव सनकादि सुकादि ब्रह्मादिक खेाजत अन्त न पावैं ॥ गेाद लए हंसिकै हलरावति तुतरे बेाल बेालावै ॥ दैकरतार बजावति गावति राग अनूपम गावै । कहुं करपल्लव आनि गहावति आंगन मांझ रिंगावै ॥ गति पंगु भई बिसरी बुधिसारद दिननाथन नेंकु चलावै । कबहूं हिलकै किलकै जननी मनको सुख सिंधु बढावै ॥ मोहि रहीं ब्रजकी जुबतीं जस सूर दास बलि गावै ॥ ८८ ॥ राग सूहो ॥ आगन श्याम नचावई जशुमति नंदरानी । तारी दै दै गावई मधुरी सुर बानी ॥ पायन नूपुर बाजई कटि किंकिनी कूजै । नन्ही

नन्ही एडिअनि अरुणता फल बिंबन पूजै ॥ जशुमति गान सुनै श्रवनन तब आपहु गावै। तारी बाजत देखई पुनि आपु बजावै ॥ के हरि नख उरपर तुरै सुठि सोभा कारी। मनहुं श्याम घन मध्यमें नवशशि उजिआरी ॥ गभुवारे सिर केसहैं बरघूंघर वारे ॥ लटकन लटकै भालपर बिधु मधि गन तारे ॥ कंठुला कंठ चिबुक तरे मुखदसन बिराजे। खंजन बिच शुक आनिके मनो परयों दुराजे ॥ जशुमति सुतहीं नचावई छबि देखन जयते। सूर दास प्रभु श्यामके सुख टरत न हियते ॥ ८९ ॥ राग ललित ॥ छोटी छोटी गोडिया अंगुरिया छोटि छबीली नखजोति मोति मानो कंज दलनि पर। ललित आंगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झुंझुनु झुंझुनु बाजै पैजनी मृदु मुखर ॥ किंकिनी कलि तकटि हाटक रतन जटित मृदुकर कमलनि पहुंचिया रुचिर बर। पियरी पिछोरी झीनी औरन उपमा कीनी बालक दामिनी मानो ओढे वारौं वारिधर ॥ उर बघनख कंठ कंबुल कुण्डले वार बेनी लटकन मसि बिंदा मुनि मनहर। अंजन रंजित नैन चितवनि चित चोरै मुख सोभा परवारों अमित असम सर ॥ चिटुकी बजावति,नचावति नन्द घरनि बाल केलि गावति मल्हावति प्रेमसो भर। किलकि किलकि हंसै द्वै द्वै दंतुलीलसे सूरदास मन बसै तोतरे बचन बर ॥ ९० ॥ राग बिलावल ॥ माधो तनकसो बदन तनकसे चरन भुज तनक करनि पर तनक मांखन। तनक बात को रहत तनकि सेतनक रीझ में लागे तनक मोदन ॥ तनक कपोल तनकसी दतिआं तनक हंसनि पर हरत हो मन। तनकहिं तनक जु सूर निकट आवे तनक मया कैदीजै तनक सरन ॥ ९१ ॥ राग बिला बिल ॥ माधो तनक चरन अरु तनक भुज तनक बदन बोलै तनकसे बोल। तनक कपोल तनकसी दतिआं तनक हसनि पर खेतहो मोल ॥ तनक करनि पर तनक मांखन लिए देखत तनक जाके सकल भुवन। तनक सुने सुजस पावत परम गति तनक कहत तासों नंद सुवन ॥ तनक रीझ पर देत सकल तनु तनक चितैानी चित वित के हरन। तनकहि तनक तनक करि आवै सूर तनक तनक कहिदीजै तनक सरन ॥ ९२ ॥ ब्राह्मणको प्रस्ताव ॥ राग धनाश्री ॥ महाराने तें पांडे आयो। ब्रज घर घर बूझत नंद रावर पुच भयो सुनिके उठि धायो ॥ पहुंच्यौ आय नंदके द्वारे जशुमति देखि आनंद बढायो पांव धोय भीतर बैठारयो भोजन को निजु भवन लियो ॥ जो भावै सो जेवन कीजै विप्र मनहिं अति हरष बढायो। बड़ी बैस बिधिभयो दाहिनो धनि जसुदा ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाय दूध लै आई पांडे रुचिकरि खीर चढायो। घृत मिष्टान खीर मिश्रित करि परुसि कृष्णहित ध्यान लगायो ॥ नयन उघारि बिप्र जो देखै खात कन्हैया देखन पायो। देखहु आय जशोदा सुत हत सिद्ध पाक यह आनि जुठायो ॥ महरि बिनैकरि दोउ कर जोरो घृत मधुपै फिरि बहुत मगायो। सूर श्याम कत करत अंचगरी बार बार ब्राह्मणहि खिझायो ॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥ पांडे भोग न लावन पावै। करिकै पाक जबहि अर्पतु हैं तबहिं ताहि छुइ आवै ॥ इच्छाफरि मैं ब्राह्मण निवत्यो ताको श्याम खिजावे। वहअपने ठाकुरहि जेवावें तू तबही छुइ आवै ॥ जननी दोष देति कत मोको विधि विधान करि ध्यावै। नयन मूदि कर जोरि नाम लै बारं

बार बुलावै ॥ कहि अंतर क्यों होय भक्त को क्यों मेरे मन भावै । सूरदास बलि बलि ताकीजो जन्म पाय जस गावै ॥ ९४ ॥ राग बिलावल ॥ सुफल जन्म हरि आजु भयो । धनि गोकुल धनि नंद जशोदा जाके हरि अवतार लयो ॥ प्रगट भयो अब पुन्य सुकृत फल दीन बंधु मोहि दरस दयो । बार बार नंदके आंगन लोटित द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो बिन जाने को जाने केहि भेषजयो । सूरदास प्रभु जगत हेत बस यशुमति हित अवतार लयो ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥ अहो नाथ जेइ जेइ तेरे शरन आए तेइ तेइ भये पावन । महा पतित कुलतारन एक नाम अघ हजार तारन दुख बिसरावन ॥ मोते कोहि अनाथ दरशन तें भयोसनाथ देखत नयन जुडावन ॥ भक्त हेतदेह धरन पुहुमी को भार हरन जनम जनम को मुकुतावन ॥ असरनसरनदीन बंधु जशुमति सुखकारन देह धरावन । हितके चितके मानत सबके जियकी जानत सूरदास प्रभु मन भावन ॥ ९६ ॥ राग धनाश्री ॥ दया करिये कृपाल प्रतिपाल संसार उदधिजंजाल ते पारं पार ॥ काहुके ब्रह्म काहूके महेश काहूके गनेश प्रभु मेरे तौ तुमहिं आधार ॥ दीन दयाल कृपा करो मोकों यह कहि कहि लोटत बारं बार ॥ सूरश्याम अंतरजामी स्वामी हौ जगत के कहा कहौं करो निरबार ॥ ९७ ॥ राग बिलावल ॥ नंद जू के बारे कान्हा छांडिदे मथनियां । बारंबार कहै मात जशुमति रमनियां ॥ नैक रहौ माखन ल्यौ मेरे प्रान धनियां । आरि जिनि करौ बलि गई हौं न्यों छनियां ॥ सुर नर जाको ध्यान धरैं मुनि जनियां । ताकों नंद रानी मुख चूंवि लीन्हो कनियां ॥ सहसा नन गुन गनत न बनियां । सूर श्याम देखि सब भूली गोप धनियां ॥ ९८ ॥ राग बिलावल ॥ जसु मति दधि मथन करति बैठी बरधाम अजिर ठाढे हरि हंसत नान्हीं सो दंति अनि छबि छाजै । चितवत चित लेत चोराय शोभा बरनी न जाय मुनिन के मन हरनको मन मोहनी दल साजै ॥ जननी कहति नाचौ तुम दैहों नवनीत मोहन रुनुक झुनुक चलत पायन चारु नूपुर बाजै । गावत गुन सूर दास यश बाढ्यो भुव अकाश नाचत चै लोक नाथ माखन के काजै ॥ ९९ ॥ राग बिलावल ॥ प्रात समय दधि मथति जशोदा अति सुख कमल नयन गुन गावति । नील बसन तनु सजल जलद मनो दामिनि दिवि भुज दंड चलावति ॥ चंद बदनि लट लटकि छबीली मनहुं अमृत रसराहु चोरावति । गोरस मथत नाद एक उपजत किंकिनि धुनि सुनि श्रवन रमावति ॥ सूर श्याम अंचरा धरि ठाढे काम कसौटी कसि दिखरावति ॥ १०० ॥ राग कानरो ॥ गोद खिलावत काहु सुनि बडि भागिनि हो नंदरानी । आनंद की निधि मुख लाल को ताहित निरखत है निशि बासर सो तो छबि क्योंहु न जात बखानी ॥ गुन अपार बहु बिस्तार कहि न परत निगम बानी । सूर दास प्रभु को लिये जशुमति गोद खिलावति चितै चितै मुसुकानी ॥ १०१ ॥ राग गौरी ॥ मेरो माई श्याम मनोहर जीवनि । निरखि नयन भूले ते बदन छबि मधुर हंसनि पै पीवनि ॥ कुंतल कुटिल मकर कुंडल भुव नयन बिलोकनि बंक । सिंधु सुधातें निकसि नयो शशि राजित मनो मृगंक ॥ शोभित सुमन मयूर चन्द्रिका नील नलिन तनु श्याम । मनहुं छच समेत इन्द्र धनु शुभग मेघ अभिराम ॥ परम

कुशल कोबिद लीला नट मुसुकनि मन हरि लेत॥ कृपा कटाक्ष कमल कर फेरत सूर जननि सुखदेत॥ १०२॥ राग गौरी॥ शोभा मेरे श्यामहिं पै सोहै॥ बलिबलि जांउ छबीले मुखकी पटतर को कोहै॥ या छबि की उपमा देवे को कबिन कहा टोहै॥ निरखत अंग अंग प्रति बानिक कोटि मदन को है॥ शशिगन गारि रचो बिधि आनन बंक नयन जोहै॥ सूर दास बलि जाय निरखि सब सुर नर मुनि मोहै॥ १०३॥ राग बिलावल॥ बाल गोपाल खेलो मेरे तात॥ बलि बलि जांउ मुखार बिंदकी अमति बचन बोल हु तुतरात॥ छोड़ो माट मथों दधि मोहन उचटि बूंदतन परत अघात॥ मानहुं गज मुक्ता मरकत पर शोभित शुभग सांवरे गात॥ जननी प्रीति मांगत जग जीवन दै माखन रोटी उठि प्रात॥ लोटत सूर श्याम पुहुमी पर चारि पदारथ जिनके हात॥ १०४॥ राग बिलावल॥ दोउ भैया मैया सों मागत देरी माखन अरु रोटी॥ सुनि माता यह भांति दुहुन की झूठहि धाम के काम अंगोटी॥ बल गह्यो बलनि नासिका मोती का न्ह गही कर दृढ़सों चोटी॥ मानहुं हंस मोर भख लीनो कबि उपमा बरनै कहा छोटी॥ यह छबि देख नंद मन आनद अति सुख हंसत जात है लोटी॥ सूर दास जशुमति प्रमुदित भई भाग बड़े करमनि की मोटी॥ १०५॥ राग नट नारायण॥ बरनो बाल भेख मुरारि॥ थकित जित तित अमर मुनि गन नंदलाल निहारि॥ केस सिर बिन बपन के चहुंदिसा छिट के झारि॥ शीश परवर जटा मानो रूप रुचि चिपुरारि॥ तिलक खलित ललाट केसरि बिंदु शोभा कारि॥ रोष अरुण तृतीय लोचन रह्यो जनु बिपुरारि॥ कंठ कंठुला नील मनि अम्भोज माल सवारि॥ गरल ग्रीव कपोल उर यहि भाव भये मदनारि॥ कुटिल हरि नख छिये हरि के देखि हरषी नारि॥ ईश जनु रजनीश राख्यो भालहूं तें उतारि॥ मदन रज तनु श्याम मंडित शोभयहि अनुहारि। मनहुं अंग बिभूति भ्राजित सिंधु सो मथि आरि॥ चिदशपति जशुमति सतावति असन को करै आरि॥ सूर दास बिरंचि जाको जपत यश मुख चारि॥ १०६॥ राग नट नारायण॥ सखोरी नंद नंदन देख॥ धूरि धूसर जटा जरुली हरिके तन हर भेख॥ नील कंठुला पोहि मनि गन फनिग ज्यों लपटाय॥ खन खनाकर हंसत हरि हर नचत डमरु बजाय॥ जलजमाल गोपाल पहिरें कहा कहों बनाय॥ मुंड माला मनोहर गरल शोभा पाय॥ स्वांति सुत माला बिराजित श्याम तनु यहि भाय॥ गौरि उर हर मनो गंगा लई कंठ लगाय॥ के हरि नख देखि हरषित रही मनहिं बिचारि॥ बाल शशि मनो भाल तें लै उर धरयो चिपुरारि॥ अंग प्रति अवलोकि युवती करति हैं यह ध्यान॥ सूर श्याम बिलोकि अशको नंग मनहिं संकान॥ १०७॥ राग धनाश्री॥ दधि सुत जामें नंद दुवार॥ निरखि नयन अरुझो मनमोहन रटत देहु कहि बारम्बार॥ दीरघ मोल कह्यो बै पारो रहे ठगे सब कौतुक हार॥ कर उपमा लै राखि रहे हरि देत न मुक्ता परम सुढार गोकुल नाथ गए जशुमति के आंगन भीतर भवन मझार॥ साखा पच भये जल मेलत फूल त फरत न लागी वार॥ जानत नहीं मरम सुर नर मुनि ब्रह्मादिक नहिं परत बिचार॥ सूर दास प्रभु की यह लीला ब्रज बनिता गुहि पहिरे हार॥ १०८॥ राग धनाश्री॥ का

जरि को पै पीवइ लाल तेरी बेनी हेा बढ़ै॥॥जैसें देखि और व्रज बालक त्यों बल वैस चढ़ै॥॥यह सुनि के हरि पीवन लागे ज्यों ज्यों लयेा लढ़ै॥॥अचवत पै तातैा जब लाग्यो रोवत जीभ उढ़ै॥॥पुनि पीवत हीं कचढ कटोरयो झूठे जननि रढ़ै॥॥सूर निरखि मुख हंसति जशेादा सेा सुख उरन कढ़ै॥ ॥१०९॥ ॥ राग रामकली॥ मैया कब बढि है मेरी चेाटी॥॥कितो बेर मेाहि दूध पिवत भई यह अजहूं है छेाटी॥॥तू जो कहति बल की बैनी ज्यों ह्वै है लांबी मेाटी॥॥काढत गुहत न्हवावत जैहै नागिनि सी भुइ लेाटी॥॥काचौ दूध पिवाबत मेाहन देती माखन रेाटी॥॥सूर मैया याही रस रिझयेा हरि हल धर की जेाटी॥॥११०॥ ॥ राग सारंग॥ जशुमति जबही कह्यो अन्हवावन रेाय गये हरि लाट तरी॥॥तेल उबटनेा लै आगे धरि लालहि चेाटति पेाटतिरी॥॥मैं बलि जांउ रहेा किनि मेाहन कत रेावत बिन काजै री॥॥पाछें धरि राख्यो चुराय के उबटन तेल समाजैरी॥॥महरि बहुत बिनती करि राखति मानत नहीं कन्हाईरी॥॥सूर श्याम अतिही बिरझाने सुर मुनि अंत न पाईरी॥॥१११॥ रागसारंग कान्ह बलि गई आरि न कीजै हेा॥॥जोई जोई भावे सेाई लीजैहेा॥॥कहति जशेादा रानी हेा॥॥को खिझवै सारंग पानी हेा॥॥जेा मेरेा लाल खिझावै हेा॥॥सेा अपनेा कियेा भलै पावेहेा॥॥तेहि देहेां देस निकारेाहेा॥॥ताको व्रज नाहिन गारेाहेा॥॥अति रिस तें तनु छीजै हेा॥॥सुठि केामल अंग पसीजैहेा॥॥बरजत बरजत बिरझाने हेा॥॥करि क्रोध मनहि अकुलाने हेा॥॥धरत धरत भुंई लेाटे हेा॥॥माता को चीर निबेडे हेा॥॥अंग आभूषन सब तेारे हेा॥॥नवनिधि भाजन फेारे हेा॥॥देखि तत्तजल तरसे हेा॥॥जशुदा के पायन परसे हेा॥॥महरि बांह गहि आने हेा॥॥तब तेल उबटनेां सानेहेा॥॥तब गिरत परत उठि भागे हेा॥॥कहुं नेक निकट नहि लागै हेा॥॥तब नंद घरनि चुचुकारै हेा॥॥आवहुं बलि जाउ तुम्हारे हेा॥॥नहिं आवहु तेा भले लाल हेा॥॥पुनि जानेा मे मदन गेापाल हेा॥॥तुम मेरी रिस नहि जानत हेा॥॥मेाहि तुम नहिं पहिचानतहेा मैं आजु तुमहि गहि बांधेा हेा॥॥हाहा करि करि अनु राधेा हेा॥॥बाबा नंद उतहि तें आए हेा॥॥केाने हरि अतिहिं खिझाए हेा॥॥मुख चूंवि हरषि ले आए हेा॥॥लै जशुमति पहुंचाए हेा॥॥मेाहन कत खिझति अयानी हेा॥॥हिए लाय लिए नंद रानी हेा॥॥क्यौंहूं जतन जतन करि पाए हेा॥॥तनु उबटन तेल लगाए हेा॥॥तातेा जल आनि समेाई हेा॥॥अन्हवाइ दियेा अंग धेाई हेा॥॥अति सरस बसन तनु पेांछेा हेा॥ लैकर मुख कमल अंगेाछेा हेा॥॥अंजन देाउ दृग भरि दीन्हेा हेा॥॥भ्रुव चारु चख्यो डाकीन्हेा हेा॥॥अंग आभूषन पहिराए हेा॥॥खावहि क्रम क्रम ठहराए हेा॥॥ऐसी रिस न करेां मेरे कान्हा हेा॥॥अब खाहु कुंवर कछु नान्हा हेा॥॥तुतरात कह्यो काहे री हेा॥॥जेा मेाहि भावै सेा दैरी हेा॥॥जोइ जोइ भावै मेरे प्यारे हेा॥॥सेाई सेाई दैहेां मैललारेा हेा॥॥करीहै सिरावति सीरा हेा॥॥कछु हठ न करेा जदुबीरा हेा॥ सद्य दधि मांखन घीआनी हेा॥॥तापर मधु मिश्री सानी हेा॥॥खेावा मैं मधुर मिठाई हेा॥॥सेा देखत अति रुचि पाई हेा॥॥कछु बलदाउ को दीजै हेा॥॥अरु दूध अधौटा

पीजै हो । सब हेरि धरी है साढी हो ॥ लै उपर उपर तें काढी हो । अति प्योंसरि सरस सनाई हो ॥ तेहि सोंठि मिरच रचि नाई हो । दूध बरा दहि रौरी हो ॥ जो खात अमृत एक कौरी हो । सुठि सुरस जलेबी बोरी हो ॥ जेहि जेंवत नहिरुचि थोरीहो । अरु खुरमा नरम सवारे हो ॥ जे मुख मेलत सुकुमारे हो । मोती लड्डू सुठि मीठे हो ॥ वै खात न कबहुं उबीठे हो । शित लड्डू लवंगन नाए हो ॥ एते करि बहुजतन बनाएहो गूंझावहु पूरन पूरे हो ॥ भरि भरि कपूर रस चूरे हो । अरु तैसिय दाल मखूरी हो ॥ जो चाखत सुख दुख दूरी हो । अरु फेसमि सुरस सवारे हो ॥ अति स्वाद परम सुख कारे हो । बावर बरने नहि जाई हो ॥ जेहि देखत अति सुख पाई हो । माल पुवा मनु साने हो ॥ वैतप्त तुरत करि आने हो । सुन्दर अति सरस अंदरसे हो ॥ ते घृत दधि मधु मिलि सरसे हो । घेवर अति घिरव चभोरे हो ॥ लै खांड डार तर बोरे हो । माधुनि अति मय रस जूरी हो । सद्य पकसि घृतबोरी हो ॥ जब पूरी सुनी हरिहरष्यो हो । तब भोजन घर मद करष्यो हो ॥ सुनि तुरत जशोदा ल्याई हो ॥ अति रुचि समेत हरि खाई हो । बलदाउहि टेरि बुलाई हो ॥ यह सुनि हलधर तहं आए हो । षटरस परकार मगाए हो ॥ जे बरनि जशोदा गाए हो ॥ मनमोहन हलधर बीरा हो । जेवत रुचि राख्यो सीरा हो ॥ सीतल जल लियो मंगाई हो । भरि झारी जशुमति ल्याई हो ॥ अंचवत नंद नयन जुडाने हो । दोउ हरखि हरखि मुसकाने हो ॥ हंसि जननी चुरु भराए हो । तब कछु कछु मुख पखराए हो ॥ बीरी तनक तनक मुख नाए हो । अति लाल अधर ह्वै आए हो ॥ छवि सूरदास बलिहारी हो । मांगत कछु जूठनि थारी हो ॥ हरि तनक तनक षट रस खायो हो । जूठनि भक्तनि पायो हो ॥ ११२ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ पाछनी करिदै तनक मह्यो । हो लागी गृहकाज रसोई जशमति बिनै कह्यो ॥ आरि करत जनि मोहन मेरो अंचल आनि गह्यो । व्याकुल अथति मथानी रीती दधि भुव ढरकि रह्यो ॥ मांखन जात जानि नन्दरानी सखिन सम्हारि कह्यो । सूर श्याम मुख निरखि मगन भई दुरुनि संकोच रह्यो ॥ ११३ ॥ राग रामकली ॥ हरि अपने आगे कछु गावत । तनक तनक चरननि सों नाचत मनही मनहिं रिझावत ॥ बांह उठाय काजरी धेनी गैयनि टेरि बुलावत । कबहुंक बाबा नन्द पुकारत कबहुंक घरही आवत ॥ मांखन तनक लेत कर अपने तनक बदन मैं नावत । कबहुं चितै प्रति बिंब खंभको लवनी लै देखरावत ॥ देखि देखि जशुमति यह लीला हरष अनंद बढावत । सूर श्याम के बाल चरित नितही नित देखत भावत ॥ ११४ ॥ राग बिलावल ॥ बलि बलि जाउं मधुर सुर गावहु । अबकि बार मेरे कुंवर कन्हैया नंदहि नाच देखावहु ॥ तारी देहु आपने करकी परम प्रीति उपजावहु । आन अन्त धुनि सुनि डरपत कतहो भुज कंठ लगावहु ॥ जिनि संका जिय करहु लालमेरे काहेको सरमावहु । बांह उठाय कहो को नाई धौरी धेनु बुलावहु ॥ नाचहु नेक जाउं बलितेरी मेरी साध पुरावहु । रतन जटित किंकिनि पग नूपुर अपने रंग बजावहु ॥ कनक खंभ प्रति बिंबित सिसु एक लौनी ताहि खवावहु । सूर श्याम मेरे उरतें कबहुं टारे नैक न भावहु ॥ ११५ ॥ अब

कन छेदन कौ प्रस्ताव ॥ राग धनाश्री ॥ कान्ह कौ कन छेदन हाथ सुहारी भेली गुर की । विधि विहसत हरि हंसत हेरि हेरि जशुमति के धक धकी डरकी ॥ रोचन भरि लै देत सोंकसों श्रवन निकट अतिही चातुरकी । कंचन केहै दुर मगाये लिए कहा कहों छेदन आतुरकी ॥ लोचन भरि भरि दोउ माताके कन छेदन देखत जिय सुरकी । रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नउ बांका भुरकी ॥ हंसत नंद जुवती सब विहंसी झमकि चली छवि भीतर दुरकी । सूर दास नन्द करत बधाई अति आनन्द वाला व्रज परकी ॥ ११६ ॥ राग धनाश्री ॥ जबहि भयो कनछेदन हरिको । सुर बनिता सब कहति परस्पर व्रजवासी दासी सम सरिको ॥ गोपी मगन भई सब गावति हलरावति सुतलेति महरि को ॥ जो सुखमुनि जन ध्यान न पावत सो सुख करत नंद शुभ घरि को । मनि मुक्ता गन करत न्योछावरि तुरतहि देत बिलम नहि तनि को ॥ सूर नंद व्रज जन पहि रावत उमगि चल्यो सुख सिंधु लहिर को ॥ अथ चन्द्र को प्रस्ताव ॥ राग कान्हरो ठाढी अजिर जशोदा अपने हरहिं लिये चन्दा दिखरावत । रोकत कत बलि जांउ तुम्हारी देख्यो धौं भरि नयन जुडावत ॥ चितै रहे तब आपुन शशि तन अपने कर लै लै जु बतावत । मीठो लगत कि धौं यह खाटौ देखत अति सुन्दर मन भावत ॥ मनहीं मन बुधि करत हरि माता सेा कहि ताहि मंगावत । लागी भूख चंद मैं खै हौं देहु देहु रिस करि बिबुझावत ॥ जशुमति कहति कहा मैं कीन्हों कत मोहन अति दुख पावत । सूर श्याम को जशुमति बोधति गगन तरइया उदर दिखावत ॥ ११७ ॥ राग कान्हरो ॥ केहि बिधि करि कान्हहिं समुझे हों । मैं भूलि चंदवा दिखरायेा ताहि कहत मोहि दै मैं खैहों ॥ अन होतो कहूं भई कन्हैया देखी सुनीन बात । यह तौ आहि खिलौना सब को खान कहत तेहि तात ॥ यहै दूत नवतो नित मोको छिन छिन सांझ सवारे । बारबार तुम माखन मांगत देउं कहांते प्यारे ॥ देखत रहौ खिलौना चंदा आनि न करो कन्हाई । सूर श्याम लिये हंसति जशोदा नंदहि कहति बुझाई ॥ ११८ ॥ राग धनाश्री ॥ आछो मेरो लाल हो ऐसी आरति कीजै । मधु मेवा पकवान मिठाई जोइ भावै सोइ लीजै ॥ सद माखन माज्यो दह्यो घृत अरु मीठो पै पीजै । पालागौं हठ जिनि करो अति रीस न तनु कीजै । आन बतावत आनही इन बातनि कैसे जीजै ॥ सूर श्याम हठि चंदा मागें चन्द कहां तेदीजे ॥ ११९ ॥ राग कान्हरो ॥ बार बार जशुमति सुत बोधति आउ चंद तोहि लाल बुलावें । मधु मेवा पकवान मिठाई आपु न खै हैं तोहि खवावें ॥ हाथहि पर तोहि लीन्हे खेलै नेक नहीं धरनी बैठावें । जल बासन करिकै जो उठावति यहि में तन धरि आवे ॥ जलपुट आनि धरनि पर राख्यो गहि आन्यो वह चंद दिखावें । सूर दास प्रभु हसि मुसकाने बार बार दोऊ कर नावें ॥ १२० ॥ राग रामकली ॥ ल्यौंगो री मा चंदा ल्यौंगो । कहा करों जल पुट भीतर को बाहिर चौंकि गहौंगो ॥ यह तौ झलत झलात झकझोरत कैसे करि जु लहौंगो । वह तौ निपट निकटहीं देखत बरजे हों न रहौंगो ॥ तुम्हरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो बौराए न चहौंगो । सूर श्याम कहैं कर गहि ल्याऊ ससि तनदाप दहौंगो ॥ १२१ ॥ राग धनाश्री ॥ लाल यह चंदा लै लै कमल

नयन बलिजाय जसोदा नीचौ नेक चितै हो ॥ जा कारन तुम सुनि सुन्दर वर कीन्हो एति अनेहो ॥ सोई सुधा कर देखि दामोदर या भाजन मैं हैं हो ॥ नभ तें निकट आनि रा ख्यौ है जल पुट जतन ज गैहो ॥ लै अपने कर काढि चंद कों जो भावे सो कैहो ॥ गगन मंडल तें गहि आन्यो हो पत्नी एक पठैहो ॥ सूर दास प्रभु इतिक बात को कत मेरो लाल हठैहो ॥ १२२ ॥ राग बिलावल ॥ तुव मुख देखि डरत शशि भारी ॥ कर कारि कै हरि देख्यो है चाहत भाजिय ताल गयो अपहारी ॥ वह शशि तौ कैसेहु नहि आवत यह ऐसो कछु बुद्धि विचारी ॥ वदन लखे विधु विधु संकित मन नैन कंज कुंडल छजियारी ॥ सुनउ श्याम तुहि शशि डरपत यहै कहत ए सरन तुम्हारी ॥ सूर श्याम बिरुझाने सोए लिए लगाय कृतिया महतारी ॥ १२३ ॥ राग केदारो ॥ जसुमति लै पलिका पौढावति ॥ मेरो आजु अतिहिं खिरझानो यह कहि मधुरे सुर सों गावति ॥ पौढि गई आपुन हरषे करि अंग मोरि तब हरि जमुहाने ॥ करसों ठोकि सुतहि दुलरावति लट पटाय बैठे अतुराने ॥ पौढउ लाल कथा एक कहि हौं अति मीठी श्रवननि को प्यारी ॥ यह सुनि सूर श्याम मन हरषे पौढि गए हंसि देत हुंकारी ॥ १२४ ॥ राग केदारो ॥ सुनि सुत एक कथा कहौं प्यारी ॥ कमल नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक सिरोमनि देत हुंकारी ॥ नगर एक रमणीक अयोध्या बड़े महल जहां अगम अटारी ॥ बहुत गली पुर बीच बिरा जति भांति भांति सब हाट बजारी ॥ तहां नृपति दशरथ रघुवंशी जाके नारि तीन सुख कारी ॥ कौशिल्या केकई सुमित्रा तिनके जनम भये सुतचारी ॥ चारि पुत्र राजा के प्रगटे तिन में एक राम व्रतधारी ॥ जनक धनुष व्रत देखि जान की त्रिभुवन के सब नृपति हंका री ॥ राम पुत्र दोउ ऋषि लै आए सनत जनक प्रण तहं प्रगटारी ॥ धनुष तोरि मुख मोरि नृपनि को जनक सुता तिन लिय वरिनारी ॥ पग अंगुठा जब पीर नृपतिके तब केकई सुख मेलि निवारी ॥ वचन मांगि नृपसों यहि लीन्हो रघुपति के अभिषेक सम्हारी ॥ तात वचन सुनि तज्यो राज जिनि भ्राता घरनि सहित वन चारी ॥ उनके जात पिता तनु त्यागो अति व्याकुल करि जीव बिसारी ॥ चित्रकोट गये भरत मिलन जब पग पावरि दै करी छपा री ॥ युवती हेत कपट मृग मारयो राजिव लोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरन कियो सीता को सुनि करुना मय नीद बिसारी ॥ सूर श्याम तब रटत चापको लक्ष्मन देउ जननि श्रम भारी ॥ १२५ ॥ राग केदारो ॥ जसुमति मन मन यहै बिचारति ॥ झझकि उठ्यो सोवत हरि अबही कछु पढ़ि पढ़ि तनु दोष निवारति ॥ खेलत में कोउ डीठि लगाई लै लै राई लोन उतारति ॥ सांझहि ते अतिही बिरुझानो चंदहि देखि वारी अति आरति ॥ बार बार कुलदेव मनावति दोउ कर जोरि सिरहिं लै धारति ॥ सूर दास जसुमति नंदरानी निरखि वदन जै ताप निवारति ॥ १२६ ॥ राग रामकली ॥ प्रात समय उठि सोवत सुत को वदन उघारयो नंद ॥ रहि न सकत देखन को आतुर नयननि साके दंद ॥ रात्रि सेज मैं तें मुख निकसत गयो तिमिर मिटि मंद ॥ मनु पै निधि सुर मथत फेन फटि दयो दिखाई चंद ॥ धारो चतुर चकोर सूर मुनि सब सखि सखा सुकंद ॥ रहीन सधि शरीर धीर मति पिवत किरनि मकरंद ॥ आलस बदन अलक मु चिज्यों अलि पान करत मकरंद ॥ १२७

॥ राग भैरव ॥ उठहु नंद कुमार भयो भिनु सार जगावति नंद रानी ॥ । भारी के जल बदन पखारौ कहि कहि सारंग पानी ॥ ॥ माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावै सो ल्यौ आनी ॥ । सूर श्याम मुख निरखि यशोदा मनहीं मनहिं सिहानी ॥ १२८ ॥ राग बिलावल भोर भये निरखत हरि को मुख प्रभुदित जशुमति हरषित नंद ॥ । दिन कर किरनि कमल जनु बिकसत निरखति अति उपजत आनंद ॥ बदन उघारि जगावति जननी जागहु मेरे आ नंदकंद ॥ मानहुं मथि सुर सिंधु फेन फटि दई दिखाई नूतन चंद ॥ । जाको ईश शेष ब्रह्मा दिक गावत नेति नेति श्रुति छंद ॥ सोई गोपाल सु गोकुल भीतर सूर सो प्रकटे परमानंद ॥ ॥ १२९ ॥ राग बिलावल ॥ नंदको लाल उठे जब सोई ॥ । निरखि मुखारबिंद की शोभा कहि काके मन धीरज होई ॥ मुनि मन हरत युवतिजन केतुक रति पति मान जात सब खोई । ईषद हास दसन दुति दामिनि मानिक बीपि भरे जनु पोई ॥ ॥ नागर नन्द सुवन सुनि सजनी सारसजात लेत मन गोई ॥ । सूरश्याम मन हरन मनोहर गोकुलबसि मोहे सब लोई ॥ १३० ॥

॥ अथसूरसागर बाललीला रागकलपद्रुम ॥

॥ अथ माटी भक्षण सुप्रसंग ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ * ॥ राग बिलावल ॥ खेलत श्याम पौरिके बाहेर ब्रज लरिका संग सोहत जोरी ॥ । तैसेई आपु तैसेई सब बालक अति अज्ञान सबकी मति भोरी ॥ ॥ गावत हांक देत किलकारत दुति देखति नंदरानी ॥ । अति पुलकित गद गद ह्वदु बानी मन मन हरषि सिहानी ॥ ॥ माटी लै हरि मेलि दई मुख तबहि यशोदा जानी ॥ ॥ सांटी लिये दौरि भुज पक रयो श्याम लंगरयों ठानो ॥ ॥ लरकनि को तुम सब दिन झुठवत मोसों कहा कहोगी ॥ । मैं माटी नहि खाई मैया मख देखे निबहोगी ॥ ॥ बदन उघारि दिखायो त्रिभुवन बन घन नदी सुमेरा ॥ । नभ शशि रवि मुख भीतर हैं सब सागर धरनी फेरा ॥ ॥ यह देखत जननी मन व्याकुल बालक मुखका आहि ॥ । नयन उघारि बदन हरि मूंद्यो माता मन अवगाहि ॥ ॥ झूंठे लोग लगावत मोकों माटी मोहि न सुहावै ॥ ॥ सूरदास तब कहति यशोदा ब्रज लोगनि यह भावै ॥ ॥ १ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ मोहन क्यों नहि उगिलै माटी ॥ । बार बार अन रुचि उपजावति मुहरि हाथ लिये सांटी ॥ ॥ मुहतारी सों मानत नाहीं कपट चतुरई ठाटी ॥ । बदन उघारि दिखाय आपनो नाटक को परपाटी ॥ ॥ बड़ी बार भई लोचन मूंदे भ्रमित जननि

मन फाटी । सूर निरखि व्रज नारि थकित भईं कहत न मीठी खाटी ॥ २ ॥ राग रामकली ॥ मो देखत यशुमति तेरे ढोटा अबही माटी खाई । यह सुनिके रिसके उठि धाई बांह पकरि लै आई ॥ एक कर सों मुख गहि कै गाढे एक कर लीनी सांटी । मारति हो तोहि अबहि कन्हैया बेगि न उगिलौ माटी ॥ व्रज खरिका सब तेरे आगे झूठी कहत बनाई । मेरे कहे नहीं तू मानत दिखरा बहुं मुख बाई ॥ अखिल ब्रह्माण्ड खंड की महिमा दिखरायी मुख माही । सिंध सुमेर नदी बन पर्वत चकित भई मन माही ॥ करतें सांट गिरत नहि जान्यो भुजा छांडि अकुलानी । सूर कहै यशुमति मुख मूदहु बलि गई सारंग पानी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ नंदहि कही यशोदा रानी । माटी के मिस मुख दिखरायो तिहुं लोक रजधानी ॥ स्वर्ग पताल धरनि बन पर्वत बदन माझ है आनी । नदी सुमेर देखि चकृत भई याकी अकथ कहानी ॥ चितै रहे तब नंद युवति मुख मन मन करत बिमानी । सूर दास तब कहति यशोदा गर्ग कही यह बानी ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ कहत नंद जशमति सुनि बौरी । नाजानिये कहांतें देख्यो मेरे कान्हहि लावति टौरी ॥ पांच बरषको मोरे कन्हैया अचरित तेरी बात । वे काजहि सांटी लै धावति तापाछें बिललात ॥ कुशल रहैं बलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात । सूरश्याम को कहा लगावति बालक कोमल गात ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ न्हात नंद सुधि करी श्यामकी ल्याबहु बोलि कान्ह बलराम । खेलत बड़ी बार कहुं लाई व्रज भीतर कान्हके धाम ॥ मेरे संग आय दोउ बैठे उन बिन भोजन कौने काम । जशुमति सुनत चली अति आतुर व्रज घर घर टेरति लै नाम ॥ अजु अबेर भई कहूं खेलत बोलि लेहु हरिको कोउ बाम । ढूंढि फिरी नहि पावति हरि को अति अकुलानी चितवत धाम ॥ बरबार पछितति जशोदा बासर बीति गये जग जाम । सूर श्याम को कहूं न पावति देखे बहु बालक एक ठाम ॥ ६ ॥ ॥ राग नट नारायण ॥ कोउ माई बोलि लेहु गोपालहि । मैं अपने को पंथ निहारति खेलत बेर भई नंदलालहि ॥ टेरत बड़ी बेर भई मोकों नहि पावति घनश्याम तमालहि । सिध जेंवन सिरात नंद बैठे ल्याबहु कान्ह बोलि तत कालहि ॥ भोजन करहिं नन्द संग मिलिके भूख लगी है मेरे बालहि । सूर श्याम मग जोवति जशुमति आय गये सुनि बचन रसालहि ॥ ७ ॥ रागसारंग ॥ नंद बुलावत हैं गोपाल । आबहु बेगि बलैया लैहौं मोहन श्याम तमाल ॥ परसे थार धरयो मग जोवत बोलत बचन रसाल । भात सिरात तात दुख पावत क्यों न चलो ततकाल ॥ हौं बारी इन प्रति पायन परदोरि दिखा बहु चाल । छांडि देहु तुम लाल लटपटी यह गति मंद मराल ॥ सो राजा जो अगमन पहुंचै सूर सुभव नउ ताल । जो जैहै बलराम अगमने तो हंसि है सबग्वाल ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ हरि को टेरत तैं नंद रानी । बहुत अबेर भई कहुं खेलत कहां रह्यो सारंग पानी ॥ सुनतहिं टेर दौरि तब आये कबके निकसे लाल । जेंवत नहीं नंद तुम्हारे बिन बेगि चलो गोपाल ॥ श्यामहि ल्याई महरि जशोदा तुरतहि पाय पखारे । सूर दास प्रभु संग नंदके बैठे हैं सदौधारे ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ जेंवत नंद कान्ह एक ठौरे । कछुक खात लपटात दूहु कर बालक हैं अति भोरे ॥ बरा कौर मेलत मुख

भीतर मिरचि दसन तकि तोरे । तोछ न लगे नयन भरि आये रोवत बाहर दौरे ॥ फूंकति बदन रोहिणी ठाढी लिये लगाय अंकोरे । सूर श्याम को मधुर कौर दै कीने तात निहोरे ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ जेंवत कान्ह नंदकी कनियां । कछुक खात कछु धरनि गिरावत छबि निरखति नंद रनियां ॥ बरी बरा बेसन बहु भांतिन बिंजन विविध अगनियां । डारत खात लेत अपने कर रुचि माखन दधिदुनियां । मिश्री दधिमाखन मिश्रित करि मुख नावत छबि धनियां ॥ आपुन खाय नंद मुख नावत सो सुख कहत नबनियां ॥ जो रस नंद जशोदा बिलसत सो नहिं तिहूं भुवनियां । भोजन करि नंद अचबन लीनो मांगत सूर जुठनियां ॥ ११ ॥ * ॥ अथ श्री प्रभुजी को खेलनो ॥ * ॥ राग रामकली ॥ खेलत श्याम ग्वालनि संग । सुबल हलधर अरु श्री दामा करत नाना रंग ॥ हाथ तारी देत भाजत सबै रुचिकरि होड़ । बरजे हलधर श्याम तुम जिनि चोट लागहि गोड़ ॥ तब कह्यो मैं दौरि जानत बहुत बल मोगात । मेरी जोरी है श्रीदामा हाथ मारे जात ॥ बोलि तबहि उठे श्री दामा जाहु तारी मारि । आगें हरि पाछें श्रीदामा धरयौ श्याम हंकारि ॥ जानि के मैं रह्यो ठाढो छुअत कहा जु मोहि । सूर श्याम खीजत सखन सों मनहि कीनो कोहि ॥ १ ॥ राग गौरी ॥ सखा कहत हैं श्याम खिसियाने । आपुहि आय लुकि भये ठाढे अब तुम काहू रिसियाने ॥ बोचहि बोलि उठे हलधर तब दूनके माय न बाप । हारि जीत कहूं नेक न समझत लरिकनि लावत पाप ॥ आपुन हारि सखासों झगरत यह कहि दियो पठाय । सूर श्याम उठि चले रोयके जननी पूछति धाय ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो । मोसों कहत मोल को लीन्हो तू कब जशुदा जायो ॥ कहा करों यहि रिसके मारे खेलनहूं नहि जात । पुनि पुनि कहत कवन है माता कौन है तेरो तात ॥ गोरे नन्द जशोदा गोरी तुमकत श्यामल गात । चुटकी दैदै ग्वाल सुनावत हंसत सबै मुसकात ॥ तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहुन खीझै । मोहन को मुख रिस समेत यिबातें सुनि सुनि रीझै ॥ सुनि कान्ह बलभद्र चौबाई जनमहि को वह धूत । सूर श्याम मोहि गोधनकी सौंह मैं माता तू पूत ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ खेलन अब मेरी जाय बलैया । जबहि मोहि देखत लरिकन संग तबहि खिझत बल मैया ॥ मोसों कहत तात वसुदेव को देवकी तेरी मैया । मोल लयो कछु देवसुदेवहि करि करि जतन बडैया ॥ अब बाबा कहि कहत नन्दसों जशुमति सो कहै मैया ऐसे कहि सब मोहि खिझावत तब उठि चल्यो खिसैया ॥ पाछे नंद सुनत हैं ठाढे हंसत हंसत उरलैया । सूर नन्द बलरामहि धिरयौ सुनि मन हरष कन्हैया ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ खेलन चलो बाल गोबिन्द । सखा प्रिय हारे बुलावत घोष बालक वृन्द ॥ तृषित हैं सब दरश कारन चतुर चाचक दास । बरषि छबि नीवारि धर तनहरत लोचन प्यास ॥ बिनै बचन सुनत कृपानिधि चले मनहरि बाल । ललित लघु लघु चरण कर उरबाहु नयन बिसाल ॥ अजिर पद प्रति बिंब राजत चलत उपमा पुंज । प्रति चरण मानो हेम वसुधा देत आसन कुंज ॥ सूर प्रभुकी निरखि शोभा रहे सुर अवलोकि । सरद चन्द चकोर मानो रहे थकित बदन बिलोकि ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ खेलन को हरि दूरि

गयोरी । संग संग धावत डोलत कहधौं बूझत अबेर भयोरी ॥ पलक ओट भावत नहिं मोको कहा कहौं तोहि बात । नंदहि तात तात कहि बोलत मोहि कहत हैं मात ॥ इतनी कहत श्याम घन आये ग्वाल सखा सब चीन्हौ । दौरि जाय उरलाय सूर प्रभु हरषि जशोदा लीन्हौ ॥ ६ ॥ राग बिहागरौ ॥ खेलन दूरि जात कत कान्हां । आजु सुन्यो मैं हाऊ आयो तुमनहि जानत नान्हा ॥ एक लरिका अबहीं भजि आयो रोवत देख्यो ताहि । कांन तोरि वह लेत सबनि को लरिका जानत जाहि ॥ चलो न बेगि सबै रे जैये भाजि आपने धांम । सूर श्याम यह बात सुनतही बोलि लिये बलराम ॥ ७ ॥ राग जैतश्री ॥ दूरि खेलन जिनि जाहु ललन मेरे हाऊ आये हैं । तबहंसि बोले कान्हरि मैया इनको किन्हे पठाये हैं ॥ यमुना के तट धेनु चरावत जहां सघन बन झाऊ । पैठि पताल ब्याल गहि नाथ्यो तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुनि सुनि ये बातें कहत हंसत बलदाऊ । सप्त रसातल शेषा सन रहि तबकी सुरत भुलाऊ ॥ चार वेद लै गयो शंखसुर जलमें रह्यो लुकाऊ । मीन रूप धरिकै जब मारयो तबहिरहे कहां हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरन के हित मन्दर जलहि खसाऊ । कमठ रूप धरि धरनि पीठि पर सुख पायो सुराऊ ॥ जब हरणाक्ष दुष्ट अभि लाख्यो मनमें अति गरवाऊ । धरि बाराह रूप रिपु मारयो लै छिति दन्त अगाऊ ॥ विकट रूप अवतार धरयो जब सो प्रल्हाद बताऊ । धरि नृसिंह जब असुर विदारयो तहां न देख्यो हाऊ ॥ बावन रूप धरयौ बलि छलिकर तीन धरण व सुधाऊ । अम जल ब्रह्म कमंडल राख्यो दरसि चरण प्रसाऊ । मारयौमुनि विनही अपराधहि कामधेनु लै आऊ ॥ एकइस बार करी निक्षत्रि छिति तहां न देख्यो हाऊ । रामरूप रावन जब मारयौ दश सिर बीस भुजाऊ ॥ लंक जराय छार जबकीनो तहां रहे कहां हाऊ । माटीके मिस बदन विकारयौ जब जननी डरपाऊ ॥ मुख भीतर चयलोक देखायो तबहुं प्रतीत न आऊ । नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तहं वह भाव बताऊ ॥ तुरत वीर दुइ टूक कियो धर ऐसे त्रिभुवन राऊ । भक्त हेत अवतार धरयौ सब असुरनि मारि बहाऊ । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति कहि गाऊ ॥ ८ ॥ राग रामकली ॥ जशुमति कान्हहि यह समुझावति । सुनहु श्याम तुम बडे भए अब यह कहि स्तनन लुडावति ॥ इन लरिका तोहि पीवत देखें हंसत लाज नहि आवति । जैहै बिगरि दांत हैं आछे तातें कहि समुझावति ॥ अजहूं छांडि कह्यो करि मेरो ऐसी बात न भावति । सूर श्याम यह सुनि मुसकाने अंचल मुखहि लुकावति ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ खेलन जाहु ग्वाल तोहि टेरत । यह सुनि कान्ह भयो अति आतुर द्वारे तन फिरि फिरि जब हेरत ॥ बार बार हरि मातहि बूझत कहि बलराम कहां है । दधि ओदनि के पाछे देखो लै मैं धरयौ तहां है ॥ लै बलराम बडो अपने कर प्रभु आए घर बाहर । सूर श्याम बूझत सब ग्वालनि खेलहिं गे कोहि ठाहर ॥ १० ॥ राग नट ॥ खेलत बने घोष निकास । सुनहु श्याम चतुर सिरोमनि बहांहै घर पास ॥ कान्ह हलधर बीर दोऊ अति भुजा दुहुं जोर । सबल श्रीदामा सहित अब सखा भए एक ओर ॥ और सखा बराय लीन्हे गोप बालक वृन्द । चले ब्रजको खोरि खेलत अति एकनि नन्द नन्द ॥ बड़ा धरनी डारि दीनी लैचले

ढर काय । आप आपनि घात निरखत खेलु जब्यों बनाय ॥ सखा जीतत श्याम जाने तबकरी कछु पेल । सूरदास कहत सुदामा कौन ऐसो खेल ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत मैं को काको गुसैयां । जाति पांति हमतें बडा नाहि न हम बसत तुम्हारी छैयां ॥ अति अधिकार जनावत यातें जातें अधिक तुम्हारे गैयां । रूठि करै तासों कहा खेलैं रहे बैठि जहं तहं सब गोदूयां ॥ हरि हारे जीते श्रीदामा बर बसही कत करत रसैयां । सूरश्याम प्रभु खेलोई चाहत दांव दियो करि नन्द दुहैयां ॥ १२ ॥ अथ केसीकोबध ॥ राग मारू असुर पति आनि अति गर्ज धरो । सभा मांझ बैठत गरजतु है बोलत रोस भरो ॥ महा महा जे सुभट दैत कुल बैठे सब लंबराव । तिहूं भुवन भरि गय्य है मेरो मोसन मुख कौ आव ॥ मो समान मेरे सेवक नाहीं जाहि कहौं कछु दाव । काहि कहों को ऐसोलायक तातें मोहि पछितावु ॥ नृपतिराज आयसुदै मोको ऐसो कोन विचार । तुमअपने मनसोचत जाको असुरनि के सरदार ॥ जो करि क्रोध जाहि तन ताको तिनको होत संघार । मथुरा पति यह सुनि हरषित भयो मनहि धरो अति भार । खेत छच फहरात सीस परध्वजप ताक बहु बान । ऐसो को जो मोहि न जानत तिहूं भुवन मेरी आंन । असुर बंस में महा बली सब कहो काहि हौं जान । तनक तनक सो महर ढटौना करि आऊं बिन प्रान । यह कहि कंस चितै केसी तन कह्यो जाय करि काज । तृणा बर्त्त शकटा सुर पुतना उन के कृत सुनि लाज । तेतो कछु है है मैं जानत धरि आनहि ज्यौं बाज कलबल छल करि मारि तुरतही लै आवहु अब आज । अति गर्बित ह्वै कह्यो असुर भूत कितक बात यह आहि । कहो मारों जीवत धरि लाऊं एक पलक महं ताहि । आज्ञा पाय असुर तब धायो मन में यह अब गाहि । देखों जाय कौन वह ऐसो कंस डरपत है जाहि । असुमति तब अकुलाय परी गिरि तनको सुधि न रहाय । नंद पुकारत आरत व्याकुल टेरत फिरत कन्हाय । नयो चरित कछु गोप पुच भयो ब्रज सनमुख गयो धाय । बल मोहन ग्वालन बालक संग खेलत देखे जाय । धाय मिल्यो कोउ रूप निसाचर हल धर सेन बताय । मन मोहन मनही मुसकाने खेलत फलनि जनाय । ह्वै बालक बैठारि सयाने खेल रच्यो ब्रज खोरि । और सखा सब जुरि जुरि ठाढे आपु दनुजसंग जोरि । फलको नाम जनावनि लागे हरि कहि दियो अभारि । कंध चढ्यो जिमि सिंह महाबल तुरतहि घींच निहोरि । तब केसी हैवरवपु काढ्यो लैगयो पीठि चढाय । उतरि परे हरि ताऊपरतें कीन्हो जुद्ध अघाय । दाउ बाउसब भांत करतु है तब हरि करत मरारी । तब असुर कोप कर पीठ धर धरनि पकर पछारी । छल बल कर मोहन पकरके हरि बुद्धि उपाय । एक हाथ मुख भीतर नायो पकरि केस धरि दाय । बहुर यों फेरि असुर गहि पटक्यो शब्द उठ्यो आघात । चौंकि परो कंसा सुर सुनिके भीतर चल्यो प्रभात । यह कोउ भलो नहीं ब्रज जनम्यो यातें बहुत डरात । जान्यो कंस असुर गहि पटक्यो नंद महर के तात । और सखा सब रोवत धाए आय गए नर नारि । धाए नंद जसोदा धाई नित प्रति कहा गोहारि । ग्वाल रूप संग खेलत हो एक लेगयो कांधे डारि । ना जानिये आहिधों को यह कपट रूप वपु

धारि । दैत्य संघारि कृष्ण तहां आए व्रज जन मरत जिवाय । दौरि नंद उर लाय मिले सुत मिलो जसोदा माय । खेलत रह्यो संग मिलि मेरे लै उडि गयो आकास । आपुनही गिरि परो धरनि पर मैं उबरयो तेहि पास । डर डरात जिय बात कहत चहि आये हैं करि नास । सूर श्याम घर जशुमति लै गई व्रज जन नहीं हुलास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ जसुमति बूझति है गोपालहि । सांझहि की बेरियां भई सखिरी मैं डरपति जंजालहि । जबतें तृणावर्त्त व्रज आयो तबतें मो जिय संक । नैननि ओट होय पल कौ मैं मन मन करति असंक । येहि अन्तर बालक सब आये नंदहि करत गोहारि । सूर श्याम को आय कवनधों लै गयो कांधे डारि ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ खेलन दूरि जात कत प्यारे । जबतें जनम भयो है तेरो तबहीतें येहि भांति लबारे । कोउ आवत जुवती मिस करिके कोउ ले जात बतास कलारे । अब लगि बचे कृपा देवनिकी बहुत गए मरि शत्रु तुम्हारे । हाहा करति पाय तेरे लागति अब जनि दूरि जाहु मेरे बारे । सुनहु सूर जशुमति सुत बोधति विधिके चरित सबै हैं न्यारे ॥ ३ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ आजु कन्हैया बहुत बच्योरी । खेलत रह्यो घोषके बाहेर कोउ आयो शिशु रूप रच्योरी ॥ धर्म सहाय होतहैं जहं तहं श्रम करि पूरब पुण्य पच्योरी । सूर श्याम अबके बचि आये व्रज घर घर सुख सिंधु मच्योरी ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ बडे भाग्य हैं महर महरिको । लैगयो पीठि चढाय असुर एक कहा कहों उबरन या हरिकी ॥ नंद घरनि कुलदेव मनावति तुमहि लाज सुत धरी पहरकी । जहं तहं तुमहि सहाय सदा हौ जीवनि है यहै श्याम सहरको ॥ हरष भरे नंद करत बधाई दांन देत कहा कहों अवरको । पंच शब्द धुनि बाजत गावत नांचत मंगल चारचहर को ॥ अंकमभरि भरि लेत श्यामको व्रजनर नारि अतिहि मन हरषी । सूर श्याम संतन सुख दायक दुष्टनि के उर सालत करषी ॥ ५ ॥ राग नट ॥ खेलत श्याम अपने रंग । नंदलाल निहारि शोभा निरखि थकित अनंग ॥ चरणकी छबि निरखि डरप्यो अरुण गगन छपाय । जानु रंभा की सबै छबि निदरि लई छडाय ॥ जुगल जंघनि खंभ रंभा नहिन समसर ताहि । कटि निरखि केहरि लजाने रहे बन घन चाहि ॥ हृदय हरि नख अति विराजत छबि न बरनो जाय । मनो बालक बारि धरनव चंद दई दे खाय ॥ मुकुत माल विशाल उर पर कछु कहों उपमाय । मनो तारा गनन बेष्टित निसि गगन रह्यो छाय ॥ अधर अरुण अनूप नाशा निरखि जन सुखदाय । मनो सुख फल बिंब कारन लेन बैठ्यो आय ॥ कुटिल अलक बिना पवन के मनो अलि शिशु जाल । सूरप्रभु की ललित शोभा निरखिरी व्रजबाल ॥ ६ ॥ राग रामकली ॥ करि अस्नान नंद घर आए । लै जल जमुना को झारी भरि कंजसुमन कहुं पाए ॥ पांय धोय मंदिर पग धारे प्रभु पूजा जिय जानि । अस्थल लीपि पाच सब धोये काज देव के कांनि ॥ बैठे नंद करत हरि पूजा विधिवतसों बहु भांति । सूर श्याम खेलत तें आये देखत पूजा जाति ॥ ७ ॥ राग गुर्जरी ॥ नंद करत पूजा हरि देखत घंट बजाय देव अन्हवायो । दल चंदन लेपत ताको पट अंतर दैकै भोग लगायो ॥ अचवन दै बीड़ा आगे धरि आरति करी बनाई । कहत कान्ह बाबा

तुम अरप्यो देव नहीं कछु खाइ ॥ चितै रहे तब नंद महरि मुख सुनहु कान्हको बात । सूर श्याम देवनि कर जोरें कुशल रहे जैसें गात ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ जशुदा देखतिहो ढिग ठाढी । बालदशा अव लोकि श्याम की प्रेम मगन चित बाढी ॥ पूजा करत नंद जहं बैठे ध्यान समाधि लगाय । चुपही आनि कान्ह मुख मेल्यो देखो देव बड़ाय ॥ देखै नंद सिला नहिं आगे तब मन अचरज आय । कहां गयो मेरे आगेही तें को लेगयो उठाय ॥ तब जशुमति सुत बदन दिखावति देखो बदन कन्हाय । मुख कत मेलि देवता राख्यो घालें सबै न साय ॥ बदन पसारि सिला जब दीनी तीनों लोक दिखाय । सूर निरखि मुख नंद चकृत भये कहत नहीं कछु आय ॥ ९ ॥ राग आसावरी हंसत गोपाल नंद के आगे नंद स्वरूप न जान्योरी । निर्गुण ब्रह्म सगुण लीला धरे सोई सुत करि मान्योरी ॥ एक समैं पूजा के औसर नंद समाधि लगाईरी । सालि-ग्राम मेलि मुख भीतर बैठि रहे अरगाईरी ॥ ध्यान बिसर्जन कीन्हो नंदजू मूरति आगे नाहींरी । कहो गोपाल देवताका भये यह बिस्मय मन माहींरी । मुखतें काढि दयो जदु नंदन तबहि नंदके हाथरी । सूर दास स्वामी सुख सागर खेल रच्यो व्रज नाथरी ॥ १० ॥ अथ नंदजूको बरुण लै जानलीला ॥ राग बिलावल ॥ उत्तम शुक्लए कादशी आई । बिधिबत व्रत कीनो नंद राई । निराहार जल पान बिबर्जित । पाप रहित फल धर्महि अर्जित । नारायण हित ध्यान लगायो । और नही कहुं मन बिरमायो । बासर ध्यान करत सब बीत्यो । निसि जाग्रन करत मन चीत्यो । पाटंबर दिव्य मंदिर छायो । पुरुष माल मंडली बनायो । देव महल चंदनहि लिपायो । चौक देय बैठ की बनायो । सालिग्राम तहां बैठाये । धूप दीपनैवेद्य चढाये । प्रेम सहित करि भोग लगायो । आरति करि तब माथो नायो । बहु बिनती करि देव मनायो । पूजा आस जो जो मन भायो । सादर सहित करी नंद पूजा । तुमतजि और न जानों दूजा । तृतिय पहर जब रैनि बिताई । नंद महरि सों कह्यो बुलाई । दंड एक द्वादसी सकारे । पारनकी बिधि करौ सवारे । यह कहि नंद गये जमुना तट । लै धोती झारी बिधि क्रम पट । झारी भरि जमुना जल लीन्हों । बाहिर जाय देह कृत कीन्हों । लै मृत्तिका कर चरण पखारी । अति उत्तम सो करी मुखारी । अंचवन लेन निचुरे नंद पांनी । जल बाजत दूतनि तब जानी । नंद बांधि लै गये पतालहि । बरुण पास ल्याये ततकालहि । जान्यो बरुण कृष्ण के तातहि । मनहीं मन हरषित यहि चातहिं । भीतर लै राखे नंद नीके । अंतह पुर महलनि रानीके । रानी सबे नंदको देख्यो । धन्य जनम अपनो करि लेख्यो । इनके सुत त्रैलोक गुसाईं । सुर नर मुनि सबके हैं साईं । बरुण कह्यो मन हरष बढाये । बड़ी बात भई नंदहि ल्याये । अंतर जामी जानहिं बाता । अबही आवत हैं जग चाता । जाको ब्रह्मा अंत न पायो । ताको मुनि जन ध्यान लगायो । जाको नेति निगम गावत हैं । जाको मुनि बर बन ध्यावत हैं । जाको ध्यान धरे शिव योगी । जाको सेवत सुर पति भोगी । जो प्रभु जलथल है सब व्यापक । जो है कंस

गरब को दापक । गुण अतीत अबिगत अबिनासी । सो ब्रज में खेलत सुखरासी । धन्य मेरे भृत नंदहि ल्याये । करुणामय अब आवत धाये । महरि कही तब सब ग्वालन को । बड़ी बार भई नंद महर को । गये ग्वाल तब नंद बोलावन । देखो जाय जमुन जल पावन । जहां तहां ढूंढि ग्वाल घर आये । धोती अरु झारी तहं पाये । मन मन सोच करत अकुलाये । कही जसोदहिं नंद नपाये । धोती झारी तट मह पाई । सुनत महरि मुख गये मुरझाई । निसा अकेले आजु सिधाये । काहू धों जल चर धरि खाये । यह कहि जसुमति रोइ पुकारे । मो बरजत कतरैनि सिधारे । ब्रज जन लोग सबै उठि धाये । जमुना के तट कछू न पाये । बन बन ढूंढत गांव मझारे । नंदनंद कहि लोग पुकारे । खेलत ते हरि हलधर आये । रोवत मातु देखि दुख पाये । कत रोवति है जसुदा मैया । बूझत जननी सो दोउ भैया । कहत श्याम जिनि रोवै माता । अबहीं आवत हैं नंद ताता । मोतें कहि गये अबहीं आवन । रोवै जनि मैं जात बोलावन । सबके अंतर जामी हैं हरि । लै गयो बांधि बरुण नंदहि धरि । यह कारज वाको हम दीन्हों । वाके पूतनि नंदन चीन्हों । बरुण लोक तबहीं प्रभु आये । सुनत बरुण आतुर ह्वै धाये । आनंद कियो देखि हरि को मुख । कोटि जनम के गये सबे दुख । धन्य भाग मेरे बड़े आजू । चरण कमल दरसन शुभ काजू । पाटंबर पांवड़े डसाये । महल निबंदन बार बंधाये । रतन खचित सिंहासन धारयो तेहि पर कृष्णहि लै बैठारयो । अपने कर प्रभु चरण पखारे । जे कमला उरते नहि टारे । जे पद परसि सुरसुरी आई । तिहूं लोक है बिदित बडाई । ते पद बरुण हाथ लै धोये । जनम जनम के पातक खोये । कृपा सिंधु अब शरण तुम्हारी । येहि कारण अपराध बिचारी । आपु चले हरि नंदहिं देखत । बैठे नंद राज बर भेषत । नृप रानी सब आगे ठाढीं । मुख मुख तें सब अस्तुति काढीं । पायन परी कृष्ण के रानी । धन्य जनम सबही कहे बानी । धन्य नंद धन धन्य जसोदा । धनि धनि तुमहि खेलावत गोदा । धन्य ब्रज धनि गोकुलकी नारी । पूरन ब्रह्म जहां बपु धारी । शेष सहस मुख बरनिन जाई । सहज रुपको करै बड़ाई । देखि नंद तब करत बिचारा । यह कोउ आहि बड़ो औतारा । नंद मनहि अति हरष बढायो । कृपा सिंधु मेरे घर आयो । बरुणहि दीनी लोक बड़ाई । वृन्दा बन रजकरी सदाई । बरुण थापि नंदहि लै आये । महर गोप सब देखन धाये । नंदहि बूझत हैं सब बात । हम अति दुखित भये सुनि गात । कालिह एका दसी व्रत मैं कीन्हों । निसि जागरन नेम यह लीन्हों । तीनि प्रहर निसि जागि बिहाई । तब लीन्हों मैं महरि बोलाई । एक दंड द्वा दसी सुनाई । ताकारन मैं करी चंडाई । रैनि नहान गयो जमुना जल । एक दंड द्वादसी कयुक पल । गयो जमुन भीतर कटिलौं भरि । बरुण दूत तब मोहि लै गयो धरि । तहांते जाय कृष्ण मोहि ल्यायो । यह कोउ बड़ो पुरुष है आयो । इनकी महिमा कोऊ न जाने । बरुण कोटि मुख इनहि बखाने । रानी सहित परयो चरणनि तर । वंदन बार बंधे महलनि घर । मेरो कह्यो सत्य करि मानों । इन को

नर देही जनि जानो । जसुमति सुनि चकृत यह बानो । कहत कहत यह अकथ कहानी । ब्रज नर नारि सुनत यह गाथा । इनतें हम सब भये सनाथा । माया मोह करि सबै भुलाये । नंदहि बरुण लोक ते लाये । नंद एका दसि बरनि सुनाई । कहत सुनत सबके मन भाई । यह प्रताप नंदहि दिखराई । सूर दास प्रभु गोकुल राई ॥ ११ ॥ राग कान्हरो ॥ नंदहि कहति जसोदा रानी । मोहि बरजत निसि गये जमुना तट पैठे जाय अकेले पानी । अबकी कुशल परी पुण्यनिते द्विजनि करौ कछु दान । बेलि लेहु बाजने बजावहि देहु मिठाई पान । गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंद दुवार । सुनहु सूर यह कहति जसोदा नंद बचे यहि बार ॥ ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ कहत नंद जसुमति सुनि बात । अब अपने मन सोच करत कित जाके चिभुन पति सो तात । गर्ग सुनाय कही जो बानी सोइ सोइ प्रकट होतही जात । इनतें और नही कोऊ समरथ येई हैं सबही के नाथ । माया रूप मोहनी लाई डारे भुखै सबै अगाथ । सूर श्याम खेलत तें आये माखन मागत देमा हाथ ॥ १३ ॥ राग बिलावल ॥ तबहि जशोदा माखन ल्याई । मैं मथिकें अब हीं धरि राख्यो तुमहि काज मेरे कुंवर कन्हाई ॥ माँगि लेहु येही बिधि मोसों मो आगे तुम खाहु । बाहिर कबहुं कछू जिनि खैयो डीठि लगैगी काहु ॥ तनक तनक कछु खाहु लालमेरे ज्यों बढि आवै देह । सूर श्याम अबहोहु सयाने बैरिन के मुख खेह ॥ १४ ॥ हरि के बाल चरित अनूप । निरखि रही ब्रजनारी एक टक अंग अंग प्रति रूप ॥ बिथुरी अलकें रही बदन पर बिना पवन सुभाय । देखि कंजनि चंद के बस मधुप करत सहाय ॥ सजल लोचन चारु नासा परम रुचिर बनाय । जुगल खंजन करत अवनित बीच कियो बनराय ॥ अरुण अधर दसननि झाई कहौं उपमा थोरि । नील पट बिच मोती मानो धरे बंदन बोरि ॥ सुभग बाल मुकुंद की छबि बरनि काणै जाय । भृकुटि पर मसि बिंदु सो क्यों सकै सूरज गाय ॥ १५ ॥ राग कान्हरो ॥ सांझ भई घर आवहु प्यारे । दौरत कहा चोट कहुं लगिहै पुनि खेलहुगे होत सकारे ॥ आपुहि जाय बांह गहि ल्याई खेह रही लपटाई । धूरि झारि तातौ जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई ॥ सरस बसन तन पोंछि श्याम कौ भीतर गई लिवाई । सूर श्याम कछु करो बियारी पुनि राख्यो पौढाई ॥ १६ ॥ राग बिहागरो ॥ बल मोहन दोउ करत बियारी । प्रेम सहित दोउ सुतनि जिंवावति रोहिणि अरु जशुमति महतारी ॥ दोउ भैया मिलि खात एक संग रतन जटित कंचन की थारी । आलस सों कर कौर उठावत नयननि नींद झमकि रहि भारी ॥ दोउ माता निरखत आलस मुख छबि पर तनमन डारति वारी । बार बार जसु होत सूर प्रभु यह उपमा कब कहे कहारी ॥ १७ ॥ राग केदारो ॥ कीजै पान लालारे दूध ल्याई हो जशोदा मैया । कनक कटोरा भरि लीजै यह पयपीजै अति सुख देय कन्हैया ॥ आछे मैं अबही सुठि नीके अरु मिली मिठैया रुचि कर अचवत क्यों न नन्हैया । बहुत यतन करिकें राख्यो ब्रजराज लडैते तुम कारन बल भैया ॥ फूंकि फूंकि जननी पय प्यावति सुख पावति आनंद उर न समैया । सूर दास प्रभु पयपीवत बलराम

श्याम दोउ जननी लेति बलैया ॥ १८ ॥ राग बिहागरो ॥ कमल नयन हरि करो बियारी । लुचुई लपसी सद्य जलेबी सोई जेंवहु जोई लगै पियारी ॥ घेवर मालपुवा मोती लाडू सुघर संजूरी सरस संवारी । दूध बरा उत्तम दधि रोटी गोल मसूरी की रुचि न्यारी ॥ आछो दूध औटि धौरो को लै आई रोहिणि महतारी । सूर दास बलराम श्याम दोउ जेंवहु जननि जाय बलिहारी ॥ १९ ॥ राग केदारो ॥ बल मोहन दोउ अति अलसाने । कछु कछु खाहु दूध लै आऊं मुख जम्हात जननी जिय जाने ॥ उठहु लाल कहि मुख पखरायो तुम को लै पौढाऊं । तुम सोवहु मैं तुमहि सुवाऊं कछु मधुरे सुर गाऊं ॥ तुरत जाय पौढ़े दोउ भैया सोवत आई नींद । सूर दास जशुमति सुख पावति पौढ़े बाल गोबिंद ॥ २० ॥ राग सूहो बिलावल ॥ भोर भयो मेरे लाडिले कुंवर कन्हाई । सखा द्वार ठाढे सबै खेलो यदुराई ॥ मोकों मुख दिखराइये चय ताप नसावहु । तुव मुख चंद चकोर नयन मधुपान करावहु ॥ तब हरि मुख पट दूरि किय भक्तनि सुखकारी । हंसत उठे प्रभु सेजतें सूरज बलिहारो ॥ २१ ॥ राग भैरव ॥ जागिये ब्रज राज कुंवर कमल कोस फूले । मुकुद वृंद सकुचित भये भृंग लता भूले ॥ तमचुर खगरोर सुनहु बोलत बनराई । रांभति गौ छीर देन बछरा हित धाई ॥ बिधु मलीन रबि प्रकाश गावति ब्रज नारी । सूर श्याम प्रात उठे अम्बुज कर धारी ॥ २२ ॥ राग भैरव ॥ कमल नयन हरि करो कलेवा । माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भांति भांति की मेवा ॥ खारिक दाख चिरोंजी किसमिस उज्जल गरी बदाम । सफरी सेव छुहार सिंहारे जे खरबूजा नाम ॥ अरु मेवा बहु भांति भांति के षटरस के मिष्टान । सूर दास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ २३ ॥ राग रामकली ॥ आज मैं गाय चरावन जैहों वृंदावनके भांति भांति फल अपने कर मैं खैहों ॥ ऐसी बात कहौ जिनि बारे देखहु अपनी भांति । तनक तनक पग चलिहौ कैसें आवत ह्वै है राति ॥ प्रात मैं जात गैया लै चारन घर आवत हैं सांझ । तुम्हरो कमल बदन मुरझैहै घूमत घामहि मांझ ॥ तेरी सोंह मोहि घाम न लागत भूख कहूं नहिनेक । सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक ॥ ॥ २४ ॥ राग रामकली ॥ चले सब गाय चरावन ग्वाल । हेड़ी टेर सुनत लरिकनि की दौरि गये नंदलाल ॥ फिरि इत उत जशुमति जो देखै दृष्टि न परे कन्हाई । जान्यों जात ग्वाल संग दौरयो टेरति जशुमति धाई ॥ जात चल्यौ गैयनि के पाछें बलदाऊ कहि टेरत । पाछें आवत जननी देखी फिरि फिरि इतकों हेरत ॥ बल देख्यो मोहन कों आवत सखा किये सब ठाढे । पहुंची जाय जशोदा रिससों दोउ भुज पकरे गाढे ॥ हल धर कह्या जानदै मो संग आवहि आजु सवारे । सूर दास बलसो कहे जशुमति देखे रैहो प्यारे ॥ २५ ॥ राग बिलावल ॥ खेलन कान्ह चले ग्वालनि संग । जशुमति यहै कहति घर आई देखौ हरि कीन्हे जैसे रंग ॥ देखहु जाय आजु बनको सुख कहा परोसि धर्यो है । प्रातहि सो लाग्यो ओही ढंग अपनी टेक करयौ हैं ॥ माखन रोटी अरु शीतल जल जशुमति दियो पठाय । सूर नंद हंसि कहत मइरि सों आवत कान्ह चराय ॥ २६ ॥ राग कान्हरो ॥ वृन्दावन देखत नंद नंदन अतिहि परम सुख पायो । जहं तहं गाय

चरत ग्वालनि संग डोलत आपुन धायो ॥ बलदाऊ मोकों जिन झांडहु संग तुम्हारे आयोहो। कैसेंह आजु जशोदा झांख्यौ काल्हि न आवन पैयोहो ॥ सोवत मोकों टेरि लेहुगे बाबा नंद दुहाई । सूर श्याम विनती करें बलसो सखनि समेंत सुनाई ॥ २७ ॥ रागगौरी ॥ आजु हरि धेनु चराये आवत । मोर मुकुट बन माल विराजत पीतांबर फहरावत ॥ जेहि जेहि भांति ग्वाल सब बोलत सुनि श्रवणनि मन राखत । आपुन टेरि लेत नान्हे सुर हरषत मुख पुनि भाषत ॥ देखत नंद जशोदा रोहिणि अरु देखत ब्रज लोग । सूर श्याम गायन संग आये मैया लीन्हों रोग ॥ २८ ॥ राग गौरी ॥ जशुमति दौरि लिये हरि कनियां । आजु गयो मेरो गाय चरावन हौं बलि जांउ निछनियां ॥ मो कारन कछु आन्यो नाही बन फल तोरि कन्हैया । तुमहि मिले मैं अति सुख पायो मेरे कुंवर नन्हैया ॥ कछु कछु खाहु जो भावै मोहन दधि मांखन अरु रोटी । सूर दास प्रभु जुग जुग जीवहु हर हल धर की जोटी ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ माखन रोटी लेहु कान्ह बारे । तातो तातो रुचि उपजावै त्रिभुवन के उजियारे ॥ और लेहु पकवान मिठाई मेवा बहु विधि सारे । औट्यौ दूध सद्य दधि घृत मधुरुचिसों खाहु मेरे प्यारे ॥ तब हरि उठिके करी बियारी भक्तन प्राण पियारे । सूर श्याम भोजन करिके सुचि जलसों बदन पखारे ॥ ३१ ॥ राग कान्हरो ॥ पैठे श्याम जननि गुण गावति । आजु गयो मेरे गाय चरावन कहि कहि मन हुलसावति ॥ कौन पुण्य तपते मैं पायो ऐसो सुन्दर बाल । हरषि हरषि के देति सखिन को सूर सुमन को माल ॥ ३२ ॥ अथ मांखन चोरी करन ॥ राग गौरी ॥ मैयारी मोहि मांखन भावे । जोमेवा पकवान कहत तू मोहि नही रुचि आवे ॥ ब्रज जुवती एक पाछे ठाढी सुनति ग्वांमकी वात । मन मन कहति कबहुं अपने घर देखौ माँखन खात ॥ बैठे जाय मथनियां के ढिग मैं तब रहों छिपानो । सूरदास प्रभु अंतरयामी ग्वालि मनहि की जानी ॥ १ ॥ राग गौरी ॥ गये श्याम तेहि ग्वालिनि के घर । देखो जाय द्वार नहि कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर ॥ हरि आवत गोपी जब जान्यों आपुन रहो छपाय । सूने सदन मथनियां के ढिग बैठि गये अरगाय ॥ मांखन भरी कमोरी देखत लै लै लागे खान । चितै रहे मणि खंभ छांह तन तासों करे सयान । प्रथम आजु मैं चोरी आयो भलो बन्यों है संग । आपु खात प्रति बिंब खवावत गिरत कहत का रंग ॥ जो चाहो सब देख कमोरो अति मीठो कत डारत । तुमहिं देखि मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुनि सुनि बात श्याम के मुखको उमगि हंसी सकुमारी । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मुख तब भजि चले मुरारी ॥ २ ॥ राग गौरी ॥ फूली फिरति ग्वालि मनमैरी । पूछति सखी परस्पर बातें पायो परयो कछू कहूं तैरी ॥ पुलकित रोम रोम गद गद मुखबाणी कहत न आवै । ऐसो कहा आहि सो सखिरी मोकों क्यों न सुनावै ॥ तनु न्यारो जो एक हमारो हम तुम एकै रूप । सूरदास कहै ग्वालिनि सखिसों देख्यौ रूप अनूप ॥ ३ ॥ राग गूजरी ॥ आजु सखी मणि खंभ निकट हरि जहां गोरस की गोरी । निज प्रति बिंब सिखावत यां सिसु प्रकट करै जिनि चोरी ॥ अरध विभाग आजुतें हम तुम भली बनी

है जोरी । मांखन खाहु कतहि डारत हैा छांडि देहु मति भोरी ॥ हिस्सा न लेहु सबे चाहत हैा इहैा बात है थोरी । मीठेा परम अधिक रुचि लागै देहौं काढि कमोरी ॥ प्रेम उमगि धीरज न रह्यो तब प्रकट हंसी मुख मोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंज की खोरी ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ प्रथम करी हरि मांखन चोरी । ग्वालनि मन इच्छा पूरन करि आपु भजे हरिब्रजको खोरी ॥ मन मन यहै बिचार करत प्रभु ब्रज घर घर सब गाउं । गेाकुल जनम लयेा सुखकारन सबके मांखन खाउं ॥ बाल रूप जशुमति मेाहि जानै गेापिन मिल सुख भेाग । सूरदास प्रभु कहत प्रेमसां ये मेरे ब्रज लेाग ॥ ५ ॥ राग रामकली ॥ करत हरि ग्वाल संग बिचार । चेारी मांखन खाहु सब मिलि करी बाल बिहार ॥ यह सुनत सब सखा हरषे भली कही कन्हाय । हंसि परस्पर देत तारी सेांहकरि नंद राय ॥ कहां तुम यह बुद्धि पाई श्याम चतुर सुजान । सूर प्रभु मिलि ग्वाल बालक करत हैं अनुमान ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ सखा सहित गये मांखन चेारी । देख्यो श्याम गवाछ पंथ ह्वै गेापी एक मथति दधि भेारी ॥ हेरी मथानी धरी मांटतें मांखन हेा उतरात । आपुन गई कमेारी मांगन हरि पाई ह्यांघात पैठे सखनि सहित घर सूने मांखन दधि सब खाये । छूछी छांडि मटुकिया दधिकी हंसि सब बाहेर आये ॥ आय गई कर लिये कमेारी घरतें निकसे ग्वाल । मांखन कर दधि मुख लपटानो देखि रही नंद लाल ॥ कहां आये ब्रज बालक लै संग मांखन मुख लपटानों देखे खेलततें उठि भाज्यां सखा यहि घर आय छपानां ॥ भज गहि लियेा कान्ह एक बालक निकरे ब्रजको खोरि । सूरदास ठगि रही ग्वालिनी मन हरि लियेा अजोरि ॥ ७ ॥ राग बिलावल ॥ चकृत भई ग्वालिनि तनु हेरयो । मांखन छांडिगई मथि वसेहि तबतें कियेा अबेरयो ॥ देखै जाय मटुकिया रीती मैं राख्यो कहुं हेरि । चकृत भई ग्वालिनि मन अपने ढूंढति घर फिरि फेरि ॥ देखति पुनि पुनि घरके बासन मन हरि लियेा गेापाल । सूरदास सगरी ग्वालिनि जान्यों हरिके ख्याल ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज घर घर प्रगटी यह बात । दधि मांखन चेारी करि लै हरि ग्वाल सखा संग खात ॥ ब्रज बनिता यह सुनि मन हरषित सदन चमारे आवे । मांखन खात अचानक पाए भुज भरि उरहि छपावे ॥ मनहीं मन अभिलाष करत सब हृदय करत यह ध्यान । सूरदास प्रभुको घरते लै देहौं मांखन खांन ॥ * ॥ अथ धेनु चारावन ॥ * ॥ राग सारंग मैया अपनी सब गाय चरैहों । प्रात हेात बलके संग जैहों तेरे कहे न रैहों ॥ ग्वाल बाल गैयनि के भीतर नेकहु डरनहि खागत । आजुन सेाउ नंद दोहाई रैनि रहोगेा जागत ॥ और ग्वाल सब गाय चरैहै मैं घर बैठे रेहों । सूर श्याम अब सेाय रहेा तुम प्रात जान मैं दैहों ॥ १ ॥ राग केदारेा ॥ बहुते दुख हरि सेाय गयेारी । सांझहि ते लाग्यो यहि बातहि क्रम क्रम करि मन बेाधि लयेारी ॥ एक दिवस गयेा गाय चरावन ग्वालन साथ सवारै । अबतेा सेाय रहेा कहि कैसेहुं प्रातहि काहु बिचारै ॥ यह तेा सब बल रामहि लागै संग लैगये लेवाई । सूर नंद यह कहत महरिसों आवनदै फिरि धाई ॥ २ ॥ राग ललित ॥ जागिये गेापाल लाल आनंद निधि नंद बाल जशुमति

कहै बार बार भोर भयो प्यारे । नयन कमलसे बिसाल प्रीति बापिका मराल बदन चंद मदन ऊपर कोटि बारि डारे ॥ उगत अरुण विगत सर्बरी ससंकि किरन हीन दीन दीप मलिन छीन दुति समूह तारे । मनहु ज्ञान घन प्रकास बीते सब भव बिलास आस चास तिमिरि तोष तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग मुखरनि कर मधुकर छ्वे प्रतीतिसुन हु प्राण जीवन धनि मेरे तुम बारे । मनो बेद बंदि मुनि सुत इन्द्र मागध गन बिरद बदत जै जै जै जैत कैट भारे ॥ बिगसित कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल के मल धुनि त्यागि कंज न्यारे । मनो बिराग पाय सकल सोक कूप ग्रह बिहाय प्रेम मत्त फिरत भृत्य गुनत गुणतिहारे ॥ सुनत बचन प्रियरसाल जागे अति श्यदयाल भागे जंजाल बिपुल दुख कदंम टारे । त्यागे भ्रम कंद दंद निरखि के मुखार बिंद सूरदासअति आनंद मेटे मद भारे ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ करहु कलेऊ कान्हरप्यारे । माखन रोटी दयो हाथ पर बलि बलि जांउ हो खाहु ललारे ॥ टेरत हरग्वालहैं ठाढ़े आये तबके होतसवारे । खेलौ जाय व्रजही के भीतर दूरि कहूं जिनि जैहो बारे ॥ टेरि उठे बलराम श्याम को आवहु जांहि धेनु बनचारे । सूर श्याम कर जोरि मात सों गाय चरावन कहत हहारे ॥ ४ ॥ ॥ राग सारंग ॥ मैयारी मोहि दाऊ टेरत । मेरो बन फल तोरि देत है आपुन गैयनि घेरत ॥ अवर ग्वाल संग कबहुं न जैहौं वे सब मोहि खिजावत । मैं अपने दाऊ संग जैहों बन देखत सुख पावत ॥ आगे दै पुनि ल्यावत घर को तूं मोहि जान न देति । सूर श्याम कहै जशुमति मैया हा हा करिकरि केति ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ बोलि लयो बलरामहि जशुमति । आवहु लाल सुनहु हरि के गुण कालिहुतें लंगरो करत अति ॥ श्यामहि जान देहि मेरे संगतू काहे डर पावति । मैं अपने ढिंगतें नहि टारत जिय प्रतीत हि आवति ॥ हंसी महरि बलकी बातें सुनि बलिहारी या मुख की । जाहु लिवाय सूर के प्रभु कों कहत बीर के रुख की ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ अति आनंद भयो हरि धाये । टेरत ग्वाल लाल सब आवहु मैया मोहि पठाये ॥ उततें सखा हंसत सब आवत चलहु कान्ह बन देखहु । बन माला तुमको पहिरावहि धातु चित्रतनु रेखहु ॥ गाय लई संग घेरि घरनि तें महर गोप के बालक । सूर श्यामचले गाय चरावन कंस उरहिजे सालक ॥ ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ चले बनधेनु चरावन कान्ह । गोप बालक कछु सयाने नंदके सुत नान्ह ॥ हरष सों जशुमति पठायो श्याम मनहि आनंद । चले बल के साथ मोहन संग बालक इंद ॥ सखा हरि कों यह सिखावति छांड़िकहुं जिनि जाहु । सघन इंदावन अगम अति जाउ कहूं भुलाहु ॥ नेकहूं जिनि संग छांडौ बनहि बहुत डरात । सूर के प्रभु हंसत मन में सुनतही यह बात ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ हेरी देत चले बन बालक आनंद सहित जात हरि खेलत संग चले पशु पालक ॥ कोउ गावत कोउ बेनु बजावत कोउ नांचत कोउ धावत । किलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उर लावत ॥ भली करी तुम मोकों ल्याये मैया हरषि पठाये । गोधन इंद लिये व्रज बालक जमुना तट पहुंचाये ॥ चरति धेनु अपने अपने रंगअतिहि सघन बन चारो । सूर संग मिलि जाय चरावत जशुमति को सुत बारो ॥ ९ ॥ * अथ वृषभासुर बध ॥ * ॥ राग धनाश्री ॥

यहि अंतर वृषभासुर आयो । देख्यो नंद सुवन बालक संग यहै घात है पायो ॥ गयें समाय धेनुपति ह्वै के मन में दाव विचारे । हरि तबहीं लखि लियो असुर को डोलता धेनु बिडारे ॥ गैयां बिझुकि चली जित कित सों सखा जहां तहं घेरे । वृषभ शृंग सों धरनि उकासत बल मोहन तनहेरे ॥ आपहिं चल्यो श्याम के सनमुख निंदरि आपु अगुसारी । कूदि पर्यो हरि ऊपर आयकें कियो धूजु अति भारी ॥ धाय परे सब सखा हांक दै वृषभ श्याम को मार्यो । पांय पकरि भुज सों गहि फेर्यो भूतल मांहि पछार्यो ॥ पर्यो असुर पर्वत समान ह्वै चकृत भये सबग्वाल । वृषभ जानिके हमसब धाये यहतो कोउ बिकराल ॥ देखि चरित जशुमति के सुतको मनमें करत बिचार । सूर दास प्रभु असुर निकंदन संतनि प्राण आधार ॥ १ ॥ राग गौरी ॥ धन्य कान्ह धनि धनि ब्रजआये । आजु सबनि धरि के यह खातो धनि तुम हमहिं बचाये ॥ यह ऐसो तुम अतिहि तनक से कैसें भुजनि फिरायो । पलकहि मांझ सबनि के देखत मार्यो धरनि गिरायो ॥ अब लों हम तुमकों नहि जान्यों तुमहो जग प्रति पालक । सूर दास प्रभु दुष्ट निकंदन ब्रज जनके दुख घालक ॥ २ ॥ राग कल्यान ॥ आवत मोहन धेनु चराये । कटि किंकिनि धुनि कंकन बाजन चलत चरण नूपुर रवराये ॥ ग्वाल मंडली संग श्याम घन पीत बसन दामिनिहि लगाये । गोरज बदन बिराजत मानो पंकज पर पराग उड़िछाये ॥ गोप सखा आवत गुण गावत मध्य श्याम हलधर छबि पाये । सूरदास प्रभु असुर निकंदन ब्रज आवत मन हरष बढाये ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ येगो रेनु रंजित आवत मोहन लाल । श्याम शुभग तन तड़ित बसन सुर राज चाप बन माल ॥ गोरज रज मुख पर छवि लागत कुंडल नयन बिशाल । बल मोहन वन तें बन्यों आवत लीने गैया जाल ॥ ग्वाल मंडली मध्य बिराजत बाजत वेनु रसाल । सूर श्याम बनतें ब्रज आये जननि लये अंक माल ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ तेरो माई गोपाल रन सूरो । जहां तहां भिरत प्रचारि पैज करि तहीं परत है पूरो ॥ वृषभ रूप दानव एक आयो सो छिन माहि संहारयो । पांय पकरि भुजसों गहि बाको भूतल मांझ पछारयो ॥ कहत ग्वाल जशुमति धनि मैया बड़ो पूत तैं जायो । यह कोउ आदि पुरुष अवतारी भाग हमारे आयो ॥ चरण कमल रज बंदत रहियै अनु दिन सेवा कीजै । बार बार सूरके प्रभु की हरषि बलैया लीजै ॥ ५ ॥ राग सोरठ ॥ जशुमति बार बार पछितानी । सुनि कानी वृषभा सुरकी जब ग्वाल कही मुख बानी ॥ गोवर्द्धन भीतर आय समानो कान्हहि मारन ताक्यो । मैं नहि काहूकों कछु घाल्यौ पुरुषनि करबर नाक्यो ॥ सुनि जशुमति मैया कत खीझति हरि के भाये ख्याल । परवत तुल्य देह धारी को पलमें कियो बेहाल ॥ तुमरी रक्षा को यह नाहीं यह ब्रजको रखवार । सूर दास मन मोह्यो सबको मोहन नंद कुमार ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ हंसि जननी सों बात कहत हरि देख्यो मैं वृन्दावन नीके । अति रमणीक भूमि द्रुम बेली कुंज सघन निरखत सुख जीके ॥ यमुना के तट धेनु चराई कहत बात माता सन नीके । भूख मिटी बन फल के खाये मिटी प्यास यमुना जल पीके ॥ सुनित जशोमति सुतकी बातें अति आनन्द मगन

तनही के । सूर दास प्रभु विश्व भरन जे चोर भये व्रज जन कहहीके ॥ ७ ॥ * ॥ अथ माखन चोरी ॥ * ॥ राग काहरो ॥ चली व्रज घर घरनि यह बात । नंद सुत संग सखा लोने चोरि माखन खात ॥ कोउ कहति मेरे भवन भीतर अबहि पैठे धाय । कोऊ कहति मोहि देखि द्वारें उतहिं गये पराय ॥ कोउ कहति केहि भांति हरि को देखों अपने धाम । हेरि माखन देहि आछो खाहि जितनो श्याम ॥ कोउ कहति मैं देखि पाऊं भरि धरों अंकवारि । कोऊ कहति मैं बांधि राखों को सके निरवारि ॥ सूर प्रभु के मिलन कारन करत बुद्धि बिचारि । जोरि कर बिधि को मनावति पुरुष नंद कुमार ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालिनि घर गये जानी सांझ की अंधेरी । मंदिर मैं गये समाय श्यामल तन लखि न जाय देह मेह रूप कहा को कहै निवेरी ॥ दीपक ग्रह दान करयौ भुजा चार प्रकट धरयौ देखत भई चकृत ग्वालि इत उत को हेरी । श्याम हृदय अति बिसाल माखन दधि बिंदु जाल मन मोह्यौ नन्दलाल बाल कही बेरी ॥ युवती अति भई बिहाल भुज भरि दे अंकमाल सूरदास प्रभु कृपाल डारयो तन फेरी । करसों कर लै लगाय महरि पै गई लिवाय आनंद उरमे न माय बात है अनेरी ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ जशुमति तू देखि आनि आगे ह्वै ले पिछानि बहियां गहि ल्याई कुंवर आनि को कि तेरो । अबलों मैं करी कांनि सही दूध दही हानि अजहूं जिय जानि मांनि कान्ह है अनेरो ॥ दीपक हेां धरयो बारि देखत भुज भई चारि हारी हों धरति करति दिन दिन को झेरो । दिखियत नहि भवन मांझ तैसोई तन तैसो सांझ छलसों कछु करत फिरत महरि को जठेरो ॥ गोरस तन छोटि रही शोभा नहि जात कही मानो जल जमुन बिंब उडगन पथ फेरो । उरहननहि देहु काहि काहि तू इतनो रिसाय नाहीं ब्रजबासी सुत ऐसो बिधि मेरो ॥ जशुदा निरखे कुमार गोपी वरने बिहार भूली भ्रमरूप मानो आन कोउ हेरो । मन में बिहसत गोपाल भक्त पाल दुष्टसाल जाने को सूर दास चरित कान्ह केरो ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ देखि फिरे हरि ग्वालि दुवारे । तब यह बुद्धि रची अपने मन भीतर नांधि परे पिछवारे ॥ सूने भवन कहूं कोउ नाही मनु याही को राज । भांडे धरत उघारत मूंदत दधि मांखन के काज ॥ रैनि जमाय धरयो हेा गोरस परयौ श्यामके हाथ । लैलै खात अकेलो आपुन सखा नहीं कोउ साथ ॥ आहट सुनि जुवती घर आई देख्यौ नन्द कुमार । सूर श्याम मंदिर अंधियारे निरखति बार बार ॥ ४ ॥ राग गौरी ॥ अंधियारे घर श्याम रहे दुरि । अबहीं मैं देख्यो नंद नंदन चरित भयो मनहीं मन झुरि ॥ पुनि पुनि चकृत होति अपने जिय कैसी है यह बात । मटुकी के ढिग बैठि रहे हरि करैं आपनी घात ॥ सकल जीव जल थल के स्वामी चींटी दई उपाय । सूर श्याम तब देखि ग्वालिनी भुजपकरे जब आय ॥ ५ ॥ राग गौरी ॥ श्याम कहा चाहत से डोलत । बूझेहूते बदन दुरावत सूधे बोल न बोलत ॥ सूने निपट अंधियारे मंदिर दधि भाजन में हाथ । अब काको तुम उत्तर करिहेाना कोउ संग न साथ ॥ मैं जान्यौ यह मेरो घर है तेहि धोखे सों आयो । देखि तुहीं गोरस में चींटी काढन को कर नायो ॥ सुनि सुनि चतुर बचन मोहन के ग्वालिनि मुरि मुसिकानी

सूरदास प्रभु है रति नागर रहो बात मैं जानी ॥ ६ ॥ राग गौरी ॥ आपु गये हरुये सूने घर । सखा सबे बाहिर हीं छांडे देखो दधि मांखन हरि भीतर ॥ तुरत मथ्यो दधि मांखन पायो लैलै खात धरत अधरनि पर । सैन दैय सब सखा बुलाये तिनहि देत भरि भरि अपने कर ॥ छिटिकि रहै दधि बिंदु हृदय में इत उत चितवत करि मन में डर । उठत ओट लै लखत सबनि को पुनि लै खात देत ग्वालनि बर ॥ उत भई ग्वालि बहुरि देखति हरि मगन भई अति उर आनंद भर । सूर श्याम को निरखि थकित भई कहत नवनैं रही मनमें थर ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ गोपाल दुरे हैं माखन खात । देख सखी शोभा जुवनी हैं श्याम मनोहर गात ॥ उठि अबलोकि ओट ठाढ़े ह्वै जेहि बिधि हैं लखि लेत । चकृत नयन चहुंदिसि चितवत और सखनि को देत ॥ सुंदर कर आनन समीप अति राजत यहि आकार । मनु सरोज बिधु बैरु बंचि करि लिये मिलत उपहार ॥ गिरि गिरि परत बदन तें उर पर ह्वै दधि सुतके बिंदु । मानहु सुभग सुधा कन बरषत प्रियतम आगम इंदु ॥ बाल बिनोद बिलोकि सूर प्रभु थकित भई ब्रजनारि । फुरैन बचन बरजिवे कारन रही विचारि विचारि ॥ ८ ॥ राग सारंग ग्वालनि जो देखै घर आय । मांखन खाय चुराय श्याम तब आपुन रह्यो छिपाय ॥ ठाढी भई मथनियां के ढिग रीती परी कमोरी । अबहीं गई आई इन पायन लै गायो को करि चोरी ॥ भीतर गई तहां हरि पाए श्याम परे गहि पाव । सूरदास प्रभु ग्वालिनि आगे अपनो नाम सुनाय ॥ ९ ॥ राग गौरी ॥ जो तुम सुनहु जशोदा गोरी । नंद नंदन मेरे मंदिर में आजु करत हैं चोरी ॥ हों भइ आनि अचानक ठाढी उठि कह्यो भवनमें कोरी । रहे छपाय सकुचि रंचिक ह्वै मनहु भई मति भोरी ॥ मोहि भयो मांखन पछितावो रीती देखि कमोरी । जब गहि बांह कोला हल कीन्हो तब गहि चरण निहोरी ॥ लागे लेन नयन जल भरि भरि मैं हरि कानिन तोरी । सूर दास प्रभु देत निसा दिन ऐसिय अलक सलोरी ॥ १० ॥ राग नट ॥ देखी ग्वालि बाल जमुना जात । आपु ता घर गये पूछत को तू हो कहि बात ॥ जाय देखी भवन बैठे ग्वाल बालक दोय । भीर देखत अति डराने दुहुंनि दीनों रोय ॥ ग्वालके कांधे चढ़े तब छिके लये उतारि । दह्यो मांखन खात सब मिलि दूध दोनों डारि । बच्छ लै सब छोरि दीन्हे गये बन समुहाय । छिरकि लरकनि मही सों भरि ग्वाल दिये चलाय ॥ देखि आवत सखी घर कों सखिन कह्यो जु दौरि । आनि देखे श्यामघर में भई ठाढी पौरि ॥ प्रेम अंतर रिस भरयौ मुख जुवति बूझति बात । चितै मुखतन सुधि बिसारी कियो उर नख घात ॥ अतिहि रस बस भई ग्वालिनि गेह देह बिसारि । सूर प्रभु भुज गहैं ल्याई महरि सों अनुसारि ॥ ॥ ११ ॥ राग बिलाबल ॥ महरि तुम मानहु मेरी बात । ढूंढि ढंढोरि गोरस सब घरको हरयौ तुम्हारे तात ॥ कैसे कहति लयो छीकेतें ग्वाल कांध दै खात । घर नहि पियत दूध धौरी को कैसें तेरे खात ॥ असंभव बोलन है आई ढीठ ग्वालिनी प्रात । ऐसो नहीं अचगरो मेरो कहा बनावति बात ॥ कहा मैं कहति सकुचति हों कहा दिखाउं गात । ई गुण बड़े सूरके प्रभुके ह्यां लरिका ह्वै जात ॥ १२ ॥ राग सारंग ॥ जशुमति

अपने गोपालहि बरजति क्योंजु नहीं। कहा करै दिन प्रति की बातें नहीं परत सहीं ॥ मांखन खात दूध लै ढारत लेपत देह दही । तापाछे घरहूके लरिकन मारत छिरकि मही ॥ जो कछु धरहि दुराय दूरिलै जानत तहीं तहीं । सुनो महरि तेरे या सुत सों हम पचि हारि रहीं ॥ जब बन जात छिडाय मटुकिया रुचि रुचि बात कही । अपने जियके डरते तब जो कछू कही सेा सही ॥ चोरि अधिक चतुराई सीखी जाहिन कथा कही । तापर सूर बलरुअनि ढीलत बन बन फिरत बही ॥ १३ ॥ राग कान्हरो ॥ अबये झूठेई बोलत लोग । पांच बरष अरु कछुक दिननि कैा कबभयेा चोरी जोग ॥ येहि मिस देखन आवति ग्वालिनि मुहु फाटे जुगंबारि । अन दोषेको दोष लगावति दई देइगेा टारि ॥ कैसे कर याकी भुज पहुंची कोन बेग ह्यां आये । ऊखल ऊपर आनि पीठ धरि तापर सखा चढाये ॥ जौंन पत्याहु चलेा संग जशुमति देखेा नयन निहारि । सूरदास प्रभु नेकु न बरजौं मनमें महरि बिचारि ॥ १४ ॥ राग कान्हरो ॥ इनि अखियनि आगे तें हेा मोहन पल जिनि होहु न न्यारे । बलि बलि जाँउ बदन देखे बिनु तरसत हैं नयननि के तारे ॥ ये सब सखा बुलाय संग करि यहि अंगना खेलेा दोउबारे । निरखति रहीं फनिगकी मणि ज्यों सुंदर श्याम बिनोद तिहारे ॥ दूधदही मांखन मधु मेवा बिंजन मीठे खाटे खारे । सूर दास प्रभु जेाइ जेाइ भावे सेाइ सेाइ मांगि लेहु मेरे प्यारे ॥ १५ ॥ राग नट नारायण ॥ मेरे लाडिले हेा जिनि जाहु कहूं । तेरेहि काजे गोपाल सुनहु लाडिले लाल राखै भाजन भरि सुरसहूं ॥ काहेको पराए जाय करत एते उपाय दूध दही घृत मांखन चहूं । करत कछू न कानि बकत कटुक बांनि निपटनि लज बैन बलहु बहूं ॥ ब्रजकी बाढी ग्वारि हाटकी बेचन हारि सकुचन देति गारि झगर कहूं । कहां लौं सहैं रिस बकत भई हेा हस यही मिस सूर श्याम बदन लहूं ॥ १६ ॥ राग धनाश्री ॥ चोरी करत कान्ह धरि पाये । निसि बासर मोहि बहुत सतायेा अब हरि हाथहि आये ॥ मांखन दधि मेरेा सब खायेा बहुत अचगरी कीन्हौ । अबतौ घात परेहै लालना तुमहि भले मैं चिन्हौ ॥ दोउ भुज पकरि कह्यो कहां जैहेा मांखन लेउ मगाय । तेरीसौंमैं नेकु न चाख्यौ सखा गये सब खाय ॥ मुखतन चितै बिहसि हरि दीन्हेा रिस तब गई बुझाय । लयेा श्याम उर लाय ग्वालिनी सूरदास बलि जाय ॥ १७ ॥ राग धनाश्री ॥ मथति ग्वालि हरि देखीजाय गयेहुते माखन की चोरी देखत छबि रहे नयन लगाय ॥ डोलत तनु सिर अंचर उघरो बेनी पीठि डोलति येहि भाय । बदन इंदु पय पान करन को मनहु उरग उडि लागत धाय ॥ निरखि श्याम अंग अंग प्रति शेाभा भुजभरि धरि लीनेा उरलाय । चितै रही जुवती हरिको मुखनैन सैन दै चितहि चुराय ॥ तन मन धन गति मति बिसराई सुख दीनेा कछु मांखन खाय । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम्हरी लीला को कहे गाय ॥ ॥ १८ ॥ राग ललित ॥ देखी हरि मथति ग्वालिनि दधि भेदसों ठाढी । जोबन मद मातीं इत राती बेनी छुरति कटि छवि बाढी ॥ दिनथोरी भोरी अति कोरी देखत श्याम भई चाढी । करचलति है दोउ भुजन मथनी शेाभा रासि भुजा गाढी ॥ इत उत अंग

मुरति झकझोरति अंगिया बनी सुगाढी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भये मनहुं काम सांचे तें काढी ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ गए श्याम तेहि ग्वालिनि के घर । देखी जाय मथति दधि ठाढी आपु लगे खेलन द्वारे वर ॥ फिरि चितई हरि दृष्टि परिगये बोलि लये हरुये सूने घर । लिये लगाय कठिन कुच के बिच गाढे चापि रही अपने कर ॥ उमगि अंग अंगिया उरहरकी सुधि बिसरी तनकी तेहि औसर । तब भये श्याम बरष द्वादसके रीझि रही जुवतीवा छबि पर ॥ मन हरिलियो तनकसे ह्वै गये देखि रही शिसु रूप मनोहर । लै मांखन मुखधरति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागर वर ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालिनि उरहन के मिस आई । नंद नंदन तन मन हरि लीनो बिनु देखे छिनु रह्यो न जाई ॥ सुनहु महरि अपने सुत के गुण कहा कसों केहि भांति बनाई चोली फारि हार गहि तोर्‌यौ इन बातनि कहा होत बड़ाई ॥ मांखन खाय खवावत ग्वालनि जो उबर्‌यौ सो दियो लुटाई । सुनहु सूर चोरी सहि लीनो अब कैसे सहि जाति ढिठाई ॥ २१ ॥ राग सारंग ॥ झूठेहि मोहि लगावत ग्वारि खेलततें मोहि बोलि लयो दोऊ भुज भरिदीन्ही अंक वारि ॥ मेरो कर अपने उर धारति आपुहि चोली फारि । मांखन आपुहि मोहि खवायो मैंधों कबदीन्हो है डारि ॥ कहा जाने मेरो बारो भोरो झुकी महरि दैदै मुख गारि । सूर श्याम ग्वालिनि मन मोह्यौ चितैरही एक टक हि निहारि ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ कबहिं करन गयो मांखन चोरी । जानति हौं जु कटाच्छ तिहारी कमल नयन मेरो तन कसोरी ॥ दैदै दगा बुलाय भुवन में भुज भरि भेटति उरज कठोरी । उर नख चिन्ह देखावति डोलति श्याम चतुर भये तुम अति भोरी ॥ उरहन के मिस आवति है नित चितै रहै जनु चंद चकोरी । सूर सनेह ग्वालि मन अट क्यो अंतर प्रीति जाति नहिं तोरी ॥ २३ ॥ राग बिलावल ॥ कहा कहौं हरिके गुण तोसों । सुनऊ महरि अबही मेरे घर जे रंग कीन्हे मोसों ॥ मैं दधि मथति आपने मन्दिर गये तहां यहि भांति । मोसों कह्यो बात सुनि मेरो मैं सुनि के मुसिकाति ॥ बांह पकरि चोली गहि फारी भरि लीन्हो अंक बारि । कहत न बने सकुच को बातें देखौ हृदय उघारि ॥ मांखन खाय निदरि नीको बिधि यह तेरे सुतकी घात । सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचति कह्यो न जात ॥ २४ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ ग्वालिनि आपु तन देखि मेरे लालतन देखिरी । भीति जो होय तो चित्र अब रेखिरी ॥ * ॥ ध्रुव ॥ * कहां मेरो सांवरो पांचहीं बरष को अजहूं यह रोय पय पांन मांगे । तू महा मख्त अति ढीठिसी सुन्दरि फिरति ऐंडाति गोपाल आगे ॥ कहां मेरे लालकी तनकसी अंगुरिया एते बड़े नखन के चिन्ह तेरे । मुष्ट करि सुनेंगे लोग अगवारे को भुजा पाई कहां श्याम मेरे ॥ ठग ठगे नयन बैंननि हंसी ग्वालिनी मुख देखे शोभा अधिक बाढी । एक सुनि सूर सरबस हर्‌यो सांवरे अन उत्तर महरि के द्वार ठाढी ॥ २५ ॥ अथ गोचारन समय ॥ रागरालकली ॥ चर्चरी ॥ जागिये गोपाल लाल प्रगट भयो हंसमाल मिटि गयो अंध कार उठो जननी मुख दिखाई । मुकुलित भए कमल जाल कुमुद वृंद वन विहाल मेटऊ जंजाल विविध ताप तन नसाई ॥ ठाढे सब सखाद्वार कहत नन्दके कुमार टेरत हैं

बार बार आइये कन्हाई । गैयनि भई बडी बार भरि भरि पय थननि भार बछरा गन करै पुकार तुम बिनु जदुराई ॥ तातें यह अटक परी दोहन काज सोंह करी उठि आवहु क्यों न हरि बोलत बलभाई । मुखतें पट झटकि डारि चन्द बदन दै उघारि जशमति बलि हारि वारि लोचन सुखदाई ॥ धेनु दुहन चले धाय रोहिणी को लई बुलाय दोहनी मोहि दै मंगाय तबही लै आई । बछरा दियो थन लगाय दुहत बैठिके कन्हैया हंसत नन्दराय तहां माता दोउ आई ॥ दोहनी कछू दूध धार सिखवत नन्द बार बार वह छबि नहि बार पार नन्द घर बधाई । तब हलधर कह्यो सुनाय धेनु बन चलो लिवाय मेवा लीन्हो मंगाय बिबिध रस मिठाई ॥ जेंवत बलराम श्याम संतनके सुखद धाम धेनु काज नहिबिया स जशुदा बल ल्याई। श्याम राम मुख पखारि ग्वाल बाल लये हंकारि जमुना तट मन बिचारि गायन हंकराई ॥ शृंग बेणु नाद करत मुरली सुर धरत बजवत मन हरत ग्वाल गावत सु धराई । वृन्दावन तुरत जाय धेनु चरति तृण अघाय श्याम हरष पाय निरखि सूरज बलि जाई ॥ १ ॥ राग सारङ्ग ॥ चरावत वृंदावन हरि गाय । सखा लिये संग सुबल सुदामा डोलत हैं सुख पाय ॥ क्रीड़ा करत जहं तहं सब मिलि अति आनन्द बढ़ाय । बगरि गई गैयां बन बोथनि देखी अति बड़ताय ॥ कोउ गये ग्वाल धाय बन घेरन कोउ गये बछरू लवाय । आपुहि रहे अकेले बन में कछू हल धर रहे जाय ॥ बंसीबट शीतल जमुना तट अतिही परमसुख दाय । सूर श्याम तहं बैठ बिचारत सखा कहां बिरमाय ॥ २ ॥ * ॥ ॥ अथ बत्सासुर कों बध ॥ * ॥ राग नट नारायण ॥ चले बन बछरू चरावन ग्वाल । वृन्दावन सब छांडि कें ले गये जहां बन ताल ॥ परम सुन्दर भूमि देखत हरष मनहि बढाय । आपुन लागे तहां खेलन बछ दिये बगराय ॥ जानि के हल धर आये तहां बाल बछरा पास । रोहिणी नन्द नहि देखत हरष भये हुलास ॥ ताल रस बलराम चाखो नन्द नदन के भाय । कह्यो बछरा हांकि ल्याबहु चलहु जहां कन्हाय ॥ ताल रूख तर दनुज आयो धरे बछरा भेष । फिरत ढूंढत श्याम कों अति प्रबल बलकों देष ॥ सबै बछरू घेरि ल्याये वह न घेरयो जाय । दाऊ कहें बालकनि टेरयो वृषभ सुरन धराय ॥ कह्यो मन यह अबहि मारौं उठे बलहि सम्हारि । टेर लये सब ग्वाल बालक आपु गये प्रचारि ॥ आगे ह्वै इतकों बिडारयो पूंछ हाथ लगाय । पकरि के भुजसों फिरायो तालके तर आय ॥ असुर लै तरु सों पछारयों गिरयो तरु झहराय। ताल सों तरु ताल लाग्यों उठ्यो बन घहराय ॥ बच्छासुर कों मारि हल धर चले सबनि लवाय । सूर प्रभु कों बीर जाकी तिहूं भुवन बड़ाय ॥ ३ ॥ राग सारङ्ग ॥ बार बार हरि कहत मनहि मन अबहों रहे संग चारत धेनु । ग्वाल बाल कोऊ कहुं बन देखों टेरत नाम लेत सेनु ॥ आलस गात जानि मन मोहन बैठे छांह करत न चेनु । अकनि रहत कहुं सुनत नहीं कछु नहि गउ रांभन बालक बेनु ॥ तृषावंत सुरभी बालक गन कालीदह अंच यो जल जाय । निकसि आय सब तट भए ठाढे बैठि गये जहं तहं अकुलाय ॥ बन घन ढूंढि श्याम तहं आये गो सुत ग्वाल रहे मुरझाय ॥ मन में ध्यान करतहिं जान्यौ काली उरग रहत ह्यां आय । गरुड त्रास करि आय रह्यों दुरि अन्तर जामी सबके नाथ । अमृत दृष्टि करि चितै सूर

प्रभु बोलि उठे गावत हरि गाथ ॥ ४ ॥ राग नटनारायण ॥ मोहि बन छांडि आये ग्वाल कहां हुं ते कहां आय निकसे करे कैसे ख्याल । सुरझि काहे गिरेधरनी कहा यह जंजाल ॥ मैं यहां जो आय देखों परे सबहि बेहाल ॥ आनि अंचयो जल जमुना को तबहि गये अकुलाय । निकसि कें जब कूल आये गिरे परे सब आय ॥ प्राणबिन सब हम भएते तुमहिं दियो जियाय । सूर के प्रभु तुम जहं तहं हमहि लेत बचाय ॥ ५ ॥ राग गौरी ॥ बलदाऊ कहि श्याम पुकारयौ । आवहु बेगि चलौ घर जैये बनही में पुनि होत अंध्यारयौ ॥ ल्याये बोलि सखा इन घर कों हंसे श्याम मुख चाहि । बड़ी बेर भें तुमहिं कन्हैया गाइनि लेऊ निबाहि ॥ हेरी देत चले सब बन तें गोधन दियो चलाय । सूर दास प्रभु श्याम राम दोऊ व्रज जनके मुख दाय ॥ ६ ॥ राग गौरी ॥ वे मुरली की टेपि सुनावत ॥ वृन्दाबन बसि बास रस निसि आगम जानि चले व्रज आवत ॥ सुबल सुदामा श्रीदामा संग सखा मध्य मोहन छबि पावत ॥ सुरभी गन सब ले आगे करि कोऊ टेरत बेनु बजावत । के की पच्छ मुकुट शिर भ्राजत गौरी राग मिले रस गावत । सूर श्याम के ललित बदन पर गोरज छबि कहं चन्द छपावत ॥ ७ ॥ राग गौरी ॥ हरि आवत गायनि के पाछे । मोर मुकट मकरा कृत कुण्डल नैन बिशाल कमल तें आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखत हैं बन राजा पीताम्बर काछे । ग्वाल बाल सब बरन बरन बने कोटि सदन की छबि कौं वाछे ॥ पहुंचे जाय श्याम व्रज पुर में घरहिं चले मोहन बल आछे । सूर दास प्रभु दोऊ जननी लेति बलाय बोलि मुख वाछे ॥ ८ ॥ राग कल्याण ॥ आनन्द सहित सबे व्रज आए ॥ धन्य जशोदा तेरो बारो हम सब मरत जिवाए ॥ नर वपु धरे देव यह कोऊ आय लियो अवतार । गोकुल ग्वाल गाय गोसुत कों यहही राखन हार । पय पीवत पूतना निपाती तृणा वर्त्त ओहि भांति । वृषभासुर बत्सासुर मारयो बक मोहन दोउ भ्राति ॥ जबतें जनम लियो व्रज भीतर तबतें यहै उपाय । सूर श्याम के बल प्रताप तें बन बन चारत गाय ॥ ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ हमहिं डर कौन कौ रे भैया । डोलत फिरत सकल वृन्दावन जाके गोत कन्हैया ॥ जब जब गाढ परत है हमकों तब करि लेत सहैया । चिरजीवो जशु मति सुत तेरो हरि हल धर दोउ भैया ॥ इनतें बड़ो और नहिं कोऊ येइ सब देत बड़ैया । सूर श्याम सनमुख जे आये ते सब नाँक चलैया ॥ १० ॥ राग कान्हरो ॥ कहत जशोदा बात सयानी । भावी नहि न मिटति काहू की कर्त्ता की गति काहु न जानी ॥ जनम भयो जबतें व्रज हरि कों कहा कियो करि राज प्रवानी । कहां कहां ते श्याम उबरो केहि राख्येता अबसर आनी ॥ कैसो सकट वृषभासुर पूतना तृणावर्त्त की चलत कहानी । को मेरे पछिताय मरे अब बिन जानत सब करो अयानी ॥ लै बुलाय छतिया सों लाये श्याम राम हरषित नन्द रानी । भूखे गये प्रात अधरातहि तातें अधिक पछितानी ॥ रोहिणी तुरत न्हवाय दिये दुहुं अंग पौंछि कें भोजन आनी । परुसी बहु बिधि नीकी थारी जेवत बल मोहन रुचिमानी ॥ मांग लियो शीतल जल अंचयो मुख धोयो चुरुवनि लै पानी । बीरा खात देखि दोउ बीरा दोउ जननी मुख निरखि सिहानी ॥ रतन जटित पलिका पर पौढे बरनिन जाय कृष्ण रज धानी । सूर दास कछु जूठनि मांगन तब पाऊं कहि दीजे बानी ॥

॥ ११ ॥ राग विभास ॥ हौं नाहिन जगाय सकति सुनु सुजात सजनी । अपने जान अजहुं कान्ह मानत हैं रजनी ॥ जब जब मैं निकट जाति रहति लागि लोभा । तनकी सुधि बिसर गई निरखति मुख शोभा ॥ बचननि कों बहुत करहि शोचति जिय ठाढी ॥ नयन मिलि विचार करति निरखति रुचि बाढ़ी ॥ यहि विधि बट नारबिन्द जशुमति जिय भावे । सूर दास सुख की रासि कातैं कहि आवे ॥ १२ ॥ राग सूहो ॥ नन्दलहर को भाव तें जागहु मेरे बारे । प्रात भयो उठि देखिये रवि किरनि उजारे ॥ ग्वाल बाल सब टेरहिं गैयां बन चारन । लाल उठो मुख धोइये लगी बदन उघारनि ॥ मुख तें पट न्यारो कियो माता कर अपने । देखि बदन चकृत भई सो तुकको सपने ॥ कहा कहों वह रूपकों को बरनि बतावे । सूर श्याम के गुण अपार नन्द सुवन कहावे ॥ १३ ॥ राग बिलावल ॥ उठे नंदलाल सुनत जननी मुख बानी । आलस भरे नयन सकल शोभा की खानी ॥ गोपी जन बीथिका ह्वै चितवति सब ठाढी । नयन कर चकोर चन्द बदन प्रीति बाढी ॥ माता जल झारी लै कमल मुख प्रखारयो । नीर नूर परसकरत आलसहि बिसारयो ॥ सखा द्वार ठाढे सब टेरत हैं बनको । जमुना तट चलहु कान्ह चारन गोधन को ॥ सखा सहित जेंवहु भोजन कछु कीन्हो । सूर श्याम हठ धर संग सखा बोलि लीन्हो ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ भोजन भयो भावते मोहन । ता तोहू जेय जाहुगे मोहन ॥ खीर खांड खोवा री सन्हारी । मधुर महेरी गोपनि प्यारी ॥ राय भोम लियो भात पसाथ । मूंग दर हरी हींगु लगाय ॥ सद माखन तुलसी दै छायो । घृत सुबास कचौरनि नायो ॥ पापर बरी अचार परमसुचि । अदरक अरु नीबुअनि ह्वै है रुचि ॥ खूरन करि तरि सरस तोरई । सेम सांगरी झमकि झोरई ॥ भरता भटा खटाई दीनो । भाजी भली भांति दस कीनी ॥ साग बना भरुसा चौराई । सोवा अरु सरिसों सरसाई ॥ बथुवा भली भांति रुचि रांध्यौ । हींगु लगाय लाय दधि सांध्यौ ॥ पोई परवर साग फरी चुनि । टेंटी टेंटस कौंकि लये पुनि ॥ कांदूरी और ककोरा कोरे । कचरी चारि चचेंडा सोरे ॥ बने बनाय करेला कीन्हे खोंन लगाय तुरत तरि लीन्हे ॥ फूले फूल सहिंजना छौंकि । मन रुचि होय लाजके चौंकि ॥ फूल करील काली पाकरि चम । फरी अगस्ति करी अच्छत सम ॥ अरु यहि भांति दही खटाई । जेंवत षटरस जात लटाई ॥ पेठा बहुत प्रकारनि कीन्हें । तिनतौ सबै स्वाद हरि लीन्हें ॥ खोरा राम तुरैया ताभें । अरु बिन रुचि अंकुर जिय जामें ॥ सुन्दर रूप रतालू रातौ । तरि है लीन्हों अबहीं तातौ ॥ ककरी कचरा अरु कचनारो । सरस निमोननि स्वाद संवारो ॥ कयुक भांति केरा करि लीनों । दै करोव हरदी रंग भीनों ॥ बरी बरिल अरु बरा बहुत विधि । खाये खाये मीठे पय निधि ॥ पानीना रायतौ पकौरी डभकौरी मुगछी सुठि सौरी ॥ अच्छत इडर हर हैं रससागर । बेसन सालन अधि को नागर ॥ खाटी कढ़ी बिचित्र बनाई । बहुत बार जेंवत रुचि आई ॥ रोटी रुचिर कनिक बेसन करि । अजवाइन सेंधो सिलयो धरि ॥ अवहि अंगा करि तुरत बनाई । जे अजि मजि ग्वालनि संग खाई ॥ मांडो मांडि दुनेरे चुपरो । बहु घृत पाय आपुही उपरो ॥ पूरी सपूर कचौरी कौरी । सद लस उज्जल सुन्दर सौरी ॥ लुचई ललित लापसी सोहै ।

स्वाद सुवास सहज मन मोहै ॥ मालपुवा माखन मथि कीन्हें । ग्राह ग्रसित रवि सामर लीन्हें ॥ लावन लाडू लागत नीके । सेव सुहारी घेवर घीके ॥ गूंझा गूंदे गोल मखूरी । मेवा मिले कपूरन पूरी ॥ शशि सम सुन्दर सजल अंदर सो । ऊपर कनी अजनु जनु बर सो ॥ बज्रत जलेब जलेबी बोरी । नाहिन घटत सुधा तें थोरी ॥ देखत हरषित होतहैं सभी । मनऊ बुद बुदा उपजे समी ॥ फेनी घुरी मिली पय संगा मिश्री मिश्रत भई एक रंगा ॥ साज्यो दह्यो अधिक सुखदाई । ताऊपर पुनि मधुर मलाई ॥ खोवा खोई अवटि छै राख्यो सुहै मधुर मीठो रस चाख्यो ॥ बासौंधी सिखरनि अति सौंधी । मिले मिरचि मेटति चक चौंधी ॥ छाछि छबीली धरी धुंगारी । झर है उठत झारकी न्यारी ॥ इतने जतन जशोदा कीनो । तब मोहन बालक संग लीनो ॥ बैठे आय हंसत दोउ भैया । प्रेम मुदित परु सति है मैया ॥ थार कटोरा जटित रतनके । भरि सब सालन विविधि जतनके ॥ पहिले पनवारो परुसायो । तब आपुन कर कौर उठायो ॥ जेंवत रुचि अधिकौ अधिकैया । भोजन बज्र बिसरत नहि गैया ॥ शीतल जल कपूर रस रचयो । सो मोहन निज कर रुचि अंचयो ॥ महिर मुदित मन लाड़ लड़ावै । ते सुख कहां देवकी पावै ॥ धारि तृष्टि गडुआ जल ल्याई । भर्यो चुलू खरिका लै आई ॥ पीरे पान पुराने बीरा । खात भई दुति दांतनि हीरा ॥ मृग मद कन कपूर करलीनों । बांटि बांटि ग्वालनि कों दीनों ॥ चन्दन और अरगजा आन्यों । अपने कर बल के अंग वान्यों ॥ तापाछें आपु नज्ज लाये । उबर्यो बज्रत सखनि पुनि पायो ॥ सूर दास देख्यो गिरिधारी । बोलि दई हंसि जूठनि थारी ॥ यह जेंवनार सुनै जो गावै । सो निजु भक्त अभय पद पावै ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी ब्रजतें वन जात । रोहिणि जशुमति सुत की छबि गौर श्याम हरि हल धर गात ॥ नीला बर पीताम्बर ओढे शोभा कछू कही नहि जात । जुगल जलद जुग तड़ित मनहु मिलि अरस परस जोड़त है नात ॥ शीश मुकुट मकरा छत कुंडल झलकत बिबि कपोल यहि भांति । मानहु जलद जुगल रवि तापर चन्द्र धनुषकी कांति ॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गो चारन चले मन अनुमानि । ग्वाल सखा बिच श्रीनंद नंदन बोलत बचन मधुर मुसिकानि ॥ चितै रही सब ब्रजकी युवती आपुसही में करत बिचार । गोधन वृन्द लये सूरज प्रभु वृन्दाबन गये करत बिहार ॥ १६ ॥ * ॥ अथ बकासुर बध ॥ * ॥ रागसारङ्ग बन बन फिरत चारत धेनु ॥ ध्रुव ॥ श्याम हलधर संग संग बज्र संग बालक सेन ॥ तृषित भई सब जानि मोहन सखनि टेरत बैन । बोलि ल्यावऊ सु रभिगन सब चले जमुन जल देन ॥ सुनतही सब हांकि ल्याये गाय करी एकठेन । हेरी दे दे ग्वाल बालक कियो जमुन तट गेन ॥ बकासुर रचि रूप माया रह्यो छल करि आय । चोंच एक पुहमी लगाई एक अकाश समाय ॥ आगें बालक जात हैं तेपाछें आये धाय । श्याम सों वे कहन लागे आगें एक बलाय ॥ नितहि आवत सु रभि लीन्हे ग्वाल गोसुत संग । कबहुं नहि यहि भांति देख्यो आजु कैसो रंग ॥ मनहि मन तब कृष्ण कह्यो यह बकासुर जो विहंग । चोंचि चीरि बिडारि डारों पलक में करों भंग ॥ निदरि चले गोपाल आगें बकासुरके पास । सखा सब मिलि कहन लागे तुम न जियकी आस ॥ अजहु नहीं डरात मोहन बचे कितने

गांस । तब कह्यो हरि चलौ सब मिलि मारि करहि विनांस ॥ चले सब मिलि जाय देख्यो अगम तनु बिकरार । इत धरनि उत ब्योम के बिच गुहाके आकार ॥ पैठि वदन विदारि डारो अति भये विस्तार । मरत असुर चिकार पारी मार्यो नंद कुमार ॥ सुनत धुनि सब ग्वाल डरपे अवन उवरे श्याम । हमहि वरजत गयो देखो किये ऐसे काम ॥ देखि ग्वालनि विकल ताबन कहि उठे बल राम । बकासुर को बदन फारयो अबहि आवत श्याम । सखा तब हरि टेरि लीन्हे सबै आवहु धाय । चोंच फारि बका संघारयो तुमहु करहु सहाय । निकट आये गोप बालक देखि हरि सुख पाय । सूर प्रभुके चरित अगनित नेति निगम निगाय ॥ १७ ॥ राग सारंग ॥ ब्रज में को उपज्यो यह भैया । संग सखा सब कहत परस्पर इनके गुण अगमैया । जबतें ब्रज अवतार धरयो इनको नहि घात करैया । कितक बात यह बका बिदारयो धनि जशुमति जिन जैया । तृणावर्त्त पूतना पछारी तब अति रहे नन्हैया । सूर दास प्रभुको यह लीला हम कतजिय पछितैया ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ बका बिदारि चले ब्रजको हरि । सखा संग आनंद करत सब अंग अंग काम धातु चिचकरि । बन माला पहिरावत श्यामहि बार बार अंकवारि धरत भरि । आपुस माझ परस्पर भेंटत और जात बलि हारि । सूर दास प्रभु तुम चिरजीवो ब्रज जनके सुख कारि । ग्वाल धरत भरि कंस निपातक गोकुल करये उधारि ॥ १९ ॥ राग गौरी ॥ संध्या समैं गोपाल गोधन संग ब्रज बनतें बनि आवत ॥ गुंजा उर बन माल मुकुट सिर बेनु रसाल बजावत । कोटि किरनि मनि मुख पर कासित उडुपति कोटि लजावत । गोप सखा सब बदन निहारत उर आनंदन समावत । चंदन खोरि काछनी काछे देखतही मन भावत । सूर श्याम नागर नारिन को बासर बिरहन सावत ॥ २० ॥ राग कान्हरो ॥ आजु बनें बनतें ब्रज आवत । नाना रंग सुमनकी माला नंद नंदन उर पर छबि पावत । संग गोप गोधन गन लीन्हें नाना गति कौतुक उपजावत । कोउ गावत कोउ निर्त्त करत कोउ कोउ उघट कोउ करताल बजावत । रांभति गाय बच्छ हित सुधि करि प्रेम उमगि थन दूध चुचावत । जशुमति बोलि उठी हरषित ह्वै कान्हर धेनु चराये आवत । इतनी कहत आइ गए मोहन जननी दोउ हिये लै लावत । सूर श्यामके कृत जशु मति सों ग्वाल बाल कहि प्रकट सुनावत ॥ २१ ॥ राग कान्हरो ॥ ब्रज बालक सब जाय तुरतहीं महर महरिके पाय परे । ऐसो पूत जन्यो जग माहीं धन्य कोख जेहि श्याम धरे । गाय खिवाय गये वृन्दाबन चरत चली जमुना तट हेरि । असुर एक खग रूप धरि रह्यो बैठ्यो तीर आइ मुख घेरि । चोंच एक पुहमी करि राखी एक रह्यो तो गगन लगाय । हम बरजत पहिले हरि धायो बदन चीरि पल माहिं गिराय । सुनत नंद जशुमति चकृत चित सुनत चकृत गोकुल नर नारि । सूर दास प्रभु मन हरि लीन्हों तब जननी भरि एई अंकवारि ॥ २२ ॥ राग गौरी ॥ तुमकत गाय चरावन जात । पिता तुम्हारो नंद महर सो जाके मो जशुमति सी मात । खेलत रहौ आपने घर में मांखन दधि भावै सो खात । अमृत बचन कहो मुख अपने रोम रोम पुलकित

सब गात । अब काहूके जाहु कबहुं जिनि आवति हैं जुवती इतरात । सूर श्याम मेरे नैननि आगेतें कतहूं कतहि जात हो तात ॥ २३ ॥ राग सारंग ॥ मैयाहौं न चरैहौं गाय । सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाय पिराय । जो न पत्याय पूछि बल दाउहि अपनी सौंह दिवाय । यह सुनि माइ जशोदा ग्वालनि गारी देति रिसाइ । मैं पठवति अपने लरिका कों आवै मन बहराय । सूर श्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रेंगाय ॥ २४ ॥

॥ अथसूरसागर माखन चोरी रागकल्पद्रुम ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

राग धनाश्री ॥ मथुरा जाति हों बेंचन दहियो । मेरे घरको द्वार सखीरी तबलों देखे रहियो । दधि मांखन है माट भरे हैं तोहि सोंपति हों सहियो । अबर नहींया व्रज में कोऊ नंद को आवत लहियो । वाके बचन सुनत हैं बैठे मनहीं मन दे बहियो । सूर दास खों गई नग्वारिनि कूदि परे दै धहियो ॥ १ ॥ राग नट ॥ देख्यो जाय श्याम घर भीतर । अबहीं निकसी कहत भई सोई फिरि आई तुम्हरे डर । सखा साथके चमकि गये सब गह्यो श्याम कर धाइ । और निजानिजान मैं दीन्हें तुम कहां जाहु परांइ । बहुत अचगरी करत फिरत हौ मैं पाये करि घात । बांह पकरि लै चली महरि पै करत रहत उतपात । देखौ महरि आपने सुतको कबहूं नहि न पत्याति । बैठे श्याम भवनहीं अपने चितै चितै पछिताति । बांह पकरि तुंल्याई काकों अतिहि बेसरम ग्वारि । सूर श्याम मेरे आगे खेलत जोबनमद मतवारि ॥ २ ॥ राग नट ॥ रही ग्वालिनि हरिको मुख चाहि । कैसे चरित किये हरि आवहि बार बार सुमिरति करताहि । बांह पकरि घरतें मैं ल्याई कहा चरित कीन्हें हैं श्याम । जातन बने कहि न कछु आवै कहति महरि तूं ऐसी बाम । जाहि ग्वारि जोबन मदमाती झूठे दोष लगावति याहि । सूर दास प्रभुके गुण ऐसे बुद्धि करी तब जीती ताहि ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ श्याम गये ग्वारि घर सूने । मांखन खाय डारि सब गोरस बासन फोरि सौंर हंकूने । बड़ो माटएक बहुत दिननि को ताहि करयो दस टूक । सोवत लरिकनि छिरकि मही सों हंसत चले दै कूक ।

आय गई ग्वालिनि तिहिं औसर निकसत हरि धरि पाये । देखे घर बासन सब फोरे दही दूध ढर काये । दोऊ भुज धरि गाढे करि लीन्हें गई महरि के आगे । सूर दास अब बसे कौन ह्यांपति रहि हैं व्रज त्यागे ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसे ढंग मेरे घरमें कीन्हें हो लै आई हों तुमहि पै पकरि के । फोरे सब बासन घरके दधि मांखन खायो जो उबर्‌यो सो ढार्‌यो रिस करि के । खरिका छिरकि मही सों देखौ उपज्यो पूत सपूत महरि के । बड़ो माट घर धर्‌यौ हो जुगनि को टूक टूक कियो सखनि पकरि के । पारिस पाट चलत तब पाए हो ल्याई तुमही पें पकरि के । सूर दास प्रभु को ऐसे राखौ जशोदा जैसे रखिये गज मदकों जकरि के ॥ ५ ॥ राग कान्हरौ ॥ करत कान्ह ब्रज घरनि अचगरी । खीजति महरि कांन्ह सो फिरि फिरि उरहन लै आवति हैं सिगरी । बड़े बाप को पूत कहावत हम बै बास बसत एक नगरी । नंदहु तें ए बड़े कहे हैं फेरि बसे हैं यह व्रज नगरी । जननी के खीझत हरि रोये झूठिहि मोहि लगावति धगरी । सूर श्याम मुख पोंछि जशोदा कहति सबै युवती है लंगरी ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ नितहि नितहि उठि आवति सब भोर । मेरे बारेहि दोष लगावति ग्वालिनि जोबन जोर । दूध दह्यो मांखन के कारन कब गयो तेरी ओर । धनमाती इतराती डोलति सकुचनहीं करै सोर । मेरो कन्हैया तनक सो तू है कुचनि कठोर । तेरे मनको यही कौन है पायो आजु कटक को छोर । कापर नैन चलावति आवति जाति नहीं व्रज तिनुको तोर । सुनहु सुर ग्व लिनि की बातें बसति कान्ह जीवन धन मोर ॥ ७ ॥ राग रामकली ॥ अपनो गांव लेहु नन्द रानी । बड़े बापकी बेटी तातें पूतहि भले पठावति पानी ॥ सखा भोरले पैठत घरमें आपु खाय तो सहिये । मैं जब चली सामुहे पकरन तबके गुण कहा कहिये ॥ भाजिगये दुरि देखत कतहूं मैं घर पैठी आई । हरे हरे बेनी गहि पाछे बांधे पाटी लाई ॥ सुनि मैया याके गुण मोसों इन मोहि लयो बुलाई । दधिमें परी सेंति की चीटी मोपें सबै कढाई ॥ टहल करत याके घरकी मैं यह पति संग मिलि सोई । सूर बचन सुनि हंसी जशोदा ग्वालि रही मुहगोई ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ महरि तुम चहति कछु व्रज और । बात एक मैं कही कि नाही आपु लगावति झौर । जहां बसे पति नहीं आपनी तजन कह्यो सोठौर ॥ सुतके भये बधाई पाई लोगनि खेदत होर । कांन्ह पठायदेति घर लूटन कहत करो या गौर ॥ व्रज घर समुझि लेहु महरिजो कहति कीये कर जोर ॥ नित प्रति हानि कहां लों सहिये कहौ महरि तुम बात । और कहा कहों सूर श्यामके सब गुण कहत लजात ॥ ९ ॥ राग नट ॥ लोगनि कतहि झुकति तू बौरी । दधि मांखन गंठ बन्ध दै राखति करत फिरत सुत चोरी ॥ जाके घरके हानि होत नित सो नहिआनि कहैरी । जाति पांति के लोगनि देखत और बसे हैं नैरी ॥ घर घर कान्ह खान को डोलत अतिहि छपिनि तैहैरी । सूर श्याम को जब जो भावै सोइ तबहीं तू दैरो ॥ १० ॥ राग रामकली ॥ महरि तोहि बड़ी छपनि मैं पाई । दूध दही है विधि की दीनों सुत डर धरति छपाई ॥ बालक बड़तड़ी नहीरी तेरे एकै कुंवर कन्हाई । सोऊतौ घरही घर

डोलत माखन खात चुराई ॥ दृढ़ बेस पूरे पुन्यन तें तै बज्रतें निधि पाई । ताऊके खैबे पीबेको कहाइतो चतुराई ॥ सुनऊन बचन चतुर नागरिके जशुमति नन्द सुनाई । सूर श्यामको चोरी के मिस दरशन कोयह आई ॥ ११ ॥ राग नट ॥ अनत सुत गोरस को कंत जात । घर सुरभी नवलाख दुधारी और गनी नहि जात ॥ नित प्रति सबे ओरहन के मिस आवत हैं उठि प्रात । अनलह तें अपराध लगावति बिकट बनावति बात ॥ निपट निसंक बिवादति सनमुख सनि मोहि नन्द रिसात । मोसों छपिनि कहत तेरे घर ढोटा ऊन अघात ॥ करि मन हारि उठाय गोदलै बरजति सुतके मात । सूर श्याम नित सुनत उरहनो दुख पावत तेरो तात ॥ १२ ॥ राग धनाश्री ॥ पहिलो माखन मांगि लयो जशुमतिसों । माता सनि तुरतहि लै आई देति खवाइ मगन मन रतिसों ॥ भैया मैं अपने कर खैहों धरिदै मेरे हाथ । माखन खात चले उठि खेलन सखा जुरे सब साथ ॥ मथुरा जात ग्वालिनी देखी चरचि लई हरि आय । सूर श्याम ताघरके पाछें बैठि रहे अरगाय ॥ १३ ॥ राग धनाश्री ॥ भाजिगयो मेरो भाजन फोरि । लरिका सहस एक संग लीन्हे नांचत फिरत सांकरी खोरि ॥ मारग तौ कछु चलन न पावै धावत गोरस लेत अजोरि । सकुचन करत फागुसी खेलत तारी देत हंसत सुख मोरि॥ बात कहों तेरे ढोटा की सब दृज को बध्यो प्रेम की डोरि । टोना सों पढ़ि नावत सिर पर जो भावै सो लेत है छोरि ॥ आप खाय सो सब हम मानो औरनि देत सिकहरे टोरि । सूर सुतहिं बरजो नन्दरानी अब तोरत चोलीबन्द डोरि ॥ १४ राग बिलावल ॥ श्याम सब भाजन फोरि पराने । हांक देत पैठत पैलाने नेकु न मनहिं डराने ॥ सीके छोरि सारि लरिकनि को माखन दधि सब खाई । भवन मच्यो दधि कांदो लरिकनि रोवत पाये जाई ॥ सुनि जशुमति सबहो के लरिका तेरो सो कछु नाहिं । हाटनि बाटनि मलिन कछू कोउ चलि नहि सकत डराहिं ॥ ऋतु आये को खेल कन्हैया सब दिन खेलत फागु । रोकि रहत गहि गली सांकरी टेढी बांधत पागु ॥ बाबे तें सुत ये ढंग लाये मनहीं मनहि सिहाति । सुनऊ सूर ग्वालिनि की बातें सकुचि सहरि पछिताति ॥ १५ ॥ राग सारंग ॥ कन्हैया तू नहि मोहि डरात । षटरस परयो छांडि कत परघर चोरी करि करि खात ॥ बकत बकत तोसों पचि हारी नेकऊ लाज न आई । दृज परगन सिकदार महर तू ताको कर तनन्हाई ॥ पूत सपूत भयो कुल मेरे अब मैं जानी बात । सूर श्याम अबलों तोहि बकसी तेरी जानी घात ॥ १६ ॥ राग गौरी ॥ सुनिरी ग्वारि कहों एक बात । मेरीसों तुम याहि मारियो जबहीं पावऊ घात ॥ अब मैं याहि जकरि बांधोगो बज्रतें मोहि खिझाई । साटिन मारि करौं पऊनाई चितवत बदन कन्हाई ॥ अजहूं मानि कह्यो करि मेरो घर घर तू जनि जाहि । सूर श्याम कह्यो कछू न जैहों माता मुख तन चाहि ॥ १७ ॥ * * *

॥ अथसूरसागर यमलार्जुन रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ दामोदर लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग बिलावल ॥ ऐसी रिस मैं जो धरि पाऊं । कैसे हाल करौं धरि हरिके तुमको प्रकट दिखाऊं ॥ संटिया लिये हाथ नन्द रानी थर थरात सब गात ॥ मारे बिना आजुजौं छाडौं लागे मेरे तात ॥ यहि अन्तर ग्वालिनि इक ओरे धरे बांह हरि ल्यावति । भली महरि सूधो सुत जायो बोली हार बतावति ॥ रिसमें रिस अतही उपजायो जानि जननि अभिलाष । सूरश्याम भुज गहे जशोदा अब बांधो कहि भाष ॥ १ ॥ राग धनाश्री ॥ जशुमति रिसकरि रज्जु आकरषे । सुतहि क्रोध देखि माता के मनही मन हरि हरषे ॥ उफनत छीर जननि करि दुचिती यहि बुधि भुजा छुड़ायो । भाजन फोरि दह्यो सब डारयौ सांखन मुख लपटायो ॥ लै आई जेवरि अब बांधो मरम जानिन बंधावै । अंगुर है घटि होत सबनिसों पुनि पुनि और मंगावै ॥ नारद श्राप भए जमलार्जुन इनको अबज उधारों ॥ सूरदास प्रभु कहत भक्त हित जनम जनम तनु धारों ॥ २ ॥ राग धनाश्री ॥ देखि सखी जशोदा बौरानी । घर घर डोलति लेति दावती बांह गहे हरिको बितितानी ॥ जानति नाहिं जगत पति माधौ जिनतें सब आपदा नसानी । जाको नाम सकति पुनि ताकी ताहि देखि बांधत नन्दरानी ॥ अखिल ब्रह्मांड उदर रहे जाके जिनकी ज्योति जल थलज समानी । मुखजम्हात त्रिभुवन दिखरायो अचरिज कथा न जात बखानी ॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहू नहि जानी । सूरदास मोहि बैसिये लागति जो कछु कही गरग मुखबानी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री बांधो आज कवन तोहि छोरै । बहुत लंगरयो कीनी मोसों भुज गहि रज्जु लखलसोंजोरै जननी अति रिस जानि बंधाए चिते बदन लोचन जल ढोरै । यह सुनि ब्रजजुवती सब धाईं कहति का न्हअब क्यों नहि चोरै ॥ लखलसों गहि बांधि जशोदा मारनको सांटी कर तोरै । सांटीदेखि ग्वालि पछितानी बिकल भई जहां तहां मुख मोरें ॥ सुनहु महिर ऐसी न बूझिये सुत बांधति माखन दधि थोरै । सूर श्याम को बहुत सतायो चूक परी हमतें यह भोरै ॥४॥ ॥ राग बिलावल ॥ जशोदा तेरो मुख हरि जोवे । कमल नयन हरि हिचकिन रोवे बंधन छोरिज सोवै ॥ जो तेरो सुत खरो अचगरो अपनी कोखि को जायो । कहा भयो जो घरके ढोटा चोरी माखन खायो ॥ तुरत दोहनी दह्यो जमायो जावन पूजनपायो

ताघरदेव पितर काहेको जाधर ऐसो जायो ॥ जाको नाम लेत भ्रम छूटै करम फंद सब काटै । सेा हरि प्रेम जेवरी बांधे जननि सांटि लये डाटै ॥ सूर दास प्रभु भक्त हेत तें देह धरतहीं आये । दुखित जानि दोउ सुत कुबेर के ताहित आपु बंधाये ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ माई नेकहुं न दरद करति हिचकिन हरि रोवै । बज्रहूं तें कठिन हियो तेरो है जसोवै ॥ पलना पौढाहि जिनहि बिकट बाउ काटै । उलटे भुज बांधि तिनहि लकुट लिये डाटै ॥ नेंकहु न थकित पाणि निरदई अहीरी । अहेा नंदरानी सीख कौन पै लहीरी ॥ जाको शिव सनकादिक सदा रहत लेाभा । सूर दास प्रभु को मुख निरखि देखि शेाभा ॥ ६ ॥ राग बिहागरेा ॥ कुँवर जल भरि भरि लेाचन लेत । बारिज बदन बिलेाकि जशेादा कत रिस करति अचेत ॥ छेारि उदर तें दुसह दांवरी डारि कठिन कर बेत । कहि धों तेाहि कैसें करि आवत शिशु परतामस वेत ॥ मुख आंसू उर माखन केफन निरखि बदन छबि देत । मानहु अवत सुधा निधि मोती उड़गन अवलि समेत ॥ सर बस तन मन धन न्योंछावरि कीजै सूर श्यामते हेत । ना जानों केहि पुण्य प्रकट भये यहि व्रज नंदनि केत ॥ ७ ॥ राग नट ॥ हरि के बदन तन धों चाहि । तनक दधि कारन यशेादा इतेा कहा रिसाहि ॥ लकुट के डर डरत जैसे सजल शेाभित डेाल । नील नीर जदल मले अलि आस कन छत लेाल ॥ बात के बस माल जैसे प्रात पंकज कोस । नमित मुख इमि अधर सूचत सकुच मेंकछु रोस ॥ कितिक गेारस हानि जाको करति हैा अपमान । सूर प्रभु के रोम ऊपर वारिये तनप्रान ॥ ८ ॥ राग नट ॥ मुख छबि निरखि हेा नंद घरनि । सरद निशि को अंश अगनित इंदु आभा हरनि ॥ ललित श्री गेापाल लेाचन लेाल आंसु ढरनि । मनहुं बारिज बिथकि बिश्रम परे परबस परनि ॥ कनक मणि मय जटित कुंडल ज्योति जगमग करनि । मिच लेाचन मनहु आये तर लगति है तरनि ॥ कुटिल कुंतल मधुप मिलि मानेा किये चाहत सरनि । बदन कांति बिलेाकि शेाभा सके सूर न बरनि ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ कहेा तेा माखन ल्याऊं घरते । जा कारन तू छेारति नाहिन लकुट न डारति करते ॥ सुनहि महिर ऐसी न बूझिये सकुचि गयेा मुख डरते । मनहु कमल दधि सुत समयेा तकि फूलत नाहिन सरते ॥ ऊखल लाय भुजा धरि बांधे मेाहन मूरति वरते । सूर श्याम लेाचन जल बरषत जनु मुक्ता हिम करते ॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ कहन लागी बढि बढि अब बात । ढेाटा मेरेा तुमहि बंधायेा तनकहि माखन खात ॥ अब मेाहि माखन देति मंगाये मेरे घर कछु नाहि । उरहन कहि कहि सांझ सवारे तुमही बंधायेा याहिं ॥ रिसही में मेाकेा गहि दीनेां अब लागी पछितान । सूर दास अब कहति जशेादा बुझियेा सबकेां ज्ञान ॥ ११ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ सुचित दै चितै तनै तन ओर । सकुचित सीत भीत ज्यों जल रुह तुअकर लकुट निरखि सखि घेार ॥ आनन ललित अवत आंसु अन अति अरुण चपल लेाचन को केार । डारत मनेा गंडुलक सुधा विधु मंडल तें भरि उभय चकेार ॥ कमल नाल ते कलित जुगल भुज ऊखल बांधे दाम कठेार । मनहु भुजंग भिरत बांबी पर अरुझि रहे कंचुरि गरजेार ॥ लघु अपराध देखि मन शेाचत है सम कुलिस कठिन उरतेार । सूर

कहा सुत सो इतनी रिस बिलखति कहति न माखन चोर ॥ १२ ॥ राग धनाश्री ॥ चितै धौं कमल नयन की ओर । कोटि चंद्रवारौं मुख छबि पर येहै सहाकि चोर ॥ उज्जल अरुण असित दीसत हैं दोउ नयननि के डोर । मानहु सुधा पान के कारन बैठे निकट चकोर ॥ काहे रिसाति जशोदा इनसों कौन ज्ञान है तोर । सूर श्याम बालक मन मोहन नाहिन तरुण किशोर ॥ १३ ॥ राग धनाश्री ॥ कबके बांधे ऊखल दाम । कमल नैन बाहिर करि राखे तू बैठी सुख धाम ॥ हो निरदयी दया कछु नाही लागि रही घरकाम । देखि क्षुधातें मुख कुमिलानो अति कौमल तन श्याम ॥ छोरहु बेगि बड़ो बिरियां भई बीति गये जुग जाम । तेरी त्रास निकट नहि आवत बोलि सकत नहि राम ॥ जन कारन भुज आप बंधाई बचन कियो ऋषि ताम । तादिनतें यह प्रकट सूर प्रभु दामोदर सो नाम ॥ १४ ॥ राग धनाश्री ॥ जशोदा तेरो भलो हियो है माई । कमल नयन माखन के कारन बांधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ स्वप्नेहु दै न दिखाई । याही ते तू गर्ब भरी है घर बैठे निधि पाई ॥ तब काहू को सुत रोवत सुनिके दौरि लेति हिये लाई । अब काहे घरके खरिका सों करति इती जड़ताई ॥ बार बार सजल लोचन भरि जोवत कुंवर कन्हाई । कहा करों बलि जांउ छोरतो तेरी सोंह दिवाई ॥ जो मूरति जल थल में व्यापक निगम न खोजत पाई । सो जशुमति अपने आंगन में दै करताल नचाई ॥ सुर पालक सब असुर संहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूर दास प्रभु की यह लीला निगम नेति नितगाई ॥ १५ ॥ राग नट ॥ देखिरी नंद नंदन ओर । त्रास ते तन चसित भै हरि तकत आनन तोर ॥ बार बार डरात लोकों बरन बदनहि थोर । मुकर मुख दोउ नैन टारत छिनहि छिन छबि छोर ॥ सजल चपलकर नयन की पल अरुण ऐसे डोल । रसभरे अम्बुज भीतर भ्रमत जनु भये भोइ ॥ कछुक करुणा करि जशोदा कहति निपट निहोरि । सूर श्याम बिलोकि जशुमति कहति माखन चोरि ॥ १६ ॥ राग धनाश्री ॥ तब तें बांधे ऊखल आनि । बाल मुकुंदहि कत तरसावति अति अंग कौमल जानि ॥ प्रात काल तें बांधे मोहन तरनि चढ्यो मधि आनि । कुम्हिलानो मुख चंद दिखावति देखहु धौं नंदरानि ॥ तेरी त्रास तें कोउ छोरत अब छोरहु तुम आनि । कमल नयन बांधेई छांड़े तुम बैठी मन मानि ॥ जशुमति के मन सुख कारन कों आपु बंधावत पानि । यमला अर्जुन मुक्त करन कों सूर श्याम यह ठानि ॥ १७ ॥ राग धनाश्री ॥ कान्ह सों आवत क्योंन सात । लै लै लकुट कटिन अपने कर परसति कौमल गात ॥ बे देखिया तू चुवत नयनतें यों राजत उर जात । मनो मुक्ता चुगततें खंजन चोंच फटी न समात ॥ डरनि डोल डोलत है यहि बिधि निरखि सुमुख सुनि बात । मनो सूर भृंग संक सरासन उड़बे को अकुलात ॥ १८ ॥ राग रामकली ॥ जशोदा यहि न बूझि ये काम । कमल नयन की भुजा देखिधौं तै बांधे हैं दाम ॥ पुचहु तें प्यारो कोउहैरी कुल दीपक मणि धाम । देखहु चन्द्र बदन कुम्हिलानो है निरमोही बाम ॥ तू बैठी मंदिर सुख छंहियां सुत दुख पावत घाम । अति सुकुमरि मनोहर मूरति ताहि करति तू ताम ॥ यही है सब ब्रजको जीवनि सुख पावति लख नाम ।

सूरदास प्रभु भक्तनि बस है सब जगके विश्राम ॥ १९ ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसी रिस तोको नंदरानी । भली बुद्धि तेरे जिय उपजीबडी बैस अब भई सयानी ॥ ढोटा एक भयो कैसेहुं करि कोन कोन करवर विधि बानी । करम करम करि अबलै उबरयौ ताको मारि पितर दै पानी ॥ को निरदयी रहै तेरे घर कोतेरे संग बैठे आनि । सुनहु सूर कहि कहि पचिहारी जुवती चली घरनि बिरुझारी ॥ २० राग सारंग ॥ हलधर सों कहि ग्वालि सुनायो । प्रातहि तें तुम्हरो लघु भैया जशुमति ऊखल बांधि लगायो ॥ काहूके सर कहि हरि मारयौ भोरहि आनि रोवत गुहिरायो । तबहीं ते बांधे हरि बैठे सेा हम तुमको आनि जनायो ॥ हम बरजी बरज्यों नहि मानति सुनतहिं बल आतुर ह्वै धायो । सूर श्याम बैठे ऊखल लगि माता डरतन अतिहि चसायो ॥ २१ ॥ राग सारंग ॥ यह सुनि के हलधर तहां आए । देखि श्याम ऊखलसों बांधे तबहीं दोउ लोचन भरि आए ॥ मैं बरज्यो कैबेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बंधाये । अजहूं छाडहुंगे लंगरायौ दोउ कर जोरि जननी पै आये ॥ श्यामहि छोरि मोहि बरु बांधो निकसत सगुण भले नहि पाये । मेरो प्राण जीवन धन कान्हा तिनके भुज मोहि बंधे दिखाये ॥ मातासों कहा करो ढिठाई शेषरूप कहि नाम सुनाये । सूरदास तब कहति जशोदा दोउ भैया तुम एकह्वै आये ॥ २२ ॥ राग सारंग ॥ काहेको इतनो हरि चास्यो । सुनिरी मैया मेरे भैया कितनो गोरस नास्यो ॥ जब रज्जुसों कर गाढ़े बांधे छर छर मारी सांटी । सूनेघर बाबा नंद नांहीं ऐसे करि हरि डांटी ॥ और नेकुछु हि देखहि श्यामहि याको करों निपात । तू जो करै बातसों सांची कहा कहौं तोहि मात ॥ गाढे बदत बात सब हलधर मांखन प्यारो तोहि । व्रजप्यारो जाको मोह गारो छोरति काहेन जोहि ॥ काको व्रजमांखन दधिकाको केहिबांधे जकरि बनाय । सुनत सूर हलधर की बानी जननी सेजु बताय ॥ २३ ॥ राग सारंग ॥ सुनहु बात मेरी बलराम करन देहु मोहि इनको पूजा चोरी प्रकटत नाम ॥ तुमहीं कहो कमी काहेको नव निधि मेरे धाम । मैं बरजी सुत जाहु कहूं जिनि कहि हारी निसि जाम ॥ तुमहु मोहि अपराध लगायो मांखन प्यारो श्याम ॥ सुनि मैया तोहि छांडि कहौ कहि को राखे तेरे नाम ॥ तेरीसों औरहन लै आवति झूठी हजकी वाम । सूरश्याम अतिही अकुलाने कब बांधेहैं दाम ॥ २४ ॥ राग सारंग ॥ कहाकरों हरि बहुत खिझाई । सहिन सकी रिसही रिस भरि नई बहुतें ढीठ कन्हाई ॥ मेरो मच्यो नेकुनहि मानत करत आपनी टेक । भोर होत औरहन लै आवति हजकी बधू अनेक ॥ फिरत जहां तहां धूम मचावत घर नहि रहत छनेक । सूर श्याम त्रिभुवन को करता जशुमति कहति जनेक ॥ २५ ॥ रागसारंग निरखि श्याम हलधर मुसकाने । को बांधे को छोरै इनको यह महिमा येही पैजाने ॥ उत्पति प्रलय करत हैं येई शेषसहस मुख सुजस बखाने । यमलार्जुन तोरि उधारन कारन करत आप मन माने ॥ असुर संहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने । सूरदास प्रभु भाव भक्तके अति मति जशुमति हाथ बिकाने ॥ २६ ॥ राग रामकली ॥ जशोदा ऊखल बांधे श्याम ॥ मनमोहन बाहरही छांडे आपु गई गृह काम ॥ दह्यो

मथति मुखमें कछु बकरति गारी देहै नाम । घर घर डोलत मांखन चोरत षटरस मेरे धाम ॥ दूजके लरकन मारि भजतु हैं जाइ तुमइं बलराम । सूर श्याम ऊखल सों बांधे निरखति दूजकी बाम ॥ २७ ॥ राग गूजरी ॥ जशोदा कान्ह हूं तें दधि प्यारो । डारि देहि कर मथति मथानी तरसत नन्द दुलारो ॥ दूध दही मांखन ले बारै जाहि करति तू गारो । कुम्हिलानो मुख चन्द देखि छवि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्मा सनक शिव ध्यान न पावत सो दूज गैयनि चारो । सूर श्याम पर वलि वलि जैये जीवनि प्राण हमारो ॥ २८ ॥ राग धनाश्री ॥ जशु मति किन यह सीखदई । सुतहि बांधि तू मथति मथानी ऐसी निठुर भई ॥ हरे बोलि युवतिन को लीन्हो तुम सब तरुणी नई । लरिकहि त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई ॥ मेरे प्राण जीवन धन साधो बांधे बेर भई । सूर श्याम को त्रास दिखावति तुम कहा कहत दई ॥ २९ ॥ रागधनाश्री ॥ जशोदा तोहि बांधत क्यों आयो । कसक्यो नहीं नेकु मन तेरो याही कोहों जायो ॥ शिवविरंचि महिमा नहि जाने सोतो गाय संग धायो । तातें तू पहिचानति नाहिनकोन पुन्य तें पायो ॥ इतनी कहि उसकारत बांहे गोरस हित बल छायो । कहा भयो जो घरके लरिका चोरी मांखन खायो अपने कर करि बन्धन छोरो प्रेम सहित उर लायो । सूरसु बचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल बिसरायो ॥ ३० ॥ राग आसावरी ॥ जाइ चली अपने अपने घर । तुमहीं सब मिलि ढीठ करायो अब आई बन्धन छोरन वर ॥ मोहि अपने बाबाकी सौंहै कान्हहि अवन पत्याऊं । भवन जाइ अपने अपने सब लागतिहों मैं पाऊं ॥ मोकों जिनि बरजो कोउ युवती देखो हरिके ख्याल । सूर श्यामसों कहति जशोदा बडे नन्दके लाल ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि चितये जमलार्जुन तन । अबहीं आजुइनहि उद्धारों एहें मेरे निज जन ॥ इनको हेतु भुजा बन्धवाई अब विलंब नहि लाऊं । परस करौं तनु तरुहि गिराऊं । मुनिवर शाप मिटाऊं ॥ ए सुकुमार बहुत दुखपायो सनकादिक सुत चारों । सूरदास प्रभु कहत मनहि मन कर बन्धन निर वारों ॥ ३२ ॥ राग धनाश्री ॥ तबहि श्याम एक बुद्धि उ पाई । युवती गईं घरनि सब अपने गृह कारज जननी अटकाई ॥ आपु गये जमलार्जुन तर पर पर सत पात उठे झहराई । दिये गिराय धरनि दोउ तरुवर ह्वै कुबेर सुत प्रकटे आई ॥ ह्वै करजोरि करत दोउ अस्तुति चारि भुजा तिन्ह प्रगट दिखाई । सूर धन्य ब्रज जनम लियो हरि धरनी की आपदा नसाई ॥ ३३ ॥ राग बिलावल ॥ धनि गोविन्द धनि गोकुल आये । धनि धनि नंद धन्य निशि बासर धनि जशुमति जिनि गोद खिलाये । धनि वह बाल केलि जमुना तट धनि बन सुरभी वृन्द चराये । धनि यह समय धन्य ब्रज बासी धनि धनि वेणु मधुर धुनि गाये । धनि धनि अनख ओरहनों धनि धनि धनि मांखन धनि मोहन खाये । धन्य सूर ऊखल तरु गोविंद हमहि हेतु धनि भुजा बंधाये ॥ ३४ ॥ राग बिलावल ॥ गोविंद तुम्हारो सरूप निगम नेति नेति गावै । भक्त के बस श्याम सुंदर देह धारे आवै । जोगी जन ध्यान धरत सपनेहुं न पावैं । नंद धरनि बांधि बांधि कपि ज्यों नचावैं । गोपी जन प्रेम आतुर तिनको सुख दीन्हों । अपने अपने रस बिलास काहू नहिं चीन्हों । श्रुति स्मृति सब पुरान कहत

मन बिचारी । सूर दास प्रेम कथा सबहीं तें न्यारी ॥ ३५ ॥ राग सोरठ ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पावै । तासो नंदकी नारि जसोदा घरकी टहल करावै । शेष सनक नारद गनेश मुनि जाके गुण नित गावैं । निशि बासर खोजत पचि हारे मुनि मन ध्यान न आवै । धनि धनि गोकुल धनि ब्रज बनिता निरखत श्याम बंधावै । सूर दास प्रभु प्रेमहि के बस संतनि दरस दिखावै ॥ ३६ ॥ राग कान्हरो ॥ धनि धनि धनि ऋषि श्राप हमारे । आदि अनादि निगम नहि जानत नेहरि प्रकट देह ब्रज धारे । धन्य नंद धनि मात जसोदा धनि आंगन में खेलत बारे । धन्य श्याम धनि दाम बंधये धनि ऊखल धनि मांखन त्यारे । दीन बंधु करुणा निधिहो प्रभु राखि लेहु हम शरण तुम्हारे । सूर श्याम के चरण सीस धरि अस्तुति करि निज धाम पधारे ॥ ३७ ॥ राग रामकली ॥ तरु दोउ धरनि गिरे भहराय । जर सहित अररा के आघात शब्द सुनाय । भये चकृत लोग ब्रजके सकुचि रहे डरपाय । कोउ रहे आकाश देखत कोउ रहे सिर नाय । घरी लौं तकि गये जहां तहां देह गति बिसराय । निरखि जशुमति अजिर देखै जहां बंधे सु कन्हाय । वृक्ष दोउ धरा परे देखे महरि कियो पुकार । अबहिं आंगन छांडि आई चप्यो तरुके डार । मैं अभागिनि बांधि राखे नंद प्राण अधार । सोर सुनि नंद द्वार आये बिकल गोपी ग्वाल । देखि तरु मन अति डराने हैं बड़े बिस्तार । गिरे कैसे बड़ो अचरज नेकु नहीं बयार । दुहूं तरु बिच श्याम बैठे रहे ऊखल लागि । भुजा छोर उठाय लीन्हों महरि के हैं भागि । निरखि जुवती अंगहरि के चोट जनि कहुं लागि । कबहुं बांधति कबहुं मारति महरि बड़ी अभागि । नैंन जल भरि ढारि जसुमति सुतहि कंठ लगाय । जरै रिस जिहिं तुमहिं बांधे लगे मोहि बलाय । नंद मोहि कहा कहेंगे देखि तरु दोउ आय । मैं मरूं तुम कुसल रहो दोउ श्याम हलधर भाय । आय जो घर नंद देखै तरु गिरे दोउ भारि । बांधि राखति सुतहि मेरे देत महरि हिगारि । तात हितबस श्याम दौरे महरि लियो अंकवारि । कैसे उबरे कृष्ण तरुतें सूर लै बलि हारि ॥ ३८ ॥ राग सारंग ॥ अब घर काहुं के जिनि जाहु । तुमरे आजु कमी काहेकी कत तुम अनतहिं खाहु । जरै जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ महराय । नंद मोहि अति चासत हतूं बांधे कुंवर कन्हाइ । रोग जाउ अपने हलधर की छोरत हैं तब श्याम । सूर दास प्रभु खात फिरो जिनि मांखन दधि तुव धाम ॥ ३९ ॥ राग सारंग ॥ ब्रज जुवति श्यामहि उर लावति । बार बार निरखि कोमल तनु करि बिनती बिधि कोजु मनावति । कैसे बचे अगम तरुके तर मुख चूमति यह कहि पछितावति । उरहन लै आवति जेहि कारन सो सुख फल पूरन करि पावति । सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधन चिन्ह देखावति । सूर दास प्रभु अति रति नागर गोपी हरषि हृदै लपटावति ॥ ४० ॥ * ॥ पुनह यमलार्जुन की लीला ॥ * ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालि उरहनों भोरहि ल्याई । जसुमति कहं तेरो गयो कन्हाई । भले काम तैं सुतहि पढ़ाये । बारेहीं तें मूड चढायो । मांखन मथि भरि धरी कमोरी । अबहीं सो

हरि लै गयो चोरी। यह सुनतहि जसुमति रिस मानी। कहां गयो कहि सारंग पानी। खेलत तें औचक हरि आये। जननी बांह पकरि बैठाये। मुख देखत तब जसुमति जान्यों। मांखन बदन कहां लपटान्यों। फिरि देखै तो ग्वालिनि पाछे। माता मुख चितवत नहि आछे। चोरीके सब भाव बताये। माता सटिया द्वैकल गाये। मांखन खान जात परघर को। बांधों तोहि नेकु नहि धरकों। बांह गहे ढूंढत फिरत डोरी। बांधों तोहि सकै को छोरी। बांधि पचो डोरी नहि पूरै। बार बार खीझति रिस भूरै। घरघरतें जेवरी लै आई। मिसही मिस करि देखन धाई। चकृत भई देखति ढिग ठाढी। मनो चितेरे लिखि लिखि काढी। जसुमति जोरि जोरि रजु बांध्यो। अंगुर द्वै जेवरि घटि साध्यो। जब जान्यो जननी अकुलानी। आपु बंधाये सारंग पानी। भक्त हेत दांवरी बंधाई। सनकादिक सुतकी सुधि पाई। माता हेत जनहि सुख कारी। जानि बंधायो श्री बनवारी। मुख जमुहाइ त्रिभुवन दिख रायो। चकृत हि तुरतभये बिसरायो। बांधि श्याम बाहेर लै आई। गोरस घरघर खात चुराई। ऊखल सों गहि बांधि कन्हाई। नितहि उरहनों सह्यो न जाई। यह कहि जाति एक फिरि आवै। रैनि दिना तूं मोहि नचावै। मांखन दधि तेरे घर नाहीं। धाम भरयों चोरी करि खाहीं। नवलख धेनु दुहत घर मेरे। केते ग्वाल रहत गौ घेरे। मथत नंद घर सहस मथानी। ताके सुत चोरी की बानी। मोसों कहति आनि जब नारी। बोलि जात नहि लाज निमारी। नंद महरकी करत नन्हाई। बिरध बेस सुत भयो कन्हाई। तुमरे गुन सब नीके जानै। नित बर जों कबहू नहि मानै। को छोरै जिनि ढीठ कन्हाई। बांधों दोउ भुज ऊखल लाई। भवन काजकों गई नंद रानी। आंगन छोड़े श्याम विनानी। उरहन देन ग्वालि जे आई। तिनहि जसोदा दयो बुराई। चली सबै मिलि सोचति मन में। श्यामहिं गहि बांध्यो रहि छिन में। हंसत बात एक कही किनाहीं। ऊखल सो बांध्यो सुत बाहीं। कहा कहों बाछविकी माई। बांबी पर अहि करत खराई। कान्ह बदन अतिही कुम्हिलानों। मानहु कमल हिमहिंत रसानों। दुरतें दीरघ नैन चपल अति। बदन सुधा सरमी नकरत गति। यह सुनि और जुबति सब आईं। जसुमति बांधे कतहि कन्हाई। भली बुद्धि तेरे कछु उपजी। ज्यों ज्यों दिनी भई त्यों निपजी। छोरो श्याम करयो मन चा हो। अति निर दई भई तुम काहो॥ देखो श्याम और नन्द रानी। सकुच रह्यो मुख सारंग पानी॥ बाहिर बांधि सुतहि बैठारयो। मथति दही मांखन तोहि प्यारो॥ झांडि देहु बहि जाय मथानी। सोंह दिवावति छोरहु आनी॥ हांसी करन सबै तुम आई। अब छोरों नहि कुंवर कन्हाई॥ तुमहीं मिलि रस बाद चढायो। उरहन दै वै मूंड पिरायो॥ सबहिनि गोधन सोंह दिवाई। चितै रहे मुख कुंवर कन्हाई॥ कब तुमको बोलावो लाई। केहि कारन तुम धाई आई॥ कहा करों बलि जाउं कन्हाई। हमरे बसनतु स्हारी माई॥ मूरुष को कोउ कहा सिखावै। याकी मति कछु कहत न आवै॥ नारि गई फिरि भवन आतुरी। नन्द घरनि अब भई चातुरी॥ ओछी बुद्धि जशोदा कीनी।

याकी जाति अबे हम चीन्ही ॥ यहै कहति अपने घर आई । मानें नहि कितनेा समु झाई ॥ मथति जशेादा दह्यो मथानी । तबहिं कान्ह ऐसी मति ठानी ॥ भक्तबछल हरि अन्तर यामी । सनकादिक सुत ए दोउ कामी ॥ यहि अवतार कह्यो इन तारन। इनको दुःख अब करेा निवारन ॥ जो जेहि ढंग तेहि ढंग सब लाये । जमलार्जुन पें प्रभु तबआये ॥ वृक्ष बीच ऊखल लै अटक्यो । आगे निकसि नेक गहि झटक्यो ॥ अर रराट दोउ वृक्ष गिरे धर । अति आघात भयेा ब्रज ऊपर ॥ भए चकृत ब्रजके सब बासी । यहि अन्तर दोउ कुंवर प्रकासी ॥ शंख चक्र कर सारंग धारी । भक्त हेत प्रकटे बनवारी देखि दरश मन हरष बढायेा । तुमहि बिना प्रभु कवन सहायेा ॥ धनि ब्रज जहां कृष्ण बपु धारी । धनि जशुमति ब्रह्महि अवतारी ॥ धन्य नंद धनि धनि गेापाल । धनि धनि सब गेाकुल की बाल ॥ धन्य गाय धनि द्रुम बन चारन । धनि जमुना हरि करत विहारन ॥ धन्य उरहनेा प्रातहि ल्याई । धनि माँखन चेारत दिबि राई ॥ धन्य सुजन ऊखल गढि लायेा । धन्य दाम भुज कृष्ण बंधायेा ॥ गद् गद् कंठ चरण मुखभारी शरण राखिलै गर्ब प्रहारी ॥ बार बार चरणनि पर धाई । कृपा करी भक्तन सुखदाई ॥ साधु साधु कहि श्री मुखबानी । बिदा भये सनकादि बखानी ॥ जमलार्जुन कें तारि पठाये नन्द द्वार दोउ वृक्ष गिराये ॥ निरखि जशेादा आंगन आई । दुहूं वृक्ष बिच बचे कन्हाई ॥ दौर परे ब्रजके नर नारी । नन्द द्वार कछु हेात गेाहारी ॥ देखे आनि वृक्ष दोउ डारे । ए गुण जशुमति आहि तुम्हारे ॥ तुरत छोरि ऊखल तें ल्याये । देखत जननि नयन भरि आये ॥ ब्रजदेह हरकी है माई । जहां तहां बिधि हेात सहाई ॥ प्रथम पूतना मारन आई । पै पीवत वह तहां नसाई ॥ तृणाबर्त्त लै गयेा उड़ाई । आपुहि गिरयेा सिला पर आई ॥ कागासुर आवत नहि जान्यो । सुनी कहत ज्यों लेत परान्यों ॥ सकटा सुर पलना ढिग आयेा । को जाने किनि ताहि गिरायेा ॥ खेलत में केसी एक मारयेा । घींच तोरि तेहि धरनि पछारयेा ॥ ग्वालनि संग गये गेाचारन । तहां बकासुर लाग्यो मारन ॥ कौन कौन करवर है टारेा । जशुमति बांधि अजिर लै डारेा ॥ बहुतै उबरयेा आजु कन्हाई । ऊपर वृक्ष गिरे भहराई ॥ कहा कहों कहत न बनि आवै । तुरत आय हरिको न बचावै ॥ सबहिन मिलि एक मति मन भाई । पुण्य नंद के बचे कन्हाई ॥ मुख चूंबति उर लैले आये । जुवतिन किये आपमन भाये ॥ जननी लै सुत कंठ लगावति । चेारी की बातें समुझावति ॥ मैं रिसही रिस करति खोलसे । भुज बांधे मन हंसति ख्याल से ॥ मैं बरज्यो तुम करत अचगरी । उरहन को ठाढी रहैं सिगरी ॥ बार बार देखत तन माई । गिरत वृक्ष कहुं चोट न आई ॥ कहत श्याम मैं अतिहि डरानेा । ऊखल में मैं रह्यो छपानेा ॥ बात सुतहि बूझति नंद रानी । कान्ह कहै मुख डरकी बानी ॥ हरिके चरित कथा को जानै । जशुमति अति बालक करि मानै ॥ अखिलब्रह्मांड जीव के दाता । मांखन को बांधति है माता ॥ गुण अपार अबिगत अबि नासी । सेा प्रभु घर घर धेाष बिलासी ॥ ऊखल बंध्यो हेतु भक्तन के । एइ माता एइ पिता जगतके ॥ यमलार्जुन कों मेाक्ष करायेे । पुच हेतु जशुदा घर

आये ॥ ऐसे हरिजन के सुख कारी । प्रकटे रूप चतुर्भुज धारी ॥ जो जेहि भाव भजे हरि तैसो । प्रेम बश्य दुष्टनि को जैसो ॥ सूरदास यह लीला गावै । कहत सुनत सबके मन भावै ॥ जो हरि चरित ध्यान उर राखै । आनंद सदा दुरित दुख नाखै ॥ १ ॥ राग धनाश्री ॥ मांखन खात पराये घरको । नित प्रति सहस मथानी मथिये मेघ शब्द दधि माट घमरको ॥ कितने अहीर जीवत घर मेरे दधि मथि लै बेचत महिढरको नवलख धेनु दुहतही नित प्रति बड़ो नामहै नंद महर को ॥ ताके पूत कहावत हो तुम चोरी करन उघारत घरको । सूर श्याम कितनो तुम खैहो दधि मांखन मेरे जहं तहं ढरको ॥ २ ॥ राग रामकली ॥ मैया मैं मांखन नहिं खायो । ख्याल परे ए सखा सबै लै मेरे मुख लपटायो ॥ देखि तुही सीके पर भाजन ऊंचे घर लरकायो । तुही देखि नान्हे कर अपने मैं कैसे सो पायो ॥ मुख दधि पोंछि बुद्धि एक कीनो दोना पाछे दुरायो । डारि सांटि मुख चूंबि जशोदा श्यामहि कंठ लगायो ॥ बाल बिनोद भाव करि मोहन माता मनहि रिझायो । सूरदास यह जशुमति को सुख देवनि दुर्लभगायो ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ जशुमति तेरो बारो अतिही अचगरो । दूध दह्यो मांखन लै डारि देत सिगरो ॥ भोर उठि नित प्रति करै मोसों झगरो । ग्वाल बाल संग लये घेरि रहे बगरो ॥ हम तुम ए सबै एक कोन तें अगरो । खियो दियो कछु सोउ डारि देहु कगरो ॥ सूर श्याम तेरो सुत गुणमें अति अगरो । चोली हार तोरि चीर लायो मेरो खगरो ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ देखो माई या बालक की बात । बन उपबन सरिता सर मोहै देखत श्यामल गात ॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठि कै मांखन खात । पीतांबर सिरते वह ओढत अंचल दै मुसकात ॥ तेरी सों कहा कहों जशोदा उरहन देत लजात । जब हरि आवत तेरेहि आगे सकुचि तनकहै जात ॥ कौन कौ गुण कहूं श्यामके नेंकु नकाहु डरात । सूर श्याम मुख निरखि जशोदा कहति कहा ये तात ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ नंद घरनि सुत भलो पढ़ायो । ब्रज बीथिनि पुरि गलिनि घरनि घर घाट बाट सब सोर मचायो ॥ लरिकनि मारि भजत काहु के काहूको दधि दूध लुटायो । काहू के घर करत भंडाई मैं ज्यों ज्यों करि पकरि न पायो ॥ अबतो इनहित करि धरि बांधो येहि सब तुमरो गांव मंगायो । सूर एक भुज गहि नन्द रानी बहुरि कान्ह अपने ढिग आयो ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ भूखो भयो आजु मेरो बारो । भोरहि ग्वालि उरहनों ल्याई ओहि यह कियो पसारो । पहिलै रोहिनि से कहि राख्यो लुरत करो जिवनार ॥ ग्वाल बाल सब बोलि लये मिलि बैठे नंद कुमार । भोजन बेगि ल्याव कछु मैया भूख लगी मोहि भारी ॥ आजु सवारे कछु बन खायो सुनत हंसी महतारी रोहिनि चितै रही जशुमति तन सिर धुनि धुनि पछितानी । परुस बेगि बेर कत लावति भूखो सारंग पानी ॥ बहु व्यंजन बहु भांति रसोई षटरस के परकार । सूर श्याम हल धर दोउ भैया और सखा सब ग्वार ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ नन्द भवन में कान्ह अरोगे । जशुदा ल्यावै षटरस भोगे ॥ आस नदै चौकी आगे धरि । जमुनाजल मेल्यो झारी भरि ॥ कनक थारमें हाथ धोवायो । सहस्र यह भोजन तहां आयो ॥

लै लै धरति सबनि के आगे । मात परोसे जो हरि मांगे ॥ खीर खांड घृत खावन लाडू । ऐसे होहि नहीं अमृत पाडू ॥ और लेहु कछु सुत ब्रजराज । लुचई लपसी घेवर खाज ॥ पैंठा पाग जलेबी पेरा । गोंद पाकति नगिनी गिंदेरा ॥ गूंझा इलाची पाक अमिरती । सीरा संजाव लेहु ब्रजपती ॥ छोलि धरे खरबूजा केरा । घृत जो बात कियो मुख भेरा ॥ खारक दाख गरीचा रौंरी । पीड बदाम लेत बन बौरी ॥ बेसन पुरी सुखपुरी लीजै । आछो दूध कमल सुखपीजै ॥ मैया मोहि और किनि प्यावे । धौरी कोपय अति मोहि भावे ॥ बेला भरि हल धर कों दीनों । पीवत पय अस्तुति बलकी नों । ग्वाल सखा सबहिन पय अंचयो । नीके औटि जशोदा रचयो ॥ दोना मेलि धर जुवा । होंस होय तो ल्याऊं पुवा ॥ मीठे अति कोमलहै नीके । तातें तुरत चभोरे घीके । फनी सेव अनरसे प्यारे । लैआऊं जेंबहु मेरे बारे । हल धर कह्यो ल्यावरी मैया । मोकों दैनहिं लैत कन्हैया ॥ जशुमति हरष भरीलै परुसति । जेंवतहै अपनी रुचिसों अति ॥ कान्हमांगि शीतल जल लीयो । भोजन बीच नीर लैपीयो ॥ भात पसाय रोहिणी ल्याई ॥ घृत सुगंध तुरतहि दै ताई ॥ लीलवती चांवर दिवि दुर्लभ । भात परोसे माता सुर्लभ ॥ मूंग मसूर उरद चना दारी । कनक बरन धरि फटकि पछारी ॥ रोटी बांटी पोरी भोरी । एक कोरी एक घिवनि चभोरी ॥ गायो घिव भरि धर्यो कचोर्यो ॥ कछु मांग्यो कछु फैटा छोर्यो । मीठे तेल चना की भाजी । एक मकूनी दै मोहि साजी मीठे चरपरे उज्जल कौर ॥ हैंस होय तो मांगे और । मुंगोछा पतौरा पनौरा पकौरा ॥ एकोरे भीजे गुर बोरा । पापर बरी मिथौदि फुलोरी ॥ कूर बरी काचरी पिठौरी । बहुत मिरच दै किये निमोना । बेसन के दस बीसक दौना ॥ बन कौरी पीडिसा खिचोड़ी । रोप पिंडालू कोमल भीडी ॥ चौलाई लाल्हर अरु पोई । मध्य मेलि निबु बनि सुनिचोई ॥ रुचि तेल जाख लोनिका पागी । कढी दयाल दूसरे मांगी ॥ सरिसौं मेथी सोवा पालिक । बथुवा रांधि लियो जु उतालिक ॥ हींग हरद मुच छौंके तेले ॥ अदरक और आवले मेलै ॥ सालन सकल कपूर सुबासित । स्वाद लेत सुन्दर हरि ग्रासित ॥ अंब आदि दै सगे संधानो । सब चाखे गोवर्धन रानो ॥ कान्ह कहै हों मात अघानों । अब मोकों शीतल जल आनों ॥ अचवन लेत धोये कर मुख । शेषन बरनें भोजन को सुख ॥ उज्जल पान कपूर कस्तूरी । आरोगति मुख की छवि रूरी ॥ चन्दन अंग सखिन के चरच्यो । जशुमति के सुखको नहिं परच्यो ॥ मांगि जूठ सूर जन लीनो । बांटि प्रसाद सबन कहं दीनो ॥ जनम जनम बाढ्यो जूठनि को । चेरो नन्द महर के घर को ॥ ८ ॥ राग कान्हरो ॥ जशुमति कहति कान्ह सों मेरे अपने आंगन हीं तुम खेलो । बोलि लेहु सब सखा संगके मेरो कह्यो बहुरि जिनि ठेलो ॥ ब्रज बनिता सब यों कहति लाजनि सकुचि जात मुख मेरो ॥ आजु मोहि बलराम कहत है झूठे नाम धरत है तेरो ॥ जब मोहि रिस लागति तब त्रासति बांधति मारति जैसे चेरो । सूर हसित ग्वारिनि दै ताली चोर नाउ कैसेहु सुत फेरो ॥ ९ ॥ राग कान्हरो ॥ मोहि कहति युवती सब चोर खेलत कहूं रहो मैं बाहर चितै रहत रवै मेरी ओर ॥ बोलि

लेत भीतर घर अपने मुख चूंवति भरि लेत अंकोर । मांखन हेरि देत अपने कर कछु कहि कें विधि करत निहोर ॥ जहां मोहि देखति तहां टेरति मैं नहि जात दुहाइ तोर ॥ सूर श्याम हंसि कंठ लगायो वे तरुणी कहां बालक मोर ॥ १० ॥ राग कान्हरो ॥ बोलि लेहु हल घर भैया के । मेरेहि आंगन खेल करो कछु नयननि सुख दीजै मैया के ॥ मैं मूंदो हरि आंखि तुम्हारी बालक रहैं लुकाई । हरषि श्याम सब सखा बुलाये खेलहिं आँखिमुंदाई ॥ हल धर कह्यो आंखि को मूंदै हरि कह्यो मूंदै मात जशोदा ॥ सूर श्याम को जननि खिलावति हरष सहित मन मोदा ॥ ११ ॥ राग कान्हरो ॥ हरि अपनी तब कांखि मुंदाई । सखा सहित बलराम छुपाने जहं तहं गये भगाई ॥ कान लागि क ह्यो जननि जशोदा वा घर मं बलराम । बलदाऊ को आवन दैंहों श्रीदामा सों काम ॥ दौरि दौरि बालक सब आवत छुवत महरि को गात ॥ सब आये रहे सुबल सुदामा हारे अबके तात ॥ भोर परि हरि सुबलहि धायो गह्यो श्री दामा जाय । दै दैं सोंह नंद बाबा को जननी यें लै आय ॥ हंसि हंसि तारी देत सखा सब भये श्री दामा चोर । सूर दास हंसि कहति जशोदा जीत्यो है सुत मोर ॥ १२ ॥ रांग केदारो ॥ चलो लाल कछु करो बियारी । रुचि नाही काहू पर मेरी तू कहि भोजन करत्री कहारी ॥ बेसन मिलै सरस में दासों अति कौमल पूरी है भारी । जेंवहु श्याम मोहि सुख दीजै तात करी तुम लिये बियारी ॥ निबुआ सूरन आंब अथानों और करोंदनि की रुचि न्यारी । बारबार तू कहति जशोदा कहि ल्यावै रोहिनि महतारी ॥ जननी सुनत तुरत लै आई तनक तनक धरि कंचन थारो । सूर श्याम कछु कछु लै खायो जल अंचयो अरु बदन पखारी ॥ १३ ॥ राग केदारो ॥ पौढ़िये लाल में रचि सेज बिछाई । अति उज्जल है सेज तुम्हारी सोवत अति सुख दाई ॥ खेलत तुमहि निशि अधिक गई है नयननि नींदहमाई । बदन जम्हात अंग ऐंड़ात जननि पलोटति पाई ॥ मधुरे सुर गावति केदारो सुनत श्याम चित लाई । सूर दास प्रभु नंद सुवन कों नींद गई तब आई ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ जागिये गोपाल लाल ग्वाल द्वार ठाढे । रैनि अंधकार गयो चन्द्रमा मलोन भयो तारे गण देखियत नहीं तरनि किरनि चाढे ॥ मुकुलित भये कमल जाल गुंज करत भृंगमाल प्रफुलित वन पुहुप जाल कुमुदिनि कुम्हानी । गन्धर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप बदत बिप्र वेदबानी । बोलत नन्द बार बार मुख देखै तुव कुमार गायन भइ बड़ी बार वृन्दावन जैबे । जननी कहति उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूर दास प्रभु कृपा तुमकों कछु खैबे ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ कौन परी नंदलाहि बानि । प्रात समय जागन की बिरयां सोवत है पीतांबर तानि ॥ मात जशोदा कबकी ठाढी दधि औदन भोजन घृत सानि । उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुन्दर बदन दिखावहु आनि ॥ संग सखा सब हारे ठाढे मधुबन धेनु चरावन जानी ॥ सूर श्याम अतिही अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मानि ॥ १६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ अथसूरसागर अघासुर बध रागकल्पद्रुम ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

॥ राग बिलावल ॥ नंद सुत जाडिले हों सब ब्रज जीवन प्रान । बार बार माता कहे हो जागहु श्याम सुजान ॥ ध्रुव ॥ जशुमति लेति बलाइ भोर भयो उठो कन्हाई । संग लिये सब सखा द्वार ठाडे बल भाई ॥ सुंदर वदन दिखाइये हरो नैन के ताप । नयन कमल मुख धोइये कछु करो कलेऊ आप ॥ माँखन रोटी लेहों सद दधि रैन जमायो । षटरस के मिष्टांन सोइ जेंवहु रुचि आयो ॥ मो पै लीजै मागि कें जोइ जोइ भावै तोहि । संग जेवहु बलराम तुम हो रुचि उप जावहु मोहि ॥ तब हंसि चितये श्याम सेज तें बदन उघारयो । मानहु पय निधि मथत फेन फटि चंद उजारयो ॥ सखा सुनत देखन चले मानहुं नयन चकोर । जुगल कमल जनु इंदु पर हो बैठि रहे अति भोर ॥ तब उठि आये कान्ह मातजल बदन पखारयो । बोलि उठे बलराम श्याम कत उठ्यो सबारयो ॥ दाऊ जू कहि हंसि मिले बाह गही बैठाय । माखन रोटी सद दह्यो हो जेंवत रुचि उपजाय ॥ जल अंचयो मुख धोय उठे बल मोहन भाई । गाय लई सब घेरि चले बन कुंवर कन्हाई ॥ टेर सुनत बलराम की आये बालक धाय । लै आये सब जोरि कें हो घर तें बछरा गाय ॥ सखनि कान्ह सो कही आजु वृंदावन जैये । जमुना तट तृण बहुत सुरभि गण तहां चरैये ॥ ग्वाल गाय सब लै गये वृन्दावन समुहाय । अतिहि सघन बन देखिके हो हरषि उठे सब गाय ॥ कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत । कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत ॥ अंतरजामी कहत जियहि मोहि सिखावत टेरि । कान्ह कहत अबके गई हों पुनि धौलो जेा फेरि ॥ कोउ मुरली कोउ बेणु शब्द शृंगी कोउ पूरे । कृष्ण कियो मन ध्यान असुर एक बस्यो अधूरे ॥ बाल बछरुबनि राखि हों एक बेर लै जाउं । कछुक जनाऊं अपन पोहों अबलों रह्यो सुभाउ ॥ असुर कुलहि संहारि धरनि को भार उतारौ । कपट रूप रचि रह्यो दनुज यहि तुरत पछारौ ॥ गिरि समान धरि अगम बन बैठ्यौ बदन पसारि । मुख भीतर बन घन नदी हो माया छल करि भारि ॥ पैठि गये मुख ग्वाल धेनु बछरा सब लीये । देखि माया बन

भूमि रहे तृण द्रुम कृषि कीये ॥ कहन लगे सब आपुस में सुरभी चरे अघाय । मानहु पर्वत कंदरा हो मुख गये समाय ॥ सब मुख गये समाय असुर तब चोंच सकोरयौ । अंधकार इमि भयो मानो निशि बादर जोरयौ ॥ अतिहि उठे अकुलाय के ग्वाल बछ सब गाय । चाहि चाहि कहि कहि उठे हो परे कहां सब आय ॥ धीर धीर कहि कान्ह असुर यह कंदर नाही । अन जानत सब परे अघामुख भीतर माही ॥ जिय त्याग्यौ यह सुनतहीं अब को सके उबारि । बातें दूनो देह धरी तब असुर न सक्यो संभारि ॥ शब्द कर्यौ आघात अघासुर टेरि पुकारयौ । रह्यौ अधर दोउ चापि बुद्धि बल सुरति पसारयौ ॥ ब्रह्म द्वार सिर फोरि के निकसे गोकुल राय । बाहिर आवहु निकसि के हो मैं करि लियो सहाय ॥ बालक बछरा धेनु सबै अति मनहि सकाने । अंधकार मिटि गयो देखि जहां तहां अतुराने ॥ आये बाहिर निकसि के मन सब किये हुलास । हम अज्ञान कत डरत हैं हो कान्ह धनि नंद धन्य जशुमति महतारी । धन्य लयो अवतार कूखि धनि जिहि दई तारी ॥ गिरि समान तनु अति अगम पन्नग की अनुहारि । हम देखत पलएक में हो मारयौ दनुज प्रचारि ॥ हरि हंसि बोले बैन संग जो तुम नहि होते। तुम सब कियो सहाय भयो तब कारज मोते ॥ हमहु तुमहु मिलि बैठि के बन भोगि करें सब जाय । बंसीबट भोजन बहुत हो जशुमति दयो पठाय ॥ ग्वाल परमसुख पाय कोटि मुख करत प्रसंसा । कहा बहुत जो भये सपूत एकुई बंसा ॥ चढि बिमान सुर देखही गगन रहे भरि छाय । जै जै धुनि नभ करत हैं हो हरषि पुहुप बरषाय ॥ ब्रह्म सुनी यह बात अमर घर घरनि कहानी । गोकुल लीनो जन्म कौन यह मैं नहिं जानो ॥ देखौं इनको खोज लै सोच परयौ मन माहि । सूर श्याम ग्वालनि लिये चले बंसी बट की छांहि ॥ १ ॥ * * * * * * * * * * * * * * * *

॥ अथसूरसागर बत्सहरण रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ ब्रह्ममोहन लीला ॥ * ॥

॥ राग बिलावल ॥ हरष भये नंदलाल बैठि तरुछांह की ॥ ध्रुव ॥ बंसी बट अति सुखद और द्रुम पास चहूं हैं । सखा लये तहां गये धेनु बन चरत कहूं हैं ॥ बैठि गये सुख पाय के ग्वाल बाल लये साथ । कांवरि झोरी लये सखा हो आन नवायो माथ ॥ आनंद दये मधु छाक तुरत वृंदाबन आये । बिंजन सहस प्रकार जशोदा बने पठाये ॥ श्याम कह्यौ बन चलत हौं मातां सों समुझाय । उत तें वे आये सबै हो देखतहीं सुख पाय

कान्ह देखि मधुछाक पुलक अंग अंग बढायेा । हरि हंसि बोलत बैन प्रेम जननी पहुं-चायेा ॥ नीके पहुंचे आय तुम भलेा बन्यो संयेाग । बार बार कहि सखनि सेां हेा आजु करें सुख भेाग ॥ बन भेाजी बिधि करत कमल के पात मंगाये । तेारे पान पलास सरस देाना बहुलाये ॥ भांति भांति भेाजन धरे दधि लवनी मिष्टान । बनफर लये मंगायकें हेा लागे रुचि करि खान ॥ बन भेाजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा । श्याम कंवर प्रसेन महर सुत अरु श्री दामा ॥ कान्ह सबनि मिलि खात है लै लै कौर छिड़ाय । औरनि देत बुलाय के हेा डइकि आपु मुख नाय ॥ ब्रह्मा देखि बिचारि सृष्टि को उनइ चलाई । मेाहि पठयेा जेहि सेांपि ताहि कहकै हेा जाई ॥ देखेां धेां यह कौन है बाल बच्छ हरि लेउं । ब्रह्मलेाक लै जांउगेा हेा यहि बुधि करि दुख देउं ॥ अन्तर्यामी नाथ तुरत बिधि मनकी जानी । बालक है दिये पठे धेनु बन कहां हिरानी ॥ जहां तहां बन ढूंढि के फिरि आये हरि पास । सखा सबनि बैठारि के हेा आपुन गये उदास ॥ हरि लै बालक बछ ब्रह्मलेाकहि पहुंचायेा । फिरि आवै जेा कान कहूं केा उनहिं बतायेा ॥ जान्योंयह मनमें तबै बिधि लै गयेा हराय । प्रभु तबहीं तेहिरंग रूपके हेा बालक बच्छ बनाय ॥ तातें कीने औरब्रह्महदि नाल उपायेा । अपनेां करि तेहि जानि कियेा ताकेा मन भायेा । उच्चाटन मारन समर्थ मन हरि कीन्हेां ज्ञान । अनजानें बिधि यह करीहेा नयेरचे भगवान । उहे बुद्धि उहे प्रकृति उहे पौरुषतन सबके । वहे नाम वहे भेषधेनु बछरा मिलि रबके । श्याम कहे सब सखनि केा ल्यावहु गेाधन फेरि । संध्या केा आगम भयेा हेा ब्रज तन हांकेा घेरि । सुनत ग्वाल लै धेनु चले ब्रज वृन्दा बनतें । कान्हहिं बालक जानि डरे सब ग्वालहिं मनतें । मध्य कियें लै श्यामकेा सखा भये चहुं पास । बच्छ धेनु आगें दिये हेा आवत करत बिलास ॥ बाजत वेणु बिषान सबै अपने रंग गावत । मुरली धुनि गेारंभि चलत पग धूरि उड़ावत । मेार मुकुट सिर सेाहई मनहु चंदकन शेात ॥ आस पास नांचत सखा हेा बिच हरि गावत गीत । देखि हरषि ब्रज नारि श्याम परतन मन वारति ॥ एक टक रूप निहारि रही मेटति चित आरति । कहा कहें छवि आजुकी मुख मंडित खुर धूरि ॥ मानहु पूरन चंद्रमा हो कुहू रह्यो आपूरि । गेाकुल पहुंचे जाय गाय बालक अपने घर ॥ गेासुत अरु नर नारि मिली अति हीं करि आदर । प्रेम सहित बे मिलत हैं जे उपजाये आजु ॥ जशुमति मिलि सुतसेां कहति हेरैनि करत किहिं काजु । मैं घर आवन कह्यो सखा संग केाउ नहि आवै ॥ देखत बन अति अगम डरावैं मेाहि डरपावै । बार बार उर लायके लै बलाय पछिताय ॥ काल्हिहुतें बेई सबे हो ल्यावहिं गाय चराय । यह सुनिके हरि हंसे काल्हि मेरी जाय बलैया ॥ भूख लगी मेाहि बहुत तुरतहीं दे कछु मैया । मांखन दीनेां हाथ पै यह तब लेां तुम खाहु ॥ तातेा जल है धामकेा हेा तनक तेलसेां न्हाहु । तब जशुमति गहि बांह वहीं हरि लै अन्हवाये ॥ रेाहिनि करि जेवनारि श्याम बलराम बुलाये । जेंवत अति रुचि पावहीं परुसति माता हेतु ॥ जेंय उठे अचवन लियेा हेा दुहुं कर बीरा देतु । श्याम उनीदे देखि मात रचि सेज बिछायेा ॥ तापर पौढे लाल अतिहि मन

हरष बढायो । अघमर्दन विधि गर्व हरत करत न लागी बार ॥ सूर दास प्रभु चरित कोंपावत कोऊ नपार ॥ २ ॥ राग नट ॥ विधि मनहीं मन सोच परयो । गोकुलकी रचना सब देखत अति जिय माहिं डरयो ॥ मैं विरंचि विरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व बढायो । ब्रज नर नारि ग्वाल बालक कहि कौने ठाठ रचायो ॥ वृन्दा बन बट सघन तरुवर तर मोहन सबै बुलायो । सखा संग मिलि करत बन भोगि विधिसन भर्म उपायो ॥ यातें श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठि धायो । बालक बच्छ हरे चतुरानन ब्रह्म लोक पहुं चायो ॥ यह बिचारि सब भये आपुही बयरंग प्रकृति करायो । सूर दास प्रभु गर्व बिनासन नव कृत फेरि बनायो ॥ ३ ॥ राग नट ॥ तब हरि हरयो विधिको गर्व । बच्छ बालक लै गयो धरि तुरत कीन्हों सर्व ॥ ब्रह्म लोक दुराय आयो चरित देखत आप । बच्छ बालक देखिके मन करत पश्चाताप । जब गयो विधि लोक अपने दृष्टि कै फिरि आय ॥ जानि जिय अवतार पूरन परयो पायनि धाय । बहुत मैं अपराध कीन्हों क्षमा कीजै नाथ । जानि यह मैं नहीं कीनी जोरि कर रह्यो माथ ॥ बच्छ बालक आनि सन्मुख शरण हरण पुकारि । सूर प्रभुके चरण गहि कह्यो निकट राखु मुरारि ॥ ४ ॥ राग गौरी ॥ कौन सुकृत इन ब्रज बासिन को । बदत बिरंचि विशेष ॥ श्री हरि जिनके हेत । प्रकटे मानुष बेष ॥ ध्रुव ॥ ज्योति रूप जगधाम जगत गुरु जगत पिता जगदीश । जोग जज्ञ जप तप व्रतदुर्ल्लभ सो हरि गोकुल ईश ॥ एक एक रोम बिराट कोटि सम अनंत कोटि ब्रह्मांड । ताहि उछंग लिये मात जशोदा अपने भरि भुज दंड ॥ जाके उदर लोक चौदह जल थल पंचतत्व चौखानि । सो बालक ह्वै झूलत पलना जशुमति भवनहिं आनि । क्षिति मिति विपद करी करुणा मय बलि छलि दयो पतार ॥ देहरी उलंघि सकत नहि सो प्रभु खेलत नंद दुवार । अनुदिन सुर तरुपंच सुधा रस चिंतामणि सुर धेनु ॥ सो तजि जशुमति को पय पीवत भक्तन को सुख देनु । रवि शशि कोटि कल्प अवलोकत विविध तापछै जाय ॥ सो अंजन कर लै सुत कहि कछु आंजति जशुमति माय । दाता भोक्ता करता हरता विश्वम्भर जग जानि ॥ ताहि लाय मांखन की चोरी बांधे जशुमति रानि । वेद वेदांत उप निषद षटरस अर्पत भुगते नाहिं ॥ सो हरि ग्वाल बाल मंडल में हंसि हंसि जूठनि खाहिं । कमला नायक त्रिभुवन दायक सुख दुख जिनके हाथ ॥ कांध कमरिया हाथ लकुटिया विहरत बछरा साथ । बकी बकासुर शकट तृणावर्त्त अघ धेनुक हय भास ॥ कंस केशीको यह गति दीनी राखे चरण निवास । भक्त बछल हरि अंतर जामी रहे सकल भर पूर ॥ मारग रोकि रह्यो हारे परि पतित सिरोमनि सूर ॥ ५ ॥ राग गोंडमलार ॥ अचरज एक देखो रे भाई ॥ निर्गुण ब्रह्म सगुन ह्वै जाई । आदि सनातन हरि अबिनासी ॥ सदा निरंतर घटघट बासी । पूरन ब्रह्म पुरान बखान्यों ॥ चतुरानन मैं अंत न जान्यों । गुणगण अगम निगम नहि पावै ॥ ताहि जसोदा गोद खिलावै ॥ एक निरंतर ध्यावे ध्यानी । पुरुष पुरातन हैं निर्बानी ॥ जप तप संयम ध्यान न आवै । सोई नंदके आंगन धावै ॥ लोचन श्रवण रसना नासा । नापद पानिनतलुपर गासा ॥ विश्वभरण

निज नाम कहावैं । घरघर गोरस जाय चुरावैं ॥ शुकसारद सो करहिं बिचार । नारद से पावहिं नहि पार ॥ अबरन बरन सुरति नहि धारै । सो गोपिन कै बदन निहारै ॥ जरा मरणतें रहे अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ ज्ञान रूप हिरदै में बोले । सो बछरुन के पाछे डोलै ॥ धरजल अग्नि अनल नभछाया । पंचतत्व मिलि जगत उपाया ॥ काल डरै जाके डर भारी । सो ऊखल बांधो महतारी ॥ माया प्रकट सकल जग मोहै । कारन करन करै सो सो है ॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावै । सो गोकुल में गाय चरावै ॥ अद्वैत रहै सदा जल साई । परमानंद परम सुख दाई ॥ लोक रचै राखै प्रतिपारै । सो ग्वालिनि संग लीला धारै ॥ गुणातीत अबिगति न जनावै । जस अपार श्रुति पार न पावै ॥ जाकी महिमा कहत न आवै । सो गोपिनि निशि बासर भावै ॥ जाकी महिमा लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे बपु दोई ॥ चौदह भुवन पलक में टारै । सो बनबीथिन कुटी संवारै ॥ चरण कमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक नयन भरि जोवै । अगम अगोचर लीला धारी ॥ सो राधा बस कुंज बिहारी ॥ भाग बड़े जु सकल ब्रजबासी । जिनके संग रमें अबिनासी ॥ सूर सुजस कहि कहा बखानै । गोबिन्द की गति गोबिन्द जानै ॥ ई ॥ राग बिलावल ॥ ब्रजकी लीला देखि गर्ब बिधि को गयो ॥ ध्रुव ॥ त्रिभुवन नायक आनि भये गोकुल औतारी । खेलत ग्वालिनि संग रंग आनन्द मुरारी ॥ घर घर तें छाके चली मान सरोवर तीर । नन्द नन्दन के संग चले हो बालक सखा अहीर ॥ व्यञ्जन सकल मंगाय सखनि के आगे राख्यौ । खाटे मीठे खाद सबै रस लैलै चाख्यौ । रुचिसों जेंवत ग्वाल सब लै लै आपुन खात । भोजन को सब खाद लेहो कहत परस्पर बात ॥ देखत गण गन्धर्ब सकल सुर पुर के बासी । आपुसमें वै कहत हंसत एई अबिनासी ॥ देखि सबै अचिरज भये कह्यो ब्रह्मासों जाय । जाको अबिनासी कहैं हो सो ग्वालनि संग खाय ॥ यहि सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृन्दावन आयो । देखि सरोवर सलिल कमल तेहि मध्य सुहायो ॥ परम सुभग जमुना बहै तहां बहै त्रिबिध समीर । पुहुपलता द्रुम देखिके हो थकित भयो मति धीर ॥ अति रमणीक कदम्ब छांह रुचि परम सुहाई । राजत मोहन मध्य अवलि बालक छबि पाई प्रेम मगन ह्वै परस्पर भोजन करत गोपाल । लावहु गोसुत हेरिके हो प्रभु पठये ह्वै ग्वाल ॥ वन उपवन सब ढूंढि सखा हेरि फिरि आये । बछरा भये अदृष्ट केहु खोजत नहिं पाये ॥ सबै सखा बैठे रहो मैं देखों धों जाय । बच्छ हरन हरि जानि जिय हो आप गये बहराय ॥ जब गोबिन्द गये दूरि बालकनि हरयो बिधाता । लैहैं तुरत मंगाय आपुके जैहौं ताता ॥ ब्रह्मलोक बच्छा गयो लै बालक बछरा संग । प्रभु की लीला गनी नहीं बिधि कियो गर्ब अति अंग ॥ तब चिन्ता मणि चितै चित्त एक बुद्धि बिचारी । बालक बच्छ बनाय रचे वही अनुहारी ॥ करत कुलाहल सब गये दृजघर अपने धाय । अति आदर करि करि लिये हो अपनी अपनी माय ॥ ब्रह्मा कियो बिचार जाय निज गोकुल देखो । करिहैं सोक सन्ताप नाथ पितु मातहि पेखो ॥ आये तहां बिधिना चले घर घर देख्यो आय । संध्या सबै होत कौतूहल जहां तहां दुहि गाय ॥ कि यह गोकुल और

किधों मैंहीं भ्रम भूल्यो । यह अविनासी होंहि ज्ञान मेरो भ्रम भूल्यो ॥ अन्तर जामी जानि धों हरे बच्छ ले आय । जगत पिता मह सं भ्रम्यों हो गये लोक फिरि धाय ॥ देख्यो जाय जगाय बाल गोसुत जहां राख्यो । विधि मन चक्रत भयो बहुरि दूजको अभि लाख्यो ॥ छिनु भूतल छिनु लोकमें छिनु आवै छिनु जाय । ऐसेंहि करत बरष दिनबीते थकित भये विधि पाय ॥ तब जान्यों हरि प्रकट ज्ञान चित मैं जब आयो । धिग धिग मेरी बुद्धि कृष्णसों बैर बढ़ायो ॥ लै गोसुत गोपाल शिशु शरण गयो ह्वै साध । चारिउ मुख अस्तुति करे प्रभु क्षमो मोहि अपराध ॥ अब जानतहों करो तुमहिसों मैं बरि आई । ए मेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवन के राई ॥ ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति संभारि । शरण गये राखत सदाहो औगुण सकल बिसारि ॥ ज्यों खद्योत उडि जाय ताहि क्यों तिमिर न सावै । दीपक बहुत प्रकाश तरनि सम क्यों कहि आवै ॥ मैं ब्रह्मा एक लोक को ज्यों गलरि फल जीव । प्रभु तुम्हरे यक रोंम प्रति हो कोटि ब्रह्मा अरु जीव ॥ मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया । मिथ्या है यह देह कहो क्यों हरि बिसराया ॥ तुम बिनु जानै जीव सब उतपति प्रलय समाहिं । शरण मोहि प्रभु राखिये हो चरण कमल की छाहिं ॥ कीजै मोहिब्रज रेणु देहु वृंदाबन बासा । मागौं यहै प्रशाद और नाहीं मेरे आसा ॥ जोई भावै सो करौ लता सलिल द्रुम ग्रेह । ग्वाल बाल को भृत्य करौ हो मनहिं सत्य व्रत जेह ॥ जो दरशन नर नाग अमर सुरपतिहु न पायो । खोज त जुग गये बोति अंत मोहून दिखायो ॥ यह ब्रज पारस नित्यहै मैं अब समुझी आय । वृंदाबन रज ह्वै रहौं मोहि ब्रह्मलोक नसुहाय ॥ मांगत बार बार शेष ग्वालनि को पाऊं । आजु लियो कछु जानि भक्ष करि उदर पुराऊं ॥ अब मैं रैनि जुध्यान यहै रहो जूठ नित खाय । और बिधाता कीजिये हो मैं नहिं छाड़ों पाय ॥ तब बोले प्रभु आप वचन मेरो अब मानो । और काहि विधि करों तुमहिंतें कौन सयानो ॥ तुम ज्ञाता कर्म धर्म के तुमते सब संसार । मेरी माया अति अगम बोहि कोऊ न पावै पार ॥ श्री मुखबानी कहत बिलंब अब नेंकु न लावहु । ब्रज परिकर्मा करहु देहके पाप नसावहु ॥ तुरत जाहु वहि लोक को विधि कोनी मनुहारि । ब्रह्मा करि अस्तुति चले हो हरि दीन्हो उर हारि ॥ धनि बछरा धनि बाल जिनहि तें दरशन पाये । उरमेरो भयो धन्य कृष्ण माला पहिराये ॥ धनि जशुमति जिन बसि किये अविनासी अवतारि । धनि गोपी जिनके सदन हो मांखन खात मुरारि ॥ मथुरा आदि अनादि देह धरि आपन आये । धनि देवै बसुदेव पुचमांगे तुम पाये ॥ चारि बदन मैं कहा कहौं तुम्हरी महिमा गाई । सहसानन निशि दिन रटे हो तऊन गाई जाई ॥ गाय चरावत ग्वालनु संग करत जेहि ध्यान लगायो । ते ब्रजबासिन संग रहत अति प्रेम बढायो ॥ वृन्दाबन ब्रजको महत कापें बरन्यों जाय । चतुरानन पद परसिके हो गयो लोक सुख पाय ॥ हरि लीन्हों अवतार पार सारद नहिं पावै । सतगुरु कृपा प्रताप कछुक तातें कहि आवै ॥ सूरदास कैसें कहे महा पतित अवतार । शेष सहश्र मुख जपत सदा हो सोऊ न पावत पार ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ माधो जू जो जनसों बिगरै । सुनि कृपाल

करुणा मय कबहूं प्रभु नहि चित्त धरै ॥ जो शिशु जननी जेठर अंतर गत शत अपराध करै । तऊ तनय तनु तोषि पोषि चित विगसित अंक भरै ॥ द्विज रसनादलि दुखित हेान तब तो रिसकाहि करै । क्षमि छत छोभ खीर मधु मिश्रित मुख समीप संचरै ॥ यदपि विटप जरह तन हेतु करि कर कुठार पकरै । तदपि सुभाव सुशील सुशीतल रिपु तन ताप हरै ॥ धर विध्वंसि हल हतत कृषी करि वैर बीज सचरै । सेासनमुख सुख सहित सतोगुण शशि बहु फरनि फरै ॥ कारन करन अंत अजित कहि कहि बिधि चरण परै । यह कलि काल चलत नहि मोपें सूर शरणहि धरै ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ माधेा मोहि दीजै वृन्दाबन की रेनु । जिन चरणनि डोलत नंद नन्दन दिन प्रति चारत फिरत धेनु ॥ कहा भयेा यह देव देह धरि अरु ऊंचेा पद पायेा ऐन । सब जीवनि लै उदर मांझ प्रभु महा प्रलय जल करत सैन । इमतें धन्य सदा ऐ तृण द्रुम बालक बच्छ बिषान बेन । सूर श्याम जिनके संग डोलत हंसि बोलत मथि एवत फेंन ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ ऐसे बसिये ब्रजकी बीथनि । साधुनि के पनवारे चुनि चुनि उदरजु भरिये सीथनि । पैडैं के सब वृक्ष बिराजत छाया परम पुनीतनि ॥ कुंजकुंज प्रति खोटि खोटि रति रज लागे रंग रीतनि । निशि दिन निरखि जशेादा नंदन अरु जमुना जल पीतनि ॥ परसत सूर हेात तन पावन दरशन करत अनीतनि ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ धन्य यह वृंदाबन की रेनु । नंद किशेार चराई गैयां मुखहि बजायेा बेनु ॥ मदन मोहन को ध्यान धरे जेा अति सुख पावत चेनु । चलत कहां मन बसिनपुरी तन जहां लेनु नहि देनु ॥ यहां रह्यो जहां जूठनि पावहु ब्रजबासो के ऐनु ॥ सूरदास ह्यां की सरबरि नहिं कलप वृक्ष सुर धेनु ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ आजु जशेादा जाय कन्हैया महादुष्ट एक मारयौ । पन्नग रूप मिले शिशु गेासुत यहि सब साथ उबारयौ ॥ गिरिकंदरा समान भयेा वड़ बड़ो अघ बदन पसारयौ । निदरि गेापाल पैठि मुख भीतर खंड खंड करि डारयौ ॥ जाके बल हम गनत न काहू सकल भुवन तृण चारयौ । जीते सबे असुर हम आगे हरि कब ऊं नहि हारयौ ॥ बरष गये सब कहत महरिसों अबहि अघासुर मारयौ । सूर दास प्रभु की लीला को को भुलै न पारयौ ॥ १२ ॥ रागसेारठ ॥ गेाविंद चलत देखियत नीके ॥ मध्य गेापाल मंडली बिराजत कांधे धरि लियें छीके ॥ बछरा वृंद घेरि आगे करि जन जन शृंग बजाये । जनु बन कमल सरेावर तजिके मधुप उनींदे आये ॥ वृंदाबन प्रबेश अघ मारयौ बालक जशुमति तेरेा । सूरदास यह सुनत जशेादा चितै बदन सुत हेरेा ॥ १३ ॥ ॥ रागनट ॥ जशुमति सुनि सुनि चकृत भई । मैं बरजति बन जात कन्हैया कांधों करै दई ॥ कहं कहं उपरयौ मोहन नेक न तऊ डरात । आपु कही तनै सेां बातें सुनहु बनहु में घात ॥ मेरेा कह्यो सुने जेा श्रवणनि कहति जशेादा खीझति । सूर श्याम कह्यो मनहि मैं ते हेां यह कहि मन मन रीझति ॥ १४ ॥ राग नट ॥ हरिको लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिनहि में नाशों छिनही में उपजावे ॥ बालक बछ ब्रह्म हरि लै गयो ताकेां गर्व नसावे । ऐसेा पुरुषारथ सुनि जशुमति खीझति पुनि समुझावे ॥ शिव सनकादिक अंत न पावे भक्त बछल कहवावे । सूरदास प्रभु गेाकुल में सेा घर घर गाय चरावे ॥१५॥

॥ राग गौरी ॥ अघा मारि आये नंदलाल । ब्रज युवती सुनिके उठि धाईं घरघर कहत फिरत सब ग्वाल ॥ निरखत बदन चकृत भई सुंदरि मनहीं मन यह करि अनुमान ॥ कहति परस्पर सत्य बात यह कोन करे इनकी सरिआन ॥ येई हैं रति पति के मोहन येई है हमरे पति प्राण ॥ सूर श्याम जननी मन मोहन बार बार मांगत कछु खान ॥ ॥ १६ ॥ राग गौरी ॥ मांगि लेहु जो भावे प्यारे । बहुत भांति मेवा सब मेरे घट रस के प्रकार है न्यारे ॥ सबै जोरि राखति हित तुमरे मैं जानति तुव बानि । तुरत मथ्यो माखन दधि आछो खाहो दैउ को आनि ॥ मांखन दधि मोहि लागत प्यारो और न भावे मोहि । सूर जननि माखन दधि दीनो खात हंसत मुख जोहि ॥ १७ ॥ * ॥ *

॥ इति वत्सहरण मोहलीला संपूर्ण ॥

अथ सूरसागर राधा कृष्ण जू के

प्रथम मिलन लीला प्रारम्भ ॥

। अथ चकई भँराको खेल ।

॥ श्री गोपी जन वल्लभायनमः ॥

॥ राग विलावल ॥ दे मैया भंवरा चकडोरी । जाय लेऊं आरे पर राख्यो काल्हि मोलि लै राखो कोरी ॥ लै आये हंसि श्याम तुरतही देखि रहे रंग रंग बहु ठोरी । मैया विना और को ल्यावे बार बार हरि करत निहोरी ॥ बोलि लये सब सखा संग के खेलत कान्ह नन्दकी पोरी । तैसेई हरि तैसेई व्रज बालक कर भंवरा चकरिन की जोरी ॥ देखति जननि जशोदा यह सुख बिहंसति बार बार मुख मोरी । सूर दास प्रभु हंसि हंसि खेलत व्रज बनिता डारति तृण तोरी ॥ १ ॥ राग कान्हरो ॥ मेरे हियरे मांझ लागे मनमोहन लै गये मन चोरि । अबहीं यह मारग ह्वै निकसे छबि निरखत तृण तोरि ॥ मोर मुकुट श्रवणनि मणि कुण्डल उर बन माला पीत पिछोरि । दसन चमक अधरनि अरुनाई देखत परी ठगोरि ॥ व्रज लरिकन संग खेलत डोलत हाथ लये फिरत चक डोरि । सूर श्याम चितवत गये मोतन मगन भईरी तन मन लयो अजोरि ॥ २ ॥ राग टोडी ॥ तबतें मेरो ज्यो न रहि सकत । जित देखों तितहीं वह मूरति नयननि में नित लग्योई रहत ॥ ग्वाल बाल सब संग लये खेलत में करि भाव चलत । अरुझि परयो मेरो मन तबतें कर चटकत चकडोरी हलत ॥ अब मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरति होत तब मदन दहत । सूरश्याम मेरो चित हरि लीनों सकुच छांडि अब तोहिसों कहत ॥ ३ ॥ रागटोडो ॥ खेलत हरि निकसे व्रज खोरि । कटि काछनी पीताम्बर ओढें हाथ लिये भंवरा चकडोरि ॥ मोर मुकुट कुण्डल श्रवणनि बर दसन दमक दामिनि छबि थोरि । गये श्याम रवि तनया के तट अंग लसत चन्दन की खोरि ॥ औचकही देखी तहं राधा नयन बिशाल भाल दिये रोरि । नील बसन परिया कटि पहिरे बेनी पीठि रुरति झकझोरि ॥ संग लरिकिनी चली इत आवति दिन थोरी अति छबि तन गोरि । सूर श्याम देखतहीं रीझे नयननि मिलि सिरपरी

ठगोरि ॥ ४ ॥ राग टोडी ॥ बूझत श्याम कौनि तू गोरी । कहां रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूं ब्रज खोरी ॥ काहे कों हम ब्रज तन आवति खेलत रहति आपनी पोरी । सुनति रहति श्रवणनि नंद ढोटा करत रहत माखन दधि चोरी ॥ तुमरो कहा चोरि हम लैहैं खेलनि चलो संग मिलि जोरी । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातनि भुरै राधिका भोरी ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रथम सनेह दुहुंनि मन मान्यों । नयन नयन बातें सब कीनी गुप्त प्रीति किहु ता प्रगटान्यों ॥ खेलन कबहुं हमारे आवहु नंद सदन ब्रज गांव । द्वारे आय टेरि मोहि लीजो कान्हा है मो नांव ॥ जौ कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिये टेर । तुमहि सोंह वृषभान बबा की प्रात सांझ एक फेर ॥ सूधे निपट देखियत तुम कों तातें करियत साथ । सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हरि दोऊ मिलि गाय ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ सैननि में नागरि समुझाय । खरिक आवहु दोहनी लै यहो मिस छल लाय ॥ गायगनती करन जैहैं मोहिलै नंदराय । बोलि बचन प्रमान कीन्हों दुहुंन आतुर ताय ॥ कनक बरन सुढार सुंदरि सकुचि मुख मुसिकाय । श्याम प्यारी नयन राचे अति बिशाल चलाय ॥ गुप्त प्रीति न प्रकट कीनी हृदय दुहुंनि छिपाय । सूर प्रभु के बचन सुनि सुनि कुंवरि रही लजाय ॥ ७ ॥ राग सारङ्ग ॥ गई वृषभान सुता अपने घर । संग सखिनि सों कहति चली यह को जैहै खेलन इनके तर ॥ बड़ी बेर भई जमुना आये खोझति ह्वै है मैया । बचन कहति सुख हृदय प्रेम दुख मन हरि लियो कन्हैया ॥ माता कही कहाहीं प्यारी कहां अबेर लगाई । सूर दास तब कहति राधिका खरकि देखि हों आई ॥ ८ ॥ राग रामकली ॥ नागरि मन गई अरुझाय । अति बिरह तनभई व्याकुल धरन नेंकु सुहाय ॥ श्याम सुंदर मदन मोहन मोहनीसी लाय । चित्त चंचल कुंवर राधा खान पान भुलाय ॥ कबहुं बिहसति कबहुं बिलपति सकुचि रहति लजाय । मात पितु कों त्रास मानति भई चिन्ता बाय ॥ जननी सों दोहनी मांगत बेगि देरी माय । सूर प्रभु को खरिक मिलिहों गये मोहि बुलाय ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ मोहि दोहनी दै री मैया । खरिक मांझ अबहीं ह्वै आई अहिर दुहत अपनी सब गैया ॥ ग्वाल दुहत तब गाय हमारी अपनो दुहि जब लेत । घरिक मोहि लागै खरिकामें तू आवै जनि हेत ॥ सोचति चली कुंवरि घरही तें खरिक गई समुझाय । कब देखों वह मोहन मूरति जिन मन लियो चुराय ॥ देखे जाय तहां हरि नाहीं चक्रत भई सुकुमारि । कबहुं इत कबहुं उत डोलति लागी प्रीति खुमारि ॥ नंद लिये हरि आवत देखे तब पायो बिस्राम । सूरदास प्रभु अन्तर्यामी कीन्हों पूरन काम ॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ नंद गये खरिकहि हरिलीन्हें देखी तहां राधिका ठाढी श्याम बुलाय लई तेहि चीन्हें ॥ मरहि कह्यो खेलो तुम दोऊ दूरि कतहु जिनि जैहो । गनती करत ग्वाल गैयनि को मोहि नियर तुमरैहो ॥ सुनि बेटी वृषभान अहिर की कान्हहि लिये खिलाय । सूर श्याम को देखे रैहों मारै जनि कहुं गाय ॥ ११ ॥ राग नट ॥ नंद बबाकी बात सुनौ हरि । मोहि छांड़ि जौ कहूं जाउगे ल्याऊंगो तुमको धरि ॥ भली भई तुम्हें सोंपि गये मोहि जानत दैहों तुमकों । बांह तुम्हारी नेंकु न छांडूं मरहर खीझिहै मोकों ॥ मेरी बांह छोड़िदे राधा करत उपर फटघातें । सूरश्याम

नागर नागरि सों कहत प्रेम की बातें ॥ १२ ॥ रागनट ॥ बातनि लई राधे लाय । चलहु जैये विपिन वृन्दा कहत श्याम बुझाय ॥ जब जहां तन भेष धारों तहां तुमही पाय । नेक कहुं नहिं करो अन्तर निगम भेद न पाय ॥ तुम परसि तन तपति मेटो काम देह नंवाय ॥ चतुर नागरि हंसि रही सुनि चन्द्र बदन नवाय । मदन मोहन भाव जान्यों गन न मेव छवाय ॥ श्याम श्यामा गुप्त लीला सूर क्यों कहे गाय ॥ १३ ॥ राग मलार ॥ गगन गरज घहराय जुरी घटा कारी । पवन टूक झोर चपला चमकि चहुं ओर सुवन तन चितै नंद डरत भारी ॥ कह्यो वृषभान की कुंवरि सों बोलि के राधिका कान्ह घर लिये जारी । दोऊ गृह जाउ संग गगन भयो श्याम रंग कुंवर कर कर गह्यो वृषभान वारी ॥ गये बन घन ओर नवल नंद किशोर नवल राधा नवल कुञ्ज भारी । अंग पुलकित भये मदन तन में गये सूर प्रभु श्याम श्यामा विहारी ॥ १४ ॥ राग कामोद ॥ नयो नेह नयो गेह नयो रस नवल कुंवर वृषभान किशोरी । नयो पीताम्बर नई चूंनरी नई नई बूंदनि भीजति गोरी ॥ नये कुंज अति गुंज नये द्रुम सुभग जमुन जल पवन हिलोरी । सूर दास प्रभु नव रस विलसत नवल राधिका जोवन भोरी ॥ १५ ॥ रागनट ॥ नवल गोपाल नवल राधिका नवल प्रेम रसपागे । अन्तर बन बन विहार दोउ क्रीड़त आपु आपु अनुरागे ॥ शोभित सिथिल बसन मन मोहन सुखवत श्रम के वागे । मानहु बुझी मदन की ज्वाला बहुरि प्रजारन लागे ॥ कबहुंक बैठि अंस भुज धरि कें पीक कपोलनि पागे । अति रस रासि लुटावत लूटत लालच लाल सुभागे ॥ मानहु सूर कल्प द्रुम की सखि लै उतरी फल आगे । नहि खूटति रति रुचिर भामिनी ता सुख में दोऊ खागे ॥ १६ ॥ ॥ राग मलार ॥ उतारत है कंठहि तें हार । हरि गर मिलत होत है अन्तर यह मन कियो विचार ॥ भुजा बाम पर कर छवि लागत उपमा अन्त न पार । मनहुं कमल दल कमल मध्य तें यह अद्भुत आकार ॥ चुंबन अंग परस्पर जनु जुग चन्द करत हितवार । रसन बसन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार ॥ गुण सागर निधि रस सागर निधि मानत सुख व्योहार । सूर श्याम मानों रस रमिके रीझे नंद कुमार ॥ १७ ॥ राग कान्हरो ॥ नवल किशोर नवल नागरिया । अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर श्याम भुजा अपने उर धरिया ॥ क्रीड़ा करत तमाल तरुण तर श्यामा श्याम उमगि रस भरिया । मिलि लपटाय रहे उर उर ज्यों मरकत मनि कंचन मनि जरिया ॥ उपमा काहि देउं को लायक मन मथ कोटि वारनें करिया । सूरदास बलि बलि जोरी पर नंद कुंवर वृषभान कुंवरिया ॥ १८ ॥ राग गौरी ॥ आजु नंद नंदन रंग भरे । विविध लोचन विशाल दोऊ के मनहों मन चित्त हरे ॥ भामिनि मिले परस सचु पाये मङ्गल प्रथम करे । करसों कर जकरयौ कंचन ज्यों अम्बुज उरज धरे ॥ आलिङ्गन दै अधर पान करि खंजन कंजलरे । हठ कर मान कियो भामिनि जब तब गहि पाय परे ॥ पुहुप मंजरी मुक्त माल अंग अंग अनुराग भरे । रचना सूर रची वृन्दावन आनंद काज करे ॥ १९ ॥ रागनट ॥ हरि हंसि भामिनि उर लाई । सुरत श्रम गोपाल रीझे जानि अति सुखदाई ॥ हरिष प्यारी अंग भरि भरि पियहि कंठ लाई । हाव भाव कटाक्ष लोचन कोक कला सुभाई ॥ देखि बाला

अतिहि कोमल मुख निरखि मुसुकाई । सूर प्रभु रति पति के नायक राधिका समुझाई ॥ ॥ २० ॥ * ॥ श्रीराधा नागरि घर गई ॥ * ॥ राग गौरी ॥ तुरत गये नंद सदन कन्हाई । अंकम दै राधा घर पठई बादर जहां तहां दये उड़ाई ॥ प्यारी की सारी आपुन लै पीतांबर राधा वोढ़ाई । ज्यों देख्यो जशुमति हरि ओढे मन यह कहति कहां धौं पाई ॥ जननी नेत तुरत लखि लीनों तबहि श्याम एक बुद्धि उपाई । सूरदास सुतसों जशुमति कहै पीरि ओढ़नियां कहां गंवाई ॥ २१ ॥ राग सारङ्ग ॥ पीत ओढ़नी कहां बिसारी । यहतो लाल ढिगनकी औरैहै काहूकी सारी । हों गोधन लै गयो जमना तट जहांऊती पनिहारी॥ भोर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली संभारी । हों लै भज्यो और काहूकी सो लै गई हमारी । सूरदास प्रभु भली बनाई बलि जशुमति महतारी ॥ २२ ॥ राग धनाश्री॥ मैयारी मैं जानत वाको । पीत ओढनिया जो मेरी लै गई लै आनो धरि ताको ॥ हरि की माया कोउन जानत आंखि धूरिसी दीनी । लाल ढिगनि की सारी ताको पीत ओढनी कीनी ॥ पीतांबर लै जननि देखावत लै आन्यो तेहि पास । सूर मनहि मन कहति जशोदा ननिक पढा वतिगास ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामहिं देखि महरि मुसिकानी । पीतांबर काकेघर बिसरयो काहूकी ढिग सारी आनी॥ ओढनी आनि दिखाई मोको तरुणिन की सिखई बुधि ठानी । घरलैलै मेरो सुत भोरवतिये ऐसी सब दिन की जानी ॥ हरि अंतरजामी रति नागर जानि लई जननी पहि चानी । सूरनिरखि मुख सकुचि भगाने एहिलीला की यहै सयानी ॥ २४ ॥ राग कल्यान ॥ सुन्दरि गई गृह समुहाय । दोहनी कर दूध लीने जननि टेरि बुलाय ॥ प्रेम प्रीत निचोल हरि को कहूं धरयो छिपाय । औरकी और कहति कछु मात मनहि डराय ॥ कुंवर को कहुं डीठि लागी निरखि के पछिताय । सूर तब वृषभान घरनी राधिका उरलाय ॥ २५ ॥ राग कान्हरो ॥ जननी कहति कहा भयो प्यारी । अबहीं खरिक गई तू नीके आवतही भई कौंन बियारी ॥ एक बिटिनियां संगहुती मेरे कारे खाई ताहि तहांरी । मोदेखत वह धरनि परी गिरि मैं डरपी अपने जिय भारी ॥ श्याम बरन एक ढोटा आयो यहनहि जानति रहत कहांरी । कहत सुन्यो नन्दको वह बारो कछु पढिके तुरतहि वहि झारी ॥ मेरो मन भरि गयो त्रास तें अबनीकों मोहि लागत भारी । सूरदास अति चतुर राधिका यह कहि समुझाई महतारी ॥ २६ राग गोंडमलार ॥ कुंवरिसों कहति वृषभान घरनि । नेक नहि घर रहति तोहि कित कहति रिसनि मोहि दहति बनभई हरनि ॥ खरिकनि सबनि घर तोसी नहीं कोउ निडर चलति नभ चितै नतकैं धरनि । बड़ी कर वर टरी सांप सों उबरी बातें कहत तोहि लगति जरनि ॥ लिखी मेटै कौंन करता जोन सोई है होन हारी करनि । सुता उरलाय तन निरखि पछिताय डरनि गई कुम्हि लाय सूर बरनि ॥ २७ ॥ राग गोंड ॥ महर वृषभान के यहै कुमारी । देव धामी करत द्वार द्वारें फिरत पुच है तीसरे यहै बारी ॥ भई बरस सातकी सुभ घरी जात की प्यारी दूध भात की बची भारी । कुंवरि दै अन्हवाय गई तन सुरझाय बसन पहिराय कछु कहति खारी ॥ जाइ जनि खरिक तन खेलि अपने सदन यह सुनत हंसति मन श्याम नारी ।

सूर प्रभु ध्यान धरि हरषि आनन्द भरि गांव घरखेलिहों कहति कारी ॥ २८ ॥ राग आसावरी ॥ खेलन के मिस कुंवरिराधिका नन्दमहरि के आई हो । सकुच सहित मधुरे करि बोली घरहो कुंवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि बानी निकसे अति अतुराई हो । मातासों कछु कलह करतरहे रिस डारयो बिसराई हो ॥ कैयारी तू इनको चीन्हति बारं बार बताई । जमुना तीर काल्हि मैं भूल्यों बांह पकरि लै आई हो ॥ अबतो इहां तोहि सकुचतिहै मैंदै सोंह बुलाई हो । सूर श्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ २९ ॥ राग आसावरी ॥ को जानें हरिकी चतुराई । नयन सैन संभाषन कीन्हो प्यारीको उर तपति मिटाई ॥ मनहीं मन दोउ रीझि मगन भए अति आनन्द उर मैंन समाई । कर पल्लव हरि भाव बतावत एक द्वैदेह बनाई ॥ जननी हृदय प्रेम उपजायो कहति कान्हसों लेहु बुलाई । सूर श्याम गहि बांह राधिका ल्याये महरि विहसि बैठाई ॥ ३० ॥ राग सूहो ॥ देखि महरि मनहीं जो सिहानी । बोलि लई बूझति नन्द रानी कुंवरि कहति कधुरे मधु बानी ॥ हजमें तोहि नहीं कछूं देखी कौन गांव है तेरो । भली करी कान्हहि गहि ल्याई भूल्यो तो सुत मेरो ॥ नयन विसाल वदन अति सुन्दर देखत नीकी छोटी । सूर महरि सविता को विनवति भली श्यामकी जोटी ॥ ३१ ॥ राग नट ॥ नाम कहा तेरोरी प्यारी । बेटी कौन महर की है तू कहि मोसों को तेरी महतारी । धन्य कोखि जेहि तोको राखी धन्य धरी जेहि तू अवतारी ॥ धन्य पिता माता धनि तेरी छबि निरखति हरिकी महतारी ॥ मैं बेटी वृषभान महरकी मैया तुमको जानति । जमुना तट बड़ बेर मिलन भयो तुम नांहिन पहि चानति ॥ ऐसी कहि बाको मैं जान्यों बहतो बड़ भरतारि । महर बड़ो लंगर सब दिनको हंसति देति सुखगारि ॥ राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमसों ढीठ्यो कीनो । ऐसे समरथ कब मैं देखे हंसि प्यारी उर लीनी ॥ महरि कुंवरिसों यह करि भाखति आउ करों तेरी चोटी । सूरदास हरषि नन्दरानी कहति महरि हम जोटी ॥ ३२ ॥ राग गौरी ॥ जशुमति राधा कुंवरि सवांरति । बड़े वार श्रीमन्त शीशके प्रेम सहित लैलै निरवारति ॥ मांग पारि बेनीहि संवारति गूंथी सुन्दर भांति । गोरे भाल बिन्द बन्दत मनो इंदु प्रांतरबिक्रांति ॥ सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाई । अंचलसों मुख पोंछि अंग सब आपुहि लै पहिराई ॥ तिल चांवरी बताशे मेवा दिये कुंवरि की गोद । सूर श्याम राधातन चितवत जशुमति मन मन मोद ॥ ॥ ३३ ॥ राग कल्यान ॥ खेलो जाय श्याम संग राधा । यह सुनि कुंवरि हरष मन राधा कीन्हों मिटि गई अन्तर बाधा ॥ जननी निरखि चकृत रही ठाढी दम्पति रूप अगाधा । देखति भाव दुहूंनि को सोई जो चितकरि अवराधा ॥ संग खेलत दोउ झगरन लागे सोभा बढ़ी उपाधा । मनऊ तडित घन इंदु तरनिहै बालक रत रस साधा ॥ निरखत विधि भ्रम भूलि परयो तब मन मन करत समाधा । सूरदास प्रभु और रच्यो विधि सोच भयो तन दाधा ॥ ३४ ॥ राग विहागरो ॥ विधिके आन विधिको सोच । निरखि तनु वृषभान तनया सकल सतक्रतु पोच ॥ रमा गौरी उर्वसी रति इन्द्र विभौ समेत । तुल्य दिन मनि कहा सारंग ऊपै मानहि देत ॥ चरन निरखि निहारि नख छवि अजित देख्यो तोकि ।

चित्त गुण महिमा न जानत धीर राखन रोकि ॥ सूर आनि विरंचि विरच्यो भक्ति निज अवतार । अबलके बल सबल देखि अधीन सकल शृंगार ॥ ३५ ॥ राग नट ॥ राधे महरिसों कहिचली । आनि खेलत रहो प्यारी श्याम तुम हिलि मिली ॥ बोलिउठे गोपाल राधा सकुचि जिय कत करति । मैं बुलाऊं नहीं आवति जननिको कत डरति ॥ मैया जशोदा देखिती कोकरति कितनो छोह । सुनत हरिकी बात प्यारी रहीमुखतन जोह ॥ हंसि चलीहृषभान तनया भई बहुत अबार । सूर प्रभु चिततें टरत नहि गई घरके द्वार ॥ ३६ ॥ राग बिहागरो ॥ बूझति जननी कहां हुती प्यारी । कोंन तेरे भाल तिलकु रचि दीन्हों किनकच गूंथि मांग सिर पारी ॥ खेलत रही नंदके आंगन जशुमति कह्यो कुंवरि ह्यां आरी । तिल चांवरि गोद दिख रावति फरियादई फारिनई सारी ॥ मेरो नाम बूझि बाबाको तेरो नाम बूझि दई हंसि गारी । मोतन चितै चितै ढोटा तन कहु सबिता तन गोद पसारी । यह सुनिसुनि हृषभान मुदित चित हंसि हंसि बूझत बात दुलारी ॥ सूर सुनत रस सिंधु बढ्यो अति दंपति मन मनयहै बिचारी ॥ ३७ ॥ राग बिहागरो ॥ मेरे आगे महरि जसोदा मैयारी तोहि गारी दीन्हीं । वाकी बात सबै मैं जानति वे जैसी मैं चीन्हीं ॥ तोकों कहि पुनि कह्यो बबाको बड़ो धूत हृषभान । मैं तब कह्यो ठग्यो कहु तुमकों हंसि लागी लपटान ॥ भली कही तूं मेरी बेटी लियो आपनो दाव । जो मोहि कह्यो सबे गुण उनके हंसि हंसि कहति सुभाव ॥ फेरि फेरि बूझति राधा सों सुनत हंसति सब नारि । सूर दास हृषभान घरनि जशुमति को गावति गारि ॥ ३८ ॥ राग गौरी ॥ कहत कान्ह जशुमति समुझाय । जहां तहां डारे रहति खिलौना राधा जिनि लै जाय चुराय ॥ सांझ संबारे आवन लागी चिते रहति मुरली तन आय । इनहीं में मेरे प्रान बसत हैं तेरे भाये नेक न माय ॥ राखि छिपाय कह्यो करि मेरो बलदाऊ को जिनि पतियाइ । सूर दास यह कहति जसोदा को लैहे मोहि लगै बलाय ॥ ३९ ॥ राग आसावरी ॥ मेरे लालके प्रेम खिलौना ऐसो को लै जैहेरी । नेक सुनन जो पैहों ताको सो कैसें ब्रज रैहैरी ॥ अजहूं राखु उठायरी मैया मांगे तें कहा दैहेरी । आवतहीं लै जैहे राधा पुनि पाछें पछितैहेरी ॥ बिनु देखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रकटैहैरी । सूर दास तब कहति जसोदा बहुरि श्याम बिरुझैहेरी ॥ ४० ॥ राग नट ॥ सैनति हरषि खिलौना हरिके । जानति टेव आपने सुतकी रोवत है पुनि खरिके ॥ धरि चौगान बेस मुरलीं धरि अरु भंवरा चाक कडोरि । प्रेम सहित लैलै धरि राखति ए सब मेरे कौरी ॥ श्रवननि सुनत अधिक रुचि लागति हरिकी बतियां भोरी । सूर श्यामको कहति जसोदा दूध पिवहु बलि तोरी ॥ ४१ ॥ राग आसावरी ॥ आजु सवारे धेनु दुही मैं वहै दूध मोहि प्यावैरी । सुनि मैया मैंतो पैपीयो मोहि अधिक रुचि आवैरी ॥ और धेनुको दूध नपीऊं जो करि कोटि बनावेरी । जननी कहति दूध धौरीको मोको मोह करावैरी ॥ तुमतें और कोन मोहि प्यारो बारंबार मनावैरी । सूर श्याम को पय धौरीको माताहो लै आवेरी ॥ ४२ ॥ राग गौरी ॥ आछो दूध पीवहु मेरे तात । तातों लगत बदन नहि परसत

फूलि देति हैं जशुदा मात ॥ औटि धर्‌यो अबहीं ही मोहन तुम्हरेही हेत बनाई । तुम पीवहु मैं नयननि देखों मेरे कुंवर कन्हाई ॥ दूध अकेली धौरीको यह तनको अति हित कारी । सूर श्याम पै पीवन लागे अति तातो दियो डारि ॥ ४३ ॥ राग बिलावल ॥ पय पीवत देखत बल राम । तातो लगत डारि तुम दीन्हों दावा नलहिं अंचवत नहि ताम ॥ कबहूं रहत मौन धरि जलमें कबहूं फिरत बंधावत दाम । कबहुं अघासुर बदन समानें कबहुं अंधारे जातन धाम ॥ कबहुं करत वसुधा सब चैपट कबहुं देहरी उलंघिन जाय ॥ षटदस सहस्र गोपिका बिलसत वृन्दावन निसि रासरमाय । यहैं जानि अवतार धरत व्रज सुर नर मुनि यह भेद नपाय । राजा छोरि बंदितें ल्याये तिहूं भुवन में बिदित बड़ाय ॥ एइ गोपी एइ ग्वाल यहै सुख यह लीला कहुं तजत नसाथ । जुगजुग व्रज अवतार लेत हरि अखिल ब्रह्मांड खंडके नाथ॥ यई ठांव यही वृन्दावन यह जमुना यह कुंज बिहार ॥ यहैं बिहार बिहरत नितही नित एई हैं जनके प्रति पार । एई हैं श्री पति बहु नायक एई हैं करता संसार ॥ रोंम रोंम प्रति अंड कोटि रवि मुख चूंमति जशुमति कई बार । यहैं कंस कईबेर संघार्‌यो ब्रह्म धर्‌यो कृष्णा अवतार ॥ मांखन खात चुराय घरतितें बहुत बार भये नंद कुमार । आदि अंत नहि कोऊ जानत हरता करता सबके सार ॥ सूर दास प्रभु बाल अवस्था तरुण एइको करें निवार ॥ ४४ ॥ राग केदारो ॥ बलि बलि चरित गोकुल राय । दावा नलको पान कीन्हों पिवत दूध सिराय ॥ पूतना हठि प्रान सोखे अफन उर लपटाय । कहत जननी दूध डारत खिझत कछु अन खाय । धर्‌यो गिरि बर दोहनी कर धरत बांह पिराय ॥ सकट भंजन प्रसत कुचजुग कठिन लागत पाय । तृणा बर्त्त अकास तेंपटक्यों सिला पर आय ॥ डरत ललन हिंडोल झूलत खरे देत झुलाय । बकासुर की चोंच फारी सखनि प्रकट दिखाय ॥ कीर पींजर गहत अंगुरी खाल लेत भजाय । बिना दीपक सदन सूनें कबहुं धरतन पाय ॥ अघा सुर मुख पैठि निकसे बाल बच्छ जिवाय । जमल अर्जुन तोरि तारे छूटे प्रेम बढ़ाय ॥ हठत तोरि पलास पल्लव देहु देत दिखाय । हरे विधि बच्छ बाल नव कृत हेत दौरी माय ॥ चरत धेनु न मिली तिनको आप दौरे धाय । लिख्यो काजर नागद्वारे श्याम देखि डराय ॥ नचत काली नाग फन फन सुहय ताल बजाय । घोष नारि समेत मोहन रच्यो रास बनाय ॥ व्याहकी जब कहत माता हंसत बदन दुराय । कहावरनैं कोटि रसना भली बुद्धि उपाय ॥ सूर बाल बिनोद बन कृत अंग अंग सुभाय ॥ ४५ ॥

अथसूरसागर गोवर्द्धन लीला रागकल्पद्रुम

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

रागबिलावल ॥ नंद महर सों कहति जसोदा सुरपति की पूजा बिसराई । जाकी कृपा बसत ब्रज भीतर जाकी दीन्ही भई बड़ाई ॥ जाकी कृपा अमैधन मेरे जाकी कृपा नवै निधि आई । जाकी कृपा दूध दधि पूरन सहस मथानी मथत सदाई ॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशल रहें बल राम कन्हाई । सूर नंद सों कहति जशोमति दिन आयो अब करो चंडाई ॥ १ ॥ राग गौरी ॥ ए हैं कुलदेव हमारे । काहूं नहीं और मैं जानति गोधन है ब्रजके रखवरे ॥ दीप मालिका के दिन पांचेक गोपनि कहो बुलाई । बलि सामग्री करहि चंडाई अबही कहौ सुनाई ॥ लई बुलाय महर महारानी सुनतहि आई धाईं । नंद घरनि तब कहति सखिनसों कतहो रही भुलाईं ॥ भूली कहा कहौ सो हमसों कहति कहा डरपाई । सूर दास सुरपति की पूजा तुम सबहिन बिसराई ॥ २ ॥ राग गौरी ॥ चौंकि परी सब गोकुल नारि । भली कही सबही सुधि भूली तुमही करी सुधारि ॥ कह्यो महरि सों करो चंडाई हम अपने घर जाति । तुमहूं करौ भोग सामिग्री कुल देवता अमाति ॥ जशुमति कह्यो अकेली हौं में तुमहु संग मोहि दीजौ। सूर हंसति ब्रजनारि महरि सों ऐहैं सांच पतीजौ ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ कहि मोहि भली कीन्ही महरि । राज काजहि रह्यो डोलत लोभही केलहरि ॥ क्षमा कीजै मोहि हो प्रभु तुमहि गयो भुलाय । ग्वालसों कहि तुरतपठयो ल्याउ महर बुलाय॥ नन्द कह्यो उप नंद ब्रज के अरु महर वृषभान । अबहिं जाय बुलाय ल्यावहिं करत दिन अनुमान ॥ आय गये दिन अबहि नेरे करत मन यह ज्ञान । सूर नन्द विनय करत कर जोरि सुरपति ध्यान ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ नन्द महरि उपनन्द बुलाये। बहु आदर करि बैठक दीन्ही महर महरि मिलि शीश नवाये ॥ मनहीं मन सब सोच करत हैं कंस नृपति कछु मांगि पठाये । राज अंस धन जो कछु उनको बिनु मांगे सो दै हम आये ॥ बूझत महर बात नन्द महरहि कौन काज हम सबनि बुलाये । सूर नन्द यह कहि गोपनिसों सुरपति पूजा के दिन आये ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ हंसत गोप कहि नन्द महरसों भली भई यह बात सुनाई । हमहिं सबनि तुम बोलि पठाये

अपने हिय सब गये डराई ॥ काहेको डरपौ हम बोलत हंसतव बात कहत नन्दराई । बड़ो संदेह कियो तुम हमको व्रजबासी हम तुम सब भाई ॥ करौ विचार इन्द्र पूजा को जो चाहो सो लेहु मंगाई । बरष द्योस को द्योस हमारो घर घर नेवज करहु चंडाई ॥ अन्न कूट बिधि करत लोग सब नेम सहित करि करि पकवान्ह । महरि बिनय कर जोरि इन्द्रसों सूर अमर करि दीजै कान्ह ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ गावत मंगलचार महर घर । जशुमति भोजन करत चंडाई नेवज करि करि धरत श्याम डर ॥ देखे रहो छुवे नकन्हैया कहा जाने वह देव काज पर । और नहीं कुलदेव हमारे कै गोधन कै सुरपति बर ॥ करत बिनै कर जोरि जशोदा कान्हहिं कृपा करो करुणा कर । और देव तुम सम कोउ नाहीं सूर करो सेवा चरणनि तर ॥ ७ ॥ राग सूहो ॥ बाजत नन्द अवास वधाई । बैठे खेलत हार आपने सात बरष के कुंवर कन्हाई ॥ बैठे नन्द सहित वृषभानहि और गोप बैठे सब आई । आपे देत घरनि के हारे गावति मंगल नारि बधाई ॥ पूजा करति इन्द्र की जान्यों आये श्याम तहां अतुराई । बार बार बूझत हरि नंदहि कौन देवकी करत पुजाई ॥ इन्द्र बड़े कुलदेव हमारे उनते सब यह होत बड़ाई । सूर श्याम तुम्हरे हित कारन यह पूजा मैं करत सदाई ॥ ८ ॥ रागआसावरी नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई । ऐसेमें तुम जाहु जिनि कहूं अहो महरि सुत लेहु बुलाई ॥ सोय रहो मेरे पलिका पर कहत महर हरिसों समुझाई । बरष द्योस को महा महोत्सव को आवै को कौन सुभाई ॥ और महरि ढिग श्याम बैठिके कीनों एक बिचार बनाई । सपनों आजु मिल्यो मोको येक बड़ो पुरुष अवतार जनाई ॥ कहन लग्यो मोसों येबातें पूजत हौ तुम काहि मनाई । गिरि गोवर्द्धन देवनि की मन सेवहु ताको भोग चढ़ाई ॥ भोजनि करै सबनि के आगे कहत श्याम यह मन उपजाई । सूरदास प्रभु गोपिन आगे यह लीला कहि प्रकट सुनाई ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई । सुरपति की पूजा को मेटत गोवर्द्धन की करत बड़ाई ॥ फैलि गई यह बात घरनि घर हरि कहा जाने देव पुजाई । हलधर कहत सुनहु व्रजबासी यह महिमा तुम काहु न पाई ॥ कोउ कोउ कहत करो ऐसोई कोउ यह कहत कहै को भाई । सूरदास कोउ सुनि सुख पावत कोउ बरजत सुरपतिहि डराई ॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ मेरो कह्यो सत्य कै जानों । जो चाहो व्रजकी कुशलाई तो तुम गिरि गोवर्द्धन मानों ॥ दूध दही तुम कितनो लेहो गोसुत बढै अनेक । कहा पूजि सुरपतिसों पायो छाड़ि देहु यह टेक ॥ मुह मांगे फल जो तुम पावहु तो तुम मानो मोहि । सूरदास प्रभु कहत ग्वालसों सत्य वचन करि दोहि ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ छाड़ि देहु सुरपति की पूजा । कान्ह कह्यो गिरि गोवर्द्धन तें और देवनहिं दूजा ॥ गोपनि सत्य मानि यह लीनो बड़ो देव गिरिराज । मोहि छाड़िये पर्वत पूजत गर्बकियो सुर राज ॥ पर्वत सहित धोय व्रज डारों देउं समुद्र बहाय ॥ मेरो बलि औरहि लै अर्पत इनकी करो सहाय । राखों नहीं इनहिं भूतल में गोकुल देउं बहाय । सूरदास प्रभु याके रक्षक संगहि संग रहाय ॥ १२ ॥ रागबिलावल ॥ गोकुल कोकुल देवता श्रीगिरधारी लाल । कमल नयन घन सांवरो वपु अतिबाहु विशाल ॥

हस्त धरत ठाढे करतये है हरिके ख्याल। करता हरता आपुही आपुहिहैं प्रति पाल ॥ बेगि करो मेरे कहे रचिप्रकवान रसाल। यह मघवा बलि लेत है करत करत गत गाल ॥ गिरि गोवर्द्धन पूजिये इज जीवनि गोपाल। जाके दीने होत हैं धन गैयां गनजाल ॥ संग मिलि भोजन करतहैं जैसे प्रसुके पाल। सूरदास डरपत रहैं जातें यम और काल ॥१३॥ रागबिला वल ॥ ब्रज घर घर अति होत कुलाहल। ग्वाल फिरत उमगे जहां तहां सब अतिआनंद भरे जुउमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दै दै सकटनि भोजन साजत। दधि लवनी मधु माट धरत लै श्याम संग संग राजत ॥ मन्दिर तें लै धरत अजिर पर षटरस के जेवनार। डालनि भरि अरु कलश लये भरि जोरत हैं परकार ॥ सहस सकट मिष्ठान अन्न बहु नन्दमहर घरही को। सूर चले सब लै गृह गृह तें संग सुवन नन्द जीको ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ अति आनन्द इजवासी लोग। भांति भांति पकवान सकट भरि लैचले छहों रस भोग ॥ तीन लोक को ठाकुर संगहि तासों कहत सखा हम जोग। आवत जातहि डर नहि पावत गोवर्द्धन पूजा संजोग ॥ कोउ पहुंचे को मग में रंगत कोउ घर तें निकसे कोउ नाहिं। कोउपहुंचाय सकट घर आवत कोउ घरतें भोजन ल जाहिं ॥ मारग में कोउ निर्खत आवत कोउ अपने रस गावत जाय। सूर श्यामको जशुमति टेरति बहुत भीर है हरिन भुलाय ॥ १५ ॥ राग कान्हरो ॥ सकट साजि सब ग्वाल चले गिरिगोवर्द्धन पूजा के काज। घर घर तें मिष्ठांन चले लै भांति भांति बहु बाजन बाज ॥ अति आनन्द भरे गुण गावत उमडे फिरत अहीर। पैंडो नहीं पावत तहां कोऊ ब्रजवासिन की भीर ॥ एक चले आवत ब्रजतन को एक ब्रजतें वन काज। सूरदास तहां श्याम सबनि में देखिहु हैं सिरताज ॥ १६ ॥ राग नट ॥ चली घर घरनि तें ब्रजनारि। मनहु इंदु बधनि पंगति लगति सोभा भारि ॥ पहिर सारी सुरंग पचरंग षट दस शृंगारि। इहै रच्चा सबनि के चित श्याम रूप निहारि ॥ ललिता चन्द्रावलि सहित राधा संग कीरति महतारी। चले पूजाकरन गिरिको सूर संग नर नारि ॥१७॥ राग नट॥बहुत जुरे ब्रजबासी लोग। सुरपति पूजा मेटि गोवर्द्धन पूजा के संजोग ॥ जेजन बीस एक अरु अगरो डेरा यहि अनुमान। ब्रज बासी नर नागरि अन्त नहि मानों सिन्धु समान ॥ एक आवत ब्रजहीतें इतही एक इततें ब्रजजात। नंद लिये तब ग्वाल सूर प्रभु आय गये तहंप्रात ॥ १८ ॥ राग आसावरी ॥ नंद करत गिरि पूजा की विधि। भोजन लै सब धरे छहो रस कान्ह संग अष्टो सिधि ॥ लै लै आवत ग्वाल धरनि तें भोजन बहुत प्रकार। व्यंजन देखि नंद सुख पावत तुरत करो जनि बार ॥ जोइ जोइ हरि कहत करत सोइ सोइ पूजा कीबहु भांति। माखन दधि पै तक्र धरत लै जोरि जोरि सब पांति ॥ को बरने नाना विधि व्यंजन जेवनये ब्रज नारि। सूर श्याम की लीला अद्भुत कह बरने मुख चारि ॥ १९ ॥ ॥ रागनट ॥ विप्र बुलाय लियो नंदराय। प्रथमारम्भ यज्ञ को कीनो उठे वेद धुनिगाय गोवर्द्धन सिर तिलक बंदयो मेटि इन्द्र ठकुराई। अन्न कूट ऐसो रचि राख्यो गिरि की उपमा पाई ॥ भांति भांति व्यंजन परुसाये कापै धरन्यो जाय। सूरश्याम सों कहत ग्वाल गिरि जेंवहि कहूं बुझाय ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ इन्द्र सोच करि मनहि मन अपने

चहत होत पुनि बुद्धि बिचारत । कहा करत देखेमें इनकों मोको बिलंब लगत नहिं मारत अबएकरैं आपने मन सुख मोकों अब न संभारें । तबलौं रहों पूजि निबरे ये बचिहि न बैर हमारे ॥ इतनों सुख इन के करि रहि हे दुखहै बहुत अगाध । सूर दास सुर पति को बानी मनहीं मनको साध ॥ २१ ॥ राग गोरी ॥ चढि बिमान सुर गण नभ देखत । लीला करत श्याम नूतन यह फिरि फिरि गिरि गोवर्द्धन पेखत ॥ थकित भये सब जहां तहां मुनि गण ठौर ठौर नर नारी । चितवत हैं सब श्याम बदन तन गति मति सुरति बिसारी ॥ पूजा मेटि इन्द्र की पूजत गिरि गोवर्द्धन राज । सूरदास सुर पति गर्बित भयो मैं देवनि सिर ताज ॥ २२ ॥ राग गौरी ॥ कहत कान्ह नंद बाबा आवहु । भोजन धरो परुसि सब आगें प्रेम सहित गिरि राज मनावहु ॥ और नंद उपनंद बुलाये कह्यो सबनि सों भोग लगावहु । स्वप्ने में देख्यो मेरी मूरति यहै रूप धरि ध्यान मनावहु ॥ एक मन एक चित कै अर्पन को प्रकट लेत दिखरावहु । सूर दास प्रभु कहत सबनि सों अपने कर लै लैन जिंवावहु ॥ २३ ॥ राग केदारो ॥ बिनती करत सकल अहीर । कलस भरि भरि ग्वाल लै लै सिखर ढारत छीर ॥ चल्यो बहि चहुं पास तें पय सुर सरी जल ढारि । बसन भूषन लै चढाये भीर अति नर नारि ॥ मूंदि लोचन भोग अर्प्यो प्रेम सों रुचिभारि । सबनि देख्यो प्रकट मूरति सहस भुजा पसारि ॥ रुचि सहित गिरि सबनि आगे करनि लै लै खाय । नंद सुत महिमा अगोचर सूर क्यों कहे गाय ॥ २४ ॥ रागनट ॥ गिरिवर श्याम को अनुहारि । करत भोजन अति अधिकई सहस भुजा पसारि ॥ नंद को कर गहे ठाढो यहै गिरि को रूप । सखी ललिता राधिका सों कहति देखि स्वरूप ॥ यहै कुण्डल यहै माला यहै पीत पिछोरि । शिखर शोभा श्याम की छवि श्याम छवि गिरि गोरि ॥ नारि बदरौला रही वृषभान घर रखवारि । तहां तें वह भोग अर्पति लियो भुजा पसारि ॥ राधिका छवि देखि भूली श्याम निरखी ताहि । सूर प्रभु बसभई प्यारी चकोर लोचन चाहि ॥ २५ ॥ राग धनाश्री ॥ देखो री हरि भोजन खात । सहस भुजा धरे उत जेंवत हैं इतहि कहत गोपनि सों बात ॥ ललिता कहति देखि हो राधा ज्यों तेरे मन बात समाय । धन्य समय गोकुल के बासी संग रहत चिभुवन के राय ॥ जेंवत देखि नंद सुख पायो अति आनंद गोकुल नर नारि । सूर दास स्वामी सुख सागर गुण आगर नागरि दै तारि ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ यह लीला सब करत कन्हाई । उत जेंवत गिरि गोवर्द्धन संग इत राधा सों प्रीति लगाई ॥ इत गोपनि सों कहत जिंवावहु उत आपुन जेंवत मन लाई । आगें धरे छहोरस व्यंजन बदरोला को लियो मंगाई ॥ अमर बिमान चढे सब देखत जै धुनि करि सुमननि वर पाई । सूर श्याम सब के सुख दाता भक्त हेत अवतार सदाई ॥ २७ ॥ राग गौरी ॥ गोपिन सों यह कहत कन्हाई । जो में कहत रह्यो भयो सोई सपनान्तर को प्रकट बताई ॥ जो माग्यो चाहो सो मांगो पावोगे जो जा मन आई । कहत नंद सब तुमही दीनों मांगत हौं हरि की कुशलाई ॥ कर जोरे नंद आगें ठाढे गोवर्द्धन को करत बड़ाई । ऐसो देव नहीं कहुं देख्यो सहस भुजा धरे खात मिठाई ॥ सदा तुम्हारी सेवा करिहों और देव नहि करों पुजाई । सूर श्याम

को नीके राखो कहति महरि ये हलधर भाई ॥ २८ ॥ राग नट नारायण ॥ अपने अपने टोल कहत व्रज बासियां ॥ ध्रुव ॥ शरद सुभग ऋतु जानि दीप मालिका बनाई । गोपनि के उन माद फिरत आनंद कन्हाई ॥ घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार । सात बरष को सांवरो हो खेलत नंद दुवार ॥ बैठि नंद उपनंद बोलि वृषभान पठाये । सुरपति पूजा देत जानि तहां गोविंद आये ॥ बार बार हाहा करें कहि बाबा यह बात । घर घर नेवज होत है हो कौन देवकी जात ॥ कान्ह तुम्हारी कुशल लागि एक यतनबढ़ाऊं । षटरस भोजन अन्न भोग सुरपतिहि चढाऊं ॥ नंद कह्यो चुचुकारिकें जाय दामोदर सोय । बरष दिवसको त्रासहै हो महा महोत्सव होय ॥ तब हरि मंत्र बिचार तुरत गोपनिसों कीनो । एक पुरुषने आजु मोहि सपनान्तर दीनों ॥ सब देवनि को देवता गिरि गोवर्द्धन राज । ताहि भोग किनि देहु लै सुरपति को कहा काज ॥ बाढै गोसुत गाय दूध दधि को कहा लेखो । यह परचौ बिद्यमान नयन अपने सब देखो ॥ तुम देखत बल खाय गौ मुह मांगे फल देय । गोप कुशल सब चाहिये तो गिरि गोवर्द्धन सेय ॥ गोपन करी बिचार सकल सबही व्रज साजे । बहु बिधि लै पकवान चले संग बाजन बाजे ॥ एक बाट तें उबट चले एक नदी सुर भीर । एकन पैड़ों पावही हो उमड़े फिरत अहीर ॥ एक घरतें उठि चले एक गृह कों फिरि जांहि । गावत गुण गे प्रात उमगि अंग अंग न समाहि ॥ गोपनि को सागर भयो गिरि भयो मंदर सार । रतन भई सब गोपिका हो कान्ह बिलोवन हार ॥ एक चौरासी कोस घिरै गोपनि के डेरा । लांबो चौवन कोस आजु व्रज बास बसेरा ॥ सबहिन के मन सांवरो देखो सबनि मझारि । कौतुक भूले देवता हो आये लोक बिसारि ॥ प्रथम दूध अन्हवाय बहुरि गंगा जल ढारयौ । बड़ो देवता जानि कान्ह कौ मतो बिचारयौ ॥ देव दिवाले सामुही नर नारी सब जाय । नन्द प्रतीत न मानही तुम देखत बल खाय ॥ लीने विप्र बुलाइ यज्ञ आरंभ नकीन्हों । सुरपति पूजा मेटि राज गोवर्द्धन दीन्हो ॥ जैसो है गिरि राज जू तैसोई अन्न कोट । मगन भये पूजा करैं हो नर नारी बड़ कोट ॥ बहु बिधि व्यञ्जन किये कहां लों नाम बखानो । भयो भात को कोट ओट गिरि राज छिपानो ॥ बरा बिराजै भात पर चन्दहि षटरस सोय । जहं पुरुष भोजन करैं हो सब देवनि सुख होय ॥ जहां तहां दधि धर्यो कहो कहा उज्जल ताई । सिखर उदधि ह्वै रह्यो भातमें देह छिपाई ॥ बदरौला वृषभान के रहो बिलोवनि हारि । ताकी बलि बोहो देवता हो लीन्हो भुजा पसारि ॥ सहस भुजा गिरि धरै करै भोजन अधिकाई । नख सिख एक अनुहारि मनहु दूसरो कन्हाई ॥ राधासों ललिता कहै तेरे हृदय समाय । गहे अंगुरिया नन्दकी हो टोटा भोजन खाय ॥ पीत दुपटा लौ सेत कंठ मोतिनकी माला । भूषन भुजा अनूप श्याम तन नयन बिशाला ॥ श्यामहि सोभा गिरि बनी गिरिकी सोभा श्याम । जैसे पर्वत भातको हो ढिग भैया बलराम ॥ लै सब भोजन अग्नि गोप गोपिनि कर जोरे । बहु बिधि कीन्हो स्वाद दास कछु बरने थोरे ॥ यह विधि पूजा पूजिके बूझो गोविन्द जाय । सूर श्याम सबसों कही हो लीला प्रकट सुनाय ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ श्याम कहत पूजागिरि मानी । जो तुम आप भगतिसों अर्पो देव राज सब जानी ॥ तुम

देखत भोजन सब कीन्हे अब तुम मोहि पत्याने । बड़ो देव गिरि राज गोवर्द्धन इनहिं रहो तुम माने ॥ सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यह बांनी । सूर नन्द मुख चूंबत हरिको यह पूजा तुम ठांनी ॥ ३० ॥ राग गौरी ॥ और कछु मांगहु नन्द मोसों । जो चाहो सो देंहु तुरतही कहत सबै गोपनिसों ॥ बल मोहन दोऊ सुत तेरे कुसल सदा ये रैहैं । बाढे सुरभी बच्छ घनेरे चर तृण बहुत अघैहैं ॥ इनके कहे करी मेरी पूजा अब तुम सब घर जाहु । भोग प्रसाद लेहु कछु मेरो गोप सबै मिलि खाहु ॥ सपने मैंही कह्यो श्याम सों करहु-हमारी पूजा । सुरपति कौन बापुरो मोतें देव नहीं अरु दूजा ॥ इन्द्र आय बरषौ जो व्रज पर तुम जिनि जाहु डराई । सुनहु सूर सुत कान्ह तुम्हरे कहिके मोहि सुनाई ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ भलो करी पूजा तुम मेरी । बहुत भाव करि भोजन अर्प्यो यह सब मानि लई मैं तेरी ॥ सहस भुजा धरि भोजन कीन्हौ तुम देखत विद्य मान । मोहि जानत यहकुंवर कन्हैया यहै नहीं काउ आंन ॥ पूजा सबकी मान लई मैं जाहु घरन व्रज लोग । सूर श्याम अपने कर लीन्हे बांटत जूठो भोग ॥ ३२ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ बिनती करत नंद कर जोरे पूजा हम कहा जानें नाथ । हम हैं जो असदामा याके दास दियो मोहि किया सनाथ ॥ महा पतित मैं तुम पावन प्रभु दरशन तुम्हरे पायो तात । तुमतें और देव नहि दूजा कोटि ब्रह्मंड रोम प्रति गात ॥ तुमदाता तुमही हौ भुगता हरता करता तुमहीं सार । सूर कहा हम भोग लगावैं तुमहीं लै दीयो संसार ॥ ३३ ॥ राग बिलावल ॥ यह पूजा मोहि कान्ह बताई । भूल्यो फिरत द्वार देवनि के त्रिभुवन पति तुमको बिसराई ॥ आपुहि कृपा करी सपनांतर श्यामहि दरस दियो तुम आई । ऐसे प्रभु कृपाल करुणा मै बालक की अति करी बड़ाई ॥ गिरि पावन हरिको लै पारत इन्द्रधरा को पावन तर नाई । सूर श्याम बलराम तुम्हारे इनको कृपा करो गिरि राई ॥ ३४ ॥ राग बिलावल ॥ ग्वाल कहत धनि धन्य कन्हैया । बड़ो देवता प्रकट बतायो यह कहि कहि सब लेत बलैया ॥ धन्य धन्य गिरि राजनि को मनि तुम सम और न दूजा । तुम लायक कछु नाहि हमारे को जानें तुव पूजा ॥ गोप सबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु कह्यो सो कीन्हौ । सूर श्याम कहि कहि यह बानी देव मानि सुख लीन्हौ ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ ताल चर्चरी ॥ गोप उपनंद हृष भान आये । बिनय सब करत गिरि राजसों जोरि कर गये तन पाप तुअ दरश पाये ॥ देव देवो बडे प्रकट दरशन दियो प्रकट भोजन किये सबनि देखो । प्रकट बांनी कही गिरि राज तुम सही और नहिं तिहुं भुवन कहूं पेखो ॥ हंसत हरि मनहि मन तकत गिरि राज तन देव परशन भये करो काजा । सूर प्रभु प्रकट लीला कही सबनिसों चले घर घरनि अपने समाजा ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ देखि थकित गण गन्धर्व सुर मुनि । धन्य नंद को सुकृत पुरातन धन्य धन्य कहि कहि जै जे धुनि ॥ धनि धनि श्री गोवर्द्धन पर्वत करत प्रशंसा सुर मुख मुनि पुनि । आपुहिं खात कहत हैं गिरिको यह महिमा देखीन कहूं सुनि ॥ इहै कहत अपने ओकनि धनि व्रजवासी सब कीन्हे उनि । सूर श्याम धनि धनि व्रज बिहरत धन्य धन्य सब कहत जु गुनि गुनि ॥ ३७ ॥ रागनट ॥

चले ब्रज घरनि को नर नारि । इन्द्र की पूजा मिटाई तिलक गिरिके सारि ॥ पुलक अंगन मात उरमें महरिसहित समाज । अब बड़ो हमदेव पायो गिरि गोवर्द्धन राज ॥ इन हितें ब्रज चैन रैहै मांगि भोजन खात । इहै घेरा चलत ब्रज जन सबनि मुख यहबात ॥ सबै सदननि आय पहुंचे करत केलि विलास । सूर प्रभु यह करी लीला इन्द्र रिसि पर कास ॥ ३८ ॥ राग सारंग ॥ ब्रज बासिन मोकों बिसरायो । भली करी मेरी बलिजो कछु सोसब लै पर्वतहि चढ़ायो ॥ मोसो गर्ब कियो लघुप्रति माजानिये कहा मन आयो । चिदस कोटि देवनिको नायक जानि बूझि कै इनन भुलायो ॥ अब गोधनि भूतल नहिं राखों मेरी बलि मोको न चढ़ायो । सुनहु सूर मेरे मारत धों पर्वत कैसे होत सहायो ॥ ३९ ॥ ॥ राग सारंग ॥ प्रथमहिं देहों गिरिहि बहाय । बज्राघातहु करौं बिरुकुट देउं धरनि मिलाय ॥ मेरी इन महिमा नजानो प्रकट देउ दिखाय । जल बरषि ब्रज घेरि डारौं लोग देव बहाय । खात खेलत रहे नीके करि उपाधि बनाय ॥ बरष दिन मोहि देत पूजा सोउ दई मिटाय ॥ रिस सहित सुरपति कहत पुनि परौ ब्रजपर धाय । सुनहु सूर कहत हैं मघवा बेगि परो भह राय ॥ ४० ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ सुनत मेघ वर्त्त साजि सैन आये । जल वर्त्त धारि वर्त्त पवन वर्त्त बज वर्त्त, अग्नि वर्त्त जलद संग आये ॥ घहरात गरजात दरसत घहरात तर रात महरात माथ नाये । कौन ऐसो काज वेलै हमैं सुर राज प्रलय के साज हमको बुलाये ॥ बरष दिन संजोग देत मोको भोग छुद्र अति ब्रजलोग गर्ब कीन्हों । मोहि दियो बिसराय पूज्यो गिरिवर जाय परो ब्रज धाय आयसु दीन्हो ॥ कितिक ब्रजके लोग रिस करत कहि जोग गिरि लियो भोग फल तुरत पैहै । सूर सुर पति सुन्यो चयो जैसो लुन्यो प्रभु कहा गुणो गिरि सहित वै है ॥ ४१ ॥ राग सारंग ॥ बिनती सुनहु देव मघवा पति । केतिक बातगो कुल ब्रज बासी बार बार रिस करत जाहि अति ॥ आपुन बैठि देखिये कौतुक बहुतें आय सुदीन्हों । छिन में बरषि प्रलय जल पौढे खोज रहे नहिं चीन्हों ॥ महा प्रलय ह्वै जल बरषैं गगन रहे भरि छाई । अछै वृक्ष वट बचत निरंतर कहा ब्रज गोकुल माई ॥ चले मेघ माथे कर धरि कै मनमें क्रोध बढायो । उमडत चले इन्द्र के पायक सूर गगन रहे छायो ॥ ४२ ॥ राग गौड मलार ॥ मेघ बल प्रबल ब्रज लोग देखे । चकृत जहं तहं भये निरखि बादर नये ग्वाल गोपाल डरि गगन पेखे ॥ ऐसे बादर सजल करत अति महा बल घहरात करि चहल दसों दिश अंधकार । चकृत भये नंद सब महर चकृत भये चकृत नर नारि हरि करत ख्याल ॥ घटा घन घोर घहरात अररात गररात दररातु ब्रज लोग डरपे । तड़ित आघात तररात उतपात सुनि नारि नर सकुच तन प्राण अरपे ॥ कहा चाहत हों न भई न कबहुं जो न कबहूं आंगन भौंन बिकल डोलै । मेटि पूजा इन्द्र नंद सुत गोविंद सूर प्रभु आनंद करै कलोलै ॥ ४३ ॥ राग मलार ॥ सैन साजि ब्रज पर चढि धावहिं । प्रथम बहाय देहि गोवर्द्धन ता पाछें ब्रज खोदि बहावहिं ॥ अहिरनि करी अवज्ञा प्रभु की सो फल उनकों तुरत दिखावहिं । इन्द्रहि पेखि करी गिरि पूजा सलिल बरषि ब्रज नाम मिटावहिं ॥ बल समेत निशि बासर बरषहु गो

कुल बेरि पताल पठावहिं । सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूतल कतहुं रहन नहि पावहि ॥ ॥ ४४ ॥ राग मलार ॥ बादर घुमडि उमड़ि आये व्रज पर बरषन कारे धूमरे घटा अति ही जल । चपला अति चम चमात व्रज जन सब डरत गात टेरत सिसु पिता मात व्रज गल वल ॥ गरजत धुनि प्रलय काल गोकुल भयो अंधकाल चकृत भये ग्वाल बाल थहरात नभ करत चहल । पूजा मेटी गोपाल इन्द्र करत यह हाल सूरश्याम राखहु अब गिरिवर वल ॥ ४५ ॥ राग मलार ॥ गिरि पर बरषन लागे बादर । मेघ बर्त्त सैनि सजि आये लै लै आदर ॥ सलिल अखण्ड धार ढूंढत हैं की येई मन सादर । मेघ परस्पर यहै कहत हैं घेार करो गिरि कादर ॥ देखि देखि डरपत व्रज वासी अतिही भये मन कादर । यहै कहत व्रज कौन उबारै सुरपति कियेा निरादर ॥ मन मन सेाच करत नर नारी कहा भई रह गादर । सूर श्याम देखै गिरि अपनों मघ न कीनों दादर ॥ ४६ ॥ राग मलार ॥ गये बिललाय व्रज नर नारि । धरत सैतत धाम काम तनहीं सुरति सम्हारि ॥ पूजि आये गिरि गोवर्द्धन देति पुरुषनि गारि । आपुनों कुल देव सुरपति धरयो ताहि बिसारि ॥ दियेा फल यह गिरि गोवर्द्धन लेहु गोद प्रसारि । सूर को न उबारि लै है इन्द्र चढ्यो प्रचारि ॥ ४७ ॥ राग सोरठ ॥ व्रज के लेाग फिरत बिललाने । गैयनि लै बन ग्वाल गये ते धावत आवत व्रजिहि पराने ॥ कोउ चितवत नभ तन चकृत रह्यो कोउ गिरि परत धरनि अकुलाने । कोउ लै रहत ओट दृक्षन की अंध धुंध दिशि बिदिशि भुलाने ॥ कोउ पहुंचे जैसें तैसें घर कोउ ढूंढत यह नहि पहिचानें । सूर दास गोवर्द्धन पूजा कीनी करि फल लह्यो बिहानें ॥ ४८ ॥ राग गौरी ॥ तरपत नभ डरपत सब लेाग । सुरपति की पूजा बिसराई लै दीनों पर्वत कों भेाग ॥ नंद सुबन यह बुधि उप जाई कोन देव कह्यो पर्वत जेाग । सूर दास गिरि बड़ो देवता प्रकट होहि ऐसें संयेाग ॥ ४९ ॥ राग मलार ॥ व्रज नर नारि नंद जसुमति सों कहत श्याम ए काज करे । कुल देवता हमारो सुर पति तिनकों मिलि मेटि धरे ॥ इन्द्रहि मेटि गोवर्द्धन थाप्यो इन की पूजा कहा सरे । सैंतति धरति जहां तहां बासन लरिकनि लै लै गेाद करें ॥ को करि लेय सहाय हमारो प्रलय काल के मेघ अरे । सूर दास सब कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा बिसरे ॥ ५० ॥ राग बिलावल ॥ राखि लेहु गेाकुल के नायक । भीजत ग्वाल गाय गेासुत सब बिषम बूंद लागत जनु सायक ॥ बरषत मुसल धार सैनापति महा मेघ मघवाके पायक । तुमबिनु ऐसो कोन नंद सुत यह दुख दुसह मेटि वे लायक ॥ अघ मर्दन बक बदन बिदारन बको बिनासन सब सुख दायक । सूरदास तिनको काको डर जिनके तुमसे सदा सहायक ॥ ५१ ॥ राग गोंड मलार ॥ बरषा राखि लेहु नंद तात । घटा आई गरजि युवति गई लरजि मेज चमकत तरजि डरत गात ॥ और कोउ नहीं तुम धनी कहांतहां बिकल ह्वै कहीं तुमहि जात । सूर प्रभु सुनि हंसत प्रीति उर में बसत इन्द्र को कलत हरि जगत बात ॥ ॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥ राखि लेहु अब नन्दकिशोर । तुम जो इन्द्रकी पूजा मेटी बरषत है अति जोर ॥ व्रजवासी सबयों चितवत हैं ज्यों चारि चन्द चकोर । जिनि जिय डरहु नयन जिनि मूंदहु धरिहों नखकी कोर ॥ करि अभिमान इन्द्र चढ़ि आयो करत घटा घन

ओर । सूर श्याम कहि तुम सब राखे बूंद न आवैं छोर ॥ ५३ ॥ राग गोंड मलार ॥ गगन मेघ घहरात घघरात गात । चपला चम चमात चमकि नभ भहरात राखि लै क्यों न ब्रज नंद तात ॥ सुनत करुणा बैन उठे हरि बलऐन नयन की सैन गिरि तन निहारो । सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरि राज तुमकों उबारो ॥ करज के अग्र भुज बाम गिरिवर धरो नाम गिरिधर परो भक्त काजे । सूर प्रभु कहत ब्रजबास बासीन सो तुम्हें राखि लियो गिरि राज राजे ॥ ५४ ॥ राग गौरी ॥ श्याम लियो गिरि राज उठाय । धीर धीर हरि कहत सबनि सों गिरि गोवर्द्धन कियो सहाय ॥ नंद गोप ग्वालनि के आगें देव कह्यो यस प्रकट सुनाय । काहेकों व्याकुल भये डोलत रक्षा करो देवता आय ॥ सत्य वचन गिरि देव कहत हैं कान्ह मोहि कर लेहि बनाय । सूरदास नारी नर ब्रज के कहत धन्य तुम कुंवर कन्हाय ॥ ५५ ॥ राग मलार ॥ बाम करज टेक्यो गिरि राज । गोपी ग्वाल गाय गोसुत को दुख बिसरयो सुख करत समाज ॥ आनन्द करत सबै गिरिवर तर दुख डार्यो सबही बिसराय । चकृत भये देखत यह लीला परत सबै हरि चरणनि धाय ॥ गिरिवर टेकि रहे बांये कर दच्छिन कर लिये सखनि उठाय । कान्ह कहत ऐसौ गोवर्द्धन देखो कैसें कियो सहाय ॥ गोप ग्वाल नंदादिक जहांलों नंद सुवन लिये निकट बुलाय । सूर दास प्रभु कहत सबनि सों तुमहू मिलि टेको गिरि आय ॥ ५६ ॥ राग मलार ॥ नीके धरौ नंद नन्दन बलबीर । गिरि जिनि परै टरै नख तें जिनि कौन सहेगो पीर ॥ चहुं दिस पवन झकोरत घोरत मेघ घटा गंभीर । बनै बनै बरषत गिरि ऊपर धार अखण्डित नीर ॥ अन्ध धुन्ध अम्बर तें गिरि पर परत बज्र के तीर । चमकि चमकि चपला चक चौंधति धाँस कहत मनधीर ॥ कर जोरत कुलदेव मनावत ब्रज के लोग अहीर । पय पकवान बिधान पूजि हैं लै दधि मधु घृत खीर । गोपी ग्वाल गाय गोसुत सब रहे सुख सहित शरीर ॥ सूर श्याम गिरिधर्यो बाम कर मेघ भये अति भीर ॥ ५७ ॥ राग मलार ॥ गिरिवर नीके धरौ कन्हैया । देखे रहौ टरै जिनि नखतें भुजा तनकसी भैया ॥ जबही गाढ परत ब्रज लोगनि तब करि लेत सहैया । जननि जशोदा कर लै चांपति अति श्रम होत नन्हैया ॥ देखत प्रकट धरे गोवर्द्धन चकृत भये नंद रैया । पिता देखि व्याकुल मन मोहन तब एक बुद्धि उपैया ॥ आवहु तात गहौ गोवर्द्धन गोपनि संग लिवैया । जहां तहां सबहिन गिरि टेक्यो कान्हहि औत करैया ॥ श्याम कहत सब नंद गोपसों भले लयो उच कैया । सूर दास प्रभु अंतर जामी नंदहि हरष बढैया ॥ ५८ ॥ राग कान्हरो ॥ गिरिवर धरौ सखाकर करतें । रेभैया ग्वाल लकुटियनि टेकौ अपने अपने भुजन के बलतें ॥ सात दोस मूसल जल धारा बरषत हैं निसि दिन अंबरतें । अंतरिच्छ जल जात कहां यह क्रोध सहित फिरि बरखत भरतें ॥ गाय गोप नंदादिक राखौ हया बूंद सब नेकत धरतें । सूर गोपाल राखि गिरिवर तर गोकुल ब्रज नारी नर धरतें ॥ ५९ ॥ राग मलार ॥ बरषत मेघ बर्त्त धरनी पर । मूसल धार सलिल बरषत है बूंदन आवत भूधर ॥ चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात । अंधा

धुंध पवन बर्त्तक घन करत फिरत उतपात ॥ निसि सम गगन भयो आच्छादित बर षि बरषि झर इंद । व्रज बासी सुख चैन करत कर गिरि बरधरि गोबिंद । मेघ बरषि जल सबे बुढानें दिवि गुन गये सिराय ॥ वैसाइ गिरि वैसेइ व्रज बासी दूनो हरष बढाय । सात द्योस जल बरषि निसा दिन व्रज घर घर आनंद । सूर दास व्रज राखि लियो धरि गिरिबर कर नंद नंद ॥ ६० ॥ राग मलार ॥ बरषि बरषि घन व्रज तन हेरत । मेघ बर्त्त अपनी सैनाको खीजत हैं फिरि टेरत ॥ कहा बरषि अबलों तुम कीनों राखत जलहि छिपाय । मूसल धार बरषि व्रज पाडौ सात दिवस भये आय ॥ रिसकरि करि गरजत नभ तरपत चाहत व्रजहि बहाय । सूर श्याम गिरि गोबर्द्धन धरि व्रज जनको सुख दाय ॥ ६१ ॥ राग मलार ॥ बरषि बरषि सब हारे बादर । व्रज के लोगनि धोय बहा बहु इंद्र हमहि कहि आदर ॥ कहा जाय कैहै प्रभु आगें करिहैं बहुत निरादर । हम बरषत परबत जल सोषत व्रज बासी सब सादर । पुनि रिस करत प्रलय जल बरषत कहत भये सब कादर । सूर गाय गो सुत सब राखे गिरिबर धर व्रज आदर ॥ ६२ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा होत जल महा प्रलयको । राखो सैति जेहि कारज जलको बचत नहीं बहुतनको ॥ भुवपर एक बूंद नहि पहुंच्यो निझरि गये सब मेह । बासर सात अखंडित धारा बरषत हारे देह ॥ नूरभयो बिनु नीर सबनि को नाम रह्यो है बादर । सूर चले फिरि अमर राज पै व्रजतें भये निरादर ॥ ६३ ॥ राग मलार ॥ मघवनि हारि मानि मुख फेरयो । नीको घोष बड़ो गोबर्द्धन जब नीके व्रज हेरयो ॥ नीकी गाय बच्छ सब नीके नीके बाल गोपाल । नीको वन बैसीये जमुना मन मन भये बिहाल ॥ गोकुल व्रज वृन्दाबन मारग नेक नहीं जल धार । सूर दास प्रभु अगनित महिमा कहा भयो जल सार ॥ ६४ ॥ राग नट । मघवनि जाय कही पुकारि । दीनहूं सुर राज आगे अस्त्र दीन्हे डारि ॥ सात दिन भरि बरषि व्रज परराई करी नेक नझारि । अखंड धारा सलिल निझरयो मिटी नहीं खगारि ॥ धरनि नेक नबूंद पहुंच्यो हरष व्रज नर नारि । सूर मेघनि इंद्र आगें करी यह गोहारि ॥ ६५ ॥ राग गौरी ॥ तुम बरषत व्रज कुशल परयो । तुम बरषत जल महा प्रलय को यह कहि मन मन सोच करयो ॥ एक घरी जाके बरषे तें गगन अच्छादित होय । तेमघवा बिह्वलमो आगें बात कहत हैं रोय ॥ सात दिवस भरि बरषि सिरानें तातें भयो निरास । सूर दास सुरपति संकित भये सुरनि बुलाये पास ॥ ६६ ॥ राग गौरी ॥ अमर राज सब अमर बुलाये । आज्ञा सुनत सकल घर वरतें आय गये कछु बिलंब नलाये ॥ कौन काज सुर राज हंकारे हमको आय सु होय । देखहु मेघ बर्त्त कानिकी गति व्रजतें आये रोय ॥ गोबर्द्धन की करी पुजाई मोहि डारयो बिसराय । मेघ बर्त्त जल बर्त्त पठाये आवहु व्रजहि बहाय ॥ धार अखंडित बरषि सात दिन व्रज पहुंच्यो नहि बुंद । सुरन कही गोकुल प्रकटे हैं पूरन ब्रह्म मुकुंद । मोसों क्यों नकह्यो तुम तबहीं गोकुल है व्रज राज ॥ सूर दास प्रभु कृपा करहिंगे शरण चलो दिवि राज ॥ ६७ ॥ राग

सोरठ ॥ शरण गये जो होय सुहोय । वे करता बेई ह हरता अब नरहों मुख गोय ॥ ब्रज अवतार कह्यो हो श्री मुखनेई करत विहार ॥ पूरन ब्रह्म सनातनए ही मैं भूल्यो संसार । उनके आगें चाहूं पुजा ज्यों मनि दीप प्रकास ॥ रवि आगें खद्योत उजारी चंदन संग कुबास । कोटि इंद्र छिनहीं मैं राचै छिनमें करै बिनास ॥ सूर रच्यो उनहीं को सुरपति मैं भुल्यो तेहि आस ॥ ६८ ॥ राग सारंग ॥ प्रकट भये ब्रज चिभुवन राई । जुग गुण बीति चिगुण बुधि व्यापी शरण चल्यो सुरपति अकुलाई सपने को धन जागि परै ज्यों त्यों जानी अपनो ठकुराई । कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगत पिता सों करी ढिठाई ॥ शिवबिरंचि रविचंद बरुण जमलिये अमर सब संग लगाई । बार बार सिर धुनत जात मग कैहों कहा बदन दिखराई ॥ वेहैं परम कृपाल महा प्रभु रैहों शीस चरण पर नाई । सूर दास प्रभु पितु माता मैं ओछी बुद्धि करी खरकाई ॥ ६९ ॥ राग कान्हरो ॥ सुरगण सहित इन्द्र ब्रज आवत । धौल बरन ऐरावत देख्यो उतरि गगन सें धरनि धसावत ॥ अमराशिवरवि शशिचतु रानन हय गय बसुह हंस मृग जावत । धर्म राज बन राज अनल दिबशारद नारद शिव सुत भावत ॥ मेढा मढी मगर गुडरारो मोर आषुमन वाहन गावत ॥ ब्रज के लोग देखि डरपे मन हरि आगें कहि कहि जु सुनावत । सात खोस जल बरषि बढानों आवत चल्यो बज्र अचावत ॥ घोरा करत जहां तहां ठाढे ब्रज बासिन्ह को नहीं बचावत । दूरहितें बाहनतें उतर्‌यो देवन सहित चले सिर नावत ॥ आयपर्‌यो चरणनि तर आतुर सूर दास प्रभु शीस उठावत ॥ ७० ॥ राग कान्हरो ॥ सुरपति चरण परोगहि धाय । जुग गुण छोड़ शेष गुण जान्यों आयो शरण राखि शरणाय ॥ तुम बिसर्‌यो तुमरीही मायामो तुम बिनु नाहीं और सहाय । शरण शरण पुनि पुनि कहि कहि मोहि राखु राखु चिभुन पति राय ॥ मोतें चूकपरी बिनु जाने मैं कीन्हो अपराध बनाय । तुम माता तुमहीं जगधाता तुम भ्राता अपराध क्षमाय ॥ बालक जननीसों बिरुझै जौं माता ताको लेत मनाय । ऐसेंहि मोहि करौ करुणा अब हर श्याम ज्यों सुत हित माय ॥ ७१ ॥ राग बिलावल ॥ ब्याकुल देखि इन्द्रको श्रीपति उभय भुजा भरि लियो उठाय । अभै नृभै कर माथे दीनो श्रीमुख बचन कह्यो मुसकाय ॥ कहा भयौ करि क्रोध चढ़े ब्रज मैं तुरतहि करि लियो सहाय । हमको जानि नहीं तुम कीनी बिन जाने यह करी ढिठाय ॥ अब अपने जिय सोच करो जिनि यह मेरी दीनो ठकुराय । सर श्याम गिरि धर सब लायक इन्द्रहि कह्यो करो सुख जाय ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ सुरगन करत अस्तुति सुखनि । दरशतें तन ताप खोये मिटे अघके दुखनि ॥ अंग पुलकित रोम गद गद कहत बानी मुखनि । बाम भुज गिरि टेकि राख्यो करज लघुके नखनि ॥ प्रेमके बस तुमहि कीन्हो ग्वाल बालक सखनि । जोगि जज बन तपत जपत नहि पावत मखनि ॥ धन्य नंद धनि मात जसुमति चलत जाके रुखनि । सूर प्रभु महिमा अगोचर जात कापें लखनि ॥ ॥ ७३ ॥ राग भैरों ॥ जै गोविन्द माधौ मुकुंद हरि । कृपा सिन्धु कल्यान कंस अरि ॥ कृपनि पाल केशव कमला पति । कृष्ण कमल लोचन अगतिन गति ॥ रामचन्द्र राजीव

नयन धर । शरण साधु श्रीपति सारंग धर ॥ वनमाली वावन त्रिविक्रम बल । वासुदेव बासी दृज भूतल ॥ खर दूषण त्रसिरा सिर खंडन । चरण चिन्ह दंडक भुव मंडन ॥ बकी दवन बक बदन विदारन । वरुण विषाद नन्द निस्तारन ॥ ऋषि मखत्रान ताड़का तारक । बन बसि तात बचन प्रति पारक ॥ गोकुल प्रति गिरिधर गुण सागर । गोपी रसन रास रति नागर ॥ रघुपति प्रबल पिनाक विभंजन । जग हित जनक सुता मन रंजन ॥ कालीदमन केसि कर पातन । अघ अरिष्ट धेनुक अनु घातन ॥ करुणा मय कपि कुल हित कारी । वालि विरोध कपट मृग हारी ॥ गुप्त गोप कन्या व्रत पूरन । द्विज नारी दरशन दुख चूरन ॥ रावण कुम्भकरण शिर छेदन । तरवर सात एक सर भेदन ॥ शंख चूड चांडूर संहारन । शक्र कहे मेरो रक्षा कारन ॥ उत्तर कृपा गीध कृत कारी । दरशन दै सेवरी उद्धारी ॥ जे पद सदा शंभु हितकारी । जे पद परसि सुर सरी गारी ॥ जे पद रमा हृदय नहि टारी । जिनि पद तें तिहुं भुवन तियारी ॥ जे पद वृन्दावनहि विहारी । जे पद पाण्डव गृह पगु धारी ॥ जिनि पद सकटा सुर संहारी । जे पद अहि फन फन प्रति धारी ॥ जे पद भक्तन के सुखकारी । जिनि पद रज गौतम त्रिय तारी ॥ सूरदास सर जाचत वेई पद । करहु कृपा अपने जनपर सद ॥ ७४ ॥ राग आसावरी ॥ अस्तुति करि सुर घरनि चले । इहै कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रकट फले ॥ शिव विरंचि सुरपति यह भाषत पूरण ब्रह्महि प्रकट मिले । धन्य धन्य यह दिवस आजु को जात है मारग करत गिले ॥ पहुंचे जाय आपने ओकनि अमर नारि अति हरषभरे । सूर श्याम की लीला सुनि सुनि अति हित मंगल गान करे ॥ ७५ ॥ राग मलार ॥ देखियत है घन हैं उनये । उत मघवा बस भक्त वश्य हृत अति रोस भये ॥ उत सुर चाप कलाप चन्द्र इत तड़ित पट पीत नये । उत सेना पति बरषत येहत अहत धार चितये ॥ अति उतंग गिरि राज विराजत करज उठाय लये । मनो बिबि मरकत बीच महानग चतुर नारि बनये ॥ लुठत शक्र कोशीस चरण तर जुग्ल गुणगते समये । मानहु कनक पुरी पतिके सिर रघुपति फेरि दये ॥ भये प्रशंन सकल सुर पुर के प्रमुदित फेरि दये । सूरदास गिरिधर करुणा मय इन्द्र थापि पठये ॥ ७६ ॥ राग मलार ॥ देखो माई बादर को बरियाई । मदन गोपाल धरो कर गिरि वर इन्द्र ढीठ झर लाई ॥ जाके राज सदा सुख की हो ताकों सवन बड़ाई । सेवक करे स्वामिसों सर बर इन बातन पति जाई ॥ इन्द्र ढीठ बलि खात हमारो देखे अखिल गंवाई । सूरदास तिनकों काको डर जेहि बन सिंह कन्हाई ॥ ७७ ॥ राग सोरठ ॥ जहां तहां तुम हमहिं उबारो । ग्वाल सखा सब कहत श्यामसों धनि जशुमति अवतारो ॥ तृणावर्त्त ब्रज पर चढ़ि आयो लागो देन उड़ाय । ऋषि शिशु तामें ताड़ि संहारो गिरो सिला पर आय ॥ फल जनाय बालक संग खेलत बेली आयो साथ । बाहि मारि तुम हमहिं उबारो ऐसे त्रिभुवन नाथ ॥ कागासुर सकटासुर मारो पय पीवत दनु नारि । अघा उदरतें हमहिं बचाये बका बदन धरि फारि ॥ कालीदह जल अचै गये मरि तब तुम लियो जिवाय । सूर श्याम सुर पति तें राख्यो देतो सबनि बहाय ॥ ७८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज युवती ब्रजनर ब्रजवासी

कहत श्याम सरि कौन करै । ब्रज मारत ब्रजनाथहि आगे बज्रा युध मन कोप करै ॥ बल समेत बरष्यो ब्रज ऊपर बल मोहन को सुधिन करै । हारि मानि इहरो हरि चरणनि हरषि हरषि अब हेतु करै ॥ गरज गरज गहराय गुसा करि गिरि बोरो कहि पयज करै । सूर श्याम गिरिधर करुणा मै तुमविनु को प्रभु क्षमाकरै ॥ ७९ ॥ राग मलार ॥ श्याम गिरि राज को धरो करसो । अतिहि विस्तार अति भार अति तुम बार बाम भुज टेकि लघु जात करसों ॥ कहत सब ग्वाल धनि धन्य नंदलाल ब्रज धन्य गोपाल बल केतिक करसों । धन्य यशुमति मात जन्यो जिनि तुम तात चोरी मांखन खात बांधे करसों ॥ कान्ह हंसि के कह्यो तुम सबनि गिरि गह्यो रह्यो ब्रज हो बह्यो लकुठ करसों । सूर प्रभु के चरित कहाबल गिरि धरत चरण रज लेत सुरराज करसों ॥ ८० ॥ राग सोरठ ॥ जब करतें गिरि धरो उतारि । श्याम कह्यो बहुरो गिरि पूजहु ब्रज जन दुनि सब लयो उबारि ॥ यह सुनतहि मनहरष बढायो किये पकवान संवारि । बहु मिष्टान बहुत बिधि भोजन बहु बिंजन अनुहारि ॥ परुसि धरो गोबर्द्धन आगे जेंवत अति रुचि भारि । सूर श्याम गिरिधर बर मांगति रबिसों घोष कुमारि ॥ ८१ ॥ राग नट ॥ कर तें धरो धरनी धरनि । देखि ब्रजजन थकित ह्वै रहे रूप रति पति हरनि ॥ लेत बैरन धरत जान्यों कहत ब्रज नर घरनि । तनु ललित भुज अतिहि कोमल कियो अति बल करनि ॥ मोरमुकुट बिशाल लोचन श्रवन कुण्डल बरनि । नव जलद सुर चाप को छबि जुगल खंजन तरनि ॥ बरष निझरे मेघ पायक बहुत कीन्हो अरनि । सूर सुर पति हारि मान्यो परो तब हरि चरनि ॥ ८२ ॥ राग सोरठ ॥ नीके धरनि धरो गोपाल । प्रलय जल घन बरषि सुर पति चरण परो बेहाल ॥ करत अस्तुति नारि नर ब्रज नंद अरु सब ग्वाल । जहां तहां सहाय हमको होत हैं नंदलाल जाति पूजत डरत मनमें ताहि देख्यो दीन । चि दशपति सुरनि कों नायक सेा तुमहि आधीन ॥ सूर प्रभु करतें गोवर्द्धन धरनि धरयो उतारि । देखि छबि अति नंद सुत की नारि तन मन वारि ॥ ८३ ॥ राग मलार ॥ मेरे मोहन जल प्रवाह क्यों टारयो । मेघ बर्षा जल बरषि सात दिन नेंक न नयन उघारयो ॥ बूझति मुदित जशोदा जननी इन्द्र कोप करि हारयो । बार बार यह कहत कान्ह सों कैसे गिरि नख धारयो ॥ सुर पति आय परयो गहि पांयन ताकों शरण उबारयो । सूर श्याम जनको सुख दाता करतें धरनि उतारयो ॥ ८४ ॥ राग सोरठ ॥ मेरे सांवरे मैं बलि बलि गई ए भुजाकी । क्यों गिरि सबल धरयो कोमल कर बूझति हों गति ताकी ॥ इन्द्र कोपि बरष्यो ब्रज ऊपर यहि सबहे हठ मारे । गोपी ग्वाल कहत नंद ढोटा तैं हम सबनि उबारे ॥ थार तमोर दूध दधि रोचन हरषि जशोदा लाई । करि सिर तिलक चरण रज बंदति मनों रंक निधि पाई ॥ सब ब्रज नारि चली गोकुल तें माँझ माँझ मुसुकानी । फिरि फिरि दरस करति यही मिस प्रेम तृषा न बुझानी ॥ सूरदास सुरपति शंकित ह्वै सुरनि लिये संग आयो । हों अज्ञान तुम अवनाशी प्रभु में तेरो मरम न पायो ॥ ८५ ॥ राग सोरठ ॥ गिरि कर क्यों राख्यो दिन सात । अतिही कोमल भुजा तुहारी बांपति यशुमति मात ॥ ऊंचो अति

बिस्तार भार बहु यह कहि कहि पछितात । वह अगाध तेरेतनक तनक कर कैसैं राखों तात ॥ मुख चूंमति हरि कंठ लगावति देख हंसत बल भ्रात । सूर श्याम कों केतिक बात यह जननी जोरति है नात ॥ ८६ ॥ राग गौरी ॥ पिता मात इनके नहि कोई । आपुहि करता आपुहि हरता त्रिगुण गयेतें रहत है जोई ॥ कितक बार अवतार लियो ब्रज एहैं ऐसो बोई । जल थल कीट ब्रह्म के व्यापक और न दूनसर होई ॥ बसुधा भार उतारन कारन आपु रहत तन गोई । सूर श्याम माता हितकारी भोजन मांगत रोई ॥ ॥ ८७ ॥ राग कान्हरो ॥ जननी चांपति भुजा श्याम की ठाढ़े देखि हंसत बलराम । चौदह भुवन उदर जाके कहुं गिरिवर धरयो बहुत कर बाम ॥ कोटि ब्रह्माण्ड रोम रो मनि प्रति तहां तहां निशि बासर धाम । जो आवत सो देखि चकृत ह्वै कहत करे हरि ऐसे काम ॥ नाभि कमल ब्रह्मा प्रकटायो देखि जनावत जो बिश्राम । आवत जात बीच हीं भटक्यो दुखित भयो खोजत निज धाम । तिनसों कहत सकल ब्रजबासी कैसे गिरि राख्यो कर श्याम । सूरदास प्रभु जल थल व्यापक फिरि फिरि जनम लेत नंदधाम ॥ ८८ ॥

॥ अथसूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ श्री गोवर्द्धन की दूसरी लीला ॥ * ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

॥ राग बिलावल ॥ नंदहि कहति जशोदा रानी । सुरपति पूजा तुमहिं भुलानी ॥ यह नहि भली तुम्हारी बानी । मैं गृह काज रह्यों लपटानों ॥ लोभहि लोभ रहे हो सानी । देवकाज की सुधि बिसरानी ॥ महरि कहति पुनि पुनि यह बानी । पूजा के दिनपहुंचे आनी ॥ सूरदास जशुमति की बानी । नंदहि खीझिखीझि पछतानी ॥ १ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ नंद कह्यो सुधि भली दिवाई । मैं तो राज काज मनलाई ॥ नित प्रति करत बहै अघमाई । कुल देवता सुरनि बिसराई ॥ कंस दई यह लोग बड़ाई । गांव दसक सरदार कहाई ॥ जलधि बुंद ज्यों जलधि समाई । माया जहं की तहां बिलाई ॥ सूरदास यह कहत नंदराई । चरण तुम्हारे सदा सहाई ॥ २ ॥ राग बिलावल कहति महरि तब ऐसी बानी । इंद्रहि की दीनी रजधानी ॥ कंस करत तुम्हरी अति कानी । यह प्रभु की है आसिख बानी ॥ गोपनि बहुत बड़ाई मानी । जहां तहां यह चलति कहानी ॥ तुम घर मथियें सहस मथानी । ग्वालिनि रहति सदा बितलानी ॥

अन उपजत उनहीं के पानी । ऐसे प्रभु की सुरति भुलानी ॥ सूर नंदमन में तब आनी सत्य कही तुम देव कहानी ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ महरि लियो एक ग्वाल बुलाई ॥ गोपनंद उपनंद बुलाई ॥ अरु आनहु वृषभान लिवाई । तुरत जाहु तुम करहु चंडाई ॥ यह सुनि ग्वाल चल्यो तहं धाई ॥ नंद महरि कों कही सुनाई ॥ नेक करहु अब जिनि बिलमाई । मोहि कह्यो सब देहु पठाई ॥ यह सुनके सब चले अतुराई । मन मन सोच करत पछिताई ॥ कंस काज जिय मांझ डराई । राज अंश धन दियो चलाई ॥ सूरनंद गृह पहुंचे आई । आदर करि बैठे नंद राई ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ गोप सबै उप नंद बुलाये । कोन काज कोंहम हंकराये ॥ सुनतहि तहं सब आतुर आये । कंस कछू कहि मांगि पठाये ॥ यहै जान अति आतुर आये । सब मिलि कह्यो बहुत डर पाये ॥ राजहि राज अंश दै आये । ग्वाल कहत तुरतहि उठ धाये ॥ महर कह्यौ हम तुम डरवाये । हंसि हंसि कहत आनंद बढ़ाये ॥ हम तुम कहां सुख काज भगाये । बार बार यह कहि दुख पाये ॥ सूर नंद पूजा बिसराये । यह सुनतहि सिर सबनि नबाये ॥ ५ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ पूजा सुनत मनहि सुख कीन्हो । भलो करी हमकों सुधि दीन्हों ॥ यह बानी सब सुख ते कीन्हों ॥ बड़ो देव सब दिन को चीन्हों ॥ इनहीं ते ब्रज बास बसो न्हों । हम सब अहिर जाति मति हीन्हों ॥ पूजा को विधि करत सबै मिलि । जैसेहि भांति सदा औई चलि ॥ बिदा मांगि नंद सों घर आये । घरनि घरनि यह बात चलाये ॥ सूरदास गोपिन की बानी । ब्रज नर नारि सबनि यह जानी ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ नंद घरनि ब्रज बधू बुलाई । यह सुनतहि तुरत सब आई ॥ कौन काज हम महरि हंकारी । तुम नहि जानति जोवन भारी ॥ बिहंसि कहति कहा देति हौ गारी । सुरपति पूजा करो संवारी ॥ देखो हम सब सुरति बिसारी । औरें हमहि बूझिये गारी ॥ यह सुनि हरषित भई नंद नारी । सखियनि बचन कह्यो जब प्यारी ॥ सूर इन्द्र पूजा अनुसारी । तुरत करहु सब भोग संभारी ॥ ७ ॥ राग बिलावल ॥ घरनि चली सब कहिजशुमति सों । देव मनावत वचन बिनत सों ॥ तुम बिनु और नही हम जाने । मुखमुख अस्तुति करति बखाने ॥ जहां तहां ब्रज मंगल गाने । बाजत ढोल मृदंग निसाने ॥ बहु बहु भांति करति पकवाने । नेवज करि धरि सांझ बिहाने ॥ छुवत नहीं देव काज सकाने । देव भोग कों रहत डराने ॥ सूर दास हम सुरपति जाने । और कौन ऐसो जेहि माने ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ नन्द महर घर होत बधाई । करत सबै बिधि देवपुजाई ॥ नेवज करति जशोदा आतुर अष्ट सिद्धि घरही अति चातुर ॥ मैदा उज्जल करिकै छान्यो । बेसन दारि चना करि बान्यो ॥ घृत मिष्ठांन सबै परि पूरन । मिश्री करति पाकको चूरन ॥ कंद करति मिठाई घृत पक । रोहिनि करति अन्न भोजन तक ॥ संग और ब्रज नारी लागी । भोजन करती हैं बड़ भागी ॥ महरि करति ऊपर तरकारी । जोरति सब विधि न्यारी न्यारी ॥ सूर दास जो मांगत जबहीं । भीतरतें लै देत हैं सबहीं ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ महरि सबे नेवज लै सैंतति । श्याम छुवै कहुं ताकों डरपति ।

कान्हहि कहति इहां जिनि आवै। लरिकनको यह देव डरावै ॥ श्याम रहे आंगनहि डराई । मन मन कान्ह हंसत सुखदाई ॥ मैंया री मोहि देव दिखैं हैं। इतनों भोजन सब वे खैं हैं ॥ यह सुनि खीझति हैं नंद रानी । बार बार सुत सों बिरुझानी ॥ ऐसी बात न कहौ कन्हाई । तूंकत करत श्याम लंगराई ॥ कर जोरति अपराध क्षमावति । बालक को यह दोष मिटावति ॥ सूर दास प्रभु को नहि जाने । हंसत चले मन मेंन रिसाने ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ जुवती कहति कान्ह रिस पायौ । जान देहु सुरराज बतायो ॥ बालक आय छुवै कहुं भोजन । उनकी पूजा जानैको जन ॥ यह कहि कहि देवता मनावति । भोज सामग्री धरति उठावति ॥ उनकी कृपा धाम धन मेरे । उनकी कृपा गऊ गन घेरे ॥ उनकी कृपा पुत्र फल पायों। देखौ श्यामहि खीझि पठायों ॥ सूर दास प्रभु अंतर जामी । ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ नंद निकट तब गये कन्हाई । सुनत बात जहां इन्द्र पुजाई । महर नंद उप नंद तहां सब ॥ बोलि लये दधि भान महर तब । दीप मालिका रचि रचि साजत ॥ पहुपमाल मंडली बिराजत । बरष सातके कुंवर कन्हाई ॥ खेलत मन आनंद बढाई । घर घर देति जुवति जन हाथ ॥ पूजा देखि हंसत व्रज नाथ । मो आगें सुर पति की पूजा ॥ मोतें और देवको दूजा । शत शत इन्द्र रोंम प्रति रोंमनि ॥ शत रोमनि मेरे एक रोंमनि । सूर श्याम ए मनसों बातें ॥ लीन्हों भोग बहुत दिन जातें ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ सुरपति पूजा जानि कन्हाई । बार बार बूझत नंदराई । कौन देवकी करत पुजाई ॥ महर कह्यो तब कान्ह सुनाई । सुरपति सब देवन को राई ॥ तिनको पूजा करत सदाई ॥ तुम्हरेहि हित मैंकरत सदाई । जातें तुम रहौ कुशल कन्हाई ॥ सूर नंद कहि भेद बताई । भीरि बहुत घर जाहु कन्हाई ॥ १३ ॥ राग बिलावल ॥ जाहु घरहिं बलिहारी तेरी । सेज जाय सावहु तुम मेरी ॥ मैं आवत हौं तुम्हरेहि पाछें । भवन जाहु तुम मेरे बाछें ॥ गोपनि लीने कान्ह बुलाई । मंच कहो एक मनहि समाई ॥ आजु एक सपने कोउ आयो । शंखचक्र भुज चारि बनायो ॥ मोसों यह कहि कहि समुझायो । यह पूजा किन्ह तुमहि सिखायो । सूर श्याम कहि प्रकट सुनायो । गिरि गोवर्द्धन देव बतायो ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ यह तब कहन लगे दिबिराई । इन्द्रहि पूजे कौन बड़ाई । कोटि इन्द्र हम छिन में मारैं ॥ छिनही में पुनि कोटि संवारैं । जाके पूजे फल तुम पावहु । ता देवहि तुम भोग लगावहु । तुम आगे वह भोजन खैहै ॥ मुह मांगे फल तुमकों दैहै । ऐसो देव प्रकट गोवर्द्धन । जाके पूजे बाढै गोधन । समुझि परी कैसी यह बानी । ग्वाल कही यह अकथ कहानी ॥ सूरश्याम यह सपनों पायो । भोजन कौने देवहि खायो ॥ ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ मानऊ कह्यो सत्य मम बानी । जो चाहौ व्रजको रजधानी ॥ जौ तुम मुह मांगे फल पावऊ । तौ तुम अपने करनि जिंवावऊ ॥ भोजन सब खैहै मंह मागे । पूजत सुरपति तिनके आगे ॥ मेरी कही सत्य कै मानहु । गोवर्द्धन की पूजा ठानहु ॥ सूर श्याम कहि कहि समझायो । नन्द गोप सब के मन आयो ॥ १६ ॥ राग

बिलावल ॥ सुरपति पूजा मेटि कन्हाई । गोवर्द्धन को करत पुजाई ॥ पांच दिनालों करी मिठाई । नन्द महर वरकी ठकुराई ॥ जाके घर धनि महरि जशोदा । अष्ट सिद्धि नव निधि चहुं कोदा ॥ घृत पक बहुत भांति पकवान । ब्यंजन बहु को करै बखान ॥ भोग अन्न बहु भार सजाई । अपने कुल सब अहिर बुलाई ॥ सहस सकट भरि भरत मिठाई । गोवर्द्धन की प्रथम पुजाई ॥ सूर श्याम यह पूजा ठानी । गिरि गोवर्द्धन की रजधानी ॥ ॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ व्रज घर घर सब भोजन साजत । सबके द्वार बधाई बाजत ॥ शकट जोरि लै चले देव बलि । गोकुल व्रज बासी सब हिलि मिलि ॥ दधि लोनी मधु साजि मिठाई । कहां लगि कहों सबै बहुताई ॥ घर घरतें पकवान चलाये । निकसि गांव के गोइरुडे आये ॥ व्रज बासी तहां जुरे अपारा । सिन्धु समान न बारन पारा ॥ पैडे चलन नहीं कोउ पावत । शकट चले सब भोजन आवत ॥ सहस शकट चले नंद महर के । अवर शकट कितने घर घरके ॥ सूर दास प्रभु महिमा सागर । गोकुल प्रकटे हैं हरि नागर ॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥ एक आवत घरते चलि धाय । एक जात फिरि घरहि समुदाय ॥ एक टेरत एक दौरे आवत । एक गिरावत एक उठावत ॥ एक कहत आवहु रे भाई । बैल देत है शकट गिराई ॥ कौन काहि कों कहै संभारैं । जहां तहां सबलोग पुकारैं ॥ कोउ गावत कोउ निर्त्तत आवै । श्याम सखा संग खेलत भावै ॥ सूर दास प्रभु सबके नायक । जो मन धरैं सो करिबे लायक ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ सजि शृंगार चलीं व्रज नारी । युवतिन भीर भई अति भारी ॥ जग मगात अगनित प्रति गहनों । सब के भाव दरस हरि लहनों ॥ यहि मिस देखनको सब आई । देखति एकटक कुंवर कन्हाई ॥ वह नहि जानति देव पुजाई । केवल श्यामहि सों लौलाई ॥ को मगजात कहांको बोलत । नन्द सुवन तें चित नहि डोलत ॥ सूर भजै हरि जो जेहि भाऊ । मिलत ताहि प्रभु तेहि सुभाऊ ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ नन्द गोप उपनंद गये तहां । गिरि गोवर्द्धन देव बड़े जहां ॥ सिखर देखि सब रीझे मन मन । ग्वाल कहत आजुहि अचरज बन ॥ अति ऊंचे गिरि राज बिराजत । कोटि मदन निरखत छबि लाजत ॥ पहुंचे शकटनि भरि भरि भोजन । कोउ आये कोउ नहि कहुं खोजन ॥ तिनके काज अहीर पठाये । विलम्ब करहु जिनि तुरत धवाये ॥ आवत मारग पाये तिनकों । आतुर ह्वै बोले नंद जिन कों ॥ तुरत लिवाय तिनहि तहं आये । महर मनहि अति हरष बढ़ाये ॥ सूर दास प्रभु तहां अधिकारी । पूजत हैं पूजा परकारी ॥ २१ ॥ राग बिलावल ॥ आय जुरे सब व्रज के बासी । डेरा पर्‌यो कोस चौरासी ॥ एक फिरत कहुं ठौर न पावै । एतेपर आनंद बढ़ावैं ॥ कोउ काहू सों वैरन ताके । बैठत मन भावत जहं जाके ॥ खेलत हंसत करत कूतूहल । जुरे लोग जहं तहां अकूहल ॥ नन्द कह्यो सब भोग मंगावहु । अपने अपने सब लै आवहु ॥ भोग बहुत वृषभानहि घरको । को कहि बरने अतिहि अवर को ॥ सूर श्याम जब आइसु दीनों । विप्र बोलाय नन्द तब लीनों ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ तुरत तहां सब विप्र बोलाये । यज्ञा रम्भन तहां कराये ॥ श्याम वेद द्विज गान करत तहां । देखत सुर विधके अम्बर महां ॥ सुरपति पूजा तबहि मिटाई । गिरि गोवर्द्धन को तिलक

चढाई ॥ कान्ह कह्यौ गिरि दूध न्हवावहु । बड़ो देवता इनहि मनावहु ॥ गोवर्द्धन दूधहि न्हवाये । देव राज कहि मांथ नवाये ॥ नयो देवता कान्ह पुजावत । नर नारी सब देखन आवत ॥ सूर श्याम गोवर्द्धन थाप्यौ । इन्द्र देखि रिस करि तब कांप्यौ ॥ २३ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ देखि इन्द्र मन गर्ब बढायो । इन लोगनि मोकों बिसरायो ॥ अहिर जाति ओछी मति कीन्ही । मेरी पूजा गिरिको दीन्ही ॥ पूजत गिरिहि कहा मति आई ॥ गिरि समेत ब्रज देउ बहाई ॥ देखौ धौं कितनों सुख पैहै । मेरे मारत काहि बचै है । पर्वत तब इनको क्यों राखत । बार बार यह कहि कहि भाखत ॥ पूजा गिरि अति प्रेम बढाये । सपने को सुख लेत मनाये ॥ सूर दास सुरपति की बांनी । ब्रज बोरों परलय के पानी ॥ २४ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम कह्यो तब भोजन ल्यावहु । गिरि आगे सब आनि धरावहु ॥ सुनत नन्द तहां ग्वाल बुलाये । भोग सामग्री सबै मंगाये ॥ षटरस के बहु भांति मिठाई । अन्न भोग अतिही बहुताई ॥ ब्यञ्जन बहुत भांति परु साजो । दधि नव नी मधु माठ धरायो ॥ दही बरा बहुते परुसाये । चन्दहि सम षटतरतें पाये ॥ अन्न कूट जैसो गोवर्द्धन । अरु पकवान धरे चहुं कोदन ॥ परुस भोजन प्रातहि ते सब । रवि माथे तें ढरकि गयो अब ॥ गोपनि कह्यो श्याम ह्यां आवहु । भोग धरयौ सब गिरिहि जेंवा वहु ॥ सूर श्याम आपु नहीं भोगी । आपुहि माया आपुहि जोगी ॥ २५ ॥ राग बिला वल ॥ कान्ह कह्यौ नन्द भोग लगावहु । गोप महर उपनन्द बुलावहु ॥ नयन मूंदि कर जोरि मनावहु । प्रेम सहित देवे हि चटावहु ॥ मनमें नेक खुटुक जिनि राखहु । दीन बचन मुखतें तुम भाखहु ॥ ऐसी विधि गिरि परसन ह्वैहै । सहस भुजा धरि भोजन खै है ॥ सूर दास प्रभु आप पुजावत । यह महिमा कैसे कोउ पावत ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम कही सोई सोई मानी । पूजा की बिधि अब हम जानी ॥ नयन मूंदि कर जोरि बुलायो । भाव भक्तिसों भोग लगायो ॥ बड़ो देव गिरि राज सबनि कै । भोजन करहु कृपा करि करिकै ॥ सहस भुजा धरि दरशन दीनों । जै जै धुनि तब देवन कीनों ॥ भोजन करत सबनि के आगे । सुर नर मुनि सब देखन लागे ॥ देखि थकित सब ब्रज को बाला । देखत नन्द गोप सब ग्वाला ॥ सूर श्याम जनके सुखदाई । सहस भुजा धरे भोजन खाई ॥ २७ ॥ राग बिलावल ॥ जेंवत देव नंद सुख पाये । कान्ह देवता प्रकट दिखाये ॥ ब्रज बासी गिरि जेंवत देखै । जीवन जनन सुफल करि लेखै ॥ ललिता कहति राधिका आगे । जेंवत कान्ह नन्द कर लागे ॥ मैं जानी हरिकी चतुराई । सुर पति मेटि आपु बल पाई ॥ उत जेंवत इत बातनि लागे । कहत श्याम गिरि जेवन लागे मैं जो बात कही सो आई । सहस भुजा धरे भोजन खाई ॥ और देव इनकी सरि नाहीं । इत बोधत उत भोजन खाहीं ॥ सूरदास प्रभुको यह लीला । सदा करत ब्रजमें यह क्रीला ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ यह छबि देखि राधिका भूली । बात कहति सखियनिसों फूली ॥ आपुहि देवा आपु पुजेरी । आपुहि जेवत भोजन ढेरी ॥ अति आतुर जेंवत है भारी । ऐक दृष्भांन बिलोवनि हारी ॥ नांम ताहि बद रौला नारी ताकी बलि लई भुजा पसारी ॥ उत गिरि सबै खात बज सारी । बद रौला की बलि

रुचि कारी ॥ सूरदास प्रभु जेवन हारो । गिरिवपुरैं सो कौन अधिकारो ॥ २९ ॥ राग बिलावल ॥ इतहिं श्याम गोपिन संग ठाढे । भोजन करत अधिक रुचि बाढे ॥ गिरि तन शोभा श्याम बिराजै । श्यामहि छबि गिरिवर को छाजै ॥ गिरिवर उरहि पीतांबर डारै । मोतिन की माला उर भारे ॥ अंग भूषन श्रवणनि मणि कुण्डल । मोर मुकुट सिर अलक है झुंडन ॥ छबि निरखति सब गोप कुमारी । गोवर्द्धन छबि श्याम तुम्हारो ॥ सूर श्याम लीला रसनायक । जनम जनम भक्तनि सुखदायक ॥ ३० ॥ राग बिलावल ॥ भोजन करत देव भये पर सन । मागहु नन्द तुम्हारे जो मन ॥ भली करी तुम मेरी पूजा । सेवक तुमतें और न दूजा ॥ जोई मागै सोइ फल हम दैहैं । जहां भाव ताही पैरै हैं ॥ मैं सेवा वस भयो तुम्हारे । जो फल चाहो लेहु सवारे ॥ यह सुनि चकृत भये नर नारी । भोजन कियो प्रथमही भारी ॥ अब देखौ मुख बात कहत हैं । ऐसे देव कहीं त्रिभुवन हैं ॥ कान्ह कह्यो कछु मांगहु इनसों । गिरि देवता देव परसन सों ॥ सूर श्याम देवता आपु हैं । व्रज जनके ए हरत तापु हैं ॥ ३१ ॥ राग बिलावल ॥ नन्द कह्यो कहा मांगे स्वामी । तुम जानत सबअन्तर यामी ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि तुम दीनी । कहा सिंधु तुमरोई कीनी ॥ कुशल रहैंबलराम कन्हाई । इनही कारन करत पुजाई ॥ देवनि की मनि गिरिवर तुमहौ । जहां तहां व्यापक पूरन हौ ॥ तुम हरता तुम करता सबके । देखि थकित नरनारि नगरके ॥ बड़ो देवता श्याम बतायो । प्रकट भये सब भोजन खायो ॥ सूर श्याम के जो मन आवै सोइ सोइ नाना रूप बनावै ॥ ३२ ॥ राग बिलावल ॥ मांगि लेहु कछु और पदारथ । सेवा सबै भई अब स्वारथ ॥ फल मांग्यो बलराम कन्हाई । ये दोऊ रहैं कुशल सदाई ॥ इनहींतें तुम हमको जान्यो । तब तुम गिरि गोवर्द्धन मान्यो ॥ करत अबिर्थी इन्द्र पुजाई । मेरी दीनी है ठकुराई ॥ काहू तुम्हारो मोको जाने । इनको रैहो तुम सब माने ॥ इन्द्र आय चढि है ब्रज ऊपर । यह कहिहै महि राखो भूपर ॥ नेक कछू नहि वासों ह्वै है । श्याम उठाय मोहि तबलै है ॥ सूर श्याम गिरिवर की बांनी । व्रजजन सुनत सत्य करि मांनी ॥ ३३ ॥ राग बिलावल ॥ कौतुक देखत सुर नर भूले । रोम रोम गद गद सब फूले ॥ सुर बिमान सुमननि बरषाये । जै धुनि सब्द देव नर गाये ॥ देव कह्यो व्रज बासिनिसों तब । पूजा भली करी मेरी सब ॥ जाहु सबै मिलि सदन को सुख । श्याम कहे गिरि गोवर्द्धन मुख ॥ ग्वाल करत अस्तुति सब ठाढे । भाव प्रेम सबके चित बाढे ॥ भवन जाहु कहे श्री मुखवानी । भोजन सेष श्याम कर आनी ॥ बांटि प्रसाद सबनि को दीनो । व्रजनारी नर आनन्द कीनो ॥ सूर श्याम गोपनि सुखकारी । चलो कह्यो व्रज को नर नारी ॥ ३४ ॥ राग बिलावल दोऊ करजोरि भये सब ठाढ़े । धन्य धन्य भक्तनि कों बाढ़े ॥ तुम भोक्ता तुमहो प्रभु दाता । अखिल ब्रह्मांड लोक के ज्ञाता ॥ तुमको भोजन कोन करावै । हित के बस तुमको कोउ पावैं ॥ तुम लायक हमरे कछु नाहीं । सुनत श्याम ढाढ़े मुसकांहीं ॥ ललिता सखी देवता चीन्हों । चन्द्रावलि राधे कहि दीन्हों ॥ देव बड़ो यह कुंवर कन्हाई । कृपा जानि हरि ताहि चिन्हाई ॥ सूर श्याम कहि प्रकट सुनाई । भये हम भोजतबन

राई ॥ ३५ ॥ राग बिलावल ॥ परसत चरण चलत सब घर को ॥ जात चले सब घोष सहर कों ॥ सुख समेत मग जात चले सब । दूनी भीर भई तब तें अब ॥ कोउ आगे कोउ पाछें आवत । मारग में कहुं ठौर न पावत ॥ प्रथमहि गये ठहरतनि पाये । पाछे लोगनि जिय पछतायें ॥ घर पहुंचे अबही नहिं कोई । मारग में अटके सब लोई । डेरा परयौ कौस चौरासो । इतने लोग जुरे ब्रजबासी ॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत । कतिक दूरि ब्रज पूछत आवत ॥ सूरश्याम गुण सागर नागर । नूतन लीला करी उजागर ॥ ३६ ॥ राग बिलावल ॥ कोउ पहुंचे कोउ मारग मांहीं । बहुत गये घर बहुत कजांही ॥ काहू के मन कहुं दुख नाहीं ॥ परस्परहि हंसि हंसि लपटाहीं । आनद करत सबै ब्रज आये । निकटहि आय लोग नियराये ॥ भीर बहुत भई खोरि जहां तहं ॥ जैसे नदी मिलत सागर महं । नर नारी सरिता सब आगर ॥ सिंधु मनो यह भयो उजागर । गोप महरि सब रतन कुमारी । चन्द्र बदनि राधा सुकुमारी ॥ सूर श्याम आये नंद साला ॥ पहुंचे घरनि आय नंद बाला ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ बड़ो देवता कान्ह पुजायो । ग्वाल गोप हंसि अंक मिलायो । कान्ह धन्य धनि जशुमति जायो । धन्य नंद जिन तुम सुत पायो ॥ धनि धनि देव प्रकट दरसाये । मांगि मांगि कें भोजन खाये ॥ पूजा मेटि इन्द्र गिरि पूज्यो । परशन हमहि सदा प्रभु हूज्यो ॥ कहा इन्द्र वपुरो केहि लायक । गिरि देवता सबहि के नायक ॥ सूर दास प्रभु के गुण ऐसे । भक्तनि बस दुष्टनि कों नैसे ॥ ३८ राग बिलावल ॥ हरि सबके मन यह उपजाई । सुर पति निंदति गिरिहि बड़ाई ॥ बरष बरष प्रति इन्द्र पुजाई । कबहूं परशन भयो न आई पूजि रहे सुअबिर्था सुरपति । सब सुख यह बानों घर घर प्रति ॥ बड़े देव ये गिरि गोवर्द्धन । यहै कहत गोकुल ब्रज पुरजन ॥ तहां दूत एक इन्द्र पठायो । ब्रज को सुख देखन वह आयो ॥ घर घर बात कहत नर नारी । दूत सुन्यो सो श्रवण पसारी ॥ मानत गिरि निंदति सुरपति कों । हंसत दूत ब्रज लोगनि मतिकों ॥ सूर सुनत दूतनि रिस पायो । उठि तुरतहि सुर लोकहि आयो ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रह्म दई जाकों ठकुराई ताकी मति इनके मन आई ॥ शिव बिरंचि जाकों कहें लायक । जाके हैं मघवा से पायक यह कहतहि आये सुर लोकहि । पहुंचे जाय इन्द्र के आकहि ॥ दूतनि बैसिय जाय सुनाई । पूछि उठे ब्रज की कुशलाई ॥ दूतनि ब्रज की बात सुनाई । तुमहि मेटि पूज्यो गिरि जाई ॥ तुमहि निंद गिरिवरहि बड़ाई । यह सुनतहि रिस देह कंपाई ॥ सूरश्याम यह बुद्धि उपाई । ज्यों जाने ब्रज में यदुराई ॥ ४० राग बिलावल ॥ ग्वालनि मोसों करी ढिटाई । मोकों अपनी जात दिखाई ॥ तेतिस कोटि सुरनि को राई । तीनभुवन भरि चलति बड़ाई ॥ साहिब सों जोरो करे धाई । ताकों नहि कोउ पतिआई ॥ इन अपनी परतीति चलाई । काहू इनहि दियो बहकाई ॥ ऐसी मति इन अबकें पाई । काकी शरण रहेंगे जाई ॥ इन दोनों मोकों बिसराई । नन्द आपनी प्रकृति गंवाई ॥ जानी बात बढ़ाई आई । अहिर जाति कोउ नहि पतिआई ॥ मात पिता नहि माने भाई । जानि बूझि इन करी ढिटाई ॥ मेरो बलि पर्बतहि चढाई । सूर दास सुरपति रिस

पाई । कीडी तन ज्यों पांख उपाई ॥ ४१ ॥ राग बिलावल ॥ मोकों निंद पर्वतहि बंदत । चारा कपट पंछि ज्यों फंदत ॥ मरन काल ऐसी बुधि होय । कछू करत कछू वे वह होय ॥ खेलत खात रहे ब्रजभीतर । नान्हे लोग तनिक धनईतर ॥ समय समय बरषों प्रति पालों । इनकी बुद्धि इनकों अब घालों ॥ मेरे मारत कौन राखिहै । अहि रनि के मन यहै काखिहै ॥ जो मन जाके सोइ फल पावै । नीव लगाय आँव क्योंखावै विषको वृक्ष विषहि फल फलिहै । तासें दाख लहै क्यों मिलिहै ॥ अग्नि बरत देखत करनावै कहा करै तेहि अग्नि जरावै ॥ सूरदास यह सब कोऊ जाने । जो जाको सोताको माने ॥ ४२ ॥ राग बिलावल ॥ पर्वत पहिलहि खोदि बहाऊं । बज्रनि मारि पताल पठाऊं ॥ फूलि फूलि जेहि पूजा कीन्हों । नेक न राखों ताकों चीन्हों ॥ नन्द गोप नयननि यह देखै । बड़े देवता कों सुख पेखै ॥ निंदत मोहि करै गिरि पूजा । जासों कहत और नहि दूजा ॥ गर्व करत गोवर्द्धन गिरि को । पर्वत मांझ आहि बहांकिरि को ॥ डुगर को बल उनहि दिखाऊं । तापाछें ब्रज खोदि बहाऊं ॥ राखों नहि काहू सब मारों । ब्रज गोकुल को खोज निवारों ॥ को जानै कहां गिरि कहं गोकुल । भुव पर नहि राखों उनको कुल ॥ सूर दास यह इन्द्र प्रतिज्ञा । ब्रज बासिन सब करी अवज्ञा ॥ ४३ ॥ राग बिलावल ॥ सुरपति क्रोध कियो अति भारी । फरकत अधर नयन रत नारी ॥ भूतनि बुलाये दै दै गारी । मेघन ल्यावहु तुरत हंकारी ॥ एककहत धायेसै चारी । अति डर पै तनकी सुधि हारी ॥ मेघ वर्त्त जल वर्त्त बुलावहु । सेना साजि तुरत लै आवहु ॥ कापर क्रोध कियो अमरापति । महा प्रलय जिय जानि डरे अति ॥ मेघन सों वह बात सुनाई । तुरत चलो बोलें सुर राई । सैना सहित बुलाये तुमकों । रिस करि तुरत पठाये हमकों ॥ बेगि चलहु कछु बिलम्ब न लावहु । हमहि कह्यो अबही लै आवहु ॥ मेघ वर्त्त सब सैन बुलाये । महा प्रलय के जे सब आये ॥ कछु हरषे कछु मनहि सकाने । प्रलय आइ की हमहि भुलाने ॥ मेघ वर्त्त जलवर्त्त वारि वर्त्त । अनिल वर्त्त नल वर्त्त वज्र वर्त्त ॥ बोलत चले आपनी बानी । प्रभु सनमुख सब पहुंचे आनी ॥ गरजि तरजि गहरातहि आये । सूरदेव कहि मांथ नवाये ॥ ४४ ॥ राग बिलावल ॥ चितवत ही सब गये भुराई । सकुचि कह्यो कापर रिस राई ॥ छमा करहु आयसु हम पावहिं । जा पर कहो ताहि पर धावहिं ॥ सैन सहित प्रभु हमहि बुलाये । आज्ञा सुनत तुरत उठि धाये ॥ ऐसो कौन जाहि प्रभु कोपे । जीव नाम सब तुमरेहि रोपे ॥ सूर कही यहमेघनि बानी । यह सुनि सुनि रिस कछुक बुझानी ॥ ४५ ॥ राग बिलावल ॥ मेघनि सों बोले सुर राई । अहिरनि मोसों करी ढिटाई । मेरी दीनी करत बड़ाई ॥ जानि बूझि मोहि दियो भुलाई ॥ सदा करत मेरी सेवकाई । अब सेवत पर्वत कोजाई । एही काज तुमको हंकरायो ॥ भली करी सैना लै आयो । गाय गोप ब्रज सबै बहा बहु ॥ पहिले पर्वत खोदि ढहावहु । जब यह सुनी इन्द्रकी बानी । मेघनि के मन धीरज आनी । सूर दास यह सुनि घन तमके । कापर क्रोध करत प्रभु जमके ॥ ४६ ॥ राग बिलावल ॥ रिस नायक तापर रिस कीजै । जेहि

रिसतें प्रभु देहीं छीजे । तुम प्रभु हमसे सेवक जाकै । ऐसो कोन रहे तुम ताकै ॥ छिनही में व्रज धेाय बहावैं । डूंगर को नहि नाउ बचावैं । आपु छमा करिये दिखिराई । हम करिहैं उनकी पहुनाई । यह सुनिके हरषित वितकीनों । आदर सहित पान फिर दीनों । प्रथमहि देहु पहार बहाई । मेरी बलि उनही सब खाई । सूर इन्द्र मेघनि समुझावत । हरषि चले घन आदर पावत ॥ ४७ ॥ राग बिलावल ॥ आयसु पाय तुरतही धाये ॥ अपनी सेना सबनि बुलाये । कह्यो सबनि व्रज ऊपर धावहु । घटा छोर करि गगन छपावहु । मेघ वर्त्त जल वर्त्तक आगें । और मेघ सब पाछें लागे । गरजि उठे व्रज ऊपर जाई । शब्द कियो आघात सनाई । व्रजके लोग डरे अति भारी । आजु घटा देखियत हैं कारी । देखत देखत अति अधिकायो । नेकहि में रवि गगन छपायो । ऐसे मेघ कबहुं नहि देखे । अति कारे काजर अवरेखे । सुनहु सूर यह मेघ डरावन । व्रज बासी सब कहत भयावन ॥ ४८ ॥ गरजि गरजि व्रज घेरत आवै तड़पि तड़पि चपला चमकावै । नर नारी सब देखत ठाढे । यह बादर प्रलय के काढे । दरदरात घहरात प्रलय अति ॥ गोपी ग्वाल भये औरे गति । कहा होंन अबही अब चाहत । जहं तहं लोग यहैं अब गाहत । खन भीतर खन बाहेर आवत । गगन देखि धीरज बिसरावत । सूर श्याम यह करी पुजाय ॥ तातें सुरपति चढ्यो रिसाय ॥ ४९ ॥ राग बिलावल ॥ फिरत लोग जहं तहं बित तातें । कोहैं अपने कोन बिराने ग्वाल गये जे धेनु चरावन । तिनहि परयो बन माझ परावन । गाय वच्छ कोउ नही संभारे । प्रलय कालके जलद निहारे । भागे आवत व्रज ही तनको । बिपति परी अति वन ग्वालनको । अंध धुंध मग कहूं नसूझै । व्रज भीतर व्रजही को बूझै । जैसें तैसें व्रज पहिचानत । अटकरही अटकर करि आनत । खोजत फिरैं आपने घरकों । कहा भयो आधोष सहरको । रोवत डोलैं घरहि नपावैं । घर द्वारें घरको बिसरावैं । सूर श्याम सुरपति बिसरायो । गिरिके पूजे यह फल पायो ॥ ५० ॥ राग बिलावल ॥ जमुना जलहि गई जेनारी । डरि चली सिर गागरि भारी देखो मैं बालक कत छाड्यो । एक कहति आंगन दधि माड्यो । एक कहति मारग नहि पावति । एक सामहे बोलि बतावति । व्रज के बासी सब अकुलाने । काहिहि पूज्यो फल्यो बिहाने । कहां रहे अब कुंवर कन्हाई । गिरि गोवर्द्धन लेहु बुलाई ॥ जेवन सहस भुजा धरि आवै । आवहु भुज हमकों दिखरावै । ऐ देवता खातही लोको । पाछे पुनि तुम कोन कहांके । सूर श्याम सपनो प्रकटायो । घरको देव सबनि बिसरायो ॥ ५१ ॥ राग बिलावल ॥ गरजत घन अतिही घहरावत । कान्ह सुनत आनंद बढावत । कौतुक देखत व्रज लोगनिके । निकट रहत संगही संग जनके ॥ एक सैंतत घरके सब बासन । लीने फिरत घरही के पासन । एक कहति जिनकी नहि आसा । देखत सबे दुष्टके नासा । सूर श्याम जानत ए गासा । कहा पानी कहा करे हुतासा ॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥ मेघ वर्त्त मेघनि समुझावत । बार बार गिरि तनहि बतावत । पर्वत पर बरखहु तुम जाई । यहे कही हमपर सुर राई ॥

ऐसे देहु पहाड़ बहाई । नाउ रहे नहि ठौर जनाई । ताको फल पावै गिरि राई । जेवत कांख्हि अधिक रुचि पाइ । सलिल देहु जे तृषा बुझाई । खायो है बहु पेट अघाई दिना चारि रहते जग ऊपर । अब न रहन पावैंगे भूपर । सूर मेघ सुरपतिहिं पठाये । व्रजके लोगनि तुमहि बिहाये ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ॥ बरषत हे घन गिरिके ऊपर । देखि देखि व्रज लोग करत डर । व्रज बासी सब कान्ह बतावत । महा प्रलय जल गिरिहि ढहावत । झर झरात झरपत झर लावत । गिरिहि धाय व्रज ऊपर आवत । बिकल देखि गोकुलके बासी । दरस दियो सबको अबिनासी । अबिनासी को दर्सन पायो । तब सब मन परतीत बढायो । नंद जशोदा सुत हित जाने । और सबे मुख अस्तुति गाने । बरखत गिरि झरपत व्रज ऊपर । सो जल जहं तहं परत है भूपर । सूर दास प्रभु राखि लेय अब । जैसे राखे अघा बदन तब ॥ ५४ ॥ राग बिलावल ॥ राखि लेहु अब नंद कुमार । गो सुत गाय फिरत बिकरार । बरसत बुंद लगत जनु सायक । राखि लेहु व्रज गोकुल नायक । तुम बिन कोन सहाय हमारे । नंद सुवन अब शरण तुम्हारे । शरण शरण जब व्रज जन बोले । धीर बचन देते दुख मोले । तब हंसि बोले कृष्ण मुरारी । गिरि कर धरि राखों नर नारी । सूर श्याम चितये गिरिबर तन । बिकल देखि गो गोसुत व्रज जन ॥ ५५ ॥ राग बिलावल ॥ गोबर्द्धन लीनों उचकाई । देखि बिकल नर नारि कन्हाई । अपने सुख व्रज जन बितताये । बूंद छयुक व्रज पर बरखाये । बे डरपत आपुन हरषत मन । राखे रहे जहां तहां व्रज जन । घरिक देखि मनही सुख दीनों । बाम भुजा गिरिबर करलीन्हों । सूर श्याम गिरिकर जहि राख्यो । धीर धीर कहि सबसों भाष्यो ॥ ५६ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम धरयो गिरि गोबर्द्धन कर । राखि लिये व्रजके नारी नर । गोकुल व्रज राख्यो सब घर घर । आनंद करत सबै ताही तर । बरषत मुसल धार मघ बावर । बूंदन आवत नेकहु भूपर । धार अखंडित बरषत है झर । कहत मेघ धों बहु व्रज गिरिबर । सलिल प्रलै कोटूटत तरतर । बजत शब्द बदरन को धर धर । बे जानत जल जात हैं दरदर । बीचहि जरत जात जल अंबर । सूर दास प्रभु कान्ह गर्ब हर । बरषत कहतगयो गिरिको जर ॥ ५७ ॥ रागबिलावल ॥ बोलि लियेसब ग्वाल कन्हाई । टेकहु गिरि गोबर्द्धन राई । आजु सबे मिलि होहु सहाई । हंसत देखि बलराम कन्हाई । लकुट लिये कर टेक न जाई । कहत परस्पर लेहु उठाई । बरषत इन्द्र महा झर लाई । अति जल देखि सखा डर पाई । नंद नंदन बिन को गिरि धारे । ऐसे बल बिनु कौन संभारे । नखके सिरै कोन पुनि राखै । बार बार कहि कहि यह भाषै । सूर श्याम गिरिबर कर लीनों । बरषत मेघ चकृत मन कीनों ॥ ५८ ॥ बात कहत आपुस में बादर । इन्द्र पठाए करि हम आदर । अब देखियत कछु होत निरादर । बरषि बरषि घन भैमन कादर ॥ खीझत कहत मेघ सबही सों । बरषि कहा कीन्हों तबही सों ॥ महाप्रलय के जल कहं सोवत । डारि देहु व्रजपर कह तोकत ॥ क्रोध सहित फिरि बरष न लागे । व्रजवासी आनन्द अनुरागे ॥ ग्वाल कहत तुम धन्य कन्हैया । बाम भुजा गिरि

लियो उठैया ॥ सूर श्याम सरि कोऊ नाहीं । बरषत घन गिरि देखि खिसाही ॥ ५९ ॥
॥ राग बिलावल ॥ प्रलय मेघ आए छिवाने । आपुसही में सबै रिसाने ॥ सात दिवस जल बरषि बढ़ाने । चकृत भये तन सुरति भुलाने ॥ फिर देखत जल कहां डराने । महा प्रलय को सबनि भुलाने ॥ झूरि झूरि बादर छितराने । बूंद नहीं घन नेक बचाने ॥ जलद आपुन कों धुनि कर मानें । फिरि सब चले अतिहि बिकलानें ॥ सूरश्याम गोवर्द्धन रानें । सूरख इन्द्र अजहुं नहिं मानें ॥ ६० ॥ राग बिलावल ॥ मेघ चले मुख फेरि अमरपर । करी पुकार जाय आगे सुर । श्रम तें टूटि गये सबके उर ॥ जलबिन भये सबै घन धूंधुर । को मारो की शरण गयारौ । हम में कहा कह्यो अब गारौ ॥ जहंतहं बादर रोवत बोले । श्रम अपनों प्रभु आगे खोले ॥ सात दिवस नहिं मिटी लगारा । बरष्यो सलिल अखंडित धारा ॥ महाप्रलय जल नेक न उबरयो । ब्रजबासिन नीको अब निधरयो वैसोई गिरि वैसेइ ब्रजवासी । नेक बूंद नहिं धरनि प्रकासी ॥ सूर सुनत सुरपति परयो उदासी । देखहु यों आए जल रासी ॥ ६१ ॥ राग बिलावल ॥ चकृत भयो ब्रज बात सुनाई । पुनि पुनि पूछत मेघ बुलाई ॥ कहां गयो जल प्रलय काल को । कहा कहीं सब तन बिहाल को ॥ कहा करैं अपनो बल कीनों । ब्याकुल रोय रोय तब दीनों ॥ दण्ड एक बरषे मन लाई । पूरन होत गगन लों आई ॥ पर्वत में कोहे औतारा । सुरपतिमन यह करत बिचारा ॥ सूर इन्द्र सुरगण हंकराए । आज्ञा सुनत तुरत सब आए ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ सुरपति आगे भए सब ठाढे । चिंता सबहिन के मन बाढे ॥ कौन काज सुरराज बुलाए । सकुच सहित पूछत सब आए ॥ कहा कहों कछु कहत न आवै । मेघ बनि को गति सरनि बतावै ॥ ब्रजवासी मोकों बिसरायो । भोजन है अब गिरिहि चढ़ायो॥ मोकों मेटि पर्वतहि थाप्यौ । तब मैं थर थराय रिस कांप्यौ ॥ सूर दास यह सुरनि सुनाई ता कारज तुमहि लिये बुलाई ॥ ६३ ॥ राग बिलावल ॥ सुरनि कही सुरपति के आगे । मनसुख होत सकुच हमैं लागे ॥ सकुचत कत सो बात सुनावहु । मोके करि मोकों समुझावहु ॥ मोकों भांति सुनों सुर राई । ब्रज में ब्रह्म प्रकट भए आई । तुम जानत जब धरनि पुकारी । पापहि पाप भई अति भारी ॥ पैठे शेष संग श्री प्यारी । ते ब्रज भीतर रहे बपुधारी ॥ ब्रह्म कथा कहि आदि पसारी । तिनसों हम कीनी अधिकारी ॥ सूरदास प्रभु गिरि कर धारी । यह सुनि इन्द्र डरयो अति भारी ॥ ६४ ॥ राग बिलावल ॥ यह मोकों तबही न सुनाई । मैं बहुतै कीनी अधमाई ॥ पूरन ब्रह्म रहे ब्रज आई । काहू ने मोहि सुधि न दिवाई ॥ सुरनि कही नहिं करी भलाई । यह सुनि अमर गये सरमाई ॥ सुनहु राज हम जानि न पाई । अब सुनिये आपन मन लाई ॥ ब्रजहि चहो नहि और उपाई । क्षमि हे प्रभु देवन के राई ॥ वे हैं कृपा सिन्धु करुणा कर । क्षमा करहिंगे यो सुंदर बर ॥ और कछू मन में जिनि आनहु । हम जो कहें सत्य करि मानहु ॥ सूर सुरनि यह बात सुनाई । सुरपति शरण चल्यो अकुलाई ॥ ६५ ॥ राग बिलावल ॥ जब जान्यो ब्रज देव मुरारी । उतरि गई तब गर्व खुमारी ॥ ब्याकुल भयो डरयो जिय भारी । अन जानत कीनी अधिकारी ॥ बैठि रहे ते नहिं बनि आवे । ऐसो को अब मोहि बचावै

बार बार यह कहि पछतावै । जाउं शरण बल मनहि धरावै ॥ जाय परौं चरणनि सिर धारौं । को मारैं को मोहि उबारौं ॥ अमरनि कह्यौ करुं असवारी । ऐरावत कों लेउं हंकारी ॥ सूर शरण सुरपति चल्यो धाई । लिये अमरगण सङ्ग लगाई ॥ ६६ ॥ राग बिलावल ॥ करत विचार चल्यो सनमुख व्रज । लट पटात पग धरत धरनि गज ॥ कोटि इन्द्र वाके रोमनि रज । व्रज अवतार लियो माया तज ॥ उतरि गगन पल्लंमी पर आये । व्रजवासिन सब देखन पाये ॥ चकृत भये मन सबनि भ्रमाये । ए धौं कौन कहां तें आये ॥ कहत सुनो लोगनि मुखबाता । येई हैं सुरपति सुर त्राता ॥ देखि सैन्य व्रज लोग संकाता । यह आयो कोने कछु घाता ॥ सुरपति सैन्य साजि व्रज आयो । सूर श्याम कों देख डरायो ॥ ६७ ॥ राग बिलावल ॥ निकट जानि त्याग्यौ वाहन कों । व्रज बाहर राखे ताहनकों ॥ सकुचत चल्यो कृष्ण के सनमुख । कछु आनंद कछुक मन में दुख ॥ परयो धाय चरणनि सुरराई । कृपा सिन्धु राखो शरणाई ॥ किये अपराध बहुत बिन जाने । प्रभु उठाय लै हंसि मुसकाने ॥ यो सुख कह्यो उठ्यो सुर राज । वदन उठाय सकत नहिं लाज ॥ ये दिन वृथा गये बेकाज । तुमकों नहिं जान्यौं व्रज राज ॥ सूर श्याम लीनों उरलाई । अशरण शरण निगम यह गाई ॥ ६८ ॥ राग बिलावल ॥ हंसि हंसि कहत कृष्ण मुखबानी । हम नांहीं रिस तुम पर आनी ॥ तुम कत अति संका जिय जानी । भली करी व्रज बरषो पानी । यह सुनि इन्द्र अतिहि सकुचान्यों । व्रज अवतार नहीं मैं जान्यों ॥ राखि राखि त्रिभुवन के नाथा । नहिं मोतें कोउ और अनाथा ॥ फिरि फिरि चरण धरत लै माथा । क्षमा करुं मोहि राखहु साथा ॥ रवि आगे खद्योत प्रकाशा । मनि आगे ज्यों दीपक नाशा ॥ कोटि इन्द्र रचि कोटि बिनाशा । मोहि गरीब की केतिक आशा ॥ दीन बचन सुनि भव के बासा । क्षमा भरे जल परयौ हुतासा ॥ अमरापति चरणनि तर लोटत ॥ रही वहीं उरमें कछु खोटत ॥ उभय भुजा करि लियो उठाई । सुर पति शीश अभय कर नाई ॥ हंसि दीनी प्रभु लोग बड़ाई । यो सुख कह्यौ करहु सुख जाई ॥ जै जै धुनि देवनि सुख गाई । धन्य धन्य जनके सुख दाई ॥ शिव विरंचि चतुरानन कारद । गौरी सुत ढोल संग सारद ॥ रवि शशि वरुण अनल यम राजा । आजु भये सब पूरन काजा ॥ अशरण शरण सदा तुम बानों । यह लीला प्रभु तुमहीं जानों ॥ माता सों सुत करै ढिटाई । माता फिरि ताकों सुखदाई ॥ ज्यों धरनी हल खोदि बिनाशै । सन सुख शतगुण फलहि प्रकाशै ॥ कर कुठार लै तरुहि गिरावै । वह काटै वह छाया छावै ॥ जैसें दसन जीभ दलि जाई । तब कासों वह करै रिसाई ॥ धनि व्रज गोकुल धनि वृंदावन । धनि जमुना धनि लता कुञ्ज घन ॥ धन्य नंद धनि जननि जशोदा । बाल केलि हरि के रस मोदा ॥ अस्तुति सुनि मन हरषि बढ़ायो । साधु साधु कहि सुरनि सुनायो तुमहिं जाय जब मोहि जगायो । तुमरहि काज देह धरि आयो ॥ तुम राखौ असुरनि संहारौं । तनु धरि धरनी भार उतारौं ॥ आवत जात बहुत श्रम पायो । जाहु भवन करि कृपा पठायो ॥ कर सिर धरि धरि चले देव गन । पहुंचे अमर लोक आनन्द मन ॥ यह लीला सुर घरनि सुनाई । गाइ उठीं सुर नारि बधाई ॥ अमर लोक आनन्द भये सब ।

हर्ष सहित सुरपति आये जब ॥ सूरदास सुरपति अति हरष्यो । जै जै धुनि सुमननि व्रज बरष्यो ॥ ६६ ॥ राग बिलावल ॥ हरि करतें गिरि राज उतारयो । सात दिवस जल प्रलय संभारयो ॥ ग्वाल कहत कैसें गिरि धारयो । कैसें सुरपति गर्व निवारयो ॥ बज्रायुध जल बरषि सिरान्यों । परयो चरण जब प्रभु करि जान्यो ॥ यह करतूति करत तुम कैसे । हम संग सदा रहत हौ ऐसे ॥ हमहि मिले तुम गाय चरावत । नन्द जशोदा सुवन कहावत ॥ देखि रही सब गोप कुमारी । कोटि काम छबि पर बलि हारी ॥ कर जोरति रबि गोद पसारे । गिरिवरधर प्रति होहि हमारे ॥ ऐसो गिरि गोवर्द्धन भारी कब लीन्हो कबधरयो उतारी ॥ तनक तनक भुज तनक कन्हाई । यह कहि उठी जशोदा माई ॥ कैसें पर्वत लियो उठाई । भुज चांपति चुंबति बलि जाई ॥ बारम्बार निरखि पछिताई । हंसत देखि ठाढे बलभाई ॥ इनको महिमा काहु न पाई । गिरि वरधरो यहै बड़ ताई ॥ एक एक रोम कोटि ब्रह्मगड़ा । रबि शशि धरनि धरति नवखगडा ॥ ए व्रज जनम लियौ कै बारा । जहां तहां जल थल अवतारा ॥ प्रकट होत भक्तनि के काजा । ब्रह्म कीट सम सबके राजा ॥ जहं जहं गाढ परै तहां आवै । गरुड छांडिता सनमुख धावै ॥ दुजही में नित करत बिहारन । जशुमति भाव भक्ति हित कारन ॥ यह लीला इनको अति भावै देह धरत पुनि पुनि प्रकटावैं ॥ नेंक तजत नहि व्रज नर नारी । इनके सुख गिरि धरत मुरारी ॥ गर्व वन्त सुर पति चढि आयो । बांम करज गिरि टेक दिखायो ऐसे हैं भुज गर्व प्रहारी । भुज चुंबति जशुमति महतारी ॥ यह लीला जो नित प्रति गावै । आपु न सीखै और सिखावै ॥ सुनै लिखै पढि मनमें राखै । प्रेम सहित मुखतें पुनि भाषै ॥ भुक्ति मुक्ति की केतिक आसा । सदा रहत हरि तिनके पासा ॥ सहसाननि जाको जस जामै । शेष सहस मुख जाहि बखानै ॥ आदि अन्त कोउ नहि पावै । जाको निगम नेति निति गावै ॥ सूरदास प्रभु सबके स्वामी । शरण राखि मोहि अन्तर जामी ॥ ७० ॥ राग सारंग ॥ गिरिवर कैसे लियो उठाय । कोमल कर चापति महतारी यह कहि लेत बलाय ॥ महा प्रलय जल तापर राख्यो ये गोवर्द्धन भारी । नेक नही डोल्यो कर परतें मेरो सुत अहं कारी ॥ कंचन थार दूब दधि रोचन सजि तमोर लै आई । हरषति तिलक करति मुख निरखति भुज भरि कंठ लगाई ॥ रिस करिके सुरपति चढि आयो देतो व्रजहि बहाई सूर श्यामसों कहति जशोदा गिरिधर बड़ो कन्हाई ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ तेरे भुजनि बड़त बल होत कन्हैया । बार बार भुज देखि तनकसे कहति यशोदा मैया ॥ श्याम कहत नहि भुजा पिरानी ग्वालनि कियो सहैया । लकुटनि टेकि सबनि मिलि राख्यो अरु बाबा नन्द रैया ॥ मोसों क्यों रहतो गोवर्द्धन अतिहि बड़ो वह भारो । सूर श्याम यह कहि पर मोह्यो देखि चकृत महतारी ॥ २ ॥ राग कान्हरो ॥ घर घरतें व्रजयुवती आवति । दधि अक्षत रोचन धरि थारनि हरषि श्याम सिर तिलक बनावति ॥ बार बार निरखति छबि अंग अंग श्याम रूप उरमाहि दुरावति । नन्द सुवन गिरि धरयो बाम कर यह कहि के मन हरष बढावति ॥ जेहि पूजत सब जन्म गवायो सो कैसेहु पग छुवन न पावत । सूर श्याम गिरि धरन मांगि वर कर जोरत कहि विधिहि मनावत ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥

घरनि घरनि हृज होत बधाई । सात बरष को कुंवर कन्हैया गिरिवर धरि लीन्हो सुर राई ॥ गर्व सहित आयो व्रज बोरन यह कहि कहि मेरी भक्ति घटाई । सात दिवस भरि बरषि सिरानों तब आयो पायन तर धाई ॥ कहां कहां नहि संकट मेटत नर नारी सब करत बड़ाई । सूर श्याम अबके व्रज राख्यो ग्वाल करत सब नन्द दुहाई ॥ ४ ॥ रागनट क्यों राख्यो गोवर्द्धन श्याम । अति ऊंचो बिस्तार अतिहि वह लीनो सचकि करज भुज बाम ॥ वह आघात महा परलय जल उर आवति मुख लेते नाम । नीके राखि लियो हृज सिगरो ताको तुमहि पठायो धाम ॥ हृज अवतार लियो जबते तुम दूरे करत निसि बासर जाम । सूर श्याम बन बन हम कारन बहुत करत अब नहि बिश्राम ॥ ५ ॥ राग नट ॥ राखि लियो हृज नन्द किशोर । आयो इन्द्र गर्व करिके बड़ सात दिवस बरषत भयो भोर ॥ बांम भुजा गोवर्द्धन धारो अति कोमल नखही की कोर ॥ गोपी ग्वाल गाय हृज राखे नेंक न आई बून्द झकोर । अमरा पति तब चरण परो लै जब बातें गै युग गुण जोर । सूर श्याम करुणाकरि ताकापठै दियो घर मानि निहोर ॥ ६ ॥ श्रीहरि कान्हरो ॥ आज दीपति दिव्य दीप मालिका । मनहु के टि रबि चन्द कोटि छबि मिटि जो गई निस कालिका ॥ गोकुल सकल बिचित्र मणि मंडित सोभित झाक झाय मालिका । गज मोतिन के चौक पुराय बिच बिच खाल प्रवालिका ॥ बर शृंगार बिरचि राधा जू चली सकल व्रज बालिका । झल मल दीप समीप सोंज भरि लेकर कंचन थालिका ॥ करि प्रगट मदन मोहन पिय थकित बिलोकि बिशालिका । गावत हंसत बजाय हंसावत पटकि पटकि कर तालिका ॥ नंद द्वार आनंद बढ्यो अति देखियति परम रसालिका सूरदास कुसुमनि सुर बरषत कर संपुट करि भालिका ॥ ७ ॥ राग कान्हरो ॥ सुरभी कान्ह जगाय खरिकही बलमोहन बैठे हैं हटरी । पिस्ता दाख बदाम छुहारा खुरमा खाजा गूंझा मटरी ॥ घर घर तें नर नारि मुदित मन गोपी ग्वाल जुरे बहु ठटरी । टेरि टेरि जब देत सबनिको लै लै नाम बुलाय निकटरी ॥ देति असीश सकल व्रज भामिनि जसुमति देति हरषि बहु पटरी । सूर रसिक गिरिधर चिरजीवो नंद मंदर को नागर नटरी ॥ ८ ॥ राग कान्हरो ॥ कान जगाय गोपाल मुदित मन छटरी बैठे गोवर्द्धन धारी । हल धर संग सुबल श्रीदामा गोप ग्वाल सब गाय सिंगारी ॥ देखनको उमड़े सुरनर मुनि रावर झांझ भीर भई भारी । जै जै कार होत चहुं दिशितें सुरपति करत कुसुम बरषारी ॥ कंचन रतन जटित हीरा नग बिस करमा रचि सुबिधि संवारी । परम बिचित्र बनी अति सुंदरि जग मगाति कुहु तिमिर बिदारी ॥ नन्द भवन भरि धरे बिबिधि पक अगनित मेवा गरी छुहारी । टेरि टेरि जब देति सबनि को शिव ब्रह्मादिक गोद पसारी ॥ करति आरती मात जशोदा मंगल गावति सब व्रज नारी । सूर रसिक गिरिधर सुख बिलसत बरष बरष प्रति परब दिवारी ॥ ९ ॥ राग कान्हरो ॥ तात गोवर्द्धन पूजो जाय । मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय ॥ यह पर्वत तृण ललित मनोहर सदा चरै सुख गाय । जैसें कान्ह कहे सो कीजे मघवा जाउ खिसाय ॥ भरि भरि शकट चले गिरि

सन्मुख अपने अपने चाय । सूरदास प्रभु आप बल भोगी धरि स्वरूप हरि राय ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ कहत गोपाल नंदसों पूजहु गिरि राय। बहु बिधि व्यंजन साजि के पकवान बनाय ॥ करो मतो सब गोपतें तुम बोलि पठाय । उप नंद सहित वृषभान जू सब बैठे आय ॥ कान्ह कह्यो मोसों सुपने में बोले गिरि राय । अरपो बलि मोकों सबै बढिहै बच्छ गाय ॥ सबहिन मन आनंद भयो यह भलो उपाय । जाके दीने बाढि है गोधन सुख पाय ॥ चले सबै मिलि सौजले बहु शकट जुराय । बिधिसों पूजा पूजि के सब भोग धराय ॥ देखि इन्द्र अति कोपिके मेघनि झर लाय । सूर श्याम रक्षा करि गिरि लियो उठाय ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ पूजा बिधि गिरिराज की नंदलाल बतावैं । झुण्डनि झुण्डनि गोपिका मिलि मंगल गावैं ॥ गंगा जलसों न्हवाय के दूध धौरी को नावैं । बिबिधि बसन पहि राय के चंदन लपटावैं ॥ धूप दीप करि आरती बहु भोग भरावैं । तिलक कियो बीरा दियो माला पहि रावैं ॥ खरिक चले लहुरे बड़े बेगि खिलावैं । फिरि गिरिवर भोजन कियो सुख सूर दिखावैं ॥ १२ ॥ राग मारू ॥ माधो जू कांपत डरतें अधिक हियो । तुम जु इंद्रकी पूजा मेटी तातें कोप कियो ॥ दामिनि खड्ग बूंद सायक जनु घन जोधा लै संग । छै गयो सरस समीर दहों दिशि धनुष ध्वजा बहु रंग ॥ सोभित सुभट पछारि पैज करभिरत न मोरत अंग । तुम्हरे कहत कियो नंद नंदन सुर पतिको व्रत भंग ॥ बरषत प्रलय मेघ धरि चंवर डरपत गोकुल गांउ । सुमिरत नाथ शरण तुम बिनु हम और कोन पें जांउ ॥ ज्यों तुम अनख व्याल मुख राखे श्रीपति सुहृद सुभाय । हमरे तो तुमही चिंता मणि सब बिधि दैार उपाय ॥ बाल समेत गोपाल बुलायो अभै किये दे बांह । जिनि डर करहु सबै मिल आवहु या पर्वत की छांह ॥ एक हाथ गोवर्द्धन राखो सात दिवस बल बीर । सूरदास प्रभु ब्रजबासिनि के किये सकल दुख कीर ॥ १३ ॥ राग मलार ॥ आजु ब्रज महा घटनि घन घेरयो । राखहु नंद नंदन इहि औसर सब चितवत मुख तेरो ॥ आये मेघ महा परलय के ब्रज पर कोनो डेरो । बरषत महा असम सेना पति दिनतें कियो अंधेरो ॥ इतनो सुनत जशोदा नंदन गोवर्द्धन तन हेरयो । चित गहि रहे संभारि आपु करछित तें पकरि उखेरयो ॥ सात दोस बरष्यो निसि बासर हारि मानि मुखफेरयो । श्रीपति सूर सहाय भये जब बृंदन आयो नेरो ॥ १४ ॥ राग कान्हरो ॥ गोकुल जीवनि गोबिंद मेरो । जाय लगाय रही तन मन धन दुख भूलत मुख हेरे ॥ जाके बल हम गन्यां न सुरपति रह्यो सात दिन घेरे । जन हित नाथ गोवर्द्धन धारयो राख्यो कर नख केरे ॥ यश जाको ऋषि गर्ग बखानत निगम कहत नित टेरे । सोइ अब सूर सहित संकर्षन सेवहु जतन घनेरे ॥ ॥ १५ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ बिनय सब करत गिरि राजसों कर जोरि कर गए तन पाप तब दरश पायो । बहुत ढीठ्यो करी शरण राखो हरी शक्रयों कहत हैं। शरण आयो ॥ देवाधि देव तुम प्रकट दरशन दियो प्रकट भोजन कियो सबनि देख्यो । प्रकट बाणी कही गिरिराज तुम सही और नहि तिहूं भुवन कहूं पेख्यो ॥ हंसत हरि मनहि मन तकत गिरिराज तन देव परसन्न भयो करो काजा । सूर हरि प्रकट लीला कही सबनि

सों चले घर घरनि अपने समाजा ॥ १६ ॥ राग सारंग ॥ सब मिलिके कहो पूजो श्यांवरे को बांहि । ग्वाल गोपी गाय राखे सात दिन करि छांहि ॥ इंद्र कहा रिसाय कीन्हो गयो अपुन बल गाहि । आइ तिनहूं पाय पैकरे समुझि के मन मांहि । पूतनादिक कितिक लीला करीहैं सब चाहि । हमारे घन श्याम राम हम और न जाने काहि ॥ सबै बात आश्चार्य्य ते इनकी विधिहू जानेनांहि । सूर प्रभुकी प्रबल माया जानि बूझि भुलाहि ॥ १७ ॥ राग केदारो ॥ निहारो सबै मिलि कान्ह निहारो । जशुमति उर लावति करपल्लव गहि सात दिवस गिरि धारो ॥ पूजा विधि मेटी जु शक्रकी तिन जिय द्रोह बिचारो । छांडे मेघ मत्त परलय के गरजि गयंद सुंडि धारयो ॥ अति आरति जानि व्रजबासी शिशु गिरितन नेकु निहारयो । अनायास असि छच छिनुक में खेलत मांझ उपारो ॥ सुर पतिको कियो मान भंग हरि हृज आपनो उबारो । सूरदास के जीवनि गिरिधर जशुमति प्राण दुलारो ॥ १८ ॥ राग मलार ॥ सुनहुरी मेह तो आयो । घरको गाय बहोरो हो मोहन ग्वालनु टेरि सुनायो ॥ कारी घटा सधूम देखियत अति गति पवन चलायो । चारों दिसां चिते किनि देखहु दामिनि कोंधो लायो ॥ अति घन श्याम सुदेश सूर प्रभु कर गहि शैल उठायो । राखे सकल सुखहि में हृजजन इंद्रका गर्ब गबांयो ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ हमारी बात सुनो हृजराज। सुरपति को बलि भाग न दीजे पूजो यह गिरि राज ॥ बरषे मेह गाय सुख पैहैं ह्वै है हृजसुख काज । सूरदास प्रभु नंद कुंवर कहें वेही कीजे साज ॥ २० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ अथसूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ फेरि गोचारन लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग बिलावल ॥ जागहु लाल ग्वाल सब टेरत । कबहुं पीतांबर डारि बदन पर कबहुं उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवत में जागत मन मोहन बात कहत अबकी सब टेरत । बारं बार जगावति माता लोचन खोलि पलक पुनि घेरत ॥ पुनि कहि उठी यशोदा मैया उठहु कान्ह रबि किरनि उजेरत । सूर श्याम हंसि चितै मात मुख पटकर ले पुनि पुनि मुख फेरत ॥ १ ॥ राग रामकली ॥ कबकी टेरति कुंवर कन्हाई । ठाढे ग्वाल सखा सब टेरत अरु अग्रज बल भाई ॥ दाऊ जू तूं ह्यां नहि आवत करी मुखारी आई । माता दुग्ध करनि दतुबनि दै जल झारी भरि लाई ॥ उत्तम विधि

सों मुख पखरायो ओदे वशन अंगोछि । दोऊ भैया कछु करो कलेऊ खेवलाय कर औंछि सद् मांखन दधि तुरत जमायो मधु मेवा मिष्ठान । सूर श्याम बलि राम संग मिलि रुचि करि लागे खान ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ दोउ भैया जेंवत मा आगे । पुनि पुनि लै दधि खात कन्हाई और जननि पै मागे ॥ अति सौंठो दधि आजु जमायो बलदाऊ तुम लेहु । देखो धौं दधि स्वाद आपु लै तापाछें मोहि देहु ॥ बलमोहन दोउ जेंवत रुचिमों सुखलूटति नंदरानी । सूर श्याम अब कहत अघानों अंचवन मांगत पानी ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ ढारे टेरत है सब ग्वाल कन्हैया आवहु वार भई । आवहु बेगि बिलंब जिनि लावहु गैयां दूरि गई ॥ यह सुनतहि दोऊ उठि धाये कछु अंचयो कछु नाहि । कितक दूरि सुरभी तुम छांडी बन तौ पहुंची नांहि ॥ ग्वाल कह्यो कछु पहुंची ह्वै हैं कछु मिलि हैं मग मांहि । सूर श्याम बल मोहन भैया गैयनि पूछत जांहि ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ बन पहुंचत सुरभी लई जाई । जैहै कहां सखनि कों टेरत हलधर संग कन्हाई ॥ जेंवत परखि लिये नहि हम कों तुम अति करी चंडाई । अब हम जैहै दूरि चरावन तुम संग रहै बलाई ॥ यह सुनि ग्वाल धाय तहं आये श्यामहि अंग मलाई । सखा कहत यह नंद सुवन सों तुम सबके सुख दाई ॥ आजु चले वृन्दावन जैये गैयां चरैं अघाई । सूरदास प्रभु सुनि हरषित भये घरतें छाक मँगाई ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ चले सब वृन्दाबन समुहाई । नंद सुवन सब ग्वाल नि टेरत ल्यावहु गाय फिराई ॥ अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब जहं तहं आये धाई । बूझत ग्वाल बात केहि कारन बोले कुंवर कन्हाई ॥ सुरभी वृन्द इतही कों हांको औरनि लेहु बुलाई । सूर श्याम यह कही सबनि सों आपु चले अतुराई ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ गैयनि घेरि सखा सब ल्याये । देखौ कान्ह जात वृंदावन यातें मन अति हर्ष बढाये ॥ आपुस में सब करत कुलाहल धौरी धूमरि धेनु बुलाये । सुरभी हांक देत सब जहं तहं टेरि टेरि हेरी सुर गाये ॥ पहुंचे आय बिपिन घन वृन्दा देखत द्रुम दुख सबनि गंवाये । सूर श्याम गये अघा मारि जब तादिन तें यहि बन अब आये ॥ ७ ॥ राग सारङ्ग ॥ चरावत वृन्दावन हरि धेनु । ग्वाल सखा सब संग लगाये खेलत हैं करि चेनु ॥ कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ बिषान कोउ बेनु । कोउ निर्त्तत कोउ उघटि तारि दै जुरि ब्रज बालक सेनु ॥ बिबिधि पवन जहं तहं बहे निश दिन सुभग कुंज घन ऐनु । सूरश्याम निजु धाम बिसारत आवत यह सुख लेनु ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ वृन्दावन मोकों अति भावत । सुनहु सखा तुम सुबल सुदामा वृज तें बन गोचारन आवत ॥ काम धेनु सुर तरु सुख जितने रमा सहित बैकुण्ठ भुलावत । यह वृंदावन यह जमुना तट ये सुरभी अति सुखद चरावत ॥ पुनि पुनि कहति श्याम श्री मुखसों तुम मेरे मन अतिहि सुहावत ॥ सूर दास सुनि ग्वाल चकृत भये यह लीला हरि प्रकट दिखावत ॥ ९ ॥ राग बिलावल ग्वाल सखा कर जोरि कहत है हमहि काहू तुम जिनि बिसरावहु । जहीं जहीं तुम देह धरतहौ तहीं तहीं जिनि चरण छिंडावहु ॥ ब्रजतें तुमहि कहूं नहि प्यारो यहै पाय मैंहूं ब्रज आवत । यह सुख नहि कहुं भुवन चतुर्दश यह ब्रज में अवतार बतावत ॥ और गोप जौ बहुरि चले घर तिनसों कहि ब्रज छांक मंगावत । सूर दास प्रभु गुप्त बात

सब ग्वालन सों कहि कहि सुख पावत ॥ १० ॥ राग गौरी ॥ छबीले मुरली नेक बजावो । बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दा बन दुर्लभ प्रेम तरंग । नाजानियें बहुरि कब ह्वै हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ बिनती करत रुबल श्री दामा सुनहु श्याम दै कान । या जश को सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप भेष ब्रज धरिहो फिरि हो रभिन साथ । कब तुम छाक छीन कै खैहै श्री गोकुल के नाथ ॥ अपनो अपनो कांध कमरिया ग्वालनि दई डसाई । सोंह दिवाय नंद बाबाको रहे सकल गहि पाई ॥ सुनि सुनि दीन गिरा मुरली धर चितवे मुख मुसकाई । गुण गम्भीर गोपाल मुरलिका लीनो कंठ लगाई ॥ धरि कर बेनु अधर मन मोहन कियो मधुर धुनि गान । मोहे सकल जीव जल थलके सु निवारो तन प्रान ॥ चपल नयन भृकुटी नासा पुट सुनि सुंदर मुख बैन । मानहु निर्त्तत भाव दिखावत गति लिये नायक मैन ॥ चमकत मोर चन्द्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानों कमल कोस रस चाखन उड़ि आये अलिमाल ॥ कुण्डल लोल कपोलनि झलकत ऐसी शोभा देत मानहु सुधा सिंधुमें क्रीड़त मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुंदर अनाघात के ताल । रस सब दियो मदन मोहनको प्रेम हरष सब ग्वाल ॥ लोलित बैजन्ती चरणनि पर स्वासा पवन झकोरि । मानहु सुधा पियन अहि आयो ब्रह्म कमंडलु फोरि ॥ डोलति लता मरुत मंद गति सुनि सुन्दर मुख बेन । खग मृगमीन अधीन भये सब कियो जमुन जल सेन ॥ झलमलात भृगुकी पदरेखा शुभग सांवरे गात । मनोंघट बधू एक रथ बैठी उदौ कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बांके अब लोकनि जु अनूप । मानहु कल्प तरोवरि बिरवा आंनि रच्यो सुर भूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनि को सुख दायक जिय जान । सूरदास चरणनि रज मांगत निरखत रूप निधान ॥ ११ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ ग्वाल बिरार करत है ॥ कन्हैया हेरी दै ॥ शुभग सांवरे गात की मैं शोभा कहत लजाहि । मोर पंख सिर मुकुट की मुख मटकनि की बलि जाहि ॥ कुंडल लोल कपोलनि झाई बिहसनि चितहि चुरावे । दसन दमकि मोतिन लर ग्रीवा शोभा कहत न आवे ॥ उरपर पदिक कुसुम बन माला अंगद पाय बिराजै । चिचि बाहु पै रतन पहुंचियां हाथ मुरलिका छाजै ॥ कटि पट पीत मेखला मुकुलित पैरनि नूपुर सोहै । आस पास सब ग्वाल मण्डली देखत त्रिभुवन मोहै ॥ सबा मिलि आनन्द प्रेम बढावत गावत गुण गोपाल । यह सुख देखत श्याम संग के सूर दास सब ग्वाल ॥ १२ ॥ रागनट श्याम कर मुरली अतिहि बिराजत । परसत अधर सुधा रस प्रकटत मधुर मधुर सुर बाजत ॥ लटकत मुकुट भौंह छबि मटकत नयन सैन अति राजत । ग्रीव नवाय अटकि बंसी पर कोटि मदन छबि लाजत ॥ लोल कपोल झलक कुण्डल की यह उपमा कछु लागत । मानहुं मकर सुधा सर क्रीड़त आपु महों अनुरागत ॥ वृन्दावन विहरत नंद नन्दन ग्वाल सखा संग सोहत । सूरदास प्रभु की छबि निरखत सुर नर मुनि सब मोहत ॥ १३ ॥ राग सारंग ॥ रीझत ग्वाल रिझावत श्याम ॥ मुरलि बजावत सबनि बुलावत सुबल सुदामा लै लै नाम ॥ हंसत सखा कर तारी दै दै नाम हमारो मुरली लेत ।

श्याम कहत अब तुमहुं बुलावहु अपने करतें ग्वालनि देत ॥ मुरली लै लै सबै बजावत काहू पै नहि आवे रूप । सूर श्याम तुमरेहि मुख बाजति कैसे देखो राग अनूप ॥ ॥ १४ ॥ राग टोडी ॥ हरि समान को बेनु बजावत । जग जीवनी विदित मुनि नचत बेंन सों बजावै । चतुरानन पंचानन सहसानन ध्यावै । ग्वाल बाल लिये जमुना कच्छ बच्छ चरावै । सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ पार न पावै । तारन तरन अगनित गुन निगम नेति गावै । तुम को जशुमति अति आनंद देकर ताल नचावै । सूर दास प्रभु कृपाल भक्त बस कहावै ॥ १५ ॥ राग टोडी ॥ कान्ह कांधे कामरी लकुटि लिये कर घेरे हो । वृन्दा बन में गऊ चरावै धौरी धूमरि टेरे हो । लिये लवाय गौ अनि बुलाय जहां तहां बन बन हेरे हो । सूर दास प्रभु सकल लोक पति पीताम्बर कर फेरे हो ॥ १६ ॥ राग टोडी ॥ सोई हरि कांध कांमरी छाक लिये नांगे पायन गायन की टहल करत है । रनहूं पति दीशान पति नारी नर पति पछिन पति रवि शसि जेहि डरत हैं । शिव बिरंचि ध्यान धरत भक्त चिबिध तापहरत । तिहि हित बपु धरत हैं । सूर दास प्रभु के गुण निगम नेति गावत तेइ बन बिहरत हैं ॥ १७ ॥ राग नट ॥ छाक लेन जो बाल पठाये । तिनसों बूझति महरि जशोमति छांडि कन्है यहि आये । हमहिं पठाय दयो नंद नंदन भूखे अति अकुलाये ॥ धेनु चरावत हैं वृन्दा बन हम एहि कारन आये । यह कहि ग्वाल लये अपने गृह बनही खबरि सुनाये । सूर श्याम बल राम प्रातही अध जेंवत उठि धाये ॥ १८ ॥ राग सारंग ॥ और ग्वाल गृह आये गोपालहिं बार भई । अतिहि बेर भई लालन कों अजहूं छाकन गई । तबही तें भोजन करि राख्यो उत्तम दूध जमाई । नाजानों कान्ह कौने बन चारत अतिहि अबेर लगाई । राज करै बे धेनु तुम्हारी नंदहि कहति सुनाई । पोचकी भीष सूर बल मोहन कहति जशोदा माई ॥ १९ ॥ राग सारंग ॥ जो रति छाक प्रेमसों मैया । ग्वालनि बोलि लये अध जेंवत उठि दौरे दोउ भैया ॥ तबही तें मैं भोजन कीन्हों चाहति दियो पठाई । भूखे भये आजु दोउ भैया आपहि बोलि मगाई । दधि माखन साजो दधि मीठो मधु मेवा पकवान । सूर श्याम को छाक पठावति कहति ग्वाल सों जान ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ घर हीको एक ग्वारि बुलाई । छाक शामग्री सबै जोरि के वाके कर दै तुरत पठाई ॥ कह्यो ताहि वृन्दाबन जैये तू जानति सब प्रकृत कन्हाई । प्रेम सहित लै चली छाक यह कहि हूवै हैं भूखे दोउ भाई ॥ तुरत जाय वृन्दा बन पहुंची ग्वाल बाल कहुं कोउ न बताई । सूर श्याम को टेरति बोलति कितहो लाल छाक मैं ल्याई ॥ २१ ॥ राग टोडी ॥ आजु कौनेधौ बन चरावत गाय कहांधों भई बड़ी बेर । बैठे कान्ह सुधि लेहु कोन बिधि ग्वालि करति अवसेर ॥ वृन्दाबन आदि सकल बन ढूंढ्यो जहं गायन को टेर । सूर दास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुराये दुरत डूंगरिनको ओट सुमेर ॥ २२ ॥ राग सारंग ॥ छाक लिये सिर श्याम बोलावति ॥ ढूंढति फिरति ग्वालिनी हरिको कहूं भेद नहि पावति ॥ टेर सुनत काहूकी श्रवननि तहीं तुरत उठि धावति । पावति नहीं श्याम

बल रामहि व्याकुल ह्वै पछि तावति ॥ इन्दा बन फिरि फिरि देखति हैं बोलि उठे तब ग्वाल ॥ सूर श्याम बलराम यहां हौ छाक लेहु किनि लाल ॥ २३ ॥ राग सारंग ॥ हरिकों टेरति फिरति ग्वारि ॥ आय लेहु तुम छाक आपनी बालक बल बन बारि ॥ आजु कलेऊ करत बन्यों नहि गैयन संग उठि धाये ॥ तुम कारन बन छाक जशोदा मेरेहि हाथ पठाये ॥ यह बानी जब सुनी कन्हैया दौरि गये तेहि काज ॥ सूर श्याम कह्यो नीके आई भूख बहुतही आजु ॥ २४ ॥ राग सारंग ॥ आई छाक बोलाये श्याम यह सुनि सखा सबै जुरि आये सुबल सुदामा अरु श्री दाम ॥ कमल पत्र दोना पलास के सब आगें धरि परुसन जात ॥ ग्वाल मंडना श्याम श्याम घन सब मिलि भोजन रुचि करि खात । ऐसी भूख मांझ यह भोजन पठय दियो करि जशुदा मात । सूर श्याम अपनों नहि जेंवत ग्वालनि करतें लैलै खात ॥ २५ ॥ राग नट ॥ बिहारी लाल आवहु आई छाक ॥ भई अबार गाइ बहरावहु बगदैगी दै हांक । अर्जुन भोज सुबल श्री दामा मधु मंगल एक ताक ॥ मिलि बैठे सब जेवन लागे बहुत बन्यो कछें पाक ॥ अपनी पचावलि सब देखत जहं तहं फनी पिराक । सूर दास प्रभु खात ग्वाल संग ब्रह्म लोक यह धाक ॥ २६ ॥ राग कान्हरो ॥ फिरत बन बंसी बट संकेत बट नट नागर कटिका छै बौरि केसरिकी किये । पीत बसन चंदन तिलक मोर मुकुट कुंडल श्याम घन यह छबि लिये ॥ तन त्रिभंग सुभग अंग निरखि लजित रति अनंग ग्वाल बाल लिये संग प्रभुदित सब हिये ॥ सूर श्याम अति सुजान मुरली धुनि करत गान ब्रज जन मनको सुख दिये ॥ २७ ॥ राग सारंग ॥ बहुत फिरी तुम काज कन्हाई ॥ टेरिटेरि मैं भई बावरी दोउ भैया तुम रहे लुकाई ॥ जे सब ग्वाल गये ब्रज घर कों तिनसों कहि तुम छाक मगाई ॥ नैनू दधि मिष्ठान जोरि कै जशुमति मेरे हाथ पठाई । ऐसी भूख मांझ तूलाई तेरी किहि विधि करों बड़ाई । सूर श्याम सब सखनि पुकारत आवत क्यों न छाक है आई ॥ २८ ॥ राग सारंग ॥ सखनि संग हरि जेंवत हैं छाक । प्रेम सहित मैया दै पठये सबै बनाये हैं एक ताक ॥ सुबल सुदामा श्री दामा संग सब मिलि भोजन रुचि करि खात । ग्वालनि करतें छाक छिड़ावत मुख लै मेलि सराहत जात ॥ जो सुख कान्ह करत इन्दा बन सो सुख नहीं लोक छहूं सात । सूर श्याम भक्तनिबस ऐसे ब्रह्म कहावत हैं नंद तात ॥ २९ ॥ राग सारंग ॥ ग्वाल मंडली में बैठे हैं मोहन बटकी छैयां दुपरहकी बेरियां संगलीने ॥ एक मथत दोहनी दूध एक बटावत फवैना एक निकर हरि झगरि झगरि लेत ए सबनि आपनि कमरिन के आसन कीने । जेंवत हैं अरु गावत कान्ह सारंग की तान लेत कर छीने । सूर दास प्रभु को सुख निरखत सुर रीझि रीझि सुमननि बरषत रस भीने ॥ ३० ॥ राग सारंग ॥ ग्वालनि करतें कौर छिडावत । जूठो लेत सबनि के मुख को अपने मुख लै नावत ॥ षट रस के पकवान धरे सब तामें नहि रुचि पावत । हाहा करि करि मांगि लेत है कहत मोहि अति भावत । यह महिमा ईई पै जानै जातें आपु बधावत । सूर श्याम सपने नहि दरसत मुनि ज्ञान ध्यान लगावत ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ ब्रज वासी पटतर कोउ नाहिं ॥

ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत इनकी जूठनि लैलै खांहि । धन्य नंद धनि जननि जशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्य धन्य वृन्दावनके तरु जहं बिहरत त्रिभुवन राई ॥ हलधर कहत छाक जेंवत संग मीठो लगत सराहत जाई । सूर दास प्रभु बिस्वम्भर ह्वै ग्वालनि कौर अघाई ॥ ३२ ॥ राग सारंग ॥ सीतल छहियां श्याम बैठे जानि भोजन की बिरिआ ॥ बाम भुजा सखा अंस दीने अरु दहिन कर द्रुम डरिआं ॥ चलि जुनेंक गाइन घेरो टेरो जू बलराम सों कहत बोलि लेऊ अपने अरियां ॥ सूर दास प्रभु बैठे कदम्ब तर पीवत मथि मथि धरियां ॥ ३३ ॥ राग सारङ्ग ॥ जेंवत छाक गाय बिसराई । सखा श्री दामा कहत सबनि सों छाकहि में तुम रहे भुलाई ॥ धेनु नहिं देखियत कहूं नेरे भोजनही में सांझ लगाई ॥ सुरभि काज जहं तहं उठि धाये आपु तहां उठि चले कन्हाई । ल्याए ग्वाल घेरि गो गोसुत देख श्याम मन हरष बढ़ाई ॥ सूर दास प्रभु कहत चलौ घर बन में आजु अबार कराई ॥ ३४ ॥ राग गौरी ॥ ब्रजहि चलौ आई अब सांझ । सुरभी सबै लेऊ आगे करि रैनि होइ पुनि बनही मांझ ॥ भली कही यह बात कन्हाई अतिही सघन रैनि उजियारी । गैयां हांकि चलाई ब्रजकों और ग्वाल सब लिए पुकारी ॥ निकसि गये बन तें सब बाहिर अति आनन्द भये सब ग्वाल । सूर दास प्रभु मुरलि बजावत ब्रज आवत नटबर गोपाल ॥ ३५ ॥ राग गौरी ॥ नटबर भेष धरें ब्रज आवत । मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल कुटिल अलक मुख पर छवि पावत ॥ भृकुटी विकट नयन अति चंचल यह छवि पर उपमा एकधावत । धनुष देखि खंजन बिचि डरपत उड़ि न सकत उड़ ने अकुलावत ॥ अधर अनूप मुरलि सुर पूरत गौरी राग अलापि बजावत । सुरभी वृन्द गोप बालक संग गावत अति आनन्द बढ़ावत ॥ कनक मेखला कटि पीताम्बर नृत्त त मन्द मन्द सुर गावत । सूर श्याम प्रति अंग माधुरी निरखत ब्रज जनको मन भावत ॥ ३६ ॥ राग कल्याण ॥ ब्रज तरुणी सब कहति परस्पर बन तें श्याम बनें घर आवत । ऐसी छवि मैं कबहुं न पाई सखी सखी सों प्रकट दिखावति ॥ मोर मुकुट सिर जलज माल उरकटि तट पीताम्बर छवि पावत । नव जल धर पर इन्द्रचाप मनो दामिनि छवि बज्रक घन धावत ॥ जेहि जु अङ्ग अवलोकन कीन्हों सो तन मन तहंई बिरमावत । सूरदास प्रभु मुरली अधर धरे आवत राग कल्याण बजावत ॥ ३७ ॥ राग कल्याण ॥ कमल मुख शोभित सुन्दर वेनु । मोहन राग अलापत गावत आवत चरये धेनु ॥ कुंचित केश सुदेश बदन पर जनु साज्यो अलि सैनु । सहि न सकति मुरली मधु पीवत चाहत अपनों ऐनु ॥ भृकुटि मनों कर चाप आपु लै भयो सहारक मैनु । सूरदास प्रभु अधर सुधा लगि उपज्यो कठिन कुचैनु ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ माधो जूको बदन की शोभा । कुटिल कुन्तल कमल प्रति मनो मधुप रस लोभा ॥ भृकुटि इमि नव कंज पारस सदृश चंचल मीन । मुकुट कुण्डल किरनि रवि छवि परस बिगसित कीन ॥ सुरभि रेनु पराग रंजित मुरलि धुनि अलिगुंज । निरखि सुभग सरोज मुदित मराल संग शिशु पुंज ॥ दशन दामिनि बिम्ब मिलि मनों जलद मध्य प्रकाश । निगम बानी नेति क्योंकहि सके सूरज दास ॥ ३९ ॥ देखिरी देखि मोहन ओर । श्याम सुभग सरोज आनन चारु चित के

चोर ॥ नील तनु मनो जलद की छवि मुरलि सुर घन घोर । दसन दामिन लसत वसननि चितवन्न झक झोर ॥ श्रवण कुण्डल गंड मण्डल उदित ज्यों रवि भोर । बरहि मुकुट विशाल माला इन्द्र धनु छवि थोर । वन धातु चित्रित वेष नटवर मुदित नवलकिशोर ॥ सूर श्याम सुभाइ आतुर चितै लोचन कोर ॥ ४० ॥ राग गौरो ॥ रजनी मुखबन तें बने आवत भावत मत्त गयन्द की लटकनि ॥ बालक इन्द बिनोद हंसावत करतल लकुट धेनु की हटकनि ॥ बिगसित गोपी मानों कुमुद रस रूप सदा लोचन पुट घटकनि । पूरन कला उदित मनु उडु पति तेहि छिन बिरह बिथा की चटकनि ॥ लज्जित मनमथ निरखि बिमल छवि रसिक रङ्ग भौंहन की मटकनि । मोहन लाल छबीले गिरिधर सूरदास बलि नागर नटकनि ॥ ४१ ॥ हमीर ॥ यहै कोउ जानैरी बाकी चितवनि में की चन्द्रिका मेंकि धौं मुरली मांझ ठगौरी । देखत सुनत मोहि जात सुर नर मुनि खग और मीन खगौरी । अरी माय जबतें दृष्टि परे मन मोहन ग्रह मेरो मनु न लगौरो । सूर श्याम बिनु छिन न रहों मेरो मन उनहात प्रगौरी ॥ ४२ ॥ राग कल्यान ॥ लाल की रूप माधुरी नयननि निरखु नेंकु सखीरी । मनसिज मन हरन हास सांवरी सुकुमार रास नख सिख अंग अंग की छवि शोभा कीसो बन खीरी ॥ रंग भरी सिर सुरङ्ग पाग लटकि रही बाम भाग चंप कली कुटिल अलक बीच बीच रखीरी । आयत दृग अरुण लोल कुण्डल मण्डित कपोल अधर दशन दीपति की छवि क्यों हूं न जाति लखीरी ॥ उभय उभय भुज दण्ड मूलपीन अंस सानकूल कनक मेखला दुकूल दामिनी धरखीरी । उरपर मन्दार माल कुक्षा लर बर सुढार मत्त द्विरद इति चियनि की देह सदा करखीरी ॥ मुकुलित वय नव किशोर रसन बचन चितके चोर माधुरी प्रकास अनुप मंजुरी चखीरी । सूर श्याम अति सुजान गावत कल्यान तान सप्त सुर निकल इते पर मुरलिका बरखीरी ॥ ४३ ॥ राग गौरी ॥ ढोटा कौन को यहरी । द्युति मंडल मकरा छत कुंडल कनक कंठ दुलरी ॥ घन तन श्याम कमल दल लोचन चारु चपल तुलरी । इन्द बदन मुसकानि माधुरी अलकनि अलि कुलरी ॥ उर पर मुक्ता माल पीत पट मुरली सुर गौरी । पग नूपर मनि जटित रुचिर अति कटि किंकिनि रौरी ॥ बालक इन्द मध्य राजत है छवि निरखत मुररी । सोई सजीवनि सूर दास की महरि रहे उररी ॥ ४४ ॥ राग गौरी ॥ यह ढोटा नंद को हैरी । नहि जानत बस-ब्रज में प्रकटो गोकुलरी ॥ धरयो गिरिवर बाम कर जेहि सोई है यहरी । दैत्य सब इन ही संहारे आपु भुज बलरी ॥ ब्रज घरनि जो करत चोरी खात माखनरी । नन्द घरनी जाहि बांध्यौ अजिर ऊखलरी ॥ सुरभि गन लिये बनतें आवत सबै गुण इनरी । सूरप्रभु ये सबहि लायक कंस डरै जिनरी ॥ ४५ ॥ रागगौरी ॥ जशुमति को सुत यहै कन्हाई । इन्हीं गोवर्द्धन लियो उठाई ॥ इन्द्र पर्यो इनही के पाई । इनही की ब्रज चलति बड़ाई ॥ बकी पिआवन इनही आई । जोजन एक परे मुरझाई ॥ इनही तृणा वर्त्त लियो उड़ाई । पटक्यो द्वार सिला पर आई ॥ केसी असुर इन्ही संहारयो । अघा बकासुर इनही मारयो ॥ श्याम बरन तन पीत पिछौरी । मुरली राग बजावत गौरी ॥ देखि रूप चकितभई बाला । तनकी सुधि नरही तेहि काला ॥ सूरश्याम सों जानति नीके । मंगनि भई प्रकृति सुखजीके

॥ ४६ ॥ राग अगनो ॥ श्यामसुंदर आवै बनतें बनी आजु देखि देखि नैनरीझे । शीश मुकुट डोल श्रवण कुंडल लोल भ्रकुटी धनु नैना खंजखीझे ॥ दशन दामिनि ज्योति उरपर माल मोति ग्वाल बाल संग आवै रंग भीजे । सूर प्रभु श्याम राम संतनि सुखद धाम अंग अंग प्रति छवि निरखि जीजै ॥ ४७ ॥ राग कान्हरो ॥ विराजतरी बन माल गरे हरि आवत बनते । पुहुपनिसों पाग लटकि रही बाम भाग सो छवि टरत नमनते ॥ मोर मुकुट शिर सिखंड गोरज मुखपर मंडित नटवर वपु वेष धरे आवत छबिते । सूरदास प्रभु की छवि बल ललना निरखि थकित तन मन न्योछावरि करति आनद बरते ॥ ४८ ॥ राग सुघ राई ॥ आवत बनतें देख्यो मैं गाइन मांझ काहूको ढोटारी एक शीस मोर पखियां । अतिसो कुसुम अतिसोर जैसें दीरघ चंचल नयन मानो रस भरी डोलति दुंगल झुकियां ॥ केसर को खोरि किए गुंजावन माल हिये उपमा न कहि आवै जेती तेती नखियां । राजत पीत पिछौरी मुरली बजावे गौरी धुनि सुनि भई चौरी रही येक अंखियां ॥ चल्यो न परत पग गिरि परो सूधे मग भामिनि भवन ल्याई करगहे कखियां । सूरदास प्रभु चित चोरि लियो मेरे जान औरन उपाय दाय सुनों मेरी सखियां ॥ ४९ ॥ राग गौरी ॥ बल मोहन दोउ बनतें आये । जननि जशोदा मात रोहिनी हरषि दुऊनि दोउ कंठ लगाये ॥ काहे आजु अबार लगाई काहे कमल बदन कुंभिलाये । भूखे भये आजु दोउ भैया प्रात कलेऊ करन न पाये ॥ देखऊ जाय कहा जेवन कियो जशुमति रोहिनि तुरत पठाई । मैं अन्हवाय देति दुऊनि को तुम भीतर अति करौ चंडाई ॥ लकुटि लियो मुरली कर लीनी हलधर दियो बिषान । नीलांबर पीतांबर दीनो सैंति धरति करि प्रान ॥ मुकुट उतारि धरयो मंदिर लै पोछति है अंग घात । अरु बन माल उतारति गरतें सूर श्याम की मात ॥ ५० ॥ राग कल्यान ॥ अंग आभूषन जननि उतारति । हलरी ग्रीव माल मोतिन की कोपुर लै भुज श्याम निकारति ॥ क्षुद्रावलि उतारति कटितें सैंति धरति मनही मन वारति । रोहिनि भोजन करऊ चंडाई बार बार कहि कहि कर आरति ॥ भूखे भये श्याम हलधर आपुहि कहि अन्तर प्रेम बिचारति । सूरदास प्रभु मात जशोदा पटले दुऊनि अंग रज झारति ॥ ५१ ॥ राग कल्यान ॥ ए दोऊ मेरे गाय चरैया । मोल बेसाहि लिये मैं तुमको तब दोऊ रहे न न्हैया ॥ तुमसों टहल करावति निस दिन औरन टहल करैया । यह सुनि श्याम हसे कहि दाऊ झूठेहि कहतिहै मैया ॥ जानि परत नहि सांच झुठाई धेनु चरावत रहै झरैया । सूरदास प्रभु हंसति जशोदा मैं चेरी कहि लेति कन्हैया ॥ ५२ ॥ राग कल्यान ॥ यह कहि जननि दुहुनि उर लावति । दुहना सुत अंग परसि तरनि जल बलि बलि गई कहि कहिके न्हवावति ॥ शीतल जल कपूर रस सुरभी कनक लये अचवावति ॥ भयो अरू मुख धोय तुरतही पीरे पांन बीरी मुख नावति । सूर श्याम सुख जानि मदिर मन सेज्यापर संग ले पौढावति ॥ ५३ ॥ राग बिहागरो ॥ सोवत नींद आय गई श्यामहि । सहरि उठी पौढाय दुहुनि को आपु लगी गृह कामहि ॥ बरजति है घरके लोगनि को अरु ये खै ले नामहि । गाढे बोल न पावत काहू पुर भोजन बलरामहि ॥ शिव सनकादिक अन्त न पावत ध्यावत हैं निसि जामहि ।

सूरदास प्रभु ब्रह्मसनातन सोवत नन्द के धामहि ॥ ५४ ॥ राग बिहागरो ॥ देखत नन्द कान्ह अति सोवत । भूखे भये आजु बन भीतर यह कहि कहि मुख जोवत ॥ कह्यौं नहीं मानत काहू को आपु हठी दोउ बीर । बार बार करसों तन पोंछत अतिहि प्रेम की पीर ॥ सेज मगाय लई तहं अपनी जहां श्याम बलराम । सूरदास प्रभु के ढिग सोये संग पौढि नन्द बाम ॥ ५५ ॥ राग बिहागरो ॥ जागि उठे तब कुंवर कन्हाई । मैया कहां गई मोहिगते संग सोवत जान्यो बल भाई ॥ जागे नन्द जशोदा जागी बोलि लये हरि पास । सोवत झझकि उठे काहे तें दीपक कियो प्रकास ॥ सपने कूदि परयो जमुना दह काहू दियो गिराइ । सूर श्यामसों कहति जशोदा जिनि हो लाल डराइ ॥ ५६ ॥ राग गौरी मैं बरजूं जमना तट जात । सुधि रहि गई न्हात को जिनि डरपौ मेरे तात ॥ नन्द उठाय लियो कोरा करि अपने संग पौढाई । वृन्दावन में फिरत जहां तहं केहि कारन तू जाई ॥ अब जिनि जैहौ गाय चरावन तहं कोउ रहति बलाई । सूर श्याम दम्पति बिच सोये नींद गई तब आई ॥ ५७ ॥ राग कल्यान ॥ सपनों सुनि जननी अकुलानी । दम्पति बात कहत आपुस में सोवत सारंग पानी ॥ या ब्रजको जीवनि यह ढोटा कहा देख्यो येहि आजु । गाय चरावन जाय न दीजै जाको है यह काजु ॥ ग्रह सम्पति है तनक ढिटौना इनही लों सुख भोग । सूर श्याम बन जात चरावन हंसी करत सब लोग ॥ ५८ ॥ राग भैरों ॥ यहि अन्तर भिनुसार भयो । तारा गन सब गगन छपाने अरुण उदित अन्ध कार गयो ॥ जागी महरि काज गृह लागी निसिको दुख सब भूलि गयो । प्रातस्नान करन जमुना को नन्दहि सुरत उठाय दयो ॥ नयन हारि सब ग्वालि बुलाई भोर भयो उठि मथो दह्यौ । सूर नन्द घरनी आपुनउ मथति मथानी नेत गह्यौ ॥ ५९ ॥ राग सूहोबिलावल जननि जगावति उठो कन्हाई । प्रकट्यों तरनि किरनि गन छाई ॥ आवहु चन्द्रबदन दिखराई । बार बार जननी बलि जाई ॥ सखा द्वार सब तुमहि बुलावत । तुम कारन हम धाए आवत ॥ सूर श्याम उठि दरशन दीन्हो । माता देखि मुदित मन कीन्हो ॥ ॥६०॥ राग रामकली ॥ दाऊ कहि श्याम पुकारयो । लीलांबर पट ऐंचि लियो हरि मनों बादर तें चन्द उजारयो ॥ हंसत हंसत दोउ बाहेर आये माता लै जल बदन पखारयो । दंत बन लै दुहुं करी सुखारी नयननि को आलस जु बिसारयो ॥ मांखन खाहु दुहुनि कर दीनो तुरत मथ्यो मीठो अति भारयो । सूरदास प्रभु खात परस्पर माता अन्तर हेतु विचारयो ॥ ६१ ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ अथ काली दमन लीला को प्रसंग ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग बिलावल ॥ नारदसों नृप करत विचार । व्रजमें ऐदोऊ कोउ अवतार ॥ नन्द सुवन बलराम कन्हाई । इनकी गति मैं कछू न पाई ॥ तृणावर्त्त से दूत पठाये । तापाछें केसी चढ धाये ॥ वकी पठाय दई पछि लेही । ऐसेनि को बल वैसही लेही ॥ उनतें कछू भयो नहि काजा । यह सुनि सुनि मोहि आवत लाजा ॥ अब मनमें तुम एक विचारो । सूर श्याम बलरामहि मारो ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ नारद मुनिनृप सों यह भाखत । वेहैं काल तुम्हारे प्रगटे काहे को तुम उनको राखत ॥ काली उरग रह्यौ जनुना में तहां के कमल मंगावहु । दूत पठाय देहु व्रज ऊपर नंदहि अति डर पावहु ॥ यह सुनिके व्रज लोग डरेंगे वेउ सुनिहैं यह बात । नन्द जसोदा बहुत डरेंगे इहे कहो उप घात ॥ यह सुनि कंस बहुत सुख पायो भली कही यह मोहि । सूरदास प्रभु कों मुनि जानत ध्यान करत मन जोहि ॥ २ ॥ राग सूहो ॥ कंस बुलाय दूत एक लीन्हों । कालीदह के फूल मंगाये पच लिखाय ताहि कर दीन्हों यह कहियो व्रज जाय नंद सों कंस राज अति काज मंगाये । तुरत पठाय दियेही बनि हैं भली भांति कहि कहि समुझाये ॥ यह अन्तर जामी जिय जानी आपु रहे बन ग्वाल पठाये । सूर श्याम व्रज जन सुखदायक कंस काल जिय डरप बढ़ाये ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ खेलन चले नंदकुमार । दूत आवत जानि व्रज में आपु दीन्हो टार ॥ नंद जमुना न्हाय आये महरि ठाढी द्वार । नृपति दूत पठाय दीन्हों चलो व्रज अहंकार ॥ महर पैठत सदन भीतर छींक बाईं धार । सूर नंद कहत महरिसों आजु कहा विचार ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ यह सुनि कंस मुदित मन कीन्हों । दूतहि प्रकट कही यह बानी पच लिखाय नन्द कों दीन्हों । कालीदह के कमल पठावहु तुरत देखि यह पाती । जैसे कमल काहि ह्वां पहुंचे तू कहियो यह भांती ॥ यह सुनि दूत तुरत ही धायो तब पहुंच्यो व्रज जाई । सूर नंद कर पाती दीनों दूत कह्यो समुझाई ॥ ५ ॥ राग सूहो ॥ पाती बांचत नंद डराने । कालीदह के फूल पठावहु सुनी सबनि व्रजलोग घराने ॥ जौ मोकों नहिं फूल पठावहु तौ व्रज करौं उजारि ॥

महर गोप उपनंदन राखौं सबहिन डारौं मारि ॥ पहुप देहु तौ बनै तुम्हारी नातरु गये बिलाय । सूर श्याम बल मोहन तेरे मागे उनहि धराय ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ नंद सुनत मुरझाय गये । पाती बांची सुनी दूत मुख यह बानी सुनि चकृत भये ॥ बल मोहन खटकत बांके मन आजु कही यह बात । कालीदह के फूल कहौं धौं को आने पछितात ॥ और गोप सब नंद बुलाये कहत सुनों यह बात । सूर सुनों नृप यहि ढंग आयो बल मोहन परघात ॥ ७ ॥ राग जयतश्री ॥ आपु चढै ब्रज ऊपर कालि । कहां निकसि जैये को राखे नंद कहत हैं भालि ॥ मोहनही जिय को डर नेकहुं दोउ सुत कों डरपाऊं । गांवतजौं कछु जांउ निकसि लै इनहीं काज पराऊं ॥ अब उबार नहिं देखत कतहूं शरण राखिको लेई । सूर श्याम को बरजति माता बाहर जान न देई ॥ ८ ॥ राग आसावरी ॥ नंद घरनि ब्रज नारि बिचारति । ब्रजहि बसत सब जनम सिरानो ऐसे कंस करी नहिं आरति ॥ कालीदह के फूल मगावत को आने धौं जाई । ब्रज बासी नातरु सब मारौ बांधो बलहि कन्हाई । यह कहतहि दोउ नयन ढराने नंद घरनि दुख पाई । सूर श्याम चितवत माता मुख बूझत बात बनाई ॥ ९ ॥ राग आसावरी ॥ बुझहु जाय तात सों बात । मैं बलि जाउं मुखार बिन्द की तुमहिं काज कंस अकुलात । आए श्याम नंद पै धाए आन्यो मात पिता अकुलात ॥ अबहीं दूरि करौं दुख इनको कंसहि पठय देहु अब जात ॥ मोसों कहहु बात बाबा यह बहुत करत तुम सोच विचार ॥ कहा कहा मैं तुम सो प्यारे कंस करत कछु तुम सो झार ॥ जब सों जनम भयो हरि तेरो कितने कर बर टरे कन्हाई । सूर श्याम कुल देवनि ते को जहां तहां करि लियो सहाई ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ तुमहि कहत को करे सहाई ॥ सो देवता संमही मेरे ब्रज तें अनत कहूं नहि जाई । बड़ो देव गिरि गोवर्धन है जो पुरवे आसा मनभाई । वह देवता मनावहु सब मिलि तुरंत कमल जो देय पठाई ॥ बाबा नंद झखत केहिकारन यह कहि मया मोह अरु झाई । सूर दास प्रभु मात पिता को तुरतहि दुख डार्यो बिसराई ॥ ११ ॥ राग नट ॥ खेलन चले कुंवर कन्हाई । कहत घोष निकास जैये जहां खेलै धाइ ॥ गेंद खेलत बहुत बनि है आभानो कोउ जाइ । घरहि गये सखा श्री दामा गेंद तुरतहि ल्याय ॥ अपने करले श्याम देखो अतिहि हरष बढ़ाय । सूरके प्रभु सखा लीन्हें करत खेल बनाय ॥ १२ ॥ राग नट ॥ खेलत श्याम सखा लिये संग ॥ एक मारत एक लोकत गेंदहि एक मागत करि नाना रंग ॥ मार परस्पर करत आपु में अति आनन्द भये मन मांहि । खेलतही में श्याम सबनिको जमुना तट को लीनों जाहि ॥ मारि भजत जो जाहि ताहि सों मारत खेत आपनों दाव । सूर श्याम के गुण को जाने कहत और कछु और उपाव ॥ १३ ॥ राग गौरी ॥ लै गये टारि जमुना तट ग्वालनि । आपुन जात कमल के काजहि सखा लिये संग ख्यालनि ॥ जोरी मरि भजत उतहीं कों जात जमुन के तीर । एक धावत पाछें उनहीं के पावत नहीं अधीर । रौंटी करत तुम खेलतहीं में परी कहा यह बानि ॥ सूर श्याम सों कहत ग्वाल यह तुमहि भले कर

जानि ॥ १४ ॥ राग नट ॥ श्याम सखा सों गेंद चलाई । श्रीदामा मुरि अंग बचायो गेंद परयो कालीदह जाई ॥ धाय गह्यो तब फेंट श्याम को देहु मेरो तुम गेंद मगाई । और सखा जिनि मोकों जानहु मोसों जिनि तुम करौ ढिटाई ॥ जानि बूझि तुम गेंद गिरायो अब दीन्हेंही बनें कन्हाई । सूर सखा सब हंसत परस्पर भली करी हरि गेंद गंवाई ॥ १५ ॥ राग सोरठ ॥ फेंठ छांड़ि मोरि देहु श्रीदामा । काहे को तुम रारि बढावत तनक बात के कामा ॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बाह गहत हौं धाई । छोटो बड़ो न जानत काहू करत बराबर आई ॥ हम काहे के तुमहि बराबरि बड़े नन्द के पूत । सूर श्याम दीनेही बनि है बहुत कहावत धूत ॥ १६ ॥ राग कल्याण ॥ तोसों कहा धुताई करिहौं । जहां करी तहां देखी नाहीं कहा तोसों मैं खरि हौं ॥ मुंह सम्हारि तू बोलत नाहीं कहत बराबरि बात । पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसनि कंपावत गात ॥ सुनहु श्याम तुमहूं सरि नाही ऐसे गये बिसाई । हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई ॥ १७ ॥ राग गौरी ॥ हमही पर सतरात कन्हाई । प्रथमहि कमल कंस का दीजै डारै हमहि मराई ॥ सांच कहौं मैं तुमहि श्रीदामा कमल काज मैं आयो । कहो कंस बपु रोकेहि लायक जाके मोहि डरायो ॥ अघा बका केसी शकटासुर तृणा सिला पर डारयो । बकी कपट करि मारन आई ताकों तुरत पछारयो ॥ कालीदह जल छुवत मरे सब सोइ काली धरि ल्याऊं । सूर दास प्रभु देह धरे को गुण प्रकट्यौ यहि ठाऊं ॥ १८ ॥ राग सोरठ ॥ रिस करि लीनों फेंट छिड़ाई । सखा सबै देखत हैं ठाढे आपुन चढे कदम्ब पर धाई ॥ तारी दै दै हंसत सबै मिलि श्याम गये तुम भागि डराई । रोवत चले श्रीदामा घर कों जशुमति अ गें कहिहौं जाई ॥ सखा सखा कहि श्याम पुकारयौ गेंद आपुनी लेहु न आई । सूर श्याम पीताँबर काछे कूदि परे दह में भहराई ॥ १९ ॥ राग गौरी ॥ हाय हाय कहि सखनि पुकारयो । गेंद काज यह करी श्रीदामा नन्द महर को ढोटा मारयो ॥ जशुमति चली रसोई भीतर तबहि ग्वाल एक छीकी । ठठुकि रही द्वारेपर ठाढी बात नहीं कछु नीकी ॥ आय अजिर निकसी नन्दरानी बहुरों दोष मिटाई । मंजारी आगे ह्वै निकसी पुनि फिरि आंगन आई ॥ व्याकुल भई निकसि गई बाहेर कहां धौं गयो कन्हाई । बायें काग दाहिनो खरसुर व्याकुल घर फिरि आई ॥ खन भीतरि खन बाहेर आवति खन आगन यहि भांति । सूर श्याम को टेरति जननी नेक नहीं मन सांति ॥ २० ॥ ॥ राग गौरी ॥ देखे नंद चले घर आवत । पैठत पोरि छींक भई बांयें रोइ दाहिनी धाय सुनावत ॥ फरकत श्रवन श्वान द्वारे पर गररी करत लराई । माथे पर ह्वै काग उडानो कुसुगुन बहुतिक पाई ॥ आये नंद घरहि मन मारे व्याकुल देखी नारि । सूर नंद जुवतीसों बूझत बिनु छबि बदन निहारि ॥ २१ ॥ राग नट ॥ नंद घरनीसों बूझत बात बदन मुरझाय गयो क्यों तेरो कहा गयो बल मोहन तात ॥ भीतर चली रसोई कारन छींक परी तब आंगन आय । पुनि आगे ह्वै गई मंजारी और बहुत मैं कुसुगुन पाय ॥ मोहि भये कुसुगुन घर पैठत आजु कहा यह समुझि न जाय । सूर श्याम कहां गये आजु

धौं बार बार बूझत नंदराय ॥ २२ ॥ राग गौरी ॥ महरि महर मन गये जनाय । खन भीतर खन आंगन ठाढे खन बाहेर देखत हैं जाय ॥ यहि अवसर सब सखा पुकारत रोवत आये ब्रजको धाय । आतुर भये नंद घरही को महरि महरसों बात सुनाय ॥ चकृत भये दोउ बूझन लागे कहो बात हमको समुझाय । सूर श्याम खेलतहि कदम चढि कूदि परे काली दह जाय ॥ २३ ॥ राग सोरठ ॥ सपनो परगट कियो कन्हाई । सोवतहीं निसि आजु डरानो हमसों कहि यह बात सुनाई ॥ धरनि परी मुरझाय जशोदा नंद गये जमुना तट धाई । बालक सब नंद संगहि धाये ब्रज घर जहाँ तहां शोर मचाई ॥ चाहि चाहि करि नंद पुकारत देखत ठौर गिरै भइ राई । लोटत धरनि परत जल भीतर सूर श्याम दुख दियो बुढाई ॥ २४ ॥ राग गौरी ॥ ब्रज बासी यह सुनि सब आये । कहां परयो गिरि कुंवर कन्हाई बालक लै सोइ ठौर दिखाये ॥ सूनो गोकुल कियो श्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोई । नंद गिरत सबही धरि राख्यो पोंछत बदन नीर लै धोई ॥ ब्रज बासी तब कहत नंदसों मरन भयो सबही को आई । सूर श्याम विनु को बसिहै ब्रज धृग जीवन तिहुं भुवन कन्हाई ॥ २५ ॥ राग गौरी ॥ महरि पुकारति कुंवर कन्हाई । मांखन धरयो तिहारेहि कारन आजु कहाँ अबसेर लगाई ॥ अति कोमल तुम्हरेहि मुख लायक तुम जेंवहु मेरो नयन जुडाई । धौरी दूध औटिही राख्यो अपने कर दुहि गये बनाई ॥ बरजति ग्वालि जशोदा के सब यह कहि नीके हैं जदुराई । सूर श्याम सुत बिरह मात के यह वियोग बरन्यो नहि जाई ॥ २६ ॥ ॥ राग गौरी ॥ मांखन खाहु लाल मेरे आई । खेलत आजु अबार लगाई ॥ बैठहु आय संग दोउ भाई । तुम जेंवहु मैया बलि जाई ॥ सद मांखन अति हित मै राख्यो । आजु नहीं नेकुहु तैं चाख्यो ॥ प्रातहि तें मैं दिये जगाई । दतबनि करि जो गये दोउ भाई ॥ मैं बैठी तब पंथ निहारों । आवहु तुम पर तनु मनु वारों ॥ ब्रज जुवती सुनि सुनि यह बानी । रोवति धरनि परी अकुलानी ॥ सोक सिंधु बूड़ी नन्द रानी । सुधि बुधि तनकी सबै भुलानी ॥ सूर श्याम लीला यह कीन्हो । सुखके हेत जननि दुख दीन्हो ॥ २७ ॥ राग नट ॥ चौंकि परी तनकी सुधि आई । आजु कहा ब्रज सोर मचायो तब जान्यों दह गिरयो कन्हाई ॥ पुच पुच कहिके उठि दौरी व्याकुल जमुना तीरहि धाई । ब्रज बनिता सब संगहि लागी आय गये बल अग्रज भाई ॥ जननी व्याकुल देखि प्रबोधित धीरज करु नीके जदुराई । सूर श्यामको नेकु नहीं डर जनि तू रोवे जशुमति माई ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज बासी सब उठे पुकारी । जल भीतर कहा करत मुरारी ॥ संकट में तुम करत सहाई । अब क्यों नहीं बचावत आई मात पिता अतिही दुख पावत । रोयरोय सब कृष्ण बोलावत ॥ हलधर कहत सुनहु ब्रजवासी । वे अन्तर जामी अबि नासी ॥ सूरदास प्रभु आनंद रासी । रमा सहित जलही के बासी ॥ २९ ॥ राग सूहो ॥ अति कोमल तनु धरयो कन्हाई । गये तहां जहाँ काली सोवत उरग नारि देखत अकुलाई ॥ कह्यो कौनको बालक है तू बार बार कहि भागि न जाई । छिनुकहि में जरि भस्म होयगो जब देखै उठि जागि जम्हाई ॥

उरग नारि की बानी सुनि के आपु हंसे मनमें मुसकाई । मोको कंस पठायो देखन तू याको अब देहि जगाई ॥ कहा कंस दिखरावत इनको एक फूंकही में जरि जाई । पुनि पुनि कहति सूरके प्रभुको तू अब काहेन जाय पराई ॥ ३० ॥ राग गोंड मलार ॥ कहा डर करों एहि फणिक को बावरी । कह्यो मेरो मानि छांडि अपनी बानि अबहि परिहै जानि टेक सबरावरी ॥ तोहि देखि मोहि मया अतिही भई कौनको सुवन तू कहां आयो । मरो यह कंस निरबंस वाको होय करत्रो यह गंस तोको पठायो ॥ कंस को मारि हौं धरनि निरवारिहौं अमर गद्दारिहौं उरग घरनी ! सूर प्रभुके बचन सुनत उरगिनि कह्यो जाय अब क्योंन मति भई मरनी ॥ ३१ ॥ राग मारू ॥ झिरकि कै नारि दै गारि गिरिधारि तब पूंछि पर लात दै अहि जगायो । उठ्यो अकुलाय डरपाय खग राय को देखि बालक गर्ब अति बढायो ॥ पूंछि राखी चांपि रिसनि काली कांपि दैखे सब सांपि त्रासांन भूखे । पूंछि लीनी झटकि धरनिसों गहि पटकि फूंकरत्रो लटकि धरि करि क्रोध फूले ॥ करत फन घातविष जात अतुरात अति नीर जरि जात नहि गात परसै । सूर के प्रभु श्याम लोकाभि राम बिनु जान अहि राज विष ज्वाल बरसै ॥ ॥ ३२ ॥ राग नट ॥ इनको लै ब्रज लोक दिखाऊं । कमल भार इनहीं पर लादौं इन को आपु जनाऊं ॥ मात पिता अतही दुख पावत दरशन कालि लह्यो ब्रज ऊपर धाऊं । मन मन करत विचार श्याम यहअब कालो को दैमन हरष बढाऊं ॥ कमल पठाय देहुअबही नृप राजहि दाव दिखाऊं । सूरदास प्रभुको यह बानो ब्रज बासिन को दुख बिसराऊं ॥ ॥ ३३ ॥ राग कान्हरो ॥ उरग नारि सब कहति परस्पर देखहु यह बालक की बात विष ज्वाला जल जरत जमुन को वाके तन लागत नहि तात ॥ यह कछु जच मंत्र है जानत अतिही सुन्दर कोमल गात । यह अहि राज महा विषज्वाला कितने करत सहस फन घात ॥ छुवत नहीं तनया के विष कहुं अबलों बच्यौ पुण्य पितु मात । सूरश्यामसो दाव बतायो काली अंग लपेटत जात ॥ ३४ ॥ राग बिलावल ॥ उरग लियो हरि कों लपटाई गर्ब बचन कहि कहि मुख भाषत मोकों नहि जानत अहिराई ॥ लियो लपेटि चरण तें सिखलों अति यह मोसों करी ढिठाई । चांपी पूंछि लुकावत अपनी युवतिन कों नहि सकत दिखाई ॥ प्रभु अन्तर्यामी सब जानत अवगारों यह सकुचि मिटाई । सूरदास प्रभु तन बिस्तारत्रो काली बिकल भयो तब जाई ॥ ३५ ॥ राग कान्हरो ॥ जबहि श्याम तन अति बिस्तारत्रो । पट पटात टूटत अंग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकारत्रो ॥ यह बानी सुनतहि करुणा मय तबहि गये सकुचाई । यहै वचन सुनि द्रुपद सुता सुख दीनों बसन बढाई ॥ यहै वचन गजराज सुनायो गरुड़ छांडि तहां धाये । यहै वचन सुनि लाक्षा गृहमें पांडव जरत बचाये ॥ यह बानो सहिजात न प्रभुसों ऐसे परम कृपाल । सूर दास प्रभु अंग सकोरत्रो व्याकुल देख्यो व्याल ॥ ३६ ॥ रागगौरी ॥ नाथत व्याल बिलम्ब न कीनों । पगसों चांपि घोंचि बल तोरत्रो फोरि नाक करसों गहि लीनो ॥ कूदि चढ़े ताके माथे पर काली करत विचार । श्रवणनि सुनो रही यह बानी ब्रज ह्वै है अवतार ॥ तेई अवतरे आय गोकुल में मैं जानी यह बात । अस्तुति करन लग्यो सहसहु मुख धन्य

धन्य जगतात ॥ बार बार कहि शरण पुकारौ राखि राखि गोपाल । सूर दास प्रभु प्रकट भये जब देख्यो व्याल बिहाल ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ देखि दरश मन हरष भयो । पूरन ब्रह्म सनातन तुमहीं ब्रज कृष्णा अवतार लयो ॥ श्री मुख कह्यो अजहूं लौं तुम नहि जान्यो ब्रज अवतार । और कौन जो तुमसों बचिहै सहस फननि के झार ॥ अन जानत अपराध किये बहु राखि शरण मोहि लेहु । सूर दास प्रभु धनि मेरें फन चरण कमल जे देहु ॥ ३८ ॥ राग गौरी ॥ अब कोन्हों प्रभु मोहि सनाथ । कोटि कोटि कीटहु समनाही दरशन दियो जगत के नाथ ॥ अशरण शरण कहावत हौ तुम कहत सुनी भक्तनि मुख बात । ये अपराध क्षमा सब कीजे धृग मेरी बुधि कहत डरात ॥ दीन बचन सुनि कालो मुखतें चरण धरे फणि फणि प्रति आपु । सूर श्याम देख्यो अहि व्याकुल सुख दीने मेट्यो तैताप ॥ ३९ ॥ राग गौरी ॥ जशुमति टेरति कुंवर कन्हैया । आगें देखि कहति बलरामहि कहां रह्यो तुम भैया ॥ मेरो भैया आवत अबही तोहि दिखाऊं मैया । धीरज करहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेति बलैया ॥ पुनि यह कहति मोहि परमोधत धरनि गिरी मुरझैया । सूर विना सुत भइ अति व्याकुल मेरो बाल कन्हैया ॥ ४० ॥ राग सोरठ ॥ ब्रजबासी सब भये बिहाल । काह्न काह्न कहि टेरत हैं व्याकुल गोपी ग्वाल ॥ अब को बसे जाय ब्रज हरि बिनु धृग जीवन नरनारी । तुम बिनु यह गति भई सबनि की कहां गये बनबारी ॥ प्रातहि तें जल भीतर पैठे होंन लग्यो जुगजाम कमल लिये सूरज प्रभु आवत सबसों कहि बलराम ॥ ४१ ॥ रागनट ॥ आवत उरग नाथे श्याम । नन्द जशोदा गोप गोपनि कहत हैं बलराम ॥ मोर मुकुट बिशाल लोचन श्रवण कुंडल लोल । कटि पीतांबर बेष नटबर नटत फण प्रति डोल ॥ देव दिवि दुंदुभि बजावत सुमन गन बरषाय । सूर श्याम बिलोकि ब्रज जन हरष मनहि बढाय ॥ ४२ ॥ ॥ रागनट ॥ हलधर कहत श्याम यह आयो । मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो अधिक निकट जब आयो ॥ दिवि दुंदुभी बजावत गावत फण प्रति निर्त्तत श्याम । ब्रजबासी सब मरत जिवाये हरषि उठी सब बाम ॥ सोक सिंधु बहि गयो तुरतही सुखको सिंधु बढायो । सूरदास प्रभु कंस निकंदन कमल उरग पर ल्यायो ॥ ४३ ॥ राग काह्नरौ ॥ फन प्रति प्रति निर्त्तत नंद नंदन । जल भीतर जुग जाम रहे कहु मिट्यौ नही तनु चंदन ॥ उडै काछनी कटि पीतांबर शीश मुकुट अति सोहत । मनो गिरि ऊपर मोर अनंदित देखत ब्रज जन मोहत ॥ अंबर थके अमर ललना संग जैजै धुनि तिहुं लोक । सूरश्याम कालो पर निर्त्तत आवत हैं ब्रज ओक ॥ ४४ ॥ राग सोरठ ॥ गोपाल राय नृत्यत फन पर ऐसे । मनो गिरिवर पर वारिद आये मोर आनंदित जैसे ॥ डोलत मुकुट शीश पर हरि के कुंडल मंडित गण्ड । पीत बसन दामिनि तनु घन परतापर सुरको दण्ड ॥ उरग नारि आगे ठाढी हो मुखमुख अस्तुति गावै । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब हम मांगें पति पावै ॥ ४५ ॥ राग काह्नरौ ॥ बहुत कृपा यह करी गुसांई । इतनो कृपा करी नहि काहू जिनतें लिये राखि शरणाई ॥ कृपा करी प्रह्लाद भक्तको द्रुपद सुता पति राखी । ग्राह मुखहि गजराज छुड़ाये बेद पुरान न भाखी ॥ जो कछु कृपा करी कालो सों सो

काहू नहि कीनों । कोटि ब्रह्माण्ड अंग प्रति रोमनि ते पग फनि प्रति दीनों ॥ धरनी सिर धरि शेष गर्ब करि यहि भरि अधिक संभारयौ । पूरन कृपा करी सूरज प्रभु फन फन प्रति पगु धारयौ ॥ ४६ ॥ राग सोरठ ॥ ठाढे देखत हैं व्रजबासी । कर जोरे अहिनारि बिनय कर कहति धन्य अबिनासी ॥ जे पद कमल रमा उर राखति परसि सुरसुरी आई । जे पद कमल शंभु की सम्पति ते फन फन प्रति धरे कन्हाई ॥ जे पद परसि सिला उद्धरि गई पांडव गृह फिरि आये । जे पद कमल भजन महिमा तें जन प्रह्लाद बचाये ॥ जेपद ब्रज युवतिन सुख दायक वै पद तिहूं भुवन किये बावन । सूर श्याम ते पद फन फन प्रति निर्त्तत अहि किये पावन ॥ ४७ ॥ राग सोरठ ॥ ऐसो कृपा करी नहि काहू । खम्भ प्रगटि प्रह्लाद बचायो ऐसी कृपा न ताहू ॥ ऐसी कृपा करी नहि गजकों पाय पियादे धाये । ऐसी कृपा तबहुं नहि कीनी नृपतिन बंद छुड़ाये ॥ ऐसी कृपा करी नहि तबहूं द्रोपदि नग्नि समय पति राखी । ऐसी कृपा करी न भीष्म पर सत्य प्रतिज्ञा भाखी ॥ पूरन कृपा नंद जशुमति कों सेा पूरन यहि पायेा । सूरदास प्रभु धन्य कंस जिनि तुमसों कमल मंगायेा ॥ ४८ ॥ राग कान्हरौ ॥ सुनहु कृपा निधि जितो कृपा तुम या काली कों कीनी । इतो बड़ाई कबहूं कैसेा नहि काहू कों दीनी ॥ जिनि पद कमल सुकृत जल परस्यो अजहूं धरयौ सिर शीस । ते पद प्रगट धरे फन फन प्रति धन्य कृपा जग दीस ॥ एक अंड को भार बहुत है गर्ब धरयौ जिय शेष । यहि भर अधिक सह्यो अपने सिर अमित अंड मय भेष ॥ सुर नर असुर कीट पशु पक्षी सब सेवक प्रभु तेरे । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब या अपने जन केरे ॥ ४९ ॥ राग कान्हरौ ॥ चरण कमल बन्दो जग दीश जे गोधन के संग धाये । जे पद कमल धूरि लपटाने कर गहि गोपिनि उर लाये ॥ जेपद कमल युधिष्ठिर पूजे राज सूय में चलि आये । जेपद कमल पितामह भीषम भारत में देखन पाये । जेपद कमल रमा उर भूषन बेद भागवत मुनि भाषै । जेपद कमल शंभु चतुरानन हृदै कमल अन्तर राखै । जेपद कमल लोक पावन त्रय बलि राजा की पीठि धरे । तेपद कमल सूर के स्वामी काली फन प्रति नित्य करे ॥ ५० ॥ राग कान्हरो ॥ बंदौ चरण सरोज तुम्हारे । सुंदर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्रान पियारे । जेपद पद्म सदाशिव को धन सिंधु सुता उरतें नहि टारे । जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन बच क्रम प्रहलाद संभारे । जेपद पद्म फिरत वृन्दाबन अहि सिरु धरि अगनित रिपु मारे । जेपद पद्म परसि ब्रज जुवती सबै सुदै सुत सदन बिसारे । जेपद पद्म लोक त्रय पावन सुर सरि दरश कटत अघ भारे । जेपद पद्म परसि ऋषि पत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे । जेपद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज संवारे । तेइ पद पंकज सूर दास सुख करन बचन अहि फन प्रति धारे ॥ ५१ ॥ राग कान्हरो ॥ गिरिधर ब्रज धर मुरली धर । माधौ पीतांबर धर मुकुट धर गोप धर डग धर । शंख धर सारंग धर चक्र धर गदा धर रस धर । अधर सुधा धर कंबु कंठ धर कौस्तुभ मनि धर बन माला धर । मोती माल धर कटि कांची धनी धर भृगु रेखा धर पद्म हस्त धर । लक्ष्मी धर अरु गुंज माल धर काली फनि प्रति चरण कमल

धर। सूर दास के प्रभू जगत धर भगत धर दुष्ट कंसके केस धर ॥ ५२ ॥ राग कान्हरो ॥ सबै ब्रज जमुना के तीर । काली नाग के फन पर निर्त्तत संकर्षन को बीर । लाग गान थेई थेई करत उघटत ताल मृदंग गंभीर । प्रेम मगन गावत गन गंधर्व व्योम विमान निभीर । उरग नारि आगें भई ठाढी नैननि ढारति नीर । हमको दान देहु पति छाडहु सुंदर श्याम सरीर । आये निकसि पहिर मनि भूषन पीत बसन कटि चीर । सूर श्याम कों भुज भरि भेंटत अंकम देत अबीर ॥ ५३ ॥ राग कान्हरो ॥ गरुड़ त्रासतें जौ ह्यां आये । तौ प्रभु चरण कमल फण फण प्रति अपने सीस धराये । धरि ऋषि आपदियो खगपति को ह्यांतब रह्यो छिपाई । प्रभु बाहन डर भाजि बच्यो अहिनातरु लेते खाई । यह सुनि कृपा करी नंद नंदन चरण चिन्ह प्रकटाये । सूर दास प्रभु अभय ताहि करि उरग द्वीप पहुंचाये ॥ ५४ ॥ राग कल्यान ॥ जैजै धुनि अमरनि नभ कीनो । धन्य धन्य जग दीश गुसाई अपनों करि अहि लीनों । अभय कियो फन चिन्ह चरण धरि जानि आपनों दास । जलतें काढि कृपा करि पठयो मेटि गरुड को त्रास । अस्तुति करि अहि पति कुटुंब लै चल्यो आपने ओक । सूर श्याम मिलि मात पिता को दूरि कियो तन सोक ॥ ५५ ॥ राग नट ॥ लीनो जननी कंठ लगाई ॥ अंग पुलकित रोम गद्गद सुखद आंसु बहाई । मैं तुमहि बर जति रह्यौं हरि जमुन तट जिनि जाय । कंस कमल मंगाइ पठये तात गये डराय । मैं कह्यो निसि सपन तोसों प्रकट भई सुआय । तात तूं अशगुन जो देखे सोऊ प्रकट लखाय । ग्वाल संग मिलि गेंद खेलत आये जमुना तीर । काहु लै मोहि डारि दीनों कालिया दहनीर । यह कही तब उरग मोसों किनि पठायो तोहि । मैं कही नृप कंस पठयो कमल करन मोहि । यह सुनत डरि कमल दीनो मोहि लियो चढाय । सूर यह कहि जननि बोधो देख्यो तुमही आय ॥ ५६ ॥ राग गौरी ॥ ब्रज बासिन सों कहत कन्हाई । जमुना तीर आज सुख कीजे यह मेरे मन आई । गोपनि सुनि अति हरष बढायो सुख पायो नंदराई । घरघर तें पकवान मगाये ग्वालनि दियो पठाई । दधि माखन घटरस के भोजन तुरतहि ल्याये जाई । मात पिता गोपी ग्वालनि कों सूरज प्रभु सुख दाई ॥ ५७ ॥ राग गौरी ॥ तुरत कमल अब देहु पठाई । सुनहु तात अब बिलंब न कीजै कंस चढै ब्रज ऊपर आई । कमल मगाय लिये तट ऊपर कोटि कमल तब दिये पठाई ॥ बहुत बिनै कर पाती पठई नृप लीजै सब पुहुप गनाई । तैसो हमको आज्ञा दीजै बहुत धरे जल मांझ सजाई । सूर दास नृप तुव प्रतापतें काली आय गयो पहुंचाई ॥ ५८ ॥ राग सोरठ । सहस शकट भरि कमल चलाये ॥ अपनी ससुर और गोप जे तिनके साथ पठाये । और बहुत कांवरि दधि माखन अहिरनि कांधें जोरि । नृपके हाथ पत्र यह दीजो बिनती कीजो मोरि । मेरो नाम नृपति सों लीजो श्याम कमल लै आयो ॥ कोटि कमल आपुन नृप मागे तीन कोटि हैं पायो । नृपति हमहि अपनो करि जानो तुम लायक हम नाहीं । सूर दास यह कहो नृप आगें तुमहि छांड़ि कहां जाहीं ॥ ५९ ॥ राग नट ॥ कमलन के भार दधि भार माखन भार लिये सब

ग्वाल नृप द्वार आये । तुरतहि टेरि गति कोरि सकटनि जोरि भये ठाढे पोरि तब सुनाये । सुनत यह बात अतुरात और डरात मन महलतें निकसि नृप आपु आयो । देखि दरबार सब ग्वाल नहि कहूं पार कमल के भार सकटनि सजायो ॥ अतिहि चकृत भयो ज्ञान हरि हर लयो सोच मनमें ठयो कहा कीनों । गोप सिर ढोरि नृप बोलि कर जोरि कै पुण्यके काज प्रभु पच दीनों । यह कह्यो नंद नृप बंदि अहि इन्द्र पै गयो मेरो नंद नाम लीनों । उठ्यो अकुलाय डरपाय तुरतहि धाय गयो पहुंचाय तट आय दीनों । यह कह्यो श्याम बलराम लीजो नाम राजको काम यह हमहि कीन्हों । और सब गोप अवत जात नृप बात कहत सब सूर मोहि नहीं चीन्हों ॥ ई० ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालनि हरिकी बात सुनाई । यह सुनि कंस गयो मुरझाई तब मनहीं मन करत बिचारा । यह कोउ भलो नहीं अवतारा । यासों मेरो नहीं उबार । मोहि मारब मारे परिवार । दैत्य गये ते बहुरि न आये । कालीतें एकौं बचि आये । ताही पर धरि कमल लदाये ॥ सकट सहस भरि व्याल पठाये । एक व्याल मैं उनहि बताये । कोटि व्याल मेरे सदन चलाये । ग्वालनि देखि मनहि रिस कापै । पुनि मन मैं यह अटकर नापै ॥ आपुहि आप नृपति तन त्याग्यो । सूर देखि कमलनि डर भाग्यो ॥ ई१ ॥ राग नट ॥ भीतर लिये गोप बुलाय । हृदय दुख मुख हल भलो करि ब्रजहि दये पठाय । नंदको सिरपाव दीनों गोप सब पहिराय ॥ यह कह्यो बलराम श्यामहि देखि हौं दोउ भाइ ॥ अति पुरुषारथ कहौ रे उनि कमल उनही लाय । सूर प्रभुको देखिहों मैं एक दिवस बुलाय ॥ ई२ ॥ राग मारू ॥ कमल सकटनि भरे व्याकुल मानों । श्याम के बचन सुनि मनहि मन रह्यो गुनि काठ ज्यों गयो घुनि तनु भुलानों । भयो बे हाल नंद लालके ख्याल ए उरगतें बांधि फिरि ब्रजहि आयो । कह्यो दावा नलहि देखौ तेरे बलहि भक्ष करि ब्रज प्रलहि कहि पठायो ॥ चल्यो रिस पाय अतुराय तब धाय के ब्रज जनन बन सहित जारि जाऊं । नृपति के लिये पानमन कियो अभिमान करत अनुमान चहुं पास ध्याऊं ॥ इंदावन आदि ब्रज आदि गोकुल आदि आदि बुन्यादि सबहीन जारौं । चल्यो मग जात कहि बात इतरात अति सूर प्रभु सहित संहारि डारौं ॥ ई३ ॥ राग गोंड ॥ कमल पहुंचाय सब गोप आये । गये जमुना तीर भई अतिही भीर देखि नन्द तीर तुरतहि बुलाये ॥ दियो सिर पाव नृप रावने महर को आपु पहिरावनी सब दिखाये । अतिहि सुख पाय के लियो सिरनाय के हरष नन्दरायके मन बढाये ॥ श्याम बलराम को नाम जब हम लियो सुनत सुख कियो उन कमल लाये । सूर नन्द सुवन दोउ एक दिवस देखि हौं प्रुझप लिये सुख पाय इन बुलाये ॥ ई४ ॥ राग धनाश्री ॥ यह सुनि नन्द बहुत सुख पाये । कमल पठाय दये नृप लीन्हे देखन को दोउ सुतन बुलाये ॥ सेवा बहुत मानिही लीनी ब्रज नारी नर हरष बढाये । बड़ी बात भई कमल पठाये मानहु आपुन जलतें ल्याये आनन्द करत जमुन तट ब्रज जन खेलत खातहि दिवस बिहाये । यह सुख श्याम बचे कालीतें यह सुख कंसहि कमल चलाये ॥ हंसत कान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपति

मंगाये । सूरदास प्रभु मात पिता हित कमल कोटि दै ब्रजहि बचाये ॥ ६५ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ कालीदमन बड़ो लीला ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग बिलावल ॥ नारद कहि समुझाइ कंस नृप राजको । तब पठयो ब्रज दूत पुहुप के काजको ॥ ध्रुव ॥ तब पठयो ब्रज दूत सुनी नारद मुख बानी । बार बार ऋषि राज कंस मुख अस्तुति गानी ॥ धन्य धन्य मुनि राज तुम भलो मंच दियो मोहि । दूत चलायो तुरतही हो अबहि जाय ब्रज जोहि ॥ यह कहियो तू जाय कमल नृप कोटि मंगायो । पचदियो लिखिहाथ कह्यो बहु भांति जनायो ॥ कालि कमल नहिं आवहीं तौ तुमको नहि चैन । सिरनवाय कर जोरि के हो चल्यो दूत सुनि बैन ॥ तुरत पठायो दूत नन्द घरही में पायो । कमल पहुपके भार कंस नृप बेगि मंगायो ॥ कालिनि पहुंचै आयके तब बसिहौ ब्रज लोग । गोकुल में जे सुख किये हो ते करिहैं हो सोग ॥ जौन पठा बहु पुहुप कहौगे तैसो मोको । टारैंगे नृप टौर बसन पै हो नहि ओको ॥ यह जानहु गोपनि समेत पकरि मंगावहि कालि । पुहुप बेगि पठाये बनैहो जौरे बसो ब्रज पालि ॥ यह सुनि नन्द उराय अतिहि मन मन अकुलाने । यह कारज क्यों होय काल अपनो करि जाने ॥ और महर सब बोलि लै जैसो करैं उपाय । कालि प्रात ब्रज मारिहै हो बांधि सबनि लै जाय ॥ बल मोहन को नाम धरयो कहि पकरि मंगावन । तातें अति भयो सोच लगत सुनि मोहि डरावन ॥ यह सुनि सिर नाये सबनि मुखहिन आवै बात । कहो कहा अब कीजिये हो कैसे मिटिहै घात ॥ को बालकनि भगाय जाहिं लै आन भूमि पर । बरु हमको लै जाय श्याम बलराम बचें घर ॥ महरि सबै ब्रजनारिसों कहि पूछति कोउ पाउ । जनमहि तें कर बर टरी हो अबकी नहीं बचाउ ॥ कोउ कहै दै दे दाम नृपति जितनो धन चाहै । कोउ कहै जैये शरण सबै मिलि बुधि अब गाहै ॥ यही सोच सब पगि रहे कहूं नहीं निर बार । ब्रज भीतर नंद भवन में हो घर घर यहै बिचार ॥ अंतर जामी जानि नंदसों बूझत बात । कहा करत हौ सोच कहौ कछु मोसों तात ॥ कहा कहौं मेरे लाडिले कहत बड़ो संताप । मथुरा पतिके जिय कछू हो तुम पर उपज्यो पाप कालीदहके पुहुप माग पठये हमसों उनि । तबतें मो जिय सोच जबहिंते बात परी सुनि ॥ जौ नहि पठवहि कालिही तौ गोकुल देंउ लगाय । मो समेत दोउ बंधु तुम हो कालिहि खेइ बधाय ॥ यह कहि पठयो कंस तबहितें सोच परयो मोहि । प्रथम पूतना आय बहुत दुख दैजुगई तोहि ॥ तृणावर्त्त के घाततें बहुत बच्यो दुख पाय । सकटा केसी तें बच्यो हो अबको करै सहाय ॥ अघा सुर उदरतें बच्यो बहुत दुख रह्यो कन्हाई । बका रह्यौ मुख बाय तहां भयो धर्म सहाई ॥ इतने कर बर हैं टरे दयानि किये सहाय । तबतें अब गाढो परी हो मोकों कछुन सुहाय ॥ बाबा तुमहीं जात

कौनधों तोहि उबारै । सोइ ब्रज भीतर प्रगट कंस गहि केस पछारै ॥ यह जबहीं हरि सों सुनी नंद मनहि पति आय । गगन गिरत जो संग रह्यो हो सो करि खेइ सहाय ॥ नंदहि यह समुझाय कान्ह उठि खेलन धाये । जहां ब्रज बालक हुते तुरत तहां आपुन आये ॥ गोप सुतनिसों यह कह्यो खेलें गेंद मंगाय । श्रीदामा यह सुनतही हो घरतें ल्यायो जाय ॥ सखा परस्पर मार करै कोउ कानिन मानै । कौन बड़ो को छोट भेद भेदा नहि जानै ॥ खेलत जमुना तट गये आपुहि ल्याये टारि । श्रीदामाके हाथ तें लै गेंद दई दह डारि ॥ श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा । कहा भयो जो नंद बड़े तिन केतुम ढोटा ॥ खेलतमें कहा छोट बड़ो हमहुं महरके पूत । गेंद दियेही पैवने हो छांड़ि देहु मति धूत ॥ तुमसों धूत्यो कहा करौं धूत्यो नहि देख्यो । प्रथम पूतना नारि काग सकटा सुर पेख्यो ॥ तृणावर्त्त पटक्यो शिला अघा बका संहारि । तुम तादि-न संगही रहे अब धूत कहत न संभारि ॥ टेढ़े कहा बतात कंसको कमल देहु अब । कालिहि पठये मांगि पुहुप अबलै दैहो जब ॥ बहुत अचगरी जिनि करौ अजहूं तजौ अबारि । पकरि कंस लै जायगो हो कालिहि परे पभारि ॥ कमल पठाऊं कोटि कंस को दोष निवारौं । तुम देखत पुनि जाउं कंस जीवत धरि मारौं ॥ फेंट लियो तब झटकि के चढे कदम पर जाय । सखा हंसत ठाढे सबै हो मोहन गये पराय ॥ श्रीदामा चले रोय जाय कहिहैंनंद आगे । गेंद लेहु तुम आय मोहि डरपावन लागे ॥ यह कहि कूदि परे सलिल कीने नटवरसाज । कोमल तनु धरिके गयेजहां सोवत अहिराज ॥ यहि अन्तर नंद घरनि कह्यो हरि भूखे ह्वै हैं । खेलततें अब आय भूख कहि मोहि सुनै हैं ॥ अति आतुर भीतर चली जेंवन कारन आप । छींक सुनत कुसगुन कह्यो हो कहा भयो यह पाप ॥ अजिर चली पछितात छींकको दोष निवारन । मांजारी गइ काटि तबहि निकसतहीं बारन ॥ जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाय । कुसगुन आजु बहुत भये हो कुशल रहैं दोउ भाय ॥ श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई । आतुर आये नंद घरहि बूझत दोउ भाई ॥ नंद घरनिसों यों कहत मोसों लगत उदास । यह अन्तर हरि तहंगये हो जहंकालो को बास ॥ देख्यो पन्नग जाय अतिहि निर्भय ह्वै सोवत । बैठी तहां अहि नारि डरी बालक के जोवत । भागु भागु सुत कौनको अति कोमल तेरो गात । एक फूकको नहीं तूं हो विष ज्वाला अति तात । तब हरि कह्यो प्रचारि पति देहि जगाई । आयो देखन याहि कंस मोहि दियो पठाई ॥ कंस कोटि जर जाहिंगे विषकी एक फुंकार । कह्यो करि फिरि जाहि तू हो अति बालक सुकुमार ॥ यहि अंतर संग सखा जाय व्रज नंद सुनायो । हम संग खेलत श्याम जाय दह मांझ धसायो । बूड़िगयो उचक्यो नहीं तातातहिं बड़ी बेर । कूदि परयो चढि कदमतें हौ खबरि नकारी सबेर । धाहि धाहि करि नंद सुनत दौरे जमुना तट । जशुमति सुनि यह बात चली रोवति तोरति खट । व्रज बासी नर नारि सब गिरत परत चले धाय । बूझो कान्ह सबनि सुनि हो अति व्याकुल मुरझाइ । जहां तहां परी पुकार कान्ह बिन भये उदासी ॥ कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल व्रज बासी । नंद जशोदा अति

बिकल परत जमुन में धाई ॥ और गोप उपनंद मिलिहो बाह पकरि लै आई । धेनु फिरति हिलकांति बछ थनकोउ न लगावै । नंद जशोदा कहत कान्ह बिन कौन चरावै । यह सुनि ब्रज बासी सबै परे धरनि अकुलाय । हाय हाय करि कहत सबैहो कान्ह रह्यो कहां जाय । नंद पुकारत रोय बुडाई मोहि छुडयो । कछु दिन मोह लगाय जाय जल भितर भंडायो । यह कहि के धरनी गिरत जनुतरु काटि गिराय । नंद घरनि तब देखिके हो कान्हहि टेरि बुलाय । सिसु भये सुत आजु तातकी छोह न आवति । यह कहि के अकुलाय जलहि भीतर को धावति । परति जाय जमुना सलिल गहि आनति ब्रज नारि । नेक रहो सब मरहिगें हो कोउ जीवन हारि । श्याम गयो जल बूडि इथा धृग जीवन जगको ॥ सिर फोरति गिरि जाति आभूषन तोरति अंगको ॥ मुरछि परी तन सुधि गई प्राण रह्यो कहुं जाय । हलधर आए धायके हो जननी गइ मुरछाय ॥ नाक मुंदि जल सींचि जननि जननी करि टेरयो । बार बार झझकोरि नेंक हल धरतन हेरयो ॥ कहत उठो बलरामसों बनहि तज्यो लघु भ्रात ॥ कान्ह तुमहि बिन रहत नहि हो तुमसों क्यों कहि जात । अब तुमहूं जिनि जाहु सखा एक देहु पठाई । कान्हहि ल्यावै जाहि आजु अब सेरि कराई । छाक पठाऊं जोरि कै मन मन सोक समाज । प्रात कछू खायो नहीं हो भूखे ह्वै गई सांझ । कबहुं कहति बन गये कबहुं कहि घरहि बतावति ॥ कहां खेलत हो खाल टेरि यह कहति बुलावति । जागि परी दुख मोहतें रोवत देखे लोग ॥ तब जान्यो हरि हल गिरयो हो उपज्यो बहुरि बियोग ॥ धृग धृग नंदहि कह्यो और कितनें दिन जीहौ ॥ मरत नहीं मोहि मारि बहरि ब्रज बसि हौ कीहौ ॥ ऐसे दुख में मरन सुख मन करि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरनी गिरि परेहो नंद भये बिन प्रान ॥ हरि को अग्रज बंधु तुरतही पिता जगायो ॥ माता को पर बोधि दुहुनि धीरज धरवायो । मोहि दुहाई नंदको अबहीं आवत श्याम ॥ नाथि नाग लै आय हैं हो तब कहियो बल राम ॥ हलधर कह्यो सुनाय नंद जशुमति ब्रज बासी ॥ इथा मरत केहि काज मरै क्यों वह अबिनासी ॥ आदि पुरुष मैं कहत हौं गये कमल के काज ॥ गिरिधर को तुम डरत हो हो वह देवनि सिर ताज । वह अबिनासी आहि करौ धीरज अपने मन ॥ काली छोडे नाक जिये आवत निश्चित पन । कंसहि कमल पठाय हैं काल्हिहिं पठवै दीप । एक घरी धीरज धरौ हो बैठो सब तरुनीप ॥ सुनि हो अहिकी बाम श्याम अहि क्यों न जगावै । बालक बालक करति कहा पति क्यों न उठावै ॥ कहां कंस कहां उरग यह अबहुं दिखाऊं तोहि । दे जगाय मैं कहत हौं हो तू नहि जानति मोहि । मैं जानति हौं बाल फूंक एक में जरि जैहो ॥ छोटे मुख बड़ी बात कहत अबही मरि जैहो ॥ छोह लगति तोहि देखि मोहि काको बालक आहि । खगपति सों सरबरि करीहो तू बपुरीको आहि ॥ बपुरी मोसों कहति तोहि बपुरी करि डारौं । एक लातसों चांपि खसम तेरेको मारौं । सोवत काहु न मारिये चखि आई यह बात । खगपति को मैंही कियो हो कहति कहा तू बात ॥ तुमहिं बिधाता भये और कर्त्ता

कोऊ नाहीं । अहि मारोगे आपु तनक से तनकसी बांहीं । कहा कहौं कहत न बनै अति कोमल सुकुमार । देती अबहिं जगाय के हो जरि बरि ह्वै हो छार । तू धों देहि जगाय तोहि दूषन कछु नाहीं । परी कहा तोहि नारि पाप अपने जरि जाही । हमका बालक कहति है आपु बड़े की नारि । बाद करति बिनु काजहीं हो वृथा बढावति रारि । तुहीं न लेहि जगाइ बहुत जो करत ढिठाई । पुनि मरि हैं पछिताय मात पितु तेरे भाई । अजहुं फिरि करि जाहि तू मरि खैहैं सुख कोन । पांच बरस की सातको हो आगे तोको होन । झिरकि नारि दे गारि आपु अहि जाय जगायो । पगसों चांपी पूंछ सबे औसान भुलायो । चरण मसकि धरनी दली उरग गयो अकुलाय । काली मन में तब कही हो यह अयो खगराय । देखो नैन उघारि तहां बालक एक ठाढ्यो ॥ विष धर झटको पूंछि पटकि सहसौ फन काढ्यो । बार बार फन घात करि विष ज्वाला की झारि ॥ सहसौ फनि फनि फुंकरै हो नेक न तनहि लगारि । तब काली मन कहत पूंछि चांपी रहि पगसों । अहिहि उठ्यो अकुलाय डरयो बाहन हरि खगसों ॥ यह बालक धों कोन को कीनो युद्ध अगाय । दाव घाव बहुतें किये हो मुरत नहीं जदुराय । पुनि देखै हरि और पूंछि चापी रहि मेरी । मन मन करत विचार लैउं याको मैं बेरी । दाव परयो अहि जानिके लिपटा अंग लपटाय । चरण लपेटे सिखालों हो रहि अति करी ढिठाय । कहति उरगकी नारि गर्व अतिही करि आयो । आयो पहुंच्यो काल बश पग इतहि चलायो । अहि नारिनसों यह कही मोहि समसरि कोउ नाहि । एक फूंक विष ज्वाल के हो जल डूंगर जरि जाहि ॥ गर्व बचन प्रभु सुनत तुरतही तनु बिलखयो । हाय हाय करि उरग बारही बार पुकारयो । शरण शरण अब मरत हौं मैं नहि जान्यो तोहि ॥ चट चटात अंग फूटही हो राख राखु प्रभु मोहि । शरण शरण धुनि सुनत जियो प्रभु तन सकुचाई ॥ क्षमहु मोहि अपराध नजाने की ढिठाई । व्रजमें कृष्ण अवतार है मैं जानी प्रभु आज । बहुत किये फन घात मैं हो बदन दुरावत लाज । रहो आनि यहि ठौर गरुड़की त्रास गुसाईं । बहुत कृपा मोहि करी दरस दीनो जग साईं । नाक फोरि फन पर चढे कृपा करी दिव राय ॥ फण फण प्रति प्रति चरण धरे हो निर्त्तत हरष बढाय । धन्य कृष्ण धनि उरग जाति जन कृपा करी हरि । धन्य धन्य दिन आजु दरश सों पाप गये जरि ॥ धन्य कंस धनि कमल ए धन्य कृष्ण अवतार । बड़ो कृपा उरगहि करी हों फन प्रति चरन बिहार ॥ शेष करत जिय गर्व अंड को भार शीश धरि । पूरन ब्रह्म अनन्त नाम को सकै पार करि ॥ फन फन प्रति अति भार भर अमित अंग मैगात । उरग नारि कर जोरि कें हो कहति कृष्ण सों बात ॥ देखत व्रज नर नारि नंद जशुदा समेत सब । कंस सों कहत रखत सुनहो सुत कान्ह नहीं अब ॥ यहि अन्तर जल कमल बिच उठ्यो कछू अकुलाय । रोवत तें बरजे सबै हो मोहन अग्रज भाय ॥ आवत है वह श्याम पुहुप काली सिर खोने । मात पिता व्रज दुखित जानि हरि दरशन दीने ॥ निर्त्तत काली फननि पर दिव दुंदुभी बजाय । नटवर वपु काछे रहैं हो सब देखें वह भाय ॥ आवत देखे श्याम हरष कीन्हों व्रजवासी ।

शोक सिंधु गयो उतरि सिंधु आनंद प्रकासी ॥ जल बूड़त नौका मिलै ज्यों न होत आनन्द । त्यों व्रज जन हुलसे सबै हो आवत हैं नंद नन्द ॥ सुत देखत पितु मात रोम गद गद पुलकित भये । उर उपज्यो आनंद प्रेम जल लोचन दुहुं अये ॥ देव दुंदुभी बजावहीं फन प्रति नर्त्तत श्याम । व्रज बासी सब कहत हैं हो धन्य धन्य बलराम ॥ उरग नारि कर जोरि करति अस्तुत मुख ठाढी । गोपी जन अवलोकि रूप वह अति रति गाढी ॥ सुर अंबरललना सहित जै धुनि मुख मुख गाय । बड़ी कृपा यह उरग कों हो ऐसी काहू न पाय ॥ कृपा करी प्रह्लाद खंभ तें प्रकट भयेतब ॥ कृपा करी गज राज गरुड़ तजि धाय गये जब ॥ द्रुपद सुता कों करी कृपा बसन समुद्र बढाय । नन्द जशोदहि जो कृपा हो सोई कृपा अहि पाय ॥ तब काली कर जोरि कह्यो प्रभु गरुड़ त्रास मोहि । अब करिहै दंडवत नयन भरि जब देखै तोहि ॥ चरण चिन्ह दरशन करत गहिरे हैं तेरे पाय । उरग दीपकों करि बिदा हो कह्यौ करहु सुख जाय ॥ प्रभु यातें सुख कहा जे चरण फन फन प्रति परसे । रमा हृदय जो बसत सुरसरी सिर बहे हरसे ॥ जनम जनम पावन भयो फन पद चिन्ह धराय । पाय परयौ उरगिनि सहित हों चल्यो दीप समुहाय ॥ काली पठयो दीप सुरनि सुर लोक पठाये । आपुन आये निकसि कमल सब तटहि धराये ॥ जलतें आये श्याम तब मिले सखा सब धाय । मात पिता दोउ धाय के हो लीने कंठ लगाय ॥ फेरि जन्म भयो कान्ह कहत लोचन भरि आये । जहां तहां व्रज गोप नारि आतुर ह्वै धाये ॥ अंकम भरि भरि मिलत है मनों निधनी धन पाय । मिली धाय रोहनि जननि चूंबति लेति बलाय ॥ सखा दौरि कें मिले गये हरि हमपर रिस करि । धनि माता धनि पिता धन्य सों दिन जेहि अवतरि ॥ तुम व्रज जीवन प्राण हो यह सुनि हंसे गोपाल । कूदि परे चढि कदम तें हो तुम खेलत ए ख्याल ॥ काली ल्याये नाथि कमल ताही पर ल्याये ॥ जैसी कहि गये श्याम प्रकट सो हमहि दिखाये ॥ कंस मरयौ निश्चय भई हम जानी व्रजराज ॥ सिंघनि को छौना भलो हो कहा बड़ो गजराज ॥ हरि हलधर तब मिले हंसे मनही मन दोऊ । बन्धु मिलत सब कहत भेद नहि जानै कोऊ ॥ मात पिता व्रज लोग सों हरषि कह्यौ नंदलाल । आजु रहो बसि सब यहां हो मेटहु दुख जंजाल ॥ सुनि सबहिन सुख कियो आजु रहिये जमुना तट ॥ शीतल सलिल सुगन्ध पवन सुख तरु बंसी बट ॥ नंद घरतें मिष्टान बहुत षटरस लिये मंगाय । महरि गोप उपनंद जेहो सब को दिये बंटाय ॥ दुख कीनों सब दूरि तुरत सुख दियो कन्हाई । हरषित भये सब लोग कंसको डर बिसराई ॥ कमल काज व्रज मार तो कितनों लेय गनाय । नृप गज को अब डर कहा हो प्रकट्यो सिंह कन्हाय ॥ नंद कह्यौ करि गर्व कंस कों कमल पठाबहु । और कमल जल धरहु कमल कोटिक दै आबहु ॥ यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोटि । कोटि टैक जलही धरे हो यह बिनती हम छोटि ॥ अपने समझे गोप कमल तेहि साथ चलाये । मन सबके आनंद कान्ह जलतें बचि आये ॥ खेलत खात अन्हात ही बासर गयो बिहाय । सूर श्याम व्रज लोग कों हो जहां तहां सुख दाय ॥ ईई ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथसूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ दावानल पान लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग कान्हरौ ॥ दावानल व्रज जन पर धायो । गोकुल ब्रजवृन्दा वन तृण द्रुम चाहत है चहुं पास जरायो ॥ घेरत आवत दसहुं दिशा ते अति कीन्हें तन क्रोध । नर नारी सब देखि चकृत भये दवलाग्यो चहुं कोंध ॥ वह तो असुर घात किये आवत धावत पवन समाज । सूर दास व्रज लोग कहत यह उयौ दवा अति आज ॥ १ ॥ राग कान्हरौ ॥ आय गई दव अतिहि निकट हीं । यह जानत अब व्रज जन बचिहै कहत सबै चलि ये जल तटहीं ॥ करि बिचार उठि चलन चहत हैं जो देखें चहुंपास । चकृतभये नर नारि जहां तहां भरिभरि लेत उसास ॥ झर झरात भहरात लपट अति देखि यत नहीं उबार । देखत सूर अग्नि अधिकानो नभ लों पहुंचो झार ॥ २ ॥ रागकान्हरौ ॥ दसहुं दिशा तें बरत दवानल आवत है व्रजजन पर धायो । ज्वाला उठी आकाश बराबरि घात आपने करि सब पायो ॥ बोरा लै आयो सनमुख तें आदर करि नृप कंस पठायो । आरि करों प्रलय छिन भीतर व्रज बपुरा केतिक कहवायो ॥ धरनि आकाश भयो परि पूरन नेक नहीं कहुं संधि बचायो । सूर श्याम बलराम हि मारन गर्व सहित आतुर ह्वै आयो ॥ ॥ ३ ॥ राग कान्हरौ ॥ व्रजके लोग उठे अकुलाई । ज्वाला देखि आकाश बराबर दसहुं दिसा कछु पार न पाई । हर हरात बन पात गिरत तरु धरनि तराकि तराकि सुनाई ॥ जल बरषत गिरिवर तरु बांचे अब कैसे गिर होत सहाई । खटकि जात जरि जरि बेली जर पटकत बांस कांस कुसताल । उचटत कर अंगार गगनलों सूर निरखि व्रज जनन बिहाल ॥ ४ ॥ ॥ राग कान्हरौ ॥ नंद घरनि यह कहति पुकारे । कोउ बरषत कोउ अगिन जरावत दई परयो है खोज हमारे ॥ तब गिरिवर कर धरयो कन्हैया अबन बांचि हैं मारत जारे । जेंवन करन चली जब भीतर छीक परीती आजु सबारे ॥ ताको फल तुरतहि एक पायो सो उबार्यो भयो धर्म सहारे ॥ अब सब कों संसार होत है छीक किये ए काज बिचारे । कैसे सुत बालक दोउ उबरैं पुनि पुनि सो चति परी खंभारे । सूर श्याम यह कहत जननिसों रहुरी मा धीरज उर धारे ॥ ५ ॥ राग गौड ॥ भहरात हहरात दावानल आयो । घेरि चहुं ओर करि सोर अंदोरवन धरिनि आकाश चहुं पास छायो । बरत बन बांस घर हरत कुस कांस जरि उडत है भास अति

प्रबल धायो । झपटि झपटि तल पट पटकि फल फुटत फटि चटकि चटकि द्रुम द्रुम नवा यो ॥ अति अग्नि झार भंभार धंधकार करि उचटि अंगार झंझार धायो । बरत बनपात भहरात अररात तरु महा धरनी गिरायो ॥ भये बेहाल सब ग्वाल ब्रज बाल तब शरण गोपाल कहिके पुकारयौ । तृणा केसी शकट बको बक अघासुर बांम कर राखि गिरिज्यों उबारयौ ॥ नेक धीरज करौ जियहि कोउ जिनि डरौ कहो यह सरे लोचन मुदायो । मूठी भरि लियो सब नाथ मुखहीं दियो सूर प्रभु पियो ब्रज जन बचायो ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ अब की राखि लेउ गोपाल । दसहुं दिसातें दुसह दावाग्नि उपजी है यहि काल ॥ पटकत बांस कांस कुश चटकत लटकत ताल तमाल । उचटत अति अंगार फुटत फर झपटत लपट कराल ॥ धूंम घूंषि बाटी धुर अंबर चमकत बिच बिच ज्वाल । हरिन बराह मोर चातिक पिक जरत जीव बेहाल ॥ जिनि जिय डरउ नयन मूंदउ सब हंसि बोले नन्दलाल । सूर अनल सब बदन समानी अभै करे ब्रज बाल ॥ ७ ॥ राग गोड ॥ दावानल अचै ब्रज जन बचायो । धरनि अकासलों ज्वाल माला प्रबल घेरि चहुं पास हरि बास आयो ॥ भये बेहाल सब देख नन्दलाल तब हंसतही ख्याल ततकाल कीनों । सबनि मूंदे नयनि नाहि चितये सैन तृषा ज्यों नीर दव अचै लीनों ॥ देखो अब नयन भरि बुझि गई अगनि झार चितै नर नारि आनन्द भारी । सूर प्रभु सुख दियो दावानल पी लियो कहत सब ग्वाल धनि धनि मुरारी ॥ ८ ॥ राग बिहागरो ॥ चकृत देखि यह कहि नर नारि । धरनि अकाश बरावर ज्वाला झपटी लपटि करारि ॥ नहिं बरष्यो नहि छिरक्यो काहू कहां धों गयो बिलाई । अति अघात करत बन भीतर कैसे गयो बुझाई ॥ तृणाकी आगि बरत नहिं बुझिगई हंसि हंसि कहत गोपाल । सुनहु सूर यह करनि कहनि यह ऐसे प्रभुके ख्याल ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ जाको सदा सहाइ कन्हाई । ताहि कहो काको डर माई ॥ बनघर जहां संगही डोलैं । खेलत खात सबनिसों बोलैं ॥ जाको ध्यान न पावै जोगी । सो हरिभें मांखन को भोगी ॥ जाकी माया त्रिभुवन छावै । सो जशमति के प्रेम बधावै ॥ मुनि जन जाको ध्यान न पावै । हरि जन लै लै नाम बुलावै ॥ सूरताहि सुर अंबर देखो । जीवन जन्म हरिही को लेखो ॥ १० ॥ राग कान्हरो ॥ हरि बनिता सब कहति परस्पर नन्द महर को सुत बड़ बीर । देखो धों पुरुषारथ इनको अति कोमल तनु श्याम शरीर ॥ गयो पताल उरग गहि आन्यों ख्यायो तापर कमल लदाय । कमल काज नृप हरि मारत हो कोटि जलज तेहि दये पठाय ॥ दावागिनि नभ धरनि बरा बर दसहुं दिसातें लीनों घेरि । नयन मुदाय कहा तेहि कीनों कछू नहीं जो देखे हेरि ॥ ए उत पात मिटत इनहीते कंस कहा बपुरो है छार । सूर श्याम अवतार बड़ो हरि एही है करता संसार ॥ ११ ॥ राग सोरठ ॥ अति सुन्दर नन्द महर दुलौना । कपट रूप की घिया निपाती तबहि रहे अति छौना ॥ हार शिलापर पटकि तृणावर्त्त है आयो बड़ पौना । अघा बकासुर तबहि संहारयो प्रथम कियो बन गौना ॥ कमल काज नृप हरि मारत हो दवा अचै कियो खौना । सूर प्रकट गिरि धरयो बाम कर मैं जानति बलि धौना ॥ १२ ॥ राग मारू ॥ दवतें जरत ब्रज जन उबारयो । पैठि अंग गये गहि उरग

आन्यों नाथिप्रगट फन फननिप्रति चरण धारयो ॥ देखैमुनि लोक सुर लोक शिव लोक के नन्द जशुमतिहेत बस मुरारी । जहां तहां करत अस्तुति मुखनि देव नर धन्य जै शब्द तिहुं भुवन धारी ॥ सुख कियो जमुन तट एक वासर रैनि प्रातही व्रज गये गोप नारी । सूर श्याम बलराम नन्दधाम गये मात पित दृजजनहि सुखद कारी ॥ १३ ॥ राग रामकली ॥ हरि दृज जन के दुख बिसरावन । कहा कंस कब कमल मंगाये कहां दावानल दावन ॥ जल कब गिरे उरग कब नाथ्यो नहि जानत दृज लोग । कहां बसे एक दिवस रैनि भरि कबहि भयो यह सोग ॥ यह जानत हम ऐसेहि व्रज मैं वैसेहि करत बिहार । सूर श्याम जननी सों मागत मांखन बारं बार ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ नेकरहौ मांखन द्यौं तुम को । ठाढी मथति जननि दधि आतुर लवनी नंदसुवनको ॥ मैं बलि जाउं श्याम घन सुन्दर भूख लगी तुम्हैं भारी । बात कछूं की बूझति श्यामहि फेरि करत महतारी ॥ कहत बात हरि कछु नहि समुझत झूठेहि भरत हुंकारी । सूरदास प्रभुके गुण तुरतहि बिसरि गई नन्दनारी ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ बात नहीं सुत लाय लयो । तबलों मथि दधि जननि जशोदा मांखन करि हरि हाथ दियो ॥ लै लै अधर परस करि जेंवत देखत फूल्यो मात हियो । आपुहि खात प्रशंसत आपुहि मांखन रोटी बहुत दियो ॥ जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुत हित बसकरि नंद चियो । यह सुख निरखत सूर प्रभूको धन्य धन्य पल सुफल जियो ॥ १६ ॥ राग सूहो ॥ दैरी मैया दोहनी दुहि हौं मैं गैयां । मांखन खाये बल भयो करि नंद दुहैया ॥ कजरी सेंदुरी धूमरी धौरी मेरी गैया । दुहि ल्याऊं मैं तुरतही तू करि दै घैया ॥ ग्वालनि की सर दुहतहूं बूझहु बल भैया । सूर निरखि जननी हंसी तब लेति बलैया ॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ बाबा मोको दुहन सिखायो । तेरे मन परतीत न आवै दुहत अंगुरियनि भाव बतायो ॥ अंगुरियन भाव देखि जननी तब हंसिके श्यामहिं कंठ लगायो । आठ बरष को कुंवर कन्हाई इतनी बुद्धि कहां तें पायो ॥ माता लै दोहनी कर दीन्हों तब हरि हंसत दुहन को धायो । सूर श्याम को दुहत देखि तब जननी मन अति हरष बढायो ॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥ जननि मथति दधि दुहत कन्हाई । सखा परस्पर कहत श्यामसों हमहूं ते तुम करत चंडाई ॥ दुहन देहु कछुदिन अरु मोको तब करिहौ मोसम सरिआई । जबलों एक दुहोगे तबलों चारि दुहौं तौ नन्द दोहाई ॥ झूठेही करत दोहाई प्रात उठि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूर श्याम कह्यो काल्हि दुहैंगे हमहु तुमहु मिलि होडल गाई ॥ १९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ अथ गौ दुहन लीला को प्रसङ्ग ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ रागबिलावल ॥ उठी प्रातही राधिका दोहनी करलाई । महरि सुतासों तब कह्यो कहां चली अतुराई ॥ खरिक दुहावन जातहो तुम्हरी श्रेवकाई । तुम ठकुराइनि घर रहेा मोहि चेरी पाई । रीती देखी दोहनी कत खोझत धाई ॥ काल्हि गई अबसेर कै ह्वां उठे रिसाई । गाइ गई सब प्यायके प्रातहि नहि आई ॥ ताकारन मैं जातिहौं अति करत चंडाई ॥ यह कहि जननीसों चली व्रजको समुहाई । सूर श्याम गृह द्वारही गैा करत दुहाई ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ सुता महर वृषभान की नंद सदनहि आई । गृह द्वारेही अजिर में गउ दुहत कन्हाई ॥ श्याम चितै मुख राधिका मन हरष बढ़ाई । राधा हरि मुख देखि कें तन सुरति भुलाई ॥ महरि देखि को रति सुता तेहि लियो बुलाई । दम्पति को सुख देखि कें सूरज बलि जाई ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ आजु राधिका भोरहीं जशुमति के आई । महरि मुदित हंसि यों कह्यो मथि भान दुहाई आय सु लै ठाढी भई कर नेति सुहाई । रोती मांट बिलोवही चित जहां कन्हाई ॥ उनके मनकी कहा कहौं ज्यों दृष्टि लगाई । लैयानेाई वृषभ सों गैयां बिसराई ॥ नैंननि में जशु मति लखी दुऊ की चतुराई सूर दास दम्पति कथा कापै कहिजाई ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ महरि कहतिरी लाड़िली को तोहि मथन सिखायो । कबुं मथनी कबुं माट है चित कहां लगायो ॥ क्यों मेरे घर आय कें तैं सब बिसरायो । मथन नहीं मोहि आवही तुम सोंह दिवायो ॥ तिहि कारनमैं आयकें तुव बोल रखायो । तब नंद घरनी मथि दह्यो यहि भांति बतायो ॥ हंसि बोली तब राधिका कह्यो अब मोहि आयो । सूर निरखि मुख श्याम को तहां ध्यान लगायो ॥ ४ ॥ राग सूहो ॥ दुहत श्याम गैयां बिसराई । लैया लै पग बांधि वृषभके दुऊनी मागत कुंवर कन्हाई ॥ ग्वाल एक दुऊनी लै दीनी दुहो श्याम अब करौ चंडाई । हंसत परस्पर तारी दै दै आजु कहा तुम रचे लुभाई ॥ कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारी सों रचे चित अरुझाई । सूर श्याम राधा तन चितवत बड़े चतुर की गढ़ चतुराई ॥ ५ ॥ राग राम कली ॥ राधा ये ढंगहैं री तेरे । बैसे ढाल मथत

दधि कीन्हें हरि मनों लिखे चितेरे ॥ तेरो मख देखत शशि लाजै और कहौ क्यों बांचै । नयना तेरे जलज जीत हैं खंजन तें अति नाचै ॥ चपला तें चमकति अति प्यारी कहा करैगी श्यामहि । सुनऊ सूर ऐसेंहि दिन खोवति काज नहीं तेरे धामहि ॥ ६ ॥ राग गूजरी ॥ मेरो कह्यो नाहि सुनति । तबहीं तें एक टक रहि है कहा मन धौं गुनति ॥ अबही तें तू करति ये ढंग तोहि है अब ज्ञान । श्याम को तू ऐसे ठगि लियो कछु न जानै जौन ॥ सुता है वृषभान की री बड़ो उनको नाउ । सूर प्रभु नंद सुवन निरखत जननि कहति सुभाउ ॥ ७ ॥ राग सूहो ॥ प्रकट प्रीति न रही छिपाई । परी दृष्टि वृषभान सुता की दोउ अरुझे सो निवारि न जाई ॥ बछरा छोरि खरिक कों दीन्हों आपु कान्ह तन सुधि बिसराई । नोवत वृषभ निकसि गैया गई हंसत सखा कहा दुहत कन्हाई ॥ चारयों नयन भये एकठा हर मनही मन दुऊ रुचि उपजाई । सूरदास स्वामी रति नागर नागरि देखि गई नगराई ॥ ८ ॥ राग सारङ्ग ॥ चितैबो छांड़ि दैरी राधा । हिलि मिलि खेलि श्याम सुन्दर सों करति काम को बाधा ॥ को बैठी रहि भवन आपनें ह्यां काहे को आवै । मृग नयनी हरिको मन मोहति जब तू देखि दुहावै ॥ कबहुंक करतें गिरति दोहनी कबहुं बिसरति नोई । कबहुं वृषभ दुहत है मोहन गाजानों काहेई ॥ कौन संच जानति तू प्यारी पढ़ि डारति हरि गात । सूर श्याम कों धेनु दुहन दै कहति अशोदा मात ॥ ९ ॥ राग धना श्री ॥ धेनु दुहन दै मेरे श्यामहि । जौं आवै सहस रूप सो बनि आवति बे कामहि ॥ सूधे आय श्याम संग खेलौ बोलौ बैठे धामहि । ऐसे ढंग मोहि नहि भावैं लेउन ताके नामहि ॥ घर अपनें तू जाहि राधिका कहति महरि मनता महि । सूर आय तू करति अचगरी को बकिहै निशि जामहि ॥ १० ॥ राग जैतश्री ॥ बार बार तू जिनि ह्यां आवै । मैं कहा करों सुतहि नहि बरजति घर तें मोहि बुलावै ॥ मोसों कहत तोहि बिनु देखें रहत न मेरो प्रान । छोह लगत मोकों सुनि बानी महरि तुम्हारी आन ॥ सुख पावति तबहीलों आवति औरें लावति मोहि । सूर समुझि जशुमति उर लाई हंसति कहति मैं तोहि ॥ ११ ॥ राग गौरी ॥ हंसत कह्यो मैं तोसों प्यारी । मनमें कछु बिलगु जिनि माने मैं तेरो महतारी ॥ बछतें दोस आज तू आई राधे मेरे धाम । महरि बड़ो मैं सुघर सुनो है कछु सिख्यो गृह काम ॥ मैया जब मोहि ठहल कहति कछु खीझत तब बाबा वृषभान । सूर महरि सों कहति राधिका सानौं अतिहि अजान ॥ ॥ १२ ॥ राग रामकली ॥ दूध दोहनी लैरी मैया । दाऊ टेरत सुनि मैं आऊं तबलों करि विधि धैया ॥ सुरली मुकुट पीतांबर दे मोहि ले आई महतारी । मुकुट धरयो सिर कटि पीतांबर सुरली कर लियो धारी ॥ राधा राधा कहि मुरली में खरिकहि लई बुलाई । सूर दास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई ॥ १३ ॥ राग रामकली ॥ कुंवर कह्यो मैं जाति महरि घर । प्रातहि आई खरिक दुहावन कहति दोहनी ले कर ॥ तब खरिकहि कोउ ग्वाल गये नहि तिहि कारन व्रज आई । जो देखों तो अजिरहि बैठे गैयां दुहत कन्हाई ॥ तनक दोहनी तनक दुहत मोहि देखत अति रुचि लागी । तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागी ॥ १४ ॥ राग गुर्जरी ॥ जाघर प्यारी आवत रहियो । महरि

हमारी बात चलावत मिलन हमारो कहियो ॥ एक दिवस मैं गई जमुना तट जहां उनि देखी आई । मोकों देखि बहुत सुख पायो मिलि अंकम लपटाई ॥ यह सुनिकें चली कुंवरि राधिका मनमें हरष अपार । सूर दास प्रभु करी सेंन गति मोहन नन्द कुमार ॥ १५ ॥ ॥ राग गुर्जरी ॥ सेंन दै प्यारो लई बुलाई । खेलन को मिस करिकें निकसे खरिकहि गये कन्हाई ॥ जमुनति सों कहि प्यारी निकसी घरको नाम सुनाई । कर दोहनी लिये तहां आई जहां हलधर को भाई ॥ तहां मिली सब सङ्ग सहेली कुंवरि कहां तू आई । प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिर नहीं तहां पाई ॥ तब हीं गई मैं व्रज उतावली ग्वाई ग्वाल बुलाई । सूर श्याम दुहि देंन कह्यो सुनि राधा गई सुसकाई ॥ १६ ॥ राग धनाश्री धेनु दुहावन श्याम बुलाई । अवण सुनत तहां गई राधिका मन हरि लियो कन्हाई ॥ सखी सङ्ग को कहति परस्पर कहां यह प्रीति लगाई । कहां वृषभान पराये व्रज में कहां दुहावन आई ॥ मुख देखत हरिकों चकृत भई तनकी सुधि बिसराई । सूर दास प्रभु के रस बस भई काम करी कठिनाई ॥ १७ राग गुर्जरी ॥ गांव बसत धेनें द्वोसनि में आजु मैं देखे । जे दिन गये बिना व्रजनाथहि तेई वृथाकरि लेखे । कहिये जो कछु होय सयानी कहिवे कों अनुमानें । सुन्दर श्याम निकाईको सुख नैंनाहीं ये जानें ॥ तब तें रूप ठगौरी लागी जुगसमान पल बितवति । तजिकुल लाज सूर प्रभुके फिरिफिरि मुखतन चितवति ॥ ॥ १८ ॥ राग देव गंधार ॥ मोहन करतें दोहनि लीन्ही गोपद बछरा जोरे । हाथ धेनु थन बदन चिया तन छीर छांछि छल छोरे ॥ अ नन रही ललित पय छींटें छाजत छवि तृण तोरे । मानहु निकसि कलंक कला निधि दुग्ध सिंधु मथि खोरे ॥ दे घूंघट पट ओट नील हंसि कुंवर मुदित मुख मोरे । मनहु सरद शशि को मिलि दामिनि घेरि लियो घन घोरे ॥ यहि विधि रहसत बिलसत दंपति हेत हिये नहि थोरे । सूर उमंगि आनंद सुधा निधि मनो बिलावलि फोरे ॥ १९ ॥ राग राम कली ॥ हरिसों धेनु दुहावति प्यारी । करति मनोरथ पूरन मन वृषभांन महर की बारी ॥ दूध धार मुखपर छबि लागत सेा उपमा अति भारी । मानो चंद कलंकहि धावत जहं तहं बूंद सुधारी ॥ हाव भाव रस मगन हैं दोऊ छबि निरखति ललितारी । गोदोहन सुखकरत सूर प्रभु तीनहु भुवन कहारी ॥ २० ॥ राग सूहो ॥ धेनु दुहत अतिही रति बाढी । एकधार दोहनी पहुंचावत एक धार जहां प्यारी ठाढी ॥ मोहन करतें धार चलत पय मोहन मुख अतिही छबि गाढी । मनो जलधर जल धार वृष्टि लघु पुनि पुनि प्रेम चंद पर चाढी ॥ सखी संग की निरखति यह छबि भई व्याकुल मन मथकी जाढी । सूरदास प्रभु के वस भई सब भवन काजतें भई उचाढी ॥ २१ ॥ राग बिलावल ॥ दुहि दीनी राधा की गैया । दुहनी नहीं देत करतें हरि हा हा करति परतिहै पैया ॥ ज्यों ज्यों प्यारी हा हा बोलति त्यों त्यों हंसत कन्हैया । बहुरि करौ प्यारी तुम हा हा दैहों नंद दुहैया ॥ तब दीनी प्यारी कर दोहनि हा हा बहुरि करैया । सूर श्याम रस हाव भाव करि दीनी कुंवरि पठैया ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ चलन कहति पगचलै न घरको । छाडत बनत न हीं कैसेंहु मोहन सुन्दर बरको ॥ अंतर नेक करौ नहि कबहूं सकुचतहौ पुर नरको ।

कछुदिन जैसें तैसे खोऊं दूरि करो पुनि डरको ॥ मनमें यह बिचार करि सुन्दरि चली आपने पुरको । सूरदास प्रभु कह्यो जाउ घर घात करो नख उरको ॥ २३ ॥ राग बिलावल । सिर दोहनी चली लै प्यारी ॥ फिरि चितवति हरिसों निरखि मुख मोहन मोहनी डारी ॥ व्याकुल भई गई सखियनि लों ब्रजको गये कन्हाई । और अहिर सब कहां तुम्हारे हरिसों धेनु दुहाई ॥ यह सुनिके चकृत भई प्यारी धरनि परी मुरझाई । सूरदास प्रभु तब सखियनि उर भरि करि कुंवर उठाई ॥ २४ ॥ राग रामकली ॥ क्यों हो कुंवरि गिरी मुरझाई । यह बानी कहि सखियन आगे मोकों कारे खाई ॥ चली लिवाय सुता वृषभानहि घरही तन समुझाई । डारि दियो भरि दूधनियां अबहीं नीके आई ॥ यह कारो सुत नंद महर को सब हम फूंक लगाई । सूर सखिन मुख सुनी यह बानी तब यह बात सुनाई ॥ २५ ॥ राग सारंग ॥ मोहि लई नयननि की सैन । श्रवण सुनत सुधि बिसरी सब हो लख्यो मोहन मुखके बैन ॥ आवतहुते कुमार खरिकतें तब अनुमान कियो सखि मैन । निरखत अंग अधिक रुचि उपजी नख सिख सुन्दर ताको ऐन ॥ मृदु मुसकानि हरयो मन मोहन तबतें तिलन रहत चित चैन । सूर श्याम यह बचन सुनायो मेरी धेनु कही दुहि देंन ॥ २६ ॥ राग धनाश्री ॥ सखियनि मिलि राधा घर ल्याई । देखहु महरि सुता अपनीको कहुं यहि कारे खाई ॥ हम आगे आवति यह पाछे धरनि परी भइ राई । सिरतें गई दोहनी धरिके आपु रही मुरझाई ॥ श्याम भुवंग डरयो हम देखत लावहु गुनी बुलाई । रोवति जननि कंठ लपटानी सूर श्याम गुन राई ॥ २७ ॥ राग सारंग ॥ प्रात गई नीके उठि घरतें । मैं वरजी कहां जातिरी प्यारी तब खीझी रिस झरतें ॥ सीतल अंग स्वेदसों बूडी सोच परयो मन डरतें । अतिहि हठीली कही नहिं मानति करति आपने मनतें ॥ औरै दशा भई छिनभीतर बोले गुनी नगरतें सूर गारुरी गुन करि थाके मंत्र न लागत थरतें ॥ २८ ॥ राग नट ॥ चले सब गारुरी पछिताई । नेक नमंत्र लगत काहूको समुझि नेकुनहि जाई ॥ बात बूझतिसंग सखियनि कहो हमहि बुझाय । कहा कहि राधा सुनायो तुम सबनिसों आय ॥ महा बिषधर श्याम अहि बर देख सबहीं घाय । फूंक ज्वाला हमहु लागी कुंवरि उर पर खाय ॥ गिरीधरनी मुरछितवहीं लई तुरत उठाय । सूर प्रभु को बेगि ल्यावहु बड़ो गारुड़ि राय ॥ २९ ॥ राग आसावरी ॥ नंद सुवन गारुरी बुलावहु । कह्यो हमारो सुनतन कोऊ तुरत जाहु ब्रजअबलै आवहु ॥ ऐसे गुणी नहीं चिभुवन कहुं हम जानति हैं नीके । आवहि जोतो तुरत जिवावहि ने कुछुवतही उठिहै जीके ॥ देखौधों यह बात हमारी एकहि मंत्र जिवावै । नंद महरको सुत सूरज प्रभु जो कैसेहु करि ह्यांलों आवै ॥ ३० ॥ राग आसावरी ॥ डसी है श्याम भुयंगम कारे । मोहन मुख मुसकानि मनहु बिष जात मैरसों मारे । फुरै न मंत्र जंत्र गद नाहीं चले गुणी गुन डारे ॥ प्रेम प्रीति बिषहृदय सुलागी डारत है तनुजारे ॥ निर बिष नहीं होति कैसेहु करि बहुत गुणी पचिहारे । सूरश्याम गारुरी बिना को जो सिर गाडू टारे ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ बेगि चलो पिय कुंवर कन्हाई । आकारन तुम यह बन सेयो सो विष मदन भुयंगम खाई ॥ नयन शिथिल

शीतल नासा पुट अंगत पति कछु सुधि न रहाई । सक सकात तनु भीजि पसीना उलटि पलटि तनु तोरि जम्हाई ॥ बिन देखी मूरिन को जित कित उठि दौरीं जिनि जहां बताईं । ताहि कछू उपचारन लागत करमीडैं सहचरि पछिताईं ॥ बार बार बूझति हैयेसें कमल नयन की सुन्दर ताई । जौपै सूर जिवायो चाहत तौ ताकों नेक देउ दिखाई ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ तनु बिष रह्यो है छहरि । नन्दसुवन गारुरी कहत हैं पठवै धों महरि । गई अवसान भोर नहि भावै नही चहरि ॥ ल्याऊं गुनी जाय गोबिन्द को बाढो है लहरि ॥ देखि उरहि बीचहीं खाई मतिहै जहरि । सूरश्याम बिषहर कहूं खाय यह कलि चली डहरि ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ वृषभान की महरि जशुमति पुकारयो । पठै सुत काज मैं कहतिहों तजि लाज पांय परति महरि करति आरयो ॥ प्रात खरिकहि गई आय बिहबल भई राधिका कुंवरि कहं डरयौ कारो । सुनी यह बात मैं आय अतुरात ह्यां गारुरी बड़ो है सुत तुम्हारो ॥ यह बड़ो धर्मनंद घरनि तुम पाय हो नेक काहे नहो सुत हंकारो । सूर सुनि महरि यह कहि उठी सहजहीं कहा तुम कहत मम अतिहि बारो ॥ ४ ॥ राग सुघराई ॥ कान्हहि पठै महरि कहति पायन परि आजु कहुं कारे काहू खाय है काम कुंवरि । सवदिन आवै जाहि जहांतहां फेरिफेरि अवहि खरिक गई आय जिय बिसरि ॥ निशके उनीदे नैंना तैसे रहे ढरि ढरिकि धों कहूं प्यारी कोरी टटकी लागी जनन जरि । तेरो सुत गारुरी सुन्यो है बातरी महरि सूर दास प्रभु देखै जै हेगी गरल झरि ॥ ५ ॥ ॥ राग आसावरी ॥ जंच मंच कहा जाने मेरो । यह तुम जाय गुननि कों बूझहु बिन कारन तुम करति हो झेरो ॥ आठ वरष कौ कुंवर कन्हाई कहा कहत तुम ताहि । किन बहकाय दई है तुमकों पकरि लै आवहु बाहि ॥ घरमें रहत मैं कछु नहि जानति अति अचरज यह बात । सूर श्याम गारुरी कहां को कहं आई बितताति ॥ ६ ॥ राग टोडी ॥ महरि गारुरी कुंवर कन्हाई । एक विटनिया कारे खाई ताकों श्याम तुरतही ज्याई ॥ बोलि लेहु अपने ढोटा कों तुम कहिकें नेक देहु पठाई । कुंवरि राधिका प्रात खरिक गई तहां कहां धों कारे खाई ॥ यह सुनि महरि मनहि मुसुकानी अवहि रहो मेरे गृह आई । सूर श्याम राधहि कछु कारन जशुमति समुझि रही अरगाई ॥ ७ ॥ ॥ राग आसावरी ॥ तब हरिकों टेरत नंद रानी । भली भई सुत भयो गारुरी आजु सुनो श्रवणनि यह बानी ॥ जननी टेर सुनत हरि आये कहा कहत री मैया । कीरति महिर बुलावन आई जाहु न कुंवर कन्हेया ॥ कहूं राधिका कारे खाई जाहु न आवहु झारि । जंच मंच कछु जानत हौ तुम सूर श्याम बन वारि ॥ ८ ॥ राग गुर्जरी ॥ मैया एक मंच मोहि आवै । बिष हरखाय मरै जो कोऊ मोसों मरन न पावै ॥ एक दिवस राधा संग आई खरिक बिटौनी और । तहां ताहि बिष हरने खाई गिरी धरनि वह ठौर ॥ यह बानी वृषभान घरनि कहि जशुमति तब पतिआई । सूर श्याम मेरो बड़ो गारुरी राधा ज्यावहु जाई ॥ ९ ॥ राग सुघराई ॥ जशुमति कह्यो सुत जाहु कन्हाई । कुंवरि जिवाये अतिहि भलाई ॥ अजहु मेरे घर खेलन आई । जात कहूं कारे तेहि खाई ॥ कीरति महरि लिवावन आई ॥ जाहु न श्याम करो अतुराई । सूर श्याम

कों चली लिवाई । गये वृषभान पुरहि समुहाई ॥ १० ॥ राग रामकली ॥ रोवति महिर फिरति बितलानी । वार बार लै कंठ लगावति अतिहि सिथिल भई पानी ॥ नंद सुवन के पाय परी लै दौरि महिर तव आई । व्याकुल भई लाड़िली मेरी मोहन देहु जियाई ॥ कछु पढ़ि पढ़ि कर अंग परस करि विष अपनों लियो झारि । सूर दास प्रभु बड़े गारुरी सिर पर गाडू ढारि ॥ ११ ॥ राग देवगन्धार ॥ हरि गारुरी तहां तव आये । यह बानी वृषभान सुता सुनि मन मन हरष बढाये ॥ धन्य धन्य आपुन को कीनों अतिहि गई मुरझाय । तन पुलकित रोमांच प्रकट भयो आनंद आंसु बहाय ॥ बिबहल देखि जननि भई व्याकुल अंग बिष गयो समाय । सूर श्याम प्यारी दोउ जानत अन्तर गत के भाय ॥ १२ ॥ राग रामकली ॥ लोचन दियो कुंवरि उघारि । कुंवरि देख्यो नंद को तब सकुच अंग सम्हारि ॥ बात बूझति जननि सोंरी कहा है यह आजु । मरत तें तू बची प्यारी करति है कह लाजु ॥ तब कहति मोहि कारे खाई कछु न रही सुधि गात । सूर प्रभु तोहि ज्याय लीनी कही कुंवरि सों मात ॥ १३ ॥ राग रामकली ॥ तब जो मंच कियो कुंवर कन्हाई । बार बार लै कंठ लगायो मुख चूंब्यो दियो घरहि पठाई ॥ घन्य कोखि वह महरि जशोमति जहां अवतर्यो यहै सुत आई । ऐसो चरित तुरतही कीन्हों कुंवरि हमारी भली जिवाई ॥ मनहीमन अनुमान कियो यहि बिधिना जोरी भली बनाई । सूरदास प्रभु बड़ो गारुरी व्रज घर घर यह घेर चलाई ॥ १४ ॥ राग सुघराई ॥ भले भले हो कान्ह बिषहि उतार्यौ । आजु तें गारुरी नाउ प्रगट्यो तिहारयौ ॥ जननी कहति मेरो सुत बारो । युवति कहति हम तन धों निहारो ॥ अब को निकरै सांझ सवारो । जान्यों व्रज बसत कठिन ऐसो कारो ॥ यह निज मंच जिनि हियते बिसारो । बहुरि कारो कहुं करे गोपसारो ॥ सूर दास प्रभु सबहिन प्यारो । ताही कों डसे जाके हिये है उज्यारो ॥ १५ ॥ राग रामकली ॥ नीके बिषहि उतार्यौ श्याम । बड़ौ गारुरी अवही जान्यों संगहि रहत एकही गाम ॥ ऐसो मंच कहां तुम पायो बहुत कियो है काम । मरी अति राधिका जियाई टेरत यों कहि नाम ॥ हम समुझी यह बात तुम्हारी जाहु आपने धाम । सूर श्याम मन मोहन नागर हंसि बस कीनी बाम ॥ १६ राग रामकली ॥ हंसि बस कीनी घोष कुमारि । बिबिस भई तनकी सुधि बिसरी मन हरि लियो मुरारि ॥ गये श्याम व्रज धाम आपने युवति मदन सस्मारि । लहरि उतारि राधिका सिरतें दई तरुणि न पैडारि ॥ करत बिचार सुन्दरी सब मिलि अब सेवहु चिपुरारि । बिधिवत भांति करो सब पूजा नेम धर्म संजम तनुगारि ॥ मागहु हरहि देहु पति हमकों सूर शरण बनवारि ॥ १७ ॥ राग जैतश्री ॥ भवन रवन सबही बिसरायो । नंद नंदन जबतें मन हरि लियो कहति वृथा यह जनम गंवायो ॥ जपतप व्रत संजम साधन तें प्रकट होत पाषान । जैसेंहि मिलहि श्याम सुन्दरवर सेा कीजे नहिं आन ॥ यहै मंच दृढ कियो सबनि मिलि यातें होय सेा होई । वृथा जन्म जगमें जिनि खोवहु यहां अपनों नहिं कोई ॥ तब परतीति सबनि कें आई कीनो दृढ विश्वास । सूरश्याम सुन्दर पति पावै यह है मेरी आस ॥१८॥

॥ अथसूरसागर वस्त्राहरण रागकल्पद्रुम ॥

॥ अथ व्रत चरिया ॥

॥ अन्तर उरहन प्रत्युत्तर ॥

श्रीकृष्णायनमः

॥ राग आसावरी ॥ गौरी पति पूजति व्रज नारि । नेम धर्मसों रहत क्रिया जित बहुत करति मनुहारि ॥ यहै कहति पति देहु उमापति गिरिधर नंद कुमार । शरण राखि लीजै शिव शंकर तन तरसावत मार ॥ कमल पुहुप मातूल पचफल नाना सुमन सुबास । महादेव पूजति मन बच करि सूर श्याम की आस ॥ १ ॥ राग रामकली शिव सों बिनय करति कुमारि । सीत भीतर जोरि कर मुख अस्तुति करति चिपुरारि ॥ व्रत संजम करति सुन्दरि कृश भई सुकुमारि । छहौ ऋतु तप करति नीके गृह कों नेह बिसारि ॥ ध्यान धरि कर जोरि लोचन मूंदि एक एक जाम । विनय अंचल छोरि रविसों करति है सब वाम ॥ हमहि होहु कृपाल दिन मनि तुमैं बिदित संसार । काम अति तन दहत दीजै सूरश्याम भर्त्तार ॥ २ ॥ रागनट ॥ रविसों बिनय करति कर जोरैं । प्रभु अन्तर्यामी यह जानी हम कारन जप तप जल खोरैं ॥ प्रकट भये प्रभु जलही भीतर देखि सखनि को प्रेम । मीजत पीठि सबनि की पाछें पूरन कीनां नेम ॥ फिरि देखे तो कुंवर कन्हाई मीजत रुचिसों पीठि । सूर निरखि सकुची व्रज जुवती परी श्याम तन डीठि ॥ ३ ॥ राग देव गंधार ॥ अति तप देखि कृपा हरि कीनो ॥ तनकी जरनि दूरि भई सबकी मिलि तरुनिन सुख दीनो । नवल किशोर ध्यान जुवती मन मीजत पीठ जनायो ॥ बिबस भई कछु सुधि नसंभारति भयो सबनिमन भायो । मन मन कहति भयो तप पूरन आनंद उर नसमाई । सूर दास प्रभु लाज न आवति जुवति न माझ कन्हाई ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ हंसत श्याम व्रज घरको भागे । खोरनि कों यह कहति सुनावति मोहन करन लंगरई लागे । हम स्नान करति जल भीतर आपुन

मींजत पीठि कन्हाई ॥ कहा भयो जो नंद महर सुत हमसों करत अधिकइ ढिठाई । लरिकाई तबहीं लों नीकी चार बरषकी पांच । सूर श्याम जाइ कहें जशुमति सों श्याम करतये नाच ॥ ५ ॥ रागसारंग ॥ प्रेम बिबस सब ग्वालनि भईं ॥ उरहन देन चली जशुमति को मन मोहन के रूपरई । पुलक अंग अंगिया उर दरकी हार तोरि कर आपु लई । अंचल चीरि घात नख उर करि यह मिसकरि नंद सदन गई । जशु मति माइ कहा सुत सिख्यो हमको जैसे हाल किये ॥ चोली फारि हार गहि तोर्‌यो देखो उर नख घात दिये । अंचर चीरि अभूषन तोरे घेरि धरत उठि भागि गये ॥ सूर महरि मन कहति श्याम धौं ऐसे लायक कबहि भये ॥ ६ ॥ राग गौर ॥ महरि श्याम को बरजति काहेन । ऐसे हाल किये हरि हमको भईं न कहुं जग आहेन । और बात एक सुनहु श्याम की अतिही भये है ढीठ । बसन बिना अस्नान करति हम आपुन मींजत पीठ । आपु कहति मेरो सुत बारो छियो उघारि दिखाऊं ॥ सुनेहु नकहूं कहतिहु न आवे तुमकों कहा लजाऊं । यह बानी जुबतिन मुख सुनिके हंसि बोली नंद रानी । सूर श्याम तुम लायक नाही बात तुम्हारी जानी ॥ ७ ॥ राग गौरी ॥ बात कहौ सो लहै बहैरी । बिना भीति तुम चित्र लिखति हौ सो कैसे निबहैरी । तुम चाहति हौ गगन तरैयां मागे कैसें पावहु । आवतही मैं तुम लखि लीन्हीं कहि मोहि कहा सुनावहु । चोरी रही छिनाय्‌यो अब भई जान्यो जान तुम्हारो । और गोप सुत तिनहि नदेखौ सूर श्याम है बारो ॥ ८ ॥ राग गौरी ॥ एहि अंतर हरि आय गये ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछे अति कोमल छबि अंग भये ॥ जननि बुलाय बांह गहि लीनी देखहुरी मद माती । इनही को अपराध लगावति कहा फिरति इतराती । सुनि है लोग मष्ट अबहूं रहु तुमहिं कहांकी लाज । सूर श्याम मेरो माखन भोगी तुम आवति बेकाज ॥ ९ ॥ राग देव गंधार ॥ अबहि देखे नवलकिशोर । घर आवतही तनक भए हैं ऐसे तनके चोर । कछु दिन करी दधि माखन चोरी अब चोरत मन मोर । बिवस भई तन सुधि न संभारति कहति बात भई भोर । यह बानी कहत लजानी समुझि भई जिय बोर । सूर श्याम मुख निरखि चली घर आनंद लोचन लोर ॥ १० ॥ राग गौरी ॥ ब्रज घर गई गोप कुमारि । नेकहु कहुं मन नहि लागत काम धाम बिसारि । मात पितुको डरु न मानति बदति नाहि नगारि । हठ करति बिरुझाति तब जिय जननि जानति बाति । प्रातही उठि चली सब मिलि जमुन तट सुकुमारि । सूर प्रभु व्रत देखि इनको नहि न परति संभारि ॥ ११ ॥ राग गौरी ॥ जमुना तट देखे नंद नंदन । मोर मुकुट मकरा कृत कुंडल पीत बसन तन चंदन । लोचन तृपित भये दर शनतें उरकी तपति बुझानी । प्रेम मगन तब भई ग्वालि सब तनकी दशा हिरानी । कमल नयन तट पर हैं ठाढे संकुचि मिली व्रज नारी । सूर दास प्रभु अंतर जामी व्रत पूरन पन धारी ॥ १२ ॥ राग नट ॥ बनत नहि नदी जमुना को ऐसो । सुंदर श्याम घाट पर ठाढे कहौ कौन बिधि जैबो । कैसे बसन उतारि धरैं हम कैसे जलहि समैबो । नंद नंदन हमको देखहिंगे कैसे करिजु नहैबो । चोली चीर हार लै भाजत सो कैसे

करि पैवो । अंकमें भरि भरि लेत सूर प्रभु कालि नएहि पथएवो ॥ १३ ॥ राग राम कली ॥ कैसे बनै जमुन अस्नान । नंदको सुत तीर बैठ्यो बड़ो चतुर सुजान । हार तोरै चीर फारै नैन चले चुराय । कालि धोखे कांन्ह मेरी पीठि मीजी आय । कहति जुवती बात सुनि सब थकित भई ब्रज नारि । सूर प्रभुको ध्यान धरि मन रबिहिं बांह पसारि ॥ १४ ॥ राग गूजरी ॥ अति तप करति घोष कुमारि ॥ कृष्ण पति हम तुरत पावैं काम आतुर नारि । नयन मुंदति दरश कारन श्रवण शब्द विचारि । भुजा जोरति अंकभरि हरि ध्यान उर अंकवारि । शरद ग्रीषम डरति नाहीं करति तपतनु गारि । सूर प्रभु सर्बज्ञ स्वामी देखि रीझे नारि ॥ १५ ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रज ललना रबि कों कर जोरैं । शीत भीत नहि करत छुहो तिनु चिबिध काल जमुना जल खोरैं । गौरी पति पूजति तप साधति करति रहत नित नेम । भोग रहित निस जागी चतुर्दसी जशुमति सुतके प्रेम ॥ हमकों देहु कृष्ण पति ईश्वर और नहीं मन आन । मनसि बाचसि कर्मना हमारे सूर श्याम को ध्यान ॥ १६ ॥ राग राम कली ॥ नंद के तपु कीन्हों तनु गारि ॥ आप देखत कदम पर चढि मानि लेय मुरारि ॥ बरष भरि ब्रत नेम संजम इनि कियो मोहि काज ॥ कैसेहू मोहि भजै कोउ मोहि बिरदकी लाज । धन्य ब्रत इनि कियो पूरन शीत तपति निवारि । काम आतुर भजी मोकों नव तरुनि ब्रज नारि । कृपा नाथ कृपाल भये तब जानि जनको पोरि । सूर प्रभु अनुमान कीनों हरी इनके चीर ॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ बसन हरे सब कदम चढाये सूर हंस हंस गोपकन्यनि के अंग अभूषन सहित चुराये । अति बिस्तार नोप तरु तामै लैलै जहां तहां लटकाये । मनि अभरनि डार डार प्रति देखत छबि मनहीं अटकाये । नीलाम्बर पाटंबर सारी सेत पीत चुनरी अरु नाये । सूर श्याम जुवतिन ब्रत पूरन को फल कदम डार फल लाया ॥ १८ ॥ राग सूहो ॥ आपु कदम चढि देखत श्याम । बसन आभूषन सब हरि लीने बिना बसन जल भीतर बाम । मूंदति नयन ध्यान धरि हरि को अंतर जामी लीन्हो जानि । बार बार सबितासों मागति हम पावैं पति सारंग पानि । जलतें निकसि आय तट देखो भूषन चीर तहां कछु नाहि । इत उत हेरि चकृत भई सुंदरि सकुचि गई फिरि जलही माहि । नाभि प्रजंत नीर में ठाढी थर थर अंग कंपत सुकुमारि । कोलै गयो बसन आभूषन सूर श्याम उर प्रीति बिचारि ॥ १९ ॥ राग राम कली ॥ आबहु निकसि घोष कुमारि । कदम पर तें दरस दीनों गिरिधरन बनवारि । नैन भरि मैं तुमहि देखो करों कृपा अपार । ब्रत तुम्हारो भयो पूरन कह्यो नंद कुमार ॥ सलिल तें सब निकसि आयहु दया सहति तुषार । देतहूं किनि लेहु मोसों चीर चोखो हार ॥ बांह टेकि बिनय करो मोहि कहो बारंबार । सूर प्रभु कह्यो मेरेही आगें आनि करो शृंगार ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालिनि आपने चीर लेउरी । जल निकसि तट ह्वै करजोरि शीश देउरी ॥ कातहो शीत सहति ब्रज सुन्दरि ब्रत पूरन भैरी । मेरे कहे आनि पहिरो पटु छुद्र तनु हेम जैरी ॥ हौं अन्तर्यामी जानत सब अति यह पैजकरी । करिहौं पूरन काम तुम्हारो शरद रातढरैरी ॥

सन्तत सूर सुभाव हमारो कत भै काम डरैरी । कौनहु भाव भजै कोऊ हमकों तिन तन ताप हरैरी ॥ २१ ॥ राग रामकली ॥ हमारो अम्बर देहु मुरारी । लैसब चीर कदम चढि बैठे हम जल मांझ उघारी ॥ तट पर बिना बसन कों आवें लाज लगति है भारी चोली हार तुमहि कों दीनों चीर हमहि देहु डारी ॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन हमहैं दासि तुम्हारी । जो कछु कहौ सोई हम करिहैं चरण कमल परवारी ॥ अंग अंग कम्पत मन मोहन बिनती सुनहु हमारी । सूर श्याम कछु छोह करो जू शीत गई तन मारी ॥ २२ ॥ राग रामकली ॥ हाहा कहति घोष कुमारि । शीततें तनु कंपत थर थर बसन देहु मुरारि ॥ मनहि मन अतिही भयो सुख देखिकें गिरिधारि । पुरुष इस्त्री अंग देखै कहत दोष न भारि ॥ नेक नहि तुम छोह आवत गई हम सब मारि । सूर प्रभु अतिही निठुर हौ नंद सुत बनवारि ॥ २३ ॥ राग बिलावल ॥ लाज ओट यह दूरि करौ । जोइ मैं कहौं करहु तुम सोई सकुच बापुरेहि कहा करौ ॥ जलतें तीर आय कर जोरहु मैं देखहुं तुम बिनय करौ । पूरन व्रत अब भयो तुम्हारो गुरजन शंका दूरि करौ ॥ अब अंतर मोसों जिनि राखहु बार बार हठ वृथा करौ । सूर श्याम कह्यो चीर देत हौं मो आगे शृंगार करौ ॥ २४ ॥ राग गुर्जरी ॥ जलतें निकसि तीर सब आवहु । जैसें सबितासों कर जोरैं तैसें तैसेंहि जोरि दिखावहु ॥ नव बाला हम तरुन कान्ह तुम कैसे अंग दिखावैं । ए जल ही तें बांह टेकिकें देखहु श्याम रिझावैं ॥ ऐसे नहीं रीझु मैं तुमकों तटही बांह उठावहु । सूरदास प्रभु कहत हार चोलीबस्तर तब पावहु ॥ २५ ॥ राग रामकली ॥ हमारो देहु मनोहर चोर । कांपत दसन शीत तन व्यापित हम अति जमुना तीर ॥ मानहिगो उपकार राबरो करहु कृपा बलबीर । अतिहि दुखित बपु परसत मोहन प्रबल प्रचंड समीर ॥ हम दासी तुम नाथ हमारे बिनती करति जल भीतर ठाढी । मानहु बिकसि कमोदनि शशिसों अधिक प्रीति उर बाढी ॥ जो तुम हमहि नाथ करि मानहु यह मागे हमे देहु । जलतें निकसि आय बाहरि ह्वै बसन आपने लेहु ॥ कर धर शीश गई सनमुख हरि मन मह करि आनंद । होय कृपाल सूर प्रभु सब विधि अंबर दीनों नंद नंद ॥ २६ ॥ राग जैतश्री ॥ तरुणी निकसि निकसि तट आई । पुनि पुनि कहत लेहु पट भूषण युवती श्याम बुलाई । जलतें निकसि भई सब ठाढीं कर अंग उर पर दीने । बसन देहु आभूषन राखहु हाहा पुनि पुनि कीने ॥ ऐसे कहा बतावति हौ मोहि बांहउठाय निहारौ । कर सों कर अंग उर नहिमूंदो मेरे कहे उघारो ॥ सूर श्याम सोइ सोइ हम करिहैं जोइ जोइ तुम सब कैहौ । लगे दाउ कबहूं तुमसों हम बहुरि कहां तुम जैहौ ॥ २७ ॥ रागनट ॥ सोरह सहस घोष कुमारि । देखि सबकों श्याम रीझे रहीं भुजा पसारि । बोलि लीने कदम के तर यहां आवहु नारि प्रकट भई सबनि कों हरि काम इंद निवारि । बसन भूषन सबनि पहिरे हरष भई सुकुमारि । सूर प्रभु गुण भरे हैं सब ऐसे तुम बनवारि ॥ २८ ॥ दृढ व्रत किये मेरे हेत । धन्य धनि कहि नंद नन्दन जाहु सबै निकेत ॥ करौ पूरन काम तुम्हरौ शरद रास रमाय । हरष भई यह सुनत गोपी शीश रहीं नवाय ॥ सबनि को अंग परस कीनों व्रत कियो

तनु गारि । सूर प्रभु सुख दियो मिलि कें ब्रज चली सुकुमारि ॥ २९ ॥ राग सूहो ॥ ब्रत पूरन कियो नंद कुमार । युवतिन के मेटे जंजार ॥ जप तप करि तन जिनि अवगा रौ । तुम घरनी मैं स्वामि तुम्हारौ ॥ अंतर सोच दूरि करि डारहु । मेरो कह्यो सत्य उर धारहु ॥ सूरदास तुम आस पुराऊं । अंकम भरि सबकों उरलाऊं ॥ यह सुनि सब मन हरष बढायो । मन मन कह्यो कृष्ण पति पायो ॥ जाहु सबै घरकों सुकुमारी । शरद रास दैहौं सुख भारी ॥ सूरश्याम प्रकटे गिरिधारी । आनंद सहित गई घरनारी ॥ ३० ॥ राग आसावरी ॥ शिव शंकर हमकों फल दीनों । पुहुप पान नाना फल मेवा षटरस अर्पन लै लै कीनों ॥ पाय परी युवती सब यह कहि धन्य धन्य चिपुरारि। तुरतहि फल पूरन हम पायो नंद सुवन गिरिधारि ॥ बिनय करति सविता तुम सरिको पय अंजुलि कर जोरि। सूरश्याम पति तुमतें पायो यह कहि घरहि बहोरि ॥ ३१ ॥ * *

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ चीर हरण लीला ॥ * ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

॥ राग बिलावल ॥ नंद नन्दन बर गिरिबर धारी । देखत रीझीं घोष कुमारी मोर मुकुट पीतांबर काछें । आवत देखे गायन पाछें ॥ कोटि इन्दु छबि बदन बिराजै । निरखि अंग प्रति मन मथ लाजै ॥ रवि शत छबि कुण्डल नहि तुलै । दशन दमक दुति दामिनि भुलै ॥ नयन कमल मृग शावक मोहै । सुक नाशा पटतर को कोहै ॥ अधर बिम्ब फल पटतर नाही । बिद्रुम अरु बंधूक लजाही ॥ देखत रीझि रहीं ब्रज नारी । देह गेह की सुरति बिसारी ॥ यह मनमें अनुमान कियो तब । जप तप संजम नियम करैं अब ॥ बार बार सबितहि मनावति । नंद नंदन पति देहु सु भावति ॥ नेम धर्म तपसा धन कीजे । शिव सों मांगि कृष्ण पति लीजे ॥ बरश दिवस को नेम लियो सब । रुद्रहि सेवहु मन बच क्रम अब ॥ दृढ बिश्वास ब्रतहि को कीन्हो । गौरी पति पूजा मन दीन्हो ॥ घट दस सहस जुरीं सुकुमारी । ब्रत साधति नीके तनु गारी ॥ प्रात उठे जमुना जल खोरैं । शीत भीत कहं अंग न मोरैं ॥ पति के हेत नेम ब्रत साधे । शंकर सों यह करि अवराधे ॥ कमल पचमा

खतो चढावैं । नयन मूंदि यह ध्यान लगावैं ॥ हमकों पति दीजै गिरिधारी । बड़े देव तुम हो त्रिपुरारी ॥ और कछू नहि तुमसों माँगैं । कृष्ण हेत यह कहि पालागैं ॥ ऐसेहि करत बहुत दिन बीते । प्रभु अन्तर्यामी मन जीते ॥ एक दिवस आपुन चाये तहाँ । नव तरुणी अस्नान करति जहाँ ॥ बसन धरे जलतीर उतारी । आपुन जल पैठी सुकुमारी ॥ कृष्ण हेत अस्नान करैं जहां । सबके पाछे आपु रहै तहाँ ॥ लीजत प्रीति प्रेम अति बाढी । चलत भईं जुवती फिरि ठाढीं ॥ देखे नन्द नन्दन गिरि धारी । व्रत फल प्रकट भये बनवारी ॥ सकुचि अंग जल पैठि लुकावै । बार बार हरि अंक मलावै ॥ लाज नहीं आवति है तुमको । देखत बसन बिना सब हमको ॥ हंसत चले तब नन्दकुमार । लोगनि सुनवति करति पुकार ॥ हार चीर लै चले पराई । हांक दियो कहि नन्द दुहाई ॥ डारि बसन भूषन तब भागे । श्याम करन अब ढीठो लागे ॥ भागे कहां बचोगे मोहन । पाछे आइ गई तुअ गोहन ॥ तनकी सुधि सभारि कछु नाही बसन आभूषन पहिरत जांही ॥ चीर फट्यो कंचुकि बन्द छूटे । लेत न बनत हार सर टूटे ॥ प्रेम सहित मुख खीझत जाही । झूठेहिवार बार पछि ताही ॥ गई सबै चिय नन्द महर घर । जशुमति पास गई सब दर दर ॥ देखहु महरि श्यामके एगुन । जैसे हाल करे सबकै उन ॥ चोली चीर हार दिखराये । आपुन भागि इतहि को आये ॥ जमुनातट कोऊ जानन पावै । संग सखा लिये पाछे धावै ॥ सुतको बरजहु हो नन्दरानी । गिरिधर करत भली नहीं बानी ॥ लाज लगति एक बात सुनावति । अंचल छोरि हियो दिखरावति ॥ यह देखति हंसि उठी जशोदा । कछु रिस कछु मनमें करि मोदा ॥ आय गये तेहि समैं कन्हाई । बांह पकरिलै तुरत दिखाई ॥ तनक तनक कर तनक अंगुरिया । तुम जोबन भर नवल बछरिया ॥ जाहु घरहि तुमकों मैं चीन्ही । तुम्हरी जानि जाति मैं लीन्ही ॥ तुम चाहति सो इहां न पैहौ । और बछत ब्रज भीतर लैहौ ॥ बार बार कहि कहा सुनावति । इन बातनि कछु लाज न आवति ॥ देखौरी ये भाव कन्हाई कहां गई तबकी तरुणाई ॥ महरि तुमहि कछु दूषन नाहीं । हमकों देखि देखि मुस काहीं ॥ उनके गुण कैसे कोउ जानै । और करत ओरै धरि ठानै ॥ देन उरहनों तुमको आईं । नीकी पढि रावनि हम पाईं ॥ चली सबै जुवती घर घरकों । मनमें ध्यान करति हैं हरिको ॥ बरष दिवस तप पूरन कीनों । नन्द सुवनको तन मन दीनों ॥ प्रात होत जमुना फिरि आई । प्रथम रहे चढि कदम कन्हाई ॥ तीर आय जुवती भईं ठाढी । उर अन्तर हरिसोंरति बाढी ॥ कह्यो चलो जमुनाजल खोरैं । अंग अंग आभूषन सब छोरैं ॥ चोली छोरै हार उतारै । करसों सिथिल केस निरवारै ॥ इत उत चितवति लोग निहारैं कह्यो सबनि अब चीर उतारैं ॥ बसन आभूषन धरे उतारी । जलभीतर सब गईं कुमारी माघ शीत को भीतन मानों । षटऋतु के गुण सब करि जानों ॥ बार बार बूडैं जलमाहीं नेकहु जलसों डरपत नाहीं ॥ प्रातउठैं एक जामन जाहीं । नेम धर्मही में दिन जाहीं ॥ इतनो कष्ट करैं सुकुमारी । प्रतिके हेत गोवर्द्धन धारी ॥ अति तप करत देखि गोपाल । मनमें कह्यो धन्य ब्रज बाल ॥ हरि अन्तर जामी सब जानै । छिन छिनकी यह सेवा

मानै ॥ व्रत फल इनहि प्रगट दिखराऊं । बसन हरौं लै कदम चढाऊं ॥ तन साधे तप कियो कुमारी । अजौ मोहि कामातुर नारी ॥ सोरह सहस गोप सुकुमारी । सबके बसन हरे बन वारी ॥ हरत बसन कछु बार न लागी । जलभीतर जुवती सब नागी ॥ भूषन बसन सबै हरि ल्याये । कदम डार जहं तहं लटकाये ॥ ऐसोनीप वृक्ष बिस्तारा । चीर हार धों कितक हजारा ॥ सबे समाने तरु प्रति डारा । यह लीला रचि नन्द कुमारा ॥ हार चीर मानहु तरु फूल्यो । निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो ॥ नेम सहित जुवती सब जाहीं । मन मन सविता बिनै सुनाहीं ॥ मूंदे नयन ध्यान उर धारे । नन्द नदन पति होंइ हमारे ॥ रवि करि बिनय शिवहि मन दीन्हो । हृदय मांझ अब लोक न कीन्हो ॥ त्रिपुर कदन त्रिपुरारि त्रिलोचन । गौरीपति पशुपति अघमोचन ॥ गरल असन अहि भूषन धारी । जटा धरन गंगा सिर प्यारी ॥ करति विनय यह मांगति तुमसों । करहु कृपाहं सिके आपुन सों ॥ हम पावें सुत जशुमति को पति । इहै देहु करि कृपा देवरति नित्य नेम करि चली कुमारी । एक जाम तन कोंहिम जारी ॥ व्रज ललना कह्यो नीर जड़ाई । अति आतुर ह्वै तटको धाई ॥ जलतें निकसि तरुनि सब आईं । चीर आभूषन तहां न पाईं ॥ सकुचि गई जलभीतर धाईं । देखि हंसे तरु चढे कन्हाईं ॥ बार बार जुवती पछिताहीं । सबके बसन आभूषन नाहीं ॥ ऐसो कौन सबै लै भाग्यो । लेतहु ताहि विलंब न लाग्यो ॥ माघ तुषार जुवति अकुलाहीं । ह्यां कहुं नन्द सुवन तौ नाहीं ॥ हम जानति यह बात बनाई । अंबर हरि लै गये कन्हाई ॥ हौ कहुं श्याम बिनै सुनि लीजै । अंबर देहु कृपा करि दीजै ॥ थर थर अंग कंपति सुकुमारी । देखि श्याम नहि सके संभारी ॥ एहि अन्तर प्रभु बचन सुनायो । व्रतको फल दरशन सब पायो ॥ कहा कहति मोसों वृज बाल । माघ सीत कत होति विहाल ॥ अंबर जहां बताऊं तुमको । तो तुम कहा देहुगी हमको ॥ तन मन अर्पन तुमही कीनों । जो कछु हुतो सो तुमही दीनों और कहा जूलैहौ हमसों । हम मांगति हैं अंबर तुमसों ॥ यह सुनि हंसे दयाल मुरारी मेरो कह्यौ करौ सुकुमारी ॥ जलतें निकसि सबै तट आवहु । तबहि भले तुम अंबर पावहु ॥ भुजा पसारि दीन ह्वै भाषहु । दोउ कर जोरि जोरि तुम राखहु ॥ सुनहु श्याम एक बात हमारी । नग्न कबहुं देखियत नहि नारी ॥ यह मति आप कहांधों पाई । आजु सुनी यह बात नबाई ॥ ऐसी तुम मनहीं में राखहु । यह बानी मुखतें जिनि भाखहु ॥ हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई । बिना बसन क्यों देहि दिखाई ॥ पुरुष जाति तुम यह का जानों । हा हा यह मुखमें जिनि आनों ॥ तौ तुम पैठि रहो जलही सब । बसन आभूषन नाहि गहति अब ॥ तबहि देउं जब बाहिर आवहु । बिन बाहिर आए नहि पावहु ॥ कतहो शीत सहति सुकुमारी । सकुचि देहु जलही में डारी ॥ फर्यो कदम व्रत फरनि तुम्हारो । अब कह लज्जा करति हमारी ॥ लेहु आनि आपने व्रतको । मैं जानत या व्रतके फलको ॥ नीके व्रत कीनो तनु गारी । व्रत ल्यायो धरि गिरवर धारी ॥ तुम मन कामन पूरन करिहों । रास रंग रचि रति सुख भरिहों ॥ यह सुनिके मन हरष बढायो । व्रत कौ

पूरण हमफल पायो ॥ छाडहु तुमयह टेक कन्हाई। नीर मांझ हम गई जडाई ॥ आभूषन आपुनहीं लैहो। चीर कृपाकरि हमकों देहो ॥ हाहा लागैं पाइ तुम्हारे। पापु होतहै जाड़िन मारे ॥ आजहुतें हम दासितुम्हारी। कैसे अंग दिखावैं नारी ॥ अंग देखा एहि अंबर पैहों। नातरु वैसेहि द्योस गवैंहो ॥ मेरे कहे निकसि सब आवहु। थोरेहि हमकोभलो मनावहु ॥ मुहांचही तरुनी मुसुकानी। यह आपुन थोरी करि जानी ॥ जोइ जोइ कहौ सो तुम कों सोहै। आजु तुम्हारे पटुतर कोहै ॥ हमरो पति सब तुम्हरे हाथा। तुमहि कहौ ऐसो व्रज नाथा ॥ तप तनु गारि कियो जेहि कारन। सो फल लग्यो नीप तरु डारन ॥ आवहु निकसि लेहु पट भूषन। यह लागै हमको सब दूषन ॥ अब अन्तर कत राखति हम सों। बारंबार कहत हौं तुमसों ॥ गोपिनि मिलि यह बात बिचारी। अबतौ टेक परे बनवारी ॥ चलहु न जाय चीर अब लीजै। लाज छांड़ि उनकों सुख दीजै ॥ जलतें निकसि तीर सब आईं। बार बार हरि हरषि बुलाईं ॥ बैठि गईं तरुनी सकुचानी। देहु श्याम हम अतिहि लजानी ॥ छांडि देहु यह बात सयानी। बैसेहि करौ कही जोबानी ॥ कर कुच अङ्ग ढांकि भइ ठाढीं। बदन नवाय लाज अति बाढीं ॥ देहु श्याम अम्बर अब डारी। हाहा दासी सबै तिहारी ॥ ऐसे नहीं बसन तुम पावहु। बांह उठाय अंग दिखरावहु ॥ कह्यो मानि युवतिन कर जोरे। पुनि पुनि युवती करति निहोरे ॥ धन्य धन्य कहि श्री गोपाल। निश्चय व्रत कीनें व्रज बाल ॥ आवहु निकट लेहु सब अम्बर ॥ चोली हार सुरङ्ग पटम्बर ॥ निकट गईं सुनिकें यह बानी। तरुणी नगन अंग अकुलानी ॥ भूषण बसन सबनि कों दीनें। बियके कहत कृपा हरि कीनें ॥ चीर आभूषन पहिरें नारी। कह्यो तबहि ऐसें गिरिधारी ॥ तब हंसि बोले कृष्ण मुरारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ॥ तुमहि हेत यह बपु व्रज धारयौ। तुम कारन बैकुंठ बिसारयो ॥ अब व्रत करि तुम नहि तन गारौ। मैं तुमतें कहुं होत न न्यारौ ॥ मोहि कारन तुम अति तपु साध्यौ। तनमन करि मोकों अब राध्यौ ॥ जाउ सदन अब सब व्रज बाल। अंग परसि मेटे जंजाल ॥ युवतिन बिदा दई गिरिधारी। गईं घरनि सब घोष कुमारी ॥ वस्त्र हरण लीला प्रभु कीन्हों व्रज तरुनिन व्रतको फल दीन्हों ॥ यह लीला श्रवणनि सुनि भावै। औरनि सिखवै आपुन गावै ॥ सूर श्याम जनके सुखदाई। दृढ़ताईमें प्रकट कन्हाई ॥ ३२ ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ पनघट की लीला ॥ * ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ राग अडानों ॥ हों गई जमुन जल लेंन माई हों सांवरे सें मोही। सुरङ्ग केसरि खोरि कुसुम को दाम अभिराम कंठ कनक की दुलरी ढुलकति पीतांबर की खोही ॥ नान्ही नान्ही बूंदनि में ठाढौरी बंसुरिया बजावै गावै माला करी मीठी तान नें तोलाकी छबि नेंकहूं न जोही। सूर श्याम मुरि मुसिकानि छबिरी अंखियनि में रही तब न जानों हो कोही ॥ १ ॥ राग अडानों ॥ चटकीलो पट लटपटानौं कटि बंसीवट जमुनाके तट नागर नट। मुकुट लटक अरु भृकुटी मटका देखें कुण्डल की चटक सों अटक परी दृगनि लपटे आछो चरणनि कंचन लकुट ॥ चटकीली वनमाल करटेके द्रुम डाल टेढे ठाढे नंदलाल छबि छाई घटघट। सूर दास प्रभु की बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट निकट आवै सोंधे की लपट ॥ २ ॥ राग सुघराई ॥ बजावै मुरली की तान सुनावै यहि विधि कान्ह रिझावै। नटवर भेष बनाये चटकसों ठाढे रहे जमुनके तीर नित बन खग निकट बुलावै ॥ ऐसौ को जो जाय जमुना तें जल भरि घरहि लै आवै। मोर मुकुट कुण्डल वन माला पीतांबर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भरि आवै। सूर श्यामके अङ्गअङ्ग प्रति कोटि काम छबि छावै ॥ ३ ॥ राग पूर्वी ॥ पनघट रोकेहि रहत कन्हाई। जमुना जल कोऊ भरन न पावत देखतही फिरि जाई ॥ तबहि श्याम एक बुद्धि उपाई आपुन रहे छिपाई। तट ठाढे जे सखा संगके तिनकों लिये बुलाई ॥ बैठारे ग्वालनि कों द्रुमतर आपुन फिरि फिरि देखत। बड़ी बार भई कोउ न आई सूरश्याम मन लेखत ॥ ४ ॥ राग देव गन्धार ॥ युवती एक आवत देखी श्याम। द्रुमकी ओट रहे हैं आपुन जमुना तटगई बाम ॥ जल हलोरि गागरि भरि नागरि जबही शीश उठायो। घरकों चली जाय तापाछें सिरतें घट ढरकायो ॥ चतुर ग्वालि कर गह्यो श्याम को कनक लकुटिया पाई। औरनि सों करि

रहे अवगरो मोसों लगत कन्हाई ॥ गागरि लै हँसि देत ग्वाल कर रीतोघट नहि लैहौं। सूर श्याम ह्यां आनि टेहु भरि तबहि लकुट कर दैहौं ॥ ५ ॥ राग कल्याण ॥ लकुट कर कोहों तब दैहों जब मेरो घट भरि देहौ । कहा भयो जो नन्द बड़े वृषभान आन हमहूं तुमसो हौं सम सरि मिलि करि कैहौ ॥ एक गांव एक ठांव बास एक तुमको हौ क्यों मैं सै हौ । सूर श्याम मैं तुम न डरैहों फेरि ज्वाब में दैहौं ॥ ६ ॥ राग कल्याण ॥ घट भरि देहु लकुट तब दैहों । हमहूं बड़े महिर की बेटी तुमकों नही डरैहों ॥ मेरी कनक लकुटिया दैरो में भरि दैहों नीर । बिसरि गई सुधि तादिनकी तोहि हरे सबनि के चीर ॥ यह बानी सुनि ग्वारि बिवस भई तनकी सुधि बिसराई । सूर लकुट कर गिरत न जानी श्याम ठगौरी लाई ॥ ७ ॥ राग हमीर ॥ घट भरि दियो श्याम उठाई । नेंकु तनकी सुधि न ताके चली व्रज समुहाई ॥ श्याम सुन्दर नयन भीतर रहे आनि समाई । जहां जहां भरि दृष्ट देखे तहां तहां कन्हाई ॥ उतहि तें एक सखी आई कहति कहा भुलाई । सूर अबही हंसति आइ चली कहां गंवाई ॥ ८ ॥ राग टोडी ॥ अरी हों श्याम मोहनी घाली री । अबहि गई जल भरनि अकेली नंद नदन मेरी दृष्टि परे आली फिरि चितवति उर सालीरी ॥ कहारी कहौं कछु कहत न बनि आवै लगी मरम की भालीरी । सूरदास प्रभु मन हरि लीनों बिवस भई हों कासों कहों यह आलीरी ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनत बात यह सखि अतुरानी । ताहि बांह गहि घर पहुंचाई आप चली जमुना के पानी ॥ देखे आय तहां हरि नाही चितवति जहां तहां वितताने । जल भरि ठठुकत चली घरहि तन बार बार हरिकों पछितानी ॥ ग्वारिनि विकल देखि प्रभु प्रकटे हरष भयो तन तपति बुझानो । सूर दास अंकम भरि लीनी गोपी अंतर गतिकी जानी ॥ १० ॥ राग आसावरी ॥ मिलि हरि सुख दियो तेहि बाला । तपति मिटि गई प्रेम छाकी भई सबै हाला ॥ मगनही डग भरति नागरी भवन गई भुलाई । जल भरनि व्रज नारि आवति देखि ताहि बुलाई ॥ जाति कितहै डगर छांडे कह्यो इतको आई । सूर प्रभु के रङ्ग राची चितै हरि चित लाई ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ काहु तोहि ठगौरी लाई । बूझति सखी सुनति नहि नेकहुं तुही कि धौं ठग बूरी खाई ॥ चौंकि परी स्वप्ने जनु जागी तब बानी कही सखिन सुनाई । श्याम बरन एक मिल्यो दुटौना तेहि मोकों मोहनी लगाइ ॥ मैं जल भरे इतहि कों आवति आनि अचानक अंक भराई । सूर ग्वालि सखियनि के आगे बात कहहि सब लाज गंवाई ॥ १२ ॥ राग टोडी ॥ आवति ही जमुना भरे पानी श्याम बरन काहू को ढोटा निरखि बदन घरगैल भुलानी ॥ उन मोतन में उनतन चितयो तब ही तें उन हाथ बिकानी । उर धकधकी लगी तन व्याकुल मुख सों फुरति न बानी ॥ तब कह्यो मोहन मोहनी तू को है या व्रज में ही पहिचानी । सूरदास प्रभु मोहन देखत जनुवारिद जल बूंद हिरानी ॥ १३ ॥ राग धनाश्री ॥ नेक न मन तें टरत कन्हाई । एक ऐसेहि छकि रही श्याम रस तापर यहि यह बात सुनाई ॥ वाकों सावधान करि पठयो चली आपु जलकों अतुराई । मोर मुकुट पीतांबर काछें देख्यो कुंवर नंदको जाई ॥ कुंडल झलकत लसित कपोलनि सुंदर नयन बिसाल सुहाई ॥ कह्यो

सूर प्रभु ए ढंग सीखे ठगत फिरत हौ नारि पराई ॥ १४ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा ठग्यो तुमरो ठगि लीन्हों । क्यों नहि ठग्यो और कहा ठगिहौ औरहिं के ठग तुमको चीन्हो ॥ कहौ नाम धरि कहा ठगा यो सुनि राखे यह बात । ठग के लक्षन मोहि बतावहु कैसे ठग के घात ॥ ठग लक्षन हमसों सुनिये मृदु मुसुकनि मन चोरत । नैन सैन दे चलत सूर प्रभु अंग त्रिभंग करि मोरत ॥ १५ ॥ रागसूहौ ॥ अतिहि करत तुम अचगरी । काहु को छीनत हौ गिंडरी काहु कि फोरत हौ गगरी ॥ भरन देहु जमुना जल हमकों दूरि करो बातें ये लंगरी । पैंडे चलन न पावत कोऊ रोकि रहत खरि कनि लै डगरी ॥ बाट घाट सब देखत आवत जुवती डरनि मरति है सगरी । सूर श्याम तेहि गारी दीजै जो कोऊ आवै तुम्हरी बगरी ॥ १६ ॥ राग रामकली ॥ नीके देहु न मेरी गिंडरी । लेजैहैं धरि जशुमति आगे आवहुरो सब मिलि एक झुंडरी ॥ काहु नहि डरात कन्हाई बाट घाट तुम करत अचगरी । जमुनादह इंदुरी फटकारी फोरी सब मटुकी अरु गगरी ॥ भली करी यह कुंवर कन्हाई आजु मेंटि हैं तुम्हरी लंगरी । चली सूर जशुमति के आगे उरहन लै तरुनी व्रज सगरी ॥ १७ ॥ राग टोडी ॥ आनिन देहु ढटौना ढौटा इंडुरी पराई ॥ तेरो कोउ कहा करेगो खरि है हमसों बहिनी माई ॥ मेरे संग की और गई ते जलभरि धरिधरि धरतें फिर आई । सूर श्याम इंडुरी दीजै न तो जशुमति सों हम कैहैं जाई ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ आपुन चढे कदम पर धाई । बदन संकोरि भौंह भोरतु है हांक देत करि नंद दुहाई ॥ जाय कहौं मैया के आगे लेहु सबै मिलि मोहि बंधाई ॥ मोकों जुरि मारन जब आई तब दोनों गिंडरी फटकाई ॥ ऐसे करि मोकों तुम पायो मनों इनकी मैं कौंनें चेराई । सूर श्याम बे दिन बिसराये जब बांधे ते ऊखल लाई ॥ १९ ॥ राग आसावरी ॥ यहांई रहौ तो बदौं कन्हाई । आपु गई जशुमतिहि सुनावन दै गई श्यामहि नंद दुहाई ॥ महरि मथति दधि सदन आपने इह अन्तर जुवती सब आई । चितै रही जुवतिन कों आवत कहा आवती भीर लगाई ॥ मैं जानति इनको हरि खिझाई तातें सब उरहन लै धाई । सूरदास रिस भरी ग्वालनी ऐसो ढीठ कियो सुतमाई ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ सुनहि महरि तेरो लाडिलो अति करत अचगरी । जमुन भरन जल हम गई तहां रोकत डगरी । सिर तैं नीर ढराय दै फोरी सब गगरी ॥ गिंडरी दई फटकारि के हरि करत है लंगरी ॥ नित प्रति ऐसेहि ढंग करै हमसों कहे धगरी । अब बस बास नही बने यह तुव व्रज नगरी ॥ आपु गयो चढि कदम कि चितवत रहै सगरी । सूर श्याम ऐसे सदा हमसों करै झगरी ॥ २१ ॥ राग रामकली ॥ सुत कों बरजि राखहु महरि । डहर चलनन देत काहुहिं फोरि डारत ठहरि ॥ श्यामके गुण कछु न जानति जाति हम सों गहरि । यहै लालच गाय दस लिये बसति है व्रज थहरि ॥ जमुन तट हरि देखि टाढे डरनि आवे वहरि । सूर श्यामहि नेकु बरजहु करत है अति चहरि ॥ ॥ २२ ॥ राग रामकली ॥ तुम सों कहति सकुचति महरि । श्याम के गुण नहीं जानति जाति हमसों गहरि ॥ नेकहूं नहिं सुनति श्रवणनि करति है हम चहरि । जल

भरन कोऊ नहीं पावत रोकि राखत डहरि ॥ अति अचगरी करत मोहन फटकि गुडरी दहरि । सूर प्रभु कों कहा सिखयो रिसनि जुवती झहरि ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा करों मोसों कहो तुमही । जो पाउं तौ तुमहिं दिखाऊं हा हा करि तबही ॥ तुमहू गुण जानति हौ हरि के ऊखल बांधे जबही । संटिया लै मारन जब लागी तब वरज्यो मोहि सबही ॥ लरकाई तें करत अचगरी में जाने गुण तबही । सूर श्याम के हाल करों सो देखोगी तुम अबही ॥ २४ ॥ राग सारंग ॥ मैं जानत हौं ढीठ कन्हैया । आवन धों घर देहु श्याम को जैसी करौं सजैया ॥ मोसों करत ढिटाई मोहन मैं वाकी हौं भैया ॥ औरन काहू को वह माने कछु सकुचत वल भैया । अब जो जाउं कहां तेहि पाउं कासों देइ धरैया ॥ सूर श्याम दिन दिन लंगर भयो दूरि करो लंगरैया ॥ २५ ॥ राग सूहौ ॥ जुवती बोधि सब घरह पठाई । यह अपराध मोह बकसोरी यहै कहत हौ मेरी माई ॥ इत तें चली घरनि सब गोपी उततें आवत कुंवर कन्हाई । बीचहि भेट भई जुवतिन हरि नयनन जोरत गये लजाई ॥ जाहु काहू महतारी टेरति बहुत बड़ाई करि हम आई । सूर श्याम मुख निरखि सिंहारी मैं कै हौं जननी समुझाई ॥ २६ ॥ राग नट ॥ सकुचित गये घरकों श्याम । द्वारही तें निरखि देखो जननि लागी काम । यहै बानो कहत मुख तें कहांगयो कन्हाई ॥ आपु ठाढे जननि पाछें सुनत हैं चितलाई ॥ जल भरन जुवती न पावे घाट रोकत जाय । सूर सबकी फोरि गागरि श्याम गयो पराय ॥ २७ ॥ राग नट ॥ जशुमति यह कहि कें रिस पावति । रोहिन करति रसोई भीतर कहिकहि तिनहि सुनावति ॥ गारी देत बहू बेटी को वे धाईं ह्यां आवति । हा हा करति सबनि सों मेंही कैसे हुं खूंट छिड़ावति ॥ जाति पांति सों कहा अचगरी यहि कहि सुतहि धरावति ॥ सूर श्याम कों सिखवति हारी मारेहु लाज न आवति ॥ २८ ॥ सारंग ॥ तू मोही कों मार न जानत । उनके चरित कहा कोऊ जाने उनहि कही तू मानति ॥ कदम तीरतें मोहि बुलायो गढिगढि बात बनावति । मटकत गिरि गागरि सिरतें अब ऐसी बुद्धहि ठानति ॥ फिरि चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नहि तोकों जानति । सूर सुतहि देखतही रिसगई मुख चूंवति उर आनति ॥ २९ ॥ राग सारंग ॥ झूठेहि सुतहि लगावति खोरि । मैं जानति उनके ढंगनि को बातें मिलवति जोरि ॥ वे जोवन मद सब मदमाती कहां मेरो तनक कन्हाई ॥ आपुहि फोरि गागरी सिरतें उरहन लीन्हें आई । तू उनके ढिंग जात कतहि है वे पापिनि सब नारि ॥ सूर श्याम तू कह्यो मानि अब हैं सब ढीठ गंवारि ॥ ३० ॥ राग अडानो ॥ मोहन बाल गोबिंदा माई मेरो कहा जाने चोरि । उरहन लै जुवती सब आवति झूठी बतियां जोरि । कोऊ कहति गिंडरी मेरी खोनी कोऊ कहति गगरी गये फोरि । कोऊ चोली हार बतावति कान्हहुतें ऐ भोरि । अब आवै जो उरहन लैकें तौ पठऊं मुह मोरि । सूर कहां मेरो तनक कन्हैया आपुन जोबन जोरि ॥ ३१ ॥ राग कान्हरो ॥ ब्रज घरघर यह बात चलावत । जशुमति को सुत करत अचगरी जमुना जल कोउ भरन न पावत । श्याम बरन लटबर बपु काछे मुरली राग मलार बजावत ॥ कुंडल छबि रबि किरिनिहुतें दुति मुकुट इन्द्र धनु तेसो भावत ।

मानत काहु न करत अचगरी गागरि धरि जल भुइं ढरकावत । सूर श्याम को मात पिता दोउ ऐसो ढंग अपु नहीं पढावत ॥ ३२ ॥ राग गौरी ॥ करत अचगरी नंद महर को । सखा लिये जमुना तट बैठो निबहत नहि सब लोग डगर को । कोउ खीजो कोऊ किनि बरजो जुबतिन के मन ध्यान । मन क्रम वचन श्याम बरत है और न दूजो ज्ञान । सुरतरु काम धेनु सुख त्याग्यो ब्रज जुबतिन के हेत । सूर भजे जेहि भाव कृष्ण को ताको सोइ फल देत ॥ ३३ ॥ राग गौरी ॥ जमुना जल कोउ भरन नपावै । आपुन बैठ्यो कदम डार चढि गारी दैदै सबनि बुलावै । काहुकी गगरी गहिकै फोरत काहू सिरतें नीर ढरावै । काहू सों करि प्रीति मिलतु है नयन सैन दै चितहि चुरावै । बरबसही अंकवार भरत धरि काहू सों अपनो मन लावै । सूर श्याम अति करत अचगरी कैसेंहु काहू हाथ नआवै ॥ ३४ ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रज ग्वेंडे कोउ चलन न पावत । ग्वाल सखा सब लीन्हें डोलत दैदै हांक जहां तहां धावत । काहूकी गिंडरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत । काहूको गारी दै भाजत काहूको उठि अंक मिलावत । काहू नहि मानत ब्रज भीतर नंद महरको कुंवर कहावत । सूर श्याम नटबर बपु काछे जमुना के तट मुरलि बजावत ॥ ३५ ॥ राग टोडी ॥ गोकुल के ग्वेंडे एक सांवरो सो ढोटा माई आंखिन के पैडे पैठि जीके पैडें परयो है । कलन परति छन ग्रह भयो सम बन तन मन धन प्राण सकल सुख हरयो है । भवन न भावै माई अंगन न रह्यो जाय करौ हाय हाय देखौ जैसे हाल करयो है । सूर दास प्रभु नीके गावत मधुर सुर मानहु मुरली मैं पीयूष रस भरयो है ॥ ३६ ॥ राग गौरी ॥ राधा सखिन लई बोलाय । चलहु जमुना जलहि जैये चली सब सुख पाय । सबनि मिलि एक कलस लीन्हों तुरत पहुंची जाय । तहां देख्यो श्याम सुंदर कुंवरि मन हरषाय । नंद नंदन देखि रीझै चितै रहे चित लाय । सूर प्रभुकी प्रिया राधा भरति जल मुसुकाय ॥ ३७ ॥ राग गौरी ॥ घरहि चली जमुना जल भरिकै । सखिन बीच नागरी बिराजति भई प्रीति उर हरिकै । मंदमंद गति चलत अधिक छबि अंचल रह्यो फहरिकै । मोहन को मोहनी लगाई संगहि चले डगरिकै । बेनीकी छबि कहत न आवै रही नितंब निहरिकै । सूर श्याम प्यारी के बस भए रोम रोम रस भरिकै ॥ ३८ ॥ राग जैतश्री ॥ गागरि नागरि लिये पनघटतें चलि आवै ॥ ग्रीवाडोलत लोचन लोलत हरिके चित हि चुरावै । ठटुकति चलै मटकि मुह मोरै बंकट भौंह चलावै । मनहु काम सैना अंग सोभा अंचल धुज फहरावै । गति गयंदकुच कुंभ किंकिनी मनहु घंट झहनावै । मोतिन हार जलाजल मानो खुभी नदत झलकावै । मानहु चंद महावत मुखको अंकुस कर बेसरिको लावै । रोमावली संडि तिरनी लौ नाभि सरोवर आवै । पग जे हरि जंजीरनि जकरयो यह उपमा कछू पावै ॥ घट जल छलकि कपोलनिकेकी मानहु मदहि चुवावै । बेनी डुलति दुहुनि तब बिच मानो पूंछ हलावै । गज सिर दार सूर को स्वामी देखि देखि सुख पावै ॥ ३९ ॥ राग जैतश्री ॥ गागरि नागरि जल भरि घर लीन्हें आवै । सखियन बीच भरयो घट सिर पर तापर नयन चलावै । डुलत ग्रीव खटकति

नक बेसरि मंदमंद गति आवै । भृकुटी धनुष कटाक्ष बान मनों पुनि पुनि हरि हिय गावै । जाको निरखि अनंग अनंगत ताहि अनंग चढावै । सूर श्याम प्यारी छबि निरखत आपुहि धन्य कहावै ॥ ४० ॥ राग जैतश्री ॥ सखियनि बीच नागरी आवै । छबि निरखत रीझे नंद नंदन प्यारी मनहि रिझावै । कबहुंक आगें कबहुंक पाछें नाना भाव बतावै । राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे वितहि चुरावै । आगें जाय कनक लकुटी लै पंथ संवारि बतावै । निरखत जहाँ छांह प्यारीको तहं लै छाह छुवावै । छबि निरखत तनु वारि आपनों नागरि जियहि जनावै । ओढि ओढनियां चलन देखावत एहि मिस निकटहि आवै । बारबार सिर पर कर धरिधरि अति अधीन ह्वै जावै । सूर श्याम ऐसे भावनि सो राधा मनहि रिझावै ॥ ४१ ॥ राग सारंग ॥ लग लागन नहि पावत श्याम । तब एक भाव कियो कछु ऐसो प्यारी तब उप जायो काम । मिसकरि निकट आय मुख हेरयो पीताँबर डारयो सिरवारि । यह छल करि मन हरयो कन्हाई काम विवस कीनो सुकुमारि । पुलक अंग अंगिया दरकानी उर आनंद अंचल फहरात । गागरि ताकि कांकरी मारे उचटि उचटि लागत प्रिय गात । मोहन मन मोह नी लगाई सखिन संग पहुंचो घर जाय । सूर दास प्रभु सों मन अटक्यो देह गेहकी सुधि विसराय ॥ ४२ ॥ राग नट ॥ ग्वालिनि चली जमुन बहोरि । ताहि सब मिलि कहति आवहु कछू कहति निहोरि । ज्वाब देतिन हमहि नागरि रही बदन निहोरि । ठगि रही मन कहा सोचति काहू लियो कछु चोरि । भुजा धरि करि रह्यो चलहि न आवै अबही खोरि । सूर प्रभुके चरित सखियनि कहति लोचन ढोरि ॥ ४३ ॥ राग मलार ॥ मेरी गैल न छाडे सांवरो मैं क्योंकरि भरि घट जांउरी एहि सकुचनि डरपति रहौ मोहि धरै न कोऊ नामरी । जित देखौ तित देखियेरी रसिया नंद कुमार ॥ इत उत नयन चुराय के मोहि पलकनि करतजो हाररी । लकुट लिये आगे चलेहो पंथ सवारत जाय । मोहि निहोरो लाय के यह फिरि चितवै मुसुकाइरी । जमुना जल भरि गागरी लेजब सिर चलो उचाय । सौं कंचुकि अंचरा उचै मेरो हियरा तकि ललचायरी । गागरि मारै कांकरी सो लागे मेरे गात । गैल माझ ठाढो रहे मोहि पूछै आवत जातरी । होंसकुचनि बोलो नही लोक लाजकी संक । मोतनछ्वै हरि चलै वह ताहि भरत है अंकरी ॥ निकट आय मुख निरखिके चितवै बहुरि निहारि । अब ढंग ओढी ओढनी पीतांबर मोपर वाररी ॥ जब कहुं लग लागै नहीं तब वाको ज्यों अकुलाइ । तब हठि मेरी छांह सों वह राखै छांह छुवारी ॥ कोजाने कितहोत हैरी घरन गुरजन सोर । मेरो ज्यों गांठी बंध्योवा पीतांबर की छोररी ॥ अबलों सकुच अटक रही अब प्रकट करों अनुराग । हिलि मिलि से संग खेलि हौं मानि आपनो भागरी ॥ घर घर ब्रजबासी सबै कोउ किन कहै पुकारि । गुप्त प्रीति परगट करों कुल कोकानि निवारिरी ॥ जब लगि मन मिल्यो नहीं नच्यो चोंपको नांच । सूर दास प्रभु मिलि रहै सब करौ मनोरथ सांचरी ॥ ४४ ॥ राग काफी ॥ मोहन विनु मनन रहे कहा करों माईरी । कोटि भाँति करि करि रही समुझाईरी ॥ लोक लाज कौन

काज मनमें नहीं आई । हृदयतें टरत नाहिन ऐसी मोहनी लगाई ॥ सुन्दर बर चिभंगी नव रंगी सुख दाई । सूरदास प्रभु विनमोसों रह्यो नेक न जाई ॥ ४५ ॥ राग सूहो ॥ नंदको नंदन सांवरो मेरो चित चोरे जाय । रूप अनूप दिखाय के बह औचक मिलयो आय ॥ मोर मुकुट श्रवण कुण्डल ओढनी फहराय । अधरनि पर मुरली धरे मधुर तान बजाय ॥ चंदन की खौरि किये काछनी बनाइ । सूरदास प्रभु बैठे जमुना तट कन्हाइ ॥ ४६ ॥ राग गौरी ॥ परी तबतें ठग सूरि-ठगौरी । देखो मैं जमुना तट बैठ्यौ ढोटा जशुमति कोरी ॥ अति सांवरो भरयो सो सांचे कीन्हे चंदन खोरी । मन मथ कोटि कोटि गहि वारों ओढे पीत पिछौरी ॥ दुलरी कंठ नयन रत नारे मो मन चितै हरयोरी । बिकट भृकुटि की वोर कोरतें मन मथ बान धरयोरी ॥ दमकत दसन कनक कुंडल मुख मुरली गावत गौरी । श्रवननि सुनत देह गति भूली भई विकल मति बौरी ॥ नहि कल परत बिना दरशनतें नयननि लागि गढोरी । सूर श्याम चित टरत न नेकहुं निसि दिन रहत लगौरी ॥ ४७ ॥ राग कल्यान ॥ जुवती एक जमुना जलको आई । निरखति अंग अंग प्रति शोभा रीझे कुंवर कन्हाई ॥ गोरे बदन चूनरी सारी अलकैं मुख बग राई । डारनि चारि चारि चुरो बिराजत कर कंकन झलकाई ॥ सहज शृंगार उठत जोबन तन बिधिसै हाथ बनाई । सूर श्याम आये ढिग आपुन घट भरि चलि झमकाई ॥ ४८ ॥ राग कल्यान ॥ ग्वारि घट सिर धरि चली झमकाई । श्याम अचानक लट गहि कहि अति कहां चली अतुराई ॥ मोहन करि चिय मुखकी अलकें यह उपमा अधिकाई । सांझ समैं सकुचत मानो पंकज बीच परे अलि समुदाई ॥ मनहु सुधा शशि राहु चुरावत धरयो ताहि कर वरि आई । कुच पर से अंकम भरि लीनी दुहुमन हरष वढाई । सूर श्याम मनो अमृत घटनिको देखत है कर लाई ॥ ४९ ॥ राग कल्यान ॥ छांडि देहु मेरी लट मोहन । कुच परसत पुनि पुनि सकुचत नहि कत आई तजि गोहन ॥ जुवती आनि देखि है कोऊ कहति बंक करि भोंहन । बार बार कहि बीरदोहाई तुम मानत नहि सोहन ॥ इतनेही को सोंह दिवावति मैं आयो मुख जोहन । सूर श्याम नागरि वस कीन्ही बिवस चली घर कोहन ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ चली भवन मन हरि हरि लीन्हो । पग द्वै जाति ठटुकि फिरि हेरति जिय यह कहति कहा हरि कीन्हो ॥ मारग भूलि गई जेहि आई आवत को नहि पावति चीन्हो । रिस करि खिझि खिझिके लट झटकति श्याम भुजनि छुट काय इन्हो ॥ प्रेम सिंधुमें मगन भई चिय हरिके रंग भई अति लीन्हो । सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवत नहि इत उतहि पतीन्हो ॥ ५१ ॥ राग गौरी ॥ घर गुर जनकी सुधि जब आइ । तब मारग सूझियो नयननि कछु जिय अपने चिय गई लजाई ॥ पहुंची आय सदन ज्यों त्यों करि नेक नहीं चित टरत कन्हाई । सखी संगकी बूझन लागी जमुना तट अति भेर लगाई ॥ औरें दसा भई कछु तेरी कहति नहीं हमसों समुझाय । कहा कहों कहत न बनि आवै सूर श्याम मोहनो लगाय ॥ ५२ ॥ राग सोरठ ॥ कैसें जलभरन मैं जाउं । गैल मेरी परयो सखोरी कान्ह जाको नाउं ॥ घरहितें निक

सत बनत नहि लोक लाज लजाउं । तन इहां मन जाय अटक्यो नंद नंदन ठाउं ॥ जौं रहौं घर बैठि कैतो रह्यो नाहिन जाय । सीख तैसी देहु तुमहीं करौं कहा उपाय ॥ जात वाहिर बनतना ही घर न नेक सोहाय । मोहनी मोहन लगाई कहति सखिन सुनाय ॥ लाज कानि मरजाद जियलों करति हौं यह सोच । जाहि बिन तन प्रान छांडै कौन बिधि यह पोच ॥ मनहि यह परतीत आनि दूरि करि हौं सोच । सूर प्रभु हिलि मिलि रहौंगी लाज डारौं मोच ॥ ५३ ॥ राग गौरी ॥ सखी वा जमुना के तट । हौं जल भरति अकेली पन घट गही श्याम मेरी लट ॥ लै गगरी सिर मारग डगरी उन पहिरे पीरे पट । देखत रूप अधिक रुचि उपजी का छबनि किंकिनि रट ॥ फूले एक ग्वालिनि के भेटत ज्यों रन जीते फिरै महा भट । सूर लह्यो गोपाल अलिंगन सुफल किये कंचन घट ॥ ५४ ॥ राग आसा वरी ॥ कहा कहौं सखि कहत बने नहि नंद नंदन मेरो मन जु हर्‌यो । मात पिता पति बंधु सकुच तजि मगन भई नहि सिंधु तर्‌यो ॥ अरुण अधर जुग नयन रुचिर सर मदन मुदित मन संग लर्‌यो । देह दशा कुल कानि लाज रज सहज सुभाव रह्यो सुधर्‌यो ॥ आनंद कंद चंद मुख निसि दिन अब लोकत यह अमल पर्‌यो । सूरदास प्रभुसों मेरी गति जनु लुब्धक करमोन चर्‌यो ॥ ५५ ॥ राग नट ॥ मेरो हरि नागरसों मन मान्यों । मन मोह्यो सुंदर वर नायक भली भई जग जान्यों ॥ बिसरी देह गेह सुधि बिसरी बिसरि गई कुलकी कान्यों । सूर आस पूरे या मनकी तब भावै भोजन पान्यों ॥ ५६ ॥ राग काफी ॥ मोहि श्रावरे सजनि मोहि गृह बन कछु न सोहाय । जमुन भरन जल मैं गई तहां श्याम मोहनी लाय ॥ ओढे पीरी पामरि हो पहिरे लालनि चोल । भौंहैं काट कटिलियां मोहि मोल लयो बिन मोल ॥ मोर मुकुट सिर राजय हो अधर धरे मुख बेंन । हरिकी मूरति माधुरिता तें लागि रहे दोउ नैंन ॥ मदन मूरति के बस भई अबभलो बुरो कहो कोइ । सूरदास प्रभु को मिलि करि मन एकै तनु दोइ ॥ ५७ ॥ राग रामकली ॥ मेरे जिय ऐसी आनि बनि बिना गोपाल और नहि जानो सुनि मोसों सजनि ॥ कहा काच संग्रह के कीन्हे डारि अमोल मनि । बिष सुमेर कछु काम न आवै अमृत एक कनि ॥ मन बच क्रम मोहि और न भावै अब मेरे श्याम धनि । सूरदास स्वामी के कारन तजी जाति आपनि ॥ ५८ ॥ राग गुर्जरी ॥ अब हठ करि धरि यह बानि । कहा कीजे सो नफा जिहिं होय जिय की हानि ॥ लोक लज्जा काच किरचा श्याम कंचन खानि । कौन लीजै कौन तजिये सखि तुमहि कहो जानि ॥ मोहितौ नहि और सूझत बिना मृदु मुसुकानि । रंग कापै होत न्यारे हरद चूनो शानि ॥ यहै करिहौं और तजिहौं परो ऐसो आनि । सूर प्रभु पति बर्त्त राख्यो मेटिके कुल कानि ॥ ५९ ॥ राग बिलावल ॥ भक्तनि के सुखदायक श्याम । स्त्री पुरुष नहीं कछु नाम ॥ संकटमें जिनि जहां पुकार्‌यो । तहां प्रकटि तिन को उद्धार्‌यो ॥ मुखभीतर जिनि सुमिरन कीन्हो । तिनको दरस तहां हरिदीन्हो ॥ दुख सुख में जे हरिको ध्यावै । तिनको नेकन हरि बिसरावै ॥ चितदै भजै कोनहूं भाउ । ताको तैसेइ विभुवन राउ ॥ क्रम मातुर गोपी हरि ध्यायो । मन बच क्रम हरिसों मन

लायो ॥ षटऋतु तप कीनों तन गारी । होहिं हमारे पति गिरि धारी ॥ अंतर जामी जानत सबको । प्रीति पुरातन साखी तबकी ॥ बसन हरे गोपिन सुख दीनों । सुख दै सबको दुख हरि लीनों ॥ जुवतिन के यह ध्यान सदाई । नेकुन अंतर होय कन्हाई ॥ घाट बाट जमुना तट रोकै । मारग चलत जहाँ तहां टोकै ॥ काहू की गागरि धरि फोरै काहूसों हंसि बदन सकोरै ॥ काहू को अंकम भरि भेटै । काम बिथा तरुणिन की मेटै ॥ ब्रह्माकीट आदि के स्वामी । प्रभुहै निर्लोभी निःकामी ॥ भाव बश्य संगहि संग डोलै । खेलै हंसै तिननिसों बोलै ॥ ब्रज जुवती नहिं नेक बिसारै । भवन काज चित हरिसों वारै ॥ गोरस लै निकरी ब्रज बाला । तहां तिनहिं देखे गोपाला ॥ अंग अंग सजि शृंगार बर कामिनि । चली मनहु जूथनि जुरि दामिनि ॥ कटि किंकिनि नूपुर बिछिया धुनि । मनहु मदन के गज घंटा सुनि ॥ जाति माट मटुकी सिर धरिकै । मुख मुख गान करति गुण हरिकै ॥ चन्द्र बदनि तन अति सुकुमारी । अपने मनसा कृष्ण पियारी ॥ देखि सबनि रीझे बनवारी । तब मनमें एक बुद्धि बिचारी ॥ अब दधिदान रचौं एक लीला । जुवतिन संग करौं एक क्रीला ॥ सूर श्याम संग सखनि बुलायो । यह लीला कहि सुख उपजायो ॥ ६० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ ह्यांते खंडिता को प्रसंग ॥ * ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ राग बिलावल ॥ नाना रंग उपजावत श्याम । कोऊ रीझति कोउ खीझति वाम ॥ काहूके निसि बसत बनाई । काहू सुख छै आवत जाई । बड़ नायक ह्वै बिलसत आप । जाको शिव ब्रह्मै नहि जाप ॥ ताको ब्रजनारी प्रति जानै । कोउ आदर कोऊ अप मानै ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुं रैनि सब संग बिहात । सुनहु सूर ऐसे नन्द तात ॥ १ ॥ राग बिलावल

अब जुवतिनसों प्रगटे श्याम । अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिन के धाम जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति विचार । आजु गये औरहि काहू के रिस पावति कहि बड़े लबार ॥ यह लीला हरिके मन भावति खण्डित बचन कहति सुख होत । सांझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ २ ॥ राग रामकली ॥ ठाढे नन्द द्वार गोपाल । बोलि लीन्हे देखि ललिता सैन दे तत काल ॥ हंसत गये हरि गेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिको लाय उर भरि चापि कठिन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइहैं हम जांम ॥ ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ ललिता कों सुख दैगये श्याम । आजु बसैंगे रैनि तुम्हारे प्राण पियारी हो तुम वाम ॥ यह कहिके अनतहि प्रभु धारे बहु नायक के भेद अपार । सांझि समैं आवन कहि आये सोंह बहुत करि नन्द कुमार ॥ वह बैठी मारग हरि जोवति एक एक पल बीतत एक जाम । सूर श्याम आवन की आसा सेज संवारति ब्याकुल काम ॥ ४ ॥ राग गौरी ॥ सांझहिते हरि पंथ निहारै । ललिता रुचि कर धाम आपने सुमन सुगंध निसेज सवारै ॥ कबहुंक होति बारने ठाढी कबहुंक गनति गगन के तारे । कबहुंक आय गली मग जोवति अजहुन आये श्याम पियारे ॥ वे बहु नायक अनत लुभाने और बाम के धाम सिधारे । सूरश्याम बिनु बिलपति बाला तमचुर जहां तहां शब्द पुकारे ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ ललिता तमचुर बोल सुन्यों । वे बहु नायक अनत लोभाने नहि आये जिय कहा गुन्यों ॥ बिन कारन दै आसगए प्रिय बार बार चिय सीस धुन्यों । सेज संवारि पंथ निसि जोवत अस्त आनि भयो चंद पुन्यों ॥ तब बैठी मन मारि आपुनो कछु रिस कछु मन सोच परयौ । सूर श्याम यातें नहि आये मात पिता को त्रास धरयौ ॥ ६ ॥ राग जैतश्री ॥ सोच परयो नागरि मन माहीं । कीकाहूके अनत लोभाने की पित मात त्रास मन माहीं वे निसि बसै महल सीलाके सुख सब रैनि गंवाई । उठे अकुलाने भोर भयो जान्यों तब नागरि सुधि आई ॥ सहज चले गोपी सों कहिके जिय सकुचे अति भारी । सूर श्याम ललिता गृह आये चितै रही मुख प्यारी ॥ ७ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितै रही मुख पियको । अंजन अधर कपोलनि बन्दन लाग्यो काहू चियको ॥ तुरत उठी दरपन कर लीन्हे देखौ बदन सुधारौ । अपनो मुख उठि प्रात देखिके तब तुम अनत सिधारौ ॥ काजर बन्दन अधर कपोलनि सकुचे देखि कन्हाई । सूर श्याम नागरि मुख जोवत बचन कह्यो नहि जाई ॥ ८ ॥

॥ सीला के गृहतें प्रातः काल ललिता के आये तब ललिता के बचन प्रभुसों ॥

राग आसावरी ॥ दर्पन लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छवि हेरो जू । मेरीसों हाहा करि पुनि पुनि उत काहे मुख फेरो जू ॥ सकुचत कहा बोलके सांचे मेरे गृह तौ आये जू । रैनि नही तौ अब जु छपा भई धनि जिनि स्वांग कराये जू ॥ मेरी कही बिलगु जिनि मानो मैं तुम करति बडाई जू । सूर श्याम सन मुख नहि चितवत रहे धरनि सिर

नाई जू ॥ ९ ॥ राग ललित ॥ क्यों मोहन दर्पन नहि देखो । क्यों धरनी पग नखनि करोवत क्यों मोतन नहि पेखो ॥ क्यों ठाढे बेठत क्यों नाही कहा परी हम चूक । पीतांबर गहि कह्यो बैठिये रहे कहा हठ मूक ॥ उघरि गयो उरतें उपरेंना नख छत बिच गुंन माल । क्रूर देखि लट पटी पाग पर जावक की छबि लाल ॥ १० राग भैरव ॥ ऐसो कहो रंगीले लाल । जावकसों कह पाग रंगाई रंगरेजिनी मिली कोउ बाल ॥ बन्दन रंग कपोलनि दीन्हे अधर अरुण भये श्याम रसाल ॥ जिनि तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनि धनि पिय धनि धनि वह बाल । माला कहा मिली बिन गुणकी उरछत देखि भई बेहाल । सूर श्याम छबि अद्भुत राजी यहै देखि मोको जंजाल ॥ ११ ॥ राग बिलावाल ॥ ज्याव नहीं पिय आवहीं क्यों कहा ठगानें । मैं तबहीं की बकति हौं कछु आजु भुलानें । हांनाहीं नहि कहत हौ मेरी सों काहे । आये क्यों चकृत भये मोकों रिस दाहे । कहां रहे कासों बन्यो तहांई पगु धारो । सूर श्याम गुण गावरे छूटै न बिसारो ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ काहे को कहि गये आय हैं काहे झूठी सों हैं खाये । ऐसे मैं जाने नहि तुमकों जे गुन करि तुम प्रकट देखाये । भली करी दरशन यह दीन्हों जनम जनम के ताप नसाये । तब चितए हरि नेक चिया तन तुमको हिरदे मांझ बसाये । सत्य कहत तोसों हौं भूल्यो इतनेहि सब अपराध क्षमाये । सूरदास सुंदरी सयानी हंसि लीन्हें पिय अंक मिलाये ॥ १३ ॥ राग बिलावल ॥ नयन कोर हरि हेरिके प्यारी बस कीन्हीं । भाव करयो अंखि आनको लखिता लखि लीन्हीं । तुरत गई रिस दूरि छूटै हंसि कंठ लगाये । भली करी मन भावत ऐसेहु मैं पाये । भवन गई गहि बांह लै निसि जागे जानें । अंग सिथिल निसि श्रम भयो मनहीं मन मानें । अंग सुगंध मरदन कियो तुरतहि नहवाये । अपने कर अंग पोछि के मन साध पुराये । चीर आभुषन अंग दै बैठे गिरि धारी । रुचि भोजन पियको दियो सूरज बलि हारी ॥ १४ ॥ राग कल्यान ॥ चर्चरी ॥ कियो मन काम नहि रही बाकी । प्रिया रस दूरि कै दियो रस पूरिकै अनंग बल दूरिकै गोप जाकी ॥ ध्रुव ॥ नंद सुत खाडिले प्रेमके चाडिले सोंह दै कहत हैं नारि आगें । तुम परम भावती प्राणहुतें खरी मुख नहीं कहत मैं तुमहि त्यागे । सुनहु धन आजु हो आय तुम्हरे बसों और चिय नहीं मो मनहि भावै । सूरप्रभु चतुर बर चतुर नागरिन के चतुरई बचन कहि मन चुरावै ॥ १५ ॥ राग भैरों ॥ यहै भाव सब जुबतिन सों । ऐसे बचन कहत सब आगें भूलि रहति मन मोहन सों । बिन देखे रिस भाव बढावत मिलत आय दे सोहनि सों । मुख देखत दुख रहत नहीं तन चितवत मुरि दोउ मोहनि सों । औ चिया अंग चिन्ह बिराजत रिस मनहीं मन छोहन सों । सूर श्याम सब गोप कुमारी टरत नहीं कहुं मोहन सों ॥ १६ ॥ राग आसावरी । श्याम बाम को सुख दै बोले रैनि तुम्हारे आवोंगो । मात पिता जिय त्रास धरत हौ तो आई सुख पावोंगो । तुम मिलबेकी साध भुजा भरि उरसों कुच परसावोंगो । नयन बिसाल भाल उर बैठे ते तुम हाथ बढावोंगो । तुवतन परसि काम दुख मेटों जीवन सुफल करावोंगो । सुनहु सूर अधरनि रस अचवों दुहुं मन तृषा बुझा

बोंगो ॥ १७ ॥ राग गुर्जरी ॥ सुनि सुनि बचन नारि मुसुकानी । गई सदन अति ह्वै उतावली आनंद सहित लजानी । फूली फिरति कहति नहि काहू मीन मिल्यो जनु पानी । बार बार श्याम रति रसकी कही प्रकट करि बानी । बासर कलप समान न बीतत कैसेहु रैनि तुलानो । सूर देखि गति मतमतंगको अवधि जानि हरषानी ॥ १८ ॥ राग कल्यान ॥ चर्चरी ॥ राधिका गृह हरि देह बासो । और त्रिय घर घरनि तनु प्रकासो । ब्रह्म पूरन द्वितीय नहीं कोऊ । राधिका सबै हरि सबै कोऊ ॥ दीप सों दीप जैसें उजारो । तैसहि ब्रह्म घरघर बिहारो । खंडिता बचन हितसों उपाई ॥ कबहुं कहुं जात कहुं नहि कन्हाई । जनम को सफल हरि यहै पावै । नारि रस बचन श्रवणनि सुनावै । सूर प्रभु अनतहीं गवन कीन्हों । तहां गये नहीं जहां बचन दीन्हों ॥ १९ ॥ राग टोड़ी ॥ श्याम गये सुख माके धामा । देखत हरष भई मन बामा । अतुर मंदिर गए समाई । प्यारी प्रेम उठी झहराई । श्याम भामनी परम उदारा । कोक कला रस करत बिचारा । बोलत पिय नहि आवति पासा । गदगद बानी कहति उदासा । धाय जाय पति अंग मिलाय । हाहा कहिकहि लेत बुलाय । अति आतुर पति के गति कामा ॥ कहा प्रकृति पाई यह बामा । बांह गहत कीन्हों धनि मान । तब हरि कीन्हों एक सयान । तब प्यारी चरणनि सिर धारी । काम बिथा जान्यों सुकुमारी । अलप हंसी मुख रैनि लजानी ॥ सूर प्रभू त्रिय मनकी जानी ॥ २० ॥ रागके दागो ॥ चर्चरी ॥ श्याम कर भामिनी मुख सवारयो । बसन तन दूरि करि सबल भुज अंक भरि काम तिस बांम पर तिदरि धारयो । अधर दसन निभरे कठिन कुच उर लरे परे सुख सेज मन एक दोऊ । मनों कुंभिलाय रहे मैनसे मल्ल दोउकोकपर बोल घटि नहीं कोऊ । अंग त्रिय बल भये नयन नयननि नये लज्जित रति अंत त्रिय कंत भारी । सूर धनि धन्य सुखमा नारि बस श्याम जाम जुग भई पतितें नन्यारी ॥ २१ ॥ राग बिहागरो ॥ चन्द्रावली श्याम मग जोवति ॥ कबहुं सेज कर झारि सवारति कबहुं मलय रस भोवति । कबहुं नयन अलसात जानि के जल लैलै पुनि धोवति । कबहुं भवन कबहूं आंगन ह्वै ऐसे रैनि बिगोवति ॥ कबहुं क बिहरत रति अति व्याकुल आकुलाता मन मोअति । सूर श्याम बहु रवनि रवन पिय यह कहि तब गुन तो अति ॥ २२ ॥ राग ललित ॥ ऐसेहि ऐसे रैनि बिहानी ॥ चन्द मलीन चिरैया बोली सुनी काक की बानी । बेलुध्ये अनतहि काहू के मनकी आस भुलानी । कपटी कुटिल कूर कहा जाने श्याम नाम जिय आनो ॥ कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्याम रंग है पानी । श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सो बानी ॥ २३ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ बाम संग श्याम चय जाम जागे ॥ कोक बिद्या निपुन सकल गुण में सगुन सुरत संग्राम जुरि नहीं भागे । अंग आलस भरे नयन निन्द्रा ढरे नेक शेज्या परे निसा बीती । सूर प्रभू नंद सुत चखे अकुलाय के गये ताधाम रस काम जीती ॥ २४ ॥ राग बिभास ॥ चन्द्रावलि धाम श्याम भोर भये आये ॥ अति रिस करि रही बांम रैनि जागि चारि जाम देखै जो

द्वार कान्ह ठाढे सुख दाये । मंदिरतें रही निहारि मनहीं मन देति गारि ऐसे कपटी कठोर आये निसि बीते । रिस नहीं सकी सम्हारि बैठि चढी द्वार वारि ठाढे गिरि धारि निरखि छबि नख सिख हीतें । बिन गुणवनि हृदय माल ताबिच नख छत रसाल लोचन दोउ दरसि लाल जैसी रुचि बाढी । जावक रंग लग्यो भाल चन्दन भुज पर बिसाल पीक पलक अधर झलक बाम प्रीत गाढी । क्यों आये कोन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषन सिंगारि निरवत हौ जाने । ताहीके जाहु श्याम जाके निसि बसे धाम मेरे घर कहा काम सूर दास गाने ॥ २५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ इति श्री राग सागरो द्भव सूर सागर खंडिता प्रसंग संपूर्ण ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ अथ रागसागरोद्भव दानलीला के कीर्त्तन ॥

॥ श्री गोपीजनवल्लभायनमः ॥

॥ राग बिलावल ॥ सुनत हंसी सुख होय दान दही को लग्यो ॥ ध्रुव ॥ प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब सखनि बुलायो। तेइ तेइ लीन्हे साथ मिलै जे प्रकृति नवायो ॥ डगरि गये अन जानही गह्यो जाय बन घाट । पेंड पेंड तरुके लगे हेा करे ढगनि कौ ठाट ॥ इतहि ग्वाल बन जुरी चली सब सखीं सहेली । सिरनि लिये दधि दूध सबै जोवन अलबेली ॥ हंसति परस्पर आपु मैं चली जाहि जिय मोर । जबहि आनि घातहि परी तब छेकि लिये चहुंओर ॥ देखि अचानक भीरि भई सब चकृत किशोरी । गई उतहिको सुरकि दई घूघट मुख मोरी ॥ संकित ह्वै ठाढी भई हाथ पांव नहि डोल । मनहु चित्र कीसी लिखी हेा मुखहि न आवै बोले ॥ तब उठ बोल ग्वाल डरौं जिनि कान्ह दुहाई। ठगतस्कर कोउ नाहि दान जदुपति सुखदाई ॥ आवत जात नितही रहौ श्याम राज भै नांहि । जो कछु लागै दान को तुम घाटि देहु तेहि माहि । तब हंसि बोलीं ग्वालि नाम जब कान्ह सुनायो । चोरी भरयो न पेट आनि अब दान लगायो ॥ तब उलटी पलटो फबी जब शिशु रहे कन्हाय। अब कछु वह धोखे करौ तौ छिनक माहि पति जाय ॥ तब उठि बोले कान्ह रही तुम पोचि सदाई । महर महरि मुख पाय संक तजि करहु ढिठाई ॥ अब वह धोखो मेटि कें छांडि देहु अभिमान । करि लेखो अब दान को हेा दियेहि पाय हेा जान ॥ तब हंसि बोली ग्वालि डरनि तुम तजो ढिठाय । बहुतै नंदनि काज भयो तुव तप अधिकाय ॥ कालिहिं घर घर डोलते खाते दह्यो चुराय । रातिहि कछु सपनों भयो हेा प्रात भई ठकुराय ॥ भली कही नहि ग्वालि बात को भेद न पायो । जोवन के मद मत्त बात बोलति अधिकायो ॥ तुमसे प्रजा बसायकें राखे हैं यहि पाय ।

ते तुम हम सरवर भई अब मिलहु छांडि चतुराय ॥ तब झुकि बोली ग्वालि बात किनि कहौ सम्हारे । ऐसो को बहि गयो प्रजा होय बसे तुम्हारे ॥ हमहु तुमहु नृप कंसके बसे बास एक ठांउ । देखौ धौं घर जाय कें हम तजे तुम्हारे गांउ ॥ गांव हमारे छांडि जाय बसिहैं। केहि करे । तीन लोक में कौन जो अब नाहिन बस मेरे ॥ कंसहि को गन ती गनै जाकों हमहि कहाहु। दिये दान ये बाचि है। हो नातरु नहीं निबाहु ॥ छोटे मुह बड़ी बातें कहौ किनि आप सम्हारे । तीन लोक अरु कंस कबहि बस भये तुम्हारे ॥ यह बानी तिनसों कहौ जो कोउ होय अजान। जैसेहो जोसबरे हो हम जानति परिमान ॥ लेखो जैहो भूलि कछूकी बात चलावत । सुनी न कबहूं बात यहै मग आवत जावत ॥ मूठीमें लीजै दान के दाम सबै परखाय । थैली मांगि पठाययें हो पीतांबर फटि जाय ॥ काहे कों सतराति बात मैं सांची भाषत । झूठी तुम सब ग्वारि बात मेरी गहि नाखत ॥ कह्यो मानि लेखो करौ देहु हमारो दान । सोंह बबा मोहि नंदकी हो ऐसे देंउन जान ॥ नंद दुहाई देत कहा तुम कंस दुहाई । काहे कों अठिलात कान्ह छांड़ौ लरिकाई ॥ पहिलो पर पाटी चलोनई चले क्यों आज । नृपति जानि जो पावई हो पुनिपै होय अकाज लरिका मोसों कहति नहीं देखी लरिकाई । पै पीवत संहारि पूतना स्वर्ग पठाई ॥ अघा बका शकटा तृणा केशी मुख कर नाय । गिरि गोवर्द्धन कर धरयो हो यह मेरी लरिकाय ॥ सबै भली तुम करी हमहि अब कहत कहा है । हम कों होति अवार दही लै जांहि तहांहै ॥ हंसी पलक है चारि की बीतन लागे जाम । बनमें राखी रोकि के हो नारि पराई श्याम ॥ हांसी करति हों तुमहि भली गई बुद्धि ब्रज नारी । तुम हम कां हम तुमहि दई बिन काजहि गारी ॥ बात कहौ कछु जानि कै हथा बढावति सोर । सदा जाहु चोरटि भई हो आजु परी फगभोर ॥ मांगि लेहु दधि देहि दानकों नाम मिटावहु। ऐसे देहि न नेक कहा हमकों डरपावहु ॥ हमहि कहत है चोरटी आपु भये अब साहु । चोरी करत बड़े भये ही मही छाछ लै खाहु ॥ दही लेत हो छीनि दान अंगनि को लै हो । लेहो रूप निदान दान जोवनपै कैं हो ॥ तुम सब कंचन भार लै मेरे मारग जाहु । मही दही देखरावहु हो कैसे होत निबाहु ॥ जाहु भलेहो कां हदानअंग अंग को मांगत । हमरो जोवन रूप आंखिइनके गड़ि लागत ॥ सबै चली झहराय के मटुकी सीस उठाय । रिस करि कसि कटि पीत पट हो ग्वारि गहीं हरि धाय ॥ मटुकी लई छिडाय हार चोली बंद तोरयो । भुज धरि भरि अंकवारि बांह गहिके झक झोरयो ॥ मांखन दधि लिये छीनिके कह्यो ग्वाल सब खाहु । मुख झगरति आनंद उरहि हो फिरवत हैं घर जाहु ॥ देखो हरिके काम हार चोली बन्द तोरी । हमको भरि अंकवारि बांह धरिके झक झोरी ॥ जशुमतिसों कहिये चलो अब प्रकटी तरुणाय । दधि मांखन सब छीनि लियेहो ग्वालनि दिये खवाय ॥ जाय कहो जू भली बात मैया के आगे । तुमको जोवन रूप दान दैं हों नहि मागे ॥ तुमजो कहौ जायके जननी नहि पतिआय । सूर सुनहुरी ग्वालिनी हो आवहुगी पछिताय ॥ १ ॥

॥ राग काफी ॥ ऐसो दान न मांगिये जेतो हमपें दियो न जाय हो । बनमें पाय

अकेली जुवतिन मारग रोकत धायहो ॥ बाट घाट औघट जमुनातट बातें कहत बनाय। कोऊ ऐसो दान लेतुहै कौने सिखै पठाय ॥ हम जानति तुम यों नहि रैहौ रैहौ गारी खाय । जोरस चाहो सो रस नाहीं गोरस पियहु अघाय ॥ औरनिसों लै लीजै गिरिधर तब हम देंहि बुलाय । सूर श्याम कत करत अचगरी हमसों कुंवर कन्हाय ॥ २ ॥ ॥ राग नट ॥ दानहुं लेहु जान काहेको कान्ह देतहो गारी । जो कोउ कह्यो करे हठि याही मारग आवै दैमारी ॥ भली करी दधि मांखन खायो चोली हार तोरि डारी ॥ जोबन दान कहूं कोउ मांगत यह सुनिकै अति लाजनिमारी ॥ होति अबार देहु घर जान हो पैयां लाग डरति हैं भारी ॥ हमहि तुमहि कैसो है झगरो सूर श्याम हम ग्वारि गंवारी ॥ ३ ॥ राग भैरों ॥ भोरहीं ते कान्ह करत मोसों झगरो। औरनि छांडि परेहठ हमसों नितप्रति कलह करत गहि डगरो ॥ बिन बेचनो तनक नहि दैहों ऐसेहि छीनि लेहु किनि सगरो । सबकोउ जात मधुपुरी बेचन कौं नदियो दिखरावहु कगरो ॥ मुख चूंबति हंसि कंठ लगावति आपुहि कहहिन लाल अचगरो । सूर सनेह ग्वारि मन अटक्यो छाडिहु दियो परत नहि पगरो ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ दान लेहों सब अंगनिको । अति मद गलित ताल फलतें गुर इन जुग उरज उतंगनि को ॥ खंजन कंज मीन मृग सावक भंवर जवर भुव भंगनि को । कुंद कली बंधूक बिम्ब फल बरता टंक तरंगनि को ॥ कोकिल कीर कपोत किशलता हाटक हंस फलंगनि को । सूरदास प्रभु हंसि बसि कीन्हो नायक कोटि अनंगनि को ॥ ५ ॥ राग काफी ॥ कान्ह भले हो भले हो । अंग दान हमसों तुम मांगत उलटी रीति चले हो ॥ कौन दोष कियो मांखन छीनो काहे को तुम औरहि भाव मिले हो । दान लेहु कछु और कहत हो कोनहि प्रकृति मिले हो । हार तोरयो चीर फारयो बोलत छिले हो ॥ ऐसे ढाल हमारे कीने जाति हुती दधि खेहो ॥ हमहैं तुम्हरे गांवकी कछु यातें गहिगहि लेहो । सूरदास प्रभु और भये अब तुम न होहु पहिचेहो ॥ ६ ॥ ॥ राग पूर्वी ॥ तू मोसों दान मांगि किनि लेहो नंदके लाला । ऐसी बातनि झगरो ठानति हो मारग रोको नहि बाला ॥ नन्द महर की कानि करत हौं छांडि देहु ऐसे ख्याला । मेरो कह्यो मान मन मोहन नीकी नहीं यह चाला ॥ सूरदास प्रभु मन हरि लीनों नेक हंसत भई ग्वालि बेहाला ॥ ७ ॥ राग पूर्वी ॥ जोबन दान लेहुगे तुमसों । जाके बल तुम बदति न काहुहि कहा दुरावति हमसों ॥ ऐसे धन तुम लिये फिरति हो दान देति सत रति । अतिहि गर्बतें कह्यो न मोसों नित प्रति आवति जाति ॥ कंचन कलस महा रस भारे हमहुन तनक चखावहु । सूर सुनहु कत भार मरतिहो हमहिन मोल दिवावहु ॥ ८ ॥ राग कान्हरो ॥ कहा कहत तू नन्द ढुटोना । सखी सुनहुरी बातें जैसी करत अतिहि अच भौना ॥ बदन सुकोरत भौंह मरोरत नयननि में कछु टोना । जोबन दान कहा धों मांगत भई कहूं नहि हौना॥ हम कहें बात सुनहु मन मोहन कालि रहे तुम छौना । सूर श्याम गारी कहा दीजै यह बुधि हौ घर खोना ॥ ९ ॥ राग पूर्वी ॥ ऐसे जिनि बोलो नंद के लाला । छांडि देहु अंचरा मेरो मोको जानत औरसि बाला ॥ बार बार मैं तुमहि कहति हौ परिहै बहुरि

जंजाला । जोबन रूप देखि ललचाने अबहींतें ये ख्याला ॥ तरुनाई तन आवन दीजै कत जिय होत बिहाला । सूर श्याम उरतें कर टारहु टूटेगी मोतिनकी माला ॥ १० ॥ राग सुघराई ॥ कहा गति प्रकृत परी हो कान्ह तुम्हारे धरत कहा कत राखत घेरे । अबलों नहि यह बात आजुकी बनमें श्याम जुवति सब नेरे । सकुचति हैं घर घर घेरा को नेक लाज नहितेरे । झक झोरत बहियां अंकम दे कुच परसत हो मेरे ॥ अतिहि अबेर भई घर छाडे चितै हंसत मुखतन हरि हेरे । सूरदास प्रभु झुकत कहा हो चेरी हैं काहू केरे ॥ ११ ॥ राग टोड़ी ॥ कहा कहत तुमसों मैं ग्वारिनि । दान देहु घर जाहु चली सब अति कत होति गवारिनि ॥ कबहूबात नहीं घर खेवत कबहु उठत दै गारिनि । लीन्हे फिरति रूप चिभुवन को ये नोखी बनि जारिनि ॥ पेला करति देत नहि नीके तुम हो बड़ी बंजारिनि । सूरदास ऐसो गथ जाके ताके बुद्धि पसारिनि ॥ १२ ॥ राग पूरिया कान्हरो ॥ कान्ह अब नागरयो है ठानो । मांगत दान दहीको अबलों ले कछु औरे ठानी ॥ औरनिसों तुम कहा लह्यो है सो सब हमहि देखावहु आनी । मांगतहो दधि सो हम देहें कहा कहत यह बानी ॥ छांडि देहु अंचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पहि चानी । सूर श्याम तुम रति पति नागर नागरि अतिहि सयानी ॥ १३ ॥ राग कान्हरो ॥ लेहां दान अंग अंग को । गोरे भाल लालसेंदुर छवि मुक्ताबर सिर सुभग मंगको नक बेसरि खुटिला तरि बनको गर हमेल कुच जुग उतंग को ॥ कंठश्री दुलरी तिलरी उर मानिक मोती हार अति रंग को । बहुनग लगे जराउकि अंगिया भुज बाजूबन्द बहुटनि कों । दान न लैहौ तरुनी रीझत मन कहा कछु अङ्ग अनङ्गनि को ॥ जे हरि प्रग जकरयो गाढे मनो मन्द मन्द गति यह मतङ्ग को । जोबन रूप अङ्ग पाटम्बर सुनऊ सूर सब यह प्रसङ्ग को ॥ १४ ॥ राग टोड़ी ॥ अरी यह ढीठ कान्हर बोलि न जाने बर बस झगरो ठाने । जोइ भावत सोई कहि डारत ऐसो निधरक नहिं कहुं देख्यो रूप जोवन अनुमाने ॥ अङ्ग अङ्ग के दान लेत नहिं घर के को पहिचाने । हम दधि बेचन जाति हैं मथुरा मारग रोकि रहत गहि अंचल कॅस कि आनन साने ॥ ऐसी बात सम्हारि कहो हरि हम तुमकों पहिचाने । सूर श्याम जो हमसों मांगत सो पैहौं कछु और चियनि पै यह बातें गढ़ि बाने ॥ १५ ॥ राग मलार ॥ पीत बसन दुहुं करनौ लासी ताहि कामरी लकुटि भूलि गई । गोकुल के गायन को चुरायबो छांड़ि दीन्हों नव बंधूनि संग नवल नेह आयो परम बिसासी । लकुटिया भूलि गई गोरस चुराय खाय बदन दुराय राखे मन न धरत वृन्दावन को बासो ॥ सूर श्याम तोहि घर घर सब जानें यहां को है तिहारो दासो ॥ १६ ॥ राग मलार ॥ नन्द महर के सुवन करत हो अचगरी । वे बातें भूलि गए बन बन धेनु चरावत फिरत निशि बासर धावत वैनु बजावत दानी भये बाहिर डगरी ॥ बातें भूलि गईं बनमें पराई नारि रोकि राखी बनचारि जानत नहि देतहो कौन ऐसी लंगरी ॥ मांगत जोबन दान भले हौ जू भले कान्ह मानत न कंस आन को बसि है ब्रजनगरी ॥ कबहु गहत दधि मटुकी अचानक कबहूं गहत हौ अचानक गगरी । सूर श्याम जहां तहां खिझावत जो मन भावत दूरि करौ लंगराई सगरी ॥ १७ ॥ राग पूर्वी ॥ दधि मटुकी

हरि छीनि लई । हार तोरि चोली बन्द तोरे जोबन के बल ढीठ भई ॥ ज्योंहीं ज्यों हम रूखे बोलेंत्यों त्यों अति सतराय गई । बाद करति अबही रीबङ्गी बार बार कहि दई ॥ मेरो कह्यो न मानति सूधे तुमरे मनकी जान लई । सूर सुनङ्ग मैं कहत अजहूं लों प्रीति करौ जो भई सोभई ॥ १८ ॥ रागपूर्वी ॥ तुम कबसों भये हौ जू दानि दानि दानी । मटुकी फोरि हार गहि तोरयो इन बातनि पहचानी ॥ नन्द महर की कानि करत हौं नतु करती महिमानी । भूलि गई सुधि तादिन की जब बांधे जशुदा रानी ॥ अबलौं सही तुम्हारी ढीठौ तुम यह कहत डरानी । सूर श्याम कछु कहत न बनि ह रूप पावे कछु जानी ॥ ॥ १९ ॥ राग काफी ॥ कन्हैया हार हमारो देङ्ग । दधि लवनी घृत जो कछु चाहौ हो तुम ऐसोहि लेङ्ग ॥ कहा करौं दधि दूध तुम्हारो मोसों नाही काम । जोबन रूप दुराय धरयो है ताहि को लेत न नाम ॥ नीके मन ह्वै मांगत तुमसों बैर नहीं उर नाखति । सूर सुनहु री ग्वारिअयानी अन्तर हमसों राखति ॥ २० ॥ राग गौरी ॥ हमकों लाज न तुमहि कन्हाई । जो हम यह मारग सब आईं तौ तुम हमसों करत ढिठाई ॥ हा हा करति प्राय तुम लागति रोती मटुकी देङ्ग मगाई । काको बदन प्रात ही देख्यो घरतें हम छीकत ङ्ग न आई । उतहि जातिही सखो सहेली मैंही सबको इतिहि फिराई ॥ सूर श्याम अब भई हमहि सब लागैं तुमहि भलाई ॥ २१ ॥ राग बिलावल ॥ मैं भरुहाये पालागति हौं । कनक कलश रस मोहि चखावहु जो मैं तुमसों मांगत हौं ॥ बोही टेंग तुम रहे कन्हाई सबै उठी झिझकारि । लेहु असीस सबनिके मुखतें कितहि दिवावत गारि ॥ नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहत नहि जानत । कैहें जाय जशोदा सौं प्रभु सूर अचगरी ठानत ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ हार तोरि बिथुराय दयो । मैया पै तुम कहन चली कत दधि माखन सब छीनि लयो ॥ रिसकरि धाय कंचुकी फारी अबतौ मेरो नाम भयो । कालि नहीं यह मारग ऐहौं ऐसे मोसों बैर ठयो । भली बात घर जाहु आजु तुम मागत जोबन दान नयो ॥ सूर दास मुखही रिस जुवति न उर उर अन्तर काम जयो ॥ २३ ॥ राग नट ॥ मोहि तोहि जानिबो नन्द नन्दन जब वृन्दावन तें गोकुल जैबो । सखिन कहत छीनि लै मेरो मटुकिया मुंह मोरिबो गारि देबो ॥ आय अधिकई सो लैबो एक गांव एकहि संग बसिये कैसेगो यह मगऐबो । कैसे हार तोरि मैं डारो बसति नहीं रिस करि खैबो ॥ जुवतिन को सुख देखि रहत है ललचाने के ऐबो । सूर श्याम दधि माखन लीन्हों हार न देहों करिहो बैर समझि कहेबो ॥ २४ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम हम अब चली जशुमति के आगे । तो बदियो हमकों अबहि तुमको धरि लागे ॥ एकएक करि बिथुराइ के मोतिन लर तोरयौ । हंसि भेटो कुच परसिकें गहि अंग झकोरयो ॥ चली महरि पै सुन्दरी उरहन लै हरि को । अबही बोलि बंधाइ ये लंगर यह लरिको ॥ गई नन्द जशु मति जहं भीतर । देखि महरि कों कहि उठी सुत कीन्हों इतर ॥ मारग चलन न पाइ ये री हरि के आगे । सूर दास प्रभु पास तें ब्रज तजि हम भागे ॥ २५ ॥ राग नट ॥ अपनेरी कुंवर कन्हाई सो माई तू कहिन । बहुत बचति ब्रज की कानि न हंसति कहा ह्यां तें जाहिन ॥ ऐसो भयो कुल कौन तिहारे जोबन दान लयो सोपै चाहिन । अति उतपात

कहां लों दीजै पीपर को बन दाहिन ॥ आनकी आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछु जानत नाहिन । काहू बिलोकिन बान सिखायो मैं अब पहिचानति ताहिन ॥ बूझि धौं देखि ह्यां कोन सयानी हरि मेरो मन चुरायो कापाहिन । जाइन मिलहु सूर के प्रभुकों अरुझे मनसो अरुझाइन ॥ २६ ॥ राग सुघराई ॥ जशुमति तेरो बारो अति है अचगरौ । दूध दही माखन लै ढोरि दियो मगरो ॥ भोर होत नित प्रति करैं अति झगरौ । ग्वाल बाल संग लये जाय गहै डगरौ ॥ नित ही नित आय घेरै हमारोई मगरौ । लियो दियो कछु सोउ डारि देहु कगरौ ॥ सूरदास प्रभु सब गुणनि में अगरौ । और कहूं जाय रहैं छांड़ि ब्रज बगरौ ॥ २७ ॥ राग सूहो ॥ मैं तुम्हरे मनकी सब जानी । आपुस में इत गति फिरति हौ दोष देति हौ श्यामको आनी ॥ मेरो हरि कहां दसहि बरष को तुम्हरो जोवन उमदानी । लाज नहीं आवति इनि लंगरिनि कैसें धौं कहि आवति बानी ॥ आपुहि हार तोरि चोली बन्द दरनख घात बनाय निसानी । कहं कान्हा की तनक अंगुरिया यह कहि बार बार पहिचानी । देखहु जाय और काहू कों हरि पर रहति सबय इडरानी । सूरदास प्रभु मेरोनान्हों तुम तरुणी डोलति अठिलानी ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ जब दधि बेचन जांहि तब मारग रोकि रहै । ग्वालिनि देखत धायरी अंचल आय गहै ॥ ध्रुव ॥ अहो नन्द की नागरि ऐसी क्यों दीजै । एक ठौर बसि बास सुनहु ऐसी नहि कीजै ॥ सुत बैसो तुमतौ खीझति हौ को रै है यहि मांउ । जैहैं ब्रज तजि अनतही हो बहुरि सुनो नहि नांउ ॥ कहा कहति डरपाय कछू मेरो घटि जैहै । तुम बांधति आकाश बात झूठी को सैहै ॥ जोवन दिन दे सबहि को तुम ऐसी इत राति । झूठे कान्हहि दोष दै हो तुमही ब्रज तजि जाति ॥ हम यह झूठो कहति औरसों बूझिन देखो हमसों मांगत दान करत कौडिन को लेखो ॥ मटुकी ढारे सीसतं मरकट लेइ भुलाय । महा ढीठ मानै नही हो सखनि सहित दधि खाय ॥ ग्वारिनि ढीठि गंवारि कान्ह मेरो अति भोरो । तेरे गोरस बहुत भयोरी मेरे थोरो ॥ बोलि न जानति बावरी तुम सब भई गंवारि । ऐसो कैसे हरि करै हो कहति बढावति रारि ॥ अहो जशोदा महरि पूत की सामी पीवै । हमहि कहा है होत बहुत दिन मोहन जीवै ॥ सुतके कर्म न जानई करै आपनी टेक । हम झूठी सब ग्वालिनी हो सांचे कान्हर एक ॥ कहा गैयनि की चली कहा अब चली जातिकी । चकृत भई मैं तुमहि कहति अन मिलन बात की ॥ जैसीकोसों कहति हौ सुनिके को पति आय । कौन प्रकृति तुमको परी हो मोहि कहो समुझाय ॥ अहो जशोदा बात कालि की सुनी कि नांही । बंसी बटकी छांहि गही हरि मेरी बांही ॥ हों सकुचनि बोली नही बहु सखियनि की भीर । गहि बहियां मोहि लैचले हो हंस सुता के तीर ॥ रीतैं मत्त गुवालि फिरति जोवन मद माती । गोरस बेचन हारि गर्व गूजरि इत राती ॥ अन मिलती बातें कहति सुनि है तेरो नाह । कहं मोहन कहं तू रहे हो कबहि गहीं तेरी बांह ॥ सांची सब मैं कहति झूठ नहि कहि हौं तुमसों ॥ सुत की राखति कांनि बिलग मानति हौ हमसों ॥ कुंजन में क्रीडा करे मनों वाहिको राज कांस सकुच नहि मानई हो रहत भयो सिर ताज ॥ ऐसी बातें कहति मनहु हरि बरष

तीस को । दुःसह सह्यो नहि जाय नेक डर करि रहि ईसको ॥ धनि धनि तुम यह कह तिहौ मोको आवति लाज । मांखन मांगत रोइके तेहि दोष देति बिनु काज ॥ हरि जानत है मंच जंच सीख्यो कहुं टोना । बनमें तरुण कन्हाइ घरहिं आवत ह्व छौना ॥ एक दिवस किन देखहु अन्तर रहौ छुपाय । दसको है धों तीसको हो नयननि देखहु जाय ॥ जाहु चली घर आपु नयन भरि हम देख्यो है । तीस बीस दस बरष एक येक दिन लेख्यो है ॥ डीठि लगावति कान्हको जरैं वरैं वे आंखि । धिंगरी धिंग चाचरि करे हो मोहि बुलावति सांखि ॥ धींग तुम्हारो पूत धींगरी हमको कीनी । सुतको हटकति नाहिं कोटि यह गारी दीनी ॥ महतारी सुत दोउ बने वे मग रोकत जाय । इनहि कहन दुख आइये तो सबको उठति रिसाय । कहा करो तुम बात कहूं की कहूं लगावति । तरुनिन यहै सोहाय मोहि कैसे यह भावति ॥ बहुत उरहना मोहि दियो अब ऐसो जिनि देहु । तुम तरुणी हरि तरुन नहीं हो मन अपने सुनि लेहु ॥ निरुत्तर भई ग्वालि बहुरि कहत न कछु आयो । मन उपजी कछु लाज गुप्त हरिसों चित लायो ॥ लीला ललित गोपाल की कहत सुनत सुख दाय । दान चरित सुख देखि के हो सूरदास बलि जाय ॥ २९ ॥ पुनः राग रामकली ॥ नन्द नन्दन एक बुद्धि उपाई । जे जे सखा प्रकृत के जाने ते सब लये बुलाई ॥ सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आये । जो कछु मंच हृदय हरि कीनो ग्वालनि प्रकट सुनाये ॥ ब्रज जुवती नित प्रति दधि बेचन बन बन मथुरा जाति । राधा बन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुनी एक भांति ॥ कालिन्द्री तट कालि प्रातही द्रुम चढि रहो लुकाई । गोरस लै जबही सब आवैं मारग रोकहु जाई ॥ भली बुद्धि यह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई । सूरदास प्रभु प्रीति हृदय की सब मन गये जनाई ॥ ३० ॥ राग रामकली ॥ प्रातहि उठी गोप कुमारि । परस्पर बोलत जहां तहं यह सुनी बनवारि ॥ प्रथमहीं उठि सखा आये नन्दके दरबार । आइये उठिके कन्हाई कह्यो बारं बार ॥ ग्वाल टेरन सुनत जशुदा कुंवरि दियो जगाय । रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाय ॥ मुकुट सिर कटि पीत अंबर मुरलि लीनी हाथ । सूर प्रभु कालिन्द्रि तट गये सखा लीन्हे साथ ॥ ३१ ॥ राग रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आये । मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहि बुलाये ॥ अब आवति ह्वैहैं दधि लीन्हे घर घरतें ब्रज नारि । हंसे सबै करतारी दै दै आनन्द कौतुक भारि ॥ प्रकृति प्रकृति कीजे सबै राखे संगी पांचहजार । और पठाय दिये सूरजप्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥ ॥ ३२ ॥ राग बिलावल ॥ हंसत सखनि यह कहत कन्हाई । जाय चढौ तुम सघन द्रुमनि पर जहं तहां रहौ छिपाई ॥ तब लौं बैठि रहौं मुख मूंदे जब जानहु सब आई । कूदि परौंगे द्रुमनि द्रुमनितें दै दै नन्द दुहाई ॥ चलत होहि जैसें जुवती गन डरनि जाहिं अकुलाई । बेनु विषान मुरलि धुनि कीजै शंख शब्द बहनाई ॥ नित प्रति जाति हमारेहि मारग यह कहियो समुझाई । सूर श्याम मांखन दधि दानी यह सुधि नाहिन पाई ॥ ३३ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम सखनि ऐसी समुझावत । ब्रज बनिता राधा ललितादिक इनको देखि बहुत सुख पावत ॥ कालि जात येहि मारग देखी तब यह बुद्धि उपाई । अब

आवति द्वै हैं बनि बनि सब मोहीं सों चित लाई ॥ तुम सों कछू दुरावत नांही कहतप्रगट करि बात । सुनहु सूर लोचन मेरे विनु राधा मुख अकुलात ॥ ३४ ॥ राग विलावल ॥ ब्रज जुवती मिलि करत बिचार । चलहु आजु प्रातहि दधि बेचन नित तुम करति अबार ॥ तुरत चलौ अबही फिरि आवैं गोरस बेचि सवार । मांखन दधि घृत साजति मटुकिन मथुरा जान विचार ॥ घट दस सहित शृंगार करतिहै अंग अंग निरखि संवारति । सूरदास प्रभु प्रीति सबनि के नेकुन हृदय बिसारति ॥ ३५ ॥ राग धनाश्री ॥ जुवती अंग शृंगार संवारति । बेनी गूंथ मांग मोतिन की सीस फूल सिर धारति ॥ गोरे भाल बिंदु सेंदुर पर टीका धरयो जराव । बदनचंद पर रबि पर तारा गन उदित सुभाव । सुभग श्रवण तरि वन मनि भूषित यह उपमां नहि पार ॥ मनहु काम बिबि फांद बनाये कारन नंद कुमार । नासा नथ मुकुता की शोभा रह्यो अधर तट जाय ॥ दाडिम कन शुक लेत बन्यो नहि कनक फंद रह्यो आय । दमकत दसन अरुन अधरनि तर चिबुक दिठौना भ्राजत ॥ दुलरी अरु तिलरी बंदन तर शुभग हमेल विराजत । कुच कंचुकी हार मोतिन को अरु भुजानि बिजैठा सोहत ॥ डारनि चुरी करनि फुंदनां वनि कंज आस अलि जोहत । क्षुद्र घंटिका कटि लहंगा रंग तनु तन सुख कों सारी ॥ सूर ग्वालि दधि बेचन निकसीं पग नूपुर धुनि भारी ॥ ३६ ॥ राग नट ॥ दधि बेचन चली ब्रज नारि । सीस धरि धरि माट मटुकी बढी शोभा भारि ॥ निकसि ब्रज के गई गोयंडे हरष भई सुकु मारि । चली गावति कृष्ण के गुन हृदै ध्यान बिचारि ॥ सब नि के मन जौं मिलै हरि को उन कहति उघारि । सूर प्रभु घट घट सु व्यापी जानि लई बन बारि ॥ ३७ ॥ राग जैतश्री ॥ हरि देखी जुवती आवति जब । सबनि कह्यो तुम जाय चढो दुम बैठि रहौ जहा तहां दुरि दुरि सब ॥ चढे सबे दुम डार ग्वाल गन सुनत श्याम मुख वानी । धोखे हि धोखे हि रहे सबै हम श्याम भली यह जानी ॥ नौसत साजि सिंगार जुवति सब दधिमटुको लियें आवत । सूर श्याम छवि देखत रीझे मन मन हरष बढ़ावत ॥ ३८ ॥ राग धनाश्री ॥ सखा अवर संग लिये कन्हाई । आपुन निकसि गये आगे कों मारग रोक्यौं जाई ॥ यहि अंतर युवती सब आईं बन लाग्यो कछु भारी । पांछें जुवति रही तिन टेरति अबहि गई तू हारी ॥ तरुनी जुरी एक संग भई सब इत उत चली निहारत । सूर दास प्रभु सखा लिये मग ठाढे इहै बिचारत ॥ ३९ ॥ राग गौरी ॥ ग्वारिन जब देखे नद नंदन । मोर मुकुट पीतांबर काछे खोरि किये तन चंदन ॥ तब यह कह्यो कहां अब जैहै आगे कुंवर कन्हाई । यह सुनि मन आनंद बढ़ायो मुख कहें बात डराई ॥ कोउ कोउ कहति चलौरी जैये कोउ कहे फिर घर जैये । कोउकोउ कहत चलौरी आगे इनसों कहा डरैये ॥ कोउ कोउ कहति कालिही हमकों लूटि लई नदलाल । सूर श्याम के ऐसे गुन हैं घरहि फिरी ब्रजबाल ॥ ४० ॥ राग सोरठ ॥ ग्वालनि सैन दियो तब श्याम । कूदि कूदि तुम परहु द्रुमनि तें जात चली घर बाम ॥ सैन जानि सब ग्वाल जहां तहं द्रुम द्रुम डार हलाये । बेनु बिषान शंख मुरली धुनि सब एक शब्द बजाये ॥ चकृत भई तरुनरु

प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल । कूदि कूदि सब परे धरनि में घेरि लई ब्रजबाल ॥ नित प्रति जाति दूध दधि बेचन आजु पकरि हम पाई । सूर श्याम को दान देहु तब जैहौ नन्द दुहाई ॥ ४१ ॥ राग नट ॥ ग्वारिनि यह भली नाहि करति । दूध दधि घृत नितहि बेचति दान देवे डरति ॥ प्रातही लै जाति गोरस बेचि आवति रति ॥ कहो कैसे जानिये तुम दान मारै जाति । कालन्दी के तट श्याम बैठे हमहि दियो पठाय॥ यह कह्यो हरि दान मांगहु जाति नितहि चुराय ॥ तुम सुता वृषभान की वे बड़े नन्द कुमार । सूरप्रभु कों नही जानत दान हाट बजार॥ ४२ राग कान्हरो ॥ यह सुनि हंसी सकल ब्रज नारी । आनि सुनहुरी बात एकनइ सिखई है महतारी ॥ दधि माखन खैबे कों चाहत मांगि लेहु हम पास । सूधे बात कहो सुख पावें बांध न कहत अकास ॥ अबसमुझो हम बात तुम्हारी पढे एक चटसार । सुनहु सूर यह बात कहौ जिनि जानति नन्द कुमार ॥ ४३ ॥ राग धनाश्री ॥ बात कहत ग्वालिनि सतराति । अब जानी हम भांति तुम्हारी सूधे नहीं बताति ॥ यहै बड़ो दुख गांव वास को चीन्हे कोउ न सकाति ॥ हरि मांगत है दान आपनो कहति मांगि किनि खाति । हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगाति । सूर दान को लेखो दीजै कोउ न कहै पुनि बात ॥ ४४ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन कान्ह को तुम कह मांगत । नीके करि सब कों हम जानति बातें कहत अनांगत ॥ छांड़ि देहु हमकों जिनि रोकहु वृथा बढ़ावति रारि । जैहैं बातें दूरिलों ऐसी परि है बहुरि खमारि ॥ आजुहि दान पहिरि ह्यां आये कहां दिखावहु छाप । सूर श्याम वैसेहि चलौ ज्यों चलत तुम्हारो बाप ॥ ४५ ॥ राग कान्हरो ॥ कान्ह कहत दधि दान न दैहौं । लैहौं छीनि दूध दधि माखन देखतही तुमरै हौं ॥ सब दिन को भरिलेहु आजुही तब छांड़ोंगो तुमको ॥ उघटति हौ तुम मातु पितालों नहि जानों हमकों । हम जानति हैं तुमकों मोहन लै लै गोद खिलाये । सूर श्याम अब भये जगाती वे दिन सब बिसराये ॥ ४६ ॥ राग कान्हरो ॥ अजहूं मांगि लेहु दधि देहैं । दूध दही माखन जो चाहौ सहज खाहु सुख पेहैं ॥ तुम दानी ह्वै आये हम पर यह हमकोंनहि भावत । करी तहां लों निबहै जोई जातें सब सुख पावत ॥ हमकों जान देहु दधि बेचन पुनि कोऊ नहिं लैहैं । गोरस खेत प्रातही सब कोउ सूर धरयो पुनि रैहै ॥ ४७ ॥ राग कान्हरो ॥ दान दिये बिनु जानन पैहो । जब दैहौं ढरकाय सब गोरस तबहिं दान तुम दैहौं ॥ तुमसों बहुत लैब है मोकों यह लै ताहि सुनाउ । चोरी आवति बेचि जाति गोरस सब बहुरयो कहां पाउ ॥ मांगति छाप कहा दिखराऊं को नहि हमकों जानत । सूरश्याम तब कह्यो ग्वारि सों तुम मोकों क्यों मानत ॥ ४८ ॥ राग रामकली ॥ कहा हमहि रिस करत कन्हाई । यह रिस जाय करो मथुरा पर जहां है कंस कसाई ॥ हम अब कहा जाय गुहरावे बसति तुम्हारे गांव । ऐसे हाल करत लोगनि के कौन रहै यहि ठांव ॥ अपनेही घरके तुम राजा सबको राजा कंस । सूर श्याम हम देखत बाढे अब सीखे यह गंस ॥ ४९ ॥ राग सूहौ ॥ जायसबै कंसहि गोहरावहु । दधि माखन घृत खेत छिड़ायें आजुहि मोहि बुलावहु ॥ ऐसे को कहा मोहि बतावति पल भीतर गहि

मारैं । मथुरा पतिहि सुनहुगी तुमही जब वाके धरि केस पछारैं ॥ बार वार दिन हम हि बतावति अपनो दिन न बिचारौ । सूर इन्द्र ब्रज तबहि बहावत कर गिरि राखि उबारौ ॥ ५० ॥ राग गुर्जरी ॥ गिरिबर धरयौ आपने घरको ॥ ताही के बल दान लेत हौ रोकि रहत हौ हमको । अपने ही मुख बड़े कहावत हम हूं जानति तुमको ॥ यह जानति पुनि गाय चरावत नित प्रति जातहौ बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूषनको । सूर कांध कमरीहू जानति हाथ लकुटिया करको ॥ ५१ ॥ राग बिलावल ॥ यह कमरी कमरो करि जानति । ताके जितनी बुद्धि हृदय में सो तितनोइ अनुमानति ॥ या कमरी के येक रोम पर बारो चीर पटंबर । सेा कमरी तुम नींदति गोपी तीनि लोक आडंबर ॥ कमरी के बल असुर संहारे कमरिहितें सब भोग । जाति पांति कमरी सब मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥ धनि धनि यह कांमरी हो मोहन लाल श्यामकी । यहै ओढि वनको जात रहै सेज करत हो तुम मेह बूंदनि वारन रहै छांह घामको ॥ यहै ऊन करत हौ पुनि सिसिर शीत यहै हरति गहनै लै है धरत ओट कोट बामकी । यहै जाति इहै पांति परपाटी यहै सिखवति सूरदास प्रभु कोइहै सब बिश्राम की ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ॥ अब तुम सांची बात कही । येते पर जुवतीन को रोकत मांगत दान दही ॥ जोहम तुमहि कह्यो चाहत ही सेा श्री मुख प्रकटायो । नोके जाति उघारी अपनी जुवतिन भले हंसायो ॥ तुम कमरो के ओढन हारे पीतांवर नहि छाजत । सूर श्याम कारे तन ऊपर कारो कमरी भ्राजत ॥ ५४ ॥ राग बिलावल ॥ मोसों बात सुनहु ब्रज नारी । येक उप खान चलत त्रिभुवन में तुमसों आजु उघारी ॥ कबहूं बालक मुह न दीजिये मुहनदीजिये नारी । जोइ मन करै सोई करि डारै मूड़ चढति है भारी ॥ बात कहति अठि खाति जाति सब हंसति देति कर तारी । सूर कहा ये हमको जाने छाछहि बेचन हारी ॥ ५५ ॥ राग बिलावल ॥ यह जानति तुम नन्द महर सुत । धेनु दुहत तुमको हम देखति जबहि जाति खरिकहि उत ॥ चोरी करत यहौ पुनि जानति घर घर ढूंढत भांडे । मारग रोकि भये अब दानी बे ढंग कवते छांडे ॥ और सुनहु जशुमति जब बाँधे तब हम कियेा सहाय । सूरदास प्रभु यह जानति हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ ५६ ॥ राग आसावरी ॥ को माता को पिता हमारे । कब जनमत हमको तुम देख्यो हंसी लगति सुनि बात तुम्हारे ॥ कब मांखन चोरी करि खायेा कब बांधे महतारी । दुहत कोन गैया को चारत बात कही यह भारी ॥ तुम जानति मोहि नँद ढुटौना नंद कहाँ ते आये । मैं पूरन अबि गति अबि नासी माया सबनि भुलाये ॥ यह सुनि ग्वालि सबै मुसुकानी ऐसेऊ गुन जानत । सूर श्याम जौं निद्रेउ सबही मात पिता नहि मानत ॥ ५७ ॥ राग सोरठ ॥ तुमको नंद महर भरुहाये । माता गर्भ नही उपजे तैा कहौ कहां ते आये ॥ घर घर मांखन नही चुरायेा ऊखल नहीं बंधाये । हाहा करि जशुमति के आगे तुमको हमहि छेराये ग्वालनि संग संगवृन्दावन तुम नांही गाय चराये । सूर श्याम दस मास गर्भ धरि जननी नहि तुम जाये ॥ ५८ ॥ राग टोड़ी ॥ भक्त हेत अवतार धरौ । कर्म धर्म के बस मैं

नाही जोग यज्ञ मनमें न करौ ॥ दिन गैाहारि सुनै। श्रवननि भरि गर्व बचन सुति हृदय जरौ । भाव आधीन रहै। सबही अवरन काहूतें नेक डरौ ॥ ब्रह्मा कीट आदिलों व्यापक सबको सुख दै दुखहि हरौ । सूर श्याम तब कही प्रकटही जहां भाव तहांते न टरौ ॥ ५९ ॥ राग धनाश्री ॥ कान्ह कहांकी बात चलावत । स्वर्ग पताल येक करि राख्यो जुवतिनि को कहि कहा बतावत ॥ जौ लायक तौ अपने घरको बन भीतर डर पावत । कहा दांन गोरस के ह्वै है सबै न लेहु दिखावत ॥ रीती जानि देहु घर हमको इतनेही सुख पावत । सूर श्याम मांखन दधि लीजै जुवतिन कत अरु झावत ॥ ॥ ६० ॥ राग धनाश्री ॥ मांखन दधि कहा करौं तुम्हारो । या व्रजमे तुम बनिज करति हौ नहि जानति मोको घट वारो ॥ मैं मनमें अनुमान करौं नित मोसों कह तुम बनिज पसारो । काहे को तुस मोहि कहति हौ जोबन धन ताको करि गारो ॥ अबकैसें घर जानि पाय हो मोकों यह समुझाय सिधारो । सूर बनिज तुम करति नवाई लेखा करि हों आज तिहारो ॥ ६१ ॥ राग सूहो ॥ ऐसी कहौ बनिज को अटकी । मुख मुख हेरि तरुनि मुसकानी नैंनै सैंन दै दै सब मटकी ॥ हमहूं कह्यो दांन दधिको कहा मांगत कुंवर कन्हाई । अबलों कहा मौन धरि बैठे तबही क्यों न सुनाई ॥ हंसि वृषभांन सुता तबबोली कोन वनिज हम पास । सूर श्याम लेखो करि लीजै जाहि सबै व्रज बास ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ कहो तुमही हमको कहा बूझति । लै लै नाम सुना वहु तुमही मोसों कहा अरूझति ॥ तुम जानति मैंहूं कछु जानति जोजो माल तुम्हारे । डारि देहु जापर जो लागै मारग चलौ हमारे ॥ इतनेही को सोर लगायो अब समुझी यह बात । सूर श्याम के बचन सुनहुरी कछु समुझति हौ घात ॥ ६३ ॥ राग बिलावल ॥ इनहीं धों बूझहु यह लेखो । कहा कहेंगे श्रवणनि सुनिये चरित नेक किनि देखो ॥ मन मन हरष भई सब जुवती मुखये बात चलावति । ज्यों ज्यों श्याम कहत मृदु बानो त्यों त्यों अति सुख पावति ॥ कोउ काहू के भेद न जानति लोक सकुच डर मानति । सूरदास प्रभु अंतर जामी अंतर गत को जानत ॥ ६४ ॥ राग बिलावल ॥ कहो कान्ह कहां गथ है हमसों । जाकारन जुवती सब अटकी सो बूझति है तुमसों ॥ लौंग दाख नारियर सुपारी कहा लादे हम आवैं । हींग मिरिच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावैं ॥ कूट कायफर सौंठि चिरैता कर जीरा कहुं देखत । आल मजीठ लाख सेंदुर कहुं एसेहि बुधि अब रेखत ॥ बाइ बिडंग बहेरा हररा कहुं बैल गोन बैपारी । सूर श्याम खरिकाई भूली जोबन भये मुरारी ॥ ६५ ॥ राग सूहो ॥ कौन बनिज कहि मोहि सुनावति । तुम्हरो गथ लादो गयंद पर हींग मरिच पीपरि कहा गावति ॥ अपनो बनिज दुरावति हो मो आगे सब जानति तुव गाहि । ज्यों त्यों करि अबलों छिदुराये प्रकट करौ अब ताहि ॥ बहुत मोलकी बस्तु तुम्हरी कैसे दुरत दुराये । सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे कछु एक दान भराये ॥ ६६ ॥ राग टोड़ी ॥ दधिको दान मेटि यह ठान्यों । सुनहु श्याम अति चतुर भये हो आजु तुमहि हमजान्यों जो कछु दूध दही हमदेती लैखाते मिलि ग्वाल । सोऊ खोय हाथसे बैठे हंसति कहति

ब्रज बाल ॥ यह सुनि श्याम सबनि करतें दधि मटुकी लई छिड़ाय । आपुन खाय सखनि को दीन्हो अति मन हरष बढाय ॥ कछु खायो कछु भूढरकायो चितै रही ब्रज नारि । सूरश्याम बन भीतर जुवती नये ढंग करत मुरारि ॥ ६७ ॥ राग रामकली ॥ प्यारी पीतांबर उर झटक्यो । हरि तोरी मोतिन की माला कछु गर कछु कर लटक्यो ॥ ढीठ्यो करन श्याम तुम लागे जाय गही कटि फेंट । आपु श्याम रिस करि अंकम भरि भई प्रेम को भेट ॥ युवतिन घेरि लियो हरिको तब भरि भरि धरि अंकवारि ॥ सखा परस्पर देखत ठाढे हंसत देत किल कारि ॥ हांक दियो करि नंद दुहाई आय गये सब ग्वाल । सूर श्याम को जानत नाहीं ढीठ भई हैं बाल ॥ ६८ ॥ राग भैरव ॥ हम भई ढीठि भले तुम ग्वाल । दीनों ज्वाव दई को चैहो देखोरी यह हैं जंजाल ॥ वन भीतर युवतिन कों रोकत हम खोटी तुम्हरे ए हाल । बात कहन को येउ आवत बड़े सुधर्मा धर्महि पाल ॥ साखि सखा की ऐसिये भरि हौ तब आवहुगे जीति भुआल । आये हैं चढि रिस करि हम पर सूर हमें जानत बेहाल ६९ ॥ राग बिलावल ॥ जानी बात तुम्हारी सबकी । खरिकाई को खाल तजौ अबगई बात वह तबकी ॥ मारग रोकि रहे जमुना कोतिहि धौंखे हौं आये । पावहुगे पुनि कियौ । आपनो युवतिन हाथ लगाये । जो सुनि हैं यह बात मात पितु तौ हमसों काह कैहैं । सूर श्याम मोति न खरतोरी कौन ज्वाव घर दैहैं ॥ ७० ॥ राग नट ॥ आपु न भई सबै अब भोरी । तुम हरि को पीतांबर झटक्यो उन तुमरी मोतियन खर तोरी ॥ मांगत दान ज्वाब नहिं देती ऐसी तुम जोबन की जोरी । डर नहिं मानत नंद नंदन को करत आनि एक झोरा झोरी । एक तुम नारि गंवारि भली हो त्रिभुवन में इनको सरि कोरी । सूर सुनहु खैहैं छड़ाय सब सबहि फिरहुगी दौरी दौरी ॥ ॥ ७१ ॥ राग नट ॥ कहा बड़ाई इनकी सरि मैं ॥ नंद जशोदा के प्रति पाले जानति नीके करमें ॥ बसुदेव डारि रातिही भागे आये हैं गुप घर में । तुमरे कहे सबनि डर मान्यो धरकि गई अति उरमें ॥ अंग अंग को दान कहत है सुनत उठो उर जरि में । तब पीतांबर झटकि लयो मैं सूर श्याम को झरि में ॥७२॥ राग गौरी ॥ यातें तुमको ढीठ कही । श्यामहि तुम भई फिरकनि हारी येते पर पुनि हारि नही ॥ तातें हमको गारि देति हो कहा कहै हम बहुत सही । बनिज करति हमसो झगरतिहौ हम को दाहत आपु दही । समुझि परी अब कछु जिय जान्यो तातें ह्वै सब मौन रही ॥ सूर श्याम ब्रज ऊपर दानी यह मारग अब तुम निबही ॥ ७३ ॥ राग कल्याण ॥ तुम देखत रैहो हम जैहैं । गोरस बेचि मधुपुरी तें पुनि येही मारग ऐहैं ॥ ऐसे ही बैठे सब रैहो बोले ज्वाब न देहैं । घेरि लै जैहौं जशुमति पै हरि तब धों कैसी कैहैं ॥ काहे को मोतिन खर तोरी हम पीतांबर खैहैं । सूर श्याम सतरात एते पर घर बैठे तब रैहैं ॥ ७४ ॥ राग कल्याण ॥ मेरे हठक्यौं निबह न पैहै । अब तो रोकि सबनि कों राखो कैसे करि सब जैहै । सोंह करत हो नन्द बबा की मैं बाढ़िहौं तब जैहौ ॥ जो न मानिहौ कह्यो हमारो तौ पाछैं पछितैहौ । आवत जात रहति

येही पथ मोसों बैर बढै है । सूनहु सूर हमसों हठ मांडति कौन नफा करि लैहै ॥ ॥ ७५ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन बात यह कहत कन्हाई । समुझति नहीं कहा तुम मांगत डरपावत कहि नन्ददुहाई ॥ डरपावो तिनकों जो डरपै तुमतें घटि हम नाहीं । मारग छांड़ि देहु मन मोहन दधि बेचन हम जांहीं ॥ भली करी मोतिन लर तोरी जशुमति तें हम लैहै । सूरदास प्रभु यहै बनति नहि इतनो धन कहां पैहैं ॥ ७६ ॥ राग कान्हरो ॥ एक हार मोहि कहा बतावति । नख सिख ते अंग अंग निहारहु ए सब कतहि दुरावति ॥ मोतिन मांग जराय कोटी को करनफूल नकबेसरि । कंठ सिरी दुलरी तिलरी तर अबर हार एकनोसरि ॥ सुभग हमेल कटावकी अंगिया नगनि जरित की देखो । चुद्र घंटिका पग नूपुर जेहरि बिछिया सब लेखो ॥ नख सिख लों शृंगार सकल अंग एक बतावति हार । कहत सूर लैहौं दांन सबनि को भावे तहां पुकार ॥ ७७ ॥ राग जैत श्री ॥ यांह्र मैं कछु बांट तिहारो । अचरज आइ सुनहुरी माई भूषन देखि न सकत हमारो । कहा गढाय दिये तुम आपुन को जशुमति को नन्द । घाट धरत्रो तुम यहै जानि कै करति ठगनि के छन्द ॥ जितनो पहिरे आजु हम आईं घर हैं यातें दूनो । सूरश्याम हो बहुत लुभाने बन देखो धों सूनो ॥ ७८ ॥ राग गारी ॥ बाट कहा अब सबै हमारो । जबलों दान नहीं हम पायो तबलों कैसे होत तुम्हारो ॥ आभूषन की कौन चलावत कंचन घट काहे न उघारो । मदन दूति मोहि बात तुलाई इन में भरयो महा रस भारो ॥ एक ओर अंग आभूषन सब एक ओर यह दान विचारो । सुन हु सूर कहा बांट करै हम दान देहु पुनि जहां सिधारो ॥ ७९ ॥ राग कल्याण ॥ श्याम भये ऐसे तुम नागर । एते दिवस रहे अति छौना अब हौ भये उजागर ॥ कांधे कांभरि हाथ लकुटिया गाय चरावन जाते । दही भात की छाक मंगावत ग्वालन मिलि संग खाते ॥ अब तुम करनो लासी लीन्हे पीतांबर कटि सोहत । सूरश्याम अब नवल भये तुम नवल नारि मन मोहत ॥ ८० ॥ राग गौरी ॥ दान देत को झगरो करिहै । प्रथमहि यह जंजाल मिटावहु ता पाछे तुम हमहि निदरि हौ ॥ कहत कहा निदरे सो हो तुम सहज कहति हम बात । आदि बुन्यादि सबै हम जानति काहे को सतरात ॥ रिस करि करि मटुकी सिर धरि धरि उगरि चली सब ग्वालिनि । सूर श्याम अंचल गहि झिरकों जैहौ कहां बजारिन ॥ ८१ ॥ राग कल्याण ॥ अब तुमकों मैं जानन दैहौं । बहुत अचगरी करी नन्द सुत जो कछु गयो सो तुम पै लैहौं ॥ गोरस खाय बचो सो ढारयो मटुकी डारी फोरि । दै दै गारि नारि झकझोरी चोली के बंद तोरि ॥ हंसत सखा तारी दैदै बनमें रोकी नारि । सुनत लोग घरके आवहिंगे सकिहौ नहीं संभारि ॥ घरके लोगनि कहा डरावति कंसहिं आनि बुलाई । सूर सबै युवतिन के देखत पूजा करों बनाई ॥ ८२ ॥ रागगौरी ॥ जौ तुमही हौ सबके राजा । तौ बैठो सिंहासन चढिके चमर छत्र सिर भ्राजा ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर छोड़हु नटवर साजा । बेनु विषान संख क्यों पूरत बाजै नौबति बाजा ॥ यहजो सुनै हमहु सुख पावहि संग करै सुखकाजा । सूरश्याम ऐसी बातें सुनि हमकों आवति लाजा ॥ ८३ ॥ राग कल्यान ॥ तुमरे चित रज धानी नीकी । मेरे दास

दास दासनि के तिनको लागति फीकी । ऐसी काहे मोहि सुनावति तुमको यह अगाध । कंस मारि छुच सिर धारौं कहा तुच्छ यह साध । तबही लगि यह संगति हारो जबलौं जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुनि तब मन मन कीन्हो संस ॥ ८४ ॥ राग जैतश्री ॥ भली करी हरि मांखन खायो ॥ यहौ मानि लीनी अपने सिर उबरयो सो ढरकायो । राखी रही दुराय कमोरी सो लै प्रकट देखायो । यह लीजौ कछु और मगावैं दान सुनत रिस पायो । दान दिये बिन जान नु पैहो कब मैं दान छिड़ायो । सूर श्याम हठ परे हमारे कहौन काह खदायो ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ खैहों दान इननिको तुमसों । मत्त गयंद हंस तुम सोहै कहा दुरावति मोसों । के हरि कनक कलस अमृत के कैसे दुरे दुरावति । बिद्रुम यह बज्रको किनु का नाहिन हमहिं सुनावति । खग कपोत कोकिला कीर खंजन चंचल मृग जानत । मनि कंचनके चक्र जरे हैं येते पर नहि मानत । सायक चापतुरै बन जतिहौ नित प्रति आवहु जाहु । दान दिये बिनु जान नपैहो दीये हि होत निबाहु । यह बनि जति हषभांन सुता तुम हमसों बैरु बढावति । सुनहु सूर येते पर कहति हैं हमधों कहा लदावति ॥ ८६ ॥ राग सोरठ ॥ यह सुनि चकृत भई ब्रज बाला । तरुणी सब आपुस में बूझति कहा कहत गोपाला । कहा तुरंग कहा गजके हरि कहा हंस सरवर मुनिये । कंचन कलस गढाये कब हम देखेधौं हय गुनिये । कोकिल कीर कपोत बननिमें मृग खंजन एक संग । तिनके दांत लेत हु हमसों देखहु इनके रंग ॥ चंदन और सुगंध बतावत कहा हमारे पास । सूर श्याम जौ ऐसे दानी देखि लेहु हम पास ॥ ८७ ॥ राग गुणकरी ॥ भूलि रहे तुम कहा कन्हाई । ताको नाम लेत हम आगे जे सपनेहू दृष्टि न आई । हैबर गैबर सिंघ हंस खग मृग कहं है हम लीन्हें । सायक चाप तुरें सुनि चकृत चमरन देखे चीन्हें ॥ चंदन और सुगंध कहतहौ कंचन कलस बतावहु । सूर श्याम ए सब जो चहै हैं तबहि दान तुम पावहु ॥ ८८ ॥ राग गुर्जरी ॥ इतनें सबै तुम्हारे पास । निरखि देखहु अंग अंग अब चतुराई के गास । तुरतही निरवारि डारहु करति कहति अबेर । तुम कहौ कछु हमहु बोलै घरहि जाउ सबेर । कनक तरु परत्यच्छ देखहु सजे नवसत अंग । सूर तुमहीं रूप जोबन धरयो एकहि संग ॥ ८९ ॥ राग बिलावल ॥ प्रकट करौ सब तुमहि बताऊं चिकुर चीर घूंघट है बरबरभ्रु व सारंग दिखाऊं ॥ बान कटाछ नयन खंजन मृग नासा सुक उपमाऊं । तरवन चक्र अधर बिद्रुम छबि दसन बज्र कनठाऊं । ग्रीव कपोत कोकिला बानी कुचघट कनक समाऊं । जोबन मदरस अमृत भरे हैं रूप रंग भल काऊं । अंग सुगंध बास पाटंबरगति गनि तुमहि सुनाऊं । कटि केहरि गयंद गति शोभा हंस सहित एक ताऊं । फेर किये कैसें निबहति हौ घरहि गये कहं पाऊं ॥ सुनहु सूर यह बनिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहि सुनाऊं ॥ ९० ॥ राग नट ॥ मागत ऐसो दान कन्हाई ॥ अब समुझी हम बात तुम्हारी प्रकटी है कछुधौं तरु नाई ॥ यह खालच अंकवारि भरतहौ हार तोरि चोली झटकाई । अपनी ओर देखि

धौ लीजै ता पाछें करिये बरिआई । सखा लिये तुम घेरत पुनि पुनि बन भीतर सब नारि पराई। सूर श्याम ऐसी न बूझिये इन बातनि मरजाद नसाई ॥ ९१ ॥ राग नट ॥ हम पर रिस करति ब्रज नारि । बात सूधे हम बतावत आपु उठति पुकारि। कबहुं मरजादा घटावति कबहुं दै दै गारि । प्रातहीं भागरो पसारयो दांन देहु निवारि । बड़े घरकी बड़ी बेटी करति दधा भारि । सूर अपनें अंस पावै जादु घर झष मारि ॥ ९२ ॥ राग सारंग ॥ तुमहि उलटि हम पर सतराने । जो कछु हमकों कहन बुझिये सो तुम कहि आगेहि अतुराने । यह चतुराई कहां पढी हरि थोरेहि दिन अति भये सयाने ॥ तुमको लाज होत की हमकों बात परै जो कहुं मह रांने । ऐसो दांन और पै मागहु जो हमसों कहो छांने छांने । सूर दास प्रभु जान देहु अब बहुरि कहोगे काहि बिहाने ॥ ९३ ॥ राग सारंग ॥ श्यामहि बोलि लिये ढिग प्यारी । एसी बात प्रकट कहुं कहिये सखनि मांझ कत लाज निमारी । एक ऐसेहि उपहास करत सब तापर तुम यह बात पसारी । जाति पांतिके लोग हंसहिंगे प्रकट जानि हैं श्याम भतारी । लाजनि मारत कतहौ हमको हाहा करति जाति बलिहारी। सूर श्याम सर्वज्ञ कहावत मानि पितासों पावत गारी ॥ ९४ ॥ राग सारंग ॥ जबहि ग्वारि यह बात सुनाई । सखा सबनि तबही लखि लीन्ही सदा श्याम की प्रकृति सुभाई । सुनहु ग्वारि एक बात सुनावैं जो तुमरे मन आवै । तुव प्रति अंग अंगकी सोभा देखत हरि सुख पावै । तुम नागरी नवल नागर वै दोउ मिलि करौ विहार । सूर श्याम श्यामा तुम एकै कह हंसि है संसार ॥ ९५ ॥ राग नट ॥ नंद सुवन यह बात कहावत । आपुन जोबन दांन लेत हैं तापर जोइ सोइ सखनि बतावत । बे दिन भूलि गये हरि तुमको चोरी मांखन खाते । खीजतही भरि नयन लेत हैं डर डरात भजि जाते । जशुमति जब ऊखलसों बांधति हमहि छोड़तो जाई । सूर श्याम अब बड़े भये हौ जोबन दांन सोहाई ॥ ९६ ॥ राग टोडी ॥ खरिकाई की बात चलावति । कैसी भई कहा हम जानें नेकहु सुधि नहि आवति । कब मांखन चोरी करखायो कब बांधे धों मैया । भले बुरेको मान पिमानत हरषत हृदय जैया। अपनी बात खबरि करि देखो न्हात जमुन के तीर । सूर श्याम तब कहत सबनि के कदम चढाये चीर ॥ ९७ ॥ राग गुर्जरी ॥ सबै रही जल मांझ उघारी ॥ बारबर हाहा करि थाकी मैं तट दिये हंकारी । आई निकसि बसन बिनु तरुनी बहुत करी मनुहारी । कैसे हाल भये तब सबके सो दिन सुरति बिसारी । हमहि कहति दधि दूध चुरायो अरु बांधे महतारी । सूर श्यामके भेद बचन सुनि हंसी सकुचि ब्रज नारी ॥ ९८ ॥ राग सारंग ॥ कहा भये अति ढीठ कन्हाई । ऐसी बात कहत सकुचत नहि कहंधों अपनी लाज गंवाई । जाहु चले लोगनि के आगें झुठी बांती कहत सुनाई । तुम हंसि कहत ग्वाल सुनिकें सब घर घर कहिहैं जाई ॥ बहुर होइगे इसहि बरषको बात कहत है बनै बनाई । सूर श्याम जशुमति के आगें यहै बात सब कहै सुनाई ॥ ९९ ॥ ॥ राग हमीर ॥ झूठी बात कहा मैं जानों । जो हमकों जैसेहि भजैरी ताकों तैसेहि मानों ॥

तुम तप कियो मोहि को मनुदै मैंहूं अन्तर्यामी ॥ जोगी को जोगी ह्वै दरसों कामी को ह्वै कामी ॥ हमको तुम झूठे करि जानति तौ काहे तपु कीनों । सुनऊ सूर कत निठुर भई अब दान जात नहि दीनों ॥ १०० ॥ राग गौरी ॥ दान सुनत रिस होत कन्हाई । और कहौ सो सब सहि लैहैं जो कछु भली बुराई ॥ महतारी तुम्हरीके वे गुन उरहन देत रिसाई । ताते तुम दूने सिर चढ़ि के तेई चाल प्रकटाई ॥ तुम नीके ढंग सीखे बन में रोकत नारि पराई । सूर श्याम हमकों बिरमावत खोजत बहिनी माई ॥ १०१ ॥ राग गौरी ॥ काहेको तुम झेरि लगावति । दान देऊ घर जाऊ बेचि दधि तुमहीं को यह भावति ॥ प्रीति करौ मोसों तुम काहे न बनिज करति ब्रज गांउ । आवऊ जावऊ सबै यहि मारग लेत हमारो नांउ ॥ लेखा करौ तुमहिं अपने मन जोइ देहो सोइ लेहों । सूर सुभाय चलऊगी जब तुम पुनि धौं मैं कहा कैहों ॥ १०२ ॥ राग कान्हरौ ॥ सुनहु आनि हरि के गुन माई । हम भई बनजारिन आपुन भये दानी कुंवर कन्हाई ॥ कहा बणिज लैआई हमधौं मांगत ताकौ दान । कालिहि के ढंग पुनि आये हैं नहि जानत कछु आन ॥ तुम ग्वारिन येही मग आवति जानि बूझि गुण इनको । सूर श्याम सुन्दर बहुनायक सुखदायक सबहिनको ॥ १०३ ॥ राग टोड़ी ॥ काहे को हमसों हरि लागत । बातहि कछु लेखा सर नाही को जाने कह मांगत ॥ कहा शुभाव परयो अबहींतें इन बातन कह पावत । दान दान कहि कहा कहत हैं मन्द मन्द सुर गावत ॥ पूरो देहु बहुत अब कीन्हों सुनत हंसहिगे लोग । सूरश्याम मारग जनि रोकहु घरतें लीजहु बोग ॥ १०४ ॥ रागटोड़ी ॥ अबलों यहै करौ तुम लेखौ । मोकों ऐसी बुद्धि बतावति कर कंकन दर्पन लै देखौ ॥ आपुहि चतुरि आपुही सब कछु हमकों कहति गंवार । औगहि लेत फिरौ इनके घर ठाढे ह्वै ह्वै द्वार ॥ घाट छांड़ि जैहो तबलैहो ज्वाब न्हपहि कहा दैहो । जादिनते यहि मारग आवति तादिनतें भरि लैहो ॥ इनकी बुद्धि दानहम पहिरो काहे न घरघर जैहो ॥ सूरश्याम तब कहत सखनि सों जान कौन बिधि पैहो १०५ ॥ राग टोड़ी ॥ भली भई नृप मान्यौ तुमहूं । लेखौ करैं जाय कंसहि पै चलें संग तुम हमहूं ॥ अबलों हम यह जानीहो घर ही पहिरो तुम दान । काल्हि कह्यो हो दान लेन को नन्द महर की आन ॥ तौ तुम कंस पठाये हो हौं अब जानी यह बात । सूर श्याम सुनि सुनि यह बानी भौंह मोरि मुसुकात ॥ १०६ ॥ राग आसावरी ॥ कहा हंसत मोरत हो भौंह । सोई कहो मनहि कह आई तुमहि नन्दकी सौंह ॥ और सौंह तुमको गोधन की सौंह माय जसुमति की । सौंह तुमहि बलदाऊ की है कहौ आपुने चित की । बार बार तुम भौंह सकोरयो कहा आपु हंसि रीझै । सूर श्याम हम पर सुख पायो को मन ही मन खीझै ॥ १०७ ॥ राग रामकली ॥ हंसत सखनि सों कहत कन्हाई । मैया की बाबा की दाऊजूकी सौंह दिवाई ॥ कहति काहे हंसि हेरयो काहे भौंह सकोरयो । यह अचरज देखौ तुम दून कौ कब हम बदन मरोरयो ॥ ऐसी बातनि सौंह दिवावति अधिक हंसी मोहि आवति । सूर श्याम कहि यो दानी सों तुम काहे न समुझावति ॥ १०८ ॥ राग धनाश्री ॥ श्रीदामा गोपिन समुझावत । नन्द लाल सों कत झगरति हो काहेकों रारि बढ़ावत ॥ हंसत श्याम के तुम

कहा जान्यौं काहे सोंह दिवावै । तरुनिन की यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात खिसावै ॥ नान्हें मख सों सोंह दिवावहु वे दानी प्रभु सबके । सूरश्याम कों दान देहुरी मानहु ठाढे कबके ॥ १०९ ॥ राग जैतश्री ॥ हम जानति वे कुंवर कन्हाई । प्रभु तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई ॥ प्रभुता नहीं होत इन बातनि मागत महि को दान । वे ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यो सबको जान ॥ दधि खायो मोतिन लर तोरयो घृत माखन सोउ लीजै । सूर दास प्रभु अपनौ सदिका घरहि जान हम दीजै ॥ ११० ॥ राग सोरठ तुम घर जाहु दान को दैहै । जिहि बीरा दै मोहि पठायो सो मोसों कहा लैहै ॥ तुम गृह जाय बैठि सुख करिहौ नृप गारी को खैहै । अबहीं बोलि पठावे गोरी ता मनरुख को जैहै ॥ जान कहै तुम सों तुम जैहो बिधिना कसी सैहै । सूर मोहि अटक्यो है नृप बर तम बिनु कौन छुडैहै ॥ १११ ॥ राग जैतश्री ॥ नृप कौ नाम लेत तेही मुख जेहि मुख निंदा काहि करी । आपुन तौ राजनि के राजा आजु कहा सुधि मनहि परी ॥ भले श्याम ऐसी तुम कीनी कहा कंस कौ नाम लियो । जब हम सोंह दिवावन लागी तबहि कंस पर रोस कियो ॥ जाको निंदि बंदि बैसो पुनि यह ताकों बहुतै निदरै । सूर सुनी वह बात काहि की तब जानी इन कंस डरै ॥ ११२ ॥ राग आसावरी ॥ कहा कहति कछु जानन पायो । कब कंसहि धौं हम कर जोरे कब वाको हम माथ नवायो ॥ कबहूं सोंह करत देखे मोहि लेत कबहुं मुख नाउ । निपटहिं ग्वारि गँवारि भई तुम बसति हमारे गाउ ॥ कहा कंस कित ने लायक को जा को मोहि दिखा बति । सुनहु सूर यहि नृप के हम हैं यह तुम्हरे मन आवति ॥ ११३ ॥ राग टोड़ी ॥ कौन नृपति जाके तुम हौ । ताको नाउ सुनावहु हम को यह सुनि कें अति पावति भौ । यह संसार भुवन चौदह भरि कंसहि तें नही दूजौ और ॥ सो नृप कहां रहत सुनि पावै तब ताही को मानै जो । कहा नाम केहि गांव कहै बनैगो झूठे हमहि कहत धौं हो । सूर दास प्रभु बसत है ताही के ह्वै रहिये तौ ॥ ११४ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसों सुनौ नृपति के नाम । तिहूं भुवन में गम है जाकौ नर नारी सब गांम ॥ गन गन्धर्व बश्य वाही के और नहीं सरि ताहि । उन की अस्तुति करौं कहां लौं मैं सकुचत हौं जाहि ॥ तिन ही को पठयो हौं आयो दियो दान को बीरा । सूर रूप जोवन धन सुनि कें देखत भयो अधीरा ॥ ११५ ॥ राग गौरी ॥ पाई जाति तिहारे नृप की जैसे तुम तैसे वोउ हैं । कहां रहे दुर जाय आजु लों हम तुम एक दिन जनमें दोऊ हैं । चारी अप मारग घट वारयो इन पट तरके नहि कोऊ हैं ॥ श्याम बनी अब जोरी नीकी सुनहु सखी मानत तोऊ है । यह अनुमान कियो ढंग गुणकै सोऊ है । सूर श्याम जितने रंग काछत जुवती जनमन के जोऊ है ॥ ११६ ॥ राग गौरी॥ ठगत फिरति ठगिनी तुम नारि । जोइ आवति सोइ सोइ कहि डारति जाति जनावति दै दै गारि ॥ फसि हारिनि बट पारिनि हम भई आपुन भये सुधर्मा भारि । फांदा फांसि कमान बानसों काहू टारत देख्यो मारि ॥ जाके जाके मन जैसे बरते मुख बानी करि देत उघारि । सुनहु सूर प्रभु नीके जान्यो ब्रज जुवती तुम सब बटपारि ॥ ११७ ॥ राग गौरी ॥ अपने नृपको यहै

सनायो । व्रज नारी वट पारिनि हैं सब चुगली आपुही जाय लगायो ॥ राधा बड़ी बात यह समुझी तुमको हम पर धौंसि पठायो । फंसि हारिनि कै से तुम जानी हम कहं प्रकट दिखायो ॥ व्रज बनिता फंसिहारिनि जौं सब मछतारी काहेन गनायो । फांद फांसि धनुष बिष लाई सूरश्याम नहि हमहि बतायो ॥ ११८ ॥ राग भैरव ॥ फांदा फांसि बताऊं जो । आगनि धरे छपाई जहां जो प्रकट करौ सब बदि हौं तौ ॥ प्रथमहि सोस मोहनी डारति ऐसे ताहि करत बस हौ । बिष लाडू दरभावति लै पुनि देहदशा सुधि बिसरति ज्यौ ॥ ता पाछे फांदा गर डारति यहि भांतिन करि मारति हौ । सुनहु सूर ऐसे गुन तुम्हरे मोसों कहा उचारति हौ ॥ ११९ ॥ राग सहो ॥ प्रकट करौ यह बात कन्हाई । बान कमान कहां केहि मारयौ काके गर हम फांसि लगाई ॥ काके सिर हम मंच दियो पढि कहां हमारे पास दिनाई । मिलवत कहां कहां की बातें हंसति कहति अति गई सकुचाई ॥ तब माने सब हमहि बतावहु कहौ नही तौ नन्द दोहाई । सूर श्याम तब कह्यो सुनहुगी येक येक करि देउ बताई ॥ १२० ॥ राग टोड़ी ॥ मोसों कहा दुरावति नारि । नयन सैन दे चितहि चोरावति यहै मंच टोना सिर डारि ॥ भौंह धनुष अंजन गुन भृकुटी बांन कटाच्छनि डारति मारि । तरवनि श्रवण फांसि गर डारति कैसेहु नही सकति तरु वारि ॥ पीन उरज मुख नयन चखावति यह बिष मोदक जात न झारि । घातत छुरी प्रेम की बानी सूरदास को सकै संभारि ॥ १२१ ॥ राग टोड़ी ॥ अपनो गुन औरनि सिर डारत । मोहन जोहन मंच मंच टोना तुम पर सब वारत ॥ तनु त्रिभंग अंग अंग मोरनि भौंह बंक करि हेरत । मुरली अधर बजाय मधुर सुर तरुनी मन ब्रज घेरत ॥ नटवर भेष पितांबर काछे छैल भये तुम डोलत । सूर श्याम सांवरे ढंग ऐसे औरनि को ठग बोलत ॥ १२२ ॥ राग टोड़ी ॥ जानी बात मौन धरि रहिये । इहे जानि हम पर चढि आये जो भावे सो कहिये ॥ हम नहि बिलगु तुम्हारो मान्यो तुम जिनि कछु मन आनौ । देखो येक दोइ जिनि भाषहु चारि देखि दुइ जानौ ॥ दोबल देति सबै मोहीको उनि पठयो मैं आयो । सूर रूप जोवन की चुगुली नयननि जाय सुनायो ॥ १२३ ॥ राग बिलावल ॥ तब रिस करिके मोहि बुलायो । लोचन दूत तुमहि यह मारग देखत जाय सुनायो ॥ सो सब महलनि तेसुनि बांनी जोवन महलनि आयो । अपने कर बीरा मोहि दीन्हो तुरत दान पहि रायो ॥ बैठेहैं सिंहान चढिके चतुराई उप जाये । मन तरंग अज्ञा करि स्थित तिनको तुमहि लगायो ॥ तिनको नाम अनंग नृपति बर सुनहु बात सुख पायो । सूर श्याम मुख बात सुत यह जुवतिन तनु बिसरायो ॥ ॥ १२४ ॥ राग सूहो ॥ व्रज जुवती सुनि मगन भई । यह बानी सुनि नंद सुवन मुख मन ब्याकुल तन सुधौ गई ॥ को हम कहंरहति कहांआईं जुवतिन के यह सोच परयो । लागी काम नृपति की सबसों जोवन रूपहि आनि अरयो ॥ चकित भई तरुनी अनंग डर सकुचि रूप जोवनहि दियो । सूर श्याम अब शरण तुम्हारे हृदय सबनि यह ध्यान कियो ॥ ॥ १२५ ॥ राग जैतश्री ॥ मन यह कहति देह बिसरायो । यह धन तुमही को संचि राख्यो तिहि लीजौ सुख पायो ॥ जोवन रूप नही तुम लायक तुमको देति लजाति ।

ज्यों वारिध आगे जल किनका निमें करति यहि भांति ॥ अंस्तुत सर आगे मधु रंचक मनहि करति अनुमान । सूर श्याम सोभा कोसी वाको वाके पट तरको ज्ञान ॥ १२६ ॥ ॥ राग जैतश्री ॥ अंतर जामी जानि लई । मननें मिलै सबनि सुख दीन्हो तब तनकी कछु सुरति भई ॥ तब जानेा मनमें हम ठाढी तनु निरख्यो मन सकुचि गई । कहति परस्पर आपुस में सब काहू रही हम काहि रई ॥ श्याम विना ये चरित करै को यह कहिके तनु सौंपि दई । सूर दास प्रभु अंतर जामी गुप्तहि जोवन दान लई ॥ १२७ ॥ राग राम कली ॥ यह कहि उठे नन्द कुमार । कहा ठगिसी रही बाला परी कौन विचार ॥ दानको कछु कियो लेखो रही जहं तहं सोचि । प्रकट करि हमको सुनावहु भेटि जोरो दोचि ॥ बहुरि तहि मग जाहु आवहु राति सांझ सकारि । सूर ऐसो कौन जो पुनि तुमहि रोकनि हारि ॥ १२८ ॥ राग गूजरी ॥ हमहि और सों रोके कौन । रोकन हारे नन्द महर सुत कान्ह नाम जाको है तौंन ॥ जाको है बल काम नृपति कोठगत फिरत जुवतिन को जौंन । टोना डारि देत सिर ऊपर आपु रहत ठाढो ह्वै मौंन ॥ सुनहु श्याम एसो न बूझिये बानि परी तुमको यह कौंन सूरदास प्रभु छपा करहु अब कैसेहु जाहि आपने भौंन ॥ १२९ ॥ राग सूहो ॥ दान मानि घरको सब जाहु । लेखो मैं कहु कहु जानत हौं तुम समुझे सब होत निवाहु ॥ पछिलो देहु निबाहि आजु सब पुनि दोजो जब जानहु काल्हि । अबमैं भली कहत हौं तुमसों तुम सब मोकों मानहु ग्वालि ॥ वृन्दावन तुम आवत डरपति मै देहौं तुमको पहुं चाय । सुनहु सूर त्रिभुवन बस जाके सो प्रभु भय जुवतिन बस आय ॥ १३० ॥ राग टोडी ॥ को जानै हरि चरित तुम्हारो । अगछ दान नहीं तुम पायो मन हरि लयो हमारो ॥ लेखो करि लीजै मन मोहन दूध दही कछु खाहु । सट मांखन तुम्हरेहि मुख लायक लीजै दान उगाहु ॥ तुम खै हो माखन दधि रुचिसों हम सब देखिहहा सुख पावैं । सूर श्याम तुम अब दधि दानी कहि कहि प्रकट सुनावैं ॥ १३१ ॥ राग गोंड ॥ कान्ह माखन खाहु हम सब देखैं । सद्य दधि दुग्ध ल्याई औटि अवहि हम खाहु तुम सुफल करि जन्म लेखैं ॥ सखा सब बोलि बैठारि हरि मंडली बनहिके पात दोना लगाये । देति दधि पुलकि व्रज नारि जेंवत कान्ह ग्वाल संग बैठि अति रुचि बढाये । धन्य दधि धन्य माखन धन्य गोपिका धन्य राधा बस हैं मुरारी । सूर प्रभु के चरित देखि सुर गन थकित कृष्ण संग सुख करति घोष नारी ॥ १३२ ॥ राग जैतश्री ॥ माखन दधि हरि खात ग्वाल संग ॥ पातन के दोना सबके कर ले पतुखित मुख मेलत रंग । मटुकिनतें लैलै परुसति है हरष भरी व्रज नारि । यह सुख तिहूं भुवन कहुं नाही दधि जेंवत बन वारि । गोपी धन्य कहति आपुनको धन्य दूध दधि मांखन । जाको कान्ह लेत मुख मेलत कियो सबनि संभाषन । जो हम साध करति अपने मन सोसुख पायो नीके । सूर श्याम परतन मन वारति आनंद जिय सबही के ॥ १३३ ॥ राग देव गंधार ॥ गोपिका अति आनंद भरी । माखन दधि हरि खात प्रेमसों निरखति नारि खरी । कर लैलै मुख परस करावति उपमा बडी सुभाई । मानहु कंज मिलत शशिको लिये

सुधाँ कौर कर आई । जा कारन शिव ध्यान लगावत शेष शहस मुख गावत । सोई सूर प्रकट व्रज भीतर राधा मनहि चुरावत ॥ १३४ ॥ राग राम कली ॥ राधासों माखन हरि मागत । और निको मटुकिनको खायो तुमरो कैसो लागत । लै आई वृषभान सुता हंसि सद लवनी है मेरो । लै दीन्हे अपने कर हरि मुख खात अलप हंसि हेरो ॥ सबहिनतें मीठौ दधि है यह मधुरे कह्यो सुनाई । सूर दास प्रभु सुख उपजायो व्रज ललना मन भाई ॥ १३५ ॥ राग नट ॥ गोपिन हेत माखन खात । प्रेम के बस नंदनंदन नेक नहीं अघात । सबै मटुकी भरी वैसेहि प्रेम नहीं सिरात । भाव हृदै जानि मोहन खात माखन जात । एकनि कर दधि दूध लीन्हे एकनि कर दधि जात । सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहि सिहात ॥ १३६ ॥ राग बिहागरो ॥ गोपी कहति धन्य हम नारि । धन्य दूध धनि दधि धनि माखन हम परुसति जेंवत गिरिधारि । धन्य दिवस धनि निसा धन्य वह धनि गोकुल प्रकटे बनवारि । धन्य सुकृत पाछिलो धन्य धन्य नंद तात जशुमति महतारि । धनि धनि ग्वाल धन्य वृन्दा बन धन्य भूमि यह अति सुखकारि । धन्य दान धनि कान्ह धन्य मग धन्य सूर तृनद्रुम बन डारि ॥ १३७ ॥ राग नट ॥ गन गंधर्व देखि सिहात । धन्य व्रज खेलनानि करतें ब्रह्म मांखन खात । नहि न रेख न रूप नहि तनु बरन नहि अनुहारि । मात पितु दोउ नाहि जाके हरत मरत न जारि । आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ । आपु सब घटके बिआपी निगम गावत गाथ । अंग प्रति प्रति रोम जाके कोटि कोटि ब्रह्मांड । कीट ब्रह्म पर्यंत जल थल इनहितें यह मांड । विश्वविश्वंभरन एई ग्वालसंग बिलास । सोइ प्रभु दधि दान मागत धन्य सूरज दास ॥ १३८ ॥ राग राम कली ॥ कंस हेत हरि जनम लियो । पापहि पाप धरा भई भारी तब हम सबनि पुकार कियो । शेष सैन जहां रमा संग मिलि तहं अकास भई एक बानी । असुर मारि भुव भार उतारौं गोकुल प्रकटौं आनी ॥ गर्भ देवकी के तनु धरि हौं जशुमति को पय पीहौं । पूरब तप बहु कियो कष्ट करि इनको बहुत दिनी हौं । यह बानी कहि सूर सुरनिको अब कृष्णा अवतार ॥ कह्यो सबनि व्रज जनम लेहु संग मेरे करहु बिहार ॥ १३९ ॥ राग गारी । ब्रह्म जिनहि यह आयसु दीन्हो । तिन तिन संग जनम लियो व्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हो । गोपी ग्वाल कान्ह है नाही एकहु नेक न न्यारे । जहां जहां अवतार धरत हरि ए नहि नेकु बिसारे । एकै देह बहुत करि राखे गोपी ग्वाल मुरारि । यह सुख देखि सूरके प्रभु को थकित अमर संग नारि ॥ १४० ॥ राग गौरी ॥ अमर नारि अस्तुति करै भारी । एक निमिष व्रज बासिनको सुख नहि तिहुं भुवन बिचारी । धन्य कान्ह नटबर वपु काछे धन्य गोपिका नारी । एक एकतें गुन रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी । परुसति ग्वालि ग्वाल सब जेंवत मध्य कृष्ण सुख कारी । सूर श्याम दधि दानौ कहि कहि आनंद घोष कुमारी ॥ १४१ ॥ राग बिलावल ॥ धन्य कृष्ण अवतारतें ब्रह्म लियो । रेख न रूप प्रकट दरसन दियो । जल थलमें कोउ और नहि बियो । दुष्टनि बधि संतनि सुख दियो । जो प्रभु नर देही नहि धरते । देवै

गर्भ नही अवतरते । कंस सोक कैसें उर टरते । माता पिता दुरितको हरते । जो प्रभु व्रज भीतर नहि आवै । नंद जशोदा क्यों सुख पावै । पूरब तप कैसें प्रकटावै । वेद बचन कैसें ठहरावै । जो प्रभु वेष धरै नहि बालक । कैसें मारहि पूतनाघालक । अंगुठा पिवत शकट संघारत । तृणा अकास सिला पर डारत । जौ प्रभु व्रज माखन नचुरावै । क्यों गोपिन को आपु जनावै । भुजा उलुखल नहीं बंधावै । जमला मोच्च कौन विधि पावै । सो प्रभु दधि दानि कहवावै । गोपिन को मराग अटकावै । करि करि लेखा दान चुकावै । आपुन खीझै उनहि खिझावै । व्रज बासीयाँ धन्य कहावै । जहां श्याम दधि दान लगावै । मागि खात आनंद बढावै । जुवतिन सों कहि कहि परु सावै । तेई हरि नटवर वपु काछे । सोर मुकुट पीतांबर आछे । ग्वाल सखा ठाढे सब पाछें । सूर श्याम गोपिन सुख साछें ॥ १४२ ॥ राग सूहो ॥ यह महिमा ऐई पै जानै । जोग जज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुख मानै ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिके मीठो कहि कहि आपु बखानै । विश्वंभर जग दीन कहावत ते दधि दोना मांझ अघानै । आपुहि करता आपुहि हरता आपु बनावत आपुहि भानै । ऐसे सूर दासके स्वामीते गोपिनके हाथ बिकानै ॥ १४३ ॥ राग रामकली ॥ धनि बड़ भागिनी व्रज नारि । खात लै दधि दूध माखन प्रकट जहां मुरारि । नही जानत भेद जाको ब्रह्म अरु चिपुरारि । शुक सनक मुनि एउ न जानत निगम गावत चारि । देखि सुख व्रज नारि हरि संग अमर रहे भुलाय । सूर प्रभुके चरित अगनित बरनि कापै जाय ॥ १४४ ॥ राग बिलावल ॥ व्रज बनिता यह कहति श्याम सों माखन दूध दह्यो अरु ल्यावै । मटुकनितें हम देहि खाहु तुम देखि देखि नयन नि सुख पावै ॥ गोरस बहुत हमारे घर घर दान पाछिलो लेहु । खायो जौन दान आजुहि को मांगत हैं सबदेहु ॥ सबै लेहु राखहु जिनि बाकी पुनिन पाय हौ मांगे । आजुहि लेहु सबै भरि दैहैं कहति तुम्हारे आगें ॥ कहो श्याम अब भाय हमारी मन ही भई परतीत । जब चैहै तब मागि लेहिंगे हमहि तुमहि भई प्रीत ॥ बेचहु जाय दूध दधि निधरक घाट बाट डर नाहि । सूर श्याम सब भई ग्वालिनी जात बनत घर नाहि ॥ ॥ १४५ ॥ राग टोड़ी ॥ सुनहु सखी मोहन कह कीन्हो । एक एक सों कहति बात यह दान लियो को मन हरि लीन्हों ॥ यह तौ नहीं बदी हम उनसों बूझहु धौं यह बात । चकृत भई विचार करति यह बिसरि गई सुधि गात ॥ उमचि जात तबही सब सकुचति बहुरि मगन होय जाति । सूर श्याम सों कहौ कहा यह कहत न बनति लजाति ॥ ॥ १४६ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम सुनहु इक बात हमारी । ढीठो बहुत दई हम तुम सों सो बकशो हरि चूक हमारी ॥ मुखही कही कटुक सब बानी हृदय हमारे नाहि । हंसि हंसि कहति खिझावति तुम कों अति अनंद मन माहि ॥ दधि माखन को दान और जो जानौ सबै तुहारो । सूर श्याम तुमकों सब दीनों जीवन प्रान हमारो ॥ ॥ १४७ ॥ राग धनाश्री ॥ नन्द कुमार कहा यह कीन्हों । बूझत तुमहि कहौ धौं हमसों दान लियो कै मन हरि लीन्हों ॥ कछू दुराव नही हम राख्यो निकट तुम्हारे आई । तन मन

प्रान समर्पन कीन्हों कुलकी कान गंवाई ॥ जो जासों अंतर नहि राखै सो क्यों अंतर राखै । सूरश्याम तुम अंतर्जामी बेद उपनिषद् भाखै ॥ १४८ ॥ राग टोड़ी ॥ सुनहु बात युवती इक मेरी । तुमतें दूर होत नहि कतहू तुम राख्यो मोहि घेरी ॥ तुम कारन बैकुंठ तजत हों जनम लेत व्रज आय । वृन्दावन राधा संग गोपी यह न बिसार्यो जाय ॥ तुम अन्तर अन्तर कह भाषति एक प्रान दै देह । क्यों राधा व्रज बसे बिसारी सुमिरि पुरातन नेह ॥ अब घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो न जाई । सूर श्याम हंसि हंसि युवतिन सों ऐसी कहत बनाई ॥ १४९ ॥ राग नट नारायण ॥ घर तन मनहि बिना नहि जात । आपु हंसि हंसि कहत हौ जू चतुरई की बात ॥ तनहि पर है मनै राजा जोइ करै सोइ होय । कहौ घर हम जांहि कैसें मन धर्यो तुम गोय ॥ नयन श्रवणनि चोर सुधि बुधि रहे मनहि लुभाय । जाहि अब हौं तनहि लै घर परत नाहि न पाय ॥ प्रीत करि दुबिधा करी कत तुमहि जान्यों नाथ । सूरके प्रभु दीजिये मन जाय घर लोंसाथ ॥ १५० ॥ राग कान्हरौ ॥ मन भीतर है बास हमारो । हमकों लै करि तुमहि छिपायो कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥ अजहूं कहौ रहै हरि अनतहि तुम अपनों मन लेहु । अब पछितानी लोक लाज डर हमहि छांड़ि तो देहु ॥ घटती होय जाहि ते अपनो ताकौ कीजै त्याज । धोखे दियो बास मन भीतर अब समुझे भई लाज ॥ मन दीन्हों मोकों तब लीन्हों मन लैहों मैं जाय । सूर श्याम ऐसी जिनि कहिये हम यह कही सुभाय ॥ १५१ ॥ राग कान्हरौ ॥ तुमहि बिना मन धृग अरु धृग घर । तुमहि बिना धृग धृग माता पितु धृग धृग कुलकी कानि लाज डर ॥ धृग सुत पति धृग जीवन जगको धृग तुम बिन संसार । धृग निश द्योस पहर घरी पल धृग यह कहिये नन्दकुमार ॥ धृग धृग श्रवण कथा बिन हरि की धृग लोचन बिन रूप । सूर दास प्रभु तुम बिनु घर ज्यों बन भीतर के कूप ॥ १५२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ * ॥ अथ बड़ी दान लीला ॥ * ॥

॥ राग बिलावल ॥ सुनि तमचुर को सोर द्योस भयो जागरी । नव सत साजि शिंगार चली नव नागरी ॥ ध्रुव ॥ नव सत साजि शृंगार अंग पाटम्बर सोहै । एकतें एक बिचित्र रूप त्रिभुवन मन मोहै ॥ इन्द्रा वृन्दा राधिका श्यामा कामा नारि । ललिता अरु चन्द्रावली हो सखिन मध्य सुकुमारि ॥ १ ॥ कोउ दूध कोउ दुह्यो मह्यो लै चली सयानी । कोउ मटुकी कोउ माट भरी नव नीत मथानी ॥ यह यह तें सब निकसि चली जुरी जमुन तट जाय । सबनि हरष मनमें कियो हो उठी श्याम गुण गाय ॥ ॥ २ ॥ यह सुनि नंद कुमार सैन दै सखा बुलाये । मन हरषित भये आपु जाय सब ग्वाल जगाये ॥ सैन बैन दै सांवरे राखे द्रुमनि चढाय । और सखा कछु संग लै हो

रोकि रहे मग जाय ॥ ३ ॥ एक सखी अब रोकि तबहि सब अली बुलाई । यहि बन में एक वार लूटि हम लई कन्हाई ॥ तनक फेरि फिरि आईये अपने सुखहि बिलास । यह झगरो सुनि होयगो हो गोकुल में उपहास ॥ ४ ॥ उलटि चलो जब सखी तहां कोउ जान न पावै । रोकि रहे सब सखा और बातनि बिरमावै ॥ सुबल सखा उठि बोलियो तुम ग्वालिनि हरि जोग । कैसें बात दुराति हैं हो तुम उन के संजोग ॥ ५ ॥ किनहु शृंग कोउ बेनु किनहु बन पच बजाये । छांड़ि छांड़ि द्रुम डार कूदि धरनी धसि धाये ॥ सखिन मध्य इत राधिका सखा मध्य बलबीर । झगरो ठान्यो दान को हो कालिन्दी के तीर ॥ ६ ॥ कहत नंद लाल लाड़िले ॥ दै नागरि दधि दान कान्ह ठाढे वृन्दाबन । और सखा हरि संग बच्छ चारत अरु गोधन ॥ वे बड़े नंदके लाड़िले तुम वृषभान दुलारी । दह्यो मह्यो के कारने हो कतहि बढावति रारी ॥ ७ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ मांगे गोरस लेहु कान्ह हमसों लै खाहू । ऐसे ढीठ ग्वाल कान्ह बरजत नहि काहू ॥ यहमग गोरस बेचते दिनप्रति आवन जान । हमहि छाप दिखरावहू तुम कापर पहिरो दान ॥ ८ ॥ कहत नंदलाड़िले ॥ इते मान्यु सतराति ग्वारि हमजानि नपायें । अन ऊतर की खोरि बेन कत कहति कठाये ॥ इतनी हमसों को कहै या वृंदाबन बीच । पुहमि माट ढरकाय होंतो मचै दहीकी कीच ॥ ९ ॥ कहति व्रजनागरी ॥ अहो कन्हैया ढीठ आहि तुम अजहूं बारे । गायचरावन जात भये कबतें अधिकारे ॥ मातपिता जैसेंचले तैसेंचलिये आपु । कठिन कंस मथुरा बसै हो को कहि लेय संतापु ॥ १० ॥ कहत नंद लाड़िले ॥ कहै न जाय उतालु जहां भूपालु तिहारो । हों वृंदाबनचंद कहा कहि करै हमारो । शेष सहस फन नाथियो सुरपति कियो निरंस । अनिल पान कियो सांवरे हो केतक बपुरो कंस ॥ ११ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ जाके तुम सुकुमार ताहि हम नीके जानै । जो पूछो सति भाव आदि अद्यावधि भानै ॥ बातनि बेड़े न हूजिये सुनहु श्याम उत पाति । गर्भ साटि जशुदा कियो हो तवतुम आये राति ॥ १२ ॥ कहत नन्द लाडिले ॥ अरी ग्वारि मैं मत्त कहति कत बचन अनेरे । कब हरि बालक भये गर्भ कब लिये बसेरे ॥ असुर भार पुहमी भयो बिधि कीन्हे ये ख्याल । कमल कोस अलि भोरये त्योंही तुम भोरये गोपाल ॥ १३ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ तुम भोरये हो नंद कहत हैं तुमसों ढोटा । दधि ओदन के काज देह धरि आये छोटा ॥ गढि गढि छोलहु रावरे भली बनति हैं श्याम । ऐसी बातें कहि कहि हो भुरवत बनमें बाम ॥ १४ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ जौं प्रभु देह न धरैं दीन खल कौन उधारै । कंस केस को गह बिघन को कोटिक टारै ॥ कहा निगम कहि ध्यावते कह मुनिजन धरते ध्यान । दरश परस बिनु नाम गुन को पावै पद निर्बान ॥ १५ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ जो पै दरस अरु परस नाम गुन केलि कन्हाई । तुम निर्भै पद देत दिये हैं बेद बताई ॥ योग जुगति तप ध्यावही अन गत दीन दयाल । जल तरंग ज्यों मीन गति हो बंधे करम के जाल ॥ १६ ॥ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ जटा भस्म तन दहै वृथा करि कर्म बंधावै । पुहुमि प्रदछिण देहि गुफा बसि मोहिन पावै ॥ तजि अभिमान जे गावही गद गद गिरा प्रकास ।

तासों मगन हां ग्वालिनी हो तेहि घट मेरा बास ॥ १७ ॥ कहति व्रज जो नागरी ॥ जोपै चांडि लै श्याम करत उपहास घनेरे । हम अहीरि ग्रह नागरी लोक लाज के जेरे ॥ ता दिन हम भई बावरी दियो कंठ तें हार । तबतें घर घेरा चल्यो हो श्याम तुम्हारे जार ॥ १८ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ सखा सबनि मिलि कह्यो ग्वारि एक बात सुनावै । तो तन जोति सुभाव रूप उपमा को पावै ॥ गुप्त प्रीति विधिना करी रसिक सांवरे जोग । यह संजोग सुनि ग्वारिनी हो न्याव हंसैगे लोग ॥ १९ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ ऐसी बातें कान्ह कहत हमसों काहे तें । चोरी खाते छाछि नयन भरि लेत गाहे तें ॥ मुख ऊपर कहा आनि ये अन ऊतर की खोरि । जब जशुमति ऊखल बांध्यो होतब हम दीनो छोरि ॥ २० ॥ कहत नंद लाडिले ॥ बालक रूप अजान कहा काहू पहि चानै । अन ऊतर कोउ कहै भली अन भली न मानै ॥ वे दिन समुझहु ग्वारिनी साखि जमुन को पानि । सबनि इहा मोसों कियो जब बसन दुराये आनि ॥ २१ ॥ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ बहुत भये हो ढीठ देत मुख ऊपर गारी । जेहि छाजे तेहि कहौ कहा कोउ दासि तुम्हरी ॥ तुमसों अब दधि कारने कौन बढावै रारि । या बन में इत रात हौ रोकि पराई नारि ॥ २२ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ लियो उपरैना छीन दूरि डारनि अट कायो । दयो सखनि दधि बांटि माट पुहुमी ढरकायो ॥ पट पीतांबर सांवरे कर पलास के पात । हंसत परस्पर ग्वाल सब हो बिमल बिमल दधि खात ॥ २३ ॥ कहत व्रज नागरी ॥ कान्ह बहेरी देहु मही जोबन के माते । बसिये एकहि गांव कानि राखति हैं ताते ॥ तबन कछू बनि आइहै ह्वै हौ बिरच निहारि । इन ग्वालिन को बल देखि हौ जब घरिहै लाड उतारि ॥ २४ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ गहि अंचल झक झोरि तोरि हारावलि डारी । मटुकी लई उतारि मोरि भुज कंचुकि फारी ॥ गुप्त सैन दै सावरे कामरि धरी दुराय । वा कामरि के कारने हो अभरन छियो छिड़ाय ॥ २५ ॥ कहति व्रजनागरी ॥ झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहि कीजै । कांच पोत गिरि जाय नंद घर गयो न पूजै ॥ बिनही लीन्हे आपि ये सेा कामरि को तोल । शंख मुदरिया जाय गिरि हो कान्ह तुम्हरो मोल ॥ २६ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ शिव बिरंचि सनकादि आदि तिनहूं नहि जानी । शेष सहस फन थक्यो निगम कीरति न बखानी ॥ तेरी सेां सुनि ग्वारिनी जो मेरे मन मांहि । भुवन चतुर्दश देखिये हो वा कामरि को छांहि ॥ २७ ॥ कहत व्रज नागरी ॥ जिनहि इतो परताप गायसेा कतहि चरावै । परदारा के जाय आपु कतु लज्जा पावै ॥ घरके बाढे रावरे बातें कहत बनाय । ग्वालन पै लै खातहौ हो जूठी छाक छिनाय ॥ २८ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ धेनु रूप मम देह करत कूतूहल न्यारे । गोकुल गुप्त विलास जानि को सके हमारे ॥ या वृन्दावन ग्वारिनी जित कित अद्भुत बेलि । तिहूं लोक में गाइये हो मेरी रसकी केलि ॥ २९ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ अबलों कीन्ही कानि कान्ह अब तुमसों लरिहैं । अधर नयन रस कोप बिरचि अनत उर करिहैं ॥ मो आगे को छोहरा जीत्यो चाहै मोहि । काके बल इतरात हो काढेहौगी नख सिख तोहि ॥ ३० ॥ कहत नंद लाडिले

चितै बदन मुसुकात हाथ दधि पूरन दोना । इत सुंदरी बिचित्र उतहि घन श्याम सलोना ॥ अति तामस तोहि ग्वारिनी मैं सब जानत आदि । खोटी करनी जाहिकी हो सोई करै उपादि ॥ ३१ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ तोहि न छाडौ कांन्ह दान तुमको नहि देहौ । बिना कहे व्रज लोग कहा काहू पति ऐहौ ॥ लाज नही तुम आवही बोलत जब सत राय । कतहुं कंस सुनि पावइ हो है गहत फिरहु गे पाय ॥ ३२ ॥ [कहत नंद लाडिले ॥ सुनत हंसे नंद लाल ग्वारि जिय तामस मान्यो । सींच्यो अमृत बैन कोप करपत नहि जान्यों ॥ कहां बसति है बावरी सुरीपुर मुग्ध गंवारि । व्रज बासी कछ जानहीं हो तामस को ब्योहारि ॥ ३३ ॥ कहति व्रजनागरी ॥ जननी जनि परिहरी तात कुल धर्म नसायो । गोप रायके गेह पुत्र ह्वै नाम धरायो ॥ इतने ते इतनो कियो खाटी छछि पिवाय । तुमहि दोष नहि लाडिले हो ओछो गुन क्यों जाय ॥ ३४ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ अबिगत अगम अपार आदि नाही अबि नासी । परम पुरुष अवतार माया जाकी है दासी ॥ तुमहि मिले ओछे भये कहा रही करि मौन । तुम रहि आगे न्याव है हो हैमह ओछो कौन ॥ ३५ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ हमहि ओछाई भई जबहि तुमको प्रति पाल्यो । तुम पूरे सब भांति मात पितु शंकट घाल्यो ॥ कहा चलत उपरा बढ अजहू खिसी न गात । कंस सोंह दै पूछिजै हो जिनि पटके ह्वै सात ॥ ३६ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ कंस केस निग्रहौं पुहमि को भार उतारौं । उग्रसेनसिर छत्र चमर अपने कर ढारौं ॥ मथुरा सुरनि बसायहौं असुर करौं जम हाथ । दनुज दमनबिरदा वलीहो साचो बिभुवन नाथ ॥ ३७ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ तब न कंस निग्रह्यो पुहमिको भार उतार्यो । चोरी जाये मातु गोद गोकुल पगु धार्यो । अब बहुत बनि आवती दूध दहीके मात । जो ऐसे बलवंत हौ तौ मथुरा काहे न जात ॥ ३८ ॥ कहत नंद लाडिले ॥ जौ जैहौं मधुपुरी बहुरि गोकुल नहि ऐहौं । यह अपनको परताप नंद जशुमतिहि सुनैहौं । बचन लागि मैं हौं कियो जशुमति को पय पान । मोहि ग्वाल जिनि जानहूं हो ग्वालिनि सुनहु निदान ॥ ३९ ॥ कहति व्रज नागरी ॥ तब दधि आगे धर्यो कान्ह लीजै जो भावै । खाय जाय मंजार काज एको नहि आव । हम अनखीया बातको लेत दानको नाउं । सहज भाव नित खाडिले हो बसत एकही गाउं ॥ ४० ॥ कहत नंद लाडिले ॥ अभरन दियो मगाय कियो गोपिन मन भायो । हिलि मिलि बढो बिलास आपु हरि माठ उठायो । नंद नंदन छबि देखि कैं गोपिन वार्यो प्रान । कुंज केलि मन में बसी हो गाई सूर सुजान ॥ ४१ ॥ १५३ ॥ राग बिलावल ॥ जबहि कान्ह यह बात सुनाई । व्रज जुबती अति गई मुरझाई । कंस संघारन मथुरा जैहौं । बहुरो फिरि व्रजको नहि ऐहौं । देवकि गर्भ बासहौं लीन्हों । तुमको गोकुल दरसन दीन्हों । नंद जशोदा अति तपु कीन्हों । मोसो पुत्र मागि तब लीन्हों । मोसो दूजो और न कोई । हरता करता मैहौं सोई । तुमसो सुत मैं पांउ काजं । यह तुमसों मैं मागे पाऊं । मोसो सुत तुमको मैं दैहों । मथुरा जनमि गोकुलहि ऐहों । नंद जशोदा बचन बंधायो । ता कारन देही धरि आयो । यह बानी

सुनि ग्वारि झुरानी । मौन भयो मानों बिनु पानी । यहै कथा तब गरग सुनाई । सोई आपु कहत री माई । नर देही करि मोहि न जानो । ब्रह्म रूप करि मोको मानों । षोडस बरष मिलै सुख करिहौ । मथुरा जाय देव उद्धरिहौ । केस गहौं अरि कंस पछारौं । असुर कढोरि जमुन मह डारौं । रंग भूमि करि मल्लनि मारौं । प्रबल कुबलया दंत उखारौं । सुनहु नारि हरि मुखकी बानी । यह सुनि सुनि तरुनी अकुलानी । तन मन धन इन पर सब वारहु । जोबन दांन देहु रिस पारहु । षोडस बरस गये धौं जैहै । ब्रजते जाय मधु पुरी रैहैं । राजा उग्रसेन को करि हैं । कनक दंड आपुन कर धरि हैं । मात पिता बसुदेव देवकी । जग्यु मति धाय कहत है इनकी । अब तिनके बंधन मोचहिंगे । दरस बिना पुनि हम लोचहिंगे । मथुरा नारिनको सुख दैहैं । तब घट प्रांत कहौ बरु रैहैं । कहत सखी यह बात अयानी । जानतिनहि तुम कछू सयानी । जोबन दांन लेहिंगे तुमसों । चतुरायो मिलवत हैं हमसों । इनके गांस कहारी जानों । इनकी कही एक जिनि मानों । जो चाहै सो दीजै इनको । ज्यों बिन देखे रहत न जिनको । आपु आपु यह बात बिचारौ । नारि नारि मन धीरज धारौ । आगे धरौ दूध दधि माखन । प्रथमहि यह कीजै संभाषन । बडे चतुर तुम कुंवर कन्हाई । तरुनि सबनि कहि बहै सुनाई । जानी बात तुम्हारे मनकी । दूरि न कीजै यह रिस तनकी । सबनि धर्यो दधि माखन आगे । लेहु सबै तुम बिनही मागे । तुम रिस करत देखि सुख पावैं । याते बारं बार खिझावैं । तन जोबन धन अर्पन कीन्हों । मन है मन हरिको सुख दीन्हों । सुभग पात दोना लै हाथनि । बैठे सखा श्याम एक साथनि । मोहन खात खवावति नारी । मागि लेत दधि गिरिबर धारी । आपुहि धन्य कहति ब्रज नारी । रुचि करि मागि खात बनवारी । और खाहु मोहन दधि दानी । यह कहि कहि तरुनी मुसुकानी । सुख दीन्हो हरि अंतरजामी । ब्रज जुवतिनके पूरन कामी । देखत रूप थकितब्रज नारी । देहगेह की सुधौ बिसारी । सूर श्याम सबको हित कारी । कछो जाहु घर घोष कुमारी ॥ १५४ ॥ राग राम कली ॥ जुवती ब्रज घर जान बिचारति । कबहूं मटुकी लेति शीसपर कबहु धरनि फिरि धारति । देखत श्याम सखा सब देखत चित रहैं ब्रज नारि । रीती मटुकिन में कछु नाहीं सकुची मनहि बिचारि । तब हंसि बोले श्याम जाहु घर तुमको भई अवार । सकुचति दान पाछिलेको तुम मैं करि हौ निरवार । यह कहिके हरि जबहि सिधारे जुबतिन दान मनाई । सूर श्याम नागर नारिनके चित लै गये चुराई ॥ १५५ ॥

॥ अथ दान लीलाको प्रस्ताव ॥

राग अलहिया ॥ रीती मटुकी शीस लै चली घोष कुमारी । एक एककी सुधि नहीं को कैसी नारी । बनही में बेंचति फिरैं घरकी सुधि डारी ॥ लोक बेद कुल कानि

की मरजादा टारी । लेहुलेहु दधि कहतिहै बन सोर पसारी । द्रुम सब थिर करि जानहीतिनकौ दै गारी । दूध दह्यो नहि लेहुरी कहि कहि पचिहारी । कहति सूर घरको नहीं कहां गई दई मारी ॥ १ ॥ राग टोडी ॥ या घरमें कोउ है की नाहीं । बार बार बूझति दच्छिनको गोरस लै हम जाहीं । आपुहि कहति लेहु नाहीं दधि और द्रुमनि तर जाति । मिलत परस्पर बिबस देखि तेहि कहति कहा इतराति ताको कहति आपु सुधि नाहि न सो पुनि जानति नाहि । सूर श्याम रस भरी गोपिका बनमें जोवति ताहि ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ रीती मटुकी शीस धरै । बनकी घरकी सुरतिन काहू लेहु दही यह कहति फिरै । कबहुंक जाति कुंज भीतरको तहां श्याम की सुरति करै । चौंकि परति कछु तन सुधि आवति जहां तहां सखि सुनत ररै । तब यह कहति कहौं मैइनसों भ्रमि भ्रमि बनमें वृथा मरै । सूर श्याम के रस पुनि छाकति वै सेहि ढंग बहुरिन टरैहै ॥३॥ राग नट ॥ तरुनी श्याम रस मतवारि । प्रथम जोबन रस चढायो अतिहि भई खुमारि । दूध नहि दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट । महा रस अंग अंग पूरन कहा घरकह बाट । मात पित गुर जन कहां को को पति को नारि । सूर प्रभुके प्रेम पूरन छकि रही व्रज नारि ॥ ४ ॥ राग राम कली ॥ गोरस लेहु री कोउ आय ॥ द्रुमनि सो यह कहति डोलति कौन लेहि बुलाय ॥ कबहुं बंसीबट निकट जुरि होत ठाढी धाय । लेहु गोरस दान मोहन कहां रहे छपाय । डरनि तुमरे जाति नाहि न लेत दृहंगि छडाय । मागि लीजै दान अपनो कहति हैं समुझाय । आइ है पुनि रिस करत हरि दह्यो देत बहाय ॥ एक एकहि बात बूझति कहां गये कन्हाय भई रस उन्मत्त गोपी तनकि सुधि बिसराय । सूर प्रभु के रंग राची जिय गयो भरमाय ॥ ५ ॥ राग जैतश्री ॥ बैठि गई मटुकी सब धरिकै । यह जानत अबही है आवत ग्वाल सखा संग हरिकै ॥ अंचर सो दधि माट दुरावति दृष्टि गई तहं परिकै । सबनि मटुकिया रीती देखी तरुनी गई भभरिकै ॥ कहि कहि उठीं जहां तहं सब मिलि गोरस गयो कहुं ढरिकै । कोउ कोउ कहति श्याम ढरकायो जान देहुरी जरिकै ॥ यहि मारग कोऊ जिनि आवहु रिस करि चलौं डगरिकै । सूर सुरत तनकी कछु आई उतरत काम लहरिकै ॥ ६ ॥ राग नट ॥ चकृत भई घोष कुमारि । हम नहीं घर गई तबतें रहीं बिचारि बिचारि ॥ घरहि तें हम प्रात आई सकुचि बदन निहारि । कछु हंसति कछु डरति गुरजन देत ह्वै ह्वै गारि ॥ जो भई सो भई हम कह रहीं इतनी नारि । सखा संग मिलि खाय दधि तबही गये बनबारि ॥ यहां लौं की बात जानति यह अचंभव भारि । यहै जानति सूर के प्रभु गये सिर कछु डारि ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम बिना यह कौन करै । चितवत हौं मोहनी लगावत नेक हंसनि परम नहि हरै ॥ रोकि रह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधि दान लियो । तनकी सुधि तबहीं ते भूली कछु पढि के सिर नाय दियो ॥ मन के करति मनोरथ पूरन चतुर नारि यहि भांति कहै । सूर श्याम मन हरो हमारो तेहि बिनु कहि कैसें निबहै ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ मन हरि सों तन घरहि चलावत । ज्यों गज मत्त जाल अंकुस कर घर गुरजन सुधि आवत ॥

हरि रस रूप यहे मद आवत डर डारत्रो जु महावत । ग्रेह नेह बन्धन पग तोरत्रो प्रेम सरोवर धावत ॥ रामावलो सूडि बिबि कुच मनो कुम्भ स्थल छवि पावत । सूर श्याम के हरि सुनि कै जोवन गज दापन पावत ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ युवति भई घर नेंकु न भावत । मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और बनावत ॥ गारी देत सुनत नहि ने कहु श्रवन शब्द हरि पूरे । नयन नही देखत काहू कों जो कहुं होहि अधूरे ॥ बचन कहति हरि हीके गुन कों उतही बचन चलावै । सूर श्याम बिनु और न भावै कोउ कितनौ समुझावै ॥ १० ॥ राग सोरठ ॥ लोक सकुच कुल कानि तजी । जैसें नदी सिंधु कों धावै वैसेहि श्याम भजी ॥ मात पिता बहु त्रास दिखायो नेकु न डरी लजी । हारि मानि बैठे नहि लागत बहुतें बुद्धि सजी ॥ मानत नहीं लोक मरजादा हरि के रंग मंजी । सूर श्याम को मिलो ग्वालिनी चून हरद ज्यो रंग रंजी ॥ ११ ॥ राग सोरठ ॥ बार बार जननी समुझावति । काहे को तुम जहं तहं डोलति हमकों अतिहि लजावति ॥ अपने कुलको खबरि करो धों सकुच नहीं जिय पावति । दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति ॥ यह सुनि के मन हरष बढावति तब इक बुद्धि बनावति । सुनि मैया दधि माट लुढ़ायो तेहि डर बात न आवति ॥ जान देहु कितनो दधि डारत्रो ऐसे तब न सुनावति । सुनहु सूर यह बात डरानी माता उर लै लावति ॥ १२ ॥ राग सारंग नेक नहीं मन घरसों लागत । पिता मात गुरुजन पर मोधत नीके बचन बान सम लागत ॥ तिनको धृग धृग कहति मनहि मन इन कों बनै भलेही त्यागत । श्याम बिमुख नर नारि वृथा सब कैसें मन इनसों अनुरागत ॥ इनको बदन प्रात दरसो जिनि बार बार बिधि सों यह मागत । यह तन सूर श्याम कों अर्प्यो नेक टरत नहि सोवत जागत ॥ १३ ॥ राग धनाश्री ॥ पलक ओट नहि होत कन्हाई । घर गुरुजन बहुती बिधि त्रासत लाज करावति लाज न आई ॥ नैंन जहां दरशन हरि अटके बैन थके सुनि बचन सुहाई । रसना अवरि कछु नहिं भाषति श्याम श्याम रट इहै लगाई ॥ चित चंचल संगहि संग डोलत लोक लाज मरजाद मिटाई । मन हरि लियो सूर प्रभु तब हीं ता बपुरे की कहाबसाई ॥ १४ ॥ राग बिलावल ॥ चलीं प्रातही गोपिका मटुकि न लै गोरस । नैन श्रवण मन चित्त बुद्धि ये नहि काहू बस ॥ तनु लीन्हे डोलत फिरै रसना अटक्यो जस ॥ गोरस नाम न आवहीं को लै है हरि रस । जीव परत्रो या ख्याल में अरु गयो दिशा दश ॥ बूझे जाय खग वृन्द ज्यों पिय छवि खटकनि खश छांडिहु दिये उडत नहीं कीन्हो पाव तश ॥ सूर दास प्रभु भोंह की मटकनि फांसी गश ॥ १५ ॥ राग कान्हरो ॥ दधि बेचत व्रज गलिन फिरैं ॥ गोरस लेन बुलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु न करैं ॥ उनकी बात सुनत नहि श्रवणनि कहति कहा ये घरनि जरैं । दूध दह्यो हमां खेत न कोऊ प्रातहि तसिर खिये ररैं ॥ बोलि उठति पुनि लेहौं गोपालहि थर थर लोक लाज निदरैं । सूर श्याम को रूप महारस जाके बल काहू न डरैं ॥ १६ ॥ राग कान्हरो ॥ गोरस को निज नाम भुलायो । लेहु लेहु कोऊ गोपालहि गलिन गलिन यह सोर लगायो ॥ कोउ कहै श्याम कृष्ण हैं काहूं

आजु दरश नाहीं हम पायो । जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दही कहि तिन्ह हि सुनायो । यह कहि उठति दान मांगत हरि कहूं भई की तुम्हहू चलायो । सुनहु सूर तरुनी जोबन मद तापर श्याम मधुरस खायो ॥ १७ ॥ राग कान्हरो ॥ ग्वालि फिरति बेहालहिसों । दधि मटुकी सिर लीन्हे डोलति रसना तट गोपालहि सों ॥ ग्रेह नेह सुधि देह बिसार्यो जीव पर्यो हरि ख्यालहि सों । श्याम धाम निज बास रच्यो मन रहित भई जंजालहिसों ॥ छलकत तक्र उफनि अंग आवत नहिं जानति तेहि कालहि सों ॥ सूर दास चित ठौर नहीं कहुं मन लाग्यो नंद लालहिसों ॥ १८ ॥ राग मलार ॥ कोऊ माई लैहेरी गोपालहि ॥ दधिको नाम श्याम सुन्दर रस बिसरि गयो ब्रजबालहि । मटुकी शीश फिरति ब्रज बीथिनि बोलत बचन रसालहि ॥ उफनत तक्र चहूं दिसि चितवति चित लाग्यो नंद लालहि । हंसति रिसाति बुलावति बरजति देखहु उलटी चालहि ॥ सूरश्याम बिनु अबरन भावत या बिरहिन बेहालहि ॥ १९ ॥ राग सुघराई ॥ छोटी मटुकिया मधुर लै चली री गोरस बेचन रसाल । हर बराय उठि आई प्रात तें बिथुरी अलक अरु बसन मरगजे तैसिये सोहति कुंमिलानी माल ॥ गेहनेह सुधि नेक न आवति मोहि रहीतजि भवन जंजाल । औरे कहति औरकहि आवत मनमोहनके परीसुख्याल ॥ जोई जोई बूझत हैरी कहा ह यामें कहति फिरति कोउ लेउ गोपाल ॥ तन मन की सब सुरत भुलानी रटना लागी कृष्णरसाल । सूरदास प्रभु केरस बस भई चतुर ग्वालिनी तन मन गति मति भई बेहाल ॥ २० ॥ राग कान्हरो ॥ दधि मटुकी सिर लिये ग्वालिनी कान्ह कान्ह करती डोलैरी । बिबस भई तनु न सम्हारैरी गोरस सुधि बिसरि गई आपु बिकानी बिनु मोलै री ॥ जोइ जोइ पूछत यामें है री कहा लेउ लेउ करति फिरति टोलटोलैरी ॥ सूरदास प्रभु के रस बस भई ग्वालिनि बिरहा बस तनु गति भई लैरी ॥ २१ ॥ राग धनाश्री ॥ बेचतही दधि ब्रजकी खोरी । सिरको भार सुरत नहि आवत श्याम श्याम टेरत भइं भोरी ॥ घर घर फिरति गोपालहि बेचति मगन भईं सब ग्वालि किसोरी । सुन्दर वदन निहारन कारन अन्तर लगी सुरति की डोरी ॥ ठाढी रहति बिथकि मारगमें मांझ हाट मटुकी सिर फोरी । सूरदास प्रभु रसिक सिरोमणि चित चिंता मणि लियो अजोरी ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ नर नारी सब बूझत आईं । दही मही मटुकी सिर लीन्हे बोलति हौ गोपाल सुनाईं ॥ हमहि कहोतुम करति कहा यह फिरतहि प्रातहि ते हौं आई । ग्रह दारा कछु हैं की नाही पिता मात पति बंधु न भाई ॥ इततें उत उततें इत आवति विधि मर्यादा सबै मिटाई । सूर श्याम मन हर्यो तुम्हारो हम जानी यह बात बनाई ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ कहति नंद घर मोहि बता वउ । हारहि मांझ बात यह बूझति बार बार कहै कहां देखावउ ॥ येही गांव किधों और कहूं जहां महर को गेउ । बउत दूरितें नैंआई हौं कहि काहि न जस लेउ ॥ अतिही संभ्रम भई ग्वालिनी हारेही पर ठाढी । सूरदास स्वामी सों अटकी प्रीति प्रकट अति बाढी ॥ २४ ॥ राग राम कली ॥ चर्चरी ॥ ग्वालिनी नंद द्वारे नंद गेह बुझै । इतहीतें जाति उत उतहितें

फिरति इत निकट ह्वै जाति नहि नेक सूझै ॥ भई बेहाल ब्रज बालनंदलाल हित अर्पि तन मन सबै तिनहि दीनो । लोक लज्जा तजी लाज देखत लजी श्याम को भजी कछु डर न कीनो ॥ भूलि गयो दधि नाम कहति लेहो श्याम नहीं सुधि धाम कहूं है कि नाही । सूर प्रभुको मिली भेटि भली अनभली चून हरदी रंग देह छाही ॥ २५ ॥ राग राम कली ॥ तब एक सखी प्रीतम कहति । प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हो धीर काहेन गहति ॥ ब्रज घरन उपहास जहं तहं समुझि मन किनि रहति । बात मेरी सुनति नाहिन कहति निंदा सहति ॥ मात पितु गुरु जननि जान्यों भली खोई महति । सूर प्रभुको ध्यान चित धरि अतिहि काहे बहति ॥ २६ ॥ राग धनाश्री ॥ आपु कहावति बड़ी सयानी । तब तू कहति सबनिसों हंसि हंसि अब तू प्रकटहि भई दिवानी ॥ कहां गई चतुराई तेरी अतिही काहे भई अयानी । गुप्त प्रीति प्रकट तें कीन्हीं सुनत कछू घर घर की बानी ॥ एकहि बेर तजी मरजादा मात पिता गुरु जनहि भुलानी । सुनहु सूर ऐसी न बूझिये सीस धरे मटुकी बिततानी ॥ २७ ॥ राग नट ॥ सुनिरी ग्वालिनि मुग्ध गंवारि । श्याम सों हित भले कीन्हो अब कोसकै उबारि ॥ कृष्ण घन कहा प्रकट कीजै दियो ताहि उघारि अजहुं काहेन समुझि देखति कह्यो सुनिरी नारि ॥ ओछि बुधि तें करी सजनी लाज दीन्ही डारि । लाज आवति मोहि सुनिरी तोहि कहति गंवारि ॥ ज्वाब ताहिन आवई मुख कहति हों जु पुकारि । सूर प्रभुको पाइके यह ज्ञान हृदय विचारि ॥ २८ ॥ राग कान्हरो ॥ कछु कैहै की मौनहि रै है । कहा कहति हौं तोसों तबतें ताको ज्वाब कछू मोहि दैहै ॥ सुनि है मात पिता लोगनि मुख यह लीला उनि सबनि जनैहै । प्रातहि तें आई दधि बेचन घरहि आजु जैहै कि न जै है ॥ मेरो कह्यो मानि है नाही ऐसेहि भ्रमि भ्रमि द्योस बितै है । मुखतो खोलि सुनौं तेरी बानी भली बुरी कैसी धों कै है ॥ गुप्त प्रीति काहे न करि हरि सों प्रकट किये कछु नफा बढै है । सूर श्यामसों प्रीति निरंतर लाज किये अन्तर कछु ह्वै है ॥ २९ ॥ राग कान्हरो ॥ कहा कहति तू मोहि री माई । नट नन्दन मन हरि लियो मेरो तबतें मोकों कछु न सुहाई ॥ अबलों नहि जानति मैं कोहौं कबतें तू मेरे ढिंग आई । कहां ग्रेह कहां मात पिता है कहां सजन गुरुजन कहूं भाई ॥ कैसी लाज कानि है कैसी कहा कहति है ह्वै रिस हाई । अबतो सूर भजी नंद लालहि की लघुता की होय बड़ाई ॥ ३० ॥ राग धनाश्री ॥ बार बार मोहि कहा सुनावति । नेकहुं नांहि टरत हिरदय तें बहुत भांति मनको समुझावति ॥ दूषन कहा देति मोहि सजनी तू तो बड़ी सुजान । अपनी सी मैं बहुतै कीन्ही रहत न तेरी आन ॥ लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान । सूर श्याम को बेगि मिला बहु कहत रहत घट प्रान ॥ ३१ ॥ राग नट ॥ मेरे कहे मै कोउ नाहि । कहा कहूं कछु कहि नहि आवै नेकहुनांहि डराहि ॥ नयना ये हरि दरशन लोभे श्रवण शब्द रसाल । प्रथमही मन गयो तन तजि तब भई बे हाल ॥ इन्द्रियनि पर भूप मन है सबनि लिये बुलाय । सूर प्रभुको मिले सब ये मोहि कहि गये बाय ॥ ३२ ॥ राग गौरी ॥ कहा करौं मनही थिर नही । तू मोसों यह कहति भलीरी अपनो चित मोहि देति नही ॥

नयन रूप अटके नहि आवत श्रवण रहे सुनि बात तही । इन्द्री धाय मिली सब उनको तनमें जीव रह्यो संगही ॥ मेरे हाथ नही ये कोऊ घट लीन्हे एक रही मही । सूर श्याम संगते कहूं टारत आनि देहु जौ मोहि तही ॥ ३३ ॥ राग सारंग ॥ बिकानी हरि मुखकी मुसुकानी । पर वस भई फिरति संग निस दिन सहज परी यह बानो ॥ नयननि निरखि बसीठी कीन्हों मन मिलयो पय पानी । गहि रति नाथ लाज निज पुरतें हरिको सौंपी आनी ॥ सुनि सखि सुमुखि नंद नन्दन की दासी सब जग जानी । जोइ जोइ कहत करत सोई छत आयसु माथे मानी ॥ गई भ्राति अभि मान मोह मद पति परिजन पहि चानी । सूर सिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूंद हिरानी ॥ ३४ ॥ राग गौरी ॥ अबतौ प्रकट भई जग जानी । वा मोहनसों प्रीति निरंतर क्यों बरहै गी छानी ॥ कहा करों सुंदर मूरति इन नयननि मांझ समानी । निकसत नही बहुत पचिहारी रोम रोम अरुझानी ॥ अब कैसे निर्वारि जाति है मिले दुग्ध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अन्तर जामी उर अन्तर की जानी ॥ ३५ ॥ राग गौरी ॥ कहा करैगो कोऊ मेरो । हों अपने पति व्रतहि न टरि हौं जग उपहास करै बहुतेरो । कोउ किनि लै पाछै मुख मोरैं कोउ कहै श्रवण सुनाय न टेरो ॥ हों मति कुशल नाहिने काची हरि संग छांड़ि फिरों भव फेरो । अबतो जिय ऐसिय बनि आई श्याम धाम मैं करों बसेरो ॥ तिहि रङ्ग सूर रह्यो मिलि कै मन होय न खेत अरुण फिरि पेरो ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ माई री गोबिंदा सों प्रीति करत तबही काहे न हट कीरी । यह तौ अब बात फैली भई कुञ्ज बट कीरी ॥ घर घर नित यहै घेर बानी घट घट को । मैं तौ यह सबै सही लोक लाज पट को ॥ मद के हस्ती समान फिरति प्रेम लटकी । खेलत में चूकि जात होत कला नट की ॥ जल रज्जु मिली गांठि परी रसना हरि रटकी । छोरेंते नहीं छूटति कयुक बार झट की ॥ मेटे क्योंहो न मिटति छाप परी टटकी । सूर दास प्रभु की छवि हृदय मांझ अट की ॥ ३७ ॥ राग आसावरी ॥ मैं अपनों मन हरिसों जोरयो । हरि सों जोरि सबनि सों तोरयो ॥ नाच नचौ तब घूंघट छोरयो । आगें पाछें नीके हेरयो ॥ लोक लाज सब फटकि पछोरयो । माझ बाट मटुकी सिर फोरयो ॥ कहि कहि कासों करति निहोरयो । कहा भयो कोऊ मुख मोरयो ॥ सूर दास प्रभु सों चित जोरयो । लोक बेद तिनुका सों तोरयो ॥ ३८ ॥ राग आसावरी ॥ सखीरी श्याम सों मन मान्यों । नीके करि चित कमल नयन सों घालि एकठो सान्यों ॥ लोक लाज उपहास न मान्यों न्योंति आपनेहि आन्यों । या गोबिंद चंद के कारन वैर सबनि सों ठान्यों ॥ अब क्यों जाति निबेरि सखीरी मिल्यो एक पय पान्यों । सूर दास प्रभु मेरे जीवन हौं पहिलेहि पहिचान्यों ॥ ३९ ॥ ॥ राग आसावरी ॥ नंद लाल सों मेरो मन मान्यों कहा करैगो कोई री । मैं तो चरण कमल लपटानी जोभावै सो होई री ॥ बाप रिसाय माय घर मारे हंसे बिराने लोई री । अब तौ श्यामहि सों रति बाढो बिधना रच्यौ संजोई री ॥ जाति महति पति जाइन मेरी अरु पर लोक नसाई री । गिरिधरवर मैं नेंक न छांड़ौ मिलौ निसान बजाई री ॥ बहुरि कबहि यह तनु धरिबै हों कहं पुनि श्री बनवारी री । सूर दास स्वामी के ऊपर यह तनु डारौं

बारोरी ॥ ४० ॥ राग सारङ्ग ॥ करन दे लोगनि कों उपहास । मन क्रम बचन नंद नंदन कौ नेकन छाडौं पास ॥ सब मधुवन की लोक चिकनिया मेरे भायें घास । अब तौ वहै बसो री माई नहि मानों गुरु चास ॥ कैसें रह्यो परैरी सजनी एक गांव को वास । श्याम मिलन की प्रीति सखोरी जानत सूरज दास ॥ ४१ ॥ राग रामकली ॥ एक गांव को वास धीरज कैसे कें धरौं । लोचन मधुप अटक नहि मानत यद्यपि यतन करौं ॥ वे येही मग नित प्रति आवत हैं हो दधि लै निकरौं । पुलकित रोम रोम गदगद सुर आनंद उमगि भरौं ॥ पल अन्तर चलि जात कलप वर विरहा अनल जरौं । सूर सकुचि कुल कानि कहां लगि आरजपथहि डरौं ॥ ४२ ॥ रागरामकली ॥ मेरो मन हरि चितवनि अरुझानों । फेरत कमल हार ह्वै निकसे करत सिंगार भुलानों ॥ अरुण अधर दशननि दुति राजत मोतन मुरि मुसिकानों । उदधि तनय सुत प्रांति कमलको बन्दन भुरके आनों ॥ यहि रस मगन रहति निशि बासर हरि तजि और न जानों । सूर दास चित भंग होत क्यों जो जेहि रूप समानों ॥ ४३ ॥ राग रामकली ॥ हों सङ्ग सांवरे के जैहों । होनी होय होय सो अबही यश अपयश काहू न डरैहों ॥ कहा रिसाय करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्रान तिहि दैहों । दैहों त्याग राखि हों यह व्रत हरि रति बीज बहुरि कबवैहों ॥ का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि अकाश पिय भौन समैहों । का यह ब्रज बासी क्रीड़ा जल भजि नद नन्दन सब सुख लेहों ॥ ४४ ॥ राग धनाश्री ॥ तू मेरेहि हित कहति सहीरी । यह मोकों सुधि भली दिवाई तन बिसरे मैं बहुत बहीरी ॥ जबतें दान लयो हरि हमसों हंसि हंसिरी कछु बात कहीरी । काके घर काके पितु माता काके तनकी सुरति रहीरी ॥ अब समुझति कछु तेरी बानी आई हों लै मही दहीरी । सुनहु सूर प्रात हि तें आई यह कहि कहि जिय लाज गहीरी ॥ ४५ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनि री सखी बात इक मेरी । तोसों धरों दुराय काहे कों हितु जानहि सब चित की मेरी ॥ मैं गोरस लिये जाति अकेली काल्हि कान्ह बहियां गहि मेरी । हार सहित अंचरा गह्यो गाढे एक कर गही मटुकिया मेरी ॥ तब मैं कह्यो खीझि हरि छांड़हु टूटैगी मोतिन लर मेरी । सूर श्याम ऐसे मोहि रिझई कहा कहति तू मोसों मेरो ॥ ४६ ॥ राग धनाश्री ॥ तौ न गोरस छांड़ि दयो । चहुं फल भवत गह्यो सारङ्ग रिपु बाजि धुरा अधयो ॥ अमिय बचन रुचि रचित कपट हठि झगरो फेरि ठयो । कुमुदिन प्रफुल्लित हों जिय सकुची लै मृग चन्द नयो ॥ जानि निसा सिशु रूप विलोकत नवल किशोर भयो । तबतें सूर नेंक नहि छूटत मन अपनाय लयो ॥ ४७ ॥ राग रामकली ॥ यह कहि मौन साध्यौ ग्वारि । श्याम रस घट पूरि उछलित बहुत धरयो संम्हारि ॥ वैसेही ढंग बहुरि आई देह दशा बिसारि ॥ ॥ लेहुरी कोउ नंद नन्दन कहै पुकारि पुकारि । सखीसों तब कहति तूरी को कहां की नारि ॥ नन्द के घर जांहु कित ह्वै जहां है बनवारि । देखि वाकों चकृत भइ सखि बिकल भ्रम गह नारि ॥ सूर श्यामहिं कहि सुनाउं गये सिरि कहा डारि । ४८ ॥ राग नट ॥ सखि एक गई हरि पै धाय । तुरतही हरि मिले ताकों प्रकट कही सुनाय ॥ नारि एक अति परम सुन्दरि बरनि कापै जाय । प्रात तें सिर धरे मटुकी नंद घर भरमाय ॥ लेहु

लेउ गोपाल कों कहि दह्यो गई भुलाय । सूर प्रभु कहूं मिले ताकों कहति करि चतुराय ॥ ४९ ॥ राग कान्हरो ॥ नन्द ग्राम को मारग बूझै कोऊ दधि बेचन हारी । सुनहु न श्याम कठिन तनु गोरे विधु बदनी अरु हाटक ढारी ॥ अप या को सुत ताहि बिरंचै ताहि बिरंचि सीस पर धारी । कमल कुरङ्ग चलत अरुना अख राख्यौ निकट निषंग संवारी ॥ गति मराल शावक ता पाछें जावक मुकता चुनत बिसारी । सूर दास प्रभु कहत बनै नहि सुख सम्पति दृषभान दुलारी ॥ ५० ॥ ॥ राग बिलावल ॥ सिर मटुकी मुख मौन गही ॥ भ्रमि भ्रमि विवस भई नव ग्वालिनि नवल कान्हके रस उमही । तनकी सुधि आवति जब मनही तबहि कहति कोउ लेहु दही ॥ द्वारें आइ नंदके बोलति कान्ह लेहु किनि सरस मही । इत उत चौंकै आवति फिरि यह ही महरि तहां गहि डारि रही ॥ और बुलावति ताहिन हेरति बोलति आनि नंद दरही । अंग अंग जशुमति तेहि चरची कहा कहति यह ग्वारि बही । सुनहु सूर यह ग्वारि दिवानी कबकी एही ढंग रही ॥ ५१ ॥ राग राम कली ॥ कबकी मह्यो लिये सिर डोलै । झूठेही इत उत फिरि आवति यहां आनिपै बोलै । मुहखों भरी मथनियां तेरी तोहि रटत भई सांझ ॥ जानति हौं गोरसको लैबो याही बाखरि मांझ ॥ इततें आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनि मानै ॥ तेरे घरमें तुही सयानी और बेदि नहि जानै । भ्रमतहि भ्रमत भरमि गइ ग्वालिनि बिकल भई बेहाल ॥ सूर दास प्रभु अंतरजामी आय मिले गोपाल ॥ ५२ ॥ राग राम कली ॥ भई मन माधोको अवसेरि ॥ मौंन धरे मुख चितवति ठाढी ज्याव न आवै फेरि । तब अकुलाय चली उठि बनको बोले सुनति नटेरि ॥ बिरहा बिबस चहूंधां भरमति श्याम कहा कियो झेरि । आवहु बेगि मिलहु नंद नंदन दान न करो निबेरि ॥ सूर श्याम अंकम भरि लीनी दूरि कियो दुख ढेरि ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ॥ सांची प्रीति जानि हरि आये ॥ पूरन नेह प्रकट दरसाये । लई उठाय अंकम भरि प्यारी ॥ भ्रमि भ्रमि श्रम कीन्हों तनु भारी ॥ मुख मुख जोरि आलिंगन लीन्हों । बार बार भुज भरि उर लीन्हों ॥ वृन्दा बन घन कुंजलतातर ॥ श्यामा श्याम नवल नवला बर । मन मोहन मोहनि सुख कारी । कोक कला गुण प्रकट भारी । छूटे बंद अलक सिर छूटे । मोतिन हार टूटि सुख लूटे । सूर श्याम बिपरीति बढाई । नागरि सकुचि रही लपटाई ॥ ५४ ॥ राग नट ॥ श्यामा श्याम करत बिहार ॥ कुंज गृह रचि कुसुम सज्या छबि बरनि को पार । सुरत सुख करि अंग आलस सकुचि बसन संभारि । परस्पर भुज कंठ दीन्हें बैठि है बर नारि । पीन कंचन बरन भामिनि श्याम तनु अनुहारि । सूर घन अरु दामिनी मिलि प्रकट सुख बिस्तारि ॥ ५५ ॥ राग कान्हरो ॥ राधे बसन श्याम तन चीन्हों । सारंग बदन बिलास बिलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्ही ॥ सारंग बचन कहति सारंग रिपु है राखति पटकीनो । सारंग पानि गहति रिपु सारंग करते लीयो छीनी ॥ सुधा पान करि कुचनीकी बिधि रच्यो शेष मुद्रा फिरि दीन्हीं । सूर सुदेसआजि रति नागर भुज आकरषि बाम कर लीन्हीं ॥ ५६ ॥ राग कान्हरो । तुम

सों कहा कहों सुंदर घन ॥ या ब्रज में उपहास चलत है सुनि सुनि श्रवण रहत मनहीं मन। जादिन सब न बछरा नोए करि मो दुहि दई धेनु बंशी बन। तुम गहि बांह सुभाय आपने हों चितई हसि नेक बदन तन । तादिनतें घर मारग जित तित करति चवाव सकल गोपी जन। सूर श्याम सों सांचि पारि हौ यह पति बरत सुनहु नंद नंदन ॥ ५७ ॥ राग भैरों ॥ कहा कहौं सुंदर घन तुमसों। घेरायहैं चलावत घर घर श्रवण सुनत जिय में खुनसों । बहिनी मात पिता बांधव गुरु जन यह कहै मोसों । राधा कान्ह एक संग बिलसत मनहीं मन अपसो सों ॥ कबहुंक कहै सबनि परि त्यागौ बुझति हौ अब गो सों । सूर श्याम दरसन बिन पाये नयन देत मोहि दोसों ॥ ५८ ॥ राग राम कली ॥ बात ए तुमसों कहति लजाऊं । सुनि न जात घर घरको घेरा कान्हा मुख न समाऊं ॥ नर नारी सब यहै चलावत राधा मोहन एक । मात पिता सुनि सुनि अति त्रासत मैं इकवै जुअनेक ॥ आपु जबहि द्वारे ह्वै निकसत देखत सबै सुगात ॥ नीदति तुमहिं सुनावति मोकों सुनत न नेक सुहात ॥ धृग नर धृग नारी धृग जीवन तुमहिं बिमुख धृग देह । सूर श्याम यह कोऊ न जानत तनु ह्वैहै जरिखेह ॥ ५९ ॥ राग गुर्जरी ॥ श्याम यह तुमसों क्यों न कहौं ॥ जहां तहां घर घर को घेरा कौने भांति सहौं ॥ पिता कोप कर बार लेत कर बंधु बधनको धावै । मात कहैं कन्या कुलकौं दुख जिनि कोऊ जग जावै । बिनती एक करौं कर जोरे यहि बीथी जिनि आवहु । जो आवहु तौ मुरलि मधुर धुनि मोहिनि कान सुनावहु ॥ मन क्रम बचन कहति हौं सांची मैं मन तुमहि लगायो । सूर दास प्रभु अंतर जामी कौन करहु मन भायो ॥ ६० ॥ राग राम कली ॥ हंसि बोले गिरिधर रस बानी ॥ गुरु जन खिझत कितहि सिख पावति काहेको पछितानी । देह धरेको धर्म यहै है सजन कुटुंब गृह पानी। कहन देहु कहि कहा करैंगे आगहि सुरति हिरानी । लोक लाज काहेको छोडति ब्रजही बसे भुलानी। सूर दास घट ह्वै करि बनये भेद नहीं कछु मानी ॥ ६१ ॥ राग जैतश्री ॥ ब्रज बसि काके बोल सहौं । तुम बिनु श्याम और नहिं जानौं सकुचनि तुमहि कहौं । कुलकी कानि कहा लै करिहौं तुमको कहां लहौं। धृग माता धृग पिता बिमुख तुव भावै तहां बहौं ॥ कोउ कछु करै कहै कछु कोऊ हरष न सोक गहौं । सूर श्याम तुमको बिनु देखे तन मन जीवद हौं ॥ ६२ ॥ राग जैतश्री ॥ ब्रजहि बसै आपहि बिसरायो। प्रकृति पुरुष एकै करि जानहु बातनि भेद करायो । जल थल जहां रहा तुम बिनुनहि बेद उपनिषद गायो । द्वैतन जीव एक हम तुम दोउ सुख कारन उपजायो ॥ ब्रह्म रूप द्वितिया नहि कोई तब मन चिया जनायो । सूर श्याम मुख देखि अलप हंसि आनद पुंज बढायो ॥ ६३ ॥ राग राम कली ॥ तब नागरि मन हर्ष भई । नेह पुरातन जानि श्यामको अति आनंद मई । प्रकृति पुरुष नारी मैं वे पति काहे भूलि गई । को माता को पिता बंधुको यह तौ मेटि लई । जनम जनम जुग जुग यह लीला प्यारी जानि लई । सूर दास प्रभु की यह महिमा यातें बिबस भई ॥ ६४ ॥ राग सूहो ॥ सुनहु श्याम मेरी बिनती ॥ तुम हरता तुम करता प्रभु जू मात पिता

कौनी गिनती । मैं बर मेटि चढावत रासभ प्रभुता मेटि करत बिनती । अबलों करी लोक मर्यादा मानौ थोरे ही दिनती । बहुरि बहुरि व्रज जनम लेतहौ यह लीला जानी किनती । सूर श्याम चरणन्तिं मोको राखत रहे कहां भिनती ॥ ६५ ॥ राग धनाश्री ॥ देह धरे को फल यह प्यारी । लोक लाज कुलकानि मानिये डरिये बंधु पिता महतारी ॥ श्री मुख कहो जाहु घर सुंदरि बड़े महर वृष भानु दुलारी ॥ तुव औसेर करत सब ह्वै है जाहु बेगि दै हैं पुनि गारी ॥ हम हु जांहि व्रज तुमहुं जाहु अब ग्रेह नेह क्यों दीजै डारी । सूर दास प्रभु कहत प्रिया सों नेक नहीं मोतें तुम न्यारी ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ देह धरे को कारन सोई । लोक लाज कुल कानि न तजिये जातें भलो कहै सब कोई ॥ मात पिता कों माने माने मान कुटुम्ब सब लोई । तात मातहू कों भावत तनु धरिकै माया वस होई ॥ सुनि वृष भान सुता मेरि बानी प्रीति पुरातन राखो गोई । सूर श्याम नागरहि सुनावत मैं तुम एक न ह्वै हों दोई ॥ ६७ ॥ राग सारंग ॥ अब कैसे दुजे हाथ बिकाऊं । मन मधु कर कीन्हों बा दिनतें चरण कमल निज ठाऊं ॥ जो जानौ औरै कोउ करता तऊ न मन पछिताऊं । जोइ जाको सोइ सो जानै अघतारन नर नाऊं ॥ या परतीति होय या युग की परमित छुटत डराऊं । सूर दास प्रभु सिंधु चरण तजि नदी शरण क़त जाऊं ॥ ६८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ निज गृह गमन ॥ * ॥

॥ राग विलावल ॥ घर पठई प्यारी अंकम भरि । कर अपने मुख परसि त्रिया के प्रेम सहित दोऊ भुज धरिधरि ॥ संग सुख लूटि हरष भरि हिरदय चली भवन भामिनि गज गति ढरि । अंग मरगजी सारी राजति छबि निरखत रीझत ठाढे हरि ॥ बेनी डुलति नितवनि पर दोऊ छोन लंक परवारैं केहरि । फिरि चितयो प्यारी तब पिय तन दुहूं न मन आनन्द हरष करि ॥ राधा हरि आधा आधा तनु एकै है व्रज में हैं अवतरि । सूर श्याम रस भरे उमगि अंग वह छबि देखि रह्यो रति पति डरि ॥ ६९ ॥ ॥ राग विलावल ॥ घरहि जात मन हरष बढायो । दुख डारयो सुख अंग भारि भरि चली लूटि सो पायो ॥ कुंज भवन हरि संग बिलसि रस मन कों सुफल करायो । तह एक सखी मिली राधा कों कहति भई मन भायो ॥ भौंह सकोरति चलति मंद गति नेकु बदन मुसकायो । सूर सुगन्ध चुरावन हारो कैसें दुरत दुरायो ॥ ७० ॥ राग जैतश्री कह फूली आवति री राधा । मानहु मिली अंक भरि माधौ प्रकटति प्रेम अगाधा ॥ भृकुटी धनुष नयन शर साधें बदन बिकासति आधा । चंचल चपल बंक अवलोकनि काम नचावति ताधा ॥ जेहि रस शिव सनकादि मगन भये शेष रहत दिन साधा । सो रस दियो सूरप्रभु तोकों शिवा न लहति अराधा ॥ ७१ ॥ राग सोरठ ॥ राधे सो रस

वरनि न जाय । जो रस कों सुर भान शीश दियो मुनै पियो अकुलाय ॥ पचिहारे सब ग्वाल कमल मुख चंद बदन ठहराय । अजहुं कबंध फिरत तेहि लालच सुन्दरि सेन बुझाय ॥ मोहन तें रस रूप आगरी कटि दिन जानु निकाय । सूरज दास पपीहा के मुख कैसें सिंधु समाय ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ मोसों कहा दुरावति राधा । कहां मिली नंद नन्दन कों जिन पुरई मनकी साधा ॥ व्याकुल भई फिरति ही अबहीं काम बिथा तनु खाधा । पुलकित रोम रोम गद गद अब अंग अंग रूप अगाधा ॥ नहिं पावत जो रस जोगी जन जप तप करत समाधा । सुनहु सूर तेहि रस परि पूरन दूर कियो तन दाधा ॥ ७३ ॥ राग आसावरी ॥ कहा कहति तू भई बावरी । तोसों कहत सुनै कोउ औरै कह कीन्हों चाहत उपाव री ॥ सो तो सांच मानि यह लैहै हमहि तुमहि बातै सुभाव-री । मेरो प्रकृति भलै करि जानति मैं तोसों करिहों दुरावरी ॥ ऐसे कैसें होय सखीरी घर पुनि मेरो है बचावरी । सूर कहति राधा सखि आगे चकृत भई सुनि कथा रावरी ॥ ॥ ७४ ॥ राग सारंग ॥ श्याम कौन कारे कै गोरे । कहां रहत काके वह ढोटा इन्ह तरुण को धों है भोरे ॥ यहहीं रहत कि और गांव कहुं मैं देखे नाही कहुं उनकों । कहै नहीं समुझाय बात यह मोहि लगावति हौ तुम जिन कों ॥ कहां रहौ मैं वैसेा कहि कें तुम मिलवति हैा काहे ऐसी । सुनहुं सूर मोसी भोरी को जोरि जोरि लावति हैा कैसी ॥ ७५ ॥ राग सारंग ॥ जाहि चली मैं जानी तोकों । आजुहि पढि लीनी चतुराई कहा दुरावति मोकों ॥ यहि ब्रज हम तुम नंद नन्दन तें दूरि कहूं नहि जैहै । मेरे फंद कबहूं तौ परि है मुजरा तबहीं दैहै ॥ उनहिं मिले व्युत्पन्न भई अब बे दिन गये भुलाय । सूर श्याम संगतें उठि आई मोसों कहति दुराय ॥ ७६ ॥ राग सोरठ ॥ हंसति कहति धों की सत भाव । तेरी सों मैं कछु मन समुझति कहा कह्यो मोहि बहुरि सुनाव ॥ मेरी सपत तोहि री सजनी कबहूं कछु पायो यह भाव । देख्यौ नयन सुन्यो कहुं श्रवणनि झूठे सहति फिरति है दाव ॥ यह कहती औरें जो कोऊ तासों मैं करती अफडाव । सूर दास यह मोहि लगवति सपनेहु जासों नहि दरसाव ॥ ७७ ॥ राग धनाश्री ॥ राधे तेरो बदन बिराजत नीको । जब तू इत उत बंक बिलोकति होत निसापति फीको ॥ भृकुटी धनुष नयन सरसाधैं सिर केसरि को टीको । मनु घूंघट पटमें दुरि बैठ्यो पारिधि रति पति हीको ॥ गति में मत्त नाग ज्यों नागरि करै कहति हौ लीको । सूर दास प्रभु बिबिधि भांति करि मन रिझयो हरि पीको ॥ ७८ ॥ राग बिहागरो ॥ राजित राधे अलक भलीरी । मुक्ता मांग तिलक पन्नगिनि शिर सुत समेत भखु लेन चली री ॥ कुंकुम आड श्रवण श्रम जल मिलि मधु पीवत छवि छीछ चलीरी । चारु उरोज उपर यों राजत अरु भे अलि कुलकमल कलीरी ॥ रोमावली चिबलि उर परसत वंस चढ़ै नट काम बलीरी । प्रीति सुहाग भुजा सिर मंडल जघन सघन बिपरित कदलीरी ॥ जावक चरण पंच सर सायक समर जीति लै शरण चलीरी । सूर दास प्रभु को सुख दीन्हों नख सिख राधे सुखनि फलीरी ॥ ७९ ॥ राग रामकली ॥ सजनी कत यह बात दुरैहों । ऐसो मोहि कहे जिनि कबहूं झूठे पर दुख पैहों ॥ तातें प्रीतम और कौन है जाके आगे

कैहों । मोकों उचाटये कछु पैहैं बहुरि नांउ नहि लैहों ॥ यह परतीति नही जिय तेरेसो कहा तोहि चुरैहों । सूर श्याम धों कहां रहत हैं काहे को तहं जैहों ॥ ८० ॥ राग धनाश्री ॥ चतुर सखी मन जानि लई । मोसों तौ दुराव यह कीहों याके जिय कछु चास भई । तब यह कह्यो हंसति री तोसों जिनि मन में कछु आनै । मानी बात कहावै कहं तूं हमहूं उनहिन जानै ॥ अबै तनिक तू भई सयानी हम आगेकी बारी । सूरश्याम ब्रज में नहि देखे हंसत कह्यो घर जारी ॥ ८१ ॥ राग बिलावल ॥ सकुच सहित घर को गई वृषभान दुलारी । महरि देखि तासों कह्यो कहां रहीरी प्यारी ॥ घरतोहि नेक न देखउं मेरी महतारी । डोलत लाज न आवई अजहू है बारी ॥ पिता आजु रिस करत है देह कहै गारी । सुता बड़े वृषभांन की कुल खोवनि हारी ॥ बंधव मारन कहत हो तेरे ढंग कारी । सूर श्याम संग फिरति है जोबन मतवारी ॥ ८२ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ कहा कहति है री माता मोसों । ऐसे वहि गई को श्याम संग फिरै जो वृथा रिस करति कहा कहूं तोसों ॥ कही कोनै बात बोलिधों तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखौ । तात रिस करत भ्रात कहै मारिहै भीति बिन चित तुम करत रेखौ ॥ तुमहि रिस करति कछु कहा मोहि मारि हौ धन्य पित मात भ्राता तुमही । ऐसो लायक नंद महर को सुत भयो तिनहि मोहि कहति प्रभु सूर सुनही ॥ ८३ ॥ राग गुर्जरी ॥ काहेको पर घर छिन छिनु जाति । घरमे डांटि देति सिख सजनी नाहिन नेक डराति ॥ राधा कान्ह कान्ह राधा ब्रज ह्वै रह्यो अतिहि लजाति । अब गोकुल को जैबो छाड़ौ अपजस हून अघाति ॥ तू वृषभांन बड़े की बेटी उनके जाति न पांति । सूर सूता समुझावति जननी सकुचति नहि मुसुकाति ॥ ८४ ॥ राग कान्हरो ॥ खेलन को मैं जांउ नहीं । और लरकिनीं घर घर खेलति मोही कोपै करति तुही ॥ उनके मात पिता नहि कोई खेलति डोलति जहीं तहीं । तोसी महतारी बहि जाय न मै रैहों तुम ही बिनहीं ॥ कबहूं मोसों कछू लगावति कबहुं कहति जिनि जाउ कही । सूरदास बातें अन खौही नाहिन मोपै जाति सही ॥ ८५ ॥ राग सारंग ॥ मन मन जानि गई महतारी । कहा भई जो बाढि नेक गई अबहीं तौ मेरी है बारी ॥ झूठे हो यह बात उड़ी है राधा कान्ह कहत नर नारी । रिसकी बात सुता के मुखकी सुनति हंसति मनहीं मन भारी ॥ अबलौं नही कछू यह जान्योंखेलतदेखि लगावै गारी । सूरजदास जननि उरलावति मुख चुंबति पोछति रिस टारी ॥ ८६ ॥ राग सूहो ॥ सुता लये जननी समुझावति । संग विटीननि के मिलि खेलौ श्याम साथ सुनि सुनि रिस पावति ॥ जातें निंदा होत आपनी जातें कुलकी गारी आवति । सुनि खाडिली कहति यह तोसों यातें रिस करिके हौं धावति ॥ अब समुझी मैं बात सबनि की झूठेही ये बात उड़ावति । सूर दास सुनि सुनि ये बातें राधा मन अति हरष बढावति ॥ ८७ ॥ राग नट ॥ राधा बिनय करति मनहीं मन सुनहु श्याम अन्तर के जामी । मात पिता कुल कानिहि मानत तुमहि न जानतहौं जग स्वामी ॥ तुम्हरो नाम लेत सकुचतिहौं ऐसे ठौर रही हौं आनी । गुरुपति जनकी कानि मानि योंबार बार कही मुखबानी ॥ कैसे संग रहो बिमु-

खन के यह कहि कहि नागरि पछितानी । सूरदास प्रभु को हिरदय धरि गृह जन देखि देखि मुसिकानी ॥ ८८ ॥ राग धनाश्री ॥ जब प्यारी मन ध्यान धरयो । पुलकित उर रोमांच प्रकट भयो अंचल ढरि मुख उघरि परयो ॥ प्रेम बिवस भई सुकुमारी कैसेहु मन धीरज नहि आवै । चकृत भई अंग अंग बिलोकत दुख सुख दोऊ मन उपजावै ॥ पुनि मन कहति सुता काहूकी कीधों यह मेरी है जाई । राधा हरिके रंगहि राची जननी रही जियहि भर माई ॥ तब जानी मेरी यह बेटी जिय अपने तब जान लियो । सूरदास प्रभु प्यारी की छबि देखि चहति कछु सीख दियो ॥ ८९ ॥ राग सोरठ ॥ राधा दधि सुत क्यों न दुरावति । हौंजु कहति वृषभान नंदिनी काहे जीव सतावति ॥ जल सुत दुखी दुखी है मधुकर है पंछी दुख पावत । सारंग दुखी होत सारंग बिन तोहि दया नहि आवत ॥ सारंग रिपुकी नेक ओट करि ज्यों सारंग सुख पावत । सूरदास सारंग केहि कारन सारंग कुलहि लजावत ॥ ९० राग बिहागरो ॥ मेरी सीख काहे न करति । अजहुं भोरी भई रैहै कहति तोसों डरति ॥ शशि निरखि मुख चलत नाहीं नयन निरखि कुरंग । कमल खंजन मीन मधुकर होत है चित भंग ॥ देखि नासा कीर लज्जित अधर दसन निहारि । बिंब अरु बंधूक बिद्रुम दामिनी डर भारि ॥ उर निरखि चक्रवाक बिथके कटि निरखि मृग राज । चाल निरखि मराल भूले चलतते गजराज ॥ अंग अंग अब लोकि शोभा मनहि देखि बिचारि । सूर मुख पट देति काहे न बरष दस जुग भारि ॥ ९१ ॥ राग सूहा बिलावल ॥ अब राधा तू भई सयानी । मेरो सीख मानि हिरदय धरि जहं तहं डोलति बुद्धि अयानी ॥ भई लाजकी सामा तनमें सुनि यह बात कुंवरि मुसिकानी । हंसति कहा मैं कहति भली तोहि सुनति नहीं लोगनकी बानी ॥ आजुहि तें कहुं जान न दैहौं मति तेरी कछु अकथ कहानी । सूर श्याम के संग न जैहौं जा कारन तू मोहि सुगानी ॥ ९२ ॥ राग नट ॥ भली बात बाबा आवन दैवै । कान्ह लगाय देति मोहि गारी ऐसे बड़े भये कबते वै ॥ काल्हि मोहि मारग में रोकी जाति रही सखियनि संग दधि लै । कहंन लगे मेरो देहु खिलौना तादिन लै भागी चुराय कै ॥ छठि आठै मोहि कान्ह कुंवरसों तिनको कहति प्रीति तोसों है । सूर जननि सुनि यह बानी प्रिय पुनि पुनि मुख निरखति बिहसति है ॥ ९३ ॥ रागगौरी ॥ बड़ी भई नहि गइ लरि काई । बारेहो के ढंग आजुलों सदा आपनी टेक चलाई ॥ अबहीं सचलि जायगी तब पुनि कैसे मोसों जाति बुझाई । मानी हारि मारि मन अपने बोलि लई हंसिके दुलराई ॥ कंठ लगाय लई अति हितसों पुनि पुनि कहि मेरी रिस हाई । सूर दास अति चतुर राधिका राखि लई नीके चतुराई ॥ ९४ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ * ॥ अथ राधा जी के अनुराग लीला को प्रसङ्ग ॥ * ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ श्याम नग जानि हृदय चुरायो । चतुर बर नागरी महा मणि लखि लियो प्रिय सखो संग तेहि नहि जनायो ॥ कृपिन ज्यों धरत धन ऐसे दृढ कियो मन जननि सुनि बात हंसि कंठ लायो । गांस दियो डारि कहि कुंवरि मेरी वारी सूर प्रभु नाम झूठे उड़ायो ॥ १ ॥ राग कल्यान ॥ सखियनि यहै बिचार परयो । राधा कान्ह एक भये दोऊ हम सों गोप करयो ॥ वृन्दावन तें अबहीं आई अति जिय हरष बढायो । औरे भाव अंग छबि औरे श्यामहि मिलि मन भायो ॥ तब वह सखो कहति मैं बूझी मोतन फिरि हंसि हेरयो । जबहि कही सखि मिले तोहि हरि तब रिसकरि मुख मोरयो ॥ औरें बात चलावन लागी मैं वाको पहि चानी । सूर श्याम के मिलत आजुही ऐसी भई सयानी ॥ २ ॥ ॥ राग सोरठ ॥ सुनऊ सखी राधा की बातें । मोसों कहति श्याम हैं कैसे ऐसी मिलई घातें ॥ कै गोरे के कारे रंग हरि कै जोवन के भोरे । सांच कहौ मोसों तुम सब मिलि हौं अति करति निहोरे ॥ कै तू कहति बात हंसि मोसों कहि बूझति सतभाव । सपनेहू उन को नहि देखे वाके सुनऊ उपाव ॥ मोसों कहति कौन तोसो प्रिय तोसों बात दुरैहों । सूर कही राधा मो आगें कैसें मुख दरसै हों ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ वह निधरक मैं सकुचि गई । तब यह कह्यो जाय घर राधा मैं झूठो तै सांचि भई ॥ त्यौरी भौंहनि मो तन चितवै नेक रहो तो करै खई । काम भण्डार लूटि नीके करि निदरि गई मैं चक्रत भई ॥ घर धौं जाय कहा अब कैहैं अब कछु औरै बुद्धि नई । सूर श्याम अंग संग रंग राची मन माने सुख लूटिलई ॥ ४ ॥ रागसूहो बिलावल ॥ सुनि सुनि बात सखी मुसि कानी । अबही जाय प्रकट करि दैहैं कहां रहै यह बात छिपानी ॥ औरनि सों दुराव जो करतें तौ हम कहतो भली सयानी । दाहन आगें पेट दुरावति वाकी बुद्धि आजु मैं जानी ॥ मोहि जातहि वह उघरि परैगी दूध दूध पानी सों पानी । सूर दास अब करि

चतुराई हमहि दुरावति बात न ठानी ॥ ५ ॥ राग राम कली ॥ अपनों भेद तुमहि नहि कैहे । देखो जाय चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै ॥ बड़े गुरू की बुद्धि पढ़ी वह काहू को न पत्यैहै । ऐंको बात मानिहै नाही सबकी सोंहें खैहै ॥ मैं नीके करि बूझि रही हौं अब बूझै रिस पैहे । सुनऊ सूर रस छकी राधिका बातनि वैर बढैहै ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ कहा बैरु वह हमसों करिहै । बाकी जाति भले करि पाई हमकों कहा निदरि है ॥ कैहै कहा चोरटी हमसों बातहि बात उघरि है । दूरि करौ लंगराई बाकी मेरे फंद जब परिहै ॥ हमसों बैरु किये कहा पैहौ काज कहा पुनि सरि है । सूर दास मटुकी सिर लीन्हें बज्रनौं बैसेहि रटि है ॥ ७ ॥ राग गौरी ॥ चलऊ सखी जैये राधा घर । बूझे बात कहा धौं कैहै निधरक है की मनमैं डर ॥ कीधौं हमहि देखि भजि जैहै की हमकों उठि मिलि है । की धौं बात उघारि कहैगी की मनहीं मन गिलिहै ॥ कीधौं हंसि बोलै की रिस करि की धौं सहज सुभाई । की धौं सूर श्याम रस माती जोबन गर्ब बढ़ाई ॥ ॥ ८ ॥ राग गौरी ॥ युवती जुरि राधा के ढिंग आईं । लखि लीन्ही तब चतुर नागरी ये मो पर सबई रिस छाईं ॥ आदर नही कियो काहू कौ मनमे एक बुद्धि उपजाई । मौन गह्यो नहि बोलति तिन सों बैठि रही करि की चतुराई ॥ आपुहि बैठि गईं ढिग सिगरी जब जानो यह तो सुघराई । सूर दास वै सखी सयानी और कहूं की बात चलाई ॥ ॥ ९ ॥ राग जैतश्री ॥ चतुर चतुर की भेट भई । वह तौ निठुर मौन ह्वै बैठी इन सबहि निलखि ताहि लई ॥ मुहाचही युवतिन तब कीन्हों देखौ उलटी रीति भई । कहा हमारौ मन यह राखै अरु हमही पर सतर गई ॥ बूझहि याहि खूंट धरिकें तू कहा आज यह मौन लई । सुनऊ सूर हमसों कह परदा हम करि दीनों साटि सई ॥ १० ॥ राग सारङ्ग ॥ चर्चरी ॥ राधिका मौन व्रत किनि सधायो । धन्य ऐसो गुरू कान के लागतहि मंत्र दै आजुही यह लखायो ॥ काल्हि कछु और प्रातहि कछु औरही अबहि कछु और ह्वै गई प्यारी । सुनत यह बात हम दौरि आईं सबै तोहि देखत चक्रत भई भारी ॥ अब कहौ बात या मौन कौ फलु कहा सुनि जु लीजै कछु हमहि जानै । कही सङ्गम भई सबै जोबन नई अब होऊ गुरू हम तुमहि मानै ॥ देहि उपदेश हमहूं धरै मौन सब मंत्र जब लियो तब हम न बोली । सूर प्रभु की नारि राधिका नागरी चर्चि लीनों मोहि करति ठोली ॥ ११ ॥ राग सारङ्ग ॥ चर्चरी ॥ की गुरू को कहौ की मौन छांड़ौं । हमहि मूरख बदति आप ये ढंग सदति पाय अब मदति हठ कहति मांड़ौ ॥ एकही सङ्ग हम तुम सदा रहति हैं आजुही चटकि तू भई न्यारी । भेद हम सों कियो मौन व्रत कहं लियो और को कहायो देहि गारी ॥ कहा तोहि भयो तेरी प्रकृति कौनें हरी रीति यह नई तैहीं चलाई । सूर सुनि नागरी गुणनि की आगरी निठुरई सों बात कहि सुनाई ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ तुम प्रीतम की वैरनि मेरी । बासों कहति मिली जो मारग यहि मोसों अति कहौ अनेरी ॥ कहति कहा श्यामहि मिलि आई मैंचकि रही सोंह मोहि तेरी । मेरे अंग छवि और कहति कछु युवती सुनत रही मुख हेरी ॥ मैं जिनको सपनेहिन देख्यो तिनकी बात कहति फिरि फेरी । सूर दास गुण भरी राधिका महिमा

कोजानै यहि केरी ॥ १३ ॥ राग कल्यान ॥ तुम सों कछु दुराव है मेरो । कहां कान्ह कहं मैं सुनु सजनी व्रज घर घर यह चलत है घेरो ॥ और कहत सब मोहि न ब्यापै तुमकों कहौ यह बानी । आदर नहीं कियो याही तें तुमपर अतिहि रिसानी ॥ हम तौ नहीं कह्यो कछु तोसों ताही पर रिस करती । सूर तबहि हमसों जो कहती तेरी धौं कहै लरती ॥ १४ ॥ राग रामकली ॥ सखी तू राधहि दोष लगावति । तेरो श्याम कहां इन देख्यो बातनि वैर बढ़ावति ॥ हम आगें झूठी नहि कैहैं सखियन सैन बतावति॥ ऐसी बात अरी मुख तेरे कैसे धौं कहि आवति ॥ भेदहि भेद कहति है बातें ऐसे मनहि जनावति । सूर श्याम तैं देखे नाहीं की धौं हमहि दुरावति ॥ १५ ॥ राग नट ॥ काको काको मुख माई बातनि कों गहिये । पांच को सात लगावो झूठी कब नावो सांची जौ तनक होय तौ लौं सब सहिये ॥ बातनि गहौ आकाश सुनत न आवै सांस बोलत कछु न आवै तातें मौन गहिये । ऐसें कहैं नर नारि बिना भीति चित्र कारि काहे कों देखे मैं कान्ह कहा कहौ सहिये ॥ घर घर यहै वैर वृथा सो सों करै वैर यह सुनि श्रवणनि हृदय सहि दहिये । सूर दास करु उपहास होय सिर मेरे नन्द सुवन मिलै तौ तोपै कहा चहिये ॥ १६ ॥ राग सारङ्ग ॥ चर्चरी ॥ दुरत नहि नेह अरु सुगन्ध चोरी । कहा कोउकहै तू सुनत काहे न रहै तनहि कत दहै सुनि सखी मोरी ॥ लोग तोहि कहत हैं पाप कों गहत हैं कहा धौं लहत हैं सुनहु भोरी । खरिक हू नहि मिलै कहै कह अन भले करत है गिलै तू दिननि थोरी ॥ नन्द को सुवन अरु सुता वृषभान की हंसत सब कहै चिरु जिवो जोरी । सूर प्रभु कहां तू कहां अपने भवन मे लखो तोहि तोसो न औरी ॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ कैसे हैं नन्द सुवन कन्हाई । देखे नहीं नयन भरि कबहूं व्रजमें रहत सदाई ॥ सकुचति हौं एक बात कहति सो नाही जात सुनाई । कैसेहु मोहि दिखावहु उनको यह मेरे मन आई ॥ अतिही सुन्दरि कहियत हैं वे मोको देहि बताई । सूरदास राधा की बानी सुनत सखी भर माई ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनहु सखी राधा की बानी । व्रज बसि हरि देखे नहि कबहूं लोग हंसत कछु अकथ कहानी ॥ ये अब कहति दिखावहु हरिको देखोरी यह अतिहि अयानी॥ जोहम सुनत रही सो नाहीं अब ऐसेहि यह बायु बहानी ॥ ज्वाब न देत बनैं काहू सों मनसे काहुन मानी । सूर सबै तरुनी मुख चाहति चतुर चतुरई ठानी ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ सुनि राधे तोहि श्याम दिखै है । जहां तहां व्रज गलिन फिरत हैं जबहीं वे यहि मारग ऐहैं ॥ जबही हम उनको देखहिंगी तबही तोहि बुलै हैं । उनहू कह लालसा बहुत यहतो देखे सुख पै हैं ॥ दरसन तें धीरज जब रैहै तब हम तोहि पत्यै हैं । तुमको देखि श्याम घन सुन्दर मुरली मधुर बजै हैं ॥ तनु त्रिभंग करि अंग त्रिभंगी नाना भाव जनै हैं । सूरदास प्रभु नवल कान्ह वर पीतांबर फहर हैं ॥ २० ॥ राग केदारो ॥ चर्चरी ॥ नन्द नन्दन दरश जबहि पैहो । एक द्वै तीनि तजि चार बानी मेटि पांच छः निदरि सातै भुलै हो ॥ आठहू गांठि परि है नवहु दसहु दिस भूलि हौ ग्यारहौ रुद्र जैसे । बारहौ कलातें तपनि तनतें मिटति तेरहौ रतन मुख छबिन तैसे ॥ निपुन

चौदह बरन पंद्रहो शुभग अति वरष षोडस सचहौ नरै है । जपत अठारहु भेद उनीस नहि बीसहू दिसातें सुखहि पै है ॥ नयन भरि देखि जीवन सफल करि लेखि व्रजहि में रहति ते नहीं जाने । सूर प्रभु चतुर तुमहू महा चतुरि हौ जैसो तुम तैसे वेऊ सयाने । ॥ २१ ॥ राग देवगंधार ॥ मन मन हंसति राधिका गोरी ॥ ऐसे श्याम रहत व्रज भीतर बूझति हैं भइ भोरी । तुम उनको कहुं देखे हौ की सुनी कहति हौ बात । चतुराई नीके गहि राखी मुख मुरिकै मुसि कात ॥ कबहूं तौ कहूं फंद परिहौ तबही लीजै चीन्ह । सूर श्याम को पीतांवर मेरी बेसरि लीजौ छीन ॥ २२ ॥ राग नट ॥ यह सुनि हंसि चली व्रज नारि । अतिहि आई गर्ब कीन्हे गई घर झक मारि ॥ कबहुं तो हम देखि हैं इक संग राधा कान्ह । भेद हमसों कियो राधा निठुर भई निदान ॥ बिसर सब दिन चोर को कहुं होत है निरबाहु । कालि देखेंगी सबै सुनि सूर दुलहिनि नाहु ॥ २३ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ भेद लियो चाहति राधासों । बैठो रहु अपने घर चुपकी काम कहा काहू बाधासों ॥ मन यह दूरि धरौ अपनो ले अति बर बालि गई कह कीन्हो । कैसे निर भय रही सबनि सों भेद न काहुनि दीन्हो ॥ वह कैसे फंद परै तुम्हारे वाके घात न जानो । सूर सबै तुमबडी सयानी मोहि नही तुम मानो ॥ २४ ॥ राग बिलाबल ॥ फेरि पारिदेखो मैं धरिहौं । सुनिरी सखी प्रतिज्ञा मेरी तेहि दिन तासों लरिहौं ॥ हमको निदरि रही है राधा रिस न रही मैं जरिहौं । राति द्योस मोहि चैन नही अब उनके देखत फिरि हौं ॥ तब मेरे मन धीरज ऐहै चोरी करत पकरिहौं । सूरदास स्वामी के आगे नीके ताहि निदरि हौं ॥ २५ ॥ राग नट ॥ गोपी यहै करति चवाव । देखोधों चतुराई वाकी हमहिं कियो दुराव ॥ लरिकइ तें करति ये ढंग तब रहे सति भाव । अब करति चतुरई जानो श्याम पाये दाव ॥ कहालों करिहै अचगरी सबै ए उप जाव । आजु बाकी मौन धरिज्यौ सदा होत बचाव ॥ द्योस चारिक भोर पारहु रहौ एक सुभाव । सूर कालिहि प्रकट ह्वै है करन दे अफ डाव ॥ २६ ॥ राग सूहो बिला बल ॥ कहा कहति तू बात अयानी । तमही कहति सबै वह जानति हम सबतें वे बड़ी सयानी ॥ सात बरषतें यह ढंग सीखी तुमतो यह आजुहि है जानी । वाके छंद भेदको जाने मीन कबहिधों पीवत पानी ॥ हरिके चरित सबै उन सीखे दोउ हैं बे बारह बानी । कालि गई वाके घर सब मिलि कैसी बुद्धि मोहनी ठानी ॥ कितो कही नेकहु नहि बोली फिरि आई तब हमहि खिसानी । सूर श्याम संगति की महिमा कहूं कौन होंहूं न पत्यानी ॥ २७ ॥ राग मारू ॥ तबहि राधा सखियनि पै आई । आवत देखि सबनि मुख मूद्यो जहं तहं रही अर गाईं ॥ मुख देखत सब सकुच गईं यह कहां अचानक आई करति रही चुगुली हम याकी तरुनी गई लजाई ॥ अति आदर करि बैठक दीन्हो कह्यो कहां तुम आई । कहा आजु सुधि करी हमारी सूर श्याम सुख दाई ॥ २८ ॥ राग धनाश्री ॥ मैं कहा आजु नबेरी आई । बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुने की करिये पहुनाई ॥ कैसो बात कहतितू राधा बदन को नहि कहिये । तुम आई अपने घरते ह्यां हमहु मौन ह्वै रहिये ॥ जानि लई वृषभान सुता हंसि कह्यो तरक तुम कीजो । सूर

दास तादिन को बदलो दाव आपनो लीनो ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ दाव घाव सबही तुम जानति । सदा मानि तुमको हम आई अबकूं तैसे मानति ॥ तुम यह बात गांस करि राख्यो हमको गई भुलाई । तादिन कह्यो नही मैं जानो मानि लई सति भाई ॥ चोर सबनि चोरै करि जाने ज्ञानी मन सब ज्ञानी । सूरदास गोपिन की बानी राधा सुनि मुसकानी ॥ ३० ॥ राग मारू चर्चरी ॥ सखी यह बात कहीतुम सांची । जाके हृदय जौं न हैं मुखतें तौंन कैसे हरि कौंन कहि लीक खांची ॥ हरिषि व्रजनारि भरि लेति अंक बारि सब कहति तू कहा यह बात जानै । हम हंसत कहति तू रिस कहा गहतिरी नागरी राधिका बिलगु मानै ॥ तुमहि उलटो कहो तुमहि पलटो कहो तुमहि रिस करति मैं ककुन जानौ । सूरके प्रभु को नाम मोहि तुम कह्योश्रवण यह सुन्यों तुम ककुन मानौ ॥ ॥ ३१ ॥ राग टोड़ी ॥ पुनि कहियो अब न्हान चलौंगी । तब अपनो मन भायो कीजो । जब मोकों हरि संग मिलौगी । वहै बात मनमें गहि राखी मैं जानति कबहुन बिसरैगी ॥ बड़ी बार मोकों भइ आये न्हान चलति की बहुरि लरौगी ॥ गहि गहि बांह सबनिकरि ठाढी कैसेहूं घरते निकरौ गी । सूर राधिका कहैं सखिनसों बहुरि आय घर काज करौगो ॥ ३२ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ राधिका संग मिलि गोप नारी । चलीं हिलि मिलि सबै रहसि बिहसति सबै परस्पर कुतूहल करत भारी ॥ मध्य व्रजनागरी रूपर स आगरी घोष ऊजागरी चलि कुमारी । बदन दुति इंदुरी दंत छवि कुंदरी काम तन सुन्दरी करनिहारी ॥ अंग अंग सुभग अति चलत गज राज गति कृष्णसों एक मति जमुन जांही । निकसि कोउ जाति कोउ ठटुक ठाढी रहति कोउ कहति संग मिलि चलहु नांही ॥ जुवती आनंद भरी सबहि जुरिके खरी नई छर हरी उठि वैस थोरी । सूर प्रभु सुनि श्रवण तहां की हो-गवन तरुनि मन रवन सब व्रज किसोरी ॥ ३३ ॥

॥ * ॥ अथ जमुना स्नान तहां भगवद्दर्शन ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग नट ॥ गई व्रजनारि जमुना तीर । संग राजति कुवरि राधा भई शोभा भीर ॥ देखि लहरि तरंग हरषी रहत नहि मन धीर । स्नान को वे भई आतुर सुभग जल गंभीर ॥ कोउ गई जल पैठि तरुनी और ठाढी तीर । तिनहि लई बुलाय राधा करति सुख तनु कीर ॥ एक एकहि धरति भुज भरि एक छिरकति नीर ॥ सूर राधा हंसति ठाढी भीजि छवि तन चीर ॥ १ ॥ राग जैतश्री ॥ राधा जल बिहरति सखियनि संग । ग्रीव प्रयंत नीरमें ठाढी छिरकति जल अपने अपने रंग ॥ मुख भरि नीर परस्पर डारति शोभा आय अनूप बढ़ी तब । मनहुं चंद गण सुधा गंडु कनि डारत है आनंद भरे सब ॥ आई निकसि जानु हुटिलों सब अंजुरिनतें लै लै जल डारत । मानहु सूर कनक वल्ली जुरि अमृत पवन मिस झारत ॥ २ ॥ राग नट ॥ जमुना जल

बिहरति व्रज नारी । तट ठाढे देखत नद नंदन मधुर मुरलि कर धारी ॥ मोर मुकुट श्रवणनि मणि कुण्डल जलज माल अति भ्राजत । सुंदर सुभग श्याम तन नव घन बिच बग पांति बिराजत ॥ उर बन माल सुमन बहु भांतिन श्वेत लाल सित पीत । मनो सुर सरी तीर सुक बैठे बरन बरन तजि भीत ॥ पीतांबर कटि तट छुद्रावलि बाजति परम रसाल । सूरदास मनो कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल ॥ ३ ॥ राग बिहागरो नटवर भेष काछे श्याम । पद कमल नख इंदु सोभा ध्यान पूरन काम ॥ जानु जंघ सुघटनि करभा नही रंभातुल । पीत कटि काछनी मानहु जलज केसर झुल ॥ कनक छुद्रावली पंगति नाभि कटिके भीर । मनहु हंस रसाल पंगति रहेहैं ह्रद तीर ॥ झलक रोमावली शोभा ग्रीव मोतिन हार । मनहु गंगा बीच जमुना चली मिलिचय धार ॥ बाहु दंड बिशाल तट दोउ अंग चंदन रेनु । तीर अस्तन माल की छवि व्रज जुवति सुख देनु ॥ चिबुक पर अधरनि दसन दुति बिंब बिज्जु लजाय । नासिका शुक नयन खंजन कहत कवि सरमाय ॥ श्रवण कुंडल कोटि रबि छवि भृकुटि कामकोदंड । सूर प्रभु है नीप के तट सीस धरै सिखंड ॥ ४ ॥ राग पूर्वी ॥ उपमा धीरज तज्यो निरखि छवि । कोटि मदन अपनो बल हारयो कुंडल किरिनि छप्यो रबि ॥ खंजन कंज मधुप बिद्रुम बिधु तडित न दीन रहत कहुं ए दबि । हरि पटतर दै वाहि लजावत सकुच नही खोटें कवि ॥ अरुण अधर दसननि दुति निरखत बिद्रुम सिखर लजाने । सूर श्याम इच्छा बपु कछुयो पटतर मेटि बिराने ॥ ५ ॥ राग गौरी ॥ उपमा हरि तन देखि लजाने । कोउ जलमें कोउ बननि रहे दुरि कोउ कोउ गगन समाने ॥ मुख निरखत ससि गयो अंबर को तड़ित दसन छवि हेरि । मीन कमल कर चरण नयन डर बनमें कियो बसेरि ॥ भुजा देखि अहि राज लजाने बिवरनि पैठे धाय । कटि निरखत के हरि डर मान्यों बन बन रहे दुराय ॥ गारी देहि कबिन को बरनत श्रीअंग पटतर देत । सूरदास हम को बिडमावत नाम हमारो लेत ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ ऐसो गोपाल निरखि तिल तिल तन वारौं । नव किसोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं ॥ अरुण तरुण कंज नयन मुरली कर राजै । व्रज जनमन हरन बेनु मधुर मधुर बाजै ॥ लखित बर त्रिभंग सुतनु बन माला सोहै । अति सुदेस कुसुम पाग उपमा को कोहै ॥ चरण रुणित नूपुर कटि किंकिनि कल कुंजै । मकराकृत कुंडल छवि सूर कोन पुंजै ॥ ॥ ७ ॥ राग कान्हरो ॥ मोतिन की माल मनोहर । सोभित श्याम सुभग उर ऊपर मनो गिरिते सुरसरी धसी धर । तट भुज दंड भंवर भृगु रेखा चंदन बिच तरंगनि सुंदर ॥ मणिकी किरनि मीन तनु लाजत मकर मनहु आवत त्यागें सर । जज्ञोपबीत बिचित्र सूर सुनि मध्य धार धाराजु बनी बर । शंख चक्र गदा पद्म पानि मनो कमल कुल हंसनि कीने घर ॥ ८ ॥ राग नट ॥ राधे निरखि भूली अंग । नंद नंदन रूप पर गति मति भई तनु पंग ॥ इत सकुच अति सखिन को उत होत अपनो हानि । ज्ञान करि अनुमान कीन्हो अबहि लैहै जानि ॥ चतुर सखियनि परखि लीन्ही समुझि भई गंवारि । सबै मिलि इत न्हान लागीं ताहि दियो बिसारि ॥ नागरी मुख श्याम निरखति कबहु

सखियनि हेरि । सूर राधा लखति नाहीं इन दई अब टेरि ॥ ९ ॥ राग कान्हरो ॥ तब जान्यों ये न्हाति सबै । हरि प्रति अंग अंग की शोभा अखियनि मग ह्वै खेउ सबै ॥ कमल कोस में आनि दुराऊं बहुरि दरश धों होय कबै । यह मन करि जुवतिन तन हेरति सकुचति है पुनि नाहि फबै ॥ कबहूं कहै तजौ मरजादा इनसों मैं करि गोप तबै । सूर श्याम तबही मन मान्यों संगहि रैहौ जाय जबै ॥ १० ॥ राग गौरी ॥ चितै राधा रति नागर ओर । नयन बदन छबि यों उपजत मनों शशि अनुराग चकोर ॥ सारस रस अचवन को मानो फिरत मधुप जुग जोर । पान करत कहुं तृप्ति न मानत पलकनि देत अकोर ॥ लियें मनोरथ मानि सकल ज्यों रजनि गये पुनि भोर । सूर परस्पर प्रीति निरंतर दीपति है चित चोर ॥ ११ ॥ राग कल्यान ॥ यह कछु भोरेहि भाय भई । निरखत बदन नंद नंदन को और हती सु गई ॥ हृदय जामि प्रेम अंकुर जर सप्त पताख गई । सो द्रुम पसरि सिखर अंबरहीं सब जग छाय लई ॥ बचन सुपच मुकुर अब लोकनि गुणनिधि पुहुप मई । परस्परहि अनुराग सींचि सुख लगी प्रमोद जई ॥ मनके सकल मनोरथ पूरन सौभर भार नई । सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीति ठई ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ यहई मन आनंद अवधि सब । निरखि सरूप बिबेक नैन भरि या सुखतें नहि और कछू अब ॥ चीतचरन मृदु चारु चंद्र नख चलत चिन्ह चहुं दिसि शोभा । चित चकोर रतिकरि सोई मति तजि सम सघन बिपैलोभा ॥ जानु जघन करभा कर आकृति कटि प्रदेश किंकिनि राजै । हृद विधु नाभि उदर चिवलीवर अवलोकित भव भय भाजै ॥ उरग इन्द्र अनुमान सुभग भुज पानि पद्म आयुध साजै । कनक बलय मुद्रिका मोद प्रद सदा सुखद संतनि काजै ॥ उर बन माल बिचित्र बिमोहन भृगु भ्रमरी भ्रम को नासै । तड़ित बसन घन श्याम सदृश तन तेज पुंज तमको त्रासै ॥ परम रुचिर मणि कंठ किरन गन कुंडल मुकुट प्रभा न्यारी । मृदु मुख मधु मुसिकानि अमृत सम सकल लोक लोचन प्यारी ॥ सत्य शील संपन्न सु मूरति सुर नर मुनि भक्तनि भावै । अंग अंग प्रति छवि तरंग सो सूर बरनि क्यों कहिआवै ॥१३॥ राग रामकली ॥ चितवनि रोकेहू नरही । श्याम सुन्दर सिंधु सनमुख सरिता उमगि बही ॥ प्रेम सलिल प्रवाह भौंरति मिति न कहूं लही । लोभ लहरि कटाक्ष घूंघट पट करार ढही ॥ थके पल पथ नाव धीरज परत नहि न गही । मिली सूर सुभाव श्यामहि फेरि हू न चही ॥ १४ ॥ राग जैतश्री ॥ देखहु री राधा उत अटकी । काल्हि हमहि कैसे निदरति ही मेरे चित वह टरत न खटकी ॥ चितै रही एक टक हरि ही तन ना जानिये कवन अंग खटकी । न्हात रही कैसे संग मिलि कें चित चंचल विरहा की चटकी ॥ बात कहति तुलसी सुख मेलै नयन सैन दैदै मुह मटकी । सूर श्याम के रूप भुलानी राधा के चित सुधि नहि घटकी ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ चितै रही राधा हरि को मुख । भृकुटी बिकट बिशाल नयन जुग देखत तनहि भयो रति पति दुख ॥ उतहि श्याम एक टक प्यारी छबि अंग अंग अवलोकत । रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ मिलि नोकत ॥ सखिन कह्यो वृषभान सुता सों देखे कुंवर कन्हाई । सूरश्याम येई हैं व्रजमें जिनकी हेत बड़ा

ई ॥ १६ ॥ राग रामकली ॥ हमहिं कह्यो हो श्याम दिखावहु । देखहु दरश नयन भरि नीके पुनि पुनि दरशन पावहु ॥ बहुत लालशा करति रही तुम वे तुम कारन आवै पूरी साध मिली तुम उनकों याते हमहि बुलावै ॥ नीके सगुन आजु ह्यां आई भये तुम्हारे काज । सुनहु सूर हमकों कछु दैहौ तुमहि मिलै ब्रज राज ॥ १७ ॥ राग रामकली ॥ राधा कह्यो आजु इन्हें जानी । बार बार मैं हरि तन चितई तबही ये मुसिकानी ॥ का हि कह्यो मैं इन सों वैसे अ बतो बात न ठानी । यह चतुरई परी मोही पर मन मन अतिहि लजानी ॥ मेरी बात गई इन आगे अबहि करति बिन पानी । सूर दास प्रभु कहा कहौ मैं अब तुव हाथ बिकानी ॥ १८ ॥ राग रामकली ॥ मैं अतिही यह पोचि करी । ये मेरी मरजादा लेहैं ता दिन इनसों बहुत खरी ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन तुम अब होहु सहाई । ऐसी कहौ बात इन आगें मेरी पति जिनि जाई ॥ तब इक बुद्धि रची मनही मन अति आनंद हुलाश । सूर श्याम राधा आधा तनु कीन्ही बुद्धि प्रकाश ॥ १९ ॥ राग रामकली ॥ राधा चलहु भवनहि जाहिं । कबहीं की हम जमुना आई कहति अरु पछिताहिं ॥ किये। दरशन श्याम को तुम चलहुगी की नाहिं । बहुरि मिलि हौ चाहि राखो कबहुं सब मुसिकाहिं ॥ हम चली घर तुमहु आवहु शोच भयो मन माहि । सूर राधा सहित गोपी चली ब्रज समुहाहिं ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ कहि राधा हरि कैसेहैं । तेरे मन भाये को नाही की सुंदर की नैसेहैं ॥ की पुनि हम हि दुराव करोगी की कैहौ वे जैसेहैं । की हम तुम सों कहति रही ज्यों सांच कहौ की तैसेहैं ॥ नटवर भेष काछनी काछे अंगनि रति पति सैसेहैं । सूर श्याम तुम नीके देखे हम जानत हरि ऐसेहैं ॥ २१ ॥ राग बिलावल ॥ राधा मनमें यहै बिचारति । ये सब मेरे ख्याल परी हैं अबही बातनि लै निरवारति ॥ मोहूतें ये चतुरि कहावति ये मनही मन मोको नारति । ऐसे बचन कहोंगी इनसों चतुराई इनकी मैं झारति ॥ जाके नंद नदन सिरसमरथ बार बार तन मन धन वारति । सूर श्याम के गर्व राधिका सूधे काहू तन न निहारति ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ राधा हरिके गर्व गहीली । मन्दमन्द गति मत्त मतंग ज्यों अंग अंग सुख पुंज भरीली ॥ पग दै चलति ठठुकि रहे ठाढी मौन धरे हरि के रस गीली । धरनी नख चरननि कुरुवावति सौतिन भाग सुहाग डहीली ॥ मेकु नही पियतें कहुं बिछुरति तातें नाहिन काम दहीली । सूर सखी बूझें यह कहिहौं आजु भई यह भेट पहीली ॥ २३ ॥ राग आसावरी ॥ क्यों राधा फिरि मौन धरयोरी । जैसें नैावा अम्ब झबाबर तैसेंहि ते यह मैंान करयोरी ॥ बात नहीं सुखतें कहि आवति का तेरो मन श्याम हरयोरी । जानि नहो पहिचानि न कबहूं देखत ही चित तिनहि डरयोरी ॥ सांची बात कहौ तुम हमसों सुनि यहि शोच परयोरी । सूरश्याम तन देखि रही कह लोचन एक टक तें न टरयोरी ॥ २४ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा कहति तुम बात अलेखो । मोसों कहति श्याम तु देखे तुम नीके करि देखो ॥ कैसो बरन भेष है कैसो कैसो अंग चिभंग । मो आगें वह भेद कहौ धौं कैसो है तनु रंग ॥ मैं देखे की नाहीं देखे तुम तो बार हजार । सूर श्याम है अंखियनि देखति जाको बार न पार ॥ २५ ॥ राग कान्हरो ॥ हम देखे

यहि भांति कन्हाई । सीस सिखंड अलक बिथुरे मुख श्रवणनि कुंडल चारु सुहाई ॥ कुटिल भृकुटि लोचन अनियारे शुभग नासिका राजत । अरुण अधर दस नाबलि की दुति दाडिम कन तनु लाजत ॥ ग्रीव हार मुक्ता बन माला बाहु दण्ड गज सुण्ड । रोमावली शुभग बग पंगति जात नाभ ह्रद झुण्ड ॥ कटि पट पीत मेखला कंचन शुभग जंघ जुग जानु । चरण कमल नख चन्द्र नहो सम ऐसे सूर सुजानु ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ बने हैं विशाल कमल दल नैन । ताहू में अति चारु बिलोकनि गूढ भाव कूचत सखि सैन ॥ बदन सरोज निकट कुंचित कच मनहु मधुप आये मधु लैन । तिलक तरनि शशि कहत कछुक हंसि बोलत मधुर मनोहर बैन ॥ मदन नृपति को देश महामद बुधि बल बसि न सकत उर चैन । सूर दास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरित चुनौती दैन ॥ २७ ॥ राग बसन्त ॥ मोहन बदन बिलोकति अंखियनि उपजत है अनुराग । तरनि ताप तलफत चकोर शशि पियत पियूष पराग ॥ लोचन नलिन नये राजत सखि पूरन मधु कर भाग । मानहु अलि आनंद मिले मकरन्द पिवत ऋतु फाग ॥ भवरि भाग भृकुटी पर कुं कुंम चन्दन बिन्दु बिभाग । चाचिक सोम शुक्र धनु घन मैं निरखत मन वैराग । कुंचित केस मयूर चद्रिका मंडल सुमन सुपाग । मानहु मदन धनुष सर लीन्हे बरषत है बनबाग । अधर बिंबतें अरुण मनोहर मोहन मुरली राग । मानहु सुधा पयोधि घोरि घन ब्रज पर बरषन लाग । कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रम श्रीकर के दाग । मानहु मीन मकर मिलि क्रीडत सोभित शरद तड़ाग । नासातिल प्रसून पदवो पर चिबुक चारु चित खाग । दाडिम दसन मंद गति मुसुकनि मोहत सुर नर नाग । श्री गोपाल रस रूप भरी हैं सूर सनेह सुहाग । ऐसे गोपाल सिंधु अबिलोकत इन अखियनि के भाग ॥ २८ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ हम देखे यहि भांति गोपाल । छंद कपट कछु जानति नाहीं सूधी हम ब्रज बाल । झूंठीकी सांची नहि भावै सांची झूंठी कबहु न होइ । सांचोकी झूंठी करि डारै यह तासोइ जानै धनि जोइ । इतनि न मैं दुराव कछु नाहीं नाहीं भेदा भेद बिचार । सूर दास जे झूंठी मिलबे तिनकी गति जानै करतार ॥ २९ ॥ राग आसावरी ॥ झूंठी बातनि होति भलाई । चोर जुवारि संग बहु करिये झूंठे को नहि कोउ पतियाई । सांचीकी झूंठी करि डारै पंचनि में मरजादा जाई । बोलि उठी एक सखी बीचतें कह यह जाने लाज बड़ाई । यामें कछू नफा है उनकों जाते मन ऐसीयें आई । सूर सुभाव परयो ऐसोई को जानै री बुद्धि पराई ॥ ३० ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे हम देखे नंद नंदन । श्याम सुभग तन पीत वसन जनु मनहु जलद पर तडित सुछंदन । मन्द मन्द मुरली रव गरजनि सुधा दृष्टि बरषत आनंदन । बिविधि सुमन बन माला उर मनु सुरपति धनुष नाहीं यहि छंदन । मुकुतावली बीच बग पंगति सुभग अंग चरचित छवि चंदन । सूर दास प्रभु नीप तरोवर तर ठाढे सुर नर मुनि बंदन ॥ ३१ ॥ राग देव गंधार ॥ तुमको कैसे श्याम लगे । न्हात रहीं जल में सब तरुनी तब तुम नैना कहां खगे । अंग अंग अवलोकन कीन्हो कौन अंग पर

रहे पगे। भूल्यो न्हान ज्ञान तनु भूल्यो नंद सुवन तहतें न डगे। जानति नहीं कछू नहि देखे मिलि गइ ऐसे मनहु सगे । सूर श्याम ऐसे तै देखे मैं जानति दुख दूरि भगे ॥ ३२ ॥ राग गौरी ॥ तुम देखे मैं नही पत्यानी । मैं जानति मेरी गति सबही यहै सांच अपने मन आनी । जो तुम अंग अंग अवलोक्यो धन्य धन्य मुख अस्तुति गानी। मैं तो एक अंग अब लोकत दोउ नयन गये भरि पानी । कुंडल झलक कपोलनि आभा इतनेहि मांझ बिकानी । एक टक रही नयन दोउ रूंधे सूर श्यामको नहिं पहिचानी ॥ ३३ ॥ राग नट ॥ अंखियां अजान भई। एक अंग अब लोकत हरिके और हुती सो गई। ये भूली ज्यो चोर घर घर निधि न लई । फेरत पलटत भोर भयो छुटकाय दई । पहिलेहि रति कर कन अरति करि ताहि रई ॥ सूर सकति हठि दोष लगावति पीर नई ॥ ३४ ॥ राग सारंग ॥ विधातहि चूक परी मैं जानी । आजु गोबिंदहि देखि हौं इहै समुझि पछितानी । रचि पचि सोचि सवारि सकल अंग चतुर चतुरई टांनी । दृष्टि न दई रोम रोमनि प्रति तितनेहि कला नसानी । कहा करौं अति सुख है नयना उमगि चलत पल पानी । सूर सुमेर समाय कहां धों बुद्धि नशानि पुरानी ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ बड़ो निठुर बिधना यह देख्यो । जबतें आजु नंद नंदन छवि बार बार करि पेख्यो । नख अंगुरी पग जानु जंघ कटि रचि कान्हों गिर मान। हृदय बाहु कर हस्त अंग अंग मुख अति सुंदर बांन । अधर दसन रसना रस बानी अवण नयन अरु भाल। सूर रोम भरि लोचन देतो देखत बनत गोपाल ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ दै लोचन तुमरे दै मेरे । तुम प्रति अंग बिलोकन कीन्हों मैं भई मगन एक अंगहि हेरे । अपनो भाग्य सखीरी तुम तन मैमै कछू गनेरे । जो बोइये सोई पै लुनिये और नहीं त्रिभुवन भट भेरे । श्याम रूप अब गाह सिंधुतें पार होत चढि डोंगिन केरे । सूर दास तैसे ए लोचन किर्पा नाथ बिनाको पैरे ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ सखी कैसे के कहो हरिके रूपके रसही । अपनेहि तन में भेद बहुत बिधि रसना न जानत नयननिकी दसही । जिन देखेते आहि बचन बिन जिनहि बचन दरसन नतिसही ॥ बिन बानी अति उमगि प्रेम जल सुमिरि सुमिरि बारूप जसही। यहै समुझि पछितात मनहि मन कहा करो मो बिधि न सही । सूर सकल अंग तिको यह गति कहा रच्यो बिधि छप दप सुही ॥ ३८ ॥ राग आसावरी ॥ पावै कौन सिखे बिनु भाख। काहूको षट रस नहि भावत कोउ भोजन को फिरत बिहाल। तुम देख्यो हरि अंग माधुरी मैं नहि देखे कौन गोपाल । जैसें रंक तनक धन पावै ताही में वह होत निहाल । तुमहि मोहि इतनो अंतर है धन्य धन्य व्रजकी तुम बाल । सूर दास प्रभुकी तुम संगिनि तुमहि मिले यह दरस गोपाल ॥ ३९ ॥ राग कल्यान ॥ सुनहु सखी राधाकी बानी । हमको धन्य कहति आपुन धृग यह निर्मल अति जानी । आपुन रंक भई हरि धनको हमहि कहति धनवंत ॥ यह पूरन हम तिपट अधूरी हम असंत यह संत ॥ धृग धृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि सूर श्यामको यह पहिचान्यो हम भई अंत गंवारि ॥ ४० ॥ राग केदारो ॥ चर्चरी ।

धन्य राधा धन्य बुद्धि हेरी। धन्य माता धन्य पिता धनि भगति तुव धृग हमहिं नहि सम दासि तेरी ॥ धन्य तुव ज्ञान धनि ध्यान धनि परमान नाहि जानति आन ब्रह्म रूपी । धन्य अनुराग धनि भाग धन्य शौभाग्य धन्य जोबन रूप अति अनूपी । हम बिमुख तुम समुख कृष्ण प्यारी सदा निगम मुख सहस अस्तुति बखानै ॥ सूर श्यामा श्याम नवल जोरी अटल तुमहि बिनु कान्ह धीरज न आने ॥ ४१ ॥ राग बिहागरो। जैसे कहे श्याम हैं तैसे । कृष्ण रूप अब लोकनि सखिरी नयन होय जो ऐसे ॥ तेजु कहति लोचन भरि आये श्याम कियो तहं ठौर ॥ पुण्य स्थल जानिके बिराजे बात नही यह और ॥ तेरे नयन बास हरि कीन्हों राधा आधा जानि ॥ सूर श्याम नटवर बपु काछेनिकसे उहि मग आनि ॥ ४२ ॥ राग बिहागरो ॥ अचानक आय गये तहां श्याम ॥ कृष्ण कथा सब कहति परस्पर राधा मिलि ब्रज बाम ॥ मुरली अधर धरे नटवर बपु कटि कछनी परवारों काम ॥ सुभग मोरचंद्रिका शीस पर आय गये पूरण सुख धाम ॥ तरु तमाल तर तरुन कन्हाई दूरि करन जुवतिन तनु काम । सूर श्याम बंसी धुनि पूरत राधा राधा लै लै नाम ॥ ४३ ॥ राग बिलावल ॥ थकित भई राधा ब्रज नारि । जोमन ध्यान करति अब लोकन तेइ अंतर जामी बनवारि ॥ रतन जटित पग सुभग पांवरी नूपुर धुनि कल परम रसाल । मानहु चरण कमल दल लोभी निकटहि बैठे बाल मराल ॥ जुगल जंघ मरकत मणि शोभा विपरित भांति सवारे । कटि काछनी कनक छुद्रावलि पहिरे नंद दुलारे ॥ हृदय बिसाल माल मोतिन बिच कौस्तुभ मणि अति भ्राजत । मानहु नभ निर्मल तारा गन तामधि चंद बिराजत ॥ दुहु कर मुरलि अधर परसाये मोहन राग बजावत । चमकत दसन मटकि नासा पुट लटकि नयन मुख गावत ॥ कुंडल झलक कपोलनि मानहु मीन सुधा रस क्रीडत । भृकुटी धनुष नयन खंजन मनु उडत नही मन व्रीडत ॥ देखि रूप ब्रज नारि थकित भईं कोट मुकुट सिर सोहत । ऐसे सूर श्याम शोभा निधि गोपो जनमन मोहत ॥ ४४ ॥ राग कल्यान ॥ जबतें निरखे चारु कपोल । तबतें लोक लाज सुधि बिसरी दै राखे मन ओल ॥ निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरे पीत निचोल । रतन जटित सिर मुकुट बिराजित मणि मय कुंडल लोल ॥ कहा करों वारिज मुख ऊपर बिथके षट पद गोल । सूर कहा करिये उतकरषा बस कीने बिनु मोल ॥ ४५ ॥ राग कल्यान ॥ बनें हैं बिसाल सुलोचन लोल । चितै चितै हरि चारु बिलोकनि मानहु मागत हैं मन ओल ॥ अधर अनूप नासिका सुंदर कुंडल मिलितसुदेश कपोल । मुख मुसकात महा छबि लागति श्रवण सुनत सुठि मीठे बोल ॥ चितवत रहत चकोर चंद ज्यों नेकन पलक लगावत डोल । सूरदास प्रभु के बस ऐसे दासी सकल भईं बिन मोल ॥ ४६ ॥ राग पूरबी ॥ तरु तमाल तरें चिभंगी तरुन कान्ह कुंवर ठाढे हैं सांवरे बरन । मोर मुकुट पीतांबर बनमाला बिराजित देखत ब्रज जन मन हरन ॥ सखा अंसपर वाम भुज दीने मुरली अधर सालन विश्व भरन । सूर श्याम कमल नयन को कौन कीन्हो बस बिलोकनि श्रीगोवर्द्धन धरन ॥ ॥ ४७ ॥ राग भैरों ॥ जैसी जैसी बात करै कहत न आवेरी । श्याम सुंदर अति मन

मन भावैरी ॥ मदन मोहन मृदु वेन बजावैरी । तान तरंग सरस करि करि रिझावैरी ॥ जंगम थावर करै थावर चलावैरी । लहरि भुवंग तजि सनमुख आवैरी ॥ व्योम जन अति गति फूलवरषावैरी । कामिनी धीरज धर सुको जु कहावै री ॥ नंदलाल ललना लल-चावैरी । सूरदास प्रेम हरि हिये न समावैरी ॥ ४८ ॥ राग पूरवी ॥ चारु चितौनि चंचल डोल । कहि न जाति मन में अति भावत कछुजो एक उपजत गति गोल ॥ मुरली मधुर बजावत गावत चलत करज अरु कुण्डल लोल । सब छवि मिलि प्रति विंब विराजत इन्द्र नील मणि मुकुर कपोल ॥ कंचित केस सुगंध सुवस मनो उड़ि आये मधु पनि के टोल । सूर सुभ्रु नासिका मनोहर अनुमानत अनु राग अमोल ॥ ४९ ॥ राग गौरी ॥ नंद नदन इंदाबन चंद । जदुकुल नभतिथि दुतिय देवकी प्रकटे चिभुवन चंद ॥ जठर कुहूतें बिथुरि बारुणी दिसि मधु पुरी सुछंद । वसुदेव शंभु सीस धरि आने गोकुल आनंद कंद ॥ व्रज प्राची राका तिथि जशुमति शरद सरस ऋतु नंद । उड़गन सकल सखा संकर्षन तम दनु कुल जु निकंद ॥ गोपी जन तहं धरि चकोर गति निरखि मेटि पल दंद । सूर सुदेस कला षोड़श परिपूरण परमानंद ॥ ५० ॥ राग गौरी ॥ नंद नदन मुख देखौ माई । अंग अंग छबि मनहु उयेरवि शशि अरु अमर लजाई ॥ खंजन मीन कुरंग भृंग बारिज पर अतिरुचि पाई । श्रुति मंडल कुंडल विवि मकरहि विलसत मदन सदाई ॥ कंठ कपोत कीर बिद्रुम पर दाडिभ कनन चुनाई । दुइ सारंग बाहन पर मुरली आई देत दुहाई ॥ मोहे थिर चर बिटप बिहंगम व्योम बिमान थकाई । कुसुमांजलि बरषत सुर मुनि सब सूरदास बलि जाई ॥ ५१ ॥ राग केदारो ॥ देखिरी देखि आनंद कंद । चित्त चाचिक प्रेम घन लोचन चकोर सु चंद ॥ चलत कुंडल गंड मंडल झलक ललित कपोल । सुधासर जनु मकर क्रीडत इंदु दंडहिंडोल ॥ सुभग कर आनन समीप हरि मुरलिका यहि भाय । मनो उभै अंभोज भाजन लेत सुधा भराय ॥ श्याम देह दुकूल दुति छवि लसत तुलसी माल । तड़ित घन संजोग मानो सैंन का शुक जाल ॥ अलक अविरल चारु हांस बिलास भृकुटी भंग । सूर हरिकी निरखि शोभा भई मनसा पंग ॥ ५२ ॥ राग मलार ॥ देखो माई सुंदरता को सागर । बुधि विवेक बल पारन पावत मगन होत मन नागर ॥ तनु अति श्याम अगाध अंबु निधि कटि पट पीत तरंग । चितवत चलत अधिक छवि उपजत भंवर परत प्रति अंग ॥ नयन मीन मकराकृत कुंडल भुजबल सुभग भुजंग । मुक्ता माल मिली मनो सुरसरि हैं सरिता लिये संग ॥ कनक मुकुट किंकिनि मणि भूषन अवलोकनि सुख देत । जनु जल निधि मथि प्रकट कियो शसि श्रीअरु सुधा समेत ॥ देखि सरूप सकल गोपी जन रहीं बिचारि बिचारि । तदपि सूर तरि सकी न शोभा रही प्रेम पचि हारि ॥ ५३ ॥ राग नट ॥ माधो जूके बदन की शोभा । कुटिल कुन्तल कमल प्रति मनो मधुप रस लोभा ॥ भृकुटि इमि नवकंज परसत सट्पद चंचल मीन । मुकुट कुंडल किरनि रवि छवि परम विगसित कीन ॥ सुरभि रेनु पराग रंजित मुरलि धुनि अलि गुंज । निरखि सुभग सरोज मुदित मराल सम सिसु पुंज ॥ दसन दामिनि बिंब मिलि मनो जलज मध्य प्रकास । निगम बांनी नेति क्यों

कहि सकै सूरज दास ॥ ५४ ॥ राग गौरी ॥ देखि सखी हरिको मुख चारु । मनहु छुड़ाय लियो नंद नंदन वाशशि को सतसारु ॥ रूप तिलक कच कुटिल किरनि छवि कुंडल कल बिस्तारु । पचावलि परि बेष सुमन शशि मिल्यो मनहु उड दारु ॥ नयन चकोर बिहंग सूर सुनि पियतन पावत पारु । अब अँवरू ऐसो लागतु है जैसे झूठा थारु ॥ ५५ ॥ राग कान्हरो ॥ देखिरी हरिके चंचल तारे । कमल मीन की कहाइती छवि खंजन हू न जात अनुहारे ॥ वै देखि निरखि नमित मुरली पर कर मुख नयन एक भये चारे । मनो सरोज बिधुवरुवंचि करि करत नाद वाहन चुचु कारे ॥ उपमा एक अनूपम उपजति कुंचित अलक मनोहर भारे । बि डरत बिभुकि जाति रथतें मृग जनु सशंकिशशि लंगर सारे । हरि प्रति अंग बिलोकि मानि रुचि ब्रज बनितानि प्राण धन बारे ॥ सूर श्याम मुख निरखि मगनभई यह बिचारि चित अनतन टारे ॥ ५६ ॥ राग पूरबी ॥ हरि मुख निरखत नयन भुलाने । ए मधुकर रुचि पंकज लोभी ताही ते जुउडाने । कुंडल मकर कपोलनिके ढिग जनु रवि रैनि बिहाने ॥ भ्रुव सुंदर नयननि गति निरखत खंजन मीन लजाने ॥ अरुण अधर द्विजकोटि बज्र दुति शशि गण रूप समाने ॥ कुंचित अलक सिली मुख मिलि मानों लै मकरंद निदाने ॥ तिलक ललाट कंठ मुकुतावलिभूषन मणि मैं साने ॥ सूर दास स्वामी अंग नागरते गुण जात न जाने ॥ ५७ ॥ राग केदारो ॥ देखिरी नवल नंदकिशोर । लकुट सो लपटाय ठाढे जुवति जन मन चोर । चारु लोचन हंसि बिलोकनि देखिके चित भोर । मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर ॥ आण धुनि सुनि नाद मोहत करत हिरदौ फोर । सूर अंग त्रिभंग सुंदर छवि निरखि तृन तोरै ॥ ५८ ॥ राग कान्हरो ॥ ब्रज बनिता देखति नंद नंदन ॥ नव घन नील बरन ताऊपर खोरि किये तनु चंदन ॥ कनक बरन कटि पीत पिछौरी उर भ्राजित बन माल ॥ निर्मल गगन श्वेत बादर तापर मनो दामिनि जाल । मुकता माल विपुल बग पंगति उड़त एक भई ज्योति । सूर श्याम छवि निरखति जुवती हरष परस्पर होति ॥ ५९ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ प्रात समय आवत हरि राजत ॥ रतन जटित कुंडल सखि श्रवणनि तिनकी किरनि सूर तनु लाजत । सातैं रासि मेलि द्वादस में कटि मेखला अलंकृत साजत । पृथ्वी मथी पितासों लै कर मुख समीप मुरली धुनि बाजत ॥ जलधि तात तेहि नाम कंठके तिनके पंख मुकट सिर भ्राजत ॥ सूर दास कहे सुनहु गूढ हरि भक्तनि भजत अभक्तनि भाजत ॥ ६० ॥ राग नट ॥ हरि तन मोहनी माई ॥ अंग अंग अनंग सत सत बरनि नहि जाई ॥ कोउ निरखि बिथुरी अलक मुख अधिक सुख दाई ॥ कोउ निरखि रहि भाल चंदन एक चित लाई ॥ कोउ निरखि रहि चारु लोचन निमिष भर माई ॥ सूर प्रभु की निरखि सोभा कहत नहि आई ॥ ६१ ॥ रागगुर्जरी ॥ श्याम अंग जुवती निरखि भुलानी ॥ कोउ निरखति कुंडलकी आभा इतनेहि माझ बिकानी । ललित कपोल देखि कोउ अटकी सिथिल भई ज्यों पानी । देह गेहकी सुधि नहि काहू हरषति

कोउ पछितानी । कोउ निरखतिही खंडित नासिका यह काहू नहि जानी । कोउ निरखति अधर निकी सोभा फुरति नहीं मुख बानी । कोऊ चकृत भई दसन चमक पर चकचोंधी अकुलानी । कोउ निरखति दुति चिबुक चारुकी सूर तरुनि बित तानी ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम हृदै बर मोतिन माला । बिथ कित भई निरखि ब्रज बाला । श्रवण थके सुनि बचन रसाला । नयन थके दरसन नंद लाला कंबु कंठ भुज दंड बिसाला । कर केयूर कुचन नग झाला ॥ पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै । कौस्तुभ मणि हृदय स्थल छाजै । रोमावली बरनि नहि जाई । नाभि स्थल की सुंदर ताई । कटि किंकिनी चारुमणि संजुत । पीतांबर कटि तटछबि अद्भुत । जुगल जंघकी पटतरको है । तरुणी मन धीरज को जो है । जानु जघनकी छबिन संवारै । नारि निकरमन बुद्धि बिचारै । रतन जटित कंचन कलनू पुर । मंद मंद गति चलत मधुर सुर । जुगल कमल पद नख मणि ओभा । संतनि मन संतत जहं लोभा । जो जेहि अंग सुतहां भुलानी । सूर श्याम गति काहु न जानी ॥ ६३ ॥ राग केदारो ॥ चर्चरी ॥ श्याम सुख रासि रस रासि भारी । रूपकी रासि सुख रासि जोबन वती थकित भई निरखि नवतरुणि नारी । सोलकी रासि जस रासि आनंद रासि नील नव जलद छबि बदन कारी । दयाकी रासि विद्या रासि बल रासि निर्दय रासि दनुज कुल प्रहारी । चतुरई रासि छल रासि कल रासि हरि भजहि जेहि हेत तेहि देन हारी । सूर प्रभु श्याम मुख धाम पूरन काम लसत कटि पीत मुख मुरलि धारी ॥ ६४ ॥ राग बिहागरो ॥ सुंदर बोलत आवत बैन । नामानो तेहि समे सखीरी सबतनु श्रवणकि नयन । रोम रोम में शब्द सुरतिकी नख सिख लों चख ऐन । इते माननी ओचंचलता सुनी न समुझी सैन । तबते बिथकि ह्वै रही चिससी पल नलगत चित चैन । सुनहु सूर यह साचिकि संभ्रम सपन किधों दिन रैन ॥ ६५ ॥ राग मलार ॥ नयना माई भूले अनतन जात ॥ देखि सखी शोभा जुबनी है माधो तन मुसकात । दाडिम दसन निकट नासा सुक चोंच चलाय न खात । मनो रतिनाथ हाथ भ्रुकुटी धनु तेहि अवलोकि डरात । बदन प्रभा मुख चंचल लोचन आनंद उरन समात । मानहु भौह जुवारथ जोते शशि चखत मृग मात । कुंचित केस मधुर धुनि मुरली सूर दास सुर सात । मनहु कमल पर कोकिल कुंजत अलिगन उपर उड़ात ॥ ६६ ॥ राग कान्हरो ॥ श्याम कमल पद नख की सोभा । जे नख चद्र इन्द्र सिरपरसे शिवबिरंचि मन लोभा । जे नख चंद्र सनक मुनि ध्यावत नहि पावतु भरमाहीं । ते नख चंद्र प्रकट ब्रज जुवती निरखि निरखि हरषाहीं । जे नख चंद्र फणींद्र हृदैतें एको निमिष न टारत । जे नख चंद्र महा मुनि नारद पलकन कहूंबिसारत । जे नख चंद्र भजन खल नासन रमा हृदै जे परसति । सूर श्याम नख चंद्र बिमल छबि गोपी जन मिलि दरसति ॥ ६७ ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रज जुवती हरि चरण मनावै । जे पद कमल महा मुनि दुरलभते सपनेहुं न पावैं । तनु त्रिभंग जुग जान एक पद ठाढे एक दरसाये । अंकुस कुलिश बज्र ध्वज परगट तरुनी मन भरमाये । वह छबि देखि रही एक टकही यह मन करति

विचार ॥ सूर दास मनो अरुण कमल पर सुखमा करत बिहार ॥ ६८ ॥ राग राम कली ॥ पिय पद कमल को मकरंद ॥ मज्जित मत मनो मधुप पर हरि विषै निरस कुमंद ॥ अस्तुत छूतें अमल अति निजु द्रवैरूप अनंद ॥ परम सीतल जानि शंकर सिर धर्यो तजि चंद ॥ सर्प शैलन कमल सागर नहि असुर सुर दंद ॥ सूर पावन लोक वैजल सुरसरीजसुछंद ॥ ६९ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी हरि अंग अनूप । जानु जुगल सुठिजंघ विराजत को बरने यह रूप ॥ लकुटी लये लटकि भये ठाढे एक चरण धर धारै । मनज्ञ नील मणि खम्भ काम रचि एक लपेठि सुधारै ॥ कबज्ञं लकुट तें जानु लौं हरि अपने सहज चलावत । सूरदास मानज्ञ करभा कर बारम्बार डुलावत ॥ ७० ॥ राग नट ॥ कटि तट पीत बसन सुदेश । मनहुं नव घन दामिनी तजि रही सहज सुवेश ॥ कनक मणि मेखला राजत सुभग सांवल अंग । मनो हंस रसाल पंगति नारि बालक संग ॥ सुभग कटि काछनी राजति जलज केसर खंड । सूरप्रभु अंग निरखि माधुर मदन तन परयो दंड ॥ ७१ ॥ रागनट ॥ तरुणी निरखि हरि प्रति अंग । कोउ निरखि नख इन्द्र, भूली कोउ चरण जुग रंग ॥ कोउ निरखि नूपुर रही थकि कोउ निरखि जुग जान । कोउ निरखि जुग जंघ शोभा करति मन अनुमान ॥ कोउ निरखि कटि पीतकछनी मेखला रुचि कारि ॥ कोउ निरखि हृद नाभि को थकि डारि तन मनु वारि । चारु रोमावली हरि के चारु उदर सुदेश । मनज्ञ अलि श्रेणी विराजति बने एकहि भेष ॥ रही एक टक नारि ठाढ़ी करति बुद्धि विचारि । सूर आगम कियो नभ तें जमुन मच्छ मधारि ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ रंजित रोम राजिव रेख । नील घन मनु धूम धारा रही शुज्ञम शेख ॥ निरखि सुंदर हृदय पर भृगुपाद परस सुलेख ॥ मनज्ञ शोभित अभ्र अंतर शंभु भूषन भेख । मुकुत माल नछत्र गन सम अर्द्ध चन्द विशेख ॥ सजल उज्जल जलद मलयज प्रबल निरनि अलेख । केकि कच सुर चांप की छवि दसन तड़ित सुपेख ॥ सूर प्रभु अवलोकि आतुर तजे नैन निमेख ॥ ७३ ॥ राग गौरी ॥ हरि प्रति अंग नागरि निरखि । दृष्टि रोमावली पर रहि परत नाहिन परखि ॥ कोउ कहति यह काम सरनी कोउ कहति नहि जोग । कोउ कहति अलि बाल पंगति जुरे एक संजोग ॥ कोउ कहति यहि काम पठयो डसे जिनि ये काछ । श्याम रोमावली की छवि सूर नाहि निबाछ ॥ ७४ ॥ राग आसावरी ॥ चतुर नारि सब कहति बिचारी । रोमावली अनूप विराजे जमुनाकी अनुहारी ॥ उर कलिंद तें धसि जल धारा उदर धरनि परवाह । जाति चली अति तेज धार है नाभी हृद अवगाह ॥ भुजा दगड़ तट शुभग घाट घट बन माला तरुकूल । मोतिन माल तुछंधां मानो फेन लहरि रस फूल ॥ सूर श्याम रोमावलि की छवि देखति करति विचारि । बुद्धि रचति तरि सकतिन शोभा प्रेम विवस व्रज नारि ॥ ७५ ॥ राग कल्यान ॥ रोमावली रेख अति राजत । शूज्ञम शेष धूम की धारा नव घन ऊपर भ्राजत॥ भृगु पद रेख श्याम उर सजनी कहा कहौं ज्यौ छाजत । मनहुं मेघ भीतर शशि दुतिया कोटि काम तनु लाजत ॥ मुक्ता माल नंद नन्दन उर अर्द्ध सुधा घट कांति । तनु थो खंड मेघ उज्जल अति देखि महाबल भांति ॥ बरहा मुकुट इन्द्र धनु मानज्ञ तड़ित दसन छवि

लाजत । एक टक रही बिलोकि सूर प्रभु को तनुकी कह हाजत ॥ ७६ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम हृदय जल सुतकी माला अतिहि अनूपम छाजैरी । मनऊ बलाक पांति नव घन पर यह उपमा कछु भ्राजैरी ॥ पीत हरित श्वित अरुण माल वन राजत हृदय विशालैरी । मानऊ इन्द्र धनुष नभ मण्डल प्रकट भयो तेहि कालैरी ॥ भृगुपद चिन्ह उर स्थल प्रकटै कौस्तुभ मणि ढिग दरसतरी । बैठो जनु षट बंधु एक संग अर्ह निशा मिलि बिहरतरी ॥ भुजा विशाल श्याम सुन्दर की चन्दन खोरि चढ़ायेरी । सूर शुभग अंग अंग की शोभा ब्रज ललना ललचायेरी ॥ ७७ ॥ राग मलार ॥ निरखि सखी सुन्दरता की सींव । अधर अनूप मुरलिका राजत लटकि रहति अधग्रीव ॥ मंद मंद सुर पूरत मोहन राग मलार बजावत । कबहुंक रीझि मुरलि पर गिरिधर आपुहि रस भरि गावत ॥ हंसत लसत दसनावलि पङ्क्ति इज वनिता मन मोहत । मरकत मणि पुट बिच मुक्ताफल बदन भरे मनु सोहत ॥ मुख बिगसत शोभा एक आवत मनो राजीव प्रकास । सूर अरुण आगमन देखि कें प्रफुलित भये कुलास ॥ ७८ ॥ राग टोड़ी ॥ गोपी जन हरि बदन निहारति । कुंचित अलकं विथुरि रहे मुख पर तापर तनमन वारति ॥ बदन सुधा सरसीरुह लोचन भृकुटी दोउ रखवारे । मनऊ मधुप मधु प्रानहि आवत देखि डरत जिय भारे एक एक अलक लटकि लोचन पर यह उपमा इक आवति । मनऊ पन्नगिनि उतरि गगन तें दल पर फन परसावति ॥ मुरली अधर धरे कल पूरत मन्द मन्द सुर गावत । सूर श्याम नागर नारिन के चंचल चितहि चुरावत ॥ ७९ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी यह सुन्दरताई । चपल नयन बिच चारु नासिका एक टक नयन रही तहं लाई ॥ करति विचार परस्पर युवती उपमा आनति बुद्धि बनाई । मानऊं खञ्जन बिच शुक बैठो यह कहि के मग जात लजाई ॥ कछु एक तिल प्रसून की आभा मन मधु कर जहं रह्यौ लुभाई । सूर श्याम नासिका मनोहर यह सुन्दरता उन कहं पाई ॥ ८० ॥ राग बिलावल ॥ मनोहर हैं नैनन की भांति । मानऊं दूरि करत बल अपने शरद कमल की कांति ॥ इन्दीवर राजीव कुसेशय जीते सब गुन जाति । अति आनन्द सकोचा तातें बिगसत दिन अरु राति खञ्जरीट मृग मीन बिचारत उपमा को अकुलाति । चंचल चपल चारु अव लोकनि चित्त न एक समाति ॥ जब लगि परत निमेष अन्तरा जुग समान पल जाति । सूर दास यह रसिक राधिका निमि पर अति अनखाति ॥ ८१ ॥ राग रामकली ॥ आजु सखि देखे श्याम नयेरी । निकसे आय अचानक अबहीं दूत फिरि फिरि चितयेरी । मैं तब तें पछितातिं यह तनु नयनन बड़त भयेरी ॥ जो विधना इतनी जानत है कत दृग दोय दयेरी । सब दे लेउं लाख लोचन कहं जो कोउ करत नयेरी ॥ हरि प्रति अंग बिलोकन कों मनु आपनु वे पठयेरी । अपनी चोप बहुत कहं पैये वे हरि संग गयेरी ॥ थके चरण सुनि सूर मनों गुन मदन बान बिधयेरी ॥ ८२ ॥ राग गुर्जरी ॥ देखि री हरि के चंचल नयन । खंजन मीन मृगज चपला इजहि पटतर एक सैन ॥ राजिव दल इंदीवर सतदल कमल कुशेशय जाति । निशि मुद्रित प्रातहि ये बिगसत ये बिगसत दिन राति अरुण सेत सित अलक पलक प्रति को बरनै उपमाई । मनो सुरसति गंगा जमुना मिलि

आगम कीन्हो आई ॥ अब लोकनि जल धार तेज अति तहां न मन ठहरात । सूर श्याम लोचन अपार छवि उपमा सुनि सरमात ॥ ८३ ॥ राग सोरठ ॥ देखि सखी मन मोहन मन चोरत । नयन कटाच्छ विलोकनि मधुरी सुभग भृकुटि विवि मोरत ॥ चन्दन खोरि लिलाट श्याम के जिरखत अति सुख दाई । मानहु अर्द्ध चन्द्र तट अहिनी सुधा चुरावन आई ॥ मलयज भाल भृकुटि रेखा की कवि उपमा एक ल्यावत । मनो एक संग गंग जमुन नभ तिरछी धार बहात ॥ भृकुटी चारु निरखि व्रज सुन्दरि यह मन करति विचार सूरदास प्रभु शोभा सागर पावत कोउ न पार ॥ ८४ ॥ राग रामकली ॥ देखिरी देखि कुंडल लोल । चारु श्रवणनि ग्रहित कीन्हे झलक ललित कपोल ॥ वदन मंडल सुधा सरवर निरखि मन भयो भोर । मकर क्रीडत शुभ्र परगट रूप जल झक झोर ॥ नयन मीन भु अंगिनी भ्रुव नासिका स्थल बीच । सरस दृग मद तिलक शोभा लसति है लग कीच ॥ मुख विकास सरोज मानहु जुवति लोचन भृंग । बिथुरि अलकै परी मानहु प्रेम लहरि तरंग ॥ श्याम मुख छवि अमृत पूरन रच्यो काम तड़ाग । सूर प्रभुकी निरखि शोभा व्रज तरुणि बड़ भाग ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि मुख निरखि नागर नारि । कमल नयन के कमल वदन पर वारिज वारिज वारि ॥ सुमति सुन्दरी परसि प्रिया रस लम्पट मांड़ो आरि । हारि जोहारि जो करति वसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि राखति ओट कोटि जतननि करि झुकि झुकि नाखति झारि । खंजन मनहुं उडन कहं आतुर सकत न पंख पसारि ॥ देखि स्वरूप श्याम सुन्दर को रही न पलक सँम्हारि । देखहु सूर अधिक सूर त्वन तजि न मानी हारि ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि मुख किधों मोहनी माई । बोलत बचन मंचसों लागत गति मति जाति भुलाई ॥ कुटिल अलक राजत भ्रुव ऊपर जहं तहं रहे बगराई । श्याम फांसि मन फंद्यो हमारो अब समुझी चतुराई ॥ कंडल ललित कपोलनि झलकत इनकी मति मैं पाई । सूर श्याम जुवती मन मोहत ए सब करत सहाई ॥ ८७ ॥ राग नट ॥ निरखि रूप नागरि नारि । मुकुट पर मन अटकि लटक्यो जात नहि निर वारि ॥ श्याम तनको झलक आभा चन्द्रिका झल काय । बार बार विलोकि थकि रही नयन नहि ठहराय ॥ श्याम मरकत मणि महा नग शिखा नृत्तत मोर । देखि जलधर हरष उर पर नहीं आनन्द थोर ॥ कोउ कहति सुर चाप मानो गगन भरो प्रकाश । थकित व्रज ललना जहां तहं हरष कबहु उदास ॥ निरखि जो जेहि अंगराचीतहीं रही भुलाय । सूर प्रभु गुण रासि शोभा रासि जन सुख दाय ॥ ८८ ॥ राग केदारो ॥ देखिरी देखि शोभा रासि । काम पटतर कहा दीजै रमा जिनकी दासि ॥ मुकुट सीस सिखंड सोहै निरखि रही व्रज नारि । कोटि सुर कोदंड आभा झिरकि डारों डारि ॥ केस कुंचित बिथुरि भ्रव पर बीच शोभा भाल । मनो चन्दहि अवै जान्यों राहु घेरयो जाल ॥ चारु कुंडल सुभग श्रवणनि को सकै उपमाय । कोटि कोटि कलातरनि छवि देखि तनु भर आय ॥ सुभग सुखपर चारु लोचन नासिका यहि भांति । मनो खंजन बीच शुक लखि बैठे हैं एक पांति ॥ सुभग नासा तर अधर छवि रस भरे अरुनाय । मनों बिंब निहारि सुख भ्रुव धनुष देखि डराय ॥ हंसत दस-

नलि चमकताई वज्र कन रचि पांति । दामिनी दाडिम नहीं सम कियो अति मन भ्रांति चिबुक पर चित चित चोरावत नवल नन्द किशोर । सूर प्रभुकी निरखि शोभा भई तरुणी भोर ॥ ८९ ॥ राग केदारो ॥ तनु मन नारि डारति वारि । श्याम शोभा सिंधु जान्यों अंग अंग निहारि ॥ पचि रही मन ज्ञान करि करि लहति नाहिन तीर । श्याम तनु जल रासि पूरन महा गुण गम्भीर ॥ पीत पट फहरानि मानो लहरि उठत अपार । निरखि छवि थकि तीर बैठीं कहूं वारन पार ॥ चलत अंग त्रिभंग करिके भौंह भाव चढाय । मनों बिच बिच भौंर डोलत चित धरत भरमाय ॥ श्रवण कुण्डल मकर मानो नयन मीन विसाल । सलिल झलकनि रूप आभा देखुरी नंद लाल ॥ बाहु दंड भुजंग मानो जलधि मध्य विहार । मुकुत माल मनो सुरसरी लै चली द्वै धार ॥ अंग अंग भूषण विराजित कनक मुकुट प्रभास । उदधि मथि नव प्रगट कीन्हों शीसुधा पर गास ॥ चकृत भई चित निरखि शोभा देह गति बिसराय । सूर प्रभु छवि रासि नागर जानि जाननि राय ॥ ९० ॥ राग केदारो ॥ करि मन नंद नन्दन ध्यान । सेइ चरन सरोज शीतल तजि विषै रस पान ॥ जानु जंघ त्रिभंग सुन्दर कलित कंचन दण्ड । काछनी कटि पीत पट दुति कमल केसर खण्ड ॥ मनु मराल प्रवाल छौना किंकिणी कल राव । नाभि ह्रद रोमावली अलि चले ऐन सुभाव ॥ मणि कंठ मुक्ता माल मलयज अंग उर वन माल । सुरसरी शशि नीर मानहु लता श्याम तमाल ॥ बाहु पानि सरोज पल्लव गहे सुख मृदु वेंनु । अति विराजित वदन विधुपर सुरभि मंडित रेंनु ॥ अरुण अधर कपोल नासा परम सुंदर नयन । चलत कुण्डल गंड मंडल मनहु निर्त्तत मैन ॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश सिखी शिखंड । मनो मदन द्वैसर संधान देखि घनको झंड ॥ सूर श्रीगोपाल की छवि दृष्टि भरि भरि लेत । प्राण पतिकी निरखि शोभा पलक परतन देत ॥ ९१ ॥ राग नट ॥ सजनी निरखि हरिको रूप । मनसि बचसि विचारि देखो अंग अंग अनूप ॥ कुटिल केस सुदेस अलि गन वदन सरद सरोज । मकर कुंडल किरनि की छवि दुरत फिरत मनोज ॥ अरुण अधर कपोल नासा सुभग ईषद हास । दसन की दुति तड़ित नव शशि भृकुटि मदन विलास ॥ अंग अंग अनंग जीते रुचिर श्रवन माल । सूर शोभा हृदय पूरन देत सुख गोपाल ॥ ९२ ॥ राग नट ॥ नयननि ध्यान नन्द कुमार । शीश मुकुट सिखंड राजत नहिन उपमा पार ॥ कुटिल केस सुदेस भ्राजत मनहु मधुकर जाल । रुचिर केशरि तिलक दीन्हे परम शोभा भाल ॥ भृकुटि वंकट चारु लोचन रहीं जुवती देखि । मनों खंजन चाप डरडरि टडत नहिं तेहि लेखि ॥ मकर कुण्डल गंड झलमल निरखि लज्जित काम । नासिका छविकीर जज्जित कवि न बरनत नाम ॥ अधर विद्रुम दसन दाड़िम चिबुक है चित चोर । सूर प्रभु मुख चन्द पूरन नारि नैन चकोर ॥ ९३ ॥ राग कान्हरो ॥ अलकनि की छवि अलिक लगावत । खंजन मीन मृगज लज्जित भये नयन नचावत गति नहिं पावत ॥ मुख मुसुकानि आनि उर अन्तर चंचुज बुधि उपजावत । सकुचत अरु विकसत वा छवि पर अनु दिन अन्ध गवांवत ॥ पूरण नहीं सुभग श्यामलको यद्यपि जलधर धावत । वसन समान होत नहि कटक अंगनि

झाप दैं आवत ॥ मुक्ता दाम विलोकि बिलखि किर अवलि बलाक बनावत । सूर दास प्रभु ललित त्रिभङ्गी मन मथ मनहि लजावत ॥ ९४ ॥ राग केदारो ॥ रायसा ॥ हमारे श्याम लाल हो नयन विशाल हों मोही तेरी चाल हो तुम पूरन श्री गोपाल हो ॥ ध्रुव ॥ मोर मुकुट डोलनि मुख मुरली कल मन्द । मनो तमाल सिखा शिखी नाचत आनन्द ॥ मकरा कृत कुण्डल छवि राजत लोल कपोल । ईषद् अधर मुसुकनि बिच मधुर बोल ॥ चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुव भङ्ग । धनुष बान डारि कें बस होत कोटि अनङ्ग ॥ वदन सुधा को सरोवर कुटिल अलक पारि । ब्रज जुवती मृगनी रचि तिनकों फंद बारि ॥ पीताम्बर छवि निरखित दामिनि दुति लजाई । चमकि चमकि सावन मनो घन में दुरि जाई ॥ चरण कमल अब लम्बित राजित बनमाल । प्रफुलित ह्वै ह्वै लता मानों चढ़ी तरु तमाल ॥ सूर दास बा छवि पर वारौं तनु प्रान । गिरिधर प्रिय देखि देखि कहा करौं अनुमान ॥ ९५ ॥ राग सारङ्ग ॥ सुन्दर मुख की हौं बलि बलि जांउ । लावनि निधि गुण निधि शोभा निधि निरखि निरखि जीवत सब गांउ ॥ अङ्गअङ्ग अति अमित माधुरी प्रकटित रश्मि रुचिर ठांउ ठांउ । तामें मृदु मुसुकानि मनोहर न्याय कहत कवि मोहन नांउ ॥ नैन सैन दै दै जब हेरत ता छवि पर बिनु मोल बिकांउ । सूर दास प्रभु मन मोहन छवि यह शोभा उपमा नहि पांउ ॥ ९६ ॥ राग सारङ्ग ॥ देखि सखी सुन्दर घन श्याम । सुन्दर मुकुट कुटिल कच सुन्दर सुन्दर भाल तिलक छवि धाम ॥ सुन्दर भ्रुव सुन्दर अति लोचन सुन्दर अवलोकनि विश्राम । अति सुन्दर कुण्डल श्रवणनि वर सुन्दर झलकनि रीझत काम ॥ सुन्दर चारु नासिका सुन्दर सुन्दर हृदै विराजत दाम । सुन्दर भुजा पीन कटि सुन्दर सुंदर जटित मेखला ग्राम ॥ सुन्दर जंघ जानु जुग सुन्दर सुन्दर पद हिरदै विश्राम । सुन्दर भक्त मनोरथ पूरन सुन्दर सूर उधारन नाम ॥ ९७ ॥ रागसूहो मैं बलि जांउ श्याम मुख छवि पर । बलि बलि जांउ कुटिल कच बिथुरो बलि बलि जांउ भृकुटी ललाट तर ॥ बलि बलि जांउं चारु अवलोकनि बलिहारी कुण्डल की । बलि बलि जांउ नासिका सुललित बलिहारी वा छवि की ॥ बलि बलि जांउ अरुण अधरन की बिद्रुम बिम्ब लजावन । मैं बलि जांउ दसन चमकनि की वारों तड़ित निवासन ॥ मैं बलि जांउ ललित टोड़ी पर बलि मोतिन की माल । सूर निरखि तन मन बलिहारों बलि बलि जशु मति लाल ॥ ९८ ॥ राग सारङ्ग ॥ चर्चरी ॥ देखि देखिरी नंद कुल के उधारी । मात पितु दुरित उद्धरन ब्रज उद्धरन धरनि उद्धरन सिर मुकुट धारी ॥ पतित उद्धरन अप भक्त उद्धरन प्रभु दीन उद्धरन कुंडलनि धारी । जगत उद्धरन तिहुं लोक के उद्धरन गलहि उद्धरन पग पीठि धारी ॥ पूतना उद्धरन दनुज कुल उद्धरन बिना उद्धरन मुख मुरलि धारी । शकट उद्धरन केशी प्रलम्ब उद्धरन बका उद्धरन अरुण अधर धारी ॥ अघा उद्धरन ग्वाल गाय कै उद्धरन वृषभ उद्धरन बन माल धारी । बच्छ उद्धरन ब्रह्मा उद्धरन येई प्रभु यज्ञ उद्धरन धरनी उधारी ॥ काली उद्धरन फन फन सहित उद्धरन दावा उद्धरन अगम लय धारी । ग्राह उद्धरन गजराज उद्धरन बे शिला उद्धरन कटि पीत धारी ॥ यदुकुल उद्धरन द्रोपदी उद्धरन श्राप गतजय विजय के धारी । बास उद्धरन प्रह्लाद के उद्धरन प्रबल नरसिंह

अवतार धारी ॥ हिरन कशिप उद्धरन हिरनाक्ष के उद्धरन वेद उद्धरन नव भुजा धारी रावण उद्धरन कुम्भकर्ण उद्धरन ये त्रिसिर उद्धरन प्रभु चक्र धारी ॥ धर्म उद्धरन वेद कर्म उद्धरन ये शुभग कटि किंकिनी पीत धारी । सूर उद्धरन सुर लोक उद्धरन हरि वंस उद्धरन येई मुरारी ॥ ९९ ॥ राग धनाश्री ॥ नंद नन्दन मुख देखो नीके । अंग अंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके ॥ शुभग श्रवण मणि कुण्डल आभा झलक कपोलनि पीके । दह दह अमृत मकर क्रीड़त मनौ यह उपमा कछु हीके ॥ और अङ्ग की सुधि नहि जानै करैं कहति हौ लीके । सूर दास प्रभु नटवर काछें रहत है रति प्रति बीके ॥ ॥ १०० ॥ राग रामकली ॥ देखिरी देखि कुण्डल झलक । नयन दै छवि धरों कैसें लगत ता पर पलक ॥ लसत चारु कपोल दुऊं बिच सजल लोचन चारु । मुख सुधा सरमीन मानौं मकर संग बिहारु ॥ कुटिल अलक सुभाय हरि के भ्रुवनि पर रहे आय । मानौ मनमथ फांदि फंदनि मीन बिंबि तट ल्याय ॥ चपल लोचन चपल कुण्डल चपल भृकुटी बङ्क । सखा ब्याकुल देखि अपने लैत वनत नसङ्क ॥ सूर प्रभु नंद सुवन की छवि बरनि कापै जाय । निरखि गोपी निकर विथको विधिहि अति रिस पाय ॥ १०१ ॥ राग जैतश्री विधना अतिही पोच कियोरी । कहा बिगार कियो हम बाकौ ब्रज काहे अवतार दियोरी ॥ यह तौ मन अपने जानत हौ एते पर क्यौ निठुर हियोरी ॥ रोम रोम लोचन एक टक करि जुवतिन प्रति काहे न ठियोरी । अंखियां दै छवि की चमकनि बह हम तौ चाहति सबै पियोरी ॥ सुनि सजनी यह करनी अपनी अपने ही रिस मानि लियोरी । हम तौ पाप कियो भुगते को पुण्य प्रकट क्यों जात छियोरी ॥ सूर दास प्रभु रूप सुधा निधि पुट थोरो बिधि हीन बियोरी । १०२ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनि री सखी बचन इक मोसों । रोम रोम प्रति लोचन चाहति है साबित हैं तोसों ॥ मैं बिधना सों कहों कछु नाहीं नित प्रति तिनकों कोसौं । येऊ जो नौके दोऊ रहते निरखि निरखि रति होंसों ॥ एक एक अङ्ग अङ्ग छवि धरती में जु कहति तेरी सों । सूर कहा तुम कहति अयानी काम पर्यो सब जीसों ॥ १०३ ॥ राग कान्हरो ॥ कह काहू को दोष लगावै । निमि सों कहा कहति कहि विधिसों कह नयननि पछि तावैं ॥ श्यामहि तुम कैसे करि जानति एऊ निठुर कहावैं । छिनमें और और अंग शोभा जोये देखन पावै ॥ जबही एकटक करि अब लोकति तबही बै झलकावै । सूर श्याम को चरित लखै को येई बैर बढ़ावै ॥ १०४ ॥ राग नट ॥ लहनी कर्म के पाछे । दियो अपनो लहै सोई मिलै नाहि वाछे ॥ प्रगटहीं हैं श्याम ठाढे कौन अंग किहि रूप । लह्यौ काहू कहौ मोसों श्याम है ठग रूप ॥ प्रेम जाचक धनी हरिके रतन पुट कह लेहि । अमृत सिंधु हिलोरि पूरन कृपा दरशन देहि ॥ पाइये सोई सखीरी लिख्यो जितनो भाल । सूर उत कछु कमी नाही छवि समई गोपाल ॥ १०५ ॥ राग सूहो ॥ देखि सखी अधरनि की लाली । मणि मरकत तें सुभग कलेवर ऐसे हैं बन माली ॥ मनो प्रातकी घटा सांवरी तापर अरुण प्रकाश । ज्यों दामिनि बिच चमकि रहति है फहरत पीत सुबास ॥ कीधौं तरु तमाल बेली चढि जुग पल बिम्ब सुपाक्यो । नासी कीर आय मानो बैठ्यो लेत बनत नहि ताक्यो

हंसत दसन एक आभा उपजत उपमा जदपि लजाई । मनो नील मनि पुट मुक्ता गन बदन भरी बगराई ॥ किधौं वज्र कन लाल नगनि खचितापर विद्रुम पांति । किधौं सुभग वंधूक सुमन तर झलकत जलकनि कांति ॥ किधौं अरुण अंबुज विच बैठी सुन्दर ताई आई । सूर अरुण अधरनि की शोभा बरनत बरनि न जाई ॥ १०६ ॥ राग धनाश्री श्यामरूप देखन को साध मेरी माई । कितनो पचि हारि रही देत नहि देखाई ॥ मनतो निरखत मुखंग मैं रही भुलाई । मोसों यह भेद कहो कैसे वह पाई ॥ आपुन अंग अंग विलोक मोकों बिसराई । बार बार कहत यहै तू क्यों नहि आई ॥ कबहूं न जात साथ बांह बुलाई । सूर श्याम छवि अगाध निरखत भर माई ॥ १०७ ॥ राग बिलावल ॥ सुनऊ सखी मैं बूझति तुमको काहू हरिको देखो है । कैसो तनु कैसो रंग देखियत कैसे विधि कर लेखे है ॥ कैसो मुकुट तिलक है कैसो सुभग भाल भ्रुव नीके हैं । कैसे नयन नासिका कैसो श्रवणनि कुण्डल पीके हैं ॥ कैसे अधर दसन दुति कैसी चिबुक चारु चित चोरत हैं । कैसे निरखि हंसत काहू तन हंसतऊ बदन सकोरत हैं ॥ कैसी उर माला है कैसी कैसो भुजा-विराजत हैं । कैसे कर पहुंचो है कैसी कैसो अंगुरी राजत हैं कैसी रोमावली श्याम को नाभि चारु कटि सुनियतु है । कैसे कनक मेखला कैसी कछनी यह मन गुनियतु हैं ॥ कैसे जंघ जानु कैसे दोउ कैसे पद नख जानति हैं । सूर श्याम अंग अंग की शोभा देखे की अनुमानति हैं ॥ १०८ ॥ राग रामकली ॥ ऐसे सुने नन्द कुमार ' नख निरखि शशि कोटि वारति चरण कमल अपार ॥ जानु जंघनि हारि कर भाकरनि डारत वारि । काछनी पर प्रान वारत देखि शोभा भारि ॥ कटि निरखि तनु सिंघ वारत किंकिनी जु मराल । नाभि ह्रद लखि आपु वारत रोमवलि अलि माल ॥ हृदय मुक्ता माल निरखत वारि अवलिवलाक । करज कर पर कमल वारत चलति जहं तहं साक ॥ भुजनिपर वर नाग वारत गये भागि पताल । ग्रीवकी उपमा नहीं कछु लसति परम रसाल ॥ चिबुक पर चित वारि डारत अधर अंबुज लाल । बंधूक विद्रुम बिंब वारत ते भये बेहाल ॥ वचन सुनि कोकिला वारत दसन दामिनि कांति । नासिका पर कीर वारत चारु लोचन भांति ॥ कंज खंजन मीन मृग सावकनि डारति वारि । भ्रू कुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलक पर वारत अंध्यारी तिलक भाल सुदेस । सूर प्रभु शिर मुकुट धारी धरे नटवर भेस ॥ १०९ ॥ राग सारंग ॥ ऐसी विधि नन्द लाल कहत सुने माईरी । देखे जो नयन रोम रोम प्रति सुभाईरी ॥ विधना द्वै नयन रचे अंग ठानि बान्यों । लोचन नहि बहुत दिये जानिके भुलान्यों ॥ चतुरता प्रवीन ता विधाता की जान्यों । अब कैसो लागत हमहि बताव अथान्यों ॥ त्रिभुवन पति तरुण कान्ह नटवर वपु काछे । हमको द्वै नयन दिये तेऊ नहि आछे ॥ ऐसो विधि को विवेक कहा कहों वाको । सूर कबहुं पाऊं जोकर अपने ताको ॥ ११० ॥ राग नट ॥ मुख पर चन्द डारों वारि । कुटिल कच भंवर वारों भौंह पर धनुवारि ॥ भाल केसरि तिलक छवि पर मदन सत सत वारि । मनो चलि बहि सुधा धारा निरखि मन देउ वारि ॥ नयन खंजन मृगज वारौं कमलको कुल वारि । चिबुक पर चित वित्त वारों प्राण वारों वारि

अवतार धारी ॥ हिरन कशिप उद्धरन हिरनाक्ष के उद्धरन वेद उद्धरन नव भुजा धारी रावण उद्धरन कुम्भकर्ण उद्धरन ये त्रिसिर उद्धरन प्रभु चक्र धारी ॥ धर्म उद्धरन येई कर्म उद्धरन ये भ्रुभग कटि किंकिनी पीत धारी । सूर उद्धरन सुर लोक उद्धरन हरि वंस उद्धरन येई मुरारी ॥ ९९ ॥ राग धनाश्री ॥ नंद नन्दन मुख देखो नीके । अंग अंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके ॥ भ्रुभग श्रवण मणि कुण्डल आभा झलक कपोलनि पीके । दह दह अमृत मकर क्रीड़त मनो यह उपमा कछु होके ॥ और अङ्ग की सुधि नहि जानै करैं कहति हौ लीके । सूर दास प्रभु नटवर काछें रहत है रति प्रति बीके ॥ ॥ १०० ॥ राग रामकली ॥ देखिरी देखि कुण्डल झलक । नयन द्वै छवि धरों कैसें लगत ता पर पलक ॥ लसत चारु कपोल दुऊं बिच सजल लोचन चारु । मुख सुधा सरसीन मानों मकर संग विहारु ॥ कुटिल अलक सुभाय हरि के श्रुवनि पर रहे आय । मानौ मनमथ फांदि फंदनि मीन विवि तट ल्याय ॥ चपल लोचन चपल कुण्डल चपल भ्रुकुटी बङ्क । सखा ब्याकुल देखि अपने लैत वनत नसङ्क ॥ सूर प्रभु नंद सुवन की छवि बरनि कापै जाय । निरखि गोपी निकर विथको विधिहि अति रिस पाय ॥ १०१ ॥ राग जैतश्री विधना अतिही पोच कियोरी । कहा बिगार कियो हम बाकौ ब्रज काहे अवतार दियोरी ॥ यह तौ मन अपने जानत हौ एते पर क्यौ निठुर हियोरी ॥ रोम रोम लोचन एक टक करि जुवतिन प्रति काहे न ठियोरी । अंखियां द्वै छवि की चमकनि वह हम तौ चाहति सबै पियोरी ॥ सुनि सजनी यह करनी अपनी अपने ही रिस मानि लियोरी । हम तौ पाप कियो भुगते को पुण्य प्रकट क्यों जात छियोरी ॥ सूर दास प्रभु रूप सुधा निधि पुट थोरो बिधि हीन वियोरी । १०२ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनि री सखी बचन इक मोसों । रोम रोम प्रति लोचन चाहति द्वै सावित हैं तोसों ॥ मैं विधना सों कहों कछु नाहीं नित प्रति तिनकों कोसौं । येऊ जो नौके दोऊ रहते निरखि निरखि रति होंसों ॥ एक एक अङ्ग अङ्ग छवि धरती मैं जु कहति तेरी सों । सूर कहा तुम कहति अयानी काम पर्यो सब जीसों ॥ १०३ ॥ राग कान्हरो ॥ कह काहू को दोष लगावै । निमि सों कहा कहति कहि विधिसों कह नयननि पछि तावैं ॥ श्यामहि तुम कैसे करि जानति एऊ निठुर कहावैं । छिनमें और और अंग शोभा जोये देखन पावै ॥ जबही एकटक करि अब लोकति तबही वै झलकावै । सूर श्याम को चरित लखै को येई बैर बढ़ावै ॥ १०४ ॥ राग नट ॥ लहनी कर्म के पाले । दियो अपनो लहै सोई मिलै नाहि वाके ॥ प्रगटहीं हैं श्याम ठाढे कौन अंग किहि रूप । लख्यौ काहू कहौ मोसों श्याम है ठग रूप ॥ प्रेम जाचक धनी हरिके रतन पुट कह लेहि । अद्भत सिंधु हिलोरि पूरन कृपा दरशन देहि ॥ पाइये सोई सखीरी लिख्यो जितनो भाल । सूर उत कछु कमी नाही छवि समई गोपाल ॥ १०५ ॥ राग सूहो ॥ देखि सखी अधरनि की लाली । मणि मरकत तें सुभग कलेवर ऐसे हैं वन माली ॥ मनो प्रातकी घटा सांवरी तापर अरुण प्रकाश । ज्यों दामिनि बिच चमकि रहति है फहरत पीत सुवाश ॥ कोधौं तरु तमाल वेली चढि जुग फल बिम्ब सुपाक्यो । नासी कीर आय मानो बैठ्यो लेत वनत नहि ताक्यो

हंसत दसन एक आभा उपजत उपमा जदपि लजाई । मनो नील मनि पुट मुक्ता गन बदन भरी बगराई ॥ किधौं वज्र कन लाल नगनि खचितापर विद्रुम पांति । किधौं सुभग बंधूक सुमन तर झलकत जलकनि कांति ॥ किधौं अरुण अंबुज बिच बैठी सुन्दर ताई आई । सूर अरुण अधरनि की शोभा बरनत बरनि न जाई ॥ १०६ ॥ राग धनाश्री श्यामरूप देखन की साध मेरी माई । कितनो पचिहारि रही देत नहि देखाई ॥ मनतो निरखत सुअंग मैं रही भुलाई । मोसों यह भेद कहौ कैसे वह पाई ॥ आपुन अंग अंग विलोक मोकों बिसराई । बार बार कहत यहै तू क्यों नहि आई ॥ कबहूं न जात साथ बांह बुलाई । सूर श्याम छबि अगाध निरखत भर माई ॥ १०७ ॥ राग बिलावल ॥ सुनउ सखी मैं बूझति तुमको काहू हरिको देखो है । कैसो तनु कैसो रंग देखियत कैसे बिधि कर लेखे है ॥ कैसो मुकुट तिलक है कैसो सुभग भाल भ्रुव नीके हैं । कसे नयन नासिका कैसो श्रवणनि कुण्डल पीके हैं ॥ कैसे अधर दसन दुति कैसी चिबुक चारु चित चोरत हैं । कैसे निरखि हंसत काहू तन हंसतउ बदन सकोरत हैं ॥ कैसी उर माला है कैसी कैसो भुजा विराजत हैं । कैसे कर पउंची है कैसी कैसो अंगुरी राजत हैं कैसी रोमावली श्याम को नाभि चारु कटि सुनियतु है । कैसे कनक मेखला कैसी कछनी यह मन गुनियतु हैं ॥ कैसे जंघ जानु कैसे दोउ कैसे पद नख जानति हैं । सूर श्याम अंग अंग की शोभा देखे की अनुमानति हैं ॥ १०८ ॥ राग रामकली ॥ ऐसे सुने नन्द कुमार । नख निरखि शशि कोटि वारति चरण कमल अपार ॥ जानु जंघनि हारि कर भाकरनि डारत वारि । काछनी पर प्रान वारत देखि शोभा भारि ॥ कटि निरखि तनु सिंघ वारत किंकिनी जु मराल । नाभि ह्रद लखि आपु वारत रोमवलि अलि माल ॥ हृदय मुक्ता माल निरखत वारि अवलिवलाक । करज कर पर कमल वारत चलति जहं तहं साक ॥ भुजनिपर वर नाग वारत गये भागि पताल । ग्रीवकी उपमा नहीं कछु लसति परम रसाल ॥ चिबुक पर चित वारि डारत अधर अंबुज लाल । बंधूक बिद्रुम बिंब वारत ते भये बेहाल ॥ वचन सुनि कोकिला वारत दसन दामिनि कांति । नासिका पर कोर वारत चारु लोचन भांति ॥ कंज खंजन मीन मृग सावकनि डारति वारि । भ्रू कुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलक पर वारत अंध्यारी तिलक भाल सुदेस । सूर प्रभु शिर मुकुट धारी धरे नटवर भेस ॥ १०९ ॥ राग सारंग ॥ ऐसी विधि नन्द लाल कहत सुने माईरी । देखे जो नयन रोम रोम प्रति सुभाईरी ॥ विधना द्वै नयन रचे अंग ठानि बान्यों । लोचन नहि बहुत दिये जानिके भुलान्यों ॥ चतुरता प्रबीन ता विधाता की जान्यों । अब कैसो लागत हमहि बताव अथान्यों ॥ त्रिभुवन पति तरुण कान्ह नटवर वपु काछे । हमको द्वै नयन दिये तेऊ नहि आछे ॥ ऐसो विधि को विवेक कहा कहों वाको । सूर कबहुं पाऊं जोकर अपने ताको ॥ ११० ॥ राग नट ॥ मुख पर चन्द डारों वारि । कुटिल कच भंवर वारों भौंह पर धनुवारि ॥ भाल केसरि तिलक छवि पर मदन सत सत वारि । मनो चलि वहि सुधा धारा निरखि मन देउ वारि ॥ नयन खंजन मृगज वारौं कमलको कुल वारि । चिबुक पर चित वित्त वारों प्राण वारों वारि

निरखि कुण्डल तरनि वारौं कुचा श्रवणनि वारि । अलक ललित कपोल छवि पर मुकुट सत सत वारि ॥ नासिका पर कीरवारौं अधर विद्रुम वारि । दसन एकन वज्र वारों बीज दाडिम वारि ॥ मनो सुर सरि जमुन गंगा उपमा डारों वारि । सूर हरिकी अंग शोभा को सकै निरवारि ॥ १११ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम उर सुधा निधि देह मानो । मलय चन्दन तन लेप कीन्हे वरन वरन यह जानो ॥ मलय तनु मिलि लसति शोभा महा जल गम्भीर । निरखि लोचन भ्रमित पुनि पुनि धरति नहि मन धीर ॥ उरज भंवरी भंवर मानो नील मणिकी कांति । भृगु चरण हृद चिन्ह ए सब जीव जल बहु भांति ॥ श्याम बाहु विसाल केशर खौरि विविध बनाय । सहज निकसे मगर मानो कुल जुखेलत आय ॥ सुभग रोमावली की छवि चली दहते धार । सूर प्रभुकी निरखि शोभा स्तुवति वारं बार ॥ ११२ ॥ राग सोरठ ॥ मन मधुकर पद कमल लोभानों । चित चकोर चंद नख अटक्यौ एकटक पलक भुलानो ॥ बिनही कहै गई ये उठि मोतें जात नहीं मैं जान्यों । अब देखौ तनु मैं वैनोहों कहा जियहि धौं आन्यों ॥ तवते फेरि तके नहि मोतन नख चरणनि हित मान्यों । सूरदास वै आपु स्वारथी पर बेदन नहि जान्यों ॥ ॥ ११३ ॥ राग गौरी ॥ व्रज ललना देखति गिरि धरको । एक एक अंग अंग पर रीझी अरुझीरी मुरली धरको । मानों चित्र कीसी लिखि काढी सुधि नाहीं मन घरको ॥ लोक लाज कुलकानि भुलानी लपटी श्याम सुन्दर को । कोउ रिसाय कोउ कहै जाय कछु न डरो काहू डरको । सूरदास प्रभु सों मन मान्यों जनमि जनमि पर तरको ॥ ११४ ॥ राग धनाश्री ॥ गोपी श्याम रंग भूली । पूरन चंद मुख देखि नेंन कमल फूली । कीधौ नव जलद स्वाति चातक मन लाए ॥ कीधौ नारि इंदसी पहर बबुंद पाए । रवि छवि कुंडल निहारि पंकज विकसानें ॥ किधों चक्र बाकनि रतिके रसही रति मानें । कीधौ मृग यूथ जुरे मुरली धुनि रीझे ॥ सूरश्याम मुखकुंडल छवि भीजे ॥ ११५ ॥ राग विहागरो ॥ श्याम भुजाकी सुंदर ताई । चंदन खौरि अनूपम राजत सो छवि कही न ताई । बडे, विसाल जानु लों परसत एक उपमा मन आई ॥ मनो भुजंग गगन तें उतरत अध मुख रह्योझुलाई । रतन जटित पहुंची कर राजत अंगुरी सुंदर भारी । सर मनो फनि सिरमणि सोहत फनफन की छवि न्यारी ॥ ११६ ॥ रागमारू ॥ श्याम सखि नीके देखे नाहि ॥ चितवत ही लोचन भरि आवत वार वार पछि ताहि ॥ कै सङ्ग करिए कटक मै राखति नेकहि मैं अकुलाहि । निमिष मनो छवि पर रखवारे तातें अधिक डराहि ॥ कहा करे इन को कहा दोष न इनतो अपनी कीन्ही । सूर श्याम छविपर मन अटक्यो उन सब सोभा लीन्ही ॥ ११७ ॥ रागगौरी ॥ मनलुब्ध्यो हरि रूप निहारि । जादिन श्याम अचानक आए तब तें मोहि बिसारि ॥ इन्द्रिन संग लगाइ गयो ह्वां डेरा निकस्यो झारि ॥ ऐसे हाल करत री कोऊ रही अकेली नारि । फेरि न मेरीछू सुधि लीन्ही आप करत सुख भारि ॥ सूरश्याम उरहनो देहों पटवत कहे न हमारि ॥ ११८ ॥ * ॥

॥ अथ रागलीला ॥

॥ राग रामकली ॥ पुनि पुनि कहतिहै व्रज नारि ॥ धन्य बड़ भागिनी राधा तेरे वस गिरिधारि । धन्य नन्द कुमार धनि तुम धन्य तेरी प्रीति ॥ धन्य दोउ तुम नवल जोरी कोक कलानि जीति । हम विमुख तुम कृष्ण संगिनि प्रीण एक द्वै देह ॥ एक मन एक बुद्धि एक चित दुज न एक सनेह । एकछिनु बिनु तुमहि देखे श्याम धरत न धीर ॥ मुरली में तव नाम पुनि पुनि कहत हैं बल बीर ॥ श्याम मखि तै परखि लीन्ही महाचतुर सुजांन सूर के प्रभु प्रेम बस कौन तो सरि आंनि ॥ १ ॥ राग बिहागरो ॥ राधा परम निर्मल नारि ॥ कहति हौं मन कर्मना करि हृदै दुविधा टारि । श्याम को एक तुमहि जान्यों दुराचारनि ओर ॥ जैसे घट पूरन न डोलै अध खुल्यो डगडोर । धनी धन कबहूं न प्रगटै धरै अनत छपाय ॥ तौ महा नग श्याम पायो प्रगटि कैसें जाइ । कहति हौ यह बात तो सों प्रगट करि हौ नाहि ॥ सूर सखी सुजान राधा परस्पर मुस काहि ॥ २ ॥ रागगौरी श्यामकों तैही पहि चानें ॥ सांची प्रीति जानि मन मोहन तेरे हाथ बिकाने ॥ हम अपराध कियो कहि तुमसों हमही कुलटा नारि ॥ तुम सो उन सों बीच नहीं कछु तुम दोऊ वर नारि ॥ धन्य सोहाग भाग है तेरो धनि बड़भागी श्याम ॥ सूर दास प्रभु सो पति जाके ते सी जाके बाम ॥ ३ ॥ रागसोरठ ॥ राधाश्याम की प्यारी ॥ कृष्ण पति सर्वदा तेरे तू सदा नारी ॥ सुनत बानी सखी मुख की जिय भयो अनुराग । प्रेम गद गद रोम पुलकित समुझि अपनो भाग । प्रीति प्रगट कियो चाहै बचन बोलि न जाय ॥ नन्द नन्दन काम नायक रहे नैननि छाय ॥ हृदै तें कछु टरत नाहीकियो निश्चल वास ॥ सूर प्रभु रस भरी राधा दुरत नहीं प्रकास ॥४॥ राग जैतश्री ॥ सुनि सजनी मेरी इक बात । तुम तौ करति बड़ाई मनमेरो सरमात ॥ मोसों कहति श्याम तुम एकै यह सुनिकै सरमाति । एक अङ्गको पार न पावति चकृत होति भरमाति ॥ यह मूरति द्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमाति ॥ सूर रोम प्रति लोचन देतो विधिना परतर मांति ॥५॥ रागकल्यान ॥ जो विधना अपबस करि पाऊं। तौ सखि कह्यौहोय कछु तेरो अपनी साध पुराऊं ॥ लोचन रोम रोम प्रति मागौ पुनि पुनि चास दिखाऊं । एकटक रहै पलक नहि लागै पद्धतिनई चलाऊं ॥ कहा करौं छवि रासि श्याम घन लोचन द्वै नहि ठाऊं । एते पर ये निमिष सूर सुनि यह दुख कहा सुनाऊं ॥६॥ राग बिलावल ॥ कहा करों विधि हाथ नहीं । वह सुख यह तनु दशा हमारी नननि के रिस भरति मही ॥ अङ्गअङ्ग कौनी बिधि बनरे द्वै नैना देखति जबही । ऐसो कौन ताहि धरि आनै कहा करौ खीझत मनही ॥ बडो सुजान चतुरई नीको जगत पिता कहियत सबही । सूर श्याम अवतार जानि दृज लोचन बज्र न दिये हमही ॥ ७ ॥ राग बिला-वल ॥ अब समुझी यह निठुर विधाता । ऐसेहि जगत पिता कहबावत ऐसे घातक सोहै धाता ॥ कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन विवेक कहां को ज्ञाता । जैसो दुख हम कों यह दीन्हों तेसें याको होब निपाता ॥ द्वै लोचन तनमें कर दीन्हे याही ते जान्यों पितु माता

सूर श्याम छवितें अघात नहि बार बार आवत अकुलाता ॥ ८ ॥ राग सूहो ॥ ए लोचन सावित नहि तेऊ । बिनुदेखे कल परत नहीं छिनु ऐसे पर कीन्हों यह टेऊ ॥ बारबार छवि देख्यौ चाहत साथी निमिष मिले हैं येऊ । ते तौ ओट करत छिनही छिनु देखतही भरि आवत इेऊ ॥ कैसे मैं उन कों पहिचानौ नयन बिना लखिये क्यों भेऊ । येतौ निमिष परत भरि आवत निठुर बिधाता दीन्हे जेऊ ॥ कहा भई जो मिली श्याम कों तू जान्यौ जाने सब केऊ । सूर श्याम कौ नाम श्रवण सुनि दरशन नीके देत न बेऊ ॥ ९ ॥ राग सूहो ॥ श्यामहि मैं कैसे पहिचानों । क्रमक्रम करि एकअंग निहारति पलक ओट ताकों नहि जानों ॥ पुनि लोचन ठहराय निहारति निमिष मेटि वह छवि अनुमानों । और भाव औरे कछु शोभा कहौ सखी कैसें उर आनों ॥ छिनु छिनु अंग अंग छवि अगनित पुनि देखौ फिरिकै हठ ठानौ । सूरदास स्वामी की महिमा कैसें रसना एक बखानों ॥ ॥ १० ॥ राग सारङ्ग ॥ श्याम सों काहे की पहिचानि । निमिष निमिष वह रूप नईछवि रति कीजै जेहि जानि ॥ एक टक रहति निरन्तर निश दिन मन मति शोचति सानि । एकौ पल शोभा को सीमा सकति न उर महि आनि ॥ समुझि न परै प्रगट ही निरखत आनन्द की निधि खानि । सखि यह विरह संजोग की समरस दुख सुख लाभकी हानि ॥ मिटति न घृत तें होम अग्नि रुचि सूर सु लोचन बानि । इत लोभी उत रूप परम निधि कोउ न रहत निति मानि ॥ ११ ॥ राग रामकली ॥ कहा करों नीके करि हरि कोरूप रेख नहि पावति । सङ्गहि सङ्ग फिरति निशि वासर नयन निमेष न लावति ॥ बंधी दृष्टि ज्यौं गुडी डोरि बस पाछें लागी धावति । निकट भये ये मेरी छाया मोकों दुख उपजावति ॥ नख सिख निरखि निहारयोइ चाहति मन मूरति अति भावति । जानों नहीं कहां तें निजु छवि अङ्ग अङ्ग में आवति ॥ अपनी देह आपु कों बैरनि दुरत न दुरे दुरावति । सूर श्याम सों प्रीति निरन्तर अन्तर मोहि करावति ॥ १२ ॥ राग धनाश्री ॥ जो देखौं तौ प्रीति करौंरी । सङ्गहि रह्यो फिरयो निशि वासर चित तें नेक नहीं बिसरौंरी ॥ कैसें दुरत दुराये मेरे उन बिनु धीरज नहीं धरौंरी । जाउ तहीं जहं रहे श्याम घन निरखति एक टक ते न टरौंरी ॥ सुनिरी सखी दशा यह मेरी सो कहि धौं अब कहा करौंरी । सूर श्याम लोचन भरि देखौ कैसे इतनी साध पुरौंरी ॥ १३ ॥ राग बिलावल हरि दरशन की साध मुई । उडिए उड़ी फिरति नयननि संग फर फूटै ज्यों आक रुई ॥ जान्यों नहीं कहां ते आवति वह मूरति मन मांह उई । बिन देखे की बिथा बिरहिनी अति ज्वर जरति न जाति छुई ॥ कछु बे कहति कछु कहि आवति प्रेम पुलक श्रम स्वेद चुई । सूखति सूर धान अंकुर सो बिनु बरषा ज्यों भूल तुई ॥ १४ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनिरी सखी दशा यह मेरी । जबतें मिले श्याम घन सुन्दर तबतें सब बिसरे री ॥ तत छिनु उनके संगहि मोकों अङ्गनि प्रति अनंगकी ढेरी । चपला तें अतिही चञ्चलता दसन चमक चकचोंधि घनेरी ॥ चमकत अंग पीत पट चमकत चमकत माला मोतिन के री । सूर समुझि विधना की करनी अति रिस करति सोंह मोहि तेरी ॥ १५ ॥ राग सारङ्ग ॥ चर्चरी ॥ आजु के घोष कों सखी अति नही जो लाख लोचन अंग अंग होते । पूरती

साध मेरे हृदय माझ की देखती सबै छवि श्याम को ते ॥ चित्त लोभी नयन द्वार अतिही स्वच्छ कहां वह सिन्धु छवि है अगाधा । रोम जितने अंगन न होते सङ्ग रूप लेतो निदरि कहति राधा ॥ श्रवण सुनि सुनि रूप दहै कैसें लहैं नयन कछु गहै रसना न ताके । देखि कोऊ रहै कोउ सुनि कै रहै जोभ बिनु सो कहै कहा नहि नयन जाके ॥ अंग बिनु है सबै नहीं एकै फबै सुनत देखत जबै कहै न लोरै । कहैं रसना सुनत श्रवण देखत नयन सूर सब भेद गुणि मनहि तोरै ॥ १६ ॥ राग धनाश्री ॥ इतनेइ में घटि ताई कीन्ही । रसना श्रवण नयन के होते की रसनाही कों नहि दीन्ही ॥ बैर कियो विधना रचि हम सों बाकी जाति अबै हम चीन्ही । जड़ ते प्रकट भयो है सुनियत तैसिय जड़ता आपुन लीन्ही ॥ वा रसही में मगन राधिका चतुर सखी तबही लखि लीन्ही । सूरश्याम के रंगहि राची टरति नहीं जलतें ज्यों मीनी ॥१७॥ राग सोरठ ॥ धन्य धन्य बड़ भागिनि राधा। नवल श्याम नवला तुमहू हौ दोउ तुम रूप अगाधा ॥ मैं जानी यह बात हृदय की रही नहीं कछु साधा । सङ्गहि रहति सदा पिय प्यारी क्रीडा करति उपाधा ॥ कोक कला व्युत्पन्न भई हौ कान्ह रूप तनु आधा । प्रेम उमगि तेरे मुख प्रकट्यौ अरस परस अवराधा ॥ सूर दास प्रभु मिले कृपा करि गये दुरित दुख दाधा ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ कहि राधिका बात अब सांचो । तुम अब प्रकट कही मो आगें श्याम प्रेम रस मांचो ॥ तुम को कहां मिले नंद नंदन जब उनके रंग राची । खरिक मिले की गोरस बेचत को विषहरतें बांची ॥ कहे बनै छांडहु चतुराई बात नहीं यह कांची । सूर दास राधिका सयानी रूप रासि रस पांची ॥ १९ ॥ राग गौरी ॥ कबरी मिले श्याम नहि जानों । तेरी सों करि कहति सखी री अजहूं नहि पहिचानों ॥ खरिक मिले की गोरस बेंचत को अबहीं की कालि । नयननि अंतर होत न कबहूं कहति कहारी आलि ॥ एकौ पल हरि होत न न्यारे नीके देखी नाहि । सूर दास प्रभु टरत न टारे नयननि सदा बसाहि ॥ ॥ २० ॥ राग आसावरी ॥ श्याम मिले मोहि ऐसें माई । मैं जलकों जमुना तट आई ॥ औचक आये तहां कन्हाई । देखत ही मोहनी लगाई ॥ तबही तें तनु सुरति गंवाई । सूधे मारग गई भुलाई ॥ बिन देखे कल परे न माई । सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ २१ ॥ राग टोडी ॥ तबही तें हरि हाथ बिकानी । देह गेह सुधि सबै भुलानी ॥ अंग अंग सिथिल भई जैसें पानी । ज्यों त्यों करि गृह पहुची आनी ॥ बोले तहां अचानक बानी । हारे देखे श्याम बितानी ॥ कहाकहौं सुनि सखी सयानी । सूर श्याम ऐसो मति ठानी ॥ २२ ॥ राग धनाश्री ॥ जादिन ते हरि दृष्टि परेरी । तादिन तें इनि मेरे नैननि दुख सुख सब बिसरेरी । मोहन अंग गोपाल लाल के प्रेम पियूष भरेरी ॥ बसे उहां मुसु कानि बांह लै रचि रुचि भवन करेरी । पठवति हौ मन तिनहि मनावन निस दिन रहत अरेरी ॥ ज्यों ज्यों मान करति उलटावति त्यों त्यों होत खरेरी । पचि हारी समुझाइ सोचि पचि पुनि पुनि पाय परेरी ॥ सो सुख सूर कहां लों बरनो एक टक तें न टरेरी ॥ ॥ २३ ॥ राग अडानों ॥ को जाने हरि कहा कियोरी ॥ मन समुझे मुख कहत न आवै कछु एक रस लोचन जु पियोरी ॥ ठाढ़ी हुती अकेली अंगना आनि अचानक दरस दियो

री । सुधि बुधि का, न रही तेहि औसर मेरौ मन उनि पलटि लियोरी ॥ ता सुख हेत दहति दुख दारुन छिनु छिनु जरत जुडात हियोरी । सूर सकल आनन उर अन्तर उपमा को पावति न वियोरी ॥२४॥ राग अडानों ॥ मेरो मन गोपाल हरयौरी । चितवत ही उर पैठि नयन मग का जानों वहि कहा करयौरी ॥ मात पिता प्रति बन्धु सजन सखि आंगन लौं सब भवन भरयौरी । लोकवेद प्रति हार पहरुआ तिनहूं पै राख्यों न परयौरी॥ धरम धीर कुल कांनि कुंची करि तेहि तारो द दूरि धरयौरी ॥ पलक कपाट कठिन उर अन्तर एते जतन कछू न सरयौरी । बुधि बिबेक बल सहित संच्यौ मचि सुधन अचल कबहूंन टरयौरी ॥ लियो चुराय चितै चित सजनी सूर सोच तनु जात जरयौरी ॥२५॥ राग अडानो ॥ मेरो मन तब तें न फिरयौरी । भयो जो संग श्याम सुंदर के तहांतें कछुं न टरयौरी ॥ जोबन रूप गर्ब धनु सचि सचि हौं उरमें रुचिसों जों धरयौरी । कहा कहौ कुल सील सकुच सखि सर्बस हाथ परयौरी॥ बिनु देखे मुख मन हरिको यह निशि दिन रहे अरयौरी । सूरदास अब कहा करौं हौं हृदय अति प्रेम भरयौरी ॥२६॥ राग सारंग ॥ यह सब मेंही पोच करी ॥ श्याम रूप निरखति नैननि भरि मोहन फंद परी । वे किशोर कमनीय मुग्ध मैं लुब्ध तहू न डरी । अब छवि गई समाय हिये में ठौर तहू न टरी ॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधु मुख सन मुखरी । बुधि बिबेक बल वचन बिवसहै आनन्द उमंगि भरी ॥ जद्यपि अल सहत सुनि सरज अंगज देन अरी । तद्यपि मुख मुरलिका बिलोकत छलटि अनंग जरी ॥ २७ ॥ राग आसावरी ॥ सखिरी ना जानों तबही तें मोको श्याम कहाधों कीन्होंरी । मेरे दृष्टि परे जादिन तें ज्ञान ध्यान हरि लीन्होंरी ॥ द्वारे आय गये औचकही मैं आंग नहीं ठाढ़ोरी । मन मोहन मुख देखि रही तब कांम बिथा तनु बाढ़ोरी ॥ नयन सैन दैदै हरि मोतन कछु एक भाव बतायोरी । पीतांबर उपरैनो कर गहि अपने शीश फिरायोरी ॥ लोक लाज गुरजन की शंका कहत न आवै बांनीरी । सूर श्याम मेरे आंगन आये जात बहुत पछितानीरी ॥ २८ ॥ राग सोरठ ॥ मन हरि लीन्हों कुंवर कन्हाई । जबते श्याम द्वारहै निकसे तबतेंरी मोहि घर न सुहाई ॥ मेरे हेत आय भये ठाढे मोतें कछु न भईरी माई । तबहींते व्याकुल भइ डोलति वरी भये मात पितु भाई ॥ सो देखत शिर पाग संवारी हंसि चितये छवि कही न जाई । सूर श्याम गिरि धर वर नागर मेरो मन लेगये चुराई ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रेम सहित हरि तेरे आये । कछु सेवा तैं करी कि नाहीं किधों बैसेही उनहि पठाये ॥ काहेतें हरि पाग संवारी क्यों पीतांबर शीश फिराये । गुप्त भाव तोसों कछु कीन्हों घर आये काहे बिसराये अतिही चतुर कहावति राधा बात नहीं हरि क्यों न भोराये । सूर श्याम को वस करि लेती काहेको रहते पछिताये ॥ ३० ॥ राग धनाश्री ॥ गुरजन में बैठे आये हरि बिन्दी संवारन मिस पाइलागी । चतुर नायकछ पाग मसकी मनहि मन रीझे गुप्त भेद प्रीत न जागी ॥ हस्त कमल हरि हेरि हृदय धरै भामिनी उत आपु कंठ लागी । सूरदास अति चतुर नागरी पिय अति नागर दुऊ कह्यौ मनभें सुहाग भागी ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम अचानक आय गयोरी । हौं अपने गुरजन में बठी देखतही अनुराग भयोरी ॥ तब

एक बुद्धि करी मैं ऐसी विन्दीसों कर परस कियोरी । आपु हंसे उत पाग मसकि हरि अन्तर जामी जानि लियोरी ॥ लै कर कमल अधर परसायो देखि हरष पुनि हृदय धरयोरी । चरण छुये दोउ नयन लगाये मैं अपने भुज अंक भरयोरी ॥ ठाढे रहे द्वार अति हित करि तबही ते मन चोरि गयोरी । सूरज प्रभु कछु दोष न मेरो उत गुरजन इत हेत नयोरी ॥ ३२ ॥ राग धनाश्री ॥ करत कछू वै नाहिं बनी । हरि आये चितवत ही रहि सखि जैसे चित्र धनी ॥ अति आनन्द हरष आसन उर कमल कुटी अपनी । न्यों छावरि अंचल की फहरनि अर्घ नयन जल धार घनी ॥ गुरजन लाज कछू न सक्यों कहि सुनि मन बुधि सजनी । हृदय उमंगि कुच कलस प्रगट भये टूटी तरकि तनी ॥ अब उपजति अति लाज मनहि मन समुझत निज करनी । सूरदास मेरी जड मति गति प्रभु मग मांझ गनी ॥ ३३ ॥ राग धनाश्री ॥ सेवा मानि लई हरि मेरी । अब काहे पछितात राधिका श्याम जात कर फेरी ॥ गुरजन भें भावहि की पूजा और कहौं कछु टेरी । मोहन अति सुख पाय गयेरी चाहति हौ कह मेरी ॥ तेरे बस भये कुंवर कन्हाई करति कहा औसेरी । सूर श्याम तुमको अति चाहत तुम प्यारो हरि केरी ॥ ३४ ॥ ॥ राग कल्यान ॥ आसावरी ॥ राधा भाव किये यह नीको तुम बेदो उनि पाग छुही । ऐसो भेद कहा कोउ जाने तुम जानो के गुप्त वही ॥ तुम जुहार उनको जब कीन्हों तुम को उनहु जुहार कियो । एकै प्राण देह द्वै कीन्हें तुम वे एक नहीं बियो ॥ तुम पग परसि नयन पर राख्यो उन कर कमल हृदैहि धरयौ । सूर श्याम फिरदै तुम्हे राखे तुम उनको लै कंठ भरयौ ॥ ३५ ॥ राग बिहागरो ॥ अरी माई एक गांवके बसत एक बार हरि कीन्हों पहि चानि । निसि दिन रह दरश की आशा मिल अचानक आंनि ॥ भाग दशा आंगनही आये सुन्दर सर्ब सुजानि । नीके करि देखन हूं न पाये बहि न जाय कुलकानि ॥ कल न परत हरि दरशन बिनुरी मोहिं परी यह बानि । सूरज दास बिकानी री हों नंद सुवन के पानि ॥ ३६ ॥ राग बिहागरो ॥ कहा करों गुरजन डर मान्यों। आये श्याम कौन हित करिके मैं अपराधिनि कछु न जान्यों ॥ ठाढे श्याम रहे मेरे आंगन तबतें मन उन हाथ बिकान्यों । चूक परी मोको सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यों ॥ वै उतही को गये हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यों । सूर श्याम संगम उठि लाग्यौ मोपर बार बार रिसान्यों ॥ ३७ ॥ राग सारंग ॥ अचानक आयेरी हरि मेरे चितै तब होंरो छबि निहारि । कुण्डल लोल कपोल रहे कच श्रम जलसों मनु मकर कंज डरि ॥ गुरजन बिच मैं आंगन ठाढ़ी अति दरशन दीयो माया करि । सूरदास प्रभु अन्तर जामी वे हंसि चितये सुख करि ॥ ३८ ॥ राग काफी ॥ मैं अपने कुलकानि डरानी ॥ कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहि जानी ॥ बहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गये चुराई । तनतें जात नहीं मैं जान्यों लियो श्याम अपनाई ॥ ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध । सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध ॥ ३९ ॥ राग काफी ॥ मोहि सवारे सजनी तबते गृह मोको न सुहाई । द्वार अचानक कुंवर निकरेरी सुन्दर बदन दिखाई ॥ ओढे पीरी पामरी री पहिरे लाल

निचोल। मोहैं कांट कटीलियां सखि वह कीन्ही बिनु मोल॥ मोर मुकुट शिर सोहई अरु अधर धरे मुख वेनु। मोहन मूरति हृदय बसै छवि लागि रही दुहु नैनु॥ श्याम रूप मेरो मन गीध्यो भलो बुरो कहै कोय। सूरदास प्रभु संग गये मन मनु उनहीं को होय॥ ॥ ४० ॥ राग गौरी ॥ मोहना बिन मन न रहै कहा करौं माईरी। कोटि भांति करि करि रही समुझाईरी॥ लोक लाज कौन काज मानत जदुराईरी। हृदय ते वह टरतु नहीं मुख सुन्दरताईरी॥ ऐसे हैं त्रिभंगी नवरंगी सुख दाईरी। सूर श्याम विनु न रहौं ऐसी बनि आईरी॥ ४१ ॥ राग गौरी ॥ मन मेरो हरि साथ गयोरी। द्वारे आय श्याम घर सजनी हंसि मोतन तें संग लयोरी॥ ऐसो मिल्यो जाय मोको तजि मानो इन छिन प्रीपि जयोरी। सेवा चूक परी जो मोतें मन उनको धोंकहा कियोरी॥ मोको देखि रिसात कहत यह तेरे जिय कछु गर्व भयोरी। सूर श्याम छवि अंग भुलानो मन क्रमबच मोहि छाड़ि दयोरी॥ ४२ ॥ राग रामकली ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो। कहा करों दरसन रस अटक्यो बहुरि नहीं घटि आयो॥ इन नैननि के भेद रूप रस उरमें आनि दुरायो। बरजतही बैकाज सुखत ज्यों पलक्यो जो न सिधायो॥ लोक वेद कुल निडर निडर ह्वै करत आपनो भायो। मुख छवि निरखि चोंधि निसि खग ज्यों हठि आपुन पैं बंधायो॥ हरिकों दोष कहा कहि दीजै यह अपने बल धायो। अति विपरीत भई सुनि सूरज मुरछा मदन जगायो॥ ४३ ॥ राग बिलावल ॥ मनहि बिना कह करौं सहीरी। घर तजिकें कोउ रहत पराये मैं तबही तें फिरति बहीरी॥ आय अचानक ही ले गये हरि बारबार मैं हटकि रहीरी। मेरो कह्यो सुनत काहे को गैल गये हरि के उतहीरी॥ ऐसो करत कहूं रो कोऊ करौ मैं हारि रहीरी। सूर श्याम कौं यह न बूझिये ढीठ किये मनको उनहीरी॥ ४४ ॥ राग टोड़ी ॥ माखन चोरी तैं सीखे करन लागे अब चितहू को चोरी। जाके दृष्टि परै नंद नन्दन फिरति सो गोहन डोरी डोरी॥ लोक लाज कुल कानि मेंटि करि वन वन डोलत नवल किशोरी। सूर दास प्रभु रसिक शिरोमणि देखे निगम बांनि भई भोरी॥ ४५ ॥ राग आसावरी ॥ क्यों सुरझांऊं री नन्दलाल सों अरुझि रह्यो मन मेरो। मोहन सुरति कहूं नेक न बिसरति कहि कहि हारि रही कैसेहु करत न फेरो॥ बहुत जतन करि घेरि घेरि राखति फेरि फेरि लरति सुनत नहि टेरो। सूर दास प्रभु के संग रस भये डोलत निसि बासर कहूं निरखत बायों न डेरो॥ ॥ ४६ ॥ राग बिलावल ॥ मैं आन्यो मनु रतन जान्यो। कबधौं गयो संग हरि के वह कीधौं पंथ भुलान्यो॥ कीधौं श्याम हटकि है राख्यो कीधौं आपु रतान्यो। काहेको सुधि करी न मेरी मोपर कहा रिसान्यो। जबही तें हरि ह्यां ह्वै निकरै बैरु तबहिंतें ठान्यो॥ सूर श्याम संग चखन कहै मोहि कह्यो नहीं तव मान्यो॥ ४७ ॥ राग गुर्जरी ॥ श्याम करत हैं मनकी चोरी। कैसे मिलत आंनि पहिलेहीं कहि कहि बतियां भोरी॥ लोक लाज कौ कांनि गंवाई फिरति गुड़ी बस डोरी। ऐसे ढंग श्याम अब सीखे चोर भये चितको री॥ माखन को चोरी सहि लीन्ही बात रही वह थोरी। सूर श्याम भये निडर तबहिं तें गोरस लेत अजोरी॥ ४८ ॥ राग टोड़ी ॥ सुनहु सखी हरि करत न नीकी।

आपु खारथी ह मन मोहन पीर नहीं अरु नींकी ॥ वे तो निठुर सदां मैं जानति बात कहति मनहीकी । कैसेहुं उनहिं हाथ करि पाऊं रिस मेटों सब जीकी ॥ चितवत नहीं मोहि सपनेहुं को जानै उनहों की । ऐसें मिले सूर के प्रभु कों मनों मोल लै बीकी ॥ ॥ ४९ ॥ राग आसावरी ॥ माई री कृष्ण नाम जबतें श्रवण सुन्योरी तब तें भूली री भवन बावरी सी भईरी । भरि भरि आवैं नयन चित न रहत चैन वैन नहि सूधा भूली मन की दशा सब औरें ह्वै गई री ॥ कौन माता कौन पिता को बहिनी कौन भ्राता कौन ज्ञान कौन ध्यान मदन हईरी । सूर श्याम जबतें परेरी मेरी दृष्टि बांम काम धाम निशि जाम लोक लाज कुल कांनि नईरी ॥ ५० ॥ राग रामकली ॥ राधा तैं हरि के रंग राची ॥ तोतें और चतुर नहिं कोऊ बात कहौं मैं सांची । तैं उन को मन नहीं चुरायो ऐसी है तू कांची । हरि तेरोमन अबहि चुरायो प्रथमहि तू है नांची ॥ तुम अरु श्यांम एक हौ दोऊ वाकी नाहीं बांची । सूर श्याम तेरे बस राधा कहत लोक मैं खांची ॥ ५१ ॥ ॥ राग जैतश्री ॥ तू काहे को करति सयानी । श्याम भये बस पहिले तेरे तब तू हाथ बिकानी ॥ बाकी नहीं रही नेकहु अब मिली दूध ज्यों पानी । नन्द नदन गिरिधर बहु नायक तू तिनकी पटरानी ॥ तोसी को बड भागिनि राधा यह नीके करि जानी । सूर श्याम संग हिलि मिलि खेलौ अजहूं रहति दिवानी ॥ ५२ ॥ राग सोरठ ॥ मन हरि लीन्हो कुंवर कन्हाई । तबही ते मैं भई दिवानी कहा करौंरी माई ॥ कुटिल अलक भीतर अरु भ्रानों अब निकसारि न जाई ॥ नयन कटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये बसाई । निलज भई कुलकानि गंवाई कहा ठगौरी लाई ॥ बार बार कहति मैं तोकों तेरे हिये न आई । अपनी सी बुधि मेरी जानति उतनी मैं कहं पाई । सूर श्याम ऐसो मति कीन्हों देह दशा बिसराई ॥ ५३ ॥ राग रामकली ॥ राधा हरि अनुराग भरी । गद गद मुख बानी पर कासति देह दसा बिसरी ॥ कहति यहै मन हरि हरि लैगये एही परनि परी । लोक सकुच शंका नहि मानति श्यामहि रंग ढरी ॥ सखी सखी सों कहति बावरी एहि हमको निदरी । सूरदास प्रभु मूरति मानी भुरई हम सिगरी ॥ ५४ ॥ राग सूहो ॥ तुम जानति राधा है छोटी । चतुराई अंग अंग भरी है पूरन ज्ञान बुद्धि की मोटी ॥ हमसों सदा दुराव करौ येहि बात कहै मुख चोटी पोटी । कबहुं श्यामतें नेक न बिकुरति किये रहति हमसों हठ ओटी ॥ नंद नन्दन याहीके बसहैं विवस देखि बिन्दी छबि चोटी । सूरदास प्रभु वै अति खोटे यह उनहूंते अतिही खोटी ॥ ५५ ॥ राग बिलावल ॥ सखी कहै तू बात गंवारी । याकी सरि कैसे कोउ ह्वै है जा बस हैं बनवारी ॥ ब्रज भीतर यह रूप आगरी व्रत लीन्हो दृढ गिरवर धारी । प्रीति गुप्त है नीकी उनसों या पर मैं रीझी हौं भारी ॥ सांची कहौं नेह ऐसोई पाछे सोको दीजै गारी सूरदास राधा जो खोटी देखौ तो यह कृष्ण पियारी ॥ ५६ ॥ राग गुर्जरी ॥ सुनहुं सखी राधा सरि कोहै । जे हरिहैं रति पति मनमोहन याको मुख सो जो है ॥ जैसेश्याम नारि यह तैसी सुन्दर जोरी सोहै । यह द्वादस वेऊ दस द्वैके ब्रज जुवतिन मन मोहै ॥ मैं इनको घटि बढि नहि जानति भेद करै सो कोहै । सूर श्याम नागर यह नागरि एक

प्राण तन दो है ॥ ५७ ॥ राग गुर्जरी ॥ सुनि सजनी ये ऐसे लागत । एक प्राण जुग तनु सुख कारन एकौ निमिष न त्यागत ॥ बिछुरत नहीं संग ते दोऊ बैठे सोवत जागत पूरव नेह आजु कछु नाहीं मोसों सुनहु अनागत ॥ मेरो कह्यो सांच तुम जानहु कीजै आगत स्वागत । सूर श्याम राधा बर ऐसे प्रीतिहिते अनुरागत ॥ ५८ ॥ राग जैतश्री ॥ सखी सखीसों धनि धनि कहै । इनको हम ऐसे नहि जाने व्रजभीतर ये गुप्त रहैं ॥ धन्य धन्य तेरी मति सांचो हम इनको कछु और कहैं । राधा कान्ह एक हैं दोऊ तौ इतनो उपहास सहैं ॥ वै दोउ एक दूसरी तूहूं तोहू को सखि श्याम कहैं । सूर श्याम धनि धनिअरु राधा धनि तुमहूं उनभेद लहैं ॥ ५९ ॥ राग जैतश्री ॥ धन्य धन्य यह तेरी बानी । तैं नीके हरिको पहिचाने अबहमतोको जानी ॥ राधा आधा देह श्याम की तू नीकी विचबानी । राधा हूतें अधिक श्यामसों तेरी प्रीति पुरानी ॥ जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदि नेह क्यों गानी । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि यह रस कथा बखानी ॥ ६० ॥ ॥ राग पूरबी ॥ माई राधा मोहन सहज सनेही । सहज रूप गुण सहज लाड़िली एक प्राण द्वै देही ॥ सहज माधुरी अंग अंग प्रति सहज सदा बन गेही । सूर श्याम श्यामा दोउ सहजी सहज प्रीति करि लेही ॥ ६१ ॥ राग आसावरी ॥ राधा नंद नंदन अनुरागी । भव चिन्ता हिर्दै नहि एकौ श्याम रंग रस पागी ॥ हर्द चून रंग पै पानी ज्यों दुविध दुहूकी भागी । तन मन प्राण समर्पण कीन्हों अंग अंग रति खागी ॥ व्रज बनिता अब लोकनि करि करि प्रेम विवस तन त्यागी । सूरदास प्रभुसों चित लाग्यौ सोवत तेऽनु जागी ॥ ६२ ॥ राग मारू ॥ गोपी श्याम रंग राची । देह गेह सुधि विसरि बढ़ी प्रीति सांची दुविधा उर दूरिगई उघरि अंगनांची । हरि तजिजो और अजें पुहुमि लीक खांची ॥ मात पिता लोक भीत बाकी नहि बांची । सकुच जबहि आवै उर बार बार झांची ॥ अबतौ छिनहू न छाड़ै नाहि न मति कांची । सूर श्याम पद पराग ताही में मांची ॥ ६३ ॥ ॥ राग मारू ॥ चर्चरी ॥ श्याम जल सुजल व्रजनारि खोरैं । नदी माला जल जटित भुजा अति सबल धार रोमाक्ली जमुन मोरैं ॥ नयन ठहरात नहि बहत अति तेजसों तहां गयो चित्त धीरज संम्हारैं । मन गयो तही आपु न रही निकट जल एक एक अंग छवि सुधि विचारै ॥ करति अस्नान सब प्रेम बुडकी देहिं समुझि जिय होय भजि तीर आवैं । सूर प्रभु श्याम जल रासि व्रज भामिनी करति अनुमान नहि पार पावैं ॥ ६४ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम रंग राची व्रज नारी । और रंग सब दीन्हों डारी ॥ कुसुम रंग गुरजन पितु माता । हरित रंग बहिनी अरुझाता ॥ दिना चार में सब मिटि जैहै श्याम रंग अजरा मर रै है ॥ उज्जल रंग गोपिका नारी । श्याम रंग गिरवर के धारी श्यामहि में सब रंग बसेरो । प्रगटावती हृदय कह मेरो ॥ अरुण श्वेत सित सुन्दर तारे । प्रीत रंग पीतांबर धारे ॥ नाना रंग श्याम गुण कारी । सूर श्याम रंग घोष कुमारी ॥ ६५ ॥ राग विहागरो ॥ श्याम सलोने रूप में अरी मन हरयो । ऐसे लेहु ह्वै अटक्यो तेहिते फिरि नहि मटक्यो बहुत जतन मैं करयो ॥ ज्यों ज्यों खैंचति त्यों त्यों मन न होत ऐसी धरनि धरयो । मोसों बैरु करत उनकी घां देखौ जाय ढरयो ॥ ज्यों

मिवछत दरशन रवि पाये देही गरनि परयौ । सूरदास प्रभु रूप थकयौ मनु कुंजर पंक परयौ ॥ ६६ ॥ राग देसाख ॥ निसि दिन यहै परी टेक माई । इन नयननि कोरी नन्दलाल की लागी रहै लालसाई ॥ मुरली रस भरी श्रवननि जबतेरी परी कैसेहुं टरति नई । हृदय तें बिहरी परी कैसेहुं टरति नही हिरदे ते बिहारी अनुराई ॥ कहा कहौं तोसों यह सजनी मन मेरो लै गयो चुराई । सूर श्याम को नाम धरयो पुनि धरयौ न जाय सुधि न रहै तनु माई ॥ ६७ ॥ राग देसाख ॥ देखि सखी मेरो मन न रहै श्याम बिना । अतिहि चतुर जानि जामनि मनि वह छवि पर मैं भई लिना ॥ अपनी दसा कहौं मैं कासों वन वन डोलति रैनि दिना । मनतो चोरि लियो पहिलेही भूरि भूरि ह्वै रहों छिना ॥ वै मोहन मन हरत सहजही हरि ले ताको करव छिना । सूरदास प्रभु रसिक रसीले बड़नायक हैं नाबजिना ॥ ६८ ॥ राग सारंग ॥ नयननि नींद गई रैनि दिन पल पल छतियां लाग्यौ रहे धरको । उत मोहन मुख मुरली सुनत सुधि न रही इत घेरा घर घरको ॥ ननदीतों न दिये बिन गारी नेकहु रहति सास सपनेहु में आंनि गोवति काननि में लये रहै मेरे पाइको खरको । निकसनहूं न पाइयेरी कासों दुख कहिये देखहू न पाइयेरी सूरदास के प्रभुतन मेरो जो ऐसो भयो जैसे हाथपायर तरको ॥ ६६ ॥ राग सुघराई ॥ मोहन मुरली बजाई हो रिझाई तिनिहौं मोहीरी हौं मोहीरी । सांझ समैं देखे कन्हैया निकसे मेरे आंगन ह्वै तबतें चितवत पट पीरी भईरी ॥ काको देह गेह सुधि काके को है हरि कैसे मैंहीरी । तेरे कहे कहति हौं बानी मैं हरि हाथ बिकानी तब तें एक टकही जुरही री ॥ मिलत नहीं नहिं संग ते त्यागत कहा करौं बूझौं तोहीरी । सूर श्याम तबतें नहि आये मन जबतें हरि लीन्हे वै तो ऐसे हैं द्रोहीरी ॥ ७० ॥ राग अडानो ॥ ब्रजको खोरि ठाढो सांवरो दुटौना तिन हों मोहीरीहों मोही जबते मैं देखे श्याम सुन्दर री चलि न सकत पग बहै काम नृप द्रोही ॥ कोलै आई कौंने चरण चलाई कौंने बहियां गही सोधौं को हेारी । सूर श्याम प्रभु देखे सुधि बुधि रही नहि अति विदेह भई अब मैं बूझति तोही ॥ ७१ ॥ राग सुघराई ॥ आंखिन में बसै जियरे में बसै हियरे में बसत निसि दिन प्यारो । मनमें बसै तनमें बसै रसना में बसै अंग अंग बसत नन्द बारो ॥ सुधिमें बसै बुधिहू में बसै उरमें बसत प्रिय प्रेम दुलारो । सूर श्याम वनहूं में बसत घरहू मैं बसत संग ज्यों ह्वां जलन होत न्यारो ॥ ७२ ॥ राग सोरठ ॥ ॥ नन्द नंदन बिनु कल न परै । अति अनुराग भरी जुवती सब जहां श्याम तहं चित्त ढरै ॥ भवन गई मन तहां न लागै गुर गुरजन अति त्रास करै । वै कछु कहैं करै कछु औरे सासु ननंदि तिन पर झहरै ॥ यहै तुमहि प्रित मात सिखायो बोल करति नहि रिसनि जरै । सूरदास प्रभुसों चित अरुझ्यो यह समुझै जिय ज्ञान धरै ॥ ७३ ॥ राग जतश्री ॥ सासु ननंद घर त्रास दिखावै । तुम कुल वधू लाज नहि आवति बार बार यह कहि समुझावै ॥ कबकी गई न्हान तुम जमुना यह कहि कहि रिस पावै । राधा को तुम संग करति हौ ब्रज उपहास उड़ावै ॥ वै हैं बड़े अहर की बेटी तौ ऐसी अहवावैं सुनहु सर यह उनहीं फाबै ऐसे कहति डरावै ॥ ७४ ॥ राग सारंग ॥ हम अहीरब्रज

वासी लोग । ऐसे चलौ हंसै नहि कोऊ घरमें बैठि करौ सुख भोग ॥ दही मही लवनी घृत बेचो सबै करौ अपनो उद जोग । शिर पर कंस मधु पुरी बैठ्यौ छिनुकहि में करि डारै सोग ॥ फूंकि फूंकि धरनी पग धारौ अब लागो तुम करन अजोग । सुनऊ सूर यह जानऊगी तब जब देखौ राधा संजोग ॥ ७५ ॥ राग धनाश्री ॥ तुम कुल बधू निलज जिनि ह्वै हो । राधा कान्ह कथा द्वज घर घर ऐसे जिनि कहवैहो ॥ यह करनी इनिनई चलाई तुम जिनि हमहि हंसै हो । तुम हो बडे महर को बेटो कुल जिनि नाम धरै हो ॥ यह करनी उनहीकों छाजै उनके संग न जैहो । सूरश्याम राधाकी महिमा यहै जानि सर मैहो ॥ ७६ ॥ राग टोडी ॥ यह सुनिके हंसि मौंन रहीरी । द्वज उपहास कान्ह राधाको यह महिमा जानी उनहीरी ॥ जैसी बुद्धि हृदय इनकी में तैसिय मुख ते बात कहीरी । रवि को तेज उलूक न जानै तरनि सदा पूरनन भईरी ॥ विषको कीट विषहि रुचि मानै जानै कहा सुधा रसहीरी । सूरदास तिल तेल सवादी स्वाद कहा जानै घृतहीरी ॥ ७७ ॥ राग सूहो ॥ अरी जाति गोधन कों मानै । नन्द नंदन सुर नर मुनि वन्दन तिन की महिमा कोउ न जानै ॥ धनि राधा उपहास धर्म्म यह सदा श्यामही के गुन गानै । परम पुनीत हृदय अति निर्मल बार बार वा जसहि बखानै ॥ श्याम काम की पूरन हारी ताकों कुलटा करि पहिचानै । सूर दास ऐसे लोगनि को नाम न लीजै होत विहानै ॥ ७८ ॥ ॥ राग विहागरो ॥ विधना यह सङ्गति क्यों दीनी । इनको नाम प्रात नहिं लीजै कहा निठुरई कीनी ॥ मन मोहन गोहन विनु अबलौं मनु बीतै जुग चारि । विमुखनि मैते कब धौं छूटो कब मिलि हो बन बारि ॥ एक एक छिन विहात कैसेंहूं अब जो रह्यो नजाई । सूर श्याम दरशन विनु पापे बार बार अकुलाई ॥ ७९ ॥ राग सोरठ ॥ बिमुख जननि कौ सङ्ग न कीजै । इनके बिमुख बचन सुनि श्रवणनि दिन दिन देही छीजै ॥ मोकों नेक नहीं ये भावत परबस को कह कीजै । द्वग जीवन ऐसो बड़ दिनको श्याम भजन प्रलजीजै द्वग यह गृह द्वग ये गुरजन को इनमें नहीं बसीजे । सूरदास प्रभु अन्तर्यामी यहै जानि मन लीजै ॥ ८० ॥ राग नट ॥ राधा श्याम रङ्ग रंगी । रोम रोमनि भिदि गयो सब अंग अंग पगी ॥ प्रीति दै मन ले गये हरि नंद नन्दन आपु । कृष्ण रस उनमत्त नागरि दुरत नहि परतापु ॥ चली जमुना जाति मारग हृदय यहै विचार । सूर प्रभु के दरश पाऊं निगम अगम अपार ॥ ८१ ॥ राग धनाश्री ॥ चित को चोर अवहि जो पाऊं । हृदय कपाट लगाय जतन करि अपनें मनहि मनाऊं ॥ जबहि निशङ्क होति गुरुजनि तें तेहि औसर जो आवै । भुजनि धरौ भरि सु दृढ़ मनोहर बहुत दिननि कौ फल वेपावै ॥ लै राखौं कुच बीच चांपि करि प्रति दिन कौ तन ताप बिसारौं । सूरज दास नंद नन्दन को गृह गृह डोलनि को श्रम टारौं ॥ ८२ ॥ रागबिलावल ॥ द्वतहैं राधा जाति जमुन तन उततें हरि आवत घरकों । कछि काछनी भेष नटवर को बीच मिली मुरली धरकों ॥ चितै रही मुख इंदु मनोहर वा छवि पर वारति तनकों । दूरिहु तें देखत ही जानै प्राण नाथ सुन्दर घनकों ॥ रोम पुलक गद गद बानी कहि कहां जात चोरे मनकों । सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखन तें चितवत धन कों ॥ ८३ ॥ राग बिलावल ॥ भुजा पकरि ठाढे.

हरि कीन्हें । बांह मरोरि जाऊंगे कैसें मैं तुमकों नीके धरि चीन्हें ॥ माखन चोरी करत रहे तुम अबतौ भये मन चोर । सुनत रही मन चोरत हैं हरि प्रकट लियो मन चोर ॥ ऐसे ढीट भये तुम डोलत निदरे ब्रज की नारि । सूर श्याम मोहूं निदरौगे देहु प्रेम की गारि ॥ ८४ ॥ राग इमन ॥ मैं तुम्हरे गुन जानै श्याम । औरनि कौ मन चोरि रहे हौ मोरो मन चोर्‌यौ किहि काम ॥ वे डरपति तुमकौं धौं काहे मोकों जानत वैसिय बाम । मैं तुमकों अबही बांधोंगी मोहि बूझि जैहो तब धाम ॥ मैं लैहौ पञ्चनाई करि हों राखौं अटकि घोष अरु जाम । सूरश्याम यह कौन भलाई चोर जहां तहं तुम्हरौ नाम ॥ ॥ ८५ ॥ राग कल्यान ॥ ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत । अबतौ श्याम परे फंद मेरे झूठे काहे न बोलत ॥ मन दीजै मरजादा जैहे रहत चतुरई कीन्हें । दुख करि देउ की सुख करि दीजै अबतौ बनि है दीन्हें ॥ ऐसे ढंग तुम करत कन्हाई जीति रहे ब्रज गांउ । सूर आज बऊतै दुख पावै मन कारन पछिताउ ॥ ८६ ॥ राग गोंडमलार ॥ सुनि री कुल की कानि ललन सौं मैं झगरौ मांडोंगी । मेरे इनके कोउ बीच परौ जिनि लै करि अधर खांडोंगी ॥ चतुर नायक सों काम पर्‌यो है कैसें कै छांडोंगी । सूर दास प्रभु नंद नन्दन कौ रस लै डांडोंगी ॥ ८७ ॥ राग कान्हरौ ॥ चोरी कौ फल तुमहि दिखाऊं । कञ्चन खम्भ डोर कञ्चन के देखौ तुमहि बंधाऊं ॥ खंडों एक अंग कछु तुम्हरौ चोरी नांउ मिटाऊं । जो चाहों सोइ सोइ सब लैहों यह कहि डांड मनाऊं ॥ बीच करन जो आवै कोऊ ताकों सोंह दिवाऊं । सूर श्याम चोरनि के राजा बऊरि कहां मैं पाऊं ॥ ८८ ॥ राग गन्धार ॥ बऊरी लाज नहि काज आजु हरि पाये करन चोरी । मूंसि मूंसि लै गये मन माखन जो मेरे धन होरी ॥ बांधौ कंचन खम्भ कलेवर उभय भुजा दृढ़ डोरी । बांधौ कठिन कुलिस कुच अन्तर सकै कौन धौं छोरी ॥ खण्डौं अधर भूलि रस गोरस हरै नकाऊ को री । डंडौं काम डंड परघर कौ नाउ नलेय बहोरी ॥ तबकुल कानि आनि भइ तिरछी चलि अपराध किधोरी । शिव पर पावि धराय सूर उर सकुचि मोहि सिर ढोरी ॥ ॥ ८९ ॥ राग बिहागरो ॥ बीच कियो कुल लज्जा आई । सुनि नागरी बकस यह मोकों सनमुख आये धाई ॥ चूक परी हरि तें मैं जानी मन लै गये चुराई । ठाढे, रहे सकुचि तो आगें राख्यौ बदन दुराई ॥ तुमहौ बड़े महर की बेटी काहि गई भुलाई । सूर श्याम हैं चोर तुम्हारे छांड़ि देउ डरपाई ॥ ९० ॥ राग गौरी ॥ कुल की लाज अकाज कियो । तुम बिनु श्याम सुहात नहीं कछु कहा करौं अति जरत हियो ॥ आपु गुप्त करि राखी मोकों मैं आयसु शिर मानि लियो । देह गेह सुधि रहत बिसारे तुम तें हित नहि और बियो ॥ अब मोकों चरणनि तर राखौ हंसि नंद नन्दन अंग छियो । सूर श्याम श्रीमुख की बानी तुमपै प्यारी बास जियो ॥९१॥ राग जैतश्री ॥ मात पिता अति त्रास दिखावत । भ्राता मारन कों मोहि धिर वे देखे मोहि न भावत । जननी कहति बड़े की बेटी तो कों लाज न आवत ॥ पिता कहै कैसी कुल उपजी मनही मन रिस पावत । बहिनी देखि देति मोहि गारी काहे कुलहि लजावत । सूरदास प्रभुसों यह कहि कहि अपनी बिपति जनावत ॥ ९२ ॥ राग बिहागरो ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन । बिसुख जनन

को संगति को दुख कब धौं करिहौ मोचन ॥ भवन मोहि भाठीसों लागत मरत सोचही सोचन । ऐसी गति मेरी तुम आगे करत कहा जिय दोचन ॥ बृग मात पिता बृग भ्राता देखत रहत मोहि लोचन । सूर श्याम मन तुमहि लुभानों हर्दे चून रंग रोचन ॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥ कुलकी लाज कहा लै करिहौं । तुम आगे मैं कहौं न सांची अब काहू नहि डरिहौं ॥ लोग कुटुम्ब जगत जे कहियत पहिले सबहि निदरि हौं । अब यह दुख सहि जात न मोपै बिमुख वचन सुनि मरिहौं ॥ आपु सुखी तौ सबही के है उनके सुख कहा सरि हौं । सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि अब कैहौ कछु लरिहौं ॥ ९४ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ प्राण नाथहो मेरी सुरति करौ । क्यों न मैं जु दुख पावतिहौं अपने तन मन मेरी सुरति करौ ॥ दीन दयाल कृपा करौ मोकों काम दंद दुख और बिरह हरौ । तुम बड़ र बनी रवन मैं जानति ओही के धोखे मोसों काहे को लरौ ॥ तन धन तुमही मेरे मोहन तेरो ध्यान हृदय धरौ । सूर दास स्वामी तुम हौ अन्तर जामी मनसा बाचा ध्यान तुमसों धरौं ॥ ९५ ॥ राग कान्हरो ॥ हौं या मायाही लागी तुम कत तोरत । मेरो तौ मन तिहारे चरणनिही लागौ धीरज क्यों रहै रावरे सुख मोरत ॥ कोऊ लै बनइ बातें मिलवति तुम आगे सोकिनि आय मोसों अब जोरत । सूर श्याम पिय मेरे तोतुमही जिय तुम बिन देखे मेरो हियो कोरत ॥ ९६ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम मेरी इक बात । हरि प्यारी के सुखतन चितवत मनहीं मनहि सिहात ॥ कहा कहति वृषभान नन्दिनी बूझत हौ मुसुकात । कनक बरन सुन्दरी राधिका कटि कृस कोमल गात ॥ तुमहीं मेरे प्राण जिवन धन अहो चन्द तुम भ्रात । सुनहु सूर जो कहति रही तुम कहौ न कहा लजात ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ नागरी श्यामसों कहति बानी । सुनहु गिरिधरन बर शीश सिखंड धर जपत सुर नाग नर सहस्र बानी ॥ रुद्र पति क्षुद्र पति लोक पति वेक पति धरनि पति गगन पति बेद बानी । सिंहके सरन जंबूक चाहहि करै मन कृष्ण राधा एक जगत बानी ॥ अखिल ब्रह्माण्ड पति तिहु भुवन अधिपती सकल श्रुति सार पति अगम बानी । सूर प्रभु श्याम तुमहीं करुण धाम करौ मन काम सुनि दीन बानी ॥ ९८ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ बिहसि राधा कृष्ण अंक लीन्ही । अधरसों अधर जुरि नयनसों नयन मिलि हृदयसों हृदय लगि हरष कीन्ही ॥ कंठ भुज भुज जोरि उछंग लीन्ही नारि भवन दुख टारि सुख दियो भारी । हरषि बोले श्याम कुंज मन घन धाम तहां हम तुम संग मिलै प्यारी ॥ जाहु गृह परम धन हमहुं जैहैं सदन आय कहुंपास मोहि सौन दैहौ । सूर यह भावदै तुरतही गवन करि कुंज गृह सदन तुम जाय रैहौ ॥ ९९ ॥ रामसारंग ॥चर्चरी॥ यह सुनत नागरी माथ नायो । श्याम रस बस भरे मदन जिय बुरिहरे सुन्दरी बात को भेद पायो ॥ खडे ब्रज जमुन बिच दुहुन मन अति सकुच और कछु बने नहि बुद्धि ठानी । तबहि ब्रजनारि आवत देखि जमुन तें एक दृजहि तें राधा लजानी ॥ श्याम हंसि कें चले तुरत ग्वालनि मिले कहां सब रहे कहि हांक दीन्हों । भाव यह करि गये सूर प्रभु गुन नये नागरी रसिक जिय जानिलीन्हों ॥ १०० ॥ राग टोड़ी ॥ राधा हरि के भावहि जान्यों । यहै बात कैहों इन

आगे मनही मन अनुमान्यों ॥ उन्हें देखि राधा मग ठाढ़ी श्याम पठाये टारि । बूझतही कछु बुद्धि रचैगी बड़ी चतुर यह नारि ॥ इत वृषभान सुता मन सोचति मोहि देखि हरि संग । सूर अबहि बातनि करि धरिहै जानति इनके रंग ॥ १०१ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ चतुर बर नागरी बुद्धि ठानी । अबहि मोहि बूझि है इनहि कैहौ कहा श्याम संग आजु मोहि प्रकट जानी ॥ भाव करि गए हरि ग्वाल बूझत रहे जानि जिय लई अति चतुर रासी । यह रचौ बुद्धि एक कहा ए कहैं मोहि मेरे मन ए सबै घोष बासी ॥ इतहु की उतहु की सबै जुरि एकठी कहति राधा कहां जाति हैरी । सूर प्रभु को अबहि देखे हम तेरे ढिग कहां गये तिनहि पछितात हैरी ॥ १०२ ॥ रागगुजरी ॥ कान्ह कहा बूझत हैं तुमको । छांईते लखि लीन्ही तबही कहा दुरावति हमको ॥ मन लै गये चुराय तुम्हारे सो अपनो तुम पायो । अपनो काज सारि तुम लीन्हो हम देखतहि पठायो ॥ सदा चतुरई फबती नाहीं अतिही निदरि रहीहौ । सूर श्याम धौं कहां रहत हैं यह कहि कहि जु तही हौ ॥ १०३ ॥ राग अलहिया ॥ कहत रही तब राधिका जब हरि संग देखौ । बेसरि लीजौ छीनि कै मुख तन कहा पेखौ ॥ कैहो बेसरि की नहीं की लेहि छिड़ाई । चतुराई प्रकटी अबै ऐसी हौ माई ॥ बार बार नागरि हंसै तरुणी वै हानी । ऐसेहि बेसरि लेहुगी सब भई अयानी ॥ हम मूरख तुम चतुर हौ कछु लाज न आवै । सूर श्याम संग नहि रही अब कहा दुरावै ॥ १०४ ॥ राग सोरठ यहै कहन मोकों तुम आई । इततें ये उततें तुम सब मिलि काहे ऐसे धाई ॥ बेसरि एक लेहुगी को को पीतांबर न देखावहु । बेसरि अरु पीतांबर लै तब घर घर जाय सुनावहु ॥ तारी एक बजति की दीजै इतनोइ ज्ञान विचारो । सुनहु सूर ए बेसरि लैहैं जान्यों ज्ञान तुम्हारो ॥ १०५ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनि राधा तोसों हम हारी । तेरे चरित नहीं कोउ जानै बस कीन्हे गिरिधारी ॥ अबही कान्ह टारि करि पठये चतुरई आप संवारी । अबहीं प्रकट दुहुनि हम देख्यो जानति दैहौ गारी ॥ तोमें बुद्धि अधिक हम देखी बड़ी सयानी नारी । सूर श्याम को यह बुधि नाहीं जितनी है तो धारी ॥ १०६ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम भले अरु तुमहू भलीहौ । बेसरि छीनतिहौ बिनु काजहि जाहु न घरहि चलीहौ ॥ कैसे दोरि परी मेरे पर मानहु संग मिली हौ । औरऊई सब बनकी बेली आपुन कमल कली हौ ॥ तब कहती गहि बाह दुहुनि की जो तुम चतुर अलीहौ । सूरदास राधा गुण आगरि नागरि नारि छलीहौ ॥ १०७ ॥ राग बिलावल ॥ अब हमसों सांची कहौ वृषभान दुलारी । कछुतौ तोसों कहत हैं ठाढ़े गिरिधारी ॥ काहा हमसोसोइक हौ दैहो जिनि गारी । हम कों देखतही गये उत ग्वाल हंकारी ॥ भेद करै जो लाड़िली तोहि सौंह हमारी । तू ठाढ़ी काहे रही मग मेरी प्यारी ॥ सहज होय तू कहि अरु उर तें रिस टारी । सूर श्याम की भावती कहै कहौं कहारी ॥ १०८ ॥ राग सूहौ ॥ मैं जमुना तन जाति सहीरी । उततें आवत देखि सखिन कों इन कारन ह्यां परखि रहीरी ॥ इततें आय गये हरि तिरछे मैं तिनहीं तन चितै रहीरी । बूझन लगे कान्ह ग्वालन कों तुम तौ देखे उनहि नहींरी ॥ कछु उनिसों बोली नहिं सनमुख नांही ह्यां कछु वे न कहीरी ।

सूर श्याम गये ग्वालनि टेरत ना जानौ तुम कहा गहीरी ॥ १०९ ॥ राग टोड़ी ॥ तुम मेरी बेसरि कों धाई । सकुचि गई सुनि सुनि यह बानी तऊनिन राधा भले लजाई ॥ यह तौ बात लगति ककु सांची हम पर न्याय रिसाई । टेरत कान्ह गये ग्वालनि कों श्रवण परी धुनि आई ॥ बेसरि नांउ लेत सरमानी तब राधा झहरानी । सूर दास द्विज नारि मनहि मन यह गुनि गुनि पछितानी ॥ ११० ॥ राग गुर्जरी ॥ राधा तू अति ही है भोरी । झूठेहि लोग उड़ावत घर घर हम जान्यो अब तोरो ॥ कण्ठ लगाय लई रिस छांड़ी चूक परी हम ओरी । तुम निर्मल गङ्गा जलकूतें दुरति नहीं वह चोरी ॥ घर जैहौ को जमुना जैहौ हम आवैं संग गोरी । सूर दास प्रभु प्यारी राधा चतुर दिननि की थोरी ॥ १११ ॥ राग आसावरी ॥ अहो सखी तुम ऐसी हौ । अब लों तुम कुलटा करि जानति मोकों री सब नैसी हौ ॥ अपने जन जैसो तैसेइ सब मोहू जानति तैसो हौ । जोरी भली बनैगी हरि सों छांह निहारौ कैसी हौ ॥ अब लागी मोकों दुलरावन प्रेम करति हरि पैसी हौ । सुनऊ सूर तुम्हरे छिनु छिनु मति बड़ी पेट की जैसोहौ ॥ ११२ ॥ राग टोड़ी ॥ हंसति नारि सब घरहि चली । हम जानी राधा है खोटी हम खोटी राधिका भली ॥ इत तें जुवति जाति जमुना जे तिनकौ मग में परखि रही । श्याम कहूं तें आय कढे ह्वां चले गये उत हेरत ही ॥ इतनी तबहि नहीं यह जानी झूठेही सब अति खगही । सूर श्याम अपने रंग आये हम वाकौ नहि भली कही ॥ ११३ ॥ राग बिलावल ॥ राधा श्याम है नेहनी हरि राधा नेही । राधा हरि के तनु बसे हरि राधा देही ॥ राधा हरि के नयन में हरि राधा नयननि । कुञ्ज भवन रति युद्ध कों जोरत बल मैननि ॥ और न काहू कौं रुचै घर घर गये दोऊ । मात पिता रति भाव सों जानैं नहि कोऊ ॥ कैसेऊ करि करि दिन गयो निशि घटति न क्यौंहू । दोउ रस विरह मगन भये निशि भई अगौहू ॥ विरह सरोवर बूड़ही अन्धकार सेवारा । सुधि अव लंबन टेकही कहूं बार न पारा ॥ तमचुर टेर पुकारई बूड़ो जिनि कोई । सूर प्रात नौका मिली आनंद मन होई ॥ ११४ ॥ राग धनाश्री ॥ मन मृग बेध्यौ मोहन नयन बान सों । गूढ़ भाव की सेन अचानक तकि तान्यों भृकुटी कमान सों ॥ प्रथम नाद बल घेरि निकट लै मुरली सप्तक सुर बंधान सों । पाछें बङ्क चितै मधुरे हंसि घात कियो उलटो सु ठान सों ॥ सूर सु मार विथा या तन की घटति नहीं औषधी आन सों । है है सुख तबही उर अन्तर आलिङ्गन गिरिधर सुजान सों ॥ ११५ ॥ राग बिलावल ॥ कान्ह उठे अति प्रातही तलबेली लागी । प्रिया प्रेम के रस भरे रति अन्तर खागी ॥ श्याम उठत अवलोकि के जननी तब जागी । सुन्दर वदन विलोकि के अङ्ग अङ्ग अनुरागी ॥ माता बूझत सुवनकों बलि गई मेरे बारे । कहा आजु अचरज कियो तुम उठे सबारे ॥ झारी जल दंतवन दियो छवि पर तनु वारयो । उत्तम जल लै प्रेम सों सुत वदन पखारयो ॥ करी सुखारी अतुरई नागरि रस छाके । सूर श्याम ऐसी दशा त्रिभुवन बस जाके ॥ ११६ ॥ राग बिलावल ॥ उत वृषभान सुता उठी यह भाव विचारै । रैनि बिहानी कठिन सों मन्मथ बल भारै ॥ ग्रीव मोति सरि तोरि कें अंचरा सों बांध्यौ । यहै बहानौ करि लियो हरि मनु

अनुराग्यौ ॥ जननि उठी अकुलाय कें क्यौं राधा जागी । कहां चली उठि भोरही सोवन न सभागी ॥ अब जननी सोऊ नहीं रवि किरनि प्रकाशी । तुम्हें उठति काहे नहीं जागे दृजबासी ॥ आप उठी आंगन गई फिरि घरही आई । कब धौं मिलिहौं श्याम कौं पल रह्यो न जाई ॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनहीं तलबेली लागी । सूर श्याम के रसभरी राधा अनुरागी ॥११७॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ सुता सौं कहति वृषभान घरनी ॥ कहां तू राधिका भोरतें फिरति है तेरी गति मोपै नही जाति बरनी ॥ तोरि मोतिन सरी तव गुप्त करि धरयो कछु यही मिस सकुचि रही मुख न बोलै । मनो खञ्जन चपल चंद फंदा परे उड़त नहि ताहि तें कछु न डोलै ॥ कहा तेरी प्रकृति परी है लाड़िली अबहि तें कहां तू जाहि गोरी । सूर कहै जननि बोलै नहीं आजु तू प्रकसि धरिहौ आय खाय गोरी ॥ ११८ ॥ राग नट ॥ जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारै । देखौं नहीं मोति सरि माला सो जिनि कतहूं डारै ॥ बोलै नहीं बात यह सुनि रहि मन लागी मुसिकान । अबहीं मोकों खोझि पठै है बनि है ह्यां को जान ॥ भली बुद्धि मेरे चित आई कृष्ण प्रीति है सांची । सूर दास राधिका नागरी नागर के रंग राची ॥ ११९ ॥ राग सोरठ ॥ जननी अतिहि भई रिसहाई । बार बार कहै कुंवरि राधिका री मोतिनसरि कहां गंवाई ॥ बूझें ते तोहि ज्वाब न आवै कहा रही अरु गाई । नौसर हार अमोल गरे कहं देखु न मेरी माई ॥ कालिहि तें रीतौ गर तेरो डारि कहूं तू आई । सुनहु सूर माता रिस देखत राधा हंसति डराई ॥ १२० ॥ राग बिलावल ॥ सुनि री माता कालि ही मोती सरी गंवाई । सखिनि मिलो जमुना गई धों उनहि चुराई ॥ को धौं जलही में गई यह सुधि नहि मेरे । तबतें मैं पछिताति हौं कहति नहीं डर तेरे ॥ पलक नहीं निशि कहूं लगी मोहि सपतरी तेरी । यह डरतें मैं आजुही अति उठी सवेरी ॥ सहरि सुतन चकित भई मुख ज्वाब न आवै । सूर राधिका गुण भरी कोउ पार न पावै ॥ १२१ ॥ राग सारङ्ग ॥चर्चरी॥ क्रोध करि सुता सौं कहति माता । तोहि बरजति मेरी अचगरी सिर परी गर्व गञ्जन नाम है बिधाता ॥ तेरो दोष नहीं भ्रमति तू जहं तहीं नदी डूंगरनि बनप्रात पाता । मात पितु लोक को कानि मानै नहीं निलज भई रहन नहि लाज गाता ॥ भली नहि एन करी शीश तोकों धरी जगत में सुता तू सहर ताता । बात सुनिहैं श्रवण भई बिनही भवन सूर डारै मारि आजु भ्राता ॥ १२२ ॥ राग धनाश्री ॥ जाहुतहीं मोतिसरी गंवाई । तबही तोघर पैठन पैहौ अब ऐसे ढंग आई ॥ जो बरजौं आपुन सो ई सोइ करै देखौरी गुन माई । एक एक नग शतशत दामनि लाखटका दै ल्याई ॥ जाके हाथ परयो सो दै है घर बैठे निधि पाई । सूर सुनति री कुंवरि राधिका तोको नही भलाई ॥ १२३ ॥ ॥ राग टोडी ॥ भरि भरि नयन लेति है माता । मुखतें नहि आवै कछु बाता ॥ रीती ग्रीव निहारति जबही । हियो उमंगि आवत है तबही ॥ मोतिसरी कुच परम विराजै । मानो अग्नि पारस बिच भ्राजै ॥ मोतिसरि माला कहां गंवाई । जीव बिना करिहै वह भाई ॥ साधौं देखि कहूं धौं पावै । सूर जोरि कर विधिहि मनावै ॥ १२४ ॥ राग गोंडमलार ॥ कहां वह मोतिसरी जो गवाईरी । बावासों और लैहौ मगाईरी ॥ वे कहा

करैंगी सैंति राखेरी । तादिनां तुहींधों कितिक भाखैरी ॥ नयननि भरि लेति कहा और नाहींरी । छाड़ि मोतिसरिको मोहि रिसाहीरी ॥ संदूकनि भरि धरे कैते न खोलैरी ॥ कहा मोसों खोझि बोलैरी ॥ सुता वृषभान की हरष मनहीरी । सूर प्रभु सैन दै बोलै बनहीरी ॥ १२५ ॥ राग गौरी ॥ सुनि राधा अब तोहि न पत्यैहौ । और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं ॥ लाखटका की हानि करी तै सो जब तोसों लैहौं । हार बिना ल्याये लडवौरी घर नहि पैठन दैहौं ॥ जब देखौगी यहै मोतिसरी तबही तौ सचु पैहौ । नातरु सूर जनम भरि तेरो नाम नही मुख लैहौं ॥ १२६ ॥ राग कल्यान ॥ सुनिरी राधा अति लड़बौरी जमुन गईजब संग कौनही । बूझति नही जाय अपनन को न्हात रही तब जोन जोनही ॥ काको नाम धरौ तो आगे ललिता चन्द्रावली नहीही ॥ बहुत रहीं संग सखी सहेली कहौ काहि मैं सैन सैनही ॥ देखों जात जमुन तटही में जहं धरिकै मैं न्हात रहीही । सूर जननिसों कहति राधिका मोतिसरी मेरि जाय नहीही ॥ ॥ १२७ ॥ राग कल्यान ॥ जैहै कहां मोतिसरि मोरी । अब सुधिनाहि लई बाहीने हंसत चली वृषभान किशोरी ॥ अबही मैं लीन्हे आवतिहौं मेरे संग आवै जिनि कोरी । देखों धौं कह करिहौं वाको बड़े लोग सिखि करत हैं चोरी ॥ मोकों आजु अबेरि लागि है ढूढौंगी घर घर व्रज खोरी । सूर चली निधरक ह्वै सबसों चतुर राधिका बातनि भोरी ॥ ॥ १२८ ॥ राग कल्यान ॥ नन्द नंदन बार बार रबनि पंथ जोहैरी । लोचन हरि करि चकोर राधा मुख चन्द और देखत नहि तिमिर भोर मनही मन मोहैरी ॥ नयन दोऊभृंग रूप बदन कमल सरद नूप तरनिको प्रकाश मिलन बिना चपल डोलैरी । लोचन मृग सुभग जोर जाग रूप भये भोर भौंह धनुष शरकटाच्छ सुरति व्याधि तोलैरी ॥ किधौं ए चक्षु चारु प्यारी मुख रूप सार श्याम देखि रीझै मन यहै सांच मानी । सूर श्याम सुखद धाम राधा है जाहि नाम आतुर प्रिय जानि गमन प्यारी अतुरानी ॥ १२९ ॥ ॥ राग देव गन्धार ॥ श्याम अति राधा विरह भरे । कबहुं सदन कबहूं अंगनाही कबहूं पौरि खरे ॥ जननी आतुर करति रसोई देखि देखि हरि जान । कहा अबेर करति तू अबरी भूख लगी अति मात ॥ मैं बलि जाउं श्याम घन सुन्दर अब बैठो तुम आई । सूर सखा संग सबै बुलावउ हलधर नही बताई ॥ १३० ॥ राग बिलावल ॥ महरि कह्यो नंद लाड़िले संग सखा बोलावहु । करौ कलेउ आयके हलधरहु बोलावहु ॥ हलधर लये बोलायके मोहन करि आदर । दाउ जू चलि जेंइये यह कहे मन सादर ॥ कान्ह जाय तुम जेवहू मोकों रुचि नाही । सखा संग हरि लैगये बैठे एक ठांही ॥ षट रस बिंजन को गिनै बहु भांति रसोई । सरस कनिक बेसन मिलै रुचि रोटी पोई ॥ प्रेम सहित परसन लगी हलधर की माता । ग्वाल सखा सब जोरिकै बैठे नंद ताता ॥ सखा सबन जेवन लगे हरि आयसु दीन्हो । सूरदास प्रभु आपहू करकौरहि लीन्हो ॥ ॥ १३१ ॥ राग आसावरी ॥ नंद महर के घर पिछवारे राधा आय बत्यानी हो । मनो आंबु दल मौर देखिकै कुहुकि कोकिला बानी हो ॥ झूठेहि नाम लेति ललिताको काहे जादु परानी हो । वृंदावन मग जाति अकेली शिर लिये दही मथानी हो ॥ मैं बैठी

परखति द्वारेहीं श्याम तबहि तेहि जानी हो । कोक कला गुण आगरि नागरि सूर चतुरई ठानी हो ॥ १३२ ॥ राग रामकली ॥ धौरी मेरी गाय बियानी । सखनि कह्यो तुम जेंवहु बैठे श्याम चतुरई ठानी ॥ गाय नहीं ह्यां बछरा नाहीं ह्वै है राधा रानी । सखा हंसत मनही मन कहि कहि ऐसे गुण निधि धानी ॥ जननी भेद कछू नहि जानै बार बार अकुलानी । सूर श्याम भूखो उठि धायो मरै न गाय बियानी ॥ ॥ १३३ ॥ राग कल्यान ॥ चर्चरी ॥ सैन दै नागरी गई बन धामको । तबहि कर कौर दियो डारि नहि रहि सकों ग्वाल बाल जेंवत तजे मोहि गई श्याम को ॥ चले अकुलाय वन धाय ब्यानी गाय देखिहौं जाय मन हरष कीन्हो । प्रिया निरखति पंथ मिलैं कब हरि कंथ गये हरि अंत हंसि अंक लीन्हो ॥ अतिहि सुख पाय अतुराय मिले धाय दोउ मनो अति रंक नव निधिहि पाई । सूर प्रभुकी प्रिया राधिका अति नवल नवल नंदलाल के मनहि भाई ॥ १३४ ॥ राग धनाश्री ॥ पिछवारे ह्वै बोलि सुनायो । कमल नयन हरि करत कलेऊ कर न हि न आनन लों आयो ॥ गाय एक वन ब्याय रही है एहि मिस आतुर उठि धायो । बेनु न लयो लकुट नहि लीन्ही हरबराय कोउ सखा न बुलायो ॥ चोंकि परे चक्रित ह्वै जित कित सत्य आहि की सपन भयायो । फूले फिरत अङ्ग नहि गांवत मानहु सुधा किरनि छवि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत लता तर किये सबै जितनों मन भायो । सूरदास सुन्दरी सयानी उलटि अंक गिरिधर प्रिय पायो ॥ १३५ ॥ राग दवगंधार ॥ ये दोउ राजत रति रन धीर । महा सुभट प्रगटे भूतल दृप भान सुता बलवीर ॥ भौंहनि धनुष चढाय परस्परसजे कवच तन चीर । गुण संधाननि श्रेष घटत नहि छुटे कटाक्षनि तीर ॥ नख नेजा आकृत उर लागे नेक न मानति पीर । मुरली अधरनि डारि अयुधलों गहे सुभुज भट भीर ॥ प्रेम समुद्र छाडि मरजादा उमंगि मिले त जि तीर । करत विहार दुहूं दिसतें मनों सींचत सुधा सरीर ॥ अति बल ज्यों बन घाय रुधिर चिर बंदन मिलि श्रम नीर । सूर दास स्वामी अरु प्यारी विहरत कुंज कुटीर ॥ १३६ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ नवल निकुंज नवल नवला मिलि नवल निकेतनि रुचिर बनाये ॥ विलसत बिपिन बिलास बिबिधि बर बारिज बदन बिकस सचुपाये । लागत चन्द्र मयूख मुतो तनु लता भवनि रन्ध्रनि मग आये ॥ मनहुं मदन बल्ली पर हिमकर सींचत सुधा धार सतनाये ॥ सुनि सुनि श्रोचति श्रवण सुन्दरी मौन कियो मोहति मन लाये । सूर सखी राधा माधों मिलि क्रोडत हैं रति पतिहि लजाये ॥ १३७ ॥ राग कल्यान ॥ चर्चरी ॥ हरषि प्रिय प्रेम चिय अंक लीन्हो । प्रिया बिन बसन करि उलटि धरि भुजनि भरि सुरत रति पूर अति निबल कीन्हो ॥ अपने कर नखनि सौं अलक कुर बारही कबहुं बांधेअति हि लगत लोभा । कबहुं मुख मोरि चुंबन देत हरष ह्वै अधर भरि दसन वह उनहि शोभा ॥ बहुरि उपज्यो काम राधिका प्रति श्याम मगन रस ताम नहि तनु सम्हारै । सूर प्रभुनवल नवला नवल कुञ्ज गृह अन्त नहि लहत दोउ रति विहारै ॥१३८॥ राग नट ॥ नागर श्याम नागरि नारि । सुरत रति रन जीति दोऊ अङ्ग मनमथ धारि ॥ श्यामतन घन नील मानौ तड़ित तनु सुकुमारि । मनौ मरकत कनक संजुत खच्यौ काम संवारि ॥

कोक गुण करि कुसल श्यामा उत कुशल नंदलाल । सूरश्याम अनंग नायक बिबस कीन्ही बाल ॥ १३९ ॥ राग मलार ॥ उलहरि आयो शीतल वूंद पवन पुरवाई । बादे द्रुम सघन बन चहुं ओर घटा छाई ॥ तहां हरि आय सेज पातन की छिपाय अनमने भये कन्हाई । भीजत देखो राधा साधौ कारी कामरी ओढ़ाई ॥ अति दरेर की झरेर टपकत सब अम्बर कांपत तनु त्रिय को प्रिय हंसि कै ग्रीवा लगाई । भये एक ठौर सूर श्याम भरी कोर अरस परस रीझत उपरेनाही मैं समाई ॥ १४० ॥ राग मलार ॥ दीजै कान्ह कांधे एको कम्बर । नान्ही नान्ही वूंद बरषन लाग्यौ भीजत कुसुभी अम्बर ॥ बार बार अकुलाय राधिका देखि मेघ आडम्बर । हंसि हंसि रीझि बैठि रहे दोऊ ओढि सुभग पीताम्बर ॥ शिव सनकादिक नारद शारद अन्त न पावै तुम्बर । सूर श्याम गति लखि न परत कछु खात ग्वाल तजे सम्बर ॥ १४१ ॥ राग गौरी ॥ सुरत अन्त बैठे बनवारी । प्यारी नयन जुरति नहि सनमुख सकुचि हंसत गिरिधारी ॥ बसन सम्हारि लेत गये दोऊ आनंद उर न समाई । चितवत दुरि दुरि नयन लजौंही सो छबि बरनि न जाई ॥ नागरि अङ्ग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अङ्ग । सूरज प्रभु प्यारी बस कीन्ही हाव भाव रति रङ्ग ॥ १४२ ॥ राग सोरठ ॥ रीझे श्याम नागरी छबि पर । प्यारी एक अङ्ग पर अटकी यह गति भई परस्पर । देह दशा की सुधि नहि काहू नयन नयन मिलि अटके । इन्दी वर राजीव कमल पर जुग खञ्जन जुग लटके ॥ चकित भये तनकी सुधि आई बनही में भइ राति । सूर श्याम श्यामा विहार करि सो छबि की इक भांति ॥ १४३ ॥ ॥ राग आसावरी ॥ कान्ह कह्यो बन रैनि न कीजै सुनऊ राधिका प्यारी हो । अति हित सों उर लाय कह्यो अब भवन आपने जारी हो ॥ मात पिता जिय जानै न कोऊ गुप्त प्रीति रस भारी हो । कर तें कौर डारि मैं आयो देखति दोउ महतारी हो ॥ तुम जैसी मोहि प्यारी लागति चन्द चकोर कहारी हो । सूर दास स्वामी इन बातनि नागरि रिझई भारी हो ॥ १४४ ॥ राग कल्याण ॥ प्यारी उठि पिय के उर लागी । आलस अङ्ग लटकि लट छूटी देखि श्याम बड़ भागी ॥ सुरत मोति निधि बीती मानों हंसनि प्रात भयो जागी । अति सुख कंठ लगाय लई हरि अरस परस अनुरागी ॥ नूतन मेंघ नवेली दामिनि सहज मेटि मिलि पागी । सूरदास प्रभु कों अङ्कम भरि काम द्वन्द तनु त्यागी ॥ १४५ ॥ राग गौरी ॥ कहा करौं पग चलत न घर कों । नयन विमुख जन देखन जात न सुझे अरुण अधर कों ॥ श्रवण कहत वे वचन सुने नहि रिस पावत मोपर कों । मन अटक्यो रस मधुर हंसनि पर डरत न काहू डर कों ॥ इन्द्री अङ्ग अङ्ग अरुझानी श्याम रङ्ग नटवर कौ । सुनऊ सूर प्रभु रही अकेली कहा कहौं सुन्दर वर कों ॥ ॥ १४६ ॥ राग गौरी ॥ श्याम आपनो चितवनि वरजौ अरु मुख की मुसुकानि । तुम्हरे तनक सहज के कारण सहियत सरवस हानि ॥ नयननि निरखि बसीठी कीन्ही मनु मिल यो पय पानि । गहि रति नाथ लाज निज पुरतें हरि कों सौंपी आनि ॥ सुनि सखि कहति नंद नन्दन की दासी सब जग जानि । जोइ जोइ कहत करति सोई कित आयसु माथे मानि ॥ गई त्यागि अभिमान मोह मद प्रति परि जन पहिचानि । सूर सिन्धु सरिता

मिलि जैसे मनसा बुंद हिरानि ॥१४७॥ राग बिहागरो ॥ अति हित श्याम बोले बैन । तुव बदन देखे बिना ये निमिष होत न नैन ॥ पलक नहि चित ते टरति तू प्राण बल्लभ नारि । सुनत श्रवणनि वचन श्रीमत हरष अन्तर भारि ॥ मात पित अब सेर करि हैं गमन कीजै गेह । सूर प्रभु प्रिय चिया आगें प्रकटि पूरन नेह ॥ १४८ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम प्रकट कीन्हों अनुराग । अति आनन्द मनहि मन नागरि बदति आपनों भाग ॥ सुन्दर घन उत टजहि सिधारे इतहि गवन करि नारि । दम्पति नयन रहे दोउ भरि भरि गये सुरत रति सारि ॥ जननी मन अब सेर करति ही हरि पहुंचे तेहि काल । सूर श्याम कों मात अंक भरि कहति जांउ बलि लाल ॥ १४९ ॥ राग इमन ॥ मैं बलि जांउ कन्हैया की । कर तें कौर डारि उठि धायो बात सुनी बन गैया की ॥ धौरी गाय आपनी जानी उपजी प्रीति लवैया की । तातौ जल समोय पग धोवति श्याम देखि हित मैया की ॥ जो अनुराग जशोदा के उर सुखकी कहनि नन्हैया की । यह सुख सूर और कछु नाहीं सोइ करत बल भैया की ॥ १५० ॥ राग इमन ॥ कान्हा प्यारे बार नें जांउ श्याम सुन्दर मूरति पर । छबि सों छबीली लटकि बदन पर चन्द्रिका की लटकनि अति बिराजत मुरली सुभग धरे कर ॥ सुन्दर नयन बिशाल भौंह मुख चाप मानौ तिलक बिराजत ललित भाल पर । सूर श्याम मेरे अति बानक बन्यों बन माला अति हो उर राजति कटि तट सोहत पीताम्बर १५१ ॥ राग बिहागरो ॥ बहतौ मेरी गाय न होई ॥ सुनि मैया मै वृथा भम्यों बन जौ देखौ नैननि भरि जोई । वृंदावन ढूंढ्यो जमुना तट देख्यो बन डुंगरनि झंझारि ॥ सखा संग कोउ नही कलों कांध कमरि कर लकुटी धारि ॥ बहतौ धेनु और काहूकी युवती एक मिली धौं कौन ॥ सूर संग मेरे बहु आई माकों ओढि पछुचायो भौंन ॥ १५२ ॥ राग राम कली ॥ राधा अति ही चतुर प्रवीन ॥ कृष्णकों मुख दै चली गृह हंस गति कटिछीन ॥ हारके मिस इहां आई श्याम मणि का काज । भयो सब पूरन मनोरथ मिले श्री ब्रज राज ॥ गांठि अंचर छोरिकें मोतिसरी लीन्होहाथ ॥ सखी आवत देखि राधा लई ताकों साथ ॥ युवति बूझति कहां नागरि निसि गई एक जांम । सूर ब्योरो कहि सुनायो मै गई तेहि कांम ॥ ॥ १५३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऐसोरी निधरक तू राधा । ब्रज घर घर बन बन डोली तूं नहीं कियो कछु बाधा । लोकों संग बोलि तूं लेती करनी करी अगाधा ॥ प्रातहि तें तूं अब आवति है रैनि जांम लग आधा ॥ पायो हार किधों पुनि नाही देखो री जोहि साधा ॥ आंचर हेरि ग्रीव दिख रायो दामिनि मोल उपाधा । मन मन कहति बात यह मिलवति गई श्याम अब राधा ॥ सूर सखी लखि लीन्ही ताकों यह तौ है कछु दाधा ॥ १५४ ॥ राग धनाश्री ॥ कहि राधा किनि हार चुरायो ॥ ब्रज युवती सबही मै जानति घर घर लै लै नाम बतायो ॥ श्यामा कामा रसिका चतुरा नवला प्रमुदा नारि ॥ सुखमा लीला अवध अनंदा वृंदा जमुना सारि ॥ कमला तारा विमला चन्द्रा चन्द्रावलि सुकुमारि । अमला अबला कुंजा सुकृता हीरा नीला प्यारि ॥ सुमना बहुला चंपा जुहिला शाना भाना भांम । प्रेमा दामा कृपा हंसा रंगा हरषा नांम ॥ द्रुमिला रंभा कृष्णा धाना मैना नैना रूप । रत्ना कुमुदा

मोहा करुणाललनालोभानूप । इतननि मैं कहि कोनें लीन्हों ताको नाउं बताव ॥ सूरश्याम हैं चोर तुम्हारे मैं जानति सब दांव ॥ १५५ ॥ राग शंकरा भरण ॥ सुरत रति मानि आई पियपै तौ गज गति गामिनी । अरगजे हार बिथुरे वार देखियत आइ गये जांम जामिनी ॥ और सोभा सुहाई अंग अंग अरसाइ बोलति है अलसामिनी ॥ सूर दास प्रभु छबि निरखति रही रस बस ह्वै री धन्य धन्य तूं भामिनी ॥ १५६ ॥ राग कान्हरो ॥ उर धारीलटें छुटि आनन पर भीजो फुलेलनिसों आली हरि संग केलि । सोंधे अरगजाअरु मरगजो सारोरी केसरि खोरबिरज कुङ कुङ कुचनि पर दरकी अंगिया घनिबेलि ॥ आलस हैं भरेनैनबैन अट पटात जात एंड़ात जम्हात गात अंग मोरि बहियां मेलि । सूर प्रभु प्यारी प्यारेसंग करि रस बिलास अरस परस दोउ आंको मेलि ॥ १५७ ॥ राग ललित ॥ आई तुंडगमगाति एडाति जम्हाति रंग भरिकै ॥ चेद उठी मुख देखिति हौरी दर्पणप्रतिबिंब निहारि धौं पीक लीक नैन छबि परिकै । बिथुरे अलक सुथरें मुख ऊपरसुधा मनोपोवत अलि माल अनंद भरिकै ॥ सूरज प्रभु रसिक राय रस बस कीन्हे बनाय सुख दीन्हे मन अघाय नवला नव रीझै मन ढरिकै ॥ १५८ ॥ रागबिलावल ॥ सुनिरी राधा अब हि नई ॥ बातें कहा बनावति मोसें। हमहू ते तू चतुर दई ॥ कहां ग्वालि कहां हार तुम्हारो कहो जहां तू आनु गई । मनहीं जानि लेहु मैं जान्यों जाके रंग तू सदा रई ॥ तेरे मन परकट करिहौं मैं ऐसोरी कबहू न भई । सूर श्याम संग जबतें कीन्हो तबही ते मैं जानि लई ॥ १५९ ॥ राग बिलावल ॥ इन बातनि कछु पावतिरी । बिनु देखे लोगनिसों सुनि सुनि काहे बैरु बढ़ावतिरी ॥ मोको जहां अकेली देखति तबहीं ए उपजावतिरी । ब्रज जुवतिन की संगति त्यागों पुनि पुनि क्रोध करावतिरी ॥ कैसी बुद्धि तुम्हारी सबकी ऐसिय तुमको भावतिरी । सूर श्रीश हरण दै बूझतिहौ कहत तुमहु कहनावत री ॥ ॥ १६० ॥ राग केदारो ॥ चर्चरी ॥ करति अवसेर वृषभान नारी । प्रातते गई बासर गयो बीति सब जाम निसि गईधों कहां बारी ॥ हारके चास मैं कुंवरि चासी बहुत तेहि डर अजहुं नहि सदन आई । कहां मैं जाउ कहांधों रही रूसिकै सखिनसों कहति कहुं मिली माई ॥ हार वहि जाय अति गई अकुलायके सुताके नाहं एकहि है मेरे । सूर यह बात जो सुनै अबहीं महर कहेंगे मोहि ए ढंग तेरे ॥ १६१ ॥ राग सोरठ ॥ राधा डर डराति गृह आई । देखतही कीरति महतारी हरषि कुंवरि उर लाई ॥ धीरज भयो सुता माता जिय दूरि भयो तनु सोच । मेरी कोसैं काहे चासी कहा कियो यह पोच ॥ लैरी मैया हार मोतिसरि जाकारन मोहि चासी । सूर राधिका के गुण ऐसे मिली आय अवि नासी ॥ १६२ ॥ राग बिहागरो ॥ परम चतुर वृषभान दुलारी यह मति रची कृष्ण मिलिबे को परम पुनीत महारी ॥ सुत सुख दियो नंद नन्दन को इतहि हरष महतारी । हार इतो उपकार करायो कबहुं न उरते टारी ॥ जे शिव सनक सनातन दुर्ल्लभ ते बस किये कुमारी । सूरदास प्रभु छ पा अगोचर निगमनि हूं ते न्यारी ॥ १६३ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ निगम तें अगम हरि छपा न्यारी । प्रीति बस श्याम की रायको रंक कोउ पुरुष की नारि नहिं भेद कारी ॥ प्रीति बसुदेव

की गर्भ लीन्हो वास प्रीति के हेत व्रज भेष कीन्हों । प्रीति के हेत जशमति दियो प पांन प्रीति के हेत अवतार लीन्हों ॥ प्रीति के हेत बन धेनु चारत कान्ह प्रीति के हेत नंद सुवन नामा । सूर प्रभुकों प्रीति राधिका जिय प्रीति प्रीति के हेत दोउ श्याम श्यामा ॥ १६४ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ प्रीति के वश्य एहैं मुरारी । प्रीति के वश्य नटवर भेष धरयौ है प्रीति बसकरज गिरि राज धारी ॥ प्रीति के वश्य व्रज भये मांखन चोर प्रीति के वश्य दांवरि बंधाई । प्रीति के वश्य गोपी रवन नाम प्रिय प्रीति बस तरु जमल मोक्ष दाई ॥ प्रीति वस नंद बन्धन वरुण सदन गये प्रीति के वश्य बन धाम कामी । प्रीति के वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदित प्रीति बस सदा राधिका स्वामी ॥ १६५ ॥ राग भैरव ॥ श्याम भये वस नागरि के । नयन कटाक्ष वंक अवलोकनि रीझे घोष उजागरिके चित मधुकर रस कमल कोसको प्यारी वदन सुधागरि के ॥ लोक लाज संपुट नहि छूटत फिर फिरि आवत नागरि के । मिलन प्रकाश मनावत मन मन कहा कहों अनुरागनि के । सूर श्याम बस वास भये हैं धनि ऐसी वड भागनि के ॥ १६६ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम भये वृषभान सुता बस और नहीं कछु भावैहो । जो प्रभु तिहूं भुवन को नायक सुर मुनि अंत न पावै हो ॥ जाकों शिव ध्यावत निसि वासर सहसानन जेहि गावै हो । सो हरि राधा वदन चंदको नयन चकोर वृषावै हो ॥ जाको देखि अनंग अनंगत नागरि छवि भरमावै हो । सूर श्याम श्यामा बस ऐसे ज्यों संग छांह डुलावै हो ॥ १६७ ॥ राग जैतश्री ॥ कबहुं श्याम जमुना तट जात । कबहुं कदंम चढ़त देखत मग राधा बिनु अतिही अकुलात ॥ कबहुं जात बन कुंज धामको देखि रहत कछु नहीं सुहात । तब आवत वृषभान पुरा को अति अनुराग भरयो नंद तात ॥ प्यारी हृदय प्रकटही जानति तब मन मांझ सिहात । सूरदास प्रभु नागरि के उर नागर श्यामल गात ॥ १६८ ॥ राग गुर्जरी ॥ राधा श्याम श्याम राधा रंग । प्रिय प्यारी को हिरदे राखत प्यारी रहति सदा हरि संग ॥ नागरि नयन चकोर वदन शशि प्रिय मधुकर अंबुज सुंदर मुख । चाहत अरस परस ऐसे करि हरि नागरि नागरि नागर सुख ॥ दुख सुख शोचि रहत मनही मन तब जानत तनको यह कारन । सुनऊ सूर कुलकानि मानि जिय दुख सुख दोउ फल करत विचारन ॥ १६९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ जमुना जी गमन स्वामिनी जीको तथा जुगल समागम ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग सूहो ॥ जमुना चली राधिका गोरी । जुवति वृन्द विच चतुर नागरी देखे नन्द सुवन तेहि खोरी ॥ व्याकुल दसा जानि मोहनको मनही मन डरपो उन ओरी । चतुर काम फंद परे कन्हाई अवधौं इनहि भुलावे कोरी ॥ इत सखियनिसों बात बनावति अति ह्वै गई तनकसी भोरी । सूर एतहि हरि भाव बतावति

धीर धरौ मिलिहौ दोउ जोरी ॥ १ ॥ राग धनाश्री ॥ तब राधा एक भाव बनावति । मुख मुसिकाय सकुचि पुनि लीन्हो सहज चली अलकै निरवारति ॥ एक सखी आवति जल लीये तासों कहति सुनावति । टेरि कह्यौ तेरे जैसें मैंहों जमुना ते आवति ॥ तब सुख पाय चले हरि घरको हरि प्रीतमहि मनावति । सूरज प्रभ ब्युत्पन्न कोक गुण तातें हरि हरि ध्यावति ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ श्यामको भाव दैगई राधा । नारि नागरि न काहू लख्यो कोउ नही कान्ह कछु करत है बहुत अनुराधा ॥ चितै हरि वदन याको हंसत मैं लखी व उतहि गये कछु हरष कीये । भाव तौ भावके सींग नाहीं सुने ए महा चतुर चतुरई लीये ॥ आजुही रैन दोउ संग ए मिलहिंगे हरे कहि परस्पर मनहि जानी । सूर ब्रज नागरी नारि नागरि फिरी ब्रज तुरत लैगई जमुन पानी ॥ ३ ॥ ॥ राग टोड़ी ॥ भाव दियो आवैंगे श्याम । अंग अंग आभूषण साजति राजति अपने धाम ॥ रति रन जानि अनंग नृपतिसों आप नृपति बल जोरति । अति सुगंध मर्दन अंग अंगनि उवटनि भूषण खोलति ॥ बीरा हार चीर चोली छबि सैना सजि सिंगार । पान बचन संनाह कवच दै जोरे सूर अपार ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ प्यारी अंग सिंगार कियो । बेनी रची सुभग कर अपने टीको भाल दियो ॥ मोतियनि मांग संवारि प्रथमहीं केसरि आड संवारी । लोचन आंजि श्रवण तरिवनि छबि को कवि कहै निर वारी ॥ नासा नथ अतिही छवि राजति बीरा अधरनि रंग । नव सत साजि चीर चोली वनि सूर मिलन हरि संग ॥ ५ ॥ राग कल्यान ॥ नागरि नागर पंथ निहारै । उदै बाल ससि अस्त भयो अब जियजिय यहै विचारै ॥ कीधौं अबही आवत ह्वै हैं की आवन नहि पैहैं मात पिता की त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरै है ॥ अंग सिंगार श्याम हित कीन्हे वृथा होन ए चाहत । सूर श्याम आवैं की नाहीं मन मन यह अवगाहत ॥ ६ ॥ ॥ राग बिहागरो ॥ राधा रचि रचि सेज संवारति । भवन गवन करिहै हरि मेरे हरषि दुखहि निरवारति ॥ तापर सुमन सुगंध बिछावति बार बार निहारति । आवैं कबहुं अचानकहीं जौं सुभग पांवडे डारति ॥ यह अभिलाषहि में हरि प्रगटे पुरुष भवन सकुचानी । यह सुख श्री राधा माधव को सूर उनहि यह जानी ॥ ७ ॥ राग बिहागरो ॥ कहा कहौं सुख कह्यौ न जाय । वह अभिलाष श्यामकी आवनि दुहुं उर आनंद नहीं समाय ॥ द्वादश कान्ह द्वादशी आपुन वह निसि वै हरि राधा जोग । वह रसकी झकझकनि वह महिमा वह मुसुकनि वैसो संजोग ॥ वे हित बोल परस्पर दोऊ ठटुकत कहत प्रेम सकुचानि । सूर श्याम कर बांम भुजा धरि उछंग लई वह मुख पहिचानि ॥ ८ रागकान्हरो ॥ श्याम सकुचि प्यारी उर आनी । उछंग लई बामा भुज करिके बार बार कहि बानी ॥ निरखति सकुच वदन हरि प्यारी प्रेम सहित मुसुकानी । करत कहा पिय अति उतायली मैं कह जाति परानी ॥ कुटिल कटाक्ष बंक करि भृकुटी आननि मुरि मुसुकानी । सूर श्याम गिरिधर रति नागर नागरि राधारानी ॥ ९ ॥ राग बिहागरो ॥ नागर नागरि करत विहार । काम नृपति सेना दुहुं अंगनि शोभा वार न पार ॥ अधर अधर नयननि नयननि भ्रुव भाल कियो एक ठौर । मनो इन्द्रीवर कमल कुशेशय चारि

अंबर रंग और ॥ वदन भाल चिनि सम दोऊ अरस परस बर नारि । मनो बिबि चन्द चकोर परस्पर कमल अमल रवि धारि ॥ रति आगम हित अति उपजायो पिय प्यारी मन एक । सूरदास स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कला जु अनेक ॥ १० ॥ राग केदारो ॥ चर्चरी ॥ श्याम श्यामा परम कुसल जोरी । मनो नव जलद पर दामिनी की कला सहज गति मेटि अति भई भोरी ॥ अलक आतुर बिथुरि श्याम मुखपर रहे मनो बल राहु शशि घेरि लीन्हों । चितै मुख चारु चुंबन करति सकुच तजि दसन छत अधर पिय मगन दीन्हो ॥ परत श्रम बूंद टप टपकि आनन बाल भई बेहाल रति मोह भारी । बिधुपरसदंत बिधु तुण्ड अंबत चुवत सुर बिपरीत रति प्रीउ नारी॥ ११ ॥ राग कुरंग ॥ कुंज के निकट कंज सुरत निरतसों सेजरा सुख गात । टूटि गई तनी चोली दरकि तरकि गई चारो जाम रजनी बिहानी भोरे भोरे प्रात ॥ आलससों उठि बैठे अरस परस दोउ दृग्यति मन मन अति मुसकात । सूर आस पूरी श्यामा श्याम बनी जोरी निसि रस सुधि आये नयन नयनन लजात ॥ १२ ॥ राग ललित ॥ राजत दोउ रति रंग भरे । सहज प्रीति बिपरीति निशा सब आलस सेज परे ॥ अति रनबीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे । अङ्ग अङ्ग बल अपनें अपुनि सों रति संग्राम लरे ॥ मगन मुरझि रहे सेजखेत पर इत उत कोउ न टरे । सूर श्याम श्यामा रति रन तें एक पग पल न टरे ॥ १३ ॥ ॥ राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस्पर करत बिहार । उनि उनकी पहरी मोतिन की माला उन उनकौ पहिरयो नौसर कौ हार ॥ लटपट पेच सम्हारति प्यारी अलक सम्हारत नन्द कुमार । सूर दास प्रभु नागरि नागर बिपरित भूषन करत शृंगार ॥ १४ ॥ राग ललित ॥ करि शृंगार दोउ अरसाने । प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढ़े दोऊ लपटाने ॥ रति रन युद्ध जोम पिय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने । मानौ खेत सम लरिकें गिरे उठत फिरि गिरत लजाने ॥१५॥ रागललित ॥ बोले तमचुर चाख्यो जाम को गजर मार्यो पौन भयो शीतल तमित गमिता गई । प्राची अरुणानी भान किरन उतारी नभ छपै उडगन चन्द्रमा मलीन ता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बन्धन बिछोही ग्वाल चरचली गाय दुज पैती करकों दई । सूरदास राधिका सरस बानी बोलि कहै जागौ प्राण प्यारे जु सवारे की समय भई ॥१६॥ राग बिभास ॥ चिरई चुङ्ग चुहानी चन्द की जोति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रबान की । तारिका दुरानी तम घट्यो तमचुर बोले श्रवण भनक परी राग ललित के तान की ॥ भृंग मिले भारजा बिछुरि जोरी कोक मिले उतरी पनिवा अब काम के कमान की । अथवत आये गृह बछरि उवत भान उठौ प्राण नाथ महा जानन मणि जान की ॥ द्विज घर घर यहै करत चवाउ लोग बार बार कहनि करनि डरनि धरनि धरनि पग आन की । सूर दास प्रभु नन्द सुवन सिधारो धाम सुनत उठे छबि कृपाल कृपा के निधान की ॥ १७ ॥ राग रामकलली ॥ चर्चरी ॥ जागिये प्राण पति रैनि बीती । चन्द की दुति गई पहै पोरीभई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती ॥ मात पितु बन्धु गुरजन अवहि जानि है लखैं जिनि कछुं यह लाज भारी । सखिन आगें नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै ना

री ॥ उठै सुनुकाय अकुलाय अतुराय कें निकसि गये श्याम इज नारि जान्यों । सूर प्रभु नंद नन्दन रस दै गये निरखि एक टक रही पल भुलान्यों ॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥ प्रकट दरश दै गये कन्हाई । राधा गृह तें निकसत देखे यह उनको मन साध पुराई ॥ शीस मुकुट मोतिन उर माला पीताम्बर पट सहज फिराई । श्याम बरन तनु निरखि भुलानी अङ्ग अङ्ग छवि कह्यो न जाई ॥ करति शोच मन राधा अपने आलस भरे गये हरि माई । सूर श्याम निशि नैक न सोये यह कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम गये देखे जिनि कोई । सखियनि सों निबहन पुनि पैहौं जिनि आगें राख्यों सरगोई ॥ देखे आय द्वार ह्वै नागरि जहां तहां इज नारी । सकुचि गई युवतिन के देखत दुख कीन्हों जिय भारी ॥ मन चिन्ता अति ही उपजायो बार बार पछितानी । सूर श्याम सों प्रीति गुप्तही आजु सबनि यह जानी ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ बार बार राधा पछितानी । निकसे श्याम सदन मेरे तें इन अटकरि पहिचानी ॥ नितही नित बूजत ए मोसों मैं इनपर सतराति । अबतौं हरि परगटही देखे पुनि पुनि कहति लजाति ॥ एक ऐसेहि झक झोरति मोसों पायो नीकौ दाव । सूर आजु केहि भांति दुरावों शोचति करति उपाव ॥ २१ राग बिलावल ॥ शोच परयौ मन राधिका कछु कहत न आवै । कछु हरषै कछु दुख करै मन मौज बढ़ावै । निशि रस रङ्गहि मैं पगी तनु सुधि बिसरावै ॥ कबहु बिचारति निठुर ह्वै सखि ज्वाब बनावै । अबही मोकों बूझि हैं युवती चतुरावै । तिन सनमुख कैहों कहा प्रभु सूर मनाव ॥ २२ ॥ राग नट ॥ कबहूं मगन हरि के नेह । श्याम संग निशि सु रतकौ सुख भूलि अपनी देह ॥ जबहि आवति सुधि सखिन की रहति अति सरमाय । तब करति हरि ध्यान हिरदै चरण कमल मनाय ॥ होय ज्यों परमोध उनकौ मेरी पति जिनि जाय । निदरि निदरि सब कों रही हों आजु लों यहि भाय ॥ अबहि अब जुरि आय हैं ह्यां तुम बिना न उपाय । सूर प्रभु ऐसी करौ कछु बहुरि जांहि लजाय ॥ २३ ॥ राग टोड़ी ॥ ज्वाब कहा दैहों मैं उनकों । की आवति अबही की छिनुकहि चोर कहैंगी मोको ॥ कसेहूं प्रति रहै बिधाता अब यहकरौ सम्हारि । घरेहि रहति दुराव कबलों ऐसो नागरि नारि । नयना भये चकोर रहत हैं मुख शशि पूरन काम । सुनहुं सूर यह दशा हमारी ए इज सबकी बाम ॥ २४ ॥ राग जैतश्री ॥ ए सब मेरेहि खोज परी । मैं तौ श्याम मिली नहि नीके आजु रही निशि सङ्गहरी ॥ युवती हैं सबदई सवांरी घर बनहूमें रहति भरी । कैसे धौं यह साध मिटैगी कहा मिलैजो एक घरी ॥ प्रकट करैं तौ बनहि नहीं कछु रोक सकुच कुल लाज मरी । ते परगट अबहीं इन देखे सूरज प्रभु इजराज हरी ॥ २५ ॥ राग धनाश्री ॥ तब नागरि मन हरष बढ़ायो । परम कुशल राधा हरि प्यारी हिरदै बुद्धि उपायो ॥ अब आवे कैसेहुं अंग बूझै ज्वाब मनहि ठहरायो । अति आनन्द पुलक तनु कीन्हों शोच मोह बिसरायो प्रगट गये जैसें नंद नन्दन वहै ध्यान उपजायो । सूर दास प्रभु रूप बखान्यों इनको जो दरसायो ॥ २६ ॥ राग ललित ॥ राधा हरि के गर्व हरी । सखियन को आगम जब जान्यों बैठी रही खरी ॥ उत इजनारि संग जुरि कै वे हंसति करति परिहास । चलौ न

जाय देखिये री वा राधा कौ उजआस ॥ कैसो बदन सिंगार कौन विधि अङ्ग दशा भइ कैसी । सूर श्याम संग निशि रस कोये निधरक ह्वै है वैसी ॥ २७ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनौ सखी राधा के मन की यह करनी सखियनि नहि जान्यों । जब हम जाति चली जमुना कों तबहीं में वाकों पहिचान्यों ॥ तबहि सैन दै श्याम बुलाये गृह आवन कों भाव । उनकी गुन धौं को नहि जानत चतुर शिरोमनि राव ॥ सुनऊ सखी अति नहीं कीजिये मुंड़ परे अपनेहीं । सूर श्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेहीं ॥ २८ ॥ राग सारङ्ग ॥ तुम जो कहति राधिका भोरी । आजु रही अब कहां भुराई कौन दिनन की थोरी ॥ जे छोटी तेई हैं खोटी साजति मांजति जोरी । बिन्दी भाल नयननि नित आंजति निरखि रहति तन गोरी ॥ चमकति चलै बदन मट कावै ऐसी जोबन जोरी । सूर सखी तेहि कहति अयानी मन मोहनहि ठगोरी ॥ २९ ॥ राग रामकली ॥ राधाको मैं तबही जानी । अपने कर जे मांग सवारै रचि रचि बेनी बानी ॥ मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी । लोचन आंजि सुधारति करजनि छांह निरखि मुसकानी ॥ बार बार उरजनि अब लोकति उनते कोन सयानी । सूर दास जैसो है राधा तैसो मैं पहिचानी ॥ ३० ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका सदन ब्रजनारि आईं । रही मुख मूंदि कै बचन बोलै नहीं नयन की सैन दै बै बुलाई ॥ इनि तबहिं लखि लई रचति हैं चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और कैहैं । चोर चोरी करै आपने जांघ बल प्रगट कै हौं तुम्हैंनहिं पत्य हैं ॥ भौंह देखौ निरखि ज्वाब करि है कौन तुमऊं राखति गर्व बोलि देखौ । सूर प्रभु संगते अतिहि निधरक भई नयन मुख बोर तुम नहीं पेखौ ॥ ३१ ॥ राग सूहो ॥ आजु कहा मुख मूंदि रही री । सुनति नहीं हो कुंवरि राधिका कापर रिस करि मौन गही री ॥ हमको यह काहे न सुनावति हमहैं तेरी संग सखीरी । यह कहि कहि मुसुकात परस्पर चतुर नारि वह तबहिं लखीरी कोधौं ध्यान करति देवनि को कोधौं ऐसी प्रकृति परीरी । सूर जबहि आवति हम तेरे तब तब ऐसी धरणि धरीरी ॥ ३२ ॥ राग बिलावल ॥ बार बार जुवती सब राधासों भाखैं । तुम दुराव कत करतिहौ हम तुमसों राखैं ॥ इतनो सोच परयो कहा मुख ज्वाब न आवै । हमतौ हैं तेरी सखी सो कहि न सुनावै ॥ कछु दिनतें तेरी दसा तनु रहति भुलाए । निठुर भई कापर इतो कहि सूर सुभाए ॥ ३३ ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका कहति ए करत हांसी । रहति मुख मुख हेरि नयन की सैन दै कहति मोसों कृष्णकी उपासी ॥ सुनहुरी सखी मैं तुमसों कहौं कहा बूझति मोहि कहति राधा । आजहि प्रात एक चरित देख्यो नयो तबहि ते मोहि यह भई बाधा ॥ कहौं जौ एक करि देखति नयन भरि भोरते भोरही रही आई । सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघ की यहै जिय सोच कछु नहि सोहाई ॥ ३४ ॥ राग रामकली ॥ कन्धर को घर मेर सखी री । की खग सीपज की बग पंगति की मयूर की पीड पखीरी ॥ की सुर चाप किधौं बन माला तड़ित किधौं पट पीत । किधौं मन्द गरजनि जलधर की पग नूपुर रवनीत ॥ की जलधर की श्याम सुभग तन यहै भोरते सोचति । सूर श्याम रस भरी राधिका उमंगि उमंगि

रस मोचति ॥ ३५ ॥ तथा ॥ आजु सखि अरुणोदय मेरे नयननि धोख भयो । को हरि आजु पंथ एहि गवने की सखि श्याम जलद उनयो ॥ की बग पांति भांति उर परकी मुकुत माल बहु मोल । कीधौं मोर मुदित नाचत की बरह मुकुट की डोल ॥ की घन घोर गम्भीर प्रात उठि की ग्वालनि की टेरनि । की दामिनि को धति चहुं दिशि की सुभग पीत पट फेरनि ॥ की बनमाला है उर राजत की सुर पति धनु चारु । सूरदास प्रभु रस भरि उमंगो राधा कहति विचारु ॥ ३६ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु सखी राधा कहनावति । हम आई याके जेहि कारण सो यह प्रकट सुनावति ॥ हमदेख्यो सोई इन देखे ऐसेहि दोष लगावति । यह पुनीत हमहीं अपराधिनि तनु अपराध बढावति ॥ इत नेहिं रहो और जिनि भाषहु अजहूं लाज न आवति । सूर श्याम राधा जौं एकै उनहिं नहीं कहि आवति ॥ ३७ ॥ रागसूहो ॥ राधाको कछु और सुभाव । हम देखति हरिको औरहि अंग यह निरखति सति भाव ॥ यह है विन कलंक को सांची हम कलंक मैं सानी । हम हरिकी दासी सरि नाहीं यह हरि की पटरानी ॥ याकी अस्तुति हम कह करिहैं रसना एक न आवै । सूर श्याम कोई नहिं जानैं भजन प्रताप बतावै ॥ ३८ ॥ ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका हृदयतें धोख टारौ । नन्दके लाल देखे प्रात कालतें मेघ नहिं श्याम तनु छबि बिचारौ ॥ इन्द्र धनु नहीं बन दाम बहु सुमन के नहीं बग पंक्ति बर मोति माला । शिखो वह नहीं शिर मुकुट शीखंडि पछ तड़ित नहि पीत पट छबि रसाला ॥ मन्द गरजनि नहीं चरण नूपुर शबद भोरहीं आजु हरि गवन कीन्हों । सूर प्रभु भामिनी भवन करि गवन मन रवन दुखके दवन जानि लीन्हों ॥ ३९ ॥ ॥ राग गोंडमलार ॥ भोर जे गए तेइ श्याम बैरी । धोख मोहि भयो तब लखे नहि एक करि नोख नव मेघ छवि चिन्ह लैरी ॥ शिखीकी भाँति शिर पीड डोलत सुभग चांपतें अधिक वन माल शोभा । शांवरी घटा पर पांति बग ते रुचिर मोति बरदाम उन देखि लोभा ॥ तडिततें पीत पटुकी चमक राजई गरज नहि प्रातही ग्वाल बोलैं । सूर प्रभु सखी यह बात सांची कही भवन बस मेघ ज्यों अंग डोलैं ॥ ४० ॥ राग कल्यान धन्य हो धन्य तुम घोष नारी । मोहि धोखो गयो दरश तुमको भयो तुमहिं मोहि देखिरी बीच भारी ॥ जादिना संग मैं गई अन्हान को जमुन के तीर देखे कन्हाई । पीड़ शीख ड शिर भेष नटवर कछे अंग एकछटा मैं रहि भुलाई ॥ एक दिवस आय ठाढ़े भए द्वार हरि आजु को द्वार ह्वै गए मेरे । सूर प्रभु तादिना तुमहिं कहि दियो मोहि आजु मैं लखे सोउ कहे तेरे ॥ ४१ ॥ राग आसावरी ॥ तुमकैसे दरशन पावतिरी । कैसे श्याम अंग अब लोकति क्यों नयननिको ठहरावतिरी ॥ कैसे रूप हृदय राखतिहौ वै अति हैं अलकावतिरी । मोकों जहां मिलतिहैं माई तहां तहां अति भरमावतिरी ॥ मैं कबहूं नीके नहि देखे कह कहौं कहत न आवतरी । सूर श्याम कैसे तुम देखति मोहुं दरशन नहि आववतरी ॥ ४२ ॥ तथा ॥ धन्य धन्य वृषभान कुमारी । धनि माता धनि पिता धन्य तुव जिनि तोसी उपजाई वारी ॥ धन्य दिवस धनि निशा तवहिं की धन्य घरी धनि जाम । धन्य कान्ह तेरे बस जेहैं धनि कीन्हें बस श्याम ॥ धनि

मति धनि रति धनि तेरो हित धन्य भक्ति धनि भाव । सूर श्याम पति धन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाव ॥ ४३ ॥ राग जैतश्री ॥ तोहि श्याम हम कहा देखावैं । तुमतें न्यारे रहत कहूं वै नेंक नहीं बिसरावैं ॥ एकै जीव देह द्वै राची यह कहि कहि जु सुनावैं । उनकी पटतर तुमको दीजै तुव परतर वै पावैं ॥ अमृत कहा अमृत गुण प्रगटै सेा हम कहा बतावैं । सूरदास ज्यों गूंगे को गुड बूझति कहा बुझावैं ॥ ४४ ॥ ॥ राग टोड़ो ॥ सुनि राधा यह कहा विचारै । वै तेरें रंग तू उनके रंग अपनेा मुखको कौन निहारै ॥ जौं देखै तौ छांह आपनी श्याम हृदय ह्वां छाया । ऐसी दसा नन्द नन्दन की तुम दोउ निर्मल काया ॥ नीलाम्बर श्यामल तनु को छबि तुव छबि पीत सुबास । घन भीतर दामिनी प्रकाशित दामिनि घन चहुं बास ॥ सुन री सखी बिलछ कहौ तोसों चाहति हरि को रूप ॥ सूर सुनहु तुम दोउ सम जोरी एक एक रूप अनूप ॥ ४५ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनि ललिता चन्द्रावलि बात । मोसों श्याम नेह मानत हैं तुम सों कहति लजात । तुम तौ सदा रहति हरि संगहि भेद कहो यह मोहि । हाहा करति पाय हौं लागति सपत है मेरी तोहि ॥ काहे को इतराति सखीरी तोतें प्यारी कौन । सूर श्याम तेरे बस ऐसे ज्यों पंखा बस पौन ॥ ४६ ॥ राग नटनारायण ॥ पिय तेरे बस योंरी माई ॥ ज्यों संगही सङ्ग छांह देह बस प्रेम कह्यो नहि जाई । ज्यों चकोर बस सरद चन्द के चक्र बाक बस भान । जैसें मधुकर कमल कोस बस त्यों बस श्याम सुजान । ज्यों चातक बस स्वाति बूंद के तनके बस ज्यों जीव । सूर दास प्रभु अति बस तेरे समुझि देखि धौं हीव ॥ ४७ ॥ राग धनाश्री ॥ तूं री छांह किये हरि राखति । अपने मन तूं जानति नीके मुख मोसो यह भाषति । अति बस रहत कान्हरी तोको मुकुर हाथ लै देखौ । तैसिय है मन मोहन की गति उहै भाव मन लेखौ ॥ तुम बामाङ्ग अङ्ग दच्छिन वै ऐसे करि एक देह ॥ सूर मीन मधुकर चकोर के इतनों नहीं सनेह ४८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

इहांतें ठकुरायन सेाभाय गर्वमन कीन्हों प्रभु द्वारे तें फिरे
विरह कथा ललिता दिकसें

राग देसाख ॥ नंद नंदन बस तेरेरी ॥ सुनि राधिका परम बड़ भागिनि अनुरागिनि हरिकेरेरी ॥ जा दिन ते तोहि खरिक मिले हरि धेनु दुहावन आईरी ॥ तादिनते बस भए कन्हाई कहा ठगौरी लाईरी ॥ अब तूं कहति कहा मो आगें बातनि मोहि भुलावैरी ॥ सूर दास ललिता की बानी सुनि सुनि हरष बढ़ावैरी ॥ ४९ ॥ राग टोड़ी ॥ ललिता मुख सुनि सुनि वै बानी ॥ मैं ऐसी जिय म यह आनी।

और नही मो सरि कोउ व्रज की ॥ हौं राधा आधा अंग हरि की ॥ अपने ही बस पियको करिहौं । कहूँ जात देखौं तब लरिहौं । घर घर सबै गईं व्रज नारी । एहि अन्तर आए गिरिधारी । हरि अन्तर जामी अविनासी ॥ जानि राधिका गर्ब उदासी । सूर श्याम राधा तन हेरयो ॥ नागरि देखतही मुख फेरयो ॥ ५० ॥ राग सारंग ॥ बरज्यो नहि मानत उझकत फिरत हौ कान्ह घर घर ॥ तुम मिसही मिस देखत फिरत जुबतिन के बदन कौन के वर । कोउ अपने घर काम काज जैसे तैसे तुम आवत हौ हो दरदर ॥ सूर दास प्रभु अतिहि अचगरी देत डोलत नेक नहीं जियमे डर ॥ ५१ ॥ राग बिलावल ॥ यह जान्यो जिय राधिका हारे हरि लागे ॥ गर्ब कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे । बैठि रही अभिमान सों यह ठौर न पायो । हृदय श्याम सुख धाम ने अभिमान बसायो । जहां गर्ब अभिमान है तहं गोविंद नाहीं । राधा के यह जति के आपुन पछिताहीं । तहाँ नेकहूं नहि रहे नहिं दरशन दीन्हों । सूर श्याम अन्तर भए जब गर्वहि चीन्हों ॥ ५२ ॥ राग धनाश्री ॥ राधा चकृत भई मन माहीं ॥ अबहीं श्याम द्वार ह्वै झांक्यो ह्यां आए क्यों नाहीं ॥ आपुन आय तहां जो देखे मिलेन नन्द कुमार ॥ आवत हैं फिरि गए श्याम घन अतिही भयो विचार । सूनें भवन अकेली मैंहीं नीके उझकि निहारयो । मोते चूक परी मैं जानी तातें मोहि बिसारयो । एक अभिमान हृदै करि बैठी ए ते पर झुझरानी । सूर दास प्रभु गए द्वार ह्वै तब व्याकुल पछितानी ॥ ५३ ॥ राग गौड़सारंग ॥ मैं अपने जियगर्व कियो । वै अन्तरजामी सब जानत देखतहीं उनचर-चियो । कासों कहौं मिलावै को अब नेक न धीरजु धरत जियो । वै तौ निठुर भए या बुधिते अहंकार फल यहै दियो । तब आपुन को निठुर करावति प्रीति सुमिरि भरि लेति हियो ॥ सूर दास प्रभु वै बहु नायक मोसी उनको कोटि बियो ॥ ५४ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम बिरह बन मांझ हिरानी । सङ्गी गए सङ्ग सब तजिकै आपुन भई दिवानी ॥ श्याम धाम में गर्वहि राकति दुरा चारिनी जानी । ताते त्यागि गए आपुहि सब अङ्ग अङ्ग रति मानी । अहंकार खंपट अपकाजी संग न राख्यो निदानी । सूर श्याम बिनु नागरि राधा नागर चित्त भुलानी ॥ ५५ ॥ राग बिहागरो ॥ महा बिरह के मांझपरी ॥ चकृत भई ज्यों चिच पूतरी हरि मारग बिसरी । संग बटपार गर्ब जब देख्यो साथी छोड़ि पराने ॥ श्याम सहज अङ्ग माधुरी तहं वै जाय लुकाने । यह बन मांझ अकेली व्याकुल सम्पति गर्ब छुडायो ॥ सूर श्याम सुधि टरति न उरते यह मनो जीव बचायो ॥ ५६ ॥ राग मारू ॥ बिरह बन मिलनि सुधि त्रास मारी । नैन जल नदी पर्वत उरज एई मनो सुभग बेनी भई अहिनि कारी । नैन मृग श्रवन बन कूप जहं तहं मिलै भ्रम गली सघन नहिं पार पावै ॥ सिंहकटि व्याघ्र अंगअंग भूषण मनो दुसह भए भार अतिहीं डरावै ॥ शरण कर अच हरिडर लहत कोउ नहीं अङ्ग सुख श्याम बिनु भए ऐसे । सूर प्रभु नाम करुणा धाम जाउं क्यों कृपा मारग बन्हरि मिलै कैसे ॥ ५७ ॥ रागटोड़ी ॥ राधा भवन सखी मिलि आई । अति

व्याकुल सुधि बुधि कछु नाहीं देह दशा बिसराई ॥ बांह गही तेहि बूझ न लागी कहा भयोरी माई । ऐसी बिबस भई तुम काहे कहौ न हमहिं सुनाई । कालिहि और बरण तोहि देखी आजु गई मुरझाई । सूर श्याम देखेकी बहुरो उनहि ठगौरी लाई ॥ ५८ ॥ राग हमीरी ॥ श्याम नाम चकृत भई श्रवन सुनत जागी ॥ आए हरि यहै कहि कहि सखिन कंठ लागी । मोतें यह चूक परी मैं बड़ी अभागी । अबके अपराध छमहु गए मोहि त्यागी ॥ चरण कमल सरण देहु बार बार मांगी ॥ सूर दास प्रभु के बस राधा अनुरागी ॥ ५९ ॥ राग बिहागरो ॥ सखी रही राधा मुख हेरि । चकृत भई कछु कहत न आवै करन लगी अवसेरि ॥ बार बार जल परसि बदन सों बचन सुनावत तेरि । आजु भई कैसी गति तेरी ब्रज मैं चतुरि निबेरि । तब जान्यों यह तौ चन्द्रावलि लाज सहित मुख फेरि ॥ सूर तबहि सुधि भई आपनी मेटी मोह अंधेरि ॥ ६० ॥ राग जैतश्री ॥ कहा भई तू आजु अयानी ॥ अतिही चतुर प्रवीन राधिका सखियनि मैं तुम बड़ी सयानी । कहि धौं बात हुती को मोसों ऐसी तू काहे बित तानी । मुख मलीन तनु की गति औरै बूझति बार बार सो बानी । कहा दुराव करौरी तोसों मैं तौ हरि के हाथ बिकानी ॥ सूर श्याम मोकों परि त्यागी जा कारण मैं भई दिवानी ॥ ६१ ॥ राग जैतश्री ॥ कृष्ण कृष्ण करति फिरै राधे आपहि कृष्ण हो रही । आपही कृष्ण आपही राधा कृष्ण राधा हो रही ॥ तू ॥ * ॥ ॥

इति श्रीकृष्णा नंद व्यासदेव राग सागरोद्भव सूर सागर राधा जू के अनुराग लीला राग कल्पद्रुम संपूर्णः ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

श्रीकृष्ण नन्द व्यासदेव राग सागरोद्भव श्री प्यारी जी के

प्रेम अनुराग लीला

॥ तथा ॥ अब मैं तोसों कहा दुराऊं । अपनी कथा श्याम की करनी तेा आगें कहि प्रगट सुनाऊं ॥ मैं बैठी ही भवन आपने आपुन द्वार दियेा दरसाऊं । जानि लई मेरे जिय की उनि गर्व प्रहारण उनको नाऊं ॥ तबही तें व्याकुल भई डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊं । सुनहु सूर गृह बन भयेा मोकों अब कैसें हरि दरशन पाऊं ॥ ॥ ६२ ॥ राग नटनारायण ॥ सखि मिलि करौ कछू उपाव । मार मारण चढ्यो विरहिनि निदरि पायेा दाव ॥ हुता सन ध्वज जात उन्नत बह्यो हरि दिशि बाव । कुसुम सर रिपु नंद वाहन हरषि हरषित गाव ॥ बारि भव सुत तासु भावरि अब न करिहों काव । बार अबकी प्राण प्रीतम बिजय सखा मिलाव ॥ ऋतु विचारि जु मानु कीजै सेाउ वहि किनि जाव । सूर सखी सुभाव रैहै संग शिरोमणि नाव ॥ ६३ ॥ राग नट ॥ मिलवहु पार्थ मिचहि आनि । जलज सुत के सुतकि रुचि कर भई हित की हानि ॥ उदधि सुता सुत अवलि उर पर इन्द्र आयुध जानि । गिरि सुता पति तिलक कर कस हनत सायक तानि ॥ पिनाकी सुत तासु वाहन भक्ष भख विष खानि । साखा मृग रिपु बसन मलयज हित हुतासन वानि ॥ धर्म्म सुत के अरि सुभावहि तजत धरि सिर पानि । सूर दास बिचिच बिरहिनि चूक मन मन मानि ॥६४॥ राग टोड़ी ॥ सुनि सजनी करनी यह तेरी । हम सों भेद करै हित उन सों ऐसे गुण उनि केरी ॥ आजुहि ते ऐसे ढंग आये अबही तेा दिन हैरी । ऐसें टूटि परी उनि उर पर तुमहीं कीन्हें बैरी ॥ अज हूं कह्यो मानि है मेरेा को धौं नहीं करैरी । सूर श्याम सों मानु करै किनि काहे वृथा मरैरी ॥ ६५ ॥ राग सोरठ ॥ तैहीं उनकों मूंड़ चढ़ायेा । भवन बिपिन संगहि संग डोलै

ऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुष भंवर दिन चारि आपने अपनो चाड सरायो । नन्द नंदन बहु रवनि रवन वे यहै जानि बिसरायो ॥ अपनी बात आपने कर है हमकों तब न सुनायो । सुनहुसूर बिनु मानु कहौ किनि अपनों पिय अपनायो ॥ ६६ ॥ राग कान्हरो ॥ रैनि सो जागत बिहानो मोहन सो मैं मानु कियो तातें भई अधिक तनु तपति । सेज सुगन्ध तलप विषु लागत पावक हू तें दाहु सखीरी चिबिधि पवन उड़पति ॥ ऐसो अति व्यापो हो मन्मथ मेरोई जिय जानै मोहि श्याम श्याम कहि रैनि जपति । बेगि मिलाव सूर के प्रभु को भूलि अभिमान करों अबहूं नहि मदन बान तें कम्पति ॥ ६७ ॥ राग धनाश्री ॥ मान बिना नहि प्रीति रहैरी । धाय मिले की गति तेरी सी प्रगट देखि मोहि कहा कहैरी ॥ अपनों चाड सारि उनि लीन्हों तू काहे अब वृथा बहैरी । बैठी रहैनरी दृढ ह्वै फिरि फिरि काहे न तू मानु गहैरी ॥ अपनों पेट दियो तैं उनिकों नाक बुद्धि चिय सबै कहैरी । सूर श्याम ऐसे हैं माई उनकों बिनु अभिमान लहैरी ॥६८॥ राग मलार ॥ सजों क्यों मानु मनु न मेरे हाथ सुरति करि उमगि भरत । मोसों मानत बाम श्याम गुण गुणि अभिलाख करत ॥ जो मोकों बिन मानि आन बरत तिन बिनु सरत । अपमान चहूं मुदित मूढ जस अपजसहू न डरत ॥ रिस में रस बिषु दै बिरचत हठि प्राण हरत । अब मैं तौ रिस करत न रस बस मोहि सों उलटो लरत ॥ स्वारथ सब इन्द्री इन्द्रिन कौ समूह पर बिरहा धीर धरत । सूर दास बिरहा धीरज दै है घरकी फूटैडी कैसे रह्यौ परत ॥ ६६ ॥ राग कान्हरो ॥ चारि चारि दिन सबै सुहागिल री ह्वै चुकी वे स्वरूप अपनि । सोउ अपने जिय मानु करै माई हो मोहि तौ छूटति अति कपनि ॥ मेरो कह्यो करि मानु हृदय धरि छांडि देहु अति तपनि । सूर श्याम तब ही मानेंगे तब वेहि करेंगे जपनि ॥ ७० ॥ राग टोड़ी ॥ हमारी सूरति यों बिसारी बन बारी हम सरबस दैदै हारी पवन भये अपने सपनेहू वे मुरारि गिरिधारी । वे मोहन मधु कर समान अनंग बेली मन लावत धावत हम व्याकुल बिरह व्यापि दिन प्रति नीरज नयना ढारि ढारी ॥ हम तन मन दै हाथ बिकानी वे अति निठुर रहत मुरारी । सूर दास प्रभु सुनहु सखी बहुर बनि रवन पिय हम एक व्रत धरि मदन अग्नि तनु जारि जारी ॥ ७१ ॥ राग गौरी ॥ मैं अपनी सो बहुत करीरी । मोसों कहा कहति तू माई मन के संग मैं बहुत लरीरी ॥ राखों अटकि उतहि कों धावे उनके वैसिय परनि परीरी । मोसों वैर करें रति उनसों मोकों छांड़ी द्वार खरीरी ॥ अजहूं मान करै मन पाऊं यह कहि इत उत चितै डरीरी । सुनहु सूर पांचनि मत एकै मोह मेंमैही रही परीरी ॥ ७२ ॥ रागगौरी मनहूं जिनि सुनै बात यह माई । कौरें लग्यो होयगो कतहूं कहि दैहै ह्यां जाई ॥ ऐसे डरति रहति हों बाकों चुगली जाय करैगौ । उनसों कति फिरि ह्यां आवैगौ मोसों आनि लरैगौ ॥ पञ्च संग लीन्हें वह डोलत कोउ मोहि न मानै । सूर श्याम कों उनहि सिखायो वे इतनों कह जानै ॥ ७३ ॥ राग रमन ॥ मेरो मन कहिवे कैहैं । जबही तें हरि दरशन कीन्हों नैननि भेद कियो पहलै ॥ इंद्रिन सहित चित्त हूलैगये रही अकेली मैहीं । एते पर तुम मान करावति तौ मन देहु न तुमहीं ॥ मोकों दूषन देति कहा है तुम तौ

सबै अयानि । सूर श्याम कों बेगि मिलावहु हारि आपनी मानि ॥ ७४ ॥ राग रामकली ॥ सारंग सारंग धरहि मिलावहु । सारंग बिनै करत सारंग सों सारंग दुख बिसरावहु ॥ सारंग सबैं दहत अति सारंग सारंग तिनहि दिखावहु । सारंग पति सारंग धर जहै सारंग जाइ मनावहु ॥ सारंग चरण सुभग कर सारंग सारंग नाम बुलावहु । सूर दास सारंग उपकारिणि सारंग मरत जियावहु ॥ ७५ ॥ राग बिहागरो ॥ मोते यह अपराध परयो आए श्याम द्वार भए ठाढ़े मैं अपने जिय गर्व धरयो । जानि बूझि मैं यह छल कियो सो मेरेहि सीस परयो ॥ मन अपनें ढंगहि में मोसों बा'बार लरयो । मैं अति बिमुख रहे ए सन्मुख नीके उनहि ढरयो ॥ सूर दास मन आप स्वारथी अपनों काज करयो ॥ ७६ ॥ राग सोरठ ॥ मनज्यों कह्यो करैरी माई । तेरोकहो बात सब होती मिलोगि उनकों धाई ॥ निलज भई तनु सुधि बिसराई गुरुजन करत लराई । इतकुल कानि उतहि हरिको रस मन तो अति अपंडाई ॥ आप स्वरथो सबै देखियतहैं मोकों दुखदाई । सूरदास प्रभु चित अपनो करि तन कहि गए रिसाई ॥ ७७ ॥ राग देसाख ॥ मैं अबहीं करों मान पै मनु न रहै । कोटि जतन करि करि पचिहारी मोहि बिसरि गए को उनसों जु कहै ॥ मोको निदरि सिख्यो है हरिको एते पर तनु मदन दहै । सूर श्याम संग नेक न त्यागत अति जग बहु अपमान सहै ॥ ७८ ॥ तथा ॥ मनहिं कहौ करि मानु प्रेम तुम कह्यो करै । बार बार हरिसों गुहिरावत मोहि मंगावत पुनि पुनि आनि लरै ॥ घट छलमें इन्द्री बस वाके लै निकस्यो मोहि के उन डरै । सुनि सजनी मैं रही अकेली बिरहु दहेली इत गुरजन झहरै । अब बिनु मिले बनत नहि आली निशिदिन पल पल रह्यो न परै । सूर श्याम बहु रवनि रवन ज्यों भलहीं रहै वै चित यह नहीं धरै ॥ ७९ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ भूले नहिं अब मानु करौंरी । जातें होय अकाज आपनों काहे वृथा सरौंरी ॥ ऐसे तनमें गर्व न राखौं चिन्ता मनि बिसरौंरी । ऐसी बात कहै अबकोऊ ताके संग लरौंरी ॥ आरज पंथ चलें कह सरिहै श्यामहि संग फिरौंरी । सूरश्याम जौं आप स्वारथी दरशन नयन भरौंरी ॥ ८० ॥ राग आसावरी ॥ चूक परी मोतें मैं जानी मिलै श्याम बकसाउंरी । हाहा करि दसननि तृण धरि धरि लोचन जलनि ढराउंरी ॥ चरण गहौं गाढ़े करि करसों पुनि पुनि शीश छुआउंरी । मुख चितउं फिरि धरणि निहारौं ऐसे रुचि उपजाउंरी ॥ मिलौं धाय अकुलाय भुजनि भरि उरकी तपति जनाउंरी । सूर श्याम अपराध छमहु अब यह कहि कहि जु सुनाउंरी ॥ ८१ ॥ राग गौरी ॥ माई मेरो मन पियसों यों लाग्यो ज्यों ढरि लागी छांहि । मेरो मन पियके जी में बसतु है पीको जियमों मैंनाहिं ॥ ज्यों चकोर चन्दा को निरखै इत उत दृष्टि न जाहि । सूर श्याम बिनु छिनु छिनु जुग सम क्यों करि रैनि बिहाहि ॥ ८२ ॥ राग जैत श्री ॥ उनको यह अपराध नहीं । वै आवतहैं नीके मेरे मैहीं गर्व कियो तमहीं ॥ करे गर्व तें सरयो कछू नहिं एक भई तनुदशा नहीं । सुख मिटि गयो हिये दुख पूरण अब रैहों इनहीं बिनहीं ॥ अब जौं दरश देहिं कैसेहूं फिरति रहौं संगही संगहीं ॥ सूरदास प्रभु को हियरेतें अन्तर करौं नहीं छिनहीं ॥ ८३ ॥ राग बिलावल ॥ अबके जो पाऊं तौ

हिरदै माझ दुराऊं । हरिको दरशन पाऊं आभूषण अंग बनाऊं ॥ ऐसो को आनि मिलावे ताहि निहाल कराऊं । जौं पाऊं तौ मंगल गाऊं मोतियनि चौक पुराऊं ॥ रस करि नाचौं गाउं बजाऊं चन्दन भौन लिपाऊं । मणि मानिक न्योंछावरि करिहौं सो दिन सुदिन कहाऊं ॥ केतकि करणा बेलि चमेली फूलनि सेज बिछाऊं । तापर पिय पौढाऊं मैं अचला बाव डोलाऊं ॥ चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभुके खौरि बनाऊं । जौं बिधना कबहुं यह करै तौ काम को काम पुराऊं । सूर श्याम विनु देखे सजनी कैसे मन अपनाऊं ॥ ८४ ॥ राग संकीरन ॥ अरी मोहिं पिउ भावै को ऐसी जो आनि मिलावै । चौदह बिद्या प्रबीन अतिहीं सुन्दर नवीन बहु नायक कौन मनावै ॥ नेक दृष्टि भरि चितवै मो बिरहिनि को माई काम दन्द बिरह तपनि तनतें बुझावै । सूरदास प्रभु मोको करहिं कृपा अब नित प्रति बिरहु जलावै ॥ ८५ ॥ राग बिलावल ॥ धीरज करि री नागरी अब श्यामहिं लाऊं । अति ब्याकुल जनि होहिरी सुख अबहि कराऊं ॥ देखि दशा सहि नहि सकी मनहीं अकुलानी । मैं राधा की प्रिय सखी यह कहि पछितानी ॥ झूरि झूरि पियरी भई यहतौ सुकुमारी । ऐसी चूक परी कहा कैहैं गिरिधारी ॥ प्यारी को मुख धोय कै पटु पोंछि संवारयो । तरक बात बहुतें कही कछु सुधिन संभारयो ॥ सावधान करि कै गई ल्याऊंगी घर को । सूर तहां आतुर गई पाए हरिबरको ॥ ८६ ॥ ॥ राग टोड़ी ॥ ललिता मुख चितवत मुसुकानें । आपु हंसी पिय मुख अव लोकत दुहुनि मनहि मन जानें ॥ अति आतुर धाई कह आई काहे वदन झुराए । बूझत है पुनि पुनि नद नन्दन चितवत नयन चुराए ॥ तब बोली वह चतुर नागरी अचरज कथा सुनाऊं । सूर श्याम जो चलहु तुरतहीं नयननि जाय दिखाऊं ॥ ८७ ॥ तथा ॥ अद्-भुत एक अनूपम बाग । जुगल कमल पर गज वर क्रीडत तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरि पर सर वर गिरिवर गिरि पर फले कंज पराग । कचिर कपोत बसन ता ऊपर ता ऊपर अंबत फल लाग ॥ फलपर पुंज्ज पुंज्ज पर पल्लव तापर सुक पिक खग मद काग । खंजन धनुक चन्द्रमा राजत ता ऊपर एक मनि धर नाग ॥ अंग अंग प्रति और और छवि उपमा ताको करत न त्याग । सूरदास प्रभु पिवहु सुधा रस मानो अधरनि के बड़ भाग ॥ ॥ ८८ ॥ तथा ॥ बिराजित एक अंग इति बात । अपने कर करि धरे बिधाता खट खम्भ नव जल जात ॥ द्वै पतंग शशि बीच एक फनि चारि बिबिधि रंग धात । द्वै पक्व बिम्बवती सवज्र कन एक जलज पर थात ॥ एक सायक एक चांप चपल अति चिबुक मैं चित्त बिकात । द्वै मृनाल आलूर उभयद्वै कदलिखम्भ बिनपात ॥ एक केहरि एक हंस शुभ रहैतिनहि लग्यौ यह गात । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को अति आतुर अकुलात ॥ ८९ ॥ राग सारंग ॥ वरणों श्री वृषभान कुमारी । चितदै सुनहु श्याम सादर छवि रति नाहीं अनुहारी ॥ प्रथमहि सुभग श्याम वेनी को शोभा कहौं बिचारि । मानो फनिक रह्यो पीवन को शशि मुख सुधा निहारि ॥ कहिए कहा शीश सेंदुर को कितो रही पचि हारि । मानो अरुण किरण दिन करकी पसरी तिमिर बिदारि ॥ भृकुटी बिकट निकट नयननि के राजत अति वर नारि । मनहु मदन जग जीति जेर करि राख्यौ

धनुष उतारि ॥ ताबिच बनी आड केशरि की दीन्ही सखिन्ह संवारि । मानो बन्धी इंदु मण्डल में रूप सुधा की प्रारि ॥ चपल नयन नासा बिच शोभा अधर सुरंग सुढार । मनों मध्य खंजन सुक बैठो लुब्ध्यो बिनहिंविचार ॥ तरि बन सुधर अधर नकबेसरि चिबुक चारु रुचि कारि । कंठसरी दुलरी तिलरी पर नहि उपमा कहुं चारि ॥ सुरंग गुलाल लाल कुच मण्डल निरखत तनु मनु वारि । मानो दिशि दिशि निधुम अग्नि के तप बैठे त्रिपुरारि ॥ जौं मेरो कृत मानहुं मोहन करि ल्याऊं मनु हारि । सूर रसिक तबहीं पै वदिहौं मुरली सकौ संम्हारि ॥ ९० ॥ राग धनाश्री ॥ प्रिया मुख देखौ श्याम निहारि । कहि न जाय आननकोशोभा रही विचारि बिचारि ॥ नीलाम्बरचीरोदिक घूंघट सन्मुख कियो सुधारि । मनो सुधा कर दुग्ध सिन्धु ते काढ्यो कलंक पखारि ॥ भाललाल सेंदुर बिन्दी पर खग मदको छबि न्यारि । मनो बन्धूककुसुम ऊपर अलि बठो पंख पसारि ॥ चंचल नयन चञ्चु दिशि चितवत जनु खंजन अनुहारि । मनहुं परस्पर करत लराई कीर बचाये टारि ॥ बेसरि के मुक्ता में झाईं वर्ण विराजित चारि ॥ मानो सुर गुरु शुक्र भौम शनि चमकत चन्द समारि ॥ तरिवन श्रवण रत्नमनि भूषित शिर श्री मल्ल संवारि ॥ जनुजुग भानु दुहुं दिश उगए भयो द्विधा तमहारि ॥ सन्मुख दृष्टि परे मन मोहन लज्जित भइ सुकमारि । लीन्ही उमगि उठाय अंक भरि सूर दास बलिहारि ॥ ९१ ॥ ॥ रागनट ॥ भुज भरिलई हिरदै लाय । विरह व्याकुल देखिबाला नैन दोउ भरि आय ॥ रैनि बासर बीचही सेंदोऊ गए मुरझाय । मनो वृक्ष तमाल बेली कनक सुधा सिंचाय ॥ हरष डहडह मुसकिफले प्रेम फलनि लगाय । काम मुरझनि बेलि तरुकी तुरतहीं बिसराय ॥ देखि ललिता मिलनि वह आनन्द नहीं समाय । सूर के प्रभु श्याम श्यामा त्रिविध ताप नसाय ॥ ९२ ॥ ॥ राग रामकली ॥ ललिता प्रेम बिवस भइ भारी । वह चितवनि वह मिलनि परस्पर अति शोभा बरनारी ॥ एक टक अङ्ग अङ्ग अवलोकति उतबस भए बिहारी । वह आतुर छबि लेति देति वे एक तें एक अधिकारी ॥ ललिता सङ्ग सखिन सों भाषत देखौ छबि पिय प्यारी । सुनहु सूर ज्यों होम अग्नि घृत ताहू तें यह न्यारी ॥ ९३ ॥ राग धनाश्री ॥ देखि सखी राधा अकुलानी । तैसे अङ्ग अङ्ग छबि लूटति मिलेहुं श्याम कों नहीं पत्यानी ॥ जैसें तृषावन्त जल अंचवत वह तौ पुनि ठहरात । यह आतुर छबि लै उर धारति नेक नहीं तृप तात ॥ यौं चकोर एक टक निसि चितवत याकी सहिसौं नांहि ॥ ज्यौं घृत होम वन्हि की महिमा सूर प्रगट या मांहि ॥ ९४ ॥ राग केदारो ॥ यद्यपि राधिका हरि संग । हाव भाव कटाक्ष लोचन करति नानारंग ॥ हृदै व्याकुल धीरनाहीं वदन कमल बिलास । तृषा में जल नाम सुनि ज्यों अधिक अधिकहि प्यास ॥ श्याम रूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार । सूर मिति नहिं लहत कोऊ दुहुनि बल अधिकार ॥ ॥ ९५ ॥ राग केदारो ॥ राधेहि मिलेहु प्रतीति न आवति । यदपि नाथ विधु वदन बिलोकति दरशन को सुख पावति ॥ भरि भरि लोचन रूप परम निधि उर में आनि दुरावति । विरह विकल मति दृष्टि दुहूं दिसि सचि सरधा ज्यौं धावति ॥ चितवति चकृत रहति चित अन्तर नैन निमेष न लावति । सपनो आहि कि सत्यहैश यह बुद्धि वितर्क

बनावति ॥ कबहूं करति बिचार कौनहौं को हरि केहि भावति । सूर प्रेम की बात अट पटी मन तरङ्ग उपजावति ॥ ९६ ॥ राग रामकली ॥ देखेहूं अनदेखे से लागत । यद्यपि हूं रति रंग भरे हैं एक टक रहे निमिष नहिं त्यागत ॥ इतरुचि दृष्टि मनोज महासुख उत शोभा गन अमित अनागत । बाढ्यो बैरु करन अर्जुन ज्यों दो में एक भूलि नहि भागत ॥ उत सनमुख सी सावधान सजि इत सनाह अंग अंग अनुरागत । ऐसे सूर सुभट ए लोचन अधिकौ अधिक श्याम सुख मागत ॥ ९७ ॥ राग कान्हरो ॥ देखियत दोउ अहंकार परे । उत हरि रूप नयन याके इत मानहूं सुभट अरे ॥ रुचिर सु दृष्टि मनोज महा सुख इन इत एक करे । उन उत भूषन भेद व्यूह रचि अंग अंग धनुष धरे ए अति रति रन रोस न मानत निमिष निषंग हरे । बाहु बिथहि न बदत पुलक रुह सब अंग सुरस चरे ॥ वैसोये अनुराग सूर सजि छिनु छिनु बढ़त खरे ॥ ९८ ॥ राग बिहागरो ॥ नख सिख तें अंग अंग रूप छबि देखि नयन न अघाने । निशि अरु दिन एक टकहीं राखे पलक लगाय न जाने ॥ छबि तरङ्ग अगनित सरिता ये जल निधि लोचन तृपित न माने । सूर दास प्रभु की शोभा कों अतिही लालचि रहे ललचाने ॥ ९९ ॥ राग बिभास ॥ ललिता संग सखियनि कों लीन्हें । दम्पति सुख देखत अति भावत एक टक लोचन दीन्हें ॥ प्यारी श्याम अंग की शोभा निदरें देख्यो चाहति । उत नागर नागरि नयननि कों निदरि रूप अवगाहति ॥ उत उदार शोभा की सीवा इत लोभहि नहि पार सूर श्याम अंग अंग की शोभा निरखति बारम्बार ॥ १०० ॥ राग गोंडमलार ॥ निदरि अंग छबि लेति राधा । यह कहति कितिक शोभा करेंगे श्याम मेटि हौं आजु मन सबै साधा ॥ उतहि हरि रूप की रासि नहि पार कछु दुहुंनि मन परस्पर होड कीन्हों ए इतहि लुब्ध वे उतही उदार चित दुहुंनि बल अन्त नहि परत चीन्हों ॥ जुरे रनबीर ज्यों एक तें एक सरस मुरत कोउ नहीं दोउ रूपे भारी । सूर स्वामी स्वामिनी राधिका सरस निरस कोउ नहीं लखि लई नारी ॥ १०१ ॥ राग मारू ॥ रूपे रति संग्राम खेत नीके । एक एक रनबीर जोधा प्रबल मूरत नहि नेक अति सबल जीके ॥ भौंह को बङ्क सर नयन धानु की काम छूटति मानौं कटाच्छनि निहारै । हंसनि दुज चमक करि बरनि लोहे न झलक नखनि छत घात नेजा सम्हारै ॥ पीत पट डारि कञ्चुकी मोचि करनि सों कवच सन्नाह ए टूटे तनतें । भुजा भुज धरत मनौ दिरद सुंडन लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मनतें ॥ लटकि लपटानि मानों सुभट लरि परे खेत रति सेज रुचि ताम कीन्हें सूर प्रभु रसिक प्रिया राधिका रसिकिनी कोक गुण सहित सुख लूटि लीन्हें ॥ १०२ ॥ ॥ राग नट ॥ रसना जुगल रस निधि बोलि । कनक बेलि तमाल अरुझो सु भुज बन्ध अखोलि ॥ भृंग जूथ सुधा किरनि मनो घन मै आवत जात । सुरस री पर तरनि तनया उमगि तट न समात ॥ कोक नद पर तरनि ताखुब मीन खञ्जन संग । करति लज्जा सिखर जुग मिलि जुगम सेगम रंग ॥ जलदतें तारा गिरत मनो परत पैनिधि माहिं । जुग भुजंग प्रसन्न मुख ह्वै कनक घट लपटाहिं ॥ कनक संपुट कोकिला रव बिवस ह्वै दैदान । बिकच कञ्ज अनारमिश्रधर लसि करत पै पान ॥ दामिनी थिर घन घटा चर कबहुं ह्वै

यहि भांति । कबहुं दिन उद्योत कबहूं होत अति कहुं राति ॥ सिंह मध्य सनाद मुनि गण सरस सर के तीर । कमल मनो बिननाल उलटे कछुक तीछन नीर ॥ अंशु साखा शिखर चढ़ि चढ़ि करत नाना नाद । मकर निज पद निकट बिहरत मीन पति अहलाद ॥ प्रेम हित करि मिली सागर भई मनसा एक । श्याम मनिके अंग चन्दन अमीके अभि षेक ॥ सूर दास सखी शोभा मिलि करत बुद्धि बिचार । समौ शोभा लगि रही मनो सुमन को संसार ॥ १०३ ॥ राग रामकली ॥ शोभा सुभग आनन गोर । चास तें तनु चसित ति रछे चितै देत अकोर ॥ निरखि सम करि कियो चाहत बदन बिधु की जोर । तुला बिय लोकेश तोले गरुअ आनन गोर ॥ दरस एति रुचि मुदित मन सिज चपल दृगहि चकोर । कोस क्रीड़त मीन मानो नीर नीरज भोर ॥ श्याम सुन्दर नयन जुग बर झलक कज्जल घोर । सुधा शशि संकेत मानों कूपदा नव चोर ॥ श्रवन मणि ताटङ्क मंजुल कुटिल कुन्तल छोर । समर संकट काम ब्याकुल अलक फंदनि डोर ॥ चिकुर अभि नव मोति मंजुल तरल लटि टूण तोर । जनु बिध्वंसित ब्याल बालक अमी की झक झोर ॥ खेद सीकर गण्ड मंडित रूप अम्बुज धोर । उमंगि ईषद्यों श्रवत पीयूष कुम्भ झकोर ॥ हंसत दसननि चमक तनु प्रिय लसत कठिन कठोर । मुदित मधुकर बिन्द गण मकरन्द मध्य न थोर ॥ निरखि शोभा समर लज्जित इंदु भयो भ्रम भोर । सूर धन्य सुनव किशोरी धन्य नन्द किशोर ॥ १०४ ॥ राग बिलावल ॥ धन्य कान्ह धन्य राधा गोरी । धनि यह भाग सोहाग धन्य यह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धनि यह मिलनि धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचि थोरी । धनि या अरस परस छवि लटकनि महाचतुर मुख भोरे भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकति पिय अव लोकत लगत ठगौरी । सूरदास प्रभुरीझि थकित भए नागरि पर डारत तृण तोरी ॥ १०५ ॥ राग धनाश्री ॥ नागरि छवि पर रीझे श्याम । कबहुंक वारत हैं पीताम्बर कबहुंक वारत मुक्ता दाम ॥ कबहुंक वारत हैं कर मुरली कबहुंक वारत मोहन नाम । निरखि रूप सुख अन्त लहत नहि तनु मनु वारत पूरण काम ॥ बारं बार सिहात सूर प्रभु देखि देखि राधासी वाम । इनको पलक ओट नहि करिहों मन यह कहत दिवसअरु जाम ॥ १०६ ॥ राग सूहोबिलावल ॥ श्याम निरखि प्यारी अंग अंग । सकुचि रहत मुखतन नहि चितवत जेहि वस रहत अनन्त अनंग ॥ चपल नयन दीरघ अनि आरे हाव भाव नाना गति भंग । वारों मीन कोटि अम्बुज गण खंजन वारत कोटि कुरंग ॥ लोचन नहि ठहरात श्याम के कबहूं अंग नयना सुख रंग । सूरदास प्रभु यों प्यारी बस ज्यों वस डोर फिरत संग चंग ॥ १०७ ॥ राग टोड़ी ॥ श्याम भए राधा वस ऐसे । चोचिक खाति चकोर रहत ज्यों चक्र वाक रवि जैसे ॥ नाद कुरंग मीन जलकी गति ज्यों तनुके वस छाया ॥ एकटक नयन अंग छवि पेखे थकित भए पति जाया ॥ उठे उठत बैठे बैठत चले चलत सुधि नाहीं । सूरदास बड़ भागिनि राधासमुझि मनहिं मुसुकाहीं ॥ १०८ ॥ राग आसावरी ॥ निरखि श्याम प्यारी अंग शोभा मन अभिलाष बढ़ावत हैं । प्रिया अभूषण मांगत पुनि पुनि अपने अंग बनावत हैं ॥ कुण्डल तट तरिवन लै साजत नासा बेसरि धारत हैं । बेंदी भाल मांग

शिर पारत बेनी गूंथि संवारत हैं ॥ प्यारी नयननि को अंजन लै अपने लोचन रञ्जत हैं पीताम्बर बेढनी शीश दै राधाको मन रंजत हैं ॥ कंचुकि भुजनि भरत उर धारत कंठ हमेल बजावत हैं। सूर श्याम लालच चित तनु पर करि सिंगार सुख पावत हैं ॥ १०९ ॥ राग नट ॥ श्यामा श्याम छबि की साध । मुकुट कुंडल पीत पट छबि देखि रूप अगाध ॥ प्रिया हाहाकरत पुनि पुनि देउ प्रीतम मोहि । अंग अंग संवारि भूषण रहति वह छवि जोहि ॥ काछिकछनी पीत पटु कटि किंकिनी अति शोभ । हृदय वनमाला वनावति देखि छबि मन लोभ ॥ श्रवन कुण्डल धारि शोभा शीश रचि यो खण्ड । सूर श्याम सुहागिनी रुचि कनक कर लै दण्ड ॥ ११० ॥ राग नट ॥ तिहारी लाल मुरली नीक बजाऊं । जैसी तान तुम्हारे सुखकी तैसिय मधुर सुनाऊं ॥ जैसें फिरति रंभमग अंगुरी तैसें मुख फिराऊं । जैसेंहि आपु अधर धरि फूंकत मैं अधरनि परसाऊं ॥ हाहा करति पादूहौं लागति बांस बंसुरिया प्याऊं । सारंग नट पूरबी मिलैकै राग अनूप उपाऊं ॥ अपने भूषण मोकों दीजै अपने तुमहि बनाऊं । तुम बैठो दृढ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाऊं ॥ यह अभिलाष बहुत मेरे जिय नयननि यहै देखाऊं । सूर श्याम गिरिधरन छबीले भुज धरि कंठ लगाऊं ॥ १११ ॥ राग गुर्जरी ॥ मुरली लई करतें छीनि । तासमें छवि कही जाति न चतुरि नारि नवीनि ॥ कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहि देउ सिखाय । मुरलि पर मुख जोरि दोउ अरस परस बजाय ॥ कृष्ण पूरित नाद उच्चरत प्यारि रिस करि गात । बार बारहि अधर धरि धुनि बजत नहि अकुलात ॥ प्रिया भूषण श्याम पहिरत श्याम भूषण नारि । सूर प्रभु करि मानु बैठे चित करति मनु हारि ॥ ११२ ॥ राग बिलावल ॥ कहति नागरि श्यामसों तजौ मानु हठीलो । हमतें चूक कहा परी चित गर्व गहीलो ॥ हंसतहि में तुम्ह रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी । बार बार कर धरति है कहि कहि सुकुमारी ॥ वृथा मानु नहिं कीजिये शिर चरणनि धारति । आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति ॥ निठुर भई हौ लाड़िली कब के हम ठाढे । तुम हम पर रिस करति हौ हमहैं तुव चाढे ॥ श्याम कियो हठ जानिकै एक चरित बनाऊं । सुनहु सूर प्यारी हृदय रस विरह उपाऊं ॥ ११३ ॥ राग बिलावल लाल निठुर ह्वै बैठि रहे । प्यारी हाहा करति न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहि बोलत नहि चितवत मुख तन धरणी नखनि करोवत । आपु हंसति पुनि पुनि उर लागति चकृत होति मुख जोवत ॥ कहा करत ए बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु । सूर श्याम मुख चन्द कोटि छवि हंसिकै मोहि दिखावहु ॥ ११४ ॥ राग धनाश्री नागरि हंसति हृदय डर भारी । कबहुं अंक भरि लेति उरज बिच कबहुंक रति मनु हारि ॥ मानु करत नीको नहि लागे दूरि करौ यह ख्याल । नेक नहीं चितवत राधा तन निठुर भए नन्दलाल ॥ शीस धरति चरणनि ले पुनि पुनि पियको रूप निहारत । सूरदास प्रभु मानु धरयौ दृढ धरणी नखनि विदारत ॥ ११५ ॥ राग गोंडमलार ॥ निरखि पिय रूप पिय चकित भारी । किधौं वे पुरुष में नारि की वे नारि यहीं हौं पुरुष तनु सुधि बिसारी ॥ आप तन चितै शिर मुकुट कुंडल श्रवन अधर मुरली माल बन

विराजै । उतहि पिय रूप शिर मांग वेनी सुभग भाल बेंदी कहा बिन्द छाजै ॥ नागरी हठ तजौ कृपा करि मोहि भजौ परी कहा चूक सो कहौ प्यारी । सूर प्रभु नागरी रस विरह मगन भई देखि छवि हंसत गिरिराज धारी ॥ ११६ ॥ राग धनाश्री ॥ निरखत पिय प्यारी अंग अंग विरह शोभा । कबहूं पिय चरण परति कबहूं भुज अंक भरति कबहूं जिय डरति बचन सुनिबे की लोभा ॥ कबहुं कहति पियसों पिय कबहूं कहति प्यारी हो हाहा करि पांय परत बिकल भई बाला । कबहुं उठति कबहुं बैठि पाछे ह्वै रहति कबहुं आगे ह्वै वदन फेरि परी विरह ज्वाला ॥ काहे तुम कियो मान बोले बिनजात प्राण दम्पतिके संग दसा ऐसी उपजाई । रीझे पिय सूरश्याम अंकमरि भई वाम विरह दन्द मेटि हरष हृदय उपजाई ॥ ११७ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रिया पिय लीन्ही अंकलाय । खेलत में तुम विरह बढायो गई कहा बितताय ॥ तुम्हारीं कह्या मानु करिबे को आपुहि बुद्धि उपाय । काहे बिवस भई बिन कारण ऐसी गई डराय । सुनि प्यारी यह भाव बतायो अन्तर गए जनाय । बार बार आलिंगन दीन्हो अवहि रहीं मुरझाय । सींची कनक लता सूरज प्रभु अमृत बचन सुनाय । अति सुख दै दुखको बिसरायो राधा रमन कन्हाय ॥ ११८ ॥ राग गोंड मल्हार ॥ श्याम तन प्रिया भूषण बिराजै । कनक मनि मुकुट कुण्डल श्रवन वन माल अधर मुरली धरें नारि छाजै । निरखि छवि परस्पर रीझे दे उ नारि वर मयोतजि विरह डर प्रेम पागे । सूर प्रभु नागरी हंसति मन मन रसति बसति मन श्याम के बड़ी भागे ॥ ११९ ॥ राग नट ॥ नागरि भूषण श्याम बनावत । श्री नागर नागरि अङ्ग सोभा कियो निरखि मन भावत । श्यामा कनक मुकुट कर लीन्हे पीताम्बर उर धारें । इत गिरिधर नीलाम्बर सारी घूंघट ओट निहारें । बचन परस्पर कोकिल बानी श्याम नारि पति राधा । सूर सरूप नारि पति काहें पति नारी तनु साधा ॥ १२० राग नट ॥ नीके श्याम मानु तुम्ह धारयो । तुम बैठे दृढ मानु ठानि मैं मेट्यो मानु तुम्हारो । यह मन साध बहुतही मेरे तुम्ह बिनु कौन निवारै । नागरि पिय तन अपनो शोभा बारहि बार निहारै । वेनी मांग भाल बेंदी छवि नैन नि अंजन रङ्ग । सूर निरखि पिय घूंघटकी छवि पुलकन मावति अंग ॥ १२१ ॥ राग धनाश्री ॥ कुंज बन गवन दम्पति बिचारैं । नारि को वेश करि नारि के मनहि हरि मृदु लै भावती छवि निहारैं ॥ भामिनी अंग वह निरखि नटवर भेष हंसतही हरत सब मेटि डारे । सहज अपनें रूप धरे मन भावती और भूषण तुरत अंग धारे । पियाको रूप धरि संग राधा कुंअरि जात व्रज खोर नहि लखत कोउ । सूर स्वामी स्वामिनी बने एकसे कौन पटतर अरस परस दोउ ॥ १२२ ॥ राग गौरी ॥ नन्द नन्दन पिय छवि तनु कांछे । मानो गोरि सांवरी नारी दोउ जात सहज में आछें । श्याम अंग कुसुमी नइ सारी फल गुंजाकी भांति । इत नागरी नीलाम्बर पहिरें जनु दामिनि घन कांति । आतुर चले जात बन धामहि रति मन हर्ष बढ़ाएं । सूर श्याम बाछहिको नागरि निरखति नैन चुराएं ॥ १२३ ॥ राग कान्हरो ॥ मनहीं मन रीझति है राधा बार बार पिय रूप निहारै । निरखति भाल बिन्द सेंदुर को बाछविपर तन मन धन वारै ।

यह मन कहति सखी जन देखै बूझै कछ कैहौं । तिहूं भुवन सोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरै हौं । पग जेहरि बिछिअनि की झमकनि चलत परस्पर बाजत । सूर श्याम श्यामा सुख जोरी मनि कंचन छवि लाजत ॥ १२४ ॥ राग कल्यान ॥ श्यामा श्याम कुंज बन आवत ॥ भुज भुज कंठ परस्पर दीन्हें यह छवि उनहीं चावत । इततें चन्द्रावली जाति ब्रज उततें ए दोउ आए । दूरिहितें बितवति उनहीं तन एक टक नैन लगाए । एक राधिका दूसरि कोहै याको नहि पहिचानों । ब्रज वृषभान पुरा युवतिन को एक एक करि मैं जानौं । यह आई कहं और गांवतें छवि सांवरी सलोनी । सूर आजु यह नई बतानी एक अंगनसलोनी ॥ १२५ ॥ राग सोरठ ॥ राधा सकुचि श्याम मुख हेरति । चन्द्रावली देखि कै आवति ब्रजही को पिय फेरति । जाहु जाहु मुखतें कहि भाषति करतें कर नहि छूटति । उतहिं सखी आवत सकुचानी इतहि श्याम सुख लूटति ॥ दुख सुख हर्ष कछू नहि जानति श्याम महारस माती । सूर उतहि चन्द्रावलि एक टक उनहीं के रंग राती ॥ १२६ ॥ राग गौरी ॥ यह वृषभान सुता वह कोहै । याकीसरि युवती कोउ नाहीं यह त्रिभुवन मन मोहै । अति आतुर देखन को आवति निकट जाय पहिचानो । ब्रज में रहति किधों कछु औरे बूझेतें तब जानों । यह मोहनी कहांते आई परम सलोनी नारी । सूर श्याम देखत मुसुकानी करी चतुरई भारी ॥ १२७ ॥ राग गौरी ॥ इनते विधरक और न कोई । कैसी बुद्धि रची है नोखी देखी सुनी न होई ॥ यह राधा से हाथ विधाता बुद्धि चतुराई बानी ॥ कैसे श्याम चुराय चली लै अपने भूषण ठानी । और कहा इन्हको पहिचानै मोपै लखे न जात । सूर श्याम चन्द्रावलि जाने मनहीं मन मुसुकात ॥ १२८ ॥ राग कान्हरो ॥ सकुच छांडि अब इनहि जनाऊं । ए तौ चले आपने काजहि में काहे न समुझाऊं । मनहीं मन ए जीति जाहिंगे जानि बूझि निदराऊं ॥ यह चतुरई काहि कै आएसो अब प्रगट देखाऊं । बड़े गुणन कहावत दोऊ इनको लाज तजाऊं । सूर श्याम राधा को करनी महिमा प्रगट सुनाऊं ॥ १२९ ॥ राग गौर सारङ्ग ॥ कहि राधा ए को हैरी । अति सुन्दरि सांवरी सलोनी त्रिभुवन जन मन मोहैरी ॥ और नारि इनकी सरि नाहीं कहौ न हमतन जो हैरी । काकी सुता बधू है काकी काकी युवती धौं हैरी । जैसी तुम्ह तैसी हैं एऊ भली बनी तुम्ह सों हैरी । सुनहु सूर अति चतुर राधिका ए चतुरनी की गों हैरी ॥ १३० ॥ राग इमन ॥ मथुरातें ए आईं हैं । कछु सनमंध हमारो इन्ह सों ताते इनहि बोलाई है ॥ ललिता सङ्ग गई दधि बेचन उन्हही इन्हहि बिन्हाई है । उहै सनेह आनि री सजनी भवन आजु हम पाई है । तबहीं की पहिचानि हमारी ऐसी सहज सुभाई है । सूर मोहि देखि ह्यां आवत आपु सङ्ग उठि धाई है ॥ १३१ ॥ राग सोरठ ॥ इनको ब्रजही क्यों न बुलावहु । को वृषभान पुराकी गोकुल निकटहि आनि बसावहु । बोउ नवला नवला तुम्ह हूं हौ मोहन को दोउ भावहु । मोकों देखि कियो अति घूंघट काहे न लाज छुड़ावहु । यह अचरज देखो नहि कबहूं युवतिहि युवति

हि युवति दुरावहु । सूर सखी राधा सों पुनि पुनि कहति जु हमें मिलावहु ॥ १४१ ॥ हमीर ॥ सांवरे तनु कुसुमि साजि सोहति है नीकोरी ॥ मानों रति पति संवारि बनी रचनि जीकोरी । राधातें अतिहि सरस श्याम देखि पावैरी । ऐसी यह नारि और नारि मन चुरावैरी । घूंघट पट बदन ढाँकि काहे इन राख्योरी । चितवहु मोतन कुमारि चन्द्रावलि भाख्योरी । आपुहि पट दूरि कियो तरुनि बदन देखैरी । मनहीं मन सुफल जानि जीवन जग लेखैरी । नयन नयन जोरत नहि भाव सों लजानेरी । सूर श्याम नागरि मुख चितवत मुसुकानेरी ॥ १४२ ॥ राग बिहागरो ॥ मथुरा में बस बास तुह्मारो ॥ राधातें उपकार भयो यह दुर्लभ दरसन भयो तुह्मारो ॥ बार बार करगहि गहि निरखति घूंघट ओट करो किनि न्यारो ॥ कबहुंक कर परसति कपोल छुइ चुटकि लेति ह्यां हमहि निहारो ॥ कछु मेंहूं पहिचानति तुमको तुह्महिं मिलाऊं नन्द दुलारो ॥ काहे को तुह्म सकुचति हौ जू कहो कहा है नाउं तुह्मारो ॥ ऐसो सखी मिलो तोहि राधा तो हमको काहे न बिसारो ॥ सूर दास दम्पति मन जान्यों यासों कैसे होत उबारो ॥ १४७ ॥ राग रामकली ॥ राधा सखि मिलि मन भाई ॥ जबतें इनसें नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥ और भई इनतें तुह्मको सखि गृह जनसों निठुराई । काहूको मन में नहि आनति हमहुं सबनि बिसराई ॥ तुह्म हौ कुशल कुशल हैं रज आप स्वारथी माई ॥ सूर परस्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥ १४४ ॥ राग रामकली ॥ यह सखि अबलों कहां दुराई ॥ इते घोष हम कबहुं न देखे अबजु कहांतें आई ॥ त्रिभुवन की शोभा सब गुण विधि है विधि एक उपाई ॥ विद्यमान वृषभान नन्दनी सहचरि सब सुखदाई ॥ अपने मन तकि तकि तनु तोलति वियजन सुन्दरताई ॥ दुसह रूपकी रासि राधिका कहो कौन पुर पाई ॥ राचि रहे रस सुरत सूर दोउ निरखत नयन निकाई ॥ चीन्हें हौ चलि जाहु कुंज गृह छांडि देहु चतुराई ॥ १४५ ॥ राग राम कली ॥ ऐसी कुंवरि कहां तुम्ह पाई ॥ राधाहू तें नख सिख सुन्दरि अबलों कहां दुराई ॥ काकी नारि कौन की बेटी कौन गांवतें आई ॥ देखी सुनी न व्रज वृंदावन सुधि बुधि हरति पराई ॥ धन्य सुहाग भाग याको यह युवतिन के मन भाई ॥ सूर दास प्रभु हरषि मिले हंसि लै उन कंठ लगाई ॥ १४६ ॥ राग गौंड मलार ॥ नंद नंदन हंसे नागरी मुख चितै हरषि चन्द्रावलि कण्ठ लाई ॥ बाम भुजबनी दक्षिन भुजा सखी पर चले बन धाम सुख कहि न जाई ॥ मनो बिबि दामिनी बीच नवघन सुभग देखि छवि कामरति सहित लाजै ॥ किधों कञ्चनलता बीच तामाल तरु भामिनी बीच गिरिधर विराजै ॥ गए गृह कुञ्ज अलि गुञ्ज सुमनन्हि पुञ्ज देखि आनंद भरे सूर स्वामी ॥ राधिका रवन युवती रवन मन रवन निरखि छवि होत मन काम कामी ॥ १४७ ॥ राग केदारो ॥ कुंज सोहावनो भवन ॥ बनि ठनि बैठे राधा रवन ॥ बरण बरण कुसुम प्रफुल्लित अलि की

किरणि जग मगात तै सोइ बहै विविध पवन ॥ अलिगण पिक मङ्गल गावत धुनि सुनि सुनि मनहिं भावत देखत दम्पति बिबिसयन ॥ सूरदास प्रभु पिय प्यारी दोउ राजत बारत रति पति सयन ॥ १४८ ॥ राग बिलावल ॥ संग सोभित वृषभानु किशोरी ॥ सारंग नयन बैन बर सारङ्ग सारङ्ग बदन कहै छबि कोरी ॥ सारङ्ग अधर सुधर कर सारङ्ग सारङ्ग जति सारङ्ग मति भोरी ॥ सारङ्ग बरन पीठि पर सारङ्ग सारङ्ग गति सारङ्ग कटि थोरी ॥ सारङ्ग पुलिन रजनि रुचि सारङ्ग सारङ्ग अंग सुभग भुज जोरी ॥ बिहरत सघन कुंज सखि निरखति सूर श्याम घन दामिनि गोरी ॥ १४९ ॥ राग बिलावल ॥ कुंज भवन राधा मन मोहन ॥ रति बिलास करि मगन भए अति निरखत नयन लजोहन ॥ त्रिय तनु को दुख दूरि कियौ पिय दैदै अपनी सोहन ॥ बार बार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठे दोउ गोहन ॥ पीताम्बर पटु सों मुख पोंछत हरषि परस्पर जोहन ॥ सूर श्याम श्यामा मन रिझवत पीन कुचनि टक टोहन ॥ १५० ॥ राग बिहागरो ॥ बनहि धाम सुख रैनि पुहाई ॥ तैसिय नवल राधिका नागरि तैसेइ नवल कन्हाई ॥ तैसोइ पुलिन पवित्र जमुन को तै सोइ मन्द सुगन्ध ॥ तैसिय कण्ठ कोकिला कुहकनि तैसोइ सुख सनबन्ध ॥ रति बिहार करि पिय अरु प्यारी प्रात चले ब्रज धाम ॥ सूरदास दोऊ बहं जोरी राजत श्यामा श्याम ॥ १५१ ॥ राग ललित ॥ नवल निकुंज नवल रस दोऊ राजत रङ्ग भीने । कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आलस जुत अंसनि भुज दीने ॥ अरुण नयन कुचरेख बिराजित श्रम जल बरुन पलटि तनु लीने । सूरज प्रभु पिय प्यारी को सुख निरखत सखिन सहित ललिता दृग दीने ॥ १५२ ॥ राग केदारो ॥ बरण बरण बादर मन हरण उदै करण बन धामतें निकसत दोउ ऐसे लागे । श्याम घटा मध्य मानों दामिनी भामिनी राजति लाजति दुरि जाति कबहुं प्रगट होति न्यारी तामैं अरुण भए नयन सबै निसि के जागे । मोर मुकुट पीत बसन इन्द्र धनुष बीच बीच मन्द मन्द गरजि बोलनि पिय रंग अनुरागे । सूर दास प्रभु पिय प्यारी की छबि गावत पावत कवि उपमा जे तेउ बड़ भागे ॥ १५३ ॥ राग अडानों ॥ बहं जोरी निकसे कुंजतें प्रात रीझि रीझि कहै बात । कुण्डल झलमलात झलकत बिधि गात चका चौंधीसी लगति मेरे इन नयननि आखी । रपटत पगनहि ठहरात । राधा मोहन बने बन बपला ज्यों चमकि चमकि परी घनश्याम मैं समात ॥ सूर दास प्रभु के बै बचन सुनहु मधुर मधुर अब मोहि भूलोरी पांच औ सात ॥ १५४ ॥ राग बिलावल ॥ नवल किशोर किशोरी बहां जोरी आवत हैं रति रंग अनुरागे । कबहुं चरण गति डगति लगति छबि नयन बैन अलसात जम्हात ऐंड़ात गात आनन्द निशा सुख जागे ॥ बानक देखत रीझि रही हों चन्दन बन्दन माल बिना गुण अंजन पीक पलटि लागे । सूर दास प्रभु प्यारी राजत आवत भाजन बने हैं मरगजे बागे ॥ १५५ ॥ राग भैरों ॥ सोहत घूंघर बारे बार । अरुझि रहे मुक्ताफल हिरवारत है बार । रति मानी संग नन्द नन्दन के छूटे बन्द कंचुकी टूटे हार ।

निशि के जागे दोऊ नयना ढरकि रहे चलति जोवन मद भार । सूर श्याम संग यह सुख देखत रीझे बारम्बार ॥ १५६ ॥ राग सूहो ॥ नवल श्याम नवलासी श्यामा ॥ दोउ राजत वहां जोरी चले जात व्रज धामा ॥ या छबि की उपमा देवे को त्रिभुवन नहीं उपामा । दामिनि घन पटतर देवेको सकुचत कवि जिए नामा । सुधा सरोर परस्पर दोऊ सुख दायक दिन जामा । सूर दास प्रभु नागर नागरि जीते रति पति कामा ॥ १५७ ॥ राग ललित ॥ दोउ वनतें व्रज धाम गए । रति संग्राम जीति पिय प्यारी भूषण सजतिनए । वे व्रज गए आपु अपने गृह चितवें कोऊ न टारत । मन बाचा कर्मणा एक दोउ एकौ पल न बिसारत । जैसें मीन नीर नहि त्यागत ए खखिडत है खूरण । सूर श्याम श्यामा दोउ देखौ इत उत कोउ न अधूरण ॥ १५८ ॥ राग धनाश्री ॥ बहुरि फिरि राधा सजति सिंगार । मनहु सुहथ पहिरावति अंगरज जीते सुरत अपार । कटि तट सुभटनि देत रसन पट भुज भूषण उर हार ॥ कर कङ्कन काजर नक बेसरि दीन्हों तिलक लिलार ॥ बीरा बिहंसि देति अधरनि को सन्मुख सहे प्रहार । सूर दास प्रभु कोंजु बिमुख भए बांधति कारर बार ॥ १५९ ॥ राग कान्हरो ॥ आजु अति राधा नारि बनी ॥ प्रति प्रति अंग अनंग जीत रस बस त्रैलोक धनी ॥ सोभित केश बिचित्र भांति दुति सिख सिखण्ड हरणी ॥ रची मांग सम भाग राग निधि काम धाम सरणी ॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव राग सागरोद्भव सूरसागर रागकल्पद्रुम
प्यारी जीके अनुराग लीला सम्पूर्ण ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ अथ मुरलीनाद समय के कीर्त्तन प्रारम्भ ॥

॥ श्री गोपीजनवल्लभायनमः ॥

॥ राग बिहागरो ॥ अंखियनि की सुधि भूलि गई । श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चक्रित नारि भई ॥ जो जैसें सो तैसेंहि रहि गई सुख दुख कह्यो न जाई । लिखी चित्रि कीसी सब ह्वै गईं एक टक पल बिसराई ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका आन । भवन रवन की सुधि न रही तनु सुनत शब्द बहु कान ॥ अखियनि तें मुरली अति प्यारी वह वैरिनि यह सौति । सूर परस्पर कहति गोपिका जहं उपजी उद भौति ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ अधर मुरली रटन लागी । जा रस को पट ऋतु तनु गारत्रो सेा रस पिवति सभागी ॥ कहां रही कहं तें यहं आई कौने याहि बुलाई । चक्रित कहा भई व्रज बासिनि यह तौ भली न आई ॥ साव धान क्यों होति नही तुम उपजी बुरी बलाय । सूर दास प्रभु हम पर याकों कीन्हों सौति बनाय ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ आवतही याके ए ढंग । मन मोहन बस भये तुरत ही ह्वै गये अंग त्रिभंग ॥ मैं जानों यह टोंना जानति करि है नाना रंग । देखो चरित भजे हरि कैसे या मुरली के संग ॥ बातनि में कह धुनि उपजावति सिरजति तान तरंग । सूर दास प्रभुइन्दु बदन में पैठी बड़ो भुजंग ॥ ३ ॥ राग टोड़ी ॥ मुरली सुनत देह गति भूली । गोपी प्रेम हिंडोले झूली ॥ कबहुं चक्रित ह्वै रहति सयानी । खेद चल्यो ह्वै जैसे पानी ॥ धीरज धरि एक इकहि सुनावें । यह कहि कहि आपुहि बिसरावें ॥ कबहूं सुधि कबहूं सुधि नाही । कबहूं मुरली नाद समाही ॥ कबहूं तरुणि तरुणि मिलि बोलै । कबहूं रहै धीर नहि डोलै ॥ कबहूं चलति कबहुं फिरि आवै । कबहुं लाज तजि लाज लजावै ॥ मुरली श्याम सुहागिनि भारी । सूर कहति ऐसे व्रज नारी ॥ ४ ॥ राग बिहागरो ॥ अधर धरि मुरली श्याम बजावत । सारंग गौर नाट नट करिकै गौरी राग सुनावत ॥ आपु भये

रस बस ताही के औरनि वश्य करावत । ऐसो को त्रिभुन जल थल में जो सिर नही धुनावत ॥ शुभग मुकुट कुंडल मणि श्रवणनि देखत नारि न भावत । सूर दास प्रभु गिरि धर नागर मुरली धरन कहावत ॥ ५ ॥ राग पूर्वी ॥ श्याम मुख मुरली अनुपम राजत । शुभग सिखण्ड पीड सिर सोहत श्रवणनि कुण्डल भ्राजत ॥ नील जलद तन शुभग चाप सुर मंद मंद रव गाजति । पीताँबर कटि तड़ित भाव जनु नारि बिबस मन लाजति ॥ ठाढे तरु तमाल तर सुंदर नंद नदन बन माली । सूर निरखि व्रज नारि चकत भईं लगी मदन की भाली ॥ ६ ॥ राग बिहागरौ ॥ मुरली के बस श्याम भयेरी । अधरनि तें नहि करत न न्यारी बाके रंग रयेरी ॥ रहत सदा तन सुधि बिसराये कहा करन धौं चाहति । देखी सुनी न भई आजुलों बांस बंसुरिया दाहति ॥ श्यामहि निदरि निदरि हमहूं को अबहीतें ये रूप । सुनहु सूर हरि को मुंह पाये बोलत वचन अनूप ॥ ७ ॥ राग बिहागरौ ॥ मुरली श्याम कहां तें पाई । करत नही अधरन तें न्यारी कहा ठगौरी लाई ॥ ऐसी ढीठ मिलत हीं ह्वै गई उनके मनही भाई । हम देखत यह पिवति सुधा रस देखौरी अधिकाई ॥ कहा भयो मुंह लागी हरि के बचननि लियो रिझाई । सूर श्याम कों बिबस करावति कहा सौति सी आई ॥ ८ ॥ राग गुर्जरी ॥ श्याम मुरलि के मनहि ढरे । कर पल्लव ता कों बैठारत आपुन रहत खरे ॥ बारम्बार अधर परसावत उपजावत अनुराग । जे बस करत देव मुनि गंधरब ते करि मानत भाग ॥ बनमें रहति डरीको जानै कब आनीधौं जाय । सूरज प्रभु की बड़ी सुहागिनि उपजी सौति बजाय ॥ ९ ॥ राग नट ॥ मुरली भई सौति बजाय । कबहुं बन में रहति डारी ताहि यह सुखराय ॥ बचन ही हरि रिझे लीन्हें अधर पूरित नाद । दिनहि दिन अधिकान लागी अब करैगी बाद ॥ सुनहुरी यहि दूरि कीजै इहै करौ बिचार । अबहि ते करनीं करी यह बहुरि कहा लगार ॥ ढंग याके भले नाहीं बहुत गई डराय । सूर श्याम सुजान रीझे देहगति बिसराय ॥ १० ॥ राग सोरठ ॥ मुरली दूरि कराए बनिहै । अबहीं ते ऐसे ढंग याके बहुरि काहि वह गनिहै ॥ लागी हरिकर पल्लव बैठन दिनदिन बाढति जाति । अबहीतें तुम सजग होहुरी मैजु कहति अकुलाति ॥ यहि व्रज मे नहि भली बतानी देखौ हृदय बिचारि । सूर श्याम बाही के ह्वै गये सब व्रज नारि बिसारि ॥ ११ ॥ राग बिहागरौ ॥ अबही तें हम सबनि बिसारि । ऐसे वश्य भये हरि बाके जाति न दशा विचारि ॥ कबहूं कर पल्लव पर राखत कबहु अधर लै धारी । कबहु लगाय लेत हिरदय सों नेंकहुं करत न न्यारी ॥ मुरली श्यामहि अपने कीन्हें जे कहियत गिरिधारी । सूर दास प्रभु के तन मन धन बांस बंसुरिया प्यारी ॥ १२ ॥ ॥ राग रामकली ॥ मुरली भई श्याम तन मन धन । अब वाकों तुम दूरि करावति जाके वश्य भये नंद नन्दन ॥ कबहूं अधर कबहुं राखत कर कबहूं गावत कबहुं हृदय धरि । कबहुं बजाय मगन आपुनही लटकि रहत मुख धरि तापर ढरि ॥ ऐसे पगे रहत हैं जासों ताहि करति कैसें तुम न्यारी । सूर श्याम हम सबनि बिसारी यह कैसे अब जाति बिसारी ॥ १३ ॥ राग सूहौ ॥ मुरली हरि को भावैरी । सदा रहति

मुखही सों लागी नाना रंग बजावैरी ॥ छहू राग छत्तीस रागिनी एक एक नीके गावैरी । जैसेही मन रीझत हरि को तैसेहि भांति रिझावैरी ॥ अधरनि को अमृत पुनि अंचवति हरि के मनहि चुरावैरी । गिरिधर को ऐसो बस कीन्हें रंग भरे बचन सुनावैरी ॥ उनको मन कर अपने कीन्हो नाना नाच नचावैरी । सूरज प्रभु ढिग तें कहि बाको ऐसो कौन टरावैरी ॥ १४ ॥ राग भैरव ॥ मुरली हरि तें छूटति है । वाही के बस भये निरन्तर वह अधरनि रस लूटति है ॥ तुम तें निठुर भई वह बोलति तनतें मन उचटावति है । आरज पथ कुल कानि मिटावति सबको निलज करावति है ॥ निडरें रहति डरति नहि काहू मुख पायें बहु फूलति है । अब यह हरितें होति न न्यारी तू काहे को भूलति है ॥ रोम रोम नख सिख रस पागी अनुरागिनि हरि प्यारी है । सूरश्याम वाके रस लुब्धे जानी सौति हमारी है ॥ १५ ॥ राग बिहागरो मुरली हमको सौति भई । नेंक न होति अधरतें न्यारी जैसे तृषा डई ॥ ह्यां चवति ह्यां डारति लैलै जलथल बननि बई । पुनि पुनि लेति सकुच नहि मानति कैसी भई दई ॥ जा रसकों व्रत करि तनु गारयौ कीन्ही रई रई । कहा धरे वह बांस बासकी आस निरास गई ॥ ऐसी कहूं भई नहि देखी जैसी भई नई । सूर बचन वाके टोनासे यूथ मनोज जई ॥ १६ ॥ राग सोरठ ॥ मुरली बचन कहति जनु टोना । जल थल जीव बस्य करि लीने रिझये श्याम सलोना ॥ नेक अधरतें करत न न्यारी प्यारी चियनि लजौना । ऐसी ढीठ बदति नहिं काहू रहति बननि बन जौना ॥ ताकी प्रभुता जाति कही नहिं ऐसी भई न होना । सूर श्याम मुख नाद प्रकासत थकित होत सुनि पौना ॥ १७ ॥ ॥ राग सारंग ॥ मुरली हम पर रोस भरी । अंस हमारो पुनि पुनि अंचवति नेकहु नहिन डरी ॥ बार बार अधरनिसों परसति देखति सबै खरी । ऐसी ढीठ टरी नहि ह्यातें ज्यों हम रिसनि जरी ॥ यहतौ किधों अकाज हमारो अब हमैं जानि परी । सूरज प्रभु यहि निठुर कराये ऐसी करनि करी ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ मुरली के ऐसे ढंग माई । जबतें श्याम परे बस वाके हमहिं सबनि बिसराई ॥ अपनो गुण यह प्रकट करायो निठुर काठ की जाई । अपनेहि आगि दह्यो कुल अपनो सो गुनि गुनि पछिताई ॥ जैसे निठुर आपने घरकी औरनि क्यों ज्यों मानै । सूर बड़ी यह आपु स्वारथी निपट राग करि गानै ॥ १९ ॥ राग कल्यान ॥ बांस बंश बंशी सब बस्य जगत स्वामी । जाके बस सुर नर मुनि ब्रह्मादिक गुनि गुनि गुनन बासर निसि कथत निगम नेति नेति बानी ॥ याकी महिमा अपार शिव न लहत बार पार करता संसार सार कछु रूप येहै । सूर नंद सुवन श्याम जे कहियत तत्वनाम अतिहो आधीन बस्य मुरली केते है ॥ २० ॥ राग कल्यान ॥ मुरली नहि करत श्याम अधरनि तें न्यारी । ठाढे द्वै रहत एक पाय तनु त्रिभङ्ग करत भरत नाद मुरली सुनि पुहमी बस्य सारी ॥ थावर चर चर थावर जङ्गम जड़ जड जङ्गम सलिता उलटी प्रवाह पवन थकितभारी । सुनि सुनि धुनि श्रवन तान खेद गए द्वै पखान तरू डगर धावत खग स्रगनि सुधि बिसारी ॥ उकठे तरु भये पात पाथर पर कमल जात आरज पथ तज्यो नात व्याकुल नर नारी । रीझे प्रभु सूर श्याम बंशी

रव सुखद धाम वासरछ जाम नही जाति कतहुं टारी ॥ २१ ॥ राग सारङ्ग ॥ यह मुरली मोहनी कहावै । सप्त सुरनि मधुरी कहि बानी जल थल जीव रिझावै ॥ ओहि रिझये सुर असुर निपट रचि तिन को वश्य करावै । पुट एकौ इत मद उत अंघत आपु ऊंचे अंचवावै ॥ याके गुण ए सब सुख पावत हमको विरह बढावै । सूर श्याम याकी यह करनी श्यामहि नीके भावै ॥ २२ ॥ राग सारङ्ग ॥ मुरलीतें हरि सबनि बिसारी । बनकी व्याधि कहां यह आई देति सबै मिलि गारी ॥ घर घर तें अब निठुर कराई महा अपत यह नारी । कहा भयो जो हरि मुख लागी अपनी प्रकृति न पारी ॥ सकुचति हौ काहे तुम सजनी कहौ न बात उघारी । नोखी सौति भई यह हमको और नहीं कहुं कारी । इनहूंते अब निठुर कहावति यह आई कुल जोर । सूरदास ऐसी को त्रिभुवन जैसी यह अन प्यारी ॥ २३ ॥ राग मारु ॥ आई कुलदाहि निठुर मुरली माय । याको रीझे गोपाल काहुन लखाय ॥ जैसी यह करनी करी तहीं यह बताई ॥ कसे बस रहत भए यहतो टुन हाय । दिन दिन यह प्रबल होति अधर अमृत खाय ॥ मोहन को यहतो कछू मोहनी लगाय । कबहुं अधर कबहु कर टारत न कन्हाय ॥ सूर प्रभुको कछू ताबिनु औरन सोहाय ॥ २४ ॥ राग बिलावल ॥ मुरली हरिको अपने बसि कीन्हे माय । जोइ जोइ कहति सो करत हैं अति हरष बढाय ॥ घर बन सङ्ग फिरै सदा कहुं करत न न्यारी । राधा आधा देह है तातैं यह प्यारी ॥ सोवत जागत चलत फुं बैठत रस बासों । दूरि कौनसों होयगी लुब्धे हरि जासों ॥ अब काहे को झखति हौ वह भई लड़ैती । सूर श्यामको भावतो यह अन्त चढ़ैती ॥ २५ ॥ राग जैतश्री ॥ मुरली भय रहति लडै बौरी । देखति नहीं नयन निसि बासर लावति कैसी ढौरी ॥ करपर धरि अधरनि आगे करि राखत ग्रीव निहोरी । पूरत नाद स्वाद सुख पावत तान बढावति गौरी ॥ आयसु लिये रहत ताहीको डारी सीस ठगौरी । सूर श्याम की बुधि चतुराई लीनी सबै अजोरी ॥ २६ ॥ राग गौरी । मुरली प्रकट भई सो कैसी । कहां रहति कैसे यह आई गीधे श्याम अनैसो ॥ मात पिता कैसे हैं वाके याको गति प्रति ऐसो । ऐसे निठुर होहिंगे तेऊ जैसे की यह तैसी ॥ यह तुम नहीं सुनीहो सजनी याके कुलको धर्म । सूर सुनहु अबहीं सुख पैहौ करनी उत्तम कर्म ॥ २७ ॥ राग भैरव ॥ याकों गुण मैं जानति हौं । अबतो आय भई ह्यां मुरली वोही नातो मानति हौं ॥ हरिकी कानि करति बह को है कहा करौं उन मानति हौं । अबहीं दूरि करौं गुण कहि कै नेक सकुच जिय आनति हौं ॥ यातें लगी रहति मुख हरिके सुख पावति पहिचानति हौं । सूरदास यह निठुर जाति किन अब मैं यासों ठानति हौं ॥ २८ ॥ राग नट ॥ सुनहुरी मुरली की उतपति । बनमें रहति बांस कुल याको यहतौ याकी जाति ॥ जलधर पिता धरनि है माता अब गुण कहौं उघारी । बनहूं ते याकों घर न्यारो निपटहि जहां उजारी ॥ एकतें एक गुणनि हैं पूरे मात पिता अरु आप । नाजानिये कौन फल प्रगट्यो अतिहि कृपा परताप ॥ बिखासी पर काज न जानै याके कुल को धर्म । सुनहु सूर मेघनि की करनी अरु धरनी को कर्म ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ सुनहु सखी याको कुल धर्म । रहत श्याम अधरनतें लागी

को जानै यह मर्म ॥ वे बरषत जल धरन संपूरन सरस लेत अवगाह । चातक सदा निरास रहत है एक बुन्द को चाह ॥ धरनी जनम देति सबही को आपुन सदा कुमारी ॥ उपजत फिरि ताही में विनसत छोहन को रूकतारी ॥ जाकुल में यह कन्या उपजी याके गुननि सुनाऊं । सूर सुनहु सुख होय तिहारे मैं कहिकै सुख पाऊं ॥ ३० ॥ राग जैतश्री ॥ मातु पिता गुन कहौं बुझाय । अब इनहूंके गुण सुनि लेहु न जातें अवन सिराय ॥ उनके वे गुन निठुर कहावत मुरली के गुन देखौ । तब याको तुम औगुन मानौ जब कछु अचरज पेखौ ॥ जाकुल तें उपजी ता कुलकों जारि करति है छार । तनहीं तनतें अगिनि प्रकासति ऐसी याकी झार ॥ वह जो श्याम सुनै अवननि भरि करतें दैहैं डार । सूरदास प्रभु धोखे याको राखत धरनी धार ॥ ३१ ॥ राग गौंड मलार ॥ यह मुरली सखि ऐसो है । रीझे श्याम बात सुनि मोठी नहि जानत यह नैसी है ॥ देखौ याके भेद सखीरी कैसे मनहै पैसो है । हम पर रहति भौंह सतराये चतुर चतुरई जैसो है ॥ योंगुन रहत चुराए हरिसों देखौं तुमऐसी सोहै । सुनहु सूर वैरिनि यह हम को प्रकट सौति ह्वै वैसो है ॥ ३२ ॥ राग नट ॥ यह तो भली उपजी नांहि । निदरि बैठो सौतिह्वै कै देखि देखि रिसाहि ॥ कहा याकी सकुच मानति कहो घात सुनाय । तबहि बस करि लियो हरि को हम सबनि बिसराय ॥ प्रबल पावस शरद ग्रीषम कियो तपु तन गारि । तिनहि तू लै आपु बैठी प्राण पति बनवारि ॥ जो भई सो भई अब यह छोडि दे रस बाद । सूर प्रभु के अधर लगि लगि कहा बोलति नाद ॥ ३३ ॥ ॥ राग कान्हरौ ॥ ऐसी कहौ निदरि मुरली सों किर्पा तौ अब बज्रत भई । सकुचे नहीं बनति री माई घर घर करि हौ दई दई ॥ देखति नहि चतुराई वाकी मुंह पायें ज्यों फूलि गई । अधर सुधा सर्वसु जो हमारे सो याने सब लूटिलई ॥ ओछी जाति डोम के घरकी कहा मंच करि हरि बस भये । सूरदास प्रभु बड़े कहावत ऐसी को धरि अधर लये ॥ ३४ ॥ राग बिहागरौ ॥ या की जाति श्याम नहिं जानी । बिन बूझे बिन ही अनुमानें करि बैठे पटरानी ॥ बारम्बार लेत आलिङ्गन सुनि सुनि मधुरी बानी । गांव ठांव नहि बास बंशीको याहि कहां तें आनी ॥ जिनकुल दाहत बिलम्बु न कोन्हों कौन धर्म ठहरानो । सुनहु सूर वह करनी यह मुख जाति न कछू बखानी ॥ ३५ ॥ राग धनाश्री मुरली आप स्वारथिनि नारि । ताको हरि परपीत करत हैं जीति न जानति हारि ॥ ऐसे वश्य भये हरि वाके कहा ठगौरी डारि । लूटति है अधरनि को अंहृत खाति देति है ढारि ॥ को बकि मरै बनी है जोरी टूक तोरति है बारि । सूर श्याम को भले कहति हौ देउं कहा अबगारि ॥ ३६ ॥ राग सोरठ ॥ हमतप करि तनु गारयो जाकों । सो फल तुरत मुरलिया पायो करी कृपा हरि ताकों ॥ कपटी कुटिल और नहि कोऊ जैसे हैं व्रजराज । जो सनमुख सो बिमुख कहावै बिमुख करै सुख राज ॥ बूझी बात नंदनन्दन की मुरली के रंग पागे । सूर अधर रस आहि हमारे ताको बकशन लागे ॥ ३७ ॥ ॥ राग रामकली ॥ मुरली हम सों बैर बढायो । चली निपट इत राय नेंक ही हरि अधरनि परसायो ॥ फूली फिरति श्याम कर बैठी योंही गर्व बढायो । जो निधनी धन पाय

अचानक नयन अकाश चढायो ॥ सूरश्याम देखत सिहातहैं ताको जाय रिझाये । त्रिभुवन पति श्री पति जे कहावत तिन मुरली बस पाये ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ मुरली अति चली इतराय । अछै निधि जनु लूटि पाई क्यों नहीं सतराय ॥ आदि ज्यों यह बड़ो होती चलति सीश नवाय । सबनि कों लै सङ्ग चलती दौरि मिलती धाय ॥ बांस ते उत्पत्ति जाकी कहा बुधि ठहराय । सूर प्रभु ता वश्य जैसें रहे तनु बिसराय ॥ ३९ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम सुहागिनी मुरली । भेद नाना करति हरषति सुनि हरषि उरली ॥ सदी तासों रहत पागे नन्द मधु मुरली । रैंनि बासर टरति नाही रहति जहं दुरली ॥ भई ब्याकुल चरित देखत नारि ब्रज पुरली । सूर आरज पथ बिसारयो भवन डर मुरली ॥ ॥ ४० ॥ राग केदारो ॥ मुरली एते पर अति प्यारी । यद्यपि नाना भांति नचावति सुख पावत गिरिधारी ॥ रहत हजूर एक पग ठाढे मानत हैं अति त्रास । करतें कबहुं नेक नहि टारत सदा रहत ता पास ॥ बारम्बार देत आयस हरि पर राखति अधिकार । सूर श्याम को अपबस कीन्हों रहत रही बन झार ॥ ४१ ॥ राग गौरी ॥ मुरली श्यामहि मूड चढाई । बारंबार अधर धरि याको कान्ह गर्व कराई ॥ तबतें गनति नहीं यह काहू जबतें उन मुह लाई । ना जानिये और कहा करि है देखति नहीं अलाई ॥ अपने बश्य किये नद नन्दन वैरिनि हम को आई । सूरज प्रभु ए ते परमाई मानत बहुत बड़ाई ॥ ॥ ४२ ॥ राग नट ॥ बड़े की मानिये जो कानि । कहा ओछे को बड़ाई जाहि ओछी बानि ॥ बड़ौ निदरै नहीं काहू ओछोई इतराय । नीर नारी नीचही को चले जैसे जाय ॥ रही बनमें घरहि ल्याये महा बुरी बलाय । निदरि कै यह सबनि बैठी सौति उप जी आय ॥ दिनहि दिन अधिकार बाढ्यो आगे रहत कन्हाय । सूरदास उपाधि बिधना कहा रची बनाय ॥ ४३ ॥ राग गौरी ॥ मुरली हमहि उपाधि भई । नंद नदन हम सबनि भुलाई उपजी कहा दई ॥ कैसे अब यह दूरि होति है नीकी मिली रुई । देखौ री सम्बन्ध पाछिलो बर बिष बेलि बई ॥ जारे जरै न काटे सूखै छै गई अछत रुई । सूर श्याम अरुझई याको ब्रज में आनि छुई ॥ ४४ ॥ राग गौरी ॥ दिनहि दिन मुरली ढीठ भई । रहति रही बन झार प्रात में सोई सुधा मई ॥ प्रकटहि भाग सुहागिनि हरि की अनुरागी हरि याके । धन्य धन्य बस भये रहत हैं श्याम सुन्दर री जाके ॥ वाको भाग सुहाग सांचिलो कबहुं सङ्ग नहि त्यागतु । सूरश्याम राजा वह रानो वाको सरि कोलागतु ॥ ४५ ॥ राग हमीर ॥ मुरली की सरि कौन करै । नंद नद त्रिभुवन पति नागर सो जो बश्य करै ॥ जबही जब मन आवति तब तब अधरनि पान करै । रहत श्याम आधो न सदाई आय सु तिनहि करै ॥ ऐसी भई मोहनी माई मोहन मोह करै । सुनहु सूर याके गुन ऐसे ऐसो करनि करै ॥ ४६ ॥ राग गौरी ॥ मुरली आपुन काज कियो । आपुन लूटति अधर सुधा हरि हम को दूरि कियो ॥ नंद नंदन सब भये बचन सुनि तिनहि बिमोह कियो । थावर चर जङ्गम जड़ कीनें सदन बिमोह कियो ॥ जाकी दसा रही नहि तासों सबही चलत कियो । सूर दास प्रभु चतुर शिरोमणि तिनको हाथ कियो ॥ ॥ ४७ ॥ राग गौरी ॥ मुरलिया श्यामहि और कियो । और दशा औरै मति ह्वै गई

और विवेक हियो ॥ तबतें निठुर भये हरि हमसों जब तेहि हाथ लई । निशि दिन हम उन के संग रहतो मनौ ह्वै गई नई ॥ यहि औरै करि डारे भारे हम कों दूरि करी । घरकी बन बन की घर कीनी सूर सुजान हरी ॥ ४८ ॥ राग कल्याण ॥ सजनी श्याम सदा री ऐसे । एक अंग की प्रीति हमारी वे जैसे के तैसे ॥ ज्यों चकोर चन्द्रा को चाहै चन्द्रा नेंकु न मानै । जल के तीर मीन तन त्यागे नीर निठुर नहि जानै ॥ ज्यों पतङ्ग उडि परत जोति तकि बाके नेंक नभाय । चातिक रटि रटि जलद मनावै जल वो डारत जाय ॥ उनहूं तें निर्दई बडे वे तैसिय मुरली पाय । सूरश्याम जैसेतैसो वह भली बनी अवगाय ॥ ॥ ४९ ॥ राग रामकली ॥ मुरली को मन हरि सो मान्यों । हरि को मन मुरली सों मिलि गयो जैसे पै अरु पान्यों ॥ जैसे चोर चोर सों तैसौ ठग ठग एकै जानि । कुटिल कुटिल मिलि चले एक ह्वै दुरुनि बनी पहिचानि ॥ ए बन बन नित धेनु चरावत वह बन ही को आहि । सूर गढी जोरी विधना की जैसी तैसी ताहि ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ काहे न मुरली सों हरि जोरैं । काहे न अधरनि धारै पुनि पुनि मिली अचानक भोरैं ॥ काहे न तेहि कर धरि राखै क्यों नहि ग्रीव नवावै । काहे न तनु त्रिभङ्ग करि धारै ताके मनहि चुरावै ॥ काहे न यों आधीन रहैं ह्वै ए अहीर वह वेनु । सूर श्याम करतें नहि टारत री बन चारत धेनु ५१ ॥ राग बिलावल ॥ वाही के बल धेनु चरावत । वहै लकुट जाकी वह मुरली बातें वे सुख पावत ॥ वह अति निठुर वे बातें अतिही मिलि कै घात बनावत । बन हीं बन में रहत निरन्तर ताहि बजावत गावत ॥ वाके बचन अमृत हैं इनको ताहि अधर रस प्यावत । सूरश्याम बनबारी कहियत वह बन बांस कहावत ॥ ॥ ५२ ॥ राग रामकली ॥ बैरु सदा हमसों हरि कीन्हों । प्रथमहि रोहि रहे गहि मारग दधि लै जान न दीन्हों ॥ पुनि मन हरयो भेदही भेदहि इन्द्री संगहि लीन्हों । ता पाछें ए नयन बुलाये उन उनही को चीन्हो ॥ अब मुरली बैरिनि उपजाई निपट भई हम भीन्हों । सूर परे हरि खेज हमारे ऐसे परम नगीन्हों ॥ ५३ ॥ राग बिलावल सुनि सजनी यह साची बानी बारे तें नगधर कहवायो । धन्य धन्य कविता पितु माता जिनि कहि कहि उपमा वह गायो ॥ इन्दु बदन तन श्याम शुभग घन तड़ित बसन सत भाय बतायो । अलक भृंग पटतर को सांचे कर मुख चरण कमल करि गायो । ए उपमा इन ही को छाजैं अब मुरली अधरनि परसायो । सूर अंग यह आहि हमारो मुरली सबै अकेले पायो ॥ ५४ ॥ राग रामकली ॥ सजनी अब मोहि समुझि परी । अङ्ग अङ्ग उपमा जे हरि के कविता बनै धरी ॥ भंवर कुटिल कुन्तल की शोभा सो हम सही करी । मुख छवि शशि पटतर धरि दीन्हों यह सुनि अधिक डरी ॥ नव जल धर तनु कहियत शोभा दामिनि पट फहरी । सूर सहाय भली यह मुरली अपने कुलहि जरी ॥ ५५ ॥ राग रामकली ॥ तातें मुरली के बस श्याम । जैसे को तैसोय मिलाई ए विधना के काम ॥ नेक न करत नियारी करतें कुल जारिनि भइ बाम । निशि बासर बाके रस पागे बैठे ठाढे जाम ॥ सूर दास प्रभु को हितकारिनि हम पर राखति ताम ॥ ५६ ॥ राग धनाश्री ॥ विधना मुरली सौति बदाई । कुटिल बांस की बंस बिनासनि

सबहि निरास कराई ॥ जो यह ठाट ठाटि वेहि राख्यो कुलकी होती कोऊ । तौ इतनो दुख हमहि न होत्यौ औगुन आखर दोऊ ॥ ए निर्दई निठुर वह बन की घर अब नहीं प्रकाश । सूर दास व्रज नाथ हमारे जैसे भये उदास ॥ ५७ ॥ राग सोरठ ॥ अब मुरली पति क्यों न कहावत । राधा पति काहे कों कहिये सुनत लाज जिय आवत ॥ वह अन खाति नाम सुनि हमरो इत हमको नहि भावत । कै मिलि चलै फेरि हमही को कै बनही किन छावत ॥ का ओछे की नाव चढब है अपनी विपति करावत । सुनहु सूर यह कौन भलाई हंसि हंसि वैरु वढावत ॥ ५८ ॥ राग नट ॥ औरु कहो हरि को समुझाय । अब यह दुविधा काहे राखत बाही मिलिये जाय ॥ हम अपनो मन निठुर करायो बात तुहारे हाथ । भली भई अब सकुच न लागे कबि गावत व्रजनाथ ॥ अब मुरली पति जाय कहावहु वह बांसिनि तुम काठ । सूर दास प्रभु नहि चतुराई सुरलि पढ़ायो पाठ ॥ ५९ ॥ राग भैरव ॥ मुरली को कह लागैरी । देखो चरित जशोदा सुत को वह जुवतिहि अनुरागैरी ॥ इक मद उनहि कहति ही दो बल देउ चढी वह पागे री । कर धरि अधर परसि आलिङ्गन देत कहां गठि भागेरी ॥ वह लम्पट धूतिनि टुनहाई जानि बूझि जो खागेरी । सुनहु सूर वह यहई चाहै ता पर ए रिस पागेरी ॥ ६० ॥ राग सारङ्ग ॥ बावरी जो बांसुरी सों खरै । वह उन सों प्रेम नेम सों तुमसों नाहि न आखी याते गिरिधारी लाल लैलै अधर धरै ॥ जौलों मधु पिवति रहति तौलों जीवति है घरी घरी पलु पलु क्षिणु क्षिणु नहि विसरै । सूर दास प्रभु वाके रस बस भये रहत आखी तातें बाकी सरवर कहो धौं कब न करै ॥ ६१ ॥ राग बिलावल ॥ वह मुरली बन झार की बिनु ल्याये आई । हमही को दुख देन को व्रज भये कन्हाई ॥ औरहि तें हमसों लरै करते वरि आई । गागरि फोरै घाट में दधि माट ढराई ॥ पुनि रोकत हैं वे दान को अङ्ग भूषण माई । सीखो चोरी आदि ते मनु लयो चुराई ॥ पुनि लोचन अटके रहे आजहुं नहि आये । हमसों उचटे रहत हैं मुरली चित लाये ॥ दोष कहा वाको सखी इनके गुण ऐसे । सूर परस्पर नागरी कहे श्याम अनैसे ॥ ६२ ॥ राग सोरठ ॥ सखी री नख सिख तें हरि खोटे । ए गुण तबही तें वे जानत जब जननी कहै छोटे ॥ अम्बर हरे जाय जमुना तट राखे कदम चढाय । तब के चरित सबै जानति हौ को हो निलज बनाय ॥ जब हम तप करि करि तनु गारयो अधर सुधा रस काज । सो मुरली निदरे अंचवति है ऐसे ए व्रज राज ॥ हमको यों औरनि को ऐसे निधरक दीनों डारि । सूर इते पर चतुर कहावत कहा दीजिये गारि ॥ ६३ ॥ राग केदारो ॥ यहि बांसुरि माई सबै चुराये हरि तो चुराये अकेले चीर । मनहि चोरि चितवतिहि चुराये गई लोक लाज कुल धर्म धीर ॥ तबतें भई व्याकुल अति अकुलता आधीर । सूर दास प्रभु निठुर निठुर वह नहि जानत पर हिरदै पीर ॥ ६४ ॥ राग गौरो ॥ तुम अब हरि को दोष लगावति । नंद नदन खोटे तू कीन्हें मुरली भली कहावति ॥ यह छिनारि लम्पट अन्याइन कुल दाहति नहि बार । मधुर मधुर बानी कहि रिझये तौ न साजि सिंगार ॥ वहै आय टोना सिर डारति सप्त सुरनि कलगान । ऐसे बस मिलि आय कै ह्वै

गए श्याम अजान ॥ पुरुष भंवर उनकों कहां लागे नारि भजै जब आय । सूरज प्रभु तब कहा करै री ऐसी मिली बलाय ॥ ६५ ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली को करि साध धरी । जिन रिझए मन हरन हमारो है मोहनी ढरी ॥ ऐसी कहूं भई नहि होनी जैसी इनहि करी । अब जहं तहं धनि धन्य कहावति यह सुनि रिसनि जरी ॥ सूर श्याम अधरनि के लागे खोटी भई खरी ॥ ६६ ॥ रागमारू ॥ मुरली नहि धरत धरनि करतें कहुं टरत नही अधरनि धरें रहत खरे ढरत श्याम भारी । कबहुं नाद भरत करत अपनो मन बस्य कहां कबहुं रीझि मगन होत देखत व्रज नारी ॥ कबहुं खटकि जात गात तानन जब कहति बात सुनत श्रवण रस अघात लागति अति प्यारी । जा हित तप कियो गारि सो रस लै देत डारि धरनि जल बिडूंगर बन द्रुमनि मे बिथारी ॥ ऐसे ढंग करै आय हम कों उपजी बलाय ताको तुम भली कहति नाहि आदि जानो । देखो याके उपाय जै जै तिहुं भवन गाय सूर श्याम अपनो करि दिन दिन इतरानी ॥ ६७ ॥ राग धनाश्री ॥ वृथा तुम श्यामहि दोष न देत । जो कछु कहो सबै मुरली को मन दै देखो चेत ॥ पहिलेहि आनि सुप्रीति बढाई को जानै यह घात । बन बोली हम धाई आई गृह जन तजि पितु मात ॥ जैसे मधु पर बालपटा ने वैसेई याके बोल । सूर मिली यहि भांति आय के त्यों रहती निरमोल ॥ ६८ ॥ राग नट ॥ मुरली प्रकट कीन्ही जाति । तब कही इतराय बोली बास बंस कुजाति ॥ अहो निशि रस अधर अंचवत तऊ नहि तृप्साति ॥ निदरि बैठी सबनि कों यह पुलकि अंग न समाति ॥ छबो ऋतु तप करि पची हम अधर रस के लोभ । सूर प्रभु सों याहि बकस्यो कछु न कीन्हों छोभ ॥ ६९ ॥ राग सारंग ॥ क्यों तुम श्यामहि दोष लगावति । क्यों मुरलीको करत प्रशंसो यहतो मोहि न भावति ॥ याकी जरनि नहीं जौं जानति कहि कहि मैं समुझावति ॥ कपटिनि कुटिल काठ की संगिनि ताकों कहा बतावति । सूर श्याम इनहीं बहकाये भई उदासनि गावति ॥ ॥ ७० ॥ राग धनाश्री ॥ यह मुरली जरि गई न तबही । जब अपनो कुलदाह करायो तब कैसें निबही ॥ ऐसी चतुर चतुरई कीन्ही आप बंची सब जारी ॥ कैसें मिली सूर के प्रभुकों बिधना की गति न्यारी ॥ ७१ ॥ राग सारंग ॥ यह हमकों बिधना लिखराखी । नाम न गांव कहां तें आई श्याम अधर रस चाखो ॥ यह दुख काहि कहौं को जाने ऐसी कौन निवारै । जो रस धरयो कृपिन की नाईं सो सब ऐसेहि डारै ॥ यह दूषण बाही कों कहिये कै हरि हू सों दीजै । सुनहु सूर कछु बच्यो अधर रस सो कैसे करि लीजै ॥ ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ अधर रस अपनोइ करि लीन्हों । जो भावे सो अंचवति निधरक और सबनि कों दीन्हों ॥ मुरली हमहि तुच्छ करि मानति बैरु इते परमाने । जैसी वह तैसी सब जानति कुटिल कुटिल पहिचाने ॥ औगुण साधि गढो नख शिखतें तैसिय बुद्धि बिकासै । सूर दास प्रभु के मुख आगे मीठे बचन प्रकासै ॥ ७३ ॥ राग गौरी ॥ यह मुरली ऐसी है माई । निदर सौति यह भई हमारी कहा कहौं अधिकाई ॥ ऐसें पियति अधर रस निधरक फेरति आपु दुहाई । हम देखति वह गरजति बैठी जैसे बदन लगाई याकी श्याम प्रतीति करत हैं कछु पढ़ि टोना लाई ॥ सूर सुनत ए बचन माधुरी श्याम

दसा बिसराई ॥ ७४ ॥ राग गौरी ॥ मुरली मोहनी भई । कीनी करनी देवदनुज पति सेा बिधि उलटि ठई ॥ उनपै निधि हम व्रत सागर मथि पाई पियुष नई । सिद्धि सुधा हरि वदन इन्दु छवि सेां छलि छीन लई ॥ आपु अंचै अंचवाय सप्त सुर कीनी दिग बिजई । एकहि पुट उत अमी सूर इत मदिरा मदन मई ॥ ७५ ॥ राग गौरी ॥ सुर लिया कपट चतुरई ठानी । कैसें मिलि गइ नंदनदन कों उनि नाहिन पहिचानी ॥ इक वह नारि बचन मुख मीठे सुनत श्याम ललचाने । जाति पांति की कौन चलावै बाके रङ्ग भुलाने ॥ जांको मनु मानत है तासें सेा तहईं सुख माने । सूर श्याम वाके गुण गावत वह हरि के गुण गाने ॥ ७६ ॥ राग गौरी ॥ मुरली यह तेा भली न कीनी । कहा भयेा जेा श्याम हेत सों अधरनि पर धरि लीनी ॥ अंगुरी छुवत गह्यो इन पहुंचौ कैसे दुरति दुराए । ओछो तनकहि मैं भरुहानी तनकहि बदन लगाए ॥ जेा कुल नेम धर्मकी होती दिन दिन हेा तौ भार । सूर दास न्यारे भये हमतें डोलत नंद कुमार ॥ ७७ ॥ रागगौरी यह मुरली कछु भलेा न कीन्हो । अधर सुधा रस अङ्ग हमारेा बांटि बांटि सबहिनि कों दीन्हों ॥ बारिध तृण द्रुम शैल सलिल पर खग सीचति बसुधा मृग मीनेा । जाने स्वाद कहा श्रीमुख सेा छूछो हियेा सारखिन हीनेा ॥ जा रसकों कालिंदी के तट पूजति गोरि भयेा तन क्षीनेा । सूर सेा रस यहि परसि कुटिल मति सबहिन के देखत हरि लीन्हेां ॥ ॥ ७८ ॥ राग कान्हरो ॥ मुरली जेा अधरनि रट लागी । ज्यों मरकट कर होत नारियर तैसे यहेा अभागी ॥ अमृत लेति रहै कह हिरदै द्रवत सांस के मारग । बैरु बिषै अंचवावति है यह लै डारति बन सागर ॥ यह बिपरीति नही कहुं देखी श्याम चढाई सीस । न तरु सूर देखति मुरली को कहा बाहि कर बोस ॥ ७९ ॥ रागगौरी ॥ अधर रस मुरली लूटि करावति । आपुन बार बार लै अंचवति जहां तहां ढरकावति ॥ आजु महा चढि बाजी बाको जेाइ जेाइ करै बिराजै । करि सिंहासन बैठि अधर सिर छत्र धरे वह गाजै ॥ गनति नही अपने बल काहू श्यामहि ढीठ कराई । सुनहु सूर बनकी बस बांसिनि व्रज में भई रजाई ॥ ८० ॥ राग बिलावल ॥ यह मुरली कुल दा हन हारी । सुनहु श्रवन दै दै नारी ॥ कपटी कुटिल बांस की जाई । बनतें कहा घरहि यह आई ॥ जे अपने घर बैरु बढावै । तनकी तन अति आगि लगावै ॥ ऐसी की सङ्गति हरि कीन्ही । जाति नहीं बाकी उन चीन्ही ॥ जैसे वे तैसी वह आई । विधना जेारी भली बनाई ॥ मुरलीके संग मिले मुरारी । भाग सुहागिनि पिय अनु प्यारी ॥ ए कुलटा कलीट हैं दोऊ । इक तें एक नही घट कोऊ ॥ अधरनि धरत सबनि के आगे । करते नेक कहूं नहि त्यागे ॥ इनके गुण कहिये सेा थोरे । सूर श्याम बंशी बस मोरे ॥ ॥ ८१ ॥ राग बिलावल ॥ हरि मुरली के हाथ बिकाने । वह अपमान करति न लजाने वह ऐसे करि लिये दिवाने । बार बार बा जसहि बखाने ॥ ठाढे रहत पायन पिराने । ए ते पर मन रहत डराने ॥ आयसु देत सुनत मुसुकाने । जीवन जन्म सुफल कै माने ॥ वह गरजति वे हरे बताने । बार बार अधरनि पर ठाने ॥ त्रिभुवन पति जे कहियत बाने ताते सब तनु दशा भुलाने ॥ वा आगे हम सबनि सुगाने । वह गावति वे सुनत पगाने ॥

सूर नेति निगमनि जे गाने । ते मुरली के नाद ठगाने ॥ ८२ ॥ राग बिलाबल ॥ मुरली निदरे श्याम को श्यामहि निदराई । मधुर बचन सुनि के ठगे ठग मुरली खाई ॥ रहत बश्य बाके भये सब मेटि बडाई । वह तन मन धन ह्वै रही रसना रट माई ॥ वह कर वह अधरनि रहै देखो अधिकाई । वहै कहति सो सुनत हैं ए कुंवर कन्हाई ॥ बनकी बापुरी घर वह ठकुराई । सूर श्याम कों ता बिना कछु नही सुहाई ॥ ८३ ॥ राग राम कली ॥ सखी री माधोंहि दोष न दीजै । जो कछु करि सकिये जोइ सब या मुरली को कीजै ॥ बार बार बन बोलि मधुर धुनि अति प्रतीति उपजाई । मिलि श्रवणनि मन मोहि महा रस तनहु कि सुधि बिसराई ॥ मुख मृदु बचन कपट चित अन्तर हम यह बात न जानी । तजि तजि लोक लाज बिधि को बिधि जो यह कही सु मानी ॥ अब समुझो मिलि एक प्रकृति है सु बिधि के सङ्गति साधी । सूर दास क्योंहू करुणा मय परति नहीं आराधी ॥ ८४ ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामहि दोष देहु जिनि माई । कहौ जाहिरी बांस जाति किनि कौने तोहि बुलाई ॥ उनकी कथा मनहि दै राखौ याकी चलत ढिठाई । वे जो बुरे भले तौ अपने यह लङ्गरि टुनिहाई ॥ ऐसो रिस आवति है मोकों दूरि करों झहराई । सूर श्याम को कानि करति हौं ना तरु करति बडाई ॥ ८५ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामहि दोष कहा कहि दीजै । कहा बात मुरली सों कहिये सब अपनेहि सिर लीजै ॥ हमही कहति बजावहु मोहन यह नाहीं हम जानी हम जानी यह कांसुरिया को जानै पट रानी ॥ बारे ते मुह लागत लागत अब ह्वै गई सयानी । सुनहु सूर हम भोरी भारी याकी अकथ कहानी ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनु सखि बात एक तुम मोसों । तुम अपने सिर मान लई क्यों मैं वाही को कोसों । जौ वह भली नेकहूं होती तौ मिलि सबनि बतातो । वह पापिनी दाहि कुल आई देखि जरति मेरि छाती ॥ वैसेकी कह कानि मानिए वह हत्यारिनि नारी ॥ सूर श्याम ए गुण कह जानै धोखे कीनी प्यारी ॥ ८७ ॥ राग आसावरी ॥ बिन जाने हरि याहि बढाई । वह तौ मिली बचन मधुरे कहि सुनतहि दई बडाई । रिझै लियो हरिको टोना करि तुरतहि बिलम्ब न लाई । उनि लैकर अधरनि पर धारी अनुपम राग बजाई । मानो एकहि संग रहेतें ऐसे मिले कन्हाई । सूर श्याम हम सबनि बिसारी जबहीतें वह आई ॥ ८८ ॥ राग बिलावल ॥ सुनि सजनी एक कथा कहोरी श्याम करैं सो कोउ न करै । यह महिमा करताकी अगनित कौने बिधि जो काहि टरै । बन झारनिकी घर बैठारी श्याम अधर सिर छत्र धरै । हमको घर कुल कानि छोडाई ऐसी उलटी रीति जरै । अधर सुधा रस अपनो जानति दिनही दिन यह आस भरै । सूर श्याम ताको कर लीन्हे वहै सुधा सब ताहि भरै ॥ ८९ ॥ राग आसावरी ॥ यह मुरली वहि गई न न्यारे । निदरे हमहि सुधा रस आंचवति टरति नही कहुं टारे । देखो भाग जरतते उबरी मिली आनि हरि पास । इनतौ ताहि लूटिसी पाई हम करि दई निरास । अब यह भई श्याम पटरानी श्याम भयो बस वाको । सुनहु सूर ए चरित करति है लखै कौन गति ताको ॥ ९० ॥ राग कान्हरो ॥

मुरली कहैं सो श्याम करैरी । वाहीके बस भए रहत हैं वाके रंग ढरैरी । घर बन रैनि दिना संग डोलति करतें करत न न्यारी । आई बन बलाय यह हमको कहा दीजिए गारी । अबलौं रहे हमारे दाईं बहि अपनो अब कीन्हे । सूर श्याम नागर वह नागरि दुहुनि भले करि चीन्हें ॥ ९१ ॥ राग गौरी ॥ मुरलिया हरिको कहा कियो इनको नहीं और कछु भावै यौं अपनाय लियो । औरै दशा भई मोहन की कहा मोहनी लाई । अधर सुधा रस देत निरन्तर राखत ग्रीव नवाई । कर जोरे आज्ञा प्रति पालत कहा रही दुखदाई । सुनहु सूर ऐसी नान्हीं को काहे लाड लडाई ॥ ९२ ॥ राग गौरी ॥ ज्यौं ज्यौं मुरली महत दियो । त्यौं त्यौं निदरि श्यामको मिलि तन बदन पियूष पियो । राखे रहत पानिपल्लव गहि हीतन काज बियो । पौढति आपु अधर सज्या पर सकुचत नहीं हियो । जग जान्यौ रति पति शिव जारो सो एहि शब्द जियो । मेटी बिधि मरजाद सूर यहि जोइ जोइ कह्यो सो कियो ॥ ९३ ॥ राग गौरी ॥ मुरली महत दियो इतरानी ॥ निदरि पियति पियूष अधर को श्याम नहो यह जानी । कर गहि रही टरति नहि नेकहु दूजो काम न होई । लाज नही आवति अति निधरक रहति बदन पर सोई । शिव को दह्यौ काम यहि ज्यायो शब्द सुनत अकुलाई । आरज पथ विधिकी मरजादा सूर सबनि बिसराई ॥ ९४ ॥ राग गौरी ॥ जब जब मुरली के मुख लागत । तब तब कान्ह कमल दल लोचन नख सिखते रस पागत । पलकहि मांझ पलटि सेखीधत प्रगटत प्रीति अनागत । दसन बसन फरकत नासा पुट सुधि अरु चितवत त्यागत । बातन कहत रहत ठाढे ह्वै नहि आलिङ्गन मागत । सूर दास स्वामी वंशी बस मुरछे नेक न जागत ॥ ९५ ॥ राग रामकली ॥ जबहीं मुरली अधर लगावत । अङ्ग अङ्ग रस भरि उमगति है ताते पुनि पुनि भावत । औरै दशा होति पलकहि मै अगम प्रीति पर कासत । तब चितवत काहू तन नाही जबहि नाद मुख भाषत । ग्रीव नवाय देत हैं चुम्बन सुनि धुनि दशा बिसारत । सूर मुरछि लटकत ताही पर ताही रसहि बिचारत ॥ ९६ ॥ राग धनाश्री ॥ मुरली तऊ गोपालहि भावति । सुनि री सखी जदपि नन्दलालहि नाना भांति नचावति । राखति एक पाय ठाढे करि अति अधिकार जनावति । कोमल तनु आज्ञा करवावति कटि टेढे ह्वै आवति । भृकुटी नयन अधर नासा पुट हमपर कोप कंपावति । सूर प्रसन्न जानि एकौ पल धरतें सीस डुलावति ॥ ९७ ॥ राग रामकली ॥ मुरली हरिको नाच नचावति । एते पर यह बांस बंसुरिया नन्द नन्दनको भावति । ठाढे रहत वश्य ऐसे ह्वै सकुचत बोलत बात । वह निदरे आज्ञा करवावति नेकहु नहि न खजात । जब जानति आधीन भए हैं देखत ग्रीव नवावत । पौढत अधर चलत कर पल्लव रन्ध्र चरन पलटावत । हम पर रिस करि करि अब खोकति नासा पुट फरकावत । सूर श्याम जब जब रीझत हैं तब तब सीस डुलावत ॥ ९८ ॥ राग गौरी ॥ मुरली मोहे कुंवर कन्हाई । अंचवत अधर सुधा बस कीन्हे अब हम कहा करैं री माई । सरबस हरि लै धरी सबनि को ऐसे नाहि न देत दिखाई । गाजति बाजति बैठि दुहूं कर

अपने कानन सुनत पराई । जेहि तनु अगिनदह्यो अपनो कुल तामें कैसे होत भलाई । अब सुनि सूर कबन विधि कीजै बनकी व्याधि सांझ घर आई ॥ ९९ ॥ राग जैतश्री ॥ मुरली मोहि लियो गोपाल । बस करि आपु अधर रस अंचवति करि पाए हरि ख्याल । सर्बस अधर सुधा रस सबको कोउ देखन नहि पावति ॥ आपुहि पियति अघातन तासै पुनि पुनि लोभ बढावति । दुहुं कर बैठि गरबसों गरजति बादति सुनतिन बात । एकुल दाहिनि डरैते काते अतिहि निर्दय गात ॥ बारेतें तपु कियो जौन हित सो गंवाइ पछितानी । सूर दास प्रभु व्याधि सांझ घर देखि देखि अकुलानी ॥ १०० ॥ राग गौरी ॥ सखी मुरली भइ पटरानी । अधर सुधा मुख परत श्याम के सो पीवति इत रानी । मोहे पशु पक्षी द्रुम बेली जमुना उलटि बहानी । सुर नर मुनि बस भए नादके सबै बश्य मन ध्यानी । तिहूं भुवन मैं चलति बडाई अस्तुति मुख मुख गानी । सूर श्यामकी अब अर्धङ्गिनि रही रिझै लपटानी ॥ १०१ ॥ राग गौरी ॥ श्याम नृपति मुरली भइ रानी । बनतें ल्याय सुहागिनि कीनी और नारि उनको न सोहानी । कबहुं अधर आलिङ्गन कबहूं बचन सुनत तनु दसा भुलानी । सूर दास प्रभु बन भीतरतें तब अपने घर आनी ॥ १०२ ॥ मुरली के बचन ॥ राग सूहो ॥ जब सुनिहो कर तूति हमारी । तब मनमन तुमही पछितैहो वृथा दई कहि याकौं गारी ॥ तुम तप कियो सुन्यो मैं सोऊ रिस पावहुगी और कहारी ॥ मो समान तपु तुम नहि कीन्हो सुनहु करौ जिनि सोर वृथारी । मैं कह कहौं सुनहुगी तुमहीं जगत विदित यह बात हमारी । सूर श्याम आपुनही कहिए सुनत कहा मुसुकात मुरारी ॥ १०३ ॥ राग सारङ्ग ॥ मोपर ग्वालि कहा सतराति । कहा गारी देति मोकों कहा उघटति जाति । जो बडी तुम आपुही को तुमहि होहु कुलीन । मैं बंसुरिया बांसकी तौ भई जो अकुलीन । पीर मेरी कौन जानै छांडि इक करतार । सूर प्रभु सङ्ग देखि काहे खिझति बारं बार ॥ १०४ ॥ राग आसावरी ॥ मैं अपने बल रहति श्याम सङ्ग तुम काहे दुख पावति री । मोपर रिस पावति हौ पुनि पुनि कछु कह बरन करावति री ॥ तुमहुं करौ सुख मैं वरजतिहौं ऐसेहिं सोर लगावति री । कहा करौं मुहि श्याम निवाजी कहि नहि दूरि करावति री ॥ वृथा बैरु तुम करती निसि दिन आछो जनम गंवावतिरी । सूर सुनहु ब्रज नारि सयानी मूरख ह्वै समुझावति री ॥ १०५ ॥ राग रामकली ॥ सुनहु एक बात हो ब्रज नारि । रिस किए पावति कहाहो कहा दीन्हे गारि ॥ जाति उघटति पांति उघटति लेतिहौं सब मानि । तुम कहति मैंहूं कहति सोइ मोहि बनते आनि ॥ कर्म को यह बहुत नाही श्याम अधरनि धारि । सूर प्रभु जो कृपा कीनी कहा रही बिचारि ॥ १०६ ॥ राग सारङ्ग ॥ ग्वारिनि कतिहि बरहनो देहु । बूझहु धौं यह बात श्यामसों जिते दुख जुरयो सनेहु ॥ जनमतही हम भई बिरत चित छांडि ग्राम गुण गेहु । एकहि पाय रहति नित ठाढी हिम ओषम ऋतु मेहु ॥ तज्यौ मूल साखा सुपत्र सब सोच सुखानी देहु । मुरली न तनु मनु अलि सुखाकत बिकट बनायो बेहु ॥ कतहो बकति बांसुरी जानै करि करि तामसु तेहु । सूर श्याम को

तुमहि रिझै करि कांन अधर रस लेहु ॥ १०७ ॥ राग बिलावल ॥ रिझै लेहु तुमहूं किनि श्यामहिं । काहेको बकवाद बढावति सतर होति बिन कामहिं ॥ मैं अनेक तपको फलु भुगवति तुमहू करौ फलु लीजै । तब जोबीच बोलिहै कोई ताहि दूरि धरि कीजै ॥ अपनो भागु नही काहूसों आप आपने पास । जो कछु कहौ सूरके प्रभुको मोपर होति उदास ॥ १०८ ॥ राग बिलावल ॥ मेरे दुखको ओर नही । षट ऋतु शीत उष्ण बरषा मै ठाढे पाय रही ॥ कसकी नहीं नेकहूं काटत घामे राखी डारि । अधि सुलाक देत नहि मुरकी बनै बनावति जारि ॥ तुम जानति मुहि बांस बंसुरिया अगिनि झांप दै आई । सूर श्याम ऐसो तुम लेहु न खिझति कहाहौ माई ॥ १०९ ॥ राग बिलावल ॥ श्रम करि हौ जब मेरी सो । तब तुम अधर सुधा रस बिलसैं मैं ह्वै रैहौं चेरी सो ॥ बिना कष्ट यह फल न पायहै जानतिहै अब टेरी सी । षट ऋतु शीत तपनि तनु गारयो बांस बंसुरिया केरी सी ॥ कहा मौन ह्वै ह्वै जो रहि है कहा अरति अबसेरो सी । सुनहु सूर मैं न्यारी ह्वै हौं जब देखौ तुम मेरो सी ॥ ११० ॥ राग सारंग ॥ मरली तौ अधरनि पर गाजति । कैसे बैठी दुहूं करनि चढि अंगुरी रंधनि राजति ॥ श्यामहि मिलि हम सबनि दिखावति नेकहुं मन नहि लाजति । नाद शब्द मोदसों उपजत मधुरे मधुरे बाजति ॥ कबहुं मौन ह्वै रहति कबहुं कछु, कहति रहति नहि हाजति । सूर श्याम वाको सुर साजत वह उनही ते साजति ॥ १११ ॥ रागनट ॥ मुरली तपु कियो तनु गारि । नेकहूं नहि अंग मुरकी जब सुलाकी जारि ॥ सरद ग्रीषम प्रबल पावस खरी इक पग भारि । काटेहूं नहि अङ्ग सकोरयो साहसनि अति नारि ॥ रिझै लीन्हे श्याम सुंदर देति हौ कत गारि । सूर प्रभु तपु ढरेहैरो गुननि कीनी प्यारि ॥ ११२ ॥ राग सारङ्ग ॥ मुरलिया ऐसे श्याम रिझाए । नंद नन्दन के गुण नहि जानति अति श्रमते यहि पाए तुव व्रत का फलु वहै दिखायो चीर कदम्ब चढाए ॥ कह्यो कहा सब वैसेहि आवहु जुवति सलाज छिडाए । तबहै चीर अभूषन वोले धनि धनि शब्द सुनाए ॥ सुनहु सूर ब्रज नारी भोरी इतनेहि हरष बढाए ॥ ११३ ॥ राग बिलावल ॥ मुरली जो तपु कियो कैसे तुम करिहौ । षट ऋतु एक पग कौं रैहो अबहीं सर खरिहौ ॥ वह काटत मुरकी नहि तुम तौ सब मरिहौ । वहि सुलाक कैसें सह्यो पर सतही जरिहौ ॥ तुम अनेक वह एकहै वासों जिनि लरिहौ । सूरज प्रभु जेहि ढरि मिले नहि जीतौ हरिहौ ॥ ॥ ११४ ॥ राग बिलावल ॥ मुरली को सरि जिन करौ वह तपु अधिकारिनि । एते पर तुम बोलिहौ कहा भई बजारिनि ॥ धीर धरे मरजाद है ना तरु लघुता हो । नेक दसा की आस है ताहूतें जैहौ ॥ झगरो झगरोई रहै तेहि कहा बडाई । वह अपनो फलु भोगवै तुम देखौ माई ॥ देखौ वाके भाग को ताको न सराहै । सूरदास झझको कहानीके किनि चाहै ॥ ११५ ॥ राग रामकली ॥ मुरलीसों अब प्रीति करौरी । मेरी कही मानि मन राखौ उत रिसि दूरि करौ री ॥ तुमहि सुनी मुरली की बातें दीन होय उत रानी । काहे न ढरें श्याम तापर को कोंन होय पटरानी ॥ हम जान्यों यह गर्व भरी है साधुन यातें और । रिझै लिए हरिको तप केवल वृथा करो तुम सोर ॥

सूर श्याम बहु नायक सजनी यहै मिली इक आई । तुम अपने नेमही रहौगी नेम न करतें जाई ॥ ११६ ॥ राग कान्हरो ॥ नेमहीसों हरि आय रहैंगे । मुरलीसों तुम कछू कहौ जिनि ऐसेहि तुमहि मिलैंगे ॥ वै अन्तर जामी सब जानत घट घट की जो रीति । जाको जैसो भांव सखीरी ताहि मिलै तेहि प्रीति ॥ मात पिता कुल कानि लाज तजि भजी जनम ते जाहि । काहेको मुरली को डाहनि क्यों तजि एरी ताहि ॥ सोरह सहस एक मनो आगरि नागरि राधा जानि । सूर श्याम को भजै निरन्तर जासों है पहिचानि ॥ ११७ ॥ राग कान्हरो ॥ मुरली को जिनि बात चलावहु । वह बल करति आपने तपको तुम काहे बिसराहु ॥ कहा रही एकहि पग ठाढी कहा काटि जौ डारी । कहा सुलाक सह्यो उनि गाढे करसों श्याम संवारी ॥ निमिष एक भरि कष्ट सह्यो जो तुरत अधर मधु सींच । सूर सुनहु जिनि बात कहे तें बडी आहि जो नींच ॥ ॥ ११८ ॥ राग कान्हरो ॥ हमतें तपु मुरली न करैरी । कहा सुलाक सह्यो एक पल जो नित प्रति बिरह जरैरी ॥ किरिया सी करि कै भय ठाढी तुरत अधर तट लागी । हमको दिन दिन मदन जरावत वाही रस अनुरागी ॥ यहै बात कर्महु ते मोटी तातें हम सरि नाहीं । सूर श्यामकी महिमा न्यारीकृपा करी तामाहीं ॥ ११९ ॥ राग कान्हरो ॥ तुम अपने तपुकी सुधि नाहीं बारे तें तनु गारि कियो । संवत पांच पांच की सब ये अजहूं लौं भयो प्रकट हियो ॥ वह तुसार बह तपनि तपस्या वह पावस झक झोरनि । वह खरि कई मातु पितु को हित वैसो प्रीतिहि तोरनि ॥ तबहीते तनु बिरह जरतिहौ निसि बासर यों जात । कैसें फलनि फलहि जानैगो सुनहु सूर यह बात ॥ ॥ १२० ॥ राग गौरी ॥ मुरलिया एकै बात कही । भागु आपनो अपने माथे मानि मनहि सही ॥ हमतें बहुत तपस्या नाहीं बिरह जरी वह नाहीं । कहा निमिष करि प्रेम सुलाकी देखौ गुणि जिय माहीं ॥ बात कहति कछु निन्दति नाहीं भाग बडे है वाके । सूर दास प्रभु चतुर सिरोमणि बश्य भए हैं जाके ॥ १२१ ॥ राग गौरी ॥ मुरलीसों कह काम हमारो । अधर धरे सिर पर किनि राख्यो तुम जिनि कबहुं बिगारो ॥ जाकारण तुम जनम भई ब्रज ध्यावहु नंद दुलारो । बीचहि कहूं औरसो अटके तौ मैं कहा तुम्हारो वह मुसुकनि वह श्याम सुभग छबि नयननि तें जिनि टारो । सूरज प्रभु ब्रजनाथ कहा बत ते तुम क्षिणुन बिसारो ॥ १२२ ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली श्याम बजावन लागे ॥ अधर सुधा रस दै वह पागी आपुन तो रस पागे ॥ धन्य धन्य बड भाग रि नागरि धनि हरिके मुख लागी । धनि वह वन धनि वह उपवन जहं धनि धनि बंसुरि सुहागी ॥ धनि वह रंध धन्य वह अङ्ग री बारम्बार चलावत । सूर सुनति ब्रज नारि परस्पर दुख सुख दोऊ पावत ॥ १२३ ॥ राग पूरबी ॥ मुरलिया कैसे बाजै रस सानी गरजति धुंकार अद्भुत बानी । अधिक नाद प्रवाह तारे तारे आरे रीझे इतनो रस कहांते उपजै तौ इतनी नाही मुरलि या कैसे बानी ॥ सप्त सुरनि गति जति उपजति अति विथरित धावर पवन पानी । सूर श्याम गिरिधर बड नायक वाहीसों रैनि दिन रस मानी ॥ १२४ ॥ ॥ राग रामकली ॥ मुरलिया बाजत है बड बान । तीनि ग्राम इक्कीस मूर्छना

उनञ्चास कोटि तान ॥ सबै कला बिलच्छ सुघर अति यासम सरिको आन । अति सुकंठ गावति मन भावति रीझे श्याम सुजान ॥ ऐसोसों नहि बैर कीजिये दूरि करौ रिस ज्ञान । सूर श्याम के अधरनि राजति सबही अङ्ग निधान ॥ १२५ ॥ राग रामकली ॥ मुरलिया श्याम अधर पर बैसो । सुनऊ सखी यह है तेहि लायक अतिहि भलो नहि नैसो ॥ कसे नन्द नन्दन कर धारत जो पै होती गैसो । तुमही दृथा कहति जोइ सोइ जैसो को तैसो ॥ सुनऊ कहा कंहि कहि मुख गावति हृदय श्याम कै पैसो । सूरदास प्रभु क्यों न मिलै टरि तिहूं भुवन जै जैसो ॥ १२६ ॥ राग बिलावल ॥ आपु भलाई सबै भली री । जो वह भलो गुणनि करि पूरी तौ टरि श्याम मिलै री ॥ इक जुवती अरु मधुरे गावति बानी ललित कहै री । जब जब श्याम अधर पर राखत तब तब सुधा बहै री ॥ एते पर हमसों सन्मुख ह्वै तुम काहे रिस पावति । सूरदास प्रभु कमल नयन को एते पर वह भावति ॥ १२७ ॥ राग रामकली ॥ मुरली श्याम बजावन दैरी । श्रवननि सुधा पिवावति काहे न यहि जनि तू बरजै री ॥ सुनति नही वह कहति कहा है राधा राधा नाम । तू जानति हरि भूलि गये मोहि तुम एकै पति बाम ॥ वाही के मुख नाम धरावत हमहि मिलावत ताहि । सूर श्याम हमको नहि बिसरो तुम डरपति हौ काहि ॥ १२८ ॥ राग जैतश्री ॥ जब जब मुरली कान्ह बजावत । तब तब राधा नाम उचारत बारम्बार रिझावत तुम रवनीवै रवन तुम्हारे बैसेहि मोह जनावति । मुरली भई सौति जो माई तेरी टहल करावति ॥ वह दासी तुम हरि अर्धङ्गिनि यह मेरे मन आवत । सूर प्रकट ताहीसों कहि कहि तुमको श्याम बोलावत ॥ १२९ ॥ राग ईमन ॥ यह मुरली ऐसी है माई । हम यासों रिस वृथा करतिही तब यह कद रि न पाई ॥ बानी ललित सुनत श्रवननि हित चित मेरे अति भाई । गाजति बाजति श्याम अधर पर लागत तान सोहाई ॥ मैं जानी यह निठुर काठकी नरम बांस की जाई । सूरदास ब्रज नारि परस्पर ताकी करति बडाई ॥ ॥ १३० ॥ राग कान्हरो ॥ अब मुरली कछु नीके बाजति । ज्यों ज्यों अधरनि कर पर बैठति त्यों त्यों अतिहि अति राजति ॥ अबलौं जानी बांस वंसुरिया याते औरन बंश । कैसे भजि रजि चली सबनि को राधा करति प्रसंश ॥ यह कुलीन अकुलीन नहीरी धनि याके पितु मात । सुनहु सूर नाते की भैनी कहति बात हरषात ॥ १३१ ॥ राग जैतश्री ॥ मुरलिया मोको लागति प्यारी । मिली अचानक आय कहूंते ऐसी रही कहांरी ॥ धनि याके माता पितु धनि यह छुटु छुटु बोलनि । धन्य श्याम गुण गुणि कै ल्याए नागर चतुर अमोलनि ॥ यह निर मोल मोल नहि याको भली न याते कोई । सूरदास याके पटतर को तौ दीजै जौ होई ॥ १३२ ॥ राग मलार ॥ बंशी कर श्याम के अधर विरमी । लेति सर्बसु जुवति जनको बदन बिधुते अमी ॥ प्रियति न्यारे गरव डारे करत नाहि तमी । बोलि शब्द सुसप्त सुरमिलि नागर सुरगदमी ॥ महा कठिनके बैर मैं सुनि बांश बंश जमी । सूर श्रीमुख परसि पूरण नेकु नाहि नमी ॥ १३३ ॥ राग मलार ॥ जादिन तें मुरली कर लीनो । तादिनतें श्रवननि सुख सुनि मनकी बात सबै लै दीनो ॥ लोक बेद कुल लाज काज को तजि मरजाद मिति कीनी । तबहीतें सुधि बुधि बिसराई निसु दिन

रहति गोपाल अधीनी ॥ शरद सुधा निधि अंसको सींचत अमी प्रेम रस भीनी । ता ऊपर शुभ दरस सूर प्रभु श्रीगोपाल दरशन रह छीनी ॥ १३४ ॥ राग मलार ॥ देखहु री इनि मदन मुरलिका नेसुकसी सब जग मोह्यो । जेते जीव जन्तु जल थलके नाद स्वाद रस पोह्यो ॥ जे तीरथ तप किये तरणि तट प्रणकै पीठि न दीनी । ता तीरथ के तपको फलु लै श्याम सुहागिनि कीनी ॥ सुदिन सुघरी शील कुल छाड्यौ अरु रचिकै अनु राग । सुन्दर श्याम सुधा रस सींचत मेटत पहिले दाग ॥ धरनि धरी गोवर्द्धन राख्यौ कोमल पानि अधार । हरि अब लटकि रहत टाढे ह्वै तनक मुरलि के भार ॥ निदरि हमैं मधुरा धर पीवति पढी दूतिका माई । सूर श्याम कुञ्जनि तें प्रकटी चपरि सौंह्वै आई ॥ १३५ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ बाजी हो वृन्दावन रानी । धनि वैबंस दुख भञ्जन गिरिधर कर धर मोहन मानी ॥ तरल रसाल अधर छवि करलै मुरली सकल कहानी । कुञ्ज खोह कहुं करत तपी तप तिन तन तपति सिरानी । अम्बर घेरि घटा घन आए रही धार धरि पानी ॥ बूझतबाल गोपाल सखा को छतिम कहा ते आनी । मुख जन राज श्री सुन्दर हरि सुख सूर सबै जग जानी ॥ १३६ ॥ राग सारङ्ग ॥ मुरली कौन सुकृत फल पाए । अधर सुधा पीवति मोहन को सबै कलङ्क गंवाए ॥ तनक ठौर मन गांठि प्रकटही छिद्र बिसाल बनाए । अन्तर सुन्य सदा देखियति है है कुल बंश सुभाए ॥ लघुता अंग कछु नहीं गरुई निरखत नही निकाई । सूरदास प्रभु पानि परसि नित काम चली अधिकाई ॥ ॥ १३७ ॥ राग सारङ्ग ॥ जबतें मुरली श्रवन परी । तबही ते मन और भयो सखि तनु सुधि सब बिसरी ॥ हौं अपने अभिमान रूप गुण जौवन गर्व भरी । नेकन कह्यौ करयौ दूती को बादहि आय ढरी ॥ बिन देखे यह श्याम मनोहर जुग भरि जात घरी । सूरदास या आरज पथतें कछुव न चाड़ सरी ॥ १३८ ॥ राग कल्यान ॥ तब लगि सबै सयान रहै । जब लगि नवकिशोर मुरली नहि बदन समीर बहै ॥ तबहीलौ अभिमान चतुरई प्रति-व्रत फलहि चहै । जब लगि श्रवन रंध्र मारग मिलि नाहिन मनहि गहै ॥ तबलगि तरल तरु चंचल ता बुधि बल सकल अहै । सूर सखी जबतें यह धुनि सुनि नाहिन वचन कहै ॥ १३९ ॥ राग सारङ्ग ॥ सुनऊ री मुरली अधर बजाई । मोहे सुर नर नाग निरन्तर ब्रज बनिता मिलि धाई ॥ जमुना नीर प्रवाह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाय । खग मृग मीन अधीन भये सब अपनी गति बिसराय ॥ द्रुम बेली अनुराग पुलक तनु शशि थकि निशि न घटाई । सूर श्याम वृन्दावन बिहरत चलऊ सखी सुधि पाई ॥ १४० ॥ ॥ राग नट ॥ हम न भई बड़ भागिनि वंसुरी । कर अम्बुज में वास सदाई जाको छिणु छिणु पियत अधर मधु रसु री ॥ मुरलि मनोहर नाम कहावत तीन लोक विदित जग जसुरो । सूर दास प्रभु अधिक निठुर भये मुरली कों दयो हमारो सर बसुरी ॥ १४१ ॥ ॥ राग सारङ्ग ॥ सखीरी मुरली लीजै चोरि । जिनि गोपाल किये सब अपने प्रीति सबनि सो तोरि ॥ एकऊं पल नाही निसु दिन में कबहूं धरत न छोरि । कबहूं कर कबहूं अधरनि पर कबहूं उर कटि ओरि ॥ जानति हौं कछु मेलि मोहनी राखै सब अंग भोरि । सूर श्याम को मन सुनि सजनी बांध्यौ नाद की डोरि ॥ १४२ ॥ राग गौरी ॥ मुरली

कुञ्जनि कुंजनि बाजति । सुनि री सखी श्रवण दै अब तू जेहि बिधि हरि मुख राजति ॥ कर पल्लव जब धरत सबै ले सप्त सुरनि कल साजति । सूर दास यह सौति साल भइ सब हिन के सिर गाजति ॥ १४३ ॥ रागगौरो ॥ मुरली विधिज्ञ ते प्रबल प्रबीन । कहियेकहा आहि को ऐसो कियो जगत आधीन ॥ चतुर बदन उपदेश बिधाता याके थिरु चर नीति । आठ बदन गरजति गरबीली क्यौं चलीयहि रीति ॥ एक बेरि श्रीपति सिखये जौन लियो गुण ज्ञान । इन को तौ नन्द लाल लाड़िलौ लग्यो रहत नित कान ॥ अधरनि साथ पियति ब्रज कुल तें नहिन श्याम तनु त्याग । तदपि सूर या नन्द सुवन सो याही को अनुराग ॥ १४४ ॥ राग सोरठ ॥ मुरली भई आजु तें अनूप । अधर बिम्ब बजाये कर धरि मोहे त्रिभुवन भूप ॥ देखि गोपी ग्वाल गैयन देखि यह बन कूप । देखि मुनि जन नाग चंचल देखि सुन्दर रूप ॥ देखि धरति अकाश सुर नर देखि शीतल धूप । देखि सूर अगाध महिमा भये दादुर कूप ॥ १४५ ॥ राग बिलावल ॥ अधर मधुर कहत हम राखी । संचित किये रही सब राधे सकी न सकुचनि चाखी ॥ सहि सहि शीत जाय जमुना जल दीन बचन बहुतें दिन भाषी । तब अति छीण नहि न हरि मुख सखि मनही मन अभिलाषी ॥ अब यह अहत पियत सखि मुरली सबहिनके सिर नांखी । लयो छिड़ाय निदरि सुनि सूरज धेनु धूरि दैआंखी ॥ १४६ ॥ राग केदारो ॥ मुरली सबहिन को मनु हरयो । प्रथमही ब्रज नारियनु के आनि गिरिधर धरयो ॥ तब न रह्यो गयो हम पै शब्द जो अब श्रवणनि परयो ॥ पति पुत्र पिता बिसारि अम्बर चली गृह तजि भरयो । सिद्ध चारण गुणी गन्धर्व सुनत सब बिसरयो ॥ मगन मुनि मारुत न डोलत थिथिल शशि न टरयो । सटकि सर्प दुरत धुनि सुनि कछु जु वंशी करयो ॥ तृन तोरि कुंजनि पुंज मुरभी सदन देन चरयो चपल चित दै रह्यो कोकिल कीर मुकु न सुरयो ॥ ध्यान सों धरि रहे द्रुम सब नाद उर में अरयो । मृग मोर मधुप चकोर सरिता एक मतो करयो ॥ अपनों अपु छांड़ि बांनो जोग जप व्रत धरयो । थके थिरचर सुर असुर नर लिये गृह न भरयो । सूर मुरली अधर धारी प्रभु कामना के खरयो ॥१४७॥ राग नट ॥ सुनि कै कुंज काननि बैन । ब्रज बनिता बिसारि जो अम्बर चली गृह तजि चैन ॥ शब्द यहि बिधि भयो मोहन पूजि और परैन । सूर श्याम जो रसिक नागर सुभट सुर उरदैन ॥ १४८ ॥ राग रामकली ॥ मुरली दिन दिन भली भई । बनकी रहन नहीं अब यामें मधुही पागि गई ॥ अहत समान कहति है बानी नीके जानि लई । जैसी सकृति बुधि तैसी ए ह्वै गई सुधा मई ॥ जब आई तब औरै लागी सो निठुरई हई । सूर श्याम अधरनि के परसें शोभा भई नई ॥ १४९ ॥ ॥ राग गोंडमलार ॥ भली अनभली करतूति सकृतिज्ञ तें बांस बन झार की भई मुरली । कहा अब लहत हो निठुर आई जबहि बचन अहत कहति सुरनि सुरली ॥ सुधा अधरनि सङ्ग भई आपुहि सुधा कहा अब प्रीति में इन गंवायो । सूर प्रभु मिले अरु हम मिली धायके इते पर धन्य चक्रं जुग कहायो ॥ १५० ॥ राग गोंडमलार ॥ धन्य मुरली धन्य तपु तुम्हारो । धन्य माता धन्य भ्राता धन्य धन्य पिता धन्य तुव भक्ति सारो ॥ धन्य वह बांस धनि धन्य जहं तू रही धन्य बन झार तोतें बडाई । धन्य तपु कियो षट ऋतु रही एक

पग डुलो नहि धन्य मन की दृढ़ाई ॥ कटत छू मुरो नहि रन्ध्र छूं जरो नहि नेमते टरो नहि तहो जानै । तैसेही मिले प्रभु सूर तोकों तुरत सोंचि अंबुत अधर नेह मानै ॥ ॥ १५१ ॥ राग हमीर ॥ आजु बजाई हो मुरली मनोहर सुधि न रही कछु मो तन मन में । मैं जमुना तट सहज जाति कान्ह ठाढे हो वृन्दावन में ॥ नाना राग रागिनी गावत धरै अधर अवसिन में । सूर निरखि हरि अङ्ग छबिभ्रो वा छबि में गई मरिमै ॥ १५२ ॥ राग पूर्वी ॥ मुरली बाजै राजै हो मुख मोहन के सुनि रीझि रही रस ताननि । अति दूरि रही रस धुनि सङ्ग आई री भई मगन दै काननि ॥ तबतें और कछु नहि भावत वह छबि बाननि । सूरदास प्रभु नवल छबीले हरत नवल नारिन के प्रानानि ॥ १५३ ॥ राग काफी ॥ माय मोहना की मुरली में मोहनी बसतु है । जब तें सुनी श्रवन रह्यो न घर भवन देह तें मनङ्ग प्राण अब निकसतु है ॥ कहा करौं मेरी आली बांसुरी की धुनि साली मात पिता पति बन्धु अतिही तरसतु है । मदन अगिन अरु बिरह की ज्वाला जरि जैसें जलहीन मीन तड़हि दरसतु है ॥ अतिहि तपति छाती लागति है प्रेम काती फूलनि की माला मनो व्याल डसतु है । सूर श्याम मिलन को आतुर ब्रज की बाम एक एक पल जुग सम ज्यों बितत है ॥ १५४ ॥ राग काफी ॥ मोहन मन मोहि लियो ललित बैनु बजाई री । मुरली धुनि श्रवन सुनत बिवस भई माईरी ॥ लोक लाज कुलको मरजादा बिस राई री । घर घर उपहास सुनत नेकहू न लजाईरी ॥ और जप तप बेद पुरान कछु बैन सुहाई री । सूर दास प्रभु की लीला निगम नेति गाई री ॥ १५५ ॥ राग काफी ॥ सुनि आधीसी रातिमोहन मुरली बजावै । नींद उचटि गई मन मुरझानि प्राणनि और न भावे ॥ मन हरिलियो देह गति भूली गृह आंगन न सुहावै । सूर दास प्रभु मुरली ताननि दशा देह बिसरावै ॥ १५६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ रास लीला को प्रसङ्ग ॥

॥ राग केदारो ॥ आजु बन बेनु बजावत श्याम । यह कहि कहि चकित भई गोपी सुनत मधुर सुर काम ॥ कोउ जेंवनार करति कोउ बैठी कोउ ठाढी है धाम । कोउ जेवति कोउ पतिहि जिंवावति कोउ शृंगार में बाम ॥ मानौ चित्र की सी लिखि काढी सुनत परस्पर नाम । सूर सुनत मुरली भई बौरी मदन कियो तन ताम ॥ १ ॥ राग केदारो ॥ जब हरि मुरली अधर धरी । श्यामल तन में रची रूप निधि गिरिवर

धरन बरी ॥ उघटत तान बंधान सप्तसुर सुनि रस उमगि भरी । आ करष्यो चित वित युवतिनि को गति बिपरीति करी ॥ पिय मुख सुधा बिशाल सुरत संगीत समुद्र तरी । सूरदास त्रैलोक बिजय रति पति मति दर्प हरी ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ मुरली अधर सजी बलबीर । नाद सुनि बनिता बिमोही बीसरे उरचीर ॥ खग नैन मूंद समाधि रहे नयननि मिले तप धीर । डुलत नहि द्रुम पत्र बेली थकित मंद समीर ॥ मृग धेनु तृण तजि रहे मुख बछरान पीवतछीर । सूर मोहन राग सुनि सुनि थकित जमुना नीर ॥ ३ ॥ राग बिहागरो ॥ बंसी री बन कान्ह बजावत । आनि सुनहु श्रवणनि मधुरे सुर नाद मध्य लै नाम बुलावत ॥ सुर अति तान बन्धान मपित अति अतित अनागत ख्यावत । जुरि जुग भुज सिर शैल शेष मथि बदन पयोधि अमृत उपजावत ॥ मन मोहनी भेष धरिके मन मोहत मनो मधु पान करावत । खग मृगमीन बस भये नाद रस मगनहु तें मद्नहि जग ज्यावत ॥ और कहां लगि कहौं सूर थिरचर मोहे कोइ पार न पावत । मानहु मूक मिठाई को गुण कहि न सकत सुख सीस डुलावत ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ मुरली धुनि श्रवन सुनत भवन रह्यों न परई । ऐसी को चतुर नारि धीर जो मन धरई ॥ सुरनर मुनि सुनत सुधि न शिव समाधि टरई । अपनो गति तजत पवन सरिता नहिं ढरई ॥ मोहन मुख मुरली मन मोतन बश करई । सूर दास सप्त सुरन सुधा सार झरई ॥ ५ ॥ राग केदारो मुरली मोहन अधर धरी । आरज पथ बिसरो आतुर ह्वै बनहुकि सुधि न करी ॥ पद रिपु पट अटक्यो न सम्हारति उलटि न पलटि खरी । कबहुक शिव सुत बाहन रबकि मिल्यो मनहु कि बुद्धि हरी ॥ दुरि गये कीर कपोत मधुपपिक सारंग सुधि न करी । उड़पति बिद्रुम बिम्ब खजानो दामिनि अधिक डरी ॥ मिलिहौं श्यामहि हंस सुता तट आनन्द उमगि भरी । सूर श्याम को मिली परस्पर प्रेम प्रवाह परी ॥ ॥ ६ ॥ राग केदारो ॥ मुरली अति गर्ब काहू बदति नांहि न आजु । हरि को मुख कमल देश पायो सुख राजु ॥ बैठति कर पीठ ढोठ अधर छुच छांह । राजत अति चंवर चिकुर सदरसभा माह ॥ जमुनाके जलहि नाहि जलधि जानन देति । स्थावर चर जंगम जड़ कहत ज्योति ज्योति ॥ बिधि की बिधि मेटि करति अपनी नई रीति । श्री पतिहू श्री बिसारि एही अनुराग ॥ बंसी बस सकल सुर सुर नर मुनि नाग ॥ ७ ॥ राग बिहागरो ॥ बंसी बनराज आजु आई रन जीतें । मेटति है अपने बल सबहिन की रीतें ॥ बिडरे गज जूथ शैल सैन तुरत भाजी । घूंघुट पट कवच टुटि छूटे सब ताजी ॥ काहू पति गेह तजे काहू तन प्रान । काहू सुख सरन लयो सुनत सुजस गान ॥ कोऊ पद परसि गये अपने मन देश । कोऊ रस रंग भरे तें भये नरेश ॥ देति सबनि मारुत मिलि दसहुं दिसि दुहाई । सूरज गोपाल लाल बंसी बस माई ॥ ८ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनिए हो धरिध्यान सुधारस मुरली बाजे । श्याम अधर पर बैठि बिराजत सप्त सुरनि साजै ॥ बिसरी सुधि बुधि गति सबहीन की सुनि बेनु मधुर कलगान । मनगति पंगु भई व्रज युवती गंधर्व मोहे गान ॥ खग

मृग थके फलनि तृण तजिकैं बछरान पिवत चीर । सिद्धि समाधि थक्यो चतुरानन लोचन बहै सब नीर ॥ महा देव की तारी छूठी अति ह्वै रहे अचेत । ध्यान टर्‌यो धुनि हौं मन लाग्यो सुर सुनि भये अचेत ॥ जमुना उलटि बही अति व्याकुल मीन भये बल हीन । पशु पक्षी सब थकित भये हैं रहे इक टकलौलीन ॥ इन्द्रादिक सन कादिक नारद सारद सुनि आवेस । घोष तरुणि आतुर ह्वै धाईं तजि पति पुच अदेस ॥ श्री वृन्दावन कुंज कुंज प्रति अति बिशाल आनंद । अनुरागी पिय प्यारी के संग रस बस रचे सानंद ॥ तिहूं भुवन भरि नाद प्रकास्यो गगन धरनि पाताल । थकित भये ता रागनि सुनि कें चंद भयो बेहाल ॥ नटवर भेष धरें नंद नन्दन निरखि बश्य भयो काम । उर बन माल चरन पंकज लों नील जलद तन श्याम ॥ जटित जराव मकर कुण्डल छबि पीत बसन सो भाय । वृन्दाबन रस रास माधुरी निरखि सूर बलिजाय ॥ ९ ॥ राग काफी ॥ बजाई बांसुरी ब्रजराज मोहे ब्रज राज । सुनि श्रवण भवन नहि रहिसकी नहि सुहात गृह काज ॥ मातु पिता पति बंधु को तजी इन नयननि लाज । हरे भरे द्रुम भरे हरे भये वृन्दाबन बिपरीत । ललित लता सब नमित भये हैं सुनि सुनि धुनि सु अतीत ॥ गैया गोप गोठ गृह अटके हंस सुता भई थीर । गन गन्धर्व सब थकित भये हैं चलत न बिबिधि समीर ॥ सुनि सुनि सकल ब्रज बधू धाई बिकल बावरी बेस । रहि न सम्हार हार उर अंचल छुटे कंचुकी केस ॥ शिव बिरंचि शशि शेष सारदा मघवा मगन भये । रबि रथ रोकि रहे सुर पुर में बाजी बाग जो गये ॥ सुर नर मुनि अस्थावर जंगम सबहि मनभये पंग । तजि धन धाम बाम गृह अटकी सूर श्याम के संग ॥ १० ॥ राग रायसा सूहौ ॥ मेरे सांवरे जबमुरली अधर धरी । सुनि धुनि सिद्धि समाधि टरी ॥ सुनि थके देव बिमान । सुरबंधु चित समान ॥ गृह नखत तजत न रासि । बाहन बंधे धुनि फांसि ॥ सुनि आनन्द उमगि भरे । चल थकि रमे अचल चरे ॥ चल अचल गति बिपरीति । सुनि बेनु कल्पित गीति ॥ झरना झरे पाषान । गन्धर्ब मोहे गान ॥ सुनि चंचल पवन थक्यौ । सरिता जल चलि न सक्यौ ॥ सुनि थकित भयो समीर । उलट्यौ जु जमुना नीर ॥ धुनि सुनि चली व्रज नारि । सुत देह गेह बिसारि ॥ सुनि खग मृग मौन धरी । फल तृण छूकि सुधि न करी ॥ मृग धेनु चकित रहे । तृण दन्त छूनि गहे ॥ बछरान पीवें चीर । पची मनो मुनि धीर । द्रुम बेल चपल भईं । नव पल्लव पलटि नईं ॥ जे बिटप चंचल पात । ते निकट को अकुलात ॥ अंकुरित पुलकित गात । अनुराग नयन चुचात ॥ मन मोह्यो मदन गोपाल । तन श्याम नयन बिशाल ॥ नव नील घन तन श्याम । नव पीत पट अभिराम ॥ नव मुकुट नव नव दाम । लावन्य कोटिक काम ॥ मन मोहन रूप धर्‌यो । तब कामको गर्ब हर्‌यो ॥ श्री मदन मोहन लाल । नव नागरी संग बाल ॥ नव कुंज जमुना कूल । देखत सर दास हियफूल ॥ ११ ॥ राग बिहागरो ॥ रायसा ॥ तो पर वारी हो नंद लाल । शरद चांदनो रजनी सोहै वृन्दावन श्री कुंज । प्रफुलित सुमन बिबिधि रंग जहां

जहां कूजत कोकिल पुंज । जमुना पुलिन श्याम घन सुंदर अद्भुत रास उपायो । सप्त सुरनि बन्धान सहित हरि मुरली टेरि सुनायो ॥ थक्यो पवन सुर थकित भए सुनि धरनि उमगि धर कांप्यो ॥ खग मृग मीन जीव जल थलके सब तन सुरति बिसारी । सूखे द्रुम पल्लव फल लागे बन बन साखा डारी । सुनि ब्रज वधू तज्यो आरज पथ सुत पति नेह न कीनो । प्रगट्यो अङ्ग अनङ्ग बिकल भई तन मन हरि सब लीनो । इक जेवनार करतही छांडी इक जेंवत पति त्याग्यो । इक बालक पै पियत सुवावति प्रेम बिवस तनु जाग्यो ॥ जो जैसे तैसे उठि धाई तन मन सुरति बिसारी ॥ मुरलि नाद करि टेरि लई हरि ब्रज नवतरुणि कुमारी । आंजत नयन अधर दुहुंके बिच सारङ्ग सुत नहिं खाग्यो ॥ मानहु अलि बैठे बन्धुक पर पियत सुमन रस पाग्यो । कटि कंचुकी उरज लहंगा कसि चरननि हार सवारयौ । उलटे भूषण अङ्गनि साजे फेरि काहु निहारयौ । चलीं सबै चित आधी रतियां जहं नव कुंज बिहारी । आनि हजूर भई कानन में जहां श्याम सुख कारी ॥ देखि सबै ब्रज नारि श्याम घन चितए बुद्धि संवारी । क्यौं आई वृन्दावन भीतर तुम सब पियकी प्यारी ॥ तुम कुल वधू भवनही नीकी रैनि कहा सब आई ॥ अपने अपने घर पति जन सों कैसे निकसन पाई । बेनु शब्द श्रवननि मग ह्वै उर पैठि हमहि लै आयौ ॥ आस तुम्हारी जानि चपल चित चंचल तुरत चलायौ ॥ अपनो पुरुष छांडि जो कामिनि अन्य पुरुष मन लावै ॥ अपजसु होय जगत जीवन भरि बहुरि अधम गति पावै ॥ अजहुं जाहु सब घोष तरुनि फिरि तुम तौ भली न कीनी ॥ रैनि बिपिन नहि बास कीजिए अबलनि को नहि लीनो ॥ घर कैसें फिरि जाहि श्याम जू तनहूंई सब त्यागैं ॥ तुमतें कहौ कौन ह्यां प्रीतम जासंग मिलि अनुरागैं ॥ हम अनाथ ब्रज नाथ नाथ तुम चरन सरन तकि आईं ॥ निठुर बचन जिनि कहौ पीय तुम जानत पीर पराई ॥ दीन बचन सुनि श्रवन कृपा निधि लोचन जल बरषाये ॥ धन्य धन्य कहि कहि नँद नन्दन हरषित कण्ठ लगाये । हम कीनो अपमान तुम्हारो तुम नहि जिय कछु आन्यो । सरिता जैसें सिन्धु, भजै ढरि तैसें तुम मोहि जान्यौ । द्वादस कोस रास पर भित भई ताको कहा बखानो । बोलि लई ब्रज बधू बिहंसि सब तुम मण्डल बिधु मानो ॥ पानि पानि सों जोरि जुवति दुहुं दुहुं बिच श्याम बिराजै । कंचन खम्भ खचित मरकत मनि यह उपमा कछु छाजै ॥ अंग अंग प्रति कोटि काम छबि लज्जित मधि नायक गिरिधारी ॥ निर्त्त करत रस बस भए दोऊ राधा मोहन प्यारी ॥ ब्रज बनिता मंडली बनी यौं शोभा अधिक बिराजै । नूपुर कटिकिंकिनी चलित गति अरस परस पर बाजै ॥ मोर चन्द्रिका सिर पर सोहै जब हरि रुणु झुणु नाच्यौ ॥ अंग अंग प्रति और और गति कोटि मदन छबि राच्यौ ॥ जमुना जल उलटी बहि धारा चन्द्ररथन चलावै ॥ बानिक अतिहि बने मन मोहन मनमथ पकरि नचावै ॥ निर्त्त करत रीझत मन मोहन राधा कंठ लगाई । रास बिलास करत सुख उपज्यौ सब बस किए कन्हाई । अन्तर्धान करत दुख बाढ्यौ राधा बर सुख कारी ॥ सूर दास प्रभु भक्त बश्यता प्रगट

करी गिरि धारी ॥ १२ ॥ राग सोरठ ॥ शरद निसाकी रैनि सुहाई हो ॥ वृन्दावन घन मैं जदु पति राई हो ॥ सप्त सुरनिविधि सों मुरलि बजाई हो । सुनि धुनिनारि चली दृज तजि आईहो ॥ छंद ॥ धुनि सुनत व्याकुल भई जुवती मदन तनु आतुर करी ॥ विवस भई तनु मन भुलानी भवन कारज परिहरी । उलटे आभूषण सब बनाए अंगकी सुधि बीसरी । नन्द सुत चित चित चुरायौ आय भईं सब हाजिरी ॥ छंद ॥ हाजिर आय गईं जहां बनवारी हो । निसि कहां धाय चलीं ब्रज घोष कुमारी हो । बचन सुनाए हो मोहन नागरकी । पति गृह त्यागी क्यौं गुरु जन बागरकी ॥ छंद ॥ गृह पूत पति क्यों त्यागि आई नाहिने जु भली करी । पाप पुन्य न सोचकीनो कहा जिय तुम यह धरी । अजहुं घर फिरि जाहु कामिनि करहु सो जो हम कह्यौ । लोक बेदनि विदित गायौ पर पुरुष नहि धनि लह्यौ । निठुर बचन सुनिकै ग्वारिनि निठुर भईं । अति मुरझाय रहीं सुधि बुधि सबै गई । बिनै बचन कहि कै ग्वालिनि सुनाई हो । तुव चरननि मनदै सब बिसराई हो ॥ छंद ॥ तुव दरश की आस पिय व्रत नेम दृढ यह है धर्यौ ॥ कौन सुतको मातु को पति कौन त्रियको किन करयौ । कहां पठवत जाहि काकें कहौ कहां मन मानि हैं । यहां बरु हम प्रान त्यागैं आई जहां सोइ जानि हैं ॥ छंद ॥ हरि हंसि बोले धनि व्रज नारी । मैं बहुत कसी तुम व्रत धारी ॥ मुख कछु बहुत कही अन्तर तुमहि रही ॥ जब जहां देह धरी तबतहां तुम संगही ॥ छंद ॥ कहा कसि कोउ तुमहि देखै कनक बारह बानिहौ ॥ मेरो तो तुमहीं प्राण जानहु और मन नहि आनिहौ ॥ तबहि हिलि मिलि रास कीनो जुवति बहु मंडलि जुरीं । कनक मरकत पचि रचौ बिच कान्ह बिच बिच नागरी ॥ अङ्ग त रास रच्यौ गिरिधर लाडिले ॥ श्री वृषभान सुता सो हरि चाडिले ॥ अति आनन्द बढ्यौ गोपी हरष भई ॥ निर्त्तत रीझे हो भुज भरि श्याम लई ॥ छंद ॥ जल थल पवन थक्यौ ॥ खग मृग तरुवि थक्यौ ॥ देखत मदन जक्यौ । चरननि सरन तक्यौ ॥ जीव सब तिहुं भुवन मोहे अमर नभ विथ कित भए । चन्द्रमा रथ मध्य थाक्यौ रास बस मोहन भए ॥ छंद ॥ और तरु फल और लागे और भय पल्लव कली ॥ श्री श्याम श्यामा रास नायक गोपिका गन मंडली ॥ रास रङ्ग रस अति बढ्यो मन गर्बित सुकुमारि ॥ लेहु कन्ध प्रभु सो कह्यौ अन्तर भए दै त्यारि ॥ छंद ॥ अन्तर भए दैत्यारी । श्री राधा सङ्गतें डारी । प्रभु सन्तनिके सुख कारी । दुष्ट मन गर्ब प्रहारी । भक्त वत्सल वपु धारी । धरनि उधारन कारी ॥ छंद ॥ चहूं दिशि चित वत चकृत ह्वै सङ्ग श्याम कहुं नाहि । आपु अकेली देखिकै मुरछि परी धर माहि । धर मुरछि परतनहि जानो । दुख सागर मांझ समानी । हा कृष्ण कृष्ण रट लागी । हरि अधर पान अनुरागी । ललिता गहि बांह जगाई । तब चौंकि उठी अकुलाई ॥ उह कहति उठी हरि आए । ज्यौं मनो रंक निधि पाए ॥ छंद ॥ सावधान तेहि क्षण भई नयना दए उघारि । ललिता को मुख देखि कै भई विरहतन भारि । अति विकल भई बेहाला । कहुं देखे हैं मदन गोपाला । मोहि त्यागि गए नन्द लाला ।

तन करत मदन जंजाला । मुख सुन्दर बचन रसाला । वर लोचन कमल बिशाला ॥ मिलि करहु न मोहि निहाला । ढूंढति बन बीथिन ताला । चित और भए हैं कृपाला । तूं देखे है दीन दयाला ॥ छंद ॥ जहां तहां खोजत फिरी चरन चिन्ह कहुं पाई ॥ बार बार अब लोकि कै नयन चले ढहराई ॥ बन बेली बूझत जाई ॥ कहुं नाहि न मिले कन्हाई ॥ चम्पक बकुल वट बूझे ॥ तनबिरह विथा हिय गूझे ॥ खोजे बन बन बारम्बारा ॥ कहि कहि मुख नन्द कुमारा ॥ मोहि नन्द नन्दन क्यों त्यागी । मै अतिही परम अभागी ॥ नन्द नदन वस प्रेम के प्रकट भए तेहि काल । प्यारी को मिलि सुख दियो भेटि बिरह दुख जाल ॥ मिलि मन मोहन ब्रज बाला ।फिरि आपुहि भए कृपाला ॥ पुनि रास मण्डल बिधि ठाव्यौ । सब काम द्वंद दुख काव्यौ ॥ सुर असुर नारिनर मोहे । एहि रस रास विलास सब पोहे ॥ दिवि दुंदुभि देव बजाई । सुर नारि सुमन बरषाई ॥ जैजै धुनि लोकनि गाए । जस तिहूं भुवन भरि छाए ॥ रस रास रसिक गुण भारी । श्री राधा मोहन प्यारी ॥ सहसा नन कहत न आवै । जेहि निगम नेति नित गावै ॥ सुख आनद पुञ्ज बढायौ । क्यों जात सूर पै गायौ ॥ १३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ यहांते ठाकुर ठकुराइन को बिबाह ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग सूहो ॥ व्रत धरि देवी पूजी । जाके मन अभिलाष न दूजी ॥ दीजै नन्द पूत पति मेरे । जौपैं होय अनुग्रह तेरे ॥ तब करि अनुग्रह बर दियो जब बरष भरि लौं तपु कियो । चैलोक सुन्दर पुरुष भूषण रूप गुण नाहिन बियो ॥ इत उबटि खोरि सिंगारि सखियनि कुंवरि चौरी अनी ॥ जाहित किये व्रत नेम संजम सोधरी बिधना ठनी ॥ मुकुट रचि मौर बनायो । माथे धरि हरि बर आयो ॥ तन श्यामल पीत दुकूले । देखत दामिनि घन भूले ॥ दामिनी घनकोटि वारौं जब निहारौं मुख छबो । कुण्डल बिराजत गण्ड मण्डल नही शोभा शशि रबी ॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जामाहिं । मनो मोर निर्त्तत संग डोलत मुकुट की परछाहिं ॥ गोपी सब न्योंते आईं । मुरली धुनि पठै बुलाईं ॥ बिधि आनंद मंगल गाए । नव फूलन मण्डप छाए ॥ छाए जु फूलनि कुंज मंडप पुलिन में बेदी रची । बैठे जु श्यामा श्याम बर त्रैलोक की शोभा खची ॥ उत कोकिल गन करैं कुलाहल इतें सकल व्रज नारि । आईं जुन्योंते दुहूंदिसि तें देति आनन्द गारि ॥ रास मंडल भुज जोरी । श्याम सांवरे राधा गोरी ॥ पानि ग्रहन बिधि कीनी । तब मंडप भ्रमि भांवरि दीनी ॥ दीनी जो भांवरि कुंज मंडप प्रीति गांठि हृदय परी । सरद निस पून्यों बिमल शशि निकट वृन्दा सुभ घरी ॥ गाए जु गीत पुनीत बहुबिधि बेद रुचि सुन्दर धुनी । नन्द सुत वृषभान तनया रासमें जोरी बनी ॥ भै मन मथ सैन बराती । द्रुम फूले नाना भांती ॥ सुर

बन्दी जन जस गाए । तहं मघवा बाजंच बजाए । बाजहिं जे वाजन सकल नभ सुर पुहुप अंजुल बरषहीं । दिव्य बिमान बैठे शब्द जै करि हरष हीं ॥ सूर दासहि भयो आनंद पुजी मनकी साधा । मदन मोहनलाल दूलह दुलहिनि श्रीराधा ॥ १४ ॥ ॥ राग सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी माय महाबल सब जग अपबस कीनों हो । नेक चितै मुसिकाय उन सबको मन हरि लीनो हो ॥ कछु कुल कर्म न जानिये वाके रूप सबै रंग राचे हो । बिनु देखे समुझे सुने जगतन कोऊ वाचे हो ॥ इनि बातनि लाजनि मरिए कोउ पुरुष न बांचन पावे हो । जोकोऊ सोवै सुख मैं तेहि सोवत जाय जगावे हो ॥ पहिरे राती कंचुकी सिर श्वेत ऊपरना सो है हो । कटि नीलो लहंगा करो सोको जो निरखि न मोहै हो ॥ चोरी चतुरानन ठगो सब अमर उपरना राते हो । अन्तरौटा अब लोकि कै सब असुर महा मद माते हो । एकनि दै दरशन ठगै निसि एकनि लै संग से वे हो ॥ एकनि लै मंदिर चढै रचि एकनि बिरचि बिगोवे हो । अकथ कथा वाकी सबै कछु कहैं तो कहि यन जाई हो ॥ छैलनि के संग यों फिरै जैसे तन तन संग परि छांही हो । सुनि ताकी सब अपतई सुक सनकादिक मुनि जागे हो ॥ नेक दृष्टि पथ परि गई शंकर सिर टोना लागे हो । जोग जुगति बिसरी सबै उर काम क्रोध मद जागेहो लोक लाज सब छाडिकै उठि धाय चले संग लागे हो । और कहां लगि बरनिए भरि जल थल जिव जेते हो ॥ चतुर सिरोमणि श्याम सुनो गनि कहैं कहां लगि केते हो । एहि लाजनि मरिए सदा जब सब कोऊ कहत तुम्हारी हो । सूरदास प्रभु बरजि कै किनि मेटहु कुल की गारी हो ॥ १५ ॥ राग बिहागरो ॥ नहि छूटै मोहन डोरना हो । प्रथम व्याधि ह्वै रह्यौ हो कंकन चार बिचार । रचि रचिपचि पचि गूथि बनायौ नवल निपुन व्रज नारि ॥ बडे होहु तब छोरि यो हो सुनिये गोकुल राय । कै कर जोरि करौ बिनती कै छुवहु श्रीराधा जूके पाय ॥ यह नहोय गिरिको धरिवो हो सुनहु कुंवर गोपिन नाथ । आपुन को तुम बडे कहावत कांपन लागे हो दोउ हाथ ॥ बहुरि समेटि व्रज सुंदरी मिलि दीनि गांठि छुराय । छोरहु वेगि कि आनहु अपनी जशुमति माय बोलाय ॥ पचि हारे कैसेहूं न छूटत बंधी प्रेम की डोरी । देखि सखी यह रीति दुहुंन की मुदित हंसी मुख मोरी ॥ अब जनि करहु सहाय सखीरी छाडहु सकल सयान । दुलहिनि छोरि दुलह को कंकन बोलि बबा वृषभान ॥ कमल कमल करनि एहो पानि पियाके लाल । अब कवि सांचे से लगे रोम कटीले नाल ॥ लीला रास गोपाल की जोरे रसिक बखान । सदा रहैं यह अबिचल जोरी बलि बलि सूर समान ॥ १६ ॥ राग सारंग ॥ तुमसों गारि कहा कहि दीजै हो जादौ नंदने । जुग बाप नाउं कौनको लीजै हो जादव नंद ने ॥ जुग बाप जाको नाम कहिए जाति गोतन जानिये । बिनु रूप बिन अनुहारि कैसे कै बिषाद बखानिये ॥ सब सोधि रहे न सोधि पायो बिनु सुने कहा कीजिये बलि जाउं जादौ राय तुमको गारि कहा कहि दीजिये ॥ तुम्हरी माय सब कुल खोये हो जादव नंदने । सोको जोबलन बिगोएहो जादव नंद ने ॥ सोको जुवल करि ना बिगोवै फिरति निसि बासर बनी । सिर श्वेत कटि पटलाल लहंगानील चोली बिन तनी ॥ चली

मंद मुसुकाय सुर नर नाग भुज भीतर लिए । बलि जाउं जादव नाथ तुम्हरी माय कुल बिन तुम किए ॥ वैतौ भूलि रहे सब भोगी हो जादव नंद ने । वस किये बोलन जोगी हो जादव नंदने ॥ बसकिए बोलन बहुत जोगी छच पति केते कहौ । और अग जग जीव जल थल बनके बुधि नहि सुधि लहौ ॥ अति खरे आतुर काम कातर देखि नित कौतुक नए । अकुलाय निसि दिन संग ताके फिरत भ्रम भूले भए ॥ कछु कहो न जाय गति ताकी हो जादवनंद ने । वह फिरति सदन मद छाकी हो जादव नंद ने ॥ फिरति हैं मद मदन छाकी निलज कुच ढाकै नहीं । नित निरखि निरखि जु छैल शोभा बिकल ह्वै धावै तहीं ॥ एक गिरत परत अचेत उरझत मोह मद मनसागहीं । मुख बरनि कथा अनेक ताकी कहतहूं न बनै कहीं ॥ वह तौ नित नूतन रति जोरै हो जादव नंद ने । चितवनि मैं चित चोरै हो जादव नंद ने ॥ चारु चितवनि चित चोरावै चलत धर धीरन धरै । फिरि छमकि चोप लगाय चंचल तनहि तन अन्तर करै ॥ एक भौंह की छबि निरखि ऐसो कौन जो व्रत तें टरै । एहि भांति परम सुजान सुन्दरि नित्य नूतन रति करै ॥ अति ही कहियति परम सयाने हो जादव नन्दनें । हो ठाकुर सब जग जाने हो जादव नन्दने ॥ सबही के ठाकुर कृपा निधि सुजश सब जग गाइये । अब लोक को उपहास आपुन वरजि गारि मिटाइये ॥ कहा कहौं यह चोंप माधव और अन्त न सूझई । प्रभ सूर चतुर सुजान यहि कुल अब न ऐसो बूझई ॥ ॥ १७ ॥ राग विहागरो ॥ दूलह देखोंगी अब जाउं । उतरे संकेत बट केहि मिसु देखन पाउं । फूल गूंदि माला जै लै मालिनि ह्वै जाउं ॥ नन्द नदन प्यारे को बिरिजा करि लेउं । तम्बोलिनि ह्वै जाउं निरखि नयननि सुख देउं ॥ वृन्दावन चंद को मैं भूषण गढि लेउं । सुनारिनि ह्वै जाउं निरखि नयननि सुख देउं ॥ चन्दन अरगजा सुगन्ध केसरि धरि लेउं । गन्धिनि ह्वै जाउं निरखि नयननि सुख देउं ॥ सनकादिक नारद मुनि शिव बिरंचि जाने । तूर दुंदुभी मृदङ्ग बाजे बर निशाने ॥ तोरन जब आये हरि कोन्हों उछाहु । ब्रज की सब रीति भई बरसाने ब्याहु ॥ डोरन कर छोरन को आईं सकल बधाई । फूलो फिरैं सहचरी उर आनन्द न माई ॥ गज बर गति आवनि पगु धारन गनि पाउ । लटकत सिर सेहरो मनो सिखी सिखण्ड सुभाउ ॥ सोहत संग नारि अंग सबै छबि बिराजै । गजरथ बाजी बजाय चंवर छत्र साजै ॥ दुलहिनि वृषभान सुता अंगअंग भ्राजत । सूरदास प्रभु दूलह देखौ व्रजराज राजत ॥ १८ ॥ राग बिहागरो वृषभानु नंदनी अति छबि बनी । श्री वृंदावन चंद राधा निर्मल चांदनी ॥ श्याम अलक विच मोती दुति मंगा । मनहु झल मलत शिव शीस गंगा ॥ श्रवन ताटंक सोहै चिकुर की कांति । उलटि चल्यो है राहु चक्र की भांति ॥ गोरे ललाट सोहै सेंदुर को बिन्दु । शशि की उपमा देति कवि को होय निन्दु ॥ चपल उनोदे नयन लागत सुहाये । नासिका चम्पक कली को है अलि धाये ॥ बदन मंजन तें अंजन गये दूरी । कलंक रहित शशि पुनि कला पूरी ॥ गिरतें लता भई यह हम सुनी । कंचन तातें ह्वै गिरि भये पुनी ॥ कंचन सेतन सोहै नीलाम्बर सारी । कृष्ण निशा मध्य मनो दामिनि उजियारी

॥ नख सिख शोभा मो पर वरनि न जाई । तुमसी तुमही राधा श्याम मन भाई ॥ यह छबि सूर दास सादर ह्वै वानी । नंद नदन राजा धिराज राधिका देइ रानी ॥ ॥ १९ ॥ राग देवगन्धार ॥ दोउ राजत श्यामा श्याम । ब्रज जुवती मण्डली विराजति देखत सुर नर बाम ॥ धन्य धन्य वृन्दावन को सुख सुर पुर कौनै काम । धनि वृषभान सुता धनि मोहन धनि गोपनि को नाम ॥ इनकी को दासी सरि ह्वै है धन्य शरद की जाम । कैसेहुं सूर जनम ब्रज पावै यह सुख नहि तिहुं धाम ॥ २० ॥ रागकेदारो विराजत मोहन मण्डल रास । श्यामा श्याम सुधा सर मानहुं क्रीड़त बिमल बिलास ॥ ब्रज बनिता सब जूथ मण्डली मिलि कर परस करी । भुज मृडाल भूषण जुत तोरन कंचन खम्भ खरी ॥ मृदु पद न्यास मंद मलया निल बिगलित सोस निचोल । पीत अरुण सित श्वेत ध्वजा चल शीत समीर झकोल ॥ गिरत कुसुम कबरी सोसनि तें टूटत है उर हार । शरद बुंद शिसु बरष चली मनो जहां तहां जलधार ॥ श्रुति कुण्डल धर गिरत न जात न हृदय अनंद भरे । चरन परस तें चलत चहूं दिशि मानहु मीन तरे ॥ दशन कुंद दाडिम दुति दामिनि प्रगटित अरु दुति जात । अधर बिम्ब मधुर अमीकन प्रीतम वदन समात ॥ सुंदर बदन बिलोल बिलोचन अति गहि रङ्ग रंगे । पुष्कर पुण्डरीक परमानहु खंजन जुगल खगे ॥ बिपुल पुलक कंचुकि बन्द टूटे हृदय अनंद भये । कुच जुग चक्रवाक करुणा मिटि अन्तर रैनि गये ॥ पृथु नितम्ब कर भँवर कमल पद नख मनि चन्द अनूप । मनहुं लुब्ध भयो बारि जलद ते इन्दु किये दस रूप ॥ चरन रुनित नूपुर कटि किंकिनि कंकन कर तल ताल । तरुन तनय समेत सहस मुख मुख रित मधुर मराल ताल मृदंग उपंग बांसुरी उपजत ताल तरंग । निकट बिटप द्विज कुल कूनित मनो पैवल बटत अनंग ॥ सूर बिनोद सहित सुर ललना मोहे खग नर नाग । विथक्यौ उड़ पति व्योम विम्ब गति श्री गोपाल अनुराग ॥ २१ ॥ राग सूहौ ॥ रास रसिक गोपाल लाल ब्रजबाल संग बिहरत वृन्दाबन । रुनझुनरनि मुरली बाजति राजति अधरनि धुनि सुनि मोहे सुर नर गन्धर्व गन ॥ तरुन कान्ह तरु तमाल के तट तरुण गोपिका जूथ निकट पट पीतांबर नीलांबर तन तन । नृत्य करत उघटत संगीत पद ताथेई थेईता कहत सूर प्रभु निरखि परस्पर रीझत मन मन ॥ २२ ॥ राग मलार ॥ मानो माई घन घन अन्तर दामिनि । घन अन्तर सोभित हरि भामिनि ॥ जमुना पुलिन मालिका मनोहर शरद सुहाई जामिनि । सुन्दर शशि गुण रूप राग निधि आनद मन विश्रामिनि ॥ रचे रास मिलि रसिक राय सों भेद भई बर चामिनि । रूप निधान श्याम घन सुन्दर अंग अंग अभिरामिनि ॥ खंजन मीन मयूर बिहंसि पिक भेद भई गज गामिनि । को गति गनै सूर नागर संग काम बिमोह्यो कामिनि ॥ २३ ॥ राग बिहागरो ॥ आजु निशि शोभित शरद सुहाई । शीतल मन्द सुगन्ध पवन वहै रोम रोम सुखदाई ॥ जमुना पुलिन पुनीत परस रुचि रचि मण्डली बनाई । राधा वाम अंग पर करधरि मध्यहि कुंवर कन्हाई ॥ कुण्डल संग ताटंक एक भये जुगल कपोलनि झाई । एक उरग मानो गिरि ऊपर द्वै शशि उदय कराई ॥ चारि चकोर परे मनु फन्दा चलत ह्वै

चंचलताई । उड़ पंगति जति रह्यो निरखि लजि सूर दास बलिजाई ॥ २४ ॥ राग केदारो ॥ आजहरि ऐसो रास रच्यौ । श्रवन सुन्यो न कबहु अवलोक्यो यह सुख सुखसच्यौ ॥ प्रथमहि सबै समाज साजि सुर सब मोहे कोउ न बच्यौ । एकहि सुर सुमार थावर चर को जानै को कबहि नच्यौ ॥ गत गुण मंद अभिमान अधिक रुचि लै लोचन मन तहइं खच्यौ । शिव नारद सारदा कहत यों हम इतने दिन बाद पच्यौ ॥ निरखि नयन रस रीति रजनि रुचि काम कटक फिरि कबहु मच्यौ । सूर धनुष धीरज न धरयो तब उलटि अनंग तच्यौ ॥ २५ ॥ राग केदारो ॥ आजु हरि अद्भुत रास उपायो । एकहि सुर सब मोहित कीने मुरली नाद सुनायो ॥ अचल चले चल थकित भये सब मुनि जन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नहि डोलत जमुना उलटि बहायो ॥ थकित भयो चन्द्रमा सहित मृग सुधा समुद्र बढायो । सूर श्याम गोपिन सुखदायक लायक दरश दिखायो ॥ २६ ॥ रागसोरठ ॥ मोहन यह सुख कहां धरयो । जो सुख रास रैनि उपजायो त्रिभुवन मनहि हरयो ॥ मुरली शब्द सुनत ऐसो को जो व्रत तें न टरयो । बचे न कोउ मोहित सब कीन्हें प्रेम उदौत करयो ॥ उलटि काम तन काम प्रकास्यो अद्भुत रूप धरयौ । सूर दास शिव नारद सारद कहत न कह्यौ परयौ ॥ २७ ॥ ॥ राग बिहागरो ॥ आजु निसि रास रंग हरि कीनो । द्वज बनिता बिच श्याम मण्डली मिलि सबको सुख दीनो ॥ सुर ललना सुर सहित बिमोहे रच्यौ मधुर सुर गान । निर्त्त करत उघटत नाना बिधि सुनि धुनि बिसरयौ ध्यान ॥ मुरली सुनत भए सब व्याकुल नभ धरनी पाताल । सूर श्याम को कोन किए बस रचि रचि रास रसाल ॥ २८ ॥ राग केदारो ॥ रास रस मुरलीहीते जान्यौ । श्याम अधर पर बैठि नाद कियो मारग चन्द भुलान्यौ ॥ धरनि जीव जल थल के मोहे नभ मण्डल सुर थाके । तृण द्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द परयौ जाके ॥ बच्यौ नही पाताल रसातल कितिक उदै लौं भान । नारद सारद शिव यह भाषत कछु तन रह्यो न सयान ॥ यह अपार रस रास उपायो सुनो न देख्यौ नैन । बन मृग धुनि सुनि सुनि ललचान्यो श्याम अधर सुनि बैन ॥ कहत रमासों सुनि सुनि प्यारी बिहरत हैं बन श्याम । सूर कहा हमको ऐसो सुख जो विलसत ब्रज बाम ॥ २९ ॥ राग केदारो ॥ जीती जीती हो रन बंसी । मधुकर सूत बदत बन्दी पिक मागध मदन प्रसंसी ॥ मथ्यौ मान बल दर्प मही पति जुवति जूथ गहि आन्यौ । बनको दण्ड ब्रह्मण्ड भेद करि सुर सनमुख सर तान्यो ॥ ब्रह्मादिक शिव सनक सनन्दन बोलत जै जै बाने । राधापति सर्बस अपने दै हित ता हाथ बिकाने ॥ खग मृग मीन सुमार किये सब जड जङ्गम जिते भेष । छाजत छत मद मोह कवच कटि तज न नयन निमेष ॥ अपनी अपनी ठकुराइति की काढति है भुव रेष । बैठि पीठि पान गरजति है देखि सबनि अब सेष ॥ रबिको रथ लै दयो सोम को षट दस कला समेत । रच्यो यज्ञ रस रास राजसू इन्द्रा बिपिन निकेत ॥ दान मान पर धान प्रेम रस बढ्यो माधुरी हेत । अधिकारी गोपाल तहां हैं सूर सबनि सुख देत ॥ ३० ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ यहां ते श्री गोपाल जी के रासविलास की लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग केदारो ॥ सरद सोहाई आई राति । चहुंदिस फूलि रही बन जाति ॥ देखि श्याम के मन सुखभयौ ॥ १ ॥ शशि गोमुखित जमुना कूल । हरषित बिटप सदा फल फूल ॥ चिबिधि पवन दुख दवन है ॥ २ ॥ श्रीराधा रवन बजायो बैनु । सुनि धुनि गोपिन उपज्यों मैनु ॥ जहां तहांते उठि चलीं ॥ ३ ॥ चलत न काहू दियो जनाव । हरि प्यारेतें बाढ्यौ भाव ॥ रास रसिक गुण गायहौ ॥ ४ ॥ घर डर बिसरी बढ्यौ उछाह । मन चिंत्यौ पायो हरि नाह ॥ ब्रज नायक सुन्यों ॥ ५ ॥ पति सुतकी छांडी हम आस । गोधन भरता कियो निरास ॥ सांचो हेत हरिसों कियो ॥ ६ ॥ खान पान तन करि न सम्हार । हिलगि छुड़ायो गृह व्योहार ॥ सुधि बुधि मोहन हरि लियो ॥ ७ ॥ मंजन अंजन अंग श्रृंगार । पट भूषण छूटो परवार ॥ रास रसिक गुण गायहौं ॥ ८ ॥ एक दुहावत तें उठिचली । पति सेवा कछु करी न भली ॥ उत कंठा हरिसों बढ़ी ॥ ९ ॥ उफनत दूध न धर्यो उतारि । सीपी थुलही चुलहैं डारि ॥ पुरुष तजे जेंवतहूते ॥ १० ॥ पै प्यावत बालक धरि चली । पति सेवा कछु करी न भली ॥ धर्यो रह्यो भोजन भलो ॥ ११ ॥ तेल फुलेल उबटना भूल । भाग्य न पायो जीवन मूल ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ १२ ॥ अंजन एक नैन बिसर्यो । कटि कंचुकि लहंगा उर धर्यो ॥ हार लपेटे चरनसों ॥ १३ ॥ श्रवननि पहिरे उलटे हार । ताऊपर चौकी श्रृंगार ॥ चतुर चतुरता हरि लिए ॥ १४ ॥ जाको मन मोहन हरि लियो । ताको काहून कछू कियो ॥ ज्यों पतिसों त्रिय रुचि करै ॥ १५ ॥ श्यामहि सांच्यो मुरली नाद ॥ सुनि धुनि छाड्यौ विषै सवाद ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ १६ ॥ मातु पिता पति रोकी आनि । सही न त्रिय दरशन की हानि ॥ सबहिन को अपमान करि ॥ १७ ॥ जाको मन जासों अटक्यौ । रहत न तानिनु छिनु हटक्यौ ॥ कठिन प्रीति को फन्द है ॥ १८ ॥ जैसे सरिता सिन्धुहि भजैं। कोटि गिरि भेदत नाहि न लजैं ॥ ऐसी गति इनकी भई ॥ १९ ॥ इकजो गृहतें निकसी नहीं । हरि करुणा करि आए तहीं ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ २० ॥ नीरस कबिन कहै रस रीति । रसको लीला रस परतीति ॥ यह मति सुक मुख जानोबी ॥ २१ ॥ ब्रज बनिता आई पिय पास । चितए नयननि टेकुटि बिलास ॥ हंसि पूछो हरि मान दै ॥ २२ ॥ नीके आई मारग मांझ । कुलको नारि न निकसै सांझ ॥ कहा कहैं तुमजोग हौ ॥ २३ ॥ ब्रजकी कुशल कहौ बड़ भाग । क्यों तुम छांड़े सुबन सुहाग ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ २४ ॥ अजहूं फिरि अपने गृह जाऊ । परमेश्वर करि मानो नाऊ ॥ बनमें निसि बसिये नहीं ॥ २५ ॥ श्रीवृन्दावन देख्यो आय । सखद कमोदिनि प्रफुलित जाय ॥ जमुना जल ही कर घना ॥ २६ ॥ घर मह जुवती धर्म्महिं फवै । तानिनु सुत पति दुखितै सबै ॥ यह विधना रचना रची ॥ २७॥ भरता को सेवा सत सार । कपट तजे झूठे संसार ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ २८ ॥

दुख अभोगी जो पति होय । सूरख रोगीतजै न जोय ॥ पतित विलच्छ करि छाडिये । ॥ २८ ॥ तजि भरता रहि जारहि लीन । ऐसो नारि न होय कुलीन ॥ जस विहीन नर कहिं परै ॥ ३० ॥ बहुत कहा समुझाऊं आजु । हमहूं कछु करिबे गृह काजु ॥ तुमतें को अति जानिहै ॥ ३१ ॥ श्रीमुख वचन सुनत बिलखाय । व्याकुल धरणि परी मरझाय रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ३२ ॥ दारुण चिन्ता बढी न थोर । क्रूर बचन कहै नन्द किशोर ॥ और सरन सूझै नहीं ॥ ३३ ॥ रुदन करत नदि बढी गम्भीर । हरि करिया नहि जानै पीर ॥ कुच धम्मनि अब लम्बहै ॥ ३४ ॥ तुम्हरी बहुत पिया है आस । बिनु अपराध न करहु निरास ॥ कैतव रुषाई छाडिये ॥ ३५ ॥ निठुर बचन जनि बोलहु नाथ । निज दासी जनि करहु अनाथ ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ३६ ॥ मुख देखत सुख पावत नयन । श्रवन सिरात सुनत मृदु बैन ॥ सैननहीं सरबस हरयो ॥ ३७ ॥ मन्द हंसनि उपजायो काम । अधर सुधा धुनि करि विश्राम ॥ बरषि सींचि विरहानला ॥ ३८ ॥ जबतें हम देखे ये पाय । तबतें और न कछू सोहाय ॥ कहौ घोष हम जाहि क्यों ॥ ३९ ॥ सजन बन्धु कोकरिहै कानि । तुम बिछुरत प्रिय आतम हानि ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ४० ॥ बेनु बजाय बोलाई नारि । सहि आई कुल सबकी गारि ॥ मन मधुकर लम्पट भयो ॥ ४१ ॥ सोऊ सुंदरि चतुर सुजान । आरज पंथ तजै सुनि गान ॥ तिन देखत पुरुषउ लजै ॥ ४२ ॥ बहुत कहा वरनौ यह रूप । औरन त्रिभुवन सरन अनूप ॥ बलिहारी या राति की ॥ ४३ ॥ सुनि मोहन बिनती दै कान । अपजस होय कि ए अपमान ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ४४ ॥ तुम हमको उपदेसेउ धर्म्म । ताको कछू नपायो मर्म्म ॥ हम अबला मति हीन हैं ॥ ४५ ॥ दुख दाता सुत पति गृह बन्ध । तुम्हरी कृपा बिन सब जग अन्ध ॥ तुमतें प्रीतम औरन कोय ॥ ४६ ॥ तुमसों प्रीति करहिं ये धीर । तिनहिंन लोक वेद की पीर ॥ पाप पुन्य तिनके नहीं ॥ ४७ ॥ आसा पास बंधी हम बाल । तुमहिं विमुख ह्वै हैं बेहाल ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ४८ ॥ बिरद तुम्हारो दीन दयाल । करसों करधरि करि प्रति पाल ॥ भुज दंडनि खंडहु बिथा ४९ जैसे गुणी देखावै कला । कृपिनि कबहुं नहि मानै भला ॥ सदय हृदय हम पर करौ ॥ ५० ॥ ब्रजकी लाज बड़ाई तोहि । करहु कृपा करुणा करि जोहि ॥ तुमहि हमारे गति सदा ॥ ५१ ॥ दीन वचन जब युवतिन कहे । सुनत श्रवन लोचन जल बहे ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ५२ ॥ हंसि बोले हरि बोली बोड़ि । कर जोरे प्रभुता सब छोडि ॥ हौं असाधु तुम साधु हौ ॥ ५३ ॥ मो कारण तुम भई निसंक । लोक बेद बपुरा को रङ्क ॥ सिंह सरण जम्बुक बसै ॥ ५४ ॥ बिना दाम कनि खीन्हो मोल ॥ करत निरादर भई न लोल ॥ आवहु हिलि मिलि खेलिए ॥ ५५ ॥ ब्रज जुवतिन घेरे ब्रज राज । मनहुं निशा करकरणि समाज ॥ रास रसिक गुण गायहौं ॥ ५६ ॥ हरि मुख देखत फूले नैन । उर उमगे कछु कहत न बैन ॥ श्यामहि गावत काम बस ॥ ॥ ५७ ॥ हंसत हंसावत करि परि हास । मनमें कहत करैं अब रास ॥ अंचल गहि चंचल चल्यो ॥ ५८ ॥ ल्यायो कोमल पुलिन मझारि । नख सिख भूषण अंग संवारि ॥

पट भूषण जुवतिन सजे ॥ ५९ ॥ कुच परसत पुजई सब साध । रस सागर मनो मगन अगाध ॥ रास रसिक गुण गाय हैं ॥ ६० ॥ रसमे विरस जु अन्तर ध्यान । गोपिन के उपजै अभिमान ॥ विरह कथामे कौन सुख ॥ ६१ ॥ द्वादश कोश रास परमान । ताको कैसे होत बखान ॥ आस पास जमुना झिली ॥ ६२ ॥ तामें मान सरोवर ताल । कमल बिमल जल परम रसाल ॥ सेवहिं खग मृग सुक भरे ॥ ६३ ॥ निकट कलप तरु बंसी बटा । राधा रति गृह कुंजनि अटा ॥ रास रसिक गुण गाय हैं ॥ ६४ ॥ नव कुं कुम रज बरषत जहां । उडत कपूर धूरि तहं तहां ॥ और फूल फल को गनै ॥ ॥ ६५ ॥ तहं घन श्याम रास रस रच्यो । मरकत मनि कंचनसों खच्यों ॥ अद्भुत कौतुक प्रकट कियेा ॥ ६६ ॥ मंडल जोरि जुवति जहं बनी । दुहुं दुहुं बीच श्याम घन धनो ॥ शेाभा कहत न आवई ॥ ६७ ॥ घूंघट मुकुट विराजत शीस । शेाभित शशि मनेा सहस बतीस ॥ रास रसिक गुण गायहैं ॥ ६८ ॥ मनि कुंडल ताटंक बिलेाल । बिहसत लज्जित ललित कपेाल ॥ अलक तिलक बेसरि बनी ॥ ६९ ॥ कंठशिरी गजमेा तिन हार । चचरि चुरी किंकिनि झन कार ॥ चौकी चमकत उर लगी ॥ ७० ॥ कौस्तुभ मणि राजति रुचि पेाति । दशन दमक दामिनितें जेाति ॥ सरस अधर पल्लव बने ॥ ७१ चिबुक मध्य श्यामल रुचि विन्द । देखि सबनि रीझे गेाबिन्द ॥ रास रसिक गुण गायहैं ॥ ७२ ॥ सबनि बिमान गगन भरि रहे । कौतुक देखन सुर उमहे ॥ नयन सुफल सबके भए ॥ ७३ ॥ बाजे देव लेाक निसान । बरषत सुमन करत सुर गान ॥ मुनि किन्नर जै धुनि करैं ॥ ७४ ॥ जुवतिन बिसरेा पति गति गेह । प्रेम मगन सब सहित सनेह ॥ यह सुख हमको हेा कहां ॥ ७५ ॥ सुंदरता सब गुणकी खानि । रसना एकन परत बखानि ॥ रास रसिक गुणगाय हैं ॥ ७६ ॥ नील कंचुकी साडन लाल । भुजनि नवइआ उरवन माल ॥ पीत पिछौरी श्याम तनु ॥ ७७ ॥ अंगुरिन मुंदरी पहुंची पानि । कछि कटि कछनी किंकिनि बानि ॥ उरु नितम्ब बेनी रुरै ॥ ७८ ॥ नाना बंधन सुघन जघन । पायन नूपुर बाजत सघन ॥ नखनि महाउर खिलि रह्यो ॥ ७९ ॥ राधा मेाहन मंडल मांझ । मानहुं राजित संध्या सांझ ॥ रास रसिक गुण गाय हैं ॥ ॥ ८० ॥ पग पटकत लटकत लट बाहु । मटकत भौंहनि हस्त उछाहु ॥ अंचल चंचल झूमका ॥ ८१ ॥ निरखत दुरि दुरि नयननि सैन । मुख मुख बिहसि कहति मृदु बैन ॥ सिथ्रित गंड प्रस्वेद कन ॥ ८२ ॥ चौरी डोरी बिगलित केश । झूमत लटकत मुकुट सुदेश ॥ फूल खसत सिरते घने ॥ ८३ ॥ कृष्ण बंधु पावत जसु गाय । रीझत मेाहन कंठ लगाय ॥ रास रसिक गुण गाय हैं ॥ ८४ ॥ बाजत भूषण ताल मृदंग । अंग देखावत सरस सुधांग ॥ रंग रह्यो नकह्यो परै ॥ ८५ ॥ नूपुर किंकिनि कंकन चुरी । उपजत मिश्रित धुनि माधुरी ॥ सुनत सिराने सबन सन ॥ ८६ ॥ मुरली मुरज रबाब उपंग । उघटत शब्द बिहारी संग ॥ नागरि सब गुण आगरी ॥ ८७ ॥ गेापी मंडल मंडित श्याम । कनक नील मनि जनु अभि राम ॥ रास रसिक गुण गायहैं ॥ ८८ तिर पलेति सुंदरि भामिनी । मनहुं बिराजित घन दामिनी ॥ या छबिकी उपमा नहीं

॥ ८९ ॥ राधा को गति परति न लखी । रससागर की सीवा नखी ॥ बलि हारी वा रूप की ॥ ९० ॥ लैति सुघर औघर गति तान । दै चुम्बन आकर्षति प्रान ॥ भेंटति मेटति दुक्ख सबै ॥ ९१ ॥ राखति पियहि कुचनि बिच आनि । दै अधरा मृत शिर पर पानि ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ९२ ॥ हरषित बेन बजायो छैल । चंदहि बिशरी नभकी गैल ॥ तारा गण मन मे लजे ॥ ९३ ॥ मोहन धुनि बैकुंठहि गई । नारायण सुनि प्रीति जो भई ॥ कहत बचन कमला सुनैं ९४ ॥ कुंज बिहारी बिहरत देखि । जीवन जन्म सुफल करि लेखि ॥ यह सुख तिहुं पुर है कहां ॥ ९५ ॥ वृन्दा बन हमतें अति दूरि । कैसे धों उडि लागै धूरि ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ९६ ॥ कोला हल धुनि दुहुदिश जाति । कल्प समान भई सुख राति ॥ जीव जंतु भै मत्त सबै ॥ ९७ ॥ उलटि बह्यो जमुना को नीर । बालक बच्छन पीवैं छीर ॥ राधा रवन ठगे सबै ॥ ९८ ॥ गिरवर तरवर पुलकित गात । गोधन थनतें दूध चुचात ॥ सुनि खग मृग मुनि व्रत धरयो ॥ ९९ ॥ महि भूली भूल्यो गति पवन । सोवत ग्वाल तजत नहिं भवन ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ १०० ॥ राग रागिनी मूरति मन्त । दूलह दुलहिनि सरस लसन्त ॥ काक कला संगीत गुर ॥ १०१ सप्त सुरनि की जाति अनेक । नीके मिलवति राधा एक ॥ मन मोह्यो पियको सुघर ॥ १०२ ॥ चौंदधुअनिके भेद अपार । नाचति कुंअरि मिले झप तार ॥ कह्यो सबै संगीत मे ॥ १०३ ॥ सरस सुलय धुनि उघटत शब्द । पिकनि रिझावति गावति सुपद ॥ रास रसिक गुणगाय हौं ॥ १०४ चलत सुलय मोहति गज हंस । हंसत परस्पर गावत गंस ॥ तान मान मृग मन थके ॥ १०५ गोरी चंदन चर्चित बाहु । लेत सुबास पुलक तनु नाहु ॥ दै चुंबन हरि सुख लियो ॥ ॥ १०६ ॥ श्यामल गौर कपोल सुचार । रीझि परस्पर लेत उगार ॥ एक प्राण दै देह हैं ॥ १०७ ॥ नाचत गावत गुणकी खानि । अमित भए टेकत पिय पानि ॥ रास रसिक गुण गायहौं ॥ १०८ ॥ पिय गावत अति नादहि देत । मोर चकोर फिरत संग हेत ॥ घनज नहाई है मनो ॥ १०९ ॥ कचकुच बिच दरसे हंसि श्याम । चलत भौंह नयननि अभिराम ॥ अंगन कोटि अनंग छबि ॥ ११० ॥ हस्तकभेद ललित गति लई । अंचल उड़त अधिक छबि भई ॥ कुच बिगलित माला गिरी ॥ १११ ॥ हरि करुणाकरि लई उठाय । पोंछत श्रम जल कंठ लगाय ॥ रास रसिक गुण गायहौं । ११२ । तिन्हहिं लिवाय जमुन जल गए । पुलिन पुनीत निकुंजनि ठए ॥ अंग श्रमित सबके भए ॥ ११३ ॥ जैसे मदगज कूल बिदारि । तैसें संग लै खेलैं नारि । संकन काहूकी करी ॥ ११४ ॥ मेटी लोक बेद कुल मेंडि । निकसि कुंअरि खेल्यो करि रेंडि । फबी सबै जो मन धरी ॥ ११५ ॥ जल थल क्रीड़त ब्रीड़त नहीं । तिनकी लीला परति न कही ॥ रास रसिक गुण गाय हौं ॥ ११६ ॥ कह्यो भागवत शुक अनुराग ॥ कैसें समुझै बिन बड़ भाग ॥ श्री गुरुशुक्ल कृपाकरी ॥ ११७ ॥ सूर आस करि वर्न्यो रास । चाहत हौं वृन्दा बन बास । श्री राधा इतनी करि कृपा ॥ ११८ ॥ निसि दिन श्यामा सेऊं तोहि । यहै कृपा करि दीजै मोहि । नव निकुंज सुख पुंजमें ॥ ११९ ॥ हरिबंसी हरि

दासी जहां ॥ हरि करुणा करि राखहु तहां । नित बिहार आधार दै ॥ १२० ॥ कहत सुनत बाढै रस रीति । बकता श्रोता हरि पद प्रीति । रास रसिक गुण गाय हौं ॥ १२१ ॥

॥ यहातें बिष्णु पद बन्द रास लीला ॥

राग टोडी ॥ मुरली सुनत भईं सब बौरी । मनहुं परी सिर माझ ठगौरी । जो जैसें सो तैसें सोरी । तनु व्याकुल सब भईं किशोरी । कोउ धरणी कोउ गगन निहारें । कोउ कर करतें बासन डारें । कोउ मनहीं मन बुद्धि बिचारें । कोउ बालक नहि गोद संभारें । घर घर तरुणि सबै बितताबी । सुत पति आरज पंथ भुलानी ॥ मन मन कहति कौन यह बानी ॥ ढूढति घरणि फिरति बितताबी । लै लै नाम सबनि को टेरें । मुरली धुनि घरही के नेरें । कोउ जेंवत पतिही तन हेरें । कोउ दधिमें जावन पै फेरें । कोउ उठि चली जैसेंही तैसें । फेरि आय घरही मैं पैसें । घर पाछें मुरली धुनि ऐसें । आंगन गए नहीं वह तैसें ॥ गृह गुरु जन तिनहूं सुधि नाहीं । कोउ कतहूं कोउ कतहं जाहीं । कोउ निरखत नहि काहू माहीं ॥ मुरछै मदन तरुणि सबदाहीं । व्याकुल भई सबै व्रज नारी । मुरली सो बोले गिरिधारी । चली सबै जहं तहं सुकुमारी । उपजी प्रीति हृदैं हरि भारी ॥ मुरली श्याम अनूप बजाई ॥ बिधि मरजादा सबनि भुलाई । निसि बनकों युवती सब धाईं ॥ उलटे अंग अभूषण नाईं ॥ कोउ चलि चरण हार लपटाई । काहूं चौकी भुजनि बनाई । अंगिआ कटि लंहगा उरझाई । यह सोभा बरनी नहिं जाई ॥ कोउ उठि चली जाति हैं कोउ ॥ कोउ मग गई मिली मग कोउ । सूर दास प्रभु कुंज बिहारी । सरद रास रस रीति बिचारी ॥ १ ॥ राग गोंड मलार ॥ सरद निशि देखि हरि हरष पायो । बिपिन बृंदाबन सुभग फूले सुमन रास रुचि श्याम के मनहि आयो । परम उज्जल रैनि छिटकि रही भूमि पर सदा फल तरुन प्रति लटकि लागे । तै सोई परम रमनीक जमुना पुलिन चिबिधि बहै पवन आनंद जागे । राधिका रवन बन भवन सुख देखि कै अधर धरि बेनु सुललित बजाई । नाम लै लै सकल गोप कन्यानि के सबनि के श्रवन वह धुनि सुनाई । सुनत उपज्यो मैंन परत काहु न चैन शब्द सुनि श्रवन भई बिकल भारी ॥ सूर प्रभु ध्यान धरि कै चली उठि सबै भवन जन नेह तजि घोष नारी ॥ २ ॥ राग बिहागरा ॥ मुरली सुनत उपजी बाय । श्याम सों अति भाव बाढ्यो चलीं सब अकुलाय । गुरु जननि सों भेद काहू कह्यो नहीं उघारि ॥ अई रैनि चलीं घरणितें जूथ जूथनि नारि । नंद नंदन तरुणि बोली सरद निसि के हेत । रुचि सहित बनको चलीं वै सूर भई अचेत ॥ ३ ॥ राग गोंड मलार ॥ सुनत मुरली भवन डरन कीन्हों । श्याम पै चित पहुंचाय पहिलेंहिं दियो आप उठिचली सुधि मन न दीन्हों ॥ कहति मन कामान

आजु पूरण करै नन्दनंदन सबनि बन बोखाई । जानि सायक भजी तरुणी सुत पति तजी काहू नहि लजी अति प्रेम धाई ॥ तज्यो कुल धर्म्म गोधन थपेई तजे पगीं रस कृष्ण बिन कछुन भावै । सूर प्रभु सो प्रेम सत्य करिकै कियो मन गयो तहां इनको बुलावै ॥ ४ ॥ राग सोरठ ॥ मुरली मधुर बजाई श्याम । मन हरि लियो भवन नहिं भावै व्याकुल ब्रजकी बाम । भोजन भूषणको सुधि नाही तनुकी नही संहार ॥ गृह गुरु लाज सुतनि सो तोरयो डरी नही व्योहार । करत सृंगार बिबस भई सुंदरि अंगनि गई भुलाय । सूर श्याम बन बेनु बजावत चित हित रास रमाय ॥ ५ ॥ राग गौड मल्हार ॥ करति शृंगार युवती भुलाही । अंग सुधि नही उलटे भरण धारही एक एकनि कछु सुरति नाही । नैन अंजत अधर अंजही हरषसो श्रवन ताटंक उलटे संवारैं । सूर प्रभुमुख लखित बेनु धुनि बन सुनत चली बेहाल अंचल न धारैं ॥ ६ ॥ राग नट ॥ हरि मुख सुनत बेनु रसाल । बिरह व्याकुल भई बाला चलीं जहं गोपाल । पै दुहावत तजि चली कोउ रह्या धीरज नाहिं । एक दुहनी दूध धाव को सिरावत जाहिं । एक उफनतही चली उठि धरयो नही उतारि । एक जेवन करत त्याग्यो चढे चूल्हें डारि । एक भोजन करि संपूरण गई वैसेंहि त्यागि ॥ सूर प्रभुके पास तुरतहिं मन गयो उठि भागि ॥ ७ ॥ राग रामकली ॥ मन गयो चित श्याम सो लाग्यो ॥ नाना विधि जेंवन करि परुस्यो पुरुष जेंवावत त्याग्यो । इक पै पिवत चली तजि बालक छोह नही तब कीन्हों । चलीं धाय अकुलाय सकुच तजि बेधि बेनु धुनि लीन्हों ॥ इक पति सेवा करत चलीं उठि व्याकुल तन सुधि नाहीं ॥ सूर निदरि बिधिकी मरजादा निशि बनको सब जाहीं ॥ ८ ॥ राग जैतश्री ॥ जबहिं बन मुरली श्रवन परी । चकृत भई गोप कंन्या सब काम धाम बिसरी । कुल मरजाद बेद की आज्ञा नेकहु नही डरी । श्याम सिन्धु, सरिता सलना गण ज्यको ढरनि ढरी ॥ अंग मरदन करिबेको लागी उबटन तेल धरी । जो जेहि भांति चली सो तैसेंहिं निशि बनको जु खरी । सुत पति नेह भवन जन संका लज्जा नहीं करी ॥ सूर दास प्रभु मन हरि लीन्हों नागर नवल हरी ॥ ९ ॥ राग केदारो ॥ सुनि मुरली शब्द ब्रज नारि । करत अंग शृंगार भूली काम गयो तनु मारि । चरण सों गहि हार बांध्यो नयन देखति नाहिं । कंचुकी कटि साजि लहंगा धरति हिरदै माहिं ॥ चतुरता हरि चोरि लीन्हीं भई भोरी बाल । सूर प्रभु रति काम मोहन रास रचि नंद लाल ॥ १० ॥ राग रामकली ॥ ब्रज जुवतिन मन हरो कन्हाई । रास रंग रस रुचि मन आन्यों निशि बन नारि बुलाई ॥ तप तनु गारि बहुत श्रम कीन्हों सो फल पूरण दैन ॥ बेनु नाद रस बिवस कराई सुनि धुनि कीन्हों गैन ॥ जाको मन हरि लियो श्याम घन ताहि संभारै कौन । सूर दास ज्यों नारि कन्त मिलि करैं सु भावै जौन ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ चली बन बेनु सुनत जब धाई । मात पिता बन्धव एक त्रासत जात कहां अकुलाई ॥ सकुच नहीं संका कछु नाहीं रैनि कहां तुम जाति । जननी कहति ईकी घाली काहे कों इतराति । मानति नहीं और निसि प्रावति निकसी

नातो तोरि ॥ जैसें जल प्रवाह भादौ को सो को सकै बहोरि ॥ ज्यों कंचुरी भुअंगम त्यागत मात पिता यों त्यागे । सूर श्याम के हाथ बिकानी अलि अम्बुज अनुरागे ॥ १२ ॥ राग गोंडमलार ॥ सुनत मुरली सकि न धीर धरि कै । चली पित मात अपमान करिकै ॥ लरत निकसी सबै तोरि झरके । भई आतुर वदन दरश हरि के ॥ जाहि जो भजै सो ताहि रातें । कोउ कछु कहै सब निरस बातें ॥ ता बिना ताहि कछु नहीं भावै । और जो जोरि कोटिक दिखावै ॥ प्रीति की कथा वह प्रीति जानै । और करि कोटि बातें बखानै ॥ ज्यों सलिल सिन्धु बिन कहूं न जाई । सूर बैसी दशा इनहूं पाई ॥ १३ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ घर घरतें निकसी ब्रज बाला । लै लै नाम युवति जन जन के मुरली में सुनि सुनि ततकाला ॥ एक मारग इक घरतें निकरी एक निकरति इक भई बेहाला । इक नाही भवननि तें निकरी तिन पै आये परम कृपाला ॥ यह महिमा ओही पै जानै कबिसों कहा बरणि यह जाई । सूर श्याम रस रीति रास सुख बिन देखें क्यों आवै गाई ॥ १४ ॥ राग गोंडमलार ॥ रास रस रीति नहि बरणि आवै । कहां वैसी बुद्धि कहां वह मन लहौं कहां यह चित्त जिय भ्रम भुलावै ॥ जो कहो कौन मानै निगम अगम जो कृपा बिन नहीं या रसहि पावै । भाव सों भजै बिन भावमें ए नहीं भाव ही में भाव यह मन बसावै ॥ यहै निज मंत्र यह ज्ञान यहहै ध्यान दरश दम्पति भजन सरस गाऊं । यहै मांगौ बार बार प्रभु सूर के नयन ह्यां रहै बरु देह पाऊं ॥ १५ ॥ राग ॥ गोंड मलार ॥ सुनत बन बेनु धुनि चली नारी । लोक लज्जा निदरि भवन तजि सुन्दरी मिली बन जाय कै बन बिहारी ॥ दरश कै लहत मन हरष सब के भयो परस की साध अति करति भारी । यहै मन बच कर्म्म तज्यो सुत पति धर्म्म मेटि भव भर्म सहि लाज गारी ॥ भजै जेहि भाव जो मिलै हरि ताहि त्यों भेद भेदा नहीं पुरुष नारी । सूर प्रभु श्याम ब्रज बाम आतुर काम मिलो वन धाम गिरिराज धारी ॥ १६ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ देखि श्याम मन हरष बढ़ायो । तैसिय शरद चांदनी निर्म्मल तैसोई रास रङ्ग उप जायो ॥ तैसिय कनक बरण सब सुन्दरि यह शोभा पर मन ललचायो । तैसोइ हंस सुता पविच तट तैसोइ कल्प वृक्ष सुख दायो ॥ करो मनोरथ पूरण सबके इक अन्तर एक खेल उपायो । सूरश्याम रचि कपट चतुरई युवतिन के मन यह भरमायो ॥ १७ ॥ राग बिहागरो ॥ निशि काहे वनकों उठि धाईं । हंसि हंसि श्याम कहत हो सुन्दरि को तुम ब्रज मारगहि भुलाईं ॥ गई रहीं दधि बेचन मथुरा तहां आजु अबसेर लगाई । अति भ्रम भयो विपिन क्यौं आईं मारग वह कहि सबनि बताई ॥ जाऊ जाऊ घर तुरत युवति गण खीझत गुरजन कहि डरवाई । की गोकुल तें गवन कियो तुम इनि बातनि है नही भलाई यह सुनिकै ब्रज बाम कहत भई कहा करत गिरिधर चतुराई । सूर नाम लै लै सब जन जन के मुरली बारम्बार बुलाई ॥१८॥ राग बिहागरो ॥ यह सुनि कहो घोष कुमारि । हम चतुराई नहीं कीन्ही तुम चतुर सब ग्वारि ॥ कहां हम कहां तुम रही ब्रज कहां मुरली नाद । करति हो परिहास हमसों तजो यह रस बाद ॥ बड़ेकी तुम बच्छ बेटी नाम ले क्योंजाय । ऐसें निशि बन दौरि आई हमहिं दोष लगाय ॥ भली यह तुम करी नाही अजहूं घर

फिरि जाऊ । सूर क्यों तुम निदरि आईं नही तुम्हरे नांऊ ॥१९॥ राग जैतश्री ॥ मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं । बारम्बार कमल दल लोचन यह कहि कहि पछिताहीं ॥ उन के लाज नही बन तुमकों आवन दीन्ही राति । सब सुंदरी सबै नव जोवनि निठुर अहीर की जाति ॥ को तुम कहि आई की ऐसेंहि कीन्ही कैसी रीति । सूर तुमहि यह रही बूझिये बड़ी करी विपरीति ॥ २०॥ राग रामकली ॥ अब तुम कही हमारी मानौ । बनमें आय रैनि सुख देख्यौ यहै लहौ सख जानों ॥ अब ऐसी कीजो जनि कबहूं जानति हौमन तुम हूं । यह धुनि सुनै कहूं जो कोऊ तुमकों लाज रुहमहूं ॥ हमतौ आजु बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो । जैसो कियो लह्यो फल तैसो हमहीं दोष न आयो ॥ अब तुम भवन जाऊ पति पूजऊ परमेश्वर की नाईं । सूर श्याम युवतिन सों यह कहि कहि अपराध छमाई ॥ २१ ॥ राग सूहोबिलावल ॥ यह युवतिनको धर्म्म नहोई । धृग सो नारि पुरुष जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई ॥ पतिको धर्म यहै प्रतिपालै युवती सेवाही को धर्म्म। युवती सेवा तऊ न त्यागै जौं पति कोटि करै अपकर्म्म ॥ बनमें रैनि बास नहिं कीजै देख्यौ मनौ वृन्दाबन आय । विविधि सुमन शीतल जनुना जल विविधि समीर परसि सुखदाय ॥ घरही में तुव धर्म सदाई सुत पति दुखी होत तुम जाऊ । सूर श्याम यह कहि परबोधत सेवा करौ जाऊ घर नांऊ ॥ २२ ॥ राग बिहागरौ ॥ यहि बिधि बेद मारग सुनौ । कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम जिय गुनौ ॥ कन्त मानऊ भवन रोगी और नाहिं उपाय । ताहि तजि क्यों बिपिन आई कहा पायो आय ॥ बिरध अरु बिन भागहू को पति तजैं पति होय । जों सूरप होय रोगी तजै नाहीं जोय ॥ यहै मैं पुनि कहत तुमसों जगत में यह सार । सूरपति सेवा बिना क्यों तरोगी संसार ॥ २३ ॥ राग बिहागरौ ॥ कहा भयो जो हमपै आई । हमहूं को बिधि को डर भारी अजहू जाऊ चंडाई ॥ तजि भरतार और जो भजिये सो कुलीन नहि होय । मरें नर्क जीवत या जगमें भलो कहे नहि कोय ॥ हम जो कहत सबै तुम्ह जानति तुमहूं चतुर सुजान । सुनऊ सूर घर जाऊ हमऊ घर जैहैं होत बिहान ॥ २४ ॥ राग बिलावल ॥ निठुर बचन सुनि श्याम के युवती बिकलानी । चकृत भईं सब सुनि रहीं नहि आवै बानी ॥ मनो तुषार कमलनि परयो ऐसें कुम्हिलानी । मनो महा निधि पायकै खोय पछितानी ॥ ऐसी ह्वै गइ तनु दशा पिय के सुनि बानी । सूर बिरह ब्याकुल भईं बूडी बिनि पानी ॥ २५ ॥ राग आरू ॥ श्याम उर प्रीति मुख कपट बानी । युवति ब्याकुल भईं धरनि सब गिरि गईं आस गढ़ टूटि नहि मेद जानी ॥ हंसत नन्दलाल मन मन करत ख्याल ए भईं बेहाल ब्रजबाल भारी । रुदन जल नदी सम बहि चल्यो उरज बिच मनो गिरि फोरि सरिता प्रनारी ॥ अङ्ग थकि पथिक नहि चलत कोउ पंथ के नाव रस भाव हरि नहीं आनै । सूर प्रभु निठुर करिआ कहा ह्वै रहे उनहि बिन और को खेय जानै ॥२६॥ राग जैतश्री ॥ निठुर बचन जनि बोलऊ श्याम । आस निरास करो जनि हमरो ब्याकुल बचन कहति हैं बाम ॥ अन्तर कपट दूरि करि डारौ हम तन कृपा निहारौ । कृपा सिंधु तुम कों सब गावत अपनो नाम सम्हारौ ॥ हमको शरन और नहि सूझै कापें हम अब जांहि । सूर दास प्रभु निज

दासिनि को चूक कहा पछितांहि ॥ २७ ॥ राग गौरी ॥ तुम पावत हम घोष न जांहि । कहा जाय हम लैहैं ब्रजमें यह दरशन त्रिभुवन में नाहि ॥ तुमहूं तें ब्रजहि तू कोउ नहि कोटि कहैं नहि मानै । काके पितामात हैं काके काहू हमनहि जानै ॥ काके पतिसुत मोह कौनके घर है कहां पठावत । कैसो धर्म्म पापहै कैसो आस निरास करावत ॥ हम जानै केवल तुमही को और दृश्या संसार । सूरश्याम निठुराई तजिये तजियेबचन बिसार ॥ २८ ॥ रागजैतश्री ॥ तुमहौ अन्तर जामि कहाई । निठुर भये क्यों रहत इतेपर तुम नहि जानत पीर पराई ॥ पुनिपुनि कहत जाहुब्रज सुन्दरि दूरिकरौ पिय यह चतुराई । आपुहि कही करौ पति सेवा ता सेवा को हैं हम आई ॥ जो तुम कहौ तुमहि सबछाजै कहा कहैं हम प्रभुहि सुनाई । सुनहु सूर प्रभु यह तनु त्यागें हम पै घोष गयो नहि जाई ॥ २९ ॥ राग बिहागरो ॥ कैसे हमकों ब्रजहि पठावत । मन तौ रह्यो चरण लपटानो जो इतनी यह देह चलावत ॥ अटके नैन माधुरी मुसुकनि अमृत बचन श्रवणनि कों भावत । इन्द्री सबै मनहि के पाछैं कहो धर्म कहि कहा बतावत ॥ इनको करि आपने लए तौ क्यों हमकों नाही जियभावत । सूर सैनदै सर्बस लूट्यो सुरली लैलै नाम बुलावत ॥ ३० ॥ राग कान्हरो ॥ भवन नहीं अबजांहि कन्हाई । सजन बन्धु तें भई बाहिरी अब कैसें बे करत बड़ाई ॥ जों कबहुंक बे खेहिं कृपाकरि तौ धृग हम सबनारि । तुम बिछुरत जीवन धृग राखैं कहौ न आप विचारि ॥ धृग यह लाज बिमुख की सङ्गनि धनि जीवन तुम हेत । धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुतपति है जेत ॥ हम चाहति मृदु हंस नि माधुरी जातें उपजो काम । सूर श्याम अधरनि रस सींचहु जरति बिरह सब बाम ॥ ॥ ३१ ॥ राग कान्हरो ॥ सुनहु श्याम अब करत चतुरई क्यों तुम बैनु बजाय बुलाईं ॥ बिधि मरजाद लोक की लज्जा सबै त्यागि हम धाई आईं ॥ अब तुमकों ऐसी ना बुझिए आस निरास करौ जनिसाईं । सोइ कुलीन सोई बड़भागिन जे तुव सन्मुख रहे सदाईं । ते धनि पुरुष नारि धनि तेई पंकज चरण रहे दृढताई । सूर दास कहि कहा बखाने यह निधि यह अंग सुन्दरताई ॥ ३२ ॥ राग रामकली ॥ बिनती सुनि श्याम सुजान । अतिही मुख अपमान कीन्हों दृढ न इनतें आन ॥ अब करौं दुखदूरि इनको भजो तजि अभिमान । बिरह द्वन्द निवारि डारों अधर रस दै पान ॥ मनहिं मन यह सुख करत हरि भये कृपा निधान । सूर निहचै भजी मोकों नहीं जानति आन ॥ ३३ ॥ राग बिलावल ॥ मोहि बिना ये औरन जानैं । बिधि मरजाद लोक की लज्जा तृनहूं तें घटि मानैं ॥ इनि मोकों नीके पहिचान्यो कपट नहीं उर राख्यो । साधु साधु पुनिपुनि हरषित ह्वै मनहीं मन यह भाख्यो ॥ पुनि हंसि कह्यो निठुरता धरि कैं क्यों त्याग्यो गृह धर्म । सूर श्याम मुख कपट हृदय रति युवतिन के अति भर्म ॥ ३४ ॥ राग गोंड मल्हार ॥ तजौ नदलाल अति निठुराई गहि रहे रहे कहा पुनि पुनि कहत धर्म हमकों । यही ढंग रहे बचन सब कटु कहे वृथा युवतिन दहे मेटि प्रण कों ॥ बिमुख तुम तें रहैं तिनहिं हम क्यों गहैं कहत है तहां दुख देहि भारी । कहा सुतपति कहा मात पित कुल कहा कहा संसार बिन बन बिहारी ॥ हमहिं समझाय यह कहौ बनवारि कहा तुम कहा नहिं

मर्म जानै । सुनहु प्रभु सूर तुम भले कौंवे भले सत्य करि कहौ हम अबहिं मानै ॥३५॥ ॥ राग रामकली ॥ तुमहिं बिमुख धृग धृग नरनारि । हम तो यह जानति तुम महिमा को सुनिये गिरिधारि ॥ सांची प्रीति करी हम तुमसों अन्तरजामी जानों । गृहजन की नहिं पीर हमारैं वृथा धर्म हठ टानों ॥ पाप पुन्य दोऊ परि त्याग्यौ अब जो होय सोहोई । आस निरास सूर के स्वामी ऐसी करै न कोई ॥ ३६ ॥ राग जैतश्री ॥ आस जनि तोरहु श्याम हमारी । बेनु नाद धुनि सुनि उठि धाईं प्रगटत नाम मुरारी । क्यों तुम निठुर नाम प्रगटायो काहे बिरद भुलाने । दीन आजु हमतें कोउ नाहीं जानि श्याम मुसकाने ॥ अपने भुज दंडनि कर गहिये बिरह सलिल मैं फासी । बार बार कुल धर्म बतावत ऐसे तुम अविनासी ॥ प्रीति बचन नौका कों राख्यो अंकम भरि बैठावहु॥ सूर श्याम तुम बिन गति नाहीं युवतिन पार लगावहु ॥ ३७ ॥ राग नट ॥ चित दै सुनहु अंबुज नैन । कृपिनि को गथ भयो तुमकों सरस अमृत बैन ॥ हमगुणी नव बाल रिझवति तुम तरुण धन रासि । कैसेहूं सुखदान दीजे बिरह दारिद नासि ॥ करहु यह जस त्रिभुवन निठुर कोटी खोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेम बचननि बोलि ॥ दीन बानी श्रवन सुनि सुनि द्रवे परम कृपाल । सूर एकहु अंग न कांची धन्य धनि ब्रज बाल ॥ ३८ ॥ राग बिहागरो ॥ हरि सुनि दीन बचन रसाल । बिरह व्याकुल देखि बाला भरे नयन बिसाल ॥ चारु आनन नीर धारा बरनि कापै जाय । मनहु सुधा तड़ाग उछले प्रेम प्रगटि दिखाय ॥ चन्द मुखपर निदरि बैठे सुभग जोर चकोर । पिवत मुख भरि भरि सुधा ग्रसि गिरत ता पर भोर ॥ हरष बानी कहत पुनि पुनि धन्यधनि ब्रज बाल । सूर प्रभु करि कृपा जोह्यो सदय भये गोपाल ॥ ३९ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम हंसि बोले प्रभुता डारि । बारम्बार विनय कर जोरत कटि पट गोद पसारि ॥ तुम सन्मुख मैं बिमुख तुम्हारो मैं असाध तुम साध । धन्य धन्य कहि कहि युवतिन कों आप करत अनुराध ॥ मोकों भजी एक चित ह्वै कै निदरि लोक कुल कानि । सुत पति नेह तोरि तिन कासौं मोहि निज करि जानि ॥ जाके हाथ पेड़ फल ताको सोफल लह्यो कुमारी। सूर कृपा पूरण सोंबोलै गिरि गोवर्द्धन धारी ॥ ४० ॥ राग सूहो ॥ कहत श्याम श्री मुख यह बानी । धन्य धन्य दृढ नेह तुम्हारो बिन दामनि मो हाथ बिकानी ॥ निर्दय बचन कपट के भाषे तुम अपने जिय नेक न आनी । भजी निसंक आय तुम मोकों गुरु गुरजन की संक न मानो ॥ सिंह रहे जम्बुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी । सूर श्याम अंकम भरि लीन्ही बिरह अगनि झर तुरत बुझानी ॥ ४१ ॥ ॥ राग मारू ॥ कियो जेहि काज तप घोष नारी ॥ देउं फल हौं तुरत तुम लेहु अब घरी हरष चित करहु दुख देहु डारी ॥ रास रस रचो मिलि सङ्ग बिलसहु सबै बच्यो हरि कह्यो जो निगम बानी । हंसत मुख निरखि बचन अमृत बरषि कृपा रस भरे सारङ्ग पानी ॥ ब्रज युवति चहूं पास मध्य सुन्दर श्याम राधिका बाम अति छबि बिराजै । सूर नव जलद तनु शुभग श्यामल कान्ति इंदु बहु पान्ति बिच शुभग छाजै ॥ ४२ ॥ राग टन ॥ हरि मुख देखि फूले नैन । हृदय हरषित प्रेम गद गद नही

आवत बैन ॥ काम आतुर भजी गोपी हरि मिले तेहि भाय । प्रेम वश्य कृपाल केशव जानि खेत सुभाय ॥ परस्पर मिलि हंसत रहसत हरषि करत विलास । उमगि आनन्द सिन्धु उछलै श्याम से अभिलाष ॥ मिलति एक एक भुजनि भरि रास रुचि जिय आनि । तेहि समय सुख श्याम श्यामा सूर क्यौं कहै गानि ॥ ४३ ॥ राग बिहागरो ॥ रास रुचि जबहि श्याम मन आनी । करुइ शृंगार संवारि सुन्दरी हंसत कहत हरि बानी ॥ जो देखै अंग उलटे भूषण तरुणि तरुणि मुसुकानी । बार बार पिय देखि देखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी ॥ नव सत साजि भईं सब ठाढी को छवि सकै बखानी । वह छवि निरखि अधीरज भइ तनु काम नारि बित बानी ॥ कुच भुज परसि करी मन इच्छा कछु तनु तृषा बुझानी । सुनउ सूर रस रास नायका सुन्दरि राधा रानी ॥ ४४ ॥ ॥ राग सोरठ ॥ अञ्चल चंचल श्याम गह्यो । लै गये शुभग पुलिन यमुना के अङ्ग अङ्ग वेष लह्यो ॥ कल्प तरो वर तट वंसीवट राधा रति गृह धाम । तहां रास रस रङ्ग उपायो सङ्ग सोहत व्रज वाम ॥ मध्य श्याम घन तड़ित भामिनी अति राजत शुभ जोरी । सूर दास प्रभु नवल छबीले नवल छबीली गोरी ॥ ४५ ॥ राग टोड़ी ॥ जहां श्याम घन रास उपायो । कुं कुम जल सुख वृष्टि रमायो ॥ धरनी रज कर्पूर मैं भारी । बिबिधि सुमन छवि न्यारी न्यारी ॥ युवती जुरि मण्डली बिराजै । बिच बिच कान्ह तरुणि बिच भ्राजै ॥ अनुपम लीला प्रगटि दिखायो । गोपिन को कीयो मन भायो ॥ बिच श्रीश्याम नारि बिच गोरी । कनक खम्भ मरकत खचि धोरी ॥ शोभा सिन्धु हिलोर हिलोरी । सूर कहा वरणौ मति थोरी ॥ ४६ ॥ राग गोंडमलार ॥ रास मण्डल बने श्याम श्यामा । नारी दुइं पास दुइं पास गिरिधर बने शशि बीच द्वादश उपमा ॥ मुकुट की छवि कहा उपमा कहौं नयन जानत नहीं देह जानै । शुभग नव मेघ ता बीच चपला चमकि निरखि निर्त्तत मोर हरष मानै ॥ करति आनन्द पिय सङ्ग ललना पुञ्ज बढ़त रस रङ्ग छिन छिनहि औरै । सूर प्रभु रास रस नागरी मध्य दोउ परस्पर नारि पति मनहि चोरैं ॥ ४७ ॥ रागगोंड मलार ॥ परस्पर श्याम व्रज वाम सोहैं । शीस श्री खण्ड कुण्डल जटित मणि श्रवन निरखि छवि श्याम मन तरुणि मोहैं ॥ नासिका ललित बेसरि बनी अधर तट शुभग ताटङ्क छवि कहि न जाय । धरणि पग पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि अटकि मन तहांरीझे कन्हाय ॥ तब चलत हरि मटकि रहीं युवती मटकि लटकि पटकि छबिनि वारैं । कहति प्रभु सूर बहुरो चलो वैसेंही हमहु वैसें चलैं जो निहारैं ॥ ४८ ॥ राग गोंडमलार ॥ निरखि व्रज नारि छवि श्याम लाजै । बिबिधि बेनी रची मांग पाटी शुभग भाल बेंदी बिंदु इंदु लाजै ॥ श्रवन ताटङ्क लोचन चारु नासिका हंस खञ्जन कीर कोटि लाजै । अधर बिद्रुम दसन नहीं छवि दामिनी शुभग बेसरि निरखि काम लाजै ॥ चिबुक तर कंठ सरी माल मोतिन छवि कुच एमगत हेम गिरि अतिहि लाजै । सूर की स्वामिनी नारि व्रज भामिनी निरखि पिय प्रेम शोभा सु लाजै ॥ ४९ ॥ राग बिहागरो ॥ बनि व्रज नारि शोभा भारि । पगनि जेहरि लाल लहंगा अङ्ग पचरङ्ग सारि ॥ किंकिनी कटि कुनित कंकन कर चुरी झनकार । हृदय चौकि चडाकि बैठी शुभग मोतिन हार ॥ कंठ सरी दुलरी

विराजति चिबुक श्यामल बन्द । शुभग बेसरि ललित नासा रोझि रहे नंद नन्द ॥ श्रवन बर ताटङ्क की छवि गोर ललित कपोल । सूरप्रभु बस अति भये हैं निरखि लोचनलोल। ॥ ५० ॥ राग जैतश्री ॥ सुर गण चढ़ि विमान न देखत । ललना सहित सुमन गण बर षत जन्म ब्रजही को लेखत ॥ धनिब्रज लोग धन्य ब्रज बाला बिहरत श्री राधा गोपाल । धनि बंसीबट धनि जमुना तट धनि धनि लता तमाल ॥ सब तें धन्य धन्य वृन्दाबन जहां कृष्ण को बास । धनि धनि सूर दास ने खानो अद्भुत राच्यो रास ॥ ५१ ॥ राग बिलावल ॥ नयन सुफल अब भये हमारे । देव लोक निशान बजाये बरषत सुमन सुधारे ॥ जै जै धुनि किन्नर मुनि गावत निरखत योग बिसारे । शिव सारद नारद यह भाषत धनि धनि नन्द दुलारे ॥ सुर सरना पति गति बिसराये रही निहारि निहारि । जात न नेक देखि सुख हरि को आई लोक बिसारि ॥ यह छबिछूं त्रिभुवन कछुं नाही जो वृन्दावन धाम । सुन्दर ता गुण रस की सींवा सूर राधिका श्याम ॥ ५२ ॥ राग आसावरी ॥ हमकों विधि ब्रज बधून कीन्ही कहा अमर पुर बास भये । बार बार पछितात यहै कहि सुख को तो हरि सङ्ग रये ॥ कहा जन्म जो नही हमारो फिरि फिरि ब्रज अवतार भलौ । वृन्दा बन द्रुम लता पूछिये करता सों मांगिये चलौ ॥ यह बांछना होय क्यों पूरण दाझी है बहु ब्रज में रलौ । सूर दास प्रभु अन्तर्यामी तिनहि बिना कासों करलौ ॥ ५३ ॥ राग बिहागरो ॥ धन्य नंद जशुदा के नन्दन । धन्य खण्ड पीत सिर लटकनि धनि कुण्डल धनि मृग मद चन्दन ॥ धनि राधिका धन्य सुन्दरता धनि मोहन की जोरी । ज्यों घन मग में दामिनि की छवि यह उपमा कहों थोरी ॥ धनि मण्डली जुरी गोपिन की ता बिच नन्द कुमार । राधा सम सब गोप कुमारी क्रीड़त रास बिहार ॥ षट दश सहस घोष कुमारी षट दश सहस गोपाल । काहू सों कहुं अन्तर नाही करत परस्पर ख्याल ॥ धनि ब्रज बास आस यह पूरण कैसें होब हमारी । सूर अमर ललना गण अम्बर विथकी लोक बिसारी ॥ ५४ ॥ राग सूहो ॥ तरु तमाल गोपाल लाल बन माल ग्रीव धर हृदय बिशाल । कबहुंक गो धन सङ्ग ले बाल कबहुं फिरत सङ्ग सखा ग्वाल ॥ धनि ब्रज नायक कियो महरि पोषि प्रति पाल । कबहुं धनिकै हरि रहैं बन जाय गोरस दान लेत मंगाय पैठि पताल ॥ नाथ्यो कालो काल फन फन प्रति निर्त्तत विविधि ताल । भूषण मुकुट जग्यो चुनो लाल धन्य सूर प्रभु ता धरें राजें सङ्ग बनिता जाल ॥ ५५ ॥ राग कान्हरो ॥ कुण्डल लोल कपोल बिराजित दशन चमक चम्पा जाल तिलक शोभित सिर केसरि नयना बिबि बने । कटि काछनी चन्दन खोरि श्याम बरण घन सुन्दर ऐसे नट नागर के जदुए री वारने ॥ बिभङ्गी है निर्त्त करत ब्रज युवतिन मण्डल बिच दुहुं दुहुं बिच श्याम घने । मोर मुकुट ग्रीव धर राजत हैं सूर प्रभु निरखि निरखि अमर जैजै धुनि भने ॥ ५६ ॥ राग धनाश्री ॥ रास मण्डल मध्य श्याम राधा । मनो घन बीच दामिनी कोंधति भृभग एक है रूप है नही बाधा ॥ नायका अष्टहुं दिशा सोहहीं बनी चहुं पास सब गोप कन्या । मिले सब सङ्गनहि लखति कोउ परस्पर बने षट दस सहस कृष्ण सैन्या ॥ सजे शृंगार नव सात जगमगि रह्यो अङ्ग भूषण रैनि बनी तैसो । सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवल ब्रजसुता

मंडली जैसी ॥ ५७ ॥ राग गौरी ॥ युवति अङ्ग छवि निरखत श्याम । नंदकुमार श्री अङ्ग माधुरी अवलोकति व्रज बाम ॥ परी दृष्टि कुच उचनि पिया की वह सुख कह्यो न जाय । अंगिया नील साडनी राती निरखत नयन चुराय ॥ वे निरखति के भुर भुज की छवि पहुंचनि पहुंची भ्राजति । कर पल्लवनि मुद्रिका सोहति ता छवि परमन लाजति ॥ बदन बिंदु निरखत हरि रीझे अधि पर बाल बिलास । नन्दलाल व्रजबाल सु छवि क्यों बरनै सूरज दास ॥ ५८ ॥ राग गौरी ॥ श्याम तनु राजत पीत पिछौरी । उर बन माल काछनी काछे कटि किङ्किनि छवि रौरी ॥ बेनी सुभग नितम्बनि डोलति मन्द गामिनी नारि । सूथनि जघन बांधि नारा बंद तिरनी पर छवि भारि ॥ नखनि रङ्ग जावक की शोभा देखत पिय मन भावत । सूरदास प्रभु तनु चिभङ्ग ह्वै जुवतिन मनहि रिझावत ॥ ॥ ५९ ॥ राग बिहागरो ॥ निर्त्तत श्याम नानारङ्ग । मुकुट लटकनि भृकुट भटकनि धरे नटवर अङ्ग ॥ चलति गति कटि कुनित किंकिनि घूंघुरु झनकार । मनो हंस रसाल बानी अरस परस विहार ॥ लसति कर पङ्कजी उपाजय मुद्रिका अति जोति । भावसों भुज फिरत जबहीं तबहिं शोभा होति ॥ कबहुं निर्त्तति नारि गति पर कबहुं निर्त्तति आप । सूरके प्रभु रसिक की मनि रच्यो रास प्रताप ॥ ६० ॥ राग बिहागरो ॥ गति सुगंध निर्त्तति व्रज नारि । हाव भाव नयननि सैननि दैदै रिझवति गिरिधारि ॥ पग पग पटकि भुजनि लटकावति फूंदा करनि अनूप । चंचल चलत झूमका अंचल अद्भुत है वह रूप ॥ दुरि निरखत अंग रूप परस्पर दोउ मनहीं मन रीझत । हंसि हंसि बदन बचन रस प्रगटत स्वेद अङ्ग जल भीजत ॥ बेनी छुटि लटै बगरानी मुकुट लटकि लटकानो । फूल खसत सिरते भए न्यारे सुभग खाति सुत मानो ॥ गान करति नागरी रीझि पिय लीन्ही अंकमलाय । रस बस ह्वै लपटाय रहे दोउ सूर सखी बलि जाय ॥ ६१ ॥ राग गौरी ॥ निर्त्तत अङ्ग अभूषण बाजत । गति सुगन्ध शोभा वह देखत एकते एक अति राजत ॥ कहत न बनैं कह्यो रसऐसो बरनत बरनि न जाय । तैसेइ बने श्याम तैसिय बनि गोपी छवि अधिकाय ॥ कंकन चुरी किंकिनी नूपुर पग जनि बिछिया सोहत । अद्भुत धुनि उपजत इन मिलिकै भ्रमि भ्रमि इत उत जोहत ॥ सुनि सुनि श्रवन रीझि मनहीं मन राधा रास रसज्ञा । सूरश्याम सबके सुखदायक लायक गुननि गुणज्ञा ॥ ६२ ॥ ॥ राग केदारो ॥ उघटत श्याम निर्त्तति नारि । धरे अधर उपङ्ग उपजे लेत हैं गिरिधारि ताल मृदङ्ग रबाब बीना किन्नरी रस सार । शब्द सङ्ग खटंग मिलवत सुघर नन्द कुमार ॥ नागरी सब गुननि आगरि मिलि चलति पिय सङ्ग । कबहुं गावति कबहुं निर्त्तति कबहुं उघटति रङ्ग ॥ मण्डली गोपाल गोपी अंग अंग अनुहारि । सूर प्रभु घन नवल भामिनि दामिनी छवि डारि ॥ ६३ ॥ राग बिहागरो ॥ निर्त्तत हैं दोउ श्यामा श्याम । अंग मगन पियतें प्यारी अति निरखि चकृत व्रज बाम ॥ तिरप लेति चपलासी चमकति झमकत भूषण अंग । या छवि पर उपमा कहुं नाहीं निरखत बिबस अनंग ॥ श्रीराधिका सकल गुण पूरण जाके श्याम अधीन । संग तें होत नहीं कहुं न्यारे भए रहत अति खीन ॥ रस समुद्र मानो उछलित भयो सुन्दरता की खानि । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए

कहत न कछू बखानि ॥ ६४ ॥ राग कल्यान ॥ कबहुं प्रिय हरषि हृदै लगावैं । कबहुं लैजै तान नागरी सुघर अति सुघर नन्द सुवन को मन रिझावैं ॥ कबहुं चुंबन देति आकर्षि जिय लेति करति बिन बेत बस हेत अपने । मिलति भुज कंठ दै रहति अंग लटकिकै जात दुख दूरिहूं झझकि सपने ॥ लेति गहि कुचनि बिच देति अधरनि अमृत एक कर चिबुक एक शीस धारै । सूर प्रभुकी स्वामिनी श्याम सनमुख ह्वै निरखि मुख नयन एक टक निहारै ॥ ६५ ॥ राग बिहागरो ॥ रस बस श्याम कीन्हे नारि । अधर रस चंचवत परस्पर संग सब व्रज नारि ॥ काम आतुर भजी बाला सबनि पुरई आस । एक इक व्रजनारि इक इक आप करयो प्रकास ॥ कबहुं नर्त्तत कबहुं गावत कबहुं कोक बिलास । सूरके प्रभु रास नायक करत सुख दुख नास ॥ ६६ ॥ राग कल्यान ॥ हरषि मुरली नाद श्याम कीन्हो । कर्षि मन तिहूं भुवन सुनत थकि रह्यो पवन ससिहि भूल्यो गवन ज्ञान लीन्हो ॥ तारका गण लजै बुद्धि मन मन सजे तबहिं तनु सुधि तजे शब्द लाग्यो । नाग नर मुनि थके नभ धरणि तन तके सारदा शंभु शिव ध्यान जाग्यो ॥ ध्यान नारद टर्यो शेष आसन चल्यौ गई बैकुंठ धुनि गगन स्वामी । कहत श्रीप्रिया सों राधिका रवन ए सूर प्रभु श्यामके दरस कामी ॥ ६७ राग बिहागरो ॥ मुरली धुनि बैकुंठ गई । नारायण कमला सुनि दम्पति अति रुचि हृदय भई ॥ सुनहु प्रिया यह बानी अद्भुत वृन्दावन हरि देख्यो । धन्य धन्य श्रीपति मुख कहि कहि जीवन व्रजको लेख्यो ॥ रास बिलास करत नद नन्दन सो हमतें अति दूरि । धनि व्रज धाम धन्य व्रज धरणी उड़ि लागै जो धूरि ॥ यह सुख तिहूं भुवन मे नाहीं जोरि संग पल एक । सूर निरखि नारायण एक टक भूले नयन निमेष ॥ ६८ ॥ राग आसावरी ॥ जो सुख श्याम करत वृन्दावन सो सुख तिहूं पुर नाहीं हो । हमको कहा मिलत रज उनकी यह कहि कहि अकुलाहीं हो ॥ सुनहु श्रीप्रिया सत्य कहतहौं मोते और न कोई हो । नन्द कुमार रासरस सुख बिन वृन्दा बन नहि होई हो ॥ हरता करता को प्रभु मैंही यह मोतें है न्यारो हो । सूर धन्य राधा वर गिरिधर धनि सुख नन्द दुलारो हो ॥ ६९ ॥ राग कल्यान ॥ जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जड़ थावर चर कीन्हे पाहन जलज बिकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशौ दिशि पूरण धुनि आच्छादित कीन्हो । निशिवर कल्प समान बढाई गोपिन को सुख दीन्हो ॥ मै मत्त भए जीव जल थलके तनकी सुधि न संम्हार । सर श्यामसुख वेनु मधुर सुनि उलटे सब ब्यौहार ॥ ७० ॥ राग पूरबी ॥ मुरली गति बिपरीति कराय । तिहूं भुवन भरि नाद समान्यों राधा रवन बजाय ॥ बछरा थन नाहीं मुख परसत चरति नहीं तृण धेनु । जमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुन बेनु ॥ बिह्वल भए नहीं सुधि काहू सुर गंधरव नर नारि । सूरदास सब चकृत जहां तहं व्रज युवतिन सुख कारि ॥ ७१ ॥ राग केदारो ॥ मुरली सुनत अचल चले । थके चर जल झरत पाहन विफल वृक्ष फले ॥ पै स्रवत गोधननि थनते प्रेम पुलकित गात । झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव बिटप चंचल पात ॥ सुनत खग मृग मौन साध्यौ चित्रकी अनु हारि । धरणि उमगि न मांति धरमें जती योग बिसारि ॥ ग्वाल गृह गृह सहज सोवत उठ सहज सुभाय । सूर प्रभु रस रास के हित सुखद

रैनि बढाय ॥ ७२ ॥ राग बिहागरो ॥ दूलह दुलहिनि श्यामा श्याम । कोक कला व्युत्पन्न परस्पर देखत लज्जित काम ॥ जा फलको व्रज नारि किये व्रतसो फल सबनि दियो। मन कामना भयो परि पूरण सबहीं मानि लियो ॥ राग रागिनी प्रकट दिखाए गाए जो जेहि रूप । सप्त सुरनि के भेद बतावति नागरि रूपअनूप ॥ अतिहि सुघरि पियको मन मोहति अपवस करति रिझावति । सूर श्याम मोहन मूरति को बार बार उर लावति ॥७३॥ राग रामकली ॥ श्यामा श्याम रिझावति भारी ॥ मन मन कहति और नहिं मोसी पिय के कोऊ प्यारी ॥ धुवा बिंदु धुरपद जश हरि के हरिही गाय सुनावति । आपुन रीझि कन्त को रिझवति यह जिय गर्व बढावति ॥ निर्त्तति उघटति गति सङ्गति पद सुनत कोकिला लाजति । सूर श्याम नागर नागरि लखना मण्डलि राजति ॥ ७४ ॥ राग रामकली ॥ रिझवति पियहि बारम्बार । निरखि नैन लजात हरि हैं नहीं शोभा पार ॥ चलि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन । हंसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ॥ सुनत वन मृग होत व्याकुल रहत चक्रित आय । सूर प्रभु बस किये नागरि महा जाननि राय ॥ ७५ ॥ ॥ राग रामकली ॥ प्यारी श्याम लई उर लाय । उरज उरसों परस को सुख बरणि कापै जाय ॥ कनक छवि तनु मलय लेपन निरखि भामिनि अंग । नासिका शुभबास लै लै पुलक श्याम अनंग ॥ देत चुम्बन लेत सुख कों मानि पूरण भाग । सूर प्रभु बस किये नागरि बदति धन्य सुहाग ॥७६॥ राग बिहागरो ॥ रीझें परस्पर बर नारि । कंठ भुज भुज धरें दोऊ सकति नहि निरबारि ॥ गोर श्याम कपोल सु लखित अधर अंमृत सार । परस्पर दोउ पियरू प्यारी रीझि लेत उगार ॥ प्राण एक है देह कीन्हे भक्ति प्रीति प्रकाश । सूर स्वामी स्वामिनी मिलि करत रंग विलास ॥ ७७ ॥ राग बिहागरो ॥ गावत श्याम श्यामा रंग । सुघरहुती नागरी अलापति सुरहि धरत पिय संग ॥ तान गावति कोकिला मनो नाद अलि मिलि देत । मोर संग चकोर डोलत आप अपने हेत ॥ भामिनी अंग जोन्ह मानो जलद श्यामल गात । परस्पर दोउ करत क्रीड़ा मनहि मनहिं सिहात ॥ कुचनि बिच कच परम शोभा निरखि हंसत गोपाल । सूर कंचन गिरि बिचनि मनो रह्यो है अन्धकाल ॥ ७८ ॥ राग बिहागरो ॥ मोहन मोहनी रस भरे । भौंह मोरनि नयन फेरनि तहां तें नहि टरे ॥ अङ्ग निरखि अनङ्ग लज्जित सकै नहि ठहराय । एक की कहा चलै सत सत कोटि रहत लजाय ॥ इते पर लट हस्तिनी गति छबि निर्त्त भेद अपार । उड़त अंचल प्रगटि कुच दोउ कनक घटरस सार ॥ दरकि कंचुकि तरकि माला रही धरनी जाय। सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाय ॥ ७९ ॥ राग जैतश्री ॥ प्रेम सहित माला कर लीनी । प्यारी हृदय रहति यह जानी भुव पर नाहि पतीनी ॥ पीत बसन लै श्रम जल पोंछत पुनि लै कंठ लगाई । चरणनि कर परसत हैं अपने कहत अतिहि श्रमपाई ॥ कुच श्रम देखि पवन मुखही के फूंकि झुरावत अंग । सूर दास प्रभु भौंह निहारत चलत चियाके रंग ॥ ८० ॥ राग भैरव ॥ हाहा हो पिय निर्त

करो । ऐसे करि मैं तुमहि रिझाई त्यौं मेरो मन तुमहुं हरो ॥ तुम जैसे सम बाय करत हौ तैसे मैंहु डुलाऊंगी । मैंश्रम देखि तुम्हारे अंगको भुज भरि कंठ लगाऊंगी मैं हारी त्योंहीं तुमहारो चरण चापि श्रम मेंटौंगी । सूरश्याम ज्यों उछंगखई मोहि त्यों मैंहूं हंसि भेटौंगी ॥ ८१ ॥ राग रामकली ॥ निर्त्तत श्याम श्यामा हेत । मुकुट लटकनि भृकुटि मटकनि नारि मन सुख देत ॥ कबहुं चलत सुधंग गति सों कबहुं उघटत बैन । लोल कुण्डल गण्ड मण्डल चपल नैननि सैन ॥ श्याम की छबि देखि नागरि रही इक टक जोहि । सूर प्रभु उर लाय लीन्हो प्रेम गुण करि पोहि ॥ ८२ ॥ ॥ राग कामोदमलार ॥ अरुझि कुंडल लट बेसरि सों पीत पट वन माल विच आनि उरझे बैं दोउ जन । प्राणनि सो प्राण नयन नयन सों अटकि रहे चटकीली छबि देखें लपटात श्याम घन ॥ छोड़ा छोड़ी निर्त्त करैं रीझि रीझि अंक भरें तता थेई थेई थेई उघटत हैं मगन । सूर दास प्रभु प्यारी मण्डली युवती भारी नारि को अंचल लैलै पोछत हैं श्रम कन ॥ ८३ ॥ राग अडानो ॥ मोहन लाल संग खेलना यों सोहैं ज्यों तरु तमाल के ढिग शुभग सुमन जरद को । बदन कान्ति अनूप भान्ति नहि सम्हारति नीलाम्बर गगन में नव घन बिच प्रगट्यो शशि गण शरद को ॥ मुक्ता हर तारा गण प्रति बिम्बित बेसरि को चूनो मिलि रंग जैसें छोत हरद को । सूर दास प्रभु मोहन गोहन की छबि बाढी मेंटत दुख निरखि नैन मैन दरद को ॥ ८४ राग पूर्वी ॥ नंद नन्दन सुघर राय मोहन वंसी बजाय सरि गम पधनि सा सप्त सुरनि गाय । अतित अनाघात संगीत सुघर और तान मिलाय ॥ सुर ध्याय ताल ध्याय निर्त ध्याय निपुन राय मृदंग बजाई । सूरज प्रभु नवल बाल सकल कला गुण प्रवीन अरस परस रीझि रिझाई ॥ ८५ ॥ राग बिहागरो ॥ पिय संग खेलत अधिक श्रम भयो आउरी हांकों बयारि । अपनो अंचल लैलै सुखउ सखीरी रुचिर वदन श्रम कन के बारि ॥ निर्तत उलटि गये अंग भूषण बिथुरी अलक बांधो संवारि । सुनहु सूर पिय प्यारी को मिलन जाहि न सुहाय ताहि डारें वारि ॥ ८६ ॥ राग केदारो ॥ प्यारी देखि बिह्वल गात । नंद नन्दन देखि रीझे अंक भरि लपटात ॥ कबहुं खेंहि उछंगि बाला कहि परस्पर बात । प्रेम रस करि मिरे दोउ नयन मिलि मुसुकात ॥ रास रस कामना पूरण रैनि नहीं बिहात । सूर प्रभु सङ्ग व्रज तरुणि मिलि करत सुख न शिरात ॥ ८७ ॥ राग कल्यान ॥ रच्यो रास रंग श्याम सबहीं सुख दीन्हों । मुरली सुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रस उदास युवती तजि गेह बास बनहि गवन कीन्हों ॥ मोहे सुर असुर नाग मुनि जन गण भये जाग शिव सारद नारदादि चकृत भये ज्ञानी । अमर गण अमर नारि आई लोकनि बिसारि ओक ओक त्यागि कहति धन्य धन्य बानी ॥ थकित भयो गति समीर चन्द्रमा भयो अधीर तारा गण लज्जित भये मारग नहि पावें । उलटि जमुन बहत धार विपरित सबही विचार सूरज प्रभु सङ्ग नारि कौतुक उपजावें ॥ ८८ ॥ राग टोड़ी ॥ नन्द कुमार रास रस कीन्हों । व्रज तरुणिनि मिलिसुख दीन्हों ॥ अद्भुत कौतुक प्रगटि दिखायो । कियो श्याम सबहिन मन भायो ॥ विच गोपी बिच मिल गोपा

ला । मनि कंचन सोहति शुभ माला ॥ राधा मोहन मध्य विराजैं । त्रिभुवन को शोभा ए भ्राजैं ॥ रास रंग रस राख्यो भारी । हाव भाव नाना गति न्यारी ॥ निरखत अंग थकित भइ नागरि । रूप गुणनि करि परम उजागरि ॥ उमगि श्याम श्यमा उर लाई । बारम्बार कह्यो श्रम पाई ॥ कंठ कंठ भुज देउ जोरे । घन दामिनि छूटत नहि छोरे ॥ सूर श्याम युवतिन सुखदाई । राधा जिय अति गर्व बढाई ॥ ८९ ॥ रागसूहो ॥ तब नागरि जिय गर्व बढायो । मो समान त्रिय और नहीं कोउ गिरिधर मैं ही बस करि पायो ॥ जोइ जोइ कहति करत सोइ सोइ पिय मेरेहि हित यह रास उपायो । सुन्दरि चतुर और नहिं मोसी देह धरेको भाव जनायो । कबहुंक बैठि जाति हरि कर धरि कबहुं कहति मैं अति श्रम पायो । सूर श्याम गहि कंठ रही त्रिय कन्ध चढौ यह बचन सुनायो ॥ ९० ॥ रागविलावल ॥ कहै मामिनी कन्तसों मोहि कन्ध चढावहु । निरखि करत अति श्रम भयो ता श्रमहि मिटावहु । धरनी धरत बनैं नहीं पग अतिहि पिरानें । त्रिया बचन सुनि गर्व के पिय मन मुसुकाने । मैं अविगत अज अलख हौं यह मरम न पायो । भाव बश्य सब पै रह्यो निगमनि भरमायो । एक प्राण दै देह है दुविधा नहि या में । गर्व कियो नर देहते मैं रहौं न ता में । सूरज प्रभु अन्तर भए संग तें तजि नारी । जे जे जहां तहां रही सब घोष कुमारी ॥ ९१ ॥

॥ * ॥ इहांतें ठाकुर अन्तर ध्यान भए ॥ * ॥

राग बिहागरो ॥ तब हरि भए अन्तरध्यान । जब कियो मनगर्ब प्यारी कौन मोसी आन । अति थकित भई चलत मोहन चलि न मोपै जाय । कंठ भुज गहि रही यह कहि लेहु जबहिं चढाय । गए सङ्ग बिसारि रसमैं बिरस कीन्हों बाल । सूर प्रभु दुरि चरित देखत तुरत भईं बेहाल ॥ १ ॥ राग टोडी ॥ श्याम गए जुवती सब त्यागी । चकित भई तरुनी सबै निसि जागी । प्यारी संग न लेगए बिहारी । कुंजलता सब तरुनी डारी । संग नहींतहं गिरिबरधारी । चहूं दिसा तन दृष्टि पसारी । परीं मुरछि तब सकल कुमारी कामबैर लीन्हों शर मारी । कहि कहि कहां गए बनवारी । भइं व्याकुल सब सुरत बिसारी । नयन सलिल भीजीं सब नारी । सूर संग तजि गए मुरारी ॥ २ ॥ राग टोडी ॥ व्याकुल भई घोष कुमारि । श्याम तजि संगतें कहां गए यह कहति ब्रज नारि । दशौदिसि नभ द्रुमनि देखति चकित भईं बेहाल । राधिका नहि तहां देखी कह्यो वाको ख्याल । कछुक दुख कछु हरष कीन्हों कुंज लै गए श्याम । सूर प्रभु सङ्ग देखि हमको करे ऐसे काम ॥ ३ ॥ राग बिहागरो ॥ तब कुंजनि चली ब्रज नारी ॥ सदा राधा करति दुविधा देति रसकी गारी ॥ सङ्गही लै गई हरि को सुख करति बयारी । कहां जैहैं ढूंढि लैहैं महा रसकिनिवारी । चरन चिन्हनि चलीं देखत

राधिका जाहिं । सूर प्रभु पग दरसि गोपी हमहि हरषि मुसुकाहिं ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ हरषि युवति कहति परस्पर प्यारी वे कहां गए री । श्याम काम तनु आतुर उपमा बश्य भए री । पुनि देखियत चिन्ह पग पिय पग चिन्ह न पावें ॥ को पिय को प्यारी उर लीन्हो यह कहि भ्रम उप जावें । वै गिरिधर उर धरि क्यों लेहि न बहि गिरिधर उर लीन्हों । सूर भई आतुर ब्रज नारी पिय प्यारी पग चीन्हो ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ जो देखे द्रुमको तरें मुरछी सुकुमारी । चक्रित भई सब सुन्दरी यह तौ राधा री । याही को खो जति सबै यह रही कहां री । धाय परीं सब सुन्दरी जो जहां तहां री । तनुको तनकहुं सुधि नहीं व्याकुल भई बाल । यह तौ अति बे हाल है कहां गए गोपाल । बार बार बूझति सबै नहि बोलति बानी । सूर श्याम काहे तजी कहि सब पछितानी ॥ ६ ॥ राग भैरों ॥ क्यों राधा नहि बोलति है । काहे धरनि परी व्याकुल ह्वै काहे नयन न खोलति है । कनक बेलि सी क्यों मुरझानी क्यों बन माझ अकेली है । कहां गए मन मोहन तजिके काहे बिरह दहे लीहै । श्याम नाम श्रवननि धुनि सुनिकै सखियनि कंठ लगावति है । सूर श्याम आए यह कहिकहि ऐसें मन हरषावति हैं ॥ ७ ॥ राग बिहागरो ॥ कहां रहे अबलौं तुम श्याम ॥ नयन उघारि निहारि रही तहं जो देखै ब्रज बाम । लागी करन बिलाप सबनि सों श्याम गए मोहि त्यागि । तुमको नहीं मिले नंद नंदन बूझति है तब जागि । निरखि बदन वृषभान कुंवरि के मनों सुधा बिन चन्द ॥ राधा बिरह देखि बिरहानी यह गति बिन नंदनन्द । या बनमें कैसें तू आई श्याम संग है नाहीं । कछु जानति कहं गए कन्हाई तहां तोहि लै जाहीं । मैं हठ कियो वृथा री माई जिय उपज्यों अभि मान । सूर श्याम ऊपर मोहि आनी ह्वै गए अंतर ध्यान ॥ ८ ॥ राग कान्हरो ॥ मैं अपने मन गर्व बढायो । इहै कह्यो पिय कन्ध चढौंगी तब मैं भेद न पायो । यह बानी सुनि हंसे कंठ भरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कोन है मोसी अंतर जानि लई । कहां गए गिरिधर मोकों तजि ह्यां कैसे मैं आई । सूर श्याम अंतर भए मोतें अपनी चूक सुनाई ॥ ९ ॥ राग बिहागरो ॥ रुदन करति वृषभान कुमारी ॥ बार बार सखियनि उर लावति कहां गए गिरिधारी । कबहुं गिरति धरनी पर व्याकुल देखि दशा ब्रज नारी । भरि अंकवारि धरति मुख पोंछति देति नयन जल ढारी । बिया पुरुष सो भाव करति है जानै निठुर मुरारी । सूर श्याम कुल धर्म आपनों लए रहत बनवारी ॥ १० ॥ राग गौरी ॥ नंद नंदन उनको हम जानति । ग्वालनि संग रहत जोमाई यह कहि कहि गुन गानति । बन बन धेनु चरावत बासर बिया बधत डर नाहीं । देखि दशा वृषभान सुताकी ब्रज तरुनी पछिताहीं । कहा भयो बिय हठ जो कीन्हों यह न बूझिये श्यामहि । सूर दास प्रभु मिलहु कृपा करि दूरि करौ मन तामहि ॥ ११ ॥ राग कल्यान ॥ राधिका सों कह्यो धीर मन धरिरी । मिलैंगे श्याम व्याकुल दशा जनि करै हरष जिय करो दुख दूरि करिरी । आप जहां तहांगईं बिरह सब पगि गईं कुंवरिसों कहि गईं श्याम ल्यावें । फिरति बन बन बिकल

सहस सो रह सकल ब्रह्म पूरन अकल नहीं पावें । कहां गए यह कहति सबै मग जो वही काम तनु दहति ब्रज नारि भारी । सूर प्रभु श्याम श्यामा चरित देखहीं गर्ब अंतर हृदै हेत नारी ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम सबनि कों देखहीं वे देखति नाहीं । जहां तहां व्याकुल फिरैं तनु धीरज नाहीं । कोउ बंसी बटको चलै कोउ बन घन जाहीं । देखि भूमि बह रासकी जहां तहां पग छाहीं । सदा हठीली लाडिली कहि कहि पछिताहीं । नयन सजल जल ढारिकै व्याकुल मन माहीं । एक एक द्रुम बन ढूंढहीं तरुनी बिकलाहीं । सूरज प्रभु कहुं नहि मिलै ढूंढत द्रुम पाहीं ॥ १३ ॥ राग राम कली ॥ कहि धौं री बन बेलि कहूंतें देखे हैं नंद नंदन । बूझहु धौं मालती कहूंतें पाए हैं तनु चंदन । कहि धौं कुंई कदम्ब बकुल बट चम्पक ताल तमाल । कहि धौं कमल कहां कमला पति सुंदर नयन बिशाल । मुरली अधर सुधा रस लै तरु रहे जमुन के तीर ॥ कहि तुलसी तुम सब जानति हो कहं घन श्याम शरीर । कहि धौं मृगी मया करि हमको कहि धौं मधुप मराल । सूर दास प्रभु के तुम संगी हैं कहं परम दयाल ॥ १४ ॥ राग आसावरी ॥ कहुं न देखोगी मधु बन में माधो । कहां धौं गवन कियो कहां धौं बिलमि रहे नयन मरत दरसनकी साधों । जबतें बिछुरे श्याम तबतें रह्यो न जाय सुनहु सखी मेरोई अपराधों । सूर दास प्रभु बिनु कैसे मैं जिऊं माई घटत घटत घटि रह्यो प्राण आधो ॥ १५ ॥ राग आसावरी ॥ कहुं न पाऊंरी सब ढूढि बन घन श्याम सुंदर पर वारों तन मन । नयननि चटपटी मेरे तबतें लगी रहत कहां प्राण प्यारो निरधननि को धन ॥ चम्पक जाही गुलाल बकुल वहुली तरु तरु प्रति बूझतिकहुं देखे नंद नंदन । सूरदास प्रभुरास रसिक बिनुरास रसिकीनी बिरह बिकल करि भई है मगन ॥ १६ ॥ राग काफी ॥ कोउ कहुं देखेरी नंदलाल । सांवरो सलोनो ढोटा नयन रसाल ॥ मोर मुकुट उर बन माल बिसाल । पीतांबर सोहै मोहैं मन गोपाल ॥ निसि बन गई जहां सबै ब्रज बाल । अन्तर ध्यान भए रचि ख्याल ॥ द्रुम द्रुम ढूंढत भई बेहाल । सूर श्याम बिन बालापरीं बिरह जंजाल ॥ १७ ॥ रागबागे श्वरी ॥ मोहनी मोहन के टेरे । हो कान्ह एही संग एही मनमेरे ॥ ऐसो संग तजि दूरि भए कों ममुझि परी हरि गइनि घेरे । चूक मानि हम लीन्हीं अपनी कैसेहु लाल बहुरि फिरि हेरे ॥ कहियत हौ तुम अन्तर जामी पूरन काम सबके रे । ढूंढति है द्रुम बेली बाला भई बेहाल करत औसे रे । सूरदास प्रभु रास बिहारी श्रीवनवारी वृथा करत काहे झे रे ॥ ॥ १८ ॥ राग अडानो ॥ हो कान्ह ए बातें हैं तिहारी बनवारी सुखहीं में भये न्यारे एक संग एक समीप रहतहैं नित तजि कहां सिधारे ॥ अब करि कृपा मिलौ करुणा मय कहियत है सुख कारे । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब समुझो चूक हमारे ॥ १९ ॥ ॥ राग पसारी ॥ केहि मारग मैं जाउं सखीरी मारग बिसर्यो । नाजानौं कित ह्वै गए मोहि जात न जानि परयो ॥ अपनो पिय ढूंढति फिरौं रीमोहि मिलवे को चाव । कांटा लाग्यो प्रेम को पिय यह पायो दाव ॥ बनडूंगर ढूंढत फिरी घर मारग तजि गाउं । बूझे द्रुम प्रति रुखरा कोउ कहै न पियको नाउं ॥ चकित भई चितवत फिरौ री व्याकुल

अतिहि अनाथ । अबके जौ कैसेहुं मिलौं तौ पलक न तजिहौं साथ ॥ हृदय मांझ पिय घर करौंरी नयननि बैठक देउं । सूरदास प्रभु संग मिलौंरी बहुरि रास रस लेउं ॥ २० ॥ ॥ राग स्त्री ॥ कान्ह प्यारेा कहुं पायेारी । श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह धुनि वृन्दावन छायेारी ॥ गर्व जानि पिय अन्तर ह्वै रहे मेा मैं वृथा बढायेारी । अब बिनु देखे कलन परत छिनु श्याम सुंदर गुनगायेारी ॥ मृगी मृगनिद्रुम खग सारस पिक काहू नहीं बतायेारी । सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि जुवतिन टेरि सुनायेारी ॥ २१ ॥ राग बिहागरेा ॥ हेां कान्ह मैं तुम्हे चाहौं तुम काहे न आवेा । तुम तन तुम धन तुम मन भावेा ॥ कियेा चाहौं अरस परस करौं नहीं माना । सुन्यों चाहौं अबन मधुर मुरली को ताना ॥ कुंज कुंज जपति फिरति तेरे गुनन की माला । सूर प्रभु बेगि मिलै मोहि मोहन नन्द लाला ॥ २२ ॥ राग काफी ॥ सखि मोहि मोहन लाल मिलावै । ज्यों चकोर चंदा को एक इक भृङ्गी ध्यान लगावै ॥ बिन देखे मोहि कल न परैरी यह कहि सबनि सुनावै । बिन कारन मैं मान कियेारी अपनेहीं मन दुख पावै हाहा करि पायन परि परि हरि हरि टेर लगावै । सूर श्याम बिनु कोटि करौं जो और नहीं जिय आवै ॥ २३ ॥ राग आसावरी ॥ हैं तौ ढूंढि फिरि आईमाईरी सिगरेा वृन्दावन कहुं नहिं पायनन्द नन्दना । अनतहिंरहे जायकौने धौं राखे छिपाय मेाको न कछू सेाहाय कहा जाय रहे काम कन्दना ॥ मोहिते परीरी चूक अन्तर भए हे जातें तुमसों कहति बातें मैंहीं कियेा दन्दना । सूरदास प्रभु बिन भईहैं विकल आली कहां रहे बनमाली सुर नर मुनि जन वंदना ॥ २४ ॥ रागबिलावल ॥ मिलहु स्याम मोहि चूक परी । तेहि अंतर तनको सुधि नाहीं रसना रट लागी न टरी ॥ धरनि परी व्याकुल भइ बोलति लोचन धारा अंसु झरी । कबहुंक मगन कबहुं सुधि आवति सरन सरन कहि बिरह जरी ॥ कृष्ण कृष्ण कहि टेरि उठति है जुग सम बीतति पलक घरी । सूर निरखि व्रजनारि दशा वह चकित भई जहं तहां परी ॥ २५ ॥ राग बिलावल ॥ देखि दसा सुकुमारि की जुवती सब धाईं । तरु तमाल वूझत फिरैं कहि कहि मुरुझाईं ॥ नंद नंदन देखे कहूं मुरली कर धारी । कुंडल मुकुट बिराजई तनु श्यामल भारी ॥ लोचन चारु बिसाल है नासा अति लोनी । अरुन अधर दसनावली छवि बरनै कोनी ॥ बिंब पधारे लागहीं दामिनि दुति थोरी । ऐसे हरि हमको कहेा कहुं देखे हैारी ॥ अंग अंग छवि कह कहै देखे बनि आव । सूर श्याम पावैं नहीं को काहि बतावै ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ अति व्याकुल भईं गोपिका ढूंढति गिरि धारी । बूझति हैं वन बेलिसों देखे बन वारी ॥ जाही जूही सेवती करुना करि आरी । बेलि चमेली मालती बूझति द्रुम डारी । खूजा मरुआ कुन्दसों कहै गोद पसारी ॥ बकुल बदरि वट कदम पै ठाढी व्रज नारी ॥ बार बार हाहा करैं कहं हौ गिरिधारी । सूर श्यामको नामले लोचन जल ढारी ॥ २७ ॥ राग बिलावल ॥ कहूं न पाये श्यामको बूझति बन बेली । सबै भईं व्याकुल फिरैं तनु मदन दहेली ॥ मृग नारीसों बुझही बूझैं सुकुमारी । कमल सरोवर बूझही बिरहा तनु मारी ॥ कनक बेलिसी सुंदरी द्रुमके तर नारी । मनेा दामिनि धरनी परी कोधों पनारी ॥ इत उतते

फिरि आवही जहं राधा प्यारी । सूर श्याम अजहूं नहीं करि मिलत कृपारी ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ करनि हैं रुचिर चरित व्रज नारि । देखि अतिहीं बिकल राधा थहै बुद्धि बिचारि ॥ इक भई गोपाल की वपु इक भई बनवारि । एक भई गिरिधरन समरथ एक भई दैत्यारि ॥ एक एक भई धेनु बछरा एक भई नंद लाल । एक भई जमला उधारन इक त्रिभंगि रसाल ॥ एक भई छबि रास मोहन कहति राधा नारि ॥ एक कहति उठि मिलहु भुज भरि सूर प्रभुरी प्यारि ॥ २९ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनत धुनि श्रवन उठि मिलहु भुज भरि अकुलाय । जो देखै नंद नंद नहिं वै सखियनि भेष बनाय ॥ कहा कपट करि मोहि देखावति कहां श्याम सुखदाय । कृष्ण कृष्ण सरनागत कहिकै बहुरि गिरी भहराय ॥ पुनि दौरीं जहंतहं व्रज बाला बन द्रुम सोर लगाय । सूरदास प्रभु अन्तर जामी बिरहिनि लेहु जिवाय ॥ ३० ॥ राग कान्हरो ॥ कृपा सिंधु हरि छमा करौ हो । अन जाने मन गर्व बढायो सो अपने जिनि हृदय धरो हो ॥ सोरह सहस पोर तनु एकै राधा जिव सब देह । ऐसी दसा देखि करुना मय प्रगट्यो हृदय सनेह ॥ गर्व हत्यो तनु बिरह प्रकास्यो प्यारी व्याकुल जानि । सुनहु सूर अब दरशन दीजै चूक लई इन मानि ॥ ३१ ॥ राग बिहागरो ॥ राधे भूलि रही अनु राग । तरु तर रुदन करति अलसानी ढूंढि फिर वन बाग ॥ कवरी ग्रसित सिखण्डी यहि भ्रम चरन शिखी सुख लाग । बानी मधुर जानि पिक बोलत कदम करोरत काग ॥ करपल्लव किशलै कुसुमाकर जानि ग्रसित भए कोर । राका चन्द्र चकोर जानिकै पिवत मैन को नीर ॥ बिहवल बिकल जानि नद नन्दन प्रकट भए तेहि काल । सूर श्याम हित प्रेमांकुर उर लाय लई भुज माल ॥ ३२ ॥ राग कान्हरो ॥ नंद नंदन उर लाय लई । नागरि प्रेम प्रकट तनु व्याकुल तब करुना हरि हृदय भई ॥ देखि नारि तरु तर मुरझानी देह दशा सब भूलि गई । प्रिया जानि अंकम भरि लीन्हीं कहि कहि ऐसी काम हुई ॥ वदन बिलोकि कंठ उठि लागी कनक बेलि आनन्द जई । सूर श्याम फल कृपा दृष्टि भए अतिहिं भई आनन्द मई ॥ ३३ ॥ राग कान्हरो ॥ प्रगट भए नंद नंदन आई । प्यारी निरखि विरह अति व्याकुल धरते लई उटाई ॥ अभै भुजा भरि अंकम दीन्हो राखी कंठ लगाई । प्रानहुंते प्यारी तुम मेरे यह कहि दुख बिसराई ॥ हंसत भए अन्तर्धान तुमसों सहज खेल उपजाई । धरनी मुरछि परी तुम काहे कहां गई चतुराई ॥ राधा सकुचि रही मन जान्यों कह्यो न कछु सुहाई । सूरदास प्रभु मिलि सुख दीन्हो दुख डार्यो बिसराई ॥ ३४ ॥ राग सूहो ॥ अन्तरतें हरि प्रकट भए । रहत प्रेम के बस्य कन्हाई जुवतिन को मिलि हरष दए ॥ वैसोई सुख सबको फिरि दीन्हो वहै भाव सब मानि लियो । यह जानति हरि संग तबहिते उहै बुद्धि सब यहै हियो ॥ वहै रास मण्डल रस जानति बिच गोपी बिच श्याम धनी । सूर श्याम श्यामा मधि नायक उहै परस्पर प्रीति घनी ॥ ३५ ॥ रागसारङ्ग ॥ बहुरि श्याम सुख रास कियो । भुज भुज जोरि जुरी व्रज बाला वैसेही रस उमगि हियो ॥ वैसहि मुरली नाद प्रकास्यो वैसहि सुर नर बस्य भए । वैसहि उडगन सहित निशापति वैसहि मारग भूलि गए ॥ वैसिय

दशा भई जमुना की वैसहि गति तजि पवन थक्यो । वैसहि निर्त्तत रंग बढायो वैसहि बहुरयो काम जक्यो ॥ वाहि निसा वैसेहिं मन जुवती वैसेही हरि सबनि भजे । सूर श्याम वैसहि मन मोहन वैसहि प्यारी निरखि लजे ॥ ३६ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम छवि निरखति नागरि नारि । प्यारी छवि निरखत मन मोहन सकत न नयन पसारि ॥ पिय सकुचत नहि दृष्टि मिलावत सनमुख होत लजात । श्रीराधिका निदरि अब लोकति अतिहि हृदय हरषात ॥ अरस परस मोहन मोहनि मिलि संग गोपी गोपाल । सूरदास प्रभु सब गुण लायक दुष्टनि के उर साल ॥ ३७ ॥ राग बिहागरो ॥ रचि रस रास श्याम सुजान । प्रथम मुरली नाद करि हरि हरयो सबको ज्ञान ॥ सबनि उलटी रीति कीन्ही देव सुर नर आदि । ब्रज बधू मन कांम पूरन कियो पुरुष अनादि ॥ सहज सुख निसि ग्वाल सोवत सो रची षट मास । हेत जुवती सुख बढावन कियो पूरन आस ॥ मेटि अन्तर ध्यान को दुख वहै राख्यो भाव । सूर प्रभु महिमा अगोचर निगम अन्त न पाव ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ मोहन रच्यो अद्भुत रास । संग मिलि वृष भान तनया गोपिका चहुं पास ॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधा प्रकास । जलहु थलके जीव थकि रहे मुनिन मनहि उदास ॥ थकित भयो समीर सुनिके जमुन उलटी धार । सूर प्रभु ब्रज बाम मिलि बन निशा करत विहार ॥ ३९ ॥ राग नट ॥ विहरत रस रंग गोपाल । नवल श्यामा संग सोहत नवल सब ब्रज बाल ॥ शरद निशि अति नवल उज्जल सब लता बन धाम । परम निर्मल पुलिन जमुना कलप तरु विश्राम ॥ कोस द्वादस रास परमिति रच्यो नन्द कुमार । सूर प्रभु सुख दियो निसि रमि काम कौतुक हार ॥ ४० ॥ राग ललित ॥ रास रमि श्रमित भइ ब्रज बाल । निसि सुखदै जमुना जल लैगए भोर भयो तेहिकाल ॥ मन कामना भई परि पूरन रही न एकौ साध । षोडस सहस नारि संग मोहन कीन्हो सुख आगाध ॥ जमुना जल विहरत नद नन्दन संग मिली सुकुमारि । सूर धन्य धरनी वृन्दावन रवि तनया सुख कारि ॥ ४१ ॥ राग गोंड मलार ॥ संग ब्रजनारि हरि रास कीन्हो । सबनिकी आस पूरन करी श्यामले त्रियनि पिय हेत सुख मानि लीन्हो ॥ मेटि कुल कानि मरजाद विधि वेद की त्यागि गृह नेह सुनि वेनु धाई । फबी जेजे करी मनहि सबते धरो संक काहूंन करी आप भाई ॥ ज्यों महा मत्त गज जूथ करनी लिए कूल सर फोरि डर काहि मानैं । सूर प्रभु नंद सुत निदरि निसि रस कर्यो नाग नर लोक सुर सबै जानैं ॥ ४२ ॥ * ॥ * ॥ *

॥ * ॥ अथ जल क्रीड़ा ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग गोंडमलार ॥ रैनि रस रास सुख करत बीती । भोर भए गए पावन जमुन के सलिल न्हात सुख करत अति बडी प्रीती ॥ एक एक मिलति हंसि एक हरि संग हसि एक जल मध्य एक तीर ठाढी । एक एक डरति एक अंक भरि कै

चलति एक सुख लरति अति नेह बाढी ॥ काहु नहि डरत जल थलहुं क्रीडा करत हरत मन निदरि ज्यों कन्त नारी । सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनु साध भइ मगन भारी ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ साध नहीं जुवतिन मन राखी ॥ मन वांछना सवनि फलु पायेा बेद उपनिषद साखी । भुज भरि मिली कठिन कुच चापे अधर सुधा रस चाखी ॥ हाव भाव नयननि सैंननि दै बचन रचन मुख भाखी ॥ सुक भागवत प्रकट करि गान्यों कछू न दुबिधा राखी । सूर श्याम ब्रजनारि संग हरि बाकी रही ना कांखी ॥ २ ॥ राग कान्हरो ॥ धनि सुकमुनि भागवत बखान्यो । गुरुकी कृपा भई जब पूरन तब रसना करि गान्यो ॥ धन्य श्याम वृन्दावन को सुख संत भयेतें जान्यो । जेा रस रास रंग हरि कीन्हों बेद नहीं ठहरान्यो ॥ सुर नर मुनि मोहित सब कीन्हों शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहं नयन बसाये और न कहूं पत्यान्यो ॥ ३ ॥ राग धनाश्री मैं कैसे रस रासहि गाऊं । श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुमबिनु कृपा बास ब्रज पाऊं ॥ अन्य देव सपनेहुं नहिं जानौं दम्पति कों सिर नाऊं । भजन प्रताप चरनमहिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ नव निकुंज बन धाम निकट एक आनंद कुटी रचाऊं । सूर कहा बिनती करि बिनवै लाभ जनम यह ध्याऊं ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ तुमहीं मोको ढीठ कियेा । नयन सदा चरननि तर राखे मुख देखत नहिं गनत बियेा ॥ प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जेाइ सेाइ मांगन पेलि । मागौं चरन सरन वृन्दाबन जहां करत निति केलि ॥ यहबानी भजनीक श्रवन बिन सुनत बहुत सरमाऊं । श्रीवृषभान सुता पति सेऊं सूरज कत भर माऊं ॥ ५ ॥ राग बिहागरो ॥ रास रस लीला गाय सुनाऊं । यह जस कहै सुनै मुख श्रवननि तिन चरननि सिर नाऊं ॥ कहा कहौं बकता श्रोता फल इक रसना क्यों गाऊं । अष्ट सिद्ध नव निधि सुख संपति लघुता करि दरसाऊं ॥ जो परतीति होय हिरदै में जग माया धृग देखै । हरि जन दरश हरिहि सम पूजै अन्तर कपट न भाखै ॥ धनि बकता तेई धनि श्रोता श्याम निकट हैं ताके । सूर धन्य तिनके पित माता भाव भजन है जाके ॥ ६ ॥ राग बिलावल ॥ वृन्दावन हरि रास उपायेा । देखि शरद निशि रुचि उपजायेा ॥ अद्भुत मुरली नाद सुनायेा । युवतिन सुनि तनु दशा गवायेा ॥ मिलि धाईं मन को फल पायेा । जंगम चले जु चलनि थिरायेा ॥ उलटी जमुना धार बहायेा । सुनि धुनि चंचल पवन थकायेा ॥ सुर नर मुनि को ध्यान भुलायेा । चन्द गगन मारग बिसरायेा ॥ रूप देखि मन काम लजायेा । रसमें अन्तर बिरस जनायेा ॥ युवतिन के तन बिरह बढायेा । बहुरि मिले हित अति उपजायेा ॥ फेरि रास मंडली बनायेा । हाव भाव करि सबनि रिझायेा ॥ कल्प रैनि रस हेत उपायेा । प्रात समय जमुना तट आयेा । नारिन के निशि श्रमहि मिटायेा ॥ युवतिन प्रति प्रति रूप बनायेा । शिव नारद शारद यह गायेा ॥ ध्यान टरयेा चित तहां लगायेा । राधा बरनिजु नाम कहायेा ॥ सूर दास कछु कछु कहि गायेा । रमा कन्त जा सुख को ध्यायेा ॥ सेा सुख नन्द सुवन ब्रज आयेा ॥ ७ ॥ राग गौरी ॥ जमुना जल क्रीडत नंद नन्दन । गोपी वृन्द मनोहर चहुं दिशि मध्य अरिष्ट निकन्दन ॥ पकरे पानि परस्पर

छिरकत सिथिल सलिल भुज चन्दन । मनों युवति पूजति अहि पति कों लग्यो अंक दै बन्दन ॥ कच भरि कुटिल सुदेश अङ्गकन चुवत अंग गति मन्दन । मानहु भरि गण्डूष कमल पर डारत अलि आनन्दन ॥ भुज भरि अंक अगाध चलत लै ज्यों लुब्धक खग फंदन सूर दास प्रभु सुजश बखानत नेति नेति श्रुति छंदन ॥ ८ ॥ राग कान्हरो ॥ बिहरत हैं जमुना जल श्याम । राजत हैं दोउ बाहां जोरी दम्पति अरु ब्रज बाम ॥ कोउ ठाढी जल जानु जंघ लौं कोउ कटि हिरदै ग्रीव । यह सुख बरनि सकै ऐसो को सुंदर ता को सीव ॥ श्याम अङ्ग चंदन की आभा नागरि केसरि अङ्ग । मलयज पंक कुंकुमा मिलि कै जल जमुना इक रङ्ग ॥ निशि श्रम मिट्यो मिट्यो तन आलस परसि जमुन भई पावन । सूर श्याम जल मध्य युवति गन जन जन के मन भावन ॥ ९ ॥ राग कान्हरो ॥ जल क्रीडा सुख अति उपजायो । रास रङ्ग मग तें नहि भूलत वहै भेद मन आयो ॥ युवती कर कर जोरि मंडली श्याम नागरी बीच । चंदन अङ्ग कुं कुमा छूटत जल मिलि तट भइ कीच ॥ जो सुख श्याम करत जुवतिन संग सो सुख तिहुं पुर नाहीं । सूर श्याम देखत नारिन कों रीझि रीझि लपटाहीं ॥ १० ॥ राग विलावल ॥ विहरत नारि हंसत नंद नन्दन । अंकम भरि भरि लेत अनन्दन ॥ निर्मल देह छूटि तनु चंदन । अति शोभा त्रिभुवन जन बंदन ॥ कंचन पीठ नारि अंग शोभा । वे उन को वे उन को लोभा ॥ कबहुं अंकभरि चलत अगाधहि । अरस परस मेटत मन साधहि ॥ कोउ भाजै कोउ पाछे धावै । युवतिन सों कहि ताहि मंगावै ॥ ताकों गहि अथाह जल डारैं । सुख व्याकुल ता रूप निहारैं ॥ कंठ लगाय लेत पुनि ताही । देत अलिंगन रीझत जाही ॥ सूर श्याम ब्रज युवतिन भोगी । जाकों ध्यावत शिव मुनि जोगी ॥ ११ ॥ राग टोडी ॥ ऐसे श्याम बस्य राधा के । नाम लेत पावन आधा के ॥ प्यारी श्याम अंजुली डारै । वा छवि को चित लाय निहारै ॥ मनों जलद जल डारत टारै । मन मन ही तनु मन धन वारै ॥ निरखि रूप नहि धीर संहारै । सूर श्याम को अंकम धारै ॥१२॥ रागललित ॥ राधे छिरकति छैल छबीलो । कुच कुं कुम कंचुकि बंद टूटे लटकि रही लट गीली बंदन सिर ताटंक गंड पर रतन जडित मणि लीली ॥ गति गयंद मृग राज सु कटि पर शोभित किंकिनि टीली । मच्यो खेल जमुना जल अन्तर प्रेम मुदित रस झीली ॥ नंद सुवन भुज ग्रीव विराजित भाग सुहाग भरीलो । बरषत सुमन देव गन हरषित दुंदुभि सरस बजीलो ॥ सूर श्याम श्यामा रस क्रीडत जमुन तरंग थकीलो ॥ १३ ॥ रागरामकली ॥ श्यामा श्याम शुभग जमना जल बिभ्रम करत बिहार । पीत कमल इंदीवर पर मनो भोरहि भये निहार ॥ श्री राधा अम्बुज कर भरि छिरकत बारंबार । कनक लता मकरंद झरत मनु हालत पवन संवार ॥ अतसी कुसुम कलेवर बूंदैं प्रति बिंबित मनु हार । जोति प्रकाश सु घन में खेलत खाति सुवन आकार ॥ धाय धरे वृषभान सुता हरि मोहे सकल सिंगार । बिद्युत जलद सूर मनो बिधु मिलि श्रवत सुधा की धार ॥ १४ ॥ राग रामकली रीझे श्याम नागरि रूप । तैसिय लट बगरी उर ऊपर श्रवत नीर अनूप ॥ श्रवत जलकुच परत धारा नहीं उपमा पार । मनो उगिलत राहु चंद्रम कनक गिरि पर धार ॥ कुचनि

परसत श्याम सुंदर नागरी शरमाय । सूर प्रभु तनु काम व्याकुल गये मनहि जनाय ॥ १५ ॥ राग रामकली ॥ श्यामा श्याम अंकम भरी। उरज उर परसाय भुज भुज जोरि गाढे धरी ॥ तुरत मन सुख मानि लीन्हो नारि तेहि रंग ढरी । परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नव हरी ॥ ऐसे ही सुख दियो मोहन सबै आनंद भरी । करति रंग हिलोर जमुना प्रेम आनंद झरी ॥ रास निशि श्रम दूरि कीन्हो धन्य धनि यह घरी । सूर प्रभु तट निकसि आये नारि संग सब खरी ॥ १६ ॥ राग गूजरी ॥ ठाढे श्याम जमुना तीर । धन्य पुलिन पवित्र पावन जहां गिरिधरवर बीर ॥ युवति बनि बनि भईं ठाढ़ी और पहिरे चीर । राधिका सुख श्याम दायक कनक वरन शरीर ॥ लाल चोली लील डंडिआ संग युवतिन भीर । सूर प्रभु छबि निरखि रीझे मगन भयो मन कीर ॥ १७ ॥ राग नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात । कहत हैं घर जाहु सुंदरि मुख न आवत बात ॥ षट सहस दश गोप कन्या रैनि भोगई रास । एक छिनु भइ कोउ न न्यारी सबनि पुरई आस ॥ विहंसि सब घर घर पठाई व्रज गई व्रज बाल । सूर प्रभु नंद धाम पहुंचे लख्यो काहु न ख्याल ॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज बासी सब सोवत पाये । नंद सुवन ऐसी मति ठानी घर लोगनि उनि जाय जगाये ॥ उठे प्रात गाया मुख भाषत आतुर रैनि बिहानी । ऐंडत अङ्ग जम्हात बदन भरि कहत सबै यह बानी ॥ जो जैसें सो तैसें लागे अपने अपने काज । सूर श्याम के चरित अगोचर राखी कुल की लाज ॥ १९ ॥ राम जैतश्री ॥ व्रज युवती रस रास पगी । कियो श्याम सब को मन भायो निशि रति रंग जगी ॥ पूरन ब्रह्म अलख अविनाशी सबनि संग सुख दीन्हो । जितनी नारि भेष भये तितने भेद न काहू चीन्हों ॥ वह सुख टरत न काहू मन तें पति हित साध पुराईं । सूर श्याम दूलह सब दुलहिनि निशि भांवरि दै आईं ॥ २० ॥ राग गुर्जरी ॥ श्यामा श्याम के उर बसी । रैनि निर्त्तत भोरि पिय मन तडित तें छबि लसी ॥ श्यामा ता छन लगन डोलत सब चियनि में जसी । कोक कला प्रवीन सुन्दरि कन्त गुण करि कसी ॥ करति सदन सिंगार बैठी अङ्ग अङ्ग प्रति रसी । सूर प्रभु आये अचानक देखि तिन को हंसी ॥ २१ ॥ राग रामकली ॥ पिय निरखत प्यारी हंसि दीन्हो । रीझे श्याम अंग अंग निरखत हंसि नागरि उर लीन्हो । आलिंगन दै अधर दशन खंडि कर गहि चिबुक उठावत । नासा सौं नासा लै जोरेत नयन नयन परसावत । यहि अंतर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारी । सूर श्याम मोको दिखरावन उर ल्याए धरि प्यारी ॥ २२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ ॥

॥ यहां ते मान राधा को ॥

राग टोडी ॥ अब जानी पिय बात तिहारी ॥ मोसों तुम मुहकी मिरवत हो भावति है वह प्यारी । राखें रहत हृदै परजाको धन्य भाग है ताके । ऐसी कहीं

लखी नहिं अबलौ बस्य भए यों याके। भली करी यह बात जनाई प्रगट देखाई मोहि। सूर श्याम यह प्रान पियारी उर में राखौ पोहि ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनत श्याम चक्रित भए बानी । प्यारी पिय मुख देखि कछुक हंसि कछुक हृदै रिसआनी। नागरि हंसत हंसी उर छाया तापर अति झुहरानी । अधर कांपि रिस भौंह मरोरत्रो मनहीं मन गहरानी। एक टक चितै रही प्रति बिम्बहि सौति साल जिय आनी। सूर दास प्रभु तुम बड भागी बड भागिनि जेहि आनी ॥ २४ ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी सांचु कहति की हांसी । काहेको इतनों रिस पावत कत तुम होहु उदासी । पुनि पुनि कहति कहा तबहीतें कहा ठगी सो ठाढी । एकटक चितै रही हिरदै तन मनो चित्र लिखि काढी । समुझी नहीं कहा मन आई मदन बसै तुव आगे । सूर श्याम भए काम आतुरे भुजा गहन पिय लागे ॥ २५ ॥ राग धनाश्री ॥ मोहि छुओ जिनि दूरि रहौ जू ॥ जाको हृदै लगाय लई है ताकी बांह गहौ जू । तुम सरबज्ञ और सब मूरख सोरानी अरु दासी ॥ मैं देखति हिरदै वह बैठी हम तुमको भई हांसी । बांह गहत कछु शरम न आवति सुख पावत मन माहीं । सुनहु सूर मोतन वह इक टक चितवति डरपति नाहीं ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ कहा भई धनि बावरी कहि तुमहिं सुनाऊं । तुमतें को है भावती केहि हृदै बसाऊं । तुमहीं श्रवन तुम नयन हौ तुमहीं प्रान अधार । वृथा क्रोध चित क्यों करौ कहि बारम्बार ॥ भुज गहि ताहि देखावहूं जो हृदै बतावति । सूरज प्रभु कहै नागरी तुमतें को भावति ॥ २७ ॥ राग नट ॥ माधौ नाहि न दुरति जो हिरदै बसति ॥ ऐसी ढीठि मेरे जान तुमहीं कीन्हीं है कान्ह मोसन मुख देखत नचसति । झुके ते झुकति भाल भृकुटी कुटिल किए रूखे रूखी ह्वै रहति हसेतें हंसति ॥ तबहीतें एक टक चितवति वेडिजक बाउरतें इत उत न धंसति ॥ जाही सों लगत नयन ताही सो पगत बैन नख सिखलों सब गात ग्रसति ॥ जाके हरि राचे रंग सोई है अंतर संग काचकी करौती के जल ज्यों लसति । बिहंसि बोले गोपाल सुनिहो व्रजकि बाल उछंग लेत कत धरनि खसति ॥ अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि कामकी कसौटी सूर सकते कसति ॥ २८ ॥ राग कान्हरो ॥ काहे को हौ बात बनावत । अब तुमको पिये मै पतियाति हौं छांह आपनी धरनि बतावत । वा देखत हम को तुम मिलिहौ काह को अनखावत ॥ जेह कहूं निकसि हिरदै तें जानि बूझि क्यों तेहि उचढावत । जो वह कहै करौ तुम सोई कहा मोहिपुनि पुनि समुझावत । सूर श्याम नागर वह नागरि भले भले जू मोहि खिझावत ॥ २९ ॥ राग गौंड मलार ॥ वृथा हठ दूरि किनि करो प्यारी । कहा रिस करति छांह अपनी देखि उर कोउ नहीं रिस जरति भारी ॥ तुमहि धन रहति मन नयन में तुम बसति कनकसो कसि लेहु कहा बैठी। चतुरई कहं बुद्धि कैसी भई चूक समुझे बिना भौंह ऐठी ॥ यह सुनत रिस भरी रही नहि तहां खरी वोट ह्वै झर हरी मानु कीन्हों । जादु मन मन कह्यो मै बहुत सुख लह्यो सौति दिखराय मोहि सूर दीन्हों ॥ ३० ॥ राग कल्यान ॥ कियो अति मान वृषभान वारी । देखि प्रति

बिम्ब पिय हृदय नारी ॥ मनहिं मन देति अति ताहि गारी ॥ कहा ह्यां करत लै जाहु प्यारी ॥ सुनत यह बचन पिय बिरह बाढो ॥ कियो अति नागरी मानु गाढो ॥ काम तन दहत नहि धीर धारैं ॥ कबहु बैठत उठत बार बारै । सूर अति भए व्याकुल मुरारी ॥ नैनभरि लेत जल देत ढारी ॥ ३१ ॥ रागबिहागरो ॥ मानु करत्रो त्रिय बिनु अपराधहि ॥ तनु दाहति बिनु काज आपनो कतहि डरत जिय बादहि ॥ कहारही मुख मूंदि भामिनी मोहि चूक कछु नाहीं ॥ झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनी छाहीं । अजहूं दूरि करा रिसउरते हिरदै ज्ञान बिचारौ ॥ सूरस्याम कहिकहि पचि हारे हठ कीन्हो जियभारौ ॥३२॥ रागसोरठ ॥ स्याम काम तन चपट कियों। मानुधस्यो नागरिजिय गाढो सूख्यो कमल हियो । व्याकुल भए चले वृन्दावन मिली दूति का आनि । बार बार हरि बदन निहारति सकै न दुख पहिचानि । कैसी दशा आजु मैं देखति कहौ न मोहि सुनाय। सूर श्याम देखे तुम व्याकुल आए कहां गंवाय ॥ ३३ ॥ राग गौरी । व्याकुल बचन कहत हैं श्याम । बृथा नागरी मानु बढायो जोर कियो तनु काम । यह कहतहि लोचन भरि आए पायो बिरह सहाय । चाहत कह्यो भेद ता आगे बानी कही न जाय । और सखी तेहि अंतर आई व्याकुल देखि मुरारि । सूर श्याम मुख देखि चकृत भई क्यों तनु रहे बिसारि ॥ ३४ ॥ राग बिहागरो ॥ कहति दूतिका सखिन बुझाई । आजु राधिका मानु करत्रो है श्याम गए कुम्हिलाई । कर सों कर धरि लाल गई लै सखिन सहित बन धाम । सुख दै कह्यो लिये आवति हौं संग बिलसाऊ बाम । मो आगेकी महरि बिटिहिनी कहा करै वह मान । सुनहु सूर प्रभु कितिक बात यह करौ न पूरन काम ॥ ३५ ॥ राग भैरों ॥ श्याम कुंज बैठारि गई। चतुर दूतिका सखियनि खोन्हें आतुरताई जाति लई । मनहीं मन इक रची चतुरई यहै कहौंगी बात नई ॥ अबहीं लै आवति हौं ताको इहौ भई कछु बहुत दई । करि आई हरि सो परतिज्ञा कहा कहै वृषभान जई ॥ सूर श्याम सो मान करत्रो है आजहि ऐसी कहा भई ॥३६ राम नट ॥ सखियनि संग लै तहां गई । दूतिका मुख निरखि राधा जानि हृदय लई ॥ अति चतुर वृषभान तनया सहजहि बोलि लई । सहज बचन प्रकाश कीन्हों कहा कृपा भई ॥ तुरतही यह कहि सुनायो श्याम बोलत तोहि सूरप्रभु बन बोलि पठयो तोहि कारन मोहि ॥ ३७ ॥ राग टोडो ॥ काहेको बन श्याम बोलाई । याहीतें तुम धाई आई । कहा कहौं तोको री माई । तुमहुं भली अरु भले कन्हाई । अब एक नई मिली है आई । ताही को अब लेहिं मिलाई । ताकों राखैं हृदै दुराई । तोको छांते टारि पठाई । सूर श्याम ऐसे गुन राई । उनकी महिमा कही न जाई ॥ ३८ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु कछु घर कलह भयोरी। तऊ आजु अनमनी बतानी यह कछु मानु कियोरी । मोसों कछू कह्यो नहि मोहन सहज पठाई लैन । कहा पुकार परी हरि आगे चलौ न देखौ नैंन ॥ तेरो नाम लेत हरि आगे कहत गुनाय सुनाय । सूर सुनत काको काको गथ तैंधौं लियो छिड़ाय ॥ ॥ ३९ ॥ राग सूहो ॥ वृन्दावन हरि बैठे धाम । काहेको गथ हरयो सबनि को काहे

अपनो कियो कुनाम ॥ डारि देउ कह कियो पराये मेरो कह्यो मानिरी बाल । तबहीते उनि सोर लगायो तोकों बोली है एहि काम ॥ चलौ तुरत जिनि झेर लगावउ अबहीं आय करौ विश्राम । सूर श्याम तेरीघां झगरत तू काहे तिनसों करै काम ॥ ४० ॥ राग जैतश्री ॥ यह कछु नोखी बात सुनावति । काको गथ मैंधौं लीन्हो है बार बार बन मोहि बिलावति ॥ मेरी धां हरि लरत कौनसों इती मया मोहि कीन्ही । जैसे हैं हरि तेरे माई मैं नीके करि चीन्ही ॥ को बैठो की भवन जाउ को मैं उनपै नहि जाउं । सूरदास प्रभु को री सजनी जनम न लेहौ नाउं ॥ ४१ ॥ राग गौरी ॥ मैं कह तोहि मनावन आई । प्रकट लिए सबको व्रज बैठी कहा करति अधि काई ॥ जादू करौ ह्वां बोध सबनि को मोपर कत सतरानी । श्याम लरत तबहों ते उनसों तिनपर अतिहि रिसानी ॥ बार बार तू कहा कहति री व्रज काको मैं लीन्हो । सूरदास राधा सब हरिसों ज्वाब निदरि कै दीन्हो ॥ ४२ राग सोरठ ॥ तैं कछु नहिं काहू को लीन्हो । प्रकट कहौ तबहीं मानैंगी ज्वाब निदरि मोहि दीन्हो ॥ तब बदिहौं ऐसेहि ह्वां कैहै जहं बैठे सब बैरी । मेरे कहे बहुत रिस पावति सम्पति सबकी लैरी ॥ एक एक करि सब तोंहि देखाऊं कहि आवहु बन जाई । कीदीजो की सब पुनि लीजो सूर श्याम पै आई ॥ ४३ ॥ राग सूहो ॥ जिन जिन जाय श्यामके आगे तेरी चुगली बहुत करी । बार बार तिनसों हरि खीझे तेरी धां ह्वै मैहुं लरी । श्याम भेट करि मोहि पठाई तू मोही पर खरी परी । जाय करौ रिस बैरिन आगे जाके जाके गर्यहि हरी ॥ धरनि अकास बनहुं के आए देखत तिनके अतिहि डरी । सूर श्याम बिन न्याव चुकै क्यों तिन पर तू अतिही झुहरी ॥ ४४ ॥ राग धनाश्री ॥ ते जन पुकारे हरि पै जाय । जिनको यह सब सौंज राधिका तेरे तनु ते लई छिड़ाय ॥ इंदु कहै हो वदन बिगोयो अलकनि अलि समुदाय । नयननि म्रग बचननि पिक लूटे बिलपत हरिहि सुनाय ॥ कमल कीर केहरि कपोत गज कनक कदलि दुख पाय । बिद्रुम कुंद भुजंग संग मिलि सरण गए अकुलाय ॥ अति अनीति जिय जानि सूर प्रभु पठए मोहि रिसाय । बन बोली व्रज नाथ बेगि चलि अब उत्तर दै आय ॥ ४५ ॥ राग कन्हरो ॥ मानु करौ तुम और सवाई । कोटि करो एंकै पुनि ह्वै हौ तुम अब वे मन मोहन माई ॥ मोहनसों सुनि नाम श्रवनहीं मगन भई सुकुमारि । मानु गयो रिस गयो तुरतही लज्जित भई मन भारि ॥ धाय मिली दूतिका कंठसों धन्य धन्य कहि बानी । सूर श्याम वन धाम जानिके दरशनको अतुरानी ॥ ४६ राग बिलावल ॥ हंसिकै कह्यो दूतिका आगे श्यामहि सुख दैरी तू जाय । करि अस्नान अभूषण अंग भरि मैं आवति तो पाछे धाय ॥ यहसुनि हरष भई अतिही सखि गई तहां जहं श्याम । अति व्याकुल तनकी सुधि नाहीं बिह्वल कीन्हो काम ॥ कीबनमें को घरहीं बैठे को बासर की जाम । सूर श्याम रसना रट लागी राधा राधा नाम ॥ ४७ ॥ राग राम कली ॥ श्याम नारिके बिरह भरे । कबहुंक बैठत कुंज द्रुमनि तर कबहुंक रहत खरे ॥ कबहुंक तनकी सुरति बिसारत कबहुंक तन सुधि आवत । तब नागरि के गुनहि बिचारत तेइ गुन गुनि गुनि गावत ॥ कहूं मुकुट कहुं मुरलि रही गिरि कहुं कटि पीत पिछौरो । सूर श्याम ऐसी गति भीतर आय दूतिका

गौरी ॥ ४८ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम भुजा गहि दूतिका कहि आतुर बानी । काहेको कटरात हौ मैं राधा आनी ॥ बिरह दूरि करि डारिए सुख करौ कन्हाई । बियानाम श्रवननि सुन्यो चितए अकुलाई ॥ मिले दूतिकहि अंक दै लोचन भरि आई । प्यारी प्यारी बोलिकै जुवतिहि उरलाई ॥ तब बोली हंसि दूतिका पिय आवति नारी । सूर श्याम सुनि बोलत वै हरषे बनवारी ॥ ४९ ॥ रागगूजरी ॥ धीर धरौ प्यारी अब आवति । मैं जो गई प्रतिज्ञा करिकै सो कहि बात जनावति ॥ मन चिन्ता अब दूरि करौजू कहौ न कह मोहि दैहौ । बनि आवति वृषभांन नन्दिनी भुज भरि अंक मलैहौ ॥ यह सुन्दरता और नहीं कहुं बड़भागी सो पावै । सूर श्याम दूतिका वचन सुनिकर जुग जोरि मिलावै ॥ ॥ ५० ॥ राग जैत श्री ॥ यह सुनिकै मन श्याम सिहात । पुलकत अंग रहत नहि धीरज पुनि पुनि पंथ निहारत जात ॥ कुंज भवन कुसुमन की सज्या अपने हाथ सवांरत जात । जो द्रुम लता लटकि तनु लागत ते ऊंचे धरि पुलकित गात ॥ प्यारी अंग अति कोमल जानत सेज कली चुनि डारत । सूर श्याम रीझत मनहीं मन सुधि करि छबिहि निहारत ॥ ५१ ॥ राग कल्यान ॥ दूतिका हंसति हरि चरित हेरैं । कबहुं कर आपने रचत सुमननि सेज कबहुं मग निरखि कह भयो झेरैं ॥ काम आतुर भरे कबहूं बैठत खरे कबहुं आगे जाय रहत ठाढे । चतुर सखि देखि पुनि राधिका पै गई झेर क्यों करत धन कंत चाढे ॥ सुनत प्यारी हंसी पियाके मन बसी रूप गुन करि जसी प्रेम रासी । सूर प्रभु नाम सुनि मदन तनु बल भयो अंग प्रति छबि उपर रमा दासी ॥ ५२ ॥ राग धनाश्री धनि वृषभान सुता बड़भागिनि । कहा निहारति अंगअंग छबि धन्य श्याम अनुरागिनि ॥ और त्रिया नख सिख शृंगार सजि तेरे सहज न पूरै । रति रंभा उर्वसी रमासो तोहि निरखि मन झूरै ॥ ए सब कंत सोहागिनि नाहीं तूहै एकहि प्यारी । सूर धन्य तेरी सुन्दरता तोसी और न नारी ॥ ५३ ॥ राग धनाश्री ॥ सहज रूप की रासि नागरी भूषण अधिक विराजै । मुख गौरभ सो मिलित सुधा निधि कनक लता पर छाजै ॥ बंदन बिन्द धार मिलि शोभित धूमिल नील अगाध । मनहुं बाल रवि रस भिर शंकित तिमिर कूटद्वै आध ॥ मानिक मध्य पास चहुं मोती पंगतिन झलक सेंदूर । रेंग्यो तम तमात तारागन उगत घेरयौ सूर ॥ की मन मथ रथ चक्र कितरिबन वार चित्तसें साज । श्रवन कूपकी रहट घंटिका राजत सुभग समाज ॥ नासा नथ मुकुता बिंबाधर प्रति बिंबित अस मंच । बिध्यो कनक पासि शुक सुन्दर करक बीज गहि चूंच ॥ कहां लगि कहौं भूषननि भूषित अंग अंगके रूप । सूर सकल शोभा श्रीपतिके राजिव नयन अनूप ॥ ५४ ॥ राग कान्हरो ॥ बिराजित राधा रूप निधान । सुन्दरता को पुंज प्रकटही को पटतर त्रिय आन ॥ सेंदुर सीस मांग मुक्तावलि कचक बनी अवि नान । मनहु चन्द्र सुख कोपि हन्यो रिपु राहु विषम बलवान ॥ तरल तिलक ताटंक पड़ेरा झलकत कल विवकान । मानहु शशि सहाय करवें को रन विरचे द्वै भान ॥ दीरघ नयन नासिका बेसरि अरुन अधर छबि वान । खञ्जन शुक नहि बिंब ससिन को लज्जित भये अजान ॥ को कहि सकै उरोजनि की छबि कंचन मेरु लजान । श्री फल सकुचि रहे दुरि

कानन सिख रिझवो विहरान ॥ रोमावलि चिवली छवि छाजत जनु कीन्ही यह ठान । छग कटि सबल डंड बन्धन मनो बिधि दीन्हों बंधान ॥ अंग अंग आभूषण की छवि कापै होय बखान । सरदास प्रभु रसिक सिरोमणि बिलसहु श्याम सुजान ॥५५॥ रागनट ॥ राधेदेख तेरो रूप । पट दुहो हरि संकि मनु दल सज्यो मनसिज भूप । चाल गज श्रीफला नूपुर नीवि नव रुचि ढाल । किंकिनी घन्टा घोष माधौ भये मै बेहाल ॥ कंचुकी भूषन कवच सजि अति कुच कसे रनबीर । अंचल ध्वजा अवलोकि नाहीं धरत पिय मन धीर ॥ भौंह चाप चढ़ाय कीन्हों तिलक सर संधान । मैन कौतुक देखि गिरिधर तज्यो है मदमान ॥ चवर चिकुर सुदेश घूंघुट छुच शोभित छांह । ज्यों कहौ त्यों हों मिलाऊं दै दया करबांह राधिका अति चतुर सुन्दरि सुनि सु बचन बिलास । सूर रुचि मनसा जनाई प्रगटि मुख मृदु हास ॥ ५६ ॥ राग कल्याण ॥ आजु अञ्जन दियो राधिका नयन को । मृग मीन हीन गुन लज्जित खञ्जन डोल अधिक चंचल सरस श्याम सुख देन को ॥ लसनि दाड़िम दसन भौंह मन मथ फंद सुलप लट लठकि रहि रहत नहि चैन को । कसनि कञ्चुकि बंद उर मुकुत माल सुख निरखि उड़गराज तजिगयो सुर ऐनको ॥ रुनित नूपुर चरन क्षुद्रकटि घन्टिका कनक तनु गौर छवि उमगि उप रैनको । सूर सुनि श्रवन उठि नवल गिरिधर सेज चलि है गज गति मलपि मदन गढ़ लैन को ॥ ५७ ॥ राग टोड़ी ॥ रसिक सिर मोर टेरि लगावत गावत राधा राधा नाम । कुञ्ज भवन बैठे मन मोहन अलि गोहन सो हन बोलत सब तेरोई गुन ग्राम ॥ श्रवन सुनत प्यारी पुलकित भइ प्रफुलति तनु मनु रोम रोम सुख रासी बाम । सूरदास प्रभु गिरिवरधर को चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनक वन धाम ॥ ५८ ॥ राग कल्यान ॥ नवल सुनि नवल प्रिय नव कुञ्ज हेरी । भावते लाल सों भावती केलि करि भावती भावतौ रसिक रस लेरी ॥ त्यागि अभिमान गुन रूप सौ भाग्य रति मानिनी मनु हारि मैं न सुख देरी । एक ब्रजवास आवत जात देखि यत आवनी जाति पति पैंड़ को घेरी ॥ ललित उदार हित पीर करि कोर मति धीर तनु मेटि मन मथन को मेरी । कला चौसाठि सङ्गीत शृंगार रस कोक विधि बन्द प्रगट भेद सेरी ॥ सुरत सागर साज श्रवन जश रस लाज अङ्ग अनकूल रति राज रन जेरी । काम सर कनक कुच प्रगट भृंगी चिह्न दागि मैं लै कन्त आपनों कैरी ॥ जासु आलाप सुनि दारु से पल्लवे पुङ्कप मधु धार फर भार भरनैरी । मुरलिका गान तुव नाम मधुरा धुनी सुधा गुन सिन्धु नहि गनत निज मैरी ॥ हीन जल मीन ज्यों दरश बिनु कल मलै प्रान प्रीतम नही धीरजु धरैरी । प्रीति को रीति गत होति हैरी हरषि निरखि रति करि चिबुक असनि ढैरो ॥ तुव काम केलि बनी अकामिनि द्वन्द चन्द चकोर चातिक खातितैरी । सूर सुनि श्रवन तजि भवन करि गवन मन रवन तनु तवहि कल हंस गति गैरी ॥ ५९ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ मनो गिरिवर तें आवति गङ्गा । राजत अति रवनीक राधिका यहि बिधि अधिक अनूपम अङ्गा ॥ गौर गात अति बिमल बारि बिधि कटि तट चिवली तरल तरङ्गा । रोम राजि मनो जमुन मिली अध भंवर परत मानो श्रव भङ्गा ॥ मनि गन भूषन रुचिर तीर बर मध्य धार मोतिन मै मङ्गा । सूर दास मनो चली सुरसरी श्री गुपाल सा-

गर सो सङ्गा ॥ ९० ॥ राग सूहो ॥ नाहिन नयन लगे निशि यहि डर । जब तें जाय कह्यो हंसि हरि सों समर सोच उनके जिय धर धर ॥ भौंह कमान तिलक भलुका करि रचि सुदेश श्री मन्त सुरंग सर । बलय ताटङ्क चक्र नख नेजा दामिनि से चमकत रद असिवर ॥ गज उरोज बर बाजि बिलोचन बंकट बिशद बिशाल मनोहर । लाल ढाल अंचल चंचल गति चँवर चिकुर राजत ताऊपर ॥ अंगअंग सज शुभट सहायक बने बिबिधि भूषन बानेवर । कामिनि आजुहि आनि रहैगी काम कटक लै कुञ्ज झगड़ातर ॥ चरन रुनित नूपुर रनतुरा सुनत श्रवन कांपहिगे थरथर । तब जानिबो किशोर जोर रुपि रहो जीति करि खेत सबे फर ॥ ऐंचि करो जो कहौं किशोरी वेजु भितर ह्वैरहे बैठि घर । यहै मतो सुख जोर होतही करङ्ग प्यार लै पकरि पियहि कर ॥ सहचरि चतुरा तुर लै आई बाह बोल दै करि कै तब कूर । रोष सुरत रन मिली अंक भरि लै लटकी दै दन्त पिया धर ॥ जुरत सुरत संग्राम मध्यो छवि छूटि छुटि कच टूटि हार लर । अति सनेह दुङ्ग बिसरि देह भिरि मैन मल्ल मुरुझाय गिरे धर ॥ बिबिधि बिलाश कलाश कोस बस राधा नारी नंद नदन बर । निगमनि नेति कह्यो निर्गुन सो कह गुनाधि बरनि हैं सुर नर ॥ ॥ ९१ ॥ राग टोड़ी ॥ फूलनि को महल फूलनि की सज्या फूले कुञ्जबिहारी फूली राधा प्यारी । फूले वे दम्पति नवल मगन फुले फूले करें केलि न्यारी ॥ फूली लता बेलि बिबिधि सुमन गन फूले बानन दोउ हैं सुख कारी । सूर दास प्रभु प्यारी पर वारत फूले फूल चम्पक बेलि नेवारी ॥ ९२ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु रंग फूले कुंवर कन्हाई । कवङ्कंक अधर दसन भरि खण्डत चाखत सुधा मिठाई ॥ कवङ्कंक कुच कर परसि कठिन अतितृष्ना बदन परसावत । मुख निरखति सकुचति सुकुमारी मनहीं मन अति भावत ॥ तब प्यारो कर गहि मुख टारति नेक लाज नहि आवत । सूर दास प्रभु काम शिरोमणि कोक कला दिखरावत ॥ ९३ ॥ राग केदारो ॥ पिय भावती राधा नारि । उलटि चुंबन देति रसिकनि सकुच दीन्हो डारि ॥ परस्पर दोउ भरे श्रम जल फुक फुक झुरात । मनो बुझी अनङ्ग ज्वाला प्रगट करत लजात ॥ बङ्करि उठे सम्हारि भट ज्यों अंग अनंग सम्हारि । सूरप्रभु बन धाम बिहरत बने दोउ बरनारि ॥ ९४ ॥ राग रामकली ॥ बिहरत दोउ मन एक करे । एक भाव इक भये लपटि कें उर उर जोरि धरे ॥ मनो सुभट रन एक संग जुरि करिबर नहीं डरे । अधर दसन कृत नख कृत उरपर घायन्ह फरहि परे ॥ यह सुख यह उपमा पटतर को रति संग्राम लरे । सूर सखी निरखति अन्तर भइ रति पति काज सरे ॥ ९५ ॥ राग कल्यान ॥ सकुचि मन परस्पर बसन लीन्हें । प्यारि पिय निपुन अति कोक गुन कला मैं उनि धनहि उनि कन्त अबल कीन्हें ॥ खेद कन गण्ड मण्डलनि नासानिकट पिय निरखि पीत पट पोछि डार्यो । निरखि प्यारी पोछि वैसेंही पिय बदन कछु सकुचि कछु हरषि कें निहार्यो ॥ नागरी डरनि पिय पीत पट उर धरे बङ्करि जिनि आपनी छांह देखे । सूर प्रभु स्वामिनी अंग छवि दामिनी झलक प्रति बिम्ब पर मान पेखे ॥ ९६ ॥ ॥ राग रामकली ॥ संग राजति वृषभान कुमारी । कुंज सदन कुसुमनि सज्या पर दम्पति शोभा भारी ॥ आलस भरे मगन रस दोउ अंग अंग प्रति जोहत । मनहुं गौर

श्यामल रासिन पर उत्तम बैठे सन मुख सोहत ॥ कुंज भवन राधा मन मोहनचहूं पास व्रज नारि । सूर रही लोचन इक टक करि डारति तनु मनुवारि ॥ ६७ ॥ राग नट एकटक रही नारि निहारि । कुंजघर श्रीश्याम श्यामा बैठि करत बिहारि ॥ नयन सैन कटाक्षसों मिलि करत रंग विलास । नहीं शोभा पार पावति बचन मुख मुख हांस ॥ तरुनि श्रीवृषभान तनया तरुन नन्द कुमार । सूरसों क्यों बरनि भावै रूप रस सुख सार ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ चितै राधा रति नागर वोर । नयन बदन छबियें उपजत मनो शशि अनुराग चकोर ॥ सारस रस अचवन को मानों तृषित मधुप जुर जोर । पान करत कहुं तृप्ति न मानत पलकनि देत अकोर ॥ लिए मनोरथ मानि परस्पर रजनि गई भयो भोर । सूर श्याम श्यामा आपुस में करत रहत चितचोर ॥ ६९ ॥ राग रामकली ॥ देखि सखि पंचकमल दै शंभु । एक कमल वज्र ऊपर राजत निरपति नयन अचंभु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हे कमल सु कोमल अंग । जुगल कमल सुत कमल विचारत प्रीति न कबहूं भंग ॥ खट जुग कमल मुख सनमुख चितवत बहुविधि रंग तरंग । तिनिमैं तीनि सोम वंसी बस तीनि सु कश्यप अंग ॥ जेई कमल सनकादिक दुर्लभ जिनसे निकसी गंग । तेई कमल सूर नित चिंतत निपट निरंतर संग ॥ ७० ॥ ॥ राग नट ॥ देखि सखि चारि चन्द्र एक ठौर । निरखति बैठि नितंबिनि पिय संग सार सुता की वोर ॥ दै सखि श्याम नवल घन सुन्दर दै कीन्हे बिधि गोर । तिनके मध्य चारि शुक राजत दै फल आठ चकोर ॥ शशि शशि संग प्रवाल कुंद कलि अरुझि रह्यो मन मोर । सूरदास प्रभु अति रति नागर बलि बलि जुगल किशोर ॥ ७१ ॥ राग नट ॥ देखिरी प्रगट द्वादस मीन । षट इंदु द्वादस तरनि शोभित विमल उडगन तीनि ॥ षट अष्ट अम्बुज कीर षट मुख कोकिला सुर एक । दस दोइ बिद्रुम दामिनी षट तीनि ध्यान बिशेष ॥ चिवलि षट श्रीफल बिराजत परस्पर बर नारि । व्रज कुंवरि गिरिधर कुंवरि पर सूरजन वलि हारि ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ दम्पति कुंज द्वार खरे । सिथिल अंग मरमजे अंवर अतिही रूप भरे ॥ सुरतही सब रैनि बीती कोक पूरन रङ्ग । जलद दामिनि सङ्ग शोहत भरे आलस अंग ॥ चलत द्वै दृजनारि निरखति मनो चंद्र चकोर ॥ सूर प्रभु वृषभानु तनया बिलसि रति पति जोर ॥ ७३ ॥ राग ललित ॥ भोरही श्यामा श्याम खरे । जलद नवीन मिली मनो दामिनि बरषि सिसानिझरे ॥ सिथिल बसन तनु नील पीत दुति आलस जुत पहिरे । श्रम जल बुंद कहूं कहु उड़गन बदरिनि बरनि करे ॥ भूषण विविधि भांति मिडवा रति रति रस उमगि भरे । प्रेम प्रवाह चली मनो सरिता टूटो माल गरे ॥ काजर अधर तमोर मैंन रंग अंगअंग झीलपरे । शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुख जात तरे ॥ ७४ ॥ राग बिलावल ॥ जो सुख श्याम प्रिया संग कीन्हो । सो जुवतिन अपनो कर लीन्हो ॥ दुविधा हृदय कछू नहि राख्यो । अति आनन्द वचन मुख भाख्यो ॥ यहै कहति तबकी अब नीकै । सकुचि हंसी नागरि शृंग पीकै ॥ नयन कोर पिय हृदय निहारयो । उनि पहिले पीतांबर धारयो ॥ सूरदास यह लीला गावैं । हरि पद सरन अछै फल पावैं ॥ ७५ ॥ राग नट ॥ धनि व्रज

सुन्दरी धनि श्याम । धन्य धनि वृषभानु तनया राधिका जेहि नाम ॥ ग्रेह ग्रेहनि गई तरुनी श्याम गए नन्द धाम । भवन गई वृषभानु तनया कोक कला सुजान ॥ करत मन कामना पूरन एक निसि सब बात । सूर प्रभु जा सदन जा तन सेा करत तनु ताम ॥ ७६

॥ * ॥ यहां ते खण्डिता बचन ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग बिलावल ॥ नाना रंग उपावत श्याम । कोउरीझत कोउ खीझति बाम ॥ काहूके निसि बसत बसाए । काहूं मुहंहू आवत जाए ॥ बहु नायक हूं बिलसत आप । जाको शिव पावै नहि जाप ॥ ताको ब्रजनारी पति जानैं । कोउ आदर कोउ अप मानैं ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहूं रैनि सब संग बिहात । सुनहुं सूर ऐसे नन्द तात ॥ ७७ ॥ राग बिलावल ॥ अब जुवतिन सों प्रगटे श्याम । अरसपरस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिन के धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सेा मनमें यह करति बिचार । आजु गए औरहि काहूके रिस पावति कहि बडे लबार ॥ यह लीला हरिके मन भावति खंडित बचन कहत सुख होत । सांझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ ७८ ॥ राग रामकली ठाढे नन्द द्वार गोपाल । बोलि लीन्हो देखि ललिता सैंन दै ततकाल ॥ हंसत गए हरि ग्रेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिको लाय उर भरि चांपि कठिन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आयहैं हम जाम ॥ ७९ ॥ राग बिलावल ॥ ललिता को सुख दै गए श्याम । आजु बसैंगे रैनि तुम्हारे प्रान पियारी हौ तुम बाम ॥ यह कहिकै अनतहि पग धारे बहु नायक के भेद अपार । सांझ समैं आवन कहि आए सोंह बहुत करि नंद कुमार ॥ वह बैठी मारग हरि जोवति एक इक पल बीतत एक जाम ॥ सूर श्याम आवन की आसा सेज संवारति व्याकुल काम ॥ ८० ॥ राग गौरी ॥ सांझहितें हरि पंथ निहारै । ललिता रुचि करि धाम आपने सुमन सुगन्धनि सेज संवारै ॥ कबहुंक होति बारने ठाढी कबहुंक गनति गगन के तारे । कबहुंक आय गली मग जोवति अजहुन आए श्याम पियारे ॥ वै बहु नायक अनत लोभाने और बामके धाम सिधारे । सूर श्याम बिनु बिलपति बाला तमचुर जहं तहं शब्द पुकारे ॥ ८१ ॥ राग भैरो ॥ ललिता तमचुर टेर सुन्यो । वै बहु नायक अनत लोभाने नहि आए जिय कहा गुन्यो ॥ बिन कारन दै आस गए पिय बार बार बिय सीस धुन्यो । सेज संवारि पंथ निसि जोवत अस्त आनि भयेा चंद पुन्यो ॥ तब बैठो मन मारि आपनेा कछु रिस कछु मन सेाच परयो । सूर श्याम भय ते नहिं आए मात पिता को त्रास धरयो ॥ ८२ ॥ राग जैतश्री ॥ सेाच परयो नागरि मन माहीं । की काहूके अनत लोभाने की पित मात त्रास मन माहीं ॥ वै निसि बसे महल सीला के सुख सब रैनि गवांई । उठे अकुलाय भोर भयेा जान्यों तब नागरि सुधि आई ॥ सहज चले

गोपीसों कहिके जिय सकुचत अति भारी । सूर श्याम ललिता गृह आए चितै रही मुख प्यारी ॥ ८३ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितै रही मुख पियको । अंजन अधर कपोलनि बंदन लाग्यो बाहु चिबुको । तुरत उठी दर्पन कर लीन्हें देखौ बदन सुधारौ। अपनो मुख उठि प्रात देखि के तब तुम कहूं सिधारौ । काजर बंदन अधर कपोलनि सकुचे देखि कन्हाई । सूर स्याम नागरि मुख जोवत बचन कहो नहि जाई ॥ ८४ ॥

॥ श्रीलाके गृहते ललिताके आए ॥

राग आसावरी ॥ दर्पन लै प्यारी मुख आगें कहति पिया छबि हेरौ जू ॥ मेरी सों हा हा कहि पुनि पुनि उत काहे मुख फेरौ जू । सकुचत कहा बोलके सांचे मेरे गृह तौ आए जू । रैनि नही तौ अब जु कृपा भई धनि जिनि स्वांग कराए जू । मेरी कही बिलग जनि मानौ मे तुव करति बडाईजू । सूर श्याम सनमुख नहिं चितवत रहे धरनि सिरनाईजू ॥ ८५ ॥ राग ललित ॥ क्यों मोहन दर्पन नहिं देखो । क्यों धरनी पग नखनि करोवत क्यों हम तन नहि पेखो ॥ क्यों ठाढे बैठत क्यों नाहीं कहा परी हम चूक । पीताम्बर गहि कह्यो बैठिए रहे काहेहू मूक । उघरि गयो उरते उपरैना नख छत बिन गुन माल ॥ सूर देखि लट पटी पाग पर जावक की छबि लाल ॥ ८६ ॥ राग इमन ॥ ऐसी कहौ रंगीले लाल । जावक सों कहां पाग रंगाई रंगरेजिनी मिलीको बाल । बंदन रंग कपोलनि दीन्हों अधर अरुन भए श्याम रसाल । जिनि तुम्हरी मन इच्छा पुरई धनि धनि पिय धनि वह बाल । माला कहां मिली बिनु गुनकी उरछत देखि भई बेहाल । सूर श्याम छबि सबै बिराजति इहै देखि मोको जंजाल ॥ ८७ ॥ राग बिलावल ॥ ज्याव नहीं पिय आवई क्यों कहां ठगाने । मैं तबहीं की बकति हौं कछु आजु भुलाने । हां नाहीं नत कहत हौ मेरी सौं काहे । आए क्यों चकित भए मोको रिस दाहे । कहां रहे कासो बन्यों तहईं पगु धारौ । सूर श्याम गुन राबरे हिरदे न बिसारो ॥ ८८ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको कहि गए आइ ह काहे झूठी सोहें खाए । ऐसे मैं जानें नहि तुमको जे गुन करि तुम प्रगट देखाए । भली करी दरशन यह दीन्हों जनम जनम के ताप नशाए । तब चितए हरि नेक त्रिया तन सब अपराध छमाए । सूर दास सुन्दरी सयानी हंसि लीन्हे पिय अंकम लाए ॥ ८९ ॥ राग बिलावल ॥ नयन कोर हरि हेरि कै प्यारी बस कीन्हो । भाव करयो आधीन को ललिता लखि लीन्हों । तुरत गयो रिस दूरि ह्वै हंसि कंठ लगाए । भली करी मन भावते ऐसेहु मैं पाए । भवन गई गहि बाह लै निसि जागा जाने । अंग सिथिल निसि श्रम भयो मनहीं मन माने । अंग सुगन्ध मरदन कियो तुरतहि अन्हवाए । अपने कर अंग पोछि कै मन साध पुराए । चीर अभूषन अंग दै बैठे गिरिधारी । रुचि भोजन पिय को दियो सूरज बलिहारी ॥ ९० ॥ राग

कल्यान ॥ कियो मन काम नहि रही बाकी । प्रिया रिस दूरि कै दियो रस पूरि कै अंग बल दूरि कै गोप जाकी । नंद सुत लाडिले प्रेमके चाडिले सो छुटै कहत हैं नारि आगें । तुम परम भावती प्रानहूं ते खरी सुख नहीं लहत मैं तुमहि त्यागे । सुनहु धन तुमहि तन तुमहि मनहीं बसौ और चिय नाहिं मो मनहिं भावै । सूर प्रभु चतुर बर चतुरि नागरिनके चतुरई बचन कहि मन चुरावै ॥ ६१ ॥ राग भैरौं ॥ इहै भाव सब जुवतिन सों । ऐसेइ बचन कहत सब आगें भूलि रहति मन मोहन सों । बिन देखें रिस भाव बढावै मिलत आय दै सोहनि सों । मुख देखत दुख रहत नहीं तन चितवत मुरि दोउ मोहनि सो । और चिया अंग चिन्ह बिराजत रिस मनहीं मन छोहन सो । सूर श्याम सब गोप कुमारी टरति नहीं कहुं गोहन सों ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ लखिता को सुख दै चले अपने निज धाम । बीच मिली चंद्रावली उन देखे श्याम ॥ मोर मुकुट कछिनी कछे नटवर गोपाल । रही बदन तनु हेरि कै अति हित दृग बाल ॥ गली सांकरी कोउ नहीं आतुर मिलि धाई । कहां कहाँ पिय रहत हौ हम को बिसराई ॥ श्याम कह्यो हसि बामसों तुम्हरे निसि बास । सूर छुटै की कल्पना सुनि भई हुलास ॥ ६३ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम बाम को सुख दै बोले रैनि तुम्हारे आऊंगो ॥ मात पिता जिय त्रास धरत हौं तऊ आय सुख पाऊंगो । तुव मिलिबे की साध भुजा भरि उर सो कुच परसाऊंगो । नयन बिशाल भालि उर बैठे ते तुव हाथ कढाऊंगो । तुव तनु परसि काम दुख मेटौं जीवन सुफल कराऊंगो । सुनहु सूर अधरनि रस अचऊं दुहु मन तृषा बुझाऊंगो ॥ ६४ ॥ राग गूजरी ॥ सुनि सुनि बचन नारि मुसुकानी । गई सदन अति छुटै उतायली आनन्द सहित लजानी । फूली फिरति कहति नहि काहू मीन मिल्यो जनु पानी । बार बार श्याम रति रस की कही प्रगट करि बानी । बासर कल्प समान न बीतत कैसेहु रैनि तुलानी । सूर देखि गति गत पतंग की अवधि जानि हरषानी ॥ ६५ ॥ राग कल्यान ॥ राधिका गेह हरिदेह बासी । और चिय घरनि घर तनु प्रकासी ॥ ब्रह्म पूरण दुतिय नहीं कोऊ । राधिका सबै हरि सबै ओऊ ॥ दीप सों दीप जैसे उजारी । तैसेहीं ब्रह्म घर घर निहारी ॥ खंडिता बचन हित यह उपाई ॥ कबहुं जात कहूं नहिं कन्हाई । जनम को सुफल हरि यहे पावै ॥ नारि रस बचन श्रवननि सुनावै । सूर प्रभु अनतही गवन कीन्हों । तहां नहि गए जहं बचन दीन्हों ॥ ६६ ॥ राग टोडी ॥ श्याम गए सुखमा के धाम । देखत हरष भई मन बाम ॥ आतुर मंदिर गए समाई । प्यारी प्रेम उठी झुहराई । श्याम भामिनी परम उदारा । कोक कला रस करत बिचारा । बोलत पिय नहि आवति पासा । गद गद बानी कहति उदासा ॥ धाय जाय पति अंकम लाई । हा हा कहि कहि लेति बलाई ॥ अति आतुर पतिके गति कामा ॥ कहां प्रकृति पाई यह बामा ॥ बांह गहत कीन्हों धनि माना ॥ तब हरि कीन्हों एक सयाना ॥ तब प्यारी चरननि सिर धारी ॥ काम व्यथा जान्यों सुकुमारी । अलप हंसी मुख हेरि लजानी । सूरज प्रभु चिय मनकी

जानी ॥९७॥ राग गोड मलार ॥ श्याम कर भामिनी मुख संवारयो । वसन तनु दूरि करि सबल भुज अंक भरि काम रिस वाम पर निदरि धारयो । अधर दसननि भरे कठिन कुच उर खरे परे सुख सेज मन एक दोऊ । मनो कुम्हिलाय रहे मैनसे मल्ल दोउ कोक परवीन घटि नहीं कोऊ । अंग बिह्वल भए नयन नयननि नए लजित रति अंत विय कंत भारी । सूर धनि धन्य सुखमा नारि वस श्याम जाम जुग भई पति तें न न्यारी ॥ ९८ ॥ राग बिहागरो ॥ चंद्रावली श्याम मग जोवति । कबहूं सेज कर झारि संवारति कबहुं मलय रज भोवति । कबहुं नयन अलसात जानि के जल लै पुनि मुख धोवति । कबहूं भवन कबहुं आंगन ह्वै ऐसे रैनि बिगोवति । कबहुक बिरह जरति अति व्याकुल आकुल ता मन मों अति । सूर श्याम बहु रवनि रवन पिय यह कहि तव गुन तों अति ॥९९॥ राग ललित ॥ ऐसेहि ऐसे रैनि बिहानी । चंद मलीन चिरैयां बोलीं सुनी काग की बानी ॥ वे लुब्धे अनतहि काहू के मान कि आस भुलानी । कपटी कुटिल कूर कह जानै श्याम नाम जिय आनी ॥ कोकिल श्याम श्याम अलि देखौ श्याम रंग है पानी । श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सों बानी ॥ ॥ १०० ॥ राग गोंड ॥ बाम संग श्याम चय जाम जागे । कोक बिधि निपुन सकल गुन में सपुन सुरत सङ्ग्राम जुरि नहीं भागे ॥ अंग आलस भरे नयन निद्रा ढरे नेक सज्या परे निशा बीती । सूर प्रभु नन्द सुत चले अकुलाय कै गये ता धाम रस काम जीती ॥ ॥ १०१ ॥ राग बिभास ॥ चन्द्रावलि धाम श्याम भोर भये-आयेजू । इत रिस करि रही बाम रैनि जागि चारो जाम देखै जो द्वार कान्ह ठाढे सुख दायेजू ॥ मंदिर तें रही निहारि मनहीं मन देतिगारि ऐसे कपटी कठोर आये निशि बीतें । रिस नहीं सकी सम्हारि बैठी चढी द्वार ठाढे गिरिधारि निरखि छवि नख सिख ही तें ॥ बिन गुन बनि हृदय माल ता बिच नख छत रसाल लोचन दोउ दरशि लाज जैसी रुचि बाढ़ी । जावक रङ्ग लग्यो भाल वन्दन भुज पर बिशाल पीक पलक अधर झलक बाम प्रीति गाढ़ी ॥ क्यों आये कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषण शिंगारि मिरवत हों जाने । ताहीके जाऊ श्याम जाके निशि बसे धाम मेरे गृह कहा काम सूर दास गाने ॥ १०२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ सुख माके गृहते चन्द्रावली के आये ॥

॥ राग बिलावल ॥ तहंइ जाऊ जहं रैनि बसे । काहे कों दाहन हौं आये अंग अंग देखति चिन्ह जसे ॥ अरगज अङ्ग मरगजी माला बसन सुगन्ध भरे सेहैं । काजर अधर कपोलनि वन्दन लोचन अरुन ढरे से हैं ॥ पलकनि पीक मुकुर लै देखो एकौ नहीं अनै से हैं । सूरदास प्रभु पीठि वलय गडे नागरि अंग भरे से हैं ॥१॥ राग बिलावल ॥ तहंइ जाऊ जहं रैनि छते । काहु दुराव करत मन मोहन मिटे चिन्ह नहि अङ्ग जुते ॥ बि नहीं गुन उर हार बिराजित परम चतुरि हिये लाय सुते । बिथुरी अलक अटपटे भूषन

काम कुटिल कुच बिच जुगुते ॥ सुर तनु राग रंगे अति राजत भामिनि भवन भले भुगुते । सूर सुदेश अधर मधु फीके लोचन अलश उनीद उते ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ पीतांबर पटु कहा भयो । लीलांबर ओढे हो आये अति डहडहौ नयो ॥ तैसोइ अंग बसन रंग तैसोइ कहा कहों यह शोभा । तैसिय बनी मरगजी केसरि ता बिच के मन लोभा ॥ एते पर क्यौं बोलत नाहीं कहा खोय से आये । सूर श्याम यह अनभैं जानी नागरि चित्त चुराये ॥ ३ ॥ राग भैरव ॥ जानति हों जैसे गुननि भरे हौ । काहे कों दुराव करत मन मोहन सोइ पै कहौ तुम जहां ढरे हौ ॥ निशि जागत निज भवन न भावत आलस सब अंग धरे हौ । चंदन तिलक मिट्यो कहं बन्दन काम कुटिल कुच उर उघरे हौ ॥ तुम अति कुशल किशोर नन्द सुत कहौ कौन के चित्त हरे हौ । औचक ही जिय जानि सूर प्रभु सोंह करन को होत खरे हौ ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ तहंइ जाउ जहं रैनि गंवाई । काहे कों मुंह परसन आये जानति हों चतुराई ॥ वाके गुन मन तें नहि टारत बोलत नाहीं बैन । या छबि पर मैं तन मन वारों पीक विराजित नैन ॥ भली करी यह दरश दिखायो तातें नयन सिराने । सूर श्याम निशि सुख ह्यां लूट्यो इस कों भयो बिहाने ॥ ६ ॥ राग भैरव ॥ हाहा हो प्रिय बात कहौ । आपु कछु जिय तरक गहत हौ तौ तुम मोसों मौन गहौ ॥ कहा चूक हमकों प्रिय लागै रूसि रहे हौ काहे जू । तबहीं तें वैसेहि हो ठाढे मो तनकों नहि चाहे जू ॥ अब हम कों अपराध छिमौगे कृपा करो मुख बोलोजू । सूर श्याम अब तजौ निठुरई गुढी हृदय की खोलोजू ॥ ७ ॥ राग बिलावल ॥ रूसे हौ प्रिय रूसे हौ । उतरन को उत्तरन देत देखे हित हीन कछु से हौ ॥ वह चितवनि न होय नयननि की वचननि बढ़त हंसे हौ । वह मुख कमल विकाश नहीं रति सायक शिशि रविद्र से हौ ॥ की छुटि गई सम्पदा करते की ठग ठगे कछु से हौ । जै देऊं जान सूर प्रभु सांचेहुं मदन चोर मिलि मूसे हौ ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ मदन चोर सों जानि सुसायो । अपनी लाली खोय पीक की लाली पलकनि पायो ॥ ह्यांतें गये चतुरई लीन्हें सो सब उनहि छिपायो । आलश अबल जम्हात अङ्ग सब ऐंडत तन दरसायो ॥ कञ्चन खोय काच लै आए वित्त तौ भलौ फबायेा । सूर कहूं घर परमन नाहीं जैसें हाल करायो ॥ ९ ॥ राग काफी ॥ लाल उनीदे लोयना आलश भरि आये । अरुझि काम की बेलि सों कौने बिलमाये ॥ सिथिल पेच सिर पाग को जावक रंग भीने । पाय परे अब बस करे तब रस चस दीने ॥ लाली मेरे लालकी सब तनु ढीले । लाली लै लालन गये आये सुख पीले ॥ बिन गुन माल हिये लसै पिय प्रीति निशानी । खिरसाल हमकों दई तुम देऊ बिरानी ॥ पग डगमग इतको धरो उतको दृग धाये । अभि अन्तर अन्तर बसे पिय मो मन भाये ॥ उलटितहीं पग धारिये जासों मन मान्यो । छपद कञ्ज

तजि अेलि सों लटि प्रेम न जान्यों ॥ तब हंसि बोले श्याम जू तुमतें को प्यारी । तुम बिनु कल मोकों नहीं अतिही सुख कारी ॥ बचन चतुरई छांडि देउ कहं पढ़ि आये । सूर श्याम गुन रासि हौ नीके प्रगटाये ॥ १० ॥ राग सुघराई ॥ आये लाल जामिनी जागे ते भोर । नील कलेवर कोमल उरपर गडि गये कुच जु कठोर ॥ निशि बसि रहे भामिनी के गृह ह्यां उठि आये भोर । सूर दास प्रभु बचन बनावत अब चोरत मन मोर ॥११॥ राग सुघराई ॥ आये लाल ललित भेष किये । पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिये ॥ चन्दन खोरि मिटी अब आये कुंकुम रङ्ग छिये । पीताम्बर कहं डारि कौन कौ लीलाम्बर हि लिये ॥ लाली दै पियरी लै आये देत पुलकि जिये । सूर दास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल चिये ॥ १२ ॥ राग ललित ॥ मैं जानी जहां रति मानी । तुम आये हौ ललना जब चिरिया चुह चुहानी ॥ मुखकी बात कहा कहों ठानो बातनिहीं पहिचानी । इते पर अंखियां रस मसानी अरु पगिया लट पटानी ॥ भाल जावक रङ्ग बनाये अधर अञ्जन प्रगट जानी । बिन गुन बनी माल सब अङ्ग अङ्ग उलटी निशानी ॥ सूर दास प्रभु गुननिधानी अन्तर गत की जानी । धनि चिया तुमको जो सुख दीनी सङ्ग जागत रैनि बिहानी ॥ ॥ १३ ॥ राग बिभास ॥ मैं जानी पिय बात तुम्हारी । भोर भए मेरे गृह आए ऐसे भोरे भारी ॥ ह्यां आए सुख परसन मेरो हृदय टरत नहि प्यारी । कपट चतुरई दूरि करौ जू अजस लेत अरुगारी ॥ कहासांच मैं खोबत करते झूठे कहा फबावत । सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवत ॥ १४ ॥ राग काफी ॥ रैनिके रीझे की बात कहौ । काहेको सकुचत मन मोहन ठाढे क्यों न रहौ ॥ पीताम्बर कह भयो तुम्हारो कीधौं लियो गहौ । नीलाम्बर पहिरावन पाई सन्मुख क्यों न चहौ ॥ तब हंसि चले श्याम मन्दिर तन ककु जिय लाज गहौ । सूर श्याम ह्वांई अब रहिए अति पुनीत तुमहौ ॥ ॥ १५ राग बिलावल ॥ तुम रीझे की उनहि रिझाए । हाहा पिय यह प्रगट सुनावउ कोटिक सोंह दिवाए ॥ जावक भाल चिन्ह मैं जान्यों हठ करि पाय लगाए । नयननि पीक मया उनि कीन्हे अंजन अधर लगाए ॥ बिन गुन माल मिली कहुं तुमको कंकन पीठि दिवयउ । सूर श्याम हमको यों जानति तुमहूं कहि न सुनावहु ॥ १६ ॥ राग बिलावल ॥ आजु हरि रैनि उनीदे आए । बिन गुन माल बिराजित उर पर चन्दन रेख लगाए ॥ अंजन अधर लिलाट महाउर नयन तमोर खवाए । मगन देह सिर पाग लटपटी जावक रंग रंगाए ॥ हृदय सुभग नख रेख बिराजत कंकन पीठि बनाए । सूर दास प्रभु यहै अचम्भव तीनि तिलक कहं पाए ॥ १७ ॥ रागबिलावल ॥ आजु हरि आलस अङ्ग भरे । कबहुंक बांह जोरि ऐंड़ावत वज्रत जम्हात खरे ॥ बैठौगे की पांव धारिए देखत नयन सिराने । सांझ आय एक दरशन दीन्हो की अब होत बिहाने ॥ कबके द्वार भए पिय ठाढे भोरे भए कन्हाई । सूर श्याम ह्यां सुरति करति वह यहं तुम भोर लगाई ॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥ सोंह करनको भोरहीं तुम मेरे आए । रैनि करत सुख अनतही ताके मन भाए ॥ अंग अंग भूषण औरसे मागे कहुं पाए । देखि थकित यह रूपको लोचन अरुनाए ॥ पाग लटपटी सोहई जावक रंग लगाई । मानु कियो वह

मानिनी धनि पाय पराए ॥ यह चतुराई कहां पढी उनहीं समुझाए । सूरदास प्रभु सांचिले उपमा कवि गाए ॥ १९ ॥ राग गौरी ॥ तुमको कमल नयन कवि गावत । वदन कमल उपमा यह सांची तागुनको प्रगटावत ॥ सुन्दर कर कमलनि की शोभा चरन कमल कहवावत । और अङ्ग कहि कहा वखानै इतनेहिको गुन गावत ॥ श्याम नाम अद्भुत यह बानी श्रवन सुनत सुख पावत । सूरदास प्रभु ग्वाल संघाती जानी जाति जनावत ॥ ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ तुम न्याय कहावत कमल नयन । कमल चरन कर कमल बदन छवि अरुजु सुनावत मधुरे बैन ॥ गात प्रगट रति रविहि जनावत हुलसत आवतहौ अङ्क दैन । निसि द्वार कपाट सदल बधु मधुपनि पिवत परम चैन ॥ मिलेहु मांझ उदास अनत चित बसत सदा जल एक ऐन ॥ सूर कपट फल तबहि पायहौ अपनि अरप जब दैहै मैन ॥ २१ ॥ राग भैरों ॥ धीर धरौ फल पावहुगे । अपनेहीं सुखके पिय चांड़े कबहूं तौ बस आवहुगे ॥ हमसों कहत औरकी औरै इनि बातनि मन भावहुगे । कबहुं राधिका मानु करैगी अन्तर बिरहु जनावहुगे ॥ तब चरित हमहीं देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे । सूर श्याम अति चतुर कहावत चतुराई बिसरावहुगे ॥ २२ ॥ राग देवगन्धार यह कहि प्यारी भवन गई । रीझे श्याम देखि वा छविपर रिस सुख मूंद रई ॥ द्वार कपाट दियो गाढे करि कर आपने बनाई । नेक नहीं कहुं संधि बचाई पौढि रही तब जाई ॥ ए अंतर्जामी परमेश्वरजो कछु करै सो होई । जहां नारि सुख मूंदि पौढि रहि तहां संग रहे सोई ॥ जौ देखै ह्यां संग बिराजत चली चिया झुकराई । एक श्याम आंगनहीं देखे एक गृह रहे समाई ॥ उतकों वै अति बिनै करत हैं दूत अंकम भरि लीन्हो । सूर श्याम मन हरन कहावहु मन हरिके बस कीन्हो ॥ २३ ॥ राग कल्यान ॥ तब नागरि रिस भूलि गई । पुलक अंग अंगिया उरदरकी अंग अनंग जई ॥ अंकम भरि पिय प्यारी लीन्हो निसि सुख वासर दीन्हो । मान छिडाय हुलास बढायो सुफल मनोरथ कीन्हो ॥ तब निजधाम श्याम पग धारे तहां सहचरी आई । सूरज प्रम रस भरी नागरी देखि रही मन लाई ॥ २४ ॥ राग आसावरी ॥ चन्द्रावली हरषसों बैठी तहां सहचरी आईहो और बदन और अंग शोभा देखिरही चखु लाई हो ॥ कहा आजु अतिहरषित बैठी कहा लूटिसी पाई हो । क्यों अंग सिथिल मरगजी सारी यह छवि कही न जाई हो ॥ मोसों कहा दुरा व करति हु कहा रही सिर नाई हो । मैं जानी तोहि मिले सूर प्रभु जगुमति कुंवर कन्हाई हो ॥ २५ ॥ राग आसावरी ॥ चन्द्रावली करति चतुराई सुनत बचन मुख मूंदि रही । उत्तर नहीं कछु देति सखीको ह्यां नाहीं कछु बैन कही ॥ गूंडे गुरकी दसा गई ह्वै पूरन श्याम सुहाग भरी । वहै ध्यान हरिके अनुरागी वह लीला चितते न टरी ॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा कहौं सुख बनै नहीं । सूर श्याम जुबती मन मोहन तिनके गुन नहि परत कही ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ हाहा कहि चन्द्रावलि मोसों हरिके गुन मैंहूं सुनि लेउं । श्रवननि मग सुनि हृदय प्रकासों पुनि पुनि री तोहि उत्तर देउं ॥ की तोहि मिले तीर जमुना के की तोहि मिले भवनही मांझ । कह तोहि मेरे गृह आए मानो अस्त होत रवि सांझ ॥ काऊ बामके धाम बसे निसि भोर सदन गय मेरे

आय । सूर श्याम जो चरित उपायो कहन चहौं मुख कह्यो न जाय ॥२७॥ रागगौरी ॥ अबतौ कहें बनैगी माई । कहा श्याम अचरज सो कीन्हो कहति कह्यो नहिं जाई ॥ कैसे लाल अनत तें आए जैसे तेरे गेह । कैसें मानु कियो क्यों मिलि गए कैसें बढ्यो सनेह ॥ तब गद गद बानी मुख प्रगटी सुनि सजनी दै कान । सूरज प्रभु को चरित सुनाऊं जैसे बिसर्यो मान ॥ २८ ॥ राग गौरी ॥ मैं हरिसों हो मानु कियोरी । आवत देखि आनि बनिता रत द्वार कपाट दियोरी ॥ अपनेही कर शंकर सारी संचि सु साधि सिंवोरी । जो देखौं तौ सेज सवारति काढ्यो रिस नहि बोरी ॥ अब झकि चली भवन ते बाहेर तब हठि लोट लियोरी । कहा कहौं कछु कहत न आवै तहं गोबिन्द बियोरी ॥ बिसरि गयो सब रोस हरष मन पुनि फिरि मदन जियोरी । सूरदास प्रभु अति रति नागर छलि मुख अंमृत पियोरी ॥ २९ ॥ राग बिलावल ॥ तबहीते भयो हरष हियो । वैसे आय चरित ए कीन्हो सदन पैठि मन चोरि लियो ॥ अंग बास छवि लेख देखिकै रिस उपजी जिय भारी । क्रोध गयो उर आनन्द उमंग्यो सुख तनुदसा बिसारी ॥ ऐसे चरित कौनको आवै जे कीन्हो गिरि धारी । सूरश्याम रति पतिके नायक सब लायक बनवारी ॥ ३० ॥ रागभैरो नंद नन्दन सुख दायक हैं । नयन सैन दै हरत नारि मन काम काम तनु दायक हैं । कबहुं रैनि बसत काहू के कबहुं भोर उठि आवत हैं । काहूं को मन आपु चुरावत काहू के मन भावत हैं । काहू के जागत सगरी निसि काहू बिरह जगावत हैं । सुनहु सूर जोइ जोइ मन भावै सोइ सोइ रंग उपावत है ॥ ३१ ॥ राग बिलावल ॥ अनतहिं रैनि रहे कहुं श्याम । भोर भए आए निजु धाम । नागरि सहज रही मन माहीं । नन्द भुवन निसि अनत न जाहीं । महर सदन को मेरे गेह । हिरदै है जिय इह सनेह । आए श्याम रही मुख हेरि । मन मन करन लगी अवसेरि । रति रस बिन्ह नारि के जानि । सूर हंसी राधा पहिचानि ॥ ३२ ॥ राग रामकली ॥ आजु बनै पिय रूप अगाध ॥ पर उपकार काज तनु धार्यो पुरवत सब मन साध । धर्म नीति यह कहां पढी जू मोहूं बात सुनावहु । कहौ कहाँ काको सुख दीन्हं काहे न प्रगट बतावहु । धनि उपकार करत डोलत हौ आजु बात यह जानी । सूर श्याम गिरिधर गुन नागर अंग निरखि पहिचानी ॥ ३३ ॥ राग गूजरी ॥ पिय छवि निरखि हंसत जिय भारी । कहां महा उर पाग रंगाई ए सोभा एक न्यारी । असन नयन अलसात देखियत पलक पीक खपटानो । अधर दसन छत बंदन राजत बंधुक पर अलि मानो ॥ हृदय रुचिर मोतिन की माला नख रेखी तेहि तीर । बिन गुन माल सूर के स्वामी कुंकुम श्याम सरीर ॥ ३४ ॥ राग बिलावल ॥ धन्य आजु यह हरस हियो । धन्य धन्य जासां अनुरागे तब जानी नहि और बियो । भले श्याम वह भली भावती भले भली मिलि भली करी । यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौ बिछुरत क्यों एक घरी । जाहु तहीं सुख दीन्हों मोको वै सुनि कै रिस पावगी । सूर श्याम अति चतुर कहावत बहुरयो मन न मिलावैंगी ॥ ३५ ॥ राग बिलावल ॥ क्यों आए उठि भोर यहाँ । काहे को इतनो अरमाने रैनि रमे फिरि जाहु यहाँ ॥ हम को कहा

यती गहआई उनहीं क्यों न सम्हारौजू। उन आए ह्यां नाहीं जान्यों अजहं वों पग धारौ जू ॥ हमहूं बोलि उहांई खीजौ डर उन को हम हं को है। सूर श्याम तिनहीं सुख दीजौ जो विलसै संग तुम को लै ॥ ३६ राग रामकली ॥ उनहीं को मन राखे काम। ह्यां तुम तौ आए जौनाहीं बात सुनत हौ नाहीं श्याम ॥ देखौ अंग अंग प्रति शोभा मैतौ भूली हौं यहि रूप। धनि पिय बने बनी बेउहैं एक एक तें रूप अनूप ॥ सो छवि मोहि दिखावन आए मया करी बहुते हरि आजु। सूर दास प्रभु रसिक सिरोमणि बढ़ौ रसिकनी बन्यो समाजु ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ रसिक रसिकई जानि परी। नयननितें अब न्यारे हूजै तबहीतें अति रिसनि भरी। तुम जोबन अरु सो नव जोबनि एते पर सब गुणनि भरी। लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि पिय झुहरी। अंजन अधर कपोलनि बन्दन पीक पलक छवि देखि डरी। सूर श्याम रति चिन्ह दिखावन मेरे आए भले हरी ॥ ३८ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम पिया सनमुख नहि जोवत। कबहुं नयन की कोर निहारत कबहुं बदन पुनि गोवत। मन मन हंसत बसत तन पागट सुनत भावती रावत। खंडित वचन सुनत प्यारी के पुलक होत सब गात। यह सुख सूर दास कछु जानै प्रभु अपने को भाव। श्री राधा रिस करति निरखि मुख सो छवि पर ललचाव ॥ ३९ ॥ राग धनाश्री ॥ पिय को सुख प्यारी नहिं जानैं। जोइ आवत सोइ सोइ कहि डारति जाहु जाहु तुम गाने। काहे को मोहि डाहन आए रैनि देत सुख वाको। भली नबेली नोखी पाई जो जाको सो ताको। चंदन बदन पिय अंग कुंकुमा शेष लिए ह्यां आए। सूर श्याम यह तुमहि बडाई औरनि को सरमाए ॥ ४० ॥ राग बिलावल ॥ औरनि को छवि कहा देखावत। तुमहीं को भावत मनमोहन हम देखत रिस पावत। आपुन को भई बड़ी प्रतिष्ठा जावक भाल लगाएं। याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सबनि लजाएं। पिय निधरक हम अति सकुचत हैं दर्पन लै मुख देखौ। सूर श्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हम तन नहि पेखो ॥ ४१ ॥ राग गौरी ॥ श्याम हंसे प्यारी मुख हेरो। रिसनि उठी झुहराय कह्यो यह बस कीन्हों मन मेरो ॥ जाय हंसो पिय तेहि आगे मैं रीझी अति भारी ऐसे हंसिके ताहि रिझावहु देउं कहा अब गारी ॥ होत अबार गवन अब कीजै धनी कहा निहारत। सूर श्याम मनकी मैं जानी ताके गुनहि विचारत ॥ ४२ ॥ राग देव गन्धार ॥ मैं जानी पिय मन की बात। धरनी पग नख कहा करोवत अब सीखे ए घात ॥ तुम जाने जिय हमहि श्याने अरु सब लोग अयाने। रैनि बसत कछु भोर हमारे आवत नहीं लजाने ॥ यह चतुरई पढी ताही पै सो गुन हम ते न्यारो। धनि धनि सूर दास के स्वामी काहे हम न बिसारो ॥ ४३ ॥ राग देव गन्धार ॥ मैं जाने है जू लखन तहीं न सिधारिए जहां नयो नेहरा। मुहं की भलाई मोहूसों करन आए जियकी जासों ताहीसों तुम बिन सूनौं वाको गेहरा। निति के मुखकी कहें देत अधर नयना उर नख लागे छवि देहरा। बेगि सवारो पाव धारिए सूरके स्वामी नतरु भीजैगो पियरो पट आवतु है पिय मेहरा ॥ ४४ ॥ राग गोड मलार ॥ ठाढे रहौ आंगन

हौं हो पिय जौलौं मेहु नख सिख भीजा। परन देहु बड़ी बड़ी बुंदैं तुम चीर उतारि और वस्त्र पहिरौ तब गेह देहरी पाव दीजौ। कहिए बात रैनि की सांची तापीछे सोहैं कीजौ। सूर श्याम तुम हौ बहु नायक देह सुधारि मो छूजौ ॥ ४५ ॥ राग मलार ॥ मोसों निठुरई ठानी हो मोहन प्यारे काहे को आवन कह्यो सांचे हौजू सांचे। प्रीति के वचन बांचे बिरह अनल आंचे आपने गरज को तुम एक पाय नांचे। भले हौजू जाने लाल अरगजे भीनी माल केसरि तिलक भाल मैन मंच काचे। निसि के चिन्ह चौन्हें सूर श्याम रति भीने ताही के सिधारौ पिय जाके रङ्ग राचे ॥ ४६ ॥ राग मालकौसिक ॥ तुम जिनि सकुचौ मेरे प्यारे लाल जातियसों रति मानी ताही के रहौ अब। मैं इतनेही भलो मान्यों प्रीतम जो मेरे अंगना पांव धारे आपुन जब। नयन तृप्त भए दरस देखतही श्रवन तृप्त भए बचन सुने तब। सूर दास प्रभु चरन छुए कहति रोम रोम पुलकित अङ्ग भए सब ॥ ४७ ॥ राग कान्हरो ॥ नयन चपलता कहां गंवाई। मोसों कहा दुरावत नागर नागरि रैनि जगाई। ताहीके रङ्ग अरुन भए हौ धनि यह सुन्दरताई। मनो अरुन अंबुज पर बैठे मत्त भृङ्ग रस आई। उडि न सकत ऐसे मत वारे लागत पलक झमाई। सुनहु सूर यह अंग माधुरी आलस भरे कन्हाई ॥४८॥ राग बिलावल ॥ नयननि की चंचलता कहा कहैं भीने रङ्ग कोन केहो ॥ श्याम हमहूं सों कत हौ दुरावत। और निके बदन देखिबे को नेम लियो ताकोपलकनि राखे भार भरे नए आवत ॥ पुहुप गन्ध लोभ भवर उड़ि न सकत फिर बैठि जात समीप रति मानो सङ्ग लये ॥ आवत रति कोरति गावत। सूर दास प्रभु प्यारी रस बस कीन्हें मुख की हमहि बनावत ॥ ४९ ॥ राग कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लाल जाई। जावक तिलक भाल दियो है बुंद लाल बिन गुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई ॥ अधर अंजन दाग मिट्यौ है पीक पराग और मिटी बदन की लखाई। अंग अंग सिथिल भये हौ प्रेम सूर के स्वामी मिटि गई चंचलताई ॥ ५० ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ रंग भरि आये हो मेरे ललना बातैं कहत हौ अटपटी। अति अलसात जम्हात हौ प्यारे पिय प्रगट चिया प्रताप छूटत नहीं न अन्तर की गटी ॥ यह चतुरई अधिकाई कहां पाई श्याम बाके प्रेम के पटे हौ पटी। सूरदास प्रभु गिरिधर बहु नायक तन मन नैन चट पटी ॥ ५१ ॥ राग कान्हरो ॥ डोलत महल महल यहै टहल हम जानति तुम बहु नायक पिय। आये हौ सुरत किये टाटक रस लिये सक सकी धक धकी हिय ॥ छूटे बन्दनि अरु पाग की बांधनि लटपटे पेच अटपटे दियो। सूर दास प्रभु हौ बहु नायक मेरे पाव धारे बैठो जु बैठो भली कियो ॥ ५२ ॥ राग इमन ॥ महल महल अब डोलत हौ। यहै काम तें धाम बिसारयो बूझें काहे न बोलत हौ ॥ बहु नायकी आजु मैं जानी कहा चतुरई तौलत हौ। निशि रस कियो भोर पुनि अटके सिथिल अङ्ग पग डोलत हौ ॥ टटके चिन्ह पाछिले न्यारे धक धकात उर जोखत हौ। जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हौ ॥ ५३ ॥ राग इमन ॥ अंग अंग रंग भरे आये हौ। रंग भरि पाग भाल रंग शोभा रंग रंग नैन पगाये हौ ॥ रंग कपोल रंग पलकनि

शोभा अधरनि श्याम रंगाये हैं । नख छत रंग चारु उर रेखा रति रंग रैनि जगाये हैं ॥ कंकन वलय पीठि गडि लागे उर उर छाप बनाये हैं । सूर श्याम बामा रंग पागे अनुरागे मन भाये हैं ॥ ५४ ॥ राग बिलावल ॥ बार बार मैं कहति हौं पिय तहीं सिधारौ । आये हौ मन हरन को हरि नाम तुम्हारौ ॥ भली बनी छबि आजु की क्यों लेत जम्हाई । रैनि आजु सोये नहीं रति काम जगाई ॥ वह रति तुम रति नाथ हौ हम कैसे भावैं । सूर श्याम तुम बहु गुनी जे तुमहि रिझावैं ॥ ५५ ॥ राग सोरठ ॥ सकुचत श्याम कहत मृदु बानी । किनि देख्यो किनि कही बात यह मो हजूर कहै आनी ॥ यातें बचन बोलि नहि आवत रिस पावति हौ भारी । जोरि कहति बातें तुव आगें खोटी व्रज की नारी ॥ तुमहू तें ऐसी को प्यारी सोंह करौं जो मानौ । सुनहु सूर जो बूझति मोकों मैं काहु न पहिचानौ ॥ ५६ ॥ राग भैरव ॥ बिन बोले पिय रहियें जू । नाहीं कही हमे कहत को अब ऐसें जिनि दहिये जू ॥ मौन रहे तौ कछू गंवायो इनि बचननि कह लहिये जू । एते पर बक बादन लागे कैसे रिस मन सहिये जू ॥ सोंह कहा करि हौ सुनि प्यारे सनमुख ह्वै धों कहिये जू । सूर दास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिकहि सब गुन चहिये जू ॥ ५७ ॥ राग बिलावल ॥ आय गईं व्रजनारि तहां । सोंह करत पिय प्यारी आगे आनन्द बिरह महां ॥ प्यारो हंसी देखि सखियनि कों अन्तर रिस है भारी । नैन सैन दै अंग अंग निरवति पिय शोभा अधिकारी ॥ श्याम रहे मुख मूंदि सकुचि कैं युवति परस्पर हेरैं । सूर दास प्रभु अंग अनुप छबि कहं पाये केहि केरैं ॥ ५८ ॥ राग बिलावल ॥ तब नागरी कहति सखियनि सों एते पर ए सोंह करैं । दरशन प्रात देतहैं हम को निशि औरनि के चित्त हरैं ॥ तुमहीं देखि लेहु अंग बानक एते पर क्यों सही परैं । कृपा करैं अब तहीं सिधारैं मो आगे ते अब जु टरैं ॥ यह छबि देखि सनाथ भई मैं अब ताही पर जाय ढरैं । सूर श्याम री देखि चले डरि कहौ सखी अब ह्यां न फिरैं ॥ ॥ ५९ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम गये तिय मान कियो । देखौ मोहि दोष तुम देती उनि ऐसे मन चोरि लियो ॥ जाहु सदन तुमहूं सब अपने मैं बैठी हौं धाम । जान देहु अब ह्यां जनि आवैं ऐसेन को कह काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरनि प्रकाश । सुनहु सूर पुनि तौ कहि आवै तनगि गये तापास ॥ ६० ॥ * ॥

॥ यहां तें राधा जू को नुदुति ॥

॥ राग बिहागरो ॥ यह कहि कै चिय धाम गई । रिसनि भरी नख सिखलों प्यारो जोवन गर्व भई ॥ सखी चलो गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाई । बोलति नहीं मानु करि हरि सों हरि अन्तर रहे आई ॥ यहि अन्तर युवती सब आईं जहां श्याम घन द्वारे । प्रिया मानु करि बैठि रही है रिस करि क्रोध तुम्हारे ॥ तुम आवत अतिही झुहरानी कहा करो चतुराई । सुनत सूर ए बात चकित पिय अतिहि गये मुरझाई ॥

॥ ६१ ॥ राग बिहागरो ॥ बहुरि नागरी मान कियो । लोचन भरि भरि ढारि दिये दोउ अति तनु बिरह हियो ॥ देखत ही देखत अति व्याकुल प्रिय कारण अकुलाने । वे गुन करत होय अब कांचे कहियत परम सयाने ॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमाने । सूर श्याम यह कहितेहि पठई तुरत तजैं जेहि मान ॥ ६२ ॥ राग केदारो ॥ दूती दई श्याम पठाय। और कछु मुख कहत बानी तहां बैठो जाय ॥ चिया तन परवाहि नाहीं अपटि आवैं जाहिं । सैाति साल सलाइ बैठी डुलत इत उत नांहि ॥ भीति बिनु कह चित्र रेखैं रही दूती हेरि । सूर प्रभु आतुर पठाई करति मन अवसेरि ॥ ६३ ॥ राग कान्हरो ॥ दूती मन अब सेर करै । श्याम मनावन मोहि पठई है यह कतहूं तव तें न टरै ॥ तब कहि उठी मानु अति कीनो बहुत करी हरि कहा करौं । ऐसे बिन वे नहीं जानि हैं अब कबहूं जिनि उनहि टरौ ॥ मैं आवति जमुना तट तें ब्रज सखी एक यह बात कही । सुनहु सूर मैं रहि न सकी गृह कहा श्याम की प्रकृति सही ॥ ६४ ॥ राग बिहागरो ॥ अब द्वारे तें टरत न श्याम । अब पर घर की सोंह करत हैं मूलि करौं नहि ऐसो काम ॥ अब तू मानु तजै जिनि उनसों यहै कहन आई तेरे धाम । अब समझी औरौ समझैं वे हम जब कहैं करैं तब ताम ॥ अब मोकों यह जानि परी है काहू के न बसें कहुं जाम । सूर दास दूती की बानी सुनति धरति मनहीं मन काम ॥ ६५ ॥ राग सूहो ॥ जब दूती यह बचन कह्यो । तब जाने हरि द्वारे ठाढे उर उमग्यो रिस नहीं रह्यो ॥ काहे कों हरि द्वार खरे हैं किन राखे कहि जीभि गरै । मौन गह्यो मैं हौं कहि आवत काहे कों तूं रिसनि जरै ॥ चतुरि दूति का जानि लई जिय अब बोली गयो मान सबै । सूर श्याम पै आतुर आई कहति आन की आन फबै ॥ ६६ ॥ राग केदारो ॥ काहि मनाउं श्याम लाख बात जोरै नहि डीठि । मुखहूं जो बोलै तौ मनहूं की लहिए ऐसी निंहारी अहिठि ॥ अपनी सी बहुत कही सुनि उनि सबै सही बार की बूंद ताकों कहा करै बसीठि । सूर दास के पिय प्यारी आपु ही जाय मनाय लीजै जैसी बयारि बहै तैसी बेाडिए जु पीठि ॥ ६७ ॥ राग केदारो ॥ लखन तुम्हारी प्यारी आजु मनायें न मानति । झिहरावति जानि का बैठी कियो जु इतरि तुमहीं लैको कियो गुन गानति भरि भरि अंखियनि नीर खेति पै ढारति नाहीं अति रिस कम्पति अधर फरकि करि भृकुटी तानति । सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि आपुहि चलिए तौहीतौ भखे मनावति ॥ ६८ ॥ राग पूरबी ॥ हौं कैसेकै ल्याउजौ मरम पाउ श्याम वाको मान मानेा गट बै भयेा । तनु कंचन गिरि प्रगट कियेा तामें बसन कोट रच्यो अंचल ओढी बोट दयेा ॥ बचन पैारिया बोल न खोलै मुख पैारि मूंदि रह्यो मोहन भोंह कमान नयना रिसके बान तातें जाइन निकट गयेा । सूरदास प्रभु चतुर कहावत आपुहि चलिये तौ तुमहूंपै आय लयेा ॥ ६९ ॥ राग नट ॥ बिहरति मानु सर जु कुमारि । कैसेहू निकसति नहीं है रही करि मनु हारि ॥ मौन पारि अपार रचि अब गाह अंसु जुवारि । मगन ह्वै वे डरति नाहीं थकित प्रगट पुकारि ॥ सूस स्वास सरोज लोचन छुलनि जनु जल चारि । ग्राहक ग्रान चाहक तरति तहं डर डारि ॥ चिकुर सइवर गि कर अरुझति सकति नहि

निरवारि । नील अंचल पच पद्मिनि उरज जलज निहारि ॥ रह्यो रचि रुचि मान मानिनि मन मराल मुरारि । सूर आपुन आनिए गहि बांह नारि निकारि ॥ ७० ॥ ॥ राग बिहागरो ॥ यह सुनि श्याम बिरह भरे । कहुं मुकुट कहुं करि पीतांबर मुरछि धरनि परे ॥ जुवति भरि अकवारि लीन्ही है कहा गिरिधारि । आपुही चलि बांह गहिये अंक लीजै नारि ॥ अतिहि व्याकुल होत काहे धरौ धीरज श्याम । सूर प्रभु तुम बडे नागर बिवस कीन्हो काम ॥ ७१ ॥ राग रामकली ॥ श्यामहि धीरज दै पुनि आई । बानी यहै प्रकासत मुखसे व्याकुल बड़े कन्हाई ॥ बारं बार नयन दोउ ढारत परे मदन जंजाल । धरनि रहे मुरझाय बिलोके कहा कहौं बेहाल ॥ बैठी आय अनमनी ह्वै कै बार बार पछितानी । सूर श्याम मिलिकैसुख देहिन जौ तुम बडी सयानी ॥ ७२ ॥ राग रामकली ॥ तुहीं पिय भावति नाहिन आन । निसि दिन मन मन करत मनोरथ रस बस केलि निदान ॥ ध्यान बिलास दरश संभ्रम मिलि मानत मानिनि मान । अनुनय करत बिवस बोलतहै दै परि रंभन दान ॥ प्रथम समागमते नाना बिधि चरित तिहारे गान । सूर श्याम कुहवर अंतर सुनि सुजस आपने कान ॥ ७३ ॥ राग सारंग ॥ श्यामा तू अति श्यामहि भावै । बैठत उठत चलत गउचारत तेरिए लीला गावै ॥ पीतै पीत बसन भूषन सजि पीत धात अंग लावै । चन्द्राननि सुनि मोर चंद्रिका माथे मुकुट बनावै ॥ अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परम सुखपावै । बिछुरत तोहि क्वासि राधा कहि कुंज कुंज प्रति धावै ॥ तेरो चरित लिखे अरु निरखै बासर बिरहु गंवावै । सूरदास रस रास रसिक सों अन्तर क्यों करि आवै ॥ ७४ ॥ राग बिहागरो ॥ मन पछि तावोई रहि जै है । सुनि सुन्दरि यह समय खोयते पुनि न भूल सहि जैहै ॥ मानहुं मैंन मजीठ प्रेम रंग तैसेही गहि जैहै । काम हरष हररै हरि अंबर देखत ही बहि जैहै ॥ इते भेदकी बात सखीरी कत कोउ कहि जैहै । परत भवन खनि कूप सूरत्यों मदन अगिनि दहि जैहै ॥ ७५ ॥ राग केदारो ॥ तेरेरी नयन सुहावने हेा नेक न भावत न्यारेरी । पलक वेाट प्रान जात तरेरी ध्यान चकोर चंदा बरनन चितवनि पर चेरेरी ॥ कमल कुरंगन मधुप उपमा नहिं आवै चंचल रहत चितेरेरी । सूरदास प्रभु की तुहीं जीवनि कतहि करति चिय झेरेरी ॥ ७६ ॥ राग सारंग ॥ जब जब तेरी सुरति करत । तब तब डब डबाय दोउ लोचन उमगि भरत ॥ जैसे मीन कमल दल को चलै अधिक अरत । पलक कपाट न होत तबहिंते निकसि परत ॥ अंसुपरत ढरि ढरि उर ऊपर मुक्ता मनहुं झरत । सहज गिरा बोलत न बनत हित हेरि हरत ॥ राधा नयन चकोर बिना मुख चंद जरत । सूर श्याम तुम्हरे दरशन बिनु नाहीं धीर धरत ॥ ७७ ॥ ॥ राग सारंग ॥ बहुरि पछितैहैरी व्रज नारि । देखि जाय ठाढे मग जोवत सुंदर श्याम मुरारि ॥ ऐसो निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नयन पसारि । कहा गरव या झूठे तन को देखि हाथ लै वारि ॥ तजि अभिमान मानिरी मानिनि मैं जु करति मनु हारि । सूर हंस स्वाती सुत धोखे कबहुंक खात जु वारि ॥ ७८ ॥ राग सारंग ॥ हरि तोहि बारं बार सम्हारै । कहि कहि सब जुवतिन के नामहिं नहि रुचि जेहि उर धारै ॥

कबहुंक आंखि मूंदि करि चाहत चितधरि ठौर तिहारै । तब प्रसिद्ध लीला बिहारते अब नहिं तुमहिं बिसारै ॥ जो जाको जैसे करि जानै सो तैसे हित मानै । उलटी रीति तुम्हारी सुनिकै सब अवि रिजु करि जानै ॥ क्यों पतिआ पठवै नहि उनको वांचि समुझि सुखपावैं । सूर श्याम हैं कुंज धाम में अन्त न मन विरमावैं ॥ ७६ ॥ राग सारङ्ग ॥ राधे हरि तेरो नाम उचारै । तुम्हरेइ गुन ग्रंथित करि माला रसना करसों टारै ॥ लोचन मूंदि ध्यान धरि दृढ करि नेक न पलक उघारै । अङ्ग अङ्ग प्रति रूप माधुरी उरतें नहीं बिसारै ॥ ऐसो नेम तुम्हारो पियके कह जिय निठुर तिहारै । सूर श्याम मन काम पुरावहु उठि चलि कहैं हमारै ॥ ८० ॥ राग केदारो ॥ जाके दरशको जग तरसत ताहि देरी दरश नेक देरी । जाकी मुरली की धुनि सुर मुनि मोहैं ता तन नयन चितेरी ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सोतौ तेरे चरननि परसतु हैरी । सूरदास बस तीनि लोक जाकेहैं सोतौ तेरे बस माईरी तुमुख धुनि सुनाय मोहि लैरी ॥ ८१ ॥ ॥ राग भोपाली ॥ तुव को हैरी कोनै पठई तेरी को मानै । तू जो कहति श्यामको न देखे न सुने को पहिचानै ॥ और कहति कहि नेमु लियो ह्यां कोबैसी बेई जानै । सूरदास प्रभु रसिक बडे तोको पठई अतिही स्यानै ॥ ८२ ॥ राग सारंग ॥ अति न हठ कीजैरी सुनि ग्वारि । हौंजु कहति तू सुनि याते सुठ सरै न एकौ द्वारि ॥ एक सबैं मोतिन के धोखे हंस चुंगत हैं ज्वारि । कामी कान्ह कुंवर के ऊपर सरवस दीजै वारि ॥ यह जोवन बरषाको नदि ज्यों फोरति कतहि करारि । सूरदास प्रभु अन्त मिलहुगो ए बीते दिन चारि ॥ ८३ ॥ राग रामकली ॥ कहा तुम इतनेहिं को गरबानी । जोवनरूप द्योस दसहीको ज्यों अंजुरी को पानी ॥ तृणको अगिनि धूमके मंदिर ज्यों तुषार कन पानी । रिसहीं जरति पतंग ज्योति ज्यों जानति लाभ न हानी ॥ करि कछु ज्ञान अभिमान जान दैहै न कोन मति ठानी । तनु धनु जानि जाम जुग छाये भूलति कहा अयानी ॥ नवसै नदी चलति मरजादा सुधिये सिंधु समानी । सूर इतर ऊसर के बरषे थोरेहि जल इतरानी ॥ ८४ ॥ राग पूर्वी ॥ तू चलि प्यारी री एतो हठ छांडि मानिरी । परम विचित्र गुन रूप आगरी अतिहि चतुरि तिय भारीरी ॥ मन मोहन तनु मदन दहत हैं तोरि उनकि पिर न्यारीरो । सूर दास प्रभु विरह विकल हैं नेक न निरखि निहारीरी ॥ ८५ ॥ राग बिहागरो ॥ बादि बकति काहे कों तू कत आई मेरे घर । वे अति चतुर कहा कहिये जिनि तोसी मुख लैन पठाई तनु बेधति वचननि सर ॥ उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीति रीति कोही तुमको हैं गिरिवर धर । सूर दास प्रभु आनि मिलैगे छैहैं पग अपने कर ॥ ८६ ॥ राग मलार ॥ ज्यों ज्यों मैं निहोरे करों त्यों त्यों यों बोलति है री अनोखी रुसनि हारी । बहियां गहति सतराति कोन परमग धरि डगरी कौन पर होति पीरी कारी ॥ को कौन करत मान तोसी और प्रिय आन हठ दूरि करि धरि मेरे कहैं आरी । सूरदास प्रभु तेरो पथ जोवत तोहि तोहि रट लगी मदन दहत तनु भारी ॥ ८७ ॥ राग मलार ॥ तू तो ग्वारि अहीरी तोसों बे कछु नंद नदन हंसि कह्यो इतनेहि कों तुव कबकी अन उतर बोलति कह्यो नहिन मानति री ॥ श्याम सुन्दर हंसि हंसि देत सुनि

सुनि करति कानि एक टकहि गारि निजु रहीरी । कहा कहों हरि सों वे तोसी को मुंह लगाई बारि फेरि डारों तोहि पिय एक रोम पररी । सूर दास प्रभु कों कहा कहि बरनो एती कबहूं काहू की न सहीरी ॥ ८८ ॥ रागनट ॥ एक तो लालन लाडनि लडाई दूजें जोवन बावरी । उनके गरव जिनि भूलि रहै री हम सांच करि लीन्हे सुख अनेक दिन दिन चारि हेात अधिक चावरी ॥ मेरो कह्यो तू मानिरी माई सब चियानि को यहै सुभावरी । मैं जु कहति करि सूर श्याम सों हिलि मिलि रहिये उठत बैस को यहै दाव री ॥ ८९ ॥ राग कान्हरो ॥ रहि री मानिनि मानु न कीजै । यह जोबन अंजुरी जल है जो गोपाल मांगै तौ दीजै ॥ छिनु छिनु घटति बढति नहि रजनी ज्यों ज्यों कला चन्द की छीजै । पूरन पुन्य शुक्ति फल तेरो काहे न रूप नैन भरि पीजै ॥ सोइ करति तेरे पायन की ऐसे जियनि दशा दिन जीजै । सूर सुजीवनि सुफल जगत को बैरी बांधि बिवस करि लीजै ॥ ९० ॥ राग कान्हरो ॥ सुनि प्यारी राधिका सुजान । कहि धों कौन काज सरि है री यहि झूठे अभिमान ॥ जिनके चरन रमानित लालति सब गुन रूप निधान । तिनके मुख के बचन मनोहर सो तू करति न कान ॥ परम चतुरि सुन्दर सुख कारी तोसो चिया न आन । कीजै कहा कृपिनि को सम्पति बिना भोग बिन दान ॥ ऐसी बिथा होत निसि हरि कों जिनि हठि करै बिहान । नाहिन कढत और के काढें सूर मदन के बान ॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥ आजु हठि बैठी मानु किये । महाक्रोध रस अंस तपत मिलि मनु विष विषाम पिये ॥ अध मुख रहति बिरह व्याकुल सिख मूरि मंच नहि मानै । मुकनहिं तजै सुमिर जाती ज्यों सुधि आये तनु जानै ॥ एक लीक बसुधा पर काढी भक्तन गोद पसारो । जनु बोहित तजि तकै परन को दधि ज्यों अवनि निहारी ॥ ज्यों अति दीन दुखी सबहीं अंग कतहूं सांति न पावै । तो बिन पियहि चिया प्रातहि तें एकइ बात मनावै ॥ कबहुंक धुकति धरनि श्रम जल भरि महा शरद रवि सास । चाटक भई चित पुतरी ज्यों जीवन की नहि आस ॥ तब उपचार कियो मैं करकस लै रस पारयो कान । मुरछा जगी नही मुख बोली लै बैठी फिरि मान ॥ हौं तौ थकी करति बहु जतननि जोकी बिथा न पाई । बूझहु लाल नवल नागर तुम एकई सैन बताई ॥ शिव आकार दिखायो कछु एक भाव दोष रस नाहीं । सूर दास प्रभु रसिक सिरोमनि लै मेलौं पगछांही ॥ ९२ ॥ राग गंधार ॥ पिया प्रिय नाहिं मनायो मानै । श्री मुख बचन मधुर मृदु मादक कठिन कुलिस तें जाने ॥ शोभित सहित सुगंध श्याम कच कल कपोल उरझाने । मानहु बेधत ग्रस्यो कला निधि तजत नहीं बिनदाने ॥ बाल भाव अनुसरति भरति दृग अश्रु अंसुकन आने । जनु खंजरीट जुगल जठरातुर खेत सुभख अकुलाने ॥ नैन निकट ताटंक गण्ड मण्डलपर कविन बखाने ॥ जनु खद्योत चमकि चलि सकत न निशि गत तिमर हिराने । यह सुनि के अकुलाय चले हरि छत अपराध क्षमाने । सूर दास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसुकाने ॥ ९३ ॥ राग धनाश्री ॥ मानि मनायो मौन रही । सकुच समेत चली उठि आतुर बन की गैल गही ॥ बिधुमुख निरखि बिमुख करि लोचन पुनि बिधु वदन चही । दरस परसतद रूप आजु निजु भुव नख

लेखि कही ॥ पुहुप सुरंग सारंग रिपु वेाट दिखावत चतुर लही । पानि सु परसत शीस परस्पर मसुकाने तबही ॥ तृण तोरत्रो गुन जा तजि ते गुन काटति रेख मही। सूरश्याम वहुरत्रौ मिलि बिलसहु जाति अवधि अवही ॥ ९४ ॥ राग सारंग ॥ चली वन मोन मना थेा मानि । अंचल वेाट पुहुप दिखरायेा धरेा शीस पर पानि ॥ शशि तन चितै नयन दोउ मूंदे मुख मह अंगुरी आनि । यह तेा चरित गुप्त की बातें मुसुकाने जिय जानि ॥ रेखा तीनि भूमि पर खांचो तृण तोरत्रौ कर तानि । सूर दास प्रभु रसिक शिरोमणि बिल सहु श्याम सुजानि ॥ ९५ ॥ राग गोंडमलार ॥ सैन दै कह्यो बन धाम चलिये श्याम यहै करि काम जब आनि मिलि हैं । भावही कह्यो मन भाव दृढ राखियेा देंउ सुख तुमहि सङ्ग रंग रलि हैं ॥ जानि पिय अतिहि आतुर नारि आतुरी गई बन तीर तनु सुद्धि हेती । सूर प्रभु हरष भये कुञ्ज नव तहां गये सजत रति सेज जे निगम नेती ॥ ९६ ॥ राग गोंड मलार ॥ श्याम वन धाम मग बाम जोवें । कबहुं रचि सेज अनुमान जिय जिय करत लता संकेत तर कबहुं सोवें ॥ एक छिन इक घरी घरी एकजाम बासर हुते होत भारी । मनहि मन साधु पुरवत अंग भाव करि धन्य भुज धनि हृदै मिले प्यारी ॥ कबहि आवै सांझ शेाच अति जिय सांझ मेन खग इंद्र ह्वै रहे दोउ । सूर प्रभु भामिनी बदन पूरन चन्द रस परस मनहि अकुलात बोउ ॥९७॥ राग नटनारायण ॥ दूती संग हरि के रही । श्याम अति आधीन ह्वै के जाहु तासों कही ॥ वेगि आनि मिलाय मेाकौ परम प्यारी नारि । देखि हरि तनु काम व्याकुल चली मनहि बिचारि ॥ गई तहं जहं करति राधा अंग अंग सिंगार । सूर के प्रभु नवल गिरिधर संग जानि बिहार ॥ ९८ ॥ राग बिहागरेा ॥ राधा सखी देखि हरषानी । आतुर श्याम पठाई याकों अन्तर गत की जानी ॥ वह शेाभा निरखत अंग अंग के रहो निहारी । चकित देखि नागरि मुख वाको तुरत सिंगार बिसारी ॥ ताहि कह्यो सुख दै चली हरि कों मैं आवति हैं पाछें वैसहि फिरी सूर के प्रभु पै जहां कुंज गृह काछें ॥ ९९ ॥ राग केदारेा ॥ दूती देखि आतुर श्याम । कुंज गृह तें निकसी धाय काम कीन्हेा ताम ॥ बोलि उठी रसाल बानी धन्य तुव बड़ भाग । अवहि आवति बनी बाला किये मन अनुराग ॥ कहा बरनौ अङ्ग शेाभा नयन देखौ आज । सूर प्रभु नेक धरेा धीरज करौं पूरन काज ॥ १०० ॥ राग इमन ॥ बडे भाग के मोटे हौ । ऐसी चिया और को पावै बने परस्पर जोटे हौ। तै सिय नारि सुन्दरी छोटी तैसेइ तुम बलि छोटे हौ । पूरब पन्य सुकृत फलकी वह आप गुननि करि धौ टेहौ । परम सुशील सुलच्छन नारी तुमहि चिभङ्गी खोटे हौ । सूर श्याम उनि के मन तुम हौं तुमहूं नायक को टेहौ ॥ १०१ ॥ राग काफी ॥ सुनि मोहन तेरि प्रान प्रिया को बरनौं नन्द कुमार । जो तुम आदि अन्त मेरो गुन मानहु यह उपकार । चन्द्र मुखी भौंहैं कलंक बिच चन्दन तिलक लिलार । मनु बेनी भु वंगिनि के परसत अबत सुधाकी धार । नयन मीन सरवर आनन मैं चंचल करत बिहार । मानों करनफूल चारा को रबकत बारम्बार । बेसरि बनी सुभग नासा पर मुकता परम सुढार । मनो तिल फूल सुघर बिम्बा धर दुहुंबिच बूंद तुसार । सुठि

सुठान ठोडी अति सुन्दर सुन्दरता को सार । चुवतहि चुवत सुधा रस मानों रहि गई बूंद मझार । कंठसिरी उर पदिक बिराजत गज मोतिन को हार । दहिनावर्त्त देत मनो भ्रुव को मिलि नखतनि की मार । कुच जुग कुम्भ सुण्डि रोमावलि नाभि सुह्रदै अकार । जनु जल सोखि लियो संशयता जोबन गज मत वार । रतन जरित गजरा बाजू बन्द शोभा भुजनि अपार । फूंदा सुभग फूल फूले मनों मदन बिपट की डार । छीन लंक नीबी किंकिनि धुनि बाजत अति झनकार । मौर बांधि बैठो जनु दूलह मन मथ आसन मार । जुगल जंघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार । राजहंस गति चलति कृशोदरि अति नितम्ब के भार । छिटकि रह्यो लहंगा रंगता सङ्ग सारी तन सुकुमार । सूर सुअङ्ग सुगन्ध समूहनि भंवर करत गुंजार ॥ १०२ ॥ राग जैतश्री ॥ नव नागरी हो सकल गुन आगरी हो । हरि भुज ग्रीवां हो सोभा सीवा हो । गोर श्याम छवि पावई । भई सबतो मैं हे सखी जोबन कियो प्रवेस । कहा कहों छवि रूप की नख सिख अङ्ग सुदेस । श्रीपति केलि सरोवरी से सब जल भरिपूर । प्रगट भई कुच उंचथली सोख्यो जोबन सूर । छूटे केस मज्जन समैं देखि बिरुध अहि मोर । मोर कुछ निसि मेरुतें उतरि चले वोहि वोर । सीस सुविक्कन केस हो बिच श्री मन्त सवांरि । मानहुं किरनि पतङ्गतें भयो द्विधा तमहारि । केसरि आड लिलाट हो बिच सेंदुर को बिन्दु । चक्र तरयोना नयन मृग रथ बैठो जनु इन्दु । नयननि ऊपर कहा कहौं यों राजत भुव भङ्ग । जुवा बनावत चन्द्रमा चपल होत सारङ्ग । चम्पकलीसी नासिका राजत अमल अदेस । तापर मुकुता यों बन्यों मनो भोर कन ओस । मुकता आप बिकाय के हो उरमें छिद्र कराय । अधर अमृत हित तप कर्यो अध मुख ऊरध पाय । अधरनि की छवि कहा कहौं सदा श्याम अनकूल । बिम्ब पवारे लाजही हरषत फूलेफूल । पांति कांति दसना बली रहे तमोल रंग भीजि । बंदन सों शशि मैं बए मनोसैं दामिनि के बीजि । गुंजा कीसी छवि लई मुकुता अति बड भाग । नयननि की लई श्याम ता अधरनि को अनुराग । बेसरि को मुकुता मनि धनि धनि नासा ब्रज नारि । गुरु भृगु सुत बिच भौम हो शशि समीप ग्रह चारि । खुटिला सुभग जराव के मुकुता मनि छवि देत । प्रगट भयो घन मध्यतें ससि मनो नखत समेत । सुंदर सुभग कपोल हो रहे तमोर भरि पूर । कंचन संपुट दै पला मानहुं भरे सेंदूर । चिबुक डिठौना जब दियो मो मन धोखे जात । निकस्यो अलि सिसु कंजतें मनहु जानि परभात । जेहि मारग बन बाटिका निकसति आनि सुभाय । मधुप कमल बन छाडिकै चलत संग लपटाय । जहां जहां तू पग धरे तहां तहां मन साथ । अति अधीन प्रिय ह्वै रहे तनु मनु दै तेरे हाथ । देखि बदन के रूप कों मोहन रह्यो लोभाय । एक टक रहौ चकोर जो दृष्टि न दूत उत जाय । तोहि श्याम सों है सखी बढी निरंतर प्रीति । तूं तन मन धन श्याम के तैं हरि पाए जीति । मदन मोहन तूं बसकरे अति प्रबीन नंद लाल । सूर दास गावै सदा कीरति बिशद बिशाल ॥ १०३ ॥ राग नट ॥ राधा संग खलिता लिए ॥ श्याम आतुर जानि बाला

गवन आतुर किए । किंकिनी धुनि श्रवन सुनि हरि अतिहि पुलकित हिए । नारि आवत जानि गिरिधर लही धीरज जिए । चले आतुर धाय आगे संग सहचरि लिए । सूर प्रभु रति रंग राचे देखि रीझी चिए ॥ १०४ ॥ राग बिलावल ॥ पिय छबि निरखत नागरी अंग दशा भुलानी । अंतर गत आनंद भरी लखिता हरषानी । सहचरि सों कहि सुमन लै हरि फेंट भराए । अति अधीन पिय ह्वै गए बस परे पराए । मारग सुमन बिछावहीं पग निरखि निहारैं । फूले फूले धर धरैं कलिआं चुनि डारैं । ऐसे बस पिय बामके सुख सूरज जानैं ॥ जो जेहि भावनि हरि भजै तेहि तैसैं मानैं । १०५ ॥ राग पूरबी ॥ पीछें ललिता ता आगें श्यामा प्यारी ता आगें पिउ मारग फूल बिछावत जात । कठिन कठिन कली बीनि करत न्यारी न्यारी प्यारीके चरन कोमल जानि सकुचत अति गडि बेहि डरात । दीरघ लता अपने कर निरवारत ऊंचे खे डारत द्रुम बेली पात । सूर दास प्रभु की ऐसी आधीनता देखत मेरे नयन सिरात ॥ १०६ ॥ राग कान्हरो ॥ चौडे बार एडिन परसत श्यामा पीछे अपने अंचल मैं लिए ॥ बेनी गूंथन मिस फूल सुगंध फेंट भरें डोलत बोलत नाहिं न सकुच हिए । अरु कुसुमी सारी मैं अलक झलक गोरे तनु मनों अहि कुल चंदन बंदन सों पूजा किए । सूर दास प्रभु पिय मिलि नयन प्रान सुख भयो चितै कुरंखिअनि अनकनि दिए ॥ १०७ ॥ राग राम कली ॥ बरन बरन बन फूलि रह्यो । हरषित ह्वै वृषभान नंदनी संग सब सखिन कह्यो । कुसुम कली देखत रुचि उपजी यह कहि तिनहि सुनावति । आपुन चुनति गोद लै धारति जुवतिन कहति चुनावति । हंसति परस्पर दै दै तारी श्याम लिए कर बाहों । सूर दास प्रभु काम आतुरे और ध्यान चित नाहों ॥ १०८ ॥ राग राम कली ॥ डोलति बांकी कुंज गली ॥ ब्रज बनिता मृग सावक नयनी बीनति कुसुम कली ॥ कमल बदन पर बिथुरि रही लट कुंचित मनहुं अली । अधर बिंब नासिका मनोहर दामिनि दसन छली ॥ नाभि परसलों सरस रोमावलि कुच जुग बीच चली । मनहुं बिवरतें उरगरिग्यो तकि गिरिकै संधि थली । पृथु नितंब कटि छीन हंस गति जघन सघन कदली । सूर सुमोहन लाल रसिक संग बन घन माझरली ॥ १०९ ॥ राग पूरबी ॥ सखियनि संग राधे कुंवरि बीनति कुसुम कलिआं ॥ एक वहि क्रम एकहि बानक रूप गुनकी सोभां मन भावत सुंदर श्याम लाल के कर सोहति रंगीली डलिआं ॥ एक अनूपम माल बनावति एक परस्पर बेनी गूंथति ब्राजति कुंज गलियां । सूर दास प्रभु संग मिलि कौतुक देखत हरष हरषि प्यारी अंकम भरियां ॥ ११० ॥ राग कल्यान ॥ लैगई धाम बन श्याम प्यारी । रहे लपटाय दोउ भुजनि पलटाय कै कह्यो पिय बचन कछु निठुर नारी ॥ बिहंसि वृषभानु तनया कहति हम निठुरि तुम सुहृद बात वै जिनि चलायो । निठुर अरु सुहृद सोमनहिं मन जानिहै कहा वह कथा की सुरति धायो ॥ परस्पर हंसे दोउरसे रति रंग मैं करत मन काम फल पुरुष नारी । सूर प्रभु कोक गुनमैं निपुन हैं बडे काम बल तोरि रस रह्यो भारी ॥ १११ ॥ राग सूहो ॥ गिरिधर नारि अबल अति कीन्ही । सबल

भुजाधरि अंकम भरि भरि चांपि कठिन कुच उरपर लीन्ही ॥ कोक अनागत क्रीडा पर रुचि दूरि करत तनु सारी । कमल करनि कुचगहत लहत पुनु देखौ वह छवि न्यारी ॥ बार बार ललचात साध करि सकुचति पुनि पुनि बाला । सूर श्याम यह काम करौ जिनि धनि धनि मदन गोपाला ॥ ११२ ॥ राग रामकली ॥ सुता दधि पतिसों क्रोध भरी । अंबर लेत भई खिझि बोलहि सारंग रंग खरी ॥ तब श्रीपति अति बुद्धि बिचारी मनि लै हाथ धरी । वै अति चतुर नागरी नागरि ले मुख मांझ करी ॥ चांपत चरन शेष चलि आयो उदया चलहि डरी । सूरदास स्वामी लीला उर अंक लागि उबरी ॥ ११३ ॥ राग रामकली ॥ सकुचि तनु उदधि सुता मुसुकानी । रवि सारथी सहोदर ता प्रति अम्बर लेत लजानी । सारंग पानि मूंदि दृग नयनी मनि मुख मांझ समानी ॥ चरन चांपि महि प्रगट करी पिय शेष शीस सङ्ख दानी । सूरदास तब कह करै अबला जब यह मति ठानी कुच अंकम भरि चांपि कठिन डरि श्याम कंठ लपटानी ॥ ११४ ॥ राग बिलावल ॥ वह छवि अंग निहारत श्याम । कबहुंक चुंबन देत डरज धरि अति सकुचति तनु बाम ॥ मन सुख नयन न जोरति प्यारी निलज भए पिय ऐसे । हाहा करति चरन कर टेरति कहा करत ढंग नैसे ॥ बहुरि काम रस भरे परस्पर रति विपरीति बढाई । सूर श्याम रति प्रति बिह्वल करि नारि रही मुरझाई ॥ ११५ ॥ राग बिलावल ॥ पिय प्यारी तनु श्रमित भए । सकुचि उठी नागरि पटु लीन्हो श्याम लजाय गए ॥ सावधान रति अन्त भरे पिय प्यारी तन नहिं हेरत । नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भृकुटी बंकट फेरत ॥ ऐसे गुन किनि तुमहिं सिखाए तिरनी कटि कसि दीन्ही । सूर कहति पियसों चिय बातें आजु तुमहिं मैं चीन्ही ॥ ११६ ॥ राग धनाश्री ॥ हरषि श्याम चिय बांह गही । अपने कर सारी अंग साजत यह एक साध कही ॥ सकुचति नारि वदन मुसकानी उतको चितै रही । कोक कलाकरि पूरन दोऊ त्रिभुवन और नही ॥ कुंज भवन संग मिलि दोउ बैठे शोभा एक चही । सूर श्याम श्यामा सिर बेनी अपने करनि गुही ॥ ११७ ॥ ॥ राग जैतश्री ॥ मोहन मोहनि अंग सिंगारत । बेनी ललित ललित कर गूंथत निरखत सुंदर मांग संवारत ॥ सीस फूल धरि पाटी पोंछत फुंदनि झवा निहारत । चन्दन बिंद जराय की बेंदी तापर वनय सुधारत ॥ तरि वन श्रवन नयन दोउ आंजत नासा बेसरि साजत । बीरी मुख भरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत ॥ नख सिख सजत शृंगार भावसों जावक चरननि सोहत । सूर श्याम चिय अंगनि संवारत निरखि आप मन मोहत ॥ ११८ ॥ राग ललित ॥ ऐसेहि सुख सब रैनि बिहानी । भोर भए व्रज धाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी ॥ प्यारी गई वृषभान पुरातन श्याम जात नंद धाम । प्रमुदा महल द्वारही ठाढ़ी उनि देखी वह बाम ॥ प्रात चले बनते व्रज आए मन मन करति बिचार । सुनहु सूर सकुचत ठटुकत ता गृहगए नन्द कुमार ॥ ११९ ॥ * ॥

॥ * ॥ बछरि खंडिता बचन ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग देवगंधार ॥ कितते आएहौ नंदलाल ऐसी कौन बाल जा घोखे तुम आय द्वार ह्वै झाके । मिटति नहीं चितवनि हित चितकी वहै टेव नित नितकी मैं पहिचानि नयना बांके ॥ कबहुं जम्हात कबहूं अंग मोरत अटपटात मुख बात न आवत रैनि कहूं धों थाके । सूरदास प्रभु रसिक सिरोमणि रसिक रसिकई जानी नाम लेहु रहे जाको ॥ १२० ॥ राग ललित ॥ बन तनतें आए अति भोर । राति रहे कहुं गाइन घेरत आए हौ ज्यों चोर ॥ अंग अंग उलटे आभूषण बनहूं में तुम पावत । बड भागी तुमते नहि कोई कृपा करत जहं आवत ॥ औचक आय गए गृह मेरे दुर्लभ दरशन दीन्हो । सूर श्याम निसि हौ कहं जागे पावति अंग अंग चीन्हो ॥ १२१ ॥ राग-बिलावल ॥ लाल उनींदे भए । राजतहैं रतनारे नयना मानहुं नलिन नए ॥ पीक कपोल लिलाट महाउर बंदन बलित खए । जनु तन जामे सद्य अरुण दल कामके बीज बए ॥ बिन गुनहार पयोधर मुद्रा हृदय मुदेस ठए । अंजन अधर सुभंग लिख्यो रति दिक्षा लेन गए ॥ सूर श्याम बिथुरे कच मुख परनख नाराच हए । ताऊपर आनंद इंदु जनु मानहुं समर जए ॥ १२२ ॥ राग बिभास ॥ रैनिजागे रतिरस पागे अनुरागे नवचिय संग । सो सनमुख कत आए हौ दहन पिय रसमसे नयन अटपटात बैननि तहाईं जाहु जाके रंग ॥ बिन गुन बनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलक भाल कीन्हे रस बस अंग सूरदास प्रभु तुम रजनी बिहाय आए जीति अनंग ॥ १२३ ॥ राग बिलावल ॥ सुनत सखी तहं दौरि गई । सुने श्याम मुख माके आए धाई तरुनि नई ॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखति अंग कोउ निरखति रंग और । रैनि कहूं फिरि परे कन्हाई, कहति सबै करि रौर ॥ तब कहि उठी नारि सुखदायह भाग हमारो आए । सूर श्याम धनि बाम तुम्हारी जिनि निसि बस करि पाए ॥ १२४ ॥ राग बिभास ॥ माई आजु लाल लपटात आए अनुरागे । सोभित भूषन अंग अंग आलस भरे रैनि उनीदे जागे ॥ लटपटी सिर पेंच पाग छूटे बन्दनि वागे । सूर श्याम रसिक राय रस बस कीन्हो सुभाय जागे जहां सोई त्रिया बड भागे ॥ १२५ ॥ राग भूपाली ॥ हो माई आजु अनत जागेरी मोहन भोरहीं मेरे कीन्हे है आवन । सोभित भूषण अंग अंग आलस भरे लैलै लागे अनमिली मिलावन अबकैसे प्रतिआतिहो प्रीतम सांचेहौ सोंहनि बोल बिबाहन । सूर श्याम रसिक राय जावक चिन्ह लाय अब आए मोहि असल सलावन ॥ १२६ ॥ राग सुघराई ॥ आजु बन्यो नव रंग पियारो । ब्रज बनिता भिलिक्यों न निहारो ॥ लटपटि पाग महाउर पासी । कुंवरि मनावत अति बडि भागो ॥ पीक कपोल अधर नसि लागे । आलस बलित सबै निसिजागे कहुं चंदन कहुं बंदन की छबि । रैनि रंग अंग अंग रह्यो फबि ॥ सूर श्याम के यह छबि देखो । जीवन जनम सुफल करि लेखो ॥ १२७ ॥ राग सुघराई ॥ आजु बने नव रंग छबीले । डग मगात पग अंग अंग ढीले ॥ जावक पाग रंगी धौं कैसे । जैसी करी कहै पिय तैसे ॥

बोलत बचन बहुत अरसाने । पीक कपोलनि सों लपटाने ॥ कुंकुम हृदय भुजनि छबि बंदन । सूर श्याम नारिन मन फंदन ॥ १२८ ॥ राग गौरी ॥ आजु बने बनतें व्रज आवत । यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देखितऊ मोहि भावत ॥ नख रेखा मुक्तावलि के तट अंग अनूप लसी । मनो सुरसरी ईश शीस तें लै बिधु कला धंसी ॥ केलि करत काहू युवती कर कुंकुम भरि उरदीन्हों । मनो भारती पंच धार ह्वै नभ तें आगम कीन्हों ॥ बीच बीच कवनीय अंग पर श्यामल रेख रही । सूर सुता मनो कनक भूमि पर चारि प्रवाह बही ॥ १२९ ॥ राग रामकली ॥ सखि शोभा अनुपम अति राजै । नयन कौन की अंजन रेखा पटतर कहे न छाजै ॥ खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै । दुग्ध सिन्धु की गरल कला ज्यों कोटिक भ्रम उपजावै ॥ की सुरसरिता सूर तनै तट की पै पिवति भुवंगिनि । की अपमान मानि सागर तें उलटी जमुन तरंगिनि ॥ सम्बरारि की सुजश की प्रगट एकही काल । कीधौं रुचिर राजीव कोस तें निकसि चली अलिमाल ॥ सूरदास दासनि हित करकी हरि हलधर की जोरी । राधाबर निशि रसिक शिरोमणि कबि कुल परी ठगौरी ॥ १३० ॥ राग अडानो ॥ लाल आये हो उनीदे आपुन पौढिये पलि का हो पलोटि हौं पाय । मेरी सकुच जिय में कत आनति हौ तौ अन्ता कारिनि हौ तुम जिनि जानो मोसों औरनि केसे सुभाय ॥ यह अचरज आवत इनि बातनि मानु करत नहि मानत मोसों आये मान मनाय । सूर श्याम ता बामहि बस करि लीन्हों कंठ लगाय ॥ १३१ ॥ राग ललित ॥ आजु अति रैनि उनीदे लाल । तुम पौढो मैं चरन पलोटों जिय जिनि जानो ख्याल ॥ सुमन सुगन्ध सेज है डासी देखति अंग बेहाल । मेरे कहे न्हाहु कछु भोजन करो मदन गोपाल ॥ निशि श्रम भयो पीर मोहि आवति सुनति परस्पर बाल । सूर श्याम सुनि बचन कपट चित भरि लीन्हों अंक माल ॥ १३२ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामहि सुख दै राधिका निजु धाम सिधारी । चित तें कहुं उतरत नहीं श्री कुंज बिहारी ॥ रैनि बिपिन रति रस रह्यो सेा मनहि बिचारै । पिय संगके अंग चिन्ह जे दर्पनहि निहारै ॥ यहि अन्तर चन्द्रावली राधा गृह आई । अंग सिथिल छबि देखि के जहां तहां भरमाई ॥ कह्यो चहति कहत न बनै मन मन अनुमानै । सूर श्याम संग निशि बसी निश्चय यह जानै ॥ १३३ ॥ राग आसावरी ॥ चन्द्रावली सखिन संग लीन्हे राधा के गृह आई हो । आजु अंग शोभा कछु औरे हरि संग रैनि पुहाई हो ॥ अब तो नहीं दुराव रह्यो कछु कहो साँच हम आगे हो । अधर दसन छत उरजनि नख छत पीक पलक दोउ पागे हो ॥ हम जानी तुम कहौ प्रगट करि श्याम संग सुख मानो हो । सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रैनि जश गानो हो ॥ १३४ ॥ राग बिलावल ॥ कहति सखिन सों राधिका तुम कहति कहारी । मेरी सों की हंसति हौ सुनि चकृत महारी ॥ पीक कपोलनि यों लग्यो मुख पोछन लागी । कहां श्याम कहं मैं रही कब धों निशि जागी ॥ उरज करज निजु करज को गरहार संवारत । सहज कछुक निशि मैं जगी बचननि सर मारत ॥ कहति और की औरई मैं तुमहि दुरैहौं । सूर श्याम संग जो मिलौं तुमसों नहि कैहौं ॥ १३५ ॥ राग बिलावल ॥ आजु बनी नव रंग किशोरी ।

रसिक कुंवर मोहन बिनि जोरी ॥ बिथुरी अलक सिथिल कटि डोरी । कनक लता मनो पवन झकोरी ॥ अधर दसन छत कछु छबि थोरी । दर्पन लै देखौ मुख गोरी ॥ मुख लूटत अतिही भई भोरी । सूर सखी डारति तृण तोरी ॥ १३६ ॥ राग टोडी ॥ आजु बनी वृषभान कुमारी। गिरिधरवर राधा तू नारी ॥ इम सों करति दुराव दुधारी । इनि बातनि तू लइति कहारो ॥ आलश अंग मरगजी सारी । ऐसी छबि कहि कालि कहांरी ॥ सूर दास छबि पर बलिहारी । धन्य धन्य तुम दोउ बर नारी ॥ १३७ ॥ राग नट ॥ मैं जानी हैरी तेरे जिय की बात भाई अरु गात चिन्ह कहें देत माई । आलश तनु मोरे भुज जोरे जम्हाईरी अटपटात भारी लागत मोहि सुहाई बाही पिय के मन भाई ॥ बैन ऐन नैन सैन देखिये रसीले सिंगार हार बारि बिथुरि रहे री रति के पति देति क्यों न जनाई । सूर दास प्रभु को सुन जरि आलो तेरे अंग अंग भयो उद्योत वह हिलनि मिलनि खिलनि की तेरें प्रेम प्रीति जनाई ॥ १३८ ॥ राग सूहो ॥ नहिन दुरत हरि पिय को परस । उपजतु है मनको अति आनंद अधरनि रंग नैननि को अरस ॥ अंचल उडत अधिक छबि लागत नख रेखा उर बनी बरस । मनो जल धरतर बाल कला निधि कबहुं प्रगटि दुर देत दरस ॥ बिथुरी अलक सुदेश देखियत श्रम जल तें मिट्यो तिलक सरस । सूर सखी बूझेंहुं नहि बोलति सेा कहि धों तोहि कौन तरस ॥ १३९ ॥ राग बिलावल ॥ तोहि छबि राजै री व्रजराजके संग जागे की । करसों करजोरि मिलि जम्हात अरु ऐंडाति हेाति दुति मुरि रही अलक लसि आगेकी ॥ कबहुं कबहुं पलक झपकि झपकि आवत ते मन भावत अंखियां अरुण भईं प्रेम पागेकी । सूर दास प्रभु को जु प्रगट उमग देखति श्याम सुन्दर उरलागे की ॥ १४० ॥ राग देसाख ॥ अरी मैं जानि पाए चिन्ह दुरै न दुराए । अति अलसाति जम्हाति प्यारी श्यामके काम पुराए ॥ कहा दुराव करत री प्यारी कोटि करै मुख नैन झुराए । सुमन हारसों मरगजि डारी पिय रंग रैनि जगाए ॥ प्रगट नहीं तू करति डरति केहि सुरत सेज रति काम लराए । सूर श्याम तोहि रस बस कीन्हों जात न मन बिसराए ॥ १४१ ॥ राग टोड़ी ॥ लाल सों रति मानी जानी कहें देत नैना री रंग भोए । चंचल अंचल कतहि दुरावति रूप रासि अति मानहु मीन महाडर धोए ॥ पीक कपोलनि तरिवन के ढिंग झलमलात मोतिन छबि जोए । सूरदास प्रभु छबि पर रीझे जानति हौं निसि नेक न सोए ॥ ॥१४२॥ राग रामकली ॥ मोसों कहा दुरावति प्यारी । नंदलाल संग रैनि बसी री कोक कला गुन भारी ॥ लोचन पलक पीक अधरनि को कैसे दुरत दुराए । मनों इंदु पर अरुन रहै बस प्रेम परस्पर भाए ॥ अधर दसन छतकी अति शोभा उपमा कही न जाई । मनों कीर फल बिंब चोंच दै भख्यो न गयो उड़ाई ॥ कुचनख रेख धनुष की आकृत मनो शिव सिर शशि राजै । सुनत सूर प्रिय बचन सखी मुख नागरि हंसि मनलाजै ॥ १४३ ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी सुनत सखी मुख बानी हंसि मुसुकाय रही । नैननि रही लजाय मुदित चित मानी बात सही ॥ तोसों कहा दुराव करों री तू प्राननि तें प्यारी । कहा कहौं वह मिलनि श्यामकी क्रीडा कहति उघारि ॥ रति सुख अंत रची एक

लीला कहों किधरों दुराई । सूरदास प्रभुके गुन आली चितहीं रह्यो समाई ॥ १४४ ॥ ॥ राग सोरठ ॥ राधा अब जिनि कछू दुरावै । हाहा करि चरननि शिर नावति अपनी सौंह दिवावै ॥ वहै कथा मोसों कहि प्यारी चरित कहा हरि कीन्हो । जा रसमैं तू मगनभई है कौन अंग सुख दीन्हों ॥ उछलित भयो सुधा उर घटते मुख मारग न सम्हारै सूर श्याम रस छकी राधिका कहत न बनै विचारै ॥ १४५ ॥ राग गोंड ॥ श्याम रति अन्तर यह कीन्हों । कहत पुनि पुनि कहा अंबर तजहु मैंरही सकुचि गहि आप लीन्हों ॥ कियो तब मैं कहा लरी सारंगसों सारंग धर धरनि चरन चांपी । सेष सहसौ फननि मनिन की ज्योति अति चासते कंठ लपटाय कांपी ॥ रही उनकी टेक चले मेरी कहा धरन गिरि राज भुज सबल धारो । सूर प्रभुकी सखी सुनहुं गुन रैनि के वै पुरुष मैं कहा करौं नारी ॥ १४६ ॥ रागगोंड ॥ धन्य धन्य वृषभान कुमारी गिरिवरधर बस कीन्हेरी । जोइ जोइ साध करी पिय रतिकी सो सब उनको दीन्हेरी ॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवन पुरुष श्याम से नाहींरी । कोक कला पूरन तुम दोऊ अवन कहूं हरि जाहींरी ॥ ऐसे बस तुम भए परस्पर मोसों प्रेम दुरावैरी । सूर सखी आनंद न सम्हारति नागरि कंठ लगावैरी ॥ ॥ १४७ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम गए वृन्दा के धाम । काम के गृह निसि वसे पुरयो मन काम ॥ सांझ गए कहि आइहैं बहुनायक नाम । सेज संवारति आस लै ऐसेहि गई जाम ॥ अरुन उदै हारे खडे देखत भय ताम । रिसनि रही झुहरायकै मनहीं मन बाम चिन्ह और अंग नारि के बिन गुन उर दाम । सूरदास प्रभु गुन भरे आलस तनु झाम ॥ ॥ १४८ ॥ राग बिलावल ॥ आजु और छवि नन्द किशोर । मिलि रिस रचि रोचन भए लोचन चितवत चित्तपराये चोर ॥ शोभित पीठि प्रगट कर कंकन शोभित हार हिए बिन डोर । शोभित पीत बसन दोउ राते अधरनि अंजन नयन तमोर ॥ नखसिख ज्यों सिंगार अटपटे पाए मनहुं पराए चोर । फूले फिरत दिखावत औरनि निडर भएहैं हंसनि अकोर ॥ कहत न बनै सुनतहुन आवै वै संधि बरनत कबिन कठोर । अचरज क्यों न होत इनबातनि सूर ग्रहन देखे बिन भोर ॥ १४९ ॥ राग सूहो ॥ अतिहि अरुन हरि नयन तिहारे । मानहुं रतिसैं भाइ रगमगे करत केलि पिय पलक न पारे ॥ मंद मंद डोलत संकित से शोभित मधुप मनोहर तारे । मनहुं कमल संपुट मंह बोंधे उडिन सकत चंचल अतिवारे ॥ झल मलात जगि रैनि जनावत रति रसमत्त भ्रमत अनि आरे । मानहुं सकल जगत जीतन को काम बाम खर सान संवारे ॥ अटपटात अलसात पलक पट मूदत कबहुंक करत उघारे । मनहुं मुदित मरकत मनि आंगन खेलत खंजरीट चट कारे ॥ बार बार अब लोकि राखियत कपट नेह मन हरत हमारे । सूर श्याम सुखदायक लोचन दुख मोचन रोचन रतनारे ॥ १५० ॥ राग बिलावल ॥ नहिन दुरत नयना रत नारे । मनो बंधूक कुसुमन पर शोभित सुंदर श्याम सिलीमुख तारे ॥ कुटिल अलक रहि बिथुरि बदन पर सकुच सहित हरिनर मुनिहारे । भौंह सिथिल मनु मदन धनुक गुन गरे कोकनद ध्यान विसारे ॥ मूंदेइ आवत आलस वस छीन भए उघरत न उघारे । सूरदास प्रभु सोइ पै कहैं तुमको भामिनि जहां रति रन हारे ॥ १५१ ॥ राग बिलावल

रति संग्राम बीर रस मांते । हैं हरि सूर सिरोमणि अजहूं नहिन सम्हारत ताते ॥ आनहिं बान भए दोउ लोचन अपने सहज बिनाते । मानहुं भोर परी जोधनको भए क्रोध अति राते ॥ परिमल लुब्ध मधुप जहं बैठत उडि न सकत तेहि ठांते । मनहुं मदन के हैं सर फावे फोक बाहिरो घांते ॥ बैठि जात अलसात उनींदे क्रम क्रम उठत तहांते । मनो मूर्छा कटाक्ष नाट सब कटि न सकत हियराते ॥ डग मगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते । सूरदास प्रभु रति रन जीते अब सकात धों काते ॥ १५२ ॥ राग बिलावल ॥ नयन उनींदे भए रंग राते । मनहुं सुरंग सुमन पर सजनी फिरत भृंग मद माते ॥ प्रेम पराग पाखुरी पलदल प्रफुलित मदन लतातें । सुभग सुवास बिलास बिलोकनि प्रगट प्रीति करि तातें ॥ तैसेइ मारुत मंद जम्हावरि मिलत मुदित छबि यातें । सींचे सूर श्याम मानिनि केहितसों केलि कलातें ॥ १५३ ॥ राग रामकली ॥ आए सुरत रंग रस मातें । मानहुं छिनु विश्राम निमित पिय श्रमित भएहैं ताते ॥ डग मगात मगधरत परत पग उठत न बेगि तहांते । मनु गज मत्त चरन शंकर कर गहि आनत तेहि ठांते ॥ उरनख छत कंकन छत पाछे शोभित है रुहि राते । मदन सुभट के बान लागि मनो निकसि गए बोहि घांते ॥ सांचे करत आपने बोलनि टरत न मरजादाते । सूर श्याम कहि गए आइहैं पग धारे तेहि नाते ॥ १५४ ॥ राग बिलावल ॥ अरुन नयन राजत प्रभु भोरे । रति सुख सुरत किए सखि संग मनो जात समर मनमथ सरजोरे ॥ अति उनींद अलसात मन्द गति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे । मनहुं कमल के कोसतमीं तम उठत रहत छबि रिपुदल दोरे ॥ सोभित सुभग सजल प्रति कोरं संगम छबि तारे रुन डोरे । मनो भारति के भंवर मीन सिसु जात तरल चितवत चितचोरे ॥ बरनि न जाय कहां लगि बरनौं प्रेम जलधि बेलावल बोरे । सूरदाससों कौन चिया जिनि हरिके अंग अंग बल तोरे ॥ १५५ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको पिय भोरहीं मेरे गृह आए । इतने गुन हमपै कहां जे रैनि रमाए ॥ ताहीके पगु धारिए चक्रित मैं जाने । बिन गुन गडि माला रही नहींकहुं बिहराने ॥ आएहौ सुख देनको ऐसेइ हितकारी । सूर श्याम तुम जोगको कोवैसी नारी ॥ १५६ ॥ राग बिलावल ॥ कृपा करी उठि भोरहीं मेरे गृह आए । अब हम भई बड़भागिनी निसि चिन्ह देखाए ॥ जावक भालनिसों दियो नीके बस पाए । नयन देखि चक्रित भई क्यों पान खवाए ॥ अधरनि पर काजर वन्यों बहुरंग कहाए । बंदन बिंदुली भालकी भुज आप बनाए ॥ यह मोसों तुमहीं कहौ उरछत अरु नांए । सूर श्याम जस रासि हौ धनि चिया सहाए ॥ १५७ ॥ राग भैरों ॥ जाहु तहीं कह सोचतहौ । जा संग रैनि बिहातन जानी भोरभए तेहि सोचत हौ ॥ औरनि को छिनु जुग बीततहै तुम निहचीते नागर हौ । झूमत नयन जम्हात बारहीं रति संग्राम उजागर हौ ॥ मैंअब कहति तुम्हारे हितकी ताहीके गृह सोय रहौ । सूर श्याम वैसी चियको है वह रसवाही बिनु न लहौ ॥ १५८ ॥ राग भैरों ॥ हमहीं पर पिय रूसेहौ । बोलत नहीं मूक क्यों ह्वै रहे अंग रंगहीं न कछू सेहो ॥ तब निरखत औरहिं हित कि धौं कहूं तुम लूसे हौ । तब हंसि बदन मिलत आजुहि कछु और भए निठुरु से हौ ॥

डगमगात पग उतहि परत हैं चित चंचल उतहू सेहौ । सूरदास प्रभु सांच भाषि गए चिया अंग बल मूसेहौ ॥ १५८ ॥ राग बिलावल ॥ हरषि श्याम चिय बांह गही । चूक परी हमकों यह बकसो आवन को कहि गए सही ॥ रिसनि उठी भ्रुहराइ झटकि भुज छुवत कहा पिय सरम नहीं । भवन गई आतुर ह्वै नागरि जे आई सुख सबै कही ॥ मेरे महल आजु तें आवहु सौंह नन्दकी कोटि कही । सूरदास जबलौं जोऊ मिलौं नहीं बरुकाम दही ॥ १६० ॥ राग नटनारायण ॥ नागरि निठुर मान गह्यो । पीठि दै रिस कांपि बैठी फिरि न उतहि चह्यो ॥ श्याम मन अनुमान कीन्हों रिसनि ब्याकुल नारि । तनक ही रिस खोय डारों यह प्रतिज्ञा धारि ॥ सखी एक सुभाव अपनी गए ताके गेह । यह चरित सब कहें तासों चतुरि लख्यो सनेह ॥ गई आतुर नारि ताकें लख्यो नयननि कोर । चलत वाला नन्दसुत बिन लह्यो हठ को छोर ॥ भुजा गहि कहि कियो कारी सही ब्रज की ग्वारि । सूर प्रभुसों मानु कीन्हों हृदै देखि बिचारि ॥ १६१ ॥ राग कान्हरो ॥ बांह गह्यो गहि आंगन ल्याई । बड़ नायक उनकों नहिं जानति बड़ी चतुर है माई ॥ मैं जो कहति श्रवन सुनि चित धरि जोबन धन सपने को । हँसि कहि जाय अबहि मैं लाऊं मन न धरौ अपने को ॥ तुही गहति किनि बांह जाय कै मोसों बांह गहा बति । सुनऊ सूर मैं सोंह करी है तू मोहि तिनहि मिलाबति ॥ १६२ ॥ राग कान्हरो कहा कहति तू मिलिहिं रही है । मोसों करति कहा चतुराई उन यह भेद कही है ॥ जो हठ करयो भली नहिं कीन्ही ए दिन ऐसे नाहिं । कोयहईं पिय कौन बुलावे कीतहईं चलि जाहिं ॥ वे सब गुन नायक तू नागरि जोबन दिन है चारि । सूर श्याम कों मिलि सुख लहीन पुनि पछितै हैं नारि ॥ १६३ ॥ राग कान्हरो ॥ बहुरि पछितै हैं री ब्रज नारि । देखि जाय ठाढे मग जोवत सुन्दर श्याम मुरारि । ऐसी निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नैन पसारि ॥ कहा गरब या झूठे तनको देखि हाथ लै बारि । तजि अभिमान मानि री मानिनि मैं जु करति मनुहारि ॥ सूर हंस स्वाती सुत धोखें कबहुंक खात जु वारि ॥ १६४ ॥ राग केदारो ॥ मोसों मानि भावे न मानि लाल मनाय हैं री तेरो आं खिन मैं पैअतु है । कत सकुचति मैं तो सब जानति ऐसी प्रीति क्यों दुरैयतु है ॥ मेरो बिलग मानति यह जानति या बातनि में कछु पैयतु है ॥ सूर श्याम न्यारे न बूझिए यह मोसों नहि भावे काहे को अन खैयतु है ॥ १६५ ॥ राग बिलावल ॥ बहुरि मिलौगी कालिही चित समझि सयानी । मेरो कह्यो न क्यौं करै क्यों होहि अयानी ॥ अनलहि ओषट अनल है सब जानि रही हौ । काहे को हठकरति होवे काज वही हौ ॥ धरनी धर ब्याकुल खरेरी गर्व गहेली । सूर कह्यो सुनि मानि लै मैं कहति सहेली ॥ १६६ ॥ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम धरयो चिय मोहन रूप । दूती प्रिया संग एक लीन्हों अंग त्रिभंग अनूप ॥ अंतर द्वार आय भये ठाढे सुनति चिया की बातें । सरस बचनजु कहति सखि आगे कहौ मिलों केहि नातें ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसुकात । सूरदास प्रभु हैं बड़ नायक तुहीं कहति यह बात ॥ १६७ ॥ रागमलार ॥ जो लों आई हौं जोवन भरि जोऊं । तब लगि मदन गोपाल लाल के पंथ न पानी प्रोऊं ॥ करौ न

अंजन धरौं न मर्कत मृगमद तनु न लगाऊं । हस्तवलय कटि ना प्रभु मेंचक कंठ न मोत बनाऊं ॥ सुनो न श्रवननि अलि पिक बानी नैनन नव घन देखौं । नील कमल कर धरौं न कबहूं श्याम सरी से लेखौं ॥ इतनी कहतहिं आय गए मोहन लिय प्रिय दूती संग । छूटि गई रिस टेक मानु की निरखि रसिक के अंग ॥ अति रति लीन भई भामिनि संग तब कर गहि लीन्हों । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमनि मिलिजु सुधा सुख दीन्हों ॥ १६६ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ कवि गावत हरि मोहन नाम । गाढो मान दूरि करि डार्यो हरष भई मन बाम ॥ ऐसे चरित और को जाने धन्य धन्य नद लाल । जो एगुन तौ हरत वियनि मन अति हरषित भई बाल । मिल्यो काम तनु ताम तुरतहीं रिझई मदन गोपाल ॥ सूरश्याम रस बस कर लीन्हो यहै रच्यो इक ख्याल ॥ १६६ ॥ राग गोंडमलार ॥ श्याम गुन रासि मानिनि मनाई । रह्यो रस परस्पर मिट्यो तनु बिरह झर भरी आनन्द चित उर नमाई कबहूं रति सहज कबहूं करत विपरीति बासरङ्ग तें सबै रैनि बीती । श्रमित दोउ अंग भए अतिहिं विह्वल परे सेज रति जीति बढ़ी प्रीती ॥ भोर भए चले निजु सदन पित मात के फिरे सकुचे देखि नन्द द्वारे । सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमुदा धाम कहति ए गुन भले हरि तुम्हारे ॥ १७० ॥ राग गोंड मलार ॥ कहा है श्याम कहां गवन कीन्हों । कहां तुम रहत कबहूं दरश देत नहिं धोखे गए आय हम मानि लीन्हों ॥ नैन आलस भरे चरन डग लर खरे कहा हौ डरेसे कहौ मोसों । रैनि कहं बसे चिय कौन सों रसे हो उर करज कसे सो कहौ मोसों ॥ भले जू भले नंदलाल वेऊ भली चरन जावक पाग जिनहिं रंगी । सूर प्रभु देखि अंग अंग बानक कुशल में रही रीझि वह नारि चंगी ॥ ॥ १७१ ॥ राग कल्याण ॥ सुनत हंसि चले हरि सकुचि भारी । यह कह्यो आजु हम आय हैं गृह तुव तरक जिनि कहौ हम समुझि डारी ॥ नारि आनन्द भारी रांगसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंग पुलकी । गए कहि सूर प्रभु रैनि बसि हैं आजु सजति शृंगार ककु सकुच कुलकी ॥ १७२ ॥ राग कल्याण ॥ अंग शिंगार सुन्दरि बनावे । मिलौं गो श्याम निजु धाम करि आजुहीं रैनि विलसौं काम मन मनावे ॥ सरस सुमना जात शीस कर सों करति सोमंत अलक पुनि पुनि संवारै । मांग सूधी पारि निरखि दर्पन रहति गंथि कवरी छांह पाटो निहारै ॥ कमल खंजन मृगज मीन लोचन जीत सारङ्ग सुत लेति तहां आंजे । हार उर धरति नख सिखङ्ग भूषन भरति सूर प्रभु मिलन हित नारि राजै ॥ १७३ ॥ विधु वदनो अरु कमल निहारै । सुमना सुत लै कमलनि मज्जति धम पति धाम को नाम संवारै ॥ तरनि तात वनिता सुत ता छबि कमलनि रचिरबि ग्रंथित चारै ॥ कमल कमल पर रेख बनावति यारङ्ग रिपु प्राहन गति टारै ॥ उर हारावलि मेलति कमलनि मनङ्ग इन्द्र, पारस ढिग पारै । सूर श्याम के नामहिं जीत न कमलापति के पदहि विचारै ॥ १७४ ॥ राग आसावरी ॥ अंग शिंगार संवारि नागरी सेज रचति हरि आवेंगे सुमन सुगंध रचति ता परलै निरखि आपु सुख पावेंगे । चंदन अगर कुं कुंमा मिश्रित श्रम तें अंग चढावेंगें । मैं मन साध करेंगी संग मिलि वै मन काम पुरावेंगें । रति सुख अंत भरौंगी आलस अंकम भरि उर लावेंगें

रस भीतर मैं मान करौंगी वैगहि चरन मनावैंगें । आतुर जब देखौं प्रिय नैननि बचन रचन समझावैंगें । सूर श्याम जुवती मन मोहन मेरे मनहि चुरावैंगे ॥१७५॥ रागबिलावल ॥ नन्द सुवन बहु नायक अनतहि रहे जाई ॥ वह अभिलाष करत रही ताकौ बिसराई । वासर ऐसें ही गयो निसि जाम तुलानी ॥ नारिपरी अति सोच मैं विरहा अकुलानी । आवन कहिगए साझ ही अजहूं नहिआए । कीधौं कहं रमि रहे कीफंद परे पराए । बेईहैं बड़नायकी नायक गुन भारी । सूर श्याम कुमुदा भवन सुधिकरि प्रभु धारी ॥१७६॥ रागकेदारो ॥ रहे हरि रैनि कुमदा ग्रेह । परस्पर दोउ प्रेम भीजे चख्यो अतिहि सनेह । एकछिन एक जाम बितवति काम रस वसगात । ताहि बीतत जाम युग सम गनत तारा जात । एनहि बैसे याहि ऐसें रजनी गईभ यो भोर । सूर मोसों करि चतुरई गएनंद किशोर ॥ १७७ ॥ रागनट ॥ कुटिलई करी हरि मोसों । चित्त भरोसुंदरी करति मन गोसों । कहि गए निसि आइहैं हरि अनत बिरमेजाय रैनि बीती उदित दिनकर देखि विय मुरझाय ॥ भवन हीं मन मारि बैठी सहज सखि एक आय । देखि तनु अति विरह बाला कहति बचन सुनाय । बोलि ढ़िग बैठारि ताको पोंछि लोचन लोर । सूर प्रभु के विरह व्याकुल सखी लखि मुखबोर ॥१७८॥ रागगौरी ॥ आज बिन आनंद को मुख तेरो । कहा रहो मन मारि भोरही अति व्याकुल मनमेरो ॥ मोसों गोपकरै जिनि सुंदरि नहिं पावति वह भाव ॥ सुनौ बात कैसी उपजी है कछु जनि करै दुराव तब मधुरी बानी सों बोली कहा कहौंरी तोहि । तेरे श्याम भले गुन नागर कपटी कुटिल कठोहि ॥ निसि बसिबे की अवधि बदी मोहि सांझ गए कहि आवन । सूर श्याम अनतहि कहुं लुब्धे नयन भए दोउ सावन ॥ १७९ ॥ राग सोरठ ॥ ऐसे गुन हरिके री माई । मैं पहिचानि रही हौं नीके कुटिल सिरोमणि राई ॥ अवमोसों उनसों कह बनिहै कछु मैं गई बुलावन । आपुहि कालि छपा यह कीन्ही अजिरजु करि गए पावन ॥ तेको मिलैं कहूं मेरी सों तिनसों यह तू कहिए । सूरदास प्रभु बोलनि सांचे लाज कछू जिय गहिए ॥ १८० ॥ राग बिहागरो ॥ सखिरी और सुनऊ एक बात । आजु गोपाल हमारे आए उठि करि वहि मिस प्रात ॥ कतहूं रैनि उनींदे मोहन अपने गृहते जात । आगे द्वार नन्द हैं ठाढे तातें गए न सकात ॥ डग मगात मग धरत परत पग आलस वंत जम्हात । मानऊं मदन दंड दै छांडे चुटकी दैदै मात ॥ जो कह्यो कहां रहे हो मोहन तौ सनमुख मुसकात । तातें कछू न उतर आयो सूर श्याम सकुचात ॥ १८१ ॥ राग केदारो ॥ तब हरि यह चतुरई करी । कह्यो मेरे धाम आवन टारि दृगए हरी ॥ आपही श्रीमुख गए कहिसही कैसी परी । सेज रचि सब रैनि जागी तब रिसनि हौं जरी ॥ श्याम देखें द्वार ठाढे मनहीं मन झुर हरी । कहति सूर सुनाय हरिको धन्य यह शुभ घरी ॥ १८२ ॥ राग बिलावल ॥ यहै कही कहि कौन रही । मन मन कहति दरश अब दीन्हो निसि सब बिरह डही ॥ मधुरे बचन सुनाय सखी सों रिस बस भरे कही आए तहां जाऊ ताही के चतुर चिया ढिगही ॥ वा बिनु उनको कौन मिलेगी नहि कोउ फिरति बही । सूरज प्रभु इतको जिनि आवैं प्रभु धारैं उतही ॥ १८३ ॥ राग कान्हरो ॥ सखी निरखि अंग अंग श्यामके । कहुं चन्दन कहुं बन्दन रेखा कहुं काजर

छवि लखति बामके ॥ आलस भरे नयन रतनारे चतुर नारि संग जगे जामके । अपने मन हरि सोच करत यह परी चिंता फिरि कठिन तामके ॥ मानु कियो मोतन फिरि बैठो आएहैं यह सुनत नामके । सूर श्याम एक बुद्धि विचारी मन मोहन रति सहित कामके ॥ १८४ ॥ राग सूहो ॥ श्याम सैन दै सखी बोलाई । यह कहि चली जाय गृह अपने तू तौ मानु कियोरी माई ॥ अन्तर जाय भए हरि ठाढे सखी सहज निकसी तहं जाई । मुख निरखत दोउ हंसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउं मनाई ॥ अंग दिखाय गई हंसि प्यारी सुरत चिन्ह नीकी सुघराई । सूरज प्रभु गुन पले रचे को जानि बूझि कीन्ही रिस हाई ॥ १८५ ॥ राग गौरी ॥ सखी गई कहि लेहु मनाई । जानति मनि विद्या मनि गुन मनि चतुरनि मनि चतुराई ॥ प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई ह्यां तौ नहीं कन्हाई । आतुर चली जमुन जल खोरन काहू सङ्ग न लगाई ॥ पहुंची तरुनि तरनि तनया तट न्हाय चली अतुराई । सूर श्याम सारंग भए ठाढे बालक मोहन राई ॥ ॥ १८६ ॥ राग बिलावल ॥ पांच बरष के लालहि चिय मोहन आए । नागरि आगे ह्वै गई तब बोलि सुनाए ॥ कहो कहांरी जातिहै काकी तू नारी । मोहिं पठाई श्याम सैन जाको तू प्यारी ॥ यह सुनि नारि चकित भई आपु न तहां आए । तब करसों कर गहि लियो देखत मन भाए ॥ अगम चरित प्रभु सूरकेते लखै न कोई । श्याम नाम अब नमि परयो हरषीमुख जोई ॥ १८७ ॥ राग राम कली ॥ हरषि निरखि रूप अपार । गह्यो करसों सदन ल्याई जानि गोप कुमार ॥ श्याम सोको बोलि पठई कहत हैं यह लाल भवन लै दुन्हु भेद बूझौ सुनो बचन रसाल ॥ हृदय आनन्द भई बाला प्रेम रस बेहाल । कुंवरि अन्तहु पुर गई लै रच्यौ हरि तहां ख्याल ॥ तरुन ह्वै कर परस दियो अंचल डारि । सूर प्रभु हंसि लई प्यारी भुजनि अंकम धारि ॥ १८८ ॥ राग टोडी ॥ मुख निरखत चिय चकित भई । जो देखै अति तरुन कन्हाई यह को लखै दूई ॥ छांडि देहु ऐसे मन मोहन हंसि मन लजित भई । ऐसे छन्द रचत धनि धनि पिय कीन्ही करनि नइ ॥ अंकम भरि चिय कंठ लगाई कुच उर चांपि लई । सूर श्याम मानिनि मन मोहन रति रससों भोगई ॥ १८९ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम मनाय मानिनी हरषित भए अंग । रैनि बिरह तनु को गयो जेकरे अनंग ॥ सुता भहर हृषभान की सुधि कीन्ही श्याम । ताको सुख दै हरि चले प्यारी के धाम ॥ प्यारी आवत पिय लखी चितई मुख मुसकाय । जिय डरपें मोहि देखिकै सोसुख कह्यो न जाय ॥ अब न पियहि उचटायहौं सोको सरमात । चास करत मेरी जिती आवत सकुचात ॥ आनि द्वार ठाढे भए नायक बहु नाम । सूरज प्रभु अंग सहजहीं निरखति रुचि बाम ॥ १९० ॥ राग गोंड मलार ॥ श्याम डरबाम निजु धामआए । उतहि प्रमुदा धाम सखी सहजहिं गई अंग के चिन्ह कछु और पाए ॥ देखि हरषी नारि सकुच दीन्ही डारि अतिहिं आनन्द भरी श्याम रंगी । सखि बूझति ताहि हंसति ता मुख चाहि श्यामको मिलोरी बनी चंगी ॥ कहन लागि कहा कहति तू आजु मोहि नाहि नाहीं करति दुरत कैसें । मिलै प्रभु सूर तोहि जानि यह चतुरई नहीं तू करति नहि लखत जैसें ॥ १९१ ॥ राग सूहो ॥ नैना तौ अति रंगीले

चिकुर छूटे छबीले काजर पीक लागी लै आरसी देखि । मरगजे बसन अधर दसननि छत कछ कछ नी की लागी चन्दन रेखि ॥ काहेको तू मोहि दुरावति जानी अरस परस छबि शेष । सूर दास प्रभु नन्द सुवन सङ्ग अबहीं सुरत रंग को सो भेष ॥ १९२ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ अब तू कहा दुरावैगी । मोहि कहति नहिं काहि कहैगी कब लों बात लुकावैगी ॥ मोसी और कौन प्रिय तेरे जासों प्रेम जनावैगी । मेरी सों उन की सों तोकों कहा दुरायं पावैगी ॥ औरनि सी मोहूं कों जानति मोसों बछरि रमावैगी । सूर श्याम तोहि बछरि मिलै हौं आखिर तौं प्रगटावैगी ॥ १९३ ॥ राग बिलावल ॥ प्रमुदा अति हरषित भई सुनि बात सखीके । रोम रोम पुलकित भई उपजी रुचिहीके ॥ कहति अबहिं ह्यां तें गए नन्द सुवन कन्हाई । चरित कहा उनके कहों मुख कह्यो न जाई ॥ सांझ गए कहि आयहैं मोसों री आली । अनत बिरमि कतहूं रहे बड़ नायक ख्याली ॥ रैनि रही मैं जागि कें भोरहिं उठि आए । मानु कियो रिस पायकें पलमांह छिड़ाए ॥ अगनित गुनप्रभु सूरके कहितोहि सुनाऊं । अबहीं चरित करि के गए तेई गुन गाऊं ॥ ॥ १९४ ॥ राग राम कली ॥ आजु सखी जमुना मग मोहन मोहि छन्दी छन्द लाई । को तू आहि कौन की बनिता बात एक सुनि पाई ॥ विहंसि कह्यो मोहि श्याम पठाई सुनत बिरह गति भूली । रति जल जलज हियो छलस्यो मन पुलक पाखुरी फूली ॥ जानि कुमार गह्यो करसों कर ल्याऊं भवन बुलाई । नैन मूंदि अंचल गहि डारयौ मैं माधौ मिलि आई ॥ छैल छबो उर बदन बिलोक्यो सकुचि रही मुसुकाई । छांड़ु सूर श्याम यह तुम्हरी आवन जानि न जाई ॥ १९५ ॥ राग धनाश्री ॥ आवतहीं मैं तोहि लख्योरी तुमछं भली उनकों मैं जानति अधर बिम्ब मनों कीर भख्योरी ॥ अंग मरगजी पटोरी देखी उर नख छत छबि भारी । धनि वे नन्द सुवन धनि नागरि कियो सुरत रन हारी ॥ हंसति गई सखि भवन आपने मन आनन्द बढ़ाए । सूर श्याम राधिका धामकें द्वारे सीस नवाए ॥ १९६ ॥ राग बिलावल ॥ भली करी पिय ऐसें हूं मेरे गृह आए । लीन्हे कंठ लगाय के बड़ भागनि पाए ॥ कहा शोच जिय करत हौ भुज गहि कर लीन्हो । गई भवन भीतर लिए तहं बैठक दीन्हो ॥ श्याम सकुच अंग हेरहीं नागरि पहिचानी । चिन्ह निहारत डर कहा आवतहीं जानी ॥ या छबि पर उपमा कहौं जो त्रिभुवन होई । तुम जानत यह रूप कौं अरु लखै न कोई ॥ चन्दन बन्दन पान रंग अधरनि काजर छबि । सूर श्याम उर करज को को बरनि सकै कवि ॥ १९७ ॥ राग बिलावल ॥ काहे कों पिय सकुचत हो । अब ऐसो जिनि काम करो कछं जो अतिही जिय सकुचत हो ॥ अबकी चूक नहीं जिय मेरे और दिननि को जानि रहौ । सोंह करौ मेरी मों आगें डर डारौ जिनि मौन गहौ ॥ यह सुनि श्याम हरषि कुच परसे बार बार शिव सौंह करी । सूर श्याम गिरिधर गुन नागर बात आजु ते सही परी ॥ १९८ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम सोंह कुच परसि कियो । नंद सदन तें अबहीं आवत और त्रियनि को नेम लियो ॥ ऐसी सपत करौ काहे कौ जो ककु आजु करी सुकरी । अब जो कालि तें अनत सिधारौ तब जानौं गे तुमहि हरी ॥ मैं सति भाव मिली हंसि तुमकों कहा आजु की सोंह करौ । सूरश्याम

जो भई सुभई जू अबते सबको नेम धरौ ॥ १९९ ॥ राग गोंडमलार ॥ अहो राजत राजीव नयन मोहन छवि उरग लता रंग लाग । जेहि बनिता रस बस कीन्हे निशि प्रगट होत अनुराग ॥ सिथिल अंग अरु सिथिल पाग बनि सिथिल चरन गति आज । मनऊं सेज तेबाऊ तें उठि आवतु है गजराज ॥ भाल मध्य जावक रंग देखत लागति है मोहि लाज। तुम अपने जिय सों जानत हौ तिलक लोक चै राज ॥ हंस बन्धु वर लोचन ललना मिलित निशा छत काज । बदन चन्द बिय संधि जानि नहि बढ़त किरन में लाज ॥ भवन जीव सुत लग्यौ अधर पर यह छवि कही न जाय । मनों बंधूक सुमन ऊपर बिय अलि सुत बैठे आय ॥ कुच कुंकुम अब लेप तरनि कियें शोभित श्यामल गात । गत पतङ्ग राका शशि बिय सङ्ग घटा सघन सौ भात ॥ श्याम हृदय लच्छन ता ऊपर लगो करज कित रेख । मनऊ बसन्त राज रुचि कीरत अरुन किसल तरु भेष ॥ काम बाम बर लियें पंच चितवत प्रति अंग अंग लाग । अब न जान गृह देउं पियारे जब आये तब भाग ॥ ता दिन तें हरि आन नन्दनी अनत जानि नहि दीन्हौ । सूर दास प्रभु प्रीति पुरातन यहि विधि रस बस कीन्हौ ॥ २०० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ यहांते बड़ो मान ॥

॥ राग बिलावल ॥ सखियनि संग लै राधिका निकसी ब्रज खोरी । चली जमुन अस्नान कों प्रातहि उठि गोरी ॥ नन्द सुवन जा गृह बसे तेहि बोलन आई । जाय भई द्वारे खरी तब कटे कन्हाई । औचक भेट भई तहां चकृत भये दोउ । ए इततें वे उतहितें नहि जानत कोउ ॥ फिरी सदन को नागरी सखि निरखति ठाढी । स्नान दान की सुधि गई अति रिस तनु बाढी ॥ श्याम रहे मुरझाय कै ठग बूरी खाई । ठाढे जहं के तहं रहे सखियनि समुझाई ॥ इतने हीं के ह्वै गये गहि बांह ले आई । सूरज प्रभु कौ लै तहां राधा दिखराई ॥ १ ॥ राग रामकली ॥ राधहि श्याम देखी आय । अहो मानु दृढाय बैठी चितै कापै जाय ॥ रिसहि रिस भई मगन सुन्दरि श्याम अति अकुलात । चकृत ह्वै जकि रहे ठाढे कहि न आवे बात ॥ देखि ब्याकुल नंद नंदन सखी करति विचार । सूर दोऊ मिले जैसें करों सोइ उपचार ॥ २ ॥ राग कान्हरो ॥ सखी एक गइ मानिनि पास । लखति नहिं कछु भाव ताको मिटो मन को आस ॥ कहों कासों कौन सुनि है रिसनि नारि अचेत । बुद्धि सोचति चिया ठाढी नेक नहीं सुचेत ॥ श्याम ब्याकुल अतिहि आतुर यहि कियो दृढ़ मानु । सूर सहचरि कहति राधा बड़ी चतुर सुजानु ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ नाहीनें री अति हठ नी को । मो कह्यो सुनऊ ब्रज सुंदरि मानि मनावो नागर पी को ॥ सोय अति रूप सुलछनि नारी रीझे जाहि भाव तो जीको । प्यासे प्रान जाय जो जल बिनु पुनि कह कीजै सिन्धु अमी को ॥ तौ जो मानु तजऊगी भामिनि रवि की रश्मि काम फल फी को । कीजै कहा सनेह बिन सुन्दरि

भोजन पोछे अचवन घी को ॥ सूर स्वरूप गरब जोवन के जानति हौ अपने सिर टीको । जाके उदय अनेक प्रकासत शशिहि कहा डर कमल कलीको ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ चितई चपल नयन कीकोर । मन्मथ वान दुसह अनि आरे निकसे फूटि हिए वेहिवोर ॥ अति व्याकुल धुकि धरनि परे जिमि तरुन तमाल पवनके जोर । कहुं मुरली कहुं लकुट मनोहर कहुं पटु कहूं चन्द्रिका मोर ॥ खन बूड़त खनहीं खन उछरन विरह सिंधु के परे झकोर । प्रेम सलिल भीज्यो पीरो पट फट्यो निचोरत अंचरा छोर ॥ फुरैन वचन नयन नहिं उघरत मानहुं कमल भए विन भोर । सूर सुअधर सुधा रस सींचउ भेटउ मुरछा नन्द किशोर ॥ ५ ॥ राग नट ॥ तेरे नयन किधोंरी वान । या मारे ज्यों मुरछि परे घर क्यों करि राखे प्रान ॥ खग पर कमल कमल पर कदली कदली पर हरि ठान । हरि पर सर सरवर पर कलसा कलसा पर शशि भान ॥ शशि पर बिंब कोकिला ता विच कीर करत अनुमान । विच विच दामिनि दुति उपजतिहै मधुप जूथ अस मान ॥ तू नागरि सब गुननि उजागरि पूरन कला निधान । सूर श्याम तो दरशन कारन व्याकुल परे अजान ॥ ६ ॥ राग मलार ॥ यह रितु रूसिबे की नाहीं । बरषत मेघ मेदिनी के हित प्रीतम हरषि मिलाहीं ॥ जे तमाल ग्रीषम रितु डाही ते तरुवर लपटाहीं । जे जल विन सरिता पय पूरन मिलन समुद्रहिं जाहीं ॥ जोवन धन है द्योस चारिको समुझि चतुरि मन माहीं । सूर सुनत उठि चलउ राधिका दै दूती कहै बाहीं ॥ ७ राग सोरठ ॥ राधे हरि रिपु क्यों न छिपावति । मेरु सुता पति पति ता के सुत ताको क्यों न मनावति ॥ हरि वाहन ता वाहन उपमा सोतै धरे दृढावति । नव अरु सात बीस तेहि सोहत काहे गहरु लगावति ॥ सारंग वचन कह्यो करि हरिको सारंग वचन न भाषति । सूरदास प्रभु दरश विना तुव लोचत नीर बहावति ॥ ८ ॥ राग सोरठ राधे यामैं कहा तिहारो । मुखहिम कर तनु हाटक वेनी सो पन्नग अंग कारो । गति मराल केहरि कटि कदली जुगल जंघ अनुहारो ॥ नयन कुरंग बचन कोकिल के नासा सुक कहगारो ॥ विद्रुम अधर दसन दाडिम कन करो न तुम निरवारे । सूरदास प्रभु त्रिभुवनपतिको एक न उनहिं उबारो ॥ ९ ॥ प्रोच पिसुन लस दसन सभासद प्रभु अनंग मंची विन भीति । सखि विन मिले तरुन वनिएहै कठिन कुराज राजकी ईति ॥ मन्द हास मुख मन्द बचन रुचि मन्द चाल चरननि अई प्रीति । नख सिख ते चित चोर सकल अंग जस राजत सब प्रजा वसीति ॥ तेरो तनु धनु रूप महागुन सुन्दर श्याम सुनी यह कीर्ति । सुकरि सूर जेहिं भांति रहै पति जिनि वलवांधि बढावहु छीति ॥ १० ॥ ॥ राग विलावल ॥ यहि तेरे वृन्दावन बाग । सुनि राधिका कदंब विटप की साखा एक अमी फल लाग ॥ श्याम अरुन कछु अधिक पीत छवि वरनि जाय नहिं अंग विभाग । अति सुपक्व मुरलीके परसत चुइ चुइ परत एकंगि रस राग ॥ व्रज वनिता वर वारि कनक मय रोके रहत सुधा सुर नाग । तुव प्रताप छुइ सकत न सुन्दरि शुक मुनि संकट कोकिल काग ॥ मैं मालिनि जतननि जल जुगयो सींचत सुहथ परे कर दाग । सूरस श्रम उठि भेटि परस्पर पिय पियूष पाय वड भाग ॥ ११ ॥ राग रामकली ॥ रसिक

राधे बोली नन्द कुमार । दरशन को तरसत हरि लोचन तू शोभा की धार ॥ खंजरीट मृग मीन मधुप मिलि रम्भा रचि अनु सार । गौरि सकुचि शशि विरथ कियेरथ मेरु लुठ्यो बडि तार ॥ कौन हेततें मिथ्यो सिता सित विकुरी कौन विचार । मन्दाकिनि माने शिर धरि कै रुद्रनि करी पुकार ॥ राख्यो मेलि पिठीतें परधन हरजु कियो बिन हार ॥ सूरदास प्रभुसों हठ कीन्हों उठि चलि क्यों न सवार ॥ १२ ॥ राग बिलावल ॥ जल सुत प्रीतम सुत रिपु बंधव आयुध अनल न बिलषु भयोरी । मेरु सुता पति वसतु है मांथे कोटि प्रकास सरिसाय गयोरी ॥ मारुत सुत पति अरि पुर बासी प्रितु वाहन भोजन न सुहाई । हर सुत वाहन असन सनेही मानहुं अनल देह दों लाई ॥ उदधि सुता पति ताकर वाहन ता वाहन कैसे समुझावै । सूर श्याम मिलि धर्म सुवन रिपु ता अवतारहि सलिल बहावै ॥ १३ ॥ राग अडानो ॥ मोहन नीको री अति नीको । तासों न रूसन कीजै हितुकै मनाय लीजै हसत हसत दूरि करै लन रिस जीको ॥ अतिहीं मानिनी जेजे तेतेउ सें मनाय दई अतिहीं कठिन हठ देख्यौरी तो त्रिया को । दूसरी जामिनी गईत्यों त्यों तू हठीली भई सूर निरखि मुख देखौ प्यारी पीको ॥ १४ ॥ राग बिहागरो ॥ और सखी एक श्याम पठाई । हरिको बिरह देखि भई ब्याकुल मानु मनावन आई ॥ बैठी आय चतुरई काके तहं कछु नहीं लगार । देखति हौं कछु और दसा तब बूझति बार बार ॥ मन मन खिझति मानिनी याको कौने यहां पठाई । सूर सबनि कछु मानु मनायो सो सुनिकै यह आई ॥ १५ ॥ राग मलार ॥ सुनि री सयानी त्रिय रूसिबे को नैन लियो पावस दिननि कोउ ऐसो है करत री । दिसदिस घटा उठी मिलि री पियसों रुची निडर हियो है तेरो नेक न डरतरी ॥ चलि ए री मेरी प्यारी मोको मान देन हारी प्रानहुं तें प्यारो प्रति धीर न धरतरी । सूरदास प्रभु तोहिदियो चाहैं हित चित हति क्यों न मिलै तेरो नेम टरतरी ॥ १६ ॥ राग मलार ॥ सेज रचि पचि साज्यो सघन बंजनि कुंज चित चरननि लाग्यो छतिया धरकि रही । हाहा चलि प्यारी तेरो प्यारो चौंकि चौंकि परै पातकी खरक प्रिय हियमैं खरकि रही ॥ बातन धरति कान तानति है भौंह बान उत न चलति बाम अखिया फरकि रही । सूरदास मदन दहत प्रिय प्यारी सुनि ज्योंज्यों कहो त्यों त्यों वरु उतको सरकि रही ॥ १७ ॥ राग केदारो ॥ तू तौ मोसों बात न कहति माई चलैगी कहां ते । काहेको गहरु कीजै विनु रथ कहा लीजै दीजै जाय उतरु मैं आई हौं जहांते ॥ अनोखी मानिनी यह पाहन पूतरी भई बैन न वदति और जरात तहांते । आई हौं सपत खाय जातन परत पाय सूरदास प्रभु नवल प्रहांते ॥ १८ ॥ राग सारंग ॥ होतौ दुहुंनि चक्र डोर कीन्ही । उतते ए पठवत इत वे नहिं मानत हौं दुहुनि चकडोर कीन्ही ॥ क्रोध भेष मुख सुदेस नयननि छवि न कहि आवै आतुर ह्वै उठि धाई रावरे लीन्ही । तामरस लोचन हाव भाव बिना करे मानैं न मानिनि मान रंगभीनी ॥ सूरज प्रभु राय सिरोमणि आपुहि चलि देखौ क्यों न नायका नवीनी ॥ १९ ॥ राग सारंग छों पिय रीझि आई । गईही मानु छिडावन पिया रीझि आई ॥ ऐसी छवि राजति है मोपै सो वरनि नहिं जाई । आपुहिं चलिए बदन देखिए जौलौं रहै निठुराई ॥ सूर

श्याम प्यारी अति राजति रावरी दुहाई ॥ २० ॥ राग कल्यान ॥ मैं तुम हंसत खेलत छांडि गई अब न्यारे न्यारे अन बोले ह्वै रहे दोऊ । इत तुम रूखे ह्वै रहे गिरिधर उत अनमनी अंचल उर माय मुख जंघ लगाय रही बोऊ ॥ नीची दृष्टिकरि धरनी नख करो-बति ए हो पिया तबहीं एक ठक घूंघट तन चितै रही आहि कहा हों करौ अब सोऊ । सूर दास प्रभु प्यारे अंकम भरिजाय लीजै छांडौ छांड़ौ। कह न देउ और न मानै कोऊ ॥ ॥ २१ ॥ राग इमन ॥ अजहूं रैनि तीनि जाम है जू । काहे को हरबरात श्याम जू ॥ मैं तौ बाकी प्रकृति लई लखि कै बात जौ पै रिस देखि हौं तौ घरीकु लागि है तिहारी प्यारी लाखिली बाम है जू । प्रेम कियें जाति ताहि अब लियें आवसि हौं मेरे तौ तिहारे सुख सुख है यातें कौन काम है जू ॥ २२ ॥ राग सारङ्ग ॥ जहां बैठे माधौ तहां तू बुलाय राधे जमुना निकट शीतल छहियां । आछी नीकी लागति कसुंम्ही सारी गोरे तनु परम चतुरि चली हरि पहियां ॥ टूटी एक गई मोहन पै जाय कह्यो यह पिय कहियां । सूर दास सुनि चतुर राधिका श्याम रैनि वृन्दावन महियां ॥ २३ ॥ राग इमन ॥ रस में रिस की बात । बे रस कीजै न भामिनी हौं पठई तोहि लै न सांवरे तोहि बिन कछु न सुहात । हा हा करति तेरे पायन परति हौं छिनु छिनु निशि घटत जात ॥ सूर श्याम तेरो मग जोवत अति आतुर अकुलात ॥ २४ ॥ राग बिहागरो ॥ उतरु न देति मोहनी मौन ह्वै रहीरी । सुनि सब बात नेकहूं न मटकी री ॥ अबधौं चलैगी कब रजनी गई री सब शशि वाहन धरनीवे देखि खटकी । नैना री करै अलोल धरें री पानि कपोल भुव नख लिखै तिलहूं न कछु भटकी ॥ मुग्ध बधूरी सठ काहे को परी है हठ परम भावती तू नागर नटकी । ध्रुव समान आए जु सप्त मुनि बउरि बेर रह्यो है तमचुर रटकी ॥ सूर सखी जाय बलि राधिका कुंवरि चलि आज छबि नीकी बेरे आछे नील पटकी ॥ २५ ॥ ॥ राग बिहागरो ॥ सर्बरी सब बिहानी तोहि मनावति राधा रानी । शुक्र उदै होन लाग्यो जागे तमचुर हरि आई जु रटगानी ॥ प्रफुलित कमल गुंजार करत अलि पीरी पड़ फटी कुमुदिनी कुम्हिलानी । सूर श्याम बन मुरछि परे हैं मानिनि वारो मो पर क्यों झुहरानी ॥ २६ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम प्यारी बोलन लागे तमचुर घटि गई रजनी । अरी बे मन मोहन व्रज नायक ठाढे सजनी ॥ ठाढे हैं हरि कुञ्ज द्वारें ललित बेन बजाय हो । श्रवन सुनति कैसें रहति कैसें तोहि गेह सुहाय हो ॥ तुम कुंवरि वृषभानु की कछु नेह प्रीति न जानहूं । कहि पठई हरि तोहि काहे न चित आनहूं ॥ नन्द नंदन कह्यो ऐसें ह्यां सुन्दरि आइ हो । और नहिं कछु काज बन में नेंक मधुर सुर गाय हो ॥ सूर प्रभुहि बिचारि मनमें प्रीति सों उर लाइए । यह पुनि पुनिमैं कहति राधिका मन बांछित फल पाइए ॥ २७ ॥ राग केदारो ॥ मोहन तेरे अधीन भए रिस कब तें कीनतु री गुन आगरी नागरी । तेरे अनउत्तर सुनिसुनि श्याम हंसिहंसि देत नेंक चितै इत नागरी तेरोई भाग सुहाग तेरोई अनुराग तेरेहीं मांथें सती तू रूप उजागरी ॥ सूरदास प्रभु तेरो मगजोवत तुहीं तुहीं रट लागी जैसें रटगनि भूली बागरी ॥ २८ ॥ राग नट ॥ कुंज सदन में ठाढे देखौं अंखियनि भरि तब मैं जाऊंगी बलि । सोपै न देखे परे खरे तुम डार

गहें अकेले नेंक तू ठाढ़ी हौ ढिग चलि ॥ तेरो री बदन प्रफुलित अम्बुज हरि जू के नैना मैं देखे अति आतुर अलि । सूरदास नंद नदन प्यारे न्यारे नेंक न कीजै हाहा दूरि करों मानैं मलि ॥ २९ ॥ राग केदारो ॥ तेरे मानि बेऊ तेरीमानु नीकोइ लागत ऐसेंहिं रहिए जौलौं लालहि लै आऊं । औरनि की हांसी खेल तिहारि रुखाई माई विरसमै यह रस यह सुख नैननि आनि दिखाऊं ॥ उलटि प्रिय पै जाउ नैतम चोप बढ़ाउं सोरह कला को शशि कुछविगसाऊं । सूरदास प्रभु गिरि धरन सों हिलि मिलि प्रिय मिलिबे को यह सुख रूप अनूपम पाऊं ॥३०॥ राग बिहागरो ॥ कहति श्यामसों जाय मनायों न मानैं जू ॥ कहा रही मन घालि कहा अनुमानैं जू ॥ कहा मनमें घालि बैठो भेद मैं नहिं लखि सकी । आप ह्यां वह वहां वैसे जात आवत मैं थकी ॥ नेंकहुं जो कह्यो मानैं कोटि भांति न्ह मैं कही । हाहा करि मनुहारि सुनतहो रिस गही ॥ कहा बैठे चले बन है आपहूं नहिं मानि हौ । तुम कुंवर घरही के बाढे अब कछु जिय जानि हौं ॥ बेगि चलिए अनखि जैहै तुम यहां वह जरतिहै । वाके जिय कछु और कपट करि धरतिहै ॥ राधिका अति चतुर जानों जाय ता ढिगही रहौ । कहा जो मुख फेरि बैठी मधुर मधुर बचन कहौ ॥ सूर प्रभु अब बनें नाचें काछ जैसो तुम कह्यो । कहियत गुन परवीन क्रोध विष भर्यो ॥ ३१ ॥ राग बिहागरो ॥ सुनि यह श्याम विरुद्ध भरे । बार बार गगन निहारत कबहूं होत खरे ॥ मानिनी नहिं मानु मोच्यौ दूसरी निसि आजु । तब परे मुरझाय धरनी काम करयौ अकाजु॥ सखिन तब भुज गहि उचाय कहा बारे होत । सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिले अपने गोत ॥ ३२ ॥ राग बिलावल सूहो ॥ श्याम चतुरई कहां गंवाई । अब जाने घरके बाढे हौ तुम ऐसे कहूं रहे मुरझाई ॥ बिना जोर अपनी जांघनिके कैसें सुख कियो चाहत । आपुन दहत अचेत भए क्यों उत मानिनि मन काहे दाहत ॥ वहीं रहौ कहैगी कतहूं जाय रहे बड़ नायक । सूर श्याम मन मोहन कहियत तुम हौ सबही गुन के लायक ॥ ३३ ॥ ॥ राग रामकली ॥ तब हरि रच्यो दूती रूप । गए जहां मानिनि राधा प्रिया खांग अनूप ॥ जाय बैठे कहत मुख यह तू यहां बन श्याम । मैं सकुचित तहं गई नाहीं फिरि कहियति बाम ॥ सहज बातें कहत मानों अब भई कछु और । तू यहां वे वहा बैठे रहति एकहि ठौर ॥ कहौ मोसों कहा उपजी वै रटत तुव नाम । सुनति है कछु बचन राधा सूर प्रभु वन धाम ॥ ३४ ॥ राग रामकली ॥ राधे तैं अति मान करयो । यह कहि हरि पछितात मनहि मन पूरव पाप परयो ॥ पहिली अपनी कथा बताई जब चिय भेष धरयौ । तब तेंहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हरयौ ॥ मोहे असुर महामद माते सुर मुख चंद्रत भरयो ॥ शिव गन सहित समेत महा मुनि को व्रत नेम टरयो ॥ तो तनुकी छवि निरखि सूर शिव छत ज्यों जान गरयो ॥ जेहिं जारयो जग काम सो माधव तेरेई हठ जात जरयो ॥ ३५ ॥ राग बिहागरो ॥ इतो श्रम नाहिं न तबहुं भयो । सुनि राधिका जितो श्रम मोकौं ते एहि मानु दयो ॥ धरनी धरि विधि वेद उधारो मधु सो शत्रु हयो । द्विज रूप कियो दुसह दुख मेट्यौ बलि को राज लयो ॥ तोरयौ धनुष स्वयंबर कीन्हों रावन अजित जयो । अघ बक वत्स अरिष्ट केशि मथि

दावानल ग्रंचयो ॥ चिय वपुधरयो असुर सुर मोहे को जग जोन द्रयो । जानों नहीं कहा या रसमैं जेहि सिर सहज नयो ॥ गुरु सुत मृतक काज निजु आए सागर सोंध लयो । सूर सुवल अब तोहि मनावत मोहि सब बिसरि गयो ॥ ३६ ॥ राग बिहागरो । राधिका तजि मानु मयाकर । तेरे चरन सरन चिभुवन पति मेटि कलप तू होहि कलप तर ॥ जिनके चरण कमल मुनि बन्दत सोतेरो ध्यान धरै धरनी धर । अहो बावरी कहातैं कीन्हो प्रीतम पठै दियो बैरिनि घर ॥ तुम नागरि वै श्रीनागर बर तुम सुंदरि वै श्रीसुन्दर वर । वै हरितौ दुख हरत सबनि को तू वृषभांन सुता हरिको हर ॥ जौ झुकि कछू कह्यौ चाहति है उनहिं जानि सखि मोहि सों लर । तबही सूर निरखि नयननि भरि आयो उघरि लाल ललिता सूर ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम चतुरई जानतिहों । ए गुन तुम अजहूं नहिं छाडे इनि छुन्दनि में मानति हों ॥ तुम रस बाद करन अब लागे जे सब तेउ पहिचानति हों । वै बातें अब दूरि गईं जू ते गुन गुनि गुनि गानति हों ॥ यहकहि बहुरि मानु गहि बैठी जियही जिय अनु मानति हों । सूर करौ जोइ मन भावै यहै बात कहि भानतिहों ॥ ३८ ॥ राग बिहागरो ॥ यह कहि बहुरि मानु कियो । रिसनि घर घर होति बाला जोग नेम लियो ॥ कहति मन मज बहुरि मिलिहों अबन करों बिलास । ध्यान धरि विधिको मनावै लेति ऊरध स्वास ॥ चिया को जिनि जन्म पाउं जिनि करै पति नारि । जन्मतौं पाषान मांगों सूर गोद पसारि ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम चले पछितायकै अति कीन्हों मान । ब्याकुल रिस तनु देखिकै सब गयो सयान ॥ बैठे सीस नवाय कै बिन धीरज प्रान । दूतीतुरत बुलायकै पठई दै आन ॥ बिरहा के बस हरि परे चिय कियो अनुमान । धीर धरौ मैं जातिहौं करिए कछु ज्ञान । सावधान करिकै गई दूतिका सुजान सूर महा वह मानिनी मानो पाषान ॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ अंस परायो दै देरी । मेरीसिख सुनि रसिक राधिका मनमें न्याय चितैरी ॥ आप आपनी तिथि बा इंदुहि अचवत अमर सबैरी । हर सुरेश सुर शेष समुझि जिय क्यों प्रभु मानु करैरी ॥ वह झूठौ शशि जानि बदन विधु रच्यो विरंचि यहैरी । सोंप्यों सुपत बिचारि श्याम हित सो तू रहि लटि लैरी ॥ जाको जहां प्रतीत सूरसों सर्वस तहां सबैरी । सिद्ध सुधा निधि अर्पि अबहिं उठि विध पुनि पुनि न पचैरी ॥ ४१ ॥ राग बिहागरो ॥ राधिका हरि अतिथ तुम्हारे । रति पति असन काल गृह आए उठि आदर करि कहैं हमारे ॥ आसन आधी सेज सरकि दै सुख पैहैं पद हरषि पखारे । अरधादिक आनन्द अश्रुत मै ललित लोल लोचन जल धारे ॥ धूप सुबासन तच्छन बस करि मनमोहत हंसि दीप उजारे । बचन रचन भ्रुव भंग अंवर अंग प्रेम मधुर रस परुसि निनारे ॥ उचित केलि कटु तिक्त त्यागि पटु अमल उलटि अंकम हठि हारे । नख छत छार कषाय कच्चग्रह चुंबन सर्पि समर्पि संवारे ॥ अधर सुधा उप दंस सींच सुचि विधु पूरन मुख बास सचारे । सूर सुकृत संतोषि श्यामको बहुत पुन्य यह व्रत प्रति पारे ॥ ४२ ॥ रागधनाश्री ॥ अब मोहि जानि ऐसो कीजै । सुनि राधिका कहत माधों यों बुझिये दंड सो लीजै ॥ उर उर चांपि बांधि भुज बंधन नख नाराच मरम तकि दीजै ॥ भौंह चढाय रिसाय दसन दसि अधर सुधा अपने मुख पीजै । अब

जिनि करे बिलंब भामिनी सरिस करौ जेहि गात पसीजै ॥ ग्रंथ गुननि गहि जूठ गांठि दै छुटि न कबहूं श्रम जल भीजै । सुनि सखि सुमुखि पांय लागति हौं दम्पति अरस परस तनु छीजै । सूर श्याम संग मिलि रस विलसहु जीवन सुफल यहै सुनि लीजै ॥ ४३ ॥

॥ राग गोंडमलार ॥ गह्यौ हृषभान हृषभान बारी । डुलै वरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनि हों डुलै कंचन मेरु रहि निहारी ॥ रैनि रवि उदै वासर चन्द होय वरु डुलै सब निखत यह होय भाखै । धरनि पलटै सिन्धु मरजाद को तजै शेष शिर डलै नहि मानु नाखै ॥ बांझ सुत जने उकठे काठ पल्लवै विफल तरु फरै विन मेघ पानी । सूर यह सुनहु वरु अचल चल चलै को कहति बानी ॥ ४४ ॥ राग दूतीकान्हरो ॥ थकै मनहीं मन दूति यह अनुमान करै । कासों कहों सुनै को मेरी कैसे कह्यौ हरै ॥ हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोच करै । कैसें बचन कहों या आगे यह अनुमान करै ॥ चतुर चतुरई फवै न यासों सुनि रिस अतिहि करै । सूर सहजहीं मानु मनाऊं सो यह कबहुं करै ॥ ४५ ॥

॥ राग मलार ॥ मानि मनावो राधा प्यारी । दहियत मदन दहन नायक हो पीर पीरतें न्यारी ॥ तू जु कहत ही और रूस ने अब कहि कैसें रूसी । बिनहीं सिसिर तमक तामस तें तुव मुख कमल बिदूसी ॥ सुनियत विरद रूप रस नागरि लीन्ही पलटि कलूसी तेरेहुती प्रेम सम्पति सखि सो सम्पति केहि मूसी ॥ उनतन चितै आप तन चितवहु अहो रूप की रासी । पिय आपनो न छोड़ तऊ जौ ईश सेइए काशी ॥ तुमतौ प्रान प्रान वल्लभ के वै तुव चरन उपासी । सुनिहै कोऊ चतुर नारि कत करति प्रेम की हांसी ॥ ज्योंज्यों मौन भई तुम उनके बाढी आतुर ताई । कान्ह आन बनिता रत सुनि सुनि जिय पैठी निठुराई ॥ दिए कपाट जोरि जड़ता के बोलत नहीं बुलाई । हा राधा राधा रट लागी चित चातकी कन्हाई ॥ जौ पै मानत भांवरि मान न होई । हियते वादि प्रेम चितवति हों अन्त भाव तौ सोई ॥ जौ गोरी पिय नेह गरब तौ लाख कहै किनि कोई । काहू लियो प्रेम पर चौ वह चतुर नारि हैं सोई ॥ कतहो रही नारि नीची करि देखत लोचन झूले । मनहुं कुमुद रुचि उड़पतिसों किए उर्ध मुख फूले ॥ वैतौ हित हृषभान नन्दिनी सेवत जमुना कूले । तेरे तनक मान मोहन के सबै सयानप भूले ॥ अहो इंदु वदनी सुनि सजनी कत पलकनि पल जोरे । तुव मुख दरश आसके प्यासे हरिके नयन चकोरे ॥ तेरे बल भामिनी वदत नहि उपजत काम हिलोरे । सुनियत हते चतुर नागर तें तनक मान भए भोरे ॥ तब दूती फिरि गई श्याम पें श्याम वहां पगु धरिए । जेहि हठ तजे प्रान प्यारीसों जतन सवारो करिए ॥ वैवै सें तुम ऐसे वैसे कहो काम कह सरिए । कीजै कहा चांड अपनी कत यहां मसूसनि मरिए ॥ अपनी चोप आप उठि आए ह्वै रहे आगे ठाढे । भूलि गए सब चतुर सयानप हुते जो बहु गुन गाढे ॥ डोलत नहि बोलै न बुलाए मनहुं चित्र लिखि काढे । परयो न काम नारि नागर सों हैं घरही के बाढे ॥ निबह्यौ सदा औरही को हठ यह पर कीर्ति तुम्हारी । आपु नहीं आधिन ह्वै ठाढे देखि गोवर्द्धन धारी ॥ प्रानहि प्रियहि रूसनो कैसो सुनि हृषभान दुलारी । कहूं न भई सुनी नहिं देखी रहै तरंग जल न्यारी । रिस रूसनो लिखन पलकनि को अति कुसुंभ रंग जैसो ।

रहैन सदा छुटत छिनु भीतर प्रात बोस टूटै तैसो वे हैं परम मलीन किये मन उठि कहि मोहन वैसो घर आयं आदर न चूकिए बैठो दूध अचैसो। बेतो अंबर भावते बन के और बेलि को तैसो कीजै मान मदन मोहन सों बात कहें हंसि नैसो। तुम जानहु की लाल तुम्हारो तुमहिं उन हि है जैसी। वाहीतें तुम गरब भरी हो वे ठाढे तुम वैसो। जोवन जल बरषा की नदिज्यों चार दिना को आवै। अन्त अवध हो लों नातो जों कोटिक लहरि उठावै। वल्लभको वल्लभको मिलिबो तुम्हहि कौन समुझावै। लैचलि भवन भावतेहि भुजगहि को कहि गारि दिवावै। झुकि ठेली ह्यांते सरि होंती कोनैं सिखै पठाई। लौकिनि जाहि भवन अपनें ह्यां लरन कोन सो आई। कोंपति रिसनि पीठि दै बैठी सहचरि और बुलाई। कछु, सोरी कछु, तातो बातनि कान्हहिं देति दुहाई। कबहुंक लै धरि दरपन मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो। पटु अंतर नहि बिम्ब निहारति इते मान मन गाढो। तलफत फिरै धरै नहिं धीरज बिरह अनल कोडाढो। इत नागरी उतहि बै नागर इन बातनि को चाडो। बड़ो बडाई को प्रति पालै बडो बडाई छीजै। ताको बडो बडो सरना गत बैरू बडे सों कीजै॥ तू वृषभान बडे की बेटी तेरे ज्यायं जीजै। राखज्ञ बैरहिए गहि मोसों बैरिहि पीठि न दीजै॥ भामिनि और भुवंगिनि कारी इनके विषहि डरइए। राचेहूं विरचे सुख नाहीं भूलि न कबहुं पत्यइए॥ इनके बस मन परे मनोहर बहुत जतन करि पइए। कामी होय काम आतुर तेहि कैसे कै समझइए॥ जेजे प्रेम छके मैं देखे तिन छिन चातुरताई तेरे मान सयान सखी तोहि कैसें कै समुझाई॥ परिहै क्रोध चिनगि भांवरि में बुझि है नहीं बुझाई। हों जु कहति तैं बादि बावरी तृणते आगि उठाई॥ बहुरयो भए सहचरी मोहन ताकि आपनी घातें। लागे कान सखी के धोखे कहत कुंज की बातें॥ सुधि करि देखि रूसनों उनको जब खाई हाहा तें। आप पीर पर पीर न जानति भूली जोवन नातें। कछूं न भयो सुन्यों बहि दीख्यो तनुतें प्रान अबोलें। होत कहा है आलसछूं मिस छिनु घूंघट पट खोलैं॥ पावति कहा मानमें कहा गवांवति हौ हंसि बोलै। कालिहिं प्रान नाथ तुम प्यारी फिरिहौं कुंजन डोलै॥ कहा रही अति क्रोध किये धरि नेक न दया दयानी। प्रगट्यो जानि मदन मोहन तनु बात बात असि रानी॥ हितकी कहें अनख लागति है समुझत भले सयानी। मन की चोप मानु कीजतु कह थोरे ही गरवानी॥ रही मूंदि पट सों हठि भामिनि नेक न बदन उघारै। हरि हित बचन रसाल कठिन पाहन ज्यों बुन्द उतारै॥ धरे ग्रीव पट सनमुख ठाढे नेक न कोप निवारै। जा आधीन देव सुर नर मुनि सो दीनता पुकारै॥ खन गावैं खन बेनु बजावैं कमल भृंग की नाहीं। खन पायनि तन हाँघ पसारैं छुवन न पावैं छाहीं॥ खन खन लेहि बलाइ वामकी लालच करि लल चाहीं। कहे आनकी आन सोंह दै खन खन हाहा खाहीं॥ कबहुंक निकट बैठि कुसुमावलि अपने कर पहिरावैं। जोइ जोइ बात भाव तिहि भावै सोइ सोइ बात चलावैं॥ जितहीं जित रूख करै लडैती तितहीं आपु न आवैं। नांचत आके डरनि भुवनिचय तेहि नेकु सुमान नचावे॥ जिनि नयननि देखत दुख भूले ते दुख नयन समोवै जो सुख सकल सुखनि को दाता सो सुख नेक न जोवे॥ जेहि लिलाट त्रिभुवन को टीको

सो पाइनि तन सोवै । राचहि जाहि सनक अरु शंकर विरचे ताहि बिगोवै । एते मान भए बसमोहन बोलत कटुक डराई । दीपक प्रेमक्रोध मारुत छिनु परसत निबु झिहराई इत नागरी नवल नागर उत भिरे सुरतरन सोउ । नैन कटाच्छ बान असि बर नख बरषि निदाने दोउ । टूटे हार कंचुकी दरकी घाइन सुरे न कोउ । प्रगट्यौ तेज तरनि पदबी की लाज लजाने दोउ । यहिडर रहत पितंबर ओढे कहा कहौं चतुराई । भुरुवो कामप्रेम झूं मरयो भुरई वैसभराई ॥ प्रतिअरु प्रिया प्रगट प्रति बिम्बित ज्योंजल दर्पन भाई । अब जिनि कहे हिए मैं कोहै बहुरि परैकठिनाई ॥ कर जोरे बिनती करै मोहनकहौ तो पदसिर नाऊं । सेवकहों निजु प्रान प्रियाको यह कहि पच लिखाऊं ॥ तेरीसों इषभान नन्दिनी अनुदिन तुव गुण गाऊं । अवजिनि मानु करे मोसों हो यहै मौज करि पाऊं ॥ हंसि करि उठि प्यारी उरलागी मान मैन दुख पायो । तुम मन देहु आनि बनिता तौ मैं मन काहि लगायो ॥ लै बलाय उर लाय अंक भरि पछिलौ दुख बिसरायो । श्याम मान है प्रेम कसौटी प्रेम है मान सहायो टूटे बंद छुटी अलकावलि मरगज तन के वागे । अंजन अधर भाल जावक रंग पीक कपोलनि प्रागे ॥ बिन गुन माल पीठि गडि कंकन उपटि उठे उर लागे । रसिक राधिका के सुख कौ सुख लूट्यो श्याम सभागे ॥ नवल गोपाल नवेली राधा नए नेह वस कीन्हों । प्रान नाथसों प्रान पियारी प्रान पलटि सो लीन्हों ॥ विविध बिलास कला रसकी विधि उभै अंग पर बीन्हों । अति हित मानु मान तजि मानिनि मन मोहन सुख दीन्हों राधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवन सुनै जे गावैं । तिनके सदा समीप श्याम नितही आनन्द बढावैं ॥ कबहुंन जाहिं जठर पातक जिनि को यह लीला भावै । जीवन मुक्ति सूरसो जगमें अन्त परम पद पावै ॥ ४६ ॥ राग गोंडमलार ॥ राधिका बस करि श्याम पाए । बिरह गयो दूरि जिय हरष हरिके भयो सहस मुख निगम जिनि नेति गाए ॥ मानु तजि मानिनी मैन को बल हत्यो करत तनु कंतके पास आरी । कोक विद्या निपुन श्याम श्यामा विपुल कुंज गृह द्वार ठाढे सुसारी ॥ भक्त हित हेत अवतार लीला करत रहत प्रभु तहां निजु ध्यान जाके । प्रगट प्रभु सूर ब्रजनारिके हित बन्ध देत मन काम फल संग ताके ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ * ॥ अथ गुरु मान लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ सखिन संग इषभान किशोरी । चलीन्हान प्रातहि उठि गोरी ॥ जाके घर निसि बसे कन्हाई । ताघर ताहि बुलावन आई ॥ ठाढ़ी भई द्वार पर जाई ॥ कहे तहां ते कुंवर कन्हाई ॥ औचक मिले न जानत कोऊ । रहे चकित इत उत ते दोऊ फिरी सदन कौं तुरतहि प्यारी । न्हान जान को सुरति बिसारी ॥ भई बिकल तन रिस अति बाढी । रहि गई सखी निरखि सब ठाढी ॥ रहि गये ठाढे श्याम ठगे से । सकुचाने

उर सोच पगे से ॥ जब देखे हरि अति मुरझाये । तब सखियनि गहि भुज सम झाये ॥ उलटि भईं सब हरिकी घांई । देके बांह प्रिया जहं ल्याईं ॥ देखि श्याम आये जहं रा धा । बैठी मान दृढ़ाय अगाधा ॥ रिसही के रस मगन किशोरी । भई श्याम मति देखत भोरी ॥ ठाढे चकित चित्त अकुलाहीं । मुख ते वचन कहे नहि जाहीं ॥ व्याकुल लखि नंदलाल को सखियनि कियो विचार । अब दोऊ जैसे मिलै करिये सो उपचार ॥ अति रिस नारि अचेत कौ सुनि है कासौं कहें । इतये धरत नहिं चेत परी रुठावन वान इन ॥ प्यारी निकट गई सब आली । ठाढे पौरि रहे बन माली ॥ कहति मान कीनो तें प्यारी । न्हान जान ते फिरी कहारी ॥ तोहि लखत हीरो गिरिधारी । अतिहि डरे तन सुरति बिसारी ॥ मुरछि परे धरणी अकुलाई । तरु तमाल जनु गयौ झुराई ॥ ते ऐसें चितयो कछु उनकौ । नेकहु चैन रह्यो नहि तिनकौ ॥ तेरे नैन अरीं अनि यारे । किधौं बान खरसान संवारे ॥ भौंह कमान तान यों मारे । क्यों करि राखे प्राण पियारे ॥ घायल जिमि मुर्छित गिरिधारी । अमी बचन अब सींच पियारी ॥ बड़ नायक वे तू नहि जानै । तिन सों कहा इतौ दुख मानै ॥ बांह गहौ हरि को ढिग लावै । अब वे निज अपराध क्षमावै ॥ गहति बांह तुम हीं किन जाई । मोसों बांह गहावन आई ॥ कालि हि सेंह मोहि उन दीनी । आजहि यह करनी पुनि कीनी ॥ देखि चुकी उन के गुणन निज नैनन सुख पाय । तिन्हैं मिला वति मोहि अब बांह गहा वति आय ॥ मिलौन तिनसो भूलि अब जौलौं जिवन जियौ । सहौ विरह का शूल वर ता की ज्वाला जरौं ॥ मैं अब अपने मन यह ठानी । उनके पंथन पीऊं पानी ॥ कबहुं नैनन अंजन लाऊं मृग मद भूलिन अङ्ग चढाऊं । हरु बलै पट नील न धारौं ॥ नैनन कारे घन न निहारों । सुनौ न श्रवणनि अलि पिक बानी ॥ नील जलज परसों नहि पानी । सुनत प्रिया की बात सुहाई । हरषत ठाढे पौरि कन्हाई ॥ सखी कहति यों हठ नहि लीजै । हरि सों ऐसो मान न कीजै ॥ तू है नवल नवल गिरिधारी । यह जोवन है री दिन चारी ॥ छण छण जौं करकों जल छीजै । सुनरी याकौ गर्व न कीजै ॥ नंद नन्दन मुख शशि सुख कारी । तू करि नयन चकोरि पियारी ॥ इतौ प्रेम धन तौ यह भारी । सो अब कहि तें कियो कहारी ॥ कहति इती रूसों नहि कबहीं । सोअब रूसत है जब तबहों ॥ सुनिहै सुघर नारि जो कोई । करिहै हंसो प्रेम को सोई ॥ मान कियो जो भावतें सो न भावतो होय । उरतें रिसवत प्रेम कत अन्त भावतो सोय ॥ लाख कहौ किनकोय पिय सनेह जो गोयहै चतुर नारि है सोय लियो प्रेम परचौ किनहुं । तुमरे एकन दोय पियारी । जलतें तरंग होय नहि न्यारी ॥ रस रूसनो ओस कन जैसो । सदा न रहै चाहिये तैसो ॥ तजि अभिमान मिलहि पिय प्यारी । मानु राधिका कही हमारी ॥ चुप न रहति कह करति मनावन । तुम आई हौ बात बनावन ॥ बहुत सही घर आई यातें । सुरति दिवावति पि छली वातें ॥ सो सों बात कहति हौ काकी । जाउ घरन अब कछु है बाकी ॥ कोउ न कीन्हों बात चलावत । हैवे अब तुमही कों भावत ॥ तुम पुनीत अरुबे अति पावन । आई हौ सब मोहि मनावन ॥ यह कहि रही रोस भर भारी । गईं सखी ये जहां बिहारी ॥

कह्यौ जाय हरि सों हरुवाई । आज चतुरई कहां गंवाई ॥ बिन निज जांघ न चलहि ललारे । कैसे चहत कियो सुख प्यारे ॥ हो मन मोहन तुम बड़ नायक । नागर नवल सकल गुन लायक ॥ तब बोले हरि दोउ कर जोरी । तेरी सों इषभान किशोरी ॥ तूही हित चित जीवन मोकों । सदां करत आराध न तोकों ॥ तू मम तिलक तुही आभूषण । पोषण तेरेई बचन पियूषण ॥ तेरोइ गुण मैं निशि दिन गाऊं । अब तज मान हृदै सुख पाऊं ॥ कर जोरे बिनती करि भाख्यौ । कहत शीस चरणनि पर राख्यौ ॥ यह सुनि कछु प्यारी मुसुकानी । तब बोली उठि सखी सयानी ॥ सुनउ श्याम तुम हौ रस नागर । रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥ तुम तें प्रिया नेक नहि न्यारी । एक प्राण है देह तुम्हारी ॥ प्यारी में तुम तुम में प्यारी । जैसें दर्पन छांह विहारी ॥ गस मे परै विरस जहं आई । होय परति तहं अति कठिनाई ॥ अब कै हम सब देति मनाई । परसौ प्यारी चरण कन्हाई ॥ अब रूठाय हौ जो गिरिधारी । राम राम तौ बहुरि हमारी ॥ जब परसे प्यारी चरण परम प्रीति नंद नंद । छुट्यौ मान हरषी प्रिया मिट्यौ विरह दुख दंद ॥ उर आनंद बढाय प्रेम कसौटी कसि पियहि । अब गुण मन बिसराय मिली प्रिया उठि श्यामसों ॥ हरषि मिले दोउ प्रीतम प्यारी । भईं सखी सब निरखि सुखारी ॥ तब दोउ उबटि सखिन अन्हवाये । रुचिर शृंगार शृंगार बनाये ॥ मधुर मिष्ट भोजन मन भाये । दोउजन एकै थार जिमाये ॥ दिये पान अचवन करवाये । सुमन सुगन्ध माल पहिराये ॥ लै बीरा अपने कर प्यारो । दीनो बिहसि बदन गिरिधारी ॥ तबहि सुफल हरि जीवन जान्यों । परम हरष उर अन्तर आन्यों ॥ मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी । तब सखियनि आरती उतारी ॥ अति आनंद भरे दोउ राजें । अरस परस निरषति छबि छाजें ॥ पाये वस करि कुञ्ज विहारी । विहंसि कह्यौ तब पिय सों प्यारी ॥ सुनउ श्याम बरषा ऋतु आई । रचउ हिंडोरो शुभ सुखदाई ॥ है मन पिय यह साद हमारे ॥ सब मिलि झूलहि संग तुम्हारे ॥ सुनितिय बचन श्याम सुख पायो । ऐसे कहि हरि मान छुडायो ॥ तिय मान हरि ऐसे छुडायो भक्त हित लीला करी । निगम नेति अपार गुण सुख सिन्धु नट नागर हरी ॥ यह मान चरित प्रविच हरि को प्रेम सहित जु गावहीं । करहिं आदर मान तिनको संत जन सुख पावहीं ॥ राधा रसिक गुपाल कों कौतूहल रस केलि । वृजवासी प्रभु जनन कों सुखद काम तरु वेलि ॥ सुफल जन्म है तास जे अनु दिन गावत सुनत । तिनकों सदां उलास सूरदास प्रभु की कृपा ॥ * ॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सूरसागररागकल्पद्रुम रास लीला और मानलीला सम्पूर्णः

॥ अथ सूरसागर रागसंग्रहकृत ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम

अपनों दीनत्व प्रभुजीको माहात्म्य तथा विनय पत्रिका प्रारम्भः

॥ राग बिलावल ॥ करनी करुणा सिन्धु की कहत न आवै । कपट तरे परसेव की जननी गति पावै ॥ दुखित गजेंद्रहि जानिकें आपुन उठि धावै । कलि मैं नाम प्रकट नीच ताकी छानि छवावै ॥ उग्रसेन की दीनता प्रभु के जिय भावै ॥ कंस मारि राजा कियो आपुन सिरनावै । वरुण पास तें द्विज प्रतिहि छिन में छिटकावै ॥ बहुत दोष मो सूर कहं तातें गहरु लगावै ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ माधौं वे भुज कहां दुराये । जिन्ही भुजनि गोवर्द्धन धारयो सुरपति गर्व नसाये ॥ जिन्ही भुजनि कालो को नाथ्यो कमल नाल लै आये । जिन्ही भुजनि प्रह्लाद उवारयो हिरण्याक्ष कों धाये॥ जिन्ही भुजनि गज दन्त उपारे मथुरा कंस ढहाये । जिन्ही भुजनि दांवरो बंधाये जमला मुकति पठाये ॥ जिन्हीं भुजनि अघासुर मारयो गों सुत गाय मिलाये । तिहि भुज की बलिजाय सूर जन तिनका तोरि दिखाये ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ अपने जाने मैं बहुत करी । कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सु कछु न स्वामी समुझि परी ॥ दूरि गयो दरशनके कारन तुव महिमा बिसुता बिसरी । मनसा वाचा कर्म अगोचर सो मूरति नहिं नयन धरी ॥ गुण बिनु गुणी स्वरूप रूप बिनु नाम बिना श्री श्याम हरी । कृपा सिंधु अपराध अपरमित चमड़ सूर तें सब बिगरी ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम बियोग । जहं भ्रमु निसा होति नहिं कबहूं वे सायर सुख जोग ॥ सनक शेष आदिक शिवमुनि जन नख रवि प्रभा प्रकास । प्रफुलित कमल निमेष न शशि डरु गुञ्जत निगम सुवास ॥ जिहि सर सुभग मुकति मुक्ता फल सुकृत विमल जलु पीजै । सोइ सर छांडि कु बुद्धि विहंगनि यहां कहा रहि कीजै ॥ तहं श्री सहस सहित नित क्रीड़ा शोभित सूरज दास । अब न सुहाय विषय रस छीलर वा समुद्र को आस ॥ ४ ॥ रागबिलावल ॥ तुम्हरो नाम तजि प्रभु जगदीश सु तो कहौं मेरे और कहा बलु । बुधि विवेक

अनुमान आपुने सु धौं करऊ सब सु छतनि को फलु ॥ बेद पुराण स्मृति सन्तन को यह आधार मीन कौ ज्यों जलु । अष्ट सिद्धि नव निद्धि सूर के सम्पति बिनु सुख ककू कहा लालु ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ सो कहा जु मैंन कियो जोपै तुम सोइ सोइ चित धरि हौ । पतित पावन बिरद प्रकट कौन भाँति करि हौ ॥ जबतें जग जनमु पाये जीव नाम कहा-यो । तबतें सब औगुण करि गुण ना कहि आयो ॥ सुकृती शुचि सेवक जन काहेन जिय भावै । प्रभु की प्रभुताई यहै दीन शरण पावै ॥ खाद लम्पट सन्त निन्दक कपटी गुरु द्रोही । जेते कछु अपराध कहियत लागे सब मोही ॥ श्याम सुन्दर कमल नयन सकल अन्तर्यामी । बिनती कहा करै सूर कूर कुटिल कामी ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ पतित पावन हरि नामु तुम्हारो कौनेहूं धरयो । हौंतौ दीन दुखित संसित रत द्वारे रटत परयो जीव जातना जोनि रुधिर जल जब जब जठर जरयो । तबहूं ते तुम निकट तज्यो नहि शत अपराध भरयो ॥ गज गणिका व्रज गीध व्याध तें मैं घट कहा करयो । विद्य मान सम सूल सहत हैं काल कुलिस न डरयो ॥ ए ते कोटि कुटिल करुणा मय तिनतें कहा सरयो । ना जानौ यह सूर महा सठ कौन दोष बिसरयो ॥ ७ ॥ रागसोरठ ॥ और न जानै जनकी पीर । जब जब दीन दुखित भये तब तब कृपा करी बलवीर ॥ गज बलहीन बिलोकि बलऊ दिश तब सुख शरण परो । करुणा सिन्धु दयालु दरशु दै सब सन्ताप हरो ॥ मागध मथेहते नृप बन्धन मृतक बिप्र सुत दीनों । गोपीगाय गोप गोसुत लगि सात द्योस गिरि लीनों ॥ श्री नृसिंह वपु धारि असुर हति भगत बचन प्रति पारो । सुमिरत नाम द्रुपद तन या कहं पट समूह तन धारो ॥ मुनि मद मेटि दास व्रत राख्यो अंबरीष हित कारी । लाक्षा गृह बन बसतु सैन्य तें पांडव बिपति निवारी ॥ बरुण पास दृजपति मुकराये दावानल दुख टारो । गृह अपने बसुदेव देवकी कंस महा खलु मारो ॥ सोइ श्रीपति जुगजुग सुमिरन बस बेद बिसद जस गावै । अशरण सूर शरण जाचतहै कोऊ सुरति करावै ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ माधों गज ग्राह तें छुड़ायो । निगमनि हू मन बचन अगोचर प्रकट स्वरूप दिखायो ॥ शिव बिरञ्चि सुर प्रति सब देखत बज्रत दिननि दुख पायो । बिनु बदले उपकार कृपन कों काहू करत न आयो ॥ चितवत ही चित लै चिन्ता मणि चक्र लिये कर धायो । अति करुणा कातर करुणा निधि गरुडों जिहि बिस रायो ॥ सुनियत जश जुग जुग जन कारण कबहूं गहरु न लायो । ना जानिये सूर यहि औसर कौन दोष बिसरायो ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ जैसे तुम और बज्रत खलतारे । चरण प्रताप भजन महिमा कों को कहि सकै तुम्हारे ॥ दुखित गयन्द दुष्ट मति गणिका व्रजहि कूपतें उधारे । विप्र बजाय चल्यौ सुत के हित काटि महा अघभारे ॥ गीध व्याध गौतम त्रिय व्रज कपि यहि धौं कह व्रतपारे । कंस केसि कुबलय बल मुष्टिक सब सुख धाम सिधारे ॥ तन विषु बांटि लगाय चली दृज बकी कवन गति पाई । रजक प्रलम्ब द्रोण दुःसासन भक्त भजन फलदाई ॥ नृप शिशुपाल विषय रस बिह्वल सर औसर नहि जान्यों । अघ बक वृषभ तृणा वर्त्त धेनुक गुण गहि दोष न मान्यों ॥ पांडुवधू पट हीन सभा महं कोटिनि बसन पुजाये । बिपति काल सुमिरन तेहि औसर जहां तहां उठिधाये ॥

गोप्रि गाय गोसुत-जल चासित गोवर्द्धन कर धारयौ । सन्तत दीन हीन अपराधी काहे सूर बिसारयौ ॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ काहूं के कुल नाहिं बिचारत । अबि गति की गति कहौं कौन सों पतित सबनि कों तारत ॥ कौन जाति को पांति बिदुर की जिन के प्रभु ब्यौहारत । भोजन करत तुष्टि घर उन के राज मान मद टारत ॥ ओछे जनम करम के ओछे ओछे ही बोलावत । अनत सहाय सूर के प्रभु कों भक्त हेत प्रनि आवत ॥ ११ ॥ राग सारंग ॥ गोविंद प्रीति सबन की जानत ॥ जे जेहि भाव करै जन सेवा अंतर गत की जानत ॥ बेर चाखि कटु तजि लै मीठे भिलडी दीनें जाय । जूठन की कछु, शंक न कीन्ही भक्त किए सद भाय ॥ संतत भक्त भीत हित कारी श्याम बिदुर के आए ॥ प्रेम बिकल बिदुर अर्पित प्रभु कदली छिलटा खाए । कौरो काज चले ऋषि आपुन शाकके पच अघाए ॥ सूर दास करुणा निधान प्रभु युग युग भक्त बढ़ाए ॥ १२ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जिहिके बस अनभिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी ॥ प्रबहत पवन भ्रमत दिन कर दिन फणिपति शिर न डुलावै । दाहक गुण तजि सकत न पावक सिंधु न सलिल बढ़ावै ॥ शिव बिरंचि सुरपति समेत सब सेवत पद प्रभु जाने । जो कछु कहत करन सोइ कीजतु करियतु अति अकुलाने ॥ तुम अनादि अबिगत अनंत गुण पूरण परमा नन्द । सूरदास प्रभु सकल असंजम मघवा चरित निकन्द ॥ १३ ॥ तथा ॥ दयानिधि तेरी गति लखि न परै । धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै ॥ जय अरु बिजय पाप कह कीन्हो ब्राह्मण श्राप दिवायो । असुर योनि दीनी ता ऊपर धर्म उछेद करायो ॥ पिता बचन खंडे ते पापी सो प्रह्लादै कीन्हो । तिनके हेत खम्भ ते प्रकटे नर हरि रूप जु लीन्हो ॥ द्विज कुलपतित अजामिल बिषई गणिका प्रीति बढ़ाई । सुत हित नाम नरायण लीन्हो तिहि तुव पदवी पाई ॥ यज्ञ करत बैरोचन को सुत वेद बिहित बिधि कर्म । तिहि हठि बांधि पतालहि दीनों कौन कृपा निधि धर्म ॥ पति व्रता जालंधर जुवती प्रकट सत्य तें टारी । अधम पुंश्चली दुष्ट ग्रामकी सुआ पढ़ावत तारी ॥ दानी धर्म मान सुत सुनियत तुमतें बिमुख कहावै । वेद बिरुद्ध सकल पांडव सुत सो तुम्हरे जिय भावै ॥ मुक्ति हेत जोगी बहु श्रम करै असुर बिरोधे पावै । अकथिक कथित तुम्हारी महिमा सूरदास कह गावै ॥ ॥ १४ ॥ राग केदारो ॥ है हरि नाम को आधार । और यह कलि काल नाहिन रह्यो बिधि ब्यौहार ॥ नारदादि शुकादि शंकर कियो यहै बिचार । सकल श्रुति दधि मथत पायो इतनो यह घृत सार ॥ दसहु दिसि गुण कर्म रोकौ मीनको ज्यों जार । सूर हरिके भजन करते मिटि गयो भव भार ॥ १५ ॥ राग देवगन्धार ॥ मेरे जिय ऐसी आय बनी । छांडि गोपाल औरें जो सुमिरों तौ लाजै जननी ॥ बिषुको मेरु कहा ले कीजे अंबृत एक कनी । मन क्रम बचन और नहिं चितवों जब कब श्याम धनी ॥ कहां लै करों काचको संग्रह छांड़ि अमोल मनी । सूरदास भगवंत भजन बिनु तजी जात अपनी ॥ १६ ॥ राग सारंग ॥ जिन जिनहीं के संग उर गायो । तिहि तुमहें गोबिन्द गुसाईं सबनि अपनपो पायो ॥ अजामेल सुख मित्र हमारो सो मैं चलत बुझायो ।

कहा कहांलों कहों कृपनकी तिनहूं श्रवन सुनायो ॥ व्याध गीध गणिका जिहि कागर होंतिहि चिठि न चढ़ायो । मरियत लाज पांच पतितनमें सूर समों बिसरायो ॥ १७ ॥ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ नाथ सारंगधर कृपाकरि दीन पर डरतु श्रवचास तें राखि लीजै । नाहिन जप नाहिन तप नाहिन सुमिरन भजन शरण आएको लाज कीजै जीव जल थल जिते भेष धरि धरितिते रचित दुर्गम अधम अटल भारी । मुसल मुद्गर हनत विविध कामें गनत मोहि दंड देत जमदूत भारी ॥ वृषभ धेनुक प्रलम्ब केसि चांणूर मल्ल पूतना रजकसे दुष्ट तारे । अजामिल गज गणिका तें कर्म घटि किये जु अब सूर चितते बिसारे ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ जो जग और बियोहों पाऊं । तो यह बिनती बार बार कीहों कत तुमहिं सुनाऊं ॥ शिव-बिरंचि सुर असुर नाग मुनि सुतो जांचिजन आयो । भूल्यौ भट्यो तृषा तुर मृगलों काहू श्रमन गंवायो ॥ अपथ सकल चलि चाहि चहूं दिसि भ्रम उघटत मति मन्द । थकित होत रथ चक्रहीन ज्यों निरखि करम गुण फन्द ॥ पौरुष रहित अजित इन्द्रिन वस ज्यों गज पंक परयो । विषया सक्त नटीको कपिज्यों जोइ जोइ कह्यो सुकरयो ॥ अपनेहीं अभिमान दोष तें रविहि उलूक नमानत । अति भय सुकृत रहित अघ व्याकुल तृषा श्रमित रज छानत ॥ सुनि चैताप हरण करुणा मय सन्तत दीन दयाल । सूर कुटिल राखो शरणाई यहि व्याकुल कलिकाल ॥ १९ ॥ राग धनाश्री ॥ कबहूं नाहिन गहक कियो । सदा सुभाय सुलभ सुमिरन वस भक्तनि श्रभय दियो ॥ गाय गोप गोपी जन कारन गिरि कर कमल लियो । अघ अरिष्ट केशी काली मथि दावा श्रनल पियो ॥ कंस बंस बधि जरा संध हति गुरु सुत आनि दियो । करपत सभा द्रुपद तनया को श्रंबर आनि छियो ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपा निधि करुणा वहुल हियो । काके शरण जाउं जदु नन्दन नाहिन और बियो ॥ २० ॥ राग धनाश्री हों हरि सब पति तनकौं नायक । कोकरि सके वरा वरि मेरी एते मनको लायक ॥ जे तुम अजामीलि सो कीनी सो पातो लिखि पाऊं । होय विश्वास भलो जिय अपने औरों पतित बुलाऊं ॥ सिमिटि जहां तहंते सब कोऊ आय जुरे यक ठौर । अबके इतने आनि मिलाऊं बेर दूसरी और ॥ होड़ा होड़ी मन उलास करि करैं पाप भरि पेट । सबहि मिलै पायनि तर पारों यहै हमारी भेंट ॥ ऐसी कितिक बनाउ प्राण पति सुमिरन है भयो आड़ो । अबकी बेर निबेरि लेउ प्रभु सूर पतित को टाड़ो ॥ २१ ॥ राग देवगंधार ॥ जोपें यहै बिचार परी । तो कत कलि कल्मष टूटनको मेरिये देह धरी ॥ जौ नाहिं रस मानो कीजतु जगत माहि कत कीनों । काम क्रोध मद लोभ मोहके बांधि हाथ करि दीनों ॥ मनसा और मानसी सेवा क्यों अगाध करि जानों । होहु प्रगट करुणा मय केशव बहु अपराधन मानों ॥ काको गृह दारा सुत संपति जासों कीजै हेतु । सूरदास प्रभु दिन दिन मरिवो जमको लेखो देतु ॥ २२ ॥ राग कान्हरो तुम्हरी कृपा गोबिंद गुसांई हों अपने अज्ञान न जानत । उपजत दोष नाहि सुनि समुझत रविके कृतहि उलूक न मानत ॥ सब सुख निधि हरि नाम महा मणि सो पायो नाहिन पहिचानत । परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी कैड़ी लगि मग मग रज छानत ॥

शिवको धन संतनको सरबसु महिमा वेद पुराण बखानत । इते मान इन सूर महा सठ सोइ नग बदलि विषय घर आनत ॥ २३ ॥ राग कान्हरो ॥ जोपें तुमहीं बिरद बिसारयो । तौ कहौ कहां जाय करुणा मय कृपन कर्म कौडारयो ॥ दीनदयाल पतित पावन जसु वेद बखानत चारो । सुनियत कथा पुरातन दिस दिस व्याध अजामिल तारो ॥ राग द्वेष विधि अविधि असुचि सुचि जिहिं प्रभु जहां सम्हारो । कियो न कबहुं बिलम्ब कृपा निधि सादर शोच निवारो ॥ इहं लगु नाम रूप गुण गण सब अज आपुन तन धारो । सूर दास स्वामी यह मन अस करत करत अब हारो ॥ २४ ॥ राग कल्याण ॥ सबनि सनेहो छांड़ि दियो । हा यदुनाथ जरा तन ग्रास्यौ प्रति मों उतरि गयो ॥ सोइ तिथि वार नक्षत्र लग्न सोई करन जोग सोई ठाठ ठयो । अब वे आंक फेरि नहि वांचत गत स्वारथ समयो ॥ बरस दोस में होत पुरानौं फिरि फिरि सब कोउ लिखत नयो । डरो रहत निर्लाज ईश ज्यों अति यहि तापु तयो ॥ सोइ धन धामु नामु सो कुल सोइ सोई यह वपु जिहि सब विढ़यो । अबहों सब को बदन खान लों चितवत दूरि भयो ॥ दारा सुतहित चित सज्जन सब काहुन शोचि लयो । संसृत दोष विचारि सूर धनि जे हरि शरण गयो ॥ २५ ॥ राग कल्यान ॥ जैसेंहि राखौ तैसेंहि रहों । जानत हौं दुख सुख सब जन को मुख करि कहा कहों ॥ कबहुंक भोजन देति कृपा करि कबहुंक भूख सहों । कबहुंक चढ़ौ तुरङ्ग महा गज कबहुंक भार बहों ॥ कमल नयन घन श्याम मनोहर अनुचर भयो रहों । सूर दास प्रभु भक्त कृपा निधि तुम्हरे चरण गहौं ॥ २६ ॥ राग कल्यान ॥ ओजु हों एक कोटे कैटरि हों । मोहि कहा डरपावत हो प्रभु अपने पूरे पर लरि हों ॥ हों तौ पतित सात पीरी को जो जिय ऐसी धरि हों । हों तौ फिरि वे सोई छे हौं तुमहि बिरद बिनु करि हों ॥ अब तौ तुम परतीति नसाई क्यों मन मानै हियरा । सूर दास सांची तब थपि हों जों हंसि देहौ बीरा ॥ २७ ॥ राग कल्यान ॥ मैं अघ सागर पैरिन लीनों । उन पतितन की देखा देखी पाछें शोच न कीनों ॥ अजा अहेल गणिकाहि आदि दै पैरि पारि गह्यो पैलो । सङ्ग लगाय बीचही छांड्यो निपटहि नाथ अकेलो ॥ मो देखत सब हंसत परस्पर तारी देदै ओटि । कोनी कथा पाछिलनु कीसी सुर दिखाय पुनि ईटि ॥ भव गंभीर नीर ही खूझत क्यों करि उतरो जात । नहीं अधार नाम अब लख्यनु तिन छित डुबकी खात ॥ तुम कृपाल करुणा मय केशव अब हों बूडत मांह । कह तब सूर चितवो करि हौ कै तुम दौरि पकरि हौ बांह ॥ २८ ॥ रागकल्यान ॥ तुम्हारे आगे हों नच्यो । सुनिये दानि दयाल देव मणि बहु बड़ रूप रच्यो ॥ कियो स्वांग जल थल हू मह्यं एकै तौ न बच्यो । शोधि सबै गुण गूढ दिखाये अन्तर हो जु सच्यो ॥ रीझत नहीं गोविन्द गुसांई क्यां कछु जाय जच्यो । इतनो तौ कहो सूर पूरो दै काहे मरत पच्यो ॥ २९ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ अबकैं माधो मोहि उधारि । मगन होतु भव सिंधु में कृपा सिन्धु मुरारि ॥ नीर अति गम्भीर माया मोह लहरि तरङ्ग । लरैं जात अगाध कों वगु गहे ग्राह अनङ्ग ॥ मीन इन्द्री अतिहि काटत मोट अघ सिर भार । भोये न पाई जात

जित कित मोह अरुझे सिवार ॥ क्रोध दम्भ भयान तृष्णा पवन अति झकझोर । नाहि चितवन देत सुत चिय नाम नौका ओर ॥ परयो बीच बिहाल बिह्वल सुनहु करुणा मूल । श्याम भुज गहि काढ़ि डारहु सूर ब्रज जन कूल ॥ ३० ॥ राग धनाश्री ॥ अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल । काम क्रोध को पहरि चोलना कंठ बिषय की माल । महा मोह के नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल ॥ भ्रम भोंये मन भयो पखावज उरप असङ्गत चाल । तृष्णा नाद करति घट भीतर नाना बिधि के ताल ॥ माया को कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल । कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहि काल ॥ सूर दास की सबै अबिद्या दूरि करहु नंदलाल ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ माधों मोहि काहे की लाज । जनम जनम ह्वै रहोमै ऐसो अभिमानी बे काज ॥ कोटिक कर्म किये करुणा मय या देही के साज । निशि बासर बिषया रस रुचितें कबहुं न आयो बाज ॥ बहुत बार जल थल जग जोयो भ्रमि आयो दिन देव । औगुण को कछु सकुच न शंका परि आई यह टेव ॥ अब अनखाय कहो घर अपने राखों बांधि बिचारि । सूर स्वान के पारन हारे आवत है दिन गारि ॥ ३२ ॥ राग केदारो ॥ कृपा अब कीजिये बलि जाउं नाहिन मेरे अनत कहूं पद अम्बुज बिनु ठाउं ॥ हौं असुची अकृती अपराधी सनमुख होत लजाउं । तुम कृपाल करुणा निधि केशव अधम उधारन नाउं ॥ काके द्वार जाय हौं ठाढ़ो देखत काहि सुहाउं । अशरण शरण बिरद ब्यापक तुवहौं कुटिल काम सुभाउं ॥ कलुषी परम मलीन हो सेंतेउ तौ न बिकाउं । सूर पतित पावन पद अम्बुज पारस क्यों परसाउं ॥ ३३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऐसी कब करि हो गोपाल । मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीन दयाल ॥ चित चरणनि नीरन्तर अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तन कर कंजलि दल माल ॥ ऐसो रहत लिखत छिन छिनु जम अपनो भायो भाल । सूर सु जस रागी न डरत मन सुनि जातना कराल ॥ ॥ ३४ राग केदारो ॥ थोरे जीवन भयो तन भारो । कियो न संत समागम कबहूं लयो न नाम तुम्हारो । अति उनमत्त निरंकुस मेगल निशि दिन रह्यो असोच । कामक्रोध मद लोभ मोह बस रह्यूं सदन अपोच ॥ महा मोह अज्ञान तिमिर में मगन भयो सुख जानि । तैलक वृष यों भ्रम्यो भ्रमहि भ्रम भज्यों न सारंग पानि ॥ गीध्यो ढोठ हेम तस्कर ज्यों अति आतुर मति मंद । लुब्ध्यो स्वादु मीन आमिष ज्यों अबलों क्यों नहिं फंद ॥ ज्वाला प्रीति प्रकट सनमुख ह्वै हठि पतंग बपु जारो । बिषया सक्त अमित अघ ब्याकुल सेा हम कछु न सम्हारो ॥ ज्यों कपि शीत हुतासन गुंजा सिमिटि होत लैलीन । त्यों सठ वृथा तजे नहिं अंग हठ रह्यो बिषय आधीन ॥ सेंबर फल सुरंग शुक निरखत मुदित भयो खग भूप । परसत चोंचु तूल उड्यत मुख तून छादित पशु कूप ॥ और कहां लगि कहों कृपा निधि या तन के कृत काज । सूर पतित तुम पतित उधारन गहो बिरद को लाज ॥३५॥ राग धनाश्री ॥ प्रभु मेरे गुण औगुण न बिचारो । धरि जिय लाज शरण आयेकी रबि सुत त्रास निवारो ॥ जो गिरि पति ससि धोरि उदधि में खेसुर तरु निज हाथ । मम कृत दोष लिखैवसुधा भरितऊ नहीं मिति नाथ । कपटी कुटिल कुचील

कुदर्शन अपराधी मति हीन । नाहिन और दियो कोउ ऐसो जाहि भजो हो दीन । जोग यज्ञ तप व्रत नहि कीनों बेद बिमल नहि भाख्यो । अति रस लुब्ध स्वान जूठनि ज्यों अनत नहीं मन राख्यो । जिहिं जिहिं जोनि फिरो संकट में तिहिं तिहिं इहै कमायो । काम क्रोध मद मोह ग्रसित ह्वै बिषय परम बिष खायो । तुम अनंत अनादि परिपूरण अघ मोचन सुखरासि । भजन प्रतापु नाहिने जान्यों बंध्यो काल की पासि । तुमकृतज्ञ सबही बिधि समरथ अशरण शरण मुरारि । कृपा निधान सूर बूड़त है लीजै भुजा पसारि ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ बिनती जन कासों करै गुसांई । तुम बिनु दोष दयालु देव मणि सब फीकी ठकुराई । अपने से कर चरण नैन मुख अपनी सी बुधि बांई । काल करम बस फिरत सकल प्रभु ते हमरी सी नांई । पराधीन पर बदन निहारत मानत मोह बड़ाई ॥ हंसे हंसे बिलखै दुख बिनु दुख ज्यों जल दर्पन झाईं ॥ लिये दिये चाहेते कोउ प्रभु सुनि समरथ जदुराई ॥ देव सकल व्यापार परस्पर ज्यों पशु दूध चराई । तुम बिनु और को जन कृपा निधि पावै पीर पराई । सूर दास के त्रास हरन को कृष्ण नाथ प्रभुताई ॥ ३७ ॥ राग नट ॥ हैं प्रभु मोहूते अतिपापी । घातक कुटिल चवाई कपटी मोह क्रोध संतापी । लंपट धूत पूत दमरी को बिषमु जाप नित जापी । काम बिबस का मिनिही के रस हठ करि मनसा थापी ॥ भक्ष अभक्ष अपै पीवन को लोभ लालसा धापी । मन क्रम बचन दुसह सबहिन सों कटुक बचन आलापी । जेते अधम उधारे प्रभु तुम मैं तिहि की गति मापी । सागर सूर बिकार जल भरो बधिक अजामिल बापी ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ बहुरि की कृपा कहा कृपाल । विद्यमान जन दुखित जगत में तुम प्रभु दीन दयाल । जीवत जाचत कन निरधन कर दरदर रटत बिहाल । तन छूटेते धर्म नहीं कछु जो दीजै मणि लाल । कह दाता जूद्रबै नहि दरसनु देखि दुखित कलिकाल । सूर श्याम को कहा निहोरो चलत बेदकी चाल ॥ ३९ ॥ राग नट ॥ मेरे हृदै नाहि न आवति हो गोपाल हो इतनी जानत । कपटी कृपन कुचील कुदर्शन दिन उठि बिषय बासना बानत । कदली कंटकुसाधु असाधुहि केहरि के संग धेनु बयाने । यह बिपरीति जानि तुम जनकी अंतर दै बिच रह्यो लुकाने । जो राजा सुत होइ भिखारी लाज परेते जाय बिकाने । सूर दास प्रभु अपने जनको कृपा करहु जो लेहु निदाने ॥ ४० ॥ राग नट ॥ कहावत ऐसे त्यागी दानि । चारि पदारथ दए सुदामहि अरु गुरु को सुत आनि । रावन के दस मस्तक छेदे कर गहि सारंग पानि । बीभीषण को लंका दीनी पूरबली पहिचानि ॥ मित्र सुदामा कियो अजाचक प्रीति पुरातन जानि । सूर दास सों कहा निठुरई नैननि हूं की हानि ॥ ४१ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ नाथ जू अबके मोहि उबारो । पतितन में बिख्यात पतितहों पावन नाम तुम्हारो ॥ बड़े पतित नाहिन पासगहूं अजामेलको हों जु बिचारो । भाजै नरक नाउं मेरो सुनि जमनि दियो हठतारो ॥ क्षुद्र पतित तुम तरे रमा पति अबन करो जिय गारो । सूरदास सांचो तब माने जो होय मम निस्तारो ॥ ४२ ॥ राग धनाश्री ।

वादिहि जनम गयो सिराय । ना हरि भजन न गुरुकी सेवा मधुबन बस्यो न जाय ॥ श्रीभगावत श्रवन नहि कीनों कबहूं रुचि उपजाय । सादर ह्वै हरिके भक्तनि के कबहुं न धोए पाय ॥ रिझए नहि कबहूं गिरिवर धर बिमल बिमल जसु गाय । प्रेम सहित पग बांधि घुंघरू सक्यो न अंग नचाय ॥ अबकी बार मनुष्य देह धरि कियो न कछू उपाय । भव सागर पद अंबुज नौका सूरें लेहु चढ़ाय ॥ ४३ ॥ राग सारंग ॥ छांड़ि मन हरि बिमुखनि को संग । कहा भयो पय पान करायें विष नहि तजत भुवंग ॥ जाके संगकुबुद्धी उपजे परत भजन में भंग । काम क्रोध मद लोभ मोहमें निसिदिन रहत उमंग ॥ कागहि कहा कपूर खवायें श्वान न्हवाये गंग । खरको कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग ॥ पाहन पतित बान नहि भेदत रीतो करत निषंग । सूरदास खल कारी कामरि चढ़त न दूजो रंग ॥ ४४ ॥ राग बिलावल ॥ तेरो तब तिहिं दिनके हितू हरि बिन सुधि करि हृदय तिही चितु आनि । जब अति दुख सहि कठिन काम गहि राख्यो हेा जठरल सेानित सानि ॥ जहां न काहू को गमदुःसह दारुण तन सकल बिधि बिषम खल खानि । समुझि धौं जिय माहिकोन सकत नहि बुधि बल कुलतिहिं जायो काको कानि ॥ वैसी आपदा तें राख्यौ तोष्यो पोष्यो जिय दयो मुख नासिका नयन पद पानि । सुनि कृतघ्नी निशि दिनको सखा आपु अब जेा बिसारेा करी वे पहि चानि ॥ अजहुं संग रहतु प्रथम लाज गहतु संतत शुभ चाहतु प्रिय जन जानि । सूर सुहृद मणि ईश्वर अंतर जामी सुनि सठ सठ झूठेा हठु कपट न ठानि ॥ ४५ ॥ राग नट ॥ जेालों सत्य सुरुप न सूझतु । तोलों मनु मणि कंठ बिसारे फिरतु सकल बन बूझतु ॥ अपनेाही मुख मलिन मंद मति देखत दरपन मांह । ताकालिमा मेटिवे कारन पचत पखारत छांह ॥ तेल तूल पावक पुट धरि धरि बनहि न विना प्रगासतु । कहत बनाय दीप की बातें कैसेहों तम नासतु सूरदास जब यह मति आई वे दिन गये अलेखे । कह जाने दिन कर की महिमा अंध नयन बिनु देखे ॥ ४६ ॥ राग केदारेा ॥ दिन दस लेहु गेाबिंद गाय । मोह माया लेाभ लागेा काल घेरे आय ॥ नीर में जैसे उठत बुद बुद देखते बिरलाय । दिखत को क्षिति जन्म झूठेा काक श्वान न खाय ॥ कर्म कागद बांचि देखेा जेा न मन पतिआय । अखिल लेाकहि भटकि आयेा लिख्यो मेटि न जाय ॥ स्फुरति के दस द्वार रुंधे इहहि जरा आय । सूर हरिको भजन कीजै जनम पातक जाय ॥ ४७ ॥ राग धनाश्री ॥ रे मन रामनाम सुमिरन बिनु जनम बादि खेायेा । रञ्चएक के सुख कारन कंत काल विगेायेा ॥ साधु संग भगति बिना तनु अकारथ जाय । जुआरीज्यों हाथ झारि ज्यों चले छिटकाय ॥ सुत दारा देह गेह सम्पति सुखदाई । इनमें कछु नाहि तेरेा काल अवधि आई ॥ काम क्रोध लोभ मोह तृष्णा मन मोह्यो । गेाबिन्द गुण चित बिसारि कौन नींद सेायेा ॥ सूर कहैं सचु बिचारि भ्रम भूल्यो अन्ध । राम नाम निज करनी औरे सकल बन्ध ॥ ४८ ॥ राग केदारेा ॥ रे मन गेापालसों करि हेतु । नामकी दृढ बारि करि लै उबरे तेरेा खेतु ॥ मन सुवा तन पींजरा रे बंध्यो रहत निकेतु । काल फिरत बिड़ाल तनु धरि अब धरें तेाहि खेतु ॥ बिष बिदारण

सेय हरिको उतरे सायरु सेतु । सूर भजि गोबिन्द को यों गुरु बताये देतु ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥ भजन बिनु जीवतहैं जैसें प्रेत । मलिन मंद मति डोलत घर घर उदर भरन के हेत ॥ मुख कटु वचन बकत नित निंदा सुजन सुखे दुख देत । कबहुं पापके पावत पैसा गाड़ि धूरि तहं देत ॥ गुरु ब्राह्मण अच्युत जन सज्जन जात न कबहुं निकेत । सेवा नहीं गोबिंद चरण की भवन नीच को खेत ॥ कथा नहीं गुण गीत सुजस हरि साधन देव अनेत । रसना सूर बिगारै कहां लों बूड़त कुंटब समेत ॥ ५० ॥ राग सारंग तबतें गोबिंद क्यों न संभारे । भूमि परेतें शोचन लाग्यो महा कठिन दुख भारे ॥ अपनें पिण्ड पेखिबे कारन कोटि शहस जिय मारे । उन पापनितें क्यों उबरैगो लोह थंभ अंक नारे ॥ अपने लोभ लालचि के कारन काहु पापतेन हारे । सूर दास जम कंठ गहेतें निकसत प्राण दुखारे ॥ ५१ ॥ राग सारंग ॥ इन राजस गुण कोन विगोयो । हिरण्य कश्यप हिरण्याक्ष आदिदै रावण कुम्भकरण कुलखोयो ॥ कंस केसि चांणूर महा बल कर नरजी जमुनाजल बोयो । जज्ञ समैं शिशुपाल सु योधा आन आसलै जोति समोयो ॥ ब्रह्मा महादेवसुर सुरपति अति बांचत फिरत महारस भोयो। सूरदास जे चरणशरण रहे ते जन निकट नींद भरि सोयो ॥ ५२ ॥ राग सारंग ॥ हरिके जन सबतें अधिकारी । ब्रह्मा महादेव तें को बड़ ताकी सेवा कबु न सुधारी ॥ जाचक पैं जाचक कह जाचै जो जांचै तौ रसना हारी । गणिका पूत शोभा नहि पावत जिनके कुल में कोऊ पितारी ॥ तिनकी साखि देखऊ हिरण्याक्ष्स रावण कुटुम्ब सहित भए खारी । जनप्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी बीभीषण आऊक राजारी ॥ शिला तरी जलमांझ शेतु बंध बलि बह चरण अहिल्या तारी । जे रघुनाथ शरण तकि आए तिनकी सकल आपदा टारी ॥ जिहिं गोबिन्द अचल ध्रुव राख्यो ग्रह दहनावर्त्ति देत दिशारी । सूरदास भगवन्त भजन बिनु धरती जननि बोझ कत मारी ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ॥ मन रे करि माधो सों प्रीति । काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांड़ि सबै बिपरीति ॥ ध्रुव ॥ भौंरा भोगी वन भ्रमेरे मोक्ष न माने मापु । सब सुमननि नीरसु करै रे कमल बन्धावै आपु ॥ सुनि परमिति प्रिय प्रेमकी रे चातिक चितवै वारि । धन आसा सबदु खसहै पै अनतन जांचै वारि ॥ देखऊ करनी कमलकी रे कीनों रविसों हेत । प्राण तजे प्रेमु ना तज्यो रे डूब्यौ सरहि समेत ॥ दीपकु पीर न जानही रे पावकु परे पतंग । तनतो तिहिं ज्वाला जरयौरे चित न भयो रस भंग ॥ मीन बियोगन सहिसकै रे नीर न पूछै बात । देखि तू ताकी गतिहि रे रति न घटी तन जात ॥ परनि परे वा प्रेम की रे चितुलै चढ़त अकाश । तहां चढ़ि ताहि जु देखही रे ओंपरि तजत उसाश ॥ सुमिरि सनेह कुरंग कोरे श्रवणनि राच्यौ रागु । धरनि सक्यो पशु पक्षुमनारे सर सनमुख उर लागु ॥ देखि जरनि जड़ नारि की रे जरति प्रेत के संग । चिता न चितु फीकौ भयो सुराची पियके रंग ॥ लोक बेद बर जेसलै रे नयननि देख्यौ नासु । चोरन जिय चोरी तजै रे वह सब सहै निवासु ॥ सब रसको रसु प्रेम है रे बिषई खेलै सारि । तनमन धन जोवन खस्यो रे तउ नहि मानी हारि ॥ तै जुर तन पायो भलो रे जान्यों साधुन साजु । प्रेम कथा अनुदिन सुनी रे तऊन उपजी लाजु ॥

सदा संघाती आपनो अरु जियको जीवनि प्रान । सुतौ बिसारयौ सहजही रे हरई ईश्वर भगवान ॥ वेद पुराणनि सुनि सबै रे सुर तरु सेवै जाहि । महामोह अज्ञान में रे क्यों न सम्हारे ताहि ॥ खग मृग मीन पतंगलों रे मैं सोधे सब ठौर । जल थल जीव जिते किते रे कहूं कहां लगि और ॥ प्रभु पुराण पावन सखारे प्राणनही के नाथ । परम दयाल कृपाल कृपा निधि जीवन जिहिके नाथ ॥ गर्भ बास अति त्रासमे रे जहां न एको अंगु । सुनि सठ तेरे प्राण पति रे तहं उन छांड्यौ संगु ॥ दिन राखत पोषत रहे रे जैसें चोली पान । वा दुखतें तोहि काढ़िके रे गहि दीनों पथ पान ॥ जिहिं जड़तें चेत न कियो रे रचि गुण तत्व विधान । चरण चिकुर कर नख दिये रे नयन नासिका कान ॥ असन वसन बहु विधिदए रे औसर औसर आनि । मात पिता भैया मिलैरे नइ रुचि नइ पहिचानि ॥ सजन कुटुम्ब परि कर बढ्यौ रे सुत दारा धन धामु । महा मोह विषई भयो रे चित आकरष्यौ कामु ॥ खान पान परि धाम में रे जोबन गयो सब बीति । ज्यों बिटपर चिय संग बस्यो रे भोर भए भयो भीति ॥ जैसें सुखही धन बढ्योरे तैसें तनहि अनंगु । धूम बढ्यौ लोचन खसे रे सखा न सूझो संगु ॥ जमु जान्यों सब जग सुन्यों रे बाढ्यों अजसु अपार । बीच न काहू तबकियो जब दूतन दीनी मार ॥ कोजाने कै बार मरयौ रे ऐसं कुमति कुमीच । हरि सों हेतु बिसारि कैरे सुख चाहत है नीच ॥ जोपें जिय लज्जा नहीरे कहा कहों सौ बार । एकहि अंकुन हरि भज्यौ रे सुनि सठ सूर गंवार ॥ ॥ पद ४ ॥ राग धनाश्री ॥ जनम सिराने अटके अटके । सुत सम्पति गृह राज मानको फिरो अनतही भटके ॥ कठिनि जवनिका रची मोहकी तोरी तोन जाय चटके । नाहरि भजन न तृपति विषय करि रह्यौ बीचही लटके ॥ सब जंजाल सुइंद्र जाल सम ज्यों बाजी गर नटके । सूरदास शोभा न शोभियत पिय बहुन धन मटके ॥ पद ५ ॥ राग धनाश्री ॥ यह सब मेरी ये कुमति । अपनेही अभिमान दोष दुख पावतु अति जैसेके हरि उझकि कूप जल देखि निजु प्रति । कोपि परो मद भरमु न जान्यों भई है सुगति ॥ ज्यों गज सेल फटिक में देख्यौ दसननि हति । जो तू सूर सुखहि चाहत है तो करि विषै विरति ॥ पद ६ ॥ राग धनाश्री ॥ हौं महा पतित अरु दूजे अभिमानी । परमारथ सों विरति विषै रति भाव भगति मैं कबहुं न जानी ॥ निसि दिन दुखद मनोरथ करि करि धावतहू तृष्णा न बुझानी । शिर पर काल नीच नहि चितवत आयु घटत अंजुरीको पानी ॥ विमुखनिसों रति जोरि साधुनिसों मानों नहुती कबहुं पहिचानी । तिन बिनु प्राण रहत निशि वासर जिहिं सब दिन रस रीति बखानी ॥ माया लोह लोभ के लीने जानि न वृंदावन रज धानी । नव किशोर जलद तन सुन्दर बिसरे सूर सकल सुख दानी ॥ पद ७ ॥ इत ने दिन हरि सुमिरन बिन खोए ॥ पर निंदा रसना के रस में अपने करतल बोए । विविध रुचिर अंग अंगदै मदन वसन बनाए धोए ॥ तिलक चटक दै चले खासिहै विखइनि के सुख जोए ॥ सब जग कंपित काल व्याल डर सुर ब्रह्मादिक रोए ॥ सूर दास अधमन की को गति उदर भरे भरि सोए ॥ पद ८ ॥ राग बिलावल ॥ हरि के जनकी अति ठकुराई ॥ महाराज ऋषि सुर नर बंदत रहत लजाई ॥

निर्भय देश राज ताही कों लोगन मन उत्साह। काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि भए चोरतें साह ॥ दृढ विस्वास कियो सिंहासन तापर बैठेभूप ॥ जस सो बिमल छत्र सिर सोभित राज त परम अनूप ॥ हरि पद पंकज प्रिया प्रेम रस ताही के रंग राते। ॥ संचीज्ञान न औ सर प्रावत कहत न बात सकाते ॥ अर्थ धर्म दोउ रहे दूरिदुरि काम मोक्ष सिर नायो ॥ बिनय बिवेक बिचिच पेारिया सबैं न काहू पायो। अष्ट महा सिद्धि आगे ठाढ़ी कर जोरे डर लीनी। छुरी दार वैराग बिनोदी झोरिके बाहरि कीनी ॥ माया काल कछू नहि व्यापै या रस रीति जुजानें। सूरदास नरतन तो पायो गुरुप्रसाद पहिचाने ॥ ५९ ॥ ॥ राग सारंग ॥ आपनी भक्ति दै भगवान। कोटि जों लालच दिखावै नाहिने रुचि आन ॥ महा माचलु मरनकौं कछु सोच नाहीं मोहि। किये पनुहों रहतु द्वारे आजु तें थरु तोहि ॥ जादिनतें यह जनमु पायो यहै याकी रीति। बिषै बिष हठि खातु टरत न करत कछू अनीति ॥ यथा किन्नर यूथ किंकर तऊ टरी न टेक। कोपि गयो जमपुरी तहां उपरयो धार अनेक ॥ नाहिन काचो सुनि कृपा निधि कहत कहा रिसाय। सूर प्रभु यह तुम्हे निहोरो डारि हौं कठुराय ॥ ६० ॥ राग धना श्री ॥ माधो तौहू सकुच शरण आवे की होतु जु निपट निकाजु। यद्यपि बालु बिहुन बैभव सों सेाऊ करत कृपा तेालाजु ॥ तृन जुत सलिल बहतु बरपेाथतु पकरत सेाउ नरजात। नदिक वृक्ष मूल आश्रित हित तऊ आपु अकुलात ॥ तुम प्रभु अजित अनाथ लेाक पति हौं अजान मति हीन। कलुअन होत निकट उत लागत मगन होत उतदीन ॥ परिहस प्रबल शूल निशि बासर तातें यह कहि आई। सूरदास कृपाल शरण गत भये सु कौन जिहि रति पाई ॥ ६१ ॥ राग सेारठ ॥ पतित पावन दीन दयाल अनाथ के नाथ। संतत सब लेाकनि श्रुति गावत यह गाथ ॥ मेातें न कोउ पति तन को अनाथ कों दीन। काहे न मेाहि तारिये जन कवन अंगु हीन ॥ द्विज गणि का गति दायक गज मेाचन ऋषि आप। अर्जुन संताप चाण हरण अचि ताप ॥ मनसा वाचा कर्मना कछु कहत नाहिन राखि। सूर सकल अन्तर के तुमही हौ साखि ॥ ६२ ॥ राग बिलाबल ॥ जनमु जनमु जब जब जिहि जिहि जुग जहां जहां जन जाय। तहां तहां तव चरण कमल रति जेावै सु दृढ रहाय ॥ श्रवण सुजस सारंग नाद बिधि चातक बिधि सुख नाम। नयन चकोर संत संतत शशि कर अर्चन अभिराम ॥ सुमति स्वरूप संचतु सरधा बिधि उर अम्बुज अनुराग। तिन प्रति धनि अलि गुंज मनोहर आवत प्रेम पराग ॥ औरें सकल सुकृत श्रीपति हित प्रति फल रहत सु प्रीति। नीति चई सुख दुख सूरज प्रभु दीजै भजन प्रतीति ॥ ६३ ॥ राग सारंग ॥ तुम्हरी भक्ति हमारे प्रान। छूटि गये कैसें जन जीवहि ज्यों प्रानी बिनु प्रान। जैसें गगन नाद सुनि सारंग बधे बधिक बिनु बान। ज्यों चितवे शशि और चकोरहि देखत ही सचु मान ॥ ज्यों पतंग दीपक सों लेाभ्यों पानी मीन सु ठान। सूर दास प्रभु हरि गुण मीठे नित प्रति सुनियत कान ॥ ६४ ॥ राग सारंग ॥ यहै करत अनेक जनम गये मन संतेाष रखायेा। सुनि दिन दानि दुरासा लाग्यो सबै लेाक फिरि आयेा ॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल श्रीतल तहीं तहीं उठि धायेा

काम क्रोध मद मोह अगनि तें काहू न तनक बुझायो ॥ सक चंदन बनिता बिनोद सुख यह दव जड़नि बतायो । मैं अजान अकुलाय अधिक लै जरत माझ घृत नायो ॥ भ्रमि भ्रमि अब हारयो हियरा ए देखि अनल जगु छायो । तुम्हरि कृपा विनु सूर श्याम प्रभु कोहू श्रम न नसायो ॥ ६५ ॥ राग धनाश्री ॥ तातें जानि भजे बनवारी । शरण आये की ताप निवारी ॥ जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी । हिरण कशिपु को देह बिदारी ॥ ध्रुव निर्भय पद दियो मुरारी । अम्बरीष की गर्भ गति टारी ॥ द्रुपद सुता जब प्रकट पुकारी । गहत चीर हरि नाम उबारी ॥ गज गणिका गौतम त्रिय तारी । सूर दास सठ शरण तुम्हारी ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ भक्ति बिना जो कृपा न करते तोहों आस न करतो । बहुत पतित उद्धार किये तुमहों ताकों अनुसर तो ॥ मुख मृदु बचन जान मति जानहु शुद्ध पंथ पगु धर तो । सुजन वेष रचना प्रति जन्मनि आयो पर धन हर तो ॥ कर्म वासना कबहूं छांड़ी आप पाप आचर तो । धर्म ध्वजा अन्तर कछु नाहीं लोकं दिखावत फिर तो ॥ पर त्रिय रति अभिलाष निशा दिन मनु पिठरी लै भर तो । दुर्मति अति अभिमान सांन बिनु सब साधन तें टर तो ॥ उदर अखात विवर पूरन हित मित्र बंधु हों लरतो । रसना स्वाद सिथिल लम्पट ह्वै अघटित भोजन निरतो ॥ यह व्यौहार लिखाय प्रात दिन पुनि जीयो पुनि मर तो । रवि सुत दूत वारि नहि सकते कपट मनां उरवर तो ॥ साधु शील सद्रूप पुरुष कों अपसर बहु उचर तो । औघड़ असत कुचीलन सों मिलि माया जल में तर तो ॥ कबहुंक राज मान मद पूरण काल हुतें नहि डर तो । मिथ्या वाद आप जश सुनि सुनि मूंछहि पकरि बिगर तो ॥ यहि विधि उच्च अवच तन धरि धरि देशहि देश विचर तो । तहां सुख मानि विसारि नाथ पद अपने रंग विहर तो ॥ अब मोहि राखि लेहु मन मोहन अधम अंग पद परतो ॥ खर कूकरकी नाइ मानि सुख विषय अगनि में जरतो । तुम गुण की जैसें मति नाहिन हों अघ कोटि विचर तो ॥ तुम्हें हमैं प्रति वाद भयेतें गौरव ताकों गिरतो । मोतें कछून उबरी हरिजू आयो चढत उतर तो ॥ अजहूं पतित सूर पद तजतो जो औरहु निस्तर तो ॥६७॥ रागधनाश्री ॥ अद्भुत जश विस्तार करनकों हम जनको बहु हेत । भक्त पावन कोउ कहतन कबहूं पतित पावन कहि खेत ॥ जय वीजयको कथा न कछुवै दसमुख वध विस्तार । यद्यपि जगत जनन कों कर्त्ता सुनि सब उतरत पार ॥ शेष नागकेऊपर पौढत तेतिक नाहि बड़ाई । यातु धानि कुच गिरि मरकत तब तहां पूर्ण तापाई ॥ धर्म कहे सर शयन गंग सुत तेतुक नांहि संतोष । सुत सुमिरत आतुर द्विज उधरत नाम भयो निर्दोष धर्म कर्म अधिकारिन सों नहि तुम्हरे ना कछु काज । भूभर हरण प्रकट तुम भूतखगावत संत समाज । भार हरण विरदावलि तुम्हारी मेरे कों न उतारी । सूर दास सत कार कियेते ना कछु घटे तुम्हारो ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि जू हों यातें दुख पाव । श्री गिरिधरण चरण रतिन भई तजिन विषै रस माच । हुतो आश्च तब कियो असद् व्यय करीन व्रज बन याच । पोषे नहीं तुव दास प्रेम सो पोष्यो अपनो गाच । भवन सवारि नारि रस लोभ्यो सुत बाहन जन आच । महानु भाव पद निकट न परसे

जान्यो न कृत विधाच। छल बल करि जित तित हरि पर धन धायो सब दिन राच। शुद्ध शुद्ध बहु बोझ बह्यो सिर कृषि जो करयो लै दाच। हृदै कुचील काम भूतृष्णा जल कलि मल दै पाच। ऐसे कुमति जाट सूरज को प्रभु बिन कोन उधाच ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ महा पतित पावन जानि शरण आयो। उदधि संसार शुभ नाम नौका तरन अटल अस्थान निज निगम गायो। व्याध अरु गीध गणिका अजामिल द्विजहि चरण गौतम नारि परसि पायो। अंत औसर अहं नाम उच्चार करि सुमिरत हि गज ग्राहते छुड़ायो। अबल प्रहलाद बलि देत सुख हीन चित दास ध्रुव तब चरण शीस नायो। पांडुसुत विपति मोचक महा दासके द्रोपदी चीर नाना उढ़ायो। भक्त बच्छल कृपा नाथ अशरण शरण भोर भूतल हरण जन सुहायो। सूर प्रभु चरण चित चेत चिंतन करत ब्रह्म शिव शुक शनक संग धायो ॥ ७० ॥ राग धनाश्री ॥ प्रभु हों सब पतितन को टीको। और पतित सब द्योस चारिके हौंतो पतित जन्मही को। बधिक अजामिल गणिका तारी और पूतनाही को। मोहि छाड़ि तुम और उधारे मिटे सूल कैसे जीको। कोउ न समरथ सेध करन को खेंचि कहत हौंजी को। मरियत लाजि सूर पतितन में कहत सबनि में नीको ॥ ७१ ॥ राग रामकली ॥ अनाथ के नाथ प्रभु कृष्ण स्वामी श्री नाथ सारंग धर कृपा करि मोहि सकल अघहरण हरि गरुड गामी। परयो भव जलधि में धरि हाथ काढ़ि मम दोष जिनि धरो चित काम कामी। सूर विनती करे सुनहु नंद नंद तुम कहा कहो खोलि के अंत जामी ॥ ७२ ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे प्रभु अनाथ के स्वामी। कहियत दीन दास पर पीरक सब घट अंतर जामी। करत विवस्त्र द्रुपद तनया को शरण शब्द कहि आयो। पूर्ण अनंत कोटि परिवसननि अरि को गरब गंवायो। सुत हित विप्र कीर हित गणिका पर स्वारथ प्रभु पायो। छिनु चिंतन बन शाप संकटते गज ग्राहते छुड़ायो। तव तनबदन देखि अविगत को जन लगु वेषु बनायो। जे जन दुखी जनि भए तेरिपु हति हति सुख उपजायो। तुमरि कृपा जदु नाथ गुसाईं किहि किहि अघ न गवायो। सूर दास अंध अपराधी सो काहे विसरायो ॥ ७३ ॥ राग धनाश्री ॥ दीन जन क्यों करि आवै शरण। भूल्यो फिरत सकल जल थल मग सुनि चैताप हरण। मम अनाथ अविवेक नयन विनु सुकृत शब्द सुनि धावै। पद पद परत कर्म तम कूपहि को करि कृपा बचावै ॥ नहि कर लकुटि सुमति सत संगति किहि अधार अनुसरई ॥ प्रबल अपार मोह निधि दश दिशि सुधो कहा अब करई ॥ अघटित रटत सभीर सुमत खनि निगम ऐन नहि पावै। सूर श्याम पदनख प्रकास विनु क्यों करि तिमिर नशावै ॥ ७४ ॥ राग बिलावल ॥ तुमरो नाम तजि प्रभु जग दीश सुतो कहो मेरे और कहा बलु। बुधि बिबेक अनुमान आपुने सुधो करहु सब सुकृत निकौं फलु। बेद पुराण सुमृति संतन को यह आधार मीन को ज्यों जलु। अष्ट सिद्धि नव निधि सूर के संपति बिनु सुख कछू कहा बलु ॥ ७५ ॥ राग धनाश्री ॥ मेरो मन मति हीन गुसांई। सब सुख निधि पद कमल बिसारे भ्रमत स्वानकी नाईं। दृथा अमित भाजन अब-

खेह त सूने सदन मसान । यहि लालचि अटक्यों कैसेहू तृपतिन मानत प्रान । जहं जहं जात तहां तहं त्रासत करत मिलन पद त्रान । कौन काज कारन कुबुद्धि मठ भटकत एते मान ॥ परम दयाल विश्वपालक प्रभु सकल हृदै निज नाथ । ताहि छांडि यह सूर महा जड, भ्रमत भ्रमित के साथ ॥ ७६ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसों पतित न और हरे । जानत हो प्रभु अंतरजामी जोमैं काम करे । ऐसो अंध अधम अबिवेकी खोटनि करत खरे । विषई भजे विरक्तन सेये मन धन धामधरे । ज्यों माघी मृग मद मंडित तन पर हरि पूज्य परे । त्यों त्यों मूढ विषै गुंजा गहि चिंता मणि बिसरे । कुंवर कान्हो पाषंड काम बस भूप भवन निसरे । एकै इहै जानि अब लंघन वैसेहि पतित तरे । हारे त्रास करत जमकिंकर सुनि ममनाम डरे । सूर पतित तुम पतित उधारन बिरदकी लाज करे ॥ ७७ ॥ राग कान्हरो ॥ ठाकुर भले बुरे तौ तेरे । हमरे कुलकी लाज बड़ाई बिनती सुनों प्रभू मेरे । आनंदे सब रंक भिखारी मैं सब छाडेयौ होत अनेरे । सब तजि तुम शरणा गत आयो दृढ करि चरण गहेरे । तव प्रसाद हम बदत न काहू निडर भए घर घेरे । सूर दास प्रभु तुमरि कृपातें पाए सुख जु घनेरे ॥ ७८ ॥ राग धनाश्री ॥ तुम कब मोसों पतित उधारयो । काहे को हरि बिरद बुलावत बिनु मसकति को तारयो । व्याध गीध पूतनाजो तारी तिन को कहा निहोरो । गणिका तरी आपनी करनी नामु भयो प्रभु तेरो । अजामेलद्विज जनम जनमको हुतो पुरातन दास । नेक चूकतें यह गति कीनी पुनि बैकुंठहि बास ॥ भक्त जानि के सब जन तारे तो क्यों जाए खूट । तब जानि हौं जु मोहि तारि हो सूर कूर कबि टूट ॥ ७९ ॥ राग धनाश्री ॥ मैं तो अपनी कही बड़ाई ॥ अपने कृतते हों नहि बिरमतु सुनि कृपाल ब्रजराई । जीवन तजे स्वभाव जीवको लोक बिदित दृढ ताई । तो क्यों तजे नाथ अपनों पनु मह प्रभु की प्रभुताई । पांच लोक मिल कह्यो तुमारो नहि अंतर मुखताई । तब सुमिरन छल दुर्भर के हित माला तिलकु बनाई ॥ कांपनु लागी धरा पापतेंताडि निदेषु जुडाई ॥ आपुन भए उधारन जगको मैं सुधि नीके पाई ॥ अब मिथ्या तब जाप ज्ञान सब प्रकट भई ठकुराई । सूर दास उद्धार सहज गति चिंता सकल गंवाई ॥ ८० ॥ राग नट ॥ जाके हरि जू को बरु ताके धौं कोन को डरु । काहे जियमें सोचकीजै कोहै हो ऐसो अबरु । सबहिन के नाथ जीवन याही के हाथ बे अजर अमर अजित अकाथ ॥ सोई बसत साथ शरण सदा अनाथ बदत बेद बिदुष देखो धौं गावत गाथ । सुनों धौं जिनकी भांति सकल चखत नीति अपने चित चकित रहत । रबि न तपत अति बायु न तजत गति डोलत न शेष सिरसिंधु न बढ़त । कालके मारन हार प्रकट धरनि बसि अनाथ अभय कर इहां हुलसत । प्रकटसूर के स्वामी अखिल अंतर जामी असुर अबद्ध दुष्ट अजहूं ग्रसत ॥ ८१ ॥ राग कान्हरो ॥ सोई रसना जो हरि गुण गावै ॥ नैननिकी छबि यहे चतुरता सोइ मुकुंद मकरंदहि धावै ॥ निर्मल चिततो तेई सांचौ कृष्ण बिना जिहि अबरुन भावै ॥ श्रवणनिकी जु यहै अधिकाई हरि जस नित प्रति श्रवन नचावै ॥ करतेई जु श्याम जुकों सेवै चरणनि चलि

वृन्दाबन धावै ॥ सूरदास कहै बलि ताकी हैं जो संतनि सों प्रीति बढ़ावै ॥ ८२॥ राग धनाश्री ॥ रे बौरे छाडि विषै को रचिबौ ॥ कततूं सुआ होत सेंवरि कौ अंत कपास न पचिबो ॥ अनङ्ग तरङ्ग कनक कामिनि ज्यों हाथ रहेगो पचिबो । तजि अभिमान कृष्ण कहिबो रे न नरक ज्वाला तचिबो ॥ सद गुरु कह्यौ कहोहों तोसों कृष्ण रतन धन सचिबो । सूर दास स्वामी सुमिरन बिनु योगी कपि ज्यों नचिबो ॥ ८३ ॥ राग धनाश्री ॥ सबै दिन एकसे नहि जात । सुमिरन भगति लेहु करि हरिकी जो लगि तन कुशलात ॥ कबहुंक कमला चपल पाय कें टेढ़े ई टेढ़े जात । कबहुंक मग मग धूरि टटोरत भोजन कों बिलखात ॥ बाला पन खेलत ही खोयो भक्ति करत अरसात । सूर दास स्वामी को सेवत पैहो परम पद तात ॥ ८४ ॥ राग गुर्जरी ॥ हरि रस कबहु तो जाय लहिये । बाद बिवाद गरब ईरषता यतो दख्ड सब सहिये ॥ कोमल बचन दीनता सब सों सदा मुदित चित रहिये । सोक गये उपज्यौ रहै आनंद ऐसे ए धर्म निबहिये ॥ इतनी जो उपजे मन महिया यह सुख कहंलों कहिये । सूर सुकृत तेहि अष्ट महा सिधि जो भुगते सो हूये ॥ ८५ ॥ राग सारङ्ग ॥ देखो हरिको एक सुभाय । इते गंभीर उदार उदधि प्रभु जान सिलोमणि राय ॥ राई जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान । सभुझि दास अपराध सिन्धु, सम बूंद न एकौ मान ॥ दृष्टि परस कों होत चरण पर जानत हो जिय ऐसो । बिमुखहु भये कृपा या सुख की जब चितवौ तब तैसी ॥ भक्त बिरह कातर करुणा मय डोलत पाछे लागे । सूर दास ऐसे प्रभु कों कत दीजत पीकि अभागे ॥ ८६ ॥ राग केदारो ॥ तुम्हारो कृष्ण कहत कह जात । बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरुवर के पात ॥ शीत वायु कफ कण्ठ बिरुध्यौ रसना टूटी बात । प्राण लिये जम जात मूढ़ मति देखत जननी तात ॥ छिनु एक माह कोटि जुग बीतत नरक की पाकें बात ॥ यह जग प्रीति सुआ सेंवरि ज्यों चाखत ही उड़ि जात ॥ जम की बांध नियर नहिं आवै चरणनि चित्त लगात । कहत सूर इथा यादेही इतनौ कत इतरात ॥ ८७ ॥ रागकेदारो ॥ जौ मन कबहु हरि कौ जांचै । आन प्रसङ्ग उपासन छांडै मन क्रम वच अपने उर सांचै ॥ निशि दिन नाम सुमिरि जशु गावै कल्पन मेटि प्रेम रस मांचै । यह व्रत धरै लोक मह विचरै सम करि गनै महा मणि कांचै ॥ शीत उदय सुख दुख नहि जाने आये गये शोक नहि गांचै । जाय समाय सूर मह निधि मैं बहुरि न उलटि जगत मह नांचै ॥ ८८ ॥ राग धनाश्री ॥ सोइ भलो जो हरि जश गावै । श्वपच गरिष्ट हेत रज सेवक बिनु गोपाल द्विज जन्म नसावै ॥ जोग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत जहं जहं जाय तहां डहकावै । होय अटल भगवन्त भजन तें अन्य आस नश्वर फल पावै ॥ कहूं न ठौर चरण पङ्कज बिनु जो दशहु दिसि फिरि फिरि आवै । सूर दास प्रभु साधु सङ्ग तें आनंद अभय निशान बजावै ॥ ८९ ॥ रागटन ॥ मन क्रम वचन तू गोविन्द सुधिकरि। सुचि रुचि साधु समाधि आंनि उर दीन बंधु करुणा मय उर धरि ॥ मिथ्या बाद बिवाद छांड़ि तू विषय लोभ सम माया पर हरि । चरण प्रताप आनि उर अन्तर औरे सुख या सुख के तर हरि ॥ बेदहि कह्यो सुन्यत यों आयो पावन पतित नाम निज नर हरि ॥

जाको सुजस सुनत अरु गावत जाय पाप कापै एक भर हरि । अजहूं चेति मूढ़ चहूं दिशि ते आयो काल अगनि ज्यों झर हरि ॥ सब यह जाल जञ्जाल परैगो हरि बिनु कौन करैगो धर हरि । अति भय भीत निरखि सागर तन घन ज्यौं आनि रहेगो छर हरि ॥ सूर काल वर ब्याल ग्रसत हैं श्री गोविंद प्रति परि किनि थर हरि ॥ ९० ॥ ॥ राग सोरठ ॥ अब मन मानि धौं राम दुहाई ॥ मन वच क्रम हरि नाम हृदय धरि ज्यों गुरु वेद बताई ॥ महा गर्त्त दस मास गरभ वसि अध मुख शीश रहाई । इतनो कठिन सही तें कत कों अजहु न तू समुझाई ॥ मिटि गये राग द्वेष सब तनके जिन हरि प्रीति लगाई । सूर दास ए नाम कौ महिमा पतित परम गति पाई ॥ ९१ ॥ राग सोरठ ॥ करि मन हरि सों नेह सांचौ । निपट कपट की अटपटी छांड़ि दै इन्द्रिय बस राखहि किनि पांचौ ॥ सुमिरन कथा सदा सुख दायक विषय परम विषु बांचौ । सूर दास प्रभु हित कै सुमिरौ जीत्यौ आनंद करि के नांचौ ॥ ९२ ॥ राग कल्यान ॥ धोखेही धोखे डहकायो । समुझि न परी विषय रस गीधो हरि हीरा घर मांझ गंवायो ॥ ज्यौं कुरङ्ग जल देखि पिवन कों प्यास नगई दहौं दिशि धायो । जनम जनम बहु कर्म किये हैं जन जन पै आपुनप बंधायो ॥ ज्यों शुक सेंवरि सेई आशा लगि निशि वासर हठि चित्त लगायो । रीतौ परो जबै फल चाख्यौ उड़ि गयो तूल तवारो आयो ॥ ज्यों कपि डोरि बांधि बाजीगर कन कनको चौहटे नचायो । सूर दास भगवन्त भजन बिनु काल ब्याल पै छपै खवायो ॥ ९३ ॥ राग गुर्जरी ॥ प्रभु बिनु कोउ काम नआयो । यह झूठों माया के लोने रतन सो जनम गंवायो ॥ कञ्चन कलश विचित्र चित्र किये रचि रचि भवन बनायो । तासैं ते तत छिनु गहि काढ्यौ पलु एक रहत न पायो ॥ हो तुहरे सङ्ग आउंगो कहि चिय धुति धुति धन खायो । चलत हरी मुख मोरि चोरि सब एकौ परु नाहिन पहुंचायो ॥ बोलि बोलि सुत स्वजन मित्रजन लीनों सु जशु सुहायो । परयो जु काज अन्त अन्तक सों उहि ठिग आनि बंधायो ॥ कोटि जनम भ्रमि भ्रमि हों हार्यो हरि पद चित न लगायो । और पतित तुम बहुत उधारे सूर कहा बिसरायो ॥ ९४ ॥ ॥ राग गुर्जरी ॥ रे मन मूरख जनम गंवायो । करि अभिमान विषय सों राच्यौ श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार फूल सेंवर को सुन्दर देखि भुलायो । चाखन लाग्यौ रुई उडि गई हाथ कछू नहिं आयो ॥ कहा भयो अब के मन शोचे पहिले नाहि कमायो । कहत सूर भगवन्त भजन बिनु सिर धुनि धुनि पछितायो ॥९५॥ राग सारङ्ग ॥ फिरि फिरि सो दुहै करतु । जैसें प्रेम पतङ्ग दीपक सों पावकहूं न डरतु ॥ भव दुख कूप ज्ञान करि दीपक देखत प्रकट परतु । काल ब्याल रज तम विष ज्वाला कत जड़ जन्तु जरतु ॥ अहि हित स्वादु विवाद सकल मति इन लगि भेषु धरतु । यहि विधि भ्रमतु सकल निशि दिन गत कछू न काज सरतु ॥ अगम सिंधु जतननि सजि नौका हठि क्रम भार भरतु । सूरदास के यहै व्रत कृष्ण भजि भवजल निधि उतरतु ॥ ९६ ॥ राग केदारो ॥ रह्यो मन सुमिरन को पछितायो । बहुतनु राचि राचि कै बिरच्यो कियो आपु मन भायो ॥ मन छत नदी तरंगतें जबही बह्यौ चल्यौ जु सवायो । मेल्यौ काल लाल जब खैंचे भयो

मीन को हायो ॥ कीर पढ़ावत गणिका तारी अजामेल सुख पायो । ऐसो हरि गुण नाहिन दूजो दूरि करे जम दायो ॥ ९७ ॥ राग धनाश्री ॥ भक्ति कब करिहो जनमु सिरानों ।।कोटि जतन कीनै मायाको तौउन मुग्ध अघानों । बालापन खेलतही खोयो तरुण भए गरवानों । काम क्रोध लोभ के बस हरि चेत्यौ नहीं अयानों ॥ दृष्टि भये कफ कंठ विरूंध्यो शिर धुनि धुनि पछितानों । सूर श्याम के नेक विलोकत भव निधि जाय तिरानों ॥ ९८ ॥ राग धनाश्री ॥ इत उत चितवत जनम गयो । दून माया तृष्णा के काजें दुऊं दृग अन्ध भयो ॥ जनम कष्टतें मात दूखित भई अति दुख प्राण सह्यौ ॥ व त्रिभुवन पति विसरि गए त्यों सुमिरत क्यों न रह्यौ । श्रीभागवत सुन्यौं नहि कबहूं बीचहि भटकि मुयो । सूरदास कहैं सब जग बूड्यौ जुग जुग भक्त जियो ॥ ९९ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ सबै दिन गए विषय के हेत । देखतही आपुनपो खोयो केश भए सब सेत ॥ कंध्यौ स्वास मुख बैन न आवत जैसे चन्द गह्यौ शिर केत । तजि गंगोदक पीय कूप जल पूजत हाड़ प्रेत ॥ करि प्रमाद गोविन्द विसारे बूड्यौ सवनि समेत । सूरदास कछु खरचु न लागत कृष्ण सुमिरि किनि लेत ॥ १०० ॥ राग सारंग ॥ जेहि तन हरि भजिबे न कियो । सो तन सूकर स्वान सीन ज्यों यहि सुख कहा जियो ॥ जो जग दीख ईश सबहिन को तहीं न चित्त दियो । प्रकट जानि जदुनाथ विसारयौ आशा मद्य पियो ॥ चारि पदारथ के प्रभु दाता तिन्हे न मिल्यौ हियो । सूरदास रसना बस अपने टेरि न नाम लियो ॥ १०१ ॥ राग धनाश्री ॥ हरिसों मीत न देख्यौ कोई । विपति काल सुमिरत तिहिं औसर आनि तिरीछो होई ॥ ग्राह ग्रहें गजपति मुकरायो हाथ चक्र ले धाये । तजि बैकुंठ गरुड़ तजि श्रीतजि निकट दास के आये ॥ दुर्वासा को आपु निवार्यौ अम्ब रीष प्रति राखी । ब्रह्मलोक पर्यंत फिर्यौ तहां देव अनल मुनि साखी ॥ लाखा गृहतें जरत पांडुसुत बुधिबल नाथ उबारे । सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे ॥ १०२ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि जू तुमतें कहा न होय । बोलै गुंग पंगु गिरि लंघै अरु आवै अन्धा जगु जोय ॥ पतित अजामिल दासी कुबिजा तिनहूं तो कलिमल सब धोय । रंक सुदामा कियो इन्द्र सम पांडवहित कौरव दल खोय ॥ बालक मृतक जिवाय दए गुरु जों आई दरबारें रोय । सूरदास प्रभु इच्छा पूरन श्रीगोपाल सुमिरऊ सब कोय ॥ १०३ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ क्यों तू गोविन्द नाम बिसार्यौ । अजहूं चेति भजन करि हरिको काल फिरत शिर ऊपर भार्यौ ॥ धन सुत दार काम न आवै जिनहि लागि आपुनपो खोयो । सूरदास भगवन्त भजन बिनु चल्यौ पछिताय नयन भरि रोयो ॥ १०४ ॥ राग धनाश्री ॥ माधो जू जोजनतें बिगरै । सुनि कृतघ्न करुणा मय केशव प्रभु नहि जीय धरै ॥ ज्यों शिशु जननी जठर अन्तरबसि सत अपराध करै । तौउलोवै तनु तोषि पोषि कै विविकर अंक भरै ॥ द्विज रसना दसि दुखित होत तब तो रिसकारि करै । छमि मृत छीर मधु मिश्रित मुख समीप सचरै ॥ जद्यपि विटप जरठ तन छित करि कर कुठार पकरै । तदपि सुभाव सुशीतल सुशीतल रिपु तन तापु हरै ॥ धरविधंसि हल हतन कृषी करि वैर बीज संचरै । सो सनमुख सुखहित सतो गुण शिशुगुण फरनि फरै ॥ कारन करन

अन्त अज अज शिव अपभेदी न डरै। यह कलि काल ब्याल मुख त्रासित सूर शरण उबरै॥ ॥ १०५ ॥ राग धनाश्री ॥ माधो मन मरजाद तजो । ज्यों गज मत्त जानि हरि तुम सों बात विचारि सजी ॥ माथे नही महावत सतगुरु अंकुश ज्ञान दुखौ । धाए अधअ वनी अति आतुर शंकर सुसंग छुट्यौ ॥ इन्द्री जूथ संग लिये विहरत तृष्णा कानन माहे । क्रोध पोच जलसों रति मानी काम भत्त हित जाहे ॥ औरें अधार नाहि कछु सकुचत भ्रमगहि गुहा रहे । सूर श्याम के हरि करुणा मय कब नहि बिरद गहे ॥ १०६ ॥ राग धनाश्री ॥ हमें नद नन्दन मोल लिए । जमकी फासि काटि मुकराए अभय अजात किए॥ मूड़ मूडिकै कंठ बन माला चक्र के चिन्ह दिए । माथे तिलक श्रवण तुलसी दल मेटिव अंग बिए ॥ सबकोउ कहत गुलाम श्यामको सुनत सिरात हिए । सूरदास प्रभु जूके चेरे झूठन खाय जिए ॥ १०७ ॥ राग धनाश्री ॥ गति अविगति जानीन परै । अति अगाध मन अगम अगोचर बुद्धि बल क्यों पसरै ॥ कबहुंक रंक रंक तें राजा करि शिर छत्र धरै । कबहुंक तृण डूबत पानी में कबहुंक सिला तरै ॥ प्रबल प्रचण्ड महा बपु सायक केहरि भूख मरै । अनायास बिन उद्यम अजगर सहजहि पेट भरै ॥ बागर में सागर करि डारै ठां ठां नीर भरै । सूर पतित तरिजाय छिनक में जो प्रभु नेकु ढरै ॥ ॥ १०८ ॥ राग टोड़ी ॥ भृंगनि निमैं चरण कमल मकरंद गहे जहांन निसाको त्रास । जहां विधि भान समान एक रस सोबारिज सुखवास ॥ जहां किंजलक भक्ति नव लक्षण काम जाम सर एक । निगम सनक शुक नारद सारद मुनि मन भंवर अनेक ॥ शिव बिरंचि खंजन सम रंजन छिनु छिनु करत प्रवेस । अखिल कोस तहं बसहिं सुकृत जल प्रकटित श्याम दिनेस ॥ सुनि मधुकर भ्रम तजी कुमुदिनी को राजिव शुभ करि कै आस । सूरदास प्रेम मय प्रफुलित तहां चलि करहिं निवास ॥ १०९ ॥ राग टोड़ी ॥ अजहूं सावधान किन होहिं । माया विषम भुजंगिनि को विष उतरयौ नाहिन तोहिं ॥ कृष्ण सुसंच शुद्ध बन बूरी जिनि यम मरत जिवायो । बार बार श्रवन नीकट होइ गुरु गारुड़ी सुनायो ॥ जाग्यौ मोह मेघ अति छूटी सुजस गीत के गाए । सूर गई अज्ञान मूरछा ज्ञान सुभेषज खाए ॥ ११० ॥ राग टोड़ी ॥ मन तोसों कोटिक बार कही । समुझि न शरण गयो गोविन्द के उर अंग शूलसही ॥ सुमिरन कथा और गुरु सेवा एकै नाहिं गही । लोभी लम्पट विषइ ब्यभि चारी ऐसेही निबही ॥ तजि मणि कनक अमोलक हीरा काचकि किरच गही जैसें जानि विवेकि चतुर तुम तजिपय पिवत मही॥ आदि ब्रह्म रविशेष ईशमिलि सोधी सरस वही ॥ सूरदास भगवन्त भजन बिनु सचु चैलोक नही ॥ १११ ॥ राग टोड़ी ॥ गोविन्द भजन करहु यहि बार । ईश्वर पारवती उपदेशतु तारक मंत्र जपों तेहि द्वार ॥ काहे को अश्व मेध जग कीजै गया श्राद्ध काशी केदार । राम कृष्ण अभि धाम न पटतर जो तन गरै हेम हत मार ॥ प्राग कलप माथे करवत दै चन्द तरनि गहन लक्षवार । सूर दास भगवन्त भजन बिनु जम के दूत कौन टारै मार ॥ ११२ ॥ राग टोड़ी ॥ जा घट अन्तर हरि सुमिरै । ताहि काल रूठि कहा करि है जो चित चरण धरै ॥ कोप्यो तात प्रह्लाद भगत कौं नामहि लेतडरै

खंभ फोरि नरसिंह प्रकट भये असुर के प्राण हरै ॥ सहस बरष गज युद्ध करत भये छिनु एक ध्यान धरे । चक्र धरें बैकुंठ ते धाये बाकी पैज सरै ॥ अजा मेलि द्विज मह अपराधी अन्त काल बिगरै । सुत सुमिरत नारायण बानी पारषद धाय परै ॥ जहं जहं दुसह कष्ट भक्तन कों तहं तहं सार करै । सूर दास श्याम सेये तें दुस्तर पार तरै ॥ ११३ ॥ राग टोड़ी ॥ भजउ न रे मेरो श्याम मुरारी । सब सन्तन के जीवन हैं हरि कमल नयन प्यारो हितकारी ॥ या संसार समुद्र मोह जल तृष्णा तरङ्ग उठति तें भारी। नाव न पाई सुमिरन हरि को भजन रहित बूड़त संसारी ॥ दीन दयाल अधार सबनि कों परम सुजान अखिल अधिकारी । सूरदास कहा तुम जाचै जनजनकौ जाचक होतभिखारी ॥ ११४ ॥ राग टोड़ी ॥ रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै । गुरु के बचन अटल करि मानउ साधु समागम कीजै ॥ पढ़िये गुनिये भक्ति भागवत और कहा कथि कीजै । कृष्णनाम बिनु जनम बादिही वृथा जिवन कहा जीजै ॥ कृष्ण नाम रस बच्यो जात है तृषा वन्त होय पीजै । सूर दास हरि शरण ताकिये जनम सफल करि लीजै ॥ ११५ ॥ रागटोड़ी भक्ति बिनु सूकर कूकर जैसे । बिगु बगुला अरु गीध घुघुआ आय जनम लियो तैसें ॥ ज्यों लोमरी बिलाउ मोर झोर रहत अन्दरनि बैसें । ताहि अवधिन सुत दाराबे उनेंभेद कहो कैसें ॥ जीव मारि कें उदर भरत हैं रहत अशुद्ध अनैसें । सूर दास भगवन्त भजन बिनु जैसें ऊंट खर भैसें ॥ ११६ ॥ राग टोड़ी ॥ हरि बिनु अपनों को संसार । माया लोभ मोह यों चाढ़े कालनदी की धार ॥ ज्यौं जन सङ्गति होत नाउमें रहतन परसे पार । तैसें धन दारा सुख सम्पति बिछुरत लगै न बार ॥ मानुष जनम नाम नर हरि को पैयेन बारम्बार । ए तनु छन भंगुर के कारन कहा करै गरबु गंबार ॥ जैसें अन्ध अन्ध कूपमें गनत न खाल मनार । तैसेंहि सूर बहुत उपदेशें सुनि सुनि गये कै बार ॥११७॥ राग टोड़ी ॥ गरब गोबिंद दै भावते नाहिं । कैसी करी हिरण्य कश्यप कों रतीन राखी राखि न माहिं ॥ जग जानी करतूति कंस की नरका सुर मारयो बल बाहिं । बरुण बिरञ्चि शक्र शिव मनसिज नर तृन को मनसा गहि गाहिं ॥ जोबन रूप राज धन धरती जिय जानत तैसी जलद की छाहिं । सूर दास हरि भजे न जेतेदू बिमुख अन्त अन्तकपुर जाहिं ॥ ११८ ॥ राग टोड़ी ॥ यहि बिधि बहुत जनम बौरायो । बिमुख भयो हरि चरण कमल तजि मन सन्तोष न पायो ॥ जब जब प्रकट भयो जग थल तब अनेक शांत बपु धारयो । काम क्रोध मद अन्ध विषय तिहि रचे अटल अघ भारयो ॥ खग कपि बिप्रगीध गणिका गज कंस केसि खल तारयो। अघ बक वृषभ बकी धेनुक हति भव जलनिधितें निबारयो ॥ ब्रह्म चूड सुष्टिक प्रलम्ब मथि व्याध वृणावर्त तारे । रज चाणूर दवन दवनी सन व्याल मथन भव हारे ॥ जन दुख जानि जमल द्रुम भञ्जन अति आतुर होय धाये । गिरि कर धारि इन्द्र मदनद्यो दासनि सुख उपजाये ॥ रिपु कच ग्रहत द्रुपद तनया जब शरण शब्द करहाई। मृतकु जिवाय गुरू के सुत कों व्याधि परम गति पाई ॥ नंद बरुण बंध न भय मोचन सूर कुटिल शरणाई । किहि मिस भज भगवन्त चरण कौं सब कोई भई बड़ाई ॥ ११९ ॥ राग टोड़ी ॥ नाहिन छांडत आन नंद आगी । यहि मति चितवङ्ग

रूप धरे भृगु सोई लोभालक लागी ॥ फिरि रुचि करे बेलि विष या वन भ्रमर विकल बिषु जागी। अतिरुचि अरुण अमल हरि पद नख अम्बुज दलकों त्यागी ॥ कहि गुण ज्ञान ग्रंथ पचि हारे कछु हू समुझि न आयो । अति कामी अभिमान अन्ध अप मारग खाद चखायो ॥ नाहि अनाथ बंधु कोऊ सम जिहि यहबात जनावै। सूर सु दीन दयाल नाम लै बार बार गुहरावै ॥ १२० ॥ राग टोड़ी ॥ मोसों पतित न और रुसांई । ए औगुण मेपैं कबहूं नहिं छूटे बहुत पच्यों अबताई॥जनम जनम हौं रह्यो भ्रमित होय कपि गुंजा की नाई । ता परसत गयो शीत न कबहूं लै लै निकट तपाई ॥ लुब्ध्यो जाय कनक कामिनि ज्यौं शिशु देखत जल झाई । जिह्वा स्वाद मीन लों डारयौ सुझियो नहीं फंदाई ॥ मुदित भयो सपने में जैसें पाये निधिहि पराई । जागि परे कछु हाथ न लाग्यौ ऐसि सूर प्रभु ताई ॥ १२१ ॥ राग टोड़ी ॥ मनबस होत नाहि जिय मेरे । जिहिं बातन तू बच्यो फिरत है सोइ सोइ लै लै प्रेरे ॥ कैसें करों कहौं कैसें जग औरहि और खचेरे । तुम तो सिलगावत कोठि सिर बैठे देखत नेरे ॥ कहा करों यह चरयौ बहुत दिन बिनु अंकुसहि सुकेरे । अबकै सूर दास प्रभु आपुन परों हाथ हौं तेरे ॥ १२२ ॥ राग टोड़ी ॥ ते दिन बिसरि गये यहं आये । अति उनमत्त मोह मद छाक्यौ फिरत लटें बगराये ॥ तब तिन दिननिज जननि जठरमें बस्यौ बहुत दुख पायें। सोइ तू कहौ तबहु तो कौन संग खान पान पहुंचाये ॥ सोइ चित धरौ जु पिता प्राण पति जीजतु जाके ज्याये। सूर सुभग जो सहतु फिरतु है विषय विषम सर खाये ॥ १२३ ॥ राग केदारो ॥ मेरी कौन गति दृजनाथ। भजन बिमुख अरु शरण नांहिन फिरतु विषयिनि साथ ॥ हौं पतित अपराध पूरन भरयौ कर्म बिकार । काम कुटिल अरु लोभ चितवनि नाथ तुमहि बिसार ॥ उचित अपनी कृपा करहू तऊ जान्यों जाय । सोउ करहु जे चरण से वै सूर जूठनि खाय ॥ ॥ १२४ ॥ राग मलार ॥ ऐसेंइ करत अनेक जनम गये मन संतोष न पायो ॥ दिन दिन दीन दुरासा लागी सकल लोक फिरि आयो ॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायो । काम क्रोध मद लोभ अगनि तें जरत न काहु बुझायो ॥ सक चन्दन बनिता बिनोद सुख जिहु जल जडनि बतायो । मैं अजान अकुलाय अधिक करि जरत माह घृत नायो ॥ भ्रमि भ्रमि हौं हारो अब ओपति देखि अनल जग छायो । सूर दास पै तुम्हरि कृपा बिनु क्यों भ्रम जात गंवायो ॥ १२५ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माहीं । अपने सुख को सब जग बांध्यौ कोउ काहू की नाहीं ॥ सुख में आय सबै मिलि बैठत रहत चहूं दिश घेरे । विपति परी तब सब संग छांड़े कोउ न आवै नेरे ॥ घरको नारि बहुत हित जासों रहत सदा संग लागी । जब हून हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कहि भागो ॥ या बिधि कौ व्यौपार बन्यों जग तासों नेह लगायो । सूरदास भगवंत भजन बिनु नाहक जनम गंवायो ॥ १२६ ॥ रागधनाश्री ॥ सो प्रभु मेरेहि दोष निवारे । किए अपराध अनेक जनम के नख सिख भरे बिकारे ॥ धरनी पात सिन्धुजल पूरन गिरि कंचन मसि डारे । सुर तरुवरकी शाखा लैकरि लिखत शारदा हारे ॥ पतित पावन हरिनाम तुम्हारो बेद बखानत चारे । सूरदास प्रभु तुम्हरे

मिलन कों करत फिरत हेरि हारे ॥ १२७ ॥ राग धनाश्री ॥ हरिबिनु मीत नहिं कोउ तेरे । सुनि मन कहत पुकारि हों तोसों भजि गोपाल कहे मेरे ॥ या संसार विषमविष सागर रहत सदा सब घेरे । सूरदास प्रभु अन्तकाल में इन बिनु कोउ न आवत नेरे ॥ ॥ १२८ ॥ राग धनाश्री ॥ दीन को दयालु सुन्यो अभय दांन दाता । सांची तुम्हरी बिरदावलि जगत के पितु माता व्याध गीध गज गणिका इन में कोऊ ज्ञाता ॥ सुमिरत तुम तबही आए चिभुवन बिख्याता । कंस केशि दुष्ट मारि सुष्टिक कियो घाता ॥ अपने ध्रुव काज राज केतिक यह बाता । तीनलोक बिभव दियो तंदुल के खाता ॥ सरबस प्रभु रीझ देत तुलसी के पाता । सूर जेहि त्याग मांगि तन मन अनुराता । अपनी प्रभु भक्ति देत जासों जाननाता ॥ १२९ ॥ राग धनाश्री ॥ करें गोपाल के सब होय । जे अपनो पुरुषारथ माने अतिही झूठो सोय ॥ साधन मंच जंच उद्यम बल ए सब राखे धोय । जे कछु लिखि राख्यो नद नन्दन मेटि सके नहिं कोय ॥ दुख सुख लाभ अलाभ सहज तुम कतहु मरतहो रोय । सूरदास स्वामी करुणा मय श्याम चरण मन पोय ॥ १३० ॥ ॥ राग मलार ॥ आंधरे की दई चरावै । नाहिन पूत पिता समकोऊ जलमें शैल तरावै ॥ जो अरि कोटि होय बहुतेरे छीन छीर सर पावै । जाहि सहायहोय श्रीपति को बिनुहि बुलाई प्यावै ॥ काहेको चिन्ता चित कीजै जो चरणनि चित लावै । संकट सूर सहाय होय प्रभु बसन प्रवाह बढ़ावै ॥ १३१ ॥ राग बिलावल ॥ जहां जहां सुमिरे तुम जिहिं बिधि तहीं तहीं उठि धाये हो । दीन उधारन भक्त कृपा निधि वेद पुराणनि गाए हो ॥ सुत कुबेर के मत्त बिषद मद नयननि छाये हो । द्विज के श्राप तें भए जमल तरु तिहिं लगु आपु बंधाये हो ॥ परम मलीन दीन द्विज देखत ताके तंदुल खाये हो । दे संपति वाकी पत्नी के मन अभिलाष पुजाये हो ॥ कला निधान सकल गुण सागर गुरुधों कहा पढ़ाये हो । तिहि उपकार मृतक सुत जाचे ते जमपुरतें ल्याये हो ॥ कत मोसे अपराधी माधव के तिक सुगति पठाये हो । सूरदास प्रभु करुणा सागर पावन बिरद कहायेहो ॥ १३२ ॥ राग आसावरी ॥ सोइ प्रभु करो कछु दीन दयाल । जातें जन छिनु चरण न छाड़े करुणा सागर भक्त कृपाल ॥ इन्द्री अजित बुद्धि बिषये रत मनको अनुदिन उलटी चाल । काम क्रोध मद लोभ महा भय अहनिसि नाथ रटत बेहाल ॥ जोग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतु इनमें एको अंगन भाल । कहा करों किहिं भांति रिझाऊं हो तुमको सुंदर नन्दलाल ॥ सुनि समरथ सरबज्ञ कृपा निधि अशरण शरण हरण जग जाल । कृपा निधान सूरकी यह गति कासों कृपण कहे यहि काल ॥ १३३ ॥ राग धनाश्री ॥ गुसाईं दीन के दयाल सुनों परमदानि दाता । जाकी यह साँची बिरदावलि भक्तनके पितु माता ॥ कंश केसि मुष्टिक मुर मधुकैटभ घाता । धाए गजराज काज केतकु यह वाता ॥ गणिका द्विज व्याध अधम इनमें कोउ ज्ञाता । आन कहत नाथ कह्यो जान्यों नहि जाता ॥ गौतम को बाम तरी तनकु परस लाता । और कुटिल तारि तारि कहा हों गरवाता ॥ रीझि देत सरबस तुम तनक तुलसि पाता । कहा भयो दोऊ लोक दए तंदुल के खाता ॥ मांगत है सूर त्याग जिहिं तनु मनु राता ।

अपनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता ॥ १३४ ॥ राग गौरी ॥ अबमोहि शरण राखि लेहु नाथ । कृपा करी जु गुरुजन पठए बहे जात नहि हाथ ॥ अहं भावतें तुम बिसराए इतने झूठे साथ । परयो जु भवसागर प्राकृत बस बाँध्यो फिरयो अनाथ ॥ भ्रमित भयो जैसें मृग चितवत देखि देखि भ्रमि पाथ । जन्मत खिस्यो संतकी संगति कह्यो सुन्यों गुण गाथ ॥ कर्म धर्म तीरथ बिनु राधन ह्वै गए सकल अकाथ । अभय दान दै अपनि भुजाधरि सूरदास के माथ ॥ १३५ ॥ राग सारंग ॥ मेरे जिय ऐसी आनि बनी । छांड़ि गोपाल अवर जो सुमिरों तो लाजे जननी ॥ मन क्रम बचन और नहि चितवों जब कब श्याम धनी । विषको मेरु कहा लै कीजै अमृत एक कनी ॥ कह लै करों काचको संग्रह त्यागि अमोल मनी । सूरदास भगवंत भजन को तजी जाति अपनी ॥ ॥ १३६ ॥ राग सारंग ॥ अन्त के दिन को हैराम । मात पिता बंधू सुत तौलगु जौ लगु जियको काम ॥ आमिष रुधिर अस्थि अंग जौलों जौलोंकोमल चाम । तौलगु यह संसार सगो है जौलगु लेहि न नाम ॥ इतनी जो जानत मन मूरख मानत याही धाम । छांड़ि नकहत सूर सब भव डरु वृन्दाबनसों ठांम ॥ १३७ ॥ राग गौरी ॥ मोहनके मुख ऊपर वारी देखत नयन सबै सुख उपजत बार बार तातें बलि हारी ॥ ब्रह्मा बाल बछरुआ हरि गयो सो तत्क्षण सरिखे संवारी । कीनों कोप इंद्र बरषा ऋतु लीला लाल गोबर्द्धन धारी ॥ पांडव जरतदेखि पुरुषोत्तम प्राणनाथ द्रोपदी पुकारी । तीन लोकके ताप निवारनसेवक सूर श्याम सुखकारी ॥ १३८ ॥ हरि दासनि की सबेबड़ाई ॥ अंबरीष हित दिज दुर्वासा चक्र छाडिकें कूक पराई ॥ दानव दुष्ट असुरकों बालक ताहित सब मरजादा ढाई ॥ भक्त राज कुंती के सुत हित रथ चढि आपन लीनि लड़ाई ॥ शिव ब्रह्मा जाकों बरदीनों अंत सबनि को खोज कढ़ाई ॥ हरि पद कमल प्रताप तेजतें ध्रुव पदवी लै सिखर चढ़ाई अजा मेल गणिकारत द्विज सुत सुत सुमिरत जम त्रास पडाई ॥ गज दुख जानि तबहिं उठि धाए ग्राह मुखनि तें विपति छिडाई ॥ सब आंगि रस देव जजन कों कर्म ग्रंथि द्विज सकल मिटाई ॥ नारी व्रजपति नाम नेह सुनि रस नाना अर्पनकों धाई ॥ कौरव राज पंथ रचनाकरि श्रीपति कों शोभा दिखराई ॥ आपुन विदर सदन प्रगु धारे सदा स्वभाव साधु सुखदाई ॥ सकल लोक कीरति अलि गावै हरि जन प्रेम निसान बढ़ाई ॥ कहां लो कहों कृपा सागर सूर दास नाहिन सुधिराई ॥ १३९ ॥ राग गौरी ॥ तुमसी एक बडी ठकुराई ॥ प्रति दिन जन जन कर्म सबासन नाम हरें जदुराई ॥ कुमति धर्म कर्म कुमारग जेकोउ करतबनाई ॥ तदपि विमुख प्रांतो जुग नीयत भक्ति हृदै नहिंआई ॥ भक्ति पंथ मेरे अतिनियरो जबतब कीरति गाई ॥ अधम धिकार सूर लिखि पायो भजन छाप नहिपाई ॥ १४० ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे भगवंत भक्त हित कारी ॥ जहां जहां जिह काल संभारे तहं तहं जास निवारी ॥ धर्म पुत्र जब यज्ञ उपायो दिज मुख होइ मनु लीनों ॥ अघ्र निमित्त उत्तर दिसि के पथगमन धनंजय कीनों ॥ ऋषि पति सुता भुवन सन्मुख होय वचन कह्यो एक हीनों । पारथ बिमल बभ्रु वाहन को शीस खिलोना दीनो ॥ इतनो सुनत कंत उठि धाई बरषत लोचन नीर । पुचकबंध अंक भरि लीनों

धरत न छिनु इकधीर ॥ लैलै ओण हृदय लपटावत चुंवति भुजा गम्भीर । त्यागत प्रण निरखि सायक धनु गति मति बिकल शरीर ॥ ठाढ़े भीम नकुल सहदेवा अरु भूपति सब बिष्णु समेत । पौढ़े कहा समर सज्या सुत उठि किन उत्तरु देत ॥ कथित भये कछु मंचन पुरई कीने मोह अचेत । पारथ बैठि बंधु कों गर्जहि पुरई हौं कुरुचेत ॥ काकौ बदन निहारि द्रोपदी दीन दुखी संभरि है । काकी ध्वजा बैठि कपि किलकहि किहि भय दुर्जन डरि हैं ॥ काके हित श्री पति यहं ये हैं को संकट रक्षा करि है । को कौरव दल सिन्धु मथन करि या दुख पर उतरि है ॥ चिन्ता हानि चितै अन्तर गति नाग लोक कों धाये । पारथ शीश सोधि अष्टा कुलि तब यदु नन्दन ल.ये ॥ अस्तुत गिरा बहु बरषि सूर प्रभु भुज गहि पार्थ उठ ये । अश्व समेत बन्धु बाहन लै सुफल यज्ञ हित आये ॥ १४१ ॥ राग धनाश्री ॥ अधम को जु देखी अधमाई । तुम त्रिभुवन पति नाथ हमारे मोपै कही-नजाई ॥ ज्वतें जनम मरण अन्तर हरि करत नअघहि अघाई । अजहूंलों मन मगन काम रत बिपरित नहि उपजाई ॥ परम अज्ञान तृपति नहि जड़ मति यह बड़ि मूरख ताई । पांचौ देखि ठढ़े हैं ठगु इठिहि ठगोरी खाई ॥ स्मृतिबेद पंथ हरिपुर के तातें दियो भुलाई । कंटक कुटिल कवनि कानन मधु सेा तेा दियो दिखाई ॥ अब कह कहौं सबै जानत हैा मेरी कुमति कन्हाई । सूर पतित कों नाहि कहूं गति राखि लेहु शरणाई ॥ ॥ १४२ ॥ राग धनाश्री ॥ ते जन चाहैं कृपा तुम्हारी । जिन के बस अनेक अनमिष गण अनुचर आज्ञा कारी ॥ सुनि सुत रहे मत श्रुति सार । जे मत तुमकों जननि प्रग ट्यो जानि जग आधार ॥ बिपुल विद्या बिलास मन गति मोह तन जंजार । तजित भ्रम श्रम शोक दुख सुख कृष्ण चरण अधार ॥ और अखिल उपाय अनु दिन जेाग व्रत तप दान । सूर दास अनेक बिधि नहि चरण भजन समान ॥ १४३ ॥ राग धनाश्री अपने को कौन आदर देय । ज्यों बालक अपराध कोटि करै मात न मारै तेय ॥ तेबेखी कैसें दहियत हैं जे अपने रस भेय । श्री शंकर बहु रतन त्यागि कें बिषहि कंठ लपटेय । माता अक्षत क्षीर बिनु सुत मरै अजा कंठ कुच सेय । यद्यपि सूर महा पतित है पतित पावन तुम तेय ॥ १४४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे माधौ मीत हमारे । सदा सहाय कियेा सुख दीयेा संकट हुए रखवारे ॥ जिन लाक्षा गृह जरत उबारे द्रोपदि लाज निबा री । बसन प्रवाह बह्यो अम्बर तें जब कहि नाथ पुकारी ॥ जिन भारथ पारथ रथ हांक्यो द्विज प्रतिज्ञा कीनी । टूटत बज्र बाण वखि छूटत पीठि आनि प्रभु दीनी ॥ आपुन करत हरत पुनि आपुन और न दूजा कोई । रथ पच बैठि बट पच सैन करि प्रलय करत है ओई ॥ तें कछु करि अभिमान आपनों बेाल्यो बचन अनेरा । तातें सूर प्रभु बल करि राख्यो गर्ब प्रहारयो तेरा ॥ १४५ ॥ राग भैरव ॥ ऐसेहिबसिये द्वज की बीथनि । साधुनि के पनवारे चुनि चुनि उदर जु भरिये सीथनि ॥ पैड़े सेके बसन बीनि तन छाया परम पुनीतनि । कुंज कुंज तर खोटि खोटि रचि रज लगे रंगी तनि ॥ निशि दिन निरखि जशेादा नन्दन अरु जमुना जल पीतनि । दरशन सूर छीन तन पावन दरशन मिलत अतीथनि ॥ १४६॥ राग आसावरी ॥ हरि जू मोसों पतित न आन । मन क्रम

बचन पाप जे कीने तिन कों नहीं प्रमान ॥ चित्र गुप्त जम द्वार लिखत है मेरे पातक झारि । तिनहूं चाहि करो सुनि ए गुण कागद दीने डारि ॥ औरन कों जम के अनुसासन किंकर कोटिक धावै । सुनि मेरी अपराध अधमई कोउ निकट नहिं आवै ॥ हौंऐसो तुम बैसे पावन गावत हैं जे तारे । अब गाहौ पूरण गुण स्वामी सूर से अधम उधारे ॥ १४७ ॥ राग सारङ्ग ॥ अब हों हरि शरणा गत आयो । कृपा निधान सुदृष्टि हेरिये ए पतित न अपनायो ॥ ताल मृदङ्ग पांच इन्द्रिनि मिलि बीना बेनु बजायो । मन मेरे नट के नायक उनि तिनहीं नांच नचायो ॥ उधयो सकल संगित भव सागर अंगनि अंग बनायो । काम क्रोध मद लोभ मोहके तान तरङ्गनि गायो ॥ सूर अनेक देह धरि भूतल नाना भाव दिखायो । नांच्यो नाच लक्ष चौरासी कहूं न पूरो पायो ॥ १४८ ॥ राग जैतश्री ॥ अब हों सब दिसि हेरि रह्यो । कोऊ नहि राखत करुणा मय अति बल आह गह्यो ॥ सब स्वारथी असुर सुर नर मुनि कत श्रम आनि करै । तारन उदित तिमिर नहि नाशै बिनु रवि रूप धरै ॥ इतनी सुनि आये कमला पति निज कर चक्र लिये । हति गज शत्रु सूर के स्वामी सब सुख आनि दिये ॥ १४९ ॥ राग धनाश्री ॥ कहो शुक श्री भागवत विचारि । हरि को भक्ति जुगहि जुग बरधे और धरम दिन चारि ॥ चिन्ता तजो परीक्षित राजा सुनि सिख साखि हमारि । कमल नयन की लीला गावत टरि गये नेक बिकारि ॥ सत जुग सत चेता तप कीनो द्वापर पूजा चारि । सूर भजन या कलि में कीजे लज्जा कान निवारि ॥ १५० ॥ राग जंगला ॥ तुम्हारो कृष्ण कहत कह जात । बिछुरे मिलन बहुरि कब अइये ज्यों तरुवरके पात ॥ सीत बात कफ कंठ बिरोध्यौ देखत जननी जात । छिन एक नाहि कोटि जुग बीतत नरकी कितनी बात ॥ यह जग प्रीत सुआ सेंवर ज्यों चाखतही उड़िजात । सूरदास बाके जीवनको कहे को इतरात ॥ १५१ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ गोविन्द भजन करो यह बार । शंकर पारबती उपदेशत तारक मंत्र अपार ॥ अश्वमेध यज्ञ जो कीने जे गया श्राद्ध काशी केदार । राम नाम सरते उन पूज ज्यों तन गारे है भार ॥ सहस बार जीवतहै बरसों चक्र व्रत रजधार । सूरदास भगवन्त भजन बिन होत यहै जम द्वार ॥ १५२ ॥ राग बिलावल ॥ ए मन सुमिरि हरि हरि । सत युग माहिं नाम सर परतीत करि करि ॥ हरि नाम हरिना कुश विसारो उठो बर बर बर बरि । प्रह्लाद हेतु जन असुर मारयो नाहि डर डर डरि ॥ गज गीध गणिका व्याध के अघ गए गिरि गिरि गिरि । चरण अम्बुज बुद्धि भाजन जल भरहि भरि भरि ॥ द्रोपदी के लाज कारण दाव पर पर परि । पांडु सुतके विघ्न टारे गए टरि टरि टरि ॥ करन दुरयोधन दुसासन सकुन अर अर अरि । सुत हेत अजामिल नामलीन्हों गयो तर तर तरि ॥ चारि फलके दानहै प्रभु रहे फर फर फरि ॥ सूर श्री गोपाल हिरदे राखि धरि धरि धरि ॥ १५३ ॥ राग धनाश्री ॥ बिचारतही लागे दिन जान । सजल शरीर काकही होनों कोऊ न केहि विधि राखे प्रान ॥ जोग न यज्ञ ध्यान नहिं सेवा सत संगत नहि ज्ञान । जिह्वा स्वाद विषय के कारन आपु घटै दिन आन ॥ और उपाय नाहिरे बौरे सुनतो यह दे कान । सूरदास अवहोत बिलंबन भजहे सारंग पान ॥ १५४ ॥

॥ राग धनाश्री ॥ अबमैं जानी देह बुढ़ानी । शीस पांवधरि कह्यौ न माने तनकी दसा सिरानी ॥ आन कहत आने कहि आवत नयन नाक बहे पानी । मिटि गइ चमक दमक अंग अंगकी गई जु मति हीरानी ॥ नाहि रही कछु सुधि तन मनकी छूटै बात बिरानी । सूरदास प्रभु अबहिं चेतलो भजले सारँग पानी ॥१५५ ॥ तथा ॥ मन तो सों केतिकहि समुझाई । नद नन्दनके चरण कमल भजि तजि पाखण्ड चतुराई ॥ सुखसम्पत दारा सुतहैं जग झूठ सब समुदाई । छिन भीतर ऐसे वे श्याम बिनु अन्त नहीं संग जाई ॥ जनमत मरत बढ़त जग बीते अजहूं लाज न आई । सूरदास भगवन्त भजन बिनु झूठे जनम गंवाई ॥ १५६ ॥ राग बिलावल ॥ जेहि तन हरिके भजन कियो । यहै लोक परलोक सुफल हो ताको धन्य जियो ॥ सन्त समागम श्रीगुरु सेवा अमृत रस ज्यों पियो । सूरदास धन भाग ताहिको हरि चरनन चित दीयो ॥ १५७ ॥ राग मारू ॥ औसर हारयौ रे तेहारो मानुष जनम पाइ नर बौरे हरि को भजन बिसारो ॥ रुधिर बूंद तें साज कियो तन सुन्दर रूप संवारो । जठर अग्नि अन्तर जरध मुख जिन दस मास उबारो ॥ अन्ध अचेत मूढ़ मति बोरौ सो प्रभु क्यों न संम्हारो ॥ पहिर पटंबर करि आडंबर यह तन हट सिंगारो । काम क्रोध मद लोभ चिया रति बहुबिधि काज बिगारो ॥ मरन बिसारि जीव नहि जान्यों बहु उद्यम जिय धारो । सुतदारा के मोह अचेबिष हरि अमृत फल डारो । झूठ सांच करि माया जोरी रचि पचि भवन उसारो ॥ काल घरी पूरन भइ जादिन तनहो त्याग सिधारो । प्रेत प्रेत तेरो नाम धरयौ नट झोरी बांधि निकारो ॥ जेहि सुतके हित बिमुख गोविन्दतें प्रथमें मुख जिन जारो । भाई बन्धु कुटुम्ब सहोदर सब मिल यहै विचारो ॥ जैसे कर्म लहो फल तैसे तिनका तोरि उखारो । सत गुरुको उपदेश हृदय धरि जिन दुख सकल निवारो ॥ हरि भजु बिलम्ब छांड़ि सूरज प्रभु डंके टेर पुकारो ॥ १५८ ॥ राग बिलावल ॥ भृंगी रे भजु चरण कमल पद जहं निसिको नहि बास । जब विधु भान समान एक रस मुरबरिज सुख रास ॥ जहां कंजलजा भक्ति होतनहि लच्छन काम ज्ञान रस अंग । निगम संग सुख सारद नारद संवर सुभृंग अनंग ॥ शिव बिरंचि खंजन मन रंजन छिन छिन प्रकट प्रवेश । सुनु मधुकर ध्वस त्यास कुमुंदन नाहि न तहं राकेश ॥ सहस सुक्रीड़ा करत रमायुत कोटिक सूर्य प्रकास । सूरज प्रभु सुगन्ध में प्रफुलित तह चल करिये बास ॥ १५९ ॥ राग बिहागरो ॥ भज मन चरन संकट हरन । सनक शंकर ध्यान धावत निगम अशरन शरन ॥ शेष सारद कहे नारद संत चिन्तत चरन । पद पराग प्रताप दुर्लभ रमा बोहित फरन ॥ परस गंगा भई पावन तिहूं पुर धर धरन । चित्त चेत न करत अन्तः करन तारन तरन ॥ गए तरिले नाम केते सन्त हरिपुर धरन । जासु पद रज परसि गोतम नारि गति उद्धरन ॥ जाकि महिमा प्रकट कहत न धोए पग शिर धरन । सोइ कृष्ण पद मकरंद पावत और नहि शिर परन ॥ सूर प्रभु चरणारविन्दतें मिटे जन्म औ मरन ॥ १६० ॥ राग बिलावल ॥ जादिन सन्त पावने आवत । तीर्थ कोटि अस्नान करन फल जैसो दरशन पावत ॥ नित बिनोद दिन दिन प्रति उनके चरन कमल चित लावत । मन बच कर्म और नहिं जानत सुमिरत औ

सुमिरावत ॥ मिथ्या बाद उपाधि रहत हों विमल विमल जस गावत । सूरजदास भक्ति कर तिनके जे हरि सुरन करावत ॥ १६१ ॥ राग बिहागरो ॥ गर्भ गोबिन्दहि भावत नाहीं । केशी करि हिरण्यकश्यपसों प्रकट भए छिन माहीं ॥ जग जाने करतूति कंस की दृषभासुर मारो पल माहीं । ब्रह्मा इन्द्रादिक पहिचाने गर्भ आदिके माहीं ॥ जोबन रूप राज धन धरती जैसे जलद कि छाई । सूरदास हरि भजो गर्भ तजि विमुख अगति को जाई ॥ सुनि नृप लाग्यो करन बिचार । झूठे नाते जगत के सुत कलत्र परिवार ॥ चलत न कोऊ संग चलेगो मोरि रही मुख नारि । गाढ़े आवत काम सामही देखो सूर विचारि ॥ ॥ १६२ ॥ राग झझोंटी ॥ जादिन मन पंछी उड़ जैहैं । तादिन तेरे तनु तरवरकों सबैपात झर जैहैं ॥ या देही को गर्व न करिये स्यार काग और गिद्धाखैहैं । तीन नाम तन बिष्टा कृमि ह्वै नातर खाक उड़ैहैं ॥ कहं वह नीर कहां वह शोभा कहं रंग रूप दिखैहै । जिन लोगनसों नेह करतु है तेही देखि घिनैहैं ॥ घरके कहत सबारे काढ़ो भूत होय घर खैहै । जिन पुत्रनहि बहुत प्रति पाल्यो देवी देव मनैये । तेइ ले बांस दयो खोपरी में शीस फाट बिखरैये ॥ अजहूं मूढ करो सत संगत सन्तन में कछु पैहै । नर बपु धरन जननहि हरिको जमको मारगु खैहै ॥ सूरदास भगवन्त भजन बिनु वृथा सुजन्म गवैहै ॥ ॥ १६३ ॥ राग कान्हरो ॥ धनि शुक मुनि भागवत बखान्यों । गुरुकी कृपा भई तब पूरन तब रसना कहि जान्यों । धन्य श्याम वृन्दा बन को सुख संतन याते जान्यों । जो रस रास रंग हरि कीन्हो बेद नहीं ठहरान्यों । सुरनर मुनि मोहत सब कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यों । सूर दास तहं नैन बसाये और कहूं चित नहिं ठान्यों ॥ १६४ ॥ राग कान्हरो ॥ अब गति गति कछु कहत न आवै । जो गूंगो मीठे रस को फल अंतर गतही भावै ॥ परम स्वाद सबसों सिर अंतर अमित दोष उपजावै । मन माने को अगम अगोचर सो जाने सो पावै । यहै बिचार हिये सूरज प्रभु सगुन लीला पद गावै ॥ १६५ ॥ राग बिहाग ॥ चोपरि जगत मड़े जुग बीते । गुन पासा क्रम अंक दसा चौसारि नकबछूं जीते । दिसफर चार मनोरथ वर फिरि फेरि फेरि गुन आवै ॥ काम क्रोध मिलि लोभ के संगम खेलत हारि न पावै । मात गर्भ स्थिति पाइ पिता दश मास उदर से डारै । जनम छटी छक और बधाई दुइ छक दुइ पुनि पारै । मुंडन करन वेध व्रत बंध बिबाह गवन गृह बासो ॥ आलिंगन चुंबन परि रंभन नख छत चारु परस्पर हांसी । केतकि करणा बेलि चंबेली सुमन सुगंध सिचाये । रचाहि तलप निसि भोग चतुर सम बहुत इकादश पाये । उर परसत सब अंग बिलोकत क्रीडत सुख सुख जीके । चोली चीर अलक भूषन फिरि साजत पिय भवनी के ॥ नख सिख साजि सिंगार सकल तिय सुंदर बदन निहारत । बिधि बिलास सकला कौतुक रस छदस अंक भरि डारत । जोबन मद जनमद मादक मद धन मद बिध मद भारी । काम बिबस पर नारि भजत दुइ पंच सरहि फिरि मारी ॥ पैरि पगारि महल मंदिर रचि राजत अंग अटारी । भीतर भवन बिचित्र बिराजत पंच दुवादस द्वारी । कृषी बनिज व्यौहार ग्राम पति है बांधत दर हाथी । करि अभिमान हरीसों बे मुख

संग नहीं कोउ साथी । रतन रजत कंचन मुक्ता मनि मानिक संचित कंसि कंसि ॥ छह सुनि गुनत छहो रस बिलसत कहत अठारह हंसि हंसि। परिवातें पंचमी दशमी कहुं पोतटका नित कीन्हा । पंजातीनि परे नोकी विधि विप्रति भोजन दीन्हा ॥ स्वजन समधि परिवार दास दासी जन सब को हित कारी । दाव धाव गति देखि करति रति पंजा पारत न्यारी । संध्या तिमिर इन्दु दुविधा दुइ ठोक निगम पथ चालत ॥ अगन पुरान सिखा तुलसी दल पूजित दुखितहि पालत । पंच बरष दस बरष और छक जुग खेलहुं बिलवारी। सिसु गई जीत किशोर काल इति मनु कांची करि डारी। पुनि पैछक औरो छक पंजा सारि सारि संख फोरयो । तितने दाव बहुरि फिरि खेलो तरुन बिरध जुग जोरयो । अमावस पुन्यों संक्रांति ग्रहन द्विज कर प्रभवो मेलत । एकादशी द्वादशी संजम कछू देत छक खेलत । मंगल बुध गुरु शुक्रमान शशि-सांति करत ग्रहनी के ॥ राहु केत चंद्रमा सुसंयुत छतन परत हित जांके। सैन उठान अमई बिना जल उपवासन तन साधे। दुई चौदशी जनम निशा शिव पांच चारि मन बांधे। द्वारावती गोमती पुष्कर तीर्थ प्रयाग अन्हाये। बारह बन व्रज के परि दछन पंच द्वादशे पाये । जपतप संजम नेम धरम व्रत करि करि कष्ट सकेलत । लोचन श्रवन तुचा ये जारें सब रस को नहि कांधे ॥ सुधि बुधि सुमति सुरति गइ दसनिध जुरा जू गविधि बांधे। धरत चरन निर खरत खकुट से चलन नवल कइ कांपत । कास सकफ करतन गिरिधर धुकतदा बिछरतभाषत। सुत बनिता हित पांचो नेहनातो सबहीं टूटे ॥ दाव कुदाव परे दुइ पंचज जोरा मिलु जुग फूटे । बालक तरुन बिरध अधजर जिति सारी ढिग ढारी । सूर रंक यों नाम बिना नर फिरि फिरि बाजी हारी ॥ १६६ ॥ राग धनाश्री ॥ जन्म गंवायो उठाय बांई । भजने चरन श्याम सुंदर के रह्यो बिलो-कत झांई ॥ धन जोबन मद ऐंड ऐंड तांकत फिरे पराई । लालचु लुब्ध स्वान झपटन ज्यों तेउ हाथ नआई । रंचक रचि सुख कांच लागि कत कंचन रासि गवाई। सूर दास प्रभु छांड़ि सुधा रस मरत विषय विष खाई ॥ १६७ ॥ राग धनाश्री ॥ सो कहाजु मैं नकियो जे चित धरि हौ । पतित पावन बिरद प्रगट कोनि पांति करि हौ ॥ जननी अटराह सुचित तिनको दुख दीन्हों । सुधि तेल तमार गतिहि अपने गवन कीन्हों । जबतें जग जनमु पाई जीव नामु कहायो । तबतें मोहि औगुन गभो और न कहा आयो । असत संगत स्वाद लंपट कपटी गुरु द्रोही । जेते अपराध कहि अंत लागत सब मोही । सुकृती सुधि सेवक रुचिकहि न जीव भावे । प्रभु को प्रभुता वहैजु दीन शरन पावे । श्याम सुंदर कमल नैन सकल अंतर जामी । विनती कहो कोन सूर कूर कुटिल कामी ॥ १६८ ॥ राग सोरठ ॥ ज्यों प्रभु मेरो दोष बि-चारि । किये अपराध अनेक जनम भरि नटवर रूप भरयो अधिकारी । पुहमी पत्र सिंधु मसिकरिके गिरि कंचन मिलि गारौ । सुरतरवर की साखा लेखनि लिखत सारदा हारो ॥ पुनित उधारन बिरद विदित जग वेद पुरान पुकारो । सूर श्याम हो पतित शिरोमनि तारि सकौतौ तारो ॥ १६९ ॥ राग धनाश्री ॥ जनम तो ऐसेहि

बीत गयो ॥ जैसे रंक पदारथ पाए लोभ बिसारि दयो ॥ बहुतक जन्म पुरीष परायन शूकर खान भयो । अब मेरी मेरी करि बोरे बहुरों बीज बयो । नरको नाम पार गामी हो सो तुहिं श्याम दयो ॥ ते जदु नारि केत कपि कर ज्यों पायो नाहि पयो । रजनी गत बासर मृग तृष्णामें हरि कोन चयो । सूर नंद नंदन जिनि बिसर्यो आपुहि आप ह्यो ॥ १७० ॥ राग धनाश्री ॥ अब मोहि भीजत क्यों न उबारो । दीन बंधु करुणा निधि स्वामी जन के दुःख निबारो ॥ ममता घटा मोह की बुंदे सलिता मेंन अपारो ॥ बूड़त कतहुं थाह नहि पावत गुरु जन ओट अधारो ॥ गरजन क्रोध लोभ के नारो सूझत कहुंन उधारो ॥ तृष्णा तड़ित चमकि छिनही छिन यह निशि यह तन जारो। यह भव जल कलि मलहि गहेहै बोरत सहस पुकारो ॥ सूर दास पतितन को संगी निरदहि नाथ सँम्हारो ॥ १७१ ॥ राग टोड़ी ॥ गोबिंद पद भज मन बच क्रम करि ॥ सुचि सुचि सहज समाधि साधि सठ दीन बंधु करुना मय उर धरि । मिथ्या बाद बिवाद छांडि सठ बिषय लोभ मद मोहै परि हरि॥ चरन प्रताप आनि उर अंतर औरसकल सुख या सुखतर हरि ॥ बेदनि कह्यो सुस्मृति इम भाष्यो पावन पतित नाम है निज हरि ॥ जाके सुजस सुनत अरु सुमिरत जैहे पाप छन्दतजि नरहरि ॥ परम उदार श्याम सुंदर बर सुख दाता संतन हित हरि धरि । दीन दयाल गुपाल गोप पति गावत गुन आवत ढिग ढर हरि ॥ अजहुं मूढ चेते चहुं दिसितें उपजी कली अगनि झकझोर हरि ॥ जब जम जाल पसारि परेगो हरि बिनु कोन करैगो धर हरि ॥ सूर काल बल व्याल ग्रस्यो जिनि श्रीपति चरन परहि किनि फर हरि । नाम प्रताप आनि मुख हृदय मह सकल बिकार जाहि सब टरहरि ॥ १७२ ॥ राग पुरीयाधना-श्री ॥ अब शिर परी ठगौरी देव । ताहें बिवस भयों करुणा मय छांड़ि तिहारी सेव ॥ माया मंच पढ़त मन निशि दिन मोह मूरछा आवत । ज्यों मृग नाभ कमल तजि अलि दिन निकट रहत नहिं जानत ॥ भ्रम मद मल कामी तृष्णा रस बेगन क्रमै गह्यौ । सूर एक पल गहरु न कीन्हों कहि जुग इते रह्यौ ॥ १७३ ॥ राग पुरीया धनाश्री ॥ माया देखत ही जु गई । ना हरि हित नहि तू हित इनमें एकौ तौ न भई ॥ जो मधु माखी सर्व्व निरन्तर बनकी ओट लई ॥ व्याकुल होत हरें ज्यों सरबर आंखिन दूरि दई ॥ सत सन्तान सजन बनिता रतिधन समान उनहीं । राखे सूर पवन पाषण्ड हीति करि जो प्रीति नहीं ॥ १७४ ॥ राग आसावरी ॥ वृथाही जनम लियो संसार । कबहूं भक्ति न कीनी हरि की बिषय लिये सिरभार ॥ जुगजुग जपतप नाही कीने अल्प मिती आसार। प्रगटे नर नहिं दुर्लभ गये जनम सब हार ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मेंहों निशि दिन रहो जरि । सूर हरि को सुजसु गावहु जातें मिटहिं भवभार ॥ १७५ ॥ राग धनाश्री ॥ काया हरि के काम न आई । भाव भक्ति जहं हरि जश सुनियतु तहाँ जात अलसाई ॥ लोभ उत्तर ह्वै काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई । जब लग श्याम अंग नहिं परसत अंधे ज्यों भरमाई ॥ सूर दास भगवन्त भजन बिन बिषय परम बिष खाई ॥ १७६ ॥ ॥ राग सोरठ ॥ ऐसी मूढता या मनकी । परिहर नाम भगत सुर सरिता आस करत

आसन को ॥ जोग कसौटि फटिक में छांड़ी मान मनायो तनकी । टूटत दसन न जानत री रस भइ अतिहि छबि अंगन को ॥ धूम समूह निरखि चातक ज्यों तृषा होत अति घन की । नाहिन तहं शीतल ता देखत हानि होत लोचन को ॥ कहं लों कहूं कुचाल आपनो जानत हौं गति जनको । सूर दास प्रभु हरहु दुसह दुख लाज करो निज पन की ॥ १७७ ॥ राग केदारो ॥ तुमहिं अछत कहा दुख दयाल । दीन जानि के हरत नाहिं ने कहा जिए बहु काल । सत छूटे धन धर्म गवायो कहा दिए मनि लाल ॥ कनक मांगि तप छिजित दिनै दिन हारे रटत बिहाल ॥ सूर श्याम को कारो निहोरो चलत बेद की चाल ॥ १७८ ॥ राग धनाश्री ॥ मोतें और कौन है पापी । घातक कुटिल चबाई कपटी लोभ मोह सन्तापी ॥ लम्पट धूत पूत कौड़ी को विषय बास जब आपी । दुसह कर्म कीन्हे निशि बासर कटुक बचन आलापी ॥ सज्जमिछ अप यच्छ पछहो करिन लालसा धापी । एक मति बार मुखिन के संग में गमन और मन व्यापो ॥ जितने पतित पधारे सुमिरत तिनकी गति में मापी । सागर सूर विकार भरयो जैसें व्याध अजा मिल बापी ॥१७९॥ ॥ राग धनाश्री ॥ तुम तजि भूल्यो भूल्यो डोलत । लालच लगे कोटि देवनि के फिरत कपाटनि खोलत ॥ ज्यों तजि सरबस कीन्हे चाहे तब लग दुहुं की प्रीति । फल मागत ही हेत मुकर मुख यह देवन की रीति ॥ तजि कञ्चनहि काच मनि अनुचित या माया के लीन्हों । चारि पदारथ को प्रभु दाता सोऊ बिसर्जन कीन्हों ॥ तुम कृपाल करुणा मय केशव अखिल लोक के नायक । सूरदास फिरि दृढ़ करि पकरे अबए चरण सहायक ॥ ॥ १८० ॥ राग धनाश्री ॥ ऐतेहि जनम बहुत बारायो । बिमुख भयो हरि चरण कमल तजि मन सन्तोष न पायो ॥ जब जब प्रगट कियो जल थल तब तब अनेक बपु धारे । काम क्रोध मद लोभ महातम रचे अटल अघ भारे ॥ प्रगटे बिप्र गीध गणिका गज केसि कंस खलतारे । अघ बक वृषभ बको धेनुक हति व्याल हरन दुख टारे ॥ शंख चूड मुष्टिक प्रलम्ब बधि तृणावर्त संघारे । काली दमन पियो दावानल भव जल जलधि उवारे ॥ जन दुख जानि जुगल द्रुम भंजन अति आतुर ह्वै धाये । कर गिरिधरि बासव मद मर्दन सन्तनि सुख उपजाये ॥ रिपु कच गहन द्रुपद तन या तब शरन शरन कहि भाषी । पाँडव बधू द्रुपद तनया की सभा माँझ पतिराखी ॥ मृतक जिवाय दिये गुरुके सुत व्याध परम गति पाई । नन्द बरुण भव बन्धन मोचन सूर पतित सरनाई ॥ १८१ ॥ राग धनाश्री ॥ दया निधि तेरो गति जानी न परे । अकरन करन करन अकरन जो करनहि करन करे ॥ जय अरु बिजय पाप कह कीन्हों ब्राह्मण आप दिवायो । असुर योनि ताऊपर दीन्हो धर्म जु छीन करायो ॥ पिता बचन मेटे सो पापी सो प्रह्लादहि कीन्हो । ताके काज खंभसों प्रकटे नृसिंह रूप तब लीन्हो ॥ यज्ञ करन वैरोचन के सुत बेद बिबिधि बिधि धर्मा । ते तुम बांधि पताल पठाये क्यों न दया निधि कर्मा ॥ दानि सुधर्म भान सुत कहिये ते तुम बिमुख कहाये । अधर्म धर्म सों पांडव सुत ज्यों सो तुहरे मन भाये । पति व्रता जालंधर जुवती ते तुम व्रततें टारी । अधम जोनि की मर्म पूछरी सुआ पढ़ावत तारी ॥ मुक्त होत जोगी जन श्रम करि असुर विरोधे पावै । अकथ कथा

करुणा मय तेरी सूर कहा कहि गावै ॥ १८३ ॥ राग गौरी ॥ को को न तर्‌यो हरि नाम लेत । पतित अधम गणिका है केत । सुआ पढ़ावत गणिका तारी । व्याध तर्‌यो सरिघातहि डारी ॥ अन्तर दाह को मिटै उपास । कोइ एक हरिजन भाग्यो दास ॥ तारे खग मृग पसू पखान । तारे इन्द्र जु लिये विमान ॥ कोउ जोग युक्ति कोउ भक्ति भाई । ध्यान ध्यान कोउ गुरु लखाई ॥ कोउ पूजा करि यज्ञ अचार । कोउ अस्नान धन देत अपार ॥ चिन्ता चित सब मेटहु मान । सूर दास हरि प्रगट बान ॥ १८३ ॥ राग धनाश्री ॥ जिनतनु ना हरि भजन कियो । सूकरकूकर स्वग मानों यहि सुख कहाजियो ॥ जो जगदीश ईश सबहिन को कबहु न लागु हियो । निपट निकट जदुनाथ बिसार्‌यो माया मदहि पियो ॥ चारि पदारथ के प्रभु दाता नहि चित चरन दियो । सूरदास भगवन्त भजन बिनु वृथाहीं जनम लियो ॥ १८४ ॥ राग धनाश्री ॥ हिरा जिनि पर्‌यो हरि मेरो । माया जल बूड़त हो तकि तट चरण शरण धरि तेरो ॥ भव सागर वो हित वपु मेरो लोभ पवन दिशि चारो । सुत धन धाम तृषा हित औरें लुट्यो वहुत विधि भारो ॥ अब भुव भवर पर्‌यो दृढ नायक निकसन की सब विधिको । सूर शरद शशि वदन दिखाये उठें लहर जल निधि को ॥ १८५ ॥ राग कान्हरो ॥ जो अपने मन हरि सों राचे । आन उपाय प्रसङ्ग छांडिके मन वच क्रम अनुसांचे ॥ निशि दिन नाम लेतहै रसना फिरि जु प्रेम रस माचे । यह विधि सकल लोकमें बाचै कौनकहे अब सांचे ॥ शीत उष्ण सुख दुख नहि मानत हरष सोक नहि बाचे ॥ जादू समाइ सूर वा निधिमें बहुरि जगत नहिं नांचे ॥ १८६ ॥ राग धनाश्री ॥ मेंहरि उघरि दाव दैहार्‌यो ॥ आज्ञाभंग भई कासोपैं बचन पाय जु तिहार्‌यो ॥ हारि मानि उठि चले दीन ह्वै जानिआपनी कैद ॥ समुझ लेहु तुम इतनी सोपैं बचन तिहारे बैद ॥ उतरुन कों उत्तरु नहि आवै तबहीं मिलि उडि जाते तुमरी कीरति बात ब्रह्मकी अधर बचन मद माते ॥ अपना चालि जोरि मनहीं मन रचे बसीठो तेरी ॥ सूर एकछ अंगन कापैं मैं देख्यो टकटोरी ॥ १८७ ॥ राग कान्हरो ॥ दीन जन कैसें आवै शरन ॥ भूले फिरत सकल जल थल मग सुनहु ताप चय हरन ॥ परम अनाथ विवेक नैन बिनु निगम नैन नहि पावै ॥ पगु पगु प्रति क्रम कूप मोह तम को करि कृपा बतावै ॥ नहि कर सुकृत सुमति सत संगति जेहि अधार तनु तरिये ॥ प्रबल प्रखेद दुमति दस हृदि से सुधो कहो कह करिये ॥ उचट आन दैव जाचत नहि मुक्त शब्द सुधि पावै ॥ सूर श्याम पद नख प्रताप बिनको यह तिमिर सिटावै ॥ १८८ ॥ राग सोरठ ॥ देखो ऐसो हरि सुभाव ॥ बिन गंभीर उधार उदधि प्रभुजानि शिरो मनि राव ॥ उदन प्रसन्न कमलपद सनमुख देखतहैं जैसे ॥ बिमुख भयेकि कृपा वामुखकी फिरि चितवो तो तैसे ॥ सरसों इतनी सेवा के गुन मानत मेरु समान ॥ मानत सकुच सिंधु अपराधहिं बंद आपनें जान ॥ भक्त बिरह कातर करुनामय डोलत पाछे लाग ॥ सूर दास ऐसे प्रभु को दये पीठि अभाग ॥ १८९ ॥ राग परज ॥ पतित पावन हरि नाम तिहारो कौने हो धरो । हौं तो दीन दुखित संसय रत द्वारे रटत परो ॥ जोनि जातना जीव रुधिर मल जब जब जठर जरो । तबहीं तब तुम निकट बिसारो सत अपराध भरो ॥ विद्यमान

भव शूल सहत श्रम काल कलस निदरौ । औरो कोटि कुटिल करणा मय तिनतें कहा सरौ । ना जानो वह सूर महा सठ कौन दोष बिसरौ ॥ १९० ॥ राग धनाश्री ॥ जगत पति नाम सुन्यों हरि तेरो । मन चातक जल तज्यो स्वाति हित एक रूप व्रत धरो ॥ नेक बियोग गिनत नहि मानत प्रेम काग बपु हारो । राका निशि केते अन्तर सिर निमिष चकोर न लावत । निरखि पतङ्ग ध्यान नहि छांड़त जदपि जोति तनु तावत ॥ कीने नेंह निबाहि जीवजड़ ते इतउत नहिं चाहत । जैहै काहि समीप सूर नर करि बचननि दोउदाहत ॥ १९१ ॥ राग बिहागरो ॥ जो पै रामनाम धन धरतो टरतौ नहीं जन्म जन्मांतर कहा राज जम करतो ॥ लेतो करि ब्यौहार सबनि सों मूल गांठ में परतो । भजन प्रताप सबाई घृत मधु पावक परे न जरतो ॥ सुमृत गीन बेद विधि बैठो विप्र परोहन भरतो । सूर चले बैकुंठ पैठ के को बिच कौन जो अरतो ॥ ॥ १९२ ॥ राग सोरठ ॥ गोबिंद हैं मनके मीत । गज अरु ब्रज प्रह्लाद द्रोपदी सुमिरत ही निहचीत ॥ लाक्षा गृह पांडवन उबारे शाक पच मुख नाये । अंबरीष हित आप निवारे व्याकुल चले पराये ॥ नृप कन्या को व्रत प्रति पारो कपट भेष इक धारो । ता में प्रगट भये श्री पति जू अरि गन गर्भ प्रहारो ॥ कोटि ध्यान वै नृप सैना सब जरासंध बंध छोरै । भगति बिरह के अंतहि पाये गर्भ असुर बल नासोरै ॥ गुर बांधव हित मिले सुदामहि तंदुल पुनि सो जाचत ॥ संकट हरन चरन हरि प्रगटे बेद बिदित जसु गावै । सूर दास ऐसे प्रभु तजि कै घर घर देव मनावै ॥१९३॥ राग रामकली ॥ ब्रज नाथ अनाथ हि के संगी । दीन दयाल दुखित करुणा मय जन हित कारन प्रभु बहुरंगी ॥ पारथ पति कौरव जु सभामें पटवो लैन कह्यो हरि संगी । श्रवण सुनत बरुना सरिता अति बाढ़ी बसन उमंगी ॥ कहा कूबरी सील रूप गुण बस भये ललित त्रिभंगी । गज ग्रासें ज्यों उग्र बिना बल बिलपत बिकल गात गति खंगी ॥ भक्तन बछल कृपा निधि केशव प्रेमिन के प्रभु संगी । आये धाय गरुड़ ही तजि कै कर धर नख टर खंगी ॥ अब लोकहू प्रतिज्ञा प्रभु की तहां परत जो पद परतंगी । सुनतहि श्रवण सूर अति गरजत जग जश अधम अनंगी ॥ १९४ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु तुम दीन के दुख हरन । श्याम सुन्दर मदन मोहन बान अशरन शरन ॥ दूरि देखि सुदाम आवत धाय परस्यो चरन । लक्ष सो बहु लछ दीन्हों दान अब ढर ढरन ॥ बधे कौरव भंज कीन्हों भयो गिरिवर धरन । सूर प्रभु की कृपा जा पर भक्त जन सब तरन ॥ १९५ ॥ राग धनाश्री ॥ हौं तो सब पतितन कों राजा । निन्दा पर मुख पूर रही जग यह निशान निज बाजा ॥ तृष्णा देह सुभूत्त मनोरथ इन्द्री छपी हमारे । मंची काम सुमति देवेको क्रोध हरत प्रतिहारे ॥ गज हंकार चल्यो दिग बाजइ लोभ छत्र धरि शीश । भुव पति ज्ञानि भज्यौ निज भव तजि सत संगत पति ईश ॥ मोह मही जीते सब गावत बंदी दोष अपार । सूर बिरद निज गढ गहि राख्यो अन्त काल की बार ॥ १९६ ॥ राग धनाश्री ॥ अब हौं कहौ कौ नदर जांउ । तुम जु गुपाल चतुर चिन्ता मनि दीन बन्धु सुनि नांउ ॥ माया कपट जूप कौरव अति लोभ मोह मद भारी । परबस परी सुनहु करुणा मय मन मति पति चिय

भारो ॥ क्रोध दुसासन गहे खाज पट मरन अधिक पति मेरी । सुर नर मुनि को उ निकट न आवत सूर समझि हरि चेरो ॥ १९७ ॥ राग नट ॥ मन बस होत नाहि ने मेरे । जिनि बातनि तें बच्यो फिरत हौं तेई बात अनेरे ॥ कासों कहों करों कछु औरै औरै आनत घेरे । तापर दोष लगावन कों सिर बैठो देखत नेरे ॥ कहा करों फिरिबेरो बहुत दिन अंकुश बिना मुकेरे । अबके सूर दास याके बसद्वार परो है तेरे ॥ १९८ ॥ ॥ राग नट ॥ जो पै मन कालिमा न छूटै । तो कहा जोग यज्ञ तप कीन्हें बिन कन हितु यहि कूटै ॥ कहे अज्ञान कियो तीरथ कै अङ्ग भस्म जट तूटै । कह पुरान पढ़ि भयो अठारह ऊर्द्ध धूमके छूटै ॥ मन शोभा को बहुत बड़ाई इतने कछू न छूटै । सूर दास तबही तम नासे ज्ञान अगिनि झर फूटै ॥ १९९ ॥ राग नट ॥ मेरी बैर है क्यों शोचि । कोटिके अघफांस फार बहु ज्यों दियो गज मोचि ॥ कौन करनो करी बढि में सेा करो फिरि कोंधि । न्यावको खुनु सेा न कोजे चूक पल भर बांधि ॥ मैं कछू कर वेा न छाड्यो या संसारहि पाई । दीन दयाल कृपा सिन्धु भक्तन के सुख दाई ॥ तऊ मेरो मुख मानत नाहीं करत न लागी बार । सूर प्रभु यह जानि पदवो चले वेलहि आर ॥ २०० ॥ *

इति श्रीकृष्ण नन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सूरसागर रागकल्पद्रुम

अपनी दीनता प्रभुजी को माहात्म्य विनय पत्रिका सम्पूर्ण

॥ अथ सूरसागर रागकल्पद्रुम ॥

॥ श्री गोपीजनवल्लभायनमः ॥

श्रीरागसागरोद्भव श्रीकृष्ण गोकुल तें मथुरा पधारे
सो लीला प्रारम्भ

॥ राग धनाश्री ॥ कछु एक दृज औरों रहो हरि होरि हो ॥ अब जनि मथुराजाऊ परब करऊ घर आपने हरि हो ॥ कुशल क्षेम निरबाऊ अहो हरि होरि हो ॥ ऐंठे उर उन मानके हरि० सबन कियो मति एक अहो हरि० ॥ ऋतु राजहि देखन चली फूलत कुसुम अनेक ॥ नवे नवल नव नागरी नव जोवन नव भूप । नयो नेह नित नाऊ सों नवसत सजे अनूप ॥ दशे दिशो दिशि घोषि में घर घर करहि अनंद । नर नारी मिलि याचहीं जय दृन्दावन चंद ॥ एकादशि एक प्रीति सों चली जमुन के तीर । बरन बरन बनि बनि चलीं पीत अरुन तन चीर ॥ द्वादश अभरन द्वादशो साजि चली दृजनारी । हरि हलधरहि सुनावहीं देहि नंद कों गारी ॥ ते रसि तियमें तन भई खेलत प्रीतम सङ्ग । भरत भरावत लाजहो लज्जित कोटि अनङ्ग ॥ चौदश चतुर सखी मिलि हल धर पकरे धाई । मुख मांड़े छांड़े नहो काजर देहि बनाई ॥ पून्यो पूरन प्रीति करि हरि आयेहरि चाइ । बल भैया कों छांड़हू फगुवा देऊ मंगाइ ॥ मोहन पकरे करि मतो मुरली लई छिनाइ । राधा सों बिनती करी हमहो देव मंगाइ ॥ नन्द छिडावहु श्याम कों याजग में जशुलेऊ । जशुमति धरि दृषभानकों फगुवा हमरो देऊ ॥ जशुमति हंसि सब सखिन सों राधे लीनी बोल । मेवा मिठो बहु रतन दई सबन भरि चोल ॥ होरो हरषि हलायकें मोहन झूले डोल । गावत सखी निशंक ह्व कहि कहि अमृत बोल ॥ पाट सिंहासन बैठि करि अरु अभिषेक कराइ । राज करऊ नित लाड़िले सूर दास बलिजाइ ॥ १ ॥ राग कान्हरो ॥ अहो नृप है अरि प्रगट भये । बसे नन्द गृह गोकुल थनक दियो सु दिन गये ॥ तुमहूं को दुख बहुत जनम को रथ मारग आरोपे । ता दिन तें शिसु सप्त देवकी तेरेही कर सोंपे ॥ जो परि राज काज सुख चाहे बेगि बुलाय न लीजै । हारि जीति दोउन की विधि जस ह्वै है सोई कीजै ॥ ऐसेकहि बैकुंठ सिधारे कष्ट निशा बिकराई । सूरश्याम कृत

कीवे इच्छा सुनि मन यहै उपाई ॥ २ ॥ राग कल्यान ॥ तुम बिन मेरे हितू न कोऊ । सुनि अक्रूर पुरत नृप भाषत नन्द महर सुत ल्यावहु दोऊ ॥ सुनि रुचि बचन रोम हर षित तनु प्रेम पुलकि मुख कछू न बोल्यो । यह आयसु पूरन सुकृतबस सोकाकूल पै जाय न तोल्यो ॥ मौन देखि परिहंस नृप भीनौ मनहुं सिंह मृग आय तुलानो । यहि क्रम बिनु बे सुत अहीरके रे कति रुकत मनहि सकुचानो ॥ आयसु पाइ श्रेष्ट रथ करि गहि अ नुपम तुरङ्ग साज धृत जोर्यो । सूर श्याम की मिलनि सुरति करि मनु निर धनि निधि पाइ बिभोर्यो ॥ ३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ नारद ने कंस को समुझायो ॥

॥ राग बिलावल ॥ फाग रंग करि हरि रसराख्यौ । रह्योन मन युवतिनके काख्यौ ॥ सखा सङ्ग सबकों सुख दीन्हों । नर नारिन मन हरि हरि लीन्हों ॥ जो जेहि भाव ताहि हरि तैसे । हित कौं हित कैतव कों नैसे ॥ महरि नंद पितु मात कहाये । तिनही के- हित तनु धरि आये ॥ जुगजुग यह अवतार धरत हरि । हरता करता विश्व रहे भरि ॥ धरनी पाप भार भइ भारी । सुरनि लिये संग जाइ पुकारी ॥ चाहि चाहि श्रीपति दैत्यारी । राखि लेहु मोहि शरण उबारी ॥ राजस रीति सुरनि कहि भाषी । भये चंद सूरज तहां साखी ॥ क्षीर सिंधु अहि शयन मुरारी । प्रभु श्रवणनि तहां परी गुहारी ॥ तब जान्यों कमला केकंता । दनुज भार पृथ्वी से मंता ॥ सिंधु मध्य बाणी पर गासी । भुव अवतार कह्यो अबिनासी ॥ मथुरा जनमि गोकुलहि आये । मात पिता सुत हेत कहाये ॥ ना- रद कहि यह कथा सुनाई । दृज लोगनि सुख दियो कन्हाई ॥ नन्द जशोदा बालक जान्यों गोपी काम रूप करि मान्यों ॥ प्रथम पिबत पय बकी बिनासो । तुरत सुनत नृप भयो उदासी ॥ यहि अन्तर जे दनुज संघारे । यहि अन्तर लीला बहु धारे ॥ को महिमा कहि सकै तुम्हारे । बाल तरुण सुख न्यारे न्यारे ॥ धन्य धन्य ये व्रज के बासी । बस कीन्हे जिनि ब्रह्म उदासी ॥ अकल कला निगमहु तें न्यारे । ते युवतिन संग बननि बिहारे ॥ आज्ञा दुहै मोहि प्रभु दीन्हों । यह अवतार जबहि भुव लीन्हों ॥ दैत्य दहन सुर के हित कारी । अब मारौ प्रभु कंस प्रचारी ॥ यह सुनि हंसे सुरनि के नाथा । जब नारद गाईयह गाथा ॥ श्री मुख कह्यो जाय समुझावहु । नृप आयसु करि मोहि बुलावहु ॥ अञ्जलि जोरि देव मुनि हरषे । कृपा बचन तिनसों हरि बरषे ॥ तुरत चले नारद नृप पासा यहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥ सङ्कर्षन हृदये प्रकटाई । जो बानी ऋषि गये सुनाई ॥ आदिपुरुष अद्वैत बिचारी । शेष रूप हरि के सुखकारी ॥ हरि अन्तर्यामी जग ताता । अनुज हेत जग मानत नाता ॥ यहै बचन हलधर कहि भाख्यो । सुनि सुनि श्रवण हृदय हरि राख्यो ॥ तुम जनमे भुव भार उतारन । तुम हौ अखिल लोक के तारन ॥ तुम हौ

सब संसार के सारा । जल थल जहां तहां विस्तारा ॥ तब हंसि कह्यौ भ्रात सों बानी। जो तुम कहत बात मैं जानी ॥ कंस निकन्दन नाम कहाऊं । केस गह्यं पुहमी घिस टाऊं॥ यहि अन्तर गये मुनि नृप पासा । मन मारे मुख करे उदासा ॥ हरषि कह्यौ मुनि निकट बुलाये । आदर करि आसन बैठाये ॥ कैसें मुख क्यों मन रिषि मारे । कह चिन्ता जिय बढ़ी तुम्हारे ॥ नारद कह्यौ सुनौ हो राऊ । कह बैठे कछु करौ उपाऊ ॥ त्रिभुवनमें तुम सरि को ऐसो । देखौ नन्द सुवन हज वैसो ॥ करत कहा रजधानी ऐसी । यह तुम कों उपजी कछु नैसी ॥ दिन दिन भयो प्रबल यह भारी । हम सब हित को कहें तुम्हारी तब गर्वित नृप बोले बानी । कहा बात नारद तुम गानी ॥ कोटि दनुज मो सरि सो पासा । जिनकों देखि तरनि तनु त्रासा ॥ कोटि कोटि तिनके सङ्ग जोधा । को जीवै तिन के तनु क्रोधा ॥ मल्लनि के बल कहा बखानौ । जिनके दरशन काल डरानौ ॥ कोटि धनुर्द्धर सस्तत हारे । बचै कौन तिन कों जु हंकारे ॥ एक कुवल या त्रिभुवन गामी ऐसे और कितिक हैं नामी ॥ ग्वाल सुतनकी कथा चलावहु । यह बानी कहि कहासुनावहु ॥ प्रजालोग व्रजके सब मेरें । सेवा करत सदा रहैं नेरे ॥ तातें सकुचत हौं उनि काजा । बालक सुनत होत जिय लाजा ॥ भली करी यह बात सुनाई । सहज बुलाय लेउंदोउ भाई ॥ और सुनहु नारद मुनि मोसों । श्रवणनि लागि कही कछु गोसों ॥ कितिक बात बलराम कन्हाई । मो देखत अति काल डराई ॥ आजु कालि अब उनहि बुलाऊं । कहि पठऊं व्रज सहित मंगाऊं ॥ और प्रजा व्रज आनि बसाऊं । अपने जिय की खुटुक मिटाऊं । तिन पर क्रोध कहा मैं पाऊं ॥ रंग भूमि गज चरण रुंदाऊं । मेरे समसर के बेनाहीं । यह सुनिके नारद मुसुकाहीं ॥ सत्य बचन नृप कहत प्रचारे अबजाने उनितौ तुम मारे ॥ यह कहि मुनि बैकुंठ सिधारे । त्रिभुवन में को बलहि तुम्हारे ॥ कंश परयौ मन यहै बिचारा । रामकृष्ण वध यहै खभारा ॥ दनुज हृदय हरि यहै उपायो । नारद कही सुनत मन आयो ॥ अब मारन नहि गहरु लगाऊं । मथुरा जहां तहां बल छाऊं ॥ धक धकात जिय बहुरि सम्हारै । क्यों मारौं सो बुद्धि बिचारै ॥ सूरज प्रभु अविगति अबिनासी । कंश काल यह बुद्धि प्रकासी * ॥ कंसके मन को बिचार ॥ १ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ ॥

॥ * ॥ अक्रूरको बुलाय श्रीगोकुल भेजे इत्यादि प्रसंग ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग सोरठ ॥ नृपति मन यहै बिचार परयो । क्यों मारों दोउ नंद दुटौना एही अरनि अरो ॥ कबहूं कहत आप चढ़ि धाऊं यहै विचार करो । सात दिवस में बधी पूतना यह सुनि मनहि डरो ॥ पुनि साहस जिय जिय कहि गर्व्यो ताको काल सरयो । सूर श्याम बलरामहृदयतें नेकनही बिसरयो ॥ २ ॥ राग सोरठ ॥ महर दुटोना सालि रहै । जनमहितें अप डाव करत है सुनि सुनि हृदय कहै ॥

दनुज सुतापति लैहि संघारी पय पीवत दिन सात । गयो प्रतिज्ञा करि कागा सुर आय गिरो सुर छात ॥ तृणा सकट छिनमेंहि संघारो केशी हन्यों प्रचारि । जे जे गये बहुरि नहि देखे सबहिन डारे मारि ॥ ज्यों ज्यों करिरनि दुहुंनि संघारो बात नहीं कछु और। सूर नृपति शोचत यहमन मन यहै करत मन दैर ॥ ३ ॥ राग मारू ॥ नंद सुत सहज बुलाय पठाऊं । श्याम राम अति सुंदर कहियत देखन काज मगाऊं ॥ जैहै कौन प्रेम करि ल्यावै भेद न जानै कोई । महरि महरिसों हित करि ल्यावै महा चतुर जो हे ई ॥ यहि अन्तर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज । सूर चले मन शोच बढ़ाये को नहै ऐसो काज ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ अति आतुर नृप मोहि बुलायो । कौन काज ऐसो है अटक्यो मन मन शोच बढ़ायो ॥ आतुर जाय पौरि भये ठाढ़े कह्यो पौरिया जय । सुनत बुलाय महलही लीन्हो सुफलक सुत गये धय ॥ कछु डर कछु जिय धीरज धारैं गयो नृपति के पास । सूर शोच मुख देखि डरानो ऊरध लेत उसास ॥ ५ ॥ राग मारू ॥ चर्चरी ॥ शोच मुख देखि अक्रूर भरमै । माथ कर नाय कर जोरि दोऊ रहे बोलि लीन्हो निकट बचन नरमै ॥ आपुहीं कंस तहं दूसरो कोउनहीं चास अक्रूर जिय कहा कैहै । नृपति जिय शोच जान्यों हृदय आपने कहत कछु नहीधों प्रान लैहै ॥ निकट बैठाय सब बात तेही कह्यो गये जे भाषि नारद सवारै । सूर सुत नंदके हृदय सालत सदा मंच यह और नहि इन्हैमारै ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ सुनहु अक्रूर यह बात निहचै कही आजु मोहि भोरतें चैन नाहीं । श्याम बलराम यहनाम सुनि ताम मोहि काहु पठवहु जाहि तिनहिं पाहीं ॥ प्रीति करि नंदसों सहज बातें कहै तुरत ल्यावै दुहुनि नृपति बोलै । देखिबे साध बहुत सुनि गुण विपुल अतिहि सुन्दर सुने दोउ अमोलै ॥ कमल जबतें उरग पीठि ल्याये सुनै यहै बकशीस अब इनहि दैहै । सूर प्रभु श्याम बलराम कोडर नहीं बचन इनके सुनत हरष पैहै ॥ ७ ॥ राग सोरठ ॥ यह बानी कहि कंस सुनाई । तब अक्रूर हिये भयो धीरज डर डारो बिसराई ॥ मन मन कहत कहा चित बैठो सुनि सुनि ऐसी बानी । अपनो काल आपही बोल्यो इनकी मोचु तुलानी ॥ हरषि बचन अक्रूर कहै तब तुरत काज यह कीजै ॥ सूरजाहिं आयसु करि पाऊं भोर पोत तहि दीजै ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ तब अक्रूर कहत नृप आगे धन्य धन्य नारद मुनि ज्ञानी । बड़े सचु व्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी चित आनी ॥ महाराज तुम सरिको ऐसो तऊ जगत यह चलत कहानी । अब नहि बचे क्रोध नृप कीन्हो जैहै छिनकि तवाज्यों पानी ॥ यह सुनि हरष भयो गर्व्वानो जबहि कही अक्रूर सयानो । कालि बुलाय सूर दोउ मारौं बार बार भाषत यह बानी । ॥ ९ ॥ राग बिल वल ॥ कंस नृपति अक्रूर बुलाये । बैठि एकांत मंच दृढ़ कीन्हो राम कृष्ण दोउ बंधु मंगाये ॥ कहूं मल्ल कहुं गजदै राखे कहूं धनुष कहुं बीर । नंद सहर के बालक मेरे करषत रहत शरीर ॥ उनहि बुलाय बीचही मारौ नगर न आवन पावै । सूर सुनत अक्रूर कहत नृप मन मन मौज बढ़ावै ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ यहै मंच अक्रूरसों नृप रैनि विचारी । प्रात नंद सुत मारिहौं यह कह्यो प्रचारी ॥ करि विचार

जुग जामलों मंदिर प्रभु धारे । कह्यो आहु अक्रूरसों भये आलस भारे ॥ तुरत जाय पलका परे पलकनि झबकानो । श्याम राम सपने खरे तहां देखि डरानो ॥ अति कठोर दोउ कोल से भरम्यो अति झझक्यो । जागि परो तहं कोउ नहीं जियही जिय ससक्यो ॥ चौंकि परो संग नारिके रानी सब जागीं । उठीं सबै अकुलायके तब बूझन लागीं ॥ महाराज झझके कहा सपने क्यों संके । सूर अतिहि व्याकुल भये घर घर उर दंके ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ महाराज क्यों आजुही सपने झझकाने । पौढ़े अबहीं आयके देखे बिलखाने ॥ कहा सोच ऐसो परो ऐसो पुहुमी को । काकी सुधि मनमें करी कहिये अपजीको ॥ रानी सब व्याकुल भईं कछु भेद न पावैं । तब आपुन सहजहि कह्यो वह नहीं जनावैं ॥ सावधान करि पोरिया प्रति हार जगावै । सूर चास बल श्यामके नहि पलक लगावै ॥ १२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ नंदजीको स्वप्नभयो ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग बिलावल ॥ उत नन्दहि स्वप्नो भयो हरि कहूं हिराने । बल मोहन कोउ लै गयो सुनिके बिलखाने ॥ ग्वाल सखा रोवत कहैं हरितो कहुंनाहीं । संगहि संग खेलत रहे यह कहि पछिताहीं ॥ दूत एक संग लैगयो बलराम कन्हाई । कहा ठगोरी सो करी मोहनो लगाई ॥ बाहीके दोउ ह्वै गये हम देखत ठाढ़े । सूरज प्रभु वे निठुर ह्वै अतिही गये गाढ़े ॥ १३ ॥ राग सोरठ ॥ व्याकुल नंद सुनत यह बानो । धरनी मुरछि परी अति व्याकुल बिबस जशोदा रानी ॥ व्याकुल गोपि ग्वाल सब व्याकुल व्याकुल व्रज की नारी ॥ सुनी बात बलराम श्याम को लै गयो दूत एक दुख कारी ॥ धरनी परति उठति पुनि धावति एहि अंतर नंद आगे ॥ धक धकात उर नैन स्रवत जल सुत अंग परसन लागे ॥ सुसकत सुनि जशुमति अति आतुर कहा मरहर भस पायो ॥ सूर नंद घरनीके आगें एह भस नहीं सुनायो ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कंसको स्वप्नभयो ताउपरांतको वृत्तान्त

राग कल्यान । एक जाम नृप को निसि जुगतें भइ भारी ॥ आपनहू जाग्यो संग जगीं सब नारी ॥ कबहु उठत बैठत पुनि कबहुं सेज में सोवै । कबहुं अजिर ठाढो ह्वै ऐसे निसि खोवै ॥ बार बार जोतिष सो घरी बूझि आवै ॥ एक जाय पहुंच नहीं अरु एक पठावै ॥ ज्योतिष जिय त्रास परेा कहा प्रात करिहै ॥ सूर क्रोध भरो नृपति काके सिर परिहै ॥

॥ १५ ॥ राग कल्यान ॥ व्याकुल ते रैनि कटी बची घरी बाकी ॥ एक एक छिन जांम जांम ऐसी गति ताकी ॥ को जैहै ब्रजकों मन करैकेहि पठाऊं ॥ जासों कहि नंद सुवन आजुही मंगाऊं ॥ अब नहि राखों उठाय वैरो नहि नान्हों ॥ मारों गजपैं रुंदाय मनहीं अनुमान्यों ॥ पठऊं अक्रूरहि कों ऐसो नहिं कोऊ ॥ सूर जाय गोकुल तें ल्यावै ठगि दोऊ ॥ १६ ॥ राग बिलावल ॥ अरुण उदय अतिही अक्रूर बुलाये ॥ आप कह्यो प्रति हार एक सुनि कें सब धाये ॥ सोवत जाय जगाय कें कही बात प्रकासा ॥ आयसु, माथें मांनि कें उठि चले उदासा ॥ नृपति द्वार पर खरौ देखत सिर नायो ॥ कहि खवास कोंसें न दै सिर पाग मंगायो ॥ अपनें करकरिकें दियो सुफलक सुत लीन्हों ॥ हाथ जोरि नृपति को परनाम जु कीन्हो ॥ मुखअक्रूर हरषित भयो हिरदै बिल खानों ॥ असुर नास जिय अति पर्यो कहा कहै सयानों ॥ तुरतहि रथ पजनायकें अक्रूरहि दीन्हों ॥ आयसु सिरपर मानि कें आतुर ह्वै लीन्हों ॥ बिलम्ब करहु जिनि नेकहुं अबहीं ब्रज जाहु ॥ सबै काज सरि आवइ जिनि रैनि बसाहु ॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु देव इक बात जनाऊं ॥ आइ सु भयो तुरत लैआवहु तातें फेरि सुनाऊं ॥ बलमोहन बनजात प्रातही जौउनकों नहिपाऊं ॥ रैहौं आजु नंद गृह बसिकै कालि प्रात लै आऊं ॥ यह कहि चले नृपतिहूं मान्यों सुफलक सुत रथहांक्यो । सूरदास प्रभु ध्यान हृदय धरि गोकुल तनको ताक्यो ॥ १८ ॥ रागगौरी सुफलक सुत मन परयो विचारा ॥ कंस नृबंस होय हत्यारा । नगर मांझ रथ कीन्हों ठाढ़ो सोच पर्यो मन मन अति गाढ़ो ॥ मंत्र कियो निसि मेरे साथ । ल्यावन कह्यो बल अरु ब्रज नाथ ॥ गज मुष्टिक चाणूर निहारेा व्याकुल नीर नैन दोउ ढारेा ॥ अति बालक बलराम कन्हाई । कहाकरौं कछु नाहि बसाई ॥ कैसे आनि देउ मैं जाई ॥ मो देखत मारै दोउ भाई । मारै मोहि बंदि लै मेलै । आगे को रथ नेक न ठेलै ॥ सूरदास प्रभु अंतर जामी ॥ सुफलकसुत मन पूरन कामी ॥ १९ ॥ राग कल्यान ॥ सुफलक सुत हृदै ध्यान कीन्हो अबि नासी ॥ हरन करन सम रसव सब घट घटके बासी ॥ धन्य धन्य कंसहि मोहि जिनि पठायो ॥ मेरो करि काज मोच आप को बुलायो । यह सुनि रथ हांकि दियो नगर परेा पाछें ॥ कछु सकुचत कछु हरषत चल्यो लाग काछें ॥ बहुरि सोच परेा दरस दच्छिन द्रग माला ।हरष्यो अक्रूर सूर मिलिहौं गोपाला ॥ २० ॥ राग टोड़ी ॥ दच्छिन दरश देखि द्रगमाला । अति आनन्द भयो तेहि काला ॥ एही बन मिलिहौं गोपाला । श्याम जलद तनु अंग रसाल । ता दरशन तें होउं निहाला ॥ बहु दिनके मेटों जंजाला । मुख शशि नयन चकोर बे हाला ॥ तनु त्रिभंग सुन्दर नंद लाला । बिबिध सुमन हृदये शुभ माला ॥ सारसहूतें नयन बिशाला । निश्चय भयो कंस को काला ॥ सूरज प्रभु त्रिभुवन प्रति पाला ॥ २१ ॥ राग आसावरी ॥ दाहिनी हों देखत द्रगनि की मालहि । मनो यह शकुन अबहिए बनइनि भुजभरिकै भेटौं गोपालहि ॥ निरखि तनु त्रिभंग पुलकित सकल अंग अंग धरनि अंकुर जैसे पाय पावस कालहि । परिहौं पांयनि जाय भेटिहैं अंक लगाय मूलतें जमी जो बेलि चढ़नि तमालहि ॥ परसि प्रेम आनन्द सोंचिकै कामना कन्द करिहैं प्रकट प्रति प्रेम प्रवालहि । बचन रचन हास सुखद सुख

निवास कंस फल फलित फल अमल रसालहि ॥ स्फुरित शुभ सुवाक्य लोचन मन उछाहु फलिके सुकृत फल फलितेहि कालहि । निगम कहत नेति शिवन सकतबेति सूरसु हृदय लगाय लेहों ता दयालहि ॥ २२ ॥ राग कान्हरो ॥ आजु जाय देखिहौं वे चरण । शीतल सुभग सकल सुख दाता दुसह दवन दुख हरण ॥ अंकुश कुलिश कमल ध्वज चिन्हित अरुण कंज के रंग । गो चारत बन जात प्रातहौं गोप सखनि के संग ॥ जाको ध्यान धरत सुरमुनि जन शिव विरंचि सब ईश । तेई चरण प्रकट करि परसों इनि कर अपने शीस ॥ निरखि सरूप रहै नहि सकिहौं रथतें उतरिहौं धाय । सूर दास प्रभु उभै भुजा भरि हंसि भेटिहैं उठाय ॥ २३ ॥ राग नट ॥ जब शिर चरणनि धरिहौं जाय । कृपा करि मोहि टेकि लैहैं करनि हृदय लगाय ॥ अंग पुलकित वचन गद गद मनहि मन सुखपाय । प्रेम घट उछलित ह्वै है नयन अंबु बहाय ॥ कुशल बूझत कहि न सकिहौं बार बार सुनाय । सूर प्रभु गुण ध्यान अटकौ गयो पंथ भुलाय ॥ ॥ २४ ॥ राग आसावरी ॥ मथुरातें गोकुल नहि पहुंचे सुफलक सुत को सांझ भई । हरि अनुराग देह सुधि बिसरी रथ वाहन की सुरति गई ॥ कहां जात कित मोहि पठायो कोहौं मैं एहि सोच परयौ । दसहूं दिशा श्याम परि पूरन हृदय हरष आनन्द भरयौ ॥ हरि अन्तर जामी यह जानी भगत वछल बानो जिनको । सूर मिले जो भाव भक्त के गहर नहीं कीन्हो छिनको ॥ २५ ॥ राग कल्यान ॥ वृन्दावन ग्वालनि संग गैयनि हरि चारै । अपने जन हेत काज व्रजको पगु धारै ॥ जमुना करि पार गाय श्याम देत हेरी । हलधर संग सखा लये सुरभी गण घेरी ॥ धेनु दुहन सखनि कह्यौ आपु दुहन लागे । वृन्दावन गोकुल बिच जमुना के आगे ॥ भक्त हेत श्रीगोपाल यह सुख उपजायो । सूरज प्रभु को दरशन सुफलक सुत पायो ॥ २६ ॥ राग कान्हरो ॥ सुफलक सुत हरि दरशन पायो ॥ रहि न सक्यौ रथपर सुख व्याकुल भयो बहै मन भायो । भुवपर दौरि निकट हरि आयो चरणनि चित्त लगायो । पुलकअंग लोचन जल धारा श्रीगृह शिर परसायो । कृपा सिंधु करि कृपा मिले हंसि लियो भक्त उर लाय । सूरदास यह सुखसोइ जानै कहौं कहा मैं गाय ॥२७॥ राग केदारो ॥द्वर्चरी॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लायो । मिले तेहि भाव चितवनि चिते प्रेमसों भगत वछल नाम तौ कहायो ॥ कुसल पूछत प्रसन्न बचन अमृत रसन सुनि पुलक अंग अंग कीन्हों । चितै आननन चारुबुद्धि उर विस्तार दनुज अवदलौ यहज्वाब दीन्हों ॥ भेटही भेट शबद इतबानी कही तुरत बोले हेत हूहै वाके ॥ सूर भुज फरकि मन मैं न उछाहलै धरनि उद्धार हितबसो ताके ॥ २८ ॥ राम बिलावल ॥ श्याम हूहै कहिकें उठे नृप हमहि बुलाये ॥ अतिहि कृपा हमपरकरी जो कालि मगाये ॥ संगसखा यह सुनतही चकृत मन कीन्हों ॥ कहा कहत हरि सुनतही लोचन भरि लीन्हों । श्याम सखनि मुख हेरि के तब करी सयानी । कालि चलौ नृप देखिये शंका जिय आनी । हरष भये हरि यह कहै मन मन दुर्ख भारी ॥ सूर संग अक्रूर के हरि व्रज पगु धारी ॥ २९ ॥ राग रामकली ॥ अति कोमल बलराम कन्हाई ॥ दुहुंनि गोद अक्रूर लिये हंसि सुमनहुतें हरु आई ॥ ग्वाल संग रथलीन्हें

आये पहुंचे ब्रजकी खोरि । देखत गोकुल लोग जहां तहं नंद उठे सुनि रोरि । निसि सपने को चसित भये अति सुन्यो कंस को दूत । सूर नारि नर देखन धाए घर घर सोर अकूत ॥ ३० ॥ राग सारंग ॥ चर्चरी ॥ कंस नृप अक्रूर ब्रज पठाये । गये आगें लैन नंद उप नन्द मिलि श्याम बलराम उनि हृदै लाये । पकरि स्यंदन लियो देखि हरष्यो हियो कहत सब मनहि मन कहा आयो । राज के काजको नाम अक्रूर एहि किधौं कर लेनको नृप पठायो ॥ कुशल तेहि बूझि लै गये निज धाम ब्रज श्याम बल राम मिलि गये वाकों । चरण पखराय के सुभग आसन दियो बिबिध भोजन हरषि दियो ताकों । गयो अक्रूर तहं तुरत दोउ संग लै नारि नर लोग ब्रज सबै देखैं ॥ मनो आए संग देखि ऐसे रंग मनहि मन परस्पर करत भाष । सारि जेवनार अंचवन करि भये शुद्ध दियो तंबोर नंद हरषि आगे । सेज बैठारि अक्रूर सों जोरि कर कृपा कहं करी तब कहन लागे । श्याम बलराम को कंस बोलै नंद लै सुतनि हम पास वेग आवै । सूर प्रभु दरस की साध अतिही मोहि कह्यो समुझाइ जिनि गहरु लावै ॥ ३१ ॥ राग कान्हरो ॥ सुन्यो ब्रज लोग कहत यह बात । चकित भये नारी नर ठाढे पांचन आवै सात । चकृत नंद जशुमति भई चकृत मनहीं मन अकुलात । दै दै सैन श्याम बलरामहि सबै बुलावत जात । परब्रह्म अविगत अबिनासी माया रहित अतीत । मनो नाहि पहिचानि कछूकी करत सबै मन भीत ॥ बोलत नहीं नेक चितवत नहिं सुफलक सुत सों पागे । सूर हमहि हित करि नृप बोलै इहै कहत ता आगे ॥ ३२ ॥ राग बिहागरो ॥ व्याकुल भये ब्रज के लोग । श्याम मन नहि नेक आनत ब्रह्म पूरन जोग । कौन माता पिता कोहै कौन है पति नारि । हंसत दोउ अक्रूर के संग नवल नेह बिसारि । कोउ कहति यह कहां आयो क्रूर याको नाम । सूर प्रभु लै प्रात जैहै और संग बलराम ॥ ३३ ॥ राग बिहागरो ॥ चलन चलन श्याम कहत लैन कोउ आयो । नंद भवन भनक सुनी कंस कहि पठायो । ब्रज की नारि गृह बिसारि व्याकुल उठि धाईं । समा चार बूझन को आतुर ह्वै आईं । प्रीति जानि हेत मानि बिलखि बदन ठाढीं । मानहु वे अति बिचिच चिचसि लिखि काढीं । ऐसी मति ठौर ठौर कहतन बनि आवै । सूर श्याम बिछुरे दुख बिरह काहि भावै ॥ ३४ ॥ राग कान्हरो ॥ चलत जानि चितवति ब्रज जुवती मानहु लिखी चितेरे । जहाँ नंद सुत तहां एक टक जोवति फिरत न लोचन फेरे । बिसरि गई गति भांति देहकी सुनत न श्रवणनि टेरे । मिलिजु गये मानो पय पानी निरखत नहीं निबेरे । लागे संग मदोनमत्त के ज्यों धिरतन कैसेहुं घेरे । सूर प्रेम अंकुश आसा तजि बाहिन इत उत हेरे ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ सब मुरझानीरी चलवेकी सुनत भनक । गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल ह्वै रह्यो बूंद छनक । यह अक्रूर कहांतें आयो दाहन लाग्यो देह कनक । सूर दास स्वामी के बिछुरत घटत नहीं चहै प्राण तनक ॥ ३६ ॥ राग रामकली ॥ चर्चरी ॥ देखि अक्रूर नर नारि बिलखैं । धनु भंजन जज्ञ हेत बोले इनहि और डर नहि सबनि कहि संतोषै । महरि व्याकुल दौरि पाय गहि लै परी नंद उपनंद संग

जाहु लैकै । राजको अंस लिखि लेहु दूनो देउं मैं कहा करौ सुत दुहुनि दैकै । कहति व्रज नारि नैननि नीर ढारि कै इतनि को काज मथुरा कहा है । सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरे भये धनुष देखन कहत कपटि महा है ॥ ३७ ॥ राग सारंग ॥ व्रज बासिन के सरबस श्याम ॥ रे अक्रूर क्रूर बटमारे जी के जी मोहन बलराम । अपनो लाग लेहु लेखो कहि जे कछु राज अंसके दाम । और महर लै संग सिधारौ नगर कहा लरिकन को काम ॥ संतत साधु परम उपकारी सुनियत बड़ो तिहारो नाम ॥ सूर दास प्रभु पठइ मधुपुरी को जीवै छिनु बासर जाम ॥ ३८ ॥ राग सारंग ॥ नहीं कोउ स्याम राखै जाइ ॥ सुफलक सुत बैरी भयो मोकों कहति जशोदा माइ । मदन गोपाल बिना घर आंगन गोकुल काहि सुहाइ ॥ गोपी रहीं ठगीसी ठाढीं कहा ठगौरी खाइ ॥ सुंदर श्याम राम भरि लोचन बिन देखे दोउ भाइ । सूर तिनहि लै चले मधुपरी हिरदै शूल बढाइ ॥ ३९ ॥ राग सोरठ ॥ मोहन इतनो मोहि चित धरिये । जननी दुखित जानि करि कबहूं मथुरा गमन न करिये । यह अक्रूर क्रूर कृत पहिले तुमहि लैन है आयो ॥ तिर छे भये पुर बले पातक बिधि यह ठाट बनायो । मोसों मात तात व्रज पति सों कहत रहत दोउ भाई । तेहि मुख चलन कहत सुनि जीवति मेरो कछु न बसाई । सूर स्वरूप बिलोकि जशोदा धरनि परी मुरझाई ॥ बलि बलि जाउं मुखार बिंदकी बरजति रहौ कन्हाई ॥ ४० ॥ राग सोरठ ॥ जशोदा बार बार यों भाषै । है कोऊ व्रज हितू हमारा चलत गोपालहि राखै । कहा काज मेरे छगन मगन को नृप मधुपुरी बुलाये । सुफलक सुत मेरे प्राण हरन को काल रूप ह्वै आये । बरु यह गोधन कंस लेइ सब मोहि बंदि लै मेलै ॥ इतनो मागति कमल नैन मेरि अंखियनि आगें खेलै । को कर कमल मथानी गहि है को दधि माखन खैहै । बहु त्रो इंद्र बरषि है व्रज पर कोन मेरु कर लै है । बासर रैनि बिलोकें जीऊं संग लागि डुलराऊं ॥ हरि बिछुरत असु रहै कर्म बस तो किहि कंठ लगाऊं । टेरि टेरि धर परति जशोदा अधर बदन बिलखानी । सूर सुदशा कहां लगि बरनौ दुखित नंदकी रानी ॥ ४१ ॥ राग सूहौ ॥ सुफलक सुत के संगतें हरि होतन न्यारे । बार बार जननी कहै मोहि तज्यौ दुलारे ॥ कहा ठगौरी एहि करी मेरो बालक मोह्यो । हा हा करि करि मरति हौं मोतन नहि जोह्यो । नंद कह्यो परमोधिके संग मैं लैजै हौं । धनुष यज्ञ दिखरायके तुरतहि लैऐहौं ॥ घर घर गोपनसों कह्यौ कर भार जोरावहु । सूर नृपति केहार कौं उठि प्रात चलावहु ॥ ४२ ॥ राग बिहागरो जशमति अतिही भई बिहाल । सुफलक सुत यह तुमहि बूझिये हरतहौ मेरो बाल ॥ ए दोउ भैया व्रज जीवनि हैं कहति रोहिणी रोय । धरनी गिरति फिरति अति ब्याकुल कहि राखत नहि कोय ॥ निठुर भये जबतें यह आयो घरहू आवत नांहि । सूर कहा नृप पास तुम्हारो हम तुम बिनु मरि जांहि ॥ ४३ ॥ राग सोरठ ॥ कन्हैया मेरी छोह बिसारी । क्यों बलराम कहत नाहीतुम मैं तुम्हरी महतारी ॥ तब हलधर जननी पर बोधत मिथ्या यह संसार । ज्यों सावन को बेलि फफोंड़िकै फलति है दिन चार ॥ हम

बालक तुमको कह सिखवै कछु तुमहिंते जात । सूर हृदय धीरज अब धारौ काहे को बिलखात ॥ ४४ ॥ राग सोरठ ॥ यह सुनि गिरी धरनि धुकि मात । बड़ा अक्रूर ठगौरी लाई लिये जात दोउ तात ॥ इन्द्र समयकी हरत लकुटिया पाप पुण्य डर नाहीं । कछू नफा तुमकोंहै यामें सोचौ धौं मन माहीं ॥ नाम सुनति अक्रूर तुम्हारो क्रूर भयेहौ आई । सूर नन्द घरनी अति ब्याकुल ऐसेहि रैनि बिहाई ॥ ४५ ॥ राग भैरों ॥ भोर भयो व्रज लोगनिको । ग्वाल सखा सखि ब्याकुल सुनिकै श्याम चलत हैं मधुपुर कों ॥ सुफलक सुत स्यन्दन प्रलनावत देखे तहां बल मोहनकों । यह सुनि घर घरतें उठि धाईं नन्द सुवन मुख जोहनकों ॥ रोरि परी गोकुलमें जहं तहं गाय फिरति पय दोहनकों । सूर बर्षकर भार सम्हारत महर चलत हरि गोहनकों ॥ ४६ ॥ राग रामकली ॥ चलत कहियत हैं हो हरि आज । अब हीगई श्रवण सुनि आई करत गमनको साज ॥ कोउ एक कंस कपट करि पठवो कछु सन्देस दै हाथ । सो लै चल्यौ हमारो जीवनि सब निधि अपने साथ ॥ अब यह भूलन जात सखीरी सहि रहिये करि लाज । धीरज अवधि आसदै सबको सैन जनाय चलेव्रज राज ॥ छांड़ों जग जीवन की आसा की छांड़ो कुलकानि । करिये बिनती कमल नयनसों सूर समों यह जानि ॥ ४७ ॥ राग रामकली ॥ चलत हरि धृग जु रहे तन प्रान । कहां वह सुख अब उठौ दुसह दुख उर करि कुलिश समान ॥ चितवत नयन चकोर सुधा विधु देखहु मुख छवि आन । कहां वह कंठ श्याम सुंदर भुज करति अधर रस पान ॥ जाको जग उपहास कियो तव छांड्यौ सब अभिमान । सूर सो निधि बिछुरत है हमतें कठिन है कर्म्मनिदान ॥ ४८ ॥ राग रामकली ॥ सुनै हैं श्याम मधुपुरी जात । सकुचनि कहिनि सकति काहूसों गुप्त हृदय की बात ॥ संकित बचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधरात । नींद न परै घटै नहि रजनी कब उठि देखौं प्रात ॥ सुफलक सुत हम ऐसी चांडी ज्यों जल पुरइन पात । सूर श्याम संगतें बिछुरत हैं कब ऐहैं कुशलात ॥ ४९ ॥ राग रामकली ॥ अगिनिहुतें बिरहागिनि तातो । साधौ चलन कहत मधुवनको सुनत तपी अति छाती ॥ न्याइहि नागरि नारि बिरह बस जरति दिया ज्यों बाती । जे जरि मरी प्रकट पावक परि ते चिय अधिक सोहाती ॥ ढारति नीर नयन भरि भरि बढ़ि आकुलता मद माती । सूर बिथा सोई पै जानै श्याम सुभग रंग राती ॥ ५० ॥ राग आसावरी ॥ श्याम गये सखि प्राण रहैंगे । अरस परस ज्यों बाते कहियत तैसेहि बहुरि कहैंगे ॥ इंदु वदन खग नयन हमारे जानति और चहैंगे । बासर निसि कछु होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे ॥ एक कहौं तुम आगे बानी श्याम न जाय रहैंगे । सूरदास प्रभु जशुमति को तजि मथुरा कहा लहैंगे ॥ ५१ ॥ ॥ राग सोरठ ॥ गोपाल लालको अब लख्यन प्रान । क्रूर बचन उर क्रूर क्रूर संग लागे मथुरा जान ॥ क्रूर नाम गुण क्रूर क्रूर मति काहे गोकुल आये । क्रूर कंस नृप वैरु जानि मेरि निधिको लैन पठाये ॥ बार बार जननी कहि मोसों माखन मांगत जोन । सूर तिनहिंलैबेको आये करिहौ सूनों भोन ॥ ५२ ॥ राग कल्यान ॥ श्याम चलन चहत कह्यौ सखी एक आई । तब मोहन रथ बैठे सुफलक सुत चढ़न चहत यह सुनि सब

चकित भई विरह दौं लगाई ॥ धुकि धुकि सब धरनि परी ज्वाला झरलता गिरी मनों तुरत जलद बरषि सुरति नीर परसी । धाई सब नन्द द्वार बैठे रथ दोउ कुमार जग्यु मति लोटति भुव पर निठुर रूप दरसी ॥ कोन मात कोन पिता आप ब्रह्म जग धाता राख्यो नहि कछू नात नेंक नेंह नाहीं । आतुर अक्रूर चढ़े रसना हरिनाह रढ़ै सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चयन नाहीं ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ॥ आतुर रथ अक्रूर चढ़े । तब रसना हरि नाम भाषिकै लोचन नीर कढ़े ॥ महरि पुच कहि सोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुढ़ाई । देखति नारि चिचसी ठाढ़ी चितये कुंवर कन्हाई ॥ इतनेहि में कह दियो सबनि सो मिलिहैं अवधि बिताई । तनक हंसे हरि मन जुवतिनको निठुर ठगौरी लाई ॥ बोलत नहीं रही सब ठाढ़ी श्याम ठगी ब्रज नारि । सूर तुरत मधुवन पगु धारे धरनीके हित कारि ॥ ५४ ॥ राग गौरी ॥ कान्ह कहा धौं कह्यौ । बेंगि सुबचन सुनाय सखी-री नाहिन परतु रह्यौ ॥ कहा मैं करों घोषतें ले निधि दूत दूरि निवह्यौ । हों मति हीन करी बिधि तेहि छिनु भूली मथति दह्यौ ॥ सबै अजान भई तिहिं औसर काहू रथन गह्यौ । सूरदास प्रभु वृथा लाज करि दुसह वियोग सह्यौ ॥ ५५ ॥ राग सारंग ॥ हरि बिछुरत फाट्यौ न हियो । भयो कठोर बज्रतें भारी रहिके पापी कहा कियो ॥ घोरि हलाहल सुनि मेरि सजनी औसर तब न पियो । मन सुधि गई संम्हार न तनको क्रूर दाव अक्रूर दियो ॥ कछु न सुहाय जबै निधि बिछुरी भवन काज को नेम लियो । निसि दिन रटत सूर बलहारी मरिबो जतननि जात जियो ॥ ५६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ गोकुलसों हरिजूके मथुरा चलन समय की लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग धनाश्री ॥ बिरह अनिल अग्निहुं तें ताती । माधौ चलन कहत मधुबन को सुनत कंपति है छाती ॥ धनितें नागरि नहिं मानति हैं देह जरति जिम बाती । सब संग मरहि प्रकट पावक जरि वहजिय जान सुहाती ॥ जाने कौन कहा मुख निकसत बिकल भई मद माती । सूरदास सोइयें जाने जो यह रस रंग राती ॥ ५७ ॥ राग धनाश्री ॥ गोपाल इतनो मोह न धरियै । जननी दुखित जानि नद नन्दन मथुरा गमन न करियै ॥ वह अक्रूर क्रूर भयो हमकह लेन यहांलों आयो । तिरछोभयो करम बल पुरको विधि संयोग बनायो ॥ चलन जानि आये ब्रज वासी रहि न देह सुधि ज्ञान । गोकुल के यह लोग बने हरि तज्यों बुद्धि अरु ध्यान ॥ फिर चितयो तबअवधि बद्यौ हरि रह्यो प्राण प्रति आस । सूरदास प्रभु कों निहारि कै आई सब ब्रज त्रास ॥ ५८॥ ॥ राग धनाश्री ॥ बिन पर वहि उपगारे कह्यो । कहा जानै यह राह रमा पति कबधों सोंध लह्यो ॥ दुसह दहन धुकि धरत चाप के परसि न परत सह्यो । यह अगि्न अब ऐसो लागत बिन माखन प्रेम दह्यो ॥ शरद चन्द ज्यों उगत गगनमें राधा आनि गह्यो ।

ताके बीचन बीच नयन मिलि अञ्जन रूप रच्यो ॥ विरह संधि बलि प्राय मनो हठि है तिय बदन गच्यो । सकल गुणनि भय सूरज प्रभु मुख छबि सों अधिक दच्यो ॥ ५८ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ परम वियोगिनि सब मिलि ठाढ़ीं । ज्यौं जलहीन दीन कुमुदनि गत रवि प्रकास की डाढ़ीं ॥ जिहि विधि मीन सलिल सों बिछुरत अति अधीन कुम्हिलानी । सूखौ अधर कहत नहि आवै बचन रहित मुख बानी ॥ उन्नत स्वास विरह विरहिनि उर कमल बदन बिलखानी । भीजत नयन निमेष छिनहि छिन मिलन कठिन जिय जानी ॥ विनु बल बुद्धि चक्रित डोलति हैं चल न सकत पचिहारी । सूर दास प्रभु अवधि कहौ तो प्राण तजति ब्रज नारी ॥ ६० ॥ राग गौरी ॥ हरि बिन कौन सों कहिये । जो अक्रूर बोये हैं तिन के सोई गुन गुन रहिये ॥ कासें कहूं कहा कोउ करि है नाहक अनल जु दहिये । सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश कों मरु को जीवत रहिये ॥ ६१ ॥ राग आसावरी ॥ दाहिन देखौं तौ सगन की मालही । इन सगुनन अबहीं यहि बन में है भुज भरि भेटिहों गोपालही ॥ निरखि तनु चिभङ्ग पुलक सकल अङ्ग अक्रूर धरनी जैसें काल ही । परि हौं पायन जाय कंठ लगाय भुज तें चढ़त जाय सैल लता तमालही ॥ परसि प्रेम आनन्द सींचि के कामना करि हौं प्रगट प्रभु पुन्य बालही । बचन रचन हासु सुमन सुख निवास फूलति फल अभरन चय रसालही ॥ स्फुरत सुभ सुबाहु लोचन मन उछाहु भक्तन यह इच्छा लोचनचले प्रवालही । मन सुचित सब सुकृत मनोरथ चल सुन्दर गजगत उतालही ॥ निगम कहति नेत शिवन सक तबेति सूर सुहृदय लाये जेहि दयालही ॥ ॥ ६२ ॥ राग पट ॥ चलन चलन कहत हैं श्याम लेन कोउ यह आयो । नन्द भवन में सुनरी सखि कपटी कंस दूत पठायो ॥ ब्रज की नारि गृह बिसारि सकल उलटी जु धाईं । पूछन कों समाचार जशुमति पै आतुर ह्वै आईं ॥ जियहि जानि शोच मिलि बिलखि बदन सबही ठाढ़ी । मानहु बे अति चित्र चितै लिखि हैं काढ़ी ॥ ऐसोही गति ठौर ठौर कहत न बनि आवै । सूर दास बिछुरन बिपति विरह काहु न आवै ॥ ६३ ॥ राग नट तबन बिचारो री यह बात । चलत न फेंट गहो मोहनको अब कहरो पछतात ॥ निरखि निरखि मुख रही मौन ह्वै चक्रित भई बिलखात । जब रथ भयो दृष्ट आगोचर लोचन अति अकुलात ॥ सबद अजान भईं वहि औसर अति ढिग गहि सुत मात । सूर दास स्वामी के बिछुरे कौड़ी भरि न बिकात ॥ ६४ ॥ राग सिन्धुभङ्गला ॥ चल न जानि चित बत ब्रज युवती जानों लिखी चितेरनि हो । जोइ जोइ जहं सोइ इक टक ठाढ़ी फिरति नहीं मन फेरनि हो ॥ बिसरी मति गति बचन बिकल चित श्रवणनि सुनत न टेरनि हो । गयो जमुन मिलये मीन ज्यों निवरत नाहि निबेरनि हो ॥ सूरदास आसा अंकुस बस उलटे प्रभु कों हेरनि हो ॥ ५५ ॥ राग पूर्वी ॥ देखि वे आवत हैं बन माली । जिन पहले पौढ़त पलनाही पय प्यावत पूतना बिषाली ॥ अघ बक वृषभ वरुन केशी सुत जलतें काढ्यो काली । जिन हठि मारि प्रलम्ब तृणावर्त इन्द्र प्रतिज्ञा टाली ॥ एतेपर अजहूं नहि समझत कपटी कंस कुचाली । अब बिधु बदन बिलोकि सु लोचन श्रवन सुनतही आली ॥ धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रगट प्रीति प्रति पाली ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ सुन्यों

श्याम मधुपुरी जात । कहि न सकति लाज न काहू सों गुप्त हृदय को बात ॥ सोचत चपल आनि उर अन्तर कहि जु गये अधि रात । नीद न परै घटै नहि रजनी कब उठि देखों प्रात ॥ सूर दास प्रभु सङ्गहि बिछुरे कौन कहै कुशलात ॥ ६७ ॥ राग धनाश्री॥ मथुरा के द्रुम देखियत न्यारे । इतनी दूरि सन्देह मिलन कों सुनियत टेर पुकारे ॥ तुम बिन श्याम मनोहर सूरत मदन बान हमसारे । सूरश्याम बिन भयो गेह बन गगन गनत निशि तारे ॥ ६८ ॥ राग पूर्वी ॥ कहूं जात देख्यो पिय मेरो । जबतें हरि मधुबनहि सिधारे कबहुं कियो नहि फेरो ॥ पथिक न चलत संदेस न पावत मग जोहत भइ डेरो। एक बार हरि दरशन दीजै जोग जुगति नहि हेरो ॥ ता बिनु कौन करै जो सूरज युवतिनि प्रेम निबेरो ॥६९॥ राग धनाश्री ॥ उमगि चले दोउ नयन विशाल । सुनि सुनि वे संदेस श्याम घन सुमरतही गोपाल ॥ आनन तें रजनी के अन्तर जल धर शोभित काल । मानहु जुग जल श्री गुन सुमरत बाढ़ो शीस सुनाल ॥ लोचन जल भीज्यौ गुन सुमिरत उर मोतिन की माल । मानों औधि इन्द्र रस मानव अमी ओसकन भाल ॥ कीनी गोपिन सों अब ऐसी करि करि उलटी चाल । सूरदास यह कपट संदेसनि क्यों निबहै वह बाल ॥ ७० ॥ राग कालिङ्गरा ॥ मनहु प्रीति अति भई पातुरी । अनुज सहित बलराम हमारे कमल नयन देखो मिलि न जातरी ॥ अरस परस कछु समुझत नाही या ब्रज कोप भलौं की बातुरी । कञ्चन काच कपूर कर परी हीरा सब कैसें पोत बिकातरी ॥ वे दोउ हंस मान सरवर के झीलर क्षुद्र मलीन कैसें न्हातरी । सूर श्याम मुक्ता फल भोगी को रति करति ज्वारि फन पातुरी ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री ॥ सोहन नेक नंद तन हेरो । राखत हेत तात जननी सों मदन गोपाल लाल मुख फेरो॥ बिछुरन भेट देहु टेढे ह्वै निरखो घोष जन्म को खेरो । सब धों सखा बुलाय संग के अपनी गाय आनि तुम घेरो ॥ याके चढ़हु विमान मनोहर बहुरों जदुपति होत अबेरो । गये न प्रान सूर यह सुनि करि कीन्ह जतन जशुमति बहुतेरो ॥ ७२ ॥ राग धनाश्री ॥ मेरी बज्र की छाती । बिदरि बिदरि नहिं जाती ॥ हरिहि चलत चितवत मग ठाढी पछितातो । विद्यमान विरह शूल उर में जु समातो ॥ आवन की आस लगी अवधि ही पत्याती । ज्यों ठग निधि हरबे को रञ्चक गुरू देहि किहि भांती ॥ इमि फिरि गुसकानी सूर मनसा भइ माती । चितवत मनसा इक भई जागत अकुलाती ॥ ७३ ॥ राग मारू ॥ बहुत दुख पइत हैरी यह बात । तुम जु सुनत हो माधो मधुबन सुफलक सुत सङ्ग जात ॥ मन सिज विथा दहति दावानल उपजोहै यह गात । सूधो कहो तब कैसे कोजिये निजु चलिहो उठिप्रात ॥ जोपै यहू कियो चाहत है मीचु विरह सिर घात । सूर श्याम तो तब कत राखी गिरि कर ले दिन सात ॥ ७४ ॥ राग बिहागरो ॥ भवन भयानक लागे माय श्यामबिना । देखहों जाय काहि लोचन भरि नन्द के अंगना । लेगए अक्रूर क्रूर ताहिको आजके प्रानधना ॥ कोन सहाय करे ग्रह अपने मेटे बिघन घना । काहि उठाय गोद धरि लीजे करि करि मना मना ॥ सूरदास मोहन दरशन बिन सुख सम्पति सपना ॥ ७५ ॥ राग कामोद ॥ नन्द हरि तुमसें कहा कह्यौ । सुनि सुनि निठुर बचन मोहनके क्यों करि इन्द सह्यौ ॥

छांड़ि सनेह चले मन्दिर कत दौरि न चरन गह्यौ । फाटि न गई वज्र की छाती कत यह सूल सह्यौ ॥ सुरति करति मोहन की बातें नयननि नीर बह्यौ ॥ सुधि न रही अति गलित गात भयो जनु डसि गयो अह्यौ ॥ कृष्ण छांड़ि गोकुल कत आए चाखन दूध दह्यौ । तजे न प्रान सर दसरथलों ज्यों तेा जनम निबह्यौ ॥ ७६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ मथुरा में प्रजंचे सेा लीला ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग गौरी ॥ वह देखेा आवत बनत वनमाली। घन तन श्यामपीत पट सुंदर सेाभित नयन बिसाली ॥ जिन पहिलेही पलना पेाढ़तपय पीवत पूतना बिघाली । अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि जलतें काढ्यौ काली ॥ जिहिं अति सकट प्रलंब तृणा व्रत इन्द्र प्रतिज्ञा पाली । इतने पर अंधेा मानत नहिं कपटी कंस कुचाली ॥ अब विधु वदन बिलेाकि सुलेाचन श्रवननि सुनत जु आली । धन्य तीय गेाकुलकी नारी सूरज प्रकट प्रतिज्ञा पाली ॥ ७७ ॥ राग श्री ॥ वह देखेा दोउ आवतजन गौर श्याम तन । नील पीत पट मानऊ मिलि दामनि घन ॥ लेाचन बंक बिशाल कमल दल चितवन चिते हरत सबके मन । कुण्डल किरनि दिपत अति कंचन जटित लाल मनि लाल सेान तन । चन्दन चित्र बिचित्र अंग लिखि कुसुम सुबास दए नद नंदन ॥ बलि बलि जाउं चले जिहिं मारग संग उड़ाय लए मधुकर गन ॥ धनि वह भूमि पाव जिहि धारे जीतहिंगे रिपु आजु रंग रन सूरदास प्रभु नगर नारि मिलि लेति बलाइ वार अंबर तन ॥ ७८ ॥ राग मारू नंद महरके ढेाटा जिनकी सुनियत सूरिबड़ाई । जनमतही बिष कुच लगायके आय-पूतना हति दुख दाई ॥ सुंदर श्याम सुदेश पीत पट भुज चंदन चर चित कीन्हो । नट वर भेष धरे बालकसों गज हनि दन्तन लीन्हो ॥ लेाचन चारु चरनि कटि किंकिनि बन माला उर सेाहै । कर कंकन मनि कंठ मनेाहर काम देखि मन मेाहै ॥ चन्द चकेार भेष चाचिकलों अब लेाकत मन लायेा। सूरदास सन्तन हित कारन श्याम मधुपुरी आयेा ॥ ७९॥ राग मारू ॥ बे माधेा जिनि मधु मारयौ । मथुरा जन्म गेाकुलहि आयेा नंद दुलार बज्रत सारयौ ॥ केशी तृणावर्त अघ बक सुर हति पुतना बिषु धारयौ । इन्द्र कोप बरष्यौ वर मेघनि होत प्रलय व्रजको टारयौ ॥ कंसराज हठि इन्द्र रच्यौहै रंग भूमि अति रण मारयौ । सूर श्याम भए मथुरा पतिज्यों बज्रत जनम तें तारयौ ॥ ८० ॥ राग सारंग मेरे कमल नयन प्रानतें प्यारे । इनको कौन मधुपुरी पठवे राम कृष्ण दोऊ जन बारे ॥ जग्रदा कहे सुनहु सुफलक सुत मैं प्रयान जतनि करि हारे । यह कह जानहिं सभा राज को गुरुजन बिप्र जिवावन हारे ॥ मथुरा असुर समूह बसत हैं कर कृपान जोधा हथियारे। सूरदास स्वामी ए लरिका इन कब देखे मल्ल अखारे ॥ ८१ ॥ राग केदारेा ॥ हरि बिन कोन कहै केहि सुनिये । मनसिज व्यथा आइज्यों बिथकी उर अन्तर कहुं गुनिये ॥

कानन औंन रैनि निशि वासर सुखहू कबहिन लहिये । मुकट भए अब जगमें प्रभु ज्यों कंस के दुक्ख न सहिये ॥ कबहुंक जिय ऐसी उपजतिहै जाय जमुन जल गहिये । सूरदास प्रभु कमल नयन बिनु कोलै जीवन रहिये ॥ ८२ ॥ राग केदारो ॥ मथुराके द्रुम देखियत न्यारे । इतनी दूरि संदेह मिलन को सुनियत टेर पुकारे ॥ तुम बिन श्याम मनोहर मूरति मदन बान हरि मारे । सूर श्याम बिन भए गेह वन गगन गनत निशितारे ॥ ८३ ॥ राग नट ॥ कहूं जात देख्यौ पिय मेरो । जबतें हरि मधुवनहि सिधारे कबहुं कियो नहिं फेरो ॥ पथिक न चलत संदेस न पावत मग जोहत भरे डेरो । एक वार दरशन हरि दीजो जोग जुगति नहिं हेरो ॥ ताबिनकौ न करे जो सूरज जुवतिन प्रेम निबेरो ॥ ८४ ॥ राग नट ॥ मोकों ना हरि बार भई । जबतें हरि मधुबनहि सिधारे तब तें सुधि न लई ॥ कह कीजै संगत जोनीच की मन अति दुखित भई । चंदन चोर अग्नि सम लागत यहबिधिसबै गई ॥ सूरदास प्रभु दरशन दीजै नेक जु मैया ठई । तेरी गति मोकों है सुमिरन अब कछु मान मई ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ केतिक दूर गयो रथ माई । नद नंदनके चलत सखीरी हौंहूं मिलन न पाई ॥ एकहुं द्योस द्वार नंद जाके तहां रैनि विनु आई । आज बिधाता मतिहु रिसानी भवन काज बिसराई ॥ जब चलबेकी साज करतु तब काहुन बात चलाई । बिधना सकल अकेली कीन्ही सूल सही नहिं जाय ॥ सूरदास प्रभु कहा जानि जिय जल निधि दइहै बहाय ८६ ॥ राग जंगला ॥ पाछै ही चितवत यह लोचन आगे परत न पायहो । मन माधो लैगये मधुपुरी कहा करों व्रज जायहो ॥ पवनसु भरी पताका अंबर भईन रथके अंग । धुरी न भई चरन लपटानी जाति उहांलों संग ॥ कोबिधि भई करों हों कैसी कबरी मिलें गोपाल । सूर श्याम बिन रही ठगोसो मुरछित परी बिहाल ॥ ८७ ॥ राग सारंग ॥ चलन सखि कहियत हरि आजु । अबहीं सखी देख आईहों करत गवन को साजु ॥ कोऊ कंस कपट करि पठयो कछु संदेस दैहाथ । सो अब लये जातहै निज निधि बल करि अपने साथ ॥ ऐसी बात जु नाहीं सखिरी धरि रहि है जिय लाज । धीरजतो नहिं रहे पियारी दूरि गए वे काज ॥ परि हरि या जीवन की आसा अरु गुरुजन की कानि । बिनति करौ चलि कमल नयनपै सूर समै पहिचानि ॥ ८८ ॥ राग धनाश्री ॥ हरिज्यों जहां तहां सेा ठाढ़ी । हरिके चलत देखियत ऐसी मनहुं चित्र लिखि काढ़ी ॥ सूखे बदन श्रवति नयननि जल धारा अति बहु बाढ़ी । कांधे हाथ धरे चितवति हैं मानों द्रुम बेलीधों दाढ़ी ॥ नीकी नहीं करी सुफलक सुत छांड़ि दूध बिनु साढ़ी । सूरदास अक्रूर कृपातें सही बिथा अतिगाढ़ी ॥ ८९ ॥ राग जंगला ॥ चलन जानि मोहन व्रज जुवतिन मानों बनी चितैरति हेा । जो जैसें सेा तैसें अटकी फिरति न लोचन फेरतिहेा ॥ बिसरी गति मति बिकल बिरहिनी श्रवननि लोचन टेरतिहेा । गयेा जु मन मिलि पयपानी ज्यों निबरत नहीं निबेरतिहेा ॥ लगी संगजोगति जशुमति ज्यों घिरतिन क्यों पै घेरति हेा । अब कहि सूर आस अंकुस बस उलटि प्रभूको घेरतिहेा ॥ ९० ॥ राग धनाश्री ॥ कहा जानि अब लालन मेरे । हों अनाथ दुख पायेा अतिही मन बचक्रम नहिं फेरे । चितवत रही

चकोर चंद ज्यों अबलन की गति हेरे। श्याम सुंदर कमल नैन अतिहि दृष्टि करि चरनन हेरे। सो सब छांडि और जो धावत सकल जन्म भरि टेरे। सो सुख अब गोपी सब लूटति महा कर्म को बेरे। सूर दास जासों सुख पावे सो सुख छाड़ि और नहिं मेरे ॥ ९१ ॥ राग जंगला ॥ श्याम चलन अब सुनियत आज कौन कुटिल यह ब्रज आयो। नंद भवन मैं भनक सुनी अब कंस जु दूत पठायो। ब्रजकी नारिन यहै बिचारयो सकल सिमटि करि आईं। बूझन समाचार आतुर ह्वै गृह गृहतें उठि धाईं ॥ प्रीति जानि सोच मानि बिलखि बदन बाढ़ी। मनहुं बेसखी बिचि चिच हुलिखि काढ़ी ऐसी छबि ठौर ठौर कहत न बनि आवै। सूर दास बिरह बिथा कहौं काहि भावै ॥ ९२ ॥ राग नट ॥ हरि से प्रीतम क्यों बिसराई ॥ मिलन दूरि मन ससत चंद पर चित चकोर पछिताई। जलमैं रहे जलहितें उपजत बिन जलही कुम्हिलाई ॥ प्रगटन प्रीति करे परदेशी सुख केहि देश बसाई ॥ सोइ गोकुल है सोइ गोबर्द्धन काहिन करि वहां छाई। धरनी दुखित देखि बादर अति बरषा ऋतु बरषाई। सूर दास प्रभु तुमरे दरस बिनु दुख क्यों हिये बसाई ॥ ९३ ॥ राग नट ॥ सखिरी ज्यों कुरु चेत कुशानी। तब बे दुख दीन्हों जब बांधे ताको फल अब जानी। निज कृति चूक परी अब समुझी लेत जुमन पर माती। सुंदर श्याम जबैतें बिछुरे बिरह दहत है छाती। हम अबला अति दीनहीन मति बेसबहीं बिधि जोग। सूर बदन देखे जिय हरषत हरत सरीरह रोग ॥ ९४ ॥ राग मारू ॥ सुन्यों बसुदेव नंद सुवन आयो ॥ बिया सों कहत कछु सुनत हेरी नारि रातिहु सुपने कैसे पायो। गए अक्रूर श्री कृष्ण लैन को आज्ञा पाय तुरत धायो। दंत गज तोड़ के धनुष बिडार के रंग भूमि रण जीति पायो। मुष्टि चाणूर सल्लतोसल मार कर केस गहि कर मोको जो मारयो। कहेतीय सुन हो कंथ जाय मिलो काहे बैर बिसारयो। दिये लोचन ढारि तू कंत कहा मान कहा हम पाप करि जन्म लीन्हों। सो तो देखत भये ए ब्रज राजतें बचो अबहीं मन जान चीन्हों। छांड बंधतें बसुदेव देवकी तोहि लाजन मरीयत भूलो। सूर लिखि कर्म सो होइ बाही बिधि होनी होय सो मिटे न मूलो ॥ ९५ ॥ राग रामकली ॥ तब बसुदेव हरषत गात। श्याम रामहीं कंठ लगाए आनंदे दोउ भ्रात। अंबर देव दुंदुभि शब्द भयो अतही जै जै कार। दुष्ट दलि सुख दए संतनि इहि बसुदेव कुमार। दुख गयो हुल्लास मन अति नगर के नर नारि। भए पूरन सकल काजहि कलस मंगल धारि। तुरत बिप्रन बोलि पठये धेनु कोटि मंगाय। सूर के प्रभु ब्रह्म पूरन पाय हरष बढ़ाय ॥ ९६ ॥ राग परज ॥ राजनि परमोधि श्याम महल द्वार आए। काल बंस नेमि उग्रसेन सुनत धाये। झुकि चरन परयो आय चाहि चाहि नाथा। बहुतें अपराध परे छिमहु मोहि नाथा। महाराज कहि श्री मुख लिये उरहि लाई। हमरो अपराध छमहु करी हम ढिठाई। तबहीं सिंघासनपे उग्रसेन धारे। छत्र शिर धराय चंवर अपने कर ढारे। ठाढ़े आधीन भये देव देव भाषे ॥ अपन जान के प्रसाद सादर ऋषि राखे। मोको कह एतौ प्रभु बिश्व भरन

स्वामी ॥ घट घट की जानत हो तुम अंतर जामी । तो फिरि नृप कहत कहि तुम केहू केती । सेवा तुम जेती करी देहो पुनि तेती । रजक धनुष गज मल्ल निशंक मारि काजा । सूरज प्रभु सोहत भये उग्रसेन राजा ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ मथुरा लोगनि बात सुनी उग्रसेन को राज दयो । सिंहासन बैठारि कृपा करि आप हाथ हरि चंवर लयो । मात पिता के संकट हरि हैं देवनि जय धुनि शब्द कियो । रानी सबैमरतिनें राखी उनतें प्रभु नहि और कियो ॥ अबहीं सुनि बसुदेव देवकी हरषित ह्वै दै दुहुंनि हियो । सूर दास प्रभु आप मधुपुरी दरसनतें पुर लोक जियो ॥ ९८ ॥ राग पूर्वी ॥ मथुरा के लोगनि सचु पायो । नटवर भेष धरे नंद नंदन संग अक्रूर के आयो । प्रथम हि रजक मारि कर अपने गोपद्द पहरायो । तोरि धनुष लाखानट नागर सब जग खेल खेलायो । रणभुवि मुष्टि चाणूर बली अति भुज सों तार बजायो । नगर नारी गारि दै कहहीं अजगुत युद्ध बनायो । बरषहिं सुमन अकाश महाधुनि दुंदुभि देव बजाये । चढि कर अमर बिमान परमसुख कौतुक इंद्र आप आयो । कंसमार सुर राजो करके उग्रसेन सिर नायो । मात पिता बंधनतें छोरे सूर सुजसु गायो ॥ ९९ ॥ राग नट ॥ मथुरा घर घर सुन यह बात । रजक धनुष गज मल्लनि मारयो तनक से नंदके तात । धन्य मात धनिपिताअरु धन्यधन्य बहरात ॥ जबकि लियो अवतार धरनिमें धन्यधनि सो मात । हंस कैसें जोट दोऊ असुर दियो निपात । सूर जोधा सबै मारे कहा जानत घात ॥ १०० ॥ राग कान्हरो ॥ माधो बे भुज कहां दुराये । जिहिं भुजतें आधा सुर मारयो अरु सबगो सुत ग्वाल बचाये । जिनि भुजतें प्रहलाद उबारे हरिनाकुश को उदर बिदारयो । जिनि भुज ले दांवरी बंधाये जिन जमलार्जुन मुक्ति पठायो । जिनि भुजतें बलि जाचक ह्वै कै हरि जू बामन ह्वै के आए । जिनि भुजतें लंका गढ ढायो रावन सीसत बैसै ढाए । आनि बिभीषन प्रभु जू निवज्यो सु स्थिर राज तिन्हें दे आए । जिनि भुजतें भारथ हठ ठान्यो कौरव पांडव आनि खराए । जिन भुजतें अंडा भटही को सकस युद्ध छिन माय बिलाए । जिन भुज तें सब देव उधारयो मुनि ह्वै निपुन जु आये । जिन भुजतें पृथिवी हलराये महा शब्द अंकतें जु उठाये । जिन भुजतें बलि जाइ सूर अबरंग भूमि तृन तोर खंधाये ॥ १०१ ॥ राग पूरबी ॥ देखन मंदिर पर जु चढ़ी । जदुपति पूरन चंद बिलोकति जनु पुर उदधि तरंग बढ़ी । दरसनकी प्यासी अति आतुर निसि बासर गुन ग्राम रढी । रही न खाज मोहि मुख चितवत सबनि सुनाइ असीस पढ़ी । रही देह की खेह करम बस जनु पट घटिका अनखडढी । सूर दास प्रभु कृपावलोकनि मनहु बिधातें फेरि मढ़ी ॥ १०२ ॥ राग कल्याण ॥ खेलन गज संग श्याम राम कुंवर दोऊ । क्रोध द्विरद व्याकुल अति इनके रिस नेक नहीं चकित भए जोधा तहां देखत सब कोऊ । श्याम झटकि पुंछि लेत हलधर कर सुंडि देत महल महल नारी चरित देखति यह भारी । ऐसे आतुर गोपाल चपल नैन मुख रसाल लिए कर वेन लकुट खाल मनों नित्त कारी । सुरांगना व्याकुल बिमान मन मन सब करे गान बोलत यह बचन अजहुं मारयो नहि

हाथी । सूरज प्रभु श्याम राम अखिल लोक के बिश्राम पुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ १०३ ॥ राग सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी ॥ जो नहि आजु मारिहों इनको कंस डारिहै मारी। अंकुश राखि कुंभ पर करयो इलधर कर हैकिल-कारी ॥ धायो भवनहुतें अति आतुर धरनी देत खभारी । जब हरि पूंछ गह्यौ दक्षिण कर कंबुक वरशिर बारी ॥ पटक्यो भूमि फेरि नहिं मट्यो महाकुलबया भारी । दुहुं कर दिरद दसन यक यक छबि सो निरखत पुर नारी । सूरदास प्रभु सुर सुख दायक मारो नाग पछारी ॥ १०४ ॥ राग टोड़ी ॥ हंसत हंसत श्याम प्रबल कुबलया संघारयौ । तुरत दन्त लये उखारि कंधनि पर धारयौ ॥ निरखति नर नारि मुदित चकित गज मारयौ । अतिही कोमल अजान सुनत नृपति जीयमें संकारयौ ॥ तनु बिनु ज्यों भये प्रान मल्लनि प्रेम आये । देखतही संकित गए काल निरखि भाये ॥ कंस आन घेरि लियो दोउ मन मुसिक्याये । असुर बीर चहुं पास जिनके मुख अकाश मल्ल करत गास नास ब्रह्मको बिचारै। सबै कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदा नाम हार जीत घरहीमें कोन काहि मारै ॥ हंसि बोले श्याम राम कहा सुनत रहे नाम खेलनको हमहिं काम बालक संग डोले । सूर नंदके कुमार यहै राजसी बिचार कहा कहत बार बार प्रभु ऐसे बोले ॥ १०५ ॥ राग कल्यान ॥ रंग भूमि आये अति नन्द सुवन बारे । निरखत ब्रजनारि नेह उरतें न बिसारे ॥ देखोरी मुष्टिक चानुर इनिहिं हंकारे । कैसें अब बचे नाथ जई स्वास डारे ॥ रजक धनुष जोधा हति दन्त गज उपारे । निर्दय यह कंस इनहिं चाहत है मारे ॥ कहां मल्ल कहां अतिहि कोमल अंग वारे । कैसी जननी कठोर कीन्हे जिनि न्यारे ॥ बारबार सबै कहति भरि भरि दोउ तारे । सूरजप्रभु बल मोहन उरतें नहिं टारे ॥१०६॥ ॥ राग मारू ॥ नवल नंद नंदन रंग भूमि आए । संग बलराम अभिराम शशि सूर जो आपनी आप छबिसों सुहाए ॥ द्वार गज राज लखि पीत पट कटि कसत मंद मृदु हंसत अति लसत भारी । कछुकही परतीत गजहि फिरि हेरिके पेचदे छबीली पगियां संवारी ॥ गर्बके गिरि मनोचलत पायन तैसेही कुबलया प्रबल रिसहि धायो । बालकनि बच्छ, ज्यों पूछ धरि खेलिये तैसे हरि हाथ हाथी गिरायो ॥ गहि पटकि पुहुमि पर नक नहिं मटकियो दंत भिर नालसे ऐंचि लीन्हो । कन्ध धरि चले दोउ बीरनि के बने निरखि पुर जन प्रान वारि दीन्हो ॥ सैलसे मल्ल सबै धाइ आए सरन कौड भूले गोड थर थराने । कंस के प्राण भय भीत पिंजरा चले नव विहंगम भरत फर फराने ॥ मधु पुरिकी जुवती सबै कहति अति रति भरी देखरी देख अंग अंग लुनाई । सुनत श्रवननि रही देख री तब सही मधुर मूरति सुरनि पति न पाई ॥ निपट सुर दोउ निरखि देखरी बिधि बड़ो क्रूर किधों हम अभागी । परम हंस ब्रह्म रिपु रिपु दमन देख भक्त जनन के आनंद अनुरागी ॥ अबलसों अबल भये सबलसों सबल भये लखित तनु जोति अतिही प्रकाशी । ज्ञान करि ध्यान करि जिन जैसीलई मानि मात पित दुख दूरि सूर अवि नाशी ॥ १०७ ॥ राग सोरठ ॥ मथुरा ऐसो आजु बनो । मानो पतिको आगम जान्यों सजे सिंगार घनो ॥ भूषण चित्र विचित्र देखियत शोभित सुन्दर अंगनि । मानो

कोटि कसी कटि किंकिनि उपबन बसन सुरंगिनि ॥ सुनि अति सघन कराल घोषमें पायन नूपुर बाजत । उर अंचल चंचल अति राजत धामनि ध्वजा बिराजत ॥ ऊंचे अटन लछचन की छबि जनु जुवती मगु फूली । कनक कलस कुच प्रकट देखियत आनंद कंचुकि भूली ॥ विद्रुम फटिक पानवी ऊपर जालरंध्र की रेख । मनहुतुम्हारे दरशन कारन नयननि तजी निमेख ॥ अवलोकहु यहि भांति रमा पति पुरी परम रुचि रूप । सूरदास प्रभु कंस मारि के होहु यहां के भूप ॥ १०८ ॥ राग धनाश्री ॥ कुब्जा हरिकी दासी आहि । जैसे आप भागि गे कुल रहे तैसे राखी ताहि ॥ रूप रतन दुरायेही राख्यो जैसी दीनन काही । जैसे छाय अमोल रतन परि कह जानै जो कर माही ॥ वैसेहि रही कूवरी दासी अबिनासी की आही । सूरदास प्रभु कंस मारिके लई आनि तिहि नाहीं ॥ ॥ १०९ ॥ राग शंकरा भरन ॥ अति हित चंचल जानि लई । मन भांवरि करि अति नागर बर रस बस मोल लई ॥ परमानंद सांवरे ऊपर तन मन बिसरि गई । राधा श्याम प्रीति उर अंतर सर्बस प्रीति हुई ॥ आवन जान गवन कत कीन्हो हरि सब भांति ठई । गोपीनाथ प्रान के रस बस जानी जाय दई ॥ गिरिधर लाल रसिक के ऊपर कुब्जा नारि गई । मानत नाहिं लई सांवर को सकल प्रीति छिन मांह भई । मानिन मान करत गोपी हमैं दुख सब भांति बई ॥ सूरदास चिंता मनि चित धरि अब कित प्रीति गई । मेरे मन बच क्रमहि सांवरे और न मान मई ॥ ११० ॥ रागनी भूपाली ॥ आनंदेही हर्ष बढ़ो अति । देव वृन्द चरणार विंद ज्यों मथुरा प्रकट भयो पति ॥ गावत गन गंधर्ब जु पुलकित रसिक सूर जो अति रति । विद्यासुर धर कंठ कलति अति ताल उघट जतननि जति ॥ शिव विरंचि सनकादिक आगे चित न समान नह्यौ रति । कमल नयन शशि बदन बिलोकत देखि मदन जु बिचिच रति ॥ श्याम सुभग जो पीत बसन दुति और आनि जोरे अति । नख मणि मुकुट बिभाव मुदित ज्यो चिते न मानति मनयति । सूरदास प्रभु कियो कृपा अति भुज के चिन्ह दुरावति ॥ १११ ॥ राग गोंड ॥ क्रोध गज गज पाल कीन्हो । गरजि घुमरात मद भार गगननि अवत पवनतें वेगि तिहि समैं चीन्हो ॥ चक्रसों भ्रमत चकित भए देखि सब चहूंधों देखिये नंद ढोटा । चमकि गये वीर सब चकोचोंधी लगी चिते डरपे असुर घटा घोटा ॥ लाल अंबर धौल बरन बलराम तनु पीत अंबर श्याम अंग शोभा । सूर प्रभु चरित पुर नारि देखति महल महल पर आसिर्बाद देत लोभा ॥ ११२ ॥ राग गोंड ॥ कहत हलधर कह्यौ मान मेरो । अखिल ब्रह्मांड के नाथ ह्यां है खरे मारि गज जीव अबलेहुं तेरो ॥ यह सुनत रिस भरो दौरिबेको करो सुण्ड झटकत पटकि कूक पारो । घात मन करे लैडारिहौं दुहुंनि पर दियो गज पेलि आपु नहंकारो ॥ लपक लीन्हौ धाय दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहिं कहां गए वे धों । अरे दै दशन धरनी कोट बीर दोउ कहत अबहीं याहि मारि कैधों ॥ संग दै हांक ठाढ़े श्याम पाछेतें राम भए आय आगे । उतहिं वे पुच्छ गहि जाइ यह सुंड कै फिरत गज पास बहु हंसन लागे ॥ नारि महल निरखि सबै अतिहि डरी नंद के नंद दोउ गज खिलावें । सूर प्रभु श्याम बलिराम देखति

चसति बचें एकंवर विधिसों मनावैं ॥ ११३ ॥ राग कल्याण ॥ भखे नंदके छोहरारे डर नहीं कहा जोमल्ल मारे बिचारे ॥ बारही बार दैहांकगए कहां अब आपनें समअसुरन हंकारे ॥ पौरि गाढो करेद्वार बीर न कहे आय ललकारि इत मारि देवे ॥ बहुरि घर जाहुगे धेनु दुहि खावगे जान देंहु तुमहिं प्रान लेवे ॥ कोउनटेरै लहांलों दैआवत कहा प्रगट्यै धरनि हरी सनमुखै आयो ॥ चक्रित गयो मींच दरसन भयो कहारी मीच इहकहि सुनायो ॥ श्याम बलरामके नामलैलै कहत मोचिआई लैन तुमहिं बाजे ॥ सूरप्रभु देखिनृप क्रोधकरि धरोइक कटि पीतपट देवराजे ॥ ११४ ॥ राग मारू ॥ देखिनृप तमकि हरि चमकि तहंइगेंद मारि लीन्हें गहि बाज जैसें । धमकि मारो धाय तमकि हृदय धरो झमकि गहि केस लै चले घैसें ॥ ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरि लियो महल के तरे धरनी गिरायो । अमर जै धुनि भई धाक त्रिभुवन गई कंस मारो निदरि देव रायो ॥ धन्य बानी गगन धरनि पाताल लों धन्य हो धन्य बसुदेव ताता । धन्य अवतार लियो सुरनि उपकार दै सूर प्रभु धन्य बलराम भ्राता ॥ ११५ ॥ राग मारू ॥ जै जै धुनि तिहुं लोक भई । मारि कंस धरनी तब उधरी शोक शोक आनंद मई । रजक मारि को दंद बिभंज्यो खेलत कर गज प्रान लियो । मल्ल पछारि तुरत संहारे सबनि मान सुर लोक दियो ॥ पुर नर नारिन कों सुख दीन्हों जो जैसो फल सोइ लह्यो । सूर धन्य जदुबंश उजागर धन्य धन्य धनि घुमरि रह्यो ॥ ११६ ॥ राग मारू ॥ आजुतो निशान बाजे बसुदेव राय कै । मथुराके नर नारी उठे सुख पाइकै अमर बिमान सबै कहें हरषाय कै ॥ फूले मात पिता दोउ आनंद बढ़ाय कै । कंस को भछार देत सबै लुटाय कै ॥ धेनु जे सकल राखे नंद ये नायकै । तांबे रूपे सोने सजि राखे बनाय कै ॥ मागध मगन जन खेत मनु भायके । अष्ट सिद्धि नव निधि आगे ठाढ़ी आयके ॥ सब तिलक बिप्रनि बंदि दई दिवायके । सब पुर नारि आई मङ्गल गायके ॥ अम्बर भूषन पठे दई उन्हें पहिरायके । अखिल भुवन जन कामना पुरायके ॥ पुर जन धन देत है लुटायके। सूर जन दीन द्वारे ठाढ़े भये गाय के । कछु कृपा करि दीजै मोहि को दिवायके ॥ ॥ ११७ ॥ रागमारू ॥ जब जदु कुलपति कंसहि मारो । तिहुं भुवन भर सोर परो ॥ तुरत मंचते धरनि गिरायो । ऐसेहि मारत बिलम न लायो ॥ केस गहे पुहमी घिसि रायो । डारि जमुन जल बीच बहायो ॥ जाके सुइतिहुं भुवन डराई । ताकों मारो हलधर भाई ॥ जाके धनुष टकोरत हाथा । आसन डारि भजे सुर नाथा ॥ मारत ताहि बिलसु नहिं कीन्हों । उग्रसेन कों राज्यसु दीन्हों ॥ जैहो जै बसुदेव कुमारा । जैहै जै तुव नंददुलारा ॥ सुर देवी देवै धन मैया । धनि जशुमति त्रिभुवन पति धैया ॥ ११८ ॥ राग धनाश्री ॥ धनि अक्रूर मधुपुरि लै आये । सूर अमर जै जै धुनि गाये ॥ दनुज बंश निरबंश कराये । धरनी सिर तें भार गंवाये ॥ मात पिता बंध तें छुड़ाये । यह बानी सुर लोकनि गाये ॥ जो जैसो तैसे तिहि भाये । सूरज प्रभु सबके सुख दाये ॥ ११९ ॥ राग बिलावल ॥ कंस मारि सुर काज कियो । मात पिता बंधन तें छोरे दुख बिसरे आनंद हियो ॥ उग्रसेन कों धाय मिले हरि अभय अचल करि राज दियो । असुर बंश

निरबंस छिनक में एको नहि कोउ और बियो ॥ मिली कूवरी चंदन देके ऐसेहि हरिको नाम लियो । सुनहु सूर नृप पास जाति है बीच सुकृत अति दरश दियो ॥ १२० ॥ ॥ राग मारू ॥ कूवरी पूरव तपकरि राख्यो । आये श्याम भवन ताहीके नृपति महल सब नाख्यो ॥ प्रथमहि धनुष तोरि आवत हैं बीच मिली वह धाय । तिहि अनुराग बाय भये ताके सो हित कह्यो न जाय ॥ देव काज करि आवन कहि गये दै गये रूप अपार । कृपा दृष्टि चितवत श्री ओ भई निगम न पावत पार ॥ इते दूरि दिन नीके पाछे ऐसे दीन दयाल । सूर सुरनि के काज तुरत ही आवत तहं गोपाल ॥ १२१ ॥ ॥ राग जैतश्री ॥ यहै कहत बसुदेव पिया । जिनि रोवहु हो बार बार दै सोह नीर मुख धोवहु नागी । कहियत हैं गोपाल हरन दुख गरब प्रहारी ॥ कबहुं प्रगट वे हौंहिगे कृष्ण तुम्हरे तात । आजु काल हरि अय हैं यह सपने को बात ॥ अब जिन होइ अधार कंस के आय तुलान्यों । देखत जाय बिलाइ झार तिनुका करि जान्यों ॥ ऐसो सपनों मोहि भयौरी पिया सत्य करि मानि । त्रिभुवन पति तेरे सुवन हैं तोहि मिलेंगे आनि ॥ यहि अन्तर हरि कह्यो मात पितु कहां हमारे । तहां लै गये अक्रूर श्याम बलराम पधारे ॥ बज्र सिला द्वारे दिये दरशन तें गये छूटि । सहज कपाट उघार गये तारा कूंची खूटि ॥ जो देखे बसुदेव कुंवर दोउ काके आयो । दरश दियो तिहि भेष प्रथम जो दरश दिखायो ॥ पाय मिले पित मात कों यह कहि मैं तुव तात । मधुरे रोवन दोउ लगे सुनि हैं कंत डरात ॥ तुरत बंद तें छोरि कह्यो मैं कंसहि मारो । जोधा सुभट संहारि मल्ल कुवल या पछारो ॥ जिय अपने जिनि डर करौ मैं सुत तुम पितु मात । दुख बिसारि अब सुख करो अब काहे पछितात ॥ निश्चय जननी जानि कंठ धरि रोवन लागी । तब बोले बलराम मात तुम तें कौ भागी ॥ बार बार देवै कहे कौन गोद खेले नाहि । द्वादश बरष कहां रहे मात पिता बल जाहि ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिख्यो नहि मेटे कोई । जोइ जोइ मनको साध कहो मैं करिहों सोई ॥ जो दिन गये सो गये तब अब सुख लूटो मात । तात नृपति रानी जननि जाके मोसों तात ॥ जोइ मन इच्छा होय तुरत देखो मैं करहूं । गगन धरनि पाताल जात कतहूं नहि डरहूं ॥ माता हृदये तब कही मन मन बढ्यो अनंद । महर सुवन में तौ नहीं मैं बसुदेव को नंद ॥ राज करो दिन बहुत जानि के है अब तुमकों । अष्ट सिद्धि नव निद्धि देउ मथुरा घरघर कों ॥ रमा शिवकनी दोउ करि कर जोरे दिन जाम । अब जननी दुख जिनि करो करो न पूरन काम ॥ धनि जदुवंशी श्याम यह जुग चलत बड़ाई । शेष रूप मैं राम कहत नहि बात बनाई ॥ सूरज प्रभु दनु कुल दहन हरन करन संसार । ते पाये सुत तुमहि करि करो न सुख बिस्तार ॥ १२२ ॥ राग काफी ॥ किये सुर राज गृह चले ताके । पुरुष अरु नारि को भेद भेदी नहीं कुलिन अकुलीन अब तरो काके ॥ दास दासी कौन प्रभुनि प्रभु कौन है अखिल ब्रह्माण्ड इक रोम जाके । भाव साँचौ हृदय जहां हरि तहां है कृपा प्रभुकी माथ भाग वाके ॥ दास दासी श्याम भजनहु तें जिये रमा सम भई सों कृष्ण दासी । मिलो वह सूर प्रभु प्रेम चन्दन चरचि कियो जय कोटि

तप कोटि काशी ॥ १२३ ॥ राग काफी ॥ ॥ बुला सदन आये श्याम ; करि कृपा हरिगये प्रथमहि भई अनुपम बाम ॥ प्रीति के बस दीन बंधौ भगत बच्छल नाम ॥ मिली मारग मलय लेके भए पूरन काम ॥ उर बसी पर तर नहीं नहि रमाके मन ताम । सूर प्रभु महिमा अगोचर रमादासीधाम ॥ १२४ ॥ राग धनाश्री ॥ मथुरा के नर नारि कहैं । कहा भिनो कुब्जा संहत लै कहा श्याम तिहि कृपा चहै ॥ कहा तपस्या करि यह राख्यो जहां तहां पुर यहै चले । कछु नहीं आवत हरि देखी यहै करो प्रभु हेत भले ॥ तबहि छपाकरि सुन्दरि कीन्ही यह महिमा मुहि कह नहि आवे । सूरज दास भाग कुबरी को कोन ताहिके पटतर पावे ॥ १२५ ॥ राग गोड मलार ॥ हरष नर नारि मथुरा पुरी के । शोच सबको गयो दैत्य कुल सब हयो तिऊ भवन जै जयो हरष करिके । निदरि मारो कंस प्रगट देखत सबै अतिहिं दिन अलपको नन्द टोटा । नयन दोउ ब्रह्म से परम शोभा लसै भगत के यथा सुभहंस जोटा ॥ देव दुंदुभि बजी अमर आनन्द भये पुहप गन बरषही चैत जान्यों । सूर वसुदेव सुत रोहनी नन्द धनि धनि कियौ भार भुव अखिल जान्यों ॥ १२६ ॥ राग मारू ॥ तुरत मारो कंस देव नाथा । निदरि मारो असुर पूतना आदितें धरनि पावन करी भइ सनाथा ॥ लोक लोकनि विदित कथा तुरतहि गई करन अस्तुति जहां तहां आये । देव दुंदुभि पुहप दृष्टि जय धुनि करे दुष्ट यह मारि सुर पुर पठाये ॥ केश गहि करषि के जमुन जल डारि दे सुन्यों नृप नारि पति छपण मारो । भई व्याकुल सबै हेत रोवन लगी मरनको तुरत जो हर बिचारो ॥ गए तहां श्याम बलराम बोधी सबै कहत सब नारि तुम करौ तैसी । सुनहु नृप बाम वह काम ए सोइ रच्यौ जानि यह बात क्यों कहत ऐसी ॥ मरति काहे कहा तुमहि कह बह भई जानि अज्ञ न तुम होत काहै । सूर नृप मारि हरि बचन की सत्यता हरष ह्वै श्याम मुख राम चाहै ॥ १२७ ॥ राग मारू ॥ एही सुत नन्द अहीरके । मारयो रजक बसन सब लयौ संग सखा बलबीरके ॥ कांधे धारि दोऊ जन आए दन्त कुबलिया पीड़ के । पशुपति मण्डल मध्य मनो मनि क्षीरधि नीरधि सीरके ॥ उठि आए तजि हंस मात मनो मान सरोवर तीर के । सूरदास प्रभु ताप निवारन हरन संत दुख पीरके ॥ १२८ ॥ राग गोंडमलार ॥ बोलि लीन्हे कंस मल्ल चानुरकों कहारे करत क्यों बिलम कीन्हों । बंस निरबंस करि डारिहैं छिनकमें गारि दै दै ताहि चास दीन्हों ॥ अचु नान्हो जानि रहे अबलौं बैठि जनक आपने को मारि डारो । हिरद को दन्त उपटाइ तुम लेतहो यहै बल आजु काहिन सम्हारो ॥ अली नहिं करी तुम राखि राख्यो उनहिं है बही कहि तुरत तेहि पठायो । क्रोध कछु त्रास कछु शोच कछु शोक करि साहसै करत रंग भूमि आयो ॥ परस्पर कहि सबनि नृपति चाख्यो मोहि सुनहु रे वीर अबलोन मान्यौ । श्याम बलराम इन दुहुनि को मार कर होयसो होय यह कह तरान्यो ॥ निरखि दोउ बीर तन डरे दोउ मनहिं मनबही बुधि करो ज्यों नास कीजै । लखति पुर नारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं कहत है नृपति प्रभु सुजस लीजै ॥ १२९ ॥ राग कल्यान ॥ देखोरी मल्ल इन्हे मारन को दौरे । अतिहि सुंदर कुमार जगुपति रोहनि बार बिलपति वह कहति सबै लोचन टोरे ॥

कैसेहूं बचें आजु पठयेघों कौनकाज तिहुर हियो माता को लाभही पठायो । ऐसो बालक अजान देखो उन को सयान कहा किये ज्ञान यहां काहे कों आयो ॥ कहां मल्ल मुष्टि कंस चानुर सिलाभंजन से कहत भुजा गहि पठकन नन्द सुवन हरषे । नगर नारि व्याकुल जिय जानत प्रभु सूर श्याम गर्भ हतन नाम ध्यान करि करि वे हरषे ॥ १३० ॥ राग धनाश्री ॥ कहत पुर नारि यह मन मोह मारे । रजक मार्यो धनुष तोरि ह्वै खण्ड करयो हत्यो गज त्यों इनहिकौन मारे ॥ चलति अति बारी बैस मल्ल ज्योंज्यों कहे लखत नहि श्याम हम संग काहे । परस्परमतो करत मारि डारो इन्है लखति यह चरित दुख सुखनि चाहे ॥ कहा हमकहें यह होन चाहत कहा अबहि भारत दुखनि हमहि आगें । सूर कर जोरि अंचर छोरि विनवै बचेंए आजु विधि यहै मांग ॥ १३१ ॥ राग गोंड मलार ॥ सुनहो बीर मुष्टिक चानूर तुम हमहिं नृप पासनहि जान दैहो । घेरि राखे हमहिंनहीं बूझत तुम्हैं जगत में कहा उपहास लैहो ॥ सबै कह यहै भली मति तुमपै है नंद कुंवर दोऊ मल्ल भारे । यहै जस लेहुगे जीवनहिं देहुगे खोजही परे अब तुम हमारे ॥ हम नहीं कहतु मन मनहिं जो यहै बसि कहतहो कहा तोक रे तैसी । सूर हमतन निरखि देखिये आपको बात तुम मनहिं यह बसी नैसी ॥ १३२ ॥ राग टोड़ी ॥ जबही श्याम कही यह बानी । वह सुनि जुवती बिलखानी ॥ मल्लनि कह्यौ हमहि तुम देखो । अपने बल अपनो तनु पेखो ॥ चितये मल्ल नंद सुत कोधा । काल स्वरूप वज्रकी योधा ॥ भुज ऐंठी रज अंग चढ़ायो । गांस धरो हरि ऊपर आयो ॥ श्याम सहज पीतांबर कांधे । हलधर निरखत लोचन आंधे ॥ तब चानूर कृष्ण पर धायो । भुजा जोरिके अंग बल पायो । प्रथम भए कोमल तन ताको । सिथिल रूप मन भेलत वाको ॥ तब चानूर गर्व मन लीन्हो । दुर्ग प्रहार कृष्ण पर कीन्हो ॥ फूलज्यंते अति सम करि मान्यों । तिहि अपने जिय मार्यो जान्यों ॥ हरष्यो मल्ल मारि भयो न्यारो । कहन लग्यो मुख अहो बिचारो ॥ हंसत श्याम घन देखे ठाढ़े । शोच पर्यो तब प्रानहि गाढ़े ॥ फिरि कहि कहि हरि मल्ल हंकार्यो । मनहु गुहातें सिंह पुकार्यो ॥ हांक सुनत सब कोंड़ भुलान्यों । थर थराय चानूर सकान्यों ॥ सूर श्याम हरि महतम जान्यों । निश्चय मृत्यु आपनी मान्यों ॥ ॥ १३३ ॥ राग गोंडमलार ॥ गहे कर श्याम मल्ल अपने धाय झटकि लीनो तुरततेहि पटकि धरनी । झटकी अति शब्द भयो पटक नृपके हिये अटकि प्राननि पर्यो चटक करनी ॥ लटक निरखन लग्यो मटक सब भूलि गई हटक डारि देहु यहै लागी । झटकि कुण्डल निरखि अटक ह्वै के गयो गटकि सब सो रह्यो बीच जागी ॥ मल्ल जे जे रहे सबै मारे तुरत असुर जोधा सबै तो संघारे । धाय दूतनि कहे मल्ल कोउ नहि रहे सूर बलराम हरि सब पछारे ॥ १३४ ॥ राग गोंडमलार ॥ भिरयो चानूरसों नंद सुत बांधि कटि पीत पट फेंटनव रंग राजे । द्विप दन्त कर कलित अरु शेष नटवर ललित मल्ल उर सप्ततल ताल बाजे ॥ पीन भुज नील जैलच्छिरंजित हृदय नील घनशीत तन तुंग छाती । देखि रहि मेख रति प्रेम नर नागरी बदति तजि भीर रति रीति राती ॥ मत्त मातंग बलअंग दम्भोलि दल काछनी लाल गल माल सोहै । कमल दल नयन सुदु बैन बंदित वदन देखि

सुरलोक नरलोक मोहै ॥ बाहु सों बाहु उर जानुसों जानु सों चरनसों चरन धरि प्रकट पेले ॥ परस्पर जुध करत मोहन अरु मल्ल दोउ देखत नारि पुर नर मुछ झेलैं । धूमदे धुंधरनि भीड़ भइ बंधुजन सुभटपद पानि धरनि धरति मेलैं । चित्तसों चित्तमन बंधुमन बंधसों दृष्टिसों दृष्टि नहि सूर डोलैं ॥१३५॥ रागसारङ्ग ॥ मथुरा के लोगन सचु पायो ॥ नटवर भेष काछि नंद नन्दन संग अक्रूर ले आयो । प्रथमहि रजक मारि मन मोहन गोप छन्द पहरायो । धनुष तोरि लीला नट नागरि तब गज खेल खिलायो । रंग भूमि मुष्टिक चानूरहि भुज बल ताख बजायो । नगर नारि दै गारि कंसको अजगुत युद्ध बनायो । गन गंधर्ब और देवतनसों कौतुक अंबर छायो । मार्यो कंस काजु सब सार्यो उग्रसेनि मन भायो । हरषे बसु देव देवकी आनंद मंगल बधायो । मात पिता की बंध छुड़ाई सूर सुयह जस गायो ॥ १३६ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु परम दिन मंगल कारी । लोक लोकको टीको आयो मुदित सकल नर नारी । शिव सुरेश शेष अरु नारद चतुरानन कर धारी । हरकर पाट बंध नौछावरि करत रतन पट सारी । बाजत ढोल निसान संख धुन बहुत कुलाहल भारी । अपने अपने लोग चले सब सूरदास बलि हारी ॥ १३७ ॥ राग धनाश्री ॥ जो पै राखति हौ पहचानि । तो अब के वह मोहन मूरति मोहि देखा बहु आनि । तुम रानी बसुदेव गेहनी हौं गवार ब्रज बासी । पठै देहु मेरो लाल लड़ैतो बारों ऐसी हांसी ॥ भली करी कंसादिक मारे सब सुर काज कियै । अब इन गैयन कौन चरावै भरि भरि लेत हियै । खात पान परि धान राज सुख जो कोउ के टि लड़ावै । तदपि सूर मेरे बारे कन्हैया माखनही सचुपावै ॥ १३८ ॥ *

॥ श्री कृष्ण के बचन नंद प्रति ॥

राग नट ॥ तुम मेरि प्रभुता बहुत करी ॥ परम गंवार और पशु पालक नीच दशातें उंच धरी ॥ रोग दोष संताप जनम के प्रगट तहीं तुम सबै हरी । अष्ट महा सिध और नवै निधि कर जोरें मेरे द्वार परी । तीन लोक अरु भवन चतुर्दश बेदपुरानन शाख धरी । सूर दास प्रभु अपने जनको देत परम सुख घरी घरी ॥ १३९ ॥ राग बिहाग ॥ जाहु ब्रज कहं फिरह नंद राई । हमहि तुमहि सुत तातको नातो और परयो है आई ॥ तुम कोया प्रति पाल हमारो सूजन नियतें जाई । जहां जहां हम रहें तुम्हारे डारहु जिनि बिसराई ॥ जननि जशोदा ग्वाल सखा सब मिलिय हु कंठ लगाई । सुदिन साधि सोधि कर देखो मेरोई गुन गाई । माया मोह मिलन और बिछुरन ऐसेही दिन जाई । सूर दास प्रभु निठुर बचन सुनि नैननि नीर बहाई ॥ ॥ १४० ॥ पुरीया धनाश्री ॥ फेरि नंद उतरु नहि दीनों । रोम रोम भरि गये बचन सुनि मनहु बिच लिखि कीन्हों । यह तो परंपरा चलि आई सुख दुख लाभ अरु

हानि ॥ हम पर बबा मया करि रहियो सुत अपनो जिय जानि । को जसपे निरखे काके पल लागे निरखि बदन सिर नायो । दुख समूहनि दोपरि पुरके चलत कंठ भरि आयो ॥ अधर पाद भुव मई कोटि गिरि जो संगि गोकुल पैठो । सूर दास अस कबन कुलिशतें अजहुं रहत तन बैठो ॥ १४१ ॥ राग सोरठ ॥ नंद बिदा ह्वै घोष सिधारे । बिछुरन मिलन रची बिधि ऐसे यह संकोच निवारे । कहियो जाय जशोदा आगे नैन नीर जिन डारो ॥ सेवा करि जानों सुत अपनो करि प्रतिपाल हमारो । हमहिं तुमहिं कछु अंतर नाहीं तुमजो ज्ञान बिचारो । सूर दास प्रभु यह बिचारि के उह जिनि प्रीति बिसारो ॥ १४२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ नंद राय जीके श्री कृष्ण के प्रति बचन ॥

राग सोरठ ॥ गोपाल राय होंन चरन तजि जैहौं । तुम्हें छांडि मधु बन मेरे मोहन कहा जाय ब्रज लैहौं । उतर कहा देहौं जशुमति कों जब सुन मुख जैहौं । प्रात समै सोवत उठ जननी काहि कलेऊ दैहौं । बारह बरष दई हम ढीठ्यो यह प्रताप नहिं जान्यो । अब तुम प्रगट भए बसुदेव सुत गरग बचन परवान्यों । कत हम काज महा रिपुमारे ब्रज आपदनि बिनासी । डारिन दयो कमल करतें गिरि दबि मरतें ब्रज बासी । बासर संग सखा सब लीने टेरि धेनु चरावहु । क्यों रहि हैं यह प्रान दरस बिनु संध्या समै न आवहु । अब तुम राज करो कोटिक जुग मात पिता सुख देहों । कबहुं तात तात मेरे मोहन मुख सों मोसों कहि हो । ऊरध स्वास चरन गियलाने नैननि जल भरि ताई । सूर नंद बिछुरन की बिपदा मोपैं कही न जाई ॥ १४३ ॥ राग पूरबी ॥ अपने गोपाल को हौं चेरो । जन्म जन्म सुनि सुबल सुदामा निबह्यो यह प्रन मेरो । ब्रह्मादिक इंद्रादि आदि दे जानत बल सब फेरो । एक स्वास की चास चलत उठि तजि तजि अपनो खेरो । कहा भयो जो देश द्वारका कीनों दूरबसेरो । अपनेही या ब्रज के कारण करिहैं हरि फिरि फेरो । इहां उदार हम फिरत साथही तकत असाध अहेरो । सूर हियेतें टरत न गोकुल अंग छुवत हों टेरो ॥ १४४ ॥ * ॥ *

॥ श्री कृष्ण बचन नंद जशोदा प्रति ॥

राग कलिंग ॥ नीके रहियो जशोदा मैया । आवैंगे दिन चार पांच में हम हलधर दोउ भैया । बंसी बेत बिषाद देखियो और अबेर सबेरो ॥ ले जिनि जाइ चोराय राधिका कछू खिलोना मेरो । जादिनतें हमतुमतें बिछुरे कोहु न कहे कन्हैया ।

प्रात समै उठि कियो न कलेऊ सांझ पियो नहिं घैया। कहा कहौं कछु कहत न आवै जशुमति जेतो दुख पायो। अब सुनियत बसुदेव देवकी कहत हमारो जायो। कहियो जाय नंद बाबा सों मंद तिठुर मन कीन्हों। सूर श्याम पहुंचाय मधुपुरी बहुरि संदेस न लीन्हों ॥ १४५ ॥ राग मारू ॥ मेरे कान्ह कमल दल लोचन। अबकी बेर बहुरि ब्रज आवहु कहा लगे जिय सोचन। यह लालसा बहुत मेरे जिय बैठे देखत रहिहों ॥ गाय चरावन जान कुंवर कों कबहुं भूख ना कहिहों। करत अठान न बरज्यों कबहूं अरु माखन की चोरी। अपने जियत नैन भरि देखों हीरा कीसी जोरी ॥ एक बेर मिलि जाउ इहालों अनत कहूं के ऊतर। चारिहु दिवस आइ सुख दीजे सूर पहुनई सूतर ॥ १४६ ॥ राग धनाश्री ॥ पथि इतनी कहियो बात। तुम बिन इहां कुंवर बर मेरे होत जिते उतपात। बधे अघासुर टरतन टारे बालक बनहिं न जात। ब्रज पंजरि रुधि मानों राखे निकसन कों अकुलात। गोपी गाइ सकल लघु दीरघ पीतबरन कृश गात। परम अनाथ देखियत तुम बिन, केहि अब लंबिये तात। कान्ह कान्ह के टेरत तवधों अब कैसें जिय मानत ॥ यह व्यवहार आजुलों है ब्रज कपट नाट छल ठानत। दशहूं दिशिते उदित होत हैं दावानल के कोट। आंखे मूंदि रहत सनमुख ह्वै नाम कवचदै ओट ॥ ए सब दुष्ठ गते अरि जीते भए एकही पेट ॥ सत्वर सूर सहाय करो अब समझि पुरा तन हेट ॥ १४७ ॥ * राग बिहागरो ॥ अबनंद गइयांलेउ संहार ॥ हमतो तुमरे आन प्रगटेगौ चराइ दिनचार दूध दधि सबचोर खायो तुमज्यों कियो प्रति पार ॥ सूरके प्रभुचले ब्रज तज कपट कागज फार ॥ १४६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

अथ जसोदा बचन नन्दजूके प्रति

॥ राग सोरठ ॥ नन्द तुमछांडे कहां कुमार ॥ कैसें प्रान रहत बिनुदेखे पूछत गोपि गोपार ॥ कहना करत जशोदा मैया नेंन बहे आसार ॥ चितवत नन्द ठगेसे ठाढ़े ग्वंय हरे मन हरे जुवार ॥ मुरली धुनि ब्रज में नहिं सुनिये सूरज जन सब करत पुकार। श्याम सुन्दर जा दिन तें बिछुरे कोउ नहि झांके नंदके द्वार ॥१४७॥ रागसोरठ ॥ मेरो माय अति प्यारो नद नन्द। कहां बिसारि नंद तुम आये चूक परी मति मन्द ॥ बलि माधो अम्बुज लोचन किये अति आनंदके कन्द। सरवर गोप कुमद कुम्हिलाने कान्ह बदन बिनु चन्द ॥ चलऊ चरन गहैं वसुदेव के मेलि पाग गल फन्द। सूरदास प्रभु गोकुल प्रठवत बहै तीनि लोक मुनि बन्द ॥ १४८ ॥ रागसोरठ ॥ हरि बिछुरत फाट्यो न हियो। भयो कठोर बज्रतें भारो यहां रहेअब कहा कियो ॥ बांटि हलाहल सुनिमेरी सजनी औषधिहो न पियो। मन बुधि गई सम्हार न तन को कूड़ो दाव दियो ॥ अबका करों कौन विधि

मिलि हौं परबस प्रान लियो। निश दिन रटत सूरके प्रभु बिन कैसे परत जियो ॥ १४९ ॥ राग सोरठ ॥ उलटि प्रग कैसें दीनों नन्द । छांड़ो कहां उभय सुत मोहन दृग जीवन मति मन्द ॥ के तुम धन जोवन मद माते के तुम छूटे बन्द । सुफलक सुत बैरी भयो हम कों ले गयो आनद कन्द ॥ राम कृष्ण बिन कैसे जीजै कठिन प्रीति के फन्द । सूर दास अब भई अभागिनि तुम बिन गोकुल चन्द ॥ १५० ॥ राग सोरठ ॥ सराहिये नन्द तिहारो हियो । मोहन सों सुत छांड़ि मधुपुरी गोकुल आनि जियो ॥ हों पचिशोच बकुत करि हारी एकौ नाहि भयो । जीवन प्रान हमारे ब्रज को बसुदेव छीन लयो ॥ कहा करूं मोरे ललित लाड़िले बरजत गवन कियो । सूर दास प्रभु श्याम लाल घन पर हथ जाय दियो ॥ १५१ ॥ राग सोरठ ॥ है कोउ इतनी भांति दिखावै। किंकिनि शब्द चलत धुनु रुनु झुनु ठुमक ठुमक गृह आवै ॥ ककुक विलाग्र बदन की शोभा अरुन कोटि गति पावै । कञ्चन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोर पुच्छ छविपावै ॥ धूसर धूरि अंग संग लीने ग्वाल बाल संग खावै । सूर दास प्रभु कहत जशोदा भाग बड़े तें पावै ॥ १५२ ॥ राग धनाश्री भाव जन बिनु नहीं बनि सुख कहा प्रेमरु जोग । काग हंसहि संग जैसे कहा दुख कहु भोग ॥ जगत में यह संग देखौ बचन प्रति कहे ब्रह्म । सूर ब्रज की कथा कासों कहै यह करि दम्भ ॥ १५३ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा सुख ब्रज को सो संसार । कहां सुखद वंसीबट जमुना यह मन सदा बिचार ॥ कहां बन धाम कहां राधा संग कहं वह ब्रज की बाम । कहां लता तरु तरु प्रति बूझति कुञ्ज कुञ्ज नव धाम ॥ कहं खग मृग वृन्दावन सुंदर कहां वंसीबट ठांम । कहां विरह सुख बिन गोपिन सङ्ग सूर श्याम मन काम ॥ ॥ १५४ ॥ राग धनाश्री ॥ यह अद्वैत दरसी रङ्ग । सदा मिलि एक साथ बैठत चलत बोलत सङ्ग ॥ बात कहत न बनत यासों निठुर जोसी जङ्ग । प्रेम सुनि बिपरीत भाषत होत है रस भङ्ग ॥ सदा हृजकों ध्यान मेरे रास रङ्ग तरङ्ग । सूर वह रसकछूं काहू सङ्ग मिलि सुभरङ्ग ॥ १५५ ॥ राग धनाश्री ॥ संग मिलि कहूं का संग बात । यह तौ कथत जोग की बातें जाभें रस जरि जात ॥ कहत कहा पितु मात कौन के पुरुष नारि कहं नात । कहां जशोदा सी है मैया कहां नंद सम तात ॥ कहं वृषभान सुता संग के सुख वह बासर कहं प्रात । सखी सखा सुख नहीं भवन में नहिं बैकुंठ सुहात ॥ वह बातें कहिये केहि कारन आगें यह तन हरि पछतात । सूर दास प्रभु ब्रज महिमा कहि लिखी बदत बल ग्वात ॥ १५६ ॥ ॥ राग परज ॥ प्राछेहि चितवत मेरे लोचन आगे परत न पाई । मन हर लियो माधुरी मूरत कहा करौं ब्रज जाई ॥ पौन न भई पताका अम्बर भई न रथकों अंग । रेनुन भई चरन लपटाती जाति वहां लो संग ॥ केहि विधि कर कैसें करि सजनी कब जु मिले गोपाल । सूर दास प्रभु पठय मधुपुरी मूरछि परी ब्रज बाल ॥ १५७ ॥ राग परज ॥ चातक न होय कोई बिरहनि नारी । अब यह पीउ पीउ रटत सुर पति के झुखुन मगन सुखवारी ॥ अति कृश गात देखि सखि वाकों अह निश रटति पुकारी । देखहु प्रीति बापुरे पशु की मरत न मानत हारी ॥ अब पति बिनु ऐसी लागति ज्यों सोभित सरवर बारी । तैसे सूर जानि सब गोपी जोन कृपा करि मिलहिं

मुरारी ॥१५८॥ राग जंगला ॥ श्याम चलन अब सुनियत आजु कौन कुटिल यह आयो। नन्द भवन में भनक सुनी अब कैसें जु दूत पठायो ॥ ब्रज की नारिन यहै विचारयो सकल सिमटि करि आईं। बूझन समाचार आतुर ह्वै गृह गृह तें उठि धाईं ॥ प्रीति जानि सोच मानि बिलखिबदन ठाढ़ीं। मानऊबे सखि बिचि चित्र लिखिकाढ़ीं ॥ ऐसीछबि ठौर ठौर कहत न बनि आवै। सूर दास बिरह बिथा कहौ काहि भावै ॥ १५९ ॥ राग जंगला ॥ जबतें हरि मधुबनहि सिधारे कबहुं कियो न फेरो ॥ भये बहांईके मन मोहन इतहीं नाहि चितेरो ॥ बिन देखे कल नाहिं परतहै निशि दिनलगत उभेरो। सूरश्याम कोउ आनि मिलावै आनंद होय घनेरो ॥ १६० ॥ रागनट ॥ मोकों ना हरि बार भई। जबतें हरि मधुबनहिं सिधारे तब तें सुधि न लई। कह कीजै संगति नीचे की मन अति दुखि जु भई ॥ चन्दन चोर अगनि सम लागत सबही सूर सई। तेरी गति कोऊ नहिं जानत अवकछु मान मई ॥ सूरदास प्रभु दरसन दीजै नेकुजु मया ठई ॥१६१॥ राग धनाश्री कुब्जा हरिकी दासी आहि ॥ जैसें आप भाजि गोकुल रहे तैसें राखी ताहि ॥ रूपन रतन दुराये राख्योजैसे नहीं कपूर ॥ जसे छीप अमोल रतनप्रति कहजानै जोकूर ॥ वैसेहि रही कूबरी दासी अबिनाशीको आहि ॥ सूरदास प्रभु कंसमारि कै लइआनी तिहि काहि ॥ १६२ ॥ राग धनाश्री ॥ सखासुनु एकमेरी बात ॥ इहलता गृह संगगोपिन सुधिकरत पछितात ॥ बिधि लिखी नहि टरत कैसेहूं यहकहत अकुलात ॥ हंसिउपंग सुतबचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सूरप्रभु इहसुनत मोसों एकहीसों नात ॥ १६३ ॥ राग कल्याण जबऊधो एकांत कही ॥ तब जदुपति अतिही सुखपायो मानीप्रगट सही ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुमब्रजही मिलोजाइ ब्रजलोग ॥ मोबिन बिरहअरी ब्रज बाला जाइसुनावहु जोग ॥ प्रेम मिटाय ज्ञान परमोधहु तुमहौ पूरन ज्ञानी ॥ सूर उपगसुत मन हरषाने इहमहिमा इन जानी ॥ १६४ ॥ राग कल्याण ॥ ऊधो यह तुम निश्चय जानों ॥ मन क्रम बच में तुमहि पठावत ब्रजकों तुरत पलानों ॥ पूरन ब्रह्म अलख अबिनाशी ताके तुमहो ज्ञाता ॥ रेख नरूप जात कुलनाहीं जाके पितु नहिमाता ॥ इहमत दे गोपिन को आवहु बिरह नदी में भासति ॥ सूर तुरत तुम जाइकहो इहब्रह्म बिना नहि आसति ॥१६५॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो ब्रजकों गवन करो ॥ हमहि बिना बिरहिनी गोपिका तिनके दुखहि हरो ॥ जोग ज्ञान परमोधि सबनिकों ज्योंसुख पावें नारि ॥ पूरन ब्रह्म अकल परचै करि मोहि बिसारें डारि ॥ सखा प्रबीन हमारे तुमहो तुमतो नहीं महंत ॥ सूरश्याम कारन यह पठवत ह्वै आवैगो संत ॥ १६६ ॥ राग बिहागरो ॥ तुरत ब्रज जाहु उपग सुत आजु ॥ ज्ञान बुझाइ खबरदे आवहु एकपंथहै काज ॥ जबतें मधुबन कों हमआए फेरिगयो नहिं कोई ॥ जुबतिनपें ताहीकौं पठवै जोतुम लाइक होई ॥ एकप्रबीन अरु सखा हमारे ज्ञानी तुमसरि कौन। सोइ कीजै जैसें वे बाला साधन सीखे पौन ॥ श्री मुख श्याम कहत यह बानी ऊद्धव सुनत सिहात। आयसु मानि सूर प्रभु जैहों नारि मानि हैं बात ॥ कहत न बने संदेसो मोपें जननि जितो दुख पायो हो। अब हमसों बसुदेव देवकी करत आपनों आयो हो ॥ ॥ १६७ ॥ राग टोड़ी ॥ उपंग सुत हाथ दई कर पाती ॥ इह कहियो जशुमति मैयासों

नहिं बिसरेउ दिन राती ॥ कहत कहा वसुदेव देवकी तुमकों हमसे जानो ॥ कंस त्रास सिसु अतिहि जानिकै ब्रजमें जादु दुरायो ॥ कहे बनाय कोटि कोटु बातें कहि बलराम कन्हाई ॥ सूर काज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिले गेआई ॥ १६८ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो कुती जननि सों मिलियो अरु कुशलात कहोगे ॥ बाबा नन्दहि पालागन कहि पुनि पुनि चरन गहोगे ॥ जादिनतें मधुवन हमआए सोधनहीं तुमलीन्हें ॥ दैदे सेंह करोगे हित करि कहा निठुरई कीन्हें ॥ यह कहियो बलराम श्याम अब आवेंगे दोउ भाई । सूर करम की रेख मिटै नहिं यहै कह्यो जदुराई ॥ १६९ ॥ राग गौरी ॥ पाती लिखि ऊधो कर दीनो । नन्द जशोदहि हितकहि दीन्ही हंसे उपंग सुत लीनो ॥ मुख वचननि कहे हेतु जनायो तुमहो हेतु हमारे । बालजानि पठये नृप डरतें तुम प्रति पालन हारे ॥ कुब्जा सुन्यौं जात ब्रज ऊधो महलहि लियो बुलाई । सेंहथ पाति लिखी राधाकों गोपिन सहित बनाई ॥ मोकों तुम अपराध लगावति कृपा भई बिनु आस । झुकति कहा मो पर ब्रजनारी सुनहु न सूरदास ॥ १७० ॥ राग गौरी ॥ जदुपति सखा ऊधो जानि । लगे लगे मन इहै सोचन भली नहि यह बानि ॥ अंग भुज धरि होत ठाढ़े निठुर जैसो काठ । संग इह नहिं बनत नीको होय कैसेहु साठ ॥ जो कहो तो करे क्यों यह निन्दि है अरु मोहि । देखिबे कों परमसुन्दर रहत नयननि जोहि ॥ कनककलश अपान जैसे तैसोई यह रूप । सूर कैसेहु प्रेम पावै तबहि होइ सुरूप ॥ १७१ ॥ राग धनाश्री जदुपति जानि उद्धव रीत । जेहि प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीत ॥ विरह दुख सुख जहां नाहीं तहं न उपजे प्रेम । रेख रूपन वरन जाके यह धरयो यह नेम ॥ त्रिगुन तन करि लखत हमकों ब्रह्म मानत और । बिनागुन क्यों पुहुमि उधरे यह करत मन डोर ॥ विरह रस केहि मंच कहिये क्यों चले संसार । कछु कहत यह एक प्रगटत अति भरयो अहंकार ॥ प्रेम भजन नेम याको जाय क्यों समुझाइ । सूर प्रभु मन यहै आनो दृगहि देउ पठाइ ॥ १७२ ॥ राग धनाश्री ॥ नन्द गोप सब सखा निहारत जशु मति सुतको भाव नहीं । उग्रसेन बसुदेव उपंग सुत सुफलक सुत वैसेहि संगही ॥ जबही मन न्यारो हरि कीन्हों गोपन मन यह व्याप गई । बोलि उठे यहि अन्तर मुख हरि निठुर रूप जे ब्रह्म भई ॥ अति प्रति पाल कियो तुम हमरो सुनत नन्द जिय झझकि रहे । सूर श्याम ऐसो नहि चहिये जो मोसों यह बचन कहे ॥ १७३ ॥ राग धनाश्री मोहि कहत प्रति पाल कियो । मोसों कहत छोड़ जिन ऐसी नयन टरत नहि भरतहिये सङ्कित नन्द त्रास बानी सुनि विलम करत कह क्यों न चले । कंस मारि रजधानी दीन्ही ब्रज तें बहुरे आनि मिले ॥ मन ही मन ऐसी उपजावत वे उत ब्रह्म ब्रह्म दरसी । सूर पिता को मात कवन है रहत सबनि सों वे परसी ॥ १७४ ॥ राग धनाश्री ॥ कुब्जा सी भागिनि को नारि ॥ कंसहि चन्दन लये जातही बीच मिली ताकौं दइ तारि ॥ हरि सुकृपा करि रानी कीनी कुब्ज मिटायो खारि । यहै बात मधुपुरी जहं तहं दासी कहत डरत जिय भारि ॥ कुब्जा भूलि कहत जो कोऊ ताहि उठत सब दै दै गारि । सुनहु सूर रानी सुनि पावै त्रास होत जिनि डारे मारि ॥ १७५ ॥ राग रामकली ॥ हरि की कृपा

जापर होइ ताही । कछु वह बूझत नाहि हृदय देखो जाही ॥ कहा संशय करत याको कितिक है यह बात । असुर सैन संहारि डारै भगत जनसौं नात ॥ हरन करन ए यहै समरथ कहो बारम्बार । सूर हरि की कृपा तें खल तरि गये संसार ॥ १७६ ॥ राग रामकली ॥ कुब्जा तो बड़ भागिन ह्वै । करुना करि हरि जाहि निवाजी आपु रहे तहं राजी ह्वै ॥ पूरव तप कर विलसन लागी मनके भाव पुरावत ह्वै । मथुरा नरनारी सुख बानी रह्यौ जहां तहं जैजै ह्वै ॥ दैत बिनास तुरत तहं आये यह लीला जाने पै ह्वै । सूर दास प्रभु भावहि के बस मिलत कृपा करि अति सुख ह्वै ॥ १७७ ॥ राग बिलावल ॥ तबबोले हरि नंद सौं मधुरे कर बानी । गर्ग बचन तुमसे कहे सो नहि निबहो जानी ॥ मैं आयो संसार में भुव भार उतारन । तिनके तुम धनि धनिक हो कान्हा प्रति पारन ॥ मात पिता तुम्हरे नहीं तुमतें अरु कोऊ । एक बेर ब्रज लोगसों मिलहो सुनु सोऊ ॥ मिलन छिलन दिन चारिको तुमतो सब जान्यों । मोकों तुम अति सुख दयो सो कहा बखान्यों ॥ मथुरा नर नारी सुनै ब्याकुल ब्रजबासी । सूर मधु पुरी आय के एई अबिनासी ॥ १७८ रागसोरठ ॥ गोपाल रायहौं न चरन तजि जैहों । तुमहि छांड़ि मधुबन मेरे मोहन कहा जाय ब्रज लेहों ॥ कहिहो कहा जाय जसुमतिसों जब समीप उठि ऐहै । प्रात समय दधि मथन छांड़िके काहि कलेऊ दैहै ॥ बारह बरष दिये हम ढीठो यह प्रताप बिन जानों । अब तुम प्रकट भए वसुदेव सुत गरग बचन पर मानों ॥ रिपु हति काज सबै हम कीन्हो कत आपदा बिनासी । डार न दियो कमल करतें गिरि दबि मरते ब्रजबासी ॥ बासर संग सखा सब लीन्हे टेरि न धेनु चरैहो । कौं रहिहै मेरे प्रान दरश बिनु जब संध्या नहि ऐहो ॥ ऊर्द्ध स्वास काया गति छाकौ नयन नीर न रहाय । सूर नन्द बिछुरे की वेदन मोपें कही न जाय ॥ १७९ ॥ रागिनी जैतश्री ॥ तथापुरियाधनाश्री ॥ रूपक ताल ॥ कुबरी को न्यावरी जासों गोविन्द बोले । बे बय लोकनाथ चाहत हैं काहेन ऐंडो बेंडो डोले ॥ जिनसों कृपा करी नंद नन्दन सो क्यों न करत कलोले । कारो कारो कुटिल अति कान्हर अन्तर ग्रंथि न खोले ॥ इन बैरी बस बाद करत है हृदा सुरति यह भोले । दीपक देख पतंग जरत ज्यौं मीनसुजल बिन भोले ॥ प्रीति पुरातन पारि जनन सों नेह कसोटी तोले । सूर श्याम उपहास चल्यौ ब्रज आप आपने टोले ॥ १८० ॥ राग रामकली ॥ ऊधो जाके माथे भाग । अबलनि जोग सिखावन आए बेरिहि बपरि सुहाग ॥ आएबचन योग की बेली काटि प्रेमको बाग । कुब्जहि करि आए पटरानी हमहिं देन बैराग ॥ लोंड़ी की डोंड़ी बाजी जग हरि हांसीको रागु । कुब्जा कमल नयन मिलि खेलत बारह मासी फागु ॥ मिल्यौ सोहावो साथ श्याम गहो कहां हंस कहं कागु । सूरदास प्रभु रूख छांड़ि के चतुर चकोरत आगु ॥ १८१ ॥ राग धनाश्री ॥ हरिके बचन सुनहि आहि । यहां को कहै कौनकी बातें ज्ञान ध्यान सुमरो को काहि ॥ को सुख समर तास युवतीको जिन हरि कंस हते । हमरे तो गोपति सुतअधिपति बनिता औरन ते ॥ गोरज रंजित रूप रुचि कारी चितै चितै हरि होत । कबहुंक करनि समैं तिल नेंक न मालके सोत ॥ तारि पुसमैं संग मिल लीन्हे ए आवत तनु घोष । सूरदास

स्वामी मन मोहन कत उपजावत दोष ॥ १८२ ॥ राग धनाश्री ॥ कहौ कौन नाहिन सुखपाये बाल गोपाल के राज । ऊधो आपु सम्पदा उनकी है सब इनके काज ॥ धनुष तोरि गज मारि मल्ल मथि निडरि कियो जदु वंस । उनको जाय और सुख दीन्हों करषि केश गहि कंस ॥ कुब्जा रूप देखि सुख दीन्हो सब कोन्हे मन काम । उग्र सेन बसुदेव देवकी आने अपने धाम ॥ दिन प्रति दीन दयाल कृपा निधि बढ़े हमारे आस । सूर श्याम हरि होहु कृपा करि इन नयननि की आस ॥ १८३ ॥ राग धनाश्री ॥ अब हरि कौनके रस गोधे । सकत नाहि निरखति ऊधो अखि बदरी ज्यों बीधे ॥ प्रति न त्यागि अबला गईं तजीसकल कुलकानि । जस अंधकार छांड़िए गाहिल बाक फन लकुट बिन पांनि ॥ जतन धुरि निर्गुन भए सब नर गुने अभि लाख । मन मोहन मोहन नहिं देखे कैसे रैहे साख ॥ बिना चरन सरोज देखत बरत कुमुदनि बास । बिना पुष्कर नयन किहि बिधि जिये सूरज दास ॥ १८४ ॥ राग बिलावल ॥ माधो इतने जतन तब काहि किये। अपने जानि जानि जदु नन्दन बहुत भीत सों राखि लिये ॥ अघ बक वृषभ बरुन बन्धन तं ब्याल दावा नल जोति पिये । इन्द्र मान मेटो गिरि कर धर छिन छिनु प्रति आनन्द दिये ॥ हरि बिकुरतकी प्रीति न जानी बचन मानि हम बादि जिये । सूरदास अब वा लालन बिनु कहनि सकत एक बीन हिये ॥ १८५ ॥ राग बिलावल ॥ परेखो कोन बोलको कीजै । ना हरि जाति न पांति हमारी कहा मानि दुख लीजै ॥ नाहिन मोर चन्द्रिका मांथे नाहिन उर बनमाल । नहि शोभित पुहपन के भूषन सुन्दर श्याम तमाल । नट नन्दन गोपी जन बल्लभ काहे को कान्ह कहावे । बासुदेव जादव कुल दीपक बन्दी जन बिरदावे ॥ बिसरि गयो गृह बनको नातो रह्यौ न एकौ अंग । सूर श्याम कहं गई सगाई का मुरली के संग ॥ १८६ ॥ राग बिलावल ॥ ऐसे साधु हम नहिं जाने श्यामहीं । सेवाकरत करीउन ऐसी जाति गई कुल नामनहीं ॥ तनमन प्रीति लाय जो तोरै कौन भलाई तामहीं । बे कछु पीर पराई जानैं लुब्ध आपने कामहिं ॥ नागरि नारि रते के नागर रते जो कुब्जा ठामहि ॥ १८७ ॥ रागनट । कंस वध्यौ कुब्जाके काज। और नारिहरि को नमिला-यऊ कहां गंवाई लाज ॥ जैसे काग हंस की गति लह लह सतसंग कपूर। जैसें कंचन कांच वरा वर गेरू काम सिंदूर ॥ भोजन साथ शूद्र ब्राह्मण के तैसोइ उनके साथ । सुनऊंसूर हरि गाइ चरैया अब भए कुब्जा नाथ ॥ १८८ ॥ राग नट ॥ हरिही फेरी कुब्जाठाठ । टहल करती महल महलनि संग खेठी पीठ ॥ नें कहीं सुखपाइ भूली अतिहि गई गर वाइ । जात आवत रही कोऊ यहै कहै पठाइ ॥ बेदिना भए भूलि ताको दिवस दसकी बात । सूर प्रभु दासी लुभाने व्रज वधू अनखात ॥ १८९ ॥ राग नट ॥ देखो कुबरी के काम । अब कहावति पटरानी बड़े राजा श्याम ॥ कहत नहिं कोउ उनहिं दासी वे नहीं गोपाल । वे कहावत राज कन्या वे भए भूपाल ॥ पुरुष कोरी सबै सोहे कुब्ज काहे काज ॥ सूर प्रभु को कहा कहिये बीच पाई लाज ॥ १९० ॥ राग नट ॥ यह सुनि हमहिं आवत लाज । जाय मथुरा कंस मारयो कूबरी के काज ॥ लोग पुरखें बसत ऐसे सबनि यहै सोहात । कबहुं कोऊ कहत नाहीं श्याम आगे बात ॥ कहां बेरी कहा कीन्हो

कहा आपुन होत । तुम बड़े जदु वंस राजा मिले दासी गोत ॥ अजहुं कहै सुनाय कोऊ करैं कुब्जा दूरि । सूर डारनि मरत गोपी कुंवरी के भूरि ॥ १९१ ॥ राग नट ॥ भामिनि कुब्जासों रंग राते । राज कुमारिहि जोपै पाते तौ नहि अंग समाते ॥ रीझेजाय तनक चंदन लै मधुबन मारग जाते । ताकी कहा बड़ाई कीजे ऐसे रूप लोभाते ॥ ए अहीर वे कृष्णकि दासी जोरी करी विधाते । ब्रजको वनिता त्यागि सूर प्रभु बूझी उनका बाते ॥ १९२ ॥ राग धनाश्री ॥ तबतें मेटे सब आनंद । या ब्रजको सब भाग संपदा लेजुगये नंदनन्द ॥ धेनु नहीं ए अवति रुचिर मुख चरति नाहि तृन कन्द । विषम बियोग दहत उर सजनी बाढ़ि रहे दुख दन्द ॥ शीतल कौन करैरी माई नाहि यहां हरि चन्द । सूर खात की बूंद आस लगि खूकत रंगी कन्द ॥ १९३ ॥ राग मलार ॥ गोपालहि पावों किहि देश । सींगन मुद्रा अरु खप्पर लै करि जोगिन के भेश ॥ कंथा पहिरि विभूति लगाऊं जटा बढ़ाऊं केश । हरि कारन गोरखहि जगाऊं जैसे रांग महेश ॥ तन मन जारों भस्म चढ़ाऊं विरहिनि गुरुउपदेश । सूरश्याम बिनु हमहें ऐसो जैसे मनि बिनु शेश ॥ ॥ १९४ ॥ राग कान्हरो ॥ हंस काग कौ सङ्ग भयो । कहां गोकुल कहां गोप गोपिका विधि यह सङ्ग दयो ॥ जैसे कञ्चन काच सङ्ग फल चन्दन सङ्ग कुगन्धि । जैसे खरिक कपूर दोउ एक सम यह भई सु सन्धि ॥ जल बिनु मीन रहत कहुं न्यारी सोई हरिहि बुलावत । जब ब्रजकी बातें ए कहियत तबहि तबहि उचटावत ॥ याकौ ज्ञान यापि ब्रज पठऊं और न याहि उपाव । सुनऊ सूर याकौ अब पठऊं यहै बनेगो दाव ॥ १९५ ॥ राग कान्हरो ॥ याकौ और न कछू उपाय । मेरो प्रगट कह्यो नहि बहिहै ब्रजही देउ पठाय ॥ गुप्त प्रीति जुवतिन की कहि कै याकौ करो महंत । गोपिन को परमोदन कारन जैहै सुनत तुरंत ॥ अति अभिमान करैगो मन में जोगिन की यह भांति । सूर श्याम मन यहै निश्चय करि बैठतु है मिलि पांति ॥ १९६ ॥ राग नट ॥ जबही यहै कहोगे याहि । सोहि पठवत गोपिकनपै हरष ह्वैहै ताहि ॥ जोग को अभिमान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ । कहेगो मोहि श्याम मानत करो यह चतुराइ ॥ आय गये तेहि समय उद्धव सखा कहि लियो बोलि । कन्ध धरि भुज भये ठाढ़े करत बचननि ठोलि ॥ बार बार उसास डारत कहत ब्रज की बात । सूर प्रभु के बचन सुनि सुनि उपग सुत मुसुकात ॥ १९७ ॥ राग कल्यान ॥ उद्धव मन अभिमान बढायो । जदुपति जोग जानि जिय सांचो नयन अकाश चढ़ायो ॥ नारिन पै मोकों पठवत है कहत सिखावन जोग । मनही मन अब करत प्रशंसा यह मिथ्या सुख भोग ॥ आयसु मानि लिख्यो सिर ऊपर प्रभु आज्ञा परवान । सूरदास प्रभु पठवत गोकुल में क्यों कहों कि आन ॥ १९८ ॥ राग कान्हरो ॥ तुम पठवत गोकुल को जैहों । गद गद बचन कहत मुख प्रफुलित बार बार समुझैहों ॥ आलश नहीं करो तुव कारन कौन काज पुनि लैहों । यह मिथ्या संसार सदाई यह कहिकै उठि ऐहों । सूर दिना द्वै ब्रज जन सुख द आय चरन पुनि गैहों ॥ १९९ ॥ राग गौरी ॥ उद्धव ब्रज जिनि गहरु लगावऊ । तुम ब्रज नारि जानि मन सकुचन कहि धौं जोग सुनावऊ ॥ बानी कहत समुझ पै लहहैं कही हमारी मानों । बिरह दाह यह सुनत बुझैहै मानो अनखहि पानों ॥

अवही जाउ बिकल सब गोपी जोग वचन करि पोषउ । सूर नन्द बाबा अरु जशुमति जननी जाइ सन्तोषउ ॥ २०१ ॥ राग गौरी ॥ गहरु जिनि लावउ गोकुल जाई । तुम हि बिना ब्याकुल हम ह्वै हैं जदुपति करि चतुराई ॥ अपनोंई रथ तुरत मंगायो दियो तुरत पलनाई । अपनों मुकुट पिताम्बर अपनो देत सबै सुख पाई ॥ सूर श्याम तद रूप उपंग सुत भृगु पद एक बचाई । अपनेंही अंग आभूषन करि आपुनही पहिराई ॥ २०२ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम कर पच लिखि बनाई । नन्द बबा सों बिनय करि कर जोरि जशुमति माय ॥ गोप ग्वाल सखानि कहि मिलि मिलन कंठ लगाय । और ब्रज नर नारि जे हैं मान प्रीति जनाय ॥ गोपिकन लिखि जोग पठयो भाव जानि जनाय ॥ सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत दृढ़ाय ॥२०३॥ राग केदारो ॥ बिधना यहै लिख्यो संजोग । कहां तें मधुपुरी आये तज्यौ माखन भोग ॥ कहां वे ब्रज के सखा सब कहां मथुरा लोग । देवकी बसुदेव सुत सुनि जननि करि है सोग ॥ रोहनी माता कृपा करि उछलि लेती रोग । सूर प्रभु मुख यह बचन कहि लिखि पठायो जोग ॥ २०४ ॥ ॥ राग बिहागरो ॥ उद्धव जात ब्रजहि सुने । देवकी बसुदेव सुनि कै हृदय हेत गने ॥ आप सौं पाती लिखी कहि धन्य जशुमति नन्द । सुत हमारो पालि पठयो अति दियो आनन्द ॥ आय के मिलि जात कबहुन श्याम अरु बलराम । यहै कहति पठाय हों अब तबहि तन बिश्राम ॥ बालसुख सब तुमहि लूट्यौ मोहि मिले सुकुमार । सूर यह उपकार तुमतें कहत बारम्बार ॥२०५॥ राग परज ॥ कहां सुख ब्रज कोसो संसार । कहां सुखद बंसीबट जमुना यह मन सदा बिचार ॥ कहं बन धाम कहां राधा संग कहां सङ्ग ब्रज बास । कहां लता तरुतर प्रति बूझति कुञ्ज कुञ्ज नव धाम ॥ कहां बिरह सुख बिन गोपिन संग सूर श्याम मन काम ॥ २०५ ॥ राग परज ॥ वह सुख कहौ काके साथ । कहां नन्द कहां जशुमति कहां राधा नाथ ॥ भाव जन बिन नहीं बनि सुख कहा प्रेम सुजोग । काग हंसहि सङ्ग ऐसे कहां दुख कहं भोग ॥ जगत में यह सङ्ग देखो बचन प्रति कहे अलेखे । सूर ब्रज की कथा कासौं कहे यह करि देखे ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सूरसागर सङ्गीत
रागकल्पद्रुम मथुरालीला सम्पूर्ण

॥ अथ सूरसागर रागसंग्रहकृत ॥

रागकल्पद्रुम

॥ श्रीगोपीजनबल्लभायनमः ॥

॥ श्री मथुरातें श्रीकृष्ण जी उद्धव जी को ब्रजमें पठाये सेा कथा प्रारम्भ ॥

॥ मङ्गलाचरण ॥

॥ राग कल्यान ताल जलद तितारा ॥

चरण कमल बंदों हरि राई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधरेकों सब कछु दिखराई ॥ बहरो सुने गूंग पुनि बोले रंकचलै शिर छत्र धराई । सूर दास स्वामी करुणा मय बारबार बंदो तेहि पाई ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ अथ भ्रमर गीत को प्रस्ताव ॥

॥ * ॥ श्री प्रभु जी के बचन उद्धव प्रति ॥ * ॥

॥ राग सारंग ॥ पहिलें करि परणाम नंद सों समाचार सब दीजो । और उहां वृषभान गोप सों जाय सकल सुधि लीजो ॥ श्री दामा आदिक सब ग्वालनि मेरो हुतो भेटिओ । सुख संदेस सुनाय हमारो गोपिन को दुख मेटिओ ॥ मंची एक बन बसत हमारो ताहि मिले सचु पाइओ । सावधान ह्वै मेरो हुतो ताही माथो नवाइओ सुन्दर परम किशोर बय क्रम चंचल नयन बिशाल । कर मुरली शिर मोर पंख पीतांबर उर बन माल ॥ जिनि डरियो तुम सघन बनन में ब्रज देवी रखवार । वृन्दावन सेा बसत निरन्तर कबहूं न होत नियार ॥ उद्धव प्रति सब कहो श्याम जू अपनें मन की प्रीति । सूर दास किरपा करि पठये यहै सकल ब्रज रीति ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कहियो नन्द कठोर भये । हम दोउ वीरै डारि परघरे मानो थाती सोंपि गये ॥ तनक तनकतें पालि बड़े किये बहुते सुख दिखराये । गोचारण कों चलत हमारें पाछें कोसक धाये ॥ यहं बसुदेव देवकी हमसों कहत आपने जाये । बहुरि विधाता जशुमति जू के हमहिन गोद

खिलाये ॥ कौन काज यह राज नगर कौ को सुख सेा सुख पाये । सूरदास ब्रज समा धान करु आजु कलिह हम आये ॥२॥ राग बिलावल ॥ तबहि उपंग सुत आयगये । सखा सखा कछु अन्तर नाहीं भरि भरि अंक लये ॥ अति सुन्दर तन श्याम सरीखे। देखत हरि पछताने । ऐसे कूं वैसी बुधि होती ब्रज पठवत तब आने ॥ या आगें रसकाव्य प्रकाशे जोग बचन प्रगटावै । सूर ज्ञान दृढ़ याके हिरदय जुवतिन जोग सिखावै ॥ ३॥ ॥ राग बिलाबल ॥ हरि गोकुल को प्रीति चलाई । सुनहु उपंग सुत मोहि न बिसरतु ब्रज बासी सुखदाई ॥ यह चित होत जांउ मैंअबहीं यहां नहींमन लागत । गोप सुखाल गाय बन चारत अति दुख पायेा त्यागत ॥ कहं माखन चोरी कहं जशुमति पूत जेंवहु कहि प्रेम । सूरश्याम के बचन सहित सुनि व्यापत अपने नेम ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ यदुपति लख्यो तेहि मुसक्यात । कहत हम मन रहे जोई सेाइ भई यह बात ॥ बचन परगट करन लागे प्रेम कहा चलाय । सुनहु उद्धव मोहि ब्रज की सुधि नहीं बिसराय ॥ रैनि सोवत चलत जागत लगत नहिं मन आन । नन्द जशुमति नारि नर ब्रज जहां मेरो प्रान ॥ कहत हरि सुनउपंग सुत यह कहत हौं रसरीति । सूर चित तें टरत नाहीं राधिका की प्रीति ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ सखा सुनों मेरी इक बात । वह लतागन संग गोपिन सुधि करत पछितात ॥ कहां वह वृषभान तनया परम सुन्दरगात सुरति आएं रास रस को अधिक जिय अकुलात ॥ सदा हितु यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात । सूर प्रभु यह सुनेा मोसों एकही सों नात ॥ ६ ॥ राग टोड़ी ॥ उद्धव यह इन निश्चय जानों । मन क्रम बच मैं तुम्हें पठावत ब्रज कों तुरत पलानों ॥ पूरन ब्रह्म सकल अबिनासी ताके तुमहौ ज्ञाता । रेखन रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता ॥ यह मतु दै गोपिन कहं आवहु बिरह नदी में भासति । सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति ॥ ७ ॥ राग नट ॥ उद्धव बेगिही ब्रज जाहु । सुरति संदेस सुनाय मेंटेा बल्लभिन को दाहु॥ काम पावक तूलमें तन बिरह स्वास समीर । भसम नाहिंन होन पावत लोचननि के नीर ॥ अजों लों यह भांति ह्वैहै कछुक सजग शरीर । एते पर बिनु समाधाने क्यों धरैं तिय धीर ॥ कहों कहा बनाय तुम सों सखा साधु प्रवीन । सूर सुमति बिचारिये क्यों जिये जल बिनु मीन ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ पथिक संदेसेा कहियेा जाय । आवेंगे हम दौनों भैया भैया जनि अकुलाय ॥ याकौ बिलगु बहुत हम मान्यों जेा कहि पठयेा धाय । कहंलों कीर्त्ति मानिये तुम्हरी बड़ो किये पय प्याय ॥ कहियेा जाय नन्द बाबा सों अरुगहि पकरेहु पाय । दोउ दुखी होन नहिं पावहिं धूमरि धौरी गाय ॥ जद्यपि मथुरा बिभव बहुत है तुम बिनु कछुन सुहाय। सूर दास ब्रज बासी लोगनि भेंटत हृदेा जुड़ाय ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ नीके रहियेा जशुमति मैया । आवहिंगे दिन चारि पांच में हम हलधर दोउ भैया ॥ जा दिन तें हम तुमतें बिछुरे काहु न कह्यौ कन्हैया । कबहूं प्रात न कियेा कलेवा सांझ न पीन्ही धैया ॥ बंसी बेन सम्हारि राखियेा और अबेर सबेरेा । मति लै जाय चुराय राधिका कछुक खिलौना मेरेा ॥ कहियेा जाय नन्द बाबा सों निपट निठुर जिय कीन्हेा । सूर

श्याम पहुंचाय मधुपुरी बहुरि संदेस न लीन्हों ॥ १० ॥ राग कल्यान ॥ उद्धव मन अभिलाख बढ़ायो । जदुपति जोग जान्यो जिय सांचो नयन अकाश चढ़ायो ॥ नारिन पै मोकों पठवत हौ कहत सिखावन जोग । मनहीं मन अब करत प्रसंसा है मिथ्या सुखभोग॥ आयसु मानि लियो सिर ऊपर प्रभु आज्ञा परमान । सूर दास प्रभु पठवत गोकुल मैं क्योंकहौं कि आन ॥ ११ ॥ राग मलार ॥ है केई वेसिहि अनुहारि । मधुवन ते इत आवत सखि री चितै तु नयन निहारि ॥ मांथे मुकुट मनोहर कुण्डल पीत बसन रुचि कारि । रथ पर बैठ कहत सारथि सों ब्रज तन बांह पसारि ॥ जानति नाहिं न पहिचानतिहूं मनु बीते जुग चारि । सूर दास स्वामी के बिछुरें जैसें मीन बिन वारि ॥१२॥ राग सोरठ ॥ देखो नंद द्वार रथ ठाढ़ो । बहुरि सखी सुफलक सुत आयो परयो सन्देह उर गाढ़ो । प्राण हमारे तबहि गये लै अब केहि कारन आयो । जानतिहूं अनुमान सखीरी कृपा करन उठि धायो । इतने अन्तर आय उपंग सुत तेहि छिनु दरसन दीनों । तब पहिचानि सखा हरिजूको परम सुचित मन कीनों । तब परनाम कियो अति रुचि सों और सबहि कर जोरे । सुनियत रहैं तैसोई देखे परम चतुर मति भोरे । तुम्हरो दरसन पाय आपनों जन्म सुफल करि जान्यों । सूर उधो सों मिलत भयो सुख ज्यों चख पायो पान्यों ॥ १३ ॥ राग सोरठ ॥ कहो कहांतें आये हौ । जानति हौं अनुमान मनो तुम जादव नाथ पठाये हौ । वैसेइ बरन बसन पुनि वैसेइ तन भूषण सजि ल्याये हौ । सरबसु लै तब संग सिधारे अब काहे पहिराये हौ । सुनहु मधुप एको मनु सबको सोतो उहां लै छाये हौ । मधु बनकी मानिनी मनोहर तहंहि जाहु जहं भाये हौ । अब यह कौन सयानप ब्रज पर का कारन उठि धाये हौ । सूर जहां लों श्याम गात हैं जानि भले करि पाये हौ ॥ १४ ॥ राग नट ॥ ऊधो को उपदेश सुनों किनु कान दे । सुन्दर श्याम सुजान पठायो मान दे ॥ ध्रुव ॥ कोउ आयो उत ओर जिते नंद सुवन सिधारे । बहे बेनु धुनि होइ मनो आये नन्द प्यारे । धाई सब गण गाजि के ऊधो देखे जाय । लै आई ब्रज राज मैं हो आनंद उरन समाय । अरघ आरती तिलक दूब दधि माथे दीन्ही । कंचन कलस भराय आनि परिकरमा कीन्ही । गोप भीर आंगन भई मिलि बैठे जादव जात । जल झारी आगे धरी हो बूझति हरि कुशलात । कुशल छेम बसुदेव कुशल देवै कुमिजाऊ । कुशल छेम अक्रूर कुशल नीके बसुदाऊ । पूछि कुशल गोपाल की रही सकल गहि पाय । प्रेम मगन ऊधो भये हो देखत ब्रज को भाय । मन मन ऊधो कहै इहन बूझिये गोपालहि । ब्रज को हेतु बिसारि जोग सिखवत ब्रज बालहि । पातीं बांचिन आवई रहे नैन जल पूरि । देखि प्रेम गोपिन को ऊधो ज्ञान गरब गयो दूरि । तब इत उत बहराइ नीर नैननि में सोख्यो । ठानी कथा प्रमोध बोलि सब गुरू समोख्यो । जो व्रत मुनिवर ध्यावहीं नर पावहिं नहिं पार ॥ सो व्रत सीखो गोपिका हो छांडि विषै विस्तार । सुनि ऊधो के बचन रहीं नीचे करि तारे । मनों सुधा सों सींचि आनि विष ज्वाला जारे । हम अबला कह जानहीं जोग जुगति की रीति । नंद नंदन

व्रत छांडिके होकोलिखि पूजै भीति ॥ अविगत अगह अपार आदि अविगति है सोई ॥ आदि निरंजन नाम नाहिं रंजे सब कोई ॥ नैन नासिका अग्र है तहां ब्रह्म को बास । अविनाशी विनसे नहीं हो सहज जोति परकास । घर त्यागें औंधूरकहे मन कहीं बंधावै । अपनों घर पहिचरै कहो को घरहि बतावै । मूरख जादव जात हैं हमहीं सिखवत जोग ॥ हमको भूली कहत हैं हो हम भूली किधों लोग । गोपिहु जो भयो अंध ताहि दुहं लोचन ऐसं ॥ ज्ञान नैन जो अंध नाहि सूझै धों कैसें । बूझै निगम वोलाइ के कहै वेद समुझाय । आदि अन्त जाके नहीं हो कौन पिताको माय । चरण नहीं भुज नहीं कहौं ऊखल किनि बांधो । नैन नासिका मुख नहीं चोरि दधि कौने खाधो । कौन खिलायो गोद में किन कहे तुतरे बैन । ऊधो ताको न्याव है हो जाहिन सूझे नैन । हम बूझति सत भाउ न्याउ तुम्हरे मुख सांचो । प्रेम नेम रस कथा कहे कांचन की कांचो । जो कोउ पावै शीस दे ताको कीजे नेमु । मधुप हमारी सों कहा हो जोग भले किधों प्रेमु । प्रेमु प्रेम सों हे इ प्रेम सों पारहि जैये । प्रेम बंध्यो संसार प्रेम पर मारथ पैये । एके निहचो प्रेम को जीवन मुक्ति रसाल । सांचो निहचो प्रेम को हो जो मिलि है नंद लाल । सुनि गोपिन को प्रेम नेम ऊधो को भूल्यो । गावत गुण गोपाल फिरत कुंजनि में फूल्यो । छिन गोपिन के पग धरे धन्य तिहारो नेम । धाय धायद्रुम भेटहीं हो ऊधो छाके प्रेम । धनि गोपी धनि गोप धन्य सुरभी बनचारी । धन्य धन्य सो भूमि जहां बिहरे बनवारी । उपदेशन आयो हुतो मोहि भयो उपदेस । ऊधो जदुपति पै गये हो किये गोप को भेस । भूल्यो जदुपति नाम कहत गोपाल गसांई । एक बार व्रज आइ देहु गोपन दिखराई । गोकुल को सुख छांडि के कहां बसे हो आय । कृपावन्त हरि जानि के हो ऊधो पकरे पाय । देखत व्रज को प्रेमु नेमु कछु नाहिन भावै । उमड्यो नैननि नीरवान कछु कहत न आवै । सूर श्याम भूतल गिरे हे नैन जल छाय । पोंछि पीतपट सों कह्यो हो आये जोग सिखाय ॥ १५ ॥ राग धनाश्री ॥ हम सों कहत कौन की बातें । सुनि ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि पूछति हौं तातें । को नृप भयो कंस किनि मारयो को बसुदेव सुत आहि । इहां हमारे परम मनोहर जी जतु हैं मुख चाहि । दिन प्रति जात सहज गोचारन गोप सखा लै संग । बासर गत रजनी मुख आवत करत नैन गति पंग । को व्यापक पूरन अविनाशी को विधि वेद अपार ॥ सूर वृथा बकवाद करत हो या व्रज नन्द कुमार ॥ १६ ॥ राग सारंग ॥ तूं अलि कासों कहत बनाय । बिन समुझे हम फिरि बूझत हैं एक बार कहो गाय । कितवे गवन कोन्हों प्रकटनि चढ़ि सुफलक सुत के संग ॥ किन बेरजक खुटाइ नाना पट पहिरे अपने अंगा । किनकंति चापुनिदरि गज मारयो किनि बेसह्य मल्ल मथि जाने । उग्रसेन वसुदेव देवकी किनिबे निगड छुटि भाने । तूं काकी परतीति प्रसंसा कीने षोष पठायो । किन म तुम्ह बधि कयो जगत बस कौन मधुपुरी छायो । माथे मोर मुकुट वन गुंजा मुख मुरली धुनि बाजे । सूरज दास जशोदा नन्दन गोकुल कहन विराजे ॥ १७ ॥ राग सारंग ॥ हम तो नन्द घोष की वासी ।

नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी । गिरिबर धारो गोधन चारी वृन्दा बन अभि खासी ॥ राजा नन्द जशोदा रानी जलधि नदी जमुनासी । प्रान हमारे परम मनोहर कमल नैन मुख रासी । सूर दास प्रभु कहां कहांलों अष्ट महा सिधि दासी ॥ १८ ॥ राग केदारो ॥ गोकुल सबै गोपाल उपासी ॥ जोग अंग साधन का ऊधो तेसब बसत ईस पुर कासी ॥ जद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरणनि रस रासो । अपनी सीतल तजन छांडत जद्यपि है सतिराहु गरासी । को अपराध जोगु लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी ॥ सूर दास ऐसी को बिरहनि मागत मुक्त तजे गुण रासी ॥ १९ ॥ राग धनाश्री ॥ जीवन मुह चाहीको नीको । दरश परस दिन राति करत हैं कान्ह पियारे पीको ॥ नयननि मूंदि मूंदि किन देखो बंध्यो ज्ञान पोथीको । आछे सुन्दर श्याम मनोहर और जगत सब फीको ॥ सुनो जोग को कहलै कीजै जहां हानि है जीको । खाटी मही कहीं रुचि माने सूर खवैया घीको ॥ २० ॥ राग काफी ॥ आयो घोष बड़ो व्योपारी । लादि खेप गुण ज्ञान जोग की ब्रजमें आनि उतारी ॥ फाटकु दै करि हाटकु मांगतु भोरे निपट सुधा री । धुरहीतें खोटो खायो है लये फिरत सिर भारी ॥ इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अयानी । अपनो दूध छांड़ि को पीवे खार कूप को पानी ॥ ऊधो जाहु सवार यहांते बेगि गहरु जिनि लावो । मुह मांग्यो पैहो सूरज प्रभु साहु-हि आनि दिखावो ॥ २१ ॥ राग काफी ॥ जोग ठगोरी ब्रज न बिकैहै । यह बैपार तिहारो ऊधो ऐसेही फिरि जैहै ॥ जापें लै आये हो मधुकर ताके उर न समैहै । दाख छोहारि के कटुक निबोरी को अपने मुख खैहै ॥ मूरीके पातन के कोरना को मुकता हल दैहै । सूरदास प्रभु गुणहि छोड़िके को निरगुण निरबैहै ॥ २२ ॥ राग नट ॥ आये जोग सिखावन पांडे । परमारथी पुरानन खादे ज्यों बन जारे टांडे ॥ हमरे गति पति कमल नयन की जोग सिखे ते रांडे । कहो मधुप कैसे समाहिंगे एक म्यान दो खांडे ॥ कहो षट पद कैसे खैयतु है हाथिन के संग गांडे । काकी भूंख गई बयारि भखि बिना दूध घृत मांडे ॥ काहे को झाला लै मिलवत कौन चोर तुम डांडे । सूरदास तीनो नहि निपजत धनिय धानकह कांडे ॥ २३ ॥ रागबिलावल ॥ ए अलि कहा जोग में नीको । तजि रस रीति नंद नंदन की सिखवत निरगुण फीको ॥ देखत सुनत नाहि कछु श्रवननि जोति जोति करि ध्यावत । सुन्दर श्याम दयाल कृपा-निधि कैसें हो बिसरावत ॥ सुनि रसाल मुरली सुरकी धुनि सोइ कौतुक रस भूलैं । अपनी भुजा ग्रीव पर मेलें गोपिन के मुख फूलैं ॥ लोक कानि कुलको भ्रम प्रभु मिलि मिलि के घर बन खेलो । अब तुम सूर खवावन आये जोग जहर की बेली ॥ २४ ॥ राग मलार ॥ हमरे कौन जोग व्रत साधे । मृग त्वच भस्म अधारि जटा कों कोउ तनों अब राधे ॥ जाकी कछू थाह नहिं पैये अगम अपार अगाधे । गिरिधर लाल छबीले मुख पर एते बांध को बांधे ॥ आसन पवन बिभूति मृग छाल ध्याननि को अवराधे । सूरदास मानिक परि हरिके राख गांठि को बांधे ॥ २५ ॥ राग धनाश्री ॥ हमतो दुहूं भांति

फल पायो । जो ब्रजनाथ मिलें तोनोको नातरु जग जसु गायो ॥ कहां बे ए गोकुल की गोपी बरन हीन लघु जाती ॥ कहां वे कमला के स्वामी संग मिलि बैठे एक पांती । निगम ध्यान मनि ज्ञान अगोचर तेभये घोष निवासी । ताऊपर अब सांचु कहोधों मुक्ति कौन की दासी ॥ जोग कथा पालागों ऊधो नाकहुबार बार । सूर श्याम तजि और भजे जो ताकी जननी छार ॥ २६ ॥ राग कान्हरो ॥ पूरन तारन नयननि पूरी ॥ तुम जोकहत श्रवननि पुनि समुझत ये याही दुख मरति बिसूरी ॥ हरि अन्तर जामी सब जानत बुद्धि बिचारत बचन समूरी । बैं रस रूप रतन सागर निधि क्यों मणि पायखनावत धूरी ॥ रहुरे कुटिल चपल मधु लंपट कितव संदेस कहत कटु कूरी । कहं मुनि ध्यान कहां ब्रज जुवती कैसें जात कुलिस करि चूरी ॥ देख प्रकट सरिता सागर सर शीतल सुभग स्वाद रुचि रूरी ॥ सूर स्वाति को बूंद बसे जिय चातिकचित लागत सब झूली ॥ २७ ॥ राग धनाश्री ॥ हमतें हरि कबहूं न उदास । राति खवाय पिवाय अधर रस सो क्यों बिसरत ब्रजको बास ॥ तुमसों प्रेम कथा को कहिवो मनहु काटिवो घास । बहिरो तान स्वाद कह जाने गूंगो बात मिठास ॥ सुनुरी सखी बहुरि फिरि ऐहैं वह सुख बिबिध बिलास । सूरदास ऊधो अब हमको भयो तेरहों मास ॥ २८ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ तेरो बुरो न कोई मानैं । रसकी बात मधुप नीरस सुनि रसिक होय सो जाने ॥ दादुर बसे निकट कमलनि के जनम न रस पहि चाने । अलि अनुराग उडन मन बांधो कहे सुनत नहि काने ॥ सरिता चली मिलन सागर को कूख मूल द्रुम भाने । कायरबके लोहतेंभाजे सूरैं जो सूर बखाने ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ घरही के बाढ़े रावरे । नाहिन मीत बियोग बस परे अनबेंउंगे अलि बावरे ॥ भूख मरि जाय चरै नहिं तिनका सिंहको यहै सुभावरे । श्रवण सुधा सुरली के पोखे जोग जहर न खवावरे ॥ ऊधो हमहि सीख कह देहो इनि अनत न ठांवरे । सूरज दास कहा लै कीजै याही नदिआ नावरे ॥ ३० ॥ राग मलार ॥ श्याम मुख देखेही परतीति । जो तुम कोटि जतन करि सिखवत जोग ध्यान की रीति ॥ नाहिन कछू सयान ज्ञान में यह हम कैसें मानहिं । कहो कहा कहिये या नभ को कैसें उरमे आनहि । यह मन एक एक वह मूरति भृंगकीट सम माने । सूर सपतदै बूझत ऊधो यह ब्रज लोग सयाने ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि काई को प्रेम कहो अलि कैसें करि के छूटत । कहा कहों ब्रजनाथ चरित अब अन्तर गति यों लूटत ॥ चंचल चाल मनोहर चितवनि वे मुसुकानि मन्द धुनि गावत । नटवर भेष नंद नंदनको वह बिनोद गृह बनते आवत ॥ चरण कमल की सपत करतिहों यह संदेस मोहि बिष सम लागत । सूरदास मोहि निमिष न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत ॥ ३२ ॥ राग सोरठ ॥ अटपटि बात तिहारी ऊधो सुनेसो ऐसो को है । हम अहीरि अबला सठ मधुकर तिन्हें जोग कैसें सोहे ॥ बूचिहि खुभी आंधरी काजर नकटी पहिरे बेसरि । मुंडली पाटी पारन चाहे कोढ़ी अंगहि केसरि ॥ बहिरी सोंपति मता करै सो उत्तर कौन पें पावै । ऐसो न्याव है ताको ऊधो जो हमैं जोग सिखावै ॥ जो तुम हमकोल्याए छपाकरि शिर चढ़ाय हम लीन्हे ।

सूरदास नरिअरु ज्यों बिपरकों करहिबन्दनाकीन्हे ॥३३॥ रागबिहागरो ॥बरुवे कुब्जाभलो कियो । सुनि सुनि समाचार ऊधो मो कछुक सिरात हियो ॥ जाको गुण गति नाम रूप हरि हरयो सो फिरि न दियो । तिन अपनो मनहरत न जान्यों हंसि हंसि जोग जियो ॥ सूर तनकु चंदनु चढ़ाय तन ब्रजपति वश्य कियो । और सकल नागरि नारिन को दासो दाव लियो ॥ ३४ ॥ राग सारंग ॥ हरि काहे के अंतरजामी । जो हरि मिलत नहीं हैं औसर अवधि बतावत लामी ॥ अपनी चोप जाय उठि बैठे और निरस वे कामी । सो कह पीर पराई जानै जो हरि गरुड़ गामी ॥ आई ऊधरि प्रीति कलई सी जैसे खाटी आमी । सूर पर एते अनख मरत हैं ऊधो पीवत मामी ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ बिलगु जिनि मानहु ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजर की कोठरजे आवहिं ते कारे ॥ कारे भंवर सुफलक सुत कारे कारे रतन पवारे । कारेन संग अधिक छबि उपजत तिन्हें हमैं मनि आरे ॥ मानहु नील माट तें काढ़े ले जमुना ज्यों पखारे । वहां ज्ञान की कौन चलावै सूर श्याम गुन न्यारे ॥ ३६ ॥ राग देवगन्धार ॥ हरि बिनु कैसेंया ब्रज जीजे । पंकज बरषि बरषि उर ऊपर सारंग रिपु जलभीजै ॥ तारा पतिके रिपु सिर ठाढ़ो निमिषनि चैन नदीजै । चन्दा चोय जात गोपिन कों मधुप आय जश लीजै ॥ वायस अज देउ शब्द की मिलनी ता कारण मन छीजै । सूरदास प्रभु हेा जग जीवन बेगहि दरशन दीजै ॥३७॥ राग सारंग ॥ अपने स्वारथ को सब कोऊ । चुप करि रहेा मधुप रस लम्पट तुम देखे अरु बोऊ ॥ औरों कछू संदेस कहन कों कहि पठवेा किन सोऊ । खोन्हे फिरत जोग जुवतिन कों बड़े सयाने दोऊ ॥ तब कत मोहन रास खिलाई जोपै ज्ञान हुतोऊ । अबहम रे जिय बैठो यह पद होनी होउ सो होऊ ॥ मिटि गयेा मान परेखो ऊधो हिरदे हुतो सेा होऊ । सूरदास प्रभु गेाकुल नायक चित चिन्ता अब खोऊ ॥ ३८ ॥ राग सारंग ॥ तुमतौ कहत संदेसो आनि । कहा करों वा नद नन्दन सों होत नहीं हितु हानि ॥ जोग जुगति किहि काज हमारे जदपि महा सुख खानि । सुने सनेह श्याम सुन्दर के हिलि मिलि कें मन मानि ॥ सोहत खोह परस पारस जो सोवन बारे बानि । पुनि वह चोंप कहा चुंबक ज्यों लटपटाय लपटानि ॥ रूप रहित नीरासा निरगुण निगम हुं परत न जानि । सूरज दास कौन बिधि तासों अब कीजै पहिचानि ॥ ३९ ॥ राग धनाश्री ॥ हमतौ कान्ह केलि की भूखी । कैसें निरगुन सुनहि तिहारेा बिरहनि बिरह बिदूखी ॥ कहिये कहा यहेा नहिं जानत काहि जेागु है जेाग । पालागों तुमहीं सों वा पुर बसत बावरो लेाग ॥ अंजन अभरन चीर चारु बरु नेक आप तन कीजै । दंड कमण्डल भस्म अधारी जो जुवतिन कों दीजै ॥ सूर देखि दृढता गेापिन की ऊधो यह व्रतु पायेा । कहे कृपा निधि हेा कृपाल हेा प्रेमे पढ़न पठायेा ॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ अखियां हरि दरशन की भूखी । कैसें रहैं रूप रस राची ये बतियां सुनि रूखी ॥ अवधि गनत इक टक मगु जेावत तव एतो नहि झूखी । अब इन जोग संदेसनि ऊधो अति अकुलानी दूखी ॥ बारक वह मुख फेरि दिखावहु दुहिपैं पिवत पतूखी । सूर सकति मति नाउ चलावैं ज्यों सरिता भर सूखी ॥ ४१ ॥ राग केदारो ॥ नेह न हेात पुरानेा

हे अलि । जल प्रवाह ज्यों शोभा सागर तट नव तन व्रज नाथ अहे बलि ॥ जीवत है आनन्द रूप रस रवि प्रतीति कों मीन चढ़े थलि ॥ अमी अगाध सिंधु सर भरि तहं पीवतहूं न अघात एते जलि । दिन दिन बढत नीर नलिनी ज्यों श्याम रंग में नयन रहे रलि । सूर गोपाल प्रीति त्रिय जागी छूटत नाहिन नेक सलीसलि ॥ ४२ ॥ राग-सारंग ॥ जाय कहो वूझी कुशलात । जाके ज्ञान न होय सो माने कही तिहारी बात ॥ कारो नाम रूप पुनि कारो कारे अंग सखा सब गात । जापै भले होत कछु कारे तो कत बदलि सुता ले जात ॥ हम कों जोग भोग कुब्जा को काके हिये समात । सूर दास से ऐसो पतिके पाले जिन्हु तेही पछितात ॥ ४३ ॥ राग सारंग ॥ कहालों कीजे बहुत बड़ाई । अतिहिं अगाध अपार अगोचर मनसा तहां न जाई ॥ जल बिनु तरंग भीति बिनु चित्रनि बिनु चितही चतुराई । अब व्रजमें नई रीति कछु यह ऊधो आँनि चलाई ॥ रूप न रेख बरन वपु जाके संग न सखा सहाई । ता निरगुण सों प्रीति निरंतर क्यों निबहेरी माई ॥ मन चुभि रह्यौ माधुरी मूरति रे अमाम अरुझाई । हो बलि गई सूर प्रभु ताके जाकेश्याम सदा सुखदाई ॥ ४४ ॥ राग मलार ॥ काहेको गोपी नाथ कहावत । जोपै मधुकर कहत हमारे गोकुल काहे न आवत ॥ सपने की पहिचानि जानि के हमहिं कलंकु लगावत । जोपै श्याम कूबरी रीझे सो किन नाम धरावत ॥ ज्यों गजराज काज के औसर औरे दसन दिखावत । कह वे सुन वे कोरे हम हैं ऊधो सूर अंत बिरमावत ॥ ४५ ॥ राग मलार ॥ अब कत सुरति होत हे राजनि । दिन दस प्रीति करी स्वारथ हित रहत आपने काजनि ॥ सबै अयानि भईं सुनि मुरली ठगी कपट की भाजनि । अब मन भयो सिंधु के खग ज्यों फिरि फिरि सरन जहाजनि ॥ वह नातो तूटो तादिनतें सुफलक सुत संग भाजनि । गोपीनाथ कहाय सूर प्रभु कत मारत हो लाजनि ॥ ४६ ॥ राग सोरठ ॥ लिखि आई ब्रजनाथ की छाप । बांचे फिरत शीस पर ऊधो देखत आवे ताप । नूतन रीति नंद नंदन की घर घर दीजतु थाप ॥ हरि आगे कुब्जा अधिकारी तातें है यह दाप । आये कहन जोगु अवराधो अबिगत कथा की जाप । सूर संदेसे सुनियन लागे कहौ कौन के पाप ॥ ४७ ॥ राग सारंग ॥ फिरि फिरि कहा सिखावत बात । प्रातकाल उठि देखत ऊधो घर घर मांखन खात ॥ जाकी बात कहत हो हमसों सो है हमसों दूरि । यहां है निकट जशोदा नंदन प्राण सजीवनि मूरि ॥ बालक संग लये दधि चोरत खात खवावत डोलत । सूर शीस सुनि चोकत नावत अबकाहेन सुख बोलत ॥ ४८ ॥ राग धनाश्री ॥ अपने सगुण गे पाहें माई यहि विधि काहे देत । ऊधो की ए निरगुण बातें मीठी कैसे लेत ॥ धर्म अधर्म कामना सुनावत सुख औ मुक्ति समेत । काकी भूख गई मद खाडू सोदेखहु चित चेत ॥ जाके मुख विचित्तर वरजत निगम कहत है नेत । सूर श्याम तजि को भुस फाटके मधुप तिहारे हेत ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥ हमको हरिकी कथा सुनाउ । अपने ज्ञान कथा हो ऊधो मथुराही ले गाउ ॥ नागरि नारि भले बूझहिंगी अपने बचन सुभाउ । पालागों इन बातनिरे अलि उनहीं जाय रिझाउ ॥ सुनि प्रिय सखा श्याम

सुंदरके जोपैं जिय सति भाउ । हरि मुख अति आरत इन नयनि बारक बहुरि दिखाउ ॥ जे कोई कोटि जतन करैं मधुकर बिरहन और सोहाउ । सूरजदास मीनको जल बिनु नाहिन और उपाउ ॥ ५० ॥ राग कान्हरो ॥ अलीहो कैसें कहौं हरिके रूपरसहि ॥ मेरे तनमें भेद बहुत बिधि रसना न जाने नयनकी दिसहि ॥ जिनदेखेत आहि बचन बिनु जिन्हे बचन दरशन नतिसहि । बिन बानी भरि उमगि प्रेम जल सुमरि बास गुण जसहि ॥ बारबार पछितात यहै मन कहाकरें जाविधिन बसहि । सूरदास अंगन को यहगति को समुझावे पाछ पद पसुहि ॥ ५१ ॥ राग सारंग ॥ हमरे हरि हारिलकी लकरी । मनबच कर्म नंद नंदनसों उर यह दृढ़ करि पकरी ॥ जागत सोवत सपनेसों मुख कान्ह कान्ह यह जकरी । सुनतहिं जोग लगत ऐसो अलि ज्यों करुई ककरी ॥ सोई ब्याधि हमहिं ले आए देखो सुनी नकरी । यहतो सूर तिन्हे ले दीजै जाके जन चकरी ॥ ५२ ॥ राग सारंग ॥ फिरि फिरि कहा सिखावत मौन । दुसह बचन अलियों लागत उर ज्यों जारे पर लौन ॥ सिंगी भसम तुचा मृग मुद्रा अरु अवराधन पौन । हम अबला अहीर सठ मधुकर घर बन जानै कौन ॥ ए मत लेति नहीं उप देसो जिन्हे आजु सब सोहत । सूर आजुलों सुनी न देखी पोत सूतरी पोहत ॥ ५३ ॥ राग जैतश्री ॥ प्रेम रहित यह जोगु कौन काज गायो । दीननिसों निठुर बचन कहे कहा पायो ॥ जिन नयननि हम कमल नयन सुंदर मुख हेरो । मूंदनते नयन कहत कौन ज्ञानु तेरो ॥ तामें कछु मधुकर हम लकहु लेन जाहीं ॥ जाम प्रिय प्राणनाथ नंद नन्दन नाहीं ॥ जिनके तुम सखा साधु बातें कहु तिनकी । जोवें सुनि श्याम कथा दासी हम जिनकी ॥ अबिनासी निरगुण गुणआनि आनि भाखों । सूरदास जियके जिउ कहांकान्ह राखों ॥ ५४ ॥ रागकेदारो ॥ जिनि चालो अलि वात पराई । नाकोऊ कहे सुने वा ब्रजमें नहु कीरति सबजात हिराई ॥ बूझैं सनाचार मुख ऊधो कुलकी आरति बिसराई । भले संग बसि भई भली मति भले मेल पहिचान कराई ॥ सुन्दर कथा कटुअसी लागति उपजतु उर उपदेस पेख राई । उलटो न्याव सूरके प्रभुको यहै आत मांगत उतराई ॥ ५५ ॥ राग मलार ॥ याको सीख सुने ब्रज कोरे । जाकी रहनि कहनि अनखिल अलि कहत समुझि अतिथोरे ॥ आपुन पद मकरंद सुधारस हृदो रहत नित बोरे । हमसों कहत बिरह समु जेहैं गगन कूप खनि खोरे ॥ धानको गाउं पयारेतें जानो ज्ञान बिषैरस नोरें । सूरसों बहुत कहे नरहे रसु गूलरि को फल फोरे ॥ ५६ ॥ राग मलार ॥ लिखत अंक श्याम सुन्दर के बार बार खावत छाती । लोचन जल कागर मसि मिलिके होइ गई श्याम श्याम की पाती ॥ गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुं बयारि लगी नहिं ताती । तबकी कथा कहा कहौं ऊधो अब इन बैन बाद सुनि जाती ॥ हरिके जाइ गनति नहि काहू निसि दिन सुदिन रास रस माती । प्राणनाथ तुम कबधों मिलहुगे सूरदास प्रभु बाल संघाती ॥ ॥ ५७ ॥ राग मारू ॥ सोहिं अलि दुख भांति फल होति । तब रस अधर लेति मुरली अब भई कूबरी सोति ॥ तुमजो जोग सति सिखवन आये भसम चढ़ावत अंग । इन बिरहिनमें कहु को देखी सुमन गुहाये मंग ॥ काननि मुद्रा पहिरि मेखली धरे जटावो धारी

यहां तरल तरिवन काके देखे अरु तन सुखकी सारी ॥ परम वियोगिनि रटति रैनि दिन धरि मन मोहन ध्यान । तुमतो चलो बेगि मधुबन को जहां जोगके ज्ञान ॥ निसि दिन जोजतु हैं या ब्रजमें देखि मनोहर रूप । सूर जोग लै घर घर डोलो लेहु लेहु धरि सूप ॥ ५८ ॥ राग सारंग ॥ बिलगु जनि मानहु हमरीबात । डरपति बचन कठोर कहत मति बिन प्रतियां उठि जात ॥ जो कोउ कहत जरे अपने कछु फिरि पाछे पछितात । जो प्रसाद पावन तुम ऊधो कृष्णनाम से खात ॥ मनको तिहारो हरि चरणनि तर अचल रहत दिन रात । सूर श्याम तें जोगु अधिक कहि कहि आवत यह बात ॥ ॥ ५९ ॥ राग सारंग ॥ अपनीसी कठिन करत मन निसि दिन । कहि कहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नंद नंदन बिन ॥ बरजन अबस संदेस नयन जल सुख बतियां कछु और चलावत । बहुत भांति चित धरत निठुरता सब तजि और बहै जिय आवत ॥ कोटि स्वर्ग सम सुख अनु मानत हरि समीप समता नहि पावत । थकित सिंधु नौ का के खगज्यों फिरि फिरि फेरि वहे गुण गावत ॥ जे वासननि विदारत अंतर तेइ तेइ अधिक अनूअर दाहत । सूरदास परि हरि न सकत तनु बारक बहुरि मिल्यौ है चाहत ॥ ६० ॥ राग धनाश्री ॥ रहुरे मधुकर मधु मतवारे । कहा करौं निरगुण लेके हौं जीवहु कान्ह हमारे ॥ लोटतु नीचु पराग पंकमें पचत न आपु संभारे । बार बार सरस मदिरा की अप रस कहा उघारे ॥ तुम जानत हमहूं वैसीहैं जैसें कुसुम तिहारे । घरी पहर सबको बिलमावत जेते आवत कारे ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन जसुमति नंद दुलारे । सूर श्यामको सरबस अर्थो अब काके हम लेहि उघारे ॥ ६१ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको रोकत मारग सूधो । सुनहु मधुप निर्गुण कंटक तें राज पंथ क्यों रूंधो ॥ कै तुम सिखे पठाये कुब्जा के कही श्याम घन जूधो । बेद पुराण सुस्मृत सब ढूंढो स्ववतिन जोग कहूं धों ॥ ताकों कहा परेखो कीजे जानत छाछ न दूधो । सूर मूर अक्रूर गयेले ब्याज निबेरत ऊधो ॥ ६२ राग मलार ॥ बातन सब कोऊ समुझावे । जेहि बिधि मिलनि मिलें वे माधो सो विधि कोउन बतावे ॥ जद्यपि जतन अनेक रची पचि सारि असन बिर मावे । तद्यपि हठी हमारे नयना और न देख्यौ भावे ॥ बासर निसा प्राण बल्लभ तजि रसना और न गावे । सूरदास प्रभु प्रेमहि लगि करि कहिये जो कहि आवे । ॥ ६३ ॥ राग सारंग ॥ निर्गुण कौन देश को बासी । मधुकर हंसि समुझाय सोंहदे बूझत सांचु न हांसी ॥ को है जनक जननि को कहियत कौन नारि को दासी । कैसो बरन भेष है कैसो किहि रसमें अभिलासी ॥ पावेगो पुनि कियो आपनों जोरे कहेगो गासो । सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्योसो सूर सबै मति नासो ॥ ६४ ॥ राग केदारो ॥ नाहिन रह्यौ मनमें ठौर । नन्द नन्दन अछत कैसें आनिये उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत सपन सोवत रात । हृदयतें वह श्याम मूरति छिन न इत उत जात ॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोक लाभ दिखाय । कहा करौं तन प्रेम पूरन घटनि सिंधु समाय ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित अति मृदुहास । सूर ऐसे रूप कारन मरत लोचन प्यास ॥ ६५ ॥ राग मलार ॥ ब्रज जन सकल श्याम व्रत धारी । बिन गोपाल

और नहि जानत आन कहे व्यभिचारी ॥ जोग मोट शिर बोझ आनिके कत तुम घोष उतारी । इतनी दूर जाहु बलि काशी जहां बिकात पियारी ॥ यह संदेस नहिं सुने तिहारो मण्डली अनन्य हमारी । जो रस रीति करी हरि हमसों सो कत जात बिसारी ॥ महा मुक्ति कोई नाहीं बूझे जदपि पदारथ चारी । सरदास स्वामी मन मोहन मूरति की बलि हारी ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ कहति कहा ऊधोसों बैरी । जाको सुनत रहे हरिके ढिग श्याम सखा यह सोरी ॥ कहा कहनरी मैं पत्यातरी नहीं सुनी नहीं हि कह नावत । हमको जोग सिखावन आये यह तेरे मन आवत ॥ करनी भली भलेई जानें कपट कुटिलको खानि । हरिको सखा नहोंरी माई यह मन निश्चय जानि ॥ कहां रास रस कहां जोग घर इतने अंतर भाखत । सूर सबै तुम कत भइ बैरी याकी पति कह राखत ॥ ६७ ॥ राग रामकली ॥ ऐसेई जन दूत कहावत । मोकों एक अचम्भो आवत यामें एक छपावत ॥ बचन कठोर कहत कहि दाहत अपनी महति गंवावत । ऐसी परकृति परति छांह को जुवतिन ज्ञान बुझावत ॥ आपु न निलज रहत नखसिखलों एते पर पुनि गावत । सूर करत परसंसा अपनी हारेहुं जीति कहावत ॥ ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रकृति जोइ जाके अंग परी । श्वान पूंछ कोटिक जो लागें सूधि न काहु करी ॥ जैसें काग भक्ष नहिं छांड़े जनम तज्यों न धरी । धोये रंग जात कहुं कैसें ज्यों कारी कमरी ॥ ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी । सूर होउ सो होउ भोच नहिं तैसे है ए उरी ॥ ६९ ॥ राग रामकली ॥ तौ हम माने बात तुम्हारी । अपनो ब्रह्म दिखावहु ऊधो मुकुट पितांबर धारी ॥ भजिहैं तब ताको सब गोपी सहि रहिहैं बरु गारी । भूत समान बतावत हमको जारहु श्याम बिसारी ॥ जे मुख सदा सुधा अचवत हैं ते विष क्यों अधिकारी । सूरदास प्रभु एक अंग पर रीझि रहीं ब्रजनारी ॥ ७० ॥ राग बिलावल ॥ यह सुनतहीं नयन पराने । जबहीं सुनत बात तुअ मुखकी रोवत रमत डराने ॥ बार बार श्याम घन घनतें भाजत फिरत लुकाने । हमको नहि पतियात तबहिंते जब ब्रज आपु समाने ॥ नातरु यहो काछ हम काछति वे यह जानि छिपाने । सूर दोष हमरे शिर धरिहो तुमहो बड़े सयाने ॥ ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री ॥ नयननि वहै रूप जो देख्यो । तौ ऊधो यह जीवन जगको सांचु सुफल करि लेख्यो ॥ लोचन चारु चपल खंजन मन रंजन हृदय हमारें । रुचिर कमल दृग मीन मनोहर खेलत अरुण अरुकारे ॥ रतन जटित कुण्डल श्रवणनि वर गण्ड कपोलनि झांई । मनु दिन कर प्रति बिम्ब मुकुर महं ढूंढत यह छवि पाई ॥ मुरली अधर बिकट भौंहैं करि ठाढ़े होत त्रिभंग । मुकुत माल उरनील सिखरतें धंसि धरनी ज्यों गङ्ग ॥ और भेष को कहे बरनि सब अंग अंग केसरि खोर । देखत बने कहत रसना सों सूर बिलोकत ओर ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ नयननि नंद नंदन ध्यान । तहां लै उपदेश दीजे जहां निरगुण ज्ञान । पाणि पल्लव रेख गनि गुन अविधि विधि बंधान ॥ एतेपर कहि कटुक बचननि हनत जैसे प्रान । चन्द्र कोटि प्रकाश मुख अवतंस कोटिकभांन ॥ ॥ कोटि मन मथ वारि छवि पर निरखि दीजत दान । भृकुटि कोटि कुदंड रुचि अवलो-

कनी संधान ॥ कोटि वारिज बंक नयन कटाक्ष कोटिक भान । कंबु ग्रीवा रत्नहार उदार उरमनि जान ॥ आजानुबाहु उदारअति कर पद्म सुधा निधान॥श्याम तन पट पीत की छवि करे कौनबखान । मनहु नितत नीलघनमें तड़ित देती मान ॥ रास रसिक गोपाल मिलि मधु अधर करती पान । सूर ऐसे रूप बिन कोइ कहा रक्षक आन ॥ ७३ ॥ राग जैतश्री ॥ देन आए ऊधो मत नीको । आवहुरी सब सुनहु सयानो लेहु न जशको टीको ॥ तजन कहत अंबर आभूषन गेह नेह सबहीको । शीस जटा सब अंग भस्म अति सिखवत निरगुण फीको ॥ मेरे जान यहै जुवतिन को देत फिरत दुख पीको । तेहि सरपंजर भये श्याम तन अवन गहत डरु जीको ॥ जाको प्रकृति परी प्राणनि सों शोच न पोच भलीको । जैसें सूर व्याल डसि भाजत का मुख परत अमीको ॥ ७४ ॥ ॥ राग सारंग ॥ प्रीति करि दीन्ही गरे छुरी । जैसें बधिक चुंगाय कपट कन पाछें करत बुरी ॥ मुरली मधुर चोंप करि कांपो मोर चन्द्र छटवारी । बंक बिलोकनि चूक लागि बस सकीन तनहि सम्हारी ॥ तलफत छांडि चले मधुबन को फिरिके लई न सार । सूरदास बा कलप तरोवर फेरि न बैठी डार ॥ ७५ ॥ राग धनाश्री ॥ कोउ ब्रज बाँचत नाहिन पाती ॥ कत लिखि लिखि पठवत नद नंदन कठिन बिरह की काती ॥ नयन सजल कागल अति कोमल कर अंगुरी अति तातो । परसत जरे बिलोकत भीजे दुहूं भांति दुख छाती ॥ क्यों समुझें ए अंक सूर सुनु कठिन मदन सरघाती । देखे जियहिं श्याम सुन्दर के रहहिं चरण दिन राती ॥ ७६ ॥ राग जैतश्री ॥ मुकुत आनि मंदिर में मेली । समुझि सगुण लेचले न ऊधो ए सब तुम्हरे पूंजि अकेली ॥ कैलै जाहु अनतही वेचन कैलै जाहु जहां विष बेली । याहि लागि कोमरै हमारे वृन्दाबन पायन तर पेली ॥ शीस धरें घर घर कत डोलत एकमते सब भईं सहेली । सूर यहां गिरिधर न छबीलो जिनकी भुजा अंस गहि मेली ॥ ७७ ॥ राग कान्हरो ॥ हम अति गोकुलनाथ अराध्यो । मन बच क्रम हरिसों धरि पति ब्रत प्रेम जोग तप साध्यो ॥ मात पिता हित प्रीति निगम पथ तजि दुख सुख भ्रमु नाख्यो । मान अपमान परं परि तोषि सुअस्थिल थिति मनु राख्यो ॥ सकुचासन कुलसील परसि करि जगत बंद करि बंदन । मानप बाद पवन आरोधन हित क्रम काम निकंदन ॥ गुरजन कानि अंगनि चहुंदिस तें भरत ताप रविदेखे । पिवत धूम उपहास जहां तहं अपजश अवनि अलेखे ॥ सहज समाधि बिसरि वपु बानक निरखि निमेष न त्यागत । परम जाति प्रति अंग माधुरी धरत यहै निशि जागत ॥ चिकुटि संग भ्रुव भंग तराटक नयन नयन लगि लागे । इसनि प्रकाश सुमुख कुण्डल मिलि वदन सूर अनुरागे ॥ मुरली अधर मधर सुरसों सुनि सबद न हृद सुनि काने । बरषत रस रुचि पवन संग सुख पद आनंद समाने ॥ मंच दियो मन जात भजन गुण ध्यान ध्यान हरिहीको । सूर करै गुरु कौन कहौ अतिकौन सुने मत फीको॥ ७८ ॥ राग धनाश्री ॥ मीठी बातनि में कह लीजै । जोपै हरि हितु होहि हमारे करन कहो सो कीजे ॥ खाय सुगंध नाय आभूषण यों कीन्ही अरधंग । ते कैसें अब लिखि पठवहिगे भस्म चढ़ावन अंग ॥ एक बार बिहरत वृन्दाबन बेनी बिबिध बनाई ।

ते क्यों कहत जटा माथे को पलटो नाम कन्हाई ॥ काननि में कर कान्ह आपने करन फूल पहिराये । तिन माथो माटी के मुद्रा मधुकर हाथ पठाये ॥ कासों कहौं दूरि नद नंदन तुम जो मधुप मधु पाती । सूर न होय श्याम के मुखकी जाहु न जारहु छाती ॥ ॥ ७९ ॥ राग धनाश्री ॥ हरिसों भलो सो पतिसीताको । जाके हेत काज बहुकीन्हे कियो सिंधुबीता को ॥ रावन मारयो लंका जारी मुख देख्यो भी ताको । दूत हाथ उन्हे लिखि न पठायो निगम ज्ञान गीताको ॥ अबधों कहा परेखो कीजे कुब्जाके मीताको ॥ सेजे चढत सबै सुधि भूलीज्यों पीता चीताको ॥ कीन्हो कृपा जोगु लिखि पठयो निरखि पचरी ताको । सूरज दास प्रेमु कहजाने लोभी नवनीताको ॥ ८० ॥ राग सोरठ ॥ निरमोहिन्हा सों प्रीति कीन्ही काहे ना दुखु होइ ॥ कपट करि करि प्रीति कपटी लेगयो मनु गोइ । काल मुखतें काढि आनी बहुरि दीन्ही ढोइ । मेरे जिय की सोइ जाने जाहि बीती होइ । सोंचि आखि मजीठ कीन्ही निपट काचो पोइ ॥ सूर गोपी मधुप आगे दरकि दीन्हो रोइ ॥ ८१ ॥ राग सारंग ॥ बिन गोपाल बैर न भई कुंजे । तब एखता लगत अति सीतल अब भई बिषम ज्वाल की पुंजे । दृथा बहुत जमुना खग बोलत दृथा कमल फूले अलि गुंजे । पवन पानि घन सार सजी बनि दधि सुतकिरनि भान भई भुंजे । ए ऊधो कहियो माधो सों बिरह कदन करि मारत लुंजे । सूर दास प्रभु को मगु जोवत अंखियां भई बरन ज्यों गुंजे ॥ ८२ ॥ राग नट ॥ संदेसो कैसें के अब कहों । इन नैननि पातन को पहरो कब लगि देत रहौं । जु कछु बिचार होइ उर अन्तर रचि पचि सोचि गहौं । मुख आवत ऊधो तनु चितवत नसो बिचार नहों । अब सोई सिख देहु सयानी जातें सखहि लहौं । सूर दास प्रभु कैसें बकसों बिनती के निबहों ॥ ८३ ॥ राग कान्हरो ॥ बहुरों ब्रज बात न चाली । वह जो एक बार ऊधो कर कमल नैन पाती दै घाली ॥ पथिक तिहारे पांलागति हों मथुरा जाहु जहां बन माली । कहियो प्रकट पुकारि द्वार ह्वै कालिन्दी फिरि आयो काली । जब किरपा जदुनाथ कि हमपर रही सु रचि जो प्रेतिप्रति पाली । मांगत कुसुम देखि द्रुम ऊंचे गोद प्रकरि लेते गहि डाली । हम ऐसी उन के केतिकहैं अंग प्रसंग सुनहुरी आली । सूर दास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरि सुमिरि राधा उर साली ॥ ८४ ॥ राग नट ॥ मोहन लाल के संग आंखि । प्रथम ऊधो आनि देह मसगुन डारें नाखि ॥ दोइ तीनि सात अनन्त जैसें कहत सुमृत सो भाषि ॥ छूटे विद्या धर्म ज्ञान सों लोचननि अभिलाषि । उडहिं जहांके केलि सखिरी सुमिरि चकरी पांखि । हरि हरे हरि हेरि आलों रही झुकि बकि झांखि । निरखि जल प्रति बिम्ब बिहसत उडत छोरत राखि । ढूंढि पद्म पुरैनि बन जनु जलपि कुहु कुहि कांखि । रैनि ज्यों अंकुरत निशि अलि मदन दहि मद मांखि । इंदु उडगन कमल कुमुदिनि मिलें सूरज साखि ॥ ८५ ॥ राग मलार ॥ सन्देसनि मधु बन कूप भरे ॥ जे कोई पथिक गये जोन्हांतें फिरि नहि गवन करे । के बे श्याम सिखाइ समोधे के बे बीच मरे । अपने नहिं पठवत नंद नंदन हमरेउ फेरि धरे । मसि खूठी कागर

जल भीजे सरदी लागि जरे । पाती सूर लिखें क्यों करि जो पलक कपाट अरे ॥ ८६ ॥ राग नट ॥ नंद नंदन मोहन सों मधु कर काहे की प्रीति । जो कीजे तो होइ जलज धर रवि की ऐसी रीति । जैसें मीन कमल चातिक को ऐसें हीं गइ बीति । तलफत जरत पुकारत सुनु सठ नाहि न है यह रीति । मन हठ परयो कबन्ध जुद्ध ज्यों हारेहूं भई जीति ॥ बंधत न प्रेम समुद्र सूर बल बर बारुहि की भीति ॥ ८७ ॥ राग नट ॥ मधुबनियां लोगनि को पति आय ॥ मुख औरें अन्तर गति औरें पति आं लिखि पठवतहि बनाय । ज्यों कोइल सुत काग जिआवत भाउ भगति भोजनहि खाय । कुहु कुहाय आए बसंत ऋतु अंत मिले कुल अपने जाय ॥ जैसे मधु कर पुहुप बास ले फेरि न बूझै बात न आय । सूर जहां लों श्याम गात हैं तिनसों क्यों कीजिये सगाय ॥ ८८ ॥ राग नट ॥ हरि हैं राज नीति पढ़ि आये । समुझी बात कहत मधुकर के समाचार कछु पाये । एक अति चतुरहुते पहिलेहीं अरु करि नेह दिखाये । जानी बुद्धि बड़ी जुवतिन की जोग सन्देस पठाये । भले लोग आगें के सखिरी परहित डोलत धाये । वे अपने मन फेरि पाइ ये जैहैं चलत चुराये । ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुडाये । राज धर्म सब भये सूर जहं प्रजा न जाय सताये ॥ ८९ ॥ राग नट ॥ जोगकी गति सुनत मेरे अंग आगि बई ॥ सुलगि सुलगि हम रही तनमें फूंकि आनि दई ॥ जोगु हमको भोगु कुब्जहिं कौंने शिख सिखई । सिंह गजतजि तृणहि खंडत सुनी बात नई । कर्म रेखा मिटत नाहीं जो विधि आनि ठई । सूर हरि की कृपा जापर सकल सिद्धि भई ॥ ९० ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो जान्यो ज्ञान तिहारो । जाने कहा राज गति लीला अल्प अहीर विचारो । हम सबे अयानी एक सयानी कुबिजा सों मनु मानों । आवत नहीं लाजके मारे मानहु कान्ह खिस्यानो । ऊधो जाहु बांह देख्यावहु सुन्दर श्याम पियारो । ब्याहो लाखु धरो दस कुबरी अन्तहु कान्ह हमारो । सुनिरी सखी कछू नहि कहिये माधो आवन दीजे । जबहीं मिलहिं सूर के स्वामी हांसी करि करि लीजे ॥ ९१ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो कहो कहन जो पारो ॥ नाहिंन अलि कछु दोष तिहारो सकुचि साध जिनि मारो । नाहिन ब्रज बसि नंद लाल गोपाल बिनोद निहारो । नाहिन रास रसिक रस चाखो तोडि लियो सोडारो । जो नहि गयो सूर प्रीतम संग प्राण त्यागि तनु न्यारो । अब तो बहुत देखबो सुनिबो कौंन करम सों चारो ॥ ९२ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो इनहि श्याम को यहै परेखो आवे । तब वह प्रीति चरण जावक सिर अब कुबिजा मन भावे । तब हम लाड लडाय लडेते हंसि हंसि कंठ लगावे । अब वह रूप अनूप कृपा करि नैननि क्यों न दिखावे । जा सुख समिप रैनि दिन क्रीडत सो अब जोगु सिखावे ॥ जा मुख अमृत पियो भरि रसना सो कैसें विष भावे । कर मीडत पछितात धुनत सिर क्रम क्रम मनु समुझावे । सूर दास प्रभु बिकल बिरहिनी ऐसी विधि दुख पावे ॥ ९३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो कहत न कछु बनि आवे । सिर पर सोति हमारे कुब्जा चामके दाम चलावे । उनि कछु मंत्र पढ्यो चन्दन में तातें श्यामहि रावे । अपने रंग

हि रंगे सांवरे सुक ज्यों बैठि पढ़ावै । छाड्यो नेह हेतु गोकुल सों लिखि लिखयोग पठावै । बिसर्यो शेष असुर की दासी अब कुल बधू कहावै । ज्यों नटिनी लघु हाथ लकुटि ले कपि ज्यों नाच न चावे । सूर दास प्रभु जरी बहुत दुख तापर लौंन लगावे ९४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो जोग सिखावन आये। कैसें धीरज धर हरि पाती लिखि ज्यों सिधाये । एक समैं हरि अपने कारन करन फूल पहराये । ता कारन माटी के मुद्रा मधुकर हाथ पठाये । जोरि जारि चित जोगी जोरानो जोगि जोरिन जानें ॥ बिन को प्रेम कहा भयौ ऊधो अब यह जोग दृढानों । हरि जी हम सों प्रीति जो कीन्हो जैसे मीन अरु पानी । तलफि तलफि जिय निकसनि लाग्यो पानी पीर न जानी ॥ निशि बासर मेरी पलकै नलागत कोटि जतन करि हारी । जैसे भृंगमत जी कांचुरी सेा गति भई हमारी ॥ वेनी सुभग गुही कर अपने चरणनि जावक दीन्हो । कहियेा जाय सूर स्वामीसों निपट निठुर जिय कीन्हेा ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधेा जिनि मधुबन तन देखेा । कछुक दिवस औरों रहि गेाकुल जनम सुफल करि लेखेा ॥ कहा जाय लैहेा प्रभुता में राज काज की वात । बाज कुमार किशेार निरखु जे घर घर मांखन खात ॥ तुम निरगुण नित कहत निरंतर निगम नीति यह नीति । प्रकट रूप मद मत्त नयनक्यों छांड़त प्रेम प्रतीति ॥ जाको शिव सनकादि सनातन छिन छिन मन धरि ध्यावत । सूरसेा प्रभु व्रज गेाप सखनि संग गेाधन वृन्द चरावत ॥ ९६ ॥ ॥ राग मलार ॥ ऊधेा तुमहेा अति वड़ भागी । अपरस रसत सनेह तगातें नाहिन मनु अनुरागी ॥ पुरइनि पात रहत जलभीतर तारस देहु न दागी । ज्यों जल मांह तेल की गागरि बूंद न ताके लागी ॥ प्रीति नदी में पाउं न बेारयौ दृष्टि न रूप पराग़ी । सूरदास अबला हम भेारी गुर चींटी ज्यों पागी ॥ ९७ ॥ राग मलार ॥ ऊधेा यह मन और न हेाय । पहिलेहीं चढ़ि रह्यौ श्याम रंग छुटत न देख्यो धेाय ॥ कैतव बचन छांड़ि हरि हमसों सेाइ करे जेा मूल । जेाग हमहिं ऐसेा लागत है ज्यों तेाहि चम्पक फूल ॥ अब क्यों मिटत हाथ की रेखा कहेा कौन विधि कीजे । सूरश्याम मुख आनि दिखावेा जाहि निरखि करि जीजे ॥ ९८ ॥ राग गोंड ॥ ऊधेा ना हम बिरही ना तुम दास । कहत सुनत घट प्राण रहत हैं हरि तजि भजहु अकास ॥ बिरही मीन मरत जल बिछुरे छाँड़ि जिवन की आस । दास भाउ नहि तजत पपीहा बरुसहि रहत पियास ॥ प्रकट प्रीति दशरथ प्रति पाली प्रीतम के बन बास । सूर श्याम से दृढ व्रत कीन्हेा मेटि जगत उपहास ॥ ९९ ॥ राग सेारठ ॥ ऊधेा कही सेा बहुरि न कहियेा। जेा तुम हमहिं जिवायेा चाहेा अन बेाले ह्वै रहियेा ॥ हमरे प्राण अघात हेात हैं तुम जानत हेा हांसी । वा जीवन तें मरन भलेा है करवट लेहेां काशी ॥ जब हरि गवन कियेा पूरब लों तब लिखि जेाग पठायेा । यह तनु जरि कै भस्म ह्वै निबरौ बहुरि मसान जगायेा ॥ केरे मनेाहर आनि मिलावेा के ले चलु हम साथें । सूरदास अब मरन बन्यों हैं पापु तिहारे माथें ॥ १०० ॥ राग सारंग ॥ ऊधेा तुम अपनेा जतन करेा । हितकी कहत कुहित की लागे विनवे काजर रेा ॥ जाय करेा उपचार आपुनों

हमजो कहत हैं जीकी । कछू कहत कछुयें कहिडारत धुनि देखियत नहि नीकी ॥ साधु होय तेहि उत्तर दीजे शुभसों मानी हारि । याहीतें तुम्हे नंद नंदन जी पठये यहां होटारि ॥ मथुरा बेगि गहेा इन पायन उपज्यौ हेत न रोगु । सूर सोवेद बेगि किन ढूंढो भये अहं जल जोगु ॥ १०१ ॥ राग सोरठ ॥ ऊधो जाके माथे भाग । कुब्जा को पट रानी की ही हमहि देत वैराग ॥ तलफत फिरत सकल व्रज वनिता चेरो चपरि सोलाग बन्यों बनाये संग सखीरी बेरेहंसबेकाग ॥ खोंडी के घर डोंडी बाजो श्याम राग अनुराग । हांसी कमल नयन संग खेलति वारहुमासो फाग ॥ जोग कि बेलि लगावन आये काटि प्रेम को बाग । सूरदास प्रभु ऊष छोड़ि कै चतुर चचेारत आग ॥ १०२ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो अब यह समुझ भई । नद नन्दन के अंग अंग प्रति उपमा न्याय दई ॥ कुन्तल कुटिल भंवर भरि भांवरि मालति भुरइ लई । तजत न गहरु कियेा कपटी जब जानी निरस गई ॥ आनन इंदु विमुख संपुट सजि करषे तें न नई । नवनेही नवनेसां कुमुदिनि अन्तह हेम हई ॥ तनु घनश्याम सेइ निसि बासर रटि रसना छिजई । सूर बिबेक हीन चातिक मुख बूंदेातेान सई ॥ १०३ ॥ रागधनाश्री । ऊधो हम अति निपट अनाथ । जैसें मधु तारे की माखी त्योंहम विन व्रजनाथ ॥ अधर अमृत कोपोर मुई हम बाल दसा तें जोरी सेातेा वधिक सुफलक सुत खे गयेा अनायासही तेारी ॥ जब लगि पलक पानि मीडति रहि तब लगि गये हरि दूरी । केनिरोध निबहे तिहि औसर दे पगरथ की धूरी ॥ सब दिन करी कृपिन की संगति कबहुंन कीन्हेा भेागु । सूर बिधाता रचि राख्यो है कुब्जा के मुख जेागु ॥ १०४ ॥ राग सेारठ ॥ ऊधो व्रजको दसा विचारेा । तापाछें यह सिद्धि आपनी जेाग कथा बिस्तारेा ॥ जेहि कारन पठये नद नन्दन सेा शेाचहु मन माहीं । केतिकु बीच बिरह परमारथ जानत हेा किधेां नाहीं ॥ तुम निजु दास जेा सखा श्याम के सन्तत निकट रहत हेा । जल बूडत अवलम्ब फेनको फिरि फिरि कहा गहत हेा ॥ वे अति ललित मनेाहर आनन कैसे मनहि बिसारेा । जेाग जुगति औ मुकुति बिबिधि विधि या मुरली पर वारेा ॥ जेहि उर बसे श्याम सुन्दर घन क्यों निरगुण कहि आवै । सूरश्याम सेाइ भजनु बहावे जाहि दूसरेा भावे ॥ १०५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो यह हितु लागें काहे । निसि दिन नयन तपत दरशन को तुम जेा कहत हदे माहे ॥ नींद न परत चछूं दिस चितवत बिरह अनल के दाहे । उरतें निकसि करत क्यों न शीतल जेा पै कान्ह यहांहे ॥ पालागेां ऐसेहि रहनदे अवध आस जल थाहे । मति ले डारेा निर्गुण सिंधु में फिरि न पइवेा चाहे ॥ जाको मन जाही से राच्यौ तासों बनें निबाहे । सूर कहा खे करै पपीहा एते सर सरिताहे ॥ १०६ ॥ राग नट ॥ ऊधो जेाग जेागहि देहु । हम अबला कहा जेाग जानहिं सपत हमसें खेहु ॥ जैसे चन्द चकोर चाहत भेार चाहत मेहु । हमहुं चरण सनेह चाहत श्याम संग सनेहु । कनक खंभ बिसारि कैसे करत कामन गेहु ॥ छोडि चन्दन कुसुम केसर क्यों चढ़ा बहि खेह । श्याम गात सरेाज आननकरत पावक एहु ॥ सूर के प्रभु दरश दुर्लभ पातहूं समुझेहु ॥ १०७ ॥ राग धनाश्री ऊधोव्रज में पैठ करी । यह निर्गुण निर्मूल गाठरी अब किन करहु खरी ॥ नफा जानिकै

ह्यां लै आये सबै बात अकरी । यह सौदा ऊंहां ले बेचो जहां बड़ी नगरी ॥ हम ग्वालिनि गोरस दधि बेचो लेहिं अबे सबरी । सूर यहां का गाहक नाहीं देखियतु गरे परी ॥ १०८ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो तुम जो निकट के बासी । यह परमारथ बूझ कहो धों नाम बड़ो की काशी ॥ जोग ज्ञान ध्यान अवराधन साधन मुक्ति उदासी । आन प्रकार कहा रुचि मानहि जेगोपाल उपासी ॥ परमारथी जहांलों जेते बिरहिन के दुखदाई । सूर दास प्रभु रंगी प्रेमरंग जारों जोग सगाई ॥ १०९ ॥ राग बिलावल । ऊधो तुम अति चतुर सुजान । जे पहिले रंगरंगो श्याम रंग तिन्हे नचढे रंगु आन ॥ दुइ लोचन जो बिरद किये श्रुति गावत एक समान ॥ भेद चकोर कियो ताहू म बिधु प्रीतम रिपु भान । बिरहिनि बरह भजे पालागों तुम्ह हो पूरन ज्ञान ॥ दादुर जल बिनु जिबें पवन भखि मीन तजो इठि प्रान । बारिज बदन नयन मेरे पट पद कब करि हैं मधुपान ॥ सूरदास गोपीन प्रतिज्ञा छुवत न जोगु बिरान ॥ ११० ॥ राग बिलावल ॥ ऊधो कोकिल कूजति काननि । तुम हमको उपदेसु करत हो भस्म लगावन आननि ॥ औरों सखी सखा संग ले ले टेरत चढ़त पखाननि । बहुरों आनि पपीहा के मिस मदन हनत निज बाननि ॥ हमतो निपट अहीरि बावरी जोग दीजिये ज्ञाननि । कहा कथत मामी के आगे जानत नानी नाननि ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरत भावत नीके गाननि । सूर मुकति कैसे पूजति है वा मुरली की तानननि ॥ १११ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो हम अजान मति भोरी । जानति हैं ते जोगकी बातें नागरि नवल किशोरी ॥ कंचन के मृगु कौने देख्यो कौने बांध्यो डोरी । कहुधों मधुप वारि मथि मांखन कौने भरी कमोरी ॥ बिनही भीति चित्र किन काढ्यो कन नभ बांध्यो झोरी । कहो कोनपैं कढत कनूका जिन इठि भूमि पछोरी ॥ यह व्यौहार तिहारो बलिजाउं हम अबला मति थोरी । निरखहिं सूरश्याम मुख चन्दहि अंखियां लगनि चकोरी ॥ ११२ ॥ राग गौरी ॥ ऊधो कमल नयन बिन रहिये । एक हरि हमैं अनाथ करि छांड़ी दुजे बिरह किमि सहिये ॥ जैसें ऊजर खेरे की मूरति को पूजे को माने । ऐसी हम गोपाल बिनु ऊधो कठिन विथा को जाने ॥ तन मलीन मन कमल नयनसों ता मिलिबे की आस । सूरदास स्वामी बिन दीखे लोचन मरत पियास ॥ ११३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो कौन आहि अधिकारी । लैन जाहु यह जोगु आपनो कत तुम होत दुखारी ॥ यहतो बेद उप निषद मत है महा पुरुष व्रत धारी । हम अहीरि अबला व्रजबासिनि नाहिन परत संभारी ॥ कोहे सुनत कहत हौ कासों कौन कथा अनुसारी । सूर श्याम संग जात भई मनो अहि कंचुलीसी डारी ॥ ॥ ११४ ॥ राग जैतश्री ॥ ऊधो जो तुम हमहिं सुनायो । सो हम निपट कठिनई इठु के या मनको समुझायो ॥ जुगुति जतन जिति जोग अमहिं गहि अपथ पंथलों लायो । भटकि फिरयो बोहित के खगज्यों पुनि फिरि हरि जीपैं आयो ॥ हमको सबै अहित लागति है तुम अति हितहि बतायो । सर संचिता जल हौम कियेतें कहा अगिन सचु पायो ॥ अब कैसो उपाय उपदेशो जिहिं जिय जात जियायो । वारएक मिलहिं सूरके प्रभु तब कीजे अपनो भायो ॥ ११५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो जोगु बिसरि जनि जाहु ।

बांधहु गाँठि कहूं जनि छूटे फिरि पाछे पछिताहु ॥ ऐसी वस्तु अनूपम मधुकर मरम न जाने औरु । व्रज बासिन के नहीं काम को तुम हरेही है ठौरु । जो हरि हित करि हमको पठयो सोइहम तुम्हहीं दीन्हों । सूरदास नरिअरु ज्यों विप्रको करहि बंदना कीन्हो ॥ ॥ ११६ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो प्रीति नमरण विचारे । प्रीति पतंग जरे पावक परि जरत अंग नहि टारे ॥ प्रीति परे वा उड़त गगन चढि गिरत न आपु संम्हारे । प्रीति मधुप केतकी कुसुम वस कण्टक आपु प्रहारे ॥ प्रीति जानि जैसे पय पानी जानि जानि अपन पो जारे । प्रीति कुरंग नाद रस लुब्धक तानि तानि सर मारे ॥ प्रीति जानि जननी सुत कारन कौन अपनपो हारे । सूरश्याम सों प्रीति गोपिन की कहुं कैसेनिरु बारे ॥ ॥ ११७ ॥ राग गौरी ॥ ऊधो क्यों राखें ए नयन । रुमिरि सुमिरि गुण अधिक तपत है सुनत तिहारे बैन ॥ ये जो मनोहर बदन चंद के सादर कुमुद चकोर । परम तृषारत सजल श्याम घन तिनके चाचिक मोर ॥ मधुप मराल चरण पंकज के गति विलास जल मीन । चक्र बाक मनि दुति दिन करके मृग मुरली आधीन ॥ सकल लोक सूनो लागतु है बिन देखे वा रूप । सूरदास प्रभु नद नंदन के नखशिख अंग अनूप ॥ ११८ ॥ राग रामकली ॥ ऊधो जाहु तुम्हे हम जाने । श्याम तुम्हे ह्यां नाहिं पठाये तुम हो बीच भुलाने ॥ व्रजबासिनसों जोगु कहत हो बातन कहत न जाने । बडे लोगन बिवेक तुम्हारे ऐसे नये अयाने ॥ हमसों कही लई सो सहिकै जिय गुणि लेहु अपाने । कहां अबला कहां दिसा दिगम्बर समुखकरों पहिचाने ॥ सांचु कहो तुमको अपनीसों बूझति बात निदाने । सूरश्याम जब तुम्हें पठाये तब नेकहु मुसकाने ॥ ११९ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधा श्याम सखा तुम सांचे । के करि लयो स्वांग बीचहितें वेसेहि लागत कांचे ॥ जैसी कही हमहिं आवतहीं और न कहि पछिताते । अपनो पति तजि और बतावत सिहमानो कछु खाते ॥ तुरत गवन कीजे मधुबन को यहां कहा यह ल्याये । सूर सुनत गोपिन की बानी ऊधो शीस नवाये ॥ १२० ॥ राग नट ॥ ऊधो वेगि मधुबन जाहु । जोगु लेहु संभारि अपनो बेंचिये जहां लाहु ॥ हम बिरहिनी नारि हरि बिनु कौन करै निबाहु । तहां दीजे मूरु पूजै नफा कछु तुम खाहु ॥ जानही ब्रजमें बिकानो नगर नारि बिसाहु । सूर वे सब सुनत लैहैं जिय कहा पछिताहु ॥ १२१ ॥ राग नट ऊधो कछुक समझि परी । तुम जो हमको जोगु ल्याये भली करनि करी ॥ एकु बिरह जरि रहीं हरिके सुनत अतिहि जरी । जाहु जनि अबलोन लावहु देखि तुमहि डरी ॥ जोग पाती दई तुम कर बड़े ज्ञान हरी । आनि आस निरास कीन्ही सूर सुनिहु हरी ॥ ॥ १२२ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो सुनत तिहरे बोल । ल्याये हरि कुसलात धन्य तुम घर घर पारो गोल ॥ कहन देहु कह करे हमारो बरि उड़िजैहे झोल । आवतही याको पहिचान्यों निपटहि ओछो तोल ॥ जिनके सोचु नरहि कहिबेकौंते बहुगुणनि अमोल । जानी जाति सूर हम इनकी बत चल चञ्चल लोल ॥ १२३ ॥ राग नट ॥ ऊधो जानि परयो सयानु । नारि यह को जोगु लाए भले जानु सुजानु ॥ निगमहे यहु पार पायो कहत जासों ज्ञानु । नयन चिकुटी जोरि संगम जेहि करत अनुमानु ॥ पवन

धरि रवि तन निहारत मनहि राखो मारि । सूर सो मनु हाथ नाही गयो संग बिसारि १२४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मन नहि हाथ हमारे । रथ चढ़ाय हरि संग गये ले मथुरा जबहि सिधारे । नातरु कहा जोगु हम छांड़हिं अति रुचिकै तुम ल्याये ॥ हमतो अखति श्याम की करनी मन ले जोग पठाये । अजहूं मन अपनो हम पावें तुमतें होय तहोय । सूर सपत हमें कोटि तिहारी कहो करैगीं सोय ॥ १२५ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो जोगु सुन्यों हम दुर्लभ । आपु कहतहम सुनत अचम्भिति जानत हो जिय सुलभ ॥ रेख न रूप बरनु जाके नहि ताको हमहि बतावत । अपनी कहो दरश वैसे को तुम कबहूं हो पावत ॥ मुरली अधर धरतहैं सो पुनि गोधन बन बन चारत । नैन बिशाल भौंह बंकट करिदेखो कबहुं निहारत ॥ तन त्रिभंग करि नटवर वपुधरि पीताम्बर तेहि सोहत । सूर श्याम ज्यों देत हमहि सुख त्यों तुमको सोउ मोहत ॥ १२६ ॥ राग रामकली ॥ ऊधो हमलायक सिख दीजे । यह उपदेस अगिनते तातो कहो कौन बिधि कीजे । तुमहीं कहो यहाँ इतनिन्ह में सीखन हारी कोई । जोगी जती रहित मायाते तिन्ह को ए मतु सोहे । जे कपूर चन्दन तन लेपनते बिभूति क्यों छाजे । सूर कहो सोभा क्यों पावै आंख आंधरी आंजे ॥ १२७ ॥ राग रामकली ॥ ऊधो कहा कथत बिपरीति । जुवतिन जोगु सिखावन आये यह तो उलटी रीति । जोतत धेनु दुहत पय दुखको करन लगे जो अनीति ॥ चक्र वाक शशिको क्यों जाने रवि चकोर कह प्रीति । पांहन तरे सोलह जो बूडे तो हम माने नीति । सूर श्याम प्रति अंग माधुरी रही गोपिका जीति ॥ १२८ ॥ राग रामकली ॥ ऊधो जुवतिन ओर निहारो । तब यह जोग मोट हम आगे दिये समुझि बिस्तारो ॥ जे कच श्याम आपने कर करि नितहि सुगन्ध रचाये । तिन्ह को तुम्ह जो बिभूति धारि के जटा लगावन आये । जेहि मुख मृग मद मलयज उबटति छिन छिन धोवति माँजति । तेहि मुख कहत खेह लपटावन सो कैसे हम छाजति । लोचन आँजि श्याम शशि दरसति तब होंये बिपिताति । सूर तिन्हें तुम रवि दरसावत यह सुनि सुनि करु आति ॥ १२९ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो नयननि यह व्रतु लीन्हों । स्वाति बिना जैसर सब भरियत घींवरंध तुम कीन्हों । मुरली गरजतात मकुतातनु मेघध्यान जलु दीन्हों । बरुये प्राण जाहि ऐसेही बचन होंहि क्यों दीन्हों । तुम्ह आये ले जोग सिखावन सुनत महा दुख दीन्हों । कैसे सूर अगोचर लहिये निगमन पावत चीन्हों ॥ १३० ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो इन्ह नयननि अंजन देहु । आनउ क्यों न श्याम रंगु काजरु जासो जुरयो सनेहु । तपत रहत निशि बासर मधुकर नहि सोहात तन गेहु । जैसे मीन मरत जल बिछुरत कहा कहौं दुख एहु । सब बिधि बानि ठानि के राखो खरिकपूर को रेहु । बारक मिलवहु श्याम सूर प्रभु क्यों न सुजस जग लेहु ॥ १३१ ॥ राग रामकली ॥ ऊधो भली करी तुम आये । यह बाते कहि कहि या दुख में ब्रज के लोग हंसाये । कौन काज वृन्दावन को सुख दही भात की छाक । अबवे कान्ह कूबरी राचे बनै एकही ताक । मोरमुकुट मुरली पीताम्बर पठवो सोज हमारी । अपनो

जटा जूट अरु मुद्रालीजे भसम अधारी । वे तो बड़े सखा तुम उनके तुमको सुगम अनीति । सूर सबै मति भली श्याम की जमुना जल सों प्रीति ॥ १३२ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो बूझति गुपित तिहारी । सब काहू के मनकी जानत बाँधे मूरि फिरत ठगवारी । पीत ध्वजा उन्ह के पीताम्बर लाल ध्वजा कुबिजा बिभिचारी ॥ सतकी ध्वजा खेत व्रज ऊपर अपजस है ऊधो को प्यारी । उन्हके प्रेम प्रीति मन रंजन पैंता सकल सील व्रत धारी ॥ सूर वचन मिथ्या लंगराई दोऊ ऊधो की न्यारी ॥ १३३ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मन मानें की बात । जरत पतंग दीप में जैसे औ फिर फिरि लपटात । रहत चकोर पुहुमि पर मधुकर ससि अकास भरमात । ऐसो ध्यान धरो हरि जी पै छिन इत उत नहि जात । दादुर रहत सदा जल भीतर कमलहि नहि नियरात । काठु फोरि घरु कियो मधुप जिम बंधे अम्बुज के पात । बरषा बरषत निशि दिन ऊधो पुहुमी पूरिअघात । स्वाति बूंद के काज पपीहा छिनु छिनु रटत रहात । सेहि नखात अमृत फल भोजन तोमरि को ललचात । सूरज कृष्ण कूबरी रीझे गोपिन्ह देखि लजात ॥ १३४ ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर रह्यौ जोगखगि नांतो । काहे को बेकाज बकत हो हात यहां ते नांतो । जब हिलि मिलि पय पान करतते तबहूं हुतो कहांतो । अब आये निर्गुण उपदेसन जो नहि हमें सोहातो । काचे गुण करि तृणहिल पेटत कबि बारिज को तातो । मेरे जान गह्यो चाहत हो बहुरि कि मैं गल मातो । अब तो सूर ताहि ले दीजे जाके पेट समातो । जब चहि हैं तब मागि पठै हैं जोकोइ आयत जातो ॥ १३५ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर हमन होंहि बेबेली । जिन्हको तुम तजि भजत प्रीति बिनु करत कुसुम रस केली । बारेते बल बारि बाढि अरु पोखी प्याई पानी । बिन पीअ रस प्रात उठि फूलत होत सदा हित हानी । ए बल्ली बिरहत वृन्दावन अरुझी श्याम तमालहि । प्रेम पुहुप रस बासु हमारे बिलसत मधुर गोपालहि । जोग समीर धीर नहि डोलत रूप डार ढिग लागी । सूर पराग न तजत हियेते कमल नयन अनुरागी ॥ १३६ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर श्याम हमारे ईस ॥ जिन को ध्यान धरे उर अन्तर आनहि नयन बैन बिन सीस । जोगि न जाइ जोग उपदेशो जिनके मन दश बीस । एकै मन एकै वह मूरति नित चितवत दिन तीस । काहे निरगुण ज्ञान आपुनो जितनित डारत खीस ॥ सूरज प्रभू नन्द नन्दन हैं उन्हते को जगदीस ॥ १३७ ॥ राग मलार ॥ मधुकर तुम्ह हो श्याम सखाई ॥ पाखागों यह दोषबक सियो सनमुख करत ढिठाई ॥ कौने रंक संपदा बीलसी सोवत सपने पाई । किनसो नेकी उडत चिरैया डोरी बांधि खिलाई । धाम धुआं के कहो कौन के बैठी कहाँ अथाई । किनि अकासते तोरि तरैआं आनि धरी घर माई । बोरन की माला गुहि कोने अपने करनि बनाई । बिन जल नाउ चलत किन देखी उतरि पार को जाई । कौने कमल नयन व्रतु छांड्यो जो समाधि हिलगाई । सूर दास तू फिर फिर आवत यामें कौन बड़ाई ॥ १३८ ॥ राग धनाश्री ॥ मधु कर मन तो एकै आहि । सोतो ले हरि संग सिधारे जोगु

सिखावत काहि । रेसठ कुटिल बचनरस लम्पट अवगुनि तन धों चाहि । अब काहे को देत लोन हो बिरह अनल तन दाहि । परमारथ उपचार करत हो बिरह बिथा नहि जाहि । जाको राज दोषु कफ व्यापै दही खवावत ताहि । सुन्दर श्याम सलोनोमूरति पूरि रही हिय माहि । सूर ताहि तजि निर्गुण सिंधुहि कौन सकै अवगाहि ॥ १३९ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर छांडु अटपटी बातें । फिर फिर बारबार सोइ सिखवत हम दुख पावत जाते । अनु दिन देत असीस प्रात उठि अरु सुख सोवत न्हाते । तुम्ह निशि दिन उर अन्तर सोचत ब्रज जुबतिन को घाते । पुनि पुनि तुम्हें कहत क्यों आवै कछु जाने वहि नाते । सूर दास जारंगी श्याम रंगु फिरि न चढत अवराते ॥ १४० ॥ राग सारंग ॥ मधुप रावरी पहिचानि । बास रस लेअनत बैठे पुहुप की तजि कानि । बाटिका बहु बिपिन जाके एक वेकुल्हिखानि फूले फूले सघन काननि कौन तिन्हके हानि । काम पावक जरत छाती लोन लाये आनि । जो गुपाती हाथ दीन्ही बिष चढायो सानि । सोसते मनि हरी जिन्हकेकौन तिन्ह में बानि । सूरके प्रभु निरखि हिरदे दृजतज्यो यह जानि ॥ १४१ ॥ राग सारंग॥ मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हरि लियो माधुरी मूरति चितै नैन की कोर ॥पकरे ते हिरदै उर अन्तर प्रेम प्रीत के जोर । गये छड़ाय छोरि सब बन्धन दे गये हसनि अकोर ॥ सोवत तें हम उचकि परी हैं दूत मिल्यो मोहि भोर । सूर श्याम मुसकनि मेरो सर्बस ले गये नन्दकिशोर ॥ १४२ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर समुझि कहो मुख बात परमदु पियो मत नहि छूजतु काहे को इतरात ॥ बीच जो परे सत्य पै भाषे बोले सत्यसरूप । मुख देखत को न्याव न कीजे कहां रंक कहं भूप ॥ कछु कहत कछु ये मुख निकसत पर निन्दक व्यभिचारी ॥ ब्रज युवतिन कों जोग सिखावत कीरति आनि पसारी । हम जान्यो सो भंवर रस भोगी जोग जुगति कहं पाई ॥ परम गुरु सिर मूड़ि बा पुरे कर मुख छार लगाई । यहै अनीति बिधाता कीन्ही तौऊ समुझत नाहीं ॥ जो कोइ परहित कूप खनावै परे सो कूपहि माहीं । सूर सोवे प्रभु अन्तरजामी कासों कहें पुकारी ॥ तब अक्रूर अबे इन ऊधो दुहुं मिलि छाती जारी ॥ १४३ ॥ रागसारंग ॥ मधुकर हमसे कहो करें । पठए हैं गोपाल कृपा कैं आयसु तें न टरें ॥ रसना वारि फेरि नव खंड कें दे निरगुण के साथ ॥ इतनो तनकु बिलगु जिनि मानहु अंखियां नाहीं हाथ ॥ सेवा कठिन अपूरब दरशन कहत अबहुंगे फेरि। कहियो जाय सूरके प्रभु सों केरा पास ज्यों बेरि ॥ १४४ ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर तौ औरनि सिख देहु । जानेंगे जब लागैगो हो खरो कठिन है नेहु ॥ मन जो तिहारो हरि चरणनि तरतन धरि गोकुल आयो । कमल नयन के संग तें बिछुरे कहुं कैाने सचुपायो ॥ यहैं रहो जाहु जिनि मथुरा झूठो माया मोहु । गोपी सूर कहत ऊधो सों हमही से तुम होहु ॥ ॥ १४५ ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर जानत नाहि न बात । फूंकि फूंकि हियरा सुलुगावत उठि न यहां तें जात ॥ जा उर बसत अधोदा नन्दन निरगुण कहां समात । कत भटकत डोलत कुसुमनि कों तुम किनि पातनि पात ॥ यदपि सकल बल्लीबन बिहरत

जाय बसत जल जात । सूरदास व्रज मिल बन आये सादी की कुशलात ॥ १४६ ॥ ॥ राग सारंग ॥ तिहारी प्रीत किधों तरवारि । हष्ट धार करि मारि सांवरे घायल सब व्रज नारि ॥ रही सुखेत ठोर वृन्दावन रनहु न मानति हारि । बिलपति रही संम्हारत छिनु छिनु बदन सुधा कर वारि ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरति रहिहौं छविहि निहारि । रंचक शेष रह्यो सूरज प्रभु अब जिनि डारो मारि ॥ १४७ ॥ राग धनाश्री ॥ मधु कर कौन मनायो माने ॥ अविनाशी अति अगम अगोचर कहा प्रीति रसु जाने ॥ सिख बहु जाहि समाधि को बातें जेहैं लोग सयाने । हम अपने व्रज ऐसेहिं बसिहैं बिरह बाय बौराने ॥ सोवत जागत सपने सों तुषि रहि है सुपत माने । बाल कुमार किशोर कि लीला सिंधु सुता में साने ॥ परयो जो पय निधि बूंद अलप सों कोजो अब पहिचाने ॥ जाके तन धन प्राण सूर हरि मुख मुसुकानि बिकाने ॥ १४८ ॥ रागमलार ॥ मधु कर ये मन बिगरि परे । समुझत नाहिं ज्ञान गीता को हरि मुसुकानि अरे ॥ बाल मुकुंद रूप रस राचे तातें बक्र खरे । सूधि न होय स्वान पूंछ ज्यों कोटिक जतन करे ॥ हरि पदनलिन बिसारत नाहीं शीतल उर संचरे । जोग गंभीर अंध कूप कत देखत दूरि डरे ॥ हरि अनुराग सुहाग भाग भरेअमिय तें गरल गरे । सूरदास बरु ऐसेहिं रहिहैं कान्ह बियोग भरे ॥ १४९ ॥ राग मलार ॥ मधुकर जो तुम हितू हमारे । तो यह भजन सुधा निधिमें जनि डारो जोग जल खारे ॥ सुनु सठ रीति सुरभि पयदायक कोनखेत हल फारे ॥ जो भय भीत होत रजु देखत क्यों बढवत अहिकारे । निजकृत बूझि बिना दसनन हति सजति धाम नहि हारे ॥ सो बल अछत निसा पंकज में दल कपाट नहि टारे । रेअलि चपल मोद रस लम्पट कतहि बकत बिन काज । सूर श्याम छवि क्यों बिसरत है नख सिख अंग बिराज ॥१५०॥ राग सोरठ ॥ मधुकर कौन गांव को रीति । व्रज जुवतिन को जोग कथा तुम कहत सबै बिपरीति ॥ जासिर फूल फुलेल मेलिकें हरिकर अर्थ मोरी । तासिर भसम समान पैसे वन जटा करत आधोरी ॥ रतन जटित ताटङ्क बिराजत अरु कमलन को जोति । तिन श्रवणनि पहरावत मुद्रा तोहि दया नहि होति ॥ बेसरि नाक कंठ मनि माला मुखनि सार अस्वास । तिन्हमुख सिंगी कहा बजावन भोजन आकपलास ॥ जातन कों मृग मद घसि चन्दन सूक्ष्म पट पहिराये । तातन कों रचि चीर पुरा तन दे व्रज नाथ पठाये ॥ बेअवि नाशी ज्ञान घटेगो यहि बिधि जोगु सिखाये । करो भोगभरि पूरि सूर प्रभु जोग करो व्रज आये ॥ १५१ ॥ राग सारंग ॥ मधु कर राखि जोग की बात । कहि कहि कथा श्याम सुन्दर की शीतल करु सब गात ॥ जे निर्गुण गुण हीन गने गो सुनि सुन्दरि अकुलात । दीरघ नदी नाउ का गदकी को देखो चढ़ि जात ॥ हम तन हेरि चितै पटु अपनों देखि पसारहि खात ॥ सूर दास प्रभु बन बन बसि कें कैसें कलप बिहात ॥ १५२ ॥ राग नट ॥ मधु कर ये नयना पै हारे । निरखि निरखि मगु कमल नयन कों प्रेम मगन भये भारे ॥ तादिन तें नींदौ पुनि नासी चोंकि परति अधिकारे । सपन तुरी जागत पुनि ओई बसत जो हृदय हमारे ॥ यह निर्गुण ले ताहि बतावो जो जाने याकि सारे । सूर दास गोपाल छांड़िके चूसें टेंटी खारे ॥ १५३

॥ राग धनाश्री ॥ मधु कर कह कारे की जाति । ज्यों जल मीन कमल मधुपनि केहिनु नहि प्रीति घटाति ॥ कोकिल कुटिल कपट बायस छलि फिरि नहि बहिवन जाति। तैसेहि राज केलि रस अंचयो बैठि एकही पांति ॥ सुत हित जोग जज्ञ व्रतु कीजतु बहु विधि नोकी भांति । देखहु अहि मन मोह मया तजि ज्यों जननी जन खाति ॥ तिनकों क्यों मन बिसमो कीजै औगुन लों सुख सांति । तैसेई सूर मुनै जदुनन्दन वजो एकसुर तांति ॥ १५४ ॥ राग रामकली ॥ मधु कर ल्याये जोगु संदेसो । भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अंदेसो ॥ आस नही जिय कबहुं मिलन की तुम आवत हौं नासी । जुबतिन कहत जटा शिर बांधन तो मिलिहैं अबिनासी ॥ तुमकों जिन गोकुलहि पठावो ते वसुदेव कुमार । सूर श्याम मन मोहन बिहरत व्रजमें नन्द दुलार ॥ ॥ १५५ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम बिनोदी रे मधु बनियां । अब हरि गोकुल काहे को आवहिं चाहत नव जोबनियां ॥ बे दिन माधो भूलि बिसरि गये गोद खिलाये कनियां । गुहि गुहि देते नन्द जशोदा तनक काच के मनियां ॥ दिना चारि ते पहरन सीखे पाट पिताम्बर तनियां । सूर दास प्रभु तजी कामरी अब हरि भये चिकनियां ॥ १५६ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो हम अति बौरी । हरिहि दोष नहि बातें रोरी ॥ सुभग कलेवर कुंकुम खोरी । गुञ्ज माल अरु पीत पिछोरी ॥ रूप निरखि दृग लागे ढोरी । चित चुराय लयो मूरति सोरी ॥ गहियत सोजो समाय अंकोरी । याही ते बुधि कहियत बोरी ॥ सूर श्याम सौं कहिये कठोरी । यह उपदेश सुने ते बोरी ॥ ॥ १५७ ॥ राग धनाश्री ॥ कहां लगु मानिये अपनी चूक । बिन गोपाल ऊधो मेरी छाती ह्वै न गई द्वै टूक ॥ तन मन जोवन दुखा जात है ज्यों भुवङ्ग की फूंक । हृदय अगनि को दवा बरत है कठिन बिरह की हूंक ॥ जिनकी मणि हरि लई शीस तें कहा करै अहि मूक । सूर दास व्रज बास बसी हम मनहु दाहने हूक ॥ १५८ ॥ राग कल्यान ॥ कहै कोई परदेशी की बात ॥ मन्दिर भाग अरध करि दे गये हरि भखु देखौ जात ॥ अशि रिपु बरष सूर रिपु जुग बर हरि रिपु को अवघात । मम पञ्चक ले गये श्याम घन तातें मन अकुलात ॥ मन मोहन बिनु रहिन परतु हैं बार बार बिलखात । सूर दास बस भई बिरह के करमोजें पछितात ॥ १५९ ॥ राग कल्यान ॥ ऊधो जोगु जानै कौनु । हम अबला कह जोग जानही जियत जाकों रौनु ॥ जोगु हमपै होय न आवै धरनि आवै मौनु । बांधिहैं क्यों मन पखेरू साधि हैं क्यों पौनु ॥ लाल अम्बर पहरि कैं मृगछाल ओढ़े कौनु । गुरु हमारे कूबरी कर मंच माला जौनु ॥ मदन मोहन बिनु हमारे परे बात न कौन । सूर प्रभु कब आय हैं बे श्याम दुख के दौनु ॥ १६० ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ फूल बिनन नहि जांउं सखीरी हरि बिनु कैसे बीनों फल । सुनि री सखि मोहि राम दुहाई फूल लगत तिरशूल ॥ बेजो देखियत राते राते फूलन फूलीडार हरि बिन फल झारी सी लागत झरि झरि परत अंगार ॥ कैसें के प्रनघट जाउं सखीरी डोलों सरिता तीर । भरि भरि जमुना उमड़ि चली है इन नैननि के नीर ॥ इन नैननि के नीर सखीरी सेज भई घरनाउं । चाहति हौं याही पर चढ़िकैं श्याम मिलन कों जाउं

प्राण हमारे बिन हरि प्यारे रहे अधरनि पर आय । सूर दास के प्रभुसों सजनी कौनु कहै समुझाय ॥ १६१ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो जो मैं तिहारे चरणनि लागों वारक या ब्रज कर बिभावरी । निशि न नींद आवै दिन न भोजनु भावै मगु जोवत भइ दृष्टि झांवरी ॥ वहै वृन्दावन श्याम सघन बन वहै जमुना वहै सुभग सांवरी । एक श्याम बिन श्याम न भावै सुधि न रही जैसें बकत बावरी ॥ लाज छांड़ि हम उहहिं आवती चलि न सकति आवै विरहतांवरी । सूरदास प्रभु बेगि दरशु दीजै होयहै जगमें कीरति रावरी ॥ ॥ १६२ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो जी जबहि जाइ गोकुल मणि आगें भेट अंकवारी पैयां लागनु कहियो । अब मोहि बिपति परी दरशन बिन सहि न सकत तन दारुण दहियो ॥ शरद चन्द मोहि बैरि महा भयो अनिल सहि न परे विधि रहियो । सूर श्याम बिनु गृह बन सूनों बिन मोहन काको मुख चहियो ॥ १६३ ॥ * ॥ * ॥

॥ श्री जशोदा जी के वाक्य उद्धव प्रति ॥

॥ राग सोरठ ॥ संदेसो देवकी सों कहियो । हम तो धाय तिहारे सुत की कृपा करत ही रहियो ॥ उबटन तेलु औरु तातो जलु देखेही भजि जाते । जोइ जोइ मांगत सोइ सोइ देतो कर्म कर्म के न्हाते ॥ तुम्ह तो टेव जानतहि होइ हो तऊ मोहि कहि आवै प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतेहि माखन रोटी भावै ॥ अब यह सूर मोहि निशि वासर बड़ो रहत जिय सोच । अब मेरे अलक लड़ैते लालनु होयहै करत संकोचु ॥ १६४ ॥ राग सोरठ ॥ जद्यपि मन समुझावत लोगु । मूल होत नवनीत देखिकै मोहनको मुख जोगु। प्रात समय उठि माखन रोटी को बिन मांगे देहै । को मेरे बालक कुंवर कान्ह को छिन छिन आगो लेहै ॥ कहियो जाय पथिक घर आवहि राम श्याम दोउ भैया । सूर यहां कत होत दुखारी जिनको मोसी मैया ॥ १६५ ॥ राग सारङ्ग ॥ जो पै राखति हो पति चानि । तो वारेकमेरे मोहन कों मोहि देउ दिखाई आनि ॥ तुम रानी वसुदेव गिरहनी हम अहीर ब्रज वासी । पठै देउ मेरो लाल लड़ैतो वारों ऐसो हांसी ॥ भली करी कंसादिक मारे औसर काज कियो । अब इन गायनु कौनु चरावै भरि भरि लेत हियो ॥ खान पान परधान राज सुख जो कोउ लाड़ लडावै । तदपि सूर मेरो यह बालकु माखन ही सचुपावै ॥ १६६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ उद्धव गोकुल तें मथुरा आये तब गोपिन के परस्पर वाक्य ॥

॥ राग मलार ॥ मेरे मन इतनी भूल रही । बे बतियां छतियां लिखि राखी जे नंदलाल कही ॥ एक दिवस मेरे गृह आये मैंही मथति दही । रति मांगत मैं मान कियो सखि सो हरि गुसा गही ॥ शोचति अति पछितति राधिका सुरछित धरनि ढही ॥ सूर दास प्रभु के बिछुरे तें बिथा न जाति सही ॥ १६७ ॥ राग सारङ्ग ॥ देखो माधो की मिचाई । आई उघरि कनक कलई ज्यों दे निज गये दगाई ॥ हम जाने हरि हितू हमारे उनको चित्त ठगाई । छांड़ी सुरति सबै ब्रज कुलको निठुर लोग मिलि भाई ।

प्रेम निबाहि कहा वे जानै सांचेई अहिराई । सूर दास बिरहिनी बिकल मति कर मोजैं पछिताई ॥ १६८ ॥ राग सोरठ ॥ मैं जान्यों मोकों माधो हितु है कियो । अति आदर अलि ज्यों मिल कमलहि मुख मकरन्द लियो ॥ बरु वह भलो पूतना जाको पै संग प्राण पियो । मन मधु अचै निकट सूने तन यह दुख अधिक दियो ॥ देखि अचेत अमृत अब लोकनि चाल जु सोचि हियो । सूर दास प्रभु वा अधारतें तातें परत जियो ॥ १६९ ॥ राग सोरठ ॥ अब या तनहि राखि का कीजै । सुनि री सखी श्याम सुन्दर बिनु बांटि बिषम बिष पीजै ॥ कै गिरिये गिरि चढ़िकै सजनी कै सुकर शीस शिव दीजै । कै दहिये दारुण दावानल कै तो जाय जमुन धसि लीजै ॥ दुसह बियोग बिरह माधो के कौन दिनहि दिन छीजै । सूर दास प्रीतम बिनु राधे शोचि शोचि मन खीजै ॥ १७० ॥

॥ भगवान प्रति उद्धव वाक्य ॥

॥ राग धनाश्री ॥ माधो सुनों ब्रजकौ प्रेमु । बूझि हम षट मास देख्यो गोपिकन कौ नेमु ॥ हृदय तें नहि टरत उनके श्याम राम समेत । अश्रु सलिल प्रवाह उर पर अरध नैननि देत ॥ चोर अंचल कलस कुच मनों प्राणि द्रुम चढ़ाय । प्रकट लीला देखि हरि के कर्म उठती गाय ॥ देह गेह समेत अर्पण कमल लोचन ध्यान । सूर उनके भजन आगे फोकौं लागे ज्ञान ॥ १७१ ॥ राग धनाश्री ॥ कहलों कहिये ब्रज की बात । सुनहु श्याम तुम बिनु उन लोगनु जैसें दिवस बिहात ॥ गोपी ग्वाल गाय गोसुत सब मलिन बसन कृशगात । परम दीन जनु शिशिर हेमऋत अंबुज गण बिनु पात ॥ जो कोहू आवत देखत हैं मिलि बूझत कुशलात । चलन न देत प्रेम अति ब्याकुल फिर चरणनि लपटात ॥ पिक चातक बन बसनन पावत बायस बलि नहि खात । सूरदास संदेसनिके डर पथिक न बा मग जात ॥ १७२ ॥ राग केदारो । उनमें पांच दिवस जो बसिये । नाथ तिहारोसोंजिय उपजत फेरि अपनपो कसिये ॥ वह लीला बिनोद गोपिन के देखेही बनि आवै । मोकों बहुरि कहां वैसो सुख बड़ भागी सोपावै ॥ मनसि वचन कर्मना कहत हों नाहिन कछु अब राखी । सूर काढ़ि डारौ हो ब्रजतें दूध मांझ की माखी ॥ १७३ ॥ राग केदारो ॥ चित दे सुनो श्याम प्रवीन । हरि तिहारे बिरह राधे भैं जो देखी छीन ॥ कहन को संदेस सुन्दरि गवन मोतन कीन । छुटो छुद्रावलि चरण अरुझें गिरी बल हीन ॥ बहुरि उठी सम्हारि सुभट ज्यों परम साहस कीन ॥ हौं कत को पठयो बेकाजहि सठ बावरो अयानो । तुमहूं बोझ बहुत बातनि को वहां जाउं तौ जानो ॥ बिनु देखे मन मोहन सखिरी सब सुख उनको हीन । सूरहरिके चरणअम्बुज रही आसालीन ॥ १७४ ॥ राग केदारो ॥ माधो बड़ ब्रजको ब्यौहार । मेरो कह्यो पवन को भुस भयो गावति नन्द कुमार ॥ एक ग्वारि गोधन से रेंगति एक लकुट कर लेति । एक मंडली कै बैठा-

रति छांक बांटि के देति ॥ एक ग्वारि नटवर वर लीला एक कर्म गुण गावति । कोटि भांतिकै मैं समुझाई नेक न उरमें ल्यावति ॥ निशि वासर येही व्रत सब व्रज दिन दिन नूतन प्रीति । सूर सकल फीको लागत है देखत वह रस रीति ॥ १७५ ॥ राग केदारो ॥ कहिवे मैन कछु सक राखी । बुधि विवेक अनुमान आपने मुख आई ते भाखी ॥ हों पचि कहत पहर एकमें वे छिन मांहि अनेक । हारि मानि उठि चल्यौ दीन ह्वै छांड़ि आपनी टेक ॥ कंठ बचन न बोलि आयो हृदो परि हस मीन । नयन भरि जो रोय दीन्हों ग्रसत आपद दीन ॥ यो सुखको सिखई ग्रंथोंते कथि सब भई कहानी । एकु होय ताहि उत्तर दीजे सूर मुठी अबुहानी ॥ १७६ ॥ राग केदारो ॥ कहो तो सुख आपनो सुनाऊं । व्रज जुवतिन को कथा जोगु की क्योंन एतो दुख पाऊं ॥ हों एक बात कहत निर्गुण की ताही में अटकाऊं । वे उमड़ी वारिधि तरंग ज्यों तापर थाह न पाऊं ॥ कौन कौन को उत्तर दीजे तातें भज्यो अगाऊं । बे मेरे शिर पाटी पारहिं कंथा काहि उढ़ाऊं ॥ एक आंधरो हिये की फूटी दोरे पहरि खराऊं । सूर सकल व्रज पट दरसी हो वारहि खड़ो पढ़ाऊं ॥ १७७ ॥ राग केदारो ॥ तबतें इन सबज्ञन संचु पायो । जबतें हरि संदेस तिहारो सुनत तावरो आयो ॥ फूले व्याल दुरेतें प्रकटे पवन पेट भरि खायो । भूले मृगा चोंक चरणनि तें छुतो जो जिय विसरायो ॥ ऊंचे बैठि विहंग सभा विच उठि कोकिल मंगल गायो । निकसि कंदरातें के हरि ने माथे पूंछ हिलायो ॥ ग्रह वनतें गजराज निकसि कै अंग अंग गर्भ जनायो । सूर बहुरि हो कहै राधा यों बेरिनिहों का भायो ॥ १७८ ॥ राग केदारो ॥ फिरि फिरि मोपर कत दुख पावत । अबके और चतुर कोई पठबो बार न होइहै आवत ॥ मैं परमारथ सबु समुझायो रोष सहित वे कोपी । सुफलक सुत को कह्यौ मानि है आरति करति हैं गोपी ॥ इतनी सुनत कमल दल लोचन खेंचि सुकर करि लीन्हों । सूरश्याम मुसकाय जानि जिय तरक जानि हंसि दीन्हों ॥ १७९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ * ॥ उद्धव प्रति भगवद्वाक्य ॥ *

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मो व्रज बिसरत नाहीं । हंस सुता को सुन्दर कल अरु कुंजन की छाहीं ॥ बे सुरभी बे बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं । ग्वाल बाल सब करत कुलाहल नाचतगहि गहि बांहों ॥ यह मथुरा कंचन की नगरी मणि मुक्ता हल जाहीं । जबहि सुरति आवत वा सुखकी जिय उमगत तनु नाहीं ॥ अन गन भांति करी बहु लीला जसोदा नन्द निबाहीं सूरदास प्रभु रहे मौन होइ यह कहि कहि पछि ताहीं ॥ १८० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ * ॥ गोपिन के बाक्य उद्धव भगवान प्रति कहत हैं ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग सारंग ॥ देखिरी हरि जूके नयन को छवि । यह अनुमान मन मान मानिनी अम्बुज सेवत रवि ॥ खंजरीट अति बिथा चपल भये बन मृग जलमह मीन रहे दबि । इते मान तन कछू कहत हैं कुकबि ॥ इनसों नेाएई हरि आवे न कछु फबि । सूरदास उपमा जुगई सब ज्यों होमत हबि ॥ १८१ ॥ राग केदारो ॥ फिरि ब्रज बसहु गोकुल नाथ । बहुरि न तुमहिं जगाय पठबों गोधननि के साथ ॥ बरजों न माखन खात कबहूं देहो देत लुटाय । कबहूं न देहों उरहनो जशुमति के आगे जाय ॥ दौरि दामन देउंगी लकुटी न जशोमति पानि । चोरी न देहु उघारिके औगुन न कहिहों-आनि ॥ करौ न तुमसों मान हठ हठि होंन मांगत दान । कहि होंन मृदु मुरली बजा-वन करन तुमसों गान ॥ कहिहोंन चरणनि देन जावक गुहन बेनी फूल । कहि होंन करन सिंगार बट तर बसन जमुना कूल ॥ भुज भूषण जुत कन्ध धरि कै रास नृत्य न करा-उं । हों संकेत निकुंज बसि कै दूति मुखनि बुलाउं ॥ कोटि नारिसों बिलसि आवउ भृकुटि रिस न चढ़ाउं । दन्त दे उन पियत मुख मुख श्रवण स्वास बढ़ाउं ॥ बोधनारि अयान बावरि सम सरी ज्ञत काज । तुमतो चतुर सुजान सांवरे प्रीति लागेलाज ॥ चरण मृदु तर कुच कठिन सों करिहों नहीं संजोग । दृढ भुजाभरि समर कटि भरि उलटो न करिहौं भोग ॥ एक बार जु दरश दिखवहु प्रीति पंथ बसाय । चंवर करों चढ़ाय आसन नयन अंग अंग लाय ॥ देहु दरशन नन्द नन्दन मिलनही की आस । सूर प्रभुकी कुंवर छवि को मरत लोचन प्यास ॥ १८२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ * ॥ उद्धव प्रति कुब्जा के बाक्य ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग सारंग ॥ सुनियों एक संदेसो ऊधो तुम गोकुल को जात । तापाछें तुम कहियो उनसों एक हमारी बात ॥ मात पिता को हेत जानि कै कान्ह मधु-पुरी आये । नाहिन श्याम तिहारे प्रीतम ना जसुदा के जाये ॥ समुझो बूझो अपने मन में तुम जो कहा भलो कीन्हो । कह बालक तुम मत्त ग्वालिनी सबै आप बस कीन्हो ॥ और जशोदा माखन काजे बहुतक त्रास दिखाई । तुमहिं सबै मिलि दांवरि दीनी रंच दया नहि आई ॥ अरु वृषभान सुता जो कीनी सेा तुम सब जिय जानेा । याही लाजतजो ब्रज मोहन अब काहे दुख मानेा ॥ सूरदास यह सुनि सुनि बातें श्याम रहे शिरनाई । इत कुब्जा उत प्रेमग्वालिनी कहत न कछु बनि आई ॥ १ ॥ राग मलार ॥ कोऊ आवत हैं तन श्याम । बैसेइ पटुबैसेइ रथ बैठनि बैसिय है उर दाम ॥ जो जैसें उठि तैसिय दौरी छांडि सकल गृह काम । रोम पुलक गद गद भई तिहिं छिनु सोचि अंग अभिराम ॥ इतनी कहत आइ गए ऊधो रहो ठगो तिहि ठाम । सूरदास प्रभु ह्या क्यों आवै बंधे कुब्जा

रस भाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ कबहूं सुधि करत गोपाल हमारी । पूछत नन्द पिता ऊधो सों अब जसुमति महतारी । कबहुंतो चूक परी अनजानत कह अब के पछिताने । वासुदेव घर भीतर आये हम अहीर नहि जाने । पहिले नरग कह्यो हो हमसों या देखे जिनि भूले । सूर दास स्वामी के बिछुरे राति दिवस उर शूले ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ भली बात सुनियत हैं आजु । कोऊ कमल नयन पठयो है तन बनाइ अपनो सो साजु । बूझौ सखा कहौ कैसे के अब नाही की बे कछु काजु । कंस मारि वसुदेव गृह आने उग्रसेन को दीनों राजु । राजा भये कहां हैं यह सुख सुरभि संग बन गोप समाजु । अब जो सूर करहु कोउ कोटिक नाहिन कान्ह रहत ब्रज आजु ॥ ४ ॥ राग नट ॥ ऊधो हम आजु भई बड़ भागी । जैसे सुमन सुगन्ध लै आवतु पवन मधुप अनुरागी । अति आनन्द बढ्यो अंग अंग में परेन यह सुख त्यागी । बिसरयो सब दुख देखत तुमको श्याम सुन्दर हम लागी । ज्यों दर्पन मधि दृग निरखत दृष्टि तहां नहि जाई । त्योंहीं सूर हम मिली सांवरे बिरह बिथा बिसराई ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ पाती सखि मधुबनतें आई । ऊधो हाथ श्याम लिखि पठई आइ सुनहु मेरी माई । अपने अपने गृहतें दौरी लै पाती उर लाई । नयननि नीर निमिष नहि खण्डित प्रेमन बिथा बुझाई । कहा करौं सूने यह गोकुल हरि बिनु कछु न सुहाई । सूर दास प्रभु कौन चूकतें श्याम सुरति बिसराई ॥ ६ ॥ राग नट ॥ सुनु गोपी हरि को संदेसु । करि समाधि अन्तर गति चितवौ प्रभु को यह उपदेसु । वे अबिगत अबिनाशी पूरन घट घट रहे समाइ । तिहि निरचै कै धावहु ऐसे सचित कमल मन लाइ । यह उपाइ करि बिरह तरहुगी मिलै ब्रह्म तब आइ । तत्व ज्ञान बिनु मुकति न होई निगम सुनावत गाइ । सुनत संदेस दुसह माधो के गोपी जन बिलखानी । सूर बिरह की कौन चलावै नयन ढरत अति पानी ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ हों तुम पै ब्रज नाथ पठायो । आतम ज्ञान सिखावन आयो । आपुहि पुरुष आपुही नारी । आपुहि बान प्रस्थ व्रत धारी । आपुहि पिता आपुहीं माता । आपुहि अंगिनी आपुहि भ्राता । आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी । आपुहि राजा आपुहि रानी । आपुहि धरती आपु अकासा । आपुहि स्वामी आपुहि दासा । आपुहि ग्वाल आपुहीं गाई । आपुहि आपु चरावन जाई । आपुहि अंबर आपुही फूल । आतम ज्ञान बिना जग भूल । रंकराइ दूजो नहि कोइ । आपुहि आपु निरंजन सोइ । यहि प्रकार जाको मन लागे । जरामरन जीते भ्रम भागे । सुनि ऊधो यह कौन सयानी । तुम तो महा पुरुष बड़ ज्ञानी । जोगी होइ सु जोगहि जाने । नवधा भक्ति सदा मन माने । भावभगति हरि जन चित धारे जोति रूप शिव सनक बिचारे । तुम कह रचि रचि कहत सयानी । अबला हरि के रूप दिवानी । जात पीर बभा नहि जाने । बिनु देखे कैसे रचि माने । फिरि फिरि कहै उहै सुधि आवै । श्याम रूप बिनु और न भावै । जोग समाधि जोति चित लावै । परमानन्द परम पद पावै । नवकिशोर को जबहि निहारैं । कोटि जोति वाहि पर बारैं । सजल मेघ घनश्याम शरीर । रूप ठगी हलधर के बीर । सिर सिखण्ड

कुण्डल बनमाल । क्यों बिसरैं वे नयन बिशाल । मृग मद तिलक अलक घुघरारे । उन मोहन मन हरे हमारे । भृकुटी बिकट नासिका राजे । अरुण अधर मुरली कल बाजे । दाडिम दसन दमक दुति सोहे । मृदु मुसकानि मदन मन मोहे । चारु चिबुक उर परगज मोती । दूरि करत उड़गन को जोती । कङ्कन किङ्किनि पदिक बिराजे । चलत चरण कलनूपुर बाजे । बनकी धातु चित्र तनु कीये । वह छवि चुभि जुरही हम हिये । पीत बसन छवि बरनि न जाई । नखसिख सुन्दर कुंवर कन्हाई । रूपरासि ग्वालनि को संगी । कब देखे वह रूप त्रिभंगी ॥ जो तुम हित की बात सुनावहु ॥ मदन गोपालहि क्यों न मिलावहु । ताहि भजहु तिनि सबै सयानी ॥ खोजत जाहि महामुनि ज्ञानी ॥ जाके रूपरेख कछु नाही ॥ नयन मूंदि चित बहु चित माही । हृदै कमल में जोति बिराजै । अनहद नाद निरंतर बाजै इडा पिंगला सुषमन नारी । सून्य सहज में बसै मुरारी । मात पिता नहि दारा भाई ॥ जल थल घट घट रहे समाई । यहि प्रकार भव दुस्तरतरिहो । जोग पंथ क्रम क्रम अनुसरिहो ॥ रे मधुकर मुख मूंदहु जाई ॥ हमरे चित बित हरे जदुराई ॥ ब्रज बासिनि गोपाल उपासी ॥ ब्रह्म ज्ञान सुनि आवै हांसी ॥ अबलों जोग कबहुं नहि आयो ॥ मानहुं कुबिजा रूप में पायो । खोलि सुगाहक पाइ दिखायो । माधो मधुकर हाथ पठाये । अबला ठगी अलपरत हेरी । सो ठग ठग्यो कंसकी चेरी । राम जनम तपसा जदुराई ॥ तिहि फल बधू कूबरी पाई ॥ सीता बिरह बहुत दुख पायो । अब कुबिजा मिलि हियो सिरायो ॥ ज्ञान निरास कहा लै कीजै । जोग मोट दासी सिर दीजै ॥ वह अच्युत अबिगत अबिनासी ॥ त्रिगुण रहित बपु धरे न दासी ॥ कहै मधुकर सुनि बात हमारी । यह वह सून्य सुनहु ब्रज नारी । नहि दासी ठकुराइनि कोई । जहं देखहु तहं ब्रह्महि सोई । आपुहि औरहि ब्रह्महि जाने ॥ ब्रह्म बिना दूसर नहि माने । बार बार ए बचननि वारो ॥ भक्ति बिरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥ ऐसे कहा उपदेसे तेरे ॥ नयन सुबस नाहीं अलि मेरे ॥ हरि पथ जोवत निमिषन लागे । कृष्ण बियोगिनि तिसिदिन जागे । नंद नंदन को देखे जीवे ॥ रुचि वह रूप पवन नहि पीवे ॥ जब हरि आवै तब सुख पावै ॥ मोहन मूरति निरखि सिरावै । दुसह बचन अलि हमहि न भावहि ॥ जोग कहा ओढें कि डसावहि ॥ ऊधो कहे धन्य ब्रज बाल ॥ जिन के सरबस मदन गोपाल । वह मत त्यागों यह मति आई । तुम्हरे दरस भगति मैं पाई ॥ तुम समगुरु मैं दास तुम्हारो ॥ भगति सुनाइ जगत निस्तारो । भ्रमरगीत जे सुनें सुनावैं ॥ प्रेम भक्ति सो प्राणी पावै ॥ सूर दास गोपी बड़ भागी ॥ हरि दरसन की ठडोरी लागी ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर भली सुमति मति खोई ॥ हाँसी होत लगी या ब्रज में जो गहि राखहु गोई ॥ आतमराम लखावत डोलत घट घट व्यापक जोई ॥ चापे कांख फिरत निरगुण को ह्यां गाहक नहि कोई ॥ प्रेम कथा सोई पै जाने जापे बीती होई ॥ तू नीरस एतो कह जाने बूझि देखिबे वोई ॥ बड़ो दूत तू बड़ ठौर को कहिये बुद्धि बड़ाई ॥ सूर दास

पूरी पहि षट पद कहत फिरत है सोई ॥ ९ ॥ राग सारङ्ग ॥ मुनि अत ज्ञान कथा अलिगात । जिहि मुख सुधा बेणु रव पूरित हरि प्रति छिनहि सुनात ॥ जहं लीला रससखी समाजहि कहत कहत दिनजात ॥ विधना फेरि कियोअब देखियत तहां षटपद समुझात ॥ विद्यमान रस रासलहै तेकत मन दूत अरुझात ॥ रूप रहित कालुबकत बदनतें मतिकोउ ठग भुरकात ॥ साधुबादश्रुति सार जानिको उचित न मन बिसरात ॥ नद नन्दन कर कमलनि री छवि मुख उरपर परसात ॥ एकएकतें सबै सयानी व्रज सुन्दरिन सकात ॥ सूरश्याम रस सिंधु गामिनी नहिंवह दसा हिरात ॥१०॥ राग सारंग ॥ ऊधो इतनो कहियो जाइ ॥ अति छमगात भईहैं तुमबिनु बहुत दुखारी गाइ ॥ जल समूह बरषति अंखिअनितें छूंकत लैलै नाउं ॥ जहां जहां गोदोहन करतें ढूंढति सोइ सोइ ठाउं ॥ परति पछारि खाइतेहो छिनु अति ब्याकुलहै दीन ॥ मानहु सूर काढ़ि डारे हैं बारि मध्यतें मीन ॥११॥ राग सारंग ॥ ऊधो जोग सिखावन आये । सिङ्गी मस्म अधारी मुद्रा लै व्रज नाथ पठाये ॥ जोपै जोग लिख्यो गोपिन कौ कर रस रास खिलाये । तबहि ज्ञान काहे न उपदेख्यो अधर सुधा रस प्याये ॥ मुरली शब्द सुनत बन गवनति सुत पति गृह बिसराये । सूर दास संग छांड़ि श्याम कौ मनहि रहे पछिताये ॥ १२ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऊधो लहनो अपनों पैये । जेकछु विधना रची सुभैये आन दोष न लगैये ॥ कहिये कहा जु कहत न बनई सोचि हृदय पछितैये । कुब्जा वरु पावै मोहन सों हमहो जोग बतैये ॥ आज्ञा होय सोई तुम कहिबो बिनती यहै सुनैये । सूर दास प्रभु कृपा जानि जो दरशन सुधा पिवैये ॥ १३ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऊधो हमैं श्याम सुन्दर बिनु सब कोऊ समुझावै । जिहि विधि मिलहि श्याम घन सुन्दर सो विधि कोउ न बतावै ॥ यद्यपि यतन किये अनेक परि तहां न मन बिरमावै। तदपि हठी लै हम रे लोचन और न देख्यो भावै ॥ वासर निशा प्राण वल्लभ बिनु रसना और नगावै । सूर दास प्रभु प्राणहि लगते कहिये जो कहि आवै ॥ १४ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऊधो कहा करै लै पाती । जो लगि नाहि गोपालहि देखति विरह दहत मेरि छाती ॥ निमिष एक मोहि बिसरत नाहिं न शरद समय की राती । मनतौ तबही तें हरि लीनों जब भयो मदन बराती ॥ पीर पराई कह तुम जानों तो तो श्याम संहाती । सूर दास स्वामी सों तुमपुनि कहियो ठकुर सुहाती ॥ १५ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऊधो बिरहो प्रेमु करै । ज्यों बिन पुटपट गहे नरंगहि पुटगहें रसहि परै ॥ ज्यौं आवां घट दहत अनल तनु तो पुनि अमिय भरै ज्यौं धरि बीज देह अंकुर चरि तौसत फरनि फरै ॥ जो सर सहत सुभट सनमुख रण तोर बिरथहि ररै । सूर गोपाल प्रेम पथ जल तें कोऊ न दुखहि डरै ॥ १६ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो इतनी जाय कहो । सब बल्लवी कहति हरिसों ए दिनमधुपुरिहि रहों॥ आज काल तुमहू देखत हो तपत तरनि सम चन्द । सुन्दर श्याम परम कोमल तनु क्योंवस हे नद नन्द ॥ मधुर मोर पिक परुष प्रबल अति बन उपवन चढ़ि बोल । सिंह चक्र सम गाय बच्छ व्रज बीथिनि बीथिनि डोलत ॥ आसन असन बसन बिष अहिसम भूषन भवन भंडार । जित कित फिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रति धनुष लयें सतमार ॥ तुमतौ परम साधु

कोमल मन जानत हो सब रीति । सूर श्याम कों क्यों बोलें व्रज बिन टारे यह ईति ॥ ॥ १७ ॥ राग मलार ॥ जो पै ऊधो हृदये माझ हरी । तो पै इती अवज्ञा उन पै कैसें सही परी ॥ तबहि दवा द्रुम दहनन पाये अब क्यौं देह जरी । सुन्दर श्याम नि कसि उरतें हम शीतल क्यों न करी ॥ इन्द्र रिसाय बरष नयननि मग घटत न एक घरी । भीजत शीत नीत तनु कांपत रहे गिरि क्योन धरी ॥ कर कङ्कण दरपण लै दोऊ अब यहि अनख मरी । एते मान सूर सुनि जोगज बिरहिनि बिरह भरी ॥ १८ ॥ राग मलार ॥ ऊधो इत हितु कै रहियो । या व्रज को व्यौहार जितो है सब हरि सों कहियो ॥ देखि जात अपनी इन आंखिनि दावानल दहियो । कहं लों कहों बिथा अति लाजति यह मन को सहियो ॥ कितो प्रहार करत मकर ध्वज हृदय फारि चहियो । यह तन नहि जरि जात सूर प्रभु नयननि कों बहियो ॥ १९ ॥ राग मलार ॥ ऊधो यहि व्रज बिरह बढ्यो । घर बाहिर सरिता बन उपवन बल्ली द्रुमनि चढ्यो ॥ वासर रैनि सधूम भयानक दिशि दिशि तिमिरि पढ्यो । दुंद करत अति प्रबल हेात पुर पथसों अनल डढ्यो ॥ जरि किन हेात भस्म छिन महियां हा हरि मंच पढ्यो । सूर दास प्रभु नद नन्दन बिनु नाहिन जात कढ्यो ॥ २० ॥ रागमलार ॥ बरु यहि कुब्जा भलो कियो ॥ सुनि सुनि समाचार हंसि ऊधो अधिक जुड़ात हियो ॥ जाकौ गुण हरि रूप नामु हरि हरयो सेा फिर न दियो । तिहि अपनों मन हरत न जान्यों हंसि हंसि लेागु जियो ॥ सूर तनक चन्दन चढ़ाय कें अधरा मृत जो पियो । और सकल नागर नारी को दासी दाउ लियो ॥ २१ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो तुम कहियो जैसें गेाकुल आवहिं । दिन दश रहे सु भलो कोनो अब जिनि गहरु लगावहिं ॥ तुम बिनु कछु न सुहाय प्राण पति कानन भवनन भावहिं । बाल बिलखि मुख गैान चरत तिन बछरनि क्षीर न प्यावहिं ॥ देखत अपनी आंखिनि ऊधो हम कहि कहा जनावहिं । सूर राम बिनु तपति रैनि बिनु हरिहि मिले सचु पावहिं ॥ २२ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो अबजो कान्ह नये हैं । जिय जानों अरु हृदय विचारो हमनइ तो दुख सैहैं ॥ बूझो जाय कौन के ढेाटा काऊतर तब दैहैं । खाया खेल्यो संग हमारे तहांको कहा बनैहैं ॥ गेाकुल मणि मथुरा के बासी कोलों झूठो कहिहैं । अब हम लिखि पठवन चाहति हैं वहां पाँति नहि पैहैं ॥ इन गैयनि चरिवेा छांड्यो है जो नहि लालु चरैहैं । एते पर नहि मिलत सूर प्रभु फिरि पोछे पछितैहैं ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो हमें दोउ कठिन परी । जो जो कहिं तौ सुनि सठ ज्ञानी तन तजि रूप हरी ॥ गुण गावहिं तौ शुक सनकादिक संग ध्यावें तौ लोला फरी । आसा अवधि सन्तोष धरहि तौ धर्म न व्रज सुन्दरी ॥ श्यामा हे सब सखी सुजानी पै सब बिरह भरी । शेाक सिन्धु तरिवेकी नौका जिहि मुख मुरलि धरी ॥ निशि दिन फिरत निरंकुस अति बड़ माते मदन करी । ढाहेगेा सब धाम सूर जो चिते न वह के हरी ॥ २४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो बहुते दिन गये चरण कमल बिमुखही । दरश हीन दुखित दीन छिनु छिनु बिपदा सही ॥ रजनी अति प्रेम पीर गृह वन मन धरे न धीर । बासर मग जोवत उर सरिता बही नयन नीर ॥ अब आवन

अवधि आस सोई गनि घटत खास । इतौ बिरह बिरहिनि क्यों सहि सकै कहि सूर दास ॥ २५ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो कहत न कछू बनै । अधरामृत आश्वादिनि रसना कैसे जोग भनैं । जेहि लोचन अवलोके नख सिख सुन्दर नन्द तनैं ॥ ते लोचन क्यों जाय और पथ ले पठये अपनैं । रागिनि राग तरंग तान धन जे श्रुति मुरलि सुनै ॥ ते श्रुति जोग संदेस कठिन कहि कांकर मेलि हनैं । सूरदास श्यामा मोहन के रह गुण विविध गनैं ॥ कनक लता तें उपजे न मुकता पट पद रंग चुनैं ॥ ॥ २६ ॥ राग मारू ॥ ऊधो इन नयननि नेम लियो । नद नन्दनसों प्रति व्रत बांध्यौ दरशत नाहि दियो ॥ इंदु चकोर मेघ अरु चातक ऐसेहि विविध दृयो । तैसें ए लोचन गोपालें एकटक प्रेम पियो ॥ ज्ञान कुसुम लै आये ऊधो चपल न उचित कियो । हरि मुख कमल अमी रस सूरज चाहत वहे लियो ॥ २७ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो हरिके औरे ढंग । जहां न अनंग रसनेह रूपको तहां दई गति दई अनंग ॥ जिहिं अनंग वपु असुर दासिका ते भई नौतन अंग । अपु विषता तजि दीऊ सम भए बानक ललित त्रिभंग ॥ कनक बेलि सत दल शिर मण्डित दृढ़ तर लता लबंग । श्यामा सदन विसारि भए जाय चंचल नारि पलंग ॥ ते सुख बहुत पावहिंगी जेकरिहैं अंग संग । का कारनहू जो नहिं व्रज के सूर प्रभू थो रंग ॥ २८ राग केदारो ॥ ऊधो व्रज रिपु बहुरि जिये । जे हमरे कारन नद नन्दन हति हति दूरि किये ॥ निशिके बेष बकी है आवति अति डर करति सकम्प हिये । तिन्हपेंतें तन प्राण हमारे रविहीं छिनक छिनाय लिये । वन टक रूप अघासुर समगृह कितहू तोन वितैस किये । कोटिक काली सम कालिन्दी दोषत सलिल न जात पिये ॥ अरु ऊंचे उखास तृणावर्त्त तिहिं सुख सकल उड़ाय दिये । केसी सकल कर्म कैसो बिनु सूर शरण काको तकिये ॥ २९ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो कहिये काहि सुनाए । हरि विकुरत जेती सहियत हैं इतौ विरह के घाये ॥ वरु माधो मधुवनही रहते कत जशुदा के आए । कत प्रभु गोप भेष व्रज धारयौ कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरि धारि इन्द्र मद मेट्यौ कत बन रास बनाए । अब कह निठुर भए हम ऊपर लिखि लिखि जोग पठाए ॥ परम प्रवीन सबै जानत हौ तातें यह कहि आए । अपनी कौन कहे सुनि सूरज मातु पिता बिसराए ॥ ३० ॥ राग सारंग ॥ हमहूं तौ ऊधो अपनो सो कठिन करतिमन निशि दिन । मधुप कथा कहि कहिसमुझावत तदपि न रहत नन्द नन्दन बिनु ॥ बरजत अब निशि दिवस नयनजल मुख वचननि कछु और चलावति । अनेक भांति चित धरति निठुरता सब मिटि सुरति यहै जिय आवति ॥ कोटि शक्र सम सुख अनु मानति हरि समीप सम तानहि पावति । थकित सिंधु नौकाके खग ज्यों फिरि फिरि ओई गुण गावति ॥ जोइ जोइ बचन विचारति अन्तर तेइ तेइ अनल अधिक उर दाहति । सूरदास परि हरि न सकति तनु बारक बहुरि मिल्योई चाहति ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो भली करी गोपाल । आपुन तौ आवत नाहीं यहं उहां रहे यहि काल ॥ चन्दन चन्द हुतो तब शीतल कोकिल शब्द रसाल । अब समीर पावक सम लागत अब व्रज उलटी चाल ॥ हार चीर कंचुकि कण्टक भए तरुनि तिलक भये

भाल । सेज सिंधु गृह तिमिर कन्दरा सर्प सुमणि मणि माल ॥ हमतो न्याय सहैं एतो दुख वन वासी जुगुबाल । सूरदास स्वामी सुख सागर भोगी भ्रमर भुवाल ॥ ३२ ॥ राग सोरठ ॥ अपने मन सुरति करत रहिवी । ऊधो इतनी बात श्यामसों समौ पाय कहवी ॥ दोष वसत की चूक हमारी कछु न जिय गहिवी । परम दीन जदुनाथ जानि के गुण विचारि सहिवी ॥ एकहि बार दयाल दरश दै विरह रासि दहिवी । सूरदास प्रभु बहुत कहा कहों वचन लाज बहिवी ॥ ३३ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो नट नन्दनसों इतनी कहियो । जद्यपि व्रज अनाथ करि छांड्यो तदपि बारहूक चितु करि रहियो ॥ तिनुका तोरि करहु जिनि हमसों एक बास की लज्जा गहियो । गुण औगुणनि दोष नहि कीजतु दासनि दास कि इतनी सहियो ॥ तुम विनु श्याम कहा हम करि हैं यह अब लम्बन सपने लहियो । सूरदास प्रभु यह कहि पठई कहां जोग कहां मोहन दहियो ॥ ३४ ॥ राग सारंग ऊधो हरि करि पठवत जेती । जोमन हाथ हमारे होतो तौ कत सहती एती ॥ हृदय कठोर कुलिशहूं ते अति तामें चेत अचेतो । तब कुच बीच अंचल नहिं सहती अब जमुना की रेतो ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को सरण देहु अब सेतो । विनु देखे मोहि कलन परत है जाको श्रुति गावत है नेतो ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो खरीये जरी हरिके फूलन की । कुंज कलोल करे वनही वन सुधि बिसरी वा भूलन की ॥ जब हम दौरि अंक भरि लीन्हो देखि छांह नव मूलनकी । अब वह प्रीति कहालों बरनौ वा जमुना के कूलन की ॥ वह छवि छाकि रहे दोउ लोचन बिछियां गहि बन झूलन की । खरकति हैं वह सूर हिये में माल दई मोहि फूलन की ॥ ३६ ॥ राग नट नारायण ॥ ऐसी बात कहौ जिनि ऊधो । ज्यों बिदोष उपजे जक लागत निकसत वचन न सूधो ॥ आपुन पौ उपचार करौ अति तब औरनि सुख देऊ । मेरे कहैं बजासत राखो गिरके वारे गेऊ ॥ जो तुम पद्म पराग छांडि के करऊ ग्राम बस बास । तो हम सूर यहो करि देखें निमिष छांड़हो पास ॥ ३७ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो जू देखेहो व्रज जात । जाय कहियो श्यामसों या विरह को उत पात ॥ नयन कछू न सूझई कछु श्रवण सुनत न बात । श्याम विनु आसून बूड़त है दुसह धुनि भई बात ॥ आए बैतौ आइ जो बज्रर शरीर समात । सूरके प्रभु बहुरि मिलहो पाछेहू पछितात ॥ ३८ ॥ राग सोरठ ॥ ऊधो यह हरि कहा करौ । राज काज चित दियो सांवरे गोकुल क्यों बिसरौ ॥ जोलों घोष रहे तोलों हम सन्तत सेवा कीनी । बारक कबहुं उलूखल परसें सोई मानि जिय लीनी ॥ जो हमसोंन कोटि करौ तुम नाथ कबहुंतें राजकुमारि । तौ ए नन्द पिताकहं मिलिहैं अब जसुमति महतारि ॥ कहं गोधन कहं गोप वृन्द सब कहां गोरस को खैबो । सूरदास अब सोई करौं जिहिं होय कान्ह को ऐबो ॥ ३९ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो ऐसो काम न कीजै । एक रंग कारे तुम दोऊ कोई सेत क्यों कीजै ॥ फेरि फेरि के दुख अब गाहहिं हम सब करी अचेत । कत पर पर गोता मारत हो ऐनि भूड के खेत ॥ तरपट कोट कीट कुल जनमि सुकहा भलाई जाने । फेरत गांठि बांस दातनुसों बार बार ललचानें ॥ छाड़ि कमल सों हेतु आपनो तू कत अनतहि जाय । सम्पट ढीठ बहुत अपराधी कैसें

मन पति आय ॥ इहे जु बात कहतिहौं तुमसों फिरि मति कबहूं आवहु । एक बार समुझावहु सूरज अपनो ज्ञान सिखावहु ॥ ४० ॥ राग सारंग ॥ ऊधो और कथा कहो । तजि जश ज्ञान सनेतावत तनु वरु गहि मौन रहे ॥ रवि द्रुम प्रीति रीति नयननि जल सींचि ध्यान धर लागी । ताके बीच अति सुक मन परवत श्याम शूल अनुरागी ॥ ग्रीषम अलि आये प्रगटहिं व्रज कठिन जेाग रवि हेरे । बन मुरझात सूर को राखै मेह नेह बिन तेरे ॥ ४१ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो सांच कहेा हम आगें । घरमें कहा बचै कहि ताकें प्रकट आगि के लागें ॥ जा दिन तें गेापाल सिधारे स्वास अनिल तन जारयो । रूपि हिरदय मुख चन्दु मुग्ध भयेा काढि बाहिरेा डारयो ॥ एतेपर तोहि सूझत नाहिन जेाग सिखावन आये । फिरि लै जाहु सूर के प्रभु पे जिहि हैं यहां पठाये ॥ ४२ ॥ रागसारंग ॥ ऊधेा सब स्वारथ से लेाग । आपुन केलि करत कुबा संग हमहि सिखावत जेाग । भ्रम बन जात सांवरी मूरति जिनि देखहि वहि रूप ॥ अब रस रास पुलिन जमुना के करत लाज भये भूप ॥ अनु दिन नयन निमेषन लागत भयेा बिरह अति रेाग । मिलवहु कान्ह कुमार अश्वनी मिटे सूर सब सेाग ॥ ४३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधेा दीनी प्रीति दिनाई । बातनि सु हृद करम कपटी के चले चेार की हाई ॥ बिर ह बीच बध बारु सलिल मानों अधर माधुरी प्याई । सेाहैं जाय खगी अन्तर गति औ- षध बल न बसाई ॥ गरल दान दीयेा पै नीकौ या कहं नहीं उपाई । कै मारै कै काज सरै तिहि दुख देख्यो नहि जाई ॥ कहि मारै सेा सूर कहावै मित्र द्रोह न भलाई । सूर दास ऐसे अलि जगमें तिनकों गति नहि काई ॥४४॥ राग सारंग ॥ ऊधेा जेा हरि आवैं तौ प्राण रहैं । आवत जात उलट फिरि बैठत जीवन अवधि गहैं ॥ जबहे दाम ऊखल सों बांधे बदन नवाय रहे । चुभि जु रहीं नवनीत चेार छबि क्यों भूलत नहि ज्ञानगहे ॥ तिनसों ऐसो क्यों कहि आवे जे कुल पतिकी चास सहे । सूरश्याम गुण रस निधि तजिकैं क्यों घट नीर बहे ॥ ४५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधेा यह निश्चय हम जानो । खेायेा गयेा नेह नग उनपै प्रीति कोठरी भई पुरानी ॥ पहिले अधर सुधा कर सींचो दियेा पेाष बहु लाड़ लडानी । बहुरें खेलु कियेा सिशु केशव गृह रचना ज्यों चलत बुझानी ॥ ऐसे ही परतीति दिखाई पन्नग कंचुरि ज्यों लपटानी । बहुरों सुरति लई नहि जैसे भंवर लता त्यागत कुम्हिलानी ॥ बहु रंगी जहां जाय तहीं सुख एक रंग दुख देह दहानी । सूर दास पशु धनी चेार के खायेा चाहत दाना पानी ॥ ४६ ॥ राग सारंग ॥ ऊधेा हम हैं तुम्हरी दासी । काहे कों कटु बचन बेालत हेा करत आपनी हांसी ॥ हमरे गुणहि गांठि किनि बांधौ हम कह कियेा बिचारु । जैसी तुम कीनी सेा सबहूं जानतु है संसारु ॥ जेा कछु भलो बुरो तुम कहिहेा सेा सब हम सहि लैहैं । आपुन कियेा आप भुगतहिंगे दोष न काहू दैहैं ॥ तुम तौ बड़े बड़े के पठये अरु सबके सरदार । यह दुख भयेा सूर के प्रभु सुनि कहत लगावन छार ॥ ४७ ॥ राग सारंग ॥ ऊधेा तुम कहत हृदय रहत है । कैसे होय प्रतीति क्रूर सुनि ए बातें जु सहत है ॥ बासर रैनि कठिन विरहा नल अन्तर प्राण दहत है । प्रजरि प्रजरि पचि निकसि धूम अब नयननि नीर

बहत है ॥ अधिक अवज्ञा होत देह दुख मरजादा न गहत है । कहि क्यों मन माने ए सूर प्रभु इनि बातनि जु कहत है ॥ ४८ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऊधो तुमही हौ सब जाना। हमकों सोइ सिखावन दीजै नंद सुवन की आन ॥ आमिष भोजनु हितु है जाके सेा क्यों साग प्रवान । तामुख सेमि पात क्यों भावत जामुख खाये पान ॥ किंगिरि सुर कैसे सचु मानत सुनि मुरली को गान । ताऊपर क्यों निर्गुण आवतु जा उर श्याम सुजान ॥ हम बिनु श्याम बियोगिनि रहिहैं जब लगि यहि घट प्रान । सुख ता दिनते होय सूर प्रभु व्रज वासिन के भान ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो इहै विचारु गहौ । के तनु गये भलौ मानों के हरि व्रज आय रहौ ॥ कानन देह बिरह दौ लागो इन्द्री जीव जरौ । बुझै श्याम घन कमल प्रेम मुख मुरली बूंद परौ ॥ चरण सरोवर मीन मनु रहै एक रस रीति तुम निर्गुण बारू महं डारेा सूर कौन यह नीति ॥ ५० ॥ राग सारङ्ग ॥ ऊधो कत वे बातें चालो । अति मीठी मधुरी हरि मुख की हैं उर अन्तर साली ॥ श्याम सघन तन सींची वेली हस्तकमल धरि पाली । अब वे बेली सुखन लागी छांडि दई हरि माली ॥ तबतें कृपा करत व्रज ऊपर संग लता व्रज बाली । सूर श्याम बिनु मरि न गई क्यों बिरह बिथा को घाली ॥ ५१ ॥ राग नट ॥ ऊधो जोग की गति सुनत मेरे अंग आगि बई । सिलगि सिलगि हम रही तनमें फूक आनि दई ॥ जोग हम कों भोग कुजहि कौने सिख सिखई । सिंह तिनुका चरन लागो सुनेा बात नई ॥ मिटै नाहिन कर्मरेखा जो विधि ठाठ ठई । सूर प्रभु की कृपा जापर सकल सिद्धिभई ॥ ५२ ॥ राग केदारेा ॥ ऊधो जो हरि हितू तिहारे । तेा तुम कहियेा जाय कृपा कै जे दुख सबै हमारे ॥ उर तरवर ज्यों जरति बिरहिनी तुम दौं ज्यों हम जारे । नहि सिरात नहि जरत छार ह्वै सुलगि सुलगि भये कारे ॥ जद्यपि उमगि प्रेम जल भिजवतु बरषि बरषि घन तारे । जो सींचै यहि भांति जतन करि तेा इतने प्रति पारे ॥ कीर कपेात कोकिला खञ्जन बधिक बियेाग बिडारे । इन दुःखनि क्यों जियहि सूर प्रभु व्रज के लेाग विचारे ॥ ५३ ॥ राग-धनाश्री ॥ ऊधेा कहत संदेसेा आनि । कहा करों वा नंद नन्दन सों हेात न हित चित हानि ॥ जेाग जुगति किहि काज हमारे जदपि महा सुख खानि । सनी सनेह श्याम सुन्दर सों हिलि मिलिके मन मानि ॥ सेाहत लेाह परस पारसके ज्यों सुवरन बन बानि। पुनि वह चारु चुम्बक सोंनते लटपटाय लपटानि ॥ परहित निरगुण नीरस नित नित निगमहुं परति न जानि । सूरदास कौने जा कारन फिरि तिनसों कीजै पहिचानि ॥ ५४ राग बिलावल ॥ ऊधेा तुम कहियेा हरिसों जाय हमारे जिय केा दरद । दिन नहि चय न रैनि नहि सेावति पावक भई जुन्हैया शरद ॥ जबतें अक्रूर लैगये मधुपुरी भई बिरह तन बाय छरद। कोनी प्रबल जगी अति ऊधेा शेाचि भई जस पीरीहरद ॥ सखा प्रबीन निरंतर हौ तुम तातें कहियत खोलि परद । काथ रूप दरशन बिनु हरि के सूर मूरि न हियेा सुरद ॥ ५५ ॥ राग गौरी ॥ ऊधेा क्यों आये व्रज धावते । सहायक सखा राज पदवी मिलि दिन दश कछुक कमावते ॥ कह्यो जु धर्म कृपा करि काननि सुतेा उत बसि कें गावते । गुरू निवर्त्त देखि आंखिनि जे श्रोता सकल अघावते ॥ इत कोउ कछून जानत

हरि बिनु तो कत जुगति बनावते । जो कछु कहत सहो सो तुम पहिं अनभो ते सुख पावते ॥ मनमोहन बिनु देखे कैसें उरसो औरहि चाहत । सूरदास प्रभु दरशन बिनु यह बार बार पछितावत ॥ ५६ ॥ राग देसाख ॥ ऊधो यहै प्रकृति परि आई तेरे । जो कोऊ कोटि करै कैसेहूं फिरत नहीं मन फेरे ॥ जा दिन तें जसुदा गृह आये मोहन जदोराई । तादिनतें हरि दरस परस बिनु और न कछू सुहाई ॥ क्रीड़त हंसत कृपा अवलोकत जुग छिनु भरि तब जात ॥ परम तृपति सबहिन तन होती लोचन हूदौ अघात ॥ जागत सोवत सपन श्याम घन सुन्दर तनु अति भावै । सूर दास अब कमल नयन बिनु बात नहीं बहरावै ॥ ५७ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मन नाहीं दस बीस ॥ एकै हुतो सुगयो हरि के संग को अराध तुव ईस । भइ अति सिथिल सबै माधो बिनु यथा देह बिनु शीस ॥ स्वासा अटकि रहे आसा लगि जीवहु कोटि बरीस । तुमतो सखा श्याम सुन्दर के सकल जोग के ईश ॥ सूरज दास रसिक की बतियां पुरवौ मन जगदीश ॥ ५८ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो ह्यां लगु है जग जी जतु ॥ जातें प्रिय सो प्रेम पुरातन बहुरि न योकरि कीजतु ॥ कहां रबि राहु राहु रबि मति रुचि विधि संजोग बनायो ॥ उहि उपकार आज उहि औसर हरि दरसन सचु पायो । कहं बे तुम जदुनाथ सिन्धु तट हम गोकुल ब्रज बासी । वह बियोग वह मिलनु कहां अब काल चालि औरासी । सूर दास मुनि चरण चर्चि किन गुरु लोकनि रुचि मानी । तब अरु अब यह परम कठिन अति निमिषै पीर न जानी ॥ ५९ ॥ राग मलार ॥ ऊधो तुम सब साथी भोरे । अब के कहैं बिलगु मानहुं में कोटि कुटिल लै जोरे । बे अक्रूर क्रूर कृत तिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे । बेघन श्याम श्याम अन्तर घन श्याम काम मह बोरे । रमधुकर दुति निरगुण गुण के देखे फटकि पछोरे । सूर दास कारेनु संगतितें कह पूजि है हि गोरे ॥ ६० ॥ राग सोरठ ॥ ऊधो समुझावै सो बेरनि । रे मधुकर निशि दिनु मरियतु है कान्ह कुंवर औसेरनि । चित चुभि रही मोहनी मूरति चपल दृगनि की हेरनि । तिनु मनु लियो चुराइ हमारो वा मुरली की टेरनि । बिसरत नाहि सुभग तन सोभा पीतांबर की फेरनि । कहत न बने कांध लकुटी धरि छबि बनगाइनि घेरनि । तुम प्रबीन हम बिरह बतावत आंखि मूंदि भट भेरनि । जिहि उर बसत श्याम घन सुन्दर मुक्ति परी सोइ झेरनि । तुम हमैं कहा लै आये ऊधो जोग दुखनि के ढेरनि । सूर रसिक बिनु क्यों जीवत हैं निर्गुण कठिन करेरनि ॥ ६१ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो श्यामहि तुम लै आवहु । ब्रज जन चातक प्यास मरत हैं स्वाति बूंद बरषावहु । घोष सरोज भये हैं संपुट दिन मणि छबै बिगसावहु । ह्यांते जाहु बिलम्ब करहु जिनि हमरी दसा सुनावहु । जो ऊधो हरि इहां न आवैं हमको तहां बुलावहु । सूर दास प्रभु बेगि मिलाए संतन मनसु पावहु ॥ ६२ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो जू जोग तबहि जान्यों । जादिन ते सुफलक सुत के संग रथ ब्रज नाथ पलान्यों । तादिन तें सब छोह मोह मिटि सुत पति हेतु भुलान्यों । तजि माया संसार सार कह ब्रज बनितनु व्रत ठान्यों ॥ नयन मूंदि मुख

रहे मौन धरि तन तपि तेज सुखान्यों । नन्द नंदन मुख मुरली धारी यहै रूप उर आन्यों ॥ सोइ संजोग जिही भूले मोहि तुमहूं जोग बखान्यों ॥ ब्रह्मा पचि पचि मुए प्राण तजितऊन तिहि पहिचान्यों । कहो सुजोग कहा लै कीजै निरगुण परतन जान्यों । सूर वहै निज रूप श्याम को हैं उर माह समान्यों ॥ ६३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो वे सुख अवै कहां ॥ छिनु छिनु नयननि निरखति वह मुख फिरि मन जात तहां ॥ मुख मुरली शिर मोर पखौआ उर घुंघुचिन के हार ॥ आगे धेनु रेनु तन मण्डित तिरछि चितौनी चारु । राति द्योस सब संग आपुने खेलत बोलत खात । सूर दास यह प्रभुता चितवत कहि न सकति यह बात ॥ ६४ ॥ राग सारंग ॥ कहि ऊधो हरि गए तजि मथुरा कौन बड़ाई पाई । भुवन चतुर्दश को यह वैभव नृप की जूठि पराई । जो यह काज करै को सेवक तो श्रुतिपढै बताई ॥ सेवत सेवत जनम घटावत दैजम सदन पठाई । तुम तौ परम साधु अन्तर हित जिनि कछु कहौ बनाई । सूर श्याम मन कहा विचार्यो कौम ठगौरी खाई ॥ ६५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो हरि हम निपट बिसारी ॥ जबहीं गवन कियो मधुबन को बहुत करी मनु हारी । अब तो वे पतिआति नाहि ने हरि पठवत महतारो ॥ उनहूं तो अलि इत आवनकी जोग संदेस निटारी । अब लगि प्राण रहे आसा तकि रजु चले परि चारी । सूर दास स्वामीसों कहियो दे तिल अंजुरि ढारी ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो जाइ बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नन्द कुमार । यह न होइ उपदेश श्याम को कहत लगावन छार । निरगुण जोति कहाँ उन पाई सिखवत बारंबार । काल्हिहि करत हुते हमरे अंग अपने हाथ सिंगार । व्याकुल भई गोपालहि बिछुरे गयो गुण ज्ञान सम्हार । ताते ज्यों भावै त्यों बकत सो नाहीं दोष तुम्हार । विरह सहन को हम सरजी हैं पाहन हृदै हमार । सूर दास अन्तर गत मोहन जीवन प्राण अधार ॥ ६७ ॥ राग बिलावल ॥ ऊधो कह मत दीनों हमहि गोपाल । आवहु री सखि सब मिलि सोचैं जो पावै नन्द लाल ॥ घर बाहिरतें बोलि लेहु सब जावदेक व्रज बाल । कमला सन बैठहुगी माई मूदहु नयन बिसाल । षट पद कही सोऊ करि देखी हाथ कछू नहि आई । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन नेकु न देत दिखाई । फिरि भई मगन विरह सागर में काहुहि सुधि न रही । पूरन प्रेम देखि गोपिन को मधुकर मौन गही । कछु धुनि सुनि श्रवणनि चातिक की प्राण पलटि तब आये । सूर सुअब के टेरि पपी है बिरही मृतकु जिवाये ॥ ६८ ॥ राग बिलावल ॥ ऊधोतें कि चतुर पद पावत ॥ जे नहि जाने पीर पराई है सर्वज्ञ कहावत । जो पै मीन नीरते बिछुरे को करि जतन जिवावत । प्यारे प्राण जात हैं जल बिनु सुधा समुद्र बतावत । हम विरहिनी श्याम सुन्दर को तुम निर्गुणहि जनावत ॥ ए दृग मधुप सुमन सब पर हरि कमल वदन रस भावत । कहि पठवत संदेसनि मधुकर कत बकवाद बढावत । करौन कुटिल निठुर चित अन्तर सूर दास कवि गावत ॥ ६९ ॥ राग कल्यान ॥ ऊधो भली करी अब आए । विधि कुलाल की ने काचे घट ते तुम आनि पकाए । रंग दियो हो काहू

सांवरे अंग अंग विच बनाए । गखन न पाए नयन नीरतें अवधि अटा ह्वै छाये । व्रज करि अंवा जोगु करि इंधनु सुरति अगनि सुलगाए । कोक उसास विरहतन प्रजुलित दासन आस पिराए । भए संपूरन भरे प्रेम जल छुवन न काहू पाए । राज काजतें गये सूर सुनि नद नंदन कर लाए ॥ ७० ॥ रागमलार ॥ ऊधो कुलिस भई यह छाती ॥ मेरो मन रसिक लग्यो नंद लालहि झरत रहत दिन राती । तजि व्रज लोक पिता अरु जननी कंठ लाइ गए काती ॥ ऐसे निठुर भए हरि हमको कबहूं न पठई पाती ॥ पिय पिय कहत रहत जिय मेरो ज्यों चातिक की जाती । सूर दास प्रभु प्राणहि राखहु ह्वै करि बूंद संवाती ॥ ७१ ॥ राग गुर्जरी ॥ ऊधो प्रेम रहित जोग सरस कवन कवन गायो । निठुर बचन दीननि सों कहें कहा पायो ॥ जिनि नयनन निशिदिन मुख हेरो । मूंदन तें नयन कहत कवन ज्ञान तेरो ॥ जिनके तुम सखा साधु बातें कहो तिनकी । जीजै सुनि श्याम कथा दासी हम जिनकी ॥ तातें सुनि मधुकर हम कहा सैन जाहीं । जामें यों प्राणनाथ नद नन्दन नाहीं ॥ अबि बेकी कुटिल क्रूर क्रूर आनि भाष्यौ । सूरदास जिय को ज्यों कान्ह कहां राख्यौ ॥ ७२ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो सरद समैहूं आयो । बहुतें दिवस रटत चातक तकि तेउ स्वाति जल पायो ॥ कबहुंक ध्यान धरत उर अन्तर मुख मुरली लै गावत । सो रस रास पुलिन जमुना की शशि देखे सुधि आवत ॥ जासों लगन प्रीति अन्तर गत औगुण गुण करि भावत । हमसों कपट लोक उर तातें सूर सनेह जनावत ॥ ७३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो कौन कुदिन छांड्यो हो गोकुल । बहुरि न आये फिरि या व्रजमें बिछुरयौ तबहिं मिल्यौ अब सोकुल ॥ गरग बचन समुझे अब मधुवन कथा प्रसंग सुन्यों हो जोकुल । सूर भए अब त्रिभुवन के पति नातो ज्ञाति लहे अब कोकुल ॥ ७४ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो राखिये वह बात । कहत हो अनहद सुबानी सुनत हम चपि जात ॥ जोग फल कूष्माण्ड ऐसें अजा मुखन समात । बार बार न भाषिये कोई अमृत तजि विष खात ॥ नयन प्यासे रूप के जल दिये नहिन अघात । सूर प्रभु मन हरयौ तौंलगि जौंलगिन तन कुसरात ॥ ७५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो तुम लोगनिसों आदेस । इकटक ध्यान धरें निशि जागी यह तुम्हरे उपदेस ॥ उलटि चित्त वित फुरेन डोले अंग भस्म रजलेस । सूरदास प्रभु गोरख बिसरी मैं जोगिनि के भेस ॥ ७६ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो बात तिहारी जानी । आए हो व्रजको बिन काजहिं दहत हुदो कटु बानी ॥ जोपै श्याम रहत घट तोकत बिरह बिथा न परानी । झूठी बातनि क्यों मन मानत चलि मत अलप गियानी ॥ जोग जुगत कीनीति अगम हम व्रजबासिनि कहा जाने । सिखवहु जाय जहां नट नागर रहत प्रेम लपटाने ॥ दासी घेरि रहे हरि तुम ह्यां गढ़ि गढ़ि कहत बनाई । निपट निलज अजहूं न चलत उठि कहत सूर समुझाई ॥ ७७ ॥ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो राखति हों पति तेरी । यहं ते जाहु जाहु आगेतें देखत आंखि बरत है मेरी ॥ तुम जु कहत गोपाल सत्य है देखहु जाइन कुब्जा घेरी । ते सब तैसें दोउ बनेहैं वे अहीर वह कंस की चेरी ॥ तुम सारिखे बसीठ पढाये कहा कहौं उनकी

मति फेरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को ग्वालनि के संग जोवत हेरो ॥ ७८ ॥ राग नट ॥ ऊधो बेद बचन प्रमान । कमल मुख पर नयन खंजन देखिहैं क्यों आन ॥ श्री निकेत समेत सब गुण सकल रूप निधान । अधर सुधा पिवाय बिछुरे पठै दीनो ज्ञान । दूरि नहीं दयाल सब घट कहत एक मयान । निकसि क्यों कै गोपाल बोधत दुखनि के दुखजान ॥ रूप रेखनि देखिये बिन स्वाद शब्द भुलान । ईष दण्ड अडारि हरि गुण गहत पानि विषान ॥ बित्त राग सुजान जोगी सकल सिद्धि निवास । निगम बाणी मेटि के क्यों कहै सूरज दास ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो अब चित भए कठोर । पूरब प्रीति बिसारी गिरिधर नैातन राचे और ॥ जादिन तें मधु पुरी सिधारे धीरज रह्यौ न मोर । जनम जनम की दासी तुम्हरी नागर नंद किशोर ॥ चितवनि बान लगाए मोहन निकसे उरबहि ओर । सूरदास प्रभु कबहि मिलहुगे कहां रहे रण छोर ॥ ८० ॥ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो अब नहि श्याम हमारे । मधुबन बसत बदलि सेलीन्हे माधो मधुप तिहारे ॥ इतनिहि दूरि भए कछु औरें जोइ जोई मगुहारे । कपटी कुटिल काक कोकिल ज्यों अन्त भए उडि न्यारे ॥ रसलै भंवर जाय स्वारथ हित प्रीतम चित न बिसारे । सूर दास तिन सों कह कहिये जे तनछ मन कारे ॥ ८१ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो पालागों भले आए । तुम देखे जनु माधो देखेदुख चैताप नसाए ॥ नंद जसोदा नातो टूटो बेद पुरानहु गाए । हम अहीरि तुम अहिर नाम तजि निर्गुण नाम लखाए । तब यहि घोष खेल बहु खेले ऊखल भुजा बंधाए । सूरदास प्रभु यहै सूल जिय बहुरिन चरण दिखाए ८२ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो बलैया लेहों बहुरि सिधारे । हमजारी जगदीश बिरह की जरियन को कत जारो ॥ हमरे प्राण बात ह्वै निबरे तुम करि जानो हांसी । यहि जीवन तें मरण भलो है करवट लीजै काशी ॥ कै हरि हमको आनि मिलैहो कै ले जैहो साथे । सूर श्याम विनु प्राण तजति है वह दुख तुम्हरे माथे ॥ ८३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो निर्गुण कहत हो तुमहीं अबधों लेहु । सगुण मूरति नन्द नन्दन हमहि आनि सुदेहु ॥ अगम पंथ परस कठिन गवन तहां नाहिं । सनकादिक भूलि परे अबला कहं जाहिं ॥ पंच तत्व पर कीरति अपर कैसे जानी । मन बच कर्म रहित सूर बेदन की बानी ॥ ८४ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो और कछु कहिवे को । सोऊ कहि डारे पालागें हम सब सुनि सहिवे को ॥ यह उपदेस आजुलों मैं सखि श्रवण सुन्यौ नहि देख्यौ नीरस कटुक तपत जोवन गत चाहत मन उर लेख्यौ ॥ बसत श्याम निकसत नएक पलहिये मनो हर ऐंन । या कहं यहां ठौर नाहीं लैराखो जहां सुचैन ॥ हम सब सखि गोपाल उपासिक तिनसों बातें छाडि । सर मधुप लै राखि मधुपुरी कुब्जा के घर गाडि । ॥ ८५ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो कहियो सबै सोहतो । जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए सो कहो ब्रजमें को यतो ॥ अन्तहु सीख सुनहुगे हमरी कहियत बात बिचारि । फुरतन बचन कछू कहिबे को रहै प्रीतिसों हारि । देखियति हो करुणा की मूरति सुनियत हो पर पीरक । सोई करो ज्यों मिटै हृदय को दाह परै उर सीरक ॥ राज पंथ तें टारि बतावत उरज कुचील कुपेंड़ो । सूरजदास समाय कहां लों अजके बदन कुंचेड़ो ॥ ८६ ॥ राग

सारंग ॥ ऊधो तुम लाए किहि काज । हितकी कहत अहित की लागति बकत न आवै लाज ॥ आपुन को उप चार करो कछु तब औरनि शिख देहु । मेरे कहे जाहु सत्व-रहो गहो सोयरो गेहु । उहां भेष नाना विधि के अरु मधु रिपुही सो बैहु ॥ हमकात-र डराति अपने शिरई कलंक है केहु ॥ सांची बात छांड़ि अब झूठी कहो कौन विधि सुनिहैं । सूरदास मुक्ता फल भोगीहंस बन्हि क्यों चुनि हैं ॥ ८७ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो उलटी रीति तिहारी सुनेसु ऐसो को है । अलप बैस अबला अहीरि सठ तिनहि योगतौ सोहै ॥ बूची खुची आंधरी काजर नकटी पहिरे बेसरि । कुंडली पटिआ पारि संवारे कोढ मिलावे केसरि ॥ बहिरी पतिसों मतौ करै तौ ऊतर जैसे पावे । सो गति होय हमै ताकीजे मधालिनि जोग सिखावै ॥ सिलई कहत श्याम की बतियां तुमको नाहिन दोष । राज काज तुमतें न सरैगो काया आपनि पोषि ॥ जातें भूलि सबै मारग में यहां आनि कह कहते । भलो भई सुधि रही हमारी मोह धार नहं बहते ॥ ८८ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो तुमहु सुनो एक बात । जो तुम कहत सिखावत सो हमें नाहिन नेंक सुहात ॥ शशि दरशन बिनु सलिन कुमोदनि ज्यों रवि बिनु जल जात । त्यों हम कमल नयन बिनु देखे तलफि तलफि मुरझात ॥ घसि चन्दन घनसार सेतन ते क्यों भला भरात । रहे श्रवण मुरली धर सों रत सिंगी सुनत डरात । अबलनि आनि जोग उपदेशत नाहिन नेंक लजात ॥ जिन पायो हरि परस सुधारस तें कैसें कटु खात ॥ अबधि आस गनि गनि जीवति हैं अब नहि प्राण खटात । सूरश्याम हम निपट बिसारी ज्यों तरु जीरण पात ॥ ८९ ॥ राग मारू ॥ ऊधो कहि मधुबन की रीति । राजा ह्वै ब्रज नाथ तिहारे कहा चलावति नीति ॥ निशि लों करत दाह दिन कर ज्यौं हुतो सदा शशि सीति । पुरवा पवन कह्यौ नहि मानत गये सहज बपु जीति ॥ कंस काज कुब्जा के मारयौ भई निरन्तर प्रीति । सूर विरह ब्रज भलो मनावत जहां ब्याह तहं गीति ॥ ९० ॥ राग मारू ॥ ऊधो काल चाल औरासी । मन हरि मदन गोपाल हमारो बोलत बोल उदासी एते पर हम जोग करहिं क्यों अविगति है अवि नासी । गुप्त गोपाल करी बन लीला हम लूटी सुख रासी ॥ लोचन उमगि चलत हरिके हित बिनु देखे बरि सासी । रसना सूरश्याम के रस बिनु चातक ह्वै तें प्यासी ॥ ९१ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो अंखियां अति अनुरागी । इकटक मग जोवति अरु रोवति भूलेहु पलक न लागी ॥ बिनु पावस पावस ऋतु आई देखत हो बिदमान । अबधों कहा कियो चाहत हो छाड़हु नीरस ज्ञान ॥ सुनि प्रिय सखा श्याम सुन्दर के जानत सकल सुभाव । जैसें मिले सूर प्रभु हमको सो कछु करहु उपाव ॥ ९२ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो तौ यह प्राण रहे । आवत जात उलटि फिरि बैठत जीवति अबध गहे ॥ जादिन दाम उलूखल बांधे बदन नवाय चहे । चुभि जु रही नवनीत चोर छबि भूलितें ज्ञान कहे ॥ तिन सों क्यों कहियति ए बातें जिन कुल चास सहे । सूरश्याम सुंदर रसपरि हरि न घुटहि नीर बहे ॥ ९३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो कहत कही न जाय । मदन गोपाल लाल के बिछुरत प्राण रहे मुरझाय ॥ जब स्यंदन चढ़ि गवन कियो इत फिरि चितयो गोपाल । तबहीं परम कृतज्ञ सबै उठि संग लगीं ब्रज

बाल ॥ अब यह औरें सृष्टि विरह की बकति बाय बौरानी । तिनसों कहा देत फिरि उत्तर तुम हौ पूरन ज्ञानी ॥ अबसों मान घटै काकीजे ज्यों उपजे परतीति । सूरदास कछु बरनि न आवै कठिन विरह की रीति ॥ ९३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो राखहु जोग की बात । कहि कहि कथा श्याम सुंदरकी शितल करहु सब गात ॥ यह निर्गुण गुण हीन कथैको सठ अबला अरसात । दीरघ नदी नाव कागद की देखो ह्वै क्यौं जात ॥ हम तन हेरि चितै अपनो तन देखि पसारो लात । सूरश्याम बासर बन बसते कैसें काल बिहात ॥ ९५ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो यह मन अधिक कठोर । निकसि न गयो कुंभ काचे ज्यों बिछुरत नन्द किशोर ॥ हम कछु प्रीति रीति नहि जानी तो ब्रजनाथ तजी । हमरे प्रेम नयन की ऊधो सब रस रीति लजी ॥ हमतें भली जलचरी बपुरी अपने नेम निबाहे । जलतें बिछुरत ही तन त्यागे जलही जलको चाहे ॥ अचरज एक भयो सुनो ऊधो जलबिनु मीन जियो । सूरदास प्रभु आवन कहिगये मन बिश्वास गह्यौ ॥ ॥ ९६ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो होत कहा समुझाए । चित चुभि रही सांवली मूरति योग कहा तुम लाए ॥ पालागों कहियो हरि जूसों दरश देहु एक बेर । सूरदास प्रभु सों बिनती करि यहै सुनैयो टेर ॥ ९७ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो हमहि जोग नहि भावे । चितमें बसत श्याम घन सुन्दर सो कैसें बिसरावे ॥ तुम जो कहो सत्य सब बातें हमरे लेखें धूरि । जाघट भीतर सगुण निरन्तर रहे श्याम भरि पूरि ॥ पालागों कहियो मोहन सों जोग कूबरी दीजे । सूर दास प्रभु रूप निहारो हमरे सन्मुख कीजे ॥ ९८ ॥ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो हम न जोग पद साधे । सुन्दर श्याम सलोनो गिरिधर नद नन्दन आराधे ॥ जातन रचि रचि भूषण पहिरे भांति भांति के साज । तातनको कहे भस्म चढ़ावन आवत नाहिन लाज ॥ घट भीतर नित बसत सांवरो मोर मुकुट शिर धारे । सूरदास चित तिनसों लागो जोगहि कौन संम्हारे ॥ ९९ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो कहियो यह संदेस । लोग कहत कुब्जा रति मातो तातें तुम सकुचो जिनि लेस ॥ कबहुंक इत पग धारि सिधारहु बरु हसि खण्ड सुबेस । हमरे मन रंजन कोनेतें ह्वै हौ भुवन नरेस ॥ तब तुम इत ठहराय रहोगे देखहुगे सब देस । नहिं बैकुंठ अखिल ब्रह्माण्ड हिं ब्रज बिनु सब कृत क्लेस ॥ यह किहिं मंच दियो नद नंदन तजि ब्रज भ्रमन बिदेस । जशुमति जननी प्रिया राधिका देखे औरउ देस ॥ इतनी कहत कहत श्यामा पैं कछु न रह्यौ अब शेस । मोहन लाल प्रवाल मृदुल मनतत छिनुकरी सुहेस ॥ को ऊधो को दुसह विरह जुर को नृप नगर सुरेश । कैसो ज्ञान कह्यौ किहिं कासों किहि पठयो उप देश ॥ मुख मृदु छबि मुरली रव पूरित गोरज कर्बुर केश । नट नाटक गति बिकट लटक तब बनतें कियो प्रवेश ॥ अति आतुर अकुलाय धाय पिय पोंछत नयन कुसेस । कुंज लालो मुख पद्म परस करि देखत छबिहि बिशेश ॥ सूर सोम सनकादि इन्द्र अज सारद निगम महेश । नित्य बिहार सकल सुर श्रम गति कह गावहिं मुख शेस ॥ १०० ॥ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो हरिजू हित जनाय चित चुराय लयो । ऊधो चपल नयन चलाय अंग राग दयो ॥ परम साधु सखा सुजन जदु कुल के मानि । कहो बात प्रात

एक सांची जिय जानि ॥ सरद बारिज दृग भोंह काम कमान । क्यों जीवहि बेधे उर लगे बिषम बान ॥ मोहन मथुरा पैं बसैं ब्रज पठयो जोग संदेस । क्यों न कांपी मेदिनी कहत जुवतिन उपदेस ॥ तुम सयाने श्याम के देखहु जिय बिचारि । प्रीतम पति नृपति भये जोगहे घर नारि ॥ कोमल कर मधुर मुरली अधर धरे तान । पसरि सुधा पूरि रही कहा सुने अवकान ॥ मृगी मृगज लोचनी भयो उभय एक प्रकार ॥ नाद नयन बिषन तें नजान्यों, मारन हार ॥ गोधन तजि गवन कियो लियो बिरद गोपाल । नीके कै कहिबी यह भली निगम चाल ॥ सूर सुमति सुन्दरी कुहिलाने मुख सरोज । सहि न सके श्याम जू उरचांपि लई उरोज ॥ १०१ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर जोगनिहोत संदेसनि । नाहिन या ब्रजमें कोउ सुनिहै कोटि जतन उपदेसनि ॥ रबिके उदय मिलन चकई को सन्ध्या समय अंदेसनि । क्यों बन बसै बापुरे चातक बधिकनि काज बधेसनि ॥ नगर एक नायक बिनु खूनों नाहिन काज सधेसनि । सूर सुभाय मिटत क्यों कारे जिहि कुल रीति डसेसनि ॥ १०२ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर जानत है सब कोऊ । जैसे तुम अरु मीत तुम्हारे गुणनि निपुन हौ दोऊ ॥ पाके चोर हृदय के कपटी तुम कारे अरु बोऊ । सरबसु हरत करत अपनों सुख कैसेहूं किनि होऊ ॥ परम कृपन थोरे धन जो बन उबरत नाहिन सोऊ । सूर सनेह करै जो तुमसों सुकरै आप बिगोऊ ॥ १०३ ॥राग सारंग ॥ मधु कर कहा कान्हहि देखिये हम जीवत ही दृन नैन । देखतनहि कछु कमल बदन कों देह धरत सुनि बैन ॥ अलि कुब्जा पति भये रमापति वहां बसै सुख दैन । सिंधु सुधा राधा मुख प्रोवत कहा न पायो चैन ॥ जेहि अंस कोमल कर कामिनि के धर मन कह असहैन । तिहि अंस गजबर रद अति भारी धसे धरनि तें लेन ॥ जिहि भुज दण्ड अखण्ड गगन शशि आलिङ्गित रस रैन । तिहि भुज दण्ड प्रचण्ड महाबल मल्ल युद्ध दल जैन ॥ ये कहियो संदेस श्याम कों जे ब्रज मिटिये गैन । मति न्यारे होय लोचन तें जे सूर गुणनि के ऐन ॥ १०४ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर कहियत बड़ुत सयाने । तुम्हरी मति काप्रै बनि आवै हमरे काज अयाने ॥ तैसोइ तू तैसो तेरो ठाकुर ए कहि बरनहि बाने । पहिलेंहि प्रीति पिवाय सुधा रस पाछैं जोग बखाने ॥ एक समय पङ्कज रस बासे दिन कर अस्त न माने । सोइ सूर गति भइ यहां हरि बिनु हाथ मींड़ि पछ ताने ॥ १०५ ॥ राग सारङ्ग ॥ मधु कर कहत संदेसो मूलङ्ग । हरि मद छांड़ि चलो तातें तुम प्रीति प्रेम भ्रम भूलङ्ग ॥ नहि या उक्ति स्वदुल थो मुख को जे तुम उचरत भूलङ्ग । बिलजु बदन होत या उचरत जे सन्धाननि मूलङ्ग ॥ उत बड़ ठौर नगर मथुरा को इतै तरनि तट कूलङ्ग । उत महाराज चतुर्भुज सुमिरङ्ग इत किशोर नंद दूलङ्ग ॥ जे तुम कही बड़ेन की बतियां ब्रज जन नहि सम तूलङ्ग । सूर श्याम गोपी संग बिलसे कण्ठ धरे भुज मूलङ्ग ॥ १०६ ॥ राग सोरठ ॥ मधु कर यहां नहीं मन मेरो । गयो जु सग नंद नन्दन के बहुरि न कीनों फेरो ॥ लयो नयन मुसिकानि मोल दै कियो पराधो चेरो । सौंप्यो जाहि भयो बस ताके बिसरो बास बसेरो ॥ को समुझाय कहै सूरज सों रस बस काहू केरो । मंदे परयो सिधारि अनत लै यह निर्गुण मन तेरो ॥ १०७ ॥ राग

सोरठ ॥ मधु कर रेरे मद मतवारे । कहा कीजै वा निर्गुण सों चिर जीवहु कान्ह हमारे ॥ लोटत पीत पराग कीचमें नीचन अंग समारे । बारम्बार सरक मदरा की अपसर कहत उघारे ॥ तू जानत टेरोसे बल्ली जिहि के तुम अलि प्यारे । घरी पहर सब क्यौं बिरमावत जेतक आवत कारे ॥ श्याम शरीर नीर रुहलोचन जशुमति नन्ददुलारे । तन मन सूर श्याम कों अर्प्यो काके लेहि उधारे ॥ १०८ ॥ राग सोरठ ॥ मधुकर अबहम समुझि भई । कमल नयन के अंग अंग प्रति उपमा न्यायदई ॥ कुन्तल कुटिल भंवर भर भावरि मालति भुरें लई । तजत न गहरु कियो कपटी जब जानी निरस गई ॥ आनन इंदु विमुख सजि सम्पुट करते नहीं नई । निरमोही नव नेह सुकुमुदिनि अन्तहु छेम हई ॥ तन घन सजल सेय निशि बासर रटि रसना छिजई । सूर बिबेक हीन चातक मुख बूंदौ तौन अई ॥ १०९ ॥ राग सोरठ ॥ मधुकर हमहों कौं समुझावत । बारम्बार ज्ञानगाथा ब्रज अबलनि आगें गावत ॥ नन्द नदन बिनु कपट कथा कहि कहि कत रुचि उपजावत । खुक चन्दन सुख आनि क्षुधा रत कहि कैसें सच पावत ॥ देखि बिचारि तुहीं अपने जिय नागर हेजु कहावत । सब सुमननि फिरि फिरि नीरस करि काहे कौं कमल बंधावत ॥ कमल नयन कर कमल वदन हे रहे कमल बर भावत । सूर दास प्रभु अलि अनुरागी काहे कौं शेष भुपावत ॥ ११० ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर को गोपाल कहां कौ बासी कासों है पहिचानि । तुम धौं संदेस कौन के पठये कहत कौनसों आनि ॥ अपनी चांड़ आनि उड़ि बैठ्यो भंवर भलो रस जानि । के बह बेलि बढ़ी कै सूकी तिनकों कह हितु हानि ॥ प्रथम बेनु बन हरत हरिन मन राग रागिनी ठानि । जैसें बधिक बिसासि बिबस करि बधत बिषम सरतानि ॥ पय प्यावत पूतना हनी छलि बालि हन्यों बलिदानि । सूपनखा ताड़का निपातो सूर श्याम यह बानि ॥ १११ ॥ राग धनाश्री ॥ मधु करके पठये तें तुम्हरी व्यापक न्यूनपरी । नगर नारि मुख छवि तन निरखतहै बतियां बिसरी ॥ ॥ ब्रज कौ नेह अरु आप पूरणता एकों ना उबरी । तृतीय पन्थ प्रकट भयो देखियत जब भेटी कुबरी ॥ यहतौ परम साधु तुम डहक्यौ इनयह मन न धरी । जो कछु कह्यो सुनि चल्यो शीस धरि जोग जुगत उचरी ॥ सूरदास प्रभुता कह कहिये प्रीति भली पसरी । राजमान सुख रहै कोटि पै घोषन एक घरी ॥ ११२ ॥ राग आसावरी ॥ मधु कर बाल बचन कत बोलत । तनक तोहि न पत्याऊ कपटी अन्तर कपटन खोलत ॥ तू अति चपल अलप कौ सङ्गी बिकल चहूं दिशि डोलत । मानिक काच कपूर खल कुटिल एक सङ्गक्यों तोलत ॥ सूर दास यह रटति बियोगिनि दुसह दास क्यों झोलत । अमृत रूप आनन्द अंग निधि अन मिल अगद अमोलत ॥ ११३ ॥ राग केदारो ॥ मधुकर प्रीत नहीं संसार । जहां जाकौ सुख लेस बढ़तुहै तहं ताकौ अनुसार ॥ तोलों लपटि रहत अंबुज परहि मकर जनित तुसार । नैसुक प्रभा प्रकट दिन करको ततछिन तजत ब्यौहार ॥ बटुल मल्लिका ऐसी सुनि अलि कुसुम करत जिहि भार । तेहि मरदन करि गन्धलेय पुनि सदन रचतत्वक् सार ॥ नाना खाद करत नित भोजन एकहि दिवस अबार । तत छिनु हस्त चरण गति सिथलित पंथन पेड पसार ॥ बिषई भजन क्रिया अंग जबही तब त्यागत

उरहार । मोर भये निकसत अन्तर करि गिरि सरिता प्राकार ॥ कहिधौं कौन हेत हरि गोकुल प्रकट कियो अवतार । काके हेत लई कर मुरली अंग रूप सतसार ॥ सूरश्याम ऐसो न बूझिये जहां नित अटल विहार । विरद धरतु किहि कौ तुम देखउ यह कछु करो बिचार ॥ ११४ ॥ राग सारंग ॥ मधु कर देखि श्याम तन तेरो । हरि मुख की सुनि मीठी बातें डरपत है मन मेरो ॥ कतहो चरण कुवत रस लम्पट बरजत हो बेकाज । परसत गात श्रवण कुच कुंकुम इतनो करि कछु लाज ॥ बुधि विवेक बल बचन चातुरी ते सब चितै चुराये । सो उनको कहौ कहा बिसरयो लाज छांड़ि ब्रज आये ॥ अब लों कौन हेत गावत हैं हम आगें यह गीत । सूर एते सों धारि कहा है जो प्रथ चि-गुण अतीत ॥ ११५ ॥ राग सारंग ॥ मधु कर काके मीत भये । दिवस चारि की प्रीति सगाई सेा ले अनत गए । डहकत फिरत आपने स्वारथ पाषण्ड और ठए । चाड़े सरे चिन्हारे मेटी करत जेा प्रीति नए ॥ शिरहि उचाटि मेलि गये रावलमन हरि हरि जुलए । सूरदास प्रभु दूत धरम ठगि विषके बीज बए ॥ ११६ ॥ राग सारंग ॥ मधु कर कहां पढ़ी यह नीति । लोक वेद श्रुति ग्रंथ रहित सब कथा कहत बिपरीति ॥ जनम भूमि ब्रज जननि जशोदा किह अपराध तजी । अति कुलीन गुण रूप अमित सब दासी जाय भजी ॥ जेाग समाधि गूढ़ श्रुति मुनि मगक्यों समुझि हैं गंवारि । जेाधैं गुण अतीत व्यापकु तौ तेाहि कहा है हारि ॥ रहिरे मधुप कपट स्वारथ हित तजि बहु बचन विसेखि । मन क्रम बचन बचति यहि नाते सूरश्याम तन देखि ॥ ११७ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर हेाहु यहां तें न्यारे । तुम देखत तन अधिक तपतु है अरु नयननि के तारे ॥ अपनेा जेाग सेंति धरि राखौ यहां खेत को डारे । सेाका जनु अपने सुख करि हैं मीठे ते पुनि कारे ॥ हमरे गिरवर धरके नाम गुण बसे कान्ह उर बारे । सूरदास इम सबे एक मत तुम सबखेाटे कारे ॥ ११८ ॥ राग नट ॥ मधुप बिराने लेाग बटाऊ । दिन दसरहत काज अपने को तजि गए फिरे न काऊ ॥ प्रथम सिद्ध पठई हरि हमको आयेा ज्ञान अगाऊ । हमको जेाग भेाग कुब्जाको वाको यहै सुभाऊ ॥ कीजै कहा मंद नन्दनको जिनके है सत भाऊ । सूरदास प्रभु तन मन अर्पी प्राण रहैं के जाऊ ॥ ११९ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर महा प्रबीन सयाने । जानत तीनि लेाक की बातें अबलनि काज अयाने ॥ जे कच कनक कचेारा भरि भरि मेलत तेल फुलेल । तिन केसनि को भस्म बतावत टेसू को सेाखेल ॥ जिन केसनि कबरी गहि सुंदर अपने हाथ बनाई । तिनको जटा धरन को ऊधो कैसें के कहि आई ॥ जिन श्रवणनि तारंक खुभी अरु करण फूल खुटि लाऊ । तिन श्रवणनि कसमीरी मुद्रा खट कन चोर झलाऊ ॥ भाल तिलक काजर चखु नासा नक बेसरि नथ फूली । तेसब तजि हमरे मेखनको उज्वल भस्मी खूली ॥ कंठ सुमाल हार मणि मुक्ता हीरा रत्न अपार । ताही कंठबांधिबे कारन यट्टङ्गी जेाग सिंगार ॥ जिहि मुख गीत सुभाषत गावत करत परस्पर हास । तामुख मौन गहे क्यों जीवहि घूंटे ऊरध स्वास ॥ कंचुकि छीनि कपट घसि चंदन सारो सारसु चंद । अब कंथा एक अंत गूदर क्यों पहरे मति मंद ॥ ऊधो

उठौ सबे पांलागे देखो ज्ञान तुम्हारौ । सूरदास मुख बहुरि देखि हैं जीयेा कान्ह हमारौ ॥ १२० ॥ राग सारंग ॥ मधुकर कौन देस तें आए ॥ जबतें क्रूर गयेा लै मोहन तबतें भेद न पाए ॥ जाने सखा साध हरिजूके अवध बधनको आए । अब या भाग नंद नंदन के या स्वामित को पाए ॥ आसन ध्यान वायु अवरोधन अलितन मन अति भाए । है विचित्र अति गुणनि सुलच्छन गुणी जोग मत गाए ॥ मुद्रा शृङ्गीभस्म त्वचा मृग व्रज जुवती तन ताए । अतसी कुसुम बरन मुख मुरली सूरश्याम किनि लाए ॥ १२१ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर कान्ह कही तेन हेाही । कीधों नई सखी सिखई है निज अनुराग बिरेाही ॥ सचि राखी कूबरी पीठि पर ए बातें चक चेाही । श्याम सुगाह कुपाय सखी री छेारि दिखायेा गेाही ॥ नागरि मनि शेाभाग संगर जे जग जुवती हँसि मेाही । लियेा रूप दै ज्ञान ठगेारी भलेा ठग्यौ ठग वेाही ॥ है निर्गुण सरवरि कुबरी अब धरी करेा हम जेाही । सूरसु नागरि तू जेाग नहि जिनि जिनहि आजु सब सेाही ॥ १२२ ॥ ॥ राग सेारठ ॥ मधुकर अबधों कहा करत्रौ चाहत । ए सब भई चिचकी पुतरी शून्य शरीरहि दाहत ॥ हमसों तेा सें बैर कहा अलि श्याम अजा भयेा राहतु । झारि झूरि मन कत हरि लैगए बहुरि पयारहि गाहतु ॥ अब तेा तेाहि मरुत केागहि बेा कह अमु करि तू लैहै । सूरज को रह मध्य हेा रहै तेा अपनेा कियेा तू पै है ॥ १२३ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर जाय कह्यौ सुनि मेरेा । पीत बसन तन श्याम लाज करि राखति परदा तेरेा ॥ रहि व्रज के एप्रदेसन लायक तू बरह्यौ करि डेरेा । इते मान यह सखी महा सठ छांडत नाहिन केरेा ॥ ऐसी बात कहै तू तासों हेारि जु कहिबे लायक । इहां जशेादा कुंवर विराजें छिनु छिनु प्रति सुख दायक ॥ जो तुम पुहप पराग छांडिके करेा ग्राम बस वास । तेा हम खरु यहेा करि देखें छनु एक छाड़ें पास ॥ १२४ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर आवत दूहै परेखेा । जब बारे तब आस बड़ी की बड़ भए सङ्ग देखेा ॥ जेाग जज्ञ तप दान नेम व्रत करत रहै हेाजात । क्यों छूं सुत जो बध्यौ कुसल सों कठिन मेाह की बात ॥ करिनी प्रकट प्रीति प्रिक की रति अपने काजलों भेार । काज सरयौ दुख गयेा कहेा धों कहं वायस की बेार ॥ जहं जहं रहेा राज करेा तहं तहं तेज कोटि शिर भार । यह असीस हमदेति खरु सुनि न्हात खसेा जिनि वार ॥ १२५ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर प्रीति किये पछितानी । मैं जानी ऐसी निबहेगी उन कछु औरें ठानी ॥ कारे तनकेा कौन पत्यानेा बेालत मधुरी बानी । हमकेा लिखि लिखि जेाग पठावत आपु करत रजधानी ॥ सूनी सेज श्याम बिनु मेाकें तलफत रैनि बिहानी । सूर श्याम प्रभु मिलि के बिछुरे तातें मति जु हिरानी ॥ १२६ ॥ राग केदारेा ॥ मधुकर अब मेरी को बेालै साखि । ए सब हरि के संग सिधारे अब लगि रहत न राखि ॥ रूप रंगनु रस सबैपरानेा वचन न आवत भाखि । प्रान दान बसत तनबेाधनि मनही मन अभिलाखि ॥ सूर सजीवन मूरि मुकुन्दहि लै आई रहां आखि । घरी घरी घसि देत अंजन मसि जेावै जिवत सुनाखि ॥ १२७ ॥ राग केदारेा ॥ मधुकर अवरह आर रही । बारिध जेाग अपार अगम कौ निगम न थाह लही ॥ बुधि विवेक बेाहित चढ़ि अमु करि

तौ शिव चेत परा । जोवन अति सकुमार अधीरजु जुगति न जाँति तरी ॥ आपु निरा सु कछु चलै न आवै लहरि न उठै समाय । भ्रामिक भंवर भेष देखियत है मनसा तहीं न जाय ॥ गुण अवगुंजु कहै नहि कोई तुमहू निगुण सुनावहु । मन मोहन बिनु कल न परत जिय वेगहू श्याम को ल्यावहु ॥ साधन किये लाल मणि माणिक मुक्ता रतन अमोल । प्रेम वृक्ष फल चारि सदा फल निर्भय अमित अडोल ॥ सुमिरन ध्यान आस छाया करि मन मोहन प्रभु नागर । दुस्तर सूर तरहि क्यों अबला चखु जल सरिता सागर ॥ १२८ ॥ राग मारू ॥ मधुकर की संगति तैं जनियत बंस एन चितयो । बिन समुझे कह कहति सुंदरी सोइ मुख कमल गह्यौ ॥ व्याध नाद कह जाने हरनी करसायल की नारि । आलापहु गावहु के नांचहु दाउ परै तै मारि ॥ जुआ कियो वृज मंडल यह हरि जीति अवधि सों खेलि । हाथ परयो सुगयोहु चपल त्रिया कहा सदन महेलि ॥ सुनों कर्म कियो मातुल वधि मदिरा प्रमद प्रमादु । सूर श्याम एते औगुण में निर्गुणतें अति स्वादु ॥ १२९ ॥ राग सोरठ ॥ मधुकर तुम तो अति बड़ भागी । अपरस रहत सनेह तगादै नाहिन तुम अनुरागी । पुरइनि पत्र रहत जल भीतर मरजत नहीं नवनागी । ज्यों जल सिकत तवे की गागरि बूंदन ताको लागी । प्रीति नदी में पाउ न बोरयो दृष्टि न रूप अनुरागी । सूर दास अबला हम भोरी गुर चींटी ज्यों पागी ॥ १३० ॥ राग सोरठ ॥ मधुकर जा आगेतें दूर । जोग सिखावन को हमें आयो बड़ो निपट तूं क्रूर । जाघट रहत श्याम घन सुन्दर सदा निरन्तर पूर । ताहि छांडि क्यों शून्य अराधे खोवै अपनों नूर । व्रज में सब गोपाल उपासी कोउ न लगावे धूर । अपनों नेम सदा जो निबाहे सोई कहावे सूर ॥ १३१ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर योग बिरचि जिनि जाहु ॥ बांधहु गांठि छूठि कहुं परिहैं फिरि पाछे पछिताहु । ऐसी बात अनूपम ऊधो मरमु न जाने और । व्रज बनिता के नाहि प्रेम को तुम रहिये एक ठौर । जो तुम हमें लै आए ऊधो सो हम तुम पै लीनों । सूर दास नारि अरु विप्र को करहि बंदना कीनों ॥ १३२ ॥ राग सोरठ ॥ मधुकर सुनहु लोचन बात । यह तरोके अंग सब पै नयन उडि उडि जात । ज्यों कपोत वियोग आतुर भ्रमत है तजि धाम । जात दृग त्यों फिरि न आवत बिना दरसे श्याम । रहे मूंदि कपाट पल दोउ भये घूंघट ओट । स्वास सत ज्यों जात कितही निकसि मन मथ फोट । श्रवण सुनि जश रहत हरि को मन रहत धरि ध्यान । रहत रसना नाम रटि पै इनहि दरशन हान । करति देह विभाग भामिनि जो कछू सब लेत । सूर दरसन ही विना यह पलक चैन न देत ॥ १३३ ॥ राग गौरी ॥ मधुकर जो हरि कही करैं । राज काज चित दियो सांवरे गोकुल क्यों बिसरै । ज्यों ज्यों घोष रहे हम तिहि खो सन्तत सेवा कीनी । बारक बहै उलू खल बांधे उहै कांधि जिय लीनी । जो हम कोटि करैं व्रज नाइक बहुते राज कुमारी । तौ एइ नन्द पिता कहाँ मिलि है अरु जसुमति महतारी । गोवर्द्धन कहाँ गोप वृन्द सचु कहां गोरस सचु पैहौ । सूर दास अब सोई करिये बहुरी हू लैयेहौ ॥ १३४ ॥ राग बिलावल ॥ मधुकर भल आए बलबीर ।

दुर्लभ दरसन सुलभ पाए जानि हो परपीर । कहत बचन बिचारि बिनबहु सोधि हो मन माहि । प्राण पति की प्रीति ऊधो है कि हम सो नाहि । कौन तुम सो कहै मधुकर कहन जोगी नाहि । प्रीति की कछु रीति न्यारी जानि हो मन माहि । नयन नींद न परै निशिदिन बिरह बाढी देह । कठिन निर्दय नन्द के सुत जोरि जोरयो नेह । कहा तुम सो कहैं घट पद गुपत हृदै की बात । सूर के प्रभु क्यों बनै ज्यों करहि अबला घात ॥ १३५ ॥ राग बिलावल ॥ मधुकर यह कारे की रीति । मन दै हरत परायो सर्वसु करै कपट की प्रीति । ज्यों षट पद अम्बुज के दल में बसत निसारति मानि । दिनकर उये अनत उड़ि बैठै फिरि न करत पहिचानि । भवन भुजङ्ग पिटारे पीख्यो ज्यों जननी जिय तात । कुल करतूति जानि नहि कबहूं सहज सुडसि भजि जात । कोकिल काग कुरङ्ग श्याम की छिन छिन सुरति करावत । सूर दास प्रभु को मुख देख्यो निशि दिनहीं मोहि भावत ॥ १३६ ॥ राग सोरठ ॥ मधुप तुम कहा इहै गुण गावहु । ए प्रिय कथा नगर नारिन सो कहहु जहाँ कछु पावहु । जानत मरम नन्द नन्दन कौ और प्रसंग चलावहु । हम नाही कमलासी भोरी करि चतुराइ मनावहु । जिनि परसे अलि चरण हमारे बिरह ताप उपजावहु । हम नाही कुबिजासी भोरी करि चातुरी दिखावहु । अति बिचित्र लरिका की नाई गुर दिखाय बौरावहु । सूर दास प्रभु नागरि मन सो किहिं बिधि आनि मिलावहु ॥ १३७ ॥ राग केदारो ॥ मधुकर पीत बदन किहिं हेत । जनि अंतर मुख पांडुरोग भयो जुबतिनि जोग दुख देत । रसमय तन मन श्याम धाम को जोउ चरे संकेत । कमल नयन के बचन सुधा से करग घूंट भरि लेत । कुत्सित कटु बायक सायक से को बोलत रस खेत । इन चतुरीतें लोग बापुरे कहत धर्म की सेत । माथे परो योगपथ ताके बक्ता छपद समेत । लोचन ललित कटाछ मोच्छ बिनु महिमा जिये निकेत । मनसा बाचा और करमना श्याम सुन्दर सों हेत । सूर दास मनकी सब जानत हमरे मनहि जितेत ॥ १३८ ॥ राग केदारो ॥ मधुकर मधु मद माते डोलत । जिय उपजत सोइ कहत न लाजत सूधे बोल न बोलत । बकत फिरत मदिरा के लीने बार बार तन घूमत । व्रीड़ा रहित सबनि अब लोकत लता कली मुख घूमत । अपने हूं तनकी सुधि नाहीं परयो आनही कोठे । सावधान करि लेहि अपनपो तुमहीं सो करि गोठे । मुख लागी पराग पीक कीडारत नाहि न धोई । तासों कह कहिये सुनि सूरज लाज डारि सब खोई ॥ १३९ ॥ राग केदारो ॥ मधुकर ए सुनि तन मन कारे ॥ कहूं न सेत सिङ ताई तन परखे अंग तुम्हारे ॥ कीनों कपट कुंभ बिच पूरण पय मुख प्रकट उघारे । बाहिर बेष मनोहर दरसत अन्तर गत जु ठगारे । अब तुम चले ज्ञान बिष व्रज दै हरण जु प्राण हमारे । ते क्यों भले होहिं सूरज प्रभु रूप बचन कृत कारे ॥ १४० ॥ राग सोरठ ॥ सुनि मधुप कोन को कृत काज कोन पायो । राज रिपु चमू अधस्ती पैठि जन पद दियो जीति बिनु कपट दुन्दुभि बजायो ॥ सुभटतें सुभट गन जीति रबि बस भए फिरयो नृप दशहु दिश दौलगायो । ऐसी करुणा किये लेत

बिच राखि के सप्त मुख सेन सजि सजि बधायो । बलीयबल साजि बाजित्र बहु तूरभुअ कहा करै ईस पगुहि ठहरायो । नवल बय बेष सम सील गुण रूप सम गवन को हेत कछु मत सिनायो । इतहिं जे कपट कपटी क्षिती नाथ सो कहो तुम कहा तिन सो बसायो । सूर संजोग रस धर्म के हेतु जे प्रीति के हेत तन तन बनायो ॥ १४१ ॥ राग सोरठ ॥ मधुकर कोन देसतें आए । जबतें क्रूर गयो ले मोहन तबतें सोध न पाए । जाने साधु सखी हरि के जब अवधबधन को धाए ॥ अंग बिभाग नन्द नन्दन के करन स्वामि तिय पाए । आसन ध्यान वायु आरोधन सुनत अधिक तन ताए । हो सुबुद्धि अति सकल सुलछन गुणी जोग मत गाए । सिंगी मुद्रा भस्मत्वचा मृगते हमको नहि भाए । अतसी कुसुमबरन मुरली धर सूर श्याम किनिल्याए ॥ १४२ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर तुम रस लम्पट लोग । कमल कोस में रहत निरन्तर हमहि सिखावत जोग । अपने काज फिरत ब्रज अन्तर निमिष नहीं अकुलात । पुहप गए बहुरों बेलिनि के नेकन नेरे जात । तुम चंचल हम चोर सकल अंग बातनि क्यों पतिआत । सूर बिधाता धन्य रची जो मधुप श्याम एक गात ॥ १४३ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर कासों कहि समुझाऊं । अंग अंग गुण गहे श्यामके निर्गुण काहि गहाऊं ॥ कुटिल कटाच्छ बिकट सायक सम लागत मरम नजानें ॥ मरमिगए उरझोरि पिछाहे प्राछेंपें अहटानें ॥ घूमत रहत संभारत नाहिन फेरिफेरि सम हाने ॥ टूक टूकह्वै रहे ढोरगहि पाछे प्रगन पराने ॥ उठत कबंध जुद्ध जोधाज्यों बादर सनमुख हेत ॥ सूरश्याम बा अहत दृष्टिकरि सोचि प्राण कतदेत ॥ १४४ ॥ राग सारंग ॥ मधुप तुम देखियत हो चितकारे ॥ कालिंदी तट पार बसतहो सुनियत श्याम सखारे ॥ मधकर चिकुर भुजंग कोकिला अवधि नही दिन टारे ॥ वेऋपने सुखही केराजा तजियत दुहि अनुहारे ॥ कपटी कुटिल निठुर निरमोही दुखदे दूरि सिधारे ॥ बारक बहुरि कबहि आवहिंगे नयननि साध निवारे ॥ उनकी सुनै सो आप बिगोवे चित चोरत बटमारे । सूर दास प्रभु क्यों मन मानै सेवक करत न न्यारे ॥ १४५ ॥ राग सारङ्ग ॥ मधुकर को मधु बनहि गयो । काके कहे संदेस लै आये किनि लिखि लेखु दयो ॥ को बसुदेव देवकी नन्दन को जदुकुलहि उजागर । तिन सों हम पहिचानी नाहिन फिरिलै दीजइ कागर॥ गोपी नाथ राधिका बल्लभ जशुमति नन्द कन्हाई । दिन प्रति दान लेत गोकुल में दूनो रीति चलाई ॥ तुमतो परम सयाने ऊधो कहत और की और। सूरज दास पन्थ के बहंके बोलत ही ज्यों बौरे ॥ १४६ ॥ राग सारङ्ग ॥ एक बात ह्वै भांति अटपटी कहौ अलि कहा बिचारें । हरि मधुपुरी रहे जोधिर ह्वै हम दिन क्योंकरि टारें ॥ ब्रज बानक गति और भई है पूरब दशा निहारें । सुख कर सब प्रति कूल भये तें क्यों हरि दूत पग धारें ॥ मधुप सकल खग कटक बदन अब चन्द अगनि अनुसारें । सुमन बान सम गुहा कुञ्ज गृह धूम मरुत तन जारें ॥ प्रगट भयो ब्यौहार देखियतको दृढ़ दुखतें टारें । समाधान नहि होत कबन बिधि करत बहुत उपचारें ॥ हमसी कोटिक हैं या ब्रजमें एकै नन्द कुमारें । सूरज श्याम तहां रहो तौलौं जौलौं दुरित निकारें ॥ १४७ ॥ राग सो

रठ ॥ ए अलि हमैं अंदेसो आवै । कौन गुनाह जोग लिखि पठयो सो तू कहि समुझावै ॥ जा अंगरचे बसन आभूषण कैसें भस्म चढ़ावै । कबरी केश सुमन गुहि राखे सोक्यों जटा बनावै ॥ सब बिपरीति कहत तू हमसों सोकैसे चित आवै। सुन्दर श्याम कमल दल लोचन सूर श्याम मोहि भावै ॥ १४८ ॥ राग सोरठ ॥ तू अलि कहत कहा समुझाय। हमरे चित एकौ नहि आवै जोइ कहत तू गाय ॥ हमरे हृदय बसत मन मोहन सुन्दर श्याम शरीर । तू जो कहत है शून्य आराधन जैसो छोलर नीर ॥ जा अंग चन्दन कुंकुम चरचे तहां चढ़ावन कहत हो छार । सो तजि हम कबहुं न लगावैं सुनि सठ सूर गंवार ॥ १४९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ *

॥ श्रीहरि गोपिन को बिरह और भ्रमर गीत को प्रस्ताव ॥

॥ राग सारङ्ग ॥ बारक नयननि ही मिलि जाउ । कमल नयन घन श्याम राधिके परसत जो न पत्याउ ॥ जानत हौ कर कमल बिरोधी वरुन बिरोधो बाउ । मुख शशि शक्र पयोधर गिरि अति तहां तुम क्यों बस साउ ॥ गतिगज मन्द मराल बिरोधी रुचि रिपु हेम सुदाउ । कदलि जङ्घ कटि सिंह बिरोधी नाय निरखि अकुलाउ ॥ चीन्हि रहे चित चोर सकल अंग एकौ सुपत नसाउ । तदपि सूर इन की रुचि राखउ तुम जिनि अधिक डराउ ॥ १५० ॥ राग सारङ्ग ॥ बातें बूझत यौं बौरावति । सुनउ श्याम बेसखी सयानी पावस राधे चिन्ह सुनावति ॥ घन देखत गिरि कहत कुशल मति गरजत गुहा सिंह समुझावति । नहि दामिनि द्रुम दवा शैलपर रत बयार उलटी झरधावति ॥ कबहुंक दादुर मोर बकत बन ग्वाल मण्डली खगनि खिझावति । नहि नभ दृष्टि झरत झिरना जल परि परि बूंद उचटि इत आवति ॥ कबहुंक प्रकट पपीहा बोलत कहि कुपथ्थि करतली बजावति । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन कों वह बिरहिनि एतौ दुख पावति ॥ १५१ ॥ राग सारङ्ग ॥ माधो एते जतन तब तुम काहे कों किये । अपने जानि जानि जदु नन्दन बहुत डरनि तें राखि लिये ॥ अघ बक वृषभ बरुण बंधन तें ब्याल जीति दावानल पिये । इन्द्र मान मेट्यो गिरि कर धरि छिनु छिनु प्रति आनन्द दिये ॥ बिछुरन की हम बात न जानी बचन मानि तब वादि जिये । सूरदास अजहुं वह लालच रहत है कठिन कठोर हिये ॥ १५२ ॥ राग सारङ्ग ॥ देखियति कालिन्दी अति कारी। कहियो पथिक जाय हरि सों यों भई बिरह जुरजारी ॥ मनों पलिका तें परी धरनि धसि तरङ्ग तलफ तनु भारी । तट बारू उपचार चूर मनों स्वेद प्रवाह पनारी ॥ बिगलित कच कुस कास पुलिन मानौं पङ्कज कज्जल सारी । भ्रमर मनों मति भ्रमति चहुं दिशि फिरति है अंग दुखारी ॥ निशि दिन चकई ब्याज बकति मुख किनि मानउ अनुहारी। सूर दास प्रभु जे जमुना गति ते गति भई हमारी ॥१५३॥ राग सारंग ॥ परेखौ कौन

बात को कीजै । ना हरि जाति न पांति हमारी कहा मानि दुख लीजै ॥ वासुदेव जादव कुल नायक बन्दी जनबर न्हावै । नद नन्दन गोपी जन बल्लभ सुतो तहां न कहावै ॥ ना हम मोर चन्द्रिका माथें नाहिन उर बन माल । पहिरत है भूपति के भूषण सुन्दरश्याम तमाल ॥ ब्रज अरु बनको नातो नाहिन मानत एकै अंग । सूर दास रहि गई सगाई वा मुरली के संग ॥ १५४ ॥ राग सारङ्ग ॥ सखीरी श्याम कहा हित जाने । जो कोउ प्रीति करै कैसेहूं हठि अपने गुण ठाने ॥ देखो तो जलधर की बातें बरषत अपने जाने । चातक सदा चरण को सेवक रटत बिना जल प्राने ॥ भ्रमर कुरंग काग कोकिल अहि कवि सब कपट बखाने । सूर दास जो सर्बसु दीजै कारे कृतहि न माने ॥ १५५ ॥ राग सारंग ॥ अब यह यों लागे दिन जान । सुमिरत प्रीति लाज लागति है उर भये कुलिस समान ॥ लोचन रहत बदन बिनु देखे बचन सुने बिनु कान । हृदय रहत हरि पाणि परस बिनु बधत न मनसिज बान ॥ मनौ सखी ए नाहि हमारे वे पहिले तन प्रान । आजु सबैटि रचि चले नन्द सुत बिरह सृष्टि ब्रज आन ॥ विधि बक्र हरे बक्रुरि इन की ने वेसेइ बेनु विषाब । सूर दास वैसी कछु एऊ समुझति हौं अनुमान ॥ १५६ ॥ राग सारंग ॥ हौं मोहन के बिरह जरी री तू कत जारत । रे पानी पशु पक्षि पपीहा पिउ पिउ करि अधरात पुकारत ॥ सब जन सुखी दुखी तू जल बिनु तउ अन तन की तपति विचारत । करत न कछु करतूतिन ऊपर मूढ़ रटतक अवलनि सर मारत ॥ रे सठ संता पत औरनि कौं यहि आरति अपने जिय आरत । सूर श्याम बिनु ब्रज पर बोलत काहे कों अगिलौ जनम बिगारत ॥ १५७ ॥ राग सारंग ॥ यहि बिरयां बन तें आवते । दूरिहि तें बर बेनु अधर धरि बारम्बार बजावते ॥ कबहुंक कैसो भांति चतुर चित अति ऊंचे सुर गावते । कबहुंक धोरी धेनु मनोहर लै लै नाम बुलावते ॥ यहि मिस नाउ सुनाय श्याम घन मुरछे मनहि जगावते । आगमसुख उपचार बिरह । जुर बासर अन्त नसावते ॥ रचि रुचि प्रेम प्रिया सैनहि दै क्रम क्रम बलहि बढ़ावते । सूर सकल रस निधि निज दरशन पुनि पथ प्रकट करावते ॥ १५८ ॥ राग सारंग ॥ अब कछु औरै हो चली । मदन गोपाल बिना या ब्रजमें सबै बात बदली ॥ गृह कंदरा समान सेज बिषु सिंहहु चाहि बली । शीतल चन्दहुतो सखि कहियत तिनहूं तें अति अधिक जली ॥ दृग मद मलय उसीर कुमकुमा सींचति आय अली । एकै क्रिया बिरह जुरते कछु लागति नाहि भली ॥ वह रति अम्बत लता सुनि सूरज अधि विधि फलनि फली । हरि बिधु बिमुख कबहुं नहि बिकसे मनसा कुमुद कली ॥ १५९ ॥ राग सारंग ॥ बिचारतहीं लागे दिन जान । तुम बिनु नन्द सुवन यहि गोकुल निशि भइ कलप समान ॥ मुरली शब्द धेनुकी बोलनि सुनियत नाहिन कान । चलत न रथपर गहे श्याम यों तब लागी पछितान ॥ है कोउ जाय कहे माधोसों धीर नधरहीं प्रान । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु ह्वै है निपट बिनान ॥ १६० ॥ राग सारंग ॥ सुनियत मुरली देखि लजात । दूरिहु ते सिंहासन बैठे शीस नाय मुसकात ॥ मुरली लिखी चित्र भीतिनि पर ताहि देखि सकुचात । मोर पंखको बिजन बिलोकत बौरावत कहि बात ॥ हमरी चरचा जो कोउ

चालत चालतही चपि जात । सूरदास व्रज भले बिसारयौ दूध दह्यो क्यों खात ॥ १६१ ॥ ॥ राग सारंग ॥ तबतें इन सबहिनि सचु पायो । जबतें हरि संदेस तुम्हारो सुनत तंवारो आयो ॥ फूले ब्याल निकसि दरतें अब पवन पेट भरि खायो । गह्वरतें गज राज निकसिके अंग अंग गरबु बढायो ॥ सघन गुहा तें निकसि केहरी मांथे पूंछ डुलायो । सकल बिहंगम कहों कौनकी सुकौन राउ कहायो ॥ अब जिनि गहरु लगावहु नागर जौं जिय चाहत ज्यायो । सूरदास अब भयो देखियत बैरिनि का मन भायो ॥ १६२ ॥ ॥ राग सारंग ॥ या बिनु होब कहाह्यां सूनो । लैजु प्रकट कीन्हों प्राची दिस बिरहिनि को दुख दूनो ॥ सुर आसुर निरदय भये सखिरी सायर सर्प समेत । काहून करी कृपा इतननि में जिय तन बन दव देत ॥ धन्य कुहू बरषा तमचुर खग अरु कमलनि को हेतु । जीवहु जरा बापुरी जुग जो जुरे राहु अरु केतु ॥ निरखि चन्द तन सुमिरि श्याम घन बिकल भई द्रुज बाल । सूरदास प्रभु अपने द्रुज पर काहेन होहु कृपाल ॥ ॥ १६३ ॥ राग सारंग ॥ अब मोहि निशि देखत डरु लागत । बार बार अकुलाय देह तें निकसि निकसि जिय भागत ॥ प्राची प्रकट देखि पूरन ससि ह्वै जु गयो तन तातो । मानहु मदन बदन बिरहिनि सों केजु लियो रिसु रातो ॥ लांछन छबि अधिकार जनावत अति बल करि सर साधतु । मानहु किरन पसारे पासनि हठे बियोगनि बांधतु ॥ सुनि सठ सुहै प्राण पति मेरो याको सब जग जानतु । सूर सिंधु बूडे तें काढ्यो तिनहुं के छतहि न मानतु ॥ १६४ ॥ राग सारंग ॥ श्याम हो नेक दिखाई देहु । या तनतें दरशन के बदले जो भावे सो लेहु ॥ भूली रही टगी सी चितवति तनौ ग्राम गुण गेहु । जबतें इन अबिवेकी नयननि हटकत कियो सनेहु ॥ कहियो पथिक जाय पालागों बिरह कियो तन खेहु । सूरदास प्रभु प्राण पथिक को तुमहिं निहोरो लेहु ॥ १६५ ॥ राग सारंग ॥ कहियो मुख संदेस अरु हाथ दीजियो पाती । सबै जानियह बातचलैबी सुखही मांझ सुहाती ॥ तब इन प्राण समर्पण कीनें गनैं नहीं दिन राती । जुगति नहीं नद नन्दन एहै लै जु रहे मन थाती ॥ जो कोउ साखी तबहीं करती तो कत हम पछितातीं । सूरदास प्रभु मुकर जाय जब संग लिवाये जाती ॥ १६६ ॥ राग सारंग ॥ लोचन व्याकुल हैं दोउ दीन । कैसे रहैं दरश बिनु देखे बिधु चकोर ज्यों लीन ॥ बिबरन भै खंजन निदाघ ऋतु ज्यों वारिज जल हीन । श्याम सिंधु तें बिछुरि परे हैं तरफरात मनोमीन। ज्यों ऋतु राजबिमुख अलि कोकिल बानी दिन दिन खीन । सूरदास प्रभु बिनु गोपाल अब कत बिधना यह कीन ॥ १६७ ॥ राग सारंग ॥ अब व्रज भयो धरनि तें स्वर्ग । तब गिरि पर ए अब इन पर गिरि प्रीति किधों या दुर्ग ॥ सुर आसुर छबि बालि वारि गढ अब अवधि मति खूटी । प्रिय प्रति बिरह मदन चहुं ओरी एको अलंग न टूटी ॥ नयन तड़ाग श्रवण मठ मूरति जंघ सकति बर बानी । रासै केलि पोरिया मानहु देखि परम रज धानी ॥ गोरंभन गोला गर्जनि अति धूम धोंधि नभ रोको । कटक रोम कंगुरनि प्रति मानो अपनी अपनी दोकी ॥ चढत चिभंगी श्याम साजिदल खसत नहीं पल आंखी । सोइ अब सूर सहाय हमारे गगन मण्डली राखी ॥ १६८ ॥ राग

सारंग ॥ प्रीति करि काहू सुख न लह्यो । प्रीति पतंग करी दीपकसों अपनो प्राण दह्यो ॥ अलिगण प्रीति करी जल सुतसों संपुट सुखहि गह्यो । सारंग प्रीति जु करी नादसों निकटहि बान सह्यो ॥ हमहूं प्रीति करी माधोसों चलत न कछू कह्यो । सूर दास प्रभु बिछुरे राधिका नयननि नीर बह्यो ॥ १६९ ॥ राग सारंग ॥ अब निज नयन अनाथ भए । मधुबन तें माधो सुनि सजनी कहियतु दूरि गए ॥ मथुरा बसत हुती उर आसा यह लगते ब्यौहार । अब मन भए भीम के हाथी सपनेहुं अगम अपार ॥ सिंधु कूल इक देश कहत हैं ताहि हारका नाउं । यह तनु सौंपि सूरके प्रभु कों आजु वहां उडि जाउं ॥ १७० ॥ राग सारंग ॥ नेंकहु सोच न काहू कीनो । सुनि ब्रजनाथ सबनि के औगुण मिलि मिलि यह दुख दीनो ॥ ऋतु बसन्त अन समय अधम मति पिक सहाय लै धावत । प्रीतम संग जानि जुवतिन सुख बोलेहू नहि आवत ॥ सदा सरद शसि सकल कला लै सनमुख रहत जुनाई । को शशि पक्ष कृष्ण बोतें बिनु कबहुं न देत दिखाई ॥ चिबिध अनिल सौरभ सुमनस पुत मत्त मधुप गुंजार ॥ ज्यों ज्यों रच्यौ सु कियेा बांधि बल तजि मन सबै बिचार ॥ रति पति अति अनीति करि कोप्यौ कोटि धूम ध्वज मानु । लै कर धनुष चितै तुम्हरो मुख अब करहेतु है जानु ॥ भली करी गोकुल फिरि आये नीके काल अतीति । कहा जानि बे प्रबल मल्लसों समर कौन बिधि जीति ॥ सपन यहै के सत्य के सुख दुख कहत मनके अंसु । सूर स्वामी अब तुम ब्रज रहियेा बरु उत बसिओ कंसु ॥ १७१ ॥ राग सोरठ ॥ अबहुं रहत तन हरि जु सिधारे काहे कि प्रीति हमारे । छिदि छिदि जात बिरह सर मारैं पुरि पुरि आवत अवध बिचारे ॥ फटत न हृदो संदेस तुम्हारे कुलिस तें कठिन धुकत है तारे । जीवन मरन दोऊ भय भारे कहिय धों सूरलाज पचिहारे ॥ १७२ ॥ रागमलार॥ सिखिनि शिखर चढि टेरि सुनायेा । बिरहनि सावधान ह्वै रहियेा सजि पावस दल आयेा । बादर अति बानेत पवन भयो ताजी चढि अति चटकि दिखायो । दामिनि सैल समान घटायन गरजि निसान बजायो । चातक पिक सुक भंग झिल्लरी सबहिनि मारू गायो । मदन सुभट ले पच्चवान कर ब्रज सनमुख ह्वै धायो ॥ जानि बिदेस नन्द नन्दन को अबलनि त्रासु दिखायो । सूर श्याम पहिले गुण सुमिरत जात प्राण बिरमायो ॥ १७३ ॥ राग मलार ॥ कि धों घन गरजत नहि उन देसनि । कि धों वह इन्द्र हठि हि हरि बरज्यों दादुर खाए सेसनि । किधों वह देस बकनि मगु छाड्यो धर बूढनि न प्रबेसनि । किधों उहिं देस मोर चातक पिक बधिकनि बधे बिशेसनि । किधों उहिं देश बाल नहि झूलति गावत गीत सहेसनि । पथिक न चलत सूर के प्रभु पैं जासों कहों संदेसनि ॥ १७४ ॥ राग मलार ॥ सखी री पावस सैन पलान्यों । पायो बीच इन्द्र अभिमानी हरि बिनु गोकुल जान्यों । दसहू दिसा धूम देखि कै कंपित हैं अति देह ॥ मनहु चमू चतुरंग चलत बहु बाढी है खुरखेह । बोलत मोर शैल द्रुम चढि बग उडत त्यागि डरि डाके । मनों सेज फहराय फिरावत भाजत कहत पुराके । गरजत गगन गयंद गुंज मानों अरु दादुर दल कार । सूर दास प्रभु अपने ब्रज को काहे

न लेउ संहार ॥ १७५ ॥ राग मलार ॥ कोउ सखि नई चाह सुनि आई । यह ब्रज भूमि सकल सुरपति पै मदन मिलिक करि पाई । घन धावत बग पाँति पटोअिर बैरख तडित सुहाई । बोलत पिक चातक ऊंचे सुर मनौं मिलि देत दुहाई । दादुर मोर चकोर बदत सुक सुमन समीर सहाई । चाहत कियो बास वृन्दाबन बिधिसौं कहा बसाई । सीव न चापि सक्यो तब कोऊ हुते बल कुंवर कन्हाई । अब सुनि सूर श्याम के हरि बिनु ए करि हैं ठकुराई ॥ १७६ ॥ राग मलार ॥ देखियत चहुं दिग तें घन घोरे । मानहु मत्त मदन के हस्ती बल करि बंधन तोरे । श्याम सुभग तन चुवत गल्ल मद बरषत थोरे थोरे । धावत पवन महावत छू पै सुरतन अंकुस मोरे । मनहु दन्त बग पंक्ति निकसि उर अवधि सरोवर फोरे । बिनु बेला जल निकसि नयन मग कुच कंचुकि बढि बोरे । तब उहि समय आनि ऐरावत ब्रज पति सौं कर जोरे । अब सुनि सूर श्याम के हरि बिनु गरत गात जैसे ओरे ॥ १७७ ॥ राग मलार ॥ बरषा ऋतु आई हरि न मिले माई । गगन गरजि घन दामिनि दीनी दिखाई । मोरनि बन बुलाई दादुर लीनों जगाई ॥ पपीहा पुकार सखि सुनतें बिकल भई । इन्द्र चापु चढाई सायक डारें रिसाई । बिषम बूंद इतोरी याहीतें सहो न जाई ॥ पथिक पातो लिखिाइ बेग दीजै पहुंचाई । सूर सुमति जैसे आवहि जदुराई ॥ १७८ ॥ राग मलार ॥ सखीरी चातक मोहि जिवावै ॥ जैसे हीं पिउ पिउ रटति रैनि दिन तैसे बहु पुनि गावै । पहिले बिरह जरी प्रीतम के तोउ जीभ न रहावै । आपुन बोलि पिवाइ बिरहिनी अमृत रस कोंरावै । जान सहाय होय यह पंछी प्राण बहुत दुख पावै । जीवन सुफल सूर ताही को काज पराए आवै ॥ १७९ ॥ राग मलार ॥ बहुरि हरि आवहिगे किहि काम । ऋतु बसन्त अरु मकर बितै के अरु बादर भये श्याम । तारे गनत गगन के सखिरी मोहि बितै सब जाम ॥ घरको काज सबै बिसरायो सुमिरि सुमिरि पिय नाम । छिनु भीतर छिनु बाहिर ठाढी कछै न तन धन धाम । सूर दास प्रभु अवधि बिचारत रहे अस्थि अरु चाम ॥ १८० ॥ राग मलार ॥ ब्रज पर बहुरो आए गाजन । जो कबहूं पति जाइ बले की मुख क्यों दिखवत लाजन । बादर दल चहुं दिशितें उमडे सुनिय न लागे बाजन । घोष के लोग कान्ह बल बिनु अब जित तित धाए भाजन । आपुन जाइ द्वारका छाए लागे श्याम बिराजन । सूर दास गोपी क्यों जीवहिं जिनके बिछुरे साजन ॥ १८१ । राग मलार ॥ बहुरो बादर बरषन आए ॥ अपनी अवधि जानि नन्द नन्दन गरजि गरजि घन छाए । सुनियत हैं सुर लोक बसत हैं सेवक सदा पराए । चातक कुलकी पीर जानि के जहं तहंतें उठि धाए । द्रुम किए हरित हरषि मिलि बल्ली दादुर मृतक जिवाए । छाए निबिड नीरदघन अहं तहं पंछिनिहू पति भाए । समुझति नहिं सखि चूक आपनी बहुते दिन हरि लाए । सूर दास स्वामी करुणा मय मधुबन बसि बिसराए ॥ १८२ ॥ राग मलार ॥ कहा अब पहिले मिलन को नेह । हमरे जिबतें नन्द नन्दन अब कियो अनतकहुं गेह । एक दिवस गई गाइ दुहावन तहं कछु बरष्यो

सेइ । हितके लियें उढ़ाइ पीत पटकर निज एके देह । अब हमको लिखि लिखि पठवत हैं जोग जुगति तुम लेहु । सूर दास बिरहिनि क्यों जीवहि कोन जतन है एहु ॥ १८३ ॥ राग मलार ॥ मोको माई जमुना जम ह्वै रही । कैसे मिलों श्याम सुन्दर को बैरनि बीच बही । जबहि श्याम उठि चले मधु पुरी कछू न बात कही । ठाढी ठगी रही जैसे पुतरी चलतन फेट गही । अब कह करों कहो मेरी सजनी हों अब बिरह दही । सूर दास प्रभु दरस बिमुख भई नेकु न सुरति लही ॥ १८४ ॥ राग मलार ॥ परम बियोगिनि गोविन्द बिनु कैसें के बितवै दिन रैंवन के । हरित भूमि भरे सलिल सरोवर मिठे मग मोहन आवन के । पहिरि सुहाई सब कत सुहागिनि झुंडनि झूलनि गावन के । गरजत झुमरि घमंड दामिनी मदन धनुष धरि धावन के । दादुर मोर सोर सारंग पिक मोहे निसा सुर पावन के । सूर दास दिन कैसे निघटत चिगुण किये शिर रावन के ॥ १८५ ॥ राग मलार ॥ मोहि भरोसो कान्ह का डरयोजिनि कोई । सुनिरी जसुमति कंस भीततें तूं जिनि व्याकुल होई । पहिलेही पूतना प्रकट के आई कुच विष पोई । बासी प्रबल छ दिन के बालक मारी देखत तोई । केशि तृणावृत अघ अरिष्ट इन देख्यो बल टोई । गिरि कर धारि घोष सब राख्यो सूर इन्द्र मद खोई ॥ १८६ ॥ राग मलार ॥ हमारे माई मोरउ बैर परे । घन गरजे बरजे नहि मानत त्यों त्यों रटत खरे ॥ करि इक ठौर बीनि इनके पंख मोहन शीस धरे । याहीतें हमहीं को मारत हरिही ढीठ करे । कह जानिये कवन गुण सखिरी हमसो रहत अरे । सूर दास परदेस बसत हरि एबनतें न टरे ॥ १८७ ॥ राग मलार ॥ मानों माइ सबनि इहै भावत ॥ तब उहि देस नन्द नन्दन पहि कोउ न दिसा जनावत । धरत न द्रुम नवपल्लव फूलफल पिक बसंत नहि गावत । मुदितन सर सरोज नव अलि कुल पवन पराग उडावत । पावस बिबिध बरन बादर घन उमडि न अम्बर धावत । दादुर मोर चकोरन बोलत दामिनि रूप दुरावत । यहं अब प्रकट निरंतर निसि दिनु बलकरि बिरह बढ़ावत ॥ सूर बैर ब्रज नाथ न जानत क्यों सर्बज्ञ कहावत ॥ १८८ ॥ राग मलार ॥ श्याम घन देखि गगन घन डरते । औसर पाइ उद्यान गहन बन अपनीसेवा करते । अंग छटा नव घटा निरखि मन व्रीडित अल्प उचरते । बैभो बानि मानि सौभगता ब्रज पथ पैडन भरते ॥ गो तृण हित हरि जात तबै संग छक छांड अनु सरते । यही पुण्य तें जगत जलद होइ दशहू दिशा बिचरते ॥ अब बिस्वास प्रवास प्राण पति अति मद सर्बसु हरते । सूरश्याम आगम आसा करि हनन बिरम बा डरते ॥ १८९ ॥ राग मलार ॥ अब कछु भोरे भाय भई । निरखत बदन नंद नंदन को औरहुती सुगई ॥ उपजी प्रीति हृदय अन्तर जड़ सप्त पताल गई । अब द्रुम पसरयो सिखर अम्बर लों चहुं दिशि छाय रई ॥ बचन सुपच बंक अवलोकनि गुण निधि पुष्प मई । सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीति ढई ॥ १९० ॥ राग मलार ॥ नयन घन रहत न एक घरी । कबहुन घटत सदा पावस ब्रज लागिये रहति झरी ॥ बिरह इन्द्र बरषावत निशि दिन बृजपर अधिक करी ॥ ऊरध स्वास समीर तेज जल उर

भुविउमंगि भरी । बूड़त भुजा रोंम द्रुम अम्बर अरु कुच उच धरी ॥ चलि न सकत पग पथिक रहे थकि चन्दन कीच खरी । रस ऋतु मिटी भई अब रकैं यह बिधि उलटि परी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु ऋतु मरजाद टरी ॥ १९१ ॥ राग धनाश्री ॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट । एक टक मगु जोवति चकोर लों जबतें तुम बिछुरे नागर नट ॥ भरि भरि लोचन नीर लेति उर सजल करत कुच कंचकि के पट । मानहु बिरह की बिज्जुलता लगि लयेा नेंसु शिव शेस सहस घट ॥ जैसें जबके अग्र ओसकन प्राण रहत इमि अबधिहि के तट । सूरदास प्रभु सधि कि न मिलहु चलत कहे माधोसों दिन आए निकट ॥ १९२ ॥ राग धनाश्री ॥ अति रस लम्पट मेरे नयन । तृपति न मानति पिवत कमल मुख सुन्दरता मृदु बैंन ॥ दिन अरु रैनि घरी छिनु पलभरि काहू नाहि न चैंन । शेाभा सिंधु समाय कहांलों हृदय सांकारो येन ॥ अब यह बिरह अजर उमंगी अंग बिमलायेा दुख दैंन । सूर वैद बृजनाथ मधुपुरी काहि पठाऊं लैंन ॥ १९३ ॥ राग धनाश्री ॥ नयननि को मन सुनहु सयानो । निशि दिन तपत सिरात न छिनु भरि जद्यपि उमंगि चलत पल पानी ॥ हौं उपचार अमित उर आनति खल भए लोक लाज कुल कानी ॥ कछु न सुहाय दहे दरशन दुख वारिज बदन मंद मुसकानी । रूप लकुट अभिमान निडर ह्वै जग उपहास सहत नलजानी ॥ बुधि बिबेक बल बचन चातुरी मनहु उलटि उन मांझ समानी । आरज पथ गुरु ज्ञान गुप्त करि बिकल भई तन दसा भुलानी । जाचत सूरश्याम अंजन को वह मूरख जिय मांझहितानी ॥ ॥ १९४ ॥ राग धनाश्री ॥ अबतेा ऐसेई दिन मेरे । सुनिरी सखी दोष नहि काहू हरि हित लोचन फेरे ॥ मृग मद मलय कपूर कुम कुमा जे सब संतत चेरे । मन्द सुपवन सुमन शसि शीतल तेदेखियत करेरे ॥ चातक मेार कोकिला मधुकर उपबन दिये बसेरे । जेा भावत सेा बकत दिवस निशि बरजत रहत न टेरे ॥ जे द्रुम सींचि सींचि कर अपने कियें बढ़ाय बड़ेरे । सूरदास किसलय करवर ह्वै आनि नयन मग घेरे ॥ ॥ १९५ ॥ राग धनाश्री ॥ अति मलीन वृष भान दुलारी । हरि श्रम जल भीजे उर अंचर यह लालचिन धुवावति सारी ॥ रूखे चिकुर बदन कुम्हिलानेा ज्यों नलिनी हिम कर की मारी । अध मुख देति ऊंचेा नहि चितवति ज्यों धन हारे थकित जुआरी ॥ हरि संदेस सुनत मूर्छित भई बिरह जरी दूजे अलि जारी । सूरश्याम बिनु कैसें जीवैं ब्रज बनिताकि प्रान दियेा वारी ॥ १९६ ॥ राग जैतश्री ॥ उमंगि चले दोउ नयन बिसाल । सुनि सुनि यह संदेस श्याम घन सुमिरि तुम्हारे गुण गोपाल ॥ आनन अरु उरजनि के अन्तर जल धारा शेाभित तिहिं काल । जानु जुगुल जनु मेरु शृङ्ग तें मिले जाय सम शसिहिं सनाल ॥ भीज्यौ उर अंबर अति राजत तिहिं तर हरि मुकतन की माल । मनहुं इंदु अन नव नलिनी दल अलंकृत अमी ओसकन जाल ॥ कहं वह प्रीति रीति राधा की कहं यह करिनी उलटी चाल । सूर श्याम यह कपट संदेसनि क्यों जीवहि बिरहिनि बेहाल ॥ १९७ ॥ राग जैतश्री ॥ केतेदिन बीते री हरि बिनु देखे । गनत गनत मिटि गई सखीरी कर अंगुरी को रेखें ॥ जिहि यहि बिरह अमर

कीनो सोबिसरी नयननिमेखें । हौं डरपति अवधिहि सूरज प्रभु जिनि पारो सुर लेखें ॥ १९८ ॥ राग आसावरी ॥ ते कह जाने पीर पराई । संदर श्याम कमल दल लोचन हरि हलधर कोभाई ॥ मुख मुरली शिर मोर पखौआ वन वन धेनु चराई । जे जमुना जल के रंग रंगि गये अजहुंन तजत कराई ॥ बहुतें बिरमि रहे रूखे मन देखो हठि समुझाई । सूर स्वाति की बूंद भयो मन हेरत गयो हिराई ॥ १९९ ॥ राग आसावरी ॥ जनि पत वादिहि चितए प्रान । चलती बेर हरन नहि कीनों पंथ अमंगल जान ॥ औरों अंग समाज सकल गुण मन लोचन अरु ज्ञान । स्यन्दन अश्व पदाति किये लै मासिक दई मुसकान ॥ मथुरा नगर राज लीलाको ब्रज मृगया बन ठान । श्याम मृगी व्याधा ऊधो पुनि जोग जुगत शशिवान ॥ करुणा सिंधु कहतश्रुति मुनि गण ते उन कीनी कानि । फिरि जिनि मन पछिताहु सूर प्रभु उपजे प्रेम विज्ञान ॥ २०० ॥ राग आसावरी ॥ तबतें छीन सरीर सुवाहु । आधो भोजन मुख नहि करत है सब ग्वालन मन दाहु ॥ आनंद गयो गई सब शोभा काहुन मन उछाहु । नन्द गोप पिछ वारे डारत नयननि नीर प्रवाहु ॥ एक बार बहुरों या ब्रज में दूध पतूखि न खाहु । सूर सपूजवहु गोकुल आसा उलटि मधुपुरी जाहु २०१ ॥ राग आसावरी ॥ सखीरी हरिहि दोष जिनि देहु । जातें इते मान दुख पैयत हमरेहि कपट सनेहु ॥ बिद्यमान अपने इन नयननि सुनों देखति गेहु । तदपि सूल ब्रजनाथ बिरहतें फिरि न हेरत वह वेहु ॥ कहि कहि कथा पुरातन ऊधो अबतुम अन्तन खेहु । सूरदास तनतो यों है हैज्यों फिरि फागुन मेहु ॥ ॥ २०२ ॥ राग आसावरी ॥ उघरि आया परदेसी को नेहु । सब तुम कान्ह कान्ह कहि टेरत फूलतिहौ अब लेहु ॥ काहेको तुम सरबस अपनो हाथ पराए देहु । उन जु महा ठग मथुरा छांड़ी सिन्धु तीर कियो गेहु ॥ अबतन तपतमहा उर उपजी बाढ्यो मन संदेहु । सूरदास बिहवल भई गोपी नयननि बरष्यो मेहु ॥ २०३ ॥ राग देव गंधार ॥ कुंवरि कोउ बैरागिनि बैराग । पलटति बसन करति निशि चोरो बपु बिलसति भई जाग ॥ बेसरि बेह मूंदि रंग मद मथि नखनि विदारति मांग । श्रवणनि तें तजि तरल तरोना पहिरति फणि मणि नाग ॥ कुसुमा वलि ग्रंथित उर माला रचिपचि बांधी पाग । बासर रहति रजनि के धोखे धोए मिटत न दाग ॥ सुंदरि एक श्याम तें बिछुरी ढूंढति है बन बाग । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको आलि उड़ावत काग ॥ २०४ ॥ रागटोड़ी ॥ हरिनसिले रीमाई अनमु एहि लाग्यो आन ॥ जोवत मगद्योस द्योस बीतत जुगसमान ॥ चातक पिक बचनसखी सुनि नपरै कान ॥ चन्दन अरुचन्द किरनि मनहु केटिक भान ॥ जुवती तन भूषनसजे जानों रण आतुर बाण ॥ भीषमलों मदन सहित अरजुनके बान ॥ सोपति तन सेज सूर चलन चपल प्रान ॥ दक्षिण रवि अवधि अटक इत नो एआन ॥२०५॥ राग बिलावल ॥ हरि देखिबे की साधमुई ॥ उड़ि उड़ि फिरत नयन के गोलक फलफूटे जैसें आक रुई ॥ जोग सुनत औरें जिय उपजी प्रेमपुलकि अमखेदचुई । जानों नहीं कहांतें आवति वहमूरति मन माह दुई ॥ बिनु देखेकी विथा बिरहिनी अति जुर जरति नजात मुई । सूक्त सूरधान अंकुरलों मानहु बरषा मूलतुई ॥२०६॥ रागबिलावल

बायस गह गहात सुनि सुन्दरि बानी बिमल पूर्व दिसि बोली ॥ आजु मिलहिंगे श्याम मनोहर चितदै सुनि राधे मनभोली ॥ कुच भुज नयन अधर फरकतहैं बिनु समीर अम्बरध्वज डोली। शोचि निवारि करहु मन आनद जानत भाग दशा विधि खोली ॥ सनत बचनसबेश सखिनिके प्रेम पुलकि तरको उरचोली ॥ सूरदास सुविलास नंदसुत रहसी बिलसित नारि अमोली ॥ २०७ ॥ राग नट ॥ तुम्हरे बिरह ब्रज नाथ अहो पिय नैननि नदी बढ़ी । लीये जात निमेष कूल दुहूं ते मान चढ़ो ॥ गोपक नव नौका न सकत चलि स्योसर कनि बढ़ि बोरति । आध स्वास समीर तरंगनि तेज तिलक तरु तोरति ॥ कज्जल कीच कुचील कि ए तट अंतर अधर कपोल । रहे पथिक जनहां सतहां थकि हस्त चरण मुख बोल ॥ नाहिन और उपाय रमापति बिनु दरशन छिनु जीजै । अश्रु सलिल बूड़त सब गोकुल सूर सु कर गहि लीजै ॥ २०८ ॥ राग नट ॥ हमकों सपनेहूं में शोच । जादिन तें बिछुरे नद नन्दन ताही दिन को पोच ॥ मानों गोपाल आये मेरे आंगन हंसि भुज बांह गही । कहा करों बैरिन भई निद्रा नेकु न अधिक रही ॥ ज्यों चकई प्रति बिम्ब देखिकें आनन्दी पिय जानि । सूर पवन मिस निठुर विधाता चपल करयो जलआनि ॥ ॥ २०९ ॥ राग नट ॥ सुपनेहू तो देखिये जो नयननि नोद परै । विरहिनी ब्रजनाथ बिनु कहो कौन उपाय करै ॥ चन्द मन्द समीर निशि दिन सेज सजरजरै । कहो कौनहि भांति मेरो मन न धीर धरै ॥ बिबिस जतन अनेक कीने कछु न चाड़ सरै । सूर शीतल कृष्ण बिनु कहो कौन तापु हरै ॥ २१० ॥ राग नट ॥ सखी री श्याम सबै एक सार । मीठे बचन मनोहर बोलत अन्तर जारन हार ॥ भंवर कुरंग काग कोकिल शिखि कपटिन की चटसार । मदन गोपाल आपुनहिं पढ़ाये प्रीति किये बहुवार ॥ ऊने आई घटा जलद की प्रेम प्रतीति अपार । सूर दास सरिता भरि उमड़ो चातक करत पुकार ॥ २११ ॥ राग कान्हरो ॥ अंखियां अजान भईं । एक अंग अवलोकति हरि को और हुतो सुगईं ॥ यों भूखी ज्यों चोरभरे घर चोरी निधि नलई । बदलत भोर भयो पछितानों करतें छांड़ि दई ॥ जिहि मुख पहिलेंही परि पूरन त्योंहीं क्यों न रई । सूर सकति अति लोभ बढ्यो है उपजत पोर नई ॥ २१२ ॥ राग केदारो ॥ मनों बिधि हों हीं उलटि रची । जानति नाहि सखो काहे तें प्रेम न पजरि पची ॥ बूड़न भुई नीर नयननि के बही नतेज तची । जल प्रवाह अरु बिरह अगिनि तें क्यों दुहुं बीच बची ॥ जे कछु सकल लोक की शोभा ते हारका सची । उतको सकल आधि बड़वा नल ममउर आनि खची ॥ बेतो संकर्षन के भैया हैं कीरति सकल मची । सूर सुजिहि माया जगमोह्यो सोइ मुख निरखि नची ॥ २१३ ॥ राग केदारो ॥ कैसें धों बनत ब्रज दूरि को आवनु। सुनियत हैं वहांहुते जो सजनी दूरि कियो है अनत गवनु ॥ निकट बसत हम मरमु न जान्यों मिलिहु न आई छांड़ि भवनु । अब वे अपने कुटुम्ब सहित सखि भवन सिधारे जीति जवनु ॥ अगम अनन्त दूरि पछिम दिशि जहां कहत हैं सिंधु लवनु । सूर दासतन मन तरसत अब जदुपति पै सो जाय कवनु ॥ २१४ ॥ राग केदारो ॥ सरद समयहू श्याम न आये । जानति हों रस बस उहि औसर काहु बिरहिनी बिरमाये ॥ अमल अ

काश कास कुसमित भये लक्षण शोच न जाये । सर सरिता सुखता जल उज्जल अलिकुल कमल सुहाये ॥ नव मयंक मकरन्द दुंद ध्वज दाहक गरल गवाये । प्रीतम अंग संग मिलि सुन्दरि सचि सचि सिंधु सराये ॥ सूनी सेज तुषार तेज नहि बिरह सिंधु उपजाये । सूर श्याम गई आस मिलन की भये व्रज नाथ पराये ॥ २१५ ॥ राग केदारो ॥ दधि सुत जात हो उहि देश । द्वार काहैं श्याम सुन्दर सकल भुवन नरेश ॥ परम शीतल अमिय तन तुम कहियो यह उपदेश । काज अपने सारि हमकों छांड़ि रहे विदेश ॥ नंद नन्दन जगत बन्दन धरहु नटवर भेस । नाथ कैसें अनाथ छांड़ो कहियो सूर संदेस ॥ ॥ २१६ ॥ राग केदारो ॥ हरि के रूप के रसै आली कैसें कै कहों । अपने तन में भेद बहुत विधि रसना न जाने इन नैननि की दसै । जे देखत ते नैन रस न बिनु हारी रसन दसनन तिसै ॥ बिनु बानी जल उमगि अधिक निशि सुमिरि सुमिरि वह सगुण जसै । बार बार पछितात यहै हौं कहा करों जो विधिन बसै ॥ सूर सकल अंगनि की यह गति को समुझावे या छपद पसै ॥२१७॥ राग गौरी ॥ कैते दिन बीते हरि देखे बिनु माई ॥ नन्द सुवन मुख कमल मनोहर मूरति श्याम सदा सुखदाई ॥ जब उठि जात प्रात गोसुत ले गोबिन्द ग्वाल संक बल भाई । अब जु निकट मथुरा मधुसूदन निपट जनक जननी बसराई ॥ तबतें गनत घरीघर आंगन बासर बिषेरैनि न विहाई । सूरदास ऐसि कठिन भई है प्राण पचत घट छांड़ि न जाई ॥२१८॥ राग गौरी ॥ वह दिन कैसोई जु हुतोरी । ह्वै जाते मेरे आंगन मोहन वरियां रहे है मोरो ॥ बाल दशा की प्रीति निरन्तर परी रहति हो ठोरो । राधा राधा नन्द नदन मुख लगी रहति ही लोरो ॥ वेणु पाणि ग हि मोहि सिखवते मोहन गावत गौरी । सूर दास श्यामा संगम सुख छिनु सुमिरत भर भोरी ॥ २१९ ॥ राग नट ॥ रहो रहो रे विहंगम वन बासो । तुहरे बोलत रजनी बाढी बचन सुनत नीदौ नासो ॥ तन तलबेली बढि प्रीतम की ज्यों चकोर चन्दहि तासी । सूर दास प्रभु तुहरे दरश कों जाय लेहो करवट कासो ॥ २२० ॥ राग गौरी ॥ हरि बिनु कौन सों कहिये । मनमें बिथा रहत अरनी ज्यों उर अन्तर दहिये ॥ कानन भवन रैनि बासर सखि काहु न सुख लहिये । हम तो भई यज्ञ के पशु ज्यों कवलों दुख सहिये ॥ कबहुंक जिय आवत लै ऐसो जाय जमुन जल बहिये । सूर दास प्रभु राम कृष्ण बिनु कैसें के व्रज रहिये ॥ २२१ ॥ राग केदारो ॥ इत निकदूरि गोपाल कबहूं न मिले आई । कहिये कहा दोषु किहि दीजै इतनि हमारी अड़ताई ॥ सपनेहू सोवत सुनि सखिरी अवधि निधन निधि पाई । एकहि बार अचानक कोकिल उपबन बोलि जगाई ॥ जो जागों तो कहूं उठि देखों विकल होति अधिकाई । किसल कुसुम नव नूत द्रुमों दिशि मधुकर मदन दुहाई ॥ बिछुरत तनु न तज्यों तेही छिनु कठिन गई संग साई । समुझि न परी सूर तिहँ औसर हंसि निज प्रीति लगाई ॥ २२२ ॥ राग मलार ॥ माईरी श्याम कहा हितु जाने । कोऊ प्रीति करै कैसेहूं अपनोहीं गुण ठाने ॥ देखहु इन जलदन की करनी बरषि जु पोषहिं आने । चातक चरण सदाको सेवक दुखी बिना जल प्राने ॥ भ्रमर कुरंग कोकिला कवितें यहसब कपट बखाने । सूरदास

सरबसु दीजै तो करो कृतहि न माने ॥ २२३ ॥ राग मलार ॥ अब वे बातेईं जु रहीं । मोहन मुख मुसुकाय जु कबहूं कान्ह जे जे कही ॥ प्रीति भूलता सुधि न रही सब सनमुख सबै सही । अबहै सालति उर अंतर तें काढ़े कढ़त नहीं ॥ सखि यह बिथा बिशाल करमकी कत है फिरत बही । हरि चुंबक जहं मिले सूर प्रभु ले चलि मोहि तही २२४ ॥ राग मलार ॥ जाहिरी सखी सिख सुनि मेरी । जहं अबही नन्दलाल बसतु हैं बारेक वहां आउ दै फेरी ॥ तू कोकिला कुलीन श्याम तन जानति विथा बिरहिनी केरी । उपबन बैठि बोलि पिक बानी बचन बिसाहि मोहि करि चेरी ॥ प्राणन के प्रकटे पाई जैसें अतिहि बिसाइ सुजस को ढेरी । नाहिन कोइ और उपकारी यहि बिधि सुधा हेरी ॥ करि यज्ञ प्रकट पुकारि द्वार ह्वै अबला आनि अनंग अरि घेरी । ब्रजलौं आउ सूरके प्रभु को गावहि कोकिल कीरति तेरी ॥ २२५ ॥ राग सारंग ॥ कहूं तो जो कहिबे की होय । प्राणनाथ बिछुरे की वेदन जानत नाहिन कोय ॥ तबतें अधर सुधा रस लै लै रही मदन रस भोय । जो रस शिव सनकादि न पावैं सो रस बैठी खोय ॥ बिरह बिथ बाढ़ी उर अंतर जासें व्यापी होय । सूरदास मन हरन मनोहर लै गए मन गोय ॥ ॥ २२६ ॥ राग मलार ॥ कोउ माई बरजै वा चंदहि । करतब कोपु बहुत हम ऊपर कुमुदिनि करति आनंदहि ॥ कहां कुहूकहं रवि अरु तमचुर कहां बलाहक कारी । चलत न चपल रहत रथ थकि करि बिरहिनि के तन तारी ॥ निंदति शैल उदधि पन्नग को चांपति कमठ कठोरहि । देति असीस जरा देवी को राहु केत किन जोरहि ॥ ज्यों जलहीन मीन तनु तलफतु सोई तपति ब्रजबालहि । सूरदास प्रभु बेगि मिलावहु मोहन मदन गोपालहि ॥ २२७ ॥ राग मलार ॥ हरि बिनु निशि देखत डर लागतु ॥ बार बार अकुलाइ देहतें निकसि निकसि मन भागतु ॥ प्राची प्रथम देखि पूरन शशि ह्वै आयो तन तातो ॥ मानहु कमलनि बन बिरहिनि कौं करलीनों सिर रातो ॥ भृकुटी कुटिल कनक चापजनु अति सद सरहि जु सांधे ॥ मनहु काम कमन्धातु कोपसों विषम बान बर बांधे ॥ सुनि सठ सोहि प्राणपति मेरो जाको जश जगु जान । सूर सिन्धु बूडे तें काढ्यौ ताहू कृतघ्न न मानत ॥ २२८ ॥ राग मलार ॥ अंखियां करति हैं अति आरि । सुन्दर श्याम पङ्कजई के मिस मिलि न जाहु दिन चारि ॥ बांह थकी वायसहि उड़ावत कबहूं देखों अनु हारि । राधा श्याम श्याम कहि टेरति कालिन्दी कि करारि ॥ कमल नयन जननी के ऊपर खंजन बूड़त बारि । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु सकत न पंख पसारि ॥ २२९ ॥ राग केदारो ॥ जोपै कोउ मधुबन लै जाय । पतियां लिखी श्याम सुन्दर को कर कंकन देउ ताय ॥ अब वह प्रीति कहां गइ माधो किहते बेनु बजाय । नयन नीर सारंग रिपु भीजै दुख सुख रैनि बिहाय ॥ सून्य भवन मोहि खरो डरावै यह ऋतु मन न सुहाय । सूरदास यह समो गए तें पुनि कहा लैहैं आय ॥ २३० ॥ राग सारंग ॥ अब ए यहां हैं ते कहां । जहं ए श्याम मदन मूरति सखि लैचलि मोहि तहां । कुटिल अलक मकराकृत कुण्डल चंचल नयन बिशाल । उर अनूप बन माल विराजत कंचन लता तमाल ॥ घन तन श्याम पीत पट ओढ़े जनु अलि कमल पराग । बिपुल

बाढ़ भरि करि परि रम्भन मनो मिले द्रुम नाग ॥ सोवतिही सपने को अति सुख सत्य जानि जिय जाग । सूरदास प्रभु प्रकट मिलन को चातक ज्यों लौ लाग ॥ २३१ ॥ राग मलार ॥ ऐसे माई हम न जाने श्यामहिं । सेवा करत करी उनि ऐसी गए जाति कुल नामहिं ॥ तन मन जोरि प्रीति जो तोरहि कहा भलाई तामहि । ते कह पोर पराई जानहि ज्यों लुब्धक अपने कामहि ॥ चातक चरण सदाको सेवक दुखी बिना जल पानहि । सूरदास प्रभु अब यह कीनी रची कूबरी नामहि ॥ २३२ ॥ राग देवगन्धार ॥ जब तें बिछुरे कुंज बिहारी ॥ नींद न परै घटति नहि रजनी बिथा बिरह जुर भारी । धिक सुंदरी बिरह को बेदन जगमें रही उजारी । रबि कि रश्मि लागति अन तातो यहि शीतल शशि जारी ॥ श्रवणनि दुख सुहाय नहि सखिरी पिक चातक द्रुम डारी । तनहि न भावत अति आतुर ह्वै कर कंकन जु उतारी । सूर श्याम बिनु बिषु लागति है कुसुम सेज जुर जारी । बिलख बदन दृगभान नन्दिनी निंदति कपि रिपु हारी ॥ २३३ ॥ राग केदारो ॥ मैं जान्योंरी आए हैं हरि जागि परे पछि तानी । इते मान तन तलफत सखिरी मनहु मीन बिनु पानी ॥ सुनहि देहतें जरत बिरह ज्वर जतननि परक्षाति आनी । अब कह करों अपथ मिलिवे की बढ़ी व्यथा दुख दुहरानी ॥ पठव पथिक सब समाचार लिखि बकनि बकति अति अकुलानी । सूरजश्याम सुधा बिनुकैसें घटति कटिन दृग पानी २३४ ॥ राग मलार ॥ ऐसें जो अबही हरि आवैं । निरखि निरखि वह बदन मनोहर नयन बहुत सचु पावै ॥ तैसिये श्याम घटा तैसोइ हरि तब तैसिये बग पंकति दिखावै । तै सोइ मोर कुलाहल सुनिकै सखि हम हरषि हिंडोरना गावैं ॥ कबहुंक आव जु हिलि मिलि खेलहि कबहुं निकुंज बुलावैं । कबहुंक लै संग सखा शैल चढ़ि मुरलि मलार बजावै ॥ बिकुरत यहै प्राण कैसें करि बहुत भांति समुझावै । जितही हरि जानि चलत सुनि सूरज तिहिं पहिले उठि धावे ॥ २३५ ॥ राग सारंग ॥ देखि सखोरी इत है वह गाउं । जहां बही नन्दलाल बसतु है मोहन मुरा नाउं ॥ कालिन्दी के तोर बिराजत परम मनोहर ठाउं । जोतन पंख होहिं सुनि सजनी आजु अबै उडि जाउं ॥ होनी होइ सु होउ यहि औसर हों तो अन्न न खाउं । सूर श्याम सुन्दर सों हितु करि लोगनि कहा डराउं ॥ २३६ ॥ राग गौरी ॥ सुनि सखि धन्य है ते नारि । जे अपने प्राण वल्लभ को सपनेहूं देखति अनुहारि ॥ हों कह करों जु श्याम चलेतें पहिलेहीं नींद गई दिन चारि । अब काहू के लहन आवति रही रूठि अपमान सम्हारि । अरु ताहू में नयन तपत ए अनु दिन मुख बाढ़ति है बारि । सूर दास दोउ सुभग सरोबर चले उमगि मरजाद उतारि ॥ २३७ ॥ राग मलार ॥ जो पै नन्द सुवन घर होते ॥ तो सुनि पिक चातक यह बिनती कत डरती डरतोते । हमहि अकेलि जानि इहि गोकुलहयगय रथरथ जोते । मानहु गरजि गरजि घन पठवत मदन महावत पोते । जो कछु कर लाग तुहै इहि ब्रज खेतनु सरबस होते । सूर दास अब शैल धरन बिनु कहा सरइ अब मोते ॥ २३८ ॥ राग मलार । हरि परदेश बहुत दिन लाए । कारी घटा देखि

बादर की नयन नीर भरि आए । पालागों तुम बीर बटाऊ कौन देशतें धाए । इतनी पतियां मेरी दीजहु जहाँ श्याम घन छाए । दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए । सूर दास स्वामी के बिछुरे प्रीतम भए पराए ॥ २३९ ॥ राग मलार ॥ आजु घन श्याम को अनुहारि । उनै आए साँवरे सखिरी देखि रूप की आरि ॥ इन्द्र धनुष मनो पीत बसन छवि दामिनि दसन बिचारि ॥ जनु बगपाति मिली मोतिन की चितवत चित्त खेत है हारि । गरजत गगन गिरा गोविन्द की सुनत नयन भरेवारि ॥ सूर दास गुण सुमिरि श्याम के बिकल भई ब्रज नारि ॥ २४० ॥ राग केदारो ॥ अब हरि आइहैं जिनि सोचहि । सुनि बिधु मुखी वारि नयननितें अपनी सो जिनि मोचहि । लै लै मुख मसि अपने कर करि लिखि संदेस छाडि संकोचहि । सूर सुबिरह जनाउ करति कत प्रबल मदन रिपु मोचहि ॥ २४१ ॥ राग केदारो ॥ बज्र की छतियां बिहरि नाहि न जाति । बिद्यमान बिरह शूल उरही में जो समाति आवन की अवधि आसतें तालगि प्रतियाति । प्रेम कथा प्रकट भई शरद रास राति । कहत सुनत सयुझत नहि जियहू न खजाति । ज्यों ठगु बिधिहरत कर चंगुर दै जिहि भांति । यों फिरि मुसिकाइ सूरमन सागई मांति ॥ एकै पै जिय में रही बदन कमल को कांति ॥ २४२ ॥ राग कान्हरो ॥ कर कपोल धरें भुज जानुपर लिखति है चरण नख रेखनि । सोचति बिचारु करति बैठी कामिनि धरति ध्यान मदन मुख भेखनि ॥ नयननि नीरु भरि भरि लेति उसास भिरी धिक धिक रटिनु जाति अलेखनि । कमल नयन रहे मधु पुरी छाइ करि जाके गुणन जाने सहस मुख शेषनि । अवधि झुठाइ कान्ह सूनुरी सखी क्यों जीवों निशिदामिनि देखनि ॥ सूर दास प्रभु चेटकु खगाइ ए नाचि गयो नट नाना भेषनि ॥ २४३ ॥ राग सारंग ॥ यह सब मेंही पोच करी । श्याम सुरूप निरखि नयननि उहि भोहनि फंद परी । बय किशोर कमनीय कुमति हो खुल्होते न डरी । अब छवि गई समाइ हृदै में टारतहू न टरी । अति सुख दुख व्याकुल संभ्रम भ्रम बिधु मुख निरखि खरी ॥ रोम रोम सुन्दरता देखत आनन्द उमगि भरी । यद्यपि सूर सहति सनमुख सर अंगहु दै न सरी । तथपि कर मुरली अब खोकत उचटि अनंग जरी ॥ २४४ ॥ राग के दारो ॥ अब सखि नीदौ गई ॥ भाई जिय अपमान मानि जिनु सकुचति ओट लई । अति रिस निज बस कत किए निशि आगम अटक दई । सपनेहुं पिय संजोग सहति नहि सहचरि सोति भई । कहति पोच सोच मनहीं मन करत न बने खई । सूर दास तन तजें भले बरु बिधि बिपरीत ठई ॥ २४५ ॥ राग जैतश्री ॥ हरि जू आए सो भलि कीनी । मो देखत यों कहि राधा उठि अंक तिमिरको दीनी । छुटि न भुजा बल फुटि बज्र या बलि टूटी खरफटि कंचुकि झीनी ॥ मनहु प्रेम की परनि परे वा याहीतें पढि खीनी ॥ तन कछु कंप बिकल आतुर भई उर धक धको खेदकीनी ॥ चरण चलित गति गई गलित मति खेद सलिल भुव भीनी । अब लोकत इहिं भांति रमापति जनु जीवत अहिमणि छीनी । सूर दास कछु कहि न जाइ मोपै हों अजान मति हीनी ॥ २४६ ॥ राग

सारंग ॥ नयना अब लागे पछतान । बिछुरत उमगि नीर भरि आए बिसरे सब औसान । हिलि मिलि के कत प्रेम बढायो हमहि भए बिषबान ॥ तब वह प्रीति करी आतुर ह्वै समुझि न कछू अजान । बैरी काम दहै निशि बासर नहीं हमारे मान भयां बिदेश मधूपुर हमको कोई होत न जान । अति चटपटि देखोही चाहत अब लागे खलचान । सूर दास प्रभु दीन दुखित ह्वै खैन गए सँग प्रान ॥ २४७ ॥ राग सारंग ॥ हरि दरसन कों तरसति अंखियाँ ॥ झांकति झुंकति झरोखा बैठी कर मीडति ज्यों मखियां ॥ बिछुरी बदन सुधा रस निधितें लगति नहीं पल पखियां । एकटक बितवति उड़ि न सकति दोउ थकित भई सुनि सखियां । बार बार सिर धुनति बिसूरति बिरह जार जनु अखियां । सूर सरूप मिलेही जीवहि नहि कढि करनि धरनि नखियां ॥ २४८ ॥ राग सारंग ॥ नयननि वहै रूप जो देखो । तौ धौं यह जीवन जग को सांचु सफल करि लेखो ॥ लोचन चपल चारु खंजन अनु अनुरंजन हृदै हमारे । सुरङ्ग कमल मृगमीन मनोहर खेत अरुण अरुकारे । कुण्डल रतन जटित श्रवणनि वर गण्ड कपोलनि झाई ॥ मानों दिन कर प्रति बिम्बमुकर में ढूंढत यह छबि पाई । मुरली अधर निकट भौंहैं करि ठाढो होहि त्रिभङ्ग । मुक्त माल उर नील सिखरतें धसी धरणि जनुगङ्ग । और बेष को कहै बरनि सब अंगनि के सरि खोरी ॥ देव बने न कहत रसना सों हम अरु मोहन जोरी । बे बातें रुधि करि करि सजनी बिधा होत जिय भारी । सूर दास प्रभु के बिछूरेतें मदन पांच सर मारी ॥ २४९ ॥ राग सारंग ॥ तबतें बिठे सबै आनन्द । या ब्रज को सौ भाग संपदा लै जु गए नद नन्द । व्यकुल भई जशोदा डोलति दुखित नन्द उप नन्द ॥ धेनु नहीं पै श्रवति उदित मुख चरति नहीं तृण कन्द ॥ बिषम बियोग दहत तन सजनी बाढी महे दुख दन्द । शीतल कौन करै री माई नाहिन इहाँ ब्रज चन्द । रथ चढ़ि चलत गहेहि नकाहू चाहि रही मति मन्द । सूर दास अब कौन छिड़ावै परी बिरह के फन्द ॥ २५० ॥ राग सारंग ॥ मेरे जिय कर कै रही । बे बतियां छतियां लिखि राखी जे नद नन्द कही । एक दिवस आए नद नन्दन हौं गृह मथति दही । रति मांगत मैं मान कियो है सो हरि गुसा गही । सोचति अरु पछितति राधिका मूरछि परति मही । सूर दास स्वामी के बिछुरे बिथा न जाति सही ॥ २५१ ॥ राग मलार ॥ ऐसे नन्द राइ के बारे । इतनन जिनि पतियाहु सखी री जेते हैं तन कारे । खेलत रंग संग वृन्दाबन निमिषन होतु न न्यारे । पहिले सुख दारुण भए हमको देजु गये दुख भारे । उर पर भोजतु है सारंगि रिपु नयननीर बहु ढारे ॥ सूर दास प्रभु बेगि मिलहु तुम टरत नहीं गुण टारे ॥ २५२ ॥ राग आसावरी ॥ ऐसो कोउ हितू है सजनी मोकों हरि हि मिलावै हो ॥ बारक बहुरि नन्द नन्दन को इहांलौं लै आवै हो । पाइनि परि बिनती करै अरु यह दसा जनावै हो ॥ नव निकुंज बन केलि रीति रस रास कि सुरति अनावै हो ॥ औरों कौन भांति की सकुचनि कान्हा कों उपजावै हो । पुनि पुनि सूर प्राण पति सों कहै लोचन जरत जु-

ड़ावै ॥ २५३ ॥ राग धनाश्री ॥ मिलि किनि जाहु बटाउ नाते । नन्द जशोदा के तुम बालक बिनती करति हौं तासे ॥ तुम्हरी प्रीति हमारी सेवा गनियत नांहीं कासे । लोगु देखि तुम कहा भुलाने मोत भये बन पासे ॥ तुम बिछुरत घनश्याम मनोहर हम अबला सर घासे । कहा करौं जु सनेह न छूटै रूप जोति गइ जासे ॥ जब हठि दान मांगते हम पै अंग गात लपटासे । सूर दास प्रभु प्रबल कौन रिपु बीच परयो है जासे ॥ ॥ २५४ ॥ राग सारंग ॥ हरि जू एते दिन कहाँ लाये । मानो अवधि में कहत न समुझी गनत अचानक आये ॥ भली करी जु बहुरि इनि नयननि सुन्दर चरण दिखाये । आजी कृपा राज काजहिमें कहत बचन बिसराये ॥ हृदय अन्तरते तुरत प्रकटि किये मन अभिलाष पुजाये । बिरहिनि बिकल बिलोकि सूर प्रभु धाय हृदय कर लाये ॥ २५५ ॥ ॥ राग सारंग ॥ जो पै कोउ मधेा सों कहै । ये है बिद्या जानि नद नन्दन कत मधुपुरी रहै ॥ पहिले सब दीनता प्रकट करि पुनि करि धरण गहै । मो परतीति है नन्द सुवन की सुनत न प्रेमु सहै ॥ सूर दास प्रभु को संदेसेा कछु सेाइ कत निबहै । एकबार यहि तन के कारन जे दुख अनत दहै ॥२५६॥ राग आसावरी ॥ गेाकुल को सधु कहै हमसों माई । जबतें हमारे चले कन्हाई ॥ निधने धर जैसें पङ्छनों भूखेा । जल बिनु सरवर दीसै सूखेा ॥ वे ब्रज नारि कहेा कैसे जीवैं । जेां लगि हरि दरशन नहि पीवैं । सूर दास दुख कासों कहिये । चलेा श्याम मधुरा रमि रहिये ॥ २५७ ॥ राग गौरी ॥ बाढ़ी रैनि कलप बरछी छिनु दूरि न करहि बेनु कर धरिबेा । रथ आवो मानहु मृग मोहे नाहिन बनत चन्द्र को चलिबेा ॥ बीती जाय सेाई पे जाने कठिन है प्रेम फन्दको परिबेा । कमल नयन बिछुरे सखि जबतें रहत न नयन नीर को ढरिबेा ॥ चन्दन रचत अतिहि तापत तनु सहि नहि सकत बिरह उर जरिबेा । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सबझूठो जतननि को करिबेा ॥ २५८ ॥ राग केदारेा ॥ हरि को तिलक हरि चित जु दहत । कहियत है उड़राज अमृत मय तजि सुभाव मेाकों बन्हिवहत ॥ क्षपा न छीन होय मेरी सजनी भूमि डसन रिपु काधों बसतु । शशि नहि गवन करे पछिम दिशिराहु ग्रसत मेाकों गहि न गहतु ॥ ऐसेाइ ध्यान धरत तुम दधि सुत मुनि महेश जैसें रहि न रहतु । सूर दास प्रभु मेाहन मूरति चितै जातु पै चित न सहतु ॥ २५९ ॥ राग केदारेा ॥ छुटि गई शशि की शीतल ताई । मानहु जारि भस्म कियेा चाहत मंजन कों कज्जल तन काई ॥ याही तें श्याम अकाश देखियत मानहु रहे काजर लपटाई । ता ऊपर ए देत सखा सब उड़गन अगि कनिका उड़ि आई ॥ राहु केतु दोउ जोरि एक कै तब वहि समय जरा जो पई । यातेतें पचि जाय पापमें कहति सूर बिरहिनि दुख दाई ॥ २६० ॥ राग केदारेा ॥ ए सखि आजु की रैनि को दुख कह्यो न जात मोपै परै । मन राखन को बेनु लियेा कर मृग थाके उड़पति न चरै ॥ वाही प्राण नाथ प्यारे बिनु शिव रिपु बान नूतन जु जरै । अति अकुलाय बिरहिनी व्याकुल भूमि डसन रिपु भखेा न करै ॥ अति आतुर ह्वै सिंधु लिखेा कर गहि भामिनि कैा करुन टरै । सूरदास शशि कैा रथु चलि गयेा पाछें ते रवि उदेा करै ॥२६१॥ राग केदारेा ॥ जारन आयेारीगुणि

न कै पापी चंद विसासी । काहे कहत सुधा कर शीतल है यह अगनि अमर को वासी देखौ जाय दवा सो लागै बूझत नयन बारि वरखासी । इक हम शूल जरी माधौं के अरु लोगनि की हांसी ॥ ए क्यों भस्म भई मन्मथ संग याहि जानि झुकी पति आसी । सूरज दास कितिक हम दासी इमजारे अविनासी ॥ २६२ ॥ रागसारंग ॥ नहि देखति सपनेउ निहारि । मदन गोपाल कहा निर्मोही प्रीति खोजु गये मारि ॥ तुम तौ वैरु बड़ेसों कीनौ मूंढ चढ़ाई गारि । वे नंद सुवन तागे के मनियां गये नात ज्यों डारि ॥ जानौ नही कपट की चितवनि सर्बसु दीनो ढारि । सूर दास प्रभु गोपि दुखित भई का लिन्दी के करारि ॥ २६३ ॥ राग सारंग ॥ सुनो सखी माधो बिनु या तन सब बिपरीति भई । गई छपाय छपाकर की छवि रही कलंक मई ॥ अंखियां हुती कमल पाखुरि सी तेजुनि चेरि लई । आंच लगै ज्योंनों सोंनों सो यों तन धातु घई ॥ कदली दखसी पीठि मनोहर सोऊ पलटि गई । सकल सूर हरि इहीं सम्पदा विपदा दई दई ॥ २६४ ॥ राग नट ॥ रहि रहिरे विहंगम बन बासी । तेरे बोलत रजनी बाढी अवध सुनत नीदौ नासी ॥ तन तलवेली लगी लाड़िले अरु चन्दन चन्दा चासी । सूर दास प्रभु वेगि मिलहु के खेहौं करवट कासी ॥ २६५ ॥ राग सोरठ ॥ मथुरा के द्रुम देखियत न्यारे तहां बसंत है श्याम हमारे प्रीतम चितवत लोचन हारे ॥ इतनिक दूरि संदेसो दुर्लभ सुनियत टेर पुकारे । सुन सखि सुमिरि सांवरी मूरति मदन बान गहि मारे ॥ हरि बिनु हमहि सबै सचु झूठे यह बन भये हमारे । सूर दास स्वामी के बिछुरे रैनि गनत गये तारे ॥ २६६ ॥ राग बिलावल ॥ बिधु वैरी सिर पर बसै निशि नीद न परई । हरि सुर भानु शुभट बिना याहि को बस करई ॥ गगन सिखर उतरै चढ़े गरवै जिव धरई । किरनि सकति भुज भरि हनै उरमें जनु सरई ॥ उड़ परिवार पिसुन सभा अपजसहि नडरई । सोइ पर पंच करै सखी अबला ज्यों जरई ॥ घटे बढ़े यहि पाप तें कबि मानहि टरई । सूर दास समुझाइये त्यों त्यों दह खरई ॥ २६७ ॥ राग नट ॥ नेकहुं सोच न काहू कीनों । सुनि ब्रजनाथ सबनि के औगुन मिलिहि मिलें दुख दीनों ॥ ऋतु बसन्त असमय अधम मति पिक सुभाउ लै धावत । प्रीतम संग जानि जुवती रुचि बोलेहू न हि आवत । सदा सरद ऋतु सकल कला लै सनमुख रहति जुन्हाई ॥ सो सित पक्ष कृष्ण सम बीतत कबहु न देति दिखाई ॥ बिबिधि समीर सुमन सौरभ मिलि मत्त मधुप गुंजारा । जोइ जोइ रुच्यो सो कियो बाँधि बल तजि मन सकुच विचारि ॥ रति पति अति अति थोकीवे कों कोटि धूम धुज मानों । लै कर धनुष चितै तुमरो मुख अब बोलै तो जानों ॥ भली करी नीके ब्रज आये ऐसे काल अतीत । नाजानिय प्रबल मखनि सों समर कौन विधि जीत ॥ सपने सत्य दुख राख सुनि सजनि नये को अंस । सूर दास प्रभु अब ब्रज रहिये बहुरि बांधिये कंस ॥ २६८ ॥ राग मलार ॥ देखो माई नयननि सोंघन हारे । बिनुही ऋतु बरषत निशि बासर सदा सजल दोउ तारे ॥ ऊरध स्वास समीर तेज अति दुख अनेक द्रुम डारे । बदन सदन करि बसे बचन खग ऋतु पावस केमारे ॥ ढरि धरि बूंद परत कंचुकि पर मिलि अंजन सो कारे । मानहु परन कुटी शिवको बिचधारा

श्यामनि न्यारे ॥ सुमिरि सुमिरि गरजत निशि वासर अश्रु सलिल के धारे । बूड़त ब्रजहि सूरको राखै बिनु गिरवर धर प्यारे ॥ २६६ ॥ राग मलार ॥ कैसे जीऊं हरि परदेश रहे । गरजि गरजि घन बरषन लागे नहि और नारवहे ॥ बासर गए निहारति मारग घातक रैनि दहे । कासों कहौं तपत मन निशि दिन को यह पीर सहे ॥ कोऊ जाय मदन मोहन सों हमरो विथा कहे । हमहूं किनि खेजाउ सूर प्रभु को ब्रज बिपति सहे ॥ २७० ॥ राग मलार ॥ कोउ माई बरजो बोलत मोरनि । रटत पपीहा छिनु न रहाई हेत बिरहकी रोरनि ॥ चमकति चहूं दिशि दामिनि अंबर घरनकी घोरनि । बरषत बूंद बान ह्वै जागत क्यों जीजै यहि जोरनि ॥ चंद की किरनि नयन भरि पीवत नासत तृषति चकोरनि । सूरदास प्रभु हमतौ जीवैं मिलिहै नन्द किशोरनि ॥ ॥ २७१ ॥ राग मलार ॥ कैसें ज्यो राखोंगी बोलत मोर । देखि सखी तरवर जनो सेवत चितवत चंद चकोर ॥ दृग दामिनि अरु मेघ घटा ज्यों गरजत है घन घोर । ऐसी अवस्था परी बालक को कठिन मदन झक झोर ॥ नवसत साजि चली ब्रज गोपी उर नाहिन चंद छोर । सूरदास प्रभु दरश तुम्हरे पलकनि देति अकोर ॥ २७२ ॥ ॥ राग मलार ॥ कैसें भरिये दिन सावन के । हरित भूमि भइ सलिल सरोवर मिटे मग मोहन आवन के ॥ हरि सुरंग सब कंत सुहागिन फूलति फूल न भावन के । गरजत घुमरि घटा घन घोरति मदन धनुष धरि धावन के ॥ दादुर मोर सोर सारंग पिक निसिहि निशा मुह सावन के । सूरज दीन रैनि कों निघटे चिगुन किये श्रीरावन के ॥ २७३ ॥ राग मलार ॥ जो तू नेकहू उड़ि जाहि । बिबिधि बचन सुनाय बानी यहां रिझवतु काहि ॥ पतित मुख पिक पुरुष पसुकों कहा रते रिसाहि ॥ नाहिने कें उसनत समुझत बिकल बिरहिनि थाहि ॥ राखि लै वा अवधिलों तनु मदन मुख जिनि खाहि । तुहूंतो तन दग्ध देखी बहुरि कहा समुझाहि ॥ नंद नन्दन को बिरह अति कहत बनत बनाहि । सूर प्रभु ब्रजनाथ बिन लै मौन मोहि बिसाहि । ॥ २७४ ॥ राग मलार ॥ अब ब्रज नाहिननंद कुमार । यहै जानि अजान मघवा रची गोकुल आर ॥ नयन जल दनि मेघ दामिनि अंसुवा बरषत धार । दरश शशि रवि दुरयौ धीरज स्वास पवन अकार ॥ उरज गिरि भय भ न भारी असमकाम अपार । गरज बिकल बियोग बानी रहत अवध अधार ॥ मधुप मथुरा जाय हरिसों बात कहो बिचार । सेन शचु सुधा सुधेरयौ सूर लेहु सम्हारि ॥ २७५ ॥ राग मलार ॥ यहि डर बहुरि न गोकुल आए । सुनिरी सखी हमारी करनी समुझि मधुपुरी छाए ॥ अधरातकतें उठि करे बालक सब मोहि जगै हैं आप । बिनु पद चालि बहुरि पठवैगी बनहि चरावन गाय ॥ सुनो मदन आनि रो कैगी दधि चोरत नव नीत । पकरि जशोदा पैं लैजैउं नाचहु गावहु गीत ॥ ग्वालिनि मोहि बहुरि बांधैगी कैते बचन सुनाय । ऐते दुःखन सुमिरि सूर मन बहुरि सहै को जाय ॥ २७६ ॥ राग मलार ॥ फिरि ब्रज आइये गोपाल ॥ नन्द नृपति कुमार कहिहैं पुनि न कहिहैं ग्वाल । सुरलिका सुर सप्त दिसि दिसि चलौ निशान बजाय । दिग्वि जैकै जुवति मण्डल भूप परिहैं पाय ॥

सुरभि सैन सखा सुभट संग उठैगी खुर रेनु । अ त पच मयूर चन्द्रक लसत हैं सखिएनु ॥ मद्रपति मधुकर निकर बर मद्दन आयसु पाय । द्रुमलता बन कुसुम बानिक बसन कुटी बनाय ॥ सकल खग गन पंकपायक पोरिया प्रति हार । सूर प्रभु व्रज कौसमौ सुख कों सकेशेष अपार ॥ २७७ ॥ राग मलार ॥ तबतें बहुरि न कोऊ आयो । वहै जु एक बार ऊधोपैं कछुक सोध सो पायो ॥ सुधो बिचार करौ सखि माधो इतौ गहरु कहा लायो । गोकुल नाथ कृपा करि कबहूं लिखियो नाहि पठायो ॥ अवधि आस जतननि करि यह मन अब जैहै बौरायो । सूरदास प्रभु चातक बोले मेघनि अंबर छायो ॥ २७८ ॥ राग मलार ॥ सखिरी चातक मोहि जिवावतु । जैसेहि रैनि रटतिहौं पिउ पिउ तैसेंहि पुनि यह गावतु ॥ अति सुकंठ सुदेस प्रीतम मुखतर जीभ न लावतु । आपुन पिवत सुधा रस सजनी बिरहिनि बोलि पिवावतु ॥ जो यह पखो सहाय न होतो प्राण बहुत दुख पावतु । जीवन सुफल सूर ताही को काज पराए आवतु ॥ २७९ ॥ राग मलार ॥ संदेसनि बिरह बिथा क्यों जाति । जबलगि परे न दृष्टि वह मूरति मनहुं चंद की काति ॥ जादिन तें हरि हमतें बिछुरे तपत्यो तन न बुझाति । सूरदास प्रभु मिलहु कृपा कै छतियां ताहि सिराति ॥ २८० ॥ कहियो पथिक जाय माधोसों मन चटक्यो नयन के लेखे । यहै दिवस ह्वै झगरत आवत निरखत मुख क्यों लगी निमेखे ॥ ते अब चाहत इनपैं फिरि फिरि बिधिजु लिखो दरशन अब रेखे । कै तू ताहि बताय बिदित इम लगी पलक जड़ता के पेखे ॥ अनु दिन छिन छिन जोरि जतन करि आनत जुग अबलीय बिसेखे । सूर दास प्रभु या अरुझनि तें नहि मन छुटत दरश बिनु देखे ॥ २८१ ॥ राग मलार ॥ सखी करि कछु उपाउ । मातुल मारन चल्यो बिरहिनी के चाउ ॥ हुता सन धुज जात उनित चल्यो हर दिसि बाउ । असमसर रिपु नंद बाहन हरषित गाउ ॥ बारि भव सुत तत्त भांवरि अबलै करि है काउ । अबकी बेर प्राण प्यारे व्रज सखिनि मिलाउ ॥ ऋतु समय गए मान कीजै सेइ किनि बहि जाउ । सूर प्रभु के शरण हीये रुकल चिभुवन राउ ॥ २८२ ॥ राग मलार ॥ अब रह प्रीति भई पातरी । श्याम कान्ह बलराम हमारे मारग जामि लेउ न जातरी ॥ यह व्रजराज बसत गोपाल लाल कबहुन सुनी पोच बातरी । कंचन काच कपूर कटुक खरि मोई समहीरा पोत बिकातरी ॥ ए सब हंस मान सरवर के छीलर बूंद मलिन क्यों न्हातरी । सूरदास मुक्ता फल भोगी कोरि करत क्यों ज्वरि खातरी ॥ २८३ ॥ राग बिहागरो ॥ माई मोकों चंद लग्यौ दुख दैन । कहं वे श्याम कहां वे बतियां कहं वे सुख की रैन ॥ तरे गनत गनत हौं हारी टपकन लागे नैन । सूरदास प्रभु तुहरे दरश बिनु बिरहिनि कों नहि चैन ॥ २८४ ॥ राग गौरी ॥ व्रजरी मतो अनाश्य कियो । सुनिरी सखी जशोदा नन्दन बिषु संदेस दियो ॥ तब वह कृपा श्याम सुंदर की कर गिरि टेकि लियो । अरु प्रति पालि ग्वाल गाइन को जल कालिंदि पियो ॥ यह सब दोष हमहिं लागतु है चलत न फट्यो हियो । सूरदास प्रभु नन्द नदन बिनु कारन कौनि जियो ॥ २८५ ॥ राग धनाश्री ॥ मेरो मन मधु

राई रह्यौ । गयो जु तनतें बहुरि न आयो गहि गोपाल गह्यौ ॥ इन नयननि को भेदु न पावै केहि भेदिया कह्यौ । राखौ रूप चोरि चित अन्तर सोइ हरि सोधि लह्यौ ॥ आये बोलत तावन ऊधो मणि दै खेड़ मह्यो । निर्गुण साटि गोविन्दहि मांगत क्यों दुख जात सह्यो ॥ जिहि आधार आजु लों यहि तनु ऐसेंही निबह्यो । सोइ छिड़ाय लेत सुनि सूरज चाहत हृदय दह्यो ॥ २८६ ॥ राग नट ॥ तबतें नयननि नींद हिरानी । परयो उचाटु निमेषन लावत उमगि चलत भरि पानी ॥ एक समय उन मानत अंतर शोभा सबै उर आनी । सहि न सकी तन तपत बिरह ज्वर सों अवलोकि डरानी ॥ बिसरि गई तिहि काल सकल सुधि यह परि हस बिलखानी । बुधि बिबेक बल रहित बिवस गति धरनि परति मुरझानी ॥ सपने में सपनों सुनि सजनी हठि रिस करि अरु झानी । मत वाचत मनुहारि छुवत पदु निरखि बदन मुसिकानी ॥ पानि सरोज उरोज नि परसें सकुचत समुझि लजानी । रोम रोम प्रकटित पुलकित चित हरषि सुद्ध सा नसानी ॥ जागें ते जिय शोच पोच अति बिकल भई अकुलानी । इन्दु किरनि जनु तरनि तरफि बपु फिरि पाछें पछितानी ॥ पचि हारी पुनि पलकन लागी पल पल देह सुखानी । जिहि बिधि मिलहि श्याम घन सुन्दर सूर सु जतन बताउ सयानी ॥ २८७ ॥ राग नट ॥ डसोरी मदन भुयङ्गम कारे । चितवत ही मुसकाय लोभ करि जातु मेरु सो डारे ॥ तंचन जानों मंचन जानों चलौ गुणी गुण हारे । परम प्रीति बिषहर सों बांधी सो डारत मोहि जारे ॥ यहैं जानि ऊधो ब्रज आये बैदु दै चले हमारे । आवति लहरि जु मदन बिरह की को यह बैदु हंकारे ॥ मदन गोपाल गारुरी कहिबत सो या बिषहि उतारे । सूर दास प्रभु कबहि मिलहिंगे सिर पर गडुआ डारे ॥ २८८ ॥ राग सारङ्ग ॥ लोग सब देत सुहाई बातें । कहतहि सुगम करत नहि आवै बोलि न आवतु तातें ॥ पहिलें आगि सुनत चन्दनसी सती बड़त उमहै । समाचार ताते अरु सीरे प्राकें कौनु कहै ॥ कहत सबै संग्राम सुगम अति कुसुम लता करबार । सूर दास सिर दिये सूरमा कौनु कहे बिचार ॥ २८९ ॥ राग सारंग ॥ हमारे हृदय कुलिस बर जीते । फटत न सखी अजहुं वह आसा बरषि दिवस भरि बीते ॥ हमहूं समुझि पराना ह्वै के यहै असि तनु की रीति । बहुरि न जीवन मुख फिरि करिबै मधुपन कीसी प्रीति ॥ अब तो बात रहि घरी पहरकी ज्यों उदवस को भीति । सूरजश्याम दास मुख जोवत भये उभै निहचीति ॥ २९० ॥ राग केदारो ॥ मोहन फिरि किनि गोकुल आवत । जिनि कुञ्ज नि क्रीड़ा बन कीनी सो सबहिन मन भावत ॥ गोपी ग्वाल और ब्रज बनिता सुमिरि सुमिरि गुण गावत । बारे तें तुम काहे कों सिरजे कुबजा नाथ कहावत ॥ नित नित प्रीति बढ़ावत उनसों हमहि कौन ढंग लावत । सूर दास प्रभु परम निठुर भये पतियां कत बिसरावत ॥ २९१ ॥ राग गौरी ॥ सखि सुनि जानी हरिबे बात । बैठे रथ ऊपर चढ़ि भोरें हंसत मधुपुरी जात ॥ सुफलक सुत ठग ठाठ ठयो उर साधु भेष मन घात ॥ जेतक बड़े धर्म धुज मानो संग प्रेम पथ पात ॥ जादव कुल ह्वै सन्त सुने हैं तिहिके ए उत्पात । एकहि हरे प्राण गोकुल के अपर लोग कुसलात ॥ जद्यपि सूर प्रताप श्यामके दानव दुष्ट

उगत । तद्यपि भजन भाव नहि व्रज मनु खोजत द्वैपैा सात ॥२९२॥ राग गौरी ॥ सुरत करि उडकिन रोय दियो । चाल्यो जात पथिक इक मारग गोपी बल तेहि बोलि लियो ॥ कहि धौं बीर कहां ते आयो पुछमि प्रणाम कियो । परम प्रीति करि निज गृह बोल्यो पछना चार कियो ॥ गद गदकंठ हृदौ भरि आयो वचनन कह्यो परयो । सूर दास प्रभ फिरि बूझे तें उत्तर कछु न करयौ ॥ २९३ ॥ राग गौरी ॥ कोऊ मोहन लाल दिखावै। कैसें धीरजु धरें सखी री अंग अंग मन धावै ॥ ज्यों ज्यों जतन करति वह तनकौ त्यों त्यौं दुख बितरावै । बिरह अगनि सोखत चन्दन जल ज्वाला अधिक बढावै ॥ समय भयो सुनि श्यामा हरि जू परम चतर अब आवै । सूर दिवस दारुण ज्वर तन कौ कृष्ण चन्द्र सियरावै ॥ २९४ ॥ राग गौरी ॥ व्रज की बात भई अब न्यारी । तिहि सुन्दरि मधि जोग गाइयत जहं गावत हे गिरिधारी ॥ रिपु रण मारि रहे सब दिशि त्यों भिक्त कथा बिस्तारी । सूर व्यथित दिन सकुचि कुमुदिनी निशि हेमंत प्रजारी ॥२९५॥ राग सोरठ हरिसे प्रीतम क्यों बिसराहि । मिलन दूरि मन बसत चन्द्रहै ज्यों चकोर चितै पछितांहि॥ जलमें रहे जलहि तें उपजे जलही बिनु कुम्हिलांहि । जल तजि हंस सुनहि मुक्ता फल मीन कहा उडि जांहि ॥ धरनी दुखित देखि बादर ज्यों बरषै अरु बिलखांहि । प्रकट न प्रीति करे परदेशी दुख दै हृदय समांहि ॥ सोइ गोकुल गोवर्द्धन सोई कौन करै व्रज काहि । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन अनत न कछु समाहि ॥ २९६ ॥ राग सोरठ॥ ग्वालि तू छांड़िदै बिरह खरयौ। तेरे बिरह बिरहिनी ब्याकुल भवन काज बिसरयौ ॥ कर पल्लव उडपति रथ खेंच्यौ मृग पति बैरु करयौ । पक्षी पति न सबै सकुचाने चातक अनख भरयौ ॥ सारंग सुर मुनि भये बिमोहित हेम गरब उतरयौ । सूर दास सागर सुत पति के देखत मदन हरयौ ॥ २९७ ॥ राग गौरी ॥ आजु रैनि नहि नीट परी । जागत गनत गगनके तारे रसना रटत गोपाल हरी ॥ वह चितवनि वह रथ की बैठनि वह अक्रूर की बांह धरी । चितवत सूर ठगीसी ठाढी कहि न सकी कछु बिरह भरी ॥२९८॥ राग सोरठ ॥ जौ ले जाय कोऊ उहि देस । जैसें कै वह कहै सखिरी करों सोई भेस ॥ बोलि धौं हरवाय बुझौ आपने सनमेस । सङ्ग बाके चलो जोगिनि जटा सिर करि केस ॥ जदपि हम व्रज नारि बे तौ जुवति वृन्द नरेस । तदपि अधि कुमुदिनी सूरज रची प्रीति विवेस॥ ॥ २९९ ॥ राग सोरठ ॥ पथिक पालागों श्याम सों कहियो वह बात । इतनी दूरि बसत क्यों बिसरे अपने जननी तात ॥ जादिन तें मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर गात । ता दिनतें ये नयन हमारो दरश प्यास अकुलात ॥ जहां खेलन को ठौर तुम्हारो देखि नन्द सुरझात । जब कबहू वहि खरिक जात हैं गाय दुहावन प्रात ॥ दहत देखि औरनि के बालक प्राण निकसि नहि जात । सूर श्याम फिरि कबै देखिहौं कोमल कर दधि खात ॥ ३०० ॥ राग गौरी ॥ बिकुरत थी व्रज राज आजु सखि नयननि की परतीति गई ॥ छांडि न मिले हरि संग बिहंगम ह्वै न गये घन श्याम मई । यातें क्रूर कुटिल सठ लेचक दया मीन छवि छीनि लई ॥ रूप रसिक लालची कहावत सो करनी कछु तो न भई । अब काहे सोचत जल सोचत समौ गये नित चल नई ॥ सूरदास याही तें जड भये जवतें

पलकनि दगादई ॥३०१॥ रागनट ॥ यह बल कितकु जानि जदुराई। तुमतो चले हमनि अबलनि पैतरकि बांह छिटकाई ॥ कहियत हो अति चतुर सकल विधि जानत सकल उपाई । तौ जानों जो अब एको छिनु सकौ हृदयतें जाई । सूरदास स्वामी श्रीपति के अन्तर भावनि भाई । सहि न सके रवि बचन उलटि हंसि लीनो कंठ लगाई ॥ ३०२ ॥ राग सारंग ॥ अबघटही में श्याम बताए । जौसम दृष्टि आदि निर्गुण पद तौ कत चित्त चुराए ॥ लए समहारि सबै सुख अपने रास रंग जे पाए । मोहन बदन बिलोकि मानि रुचि हंसि हरि कंठ लगाए ॥ हम मति हीन अज्ञान अलप बुधि तुम अनुभय पद पाए । सूरदास तिहि बनज कहा गुण मूरख मांझ गंवाए ॥ ३०३ ॥ राग सारंग ॥ तौ तू उड़ि छिनरे काग । जौ गोपाल गोकुलहि आवहिं तौ है हमारे भाग ॥ दधि ओदन दोना को दैहौं अरु अंचर को पाग । लोचन हृदय बझाय सगुण तन मेटि बिरह के दाग ॥ सूरदास प्रभु मिलहु मया करि याहूते अनुराग । जैसें मात पिता नहि जानहि रैनि होय जहि जाग ॥ ३०४ ॥ राग धनाश्री ॥ को कहे हरिसों बात हमारी । हमतौ हो तबतें जिय जान्यों इतें भए मधुकर अधिकारी ॥ एक प्रकृति एकै कै तब गति तिहिं गुण असि जिय भावै । प्रकटत है नव कंज मनोहर बज किंशुक कारण कत आवै ॥ कंज नीर चम्पक रस चंचल गति सबही ते न्यारी । ता अलिकी संगत बसि मधुपुरि सूरदास प्रभु सुरति बिसारी ॥ ३०५ ॥ राग धनाश्री ॥ हमारे श्याम चलन कहत हैं दूरि । मधुबन बसत आसही सजनो अब मरिहै जु बिसूरि ॥ कौने कह्यो कहा सुनि आई किहि रथको धूरि । संगहि सबै चलो माधो कै नातरु मरिबो भूरि ॥ पछिम दिशि एक नगर द्वारका सिंधु रह्यौ जल पूरि । सूर श्याम क्यों जीवहि बाला जात सजीवन मूरि ॥ ३०६ ॥ राग मलार ॥ सुनिरी ऐसें जो हरि आवैं । निरखि निरखि वे बदन मनोहर नयन बहुत सुख पावैं ॥ तैसेई हरित बन तैसिये श्याम घटा तैसियबिचबग पंकति दिखावै । तैसोई मोर कुला हल करते करविहिंडोरन गावै ॥ कबहुंक हिलिमिलि खेलन कैमिस सघन निकुंज बुलावै । कबहुंक लै संग सखा सैल चढ़ि मुरलि मलार बजावै ॥ बिछुरे प्राण रहत कैसे करि बहु जतननि समझावै । जितहि बजानि चलत सूरज प्रभु तित पहिले उठि धावै ॥ ३०७ ॥ ॥ राग मलार ॥ आजु घन श्याम को अनु हारि । उनये आय संचरे सखिरी देखि रूपको आरि ॥ इन्द्र धनुष मानो पीत पिछोरा दामिनि हसनि बिचारि । मनो बग पांति माल मोतिनु की चितवति चित्त निहारि ॥ गरजत गगन बिरह गोविन्द के सुनत श्रवण सुनि न्यारि । सूर सकल गुण सुमिरि श्याम के बिलपति हैं ब्रजनारि ॥ ३०८ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ आलि ए बहुरि न कबहुं मिले हरि । कमल नयन मिलिबे के कारण अपनो जतन रही बहु ते करि ॥ काहुन प्रकट करी जदुपतिसों दुसह निरास गई अवधौ टरि । धीर न धरे प्रेम व्याकुल तन लेति उसास नीर लोचन भरि ॥ बिनु गोपाल भई है ऐसी ज्यों मछरी जल भिन्न करी धरि । सूरदास तातें बिथकित भइ अब यह बियोग बिरह सागर तरि ॥ ३०९ ॥ राग सारंग ॥ ब्रजतें पावस पैं न टरी । सिसिर बसन्त ग्रीष्म गत सजनी बीती अवधि करी ॥ उनै उनै घन बरसत बढ़ि उर सरिता

सलिल भरी । कुच कुच कज्जल कीच बहे जनु कुच जुग पार परी ॥ तामे विषम प्रकट ग्रीषम ऋतु इतियो तापु करी । सूरदास प्रभु कुमुद बंधु जनु विरहिनि तरनि जरी ॥ ॥ ३१० ॥ राग सारंग ॥ अब वे मधुपुरी हैं माधो । जिन को वदन विलोकत नयननि जुगहो तो पल आधो ॥ तब वह कृपा हुती हम ऊपर नाखत नदी अगाधो । सूरदास अपने व्रज के गुण वरु मानत अपराधो ॥ ३११ ॥ राग सारंग ॥ हमै नंद नंदन कियो गारो । इन्द्र कोप व्रज बह्यो जात हो गिरि धरि सकल उवारो ॥ राम कृष्ण वल बद-तन काहू निडर चरावत चारो । सगरे विगरे को शिर ऊपर बलको बीर रखवारो ॥ तबतें हमनि भरोसो पायो कैसो तृणावर्त्त मारो । सूरदास प्रभु रंग भूमि में हरि जीतो नृप हारो ॥ ३१२ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि मुख देखे बिनु जान लागे बहुते दिना । कैसें करि नयन राखों कान्ह बिना ॥ जतन कहा करति सखी खिनहि खिना । सिंव कैसें जीवत बन चरत तृना ॥ जेपैं नाहीं डरपत बचन रिना । अब कहा कहियत सूरश्याम सुना ॥ ३१३ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु विरहिनी विरहा तुरहै केशव केशव रटति रहो। बासर कथा कठिन करि करि मनु क्रम क्रम विथा सही ॥ संध्या शशि दौं जानि चली उठि रहत न अंक गही । अति श्रम मलय कुमा सींचत सरिता सेज बही ॥ तन तलफत न सुहात कछू अब नयननि नीरवही । तो क्यों सूर होय अब शीतल पिया वियोग दही ॥ ३१४ ॥ राग कल्यान ॥ आवन कहि गए अजहुं न आए एते दिन लाए । इतने दूरि गोपाल लाल लिखि संदेसहु न पठाए ॥ चलत चितै मुसिकाय के मृदु वचन सुनाए । तेई मग ठग मोदक भए मन धीर धरनु हरि तनु छूछें करि छिट काए ॥ जग मोहन जदुनाथ के गुण जानि न पाए । मानहु सूर तिहिं लाउतें घन श्याम सुन्दर बहु-रि नव दिन दिखाए ॥ ३१५ ॥ राग मलार ॥ सुन्दर श्याम पिटके आवत । सखा सखी बाला प्रौढ़ा सब बासर रैनि सम्हारत ॥ बेचकई सर ऊड़ शशि चाहत ए सब उनहि विडारत । इनसों केलि विलास रास रस सब के संग गो चारत ॥ ए तमचुर दिन मनि दधि सापत बेदनको ऋनु सारत । सूरदास प्रभु रसिक मधुरि वल वे जुवतिनि परमासत ॥ ॥ ३१६ ॥ राग मलार ॥ नयननि लायो है झरु । ऊंचे चढ़ि टेरति आवत सुर कहि कहि गिरिधरु ॥ गोन करत सींचत वृन्दावन नन्द को घरु । कौन कौन की दसा कहों सखि व्रज ततपरु ॥ सबै रहे पगि श्याम सुन्दर में नागी नरु । सूरदास प्रभु रहे मौन कह्यौ सचु प्रेम को भरु ॥ ३१७ ॥ राग मलार ॥ जब जब सुरत्यो करत । तब तब डग डग जल उमंगि भरत ॥ ज्यों जुग मीन कमल दलतें चलि जलको अरत । पलक कपाटन होयतो तोएनि करत । ज्यों जल बिंदु इंदु मुखतें मानो मुक्ता उर ढरत ॥ सहज सिंगार शोभा छवि हारो हरत । राधा नयन चकोर राखि नन्द नन्दन चन्दन जरत ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु धीरन धरत ॥ ३१८ ॥ राग सारंग ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो । कहा करो दरशन रस अटक्यौ बहुरि नहीं फिरि आयो ॥ इन नय-ननि के भेद सरूपनि उरमहं आनि दुरायो । मानो तिहिं अभिमान सुपत ह्वै पलटो देन सिधायो ॥ लोक वेद कुलनिदरि निडरि ह्वै करत आप मन भायो । मुख छवि निरखि

बेधि निखंग लों हठि आपन पेा बंधायेा ॥ कहांवे दूरि कहां बन घन यह अपने बलकर धायेा । अति विपरीति होति सूरज प्रभु मुरझि येा मदन जगायेा ॥ ३१९ ॥ राग नट मेरे कान्ह कमल दल लोचन । अबकि बार मुख आनि दिखावहु कहा लगे जिय सोचन॥ करत ओट पावरहे नहिं कबहू अरु माखनको चोरी । अपने जिय नयननि-भरि देखहि हरि हलधर को जोरी ॥ यह लालसा रही जिय मेरे बैठी देखत रहिहों । गाय चरावन बहुरि श्याम सों भूलि न कबहूं कहिहों ॥ एक बार मिलि जाउ सांवरे अनत न कहुं के ऊतर । क्योंहू आंखिनि कों सुख दीजे सूर पाइने सूतर ॥ ३२० ॥ राग धनाश्री ॥ अब हरि भये कठोर । पूरब प्रीति बिसार मोहन नव तन राचे ओर ॥ जब तुम वृंदा वन तें सिधारे धीरज रह्यो न मोर । बिरह के बान लगाये मोहन बीधे उरके ओर ॥ जनम जनम को दासी तुम्हरी नागर नवलकिशोर । सूरदास प्रभु कबहुं मिलहिंगे कहां रहे चित चोर ॥ ३२१ ॥ राग धनाश्री ॥ उती दूरितें को आवै हो । जाके हाथ संदेस पठाऊं सेा कहि कान्ह कहां पावै हो ॥ सिन्धु कूल इक देश कहत हैं देख्यों सुन्यो न मनु धावै हो । तहां रच्यो नव नगर नन्द सुत पुरि द्वारिका कहावै हो ॥ कञ्चन के सब भवन मनोहर राजा रंकन टरण छावै हो । वहं के सब बासी लोगनि कों व्रज को बसिबेा नहि भावै हो ॥ बहु बिधि करति बिलाप बिरहिनी बहुत उपाव न चितलावैहो कहा करों कहं जाउं सूर प्रभु को मोहि हरिपै पहुंचाव हो ॥ ३२२ ॥ राग धनाश्री ॥ शरद समयहू श्याम न आये । नाजानों रस बस के औसर किनि बिरहिनि बिरमाये ॥ अमल अकाश कुसुम जलफूले ऋषि नभ स्वच्छ जनाये । तनु तरिता सरिता जल उज्जल अलि कुल कमल सुहाये ॥ सूनो सेज तुषार तेज बिरहा नल नन्दन आये । प्रीतम अंग संग सुख कारन सचि सचि सेज सिराये ॥ आनंद कन्द मकरन्द दुंद मिलि ग्राहक गरल गवाये । हुतो मिलन की अवधि सूर प्रभु भए व्रज नाथ पराये ॥ ३२३ ॥ राग मलार॥ ऐसे माई पावस ऋतु प्रथम सुरति करि साधो जू आवैंरी ॥ ध्रुव ॥ बरन बरन अनेक जल धर अति मनोहर बेष । तिहि समय यह गगन शोभा समनि तें सुविशेष ॥ उड़त बक श्रुकवृन्द राजत रटत चातक मोर । बहु भांति चित हित करि बढ़ावत दामिनी घन घोर॥ धरनि तनुहरषु रोम हरषित प्रिय समागम जानि । और दुख वल्ली वियोगिनि मिलो पति पहिचानि ॥ हंस पिक सुक सारिका अलि कुञ्ज नाना नाद । मुदित मंगल मेघ बरषत गति विहंग विषाद ॥ कुरज कुंद कदम्ब कोबिद करनि कार सुकञ्ज । केतकी करबीर चिलक बसन्त समतरु मञ्ज ॥ सघन तरु कलिका अलं कृत सकृत सुमन सुबास। निरखि नयननि होत मन माधो मिलनकी आस ॥ मनुज मृग पशु पक्षि पर मितिओर अमित जे नाम । सुख सुदेस विदेश प्रीतम सकल सुमिरत धाम ॥ होयहै न चिन्त उपाय शोच न कछु परत बिचार । नाहि व्रज बासी बिसारत निकट नन्द कुमार ॥ सुनिसु दशा दयाल सुन्दर ललित गति मृदु हास । चारु लोल कपोल कुंडल डोल बलित प्रकास ॥ बेनु कर कल गीत गावत गोप सिशु बहुपास । सुदिन कब यहि आंखि देखें बहुरि बाल बिलास ॥ बारबारहि सुधि करति अति बिरह ब्याकुल होति । बात बेगसु लगे जैसी हीन

दीपक जोति ॥ सुनि बिलाप कृपाल सूरजदास प्राण प्रतीति । दरशु दै दुख दूरि कीन्हो सहि न सके उर प्रीति ॥ ३२४ ॥ राग केदारो ॥ श्याम जू हों निजु कै बिसारी । मारग चितवत सगुण मनावत काग उड़ावत हारी ॥ ना जानों सखि कौन हेतु तैं व्याप्यौ यह दुख भारी । सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु काम बिषम सरमारी ॥ ३२५ ॥ राग मलार ॥ कहा परदेशी को प्रतिआरो । प्रीति लगाय चले मधुबन कों बिछुरे दुख दीनों अति भारो ॥ ज्यों जलहीन मीन तलफत हैं तैसें ब्याकुल प्राण हमारो । सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु बिनु दीपकु जैसें भवन अंध्यारो ॥ ३२६ ॥ राग मलार ॥ चलऊधों लै आवहिं गोपालै । पाय पकरि कें निहुरि बिनति कहि गहि हलधर की बांह बिसाल॥ बारिक बहुरि आनि दिखरावै नन्द आपुने बालै । गायनि गनत गोप गोपी जन सीखत बेनु रसालै ॥ यद्यपि महाराज सुख सम्पति कौनु गनै मोतिन अरु लालै । तदपि सूर आकरषि लियो मन उर घुंघुचिन की मालै ॥ ३२७ ॥ राग नाट ॥ तुम्हारो गोकुल हो ब्रज नाथ । घेरयो है यह मदन महाभट चमु चतुरंगि साथ ॥ गरजत अति गम्भीर गिराजनु जात गयन्द अपार । धुरवा धूरि उड़त रथ पायक घोरनिकी खुरतार॥ चपला चमचमाय आयुध बर भांति वकनि आकार । परत निशान घाउ तलकत नभ कट कटात तिहिबार ॥ मारें मार करत दादुर अति पहिरें बहुत सनाथ । हरे कवच सिर मुकट बांधि कें बरहि मिले सब आय ॥ कारे पट पहिरें पिक चातक कहत भाजि जिनि जाहि । उनरि उनरि बे परत आनि ते योधा परम उछाहि ॥ भयो घायल धीरज दुख बहियां दुरजन उठत दराल । हबकत हाथ आय गयो थोथा अटकि रह्यो उरसाल ॥ भाल खंड कारी मानौ रथ आन्यों झोली घाल । रह्यो हंकार सुखेत खरिमां सकत रही उर साल ॥ अतिहि बियोग जानि किरपा बिधि आय सकेतिहि गांउ । कापै जांउ अनाथ कृपा निधि तुम बिनु नाहिन ठांउ ॥ नन्द कुमार जशोदा नन्दन कमल नयन बलि जांउ । पठयो मोहि जनाउ दिवे कों सूर दास मेरो नाउ ॥३२८॥ राग मलार ॥ बिछुरन जिनि काहू सों होय । बिछुरन भयो राम सीता कौ क्रम छिति खोजी टोय ॥ बिछुरन भयो मीन अरु जल कौ तलफि तलफि तनु खोय । बिछुरन भयो चकहू चकवा कौ रैनि गंवाई रोय ॥ रुदन करति बैठो बन महियां बात न बूझै कोय । सूर दास स्वामी कौ बिछुरन बनत उपाय न सोय ॥ ३२९ ॥ राग मलार ॥ बलैया लै हों हो वीर बादर । तुम्हरे रूप सम हमरे प्रीतम गए निकट जल सागर ॥ पालागों द्वारका सिधारो बिरहिनि के दुख दागर । ऐसो संग सूर के प्रभु के करुणा धाम उजागर ॥ ३३० ॥ रागसारंग ॥ हरि बिनु ऐसें हैं ब्रज जीजै ॥ पंकज बरषि बरषि उर ऊपर सारंग रिपु जल भीजै । उड़ पति अरिके सिर ओटी हम निमिष चैनु नहि दीजै ॥ चन्दा चौथ ज्ञानि गोपिन कों मधुप राखि जशु लीजै । वायस अजा शब्द की मिलवनि ऐसेही तनु कीजै ॥ सूर दास प्रभु दुखित जानिकें वेग कृपा अब कीजै ॥ ३३१ ॥ राग सारङ्ग ॥ उपमा न्याय कही अंगनि की । चले मधुपुरी क्यों फिरि आवैं शोभा कोटि अनंगनि की ॥ मोर मुकुट सिर सुर धनु की छबि दूरि रहें दरसावै । जो कोउ करै कोटि कैसेंहू नेकहु छवन न पावै ॥

अलक भ्रमर भ्रम भ्रमत सदा बन बकुल बेली रस चाखै । कमल कोस बासी कहियत पै बंस बंस अपनो मनराखै ॥ कुण्डल मकर नयन नीरज से नासा शुक कवि कुल गावै । थिर न रहै सकुचे निशि बस ह्वै यपंजर रहिकै वेनु सुनावै ॥ भ्रु धनु प्रान हरन दसनावलि हीरक अधर सुबिम्ब । सहज कठिन सङ्कति बुधि हर्त्ता तर्ज कीनों अवलम्ब ॥ भुजा प्रचंड महा रिपु मारक अंस सुक्यों ठहराइ । तामें सप्त छिद्र जत मुरली मनु हर मंच पढाइ । कटि के हरि पद गति सुहंसमपीताम्बर तनुहै परधान । ह्वगी चास गति सिथिल प्रेम पथ राखि अवधि बस प्रान । सूर दास सोभा चित चितवत उपज्यो उलटि बिचार । निरुप मरस पीड़ीतन ह्वै के मिलु अब नन्द कुमार ॥ ३३२ ॥ राग सारंग ॥ लिखे नही पठवत हेबोल । ह्वैकौरी के कागद मसिको लागत है बहु मोल । हम इहि वार श्याम पर लेटत बीच बिरह को जोर । सूर दास प्रभु हमरे मिलन को ह्वदो करयो जु कठोर ॥ ३३३ ॥ राग सारंग ॥ कौन सुहागिलि सों मनु मिलि है वा मधुकर के मीत । दिन दश रहि मथुरा ह्वै तजि है मोमन यह परतीत । ब्रजतें गवन कियो ज्यों औरे केतेऊ दिन बीत ॥ राधा मुख सख जशोमति लालन तनि भए ग्रंथ अबीत । घर घर पुर पुर बन बन बीथिनि ह्वै हिलग के गीत । एको छिनु कल परी न तबहूं मुख सुख माधुरि पीत । नहि कोउ सिर पर नहि काको डरु नहि लोगनि की भीत । ना तरु काज करहिं क्यों ऐसे ज्ञानी चिगुणा तीत । सुमिरत नाम न्हपति पदवी कौ सुनत बचन अति सीत । किहि विधि कहिये दसा देह की सूर किरनि नवनीत ॥ ३३४ ॥ राग मलार ॥ नयन निशाधौं पै रही । निरखत बदन नन्द नन्दन को भूलि नतृपति लही । पचि हारी इनकी रुचि कबहूं में पर मितिन लही । तनु बिसरयौ कुल लाज गंवाई जग उपहास सही । रते पर संतोष न मानत मरजादा न गही । सूर दास इन लोभिन के संग कौलों फिरें बही ॥ ३३५ ॥ राग सारंग ॥ कहो कैसें के दरसन पाऊं । सुनहु पथिक उंहि देश द्वारका जो तुम्हरे संग आऊं । बाहिर भीर बहुत भूपति की पूछत बदन दुराऊं ॥ भीतर भौन भोग भामिनि भरतिहि ठांकाहि पठाऊं । बुधि बल बिधि संयोग जतन करि तन पिय पै पहुचाऊं । ब्रज जमुना तट केहि रसिक बिन किहि यह दसा सुनाऊं । जद्यपि सूर जांउ प्रभु तारस भनको भलो मनाऊं । नव किसोर मुख मुरली बिनु इनि नयननि कहा दिखाऊं ॥ ३३६ ॥ राग गौरी ॥ तुम्हारो प्रीति कियों तरवारि । दृष्टि धार धरि हतीजु पहिलें घायल सब ब्रज नारि । बिलपति परति संभारति पुनि पुनि बदन सुधा निधि बारि ॥ करी समर निज खेत बृन्दावन रनहूं न मानी हारि । अब यह कृपा घोष लिखि पठवत कीनी मदन गुहारि । कछु अवशेष रह्यो सूरज प्रभु सोउ जिनि घालौ मारि ॥ ३३७ ॥ राग गौरी ॥ बात हमारी मानों जो तौ । आवन कहौ बहुते दिन लाए तातें उन्हई कोतौ । एकइ बोलनि केलि आपनी खोइ दई बैवाती । तातें पर मिति रही ठारह चाहे बचन सेवाती । इतनी कहै कोर धरि राखै जोग आपने घरकौ । पैज खांचि मेटन आए हो तन ऊजारो खरकौ । नन्द नंदन लै गए हमारी या ब्रजकी सब

ऊब । सूर श्याम नहि टरत हृदैतें ज्यों जजर खेरे की दूब ॥ ३३८ ॥ राग गौरी ॥ सपने हरि आए हो किलकी । नींद जु सखी भई रिपु हमकों रहि न सकी रति तिलकी । जौ जागों तो कोऊ नाहीं रोके रहत नहिलकी । तब फिरि जरनि भई नख सिखतें दीप बाति ज्यों सिलकी । पहली दसा पलटि लीनी है त्वचा त्वचकित न पिलकी । अब कैसें सहि जात हमारी भई सूर गति सिलकी ॥ ३३९ ॥ राग बिलावल ॥ कहांलों मन राखिये बिरमाइ । एक टक सिव धर नेच न लागत श्याम सुता सुत धरनी आइ । हरि बाहन इव तासु सहोदर रतिपति उदित मुरछि महि जाइ । गिरिजा पति रिपु नख सिख व्यापत तासु सुधा प्रिय कथा सुनाइ । बिरहिनि बिरह आप बसकीनों लै बेकमल जिनु पाइनु लाइ । बेगे मिलो सूर के स्वामी उदधित सुता पति मिलि हैं आइ ॥ ३४० ॥ राग बिलावल ॥ महा दुखित दोउ मेरे नयन ॥ जादिनतें हरि चले मधुपुरी नेक न कबहूं कीनों सैन । भरे रहत छति नीर न निघटत जानत नहि कबदैन । महा दुखित अतिही भ्रमसाते बिनु देखे पावत नहि चन । जौ कबहूं पलको नहि खोलत चाहत मरखो मन । छाँड़त छिन में ए जौ सरीरहि गहि के बिथा जात हरि लेंन । रसे नयन इहै इने मिलि जैहै और नभाषे बैन । सूर दास प्रभ जबतें बिछुरे तबतें सब लागे दुख दैन ॥ ३४१ ॥ राग मलार ॥ क्यों जबहि कमल कांदोहीन । प्रीति जिन सों हुती सजनी बिछुरि तिन दुख दीन । कूल सागर मीन तलफत हैत हजसत छीन । श्याम बारि सुलई बिधि हरि अमलक मल अधीन । मलय अंबुज और शसि गुण दहत इ मिलि तीन । सूर दास प्रभु बिनु ऐसो ब्रज जौ चीनत नहि ताहि प्रवीन ॥ ३४२ ॥ राग मलार ॥ माई री मेघ गाजै । मन इकाम कोपि चढ्यो कोलाहल कटक बढ्यो पिक चातक जैजै निसान बाजै । बरन बरन बादर बनाएतें बाजि गज बिराजे । दामिनि करवार करनि कंपत सब गात डरनि जल धर समेत सैन्य इंद्र धनुष साजै । ऐसे अभि लाख धीर बिगत चीरत नयन लाजै । अबलनि अकेली कर अपने कुलतिते बिसरी अवधि सूर सकल अंग सेंह हराइ भाजै ॥ ३४३ ॥ राग मलार ॥ माई री कत कारन कौं नात । देखो इन्हो कमल मधुपनु की छिनु नहि प्रीति घटात । कोइल कपिञ्जल बायस बलिछलि नाहिन उहि बन जात । जद्यपि सुधा राहु ससिपीनों बैठि एकही पात । सुत हित नेम जज्ञ व्रत कीजत बहु बिधि नीकी भांत । तिने पाइ सुख मनि मोहत जिय क्यों जननी जरु खात । इनको कहा परेखो कीजत अबला बल सुख सात । सूर दास मैं तबहीं जानी जब कर बाजी तांत ॥ ३४४ ॥ राग केदारो ॥ सखी री श्याम क्यों रूसे जाइ । औगुण हमजु किये मेरे प्यारे सो क्यों न देहु बताइ । प्रीति अचेत भई जो हमतें थोरी मो उपजी सतभाइ । पाइ परों बिनती करों जो कोउ श्याम मिलाइ । थोरे दिन को बयक्रम अबला कासों रहे खपटाइ । चन्द्रकी रसि अगनि हूं लागी तारे गनत बिहाइ । बदन मलीन भई सब गोपीं छांडि चले जदुराइ । नित प्रति भजन करतही मोकों चरण कमल चित लाइ । चोटी पर कहा कटकई माथो जेतुम चले बिसाइ ।

कानन्हि कुण्डल अरु बन माला सो छवि क्यों बिसराइ । सूर दास चातक भई श्यामा पिउ पिउ रसना लाइ । नीरद श्याम सुखद सौ भगतन है कोउ आनि मिलाइ ॥ ३४५ ॥ राग केदारो ॥ सखी री श्याम घटा बे आई । जिहिं दिसि गोचारत मोहन बल उमगि उमगि तित धाई । थकित भई चहुं दिस मुरली सुनि मोहन जबहि बजाई । तै सोइ नील वपु निरखि निरखि झुकि बरषत घन बन भाई । चकित रही सुरभी जित कित सब तजि तृन प्रेम लुभाई । मनहु कलित डिंडीर पिंड कवि धरे अंचल एक चाई । तब दल छत्र बिचित्र बिराजत भ्राजत है विधु मधू सुहाई ॥ मनहु नील नग सुरंग सरापट मनि सहना लगुहाई । सुरति भूप अति खलत बिगत कवि अंग सु धरनि बहाई । मनहु बियादिसि नगर दामिनी पटनि लुहित द्रुम हाई ॥ कुल पट गुंछ स्वच्छ मुक्ता फल कटिकेयूर बनाई । उझकत चुगत हंस सारस मानो पावस मनहि जनाई ॥ चातक मोर चकोर भेष पुनि पिक समरेस सुनाई । फनि मनि लिये फिरत चातक ज्यों मनु रहे ध्यान बिनाई ॥ उड़पति बिधु दुति घनलों गीधे कुहकत सरस मलाई । जैसे वकश्रेणाभित कोमल धरहिरत फिरत बिमलाई ॥ सुफल राज कानन यह राजत गाजत गगन गोहाई । कोंधत चपल छटा दसहूं दिस डोलत मदन दुहाई । बिनु गोपाल सकल ए हमको विषुसम लागत माई । सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि गोपिन लेहु जिवाई ॥ ३४६ ॥ राग केदारो ॥ सखीरी दुसह कहो क्यों सहिये । यह घन घटा रैनि पिक बोलत बिरह दहन दुख दहिये ॥ सीत कूल दामिनि बैरिनि भइ भेकनि भीम सूल सहिये । नींदजो गई सिराय जलज ज्यों तिल बिश्राम न गहिये ॥ नाहिन हितू करन कोउ अपनो जासों ए दुख कहिये । मदना तीर गम्भीर नीर पर बिनु सुख नाउ ज्यो बहियें ॥ पलक न मिलत छुटी किहि औसर सोक सरल तन तइये । कोकिल काक मोर पुनि कुहकत हरषत कहा नसहिये । जोबकहूं या छपद निरन्तर रहत परम लागत जोहिये ॥ तुव कह सूरति झूठ बदत सब रथन हेात बिन पहिये । विकल सयान गंवाय मंद मति ज्योंज्यों अवधि बतइये ॥ सूरज श्याम बियोगिनि बिह्वल एको आवत नहिये ॥ ३४७ ॥ राग मलार ॥ हरिकी प्रीति उरमाह करकै । आए अक्रूर ले चले श्याम को हित नाहीं कोउ हरिकै ॥ कंचन को रथ आगे कीनो हरिहि चढ़ायो बरि कै । सूरदास प्रभु सब सुख दाता गोकुल चले उजरि कै ॥ ३४८ ॥ राग मलार॥ वारक जाइयो मिलि माधो । को जाने जिय छूटि जायगो स्वास रहै जिय साधो ॥ पहुनेहु नन्द बबा के आवहु देखिलेंउ पलआधो । मिलही में विपरीति करी बिधि हेात दरश को बाधो ॥ सो सुख शिवसनकादि न पावत जो सुख गोपिन लाधो । सूरदास राधा बिलपति है हरिको रूप अगाधो ॥ ३४९ ॥ राग मलार ॥ हरि हम काहे को यों बिसारी । प्रेम तरंग बूड़त व्रज बासी तरल श्याम ताई हारी ॥ ऋतु माधव पिक बचन सुधा कर मरुत मदन गति भारी । सहिनहि सकति बिरह आसो तन आग मिलाकन जारी ॥ ज्यों जल थाके मीन कहा करें त्यों हरि मेलि अब हारी । बिजय अधो मुखलेन सूर प्रभु कहियो विपति हमारी ॥ ३५० ॥ राग मलार ॥ जोप यहै

हुती उनके मन । तेा तबकमल नयन हम कारन कहा किये व्रज इते जतन ॥ बिष जल ब्याल बहन वरषा नल अखिल अशुभ इति राखे । सन्तत संग रहत काहू मिसि निठुर बचन नहि भाखे ॥ उन विपदनि कुंचित जौं करते कछून जोय सहेती । कहा कहैं उन निठुर श्याम को कीनी ज्यों घर रेती ॥ कहिये कइ जेा सब जानत हैं या तनकी गति ऐसी । सूरदास प्रभु हितसों चितकै बेगि प्रकट बीतैसी ॥ ३५१ ॥ राग मलार ॥ तू कहि धेारी कब हरि आवहिंगे । संग किनि चलहु गोबर्धन धारी मुरली शब्द सुनावहिंगे ॥ अपने वे रंग महलमें ठाढ़े आपहि आप चितावहिंगे । सूर दास प्रभु बेगि किन मिलहु कमल नयन सचुपावहिंगे ॥ ३५२ ॥ राग सेारठ ॥ सखेारी नंद को गेापाल हमसों गयेा टून ज्यों तेारि । मीन जलकी प्रीति सजनी नाहि निबही जेारि ॥ कहा भयेा आकाश गुड़िया कर हमारे डेारि । मिलन को व्रजनाथ ऊधेा मिले गेारि वहेारि ॥ कूबरी के चंदन राचे प्रीति नाता जेारि । सूर हीरा हाथ टारयेा रही समुद बिरेारि ॥ ३५३ ॥ राग सेारठ ॥ निशि दिन बरषत नयन हमारे । सदा रहत पावस ऋतु हमको जबतें श्याम सिधारे ॥ दृग अंजन लागत नहिं कबहूं उर कपेाल भए कारे । कंचुकि सूक तनहि सुनि सजनी कुच बिच बहत पनारे ॥ सूरदास प्रभु अंबु बढ्यौ है गेाकुल लेहु उबारे । कहं लगि कहों श्याम घन सुंदर बिरह हेाति अति भारे ॥ ३५४ ॥ राग सेारठ ॥ आछे कमल कोस रस लेाभी इे अलि सेाच करै । कनक दछिका तब दल के ढिग वसते उझकि पसरै ॥ कबहुंक पक्ष संकेाचि मौन ह्वै अंबु प्रवाह झरै । कबहुंक कम्पित चकित निडर ह्वै लेालुपता बिसरै ॥ विधु समूह मंडल में राजत अद्भुत अंग भरै । एतेउ जतन बचत नहि तरफत बिन मुख सुर उचरै ॥ कीर कमठ कोकिला उरग कुल देखत ध्यान धरै । आपन क्यों न पधारो सूर प्रभु देखे कहा बिगरै ॥ ३५५ ॥ राग सेारठ ॥ आये नहिं माई कोई धों । अबतेा सखी संदेस कठिन भयेा नयन थके मग जेाई धों ॥ मथुरा तें जाय निबास सिंधु कियेा प्रान जीवन धन सेाईधों । हारा वती दूरि अति मारग कैसे पहुंचे तेाईधों ॥ नाहिन मिलन निरास मृतक भई व्रज बासिन कहि रेाईधों । सूरदास स्वामी यह जानेा जिय अपचैन सबनि हेाईधों ॥ ३५६ ॥ राग सेारठ ॥ व्रज कहि पठय सुशीस दयेा हम पुनि मन मुनि मत राखै । स्नेह नेह पुर नारि सकल अति रति करि कबहुन भाखै ॥ ज्यों सुनि हम अकुलाति पांति दुख त्यों कोउ और न पावै । सूर संदेसेा कहियेा हरिपैं तापस मति बिसरावै ॥ ॥ ३५७ ॥ राग सेारठ ॥ सुनि सुनि प्रभु पैं कछु नरह्यो । बैठि रहे जैसेंही तैसें आनंद व्रज उदयेा ॥ छिनु अकुलाय पाय बिरह ज्वर पुनि रस रास भयेा । रजसुभट महा मुनि ज्ञानी कैनेध्यान लह्यो ॥ ३५८ ॥ राग सेारठ ॥ व्रज तेा तुम बिन बहुत बिहाल । प्रेम अगन कैसे सहै पद्मिनि क्यों सहै सेातिनि साल ॥ कुसल कर्म्म केशव के सुनि सुनि पानि लगावति भाल । सूरज तपत ठगत मीनावलि छुटी नीर छुटि जाल ॥ ॥ ३५९ ॥ राग सारंग ॥ माधेा भली नहेा यह रीति । एकै छिनु व्रज जन बिनु तुमहीं और जनावै प्रीति । बीथी लता ललित कुसुमित बन श्रीराधा रस गीति ॥

यह सुख देखि दूसरो चाहत कहा यह भई विपरीति ॥ बेनु बिसारि धनुष करलीनो शत्रु-हनन की भीति । राज अभिमान और राजा बलि भ्रम करि करि के जीति ॥ हमरो जीवन तन मन चाता सूर सनेह कि नीति । कहा करिहै करुणा करि पाछे अवधि किते दिन बीति ॥ ३६० ॥ राग गुर्जरी ॥ मोहन माग्यौ अपनो रूप । ज्यों व्रजबास अचेत हि बैठों तावनि हानि अनूप ॥ मेरो मामु मेरो लोचन अलि लैजुगए धुपि धूप । ताऊपर हम लैन पटायो थालि धरयौ ज्यों सूप ॥ अपनों काज संवारि सूर प्रभु हमहिं बतावत कूप । लेवा देई घरी घरी में कौन रंक को भूप ॥ ३६१ ॥ राग कान्हरो ॥ तारिपु तारिपु तासुत आयुध प्रीतम तहां निन्यारे । सोबिरंचि संभव नातन तें तहां रहे प्रान हमारे ॥ मेा वरजतही गवन कियो हठि स्वाद सुध्य रस आल । कुन्ती नन्द तातसुख जोवति कल मलाइ अति प्याल ॥ भोर भए प्रभु बंधन छूटे ज्यों बिरहिनि रति मानें ॥ इहि विधि मिलहिं सूरको स्वामी चतुरहोइ तोजानें ॥ ३६२ ॥ राग सारंग बिकुरोरी मेरो बाल संघाती ॥ निकसि न जात प्राणए पापी बिहरत नाहिन छाती ॥ होतिहिं समय मथति दधिभूली अरि जोवन मद माती ॥ जोजानें हरि चलत मधुपरी ता ज छाडि संग जाती ॥ ढारति नीर नैंनभरि सुंदरि नहि सुहात दिन राती ॥ सूर श्याम मिलिबे को सखिरी बेगि पठै लिखि पाती ॥ ३६३ राग केदारो ॥ कहा करों हौं अपने हारे ॥ जब गोपाल गए गोकुलतें मथुरा जाइ कंस उनि मारे ॥ बसुदेव पिता देवकी माता बेजुकहत जगदीस हमारे ॥ मिलहु नजाइ भाइके नाते सेवा बहुत करी हम बारे ॥ पा लागों ऊधो इह कहियहु नैंन सजल भरि ढरत पनारे ॥ सूरदास तुम्हरे बिछुरतें ऐसेंभए कोखिके जारे ॥ ३६४ ॥ राग केदारो ॥ बोलिगो सखि चातक पिक मधुकर अरु मोर दिनही दिन कोनसहैं बिरह बिथा घोर ॥ नलिनी दल दूरि करौ षट्पद मदकी पंक ॥ अब जिनि तन राखि लेहुमन सिज सर संक ॥ सजि सुगन्ध सुमन सेज ससि सोंकहिजाय । जैसेंहि यह बीर कर्म देखहि सब आय ॥ लाउ मलय मारुत अरु ऋतु बसन्त संग । पूजति सखि काम मरम सनमुख रण रंग ॥ सूर दास प्रभु कृपाल कोमल चित गात । ताही छिनु प्रकट भये सुनत प्रिया बात ॥ ३६५ ॥ राग अड़ानों ॥ सबन अवध सुन्दरी बधे जिनि । मुक्ता माल अनंग गंगनहि नव सत साजें अर्थ श्याम घन ॥ भाल तिलक उड़पति न होय यह कबरि ग्रंथि अहि पति न सहस फन । नहि बिभूति दधि सुत नकंठ जड़ यह मृग मद चन्दन चरचित तन ॥ गगन चर्म यह असित कंचुकी देखि बिचारि कहां नंदी गन । सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु बरबस काम करत हठ हम सन ॥ ३६६ ॥ राग अडानों ॥ सुनि सखि श्याम कहां गये मेरे आगेतें । चौंकि परी सपने हरि देखे बिलपि बियोगिनि जागेतें ॥ बारों ए आंखि उघरि दोऊ आईं अधिक प्रीति अनुरागेतें । मिथुन कोक जैसें मिलि बिछुरत रजनि बिमुख भ्रम भागेतें ॥ एकहों जरि जु रही पहिलेंहीं बिषम बिरह दवदागेतें । सूर श्याम बिनु अब क्यों जीजै पंच बान सर लागेतें ॥ ३६७ ॥ राग मलार ॥ सजल जलद बानेत बदरिया बधन बिरहिनी आई मारू मोर करत चातक पिक चढि नग टेर सुनाई ॥ दामिनि कर करवार सेंहथी

सायक बूंद बनाई । मनमथ फौज जोरि चहुं दिशि तें व्रज सनमुख ह्वै धाई ॥ नदी सुभट कैसें कहि पठऊं पथिक न वह दिश जाई । इक हम दीन दुखित माधो बिनु दूजे गरज डराई ॥ सूनों घोष बैरु तकि आयो सक्र निशान बजाई । गोवर्द्धन धर टूरि सूर सुनि होते आज सहाई ॥ ३६८ ॥ राग मलार ॥ अब व्रज मनहु अनाथ कियो। सुनि री सखी जशोदा नन्दन लिखि संदेस दियो ॥ तब वह कृपा श्याम सुन्दर की कर गिरि टेकि लियो । करि प्रतिपाल गाय गोपिन को कालो गरल पियो ॥ यह सब दोष हमारो बिछुरत फाटि न गयो हियो । सूर दास जग नन्द नदन बिनु कारन कों न जियो ॥ ३६९ ॥ राग मलार ॥ हरि कौ मारग दिन प्रति जोवति । चहुंदिशि चितै चकोर चन्द ज्यों सुमिरि सुमिरि गुण रोवति ॥ लिखि न पठाय देहु नद नंदन आनहु कागद दोवति । जबतें तुम बिछुरे मुरली धर नेकु नोद नहि सोवति ॥ कहां लगि कहों विकलता तनकी विरह बिथा भरि भोवति । सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश विनु जनम अकारथ खोवति ॥ ३७० ॥ रागनट ॥ हरि बिछुरत प्राण निलज्ज रहेरी । पिय समीप सुख की सुधि आवै शूल शरीर न जात सहेरी ॥ निशि बासर ठाढो मग जोवति ए दुख हम न सुनै नचहेरी । गवन करत देखन नहि पाये नयन नीर भरि बहसि बहेरी॥ ते बातें बसि रही हिए में उलटि अवधि के वचन कहेरी । सूर श्याम बिनु परव बिरह बस मानहु रवि शशि राहु गहेरी ॥ ३७१ ॥ राग सारंग ॥ बेगि निकुंज चलहु नंद नदन तुम बिनु राधा निपट निरंग । सन्तत हित करते अन हित रिपु सदृश होत उन के सब अंग ॥ बहत मन्द मलया निल ताकों प्रकटित कबरी भीम भुजंग । पिक चातक शुक धुनि संका मन अवलोकत भुव धनुषहु पंग ॥ अति गौरंगु श्याम तासों मिलि उभय उर अधिक उतंग । नाहिन आवत निकट न परसत शिव शिव भ्रम करि डरत अनंग ॥ अंजन राहु रूप नयननि में निरखत ही विधु कौमद भंग । सूर दुसंधि रह्यो सजनी तन अब नहि रहे श्याम बिनु संग ॥ ३७२ ॥ रागसारङ्ग ॥ दूरि करहु बीना कर धरिबो । मोहे मृग नाहि रथ हांक्यो नाहिन होत चन्द को ढरिबो ॥ बीती जाहि सोई पैजाने कठिन है प्रेम पासि को परिबो । जबतें बिछुरे कमल नयन सखि रहत न नयन नीर को गरिबो ॥ शीतल चन्द अगनि सम लागत कहिये धीर कौन बिधि धरिबो । सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु सब झूठो जतननि को करिबो ॥ ३७३ ॥ राग सारंग ॥ मेरे निज नयन अनाथ हमारे । सुन्दर श्याम उहां तें सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वे जल हैं हम मीन सखीरी कैसें जीवहिं न्यारे । हम चकोर चातक अम्बुद तन सुधा बरषि प्रति पारे ॥ मधुबन बसत आस दरशन की जोइ जोइ मगुहारे । सूर श्याम कीनो बिधि ऐसी मृतकहु तें फिरि मारे ॥ ३७४ ॥ राग सारंग ॥ दिन ही दिन को सहे बियोग । नाहिन यह शरीर सखि मेरो एते बिरह जुरि जोग ॥ सजि श्री कुसुम सुगन्ध सेज रचि बसन कुमकुमा बोरि । नलिनी दलनि दूरि करि उरतें कंचुकि के बंद छोरि ॥ जिनि बरजे बन बदत मोर पिक मधुपनि सों कहि आउ । उदित चन्द चन्दन चढाय दै बिबिध समीर बहाउ ॥ रटि प्रिय नाम श्याम सुन्दर को श्रवण सुनाय सुनाय । तो दे-

खत तन हेामि मदन मुख मिलि हों माधेा जाय ॥ सूर सकल घट अन्तरजामी जानि जुवति को रीति । तबही प्रकट भये नन्द नंदन सुमिरि पुरातन प्रीति ॥ ३७५ ॥ राग सारंग ॥ सकुचन कहि न सकति गुप्त हृदय की बात । सकृत बचन अनागत कोऊ कहि जु गयो अधरात ॥ रजनी घटे न सूर प्रकासे कब उठि देखों प्रात । सूर दास प्रभु संगते बिछुरे को लावै कुशरात ॥ ३७६ ॥ राग सारंग ॥ तब न बिचारी री यह बात । चलत न फेट गही मोहन को अब ठाढ़ी पछितात ॥ निरखि निरखि मुख रही मौन ह्वै थकित भई पलपात । जब रथ भयेा अदृष्ट अगेाचर लोचन अति अकुलात ॥ सबे अजान भई उहि औसर ढिगहि जसोमति मात ॥ सूर दास स्वामी के बिछुरे कौडी भरि न बिकात ॥ ३७७ ॥ राग मलार ॥ कोकिल हरि कों बोलि सुनावौ ॥ मधुबन तें उपटारि श्याम कहं इहि व्रज लै करि आवौ ॥ जाचक शरण सु देत सयाने तन मन धन सब साजु ॥ सुजस बिकात बचन केबदले क्यों न बिसा हति आजु ॥ कीजै कछु उपकार परायो यहै सयानों काजु । सूर दास प्रभु कहाँ यह औसर बन बन बसन्त बिराजु ॥ ३७८ ॥ राग मलार ॥ यहि बन मेार नहीं ए काम बान । बिरह खेद धनु पुहप भृंग गुन तितेतरे या रिपु समान । लयो घेरि मन मृग चहूं दिशते चूक अहेरी नहीं अजान ॥ पुहप सैन घन रचित जुगल तन क्रीडत केशव बन निधान । महा मदन मुदित प्रेम रस एमगि भरे मय में न जान । यहिं अब श्याम मिले सूर प्रभु बदग्रो नाग देजीय दान ॥ ३७९ ॥ राग मलार ॥ आजु बन मोर नि गायो आई । जबतें श्रवण सुन्यों सुनि सजनी तबतें रह्यो न जाई । व्रजतें बिछुरे मुरली मनोहर मनों व्याल गयो खाई । औषध बैद गारुरी हरि बिनु मानों न मंत्र दुहाई । चातक पिक दुखदेत रैनि दिन पिउ पिउ वचन सुनाई । सूर दास प्रभु तोपैं जोऊं जो हरि मिलि हैं आई ॥ ३८० ॥ राग मलार ॥ बहुरि बन बोलन लागे मोर । करत संभार नन्द नन्दन की सुनि बादर की घोर । जाको पिय परदेश सिधारयो सो जिय परे निठोर । मोहि बहुत दुख हरि बिछुरे को थकति बिरह के जोर । चातक पिक चकोर पपीहा ए सबहीं मिलि चोर । सूर दास प्रभु बेगि मिलहु किन जनम परत है बोर ॥ ३८१ ॥ राग केदारो ॥ यह शशि शीतल काहे तें कहियत ॥ मीन केत अंबुज आनन्दित तातें तो हित लहियत ॥ एक कलंक मिट्यो नहि अजहूं मनहु दूसरो लहियतु । यही दुःखतें घटत बढत नित निशानीद रिपु गहियतु ॥ बिरहिनि अर कमलनि चासन कहं अपकारी रथ नहियत । सूर दास प्रभु मधु बन गवनें तो इतनें दुख सहियत ॥ ३८२ ॥ राग सारंग ॥ हरि में हरि नख कहि जु गए । हरि दरसत हरि मुदित उदित हरि हरि व्रज हरि जु लए । हरि रिपु तारिपु तारिपु को सुत हरि बिनु अधिक बए ॥ हरि तनया सोधित जल दहमहं हरि अभिमान गवाए । अब हरि बदन कियो कुब्जिजा हरि सूर दास मन भाए ॥ ३८३ ॥ राग सारंग ॥ कहां रह्यो माई नन्द को मोहन । वह मूरति जियतें नहि बिसरति गयो सकल जग सोहन । कान्ह बिना गोसुत को चारै को ल्यावै भरि दोहन । माखन खात संग ग्वालनि के और

सखा सब गोहन । जोई जोई सुरति करति हों सखि री तेई अधिक मन मोहन । सूर दास स्वामी के बिछुरे क्यों जीवहि इन छोहन ॥ ३८४ ॥ राग मलार ॥ सखीरी हरि बिनु दुख है भारी । सिंधक सुतहि भूषन निकट जैसे तैसी गति भई हमारी । सिबिर बधू अरि काहे निवारति पुहप धनुष के बिसेष । चचु श्रवा उर हार चास तें अछिन दुतिय बपु रेख । घटआस असन समैं सुख आननअमी गलित जैसे शेष । जलधर व्योम अंबु कत रुंचत नयन हेाड वद लेख । द्विज पति प्रभु मोहि आनि मिलावहु हरत आरति जानि । जैसे हरिहि कबंध प्रकट भयो हरि आनन्द रति मानि । षट आनन वाहन कानन में घन रजनी तहं बाढी । सूरदास मिलि रसिक शिरोमनि सुनि चाचिक पिक काढी ॥ ३८५ ॥ राग मलार ॥ हमतें कमल नयन भए दूरि । चलन कहत मधु वनहुतें सजनी इन नयननि की मूरि । चलत कान्ह सब देखन लागी उडतन रथकी धूर । सूर दास प्रभु उतरुन आवै नयन रहे जल पूरि ॥ ३८६ ॥ राग मलार ॥ सखीरी हरि को दोष न देऊ । तातें मन पावति जोइ तो दुख मेरेही कपट सनेहु । विद्य मान अपनेहीं नयननि सुनो देखति गेहु । ते सबए व्रज नाथ बिना उर फटि न होत बड बेहु । कहि कहि कथा पुरातन सखिरी अब अति अन्तन लेहु । सूर दास तन यों बक रोगी ज्यों फिरि फागुन मेहु ॥ ३८७ ॥ राग सारंग ॥ बीर बटाऊ ठाढे रहियो । जबहीं गवन करो मधु बन को हमरो संदेश श्याम सों कहियो । बहुतें कहा लिखों पतिया में अंचरा बांधि कमल कर गहियो । सूर दास प्रभु सखी तुम्हारो तुम हो चतुर वदन यह लहियो ॥ ३८८ ॥ राग मलार ॥ अब दल उठत बलाहक जोर । मनों मयमन्त मदन संग दंती आवत व्रज पर भोर । बाजी बंक समीर सुरथ नभ नह्यो बाग बगडोर । सारथि सुमन सुमंच महाबल हांकत है हो घोर । रथो काम धनु पुहप बान सुरपति सासन शिर मोर । समर सोर सनसुख व्रज साध्यो सायक चित्त कठोर । बन्दी बदत कोकिला भृंगो दादुर चातक मोर । सूर दास प्रभु ए सें औसर राखहु नन्द किशोर ॥ ३८९ ॥ राग टोड़ी ॥ परम सुखद सिसु ताको नेह । सो जिनि तजहु टूरि के बासे सुनहु सुजान जान गति एह ॥ भंवर कुरंग काक अरु के किल जिनि पतियाहु जितें तुम देह । ऊधो अरु अक्रूर क्रूर कृत उपवन कुटिल किये रवि गेह । एहै बिनती लिखो कृपा निधि सोऊ आदर करि लेहु । सूर दास प्रभु क्यों न मिलहु अब तो तन मन फागुनको मेहु ॥ ३९० ॥ राग सारंग ॥ नाथ अनाथन की सुधि लीजै । तुम बिनु दीन दुखित हैं गोपी ऊधो को पतिया लिखि दीजै । नयन सकल भरि आए हरि बिनु कर मे सुकर मेरी गहि लीजै । सूर दास प्रभु आस मिलन की अबकी बेर हरि आवन कीजै ॥ ३९१ ॥ राग सारंग ॥ परम चतुर सुन्दर सुख सागर तनको प्रिय प्रति हार ॥ रूप लकुटि रोके रह तो सखि अनु दिन नन्द दुआर । अब ताबिनु उर भौन भयो है शिव रिपुको संचार । दुख आवत मन हटकन मानत सूनों देखि सिंगार । असमु उसास जात अन्तरतें करतन सकुच बिचार । निसा निमेष कपाट लगे बिनु सभो सुसतु सत मार

यह गति मेरी भई है हरि बिनु नाहि कछू प्रतिहार। सूर दास प्रभु बेगि मिलहु तुम नागर नन्द कुमार ॥ ३९२ ॥ राग सारंग ॥ ऐसो सुनियत है दुहि माहुं। याहीतें सब बात जानबो चतुर सिरोमनि नाहु। आवन कह्यो न फेरि सिधारे करी पाछली गाह ॥ उहंई रिरमि रहे कुबिजा संग कोन बेद को राह ॥ एते पर सन्तोष न मानत परे हमारे दाह। सूर दास प्रभु पूरो दीजै दिन दश मानो साह ॥ ३९३ ॥ राग मलार ॥ ऐसे सुनियत हैं दोइ सावन। वहै बात फिरि साखति है श्याम कह्यो हो आवन। तबकत प्रीति करी अब लागी अपनों कीयो पावन। यहि दुख सखी निकसित जदुये जितहि सुने कोउ नावन। एकहि बेर तजी हम लागे मथुरा नेह बढावन। सूर सुरति कत होत हमारी लागी नीकी भावन ॥ ३९४ ॥ राग कल्यान ॥ दिन कर दिन देखें डरु लागत। ससि शीरो सोउ तातो तकि के है दंवतें मन भागत। कौतकु निरखि सखा मोहनके जमुना पुलिन पनारी। निकट गए जेसो मृग तृष्णा श्याम सनेह प्रजारी। जाचक एक रूप रस कारन लहतन सुख गुण गाये। ग्रीषम गिरि कौलों उर राखों सूर दरस बिनु पायें ॥ ३९५ ॥ राग कल्यान ॥ सबै रितु औरें लागति आहि ॥ सुनि सखि वा ब्रज नाथ बिना ब्रज फीको लागत चाहि ॥ देखि श्याम घन नयन ए बरषत पावस यहै सिरात। सरद सनेह स्वच्छ सरिता उर मारग ह्वै जल जात ॥ हिम दिन कर देखेही उपजति निसा रहित यह जोग। सिथिर सुरति आए कांपत उर सुमिरि श्याम उप भोग ॥ निरखि वसन्त विरह वल्लीतन वे सुख दुख होय फूली। ग्रीषम काम निमिष नहि छांड़ति देह दसा सब भूली ॥ षट ऋतु मिलि इक धाम कियो वपु उभय विदोष जुरे। सूर अवधि उपचार आजुलों राखे प्राण भुरे ॥ २९६ ॥ राग सारंग ॥ कहा होत अबके पछताने। खेलत खात हंसत अंग संग रहि हम न श्याम गुण जाने ॥ को बसुदेव कौन की थाती को है साखि जबहि उन आनें। सोवत लाय देउ ऊधो हमें तुमहूं तौ अति निपट सयाने ॥ यह न कथा काक कोकिल की कपट रंग मन मांह समाने। सूर समें ऋतु राज बिराजे मिले जाय निज कुल पहि चाने ॥ ३९७ ॥ राग सारंग ॥ बहुरि न कबहूं मिले हरि। कमल नयन दरशन के कारन हौं सखि जतन रही बहुंते करि ॥ जेजे पथिक गए मधुवन को तिनसों विथा कही पायन परि। कहियो प्रकट जाय जदुपतिसों श्याम कही को जाति अवधि टरि ॥ धीर न धरत प्राण व्याकुल अति लेति उसास नीर नयननि भरि। सूरदास मन थकित भए ह यह वियोग सागर न सकति तरि ॥ ३९८ ॥ राग सारंग ॥ बिन घरवहि उपगार गह्यौ। ना जानो यह राह उमापति कतहोइ सोध लह्यौ ॥ ताके बीच नीच नयननि में अंजन रूप रह्यौ। विरह सिंधु बल पाय प्रकट भयो नाहिन परत कह्यौ दुसह दसन दुख दलि मयननि जल परसु न परत सह्यौ। मानहु अमृत सुधा अन्तर तें उर पर जात बह्यौ ॥ अब सुख शशि ऐसो लागत ज्यों बिन माखनहि मह्यो। सूर दरस हरि दान दिये बिनु सुख प्रकास निवह्यौ ॥ ३९९ ॥ राग विहागरो ॥ टरत नहीं टारी छवि जियमें चुभी। घन तन श्याम पिताम्बर दामिनि चातक ज्यों अंखियां लुभी ॥

ज्यों बग पंकति राजनि मानो उर मुक्ता माल सुभी । गिरा गम्भीर गरजसी सुनिके नाथ की अवधि खुभी ॥ मुरली मोर मनोहर बानी सुने कटक जु उभी । सूर मेघ मन मोहन देखत उपजी काम गुभी ॥ ४०० ॥ राग सारंग ॥ बिनु माधो राधा तन सजनी सब विपरीति भई । गई छपाय छपा करको छवि रही कलंक मई ॥ लोचनकुंते सरद सार ससु छवि निचोइ लई । आंच लगे च्योनो सोनात्यों तनु धातु हई ॥ कदली दलसी पीठि मनोहर सो जनु उलटि गई । सम्पति सब हरि हरी सूर प्रभु विपदा दई दई ॥ ॥ ४०१ ॥ राग मलार ॥ सखीरी दिखरावहु वह देस । कहा कहों यहि ब्रज बसि हरि बिनु रह्यौ न सुखको लेस ॥ सुख मोठी अक्रुर दीनों हम शिसु दीनो लै जान । जानु नवधिक बिभे सो सूगज्यों हतत बिसासी प्रान ॥ मैं मधुज्यों राखे सचि मोहन तें भृंगी की रीति । दे दृग छार अवधि लै गवने सुनि प्रति जहां अनीति ॥ मोहन बिन हम बसत घोष मं भई तीसरी सांझ । सूरदास ए प्राण पतित अब कहा रहत घट मांझ ॥ ॥ ४०२ ॥ राग गोड मलार ॥ ब्रज तजि गए माधो कालि । श्याम सुन्दर कमल गुण निधि क्यों विसारे आलि ॥ बैठि निशि वासर बिसूरति बिकल चहुं दिसि भालि । कह करे छत कर्म्म अपनो काहि दीजै गालि ॥ तज्यौ भोजन भवन भूषन अति वियोग विहालि । हितनहीं कोउ काहि पठऊं करि रही जिय लालि ॥ धोखही धोखे दगा दै क्रूर गयो रथ चालि । सूर श्याम कहे जशोदा कहा पायो पालि ॥ ४०३ ॥ राग मलार करावरे सारंग जाय श्यामहि सुरति कराउ । पौढ़े होंहि जहां नद नन्दन ऊंची टेर सुनाउ ॥ गौ ग्रीषम पावस ऋतु आई सब काहू चित चाउ । एन बिनु हजवासी यों सोहत ज्यों करिया बिनु नाउ ॥ तेरो कह्यौ मानिहैं मोहन पाइ लागि लै आउ । अब-की बेर सूरके प्रभु को नयननि आनि दिखाउ ॥ ४०४ ॥ राग धनाश्री ॥ यहि बिधि पावस सदा हमारे । पूरन पवन स्वास उर ऊध आगि जुरत एक ठारे ॥ बादर श्याम स्वेत नयननि में बरषि अंसु जल धारे ॥ अरुण प्रकाश पलक दुति दामिनि गरज नाम पिय पारे । चातक दादुर मोर प्रकट हुज बात निरन्तर आरे ॥ एऊतो तबतें अटके जब श्याम रहे हित डारे । सूर कहा कहिये को जाने या हितके व्योहारे ॥ तुमहि सेदबहि के पछितानी कठिन बिरह के नारे ॥ ४०५ ॥ राग मलार ॥ घटा मधुबन पर बरषी जाय । हरि घन श्याम बिना सब बिरहिनि बेलि गई कुम्हिलाय ॥ उग्र तेज सम भांन तपत शशि ब्याकुल मन अकुलाय । करहिं कहा उपचार सखीरी नेंकु न तपति बुझाय ॥ जब जब सुरति होत उर अन्तर तबहि उठत तन ताय । सुमिरि सुमिरि गुण श्याम रास के रही सूरमुरझाय ॥ ४०६ ॥ राग सारंग ॥ जीवहिं ज्यों कमल कांदो हीन । जिनसों प्रीति करी सुनि सजनी तिन बिछुरे दुखदीन ॥ ज्यों सर कूल मीन तलफत है जलस होत जल जीन । श्याम बार निधि लहरि बिरद्त्यों हम सुमरति लै लीन ॥ शशि चन्दन घन साव डारि गुण अधिक तपत सिलि तीन । सूर श्याम बिनु घोष मौन व्रत बिन जंचो ज्यों बीन ॥ ४०७ ॥ राग नट ॥ ब्रज पर मण्डल करत है काम । कहियो पथिक कान्हसों राखहि आनि आपनो धाम ॥ रजु खुर धूरि धुंधि चतुरंगिनि घेरि परयो

है गाउ । अवधि वचन गढ़ ढाहन चाहत निदरि पाछिले दाउ ॥ जलद कमान आप दारू भरि तड़ित पलीता देत । गरजनि मनहु छुटनि गोली की पहरक में पुल लेत ॥ लेहु लेहु धुनि धरत डरत बन्दी पिक चातक मोर । ढोवा करत सुभट दादुरपिक दलकि दलकि चहुं ओर ॥ कुसुम कदम्ब कुसुमसर अलि मुख छांड़त सर धनु खेंचि । पवन वकील प्राण करमागत रही तुमहि सो वेंचि ॥ तापर अलि जासूस देखि गयो टूट्यौ धीरजपानि-जो जिय लाज होहि तो राखहु सूर आपनो जानि ॥ ४०८ ॥ राग कल्यान ॥ सुनियत कुब्जा कान्हनिवाजी । पोत अटपटी चाल गई दुरि नवसत तन कंचन की साजी ॥ मेटी आय नगर दरवाजे चन्दन देत ठगे करि वाजी । पायो सुरत सुहाग सबनि को हरि प्राचीन प्रीति उपराजी ॥ भली भई पूरन फल पायो देखि सुरूप काम रति लाजी । जनम कोटि तप कियो सूर प्रभु परम सुहागिनि शिर चढ़ि गाजी ॥ ४०९ ॥ राग सारं-ग ॥ कहा दिन ऐसेही जैहैं । सुनि सखि मदन गोपाल न आंगन ग्वालन संग फिरि ऐहैं कबहुंक जाय पुलिन जमुना को बहुत बिरह विधि खेलत । सुरति होत आवत सुरभिन संग पुहुप लिये कर झेलत ॥ हटु मुसकानि आनि राख्यौ वपु चलत कह्यौ हो आवन । सूर सदिन कबहु तो होइहै मुरली मधुर सुहावन ॥ ४१० ॥ राग मलार ॥ सखीरी हरि आवें किहि हेत । वे राजा तुम ग्वालि बुलावति यहै परेखो लेत ॥ अब शिर कुच कनक मनि राजै मोर चंद्र नहि भावत । सुनि व्रजराज पीठिदै बैठत जदुकुल बिरद बुलावत । द्वार पाल प्रतिपौरि विराजत दासी सहस अपार ॥ गोकुल गाइ दुहत दुख कौलौं सूर तहैं सुकुमार ॥ ॥ ४११ ॥ राग कान्हरो ॥ कहा कहो इननैननि की बात ॥ ए खग जुलग उड्योजुई चाहत पल पिंजरा न समात ॥ एक टक मग जोवत निसि बासर पल पल बीतत जाम । व्रज बनिता अति दुखित जानि हरि कब आवहिंगे धाम ॥ असुवनि सिथिल भई है छाती सबव्रज बाढ्योबारि ॥ जोग संदेस भंवरमे डारत क्योंकरि पावहिं पारि ॥ हरिको बिरह खरसब अबला अति व्याकुल आधीन ॥ सूर दास गिरिधर बिन गोकुल जैसे जलबिनमीन ॥ ४१२ ॥ रागमलार ॥ बहुरि पपीहा बोल्योरी माई । नींद गई चिंता बित बाढ़ी सुरति श्याम की आई ॥ सावन मास मेघ की बरषा हों उठि आंगन धाई । चहुं दिसि गगन दामिनी कौंधति तिहिं जिय अधिक डराई ॥ काहू राग मलार अलाप्यौ मुरली मधुर बजाई । सूरजदास बिरहिनी व्याकुल धरनि परी मुरझाई ॥ ॥ ४१३ ॥ राग नट ॥ देखो माई लोग चतुर मधुबन के । बात नहीं गोपाल बिमो हे गुण जानत मोहन के । जब हरि गवन कियो मथुरा को छांड्यो मोह सबनि के । सूरदास प्रभु बिनु यों लागत मेघ गयो ज्यों पवन के ॥ ४१४ ॥ राग सारंग ॥ सखी री जागोतो कोऊ ढिग नाहीं बिलपति बिकल बिहान । मैं जान्यों अंक भरि मिले माधो उठि लागी अकुलान ॥ नींद मनो मुरझाय गिरी धर राखी प्रथम पंच संधान । अब अति उरमें रमेरि माई सपन छुटे छल बान ॥ सूर सकति रन बनु लछमन ज्यों सरको कछु अगद न आन । ख्याव सजीवन मूरि मुकुंदहित बहि रहें ए प्रान ॥ ४१५ ॥ राग धनाश्री कह कोइ जाने पीर पराई । ज्यों जल मांह मीन को

मारगु प्रभु पहिचान्यो न जाई ॥ ब्रजके लोगु रोगु नहि समुझत बैद्यहि देत बताई । सो जाने जाके तन लागी के जिन दई लगाई ॥ हरिके संग रहत निशि बासर बिरह न देत दिखाई । नाजानै हम कौन जतन करि जल में आगि लगाई ॥ तन अति छीन चलन गति थाकी सुधि बुधि सब बिसराई । सूर श्याम प्रभु आनि मिलावहु जातें सब दुख जाई ॥ ४१६ ॥ राग बिहागरो । जपति हों तेरे गुण की माला । तुम्हरे कारन जोगिनि होउंगी बांधि कमर मृगछाला ॥ एक बन ढूंढि सकल ब्रज ढूंढ्यौ कहूं न पाए नन्द लाला ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को हों विरहिनी बेहाला ॥ ४१७ ॥ राग बिहागरो ॥ मोहन मदन गोपाल मनोहर कथुनाथ दुखदोनो । चलती बेर अवधि आसादे अजहुन आए कुब्जा संग सुख कीनो ॥ हमेछांड़ि ऐसी जस जलतें मीन काढि हम तलफति तन छीनों । सूरदास अब बेगि मिलहु किनि सब तुम्हरे आधीनो ॥ ४१८ ॥ राग बिलावल ॥ हरि सुत पावक प्रकट भयो । मारुत सुत बन्धव पितु प्रोहित ता प्रति पालिहि छांड़ि गयो ॥ रति पति ताको पुनि वाहन ता वाहन घन सुत उनयो । मीन सुता सुत तात कहत हैं ता परकासत सकल छयो ॥ अग्नि के संग सरोज कली कौ तातें मेरे मन भाइ ठयो । शैल सुता को रूप न आवत तादिन कौ जिय नेमु लयो ॥ सार्ङ्ग सुता वाके सुत कौं हितु ता सुत सों सख नाथ हयो । सूरदास रवि रथ रवि के बस अजहुन मोहन दरशदयो ॥ ४१९ ॥ राग नट ॥ मिलवहु पार्थ मिलहि आनि । जलज सुत के सुत कि कवितें भई रसकी हानि ॥ उदधि सुता सुत अवलि उरपर इन्द्रआयुध जानि ॥ गिरि सुता पति तिलक करकस सतत सायक तानि ॥ पिनाकी सुत तासु वाहन भक्ष को भक्ष बखानि । साखा मृग रिपु वसत मलयज हुत ऊतासन जानि ॥ धर्म सुत अरिके सुभाइहि तजो शिर धरि पानि । सूरदास बिचिच बिरहिनि चूक मन मन मानि ॥ ४२० ॥ राग सारंग ॥ जल सुत प्रीतम सुत रिपु बान्धव आयुध आनन विलखु भए । सारंग सुत पति वसत जु माथे कोटि प्रकास रिसाय गए ॥ मारुत सुत पति रिपु पुर बासी पितु वाहन भोजन न सुहाय । हरि सुत वाहन भक्ष सनेही मानहु अनल देह देां लाय ॥ दधि सुत पति वाहन को वाहन ताको कैसें हेा समुझाई । सूरदास प्रभु धर्म्म पुत्र रिपु ता अवतारहि सलिल बहाई ॥ ४२१ ॥ राग सारंग ॥ सुनिरे पक्षी समुझि सिख मेरी । जहां बसत जदुनाथ जगत मनि वारक तहां आउ करि फेरी ॥ तुम कोकिला कुलीन कुसल मति जानति विथा बिरहिनी केरी । तोसी और नहीं उपकारिनि यह बसुधा में विधि करि हेरी ॥ उपवन बैठि बोलि बर बानी बचन बिसारि मोहि करि चेरो । प्राणनि के पलटे न पाइये संति बिकाति सुजस की ढेरी ॥ कहियो प्रकट पुकारि द्वारिहै कबला आनि अनंग दल घेरी । ब्रज लै आउ सूर के प्रभुको गाऊंगी कल कीरति तेरी ॥ ४२२ ॥ राग आसावरी ॥ बीर बटाउ पाती लीज्यौ । जबतुम जाहु देस द्वारावति हमरि रिसाल गोपालहिं दीज्यौ ॥ रंग भूमि रमणीय मधु पुरी राज धान रजकी सुधि कीज्यौ । क्षार समुद्र छांड़ि किन आवत यह निर्मल जमुना जल पीज्यौ ॥ या गोकुल की सकल ग्वालिनी देति असीस कान्ह चिर जीज्यौ । सूर दास

प्रभु हमरे हेतें नन्द नंदन के पाय परेज्यौ ॥ ४२३ ॥ राग भैरों ॥ देखे बिनु जान लागे बहुत दिना । कैसें करि प्राण रखों श्याम बिना ॥ जतन करत सखि छिनछिं छिना । सिंह कैसें जीवत चरत तृना । जो नहि मानत वचन गिना ॥ तब कहा कहौ सूरश्याम सिना ॥ ४२४ ॥ राग नट ॥ वे देखियत मधुबन के रुखरी । तामें श्याम हमारे प्रीतम जिननि हरी मेरी नींद भूखरी ॥ उन बिन मोपें रह्यौ न परत है बिनु देखें नयननि को दूखरी । सूरदास प्रभु मोहन नागर को बिरह कोलू भयो तन ऊखरी ॥ ४२५ ॥ राग कान्हरो ॥ काल उनि सुनीहै मनोहर बंसी । नहि तन सम्हार जुवती बर तबतें मदन भुजंगम डंसी ॥ को ल्यावै संगीत सरोवर मगन भई गति हंसी । आपुनही चलिये उड़रिये मेलि भोंह दृढ़ फंसी ॥ मानहुं तरुण तमाल श्याम तन लता माधवी ग्रंसी । सूरदास प्रभु मोहन नागर लै भुजबीच प्रसंसी ॥ ४२६ ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ पुनः भ्रमर गीत ॥ * ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ राग आसावरी ॥ हरि रथ रतन जरयौ कि अनूप दिखावै । जिहि मग कृष्ण गए उतही तें आवै ॥ चाल ॥ उतही तें आवै सखि न बुलावै देखो मनहि बिचारी । मनि मुकुट किरनि तन पीत बसन कोउ गोबिन्द की अनुहारी ॥ ओढ़ आभूषन लागे देखन जब लग नेरे आए । ऊधो जिय जाने सुख कुहिलाने कृष्ण संदेस पठाए ॥ चलो चलो धोंरी सुनिये कछु बातें । कहहु कहहु ऊधो हरिकी कुसरातें ॥ चाल ॥ कहिये कुसरातें सांची बातें आवन कह्यो कि नाही । के गरबाने राज समाने अब हम चितन सुहाहीं ॥ ठाढ़ी तन कम्पहिं सुन्दरि जंपहि बार बार अकुलाई । अब लिय कपट कछू जिनि राखहु बूझौ सोंह दिवाई ॥ कहह कहहु तो ऊधो तुम क्यों ब्रज आए । तब हंसि बचन कहे हम कृष्ण पठाए । चाल । कृष्ण पठाए तो ब्रज आए कहत मनोहर बानी । तुम सुनहु संदेसो तजहु अंदेसो तुम हो सकल सयानी । गोप सखा चित्त जिनि राखो अविगत है अबिनासी । मोहन माया पीर न दाया सब घट सदा निवासी । ऊधो जिनि कहो हरि को प्रभु ताई । सुनि जिय अनख बढे रिस रह्यो न जाई । चाल । रिस रह्यो न जाइ अनखु जिय बाढै यह हरि लो प्रभु ताई ॥ दासी कुबिजा कुटिल की संगति कौन बड़ै मन पाई । तुम पुनि भले कहन आवत हो हमको सबै सयाने ॥ जो कछु बातें देखियत आंखिन सो उनके मन माने । ऊधो हरि के कृत हम कहा बखाने । गोबिन्द की बातें सब कोउ जाने ॥ चाल ॥ सब कोउ जाने क्यों मन माने अब न कछू बनि आवै । परबस भए कहत हैं सोई कछु कुबिजा जो कहावै । बाको न्याउ दोष सब हमरो करम रेखको जाने । हम गोरस दुहिकै जो राखें गाहक बिधि गति आने । ऊधो तुम कमल नयन सों कहियो जाइ । एकबार कैसें हूं ब्रज देहु दिखाइ ॥ चाल ॥ कहियहु जाइ

श्याम सुन्दर सों तब ऊधो समुझावै । शंकर ब्रह्म शेष अरु सुरपति कोऊ अंत न पावै । जो पै प्रीति प्रकट मिलि बेकी हृदै ध्यान अति धरिये । सूर दास मिलदेत बहुत सुख बिरह सोकु कत तरिये ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ उमगि ब्रज देखन कों सब धाए । एकहि एक परस्पर बूझति जनु मोहन दूलह आए । सोई ध्वजापता का सोई रथ चढि दिवस सिधाए । श्रुति कुंडल अरु पीत बसन सुक वैसेइ साज बनाए । जाय निकट पहिचान्यों ऊधो नयन जलज जल छाए । सूरज श्याम मिटी प्रत्यासा नूतन बिरह जनाए ॥ * २ ॥ राग बिलावल ॥ * ॥ क्यों अलि गवन किये मथुरातें कहो धों कहा बिचार । सभा सुमति गुण ज्ञान ध्यान में नहि ब्रज भजन प्रकार । ज्यों सूछम पट घोष नारि को तुम सिर जदु कुल भार । कहा बोलत चित प्राण नाथ बिनु साधु बाद श्रुति सार । मुनि मुनि मुख मुख झूठनि झूठनि पढत बक्यो बिस्तार । हमरे जोग अरु अगम अगोचर सैल धरन आचार । हमतो नन्द नदन के रस में पगी धरें नहि छार । सूर दास प्रभु आनि मिलावहु नागर नन्द कुमार ॥ * ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ * ॥ कृपा करि हरि पठयो ब्रज पै तुहरो दरस दिखावन । प्रिय संदेस कहो तौ कहिबे उपाछें जस वृन्दाबन । तुम हम कबहुं निमेष बिगम नहि निगम कह्यो मन भावन । अरु एक बीचिनि दरसन दीनों भूत तत्व मुनि पावन । भए असाढ मधु पुरी ऊपर श्री गोकुल पर सावन । भादो चोथि चंद्रमा को गति ऊधो सखा सुहावन । हमतो कहि बिरहे श्यामा जू पुष्प बाग बसयावन । इतनी सफल करहु निज रसना नारि रत्न गुण गावन । कृष्ण कथा ठकुरानी मंडन गुरु बच पथ बिसरावन । कहालों कहिये चकित भयो अलि सूर चरण धसि धावन ॥ * ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ * ॥ यह उपदेस कह्यो है माधो । करि बिचार जिय साधन साधो । इला पिंगला सुख मन नारी । सून्य सहज में बसहि मुरारी । ब्रह्म भाव करि सगुणहि देखो । अलख बिना कछु औरन पेखो । कूंची तार एक मन लाइ । नयन मूंदि अंतर गत ध्याइ । हृदै कमल मह जोति प्रकासी । सोइ अंतर जामी अबिनासी । यहै उपाइ बिरह जल तरिहो । जोग पंथ क्रम क्रम अनुसरि हो । यह संदेस कह्यो गोपाल । सुनतहि बिमुख भई ब्रज बाल । रे मधुकर रस लंपटवाई । ऐसे बचन न कहे कन्हाई । श्री वृन्दाबन भवन बिराजै । नटवर भेष सदा हरि साजै । रास बिलास भले माने मन । बिच गोपी बिच कान्ह श्याम घन । अलि आए हैं जोग सिखावन । देखि के प्रीति लगे सिर नावन । भ्रमर गीत जो दिन दिन गावै । परमानन्द परमपद पावै । सूर जोग की कथा न भाई । प्रेम भक्ति गोपी जन पाई ॥ * ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ * ॥ परी पुकार द्वार गृह गृह प्रति यह साची अब जोगी आये । पवन सधावन भवन छिडावन रवन रसाल कृपालु पठाये । आस अवधि परमा बधि जीवन तेउ सिथिल करि काहि तुलायो । कनक बेलि कामिनि ब्रज बालहि जोग अगनि दीबे दिन धायो । भूभर हरन असुर मारन हित कारन कान्ह मधु पुरी छायो । यादो उ में ब्रज एको नाहि न

काहे को उलझ्यो जसवि तरायो । संबल श्याम धाम दै पठयो नृप अधिकार सारजे पायो ॥ सूर न प्रीति बिसारि सांवरे भली चतुरता जगत सुनायो ॥ ६ ॥ राग गौरठ ॥ कोउ मधुबनतें है आयो । सखी सुमतु सब सुनों सुश्रितु दे हित करि श्याम पठायो ॥ मन मोहन बिछुरे या ब्रज में इते द्योस दुख पायो । सोइ यहि कमल नयन करुणा करि हिरदे मांझ बतायो । जाको जोगी जतन करत मिलि ज्ञान सुगुनि दिखायो ॥ सोइ इन परम उदार मधुप ब्रज बीथिनि माँझ बतायो ॥ अति कृपाल ब्याकुल अबलनि करिको व्यापकु अगह गहायो । भजहु सूर सुनि होतु परम सुख नेति जु निगमनि गायो । ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ ॥ मधुकर भली सुमति मति खाई । हांसी होन लगी या ब्रज में जो गहि राखहु गोई । आतम राम सखावत डोलत घट घट व्यापक जोई । चापें काख फिरत निरगुण को ह्यां गाहक नहि कोई । प्रेम कथा सोई पैजाने जापै बीती होई । तू नो स्रुती कहा जाने बूझि देखि बे बोई । बड़ो दूत तू बड़े ठौर को कहिये बुद्धि बड़ाई । सूरज दास पूरीष सुघट पद कहत फिरत है सोई ॥ ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ ॥ जोग जुगति जद्यपि हम लीनी लीला काको दैहो । उलटि जाहु मथुरा मधुकर तुम बूझि बेगि ब्रज ऐहो । रास समैं कालिंदी के तट तब तुव बचन न माने । यह को सुने कुपथ की बतियां प्रभू पराए जाने । नगर बसत गुण ज्ञान बढत पें मूलहु बिसर्यो ज्ञान । चारि बाहु बड़ भए मधु पुरी खरे सुहाए कान । आपुन फेर कियो देखियतु हैं तुम भूलो हम भूलति । सूर श्याम बल्लभ बेनी बिनु दरस सलिल उन मूलति ॥ ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ ॥ जैसो कियो तिहारे प्रभु अलि तैसो भयो ततकाल ॥ ग्रंथित सूत धरत तिहि ग्रीवा जहां धरते बनमाल । टेरि देत श्री दामा द्रुम चढि सरस बचन गोपाल ॥ तहां अबलबत अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस कुल काल । कोमल स्निग्ध कुटिल अलकावलि मृग मद भूषित भाल । तहां अब लगत धूम वेंदी को पूजा भस्म कराल । जहां मणि कंकर सुधा सरस जल शत दल मधुकर जाल । ऐसो सरुत्यागे सुनि सूरज फंदत न्याय मराल ॥ ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ ॥ श्याम राम को संगी यह अलि तासो कहा संभासा । मोहन नागर नायक को मनि तजे अबर कहा आसा ॥ कर्म भूत ठान्यो उर सुनियत रसना संधि प्रकासा । भई बिदा ब्रज प्रेम नेम को हाथ ठोंकि गहि नासा । इतनी भए नयन नहि समुझत प्रथम परे यहि पासा । टेकन छाँडत अजहु सूर यह बीच बसीठदु भासा ॥ ११ ॥ ॥ राग सारंग ॥ हरि बिछुरन की शूल न जाय । बलि बलि जाउं मुखार बिन्द पर मूरति मनमें रही समाय ॥ एक दिवस वृन्दाबन महियां गहि अंचरा मेरी लाज छुड़ाय । ते दिन ऊधो नाहिन बिसरत अम्बर हरे जमुन तट आय ॥ कबहुंक हंसि जुवेत आलिंगन कबहुंक दुरे उठत है गाय । सूरदास स्वामी के गुणगण सुमिरि २ गोपी पछतांय ॥ १२ ॥ राग बसंत ॥ कोयल बोली वन बन फूले मधुप गुंजारन लागे । मनो भयो ओर रोरबंदिनि तें मदन महीपति जागे ॥ तिनहूतें नव पल्लव प्रकटे जे द्रुमहुते दवानल दागे । मनो रति पति मन रीझ जाचकनि बरन बरन दए वागे ॥ नयो मास मधु

नई वरनिसा नव नवरस विधि पागे । नयो नेह नइ नागरि कुब्जा कत आवै सूरज अनुरागे ॥ १३ ॥ राग सारंग ॥ जिहिं तन गोकुल नाथ भज्यौ । ऊधो हरि बिछुरत तिहि नागरि ते तनु तबहि तज्यौ ॥ जब स्यन्दन चढ़ि गवन करत फिरि हंसि चितयो गोपाल। तबतें परम कृतघ्न प्राण उठि संगहिचले उताल ॥ अब यह सृष्टि और ब्रजकी गतिजानत कोउ एक जान । नतेा संदेस आपुने पियके क्यों बनकरती कान ॥ अजहूं सान गई या मनतें उपजत नहि परतीति । सूरदास जन बरनेकहालों कठिन प्रेम की रीति ॥ ॥ १४ ॥ राग सारंग ॥ गोपालहि बालकहीतें टेव । जानति नहीं कोंनपें सीखे चोरी कै छल छेव ॥ माखन दूध दह्यौ जब खाते सहि रहती करि कानि । अब क्यों सही परति सुनि सजनी मन मानिक की हानि ॥ कहियेा मधुप संदेस श्यामसों राज नीति समुझाय । अबहूं तजत नाहि वह लेाभी जुगति नहीं जदुराय ॥ बुधि बिवेक सरबस या ब्रजको लेजु रहे मुसिकाय। सूरदास प्रभु के गुण औगुण कहिये कासों जाय ॥ १५ ॥ ॥ राग सारंग ॥ बिसरति क्यों गिरिधर की बातें । अबधि आसतें रह्यौ मधुप मन तजि न गयेा घट तातें ॥ पति के बिरह छीन भई देही दे दुख परे संघातें । तन रिपुकाम चित्त रिपु लीला ज्ञान रुचत नहि यातें ॥ श्रवण सुन्यों चाहत हरिके गुण जोई कथा रस रातें । लेाचन रूप ध्यान रहे निशि दिन कहेा घटें किहि कातें ॥ ज्यौं नृप प्राण तजे सुत के हित त्यों न गए ए जातें । सूर सुमति तेाही जिय उपजे जो हरि आवै मथुरा तें ॥ ४६ ॥ राग सारंग ॥ क्यों मन मानत है इनि बातनि । पाए जानि सकल सुनि मधुकर जे गुण सांवरे गातनि ॥ प्रथमहि प्रेम जदपि मधुकर को तजत सकुच जल जातनि । वनु रस बहुरि निकट नहि आवत देखि पुराने पातनि ॥ सुनियत कथा काक कोकिल की कपट रंग की रातनि । सब दिन सेवा श्रम करायके अन्त मिलत पितु मातनि ॥ बेनु बजाय सुधा कर हरि मुख बन वेाली अधरातनि । अति रति लुब्ध तजी नहि जाती कहि न सकति कछु प्रातनि ॥ बाली मारी बंधन कीनेा लुब्धक जैसी घातनि । कोपतिआय सुतेा कहि सूरज वा कैतवके भ्रातनि ॥ १७ ॥ राग सारंग ॥ जोपें हम हि कृष्ण जू भावहि । तेा सुनि मधुप जशेादा नन्दन अबहीं गोकुल आवहिं ॥ जिनि नयननि मोहन मुख हेरयौ निसि दिन रूप बिचारयौ । ते नयना वरहत सूने घर प्रीति न हृदय बिदारयौ ॥ जिहि तन आसन सयन संग सुख हरि समीप रति मानी । तिहि तन बिरह न छुटत सुमिरि गुण रंचक बिधा न जानी । सम सैारभ शशि बिबिध अनिल गुण वैसिये प्रकृति निबाहत ॥ बिषम बिरहिनी जामिछांडि मनु तउ तननाहिन दाहत । अति बल उग्र अनंग महा भट जाहि सबे जगु जानत ॥ सोइ बल हीन दीन सर कर गहि कोपि धनुष नहि तानत ॥ बन बिलास ब्रज बास रास रस देखि देखि दुख पावत ॥ सूरदास बहुरो बियोग बिधि कुकबि निजन्हे गावत ॥ १८ ॥ राग सारंग ॥ सब खोटे मधुबनके लेाग ॥ जिनके संग श्याम सुंदर सम सीखेहें उपयेाग ॥ आएहें ब्रजके हित कारन लैबातनि को जोग ॥ आसन ध्यान नैन मूंदे सखि कैसे जातु वियोग ॥ इनहू धर्मज्ञानि उपदेस्यो दासी से संजोग । सूरसु वैद कहालै कीजै कहैन जानै रोग ॥ १९ ॥ राग सारंग ॥

जद्यपि मैं बहुत जतन करे । तदपि मधुप हरि प्रिया जानिके काहू न प्राण हरे ॥ सौरभ जुत सुमनस सेवति लैसंतत सेज धरें । सन मुख हतत सरद शशि सजनी तऊन अंग जरें ॥ चातक मोर कोकिला मधुकर सुनि सुर श्रवण भरे । सारद ह्वै निरखति रति पति को नेकु न पलक परे ॥ निशि दिन रटति नंद नंदन या उरतें छिन न टरे । अति आतुर चतुरंग चमू चढ़ि अनंग न सर संचरे ॥ जानति नहीं कोन डर इतने यातें सबे डरे । सूरजदास सकुचि श्रीपति की सुभटनि बल विसरे ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ गोपालहि प्राउं तो जाउं वहि देस । सिंगी मुद्रा कर खप्पर लै करि जोगिनि को भेस ॥ कंथा पहिरों भस्म लगाउं जटा बनाउं केश । हरि मिलबे गोरखहि जगाउं जैसें स्वांग महेश ॥ तन मन जारों खेह उड़ाउं बिरहिनि गुरु उपदेस । सूरश्याम बिनु सब जग सूनो जैसें मणि बिनु शेस ॥ २१ ॥ राग सारंग ॥ अब हरि कैसें हैं रहतु । सुनि यह दुसह दसा गोकुलकी ऊधो काहरि कहतु ॥ देखि सखी करुणा अति इनकी उलटे चरण गहतु । तुमको चाहि अधिक करि माई आंखिनतें अंसुआ बहतु ॥ नीयतिही यह बात जु पर दुख नाहिन सहतु । उपजि परी परतीति सूर इन दहसुलहतु ॥ २२ ॥ राग सारंग ॥ भली करी सोच कहा लागे करन । ऊधो कमल नयन सों कहियो गोवरधन के धरन ॥ अब ये विरह अनल लागे बारन तब न दई जरन । संकट विपति परेतें राखी प्रीति कै कै लई शरन ॥ तुम्हरी दसा व्रजनायक सुमिरि सुमिर लागी झरन । सूरश्याम प्राण अब तजि हों बेगि दिखाओ चरन ॥ २३ ॥ राग सारंग ॥ या जुवती के गोरस को हरि एक दिन बहुत अरे । ऊधो वे बातें क्यों विसरति छाड़े न हठहि परे ॥ तादिन को देखो ए अंचर खेंचत ओंप झरे । आप सिखाय ग्वाल सबहिन को न्यारे रहे खरे ॥ सो मूरतिनयनन में खगि रहि अंग अंग कैल भरे । सूरश्याम निरखें सचु पैये सन्देसे रहो धरे ॥ २४॥ राग सारंग ॥ जब वह सुरति होति है बात । सुनहु मधुप या वेदन की गति मन जाने के गात ॥ रहत नहीं अन्तर गति राखे कहत नहीं कहि जात । भई रीतिज्यौं उरग छछूंदरि छाड़े बने न खात ॥ एही हाल सदा या ब्रज में बीतत है दिन रात । सूरदास प्रभु को मिलि बिछुरन सुमिरि सुमिरि पछितात ॥ २५ ॥ राग सारंग ॥ नयना नाहि न रहत । जद्यपि मधुप श्याम सुंदर को नेरेही कहत ॥ हृदय मांहि जो हरि बे बतावत सोयो नर लहत । भरी जु कठिन प्रकृति दरशन की देखोही चहत ॥ कैसेंहीके बदन विलोके बिनु रह्यौ न परत । अन्तर ते सन्देस अधिक कुल उलटे बहत ॥ यातें ऊधो जोग कांकरिऊ सो सो न जहत । सूरश्याम इनकी बातनि सुनि देह दव दहत ॥२६॥ रागधनाश्री ॥ जोग ज्ञान की बातें ऊधो तुमही पै बनि आई । श्री ता कंठ कुसुम की माला बक्ष खड़ ठकुराई । बे ज्ञानी गुरु सब जग जाने जब दासी रति पाई । कनक रतन रथ ऊपर चढि के सीखि चले ब्रज धाई । तुमतो परम साधु उपदेसक कथनी कथत बनाई । हेम हरिन नयनी की संगति ज्ञान पंथ मह गाई । या को मरम न जानत कबुबे कहि सुन्दरि समुझाई । सूर दास प्रभु सों तुम कहियो बैठे सभा जुड़ाई । २७ ॥ राग धनाश्री ॥ सद गुरु चरण भजन बिनु विद्या कहो कैसे को पावै । उप-

देसक हरि दूरि हुतें क्यों हमरे मन आवैं । जो हित कियो तो अधिक करहि किनि आपुन आइ सिखावैं । जोग बोझतें चलि न सकै तो हमही क्यों न बुलावैं । जोग ज्ञान मुनि नगर तजें बरु सघन गहन बन धावैं । आसन मौन नेमु मन संजम बिपन मध्य बनि आवैं । आपुन कहे करे कछु औरें हम सबहिन डहकावैं । सूर दास ऊधो सों श्यामा अति संकेत जनावैं ॥ २८ ॥ राग धनाश्री ॥ माधो सों न बनै मुख मोरे । जिहि नयननि ससि श्याम बिलोक्यो तेक्यो जात तरनि सों जोरे । मुनि मन रमन ए जोग कमठधन मंदर भार सहत क्यों ओरें । तरुणी हृदै कुमुदु के बंधन कुंजरक्यों नरहत बिनु तोरें ॥ नीलांबर घन श्याम नीलमनि पैयत क्योंहि धूम के भोरे । सूर भृङ्ग कमलनि के बिरही चंपक मन लागत नहि थोरे ॥ २९ ॥ राग जैतश्री ॥ अब हरि औरें भए माई इतने हिं दूरि । मधुकर हाथ संदेसो पठयो चतुर चातुरी चूरि । रूप रासि सब गुणको परमिति श्याम सजीवन मूरि । तासों कहत मनहि मन देखो सब ठाँहे भरि पूरि ॥ क्यों ऐसे यह देह सूर सुनि रह बिहरत झक झूरि । तापर छपद करन आए हो कोयल हूतें धूरि ॥ ३० ॥ राग जैतश्री ॥ और सकल अंगनितें ऊधो अंखियां खरी दुखारी ॥ अतिहि पिराति सिराति नकबहू बहुत जतन करि हारी । एक टक रहति निमेषन मिलवति बिथा बिकल भइ भारी । भरि गइ बिरह बायु बिनु दरसन चितवति रहति उघारी ॥ रे रे अलि गुरु ज्ञान सिखा कहि क्यों सहि सकति तुम्हारी । सूर सुअंजन आनि रूप रस आरति हरन हमारी ॥ ३१ ॥ राग आसावरी ॥ तुम्हरे देस कहा मसि खूटी । भूख प्यास सब नींद गई अलि हरि बिनु बिरह लयो तन लूटी । दादुर मोर पपीहा बोलत अवधि भई जब झूठी । पाछे आइ कहा तुम करिहो जब तन जैहै छूटी । गोपि संदेसो हरि पै पठवति प्रथम प्रीति क्यों टूटी । सूर दास प्रभु यों जानति हो बैरि करहिंगे कूटी ॥ ३२ ॥ राग आसावरी ॥ सखी री जानियत यहि अनुमान । देखियत नहीं जतन जीवे को इतै बिरह इत ज्ञान । इतै चंद चंदन समीर सखि लागत अगनि निदान । इतनिगुण अवलंबन हरि को कठिन बिरोधनि प्रान । इत भूषन भय करत अंग के सब निसि जागि बिहान ॥ इते समाधि सून्य गुण ऊधो जोग ध्यान के जान । दुसह दुराज रूपति बड़ दोऊ दुख को उभय समान । यहि औसर को राखे सूरज कमल नयन बिनु आन । ३३ ॥ राग धनाश्री ॥ आपु देखि परदेखि रे मधुकर तो औरें सिख देइ ॥ बीतेगीत बजाने गोरे खरो कठिन है नेह । मन जु तिहारो हरि चरणनि तर तनु लै गोकुल आयो । कमल नयन को संग बिछुरि के कहि कोने सचु पायो । गोकुल रहो जाहु जिनि मथुरा झूठो माया मोहु । गोपी कहति सूर ऊधो सों हमही से किनि होहु ॥ ३४ ॥ राग देवगंधार ॥ खरिकाई को नेह कहो अलि कैसें छूटत । कहा करो ब्रज नाथ चरित बहु मन अन्तर गति लूटत । बहचित बनि वह चालि मनोहर वह मुसिकानि मंद धुनि गावनि । नटवर भेष धरे नद नन्दन वह भावनि बनतें ब्रज आवनि । चरण कमल की सपति करति हों यह संदेस मोहि बिष सम लागतु । सूर

दास प्रभु मिष न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत ॥ ३५ ॥ राग बिलावल ॥ सो को जो नाहि न सुख पायो बन गोपाल के राज । ऊधो आजु संपदा उनकी है सबहिनिके काज । धनुष तोरि गज निहति मल्ल मथि बिडरु कियो जदुबंस । मुनि अमरनि आनंद बढायो करष्यो कर गहि कंस । कुबिजा रूप दियो द्विजको सुतमाली को मन काम । उग्रसेन बसुदेव निगडतें आने अपने धाम । दीन दयाल दीनप्रभु दाता दिन दिन हम सब कों यह आस । सूर श्याम सौ कहो हरहि हरि इन नयननि की प्यास ॥ ३६ ॥ राग मारू ॥ बे हरि बातें क्यों बिसरी । आवत राधा पंथ चरण रज हितसों अंगधरी । भाँति भाँति किसलय कुसुमा वलि सज्या सुहथ करी । निमिष बियोग होत तब तलफत ज्यों जल बिनु मछरी । सुनत अमित श्यामा रस रंजित सो बति रंग भरी । आपुन कुसुम व्यजन करलीने करत मरुत लहरी । गोचारन मिस जात सघन बन मुरली अधर धरी । नाद प्रनालि प्रबेस घोष मैं बिझवत चिय सिगरी । प्रकृत पुरुष तामहि ताको संग सूर प्रकट जसरी । ऊधो सुनत सुनत मन बिथकित सुफलित कर्म दरी ॥ ३७ ॥ राग मारू ॥ सब सुख लै कहि श्याम सिधारे । सुफलक सुत कछु भली न कीनी बैठेही उपढारे । चलत पीत पट करषि न राखे यह जिय सोच हमारे । भूष नींद छुटि गइ निसि बासर सुनहु न ऊधो प्यारे । महाप्रलयतें कत ब्रज राख्यो कर धरि शैल उबारे ॥ सूर दास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु क्यों जिहे ए तारे ॥ ३८ ॥ राग कान्हरो ॥ कहा न कीजै अपने काजे । दिन दै चारि यहै करि देखो जो हरि मिलहिं जोग के साजे । माथें जटा पहरि उर कंथा लावहु भस्म अंग मुख माजे । सिंगी दंड माल मृग छाला लोचन मूंदि रहो बिनु आंजे । जोग बिरह के बीच परम दुख मथियतु है यहि दुसह दुराजे । सनमुख ह्वै सब सहो सयानी नाहि न आजु उबरियतु भाजे । ऊधो कही सो सांची मानों बरषा बिदित पंचमी गाजें । यातें सूर कहानी की जो औसरु बने भेरि के बाजे ॥ ३९ ॥ राग कान्हरो ॥ हरि ठाकुर लोगनि सों मधुकर काहे की है प्रीति । जो कीजे तोई जल जल धर रबिकी सी है रीति । देखहु मीन कमल चातक ज्यों ऐसेही गए बीति । तलफत जरत पुकार करत है कछू नाहि नेनीति । मनहठ परयो कबंध जोंध ज्यों हारे हु माने जीति । रुकत न प्रेम समुद्र सूर बर बारूकी ज्यों भीति ॥ ४० ॥ राग कान्हरो ॥ भूलति हो कत मीठी बातनि । ए अलि है उनही को संगी चंचल चित्त सांवरे गातनि । बे मुरली धुनि कै जग मोहत इनकी गुंज सुमन मन पातनि । बे उठि आन आन मन रंजत ए उडि आन तरंग रस रातनि । बे नवतन मानिनि गृह बासी ए निसि द्योस रहत जल जातनि । ए षट पद बे द्विपद चतुर भुज इनमें कछू भेद न हिं भांतनि । स्वारथ निपुन सर्ब रस भोगी जिनि पतिआउ बिरह दुख दातनि । बे माधो ए मधुप सूर सुनि इन दोउन में कवन घट घाटनि ॥ ४१ ॥ राग गौरी ॥ हरि मुख निरखि नीमेष बिसारे ॥ तादिनतें मनों भये दिगंबर इन नयननि के तारे ॥ तजि सिख सीख ससुर सासु न की लाज जनेऊ जारे । घूंघट घरु छांड़ो बी-

यिनि अह निशि अटत उघारे ॥ सहज समाधि रूप रुचि इक टक टरत न टकतेंटारे । ताके बीच बिघन कारन पति बंधु पिता पचि हारे ॥ सूर सुमति समुझति जिय जानति ऊधो बचन तिहारे । करें कहा एकह्यो न मानत लोचन हठी हमारे ॥ ४२ ॥ राग गौरी ॥ उपमा एक न नैन गही । कबिजन कहत कहत नित आये सुधि करि करिकाहू न कही ॥ कहे चकोर मुख बिधु बिनु जीवत भंवर न तहं उड़िजात । हरि मुख कमल कोस बिछुरे तें ठाले क्यों ठहरात ॥ खंजन मन रंजन जन जो पै कबहु नहि न सतरात । पक्ष पसारिन उड़त मन्द ह्वै समर समीप बिकात ॥ आये बधन व्याध ह्वै ऊधो जो मृग क्यों न पलाय । देखत भाजि बसे घन बन में जहां कोउ संग नधाय ॥ ब्रज लोचन बिनु लोचन कैसे प्रति छिनु अति दुख बाढ़त । सूर दास मीनता कछु एक जल भर संग न छांड़त ॥ ४३ ॥ राग गौरी ॥ प्रेम न रुकत हमारे बूते । किहि गयन्द बांध्यौ कहि ऊधो पद्मनाल कि धौं काचे सूते ॥ मनमथ सिंह जगायो सोवत सुनि संदेस श्याम के तूते । बिरह समुद्र सुकाय कहा ते रंचक जोग अगनि के छूते ॥ परमारथ गुरु ज्ञान कहत हो मुकति लै जाउ हमारे हूते । चाहति मिल्यो सूर के प्रभु कों क्यों पति आय तुहारे हूते ॥ ४४ ॥ राग सोरठ ॥ हरि हम सों करि हौ सजनी मीन जल की प्रीति कितिक दूरि द्याख ऊधो अवधि गई बितीति ॥ तलफि कें तन प्राण दीने प्रेम की परतीति । नीर निकट न पीर जानी गइ बिथा बपुजीति ॥ चलत हो प्रभु कही इह हों आइहों रिपुनीति । सूर अब ब्रज नाथ सीखे सबै उलटी रीति ॥ ४५ ॥ रागसारंग ॥ तुम सों उन सों कहा सगाई । हम अहीरि अबला ब्रज बासी वे जदु मनि जदुराई ॥ कहा भयो जु भले जदु नंदन अब यह बुद्धिबताई । सकुचन आवत घोष बसत कीतजि ब्रज गए पराई ॥ ऐसे भए उहां जादो पति गाइ गोप बिसराई । सूर दास यह ब्रज को नातो भूलि गयो बल भाई ॥ ४६ ॥ राग सारंग ॥ मैं जानी ऊधो हरि की चतुराई । बार बार तुम कहत अध्यातम पावत कौन बड़ाई ॥ तुम जो कहत हौ अगह अगोचर हरि रस तज्यो न जाई । बाहिर भीतर श्याम बरन ते सुनियत दूरि भलाई ॥ के तुम कहत आप अपनी तें के तुम कहत कहाई । सूर दास प्रभु बिरह जरति हों बिनु पावक दीं लाई ॥ ४७ ॥ राग सारंग ॥ गोपालहिं कैसे के हम देति । ऊधो की इनि मीठी बात नि निर्गुण कैसें लेति ॥ अर्थ धर्म कामना सुनावतु सब सुख मुकति समेति । काकी भूख गई मन साङ्ग देखहु सोचित चेति ॥ जे व्यापकहि बिचारत बरनत निगम कहत है नेति । सूरश्याम तजि कौन सकतु है अलि काके गनि येति ॥४८॥ राग सारंग ॥ हरि बिनु यह बिधहै ब्रज रहियतु । परपीरक सुनियतहै ऊधो तातें तुमसों कहियतु ॥ चन्दन चन्द पवन पावक सम मिलि मिलि है तन दहियतु । जागत जाम जात जुगजुग सम जतननि ही निबहइयतु ॥ बिरह सिंधु जदु नाथ श्याम तनु कैसेंहु पार न पइयतु । फिरि फिरि अवधि आस अवलम्बित बूड़त तृन ज्यों गहियतु ॥ नेसकु आस दरश की ऊधो तालगि है सब सहियतु । मन क्रम बचन सपथ हैं सूरज और कछू नहि चहियतु॥ ॥ ४९ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा कोउ जाने परपीर । नन्द नन्दन के बिछुरे सखि री ब

हतें सही शरीर ॥ कहि कहि कथा मधुप समुझावत मन राखत धरि धीर । नैन मीन कैसें सचु पावत बिन हरि दरशन नीर ॥ जोग समाधि कहा हम जाने व्रज वासिनी अहीर । केसेही धों मिलहिं सूर प्रभु बहुरि तरंगिनि तीर ॥ ५० ॥ राग सारंग ॥ हम तो इतनेही सचुपायो । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन बहुरि सुदरस दिखायो ॥ रजक धनुष गज कंस मारिकें करयो सबनि को भायो । महाराज द्वै मातु पितुहि मिलि तऊ न व्रज बिसरायो ॥ कहा भयो जो लोगु कहत हैं कान्ह मधुपुरी छायो । सुनि यह दशा बिरहि लोगनि की उड़िआतुर होय धायो ॥ गोपी गोप नन्द जशोदा मिलि प्रेमसमुद्र बढायो । एते मान कृपाल निरखि मुख नयन नीर भरि आयो ॥ यद्यपि हम सकुचति प्रभुता सुनि हरिहो अधिक जनायो । वैसेहि सूर बहुरि नद नंदन घर घर माखन खायो ॥ ५१ ॥ राग जैतश्री ॥ हरि सों कहियो हो जैसें गोकुल आवैं । दिन दस रहौ सोभली कीनी अब जिनि गहरु लगावैं ॥ नाहिन कछू सुहात तुमहि बिनु कानन भवन न भावै । देखे जात आपनी आखिनि हम कहि कहा जनावै ॥ बाल बिलख मुख गउन चरत तृण बछरा पीवन पै नहि धावै । सूर श्याम बिनु रटति रैनि दिन मिलेहि भले सचु पावै ॥ ५२ ॥ राग सारंग ॥ जदुपति को संदेस सखीरी कैसें के कहों । बिना कहे मनही मन भीतर कब लगि सूल सहों ॥ जो कछु बात अपने चित अंतर रचि पचि सोचि रहों । मुख आनत ऊधो तो चितवत बहुत विचारु नहों ॥ सो कछु सिख तुम्हदेहु सयानी जातें धीर गहों । सूर दास प्रभु कौ सेवक सों बिनती करि निवहों ॥ ५३ ॥ राग सोरठ ॥ कबहुधों ऐसी ये बात कहेा । तजहु सोच मिलिहै नंद नंदन हित करि दुखनि दहेा ॥ तुम व्रज समाधान के कारन पठए कहन संदेसु । अधिक आय आरति उपजाई मेटहु बिरह कलेसु ॥ इक तुम निकट रहत हौ उनके जानत सकल सुभाय । सोई प्रकट देखि वह दरशन छांडहु अगम उपाय ॥ हम कह करे कमल लोचन के जब कोयो मृदु हास । सूरदास प्रभु क्यों बिसरति है नख सिख अंग प्रकास ॥ ५४ ॥ राग सोरठ ॥ हरि व्रज कबहि कह्यो है आवन । सांचे मधुप सुनाव मधुर मोहि विरह विथा बिसरावन ॥ हौं यह बात कहा जानेा सखि जात मधुपुरी छावन । अपनी चूक कहां लों मानेा अब लागी दुख पावन ॥ सब निशि सूर सेज सम पावक शशि सीरोतन तावन । कब वे अंचल उर कर गहिहैं दुःसह दाहन सावन ॥ ५५ ॥ राग सोरठ ॥ सखीरी मथुरा मेंढे हंस । इक अक्रूर और ए ऊधो जानत नीके ग्रंस ॥ ए दोउ छीर नीर पहिचानत इनहि बधायो कंस । इनके कुल ऐसोय चलि आई सदा उजागर बंस ॥ अजहू कृपा करो मधुबन पर जानि आपनेा अंस । सूर सु जोग सिखावत अबलनि सुनत होय मन ध्वंस ॥ ५६ ॥ राग धनाश्री ॥ बहुत दिन गए ऊधो चरण कमल बिमुखही । दरश हीन दुखित दीन छिनु छिनु बिपदा सही ॥ रजनी अति प्रेम पीर बन घन नाहि धरै धीर । बासर मगु जोवत उर मलिता बहै नयन नीर ॥ जब लगि हुतो अवधि आस सोइ गनि घट रहे स्वास । अति बियोग बिरही तनु तजिहै कहें सूरदास ॥ ५७ ॥ राग सोरठ ॥ एते मान कहा हरि

कुब्जा पाए हैं परि पोत। इतनी दूरि भए हरि औरें बिसरो गोकुल गोतु। कैसे सहें श्याम घन सुन्दर बिरहिनि बिरहिनि सोतु॥ तुमहीकहो बिचारि हृदय मह जैसोहैं हमकोतु ॥ आए जोग सिखावन ऊधो सुरभि कंध ब्रज जोतु ॥ सूरदास प्रभु तबहि जीवहि गी देखेंमुख उद्योतु ॥ ५८ ॥ राग सारंग ॥ नाहिन इहां नेह नयो ॥ मधु माधो हे तुहि ब्रज बिधितें पहिलें हीं भयो ॥ बीजमन माली मदन उर आलबाल दयो ॥ प्रेम पय सींच्यो सहज हरि रे किं ति बलदयो ॥ एते श्रम है श्याम सुन्दर बिरह बिमल दह्यो ॥ मुरलि मधु छबि पच साखा दृग दिनेश चह्यो ॥ कमल तजि तुम रमत क्योंन हि आकके अंबोद ॥ सूर जोरन श्रवण परसे बिनु गोपाल बिनोद ॥ ५९ ॥ रागसारंग ॥ बारक कान्ह करो किति फेरो ॥ दरशन दै मधु बन कोंसिधारो मेरे लेखे सुख इतना बहु तेरो ॥ भलेहि मिले बसुदेव देवकी जननि जनक निज कुटुंब घनेरो ॥ केहि अब लम्बिरहे हम ऊधो देखि दुख नन्द जशोमति केरो ॥ तुम बिनु को अनाथ प्रति पालन जाजरि नाउ कुसंग सम्हेरो । गए सिंधु को पार उतारै अब यह सूर थक्यो ब्रज बेरो ॥ ६० ॥ राग नट ॥ जाहु जाहु ऊधो जाने हो । जैसे हरि तैसे तुम सेवक कपट चतुरई साने हो ॥ निर्गुण जोग कहां तुम पायो कहो कोने ब्रज आने हो । यह उपदेस देहु लै कुब्जहि जाके हाथ बिकाने हो ॥ मनतो हरि लैगये हमारे कहो कोन मति ठाने हो । सूरदास अनघेरे ऊधो नागरि रूप भुलाने हो ॥ ६१ ॥ राग सारंग ॥ मानो भार एकही सांचे । नख सिख कमल नयन की शोभा एक मृगुलता बांचे ॥ दारु जात केसे गुण इनमें ऊपर अंतर श्याम । हम को ह्वै सु गयंद बतावत बचन कहत निह काम ॥ ए सब असित देह धरे जेते ऐसेई सखि जानि । सूर एकतें एक आगरो या मथुरा की खानि ॥ ६२ ॥ राग सोरठ ॥ कहिये तासों जो होय बिवेकी। तुमतों अलि उनही के संगी अपनी बात के टेकी ॥ ऐसी कोठाकी बैठी है तासों मूड़ चढावै । झूठी बात तुसी फट के ज्यों कन तेा हाथ न आवै ॥ अजहूं तौ अगह्वड़ न छांडत यह मूरख मति भोर । मन क्रम बचन सूर अभ्यंतर नंद नदन शिर मोर ॥ ॥ ६३ ॥ राग सोरठ ॥ बातें कहत सयाने कोसी । कपट तिहारो प्रकट देखियत ज्यों जल नाये सीसो ॥ हों तौ कहतु तिहारे हितकी काहे तें मो भरसति । हमहू भया तिहारी तेा कछु बोरी सी है मरमति ॥ छाय बसाइ गए सुफलक सुत नेंकहु लागी वारन । सूर कृपा करि आए ऊधो तापर ढेवा डारन ॥ ६४ ॥ राग सारंग ॥ आए नन्द नदन के नेव । गोकुल आनि जोग बिस्तारो भली तुम्हारी जेव ॥ जब वृंदाबन रास रच्यो हरि तबही कत तुम हेव । अब जुवतिनि को जोगु सिखावतु भस्म अधारी सेव ॥ अबलगु क्यों तुम यह मतठान्यो ज्यों जोगिनि को भोगु। सूरदास प्रभु सुनत अधिक दुख आतुर बिरह बियोगु ॥ ६५ ॥ राग सारंग ॥ तू अलि कहा परो है पैंडे । बरतत श्याम आजु भयो हमको बचत नाहिने बैंडे ॥ यह उपदेस सहति भारी ज्यों चढि के भए बरेंडे । जिहि तन जशुदा सुत कौ सुख है हृदय मांझही ऐंडे ॥ तजि लीजा मनु मारग अपनो काहे के चलत उपेंडे । इहि आदर पर अजहू बैठो डरत न

सूर पलेंडे ॥ ६६ ॥ राग सारंग ॥ माधो नेक दिखाई देहु । नातनि के पलटे या तन सों जो भावै सो लेहु ॥ भूली फिरति ठगीसी डोलति तजे ग्राम अरु गेहु । जबतें इन अपराधी नयननि हटकत कियो सनेहु ॥ कहियो मधुप जाय पालागों बिरह कियो तन खेहु । सूर दास प्रभु प्राण पथिक को तुमहि निहोरो लेहु॥ ६७ ॥ राग सारंग ॥ हमतो तबहितें जोगु लियो । जादिन तें मधुकर मनमोहन मधु वन गवन कियो ॥ रहित सनेह सरोरुह सब दिन श्री खंड भस्म चढाए । पहर मेखला चीर चिरातन फिरि फिरि फेरि शिबाए ॥ बांधे बेषु कंठ शृंगी पिय सुमिरि सुमिरि गुण गावत । कर बरबेत डण्ड डरपावत सुनत स्वान दुख धावत ॥ भोग भुगति भूले भावै नहि फिरै बिरह बैरागु । गोरख शब्द पुकारत आरत रस रसना अनुरागु ॥ श्रुति अब तंस मैन मुद्रावलि अवधि अधार अधारी । दरशन भिक्षा माँगत डोलत लोचन पच पसारी ॥ रमत न चित्त उदास फिरत अति बन बीथनि दिन राति । आवत कबहुं कुटुंब दरश हित धरि कंटक सोऊन सुहाति ॥ परम गुरु रति नाथ हाथ शिर दयो मंत्र उपदेस । चतुर चेटकी मथुरा नाथ सों कहियो अब आदेस ॥ को देख्यो भोगी या व्रज में जोग देन हे आए । जानी सिद्धि तिहारे सिधको जिन तुम यहां पठाए ॥ सूरदास प्रभु तंतु लखायो है हमरे सोइ ध्यान । तुम अलि और हि ठौर चलावहु अपनो फोकट ज्ञान ॥ ६८ ॥ राग सारंग ॥ मनो दोउ एकहि मते भए । ऊधो अरु अक्रूर बधिक महा व्रज आखेट ठए ॥ बचन पासि बांधे माधो मृग उन रथ घालिलए । इनही हती मृगी गोपी जन सायक ज्ञान हए ॥ बिरह अगिनि को दवा देखियत दह दिशि लाय दए । अब धों कहा कियो चाहत है सोचत नाहि नए ॥ परमारथो ज्ञान उपदेसत बिरहिनि प्रेम रए । कैसें जियहिं श्याम बिनु सूरज चुंबक मेघ गए ॥ ६९ ॥ राग सारंग ॥ माधो छांडि दई पहिचानि । तबतें बिरह कुटिल या गोकुलकीनी है निजखानि । तनु गिरिजानि आनि अवनी उर यहि डर भीत रहै । गवन कान्ह खिन खनत काम शशि किरनि उदोतु गहै ॥ रज अंजन जल नयन द्वार होइ रह्यो हियो भरि पूरि । निकसतु नही उपाय रह्यो ज्यों गये श्याम संग दूरि ॥ तुमसों बात और अलि भाषो उलटि ध्यान बपु जीते । हे नृप सरत प्रजा इन्द्र दुख कहो सूर को नीते ॥ ७० ॥ ॥ राग सारंग ॥ तुम अलि कमल नयन के साथी । देखियत बड़े काज को ऐसें होत धूम के हाथी ॥ सुन्दर श्याम मंड मंडल छत श्रम जल श्रम कन छाजै । जोग ज्ञान ह्वै दसन भोग रद कीनी कुवरि विराजै ॥ जब सिसु हते कुमार असुर हति यातें प्रीतमु जाने । अब भय विवस जाय दासी के व्रज तजि प्रकट पराने ॥ करि करि कपट तु छबि विधा बस भगत करत अंग भट ज्यों । सूरज अवधि मंचसंजीवनि मारि जिवावत नटज्यों ॥ ७१ ॥ राग सारंग ॥ माधो मधुपुरि रति माती । एक बार बिन घोष उमंगि ऋतु बरषा आय तुलानी ॥ घन सुधि नेह बैन बुंदे अति अवधि दामिनी कोंधति । दादुर काम वियोग मोर मनु पथिक कुंज गृह चोंधति ॥ अब सुकुमार अंग अब निरखत जे गुण ग्रंथनि भाखे । अति कुलवन्त जात सब जानत गहे फेट तिन राखे ॥ जदुपति

कुंबरि नाम कहियत हैं ए जग चलत कहानी । सूरसिंगार बने कैसें अलि आंखि आंजिये कानों ॥ ७२ ॥ राग सारंग ॥ अब हरि औरेहि रंग राचे । ऊधो सरस सखा तुम कपितें तुमतें सयानप काचे ॥ बालापन तें निकट बसत है सून्यों एक पखानो । जैसे बास बसत है कोई तैसें हेतु सयानो ॥ जे उपमा पटतर लैदीजै ते सब उनको लायक । जोपै अलख रहेा है वादिस तादिस ए व्रज नायक । जोपैं यहां कहत हैं निज करि हरि सबही भरि पूरि । आवा गमन करत हेा काको कौलगु कातें दूरि ॥ जेजे बुद्धि सिखावज्ञ हमको ते सब हमहि अलेखे । सूर सुमनसा तव सुख पैहैं कमल नयन केदेखे ॥ ॥ ७३ ॥ राग सारंग ॥ माधो मानि कै हित हारि । तौ तुव मुखए जोग संदेसे दीने हैं गहि डारि ॥ घंटा नाद गीत मुरली धुनि मन कुरंग संग राखे । नहिमारत नहि मिलत अंक भरि अतुर सखा संग नाखे ॥ नयन लगति बातक ज्यों जानत रति मानत नहि गाए । करि करि जतन प्राण राखे बिनु सूर स्वाति हरि पाए ॥ ७४ ॥ राग सारंग ॥ तबतें बहुरि दरश नहि दीनो । ऊधो हरि मथुरा कुब्जाग्रह रहे नेमु व्रत लीनो ॥ चारि मास बरषा के आगम मनों रहत इक ठौर । दासी धाम प्रबिच जानिके नहि देखत ओहि पोरि ॥ व्रज वासी सब ग्वाल कहत हैं रिस गहि अनत गए । सूर सगुण है जात मधुपुरी निर्गुण नाम फए ॥ ७५ ॥ राग सारंग ॥ पठवत जोग हेात नहि लाजन । सुनियति जंत्र तांतितें जानी कपट राग रुचि बाजन ॥ जियहेा गही क्रूर की सिखवनि मोह होत नहि राजन । यह नृप नीति कहेा कोनहु जुगहने होत जसु आजन ॥ सो इत सुरति नहीं कीजति दुख देखि पाए जिहि साजन । सब सुधि परी वचन कन ढोवत टंके रहेा मुख भाजन ॥ कै दुलहिनि दासी भए दूलह फिरत ब्याह के साजन । सूर बड़ो भुव भूप कंस हत्यो वा कुबरी के काजन ॥ ७६ ॥ राग सारंग ॥ या व्रज सगुण दीप परकास्यो । सुनि ऊधो भृकुटी चिबेट पर निशि दिन प्रकट अभास्यो ॥ सबकै उर सरवनि सनेह भरि सुमन तिली को वास्यो । गुण अनेक तें गुण कपूर सम परि मल बारह मास्यो ॥ बिरह अगनि अंगनि सबके नहि बुझत परे चोमास्यो ताके तीनपुके या हरि से तुमसे पंच सरासो । आन भजन तृण सम परि तब करतो जोति उपासो ॥ साधन भोग निरंजन तेरे अन्धकार तम नास्यो । वादिन भयो तिहारो आवन बोलत हो उपहास्यो ॥ रहि न सके तुम सीक रूप ह्वै निर्गुण काज उकास्यो । बाढ़ी ज्योति केस दिसलों फूस्यो ज्ञान मवास्यो ॥ दुरवासना सुलभ सब जारे जे हुतरहे अकास्यो । तुमतो निपट निकट के बासी सुनियतहु ते खवास्यो ॥ गाकुल कछु रस रीति न जानत देखत नहीं तमास्यो । सूर करम की खोर परोसहु फिरि फिरि चरत जवास्यो ॥ ७७ ॥ राग सारंग ॥ कहिवे औरौ जिनि सक राखो । लांबी मेंड दई है तुमको बकत रहो दिन आंखो ॥ जाकी बात कहत तू हमको सुभौ रहो के कांधी । तेरो कह्यो पवन को भुस भयो उड्यो जात ज्यों आंधी ॥ कहत अब करतु सुनतु को यहांडो तू जो बनको रोयो । सूर इते हू मांझ न बूझत निपट नयन को खोयो ॥ ७८ ॥ राग सारंग ॥ प्रीति ओहि देस न कोऊ जानत । तो तू बात कहत अलि ऐसी बिनहि दृग पहिचानत ॥ जिन गो-

पाल गृह गृह ब्रज भीतर चोरी ले दधि खाते । ते अब दुखित देखि ब्रज बासिनि दूरि भए कुब्जा ते ॥ सूर कुटिल जितनें सुनियत हैं लोग पुरातन गावत । नख सिखलों विष रूप बसत हैं मधुवन नाम कहावत ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ हम पर हेतु करें रहियेा । बहु दिन ऊधेा बिसरतु नाहीं फिरि फिरि काच हियेा ॥ देखे जात हेा अपनी अंखियां या तनको दहियेा । या ब्रजको व्यवहार ऐसेा भयेा सब प्रभुसों कहियेा ॥ श्याम सरीर कमल दल लेाचन कबहि दरश लहियेा । सब सुख लाड़ लड़ाय सूरप्रभु बेहि धरा रहियेा ॥ ॥ ८० ॥ राग सारंग ॥ हरि बिनु कैसे राखेां प्रान । पहिलेही रंग रंगी श्याम रंग अब न चढ़त रंग आन ॥ कागद झूठेा लेखन झूठी मसि झूठी परबान । जेजे बचन कहे हरि तुमसों झूठ हमारे खान ॥ श्याम सुंदर की बतियां झूठी झूठे तुम अग बान । सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किनि बिथा बिरह पहिचान ॥ ८१ ॥ राग सारंग ॥ बिलगु हम मानहि ऊधेा काको । तरसत हैं बसुदेव देवकी नाहिन मात पिता को ॥ काके मातु पूत को काको दूध पियेा हरि जाको । नन्द जशेादा लाड लडाए नाहिन भयेा हरि ताको ॥ कहियेा जाय बनाय बीनती जेा हितु है अबलाको । सूरदास प्रभु प्रीति है कासों कुटिल मिल्यौ कुब्जा को ॥ ८२ ॥ राग सारंग ॥ हमहि तेा इतनेही सेां काजु । कैसे हू अलि कमल नयन कौ ब्रज सै आवहु आजु ॥ और अनेक उपाय तुम्हारे बिकल करेां सुख राजु । कैसे हैं निबहत अबलनिपें कठिन जेाग को साजु ॥ नख सिख सुभग श्याम तनकी छबि दरशन हरत बिराजु । सूरदास मन हरत कौन बिधि मदन बिलोके बाजु ॥ ॥ ८३ ॥ राग सारंग ॥ जेा लगि हृदय ज्ञान नहि आवै । गि तौ लगि कोटि जतन करै कोऊ बिन बिबेक नहि पावै ॥ न्याय बिचारि सपनरा में देख्यौ सब जेाय । नानादारु मध्य ज्यों पावक प्रकट मथे तें हेाय ॥ तमही कहत सकल अंग व्यापक अरु सबही तें नियरे । नख सिखलों तन जरत निसादिनु निकसि करत किन सियरे ॥ सांचे बेाल सबै बेाजत हेा ज्यों मुख मेले तुरसेा । सूर सुऔषध हमहिं बताषत ज्यों कफ ज्वर पर गुरसेा ॥ ८४ राग सारंग ॥ संदेसन सुनत प्रीति गति जानी । चातक स्वाति बूंदलों सागर भरयों बतावत पानी ॥ बिन गुण मोह बंध्यौ शुक नलज्यों बंसी वन कल कीनी । अवधौं मन पठए देख न तुम यहै सुरति हम लीनी ॥ निर्गुण के ऐसे गुण सुमिरत सुनि अलि सखा सनेही । ज्यों हरि लियेा कौन ऐसेा हित सूर सुपेावत देही ॥ ८५ ॥ राग सारंग ॥ सब जल तजे प्रेम के नाते । तऊ स्वाति चातक नहि छांड़त प्रकट पुकारत तातें । सनुझत मीन नीर की बातें तऊ प्राण हठि जात । सुनत कुरंग नाद रस पूरन जदपि व्याध सरमारत ॥ निमिष चकोर नयन नहि लावत शशि जेावत जग बीते । कोटि पतंग जेाति वपु जारे भए न प्रेम घट रीते ॥ अब लगि नहि बिसरी वे बातें सुरा जु करी ब्रज राज । सुनि ऊधेा हम सूर श्याम को छांड़ि देह के काज ॥ ८६ ॥ राग सारंग ॥ मनकी मनही मांझ रही । कहिये जाय कौन सेां ऊधेा नाहिन परत सही ॥ अवधि अधार आव नहि कीतन मनही बिथा सही । चाहति भूति गहारि जहां ते तहंहिते धार बही ॥ अब यह दसा देखि निज नयननि सब मरजाद ढही । सूर

दास प्रभु के बिछुरे तें दुसह बियोग दही ॥ ८७ ॥ राग नट ॥ कहियो अति अबला दुख पावै । हिरन पटन पति प्रबिस तज्यों है बार बार समुझावै ॥ सारंग रिपु ता पति रिपु वारिपु तारिपु तनहि जु जारै । हरि वाहन वाहन पति घायल ता सुत आनि बचावै ॥ सुर रिपु गुरु वाहन ता रिपु पतिताचढि भेष दिखावै । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को बिरहिनि तपति बुझावै ॥ ८८ ॥ राग केदारो ॥ हमतो सब बातनि सचु पायो । गोद खिलाय पिवाय देहपै पुनि पालने झुलायो ॥ देखति रही फणिग की मणिज्यों गुर जप ज्योंन भुलायो । अब नहि समुझति कौनपापतें बिधना सों उलटायो । बिनु देखे पलकलनहि छिनु छिनु एही चितही चायो । अबहि कठोर भये ब्रज पति सुत रोवत मुहु न धुवायो । तब हमदूध दही के कारन घर घर बहुत खिजायो । सेा अब सूर प्रकट है लाग्यो जोग अरु ज्ञान पठायो ॥ ८९ ॥ राग मलार ॥ ब्रज पर मदन कटकई आई । ऊधो देस मधु पुरी बासी कहियो हरि सों जाई । गरजि चले चहुं दिसतें बादर ज्यों रन बंब बजाई । पारक अरु असवार कामके सुभट चले समुदाई । अति बड़ घटा सुदिप पंकति सेा दामनि ध्वज फहराई । चातक पिक सिखि द्रुम साखा चढि श्रवणनि टेर सुनाई । कटि निखंग कसि कुटिल धनुष ले मीन हु कार बोलाई । मुख अरविंद दिखाय सूर प्रभु अब किनि लेहु छिड़ाई ॥ ९० ॥ राग कान्हरो ॥ जौ मकरन्द लुब्ध तू मधुकर मुख कमल छाँड़ि कत करत भ्रमन । नहि सौरभ पद पद्म तुल्य कहु तामहतें रस जात केलि बन । सार शृंगार भुवन है है षट रटत कीर मुनि सुनिन श्रवन । कहा कांन दीनों रूखे पथ कहा बिचार कियो ब्रज अवन । प्रथमहि शापु सुजनमे को फलु भेट धरी साधना पवन । क्यों कहि गई बात जोगनि की सूर अछत राधिका रवन ॥ ९१ ॥ राग धनाश्री ॥ अंखियां हरि दरसन की प्यासी । बिनु देखें पल जुग सम बितवति क्यों जीवें ब्रज बासी । घर घर छांडे बन बन डोलत ऐसें फिरत उदासी । इहै सुहात रैनि दिन कहियत हैं निर्गुण अबिनासी । ज्यों बिनु भोर कमल ससि चसित परे प्रेम की फांसी । सूर दास प्रभु बिनु यों लागत जैसें मीन जल सासी ॥ ९२ ॥ राग आसावरी ॥ सुनि ऊतर किन दैरे मधुकर बात सखी आननकी । निकट रहत यातें बूझति हौं कथा चलत कांननकी । कैसें बेषु रहत मन मोहन कौन प्रिया प्राणनकी । को छबि निरखत वदन कमल की कासों मन माननकी । तुम अक्रूर बसुदेव देवकी सभा भली जाननकी । क्यों करि सकै बिषय जल तीरथ काहु चितै चाननकी । कहि हौ सबै प्राण नायक सों तुम्हरे गुण गाननकी । सूर सुनत फीको भयो जोगजु गोपिन मन ध्याननकी । ९३ ॥ राग आसावरी ॥ इतनी जानि परै जौ उधो मन पछतावो धरै नही । केसरि तात रंगिनी कीगति उपजति जाति वही ॥ मालाकार दुलार नन्द को गोपी बेलि जुही । क्यों सुकवत करुणा जल बिनु पुनि पैयतु बनेमही । अग्नि उपजि जब जब वृन्दा बन योग जुगति निवही । तैसेा समय भयो अब ब्रज में जौ बूझावै अवही । सुनत कथा मुख बचन सखी के उधो ग्रंथ गही । सूर श्याम तिहि छिनु तहां प्रकटे

बातें चलत कही ॥ ९४ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम ताके बस मधुप की दै बातें सुनि लीनो । मैं जानो सखि कछु है पें कछु नाहि न काहे कि करनो कीनो । कहि जुवती बनाइ लघुता की नोवड़ाइ अति अकथ कथा साधु रस भीनी । धर्म कियो सुजस अक्षय तिलकु भाल लटुफ दाखि मृगी बागति झीनी । ज्ञान के सुनत सुनि ज्ञान मन उपजत तिहि के बदले हम भई मति हीनी । रावि लेहु सूर स्वामी जो संदेस अंतर जामी नातर कृष्ण रूप काल समपीनी ॥ ९५ ॥ राग कल्यान ॥ जाहु बजाहु जाहु आगेतें ऊधो पतिगति हों तेरी । काहे को जिय रोस दिवावत देखत अवि बरति है मेरी । तू जु कहत है संत हे गोविन्द कहियत है कुबिजा उहि घेरी । दोऊ मिलेतैसेई तैसे ए अली वह कंसकि चेरी । तुम सारिखे बसीठ पठाए कहिये कहा बड्डि उहि केरी । सूर दास पहिलो सुधि बिसरी देतहुते ग्वालनु संग हेरी ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ हमरे को बन जोग अराधे । बटुआ झोरी दंड अधारी इन मूरति कौ तनु बांधे । आसन पवन बिभूति मृगछाला इतनेको को साधे । सूर दास हरि मानिक परि हरि छार गांठि को बांधे ॥ ९७ ॥ राग गौरी ॥ श्याम तुहारी ए बातें । अपनि चोपको मुहकि कहत हे भूलत हो जु अबहि उठि जातें । श्याम सरीर गहे षटपद गुण अतिही लब्ध फिरत दिन रातें । गती देखि कनेर कली ज्यों अंतर सेत कपट जिय यातें । जिह्वा कोटि बकत हु न बनई अतिहि बिचच अटपटी घातें । कहां लों परेखो करे सूर प्रभु बारक मिलहु प्रीति के नाते ॥ ९८ ॥ राग मलार ॥ श्याम कौं इहे परेखो आवै । के वह प्रीति चरण जावक कृत अब कुबिजा मन भावै । तब कत पानि धरयो गोबर्द्धन कत ब्रजपतिहि छुड़ावै । कत वह बेणु अधर मोहन धरै लै लै नाम बुलावै । तबकत लाड़ लड़ाइ लड़ैते हंसि हसि कंठ लगावें ॥ अब वह रूप अनप कृपा करि नयनति हून दिखावे । जामुख संग समोप रैनि दिन सोइ अब जोग सिखावें । जिन मुख अमृत दै रसना भरि सो कैसें विष प्यावै । कर मीडति पछितति हियो भरि क्रम क्रम मन समुझावे । सूर दास यहि भांति बियोगिनि तातें अधिक दुख पावैं ॥ ९९ ॥ राग मलार ॥ लिखि लिखि कितव पठावहु सागर । हम अबलनि पर मया भई है मए कुबरि बस नागर । ऊधो जोग कहा लै कीजै जल बिनु सूको सागर । कहि धों मधुप काच के धोखे को दैहै बैरागर ॥ कहि यह प्रकट संदेसु जितहि वै मधुबन श्याम उजागर । सूर श्याम बिनु क्यों मन राखहि तन जोबनको आगर ॥ १०० ॥ राग मलार ॥ सखी री मोमन धोखे जात । ऊधो कहत रहत हरि मधुपुरि गत आगत न थकात । इत देखो तो आगे मधुकर मत्त न्याइ सत रात । फिरि चाहों तो प्राण नाथ इत सुनत कथा मुसिकात । हरि सांचे ज्ञानी सब झूठे जे निर्गुण जस गात । सूर दास जिहि सब जग डहको ते इनको डहकात ॥ १०१ ॥ राग मलार ॥ जिय सों सुरति करत रहबी ॥ घोष बसत की पीर हमारी कछू न मन बहिबी । ऊधो एक बात हरि जूसों समौ पाइ कहि बी । परम जानु जदुनाथ जाति की गुण विचारि सहिबी । एक बार दरशन सुख दैबै विरह आधि

दहिबी । सूर दास प्रभु पाणि गहन अरु बचन लाज गहिबी ॥ १०२ ॥ राग मलार ॥ भौंरा काहे को भयो उदासी । वपु तेरो कारो बदनउ पीरो तू कब्बिसो कह आसी । सब कलिकाको रसुलैके पुनि बेझ करी निरासी ॥ रूंचो सूर श्यामको सेवक जोग जुगति सुउपासी ॥ १०३ ॥ राग गौरी ॥ ब्रज तें वै ऋतु पैंन गई । पावस अरु ग्रीषम प्रचंड सखि हरि बिनु अधिक भई । ऊरध स्वास समीर नयन घन सब जल जोग जुरे । बरषि जो प्रकट किये दुख दादुर हुते जु दूरि दुरे । बिषम बियोग दुसह दिनकरसम दिन उठि उदय करे । हरि बिधु बिमुख सुतो कहि सूरज को तन ताप हरे ॥ १०४ ॥ राग गौरी ॥ नहिन ब्रज नंद को कुमार । परम चतुर सुन्दर सुख दायक । तनु को प्रिय प्रति हार ॥ रूप लकुट सखि लए रहत हो अनुदिन नयननि द्वार । अब तिन बिनु उर भवन भयो है शिवरिपु को संचार । निसा निमेष कपाट लगे बिनु ससि मूसत तन सार । सूर प्राण खटि आसन छाड़त सुमिरि अबधि आधार ॥ १०५ ॥ राग सोरठ ॥ ऐसें जौ हरि जू आवहिं । निरखि निरखि वह बदन मनोहर नयन बहुत सुख पावहिं । तैसिये श्याम घटा तैसोई हरित बन तैसिये बिच बग पंक्ति दिखावहिं ॥ तैसोइ मोर कुलाहल सुनिके सखी हरषि हिंडोरना गावहिं । कबहुंक यहि मिस संग जू खेलै कबहुं निकुंज बुलावहि । कबहुंक लै संग सखा शैल चढि मुरली मधुर बजावहि ॥ बिछुरत प्राण रहें कैसें करि बहुत भांति समुझावहि । जितहीं चलत जानि सूरज प्रभु तितहि तितहि उठि धावहि ॥ १०६ ॥ राग धनाश्री ॥ नन्द नन्दनसों इतनी कहियो । जद्यपि ब्रज अनाथ करि छाड्यो बारक हम पर चित धरि रहियो ॥ तिनुका तोरि कतब डारत है एक बास की लज्जा गहियो । गुण औगुण सब मेटि हमारे हम दासिनि को इतनी सहियो ॥ तुम बिनु प्राण अबै छांडति हों अब ए लोचन सपने लहियो । सूरदास पाती लिखि पठई जहां प्रीति तहं और निबहियो ॥ १०७ ॥ ॥ राग सारंग ॥ राखो यह मत योग अटपटो ऊधो पांइ परों । कहं रस रीति कहां मन सोधनु सुनि सुनि लाज मरों ॥ चंदन छांडि विभूति बतावत यह दुख क्यों बिसरों । आनंद रूप रह्यो उर अन्तर निर्गुन कहा करों ॥ निशि दिन रसना जपति श्याम घन मौनन क्यों बिसरों । नासा गहि तुम ध्यान बतावत बेहरि कहां धरों ॥ मुद्रा न्यास अंग अंग भूषण पतिव्रत तें न टरों । सूरदास प्रभु यह व्रत मेरे हरि मिलि नहि बिछुरों ॥ ॥ १०८ ॥ राग नट ॥ माई यह मधुपनि की रीति । नीरस जानि तजो छिनु भीतर नवल कुसुम करे प्रीति ॥ जिनहि संग कैसेबक कैतब को आवै पर तीति । हमहिं छांडि बिरमें कुब्जा के आए न रिपुको जीति ॥ जिनि पतियाउ मधुर सुनि बातनु आए करन सभीति । सूर दास ऐसो संग श्याम को ज्यों भुस परकी भीति ॥ १०९ ॥ राग सारंग । जानी आली ऊधो की चतुराई । ब्रज मण्डल की दसा देखि के कथा न वै बिसराई ॥ परम प्रिया को देखन पठए कहि गति जोग बनाई । उनको आन भाव बिछुरन कहि वै बतियां हमलाई ॥ कहा कह्यो हरि कहा सुन्यों तुम कह लीला मुख गाई । जद्यपि बिबुध बड़े जदु कुलमें नेकु न बड़ी बड़ाई ॥ गुण मय मिल सदा श्रीपति के मुक्ति पुरी

अब गाई । नहि देखी ब्रज बनकी लीला सूरश्याम सरिकाई ॥ ११० ॥ राग गौरी ॥ तुमहि मधुप गोपाल दुहाई । कबहुंक श्याम करत यहं को मन किधौं निपट चित सुधि बिसराई ॥ हम अहीरि मति हीन बापुरी हटकतहू हठि करहि मिताई । ओइ नागर मथुरा निरमोही अंग अंग भरे कपट चतुराई ॥ सांचो कहहु देहु श्रवणनि सुख छांडहु छिया कुटिल धूताई । सूरदास प्रभु बिरद लाज धरि मेटहु यहं की लोग हंसाई ॥ १११ ॥ राग गौरी ॥ कैसें जीवैं ऊधो हरि परदेस रहे । बरषि बरषि हरि गरजन लागे नदियो नार बहे ॥ कहि पठयो मधुपुरी सखी मेरे होंतो चरण गहे । वासर गए निहारत मारग चातक रैनि डहे ॥ कासों कहों तपत मन निशि दिनि कों यह पीर लहे । हमहू किनि लै जाय सूर प्रभु को ब्रज दुखहि सहे ॥ ११२ ॥ राग सोरठ ॥ उघरि आए कान्ह कपट की खानि । सरबसु हरयौ बजाय बांसुरी अब छांडी पहिचानि ॥ जिन पय पिवत पूतना मारी दाक्ष करी नहिं हानि । बलि छलि बांधि पताल पठाए नेक न कीनी कानि ॥ जैसें बधिक अधिक मृगबिंधवत राग रागिनी ठाँनि । अवधि आस पर तीति ओटदै हनत बिषम सर तानि ॥ जैसें नट सर टरतन टरतें तुम ऊधो अति जांनि ॥ सूरदास प्रभु के जिय भावै आइसु माथें मानि ॥ ११३ ॥ राग सोरठ ॥ कहियो मधुप जाइ हरिसो मेरोमन अटक्यौ नैननि केलेखे ॥ इहै दोस दैदै झगरत है तब निरखत हे मुख नहि मेखे ॥ केतू तही बताय बदति यों लगी पलक जड़ जाके पेखे । ते सब अब दूनपें भरि छाइत बिधि जो लिखे दरशन मुख लेखे ॥ यहि बिधि अनुदिन जुरति जतन करि गनति कई अंगुरी अब रेखें । सूरदास इनि झगरनि नहि चित घटत बदन बिनु देखें ॥ ११४ ॥ राग सोरठ ॥ कहहु कहा हमतें बिगरी । कौन अन्याय जोग लिखि पठये हंसि सेवा कबहू न करी ॥ पाखंड प्रीति करी नद नन्दन अवधि अधार हुती सोटरी । मुद्रा जटा ऊधो लै आए ब्रज बनिता पहिरो सिगरी ॥ जाति सुभाउ मिटै नहि सजनी अंतनऊ कोरी ठिकरी । सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किनि नातरु प्राण जात डगरी ॥ ११५ ॥ राग सोरठ ॥ जोग कौंन सो हरि पाए । निज आज्ञा तपु कियो बिधाता कबरस रासनि नाए ॥ जोग जुगति शंकर आराधी परम तत्व लौलाए । भुज धरि ग्रीव कबहि नद नन्दन हिलि मिलि कब सुर गाए ॥ वक दालभ्य महा ऋषि कबहूं तृन छाया न कराए । बरषत दुखित जानि मन मोहन कब गिरिवर कर छाए ॥ अति तप पुंज बिप्र दुर्बासा दुर्बा तृण नित खाए चक्र सुदर्शन तपत महा मुनि कब मुख अनल समाए ॥ बहु तप कियो मार्कण्डे द्विज अजा सिंधु भर माए । सकल पबीती अब कहि किहिं हरि बरुण पास मुकराए ॥ भक्त विरह कातर करुणा मय बेद निरंतर गाए । को है जोग सुनत यहां ऊधो सूरश्याम मन भाए ॥ ११६ ॥ राग सोरठ ॥ हमरेकौन जोग व्रत साधे । मुद्रा भस्म अधारी कंथा को इतनो आराधै ॥ जाको कहूं थाह नहि पइयत अगम अपार अगाधै । गिरिधर लाल छबीले को यह कहा पछापो पाधै ॥ सुनि मधुकर जिनि सब रस चाख्यौ सो क्यों सुख पावत आधै । सूरदास ऐसो मणि तजिके घुंघुची गांठि को बांधै ॥ ११७ ॥ राग

सोरठ ॥ हम अलि कैसें के पतियांहि जाको कोन ठौर मन लागै । हो वरि रही कंठ में मणियां बिना पराये धागे ॥ तुमही कहत आहि यह निर्गुण कहा स्वर्गतिहि काज सूरदास सगुणहि मिले मोहन राम राम रुखराज ॥ ११८ ॥ राग आसावरी ॥ ज्ञान धर्म के श्रोता वक्ता पै वक्ता हम जाने हो । श्रवण धर्म नहि या मारग में कहत प्रीति के साने हो ॥ बहु बल्लो लंपट जे मधुकर नहि सुस्थल पहिचाने हो । पै निधि कमल गंध लोभी ह्वै तजत कठिन तन प्राने हो ॥ तुम श्रोता मृग श्रोता कहुं धौं बूझति हमहिं अयानेहो । तुम आए पद पल्लव तजि के मृग न जात हति बानेहो । श्रोउ वक्ता अरु तुम वक्ताहो गुरुसिख दोऊसमानेहो ॥ पढि आए तुम मंत्र जोग को कहु कुब्जा के कानेहो । शब्द माधुरी पर भृत प्रति भृत उड़ते प्रति छिनु हानेहो ॥ तातें तुम फिरि जाहु मधुपुरी बाचक ताहि बिमानेहो । अब हम तुष्ट भई इतनेही अपथ पंथ के दानेहो ॥ पूरनता सिध भई हम मानो भए देसके रानेहो । ऊधो बचन कछू नहि उपजत सुनि के मुसकानेहो ॥ सूरदास सांवल रस माती बोलति अति अभिमानेहो ॥ ११९ ॥ राग सोरठ ॥ अपनो रूप सोंपि लोचन युग माधो चले मधुदेस । इन जो रच्यौ पुरुष सुनि ऊधो अग्निमें कियो प्रवेस । बरनसुजाति मिले मोहन सों और दियो उपदेस । तातें कछु न विचारयो हम हित मति पठवो संदेस ॥ दरशन तबै नयन ले आयो श्याम रूप नवबेस । सूरदास जन बसि श्यामा की दुर्लभ ब्रह्म महेस ॥ १२० ॥ राग सोरठ ॥ कहा भयो जु आजु राजा भयो । अब तौ कछू और की और ह्वै बांध्यो है कूबहै भुज नयो ॥ अब लों तो छोटे अंग घर घर भोजन मांगि लयो । सोई ब्रज अब क्यों बिसरायो जहं चोरी तें जनमु गयो ॥ कालिहि तो ग्वालनि के संग मथि मथि पीवत है जुवयो । अब तुम और अनख कोनों ह्वै सुनऊ योग लिखि पठयो ॥ अब यह ज्ञान वेद परवानो हम पर अरु अभिमान भयो । सूरदास चतुराई देखी कुब्जा चित हरयो ॥ १२१ ॥ राग सोरठ ॥ कहि अलि काके बीत अहीर । काहे कों भरि भरि तुम डारति इन नयननि तें नीर ॥ आपुन पीय पियावति ग्वालनि इन गैयनि को छीर । छिनु छिनु प्रभु प्रभु बिसरत नाही या जमुना को तीर ॥ हृदये भीतर दौ लागौ है दाहत सकल शरीर । अंग अंग कैतवता सुनि सूरज सङ्कर्षणके बीर ॥ १२२ ॥ राग सोरठ ॥ जेहि जेहि तजी ब्रज की ओर । कहा कहों अलि हरि लखी तुम सखा सुन्दर घोर ॥ मदन नृप शशि नेव अवलनि दुर्ग दूत समीर । बिपिन सेना साजि नवदल बदत बंदो कीर ॥ फूलही तुम जथ्थ जानों कवच कंचन बीर । ककुभ कुंजर विटप मोर सु चारु चमरसईर ॥ चमू चंचल चलत नाहिन थकित होइ पुरतीर । समर मानऊ कोट कीरट हसुन अति तिथो धीर ॥ जाम जातक व्याधि बाजक कहौ कासों पीर । सूर रसिक सिरोमणी बिनु जगत जमुना नीर ॥ १२३ ॥ राग सोरठ ॥ बिरही कहलों आप संम्हारै । जब तें गंग परी हरिपद तें तबतें बढ़िबो नाहिं निवारै ॥ नैननि तें बिछुरी भौंहें रहे शशि चलत्र तन गारै । राम तें बिछुरी कमल कंठ भये सिंधु भये जर छारै ॥ बेनु तें बिछुरी बोलि अवधि भई बदही कोन निवारै । सूरदास जाके अंग बिछुरे ऊधो किहि विद्या परचारै ॥ १२४ ॥ राग केदारो ॥ उर में माखन

चार गड़े । अब कैसे निकसत है ऊधो तिरछे ह्वै जु अड़े ॥ जदपि अहीर जशोदा नन्दन तदपि न जात छड़े । उहां कहत जदुवंश महा कुल इन दिन लगत बड़े ॥ को वसुदेव देवकी है कौ ना जाने सो बूझे । सूर श्याम सुन्दर बिनु देखें औरन कोऊ सूझे ॥ १२५ ॥ राग नट ॥ रे अलि कहा सिखावन आये । एतो नयन रूप रस राचे कह्यो न करत पराये ॥ जोग जुगति हम कछू न जानहि ना कछु ब्रह्म ज्ञानों । नवल किशोर मोहन मृदु मूरति तासों मन अरुझानों ॥ भली भई तुम आये ऊधो देखउ तुमह दुखारी । दा य उपाय बिलाय सूर घन आरति हरउ हमारी ॥ १२६ ॥ राग आसावरी ॥ हम तो सूतक जिवति ससि साखी । तुम अलि रवि हित कमल विशेषी हरे विमल मधु माखी॥ मुरली मधुर श्याम मुखसुनि सुखसोचे श्रवण दुवार। मधु हारी अकरदई मख अवधिछड़ाई छार ॥ मन को विरह नयन कहा जानै श्रुति मत तूहि सुनावै । सूर-भला अंगुली कुटिल ता तऊ जोग गुण गावै ॥ १२७ ॥ राग केदारो ॥ बहै प्रकृति परि आई ऊधो अनु दिनही मन मेरे । जो कोउ कोटि करै कैसेहू फिर तन लोचन फेरे ॥ जादिन तें जशुमति गृह आये मोहन जादव राई । तादिन तें वा दरस परस बिनु और न कछू सुहाई ॥ क्रीड़त हंसत कृपा अवलोकत जुग समान पल जाते । प्रेम छपति सब ही अंग लहते लोचन पें न अघाते ॥ जागत सोवत सपन निशा दिन सुन्दर तन अति भावै । सूर दास ता कमल नयन बिन बातनि क्यों रहि आवै ॥ १२८ ॥ राग कल्यान ॥ ऊतर कत न देतअलि नीचि । ग्रीषम तेज सहति क्यों बेली बढ़ी कमल कर सींचि ॥ मुरली अधर सुधा निधि आनन दै पोषी दिन राति । अब ए काम धाम दासी के सुरत गीत किहि बाति ॥ समुझी श्याम करी स्वारथ की रचि गुण कपटी साज । सूर एक राखत है नाता जगत कहत ब्रजराज ॥ १२९ ॥ राग कान्हरो ॥ सबतें अलि वह देश सु नीको । जहां बसत गोपाल हमारो तहां जाय दुखही को ॥ सुन्दर वदन कमल मुरली धुनि कत सुख शब्द सुनायो । तब तें थक्यो मधुप मन तहंई बहुरि नहीं घर आयो ॥ जैसे देह खांस बिनु तैसें सब ब्रज लागत फीको । कहि कोहि जतन प्राण राखें हम सूर सजीवन जीको॥ ॥ १३० ॥ राग नट ॥ हे गोपाल गोकुल के वासी । ऐसी बातें सुनि सुनि ऊधो लोक करत हैं हांसी ॥ मथि मथि सिंधु सुधा सुर पोषे सिंधु भये विषआसी । इमिहति कंस राज दै औरनि आपु चाहि लइ दासी ॥ विसरयो सूर विरह दुख अपनो सुनत चालि औरासी । ज्यों न बिहंगम गुप्त बिलोकी प्रकट न परकत फासी ॥ १३१ ॥ राग बिलावल ॥ ज्ञान बिना कतहू कछु नाहि । निर्गुण तजि सगुणहि क्यौं ध्यावति सुधों कहो किहि पाहि ॥ तत्व भजे तें निकट न कूटे ज्यों तनके संग छांहि । झूठे बचन कहत का हे कों सुनै हृदय दौ दाहि ॥ तन धन नयन मोहनी युवती और न नाहि लखाहि । सूर दास अलपे कर लागे छषी कहो केहि गाहि ॥ १३२ ॥ राग धनाश्री ॥ हमारे बोल बचन परतीति । ए ऊधो हम जानति नाहिन तुम्हरे गांउकी रीति ॥ सुन्दर श्याम गये मधुबन कों कह्यो कंस रिपु जीति । उनकी बातनि कोन पतीजै भुस ऊपर की भीति ॥ आवन अवधि गये बदि हमसों गये दिन बहुतक बीति । सूरदास प्रभु मिलउ कृपा करि

सुमिरि पुरातन प्रीति ॥ १३३ ॥ राग सारङ्ग ॥ बदले कौ बदलौ ले आऊं । उनकी एक हमारी ह्वै तुम सबै जनैया आऊं ॥ तुम तौ हमहि जानिकें भोरी सोई सारो दाउ । हमरी बेर मुकुर ह्वै भागत हिये चौगनौ चाउ ॥ अब तुम सखी विदित ह्वैजैये जेटऊं उनको दाऊं । सूर दास ब्यौहार भये तें हम तुम दोऊ साऊं ॥ १३४ ॥ राग सारङ्ग ॥ राखौ जू धरि जोग आपनों ऊधो पाय परे । कहां रस रीति कहां मन सोधन सुनि सुनि लाज मरे ॥ चन्दन छांड़ि विभूति बतावत या दुख कोंन भरे। सगुणहि रूप रह्यौ उर अन्तर निर्गुण कहा करे ॥ नासा धरि करि ज्ञान बतावत वेसरि कहां धरे । नद्रानाद सजेतजि भूषन पति व्रत तें न टरे ॥ निशि दिन रसना श्याम ग्राम गुण करि करि अति सुमिरे । सूर दास यहही मनमें हम ना हरि कों बिसरे ॥ १३५ ॥ राग जैतश्री ॥ हरि हरि दे खों तेरो ज्ञान । सुफलक सुत सर्वस्व सङ्ग लै गयो तू लैन आयो प्रान ॥ इत्याकृत अपलोक लावत कहत यह संदेस । डरपि कातर होऊ जाति न कहत बे नवलेस ॥ जोग भति अति बिसद कीरति होहि वाञ्छित काम । सदा तनमय ताऊई रहेवे पुरुष तुम आम ॥ हम चरण कञ्ज सुवास ले लै जीवति ऐसो रीति । कहत तिन सों धूम घूंटऊं न चाहऊं यहि प्रीति ॥ अजऊं नहि कहि कहि सिरानों या कथा कौ छोउ । सूर धोखौ तनक हो मन देखि लीनों सोउ ॥ १३६ ॥ राग सारङ्ग ॥ तू जो कहत हरि हृदय रहत हैं ॥ कैसे होय प्रतीति मधुप सुनिदुख इतने जु सहत हैं। वासररैनि कठिन विरहागिनि अंतर प्राण दहत हैं ॥ प्रजरि प्रजरितनु निकसि धूम अरु नयननि नीर बहतहैं कठिन अवज्ञा होत देह दुख मरजादा न गहत हैं । कहोनक्यों मन माने सूरज इन बातनि जु कहत हैं ॥ १३७ ॥ राग सारंग ॥ जानिके बावरो जिनि होऊ । तत्व मिले ऐसो होय हो ज्यों पारस परसे लोऊ ॥ मेरो कह्यौ सत्य करि मानऊ मेटि सबनि को दोऊ । तब लगि सब पातोको चौपरि जब लगि अक्षर मोऊ ॥ रेरे मधुप बात यह ऐसी क्यों कहि आवत तोऊ । सूर सुवस्तुहि छांड़ि अभागी हमहिं बतावत खोऊ ॥ १३८ ॥ ॥ राग सारंग ॥ ऐसो कहूं कहो जिनि ऊधो । कमल नयन को कांनि करति नतु देतो उत्तर सूधो ॥ बात निहो उड़ि जायऔर ज्यों त्यों हम नाहिन काची । मन क्रम वचन प्रसिद्ध कन्त मत कान्ह कुलंग रंग राची ॥ पांलागों सोईतुम कीजो मिटै हृदय को शूल मुरली धर को आनि दिखावऊ पहिरे पीत दुकूल ॥ इनही बातनि भए श्याम तन मिल बतहो गढ़ि छोलि । सूर वचन सुनि रह्यो ठग्योसो बहुरि न आयो बोलि ॥ १३९ ॥ ॥ राग सारंग ॥ अलि तुम जाऊ फिरि वहि देस । चीर करि करि हो भगाई सीख सिख लव लेस ॥ भाल लोचन चन्द्र चमकत कठिन कंठहि शेष । नाद मुद्रा विभुति भारी करो रावल भेष ॥ वहां जाय संदेस कहियो जटा धरो सब सीश । कौन कारन नाथ छांडी सूर रहे आदेस ॥ १४० ॥ राग देवगंधार ॥ जोपें रहै प्रीति की बात । तो ऊधो तुम निकट रहत क्यों निरखि सांवरो गात ॥ वचन कहत भरि लेत नयन जल सुरति करत अकुलात । जो घट घट हरि रहत निरन्तर कतहि मधुपुरी जात ॥ सगुण प्रीति ऐसो प्रति पालत दुखित होत अति गात । तुम निर्गुण सों प्रीति करत क्यों सूर

समुझि पछितात ॥ १४१ ॥ राग टोड़ी ॥ सुख देखे की कौन सिताई । ऐसें अपनहि दोन मागनो लालच लीने करत बड़ाई ॥ प्रीतमसों जो सदा एक रस निशि बासर बढे प्रेम सवाई । चितमहं और कपट अन्तर गति ज्यों फल खीर नीर चिकनाई ॥ तब वह करी नन्द नन्दन अलि बन बोली रस रास खिलाई । अब यह कितिक दूरि मधुपुरि ज्यों उडि के भंवर वेलि बिसराई ॥ सुनि संदेस सूर पाती लिखि क्यों हिओस कन प्यास बुझाई सूरज दास उदास भई अब पाखण्ड प्रीति एघरि निज आई ॥ १४२ ॥ राग केदारो ॥ जबलों ज्ञान हृदय नहि आवै । तब लगि कोटि जतन करै कोऊ बिनु वैराग न पावै ॥ बिना बिचार सबै अपनों सो मैं देख्यौ सब जोय । नाना दारु मध्य ज्यों पावक प्रकट मथे तें होय ॥ तुमही कहत सकल घट ब्यापक अरु सबहिन के नीरे । नख सिखलों तनु जरत है निशि दिन निकसि करत किनि सोरे ॥ सांचे बोल सबै बोलत हो मुखमें देखे तुरसो । सूर सजीवन हरिहि बतावत ज्यों कफजुर पर गुरसी ॥ १४३ ॥ राग केदारो बातें हमहूं तो कहि जानत । जोपें नेह नहि हुतो पुरातन तो नातो कत मानत ॥ मघवा दृष्टि पानि पल्लव गिरि गिरिधारी जसु गायो । दावा नल अरिष्ट जीते ब्रज तृणावर्त्त गहि लायो ॥ ए गुन सब सुंदर मुरली धनि ध्यानि हिये ते खुलहिनि । सूर मधुप को जाय मधुपुरी सनहि कुंवरि सब दुलहिनि ॥ १४४ ॥ राग केदारो ॥ काज कह कोनो मथुरा जाय । सखा तिहारे अघ हनेते यह ब्रज प्रकटे आय ॥ अघि सम कंस अंस आयुध से उड़गन असुर समान । निशा अघासुर उदर जानि जिय डर न रहत पल प्रान ॥ तब दावानल पान कियो अब उन संग मिलि बल कीनों । परि मल पवन कपूर एक ह्वै हूत पति कर तन तीनों ॥ अब ब्रज बास हास करि मानत डर कुजा जिनि रूठे । चलत बचन रिपु मारि आइहैं सूर कही दोउ झूठे ॥ १४५ ॥ राग सारंग ॥ कह्यौ तिहारो लागत काहे । कोटिक जतन करहु जो ऊधो नाहिन बनत निबाहे ॥ काहे को अपने जिय भूलन करि करि मनको लाहे । यह भ्रमतो अबही भाजै गो ज्यों पयार के गाहे ॥ काशीके लोगनि लैं सिखवहु जो समुझत या माहे । सूरदास प्रभु गोकुल भीतर जीजत हैं मुख चाहे ॥ १४६ ॥ राग ललित ॥ सोचतिराधा लिखति नखनि महि बचन कहत कंठ जल तास । छिति पर कमल कमल पर कदली कदली पंकज कियो प्रकास ॥ तापर अलि सारंग सारंग पति सारंग रिपु किये ले कुलवास । तहं अरि पंथ पिता जुग ऊदित वारिज बिंब रंग भव आभास ॥ सारंग मुखतें परत चंदु ढरि मनो शिव पूजति तपति विनास । सूरदास प्रभु बिनु हरि हर रिपु दाहत अंग दिखावत त्रास ॥ १४७ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ भयो अलि नेह निरंतर भारी । छांड्यो भोग जोग ब्रज भीतर श्याम मिलन व्रत धारी ॥ नयन कमल पुतरीहि पारधी नीरसजल शिर लाए । परी बिरह पर नाल अवनि को उठि जुगई हरि आए ॥ सुने सखा तैसेई लागत सब गुण भेष बनाए ॥ जितो सुनति मधुबन की बातें सही सूर तू गाए ॥ १४८ ॥ राग मारू ॥ हमतो सबहिन सों हित छांड्यौ । कत गत कथा सुनहु अलि तेरी जोग प्रेम बिनु खांड्यौ ॥ काजर परसि जरति पावक समबुझति चले जल धार । निशि तम तके पलक नहि लागत गनत

बच्यौ नहि तार ॥ कोकिल कुंज कुंज मधुकर धुनि घन बोलत डर डारे । सूर हितू बहु जतन किये हूं आप होत कहुं कारे ॥ १४९ ॥ राग केदारो ॥ सुनति अलि तेरे मुख बातौ । कमल नयन की कपट कहानी होय आयो तन तातौ ॥ कत ब्रजराज काज गोकुल के सबै कियो गहि नातौ । अब नहि निमिष वियोग सहत ज्यों करत काम झिरझातौ ॥ मधुबन जाय कान्ह कुब्जा संग मति भूली सुधि सातौ । तिहिं गज कूथ निमिष नहि विछुरत सूर काम मद मातौ ॥ १५० ॥ राग सारंग ॥ बोल एक इनहू को सुनि लीजै । कैसो उठनि उठैधों ऊधो तोसो उत्तर कीजे ॥ यामें कछू अनूचित नांही अपनो मतौ न दीजै । सुनिरी सखी भाजिये किहिं डर चलो जाय सुख कीजै ॥ ह्वै कर जोरि भई सब ठाढ़ी सोई कहो जिहि जीजै । सूरदास सोई मति दै जिहि वदन सुधा रस पीजै ॥ १५१ ॥ राग सोरठ ॥ जुहे मिष्ट फल सोकहि कैसें आवै । जैसें मूक मिठाई को सुख अंतर अंतरभावै । परम स्वाद सबहीतें न्यारो अमित तोष उपजावै । मन बानी गुणकर्म अगोचर सोइ जाने जो पावै ॥ बिना रूप गुण नाम जुगति बिनु निरालम्ब कान ध्यावै । भजे न अंत तहीतें सूरज सगुण लीन मन गावै १५२ ॥ राग केदारो ॥ जोपै अलि मथुरा लै जाहु । आरति हरहु श्रवण लोचन की भेटहु उरको दाहु ॥ बुधि बल बचन जहाज बाहु गहि बिरहसिंधु अब गाहु । पार लगावहु मधुपुरि केतट चंद तज्यो जनु राहु ॥ देखें जाय रूप कुब्जाको सहि न सकति यह दाहु । जीवन जनम सुफल करि लेखहिं सूरजनम उत्साहु ॥ १५३ ॥ राग सारंग जा दिन तें गोपाल चले ॥ तादिन ते ऊधो या ब्रजके सब सुभाउ बदले ॥ घटे अहार बिहार हरष हित सुख शोभा गुण गान ॥ ओज तेज सब रहित सकल विधि आरति असम समान ॥ बाढीनिसा बलय आभूषन उर कंचुकी उसास ॥ नैननि जल अंजन अंचल प्रति अवा अवधि की आस ॥ अब इहदसा प्रकट या तनको कहियो जाइ सुनाय । सरदास प्रभु सों सो कहियो बेगि मिलहि अब आइ ॥ १५४ ॥ राग आसावरी ॥ सबै दिन एक से नहि होते । तब अलि ससि सीरो अब तातौ भयो विरह जरि मोते । करि षट मास रास निसि अंतर ए कोतिमिषन जान्यों । अब औरें गति भई कान्ह बिनु पलकीतत जुग मान्यो । किहि मत जोग जुगति साखा श्रुतिते अलि कहे घनेरे । अब नहि और सुहाइ सूर गुण सुमिरि श्याम संग केरे ॥ १५५ ॥ राग धनाश्री ॥ काम गंवारि सों परयो । रूप हीन कुलहीन कूबरी तासों मन जुढरयो ॥ उनको सदा सुभाव सलिल को खोरनि खाड भरयो । सकुच्यो नहीं जानि ऊधो तन उमगनि मन पसरयो । फेरे फिरत असुर दासों के जनु जड मारु धरयो । सूर दास गोपाल रसिक मिलि अकरन करम करयो ॥१५६॥ यहाँते कुबिजा कोसंदेसो गोपिनसों उद्धव कहते हैं ॥ रागसोरठ ॥ मोपर काहे को झुकति ब्रज नारी । काहु के भाग सों साझो नाहिन हरि की कृपा नियारी । फलनि माझ जैसें करुई तूंबरी रहति जु घूरे डारी । हाथपरी जब गुनी जननके बाजत राग दुलारी । यहसंदेस कुबिजा कहि पठयो अरु कीनो मनुहारी । तन टेढी सब कोऊ जानत परसे भइ अधिकारी । होंती दासी कंसराय की देखहु हृदै बिचारी । सूर श्याम करुणा कर स्वामी अपने हाथ सवारी ॥

उद्धव प्रति गोपियों के वचन

राग सारंग कहा भयो मथुरादि गए । आ अलि हरि कैसें सुख पावत तन दै भांति भए । इहां अटक मन प्रेम पुरातन नूतन नेहु नए । उहां धरत नृप भेष दिनहि दिन यह कर मुरलि लए । कहा हठे कर परयो अक्रूर केबहु ठग ठाट ठए । अब क्यों कान्ह रहत बिनु गोकुल लोगनि के सिखए । राजा राज करो अपने गृह माथे छत्र दए । चिर जीवहु यहां सूर कन्हैया जोजत मुख चितए ॥ १५८ ॥ राग सारंग ॥ गगन सघन नगनि भयो दुंद । प्रसरी भूमंडल केतकि जुत मारुत मत मकरंद । पर पथ अपथ भयो सुनि सजनी गयो बास बितखेत ॥ कोउ न जाइ कान्ह पद देसयी दोउ तनि निबह अनेत ॥ बिपति बिचारि जानि जदु नन्दन दीनों दरस उदार । सूर दास भेटे उन भेटो बिरह बिकल भ्रम भार ॥ १५९ ॥ राग सारंग ॥ यह संदेस कहे जो उधो कहो कोन पें पाए ॥ कथियत हैं अनुमान एक मन यहि मिस हो यहां आए । हरि जू प्रथम नन्द जसुमति गृह नाना खाड़ लड़ाए । उर उत्संग कन्हैया लै लै माखन खांन सिखाए । सुबल सुदामा के संग सब ब्रज बीथिनि बीथिन धाए ॥ कछु एक जान भए खेलन तब गोदुहन देन पठाए ॥ बेनु मधुर धुनि बोलत थेइ थेइ संगनि नाचनचाए । जल थल नित नौतन लीला कै केतेउ जुग बिरमाए । यहि बिधि बिबिध कुतूहल छिनु छिनु करत आपने भाए । कब चले मधु बन कब मारो रिपु बचन अचंभ जनाए । पाछें रहे सुनत मोहन चिय उझकि उर खल लाए । सूर दास प्रभु बूझत बतियाँ सखियनि सुपन बताए ॥ १६० ॥ राग सारंग ॥ माधो आवन हार भए । अंचल उड़त अधिक मन आनन्द फरकत नयन खए । भई प्रतीति आपुने जियतें सबनि सिंगार ठए । मानहु नव बसंतके आगम प्रकटत पात नए । सोचि बिचारि जीय अंतर मति चितवत निकट भए । सूर श्याम अंतरते निकसि के सब सुख हंसि पुजए ॥ १६१ ॥ राग सारंग ॥ फिरि फिरि कहा सिखावत बात । प्रातकाल उठि देखति ऊधो घर घर माखन खात । जिनकी बात कहत तुम हमसों सो है हमतें दूरि । यहां निकट जसोदा नन्दन प्रानानि ही की मूरि । बालक संगलियें दधि चोरत खात खवावत डोलत । सूर सीस नीचो कत नावत अब क्यों नाहिन बोलत ॥ १६२ ॥ राग सारंग ॥ जो करि कृपा पाउ धरे ब्रज में तो कछु तुमहि दिखावैं ॥ मौन धरे जौ बैठि रहो छिनु मुरली शब्द सुनावैं । अबहि सिधारे बन गोचारन हम बैठी जसु गावैं । निसि आगम श्री दामा के संग नांचत ब्रह्म बतावैं । को जाने संकोच दिधातें तुम डर निसि पैंन आवैं । तब दुखदुन्द बढै अति दारुण सखियनि प्राण छिडावै । नकरिये नदलाल यहां पें जो कोउ कोटि सिखावै । सूर दास यह सुनि ऊधो मन क्योंहुन मथुरा धावै ॥ १६३ ॥ राग नट ॥ बातन क्यों ब्रज नाथ मिलन को बिसरत है अलि नेह । बंस निनाद स्वाद रस लंपट मानत नहि श्रुति एह ॥ को मातुल बध कै न मधु पुरी को पति पर जन गेह ॥

को ऊधो को योग निरूपन नव किसोर बिनु खेह । कोटि जतन जुग बो बन वेली बन सींचे वन मेह । ही राहीर चीर सोधा मिलि नीर बिना सब छेह । कुंभज कुंभसमान ज्ञान पथ बिन गुण पानिप बेह । सूर श्याम रस सहज माधुरी रसिकनिको अब लेह ॥ १६४ ॥ राग धनाश्री ॥ हम तो भजिहे नन्द किसोरना । जोग उलटि ले जाव ऊधो जहाँ बसे चित के चोरना ॥ जोगहि जोग मिलाइए हम या याग अजोग । ऊधो तिन लै दीजिये अलि जहां है नित्य संजोग । पुरन पूरन कहत हो उहां पूरन यहां कोन । ऊधो कहा तुम देत हो अलि दाध ऊपर लोन । मिलन भांति बहु विधि है या मिल बे को हेत ॥ सूर दास प्रभु अवधि बदी है मिलि हैं जहाँ कुरुखेत ॥ १६५ ॥ उद्धव प्रति जसोदा जू के बचन ॥ राग सारंग ॥ ऊधो ऐसी हमहि न जानी । सुत के हेतु मरम नहि पायो प्रकटे सारंग पानी । तिसि बासर छतिया लै लाऊं बालक लीला गाऊं । ऐसे भागवहुरि फिरि छ्वै है मोहन गोद खिलाऊं । जाकारन मुनि ध्यान धरे शिव अंग बिभूति लगवै । सो बालक लीला धरि गोकुल ऊखल साथ बंधावै । बिहरत नहीं बज्र की छतियां हरि वियोग क्यों सहिये । सूर दास व्रज नन्द नदन बिनु कहो के न विधि रहिये ॥ १६६ ॥ उद्धवोक्ति प्रभु प्रति ॥ राग सारंग ॥ जब हो यह छीतें गयो। तब व्रज राज सहित सब गोपिन आगें छ्वै जुलयों । उतरो जाय नंद बाबा के सबहिन सोधु लह्यों । सबि कहो मेरी सों ऊधो मैं या कहा कह्यो । बारंबार कुसलता पुछी लै लै तुहरो नाम । मन धक धको तृषा चातक लों कृष्ण कृष्ण बल राम । सुन्दर परम विचित्र सुसोभित यह मुरली दै घालो । खई उठाइ सिर नाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उरसालो ॥ १६७ ॥ राग सोरठ । माधो मैं जोग को बोझ बह्यो । श्यामा मुख विधु बचन सुधा रस सुनि सुनि कछु न कह्यो । सकल सिंगार साररस सर्वसु व्रज नवनीत लह्यों । छूछे भांड ब्रह्माखड लोक हित पीवत दयो मह्यों ॥ नव नव भाव तुरंग महो दधि ब्रज घर घर उमह्यो ॥ हम जो कह्यो ज्ञान को मारग पाइनि जात ढह्यो । मोहि अचरज ए पें लागतु तुम कैसें जात सह्यो ॥ सूर श्याम सुनिसखा सयानों खेभुज बीच गह्यो ॥१६८॥ रागसोरठ ॥ माधोजू मैं उत अति सचु पायो ॥ आनों जानि संदेस व्याज करि व्रज जन मिलन पठायो ॥ क्षमा करो तो करों बीनती जोउत देखिहों आयो ॥ श्री मुख ज्ञान पंथजे उचरयो तापें कछुन सुहायो ॥ सकल निगम सिद्धांत जनम श्रम श्यामा सहज सुनायो ॥ नहि श्रुति शेष महेश प्रजा पति जे रस गोपिनि गायो ॥ कटुक कथा लागो मोहि मेरी उहि रससिंधु उम्हायो ॥ उत तुम देखे और भांति मैं सकल तृषाहि बुझायो ॥ तुम्हरी अकथ कथा तुमजानो हम जन नाहि बसायो ॥ सूरदास सुन्दर पद निरखत नैननि नीरबहायो ॥ १६९ ॥ राग केदारो ॥ कहत न बनें व्रज की रीति ॥ कहा मम सटको पठायो देखि उनकी प्रीति ॥ जुवति वल्लभ कहावतहो करत सकल अनीति ॥ मोहि तो इह कठिन लागत और को पर तीति ॥ सुनहु तो कान अपनों लोक लोकनि कीर्ति ॥ सूरप्रभु अपनी सचाई रही निगमनि जीति ॥ १७० ॥ राग केदारो ॥ जो तुम करुणा के आखै ॥ तौकत होत कठोर कठिन मन

मांहिं बहुत दुख सालै । बहौ बिरद की लाज दीन प्रतिकरि सुदृष्टि ब्रज देखो ॥ मो-सों बात कहो किनि सनमुख कहा अबनि को लेखो ॥ निगम कहत बस होत भगत के सोई उनहे कीनी ॥ सूरज स्वास छांड़ि हाहा ब्रजजल अखियाँ भरि लीनी ॥१७१॥ राग केदारो ॥ मैं जान्योंहो उहिं को भयो । परयोज़ उनके प्रेम कोस मैं तुम्ह प्रभु बिसरि गयो ॥ तुमसों सपथकरि गयो माधो बेगि कह्यो हो आवन । देखतही वैसोई ह्वै गयो लग्यों उन्हें मिलि गावन ॥ समुझि श्याम षटमास बितीते कहा हुतो कह आयो ॥ सूर अनकही दै गोपिन सों श्रवण मूंदि उठि धायो ॥ १७२ ॥ राग केदारो ॥ सुनि लीनो उनहीं को कह्यो । अपनो चाल जानि मनही मन गुणि अर गाय रह्यों ॥ बेहो काज हेां कतहि पठाये सठ बाबरो अयानो । तुमहुं बहुत बूझो बातन कों वहां जाउ तैा जानो ॥ अवलनि सों कहि पारत नाहि न बात तैारि करि कानि ॥ अनबोले पूरो दै लीन्हों बहुत दिनन को जानि ॥ आज्ञा भंग होय क्यों मोपै गयो तुम्हारे ढीले । सूर पढ़ावनिहू की बूढ़ी रह्यौ जगत सों लीले ॥ १७३ ॥ रागकेदारो ॥ मैं हरि उहां काउ दै हारो । आज्ञा भंगु होइ क्यों मोपै बचन तुम्हारे पारो ॥ हारि मानि उठि चल्यौ दीन ह्वै जानि अपन पैा केदु । समुझि लेहु तुम इतनेही मैं कहा करै मनि को वैदु ॥ ऊतर को ऊतर नहिं आवतु तवै उन्हीं मिलि जात । तुच्छरी किती बात ब्रह्मा को अर्द्ध बचन भै मात ॥ अपनी चाल जानि मनही मन चल्यौ बसीठी तोरि । सूर एकहू अंगन काची मैं देखी टकटोरि ॥ १७४ ॥ राग केदारो ॥ सब ब्रज घर घर ए के रीति । ज्यों कुरुचेच गज्यौ धन बाढ़ें त्यौं प्रभु तुम तन प्रीति ॥ बे सब परम बिचिच सयानी अरु सबही जग कीति । मेरे बचन सुनत ढाई सबज्यों बारू की भीति ॥ एकैं गहन गही इन दृढ कै मेंटि वेद की नीति । गोप भेष भजि सूर सांवरे रही बिश्वबर जीति ॥ १७५ ॥ राग केदारो ॥ सुनहु श्याम सुजान त्रिया गज गामिनी की पीर । बिरह सर गंभीर ग्राहक काम असो अधीर ॥ सोक पंक मनो सु सुन्दरि मोचि नयननि नीर । करति सम दिन रैनि बिरह बलबिकल भई शरीर ॥ चक्र ले कर बेगि धावहु कृपा कै बलबीर । कोटि दुःख समूह बंधनि काढि आनहु तीर ॥ कहा जानि छुड़ाय लीनैं बिरद दीन दयाल । सूर प्रभु न बिसारिये जू राधिकासी बाल ॥ १७६ ॥ राग केदारो ॥ सुनहु श्याम जे सब ब्रज बनिता बिरह तुम्हारे भई बावरी । नाहिन नाह और कहि आवै छांड़े चेटक कथारावरी ॥ कबहु कहति हरि माखन खावै कौन बसे हेा येहि गांवरी । कबहुं कहति धरि बांधो ऊखल घर घर तें लै चली दांवरी ॥ कबहुं कहति ब्रज नाथ साथ तें चन्द भयो यहि ठांवरी । सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु भई बे मूरति सुभग सांवरी ॥ १७७ ॥ राग केदारो ॥ सुनिये ब्रज की बात गुसाईं । रथ की ध्वजा पीत पट भूषण देखत ही उठि धाईं ॥ जे बातें तुम कही जोग को ते में सबै सुनाईं । नयन मूदि गुन कर्म तुम्हारे प्रेम मगन ह्वै गाईं ॥ बार बार संदेस जशोदा कहति हारलगि आई । हुतो कछू हमही सों नातो निपट कहा बिसराई ॥ सूर दास प्रभु बन बिनोद करि जे तुम गाय चराई । तिन गायन को ग्वाल न धेरत मानहु आ

हि पराई ॥ १७८ ॥ राग केदारो ॥ कान्ह तुम्हारी बिकल बिरहिनी बिलपति बिरह बिगोए । अति आरतन सम्हारति तन मन इक टक दै मगु जोए ॥ काजर मिलि लोचन जल वरषत दुखित सुखद छवि रोए । राहु केतु शशि मिलमिटि मधुकर अंक छुड़ावत धोए ॥ अवला कहा जोग मतु जाने मनमथ बिथा बिलोए । सूरश्याम को नीर चुवत है नील सु बसन निचोए ॥१७९॥ राग केदारो ॥ ब्रज जन दुखित तन अति छीन । रटत इकटक जगत चाचिक श्याम तन घन लीन ॥ द्योस काटति सकल मिलि करि कथित गुण बलबीर । रैनि उड़पति निरखि तलफति मीन ज्यों जल तीर ॥ कहन जो तुम कहो मोसों पचि रह्यौ उपदेश । चिकन घट जल बूंद ज्यों ढरि बचन उरन प्रवेश । बरुह मुकट मुरली अधर पटपीत उर वनमाल । रही वह छवि अंगअंग ज्यों लता लपटि तमाल ॥ करहु कृपा अनाथ बन्धव कही ऊधो जाय । सूर प्रभु अबके दरशु दै मरत लेहु जिवाय ॥ १८० ॥ राग केदारो ॥ हरि जू सुनहु बचन सुजान । ऊधो कहत संदेस ब्रज कौ सखा सन्त निदान ॥ बिरह व्याकुल छीन तन सतहीन लोचन कान । मैं सकल ब्रज दीन देख्यो ज्यों बिना तन प्रान ॥ तुम बिना शोभा नहीं ज्यों दिवस बिनु है भान । आस स्वास उसास घट में अवधि आसा मान ॥ जगत जीवन जगत पालक जगन्नाथ कृपाल । करहु जतन कछु सूर के प्रभु ज्यों जियहिं ब्रज बाल ॥ १८१ ॥ ॥ राग मारू ॥ माधो बिलपति प्रिय प्रति छिनु घोष अति दुखारयौ । सुन्दरि सुकुमारि अंग अनंग आधि टारयौ ॥ बिरह व्याल गरल असित सुधा सोचि तारयौ । ज्ञान गुरुत्व मथुरा धरौ उत कछु न बिचारयौ ॥ तमराज काज तजिके सजि सुबेष सिधारौ ॥ बातनि बिरमाय यहै नेह को तुम्हारौ ॥ शीत ज्ञान नलिनी मृदु बेलि मति प्रजारौ । निगम चारि रासि गमन तरुण बिया तारौ ॥ चन्द बदनि राहु ग्रही सकल आंधि मारौ । हम से नाथ वे केतेउ जाऊ पै तुम बिना न उजियारौ ॥ मंची अरु मिच मो सों जगत जशु भारौ । सोई मोहि सिखवाय जोग दृढ़ वय बिगारौ ॥ अक्रूर के संग चलत बचन कह्यो सम्हारौ । सुनत क्यों न चलत प्रभु नयन कहा निहारौ ॥ जानि इत भ्रम लोक के हित कहो निगम चारौ । ऊधो प्रति कछु न कहत श्याम सुन्दर प्यारौ । मीडत कर कमल हाहा राधा तें हौं न्यारौ ॥ हृदय रस भरार चलत लोचन जल धारौ । ऐसो कठिन देखि सखा आयो क्यों अवारौ । सूरदास प्रभु तिहि छिनु मिल्यौ जाइ संवारौ ॥ १८२ ॥ राग मारू ॥ धर्म अभिमान वह्यौ जन्मनि तें न लह्यौ भजन प्रकार । कौन काज जदु कुल में बड़ाई कीनो भुवको भार ॥ केलि कथा कल कोकिल बैनी ब्रज चिय नभ सिख चारु । तहं कीनी प्रति बोध चातुरी देखि बिचिच बिहार ॥ स्थानपधरि हरि बचन बेद की कह्यो जोग असि धार । तेहि कुकर्म मर्म अब भेदत सुमिरि रूप सकुमार ॥ पुनि ऐसी मति करौं प्रति नौतन बिरचौ नाथ उदार । फेरो बिगम दावनल सूरज अंतहि आस अधार ॥ १८३ ॥ राग सारंग ॥ कोऊ सुनत न बात हमारी । कहं मत जोग जुगति साखा श्रुति प्रकट प्रेम ब्रजनारी ॥ कोऊ कहति गए गोचारन कोऊ धेनु दुहि देत । कोऊ कहति इन्द्रबरषा तकि गोवर्द्धन

कर लेत ॥ कोऊ कहति नाग काली सुनि गए जमुन के तीर । कोऊ कहति अघासुर मारत लये संग बलबीर ॥ कोऊ कहति ग्वाल संग खेलत बनमें जायलुकाने । सूर सुमिरि गुण नाथ तिहारे कोऊ कह्यौ न माने ॥ १८४ ॥ राग गौरी ॥ दिन दस गोप चलहु गोपाल । गाइनि को ओसेर मिटावहु भेटहु भुज भरि ग्वाल ॥ नांचत नही मोर वा दिनतें बोलत बरिषे काल । मृग दूबरे दरश तुहरें बिनु सुनत न बेनु रसाल ॥ वृन्दा बन भांवतो तुम्हारो देखहु श्याम तमाल । सूर श्याम भैया जशुमति के फिरि आवहु नंद लाल ॥ १८५ ॥ राग सारंग ॥ अब गति पंगु भयो मन मेरो । आयो ब्रह्म निगुण कहिबे को भयो सगुण को चेरो ॥ अति अज्ञान कहत कहि आयो दूत भयो वहि केरो निज जन जानि जतन तें तिनसों कीनो नेह घनेरो । में कछु कहे ज्ञान गाथा तें नेक न परसति नेरो ॥ सूर मधुप उठि चल्यो मधुपुरी बोरी जोग को बेरो ॥ १८६ ॥ राग मारू ॥ मैं समुझाइ बहुत अपनो सो । तद्यपि उनि परतीति न उपजी लग्यौ सबनि सपनोसो ॥ कही तुम्हारी सबे सुनाई प्रेम सहित वे कोपीं । सुफलक सुत को कह्यौ मानि वै अरति करति सब गोपी ॥ जानि बूझि करि हौंकत पठयो सठ बावरो अयानो । तुमहूं बहत बोझ बातनि को उहां जाउ तो जानो ॥ इतनी सुनत कमल दल लोचन गहि करसों कर लीनो । प्रीति सहित मुसकाय सूर प्रभु तरक जानि हंसि दीनो ॥ ॥ १८७ ॥ राग मारू ॥ बिनती एक सुनहु श्री श्याम । चलन न देति चल्यो नहि भावत चलत कह्यो आवन घट जाम ॥ तुम सर्वज्ञ सबहि के व्यापक जीवन पद जनके विश्राम । संतत रहत ढीठ्यौ दे कहियत हौं सेवक मुखधाम ॥ वह रस रीति प्रीति गोपिन की लये रहति लीला गुण नाम । सूरदास प्रभु सब सुख दाता तेऊतो नियरे नंदग्राम ॥ १८८ ॥ राग सोरठ ॥ तुम्हारी भांवती कह्यौ । वह कहियो नद नन्दन आगे अति दुख दुसह सह्यौ ॥ खेति उसास शोच निशि दिन के नेक न रूप रह्यौ । बिगलित के अश्रुन छवि ऐसे जनु शशि राहु गह्यौ ॥ माखन काढि कूबरी लीन्हो ब्रज में रह्यौ मह्यौ । सूर श्याम रति जनम प्रेम पें बहुरों जम्यों कह्यौ ॥ १८९ ॥ राग सारंग ॥ ब्रज में संभ्रम मोहि भयो । तुम्हरो ज्ञान संदेसो प्रभु जू सबैं जु भूलि गयो ॥ तुमही सों बालक किशोर वपु मै घर घर प्रति देख्यो । मुरली धर घन श्याम मनोहर अद्भुत नट वर पेख्यो ॥ कौतुक रूप ग्वाल वृन्दन में गाय चरावन जात । सांझ प्रभातहि गोदोहन मिस चोरी माखन खात ॥ नंद नंदन जु बाल लीला करि गोपिन चित्त चुरावत । इन नयननि तें ब्रह्म तिहारो देख्योहू नहि भावत ॥ करि करुणा उन दरशन दीनो में पोचनेा जोग बह्यौ । छिन मानहु षटमास सूर प्रभु देखत भूलि रह्यौ ॥ १९० ॥ राग सारंग ॥ ब्रज में एक अचंभो देख्यो । मोर मुकुट पीतांबर धारे तुम गाइन संग पेख्यो ॥ गोप बाल संग धावत तुम्हरे तुम घर घर प्रति जात । दूध दह्यौ रु मह्यौ ले ढोरत चोरी माखन खात ॥ गोपी सब मिलि पकरति तुमको तुम छुड़ाय करि भागत । सूर श्याम नित प्रति यह लीला देखि देखि मन लागत ॥ * १९१ ॥ * ॥ राग रामकली ॥ * यह कछु नाहिन नेह नयो । मधुप माधो सों जु यह ब्रज बिधिते पहिले भयो ॥ बीज

मन माखी मदन मनु आल बाल वयो । प्रेम पैं सींचो पहिलही रूप रति वस दयो ॥ इते श्रम तन श्याम सुन्दर बिरवा बिमल बाढ्यौ । निरखत श्याम सुन्दर सन मोहन बिन आनंद उरतें काढ्यौ ॥ कंवल तजि तन रचत नाही आकको आमोद । सूर जीवन बचन परसत बिन गोपाल बिनोद ॥ १ ॥ राग बिहाग ॥ निठुर माई या मधुबन के लोग । बेग पठइ दे श्याम को अब सब ब्रज विरह वियोग । हम जानत तुम ऐसी करोगे प्रीत करि किधों जोग । सूर दास स्वामि तुम्हरे मिलन को कब मिलि यह संजोग ॥ २ ॥ राग परज ॥ पियरी श्याम वियोगी मधुकररे । श्याम सुंदर मधु बन को सिधारे अंत बटाउ लोग मधुकर रे ॥ एक दिन हरि हम क्रीडा करतें अवलिखि पठए जोग । बिछुरन भए मिलन कब होयहैं कित हम कित वह लोग ॥ सूरदास प्रभुतुहरे दरश को नदिया नाव संजोग । ३ ॥ राग नट ॥ ऊधो कब आइहै नंद लाल हेरत पंथ बहुत दिन बीते सब ब्रज बाल बिहाल ॥ घेर लियो चहुं ओर प्रेम बस पूछत ग्वालनि ग्वाल । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को फेरि करिहैं प्रति पाल ॥ ४ ॥ राग परज कलिंगरा ॥ सुन लीज्यौ नाथ संदेसवा ब्रजवासिन ऐसी कही । बालापन को नेंह छाँड़ि के करि कुब्जा सें प्रीति नही ॥ नित उठि रार करत हरि हमसों जब हम बेचन जात दही । अबतो बीच परो बरषन को यह अंखियां देख बिलोक रही ॥ कब सुनियत महाराज भए हैं लोटत कंचन कोट मही । वे दिन बिसरि गए सुनि ऊधो घर घर मांगत छाच मही ॥ वे तो हैं तीन लोक के ठाकुर ब्रज जुवतिन शिर पेच दही । सूर दास दुख कासों कहिये ओछे को प्रीति कोलों निबही ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ कैसें धीरज धरू ऊधो तुम जोग सिखावन आए । एक सभैं हरि अपने करनन करन फूल पहराए ॥ ता कारन माटी के मुद्रा मधुकर हाथ पठाए । एक बेर वृंदावन कुंजन शिर पे केस बनाए ॥ यह औसर सेली मृगछाला ब्रह्म ज्ञान दरशाए । सरश्वास सों यों जाय कहियो ब्रजन भक्ति बिसराए । विनदेखे कल परतन एक पल सांवर रूप बिकाए ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ जा जारे मधुकर दूर दूर । रंग रूप एकही मूरत मेरो मन कियो चूर चूर ॥ जब लग गजर जतव लग निकट ह्वै काज सरे पैं रहे घूर । सूर श्याम अपने गरज के कलियन रस ले घूर घूर ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ जबतें सुंदर वदन निहारो । तादिन तें मधुकर गन अटक्यो बहुत करी निकरै न निकारो ॥ मात पिता पति बंधु सजन जनि तनहं को कहिबो सिधारो । रही न लोकलाज मुख निरखत दुसह क्रोध फीको करि डारो ह्वैवो होय सो होय कर्म बस अब जीकों सब शोच निवारो ॥ दासी भई दास सूरज प्रभु भलो पोच अपनों न विचारो ॥ ८ ॥ राग परज तालजत ॥ नयना मेरे नैननि मांझ समाने ॥ टारे टरत एक रस मधु कर प्रेम प्रीति अरुझाने ॥ मन बुधि थकित भई सब उनको अनेक जतन बहु ठाने ॥ बिंदे फन्द विहंग बापुरे तें सब भये है बिराने ॥ मनबच क्रम पलकनि के अन्तर जग वस होत सयाने ॥ सब हरि लये सूर प्रभु बस करि जिहि बीते सो जाने ॥ ९ ॥ राग परज ॥ ब्रज जन सकल श्याम व्रत धारी ॥ बिन गोपाल और जेहि भावत ते कहिये बिभचारी ॥ जोग मोट शिर बोझ आनि तुम कत धों धोख

उतारी॥ इतनिक दूरि जाउ चलि काशी जहां विकृति है प्यारी॥ यह संदेस सुनि लिये तुम्हारे॥ अति मंडली अनन्य हमारी॥ ज्यों रस रीति कही हरि हमसों सो क्योंजात बिसारी॥ महा मुक्ति कोऊ नहि वांछे कृष्ण पदारथ चारी॥ सूर दास स्वामी मन मोहन मूरति की बलि हारी॥ १०॥ राग परज॥ यह बात हमारे कौन सुनै॥ जिनि चाख्यो हरि रूप सुरति करि भूलि अंगारनि कों चुनै॥ यहं सेंवन कौ ठौर न देखत तातें सुनि मनमे गुनै॥ के शुक बिरह बयार पौनको बैठे ठानेको धुनै॥ तब उन भांतिनि लाड़ लड़ाये अब बुझिये न यह उनै॥ बालि छांड़ि के सूर हमारे अब नर बाय कों लूनै॥ ११॥ राग परज॥ ऊधो सूधे नेकु निहारो॥ हम अबलनि कों सिखवन आए सुनौ सयान तिहारो॥ निर्गुण कह्यो कहा कहियत है तुम निर्गुण अति भारी॥ सेवति सगुण श्याम सुन्दर कों मुक्ति लई हम चारी॥ हम सालोक्य स्वरूप सयुज्या रहत समीप सहाई॥ सो तजि कहति और की और तुम अलि बड़े अडाई॥ हम मूरख तुम बचतुरहो बहुत कहा कहिये॥ बेही काज सदा भटकतहै अब मारग गहिये॥ अहो अज्ञान ज्ञान उपदेशत ज्ञान रूप हमही॥ निशि दिन ध्यान सूर प्रभु कौ अलि देखत जित तितही॥ १२॥ राग परज॥ कहा रस बरि आये की प्रीति॥ जो न गड़े उर अन्तर ऊधो भुस ऊपर की भीति॥ नयन बैन अरु हृदौ मिलत सब बांटत प्रेम प्रतीति। ए दोउ हंस होत जब सनमुख लेति नहीं मन जीति॥ ऊधो यह संदेसो कहियो मधुबन कैसी रीति॥ सूर दास सोइ जन जाने गई है तिनहि में बीति॥ १३॥ राग परज॥ मधुकर केहि के मन गानै॥ जिन के एक अनन्य व्रत सूझै क्यों दूजौ उरआनै॥ यहते योग स्वाद अलि ऐसो या बिद्या खरिसानै॥ कैसें धों यह बात पतिव्रता सुनि पट पुरुष बिरानै॥ जैसें खग गण ताकि बधिक दृग कर कोदण्ड गहि ताने॥ हिंसा करि प्रेषत तन मन सुख शिर अपराध न आने॥ बड़ो बिचित्र कुब्जा रंग रंगे हम निर्गुण लखि ठाने। सूर श्याम रस गुण रति मानी मधुप प्रान जिन छाने॥ १४॥ राग परज॥ ऊधो काहे को भगत कहावत॥ जो पै जोग लिखिपठयो हमकौ तुमउ न भस्म चढ़ावत॥ सिंगी मुद्रा भस्म अधारी हमहि कों कहा सिखावत॥ कुब्जा अधिक श्याम को प्यारी ताहि नहीं पहिरावत॥ यह तो हमकों तबही न सिखयो जबतें गाय चरावत॥ सूर दास प्रभु कों कहियो अब लिखि लिखि कहा पठावत॥ १५॥ राग परज॥ ऊधो अब ब्रज पहुंचे जाई॥ तबकी कथा कृपा करि कहिये हम सुनि हैं मन लाई॥ बाबा नन्द जशोदा मैया मिले कबन हित आई॥ कबहूं सुरति करति माखन की किधौं रहे बिसराई॥ गोप सखा दधि भात खात बन अरु चाखते चखाई॥ गोउ बच्छ मुरली सुनि उमडत अबहि रकहत किहि भाई॥ गोपिन गृह ब्यौहार बिसारे मुख सनमुख सुख पाई॥ पलक ओट निमिषन अन खाती यह सुख कहां समाई॥ एक सखी उन प ज्यों राधौ लेति मनै जु चुराई॥ सूर श्याम यह बार बार कहि मन ही मन पछिताई॥ १६॥ राग परज॥ भरि भरि लेत लोचन नीर॥ तुम बिना ब्रज नाथ बिरहिनि बिरह खेट अधीर॥ कमल गन उर आनि राखत छिरकि चन्दन चीर॥ जाल मन शशि किरन रोकत मलय

मन्द समीर ॥ हो यहां तुम पास पठयो जानि मनमथ पीर । सूरदास सुजान स्वामी मति मिलि हरो जिय पीर ॥ १७ ॥ राग परज ॥ नयन घन घटत न एक घरी । कबहुं न मिटत सदा या पावस ब्रज लगि रहत झरी ॥ बिरह इन्द्र बरषत निशि बासर यहि अधि अधिक करी । ऊरध स्वास समीर ते जल जराउरी उमगि भरी ॥ बूढति मुजे रोम अंबा द्रुम अरु कुच ऊच धरी । चलि न थकित पद पथिक रहे थकि चन्दन कीच खरी ॥ सब ऋतु मिटी एक भई ब्रज महि यहि विधि उलटि धरी । सूर दास प्रभु तुम्हरे बिछुरे मति मरजाद टरी ॥ १८ ॥ राग परज ॥ सुनि ऊधो मोहि नेक न बिसरत वे ब्रज बासी लोग । तुम उनकों कछु भलो न कीनों निशि दिन दियो बियोग ॥ यदपि कनक मनि रची द्वारिका सकल राज सुख भोग । तदपि कहूं यह हरत बंसी बट बन जमुना संयोग ॥ वे उत रहत प्रेम अब लम्बन इतते पठयो जोग । सूर उसास छांडि भरि लोचन बह्यौ बिरह जब सोग ॥ १९ ॥ राग धनाश्री ॥ है कोई इतनी भांति दिखावै । किङ्किनि शब्द चमन धुनु रुनु झुनु ठुनक ठुनक गृह आवै ॥ कछुक विलास बदन की शोभा अरुन कोटि गति पावै । कञ्चन मुकुट कण्ठ मुक्ता वलि मोर पंख छवि छावै ॥ धूसर धूरि अंग सग लीने ग्वाल बाल संग लावै । सूर दास प्रभु कहत जशोदा भाग बडे तें पावै ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ पंथी इतनी कहियो बात । तुम बिन यहां कुंवर बर मेरे होत जिते उतपात ॥ बकी अघासुर टरत न टारे बालक बनहि न जात । ब्रज पंजरी रूंधि मनौ राखे निकसनकों अकुलात ॥ गोपी गाय सकल लघु दीरघ पीत बरन छबि गात । परम अनाथ देखियत तुम बिन केहि अब लंबिये तात ॥ कान्ह कान्ह के टेरत तब धौं अब कैसें जिय मानत । यह व्यवहार आजु लों है ब्रज कपट नाट छल ठानत ॥ दशहू दिशि तें उदित होत है दावानल को कोट । आखे मूंदि रहत सनमुख ह्वै नाम कवच दै ओट ॥ ए सब दुष्ट गते अब जीजे भये एकही पोट । सत्वर सूर सहाय करो अब समुझि पुरातन होट ॥ २१ ॥ राग धनाश्री ॥ तुम को हौं कहं ते आए हो । जानत हो उन मान मनों तो तुम जदुनाथ पठाए हो ॥ वेसेहि वरन वसन तन वैसे वे भूषण सजि लाए हो । ले सर्बस, सङ्ग सखा सिधारे अवका पर पहिराए हो ॥ अहो मधुप एकै मन सबके सुतो वहां ले छाए हो । अब यह कौन सयान बजुरि ब्रज आकारन उठि आए हो मधुबन की माननी मनोहर तहंहि जाउ जहं भाए हो । सूर जहां लों श्याम गातहैं जानि भले करि पाए हो ॥ २२ ॥ राग धनाश्री ॥ कोउ वैसे ही अनुहारि । मधुबनतें आवत सखी री देखौ नयन निहारि ॥ माथे मोर मुकुट कटि किङ्किनि पीत बसन रुचि कारि । वैसेहि बात कहत सारथि सों ब्रजजन भुजा पसारि ॥ इतनी बात विचारत अंतर मनुबीते जुग चारि । सूरदास प्रभु बिनु सब ऐसी जैसें मीन बिनु बारि ॥ २३ ॥ राग परज ॥ हौं यहं तेरेहि कारन आयो । तेरी सौं सुन जननि जसोदा हठि गोपाल पठायो । कहा भयो जो लोग कहत हैं दुखित जु माता जायो । खान पान परि धान राज सुख तेही खाड़ खड़ायो । इतो हमारो राज द्वारिका मोजो कछू न भायो । जब जब सुरति होतवहि हित की बिछुरि बच्छ ज्यों धायो । बूझे समाचार सुधि पाई बहुतक

सुख दिखरायो। चलहु न कुटंब समेत सूर नद नन्दन उहाँ बुलायो ॥ २४ ॥ राग नट ॥ ऊधो कहा करों ले पाती ॥ जबहि न देखों गोपाल लाल कोबिरह जरावत छाती। जानत हो तुम मानत नाहीं तुमरो श्याम संघाती। निमिष निमिष में बिसरत नाहीं सरद सुहाई राती। बहु पाती ले जाहु द्वारिका जहं बसे श्याम सुजाती। मन हमरो ले गए उहां को काम कठिन सुर घाती ॥ सूर दास प्रभु कह चाहत हैं कोटिक बात सुहाती। एक बेर मुख बहुरि देखावहु रहे चरण रज राती ॥ २५ ॥ राग बिलावल ॥ गोकुल जीवन गोबिंद मेरे। जाहि लागि हो रहो जु तनु मनु दुख भूलत भटकत मन हेरे। जाके गर्भवदों नहि सुर पति रच्यों जु दिवस सातलों घेरे। ब्रज को नाथ गोवर्द्धन धारी सुभग भुजन नख रेख जु नेरे। जाको जस ऋषि गरग बखान्यों कहत निगम निजुते ए जु डेरे। सो अब सूर सहित संकरषन पाये जतन। घनेरे ॥ २६ ॥ राग नट ॥ बहुत दिन बीते हरि बिमुखही। दरशनहीन दीन दुःखित ह्वै बहु विधि बिपति सही। रजनी ओस प्रेम अति पीड़त गृह बन धरत न धीर। पग पग मग जोवत उर अन्तर भीजत नयनन नीर। अबलों आस अवधि बदि गिनि गिनि राखति हैं घटवास। सूर दास प्रभु प्रीति पुरातन मिलहु पिया मन आस। २७ ॥ राग धनाश्री ॥ मोहन ब्रज तज गए जु काहू। सुन्दर श्याम कमल दल लोचन क्यौं बिसरै निधि आहू। कहा करों कृत कर्म आपनो कै रही कित जाहू। दुष्ट अति अक्रूर आयो ले गयो रथ चाहू। बदन करहिं जु ठाढि बनिता करति अति दुख डाहू। सूर के प्रभु कहि जशोदा कहां पाई पाहू ॥ २८ ॥ राग नट ॥ हम पर ऐसो जोग न होई। सुन सुन वचन तिहारो ऊधो नयना आवत रोई। कुन्तल कुटिल मुकट कुण्डलछबि रही रही अति पोई। सूर श्याम बिन प्रान रहे नहिं कोट करो किनि कोई ॥ २९ ॥ ऊधो जोग कहो किधों हांसी। जबतें आय हमारे ब्रज में डारि प्रेम की फांसी। तुम हो बड़े जोग के पालक संग लिए कुजासी ॥ सूर दास प्रभु तुम्हरे दरश को करवट लीज्यों कासी ॥ ३० ॥ राग नट ॥ बिनय सुनो एक मोरीरे। जादिनतें बिछुरे नद नन्दन काम कटक तन घेरीरे। देखो हृदय बिचार तुमहि अब प्रीति रीति सब केरी ॥ जहं जोकी निधि तहं सब सोपै ज्यों मृग नाद अहेरी। बेद सभास रतन रस बसतें ससि बिन रैन अंधेरी। सूर दास स्वामी कब आवें बसीकरन ब्रज फेरी ॥ ३१ ॥ राग नट ॥ बिनती सुनहु हमारी। जादिन तें बिछुरे नद नन्दन काम अनल अति जारी। हमको जोग सिखावन ऊधो पठए आप मुरारी। डांडे ऊपर लोन लगावत कहतन बात बिचारी। हमसों प्रीति भई सपने की कौनी दारुण नारी। इन्ह बातन निहचै कुबिजा पति भए हैं श्याम बिहारी। अब ऊधो कछु कहत न आवै प्रेम घटा अति भारी। लिख्यौ परम पद सूर श्याम सब गोकुल दीन दुखारी ॥ ३२ ॥ राग नट ॥ ऊधो धन तुम्हरो व्यवहार। धन वे ठाकुर धन वे सेवक धन तुम वर्तनहार। आँमको काट बबूर लगावत चन्दनकी करवार। साहको पकर चोरको छोड़त चुगलन को इतवार। सूर श्याम कैसे निमहै गी अंध धुंध सरकार ॥ ३३ ॥

राग नट ॥ ऊधो तुम कहत कौन की बातें । सुनि ऊधो हम समुझति नाही फिरि पूछत हैं तातें । को नृप भयो कंस केहि मारयो को बसुदेव सुत आहि । इहां जसुदा सुत परम मनोहर जीजतु है मुख चाहि । निशि दिन रहत धेनु बन चारत गोप सखन के संग । बासर गतरजनी मुख आवत करत नयन गति पंग । को पूरन अबिगत अबिनासी के विधि वेद अपार । सूर वृथा कत बाद बढ़ावत इहि ब्रज नन्दकुमार ॥ ३४ ॥ राग केदारो ॥ कमल नयन की ओधि सिरानी अजहुं भए ना आवन । निशि बासर हों सगुन मनावति मिलहु कृपा करि भावन । सबै सन्देस बिदेशी आए दक्ष पखेरू छावन । मानो बिरह बिबाहन आयो क्रीडा मंगल गावन। तामहि मोर घटा घन गरजहिं संग मिले तिहि सांवन। भर भादौं बैशाइ घोष पति नारिन दुख बिसरावन । बिन देखे कल परे न एक छिन वह सूरत चित चावन । सूर दास प्रभु ठानी ऐसी बैरी कंस ज्यों रावन ॥ ३५ ॥ राग मलार ॥ शिखर चढि शिखी सु टेरि सुनायो । बिरहिनि सावधान ह्वै रहियो सजि पावस दल आयो । बादर बान तपावत साजो चढि के चटकि नचायो । मदन सुभट कर पंचवान लै ब्रज सनमुख ह्वै धायो । पिक चातक खग मृग जे हंसगण सब मिलि मारू गायो । जानि बिदेश गए हरि तातें अबलनि त्रास देखायो । मदन मोहन बिन देखे सजनी घरि पल छिन न सुहायो । सूर दास स्वामी गुण पहिले सुमिरि प्रान बिरमायो ॥ ३६ ॥ राग नट ॥ अबतो वे लागे दिन जान । सुमिरत प्रीति लाज लागतु है उर भयो कूप समान । लोचन रहित बदन बिनु देखे बचन सुनो बिनु कान । हिरदे रहितु पाव नूपुरसे छीतत तन मन प्रान। वेजश मेट गए नदनन्दन बिरह सृष्टि ब्रज आन। बिधि बस हरे बहुरि फिरि कीन्हें वे सिशु वेद बखान । जबतें गये मधु पुरी मोहन विषय खान अरु पान । यहतें सूर यहै जो भावति हो बसिये अनुमान ॥ ३७ ॥ राग नट ॥ पाती सखि मधु बनतें आई । सुन्दर श्याम कान्ह लिख पठई आय सुनोरी माई । अपने अपने गृहतें दौरीं ले पाती उर लाई । नयननि नीर निमिषि नहिं मंडित प्रेम कथा न बुझाई । कहा करौं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई । सूर दास प्रभु कौन चूकतें श्याम सुरत बिसराई ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ ऊधो कहत सन्देसो नीको । हित उपदेश करन ब्रज आए लिये मतो हरि जीको । जोग जुगति निरगुन उपदेशत ज्ञान सुनाय यतीको । बिरह व्याधि औषद नीकी ज्यों आमवात है पथ्य मही को । हमको जोग भोग कुबरी को ज्ञान दृढाए जीको । सूर श्याम बिन और न जाने यह निश्चय है हीको ॥ ३९ ॥ राग नट ॥ तुमरी प्रीति उधो पूर्व जन्म की अबहु भए मेरे तनहु के गरजी । बहुत दिननितें बिरम रहे हो संगते बिछोहि हमहिं गए बरजी । जादिनतें तुम प्रीति करीही घटति न बढति तोलि लेहु नरजी ॥ सूर दास प्रभु तुमरे मिलन बिन तन यों होत बिरह भयो दरदी ॥ ३९ ॥ राग बिहाग ॥ कृष्ण कृष्ण करत डोलूं कृष्ण कहां मैं पाउं । नहि बिधना मोहि पंख दीने उडि के द्वारका मैं जाउं ॥ ऊधो जु तुम बेग जाओ श्यामहि बेग ले आउं ॥ सूर

के प्रभु दरश दीज्यौ तेरी कहाय अब कौन की कहाउं ॥ ४० ॥ राग बिहागरो ॥ जाओ जाओ मेरे आगे तें सें पति राखों ऊधो तेरी । काहेको अब रोस दिवावत देखति आंख बरत है मेरी ॥ तुम ज्यौ कहत हो संग है गोविंद कहियत है कुब्जा उन चेरी । दोऊ मिले तैसेई तैसे वे अहीर वह कंस की चेरी ॥ तुम सारिखे बसीठ पठाए कहिये कहा बुद्धि उन केरी । सूर श्याम सुधि बिसरि गई वह गावत है ग्वालन संग हेरी ॥ ४१ ॥ सिन्धु ॥ ऊधो इतनो मोहि सतावति । कारी घटा देखि बादर की दामिनि चमकि डरावति ॥ हेम सुता पतिको रिपु ब्यापे दधि सुत रथन चलावत । अम्बु खण्डनको शब्द सुनतही चित चकित उठि धावत ॥ कंचन पुर पतिको जो भ्राता ते सब बलहि न आवत । शंभू सुत को जो वाहन है कुहु के असल सलावत ॥ जद्यपि भूषन अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास बिरहिनि हति ब्याकुल खग पति चढ़ि किन आवत ॥ ४२ ॥ सिन्धु ॥ ऊधो यह हित लागत काहे । निशि दिन नयन तपति हरि कहियो तुम जु कहत हृद माहे ॥ पलकन परत चहूं दिशि चितवत बिरहा नल के दांहे । इतनी आरति काहे न मिलही जो पर श्याम यहां है । पालागों ऐसेहि रहन दे अब न आस जल थाहे ॥ जिनि बोरहु सर्यु न समुद्र में पुनि पाई बिन चाहे । उपजि परी जासों जिहिं अंग संग सो अंग बने निबाहै । सूर कहा लै करे पपीहा एते सर सरिता है ॥ ४३ ॥ सिन्धु ॥ वैसी सारंग करहि लिये । सारंग कहत सुनत वे सारंग सारंग मनहिं दिये ॥ सारंग थकी बैठि यह सारंग सारंग बिकल हिये । सारंग धुकि सारंग परि सारंग सारंग क्रोध किये ॥ सारंग है भुज करहि बिराजत सारंग रूप बिये । सूरज दास मिलहि बे सारंग तो परि सुफल जिये ॥ ४४ ॥ सिन्धु ॥ देखो भाई श्याम सुरति अब आवै । दादुर मोर कोकिला बोलैं पावस अगम जनावै ॥ देखि घटा घन चांपि दामिनी मदन सिंगार बनावै बिरहिनि देखि अनाथ नाथ बिन चढ़ि चढ़ि ब्रज पर आवै ॥ कासों कहों जाय कोइ हरिपै यह संदेस सुनावै । सूर दास प्रभु मिलउ कृपा करि ब्रज बनिता सचुपावै ॥ ४५ ॥ ॥ सिन्धु ॥ श्याम सिधारे कौनहि देश । तिनको कठिन करे जो सखिरी जिनके पियपरदेश ॥ उन ऊधो कछु भली न कीनी कौन जगत को बेश । छिन भरि प्रान रहत नहि हरि बिन निश दिन अधिक अंदेश ॥ अतिही निठुर पाति नहिं पठई काहू हाथ संदेश । सूरदास प्रभु यह उपजतु है धरिये जोगनि बेश ॥ ४६ ॥ सिंधु ॥ हरि बिन बे सुख बहुरि कहां । जदपि नयन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां ॥ मुख मुरली शिर मोर पंख बने अरु घुंघचिन को हार । आगे धेनु रेनु तन मंडित चितवनि तिरछी चार ॥ रात दिवस अंग अंग अपने हित हंसि मिलि खेलत खात । सूर देखि वह प्रभुता उनकी कही न आवै बात ॥ ४७ ॥ सिंधु ॥ ऐसो कोऊ माहिन सजनी जो मोहनहि मिलावै । एकै बार बहुरि नंदनंदन को यहलों लै आवै ॥ पाइन परि बिनती करि मेरी यह सब दशा सुनावै । निशि निकुंज सुख केलि परम रुचि रास रंग की सुरति करावै ॥ औरकोनहूं सात की सकुचनि सब बिधि को उपजावै । पुनि पुनि सूर कहै हरिसों लोचन अरति बुझावै ॥ ४८ ॥ बटाऊ होहि न काके मीत । संग रहत

शिर मेलि ठगोरी हरत अचानक चीत ॥ मोहै नयन रूप दरशन के श्रवन मुरलि को गीत । देखतही हरिलेजु सिधारे बांधि पिछोरी प्रीति ॥ यहि तें झुकति यहै मग चितवति सुख नु भए बिपरीति । सूरदास बरु मिलउ पियारे आस तजी परतीति ॥ ६९ हमैंतो इतनेही सों काज । कैसे हू बस कमल नयन को ब्रज ले आवहि आज ॥ और अनेक उपाय तुम्हारे सकल करहु सुख राज । कैसे है निबहै अबलन में कठिन जोग के साज ॥ नख सिख सुभग श्याम घन तनको दरशन हरति विषाद्यु । सूरदास मधुर कौन विधि वदन विलोकनि बाद्यु ॥ ५० ॥ ऊधो हम अज्ञान अति भोरी । सिखवो जाय जोग की बातें नागरि नवल किशोरी ॥ कंचन को मृगकोने देख्यौ किनि लै बांधे डोरी । कहिधों मधुप वारि मथि माखन कोने भरी कमोरी ॥ बिनही भीति चित्र किन लेखो किनि नभ घाल्यौ घोरी । कहिधों कौने काढ्यो कनिका ज्यो हठि तुसी पछोरी ॥ सब विधि पूरन ज्ञान तुम्हारो हम अबला मति भोरी । चाहत सूर श्याम मुखि पूरन अखियां चिबिध चकोरी ॥ ५१ ॥ हरि सुत सुत हरि केतन आहि । यह को कहे कौन की बातें ज्ञान ध्यान सुमरो के काहि ॥ को दुख मरै तासु जेंवती को को जिनि कंस हते ॥ हमरेतो गोपति सुत अधिपति बनिता औरनते ॥ मोरज अंधरूप रुचिकारी चितेचिते हरि हेात । कबहूं के करनी समेतिजो नेक न मान के सोत ॥ तारिपु समें संग मिसु लीन्हे आवत है तन घोष । सूरदास स्वामी मन मोहन कत उपजावत दोष ॥ ५२ ॥ जल बिन तरंग भीति बिन लेखन बिन चेतहि चतुराई । या ब्रज में कछु नहीं चाह है ऊधो जानि सुनाई ॥ मन चुभि रही माधुरी मूरति अंग अंग उर झाई सुन्दर श्याम कमल दल लोचन सूरदास सुखदाई ॥ ५३ ॥ सब खोटे मधुवन के लोग । जिनि संग श्याम सुन्दर सखि सिखए सबही एकहि जोग ॥ आए हैं कहियत ब्रज ऊधों जुवतिन को ले जोग । आसन ध्यान नयन मूंदे सखि कैसें कटे वियोग ॥ हम अहीरि इतनी कहा जानै कूकपिसों संयोग । सूर सुबैद कहांलों कीजे कहे न जाने रोग ॥ ५४ ॥ माईरी मधुवन की यह रीति । नीरस जानि तजत छिन भीतर नवल कुसुम रस प्रीति ॥ तिनके संगो है कैतव चित क्यों आवै परतीति । हमहिं छांडि विरमहिं कुब्जा संग आए न रण रिपु जीति ॥ जिन पतियाहु मधुर सुनि बातें लागे करन स भीति । ऊधो जिनि मधुवन तन देखौ । कछुक दिवस औरो ब्रज वसिके जनम सुफल करि लेखौ ॥ कहा जाय लै हो वहां ऊधो जामें राजकि बातें । बालकिशोर कुमार निरखि सुख घर घर मांखन खाते ॥ तुम निरगुन निज कहत निरंतर निगम नेति यह नीति । प्रकट रूप मद मत्त नयनको छाड़ो दरशन प्रीति ॥ शिवविरंच सनकादिक मुनि मन संतत जाको ध्यावत । सूर दास प्रभु गोप सुतन संग गोधन वृन्द चरावत ॥ ५५ ॥ * ॥ राग धनाश्री ॥ * ॥ उद्धव को उपदेश सुनो इज नागरी । रूप शील लावण्य सबै गुन आगरी ॥ प्रेमध्वजा रस रूपिनी उपजावन सुख पुंज । सुन्दर श्याम विलासनी नव वृन्दावन कुंज ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ १ ॥ कहन श्याम सन्देस एक मैं तुम पे आयो । कहन समै संकेत कछू अवसर नहि पायो ॥ शोचतही मनमें रह्यौ कब पाऊं यक ठाउं । कहि सन्देस नंद

लाल कौ बहुरि मधु पुरी जाऊं ॥ सुनो ब्रजनागरी ॥ २॥ सुनत श्यामको नाम ग्रामगृहकी सुधि भूली । भरि अनन्द रस हृदय प्रेम बेली द्रुम फूली ॥ पुलकि रोम सब अंग गये भरि आये जल नयन । कंठ घुटे गद गद गिरा बोले जात न बैन ॥ व्यवस्था प्रेम की ॥ ॥ ३ ॥ अर्द्धासन बैठारि बहुरि परि करमा दीन्ही । श्याम सखा निज जानि बहुरि सेवा बहु कीन्ही ॥ बूझति सुधि नंद लाल की बिहसत मुख ब्रज बाल । नीके हैं बल वीर जू बोलति बचन रसाल ॥ सखा सुन श्यामके ॥ ४ ॥ कुशल श्याम अरु रामकुशल संगी सब उनके । यदुकुल सिगरे कुशल परम आनंद है उनके ॥ बूझन ब्रज कुशलात को आयो तुम्हरे तीर । मिलि हैं थोरे दिवस में जिनि जिय होहु अधीर ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ ५ ॥ सुनि मोहन संदेस रूप सुमिरण ह्वैआयो । पुलकित आनन कमल अंग आवेष जनायो ॥ विहवल ह्वै धरनी परी ब्रज बनिता मुरझाय । दै जल छोट प्रबोधहीं उद्धव बात सुनाय ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ ६ ॥ वे तुमतें नहि दूरि ज्ञान की आंखि न देखौ । अखिल बिश्व भरि पूरि ब्रह्म सब रूप बिशेखौ ॥ लोह दारु पाषाण में जल थल महि आकाश । सचर अचर बर्त्तत सबै ज्योतिहि रूप प्रकाश ॥ सुनो ब्रजनागरी । ॥ ७ ॥ कौन ब्रह्म को जाति ज्ञान कासौ कहिये ऊधो । हमरे सुन्दर श्याम प्रेम को मारग सूधो ॥ नयन बैन श्रुति नासिका मोहन रूप लखाय । सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम ठगोरी लाय ॥ सखा सुन श्याम के ॥ ८ यह सब सगुण उपाधि रूप निर्गुण है उन को । निर बिकार निर लेप लगत नहि तीनो गुणको ॥ हाथन पायन नासिका नयन बैननहि कान । अच्युत ज्योति प्रकाशहीं सकल बिश्वको प्राण ॥ सुनो ब्रज नागरी ९ ॥ जो मुख नाहिन इतो कहोकिन माखन खायो । पांयन बिनगो संग कहो वन वन को धायो ॥ आँखिन में अंजन दयो गोवर्द्धन लयो हाथ । नंद जशोदा पूत है कुंवर कान्ह ब्रजनाथ ॥ सखा सुन श्याम के ॥ १० ॥ जाहि कहत तुम कान्ह ताहि कोउ पिता न माता । अखिल अखंड ब्रह्मण्ड बिश्व उनही में जाता ॥ लीला गुण अवतार है धरि आये तन श्याम । जोग जुगतही पोइये परब्रह्म पुर धाम ॥ सुनो ब्रजनागरी ॥ ११ ॥ ताहि बतावो जोग योग्य ऊधो तहां जावो । प्रेम सहित हम पास श्याम सुंदर गुन गावो ॥ नयन बैन मन प्राण में मोहन गुण भरि पूरि । प्रेम पियूषै छोडिकै कौन समेटे धूरि ॥ सखा सुन श्याम के ॥ १२ ॥ धूर बुरी जो होय ईश को शीश चढ़ावै । धूरि छेच मे आय कर्म करि हरि पद पावै ॥ धूरिहि तें यह तन भयो धूरिहि तें ब्रह्मांण्ड । लोक चतुर्दश धूरितें सप्त द्वीप नव खण्ड ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ १३ ॥ कर्म धूरि की बात कर्म अधिकारी जाने । कर्म धूरि को आनि प्रेम अमृत में साने ॥ तबही लों सब कर्म है जब लगि हरि उर नाहि । कर्म बध्य सब बिश्व के जीव बिमुखहै जाहि ॥ सखा सुन श्याम के ॥ १४ ॥ तुमनिन्दत कह कर्म कर्म तें सद गति होई । कर्म रूपतें बली नाहि त्रिभुवन में कोई ॥ कर्महि तें उत पत्ति है कर्महि तें है नाश । कर्म किये तें मुक्ति है परब्रह्म पुर बास ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ १५ ॥ कर्म पाप अरु

पुण्य लोह सोना की बेरी । पांयन बंधन दोउ कोऊ मानौ बहु तेरी ॥ ऊंच कर्म ते स्वर्ग है नींच कर्म तें भोग । प्रेम बिनासब पचि मरैं विषय बासना रोग ॥ सखा सुन श्याम के ॥ १६ ॥ कर्म बुरे जो होंय जोग काहेको धारै । पद्मासन सब धारि रोकि इन्द्रिन को मारै ॥ ब्रह्म अगिन जरि शुद्ध ह्वै सिद्ध समाधि लगाय । लीनहोंय सायुज्य में जोतिहि जोति समाय ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ १७ ॥ योगी जोगै भजै भक्ति निरूपै जानै । प्रेम पियूषै प्रगट श्याम सुंदर उर आनै ॥ निगुण गुणहिजो पाइये लोग कहैं जो नांहि । घर के नागन पूजिही बांबी पूजन जांहि ॥ सखा सुन श्याम के ॥ १८ ॥ जो उनके गुण होय बेदक्यों नेत बखानै। निर्गुण सगुण जुआतमा रचि ऊपर सुख सानै ॥ बेद पुराणनि खोजि कै पायो किनहुन एक । गुणहीं के गुण होहि ते कहै। अकाश कि टेक ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ १९ ॥ जो उनके गुण नांहि और गुण भये कहांते । बीज बिना तरु जमै मोहि तुम कहो कहां ते ॥ वा गुणकी परछाहरी माया दर्पण बीच ॥ गुणतें गुण न्यारे भये अमल बारि जल कीच ॥ सखा सुन श्याम के ॥ २० ॥ माया के गुण और और हरिके गुण जानो । उन गुण को इन मांहि आनि काहे को सानो ॥ जाके गुण अरु रूप को जानन पायो भेद । तातें निर्गुण रूप को वदत उपनिषद बेद । सुनो ब्रज नागरी ॥ २१ ॥ बेदहु हरिके रूप स्वास मुखतें जोनिसरै । कर्म क्रिया आशक्त सबै पिछली सुधि विसरै ॥ कर्म मध्य ढूंढै सबै किनहुन पायो देख । कर्म सहित ही पाइये ताते प्रेम बिशेख ॥ सखा सुन श्याम के ॥ २२ ॥ प्रेम जो कोऊ बस्तु रूप देखेलौ लागै । बस्तु दृष्टि विनका है कहां प्रेमी अनुरागै ॥ तरनि चंद्र के रूप को गुण नहि पायो जान । तौ उनको कह जानिये गुणा तीत भगवान ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ ॥ २३ ॥ तरनि आकाश प्रकाश तेज मय रह्यो दुराई । दिव्य दृष्टिही रूप भले वह देखो जाई ॥ जिनको वे आखें नहीं देखें कब वह रूप । तिन्है बिलास क्यों उपजे जे परे कर्म के कूप ॥ सखा सुन श्याम के ॥ २४ ॥ जब करिये नित कर्म भक्तिहू जामें आई । कर्म रूप कातें कहौ कोपै छूट्यो जाई ॥ क्रम क्रम कर्म सब किये कर्म ना शुद्ध जाय । तबै आत्मनि कर्म करि निर्गुण ब्रह्म समाय ॥ सुनो ब्रजनागरी ॥ २५ ॥ जो उनके नहिं कर्म कर्म बंधन है आवै । तौ निर्गुण है बस्तु माच परमाणु बतावै ॥ जो उनको पर माण है तौ प्रभुता कछु नांहि । निर्गुण भये अतीतके सगुण कमल जग मांहि ॥ सखा सुन श्याम के ॥ २६ ॥ जो गुण आवै दृष्टि मांझ नहिं ईश्वर है सारे । वे सब हुन तें वासु देव अच्युतहैं प्यारे ॥ इंद्री दृष्टि बिकारतें रहत अधोक्षज जोति । शुद्ध सरूपी जान जिय तृप्ति जुता तें होति ॥ सुनो ब्रज नागरी ॥ २७ ॥ नास्तिक जेहैं लोग कहा जानैं हित रूपे । प्रकट भानु को छांडिगहै परछाँहीं धूपै ॥ हमरे तुम्हरे रूपही और न कछू सोहाय । ज्यों करतल आभाश को कोटिक ब्रह्म दिखाय ॥ सखा सुन श्याम के ॥ २८ ॥ ऐसे में नंद लाल रूप नयनन को आगे । आय गये छबि छाय बने पियरे उर बागे ॥ ऊधो सों मुख मोरि कही कछु उततें बात । प्रेम अमृत मुखतें स्रवत

अंबुज नयन चुवात । तरक रसरीति की ॥ २९ ॥ अहो नाथ श्रीनाथ और यदुनाथ गोसाईं नंदनंदन बिडरात फिरत तुम बिन सब गाईं ॥ काहेन फेरि कृपाल हो गो ग्वालन सुख देहु दुख निधि जलमें बूडहीं करि अवलंबन लेहु । निठुर ह्वै कहं रहे ॥ ३० ॥ कोऊ कहै अहो दरश देहु पुनि वे नव जावो । दुरि दुरि बनकी ओट कहा हियलोन लगावो । हमको तुम सेएकहैं तुमको हमसी कोरि । बहुत भांति के रावरे प्रीति न डारो तोरि । एकै वारही ॥ ३१ कोऊकहै अहो दरश देत फिरि लेत दुराई । यह छल विद्या कहो कौन पिय तुमहिं सिखाई हम पर बस आधीन हैं तातें बोलत दीन । जल बिन कहो कैसें जिये गहिरे जल की मीन ॥ विचारिय रावरे ॥ ३२ ॥ कोऊकहै अहो श्याम कहा इतराय गये हो । मथुरा कों अधिकार पाय महराज भये हो ॥ ऐसी कछु प्रभुता हुती जानत कोऊ नांहि अबला बध सुनि डरि गये बली डरे जग माहिं ॥ पराक्रम जानिकें ॥ ३३ ॥ कोऊकहै अहो श्याम चहत मारन जो ऐसे । गिरि गोवर्द्धन धारि करी रक्षा तुम कैसे ॥ व्याल अनल अरु ज्वाल तें राखि लये सब ठौर । अब बिरहा नल दहत हो हंसि हंसि नन्द किशोर ॥ चोरि चितलै गये ॥३४॥ कोऊ कहै ए निठुर इन्हैं पातक नहिं व्यापै । पाप पुण्य के करन हार ए आपहि आपै ॥ इनके निर्दय रूपमें नाहिन कछू बिचिच । पय पीवत प्राणन हरे पूतना बाल चरित्र ॥ मिच ए कौन के ॥ ३५ ॥ कोऊ कहै री आज नाहि आगें चलि आई । रामचन्द्र के धर्म रूपमेहीं निठुराई ॥ यज्ञ करावन जात है विश्वा मित्र समीप । मग में मारी ताडका रघुबंशी कुल दीप ॥ बालही रीति यह ॥ ॥ ३६ ॥ कोऊ कहै यह परम धर्म स्त्री जित पूरे । लक्ष लक्ष सन्धान धरै आयुध के रूरे ॥ सीता जूके कहेतें सूर्पनखा पै कोपि । छेदि सुअंग विरूप कै लोगन लज्जा लोपि कहां ताको कथा ॥ ३७ ॥ कोउ कहैरी सुनो और इनके गुण आली । बलि राजा पै गये भूमि मांगन बन माली ॥ मांगत बामन रूप ह्वै परवत भये अकाय । सत्य धर्म सब छांड़ि कै धरो पीठ पै पाय ॥ लोभ की नावय ॥ ३८ ॥ कोउ कहैरी कहा हिरण-कश्यपतें बिगरयो । प्रेम ढीठ प्रह्लाद पिता सनमुख ह्वै झगरयो ॥ सुत अपने को देतहो शिक्षा दृढ़ बनाय । इन वपु धरि नरसिंह कों नखन बिदारयो जाय ॥ विना अपराध हीं ॥ ३९ ॥ कोउ कहै इन परशु राम ह्वै माता मारी । फरसा कांधे धारि भूमि छत्रिन संहारी ॥ शोणित कुण्ड भराय कें पोषे अपने पिच । इनके निर्दय रूप में नाहि न कछू बिचिच ॥ बिलग कह मानिये ॥ ४० ॥ कोउ कहैरी कहा दोष शिशुपाल नरेश। व्याह करन कों गयो नृपति भीषम के देश ॥ दल बल जोरि बरात कों ठाढ़े हैं छबि बाढ़ि । इन छल करि दुलही हरी चुधित ग्रास मुख काढ़ि ॥ आपने स्वारथो ॥ ४१ ॥ यहि बिधि है आवेस परम प्रेमी अनुरागी । और रूप पिय चरित तहां तें देखन लागी रोम रोम हरि व्यापि के मोहन जिनके आय । जिनकों भूत भविष्य धों जानत कौन दुराय ॥ रंगीली प्रेम की ॥ ४२ ॥ देखत इनको प्रेम नेम ऊधो को भाज्यो । तिमिर भाव आवेश बहुत अपने मन लाज्यो ॥ मन में कहै रज पाय के लै माथे निज धारि।

हौं तो कृत कृत ह्वै रहौं त्रिभुवन आनन्द बारि ॥ बन्दना जोगए ॥ ४३ ॥ कबहूं केगुण गाय श्याम के इनहि रिझाऊं । तातें प्रेमा भक्ति श्याम सुन्दर की पाऊं ॥ जिहि बिधि मो पै रीझहीं सेा बिधि करों बनाय । तातें मेा मन शुद्ध ह्वै दुविधा ज्ञान मिटाय ॥ पाय रस प्रेम को ॥ ४४ ॥ ताही छिन इक भंवर कहूंतेंही उड़ि आयेा । व्रज बनितन के पुंज माहि गुंजत छबि छायेा ॥ चह्यो चहतहै पगनिपर अरुण कमल दलजानि । मानेा मन ऊधेा भयेा प्रथमहि प्रगट्यो आनि ॥ मधुप को भेष धरि ॥ ४५ ॥ ताहि भंवर सों कहैं सबै प्रति उत्तर बातें । तर्क बितर्क नियुक्ति प्रेम रस रूपी घातें ॥ जिनि परसैं मम पावरे तुम मानत हम चोर । तुमही से कपटी हुते मोहन नन्द किशोर ॥ यहांते दूरि हेा ॥ ४६ ॥ कोउ कहेरी बिश्व मांझ जेते हैं कारे । कपटि कुटिल की कोटि परम मानुष मसि हारे ॥ एक श्याम तन परसि कें जरत आज लों अंग । ता पाछें यह मधुपह्व लायेा योग भुवंग ॥ कहा इनको दया ॥ ४७ ॥ कोउ कहै री मधुप भेष उनही को धारयो । श्याम पीत गुंजार बैन किंकिनि झनकारयो ॥ बापुर गेारस चेारि कै फिरि आयेा यह देश । इन को जिनि मानहु कोउ कपटी इनको भेश ॥ चेारि जिनि जाय कछु ॥ ४८ ॥ कोउ कहेरे मधुप कहैं अनुरागी तुम को । कौने गुण धों जानियह्व अचरज है हम को ॥ कारेा तन अति पात को मुख पियरेा जग निन्द । गुण अवगुण सब आपनेा आपुहि जानि अलिन्द ॥ देखि लै आरसी ॥ ४९ ॥ कोउ कहै रे मधुप कहा तूरस को जानै । बहुत कुसुम पै बैठि सबै कापन सम मानै ॥ आपन सम हमकों कियेा चाहत है मति मंद । बिबिध ज्ञान उपजाय कें दुखित प्रेम आनन्द ॥ कपट के छंद सों ॥ ५० कोउ कहै रे मधुप कहा मोहन गुण गावै । हृदय कपटसों परम प्रेम नाहिन छबि पावै ॥ जानति हैा सब भांत के सर्बस लियेा चुराय । ए बैारी व्रज वासिनी को जो तुम्हे पतियाय ॥ लहे हम जानि के ॥ ५१ ॥ कोउ कहैरे मधुप कौन कहै तुम मधुकारी । लिये फिरत मुख योग गांठ काटाब कटारी ॥ रुधिर पान कियेा बहुत कै अरुण अधर रंगरात । अब व्रज में आये कहा करन कौन को घात ॥ जात कि न पातकी ॥ ५२ ॥ कोउ कहै रे मधुप प्रेम षट पद पशुदेष्यो । अब लों यहि व्रज देश नाहि कोउ नाहि बिशेष्यो ॥ ह्वै संग आनन ऊपरेा जामें कारेा गात । खल अमृत सम मानही अमृत देखि डरात ॥ बादि यह रसिकता ॥ ५३ ॥ कोउ कहै रे मधुप ज्ञान एकटो ले आयेा । मुक्ति परे जे फेरि तिन्हें पुनि कर्म बतायेा ॥ बेद उप निषद सारजे मोहन गुण गहि लेत । तिन के आत्मा शुद्ध करि फिरि करि संथा देत ॥ योग चटसार में ॥ ५४ ॥ कोउ कहै रे मधुप निगुन इन बहु करि जान्यौ । तर्क बितर्क नियुक्ति बहुत उनको यह आन्यो ॥ पै इतनों नहि जानही बस्तु बिना गुण नाहि । निर्गुण होंहि अतीत के सगुण सकल जग माहि॥ सखा सुन श्याम के ॥ ५५ ॥ कोउ कहै रे मधुप तुम्हें लज्जा नहि आवै । सखा तुम्हारो श्याम कूबरी नाथ कहावै ॥ यह नीची पदवी हुती गेापी नाथ कहाय । अब यदुकुल पावन भयेा दासी जूठनि खाय ॥ मत कह बोल को ॥ ५६ कोउ कहै कहेा मधुप

श्याम योगी तुम चेला । कुब्जा तीरथ जाय कियो इन्द्रिन को मेला ॥ मधुबन सुधि बिसराय कै आयो गोकुल माहिं । यहां सबै प्रेमी बसैं तुमरो गाहक नाहिं ॥ पधारो रावरे ॥ ५७ ॥ कोउ कहै रे मधुप साधु मधुबन के ऐसे । और तहाँके सिद्ध लोग ह्वै हैं धौं कैसे ॥ औगुण गुन गहि लेत हैं गुण को डारत मेटि । मोहन निर्गुण को गहैं तुम साधन को भेटि ॥ गांठि को खोय कै ॥ ५८ ॥ कोउ कहैरे मधुप होंहि तुमसे जो संगी। क्यों न होय तन श्याम सकल बातन चौरंगी ॥ गोकुलमें जोरी कोऊ पाई नाहि तुम्हारि। मदन चिभंगी आपुही करी बिबंकी नारि ॥ रूप गुण शील की ॥ यहि बिधि सुमिरि गोबिन्द कहति ऊधो प्रति गोपी । भृंग संज्ञाकरि कहत सकल कुल लज्जा लोपी ॥ ता पाछे इकबारही रुदित सकल ब्रजनारि । हाकरुणामय नाथ हो केशव कृष्ण मुरारि ॥ फाटि हियरो चल्यो ॥ ६०॥ उमगै जो कोउ सलिल सिंधु लै तनकी धारनि । भीजत अंम्बुज नीरकंचुकी बहु गुण हारनि । ताही प्रेम प्रवाहमें उद्धव चले बहाय । भली ज्ञान की मेंड हो ब्रजमैं दीन्ही आय। कुल तारन भये ॥ ६१ ॥ प्रेम प्रशंसा करत शुद्ध जो भक्ति प्रकाशी । दुविधा ज्ञान गलानि मन्दता सिगरी नाशी । कहत मोहि विस्मय भयो हरि के ए निज पाच॥ हौंतो कृत कृत ह्वै गयो इनके दरशन माच । मेटि मत ज्ञान को ॥ ६२ ॥ पुनि पुनि कहि हरि कहन बात एकान्त पठायो । मैं इनको कछु मरम जानि एकौ नहि पायो । हौंजु कहों निज मरजादा की ज्ञान कर्म लो रोपि । ए सब प्रेमा सक्त ह्वै कुल लज्जा करि लोपि । धन्य ए गोपिका ॥ ६३ ॥ जो ऐसें मरजाद मेटि मोहन को धावैं ॥ काहे न परमा नन्द प्रेम पदवी को पावैं । ज्ञान योग सब करमतें प्रेम परेही सांच ॥ हौं यहि पटतर देत हौं हीरा आने काँच । विषमता बुद्धि की ॥ ६४ ॥ धन्य धन्य जे लोग भजत हरिको जो ऐसें ॥ जो कोउ पारस और प्रेम बिन पावत कैसें ॥ मेरे या लघु ज्ञानको उर मद रह्यौ उपाध । अब जानौ ब्रज प्रेम को लहत न आधौ आध । वृथा श्रम करि थके ॥ ६५ ॥ पुनि कह उत्तम साधु संग नित्य है भाई । पारस दरसे लोह तुरत कंचन ह्वै जाई । गोपी प्रेम प्रसाद को हो अब सीख्यो मैं आय । ऊधो तें मधुकर भया दुविधा ज्ञान मिटाय ॥ पाय रस प्रेमको ॥ ६६ ॥ पुनि कहि परसत पाय प्रथम हौं इनहि निवारो । भृंग संज्ञा करि कहत निन्दि सब हीतें डारो। अब ह्वै रहौं ब्रज भूमिको पग मारग की धूरि । बिचरत पद मोपै परै सबसुख जीवन मूरि ॥ मुनिन हूं दुर्लभ है ॥ ६७ ॥ कैसे होंहु द्रुम लता बेलि बल्ली बन माहीं ॥ आवत जात सुभाय परति मोपै परछांहीं। सोऊ मेरे बस नहीं जो कछु करौं उपाय ॥ मोहन हांहि प्रसन्न जो यह बर मांगों जाय ॥ कृपा करि देहुजू ॥ ६८ ॥ ऐसे मग अभिलाष करत मथुरा फिरि आयो । गद गद पुलकित रोम अंग आवेसजनायो ॥ गोपी गुण गावन लग्यो मोहन गुण गयो भूलि । जीवन कौ लै कह करैं जोनहि जीवन मूलि। भक्तिको सार यह ॥ ६९ ॥ ऐसे शोचत जहां श्याम तहं आयो धायो । परि कर्मा दंडौत बहुत आवेस जनायो। कछु निर्दयता श्यामकी करि क्रोधित दोउ नयन। कछु ब्रज

बनिता प्रेम की बोलत रस भरि बैन । सुनौ नंद लाडिले ॥ ७० ॥ करुणा मय अरु रतिकता तुम्हरी सब झूठी । जबहीलौं नहिं लखी तबहिलौं बांधी मूठी । मैं जान्यो ब्रज जाय कै तुम हरा निर्दय रूप ॥ जो तुमको अब लंबही वाको मेलो कूप । कौन यह धर्म है ॥ ७१ ॥ पुनि पुनि कहं हो चलौ जाय वृन्दा बन रहिये ॥ प्रेम पुंज को प्रेम जाय गोपिन संग लहिये ॥ और काम सब छांडिकै उन लोगनि सुख देहु । नातर टूट्यो जात है अबहीं नेह सनेहु । करौगे तौ कहा ॥ ७२ ॥ सुनत सखा के वैन नयन भरि आये दोऊ । बिबस प्रेम आवेस रही नाहीं सुधि कोऊ । रोम रोम प्रति गोपिका ह्वै रहि सांवरि गात । कल्प तरोवृह सांवरो ब्रज बनिता भई पात । उलहि अंग अंगते ॥ ७३ ॥ हो सचेत कहि भलो सखा पठयो सुधि ल्यावन । औगुण हमरे आनि तहांते लगे बतावन । मोमे उनमे अन्तरो एकौ छिनतरि नांहि ॥ ज्यौं देखो मो मांहि वे तौ में उनहीं मांहि । तरंग निवारि ज्यौं ॥ ७४ ॥ गोपी रूप दिखाय तबै मोहन बनवारी । ऊधो भ्रमहि निवारि डारि मन मोहको जारी । अपनो रूप दिखायके लीन्हों बहुरि दुराय ॥ नंद दास पावन भयो जो यह लीला गाय प्रेम रस पुञ्जनी ॥ ७५ ॥ मधुकर काहेको गोकुल आए ॥ वैसेहीं सच अपने मनमे दूनो बिरह जगाए ॥ हम जानतिहैं जिन्है पठाए स्याम सन्देसो ल्याए ॥ जनम जनम के दूत तिरावन कौनहि लार लगाए ॥ कहा करहिं कहं जाइं सखीरी हरि बिन कछु न सोहाए ॥ जनम सुफल सूर तिनकोजे काज पराए धाए ॥ १ ॥ राग मलार ॥ आए माई दुरंग श्याम केसङ्गी । जो पहिले रंग रंगे स्याम रंग तिनहीकी बुधि रङ्गी । हमरी उनको सी मिलवतहौ ताते भए बिहङ्गी ॥ सूधो कहै सबनि समुझावति तेसांचे सरवङ्गी ॥ औरनि कों सरबसु लै मेटत आपुन भए बिभङ्गी । सूर सुनाम शिखीमुख जोपैं बै घन कवच उपङ्गी ॥ २ ॥ राग मलार ॥ आए नन्द नंदन केनेव ॥ गोकुलमांझ जोग बिसतायो भली तुम्हारी जेव ॥ जब वृन्दावन रास रच्यौ हरि तबहिं कहाए चेव । अब यह ज्ञान सिखावन जाही भसम अधारी सेव । अबलनि को लै सेा व्रत ठान्यों जो जोगिन को जोगु । सूर दास ए सुनत न जीवहिं आतुर बिरह वियोगु ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ कोउ ब्रज बाँचत नाहि न पाती । कत लिखि लिखि पठवत नद नन्दन कठिन बिरह की कांती । नयन सजल कागद अति कोमल कर अंगुरी अति तांती । परसे जरे बिलोके भीजे दुहूं भांति दुख छाती । क्यों ए बचत सुअक सूर सुनि बिरह मदन सर घाती । मुख मृदु बचन बिना सींचे अब जिवहिं प्रेम रस भांती ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ देन आए ऊधो मत नीको । हित उपदेश करन ब्रज आए लिए मतो हरि जीको । जोग जुगति निरगुन उपदेशत ज्ञान सुनाय जतीको ॥ आवहु री मिलि सुनहु सयानीलिए सुजस कोटीको । तजन कहत अम्बर आभूषन देह नेह सुतहीको । अङ्ग भसम करि शीस जटा धरि सिखवत निरगुन फीको । मेरे जान यह जुवतिनकोदेत फिरत दुख पीको । ता सरापते भए श्याम तन तरुन गहत डर

जीको। जाकी प्रकृति परी री जीवहि तैसी सोच न भली बुरीको। जो लगि सूरश्याल डसि भाजैसुख नहिं होत अमीको ॥ ५ ॥ राग बिहाग ॥ ताल एक तारा। कृष्ण कृष्ण करत डोलुं कृष्ण कहां पाउं । द्वारेतें दौड़ आउं तोउ न लाज लजाउं । तोहि छांडि और की मैं कौन की कहाउं । ऊधो तुम बेग जाओ प्रेम लिखि पठाउं । ढूंढ फिरों वन कुंज माहिं श्याम श्याम गाउं । बिधना नहिं पंख दिये उड़कै तहं द्वारा उड़ जाउं ॥ ऊधो तुम बेग जाओ श्यामहिं ले आओ । सूरज प्रभु दरस दियो सबहि कंठ लाओ ॥ ६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ इति सूरसागर भ्रमरगीत संपूर्ण ॥

इति श्री सूरदासजी कृत सूरसारावली नित्यकीर्त्तन रागकल्पद्रुम आदि अनेक राग संयुक्त सूरसागर समाप्त ॥

National Library
Calcutta-27.